डा. श्रीरामदेवझा : समवेत सन्दर्शन

सव्यसाची



Scanned by CamScanner

डा. श्रीरामदेवझा : समवेत सन्दर्शन

सव्यसाची

डा. श्रीरामदेवझा अभिनन्दन ग्रन्थ समिति
लहेरियासराय
दरभंगा- 846001

Scanned by CamScanner

SAVYASACHI
(Dr. Shree Ramdeo Jha Felicitation Volume)

स्वत्वाधिकार : डा. श्रीरामदेवझा अभिनन्दन ग्रन्थ समिति

प्रकाशक : **डा. श्रीरामदेवझा अभिनन्दन ग्रन्थ समिति**
कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा- 846001
मो.- 09430639249

ग्रन्थ प्राप्ति स्थान : 1. डा. धीरेन्द्रनाथमिश्र
बैंकर्स कालोनी, धर्मपुर,
लक्ष्मीसागर, दरभंगा- 846009
2. डा. मुरलीधरझा
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा- 846001

प्रकाशन वर्ष : 2011 इ.

मूल्य : **बारह सय टाका (1200/-) मात्र**

मुद्रक : प्रिंटवेल, टावर, दरभंगा

Scanned by CamScanner

परामर्श मण्डल

पं. श्रीचन्द्रनाथमिश्र अमर

डा. श्रीसुरेश्वरझा

डा. श्रीविद्यानाथझा विदित

प्रधान सम्पादक

डा. श्रीअमरेशपाठक

सम्पादक मण्डल

डा. श्रीरत्नेश्वरमिश्र, डा. श्रीइन्द्रकान्तझा

डा. श्रीअमरनाथचौधरी, डा. श्रीखुशीलालझा

Scanned by CamScanner

डा. श्रीरामदेवझा अभिनन्दन ग्रन्थ समिति

डा. श्रीवैद्यनाथचौधरी बैजू	-	संरक्षक
डा. श्रीधीरेन्द्रनाथमिश्र	-	अध्यक्ष
डा. श्रीमुरलीधरझा	-	संयोजक
डा. श्रीयोगानन्दझा	-	सह संयोजक
डा. श्रीश्रीशंकरझा	-	कोषाध्यक्ष
डा. श्रीअमरनाथझा	-	सदस्य
डा. श्रीमतीवीणाठाकुर	-	सदस्य
डा. श्रीमतीनीताझा	-	सदस्य
डा. श्रीमतीकमलाचौधरी	-	सदस्य
डा. श्रीकुलानन्दझा	-	सदस्य
श्रीविनोदकुमार	-	सदस्य
डा. श्रीअरुणकुमारकर्ण	-	सदस्य
श्रीशम्भुनाथमिश्र	-	सदस्य

Scanned by CamScanner

सम्पादकक दृष्टिसँ

गगनक तुलना गगनेसँ हो, जलधिक तुलना जलधियेसँ हो,
गगन गगनाकारं सागर सागरोपमम् ।

अर्थात् दुनू अतुलनीय, दुनू अनुपमेय, अपना सन अपने । विद्यापति अपन काव्य-नायककेँ सेहो एहिना कहैत छथि– तोहर सरिस एक तोँहे माधव । हमहूँ श्रीरामदेवजीक लेल यैह कहबनि जे ओ अपन तुलना अपने छथि । विशुद्ध साहित्यसाधकक जँ कोनो परिभाषा कयल जाय तँ हिनक लक्षणक आधारपर ओ परिभाषा बनत । कोनो प्रकारक साहित्यिक राजनीति ओ गोलैसीसँ सर्वथा फराक रहैत शान्त ओ मौन भावसँ मैथिलीक एकसँ एक काज करैत रहलाह अछि । ककरो विरुद्ध लिखब किंवा ककरोपर प्रहार करबा सन प्रवृत्तिसँ ई सब दिन दूर-दूर रहैत अयलाह अछि । समग्रतामे देखला उत्तर विद्वानसँ कोनो भिन्न छवि नहि बनैत अछि हिनक जकरा अतिशयोक्ति नहि कहल जा सकैत अछि ।

एहन साहित्यसाधकक अभिनन्दन होअय ताहिसँ बढ़ि प्रसन्नताक बाते की ? श्रीरामदेवजीक साहित्यिक व्यक्तित्व जहिना बहुआयामी छनि तद्वते हिनकापर केन्द्रित अभिनन्दन-ग्रन्थक स्वरूप ओ ओहिमे संकलित सामग्री सब सेहो बहुआयामी होयबाक चाही । प्रस्तुत ग्रन्थक संयोजनमे एहि तथ्यपर विशेष ध्यान राखल गेल अछि ।

प्रस्तुत ग्रन्थ दुइ पटलमे विभक्त अछि । पहिल पटलकेँ पाँच वर्गमे विभक्त कयल गेल अछि । पहिल वर्गमे श्रीरामदेवजीक विस्तृत जीवनी छनि । दोसर वर्गमे हिनक संवर्द्धना-अभ्यर्थना आदिक बारह गोट काव्य-पुष्प अछि । तेसर वर्गमे हिनक व्यक्तित्व पर प्रकाश दैत ओ संस्मरणात्मक कोटिक कुल तैंतीस गोट आलेख अछि । चारिम वर्गमे एक गोट अन्तरंग वार्त्ता अछि जाहिसँ श्रीरामदेवजीक आन्तरिक व्यक्तित्व ओ हुनक चिन्ताधारापर प्रकाश पड़ल अछि । पाँचम वर्ग साहित्य-विवेचनकेँ पुनः हिनक लेखनीक विविधताक अनुरूपेँ अनेक दलमे विभाजित करैत ओकरा 'विमर्श' शीर्षकसँ अभिहित कयल गेल अछि, यथा– कथा-विमर्शमे सत्रह गोट, उपन्यास-विमर्शमे दस गोट, नाट्य-विमर्शमे सात गोट, काव्य-विमर्शमे एक गोट, समालोचना-विमर्शमे अठारह गोट, पत्र-सम्पादन विमर्शमे दू गोट एवं अनुवाद-विमर्शमे एक गोट निबन्ध संकलित कयल गेल अछि । एहि वृहत् वर्गमे श्रीरामदेवजीक साहित्य-साधनाक सूक्ष्म ओ व्यापक विश्लेषण भेल अछि, लगभग हिनक साहित्यक सभ पक्षपर प्रकाश पड़लनि अछि ।

ग्रन्थक दोसर पटलमे श्रीरामदेवजीसँ भिन्न साहित्य, संस्कृति ओ कलासँ सम्बद्ध नओ गोट महत्त्वपूर्ण आलेख अछि । एहिसँ इतर, ग्रन्थमे 'शिष्ट-विशिष्ट' शीर्षकक अन्तर्गत श्रीरामदेवजीक अनुसन्धान कार्य ओ सम्पादन-दक्षताक निदर्शनार्थ बानगीक रूपमे किछु विशिष्ट सामग्री देल गेल अछि । ग्रन्थक परिशिष्ट भागमे श्रीरामदेवजीक साहित्य-संसार, हिनका द्वारा निर्देशित शोध-प्रबन्ध, वंश-परिचय, हिनकासँ

Scanned by CamScanner

सम्बद्ध किछु महत्त्वपूर्ण तिथि, सारस्वत सहयोगी लोकनिक सूची ओ चित्रावली आदिक समावेश कयल गेल अछि ।

एहि तरहेँ एहि ग्रन्थमे श्रीरामदेवजीक समवेत सन्दर्शन भेलनि अछि । ग्रन्थक निर्माणमे विभिन्न क्षेत्रसँ सारस्वत सहयोग भेटल अछि, संगहि पूर्वहुमे बहुतो मनीषी लोकनि द्वारा श्रीरामदेवजीक सम्बन्धमे जतऽ जे किछु लिखल गेल छल, तकरहु सबकेँ एहिमे संकलित कऽ लेल गेल अछि । मैथिलीक क्षेत्रसँ बाहरक बहुतो निरपेक्ष व्यक्ति लोकनिक लेख सेहो एहि ग्रन्थक गरिमाक अभिवृद्धिमे सहायक भेल अछि। एतावता एहि ग्रन्थमे जाहि प्रकारेँ विविध क्षेत्रक विद्वानक आलेखक श्लाघनीय संग्रह भेल अछि ताहिसँ एकर महत्ता स्वयं प्रतिपादित भऽ जाइत अछि । ओहि समस्त विद्वान् लोकनिक प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन करैत हम ओहू विद्वान् लोकनिक प्रति आभार व्यक्त करैत छी जे कोनो कारणवश एहि ग्रन्थक हेतु सारस्वत सहयोग नहि दऽ सकलाह ।

अन्तमे स्मरण होइत अछि श्रीरामदेवजीक सम्बन्धमे आचार्य सुरेन्द्रझासुमनक कहल ई पंक्ति– साहित्यिक क्षेत्रमे 'सव्यसाची' जकाँ बाम-दहिन दुनू सन्धान करैत रहला ।' आचार्य सुमन श्रीरामदेवजीकेँ 'सव्यसाची' विशेषणसँ विभूषित कयने छथिन तेँ ओहि विशेषणकेँ सार्थकता प्रदान करैत एहि ग्रन्थक नामकरणे 'सव्यसाची' कयल गेल अछि । श्रीरामदेवजीक प्रति अपन अशेष मंगलकामनाक संग समर्पित अछि ई ग्रन्थ ।

–श्रीअमरेशपाठक

Scanned by CamScanner

अभिनन्दन समिति दिससँ

साहित्यकार अपन शरीर गला कऽ, अपन शोणित जरा कऽ साहित्यक सृजन करैत अछि, समाजकेँ बौद्धिक खोराकी दऽ ओकर पथ-प्रदर्शन करैत अछि मुदा ओकर ओहि विराट् त्यागक बदलामे ओकरा की भेटैत छैक ? साहित्यकारक यैह सामाजिक उपेक्षा कोनो भाषाक माइनस प्वाइन्ट होइत अछि जे प्रोत्साहनक अभावमे नव पीढ़ी साहित्य लेखन दिस उन्मुख नहि भऽ पबैछ । एकर विपरीत साहित्यकारकेँ सम्मान देब कोनो भाषाक जीवन्तता ओ ओहि समाजक जागरूकताक परिचायक होइत अछि ।

मैथिली एकटा जीवन्त भाषा थिक आ साहित्यकारकेँ सम्मान देब हमरा लोकनिक संस्कृति थिक । अक्षर जगतक जाज्वल्यमान नक्षत्र अक्षर पुरुष डा.श्रीरामदेवझा ओहि कोटिक साहित्यकार छथि जे पछिला छओ दशकसँ अनवरत साहित्य साधनामे लागल छथि । साहित्यक यावन्तो विधा हिनक लेखनीसँ समृद्ध भेलनि अछि । एहन शलाका पुरुषक जँ अभिनन्दन नहि होअय तँ एकरा दुर्भाग्ये कहल जयबाक चाही !

जून 2005मे साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा विद्यापति सेवा संस्थान दरभंगाक सहयोगसँ हिनक सम्मानमे आयोजित **मीट द' ऑथर** कार्यक्रम आयोजित भेल छल । एम.एल.एस.एम. कॉलेज, दरभंगाक सभागारमे आयोजित एहि कार्यक्रमक अवसरपर संस्थानक महासचिव डा.श्रीवैद्यनाथचौधरी 'बैजू' अपन अभिभाषणमे डा.श्रीरामदेवझाक सम्मानमे अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशनक आवश्यकतापर बल देलनि । एहि तरहेँ ओहि दिन एहि आयोजनक बीजारोपण भऽ गेल ।

तथापि एक सालक विलम्बक बाद 8 अक्टूबर 2006केँ एहि यज्ञक निमित्त पहिल औपचारिक बैसार डा.भूपेन्द्रकुमारचौधरीक अध्यक्षतामे भेल । बैसारमे अभिनन्दनीय पुरुष डा.श्रीरामदेवझाकेँ अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित करबाक निर्णय लेल गेल । तत्पश्चात 'डा.श्रीरामदेवझा अभिनन्दन ग्रन्थ समिति'क गठन भेल । समिति अपन कार्य सुरू कयलक आ सम्भावित अभिनन्दन ग्रन्थक एकटा स्वरूप निर्धारण करैत आलेखक हेतु वरिष्ठ, समवयस्क ओ कनिष्ठ सभ वर्ग आ सभ तूरक लेखककेँ आग्रह-पत्र प्रेषित कयल गेलनि । पत्रक प्रत्युत्तरमे विभिन्न क्षेत्रसँ सहयोगक आश्वासन भेटल जाहिसँ समितिक उत्साहवर्द्धन भेलैक ।

हमरा लोकनिक एहि आयोजनक प्रति सहानुभूति ओ अभिनन्दनीय पुरुषक प्रति स्नेह ओ श्रद्धा भाव रखनिहार अनेक महानुभाव लोकनि बिना कोनो तगादाक अपन-अपन आलेख पठा समितिकेँ कृतार्थ कयलनि । एकरा मैथिली भाषा-साहित्यक काज आ समाजक दायित्व बुझनिहार अनेक महापुरुष लोकनिक आशीर्वाद एहि यज्ञकेँ प्राप्त भेलैक अछि ।

मैथिली भाषा साहित्यक इतिहास पुरुष डा.जयकान्तमिश्र रुग्णावस्थामे रहितो एहि आयोजनक प्रति अपन असीम सद्भावना देखबैत 12 दिसम्बर 2007 केँ एकटा पोस्टकार्डमे लिखलथिन- अहाँक अभिनन्दन ग्रन्थमे किछु लिखबाक मोन अछि । देखू स्वस्थ रहब तखन... वर्त्तमान मैथिली जगतमे दू-तीन

Scanned by CamScanner

गोटे ज्ञाता छथि ताहिमे अहाँ छी । जा धरि अहाँ सन विद्वान् मैथिली भाषाक पताका फहरबैत रहताह मैथिली जीवित भाषा ओ साहित्यमे गनल जाएत । ई हमर निश्चित मत अछि । हँ अहाँक गोलौसी करबाक हेतु ई कथा नहि कहल अछि– श्रीजयकान्तस्य ।'

जयकान्तबाबू अभिनन्दनीय पुरुषक कृति 'उमापति' पर लिखबाक इच्छुक रहथि । 24 जुलाइ 2007क अपन पत्रमे एहि इच्छाकें व्यक्त करैत लिखलनि– अभिनन्दन ग्रन्थक हेतु पत्र भेटल छल । आब क्रमशः निकें भेल जाइत छी । श्रीककाजी (अमरजी) कोना छथि लिखब । हमरा सभकें आब पेंशन भेटए लागल अछि, तावत बड़का दुखित भेल पड़ल छलहुँ, क्रमशः छड़ी ध ध क चलब सिखैत छी । पत्र दी अथवा फोन करी । अपन फोन नं. लिखू–

उमापतिवला पोथी कोना भेटत ?
हम अहाँक पोथी उमापतिपर लिखए चाहैत छी ।
उमापतिक पोथी पठबा दिअ शीघ्र ।

–श्रीजयकान्तस्य ।

जयकान्तबाबू अपन मनोवांछित विषयपर नहि लिखि सकलाह तथापि ग्रन्थक हेतु अपन छोट सन आलेख पठा समितिकें कृतार्थ कयलनि । बिन्दुमे सिन्धुवत् हुनक एहि आलेखसँ एहि ग्रन्थक मर्यादा कतेक बढ़ि गेल अछि से कहल नहि जा सकैछ । तखन कष्ट एतबे जे जयकान्तबाबू अपन प्रिय साहित्य–पुरुषक अभिनन्दन ग्रन्थ स्वयं अपना आँखिए नहि देखि सकलाह ।

समिति ओहि सब लेखक लोकनिक प्रति अपन आभार व्यक्त करैत अछि जे अपन आलेखसँ सहयोग प्रदान कयलनि । एहि ग्रन्थमे नवीन आलेखक संग संग ओहनो आलेख सबकें स्थान देल गेल अछि जे पूर्वमे कोनो पोथी वा पत्र–पत्रिकामे प्रकाशित भेल छल । अतः ओहू लेखक लोकनिक प्रति श्रद्धा ओ कृतज्ञता ज्ञापन ।

एहि सारस्वत यज्ञमे सब प्रकारक समिधा जुटयबामे ग्रन्थ समितिक सब सदस्यक जे सहयोग रहलनि तकरा व्यक्त करबाक हेतु ने तँ कोनो शब्दे अछि आ ने आभार प्रदर्शनक प्रयोजने । किएक तँ हमरा लोकनि ककरो उपकार नहि कयलहुँ अछि अपितु अपन कर्त्तव्यक एकटा क्षुद्र अंशक मात्र पूर्त्ति कऽ सकलहुँ अछि तें सन्तोषक अनुभव कऽ रहल छी ।

एहि ग्रन्थक स्वरूप निर्धारणमे पं. श्रीचन्द्रनाथमिश्र अमर, डा.श्रीसुरेश्वरझा एवं डा.श्रीविद्यानाथझा विदितक आशीर्वाद ओ परामर्श भेटल, एकर सम्पादन कार्यक दायित्व निर्वहन हेतु डा.श्री अमरेशपाठक एवं डा.श्रीरत्नेश्वरमिश्र, डा.श्रीइन्द्रकान्तझा, डा.श्रीअमरनाथचौधरी एवं डा.श्रीखुशीलाझा जे अपन स्वीकृति देलनि आ ताहिसँ एहि ग्रन्थक गरिमामे अभिवृद्धि भेलैक ताहि हेतु अभिनन्दन ग्रन्थ समिति हिनका लोकनिक प्रति आभारी रहत ।

अन्तमे समिति एहि सारस्वत यज्ञक आचार्य, परामर्शदाता, लेखक, मुद्रक, आर्थिक एवं अन्य सब प्रकारक सहयोग देनिहार महानुभाव लोकनिक प्रति अपन हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करैत अछि ।

–श्रीधीरेन्द्रनाथमिश्र

Scanned by CamScanner

रचना क्रम

पहिल पटल

Scanned by CamScanner

अन्तरंग-वार्त्ता

कथा-विमर्श

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

काव्य-विमर्श

शोध-समालोचना-विमर्श

Scanned by CamScanner

पत्र-सम्पादन-विमर्श

अनुवाद-विमर्श

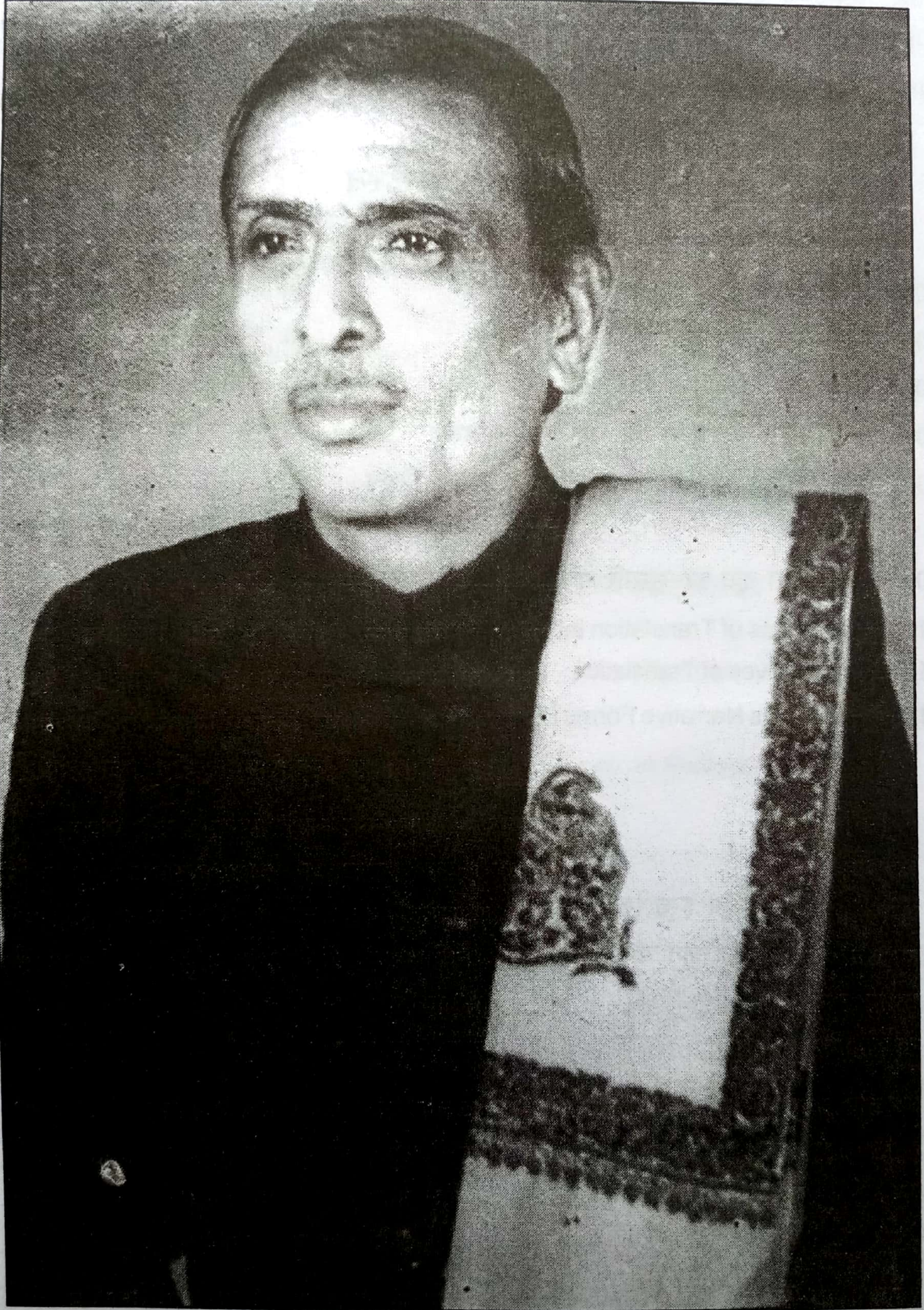
दोसर पटल

शिष्ट-विशिष्ट

परिशिष्ट

●

Scanned by CamScanner



डा.श्रीरामदेवझा

Scanned by CamScanner

प्रथम पटल

Scanned by CamScanner

स जीवति गुणा यस्य

-डा. श्रीशंकरदेवझा

कुल-वंश

दरभंगा जिला मुख्यालय लहेरियासरायसँ सटले पूब एकटा गाम अछि- कबिलपुर । पूरब भीगो परगनाक अन्तर्गत मौजे बलभद्रपुरमे 'टोले कबिलपुर' नामसँ पुरान सरकारी अभिलेखादिमे प्रसिद्ध ई गाम, आब वास्तवमे गाम नहि रहि गेल अछि । अर्द्ध शहरी परिवेशवला ई गाम आब लहेरियासरायक एकटा अंगे बनि गेल अछि । गाम पुरान अछि । अतीत कालमे एहि गामक प्रसिद्धि एहि गाम मध्य अवस्थित एकटा कबीरपन्थी मठकेँ लऽ कऽ छल । प्राय: एही कारणे पहिने एहि गामक नाम 'कबीरपुर' छल, पछाइत ई मुखसुखक कारणे कबिलपुर कहाबऽ लागल ।

कबिलपुरमे शाण्डिल्य गोत्रीय, सामवैदिक छान्दोग्य शाखाक ब्राह्मण लोकनिक निवास छनि, जनिका लोकनिक कुलदेवता थिकथिन- नरसिंह । हिनका लोकनिक मूल थिकनि- छतिवनय-छतिवन । छतिवन गाम, दरभंगा-सकरी रेलपथक बीच स्थित तारसराय स्टेशन लग अछि । कबिलपुरक छतिवनय मूलक ब्राह्मणलोकनिक बीजीपुरुष छलथिन भीमसिंहझा । हिनक आठम पीढ़ीमे भेलथिन वासुदेवसिंहझा प्रसिद्ध बलभद्रझा । बलभद्रझाकेँ अपन पैतृक सम्पत्तिक बँटवारामे भीगो परगना भेटल छलनि । कोनो कारणवश भीगो परगनाक दू भाग भऽ गेल । पूरब भीगो ओ पच्छिम भीगो । बलभद्रझा अपन पुरखाक डीह छतिवनकेँ छोड़ि पूरब भीगो परगनामे अपना नामपर बलभद्रपुर गाम बसौलनि । पुरान पंजीमे एहि वंशक मूल दीघो-छतिवन अछि, मुदा अपन निवास स्थान परिवर्त्तनक बादसँ हिनक वंशज लोकनिक मूल बदलि कऽ भऽ गेलनि छतिवनय-छतिवन । वासुदेवसिंहझा प्रसिद्ध बलभद्रझाक चारि गोट पुत्रमेसँ पहिल, दोसर आ चारिम बलभद्रपुर छोड़ि आन-आन स्थानपर जा कऽ बसलथिन । तेसर पुत्र जगन्नाथसिंहझा प्रसिद्ध जयभद्रझा बलभद्रपुरहिमे रहलथिन । जगन्नाथसिंहझाकेँ छओ गोट बालक भेलथिन । एहिमेसँ कोनो कारणावशात् पहिल पुत्र नरोत्तमसिंहझा महुआ, चारिम पुत्र परमानन्दसिंहझा वैशाली, पाँचम श्यामसिंहझा भोजपट्टी, छठम सदानन्दसिंहझा नजरपट्टीमे जा कऽ बसलथिन । पितामहक भूमिपर रहि गेलथिन दोसर पुत्र उमापतिसिंहझा प्रसिद्ध बाबूजीझा आ तेसर पुत्र मानसिंहझा । बलभद्रपुर निवासी एहि दुनू भाइक मध्य भीगो परगनाक अपन अधिकारक अवशिष्ट भागमे जे जेना बँटवारा भेल हो । मुदा मौजे बलभद्रपुरक दू भागमे विभाजन भेल-बलभद्रपुर-बाबू आ बलभद्रपुर-मानसिंह । मानसिंहझा बलभद्रपुरहिमे अपन पितामहक डीहपर रहलाह, मुदा उमापतिसिंहझा प्रसिद्ध बाबूजीझा बलभद्रपुर मौजेक कबिलपुरमे अपन नवीन आवास स्थिर कयलनि । कबिलपुरमे बसबाक कारणे पछाति पंजीमे हिनक सन्तति लोकनिक संग डेरा-कबिलपुर जुड़ि गेलनि ।

कबिलपुर निवासी उमापतिसिंहझा प्रसिद्ध बाबूजीझाक नवम पीढ़ीमे भेलथिन रामशरणझा । रामशरणझाकेँ छओ गोट सन्तानमे चारि गोट कन्या क्रमश: पार्वती, रामरती, रामसखी ओ रामसती तथा दुइ गोट पुत्र भेलथिन- कुशेश्वरझा ओ कपिलेश्वरझा । कपिलेश्वरझा अपन पिताक चारिम सन्तान छलाह ।

पिता

यैह कपिलेश्वरझा भेलथिन आधुनिक मैथिली भाषा-साहित्यक शलाकापुरुष डा. श्रीरामदेवझाक पिता । कपिलेश्वरझाक जन्म सन 1301 साल अर्थात् 1894इ.मे भेलनि । ई विशुद्ध गृहस्थ रहथि । पुरखा लोकनिक जमिन्दारी

Scanned by CamScanner

यद्यपि रिआइत-खिआइत आना-गण्डामे शेष रहि गेल छलनि तथापि मरौसी ओ अर्जित रैयतियो जमीन-जथा कम नहि छलनि । सब मिला कऽ बढ़ियाँ आस्था-पात । गृहस्थ रहितो कपिलेश्वरझाकेँ पढ़बा-लिखबाक प्रति विशेष अभिरुचि । देवनागरीक संग-संग तिरहुता, कैथी, उर्दू ओ अंग्रेजी लिपिक ज्ञाता । जमीन-जालक कागज-पत्र बुझबामे बेस पटु ओ हिसाब-बारी करबामे निपुण । जमीनक हिसाब-किताब, नाप-जोख, रसीद-फारक, लगान-मालगुजारी आदिक विशेष ज्ञान ओ अनुभव रहबाक कारणे ई अपन गाम-इलाकामे मनसीजी (मुनशीजी)क नामसँ सेहो जानल जाइत छलाह । कपिलेश्वरझा अपन परिश्रम ओ बुद्धिसँ अपन जमीन-जथाकेँ बचा-बढ़ा कऽ अपन घर-गृहस्थीकेँ सुदृढ़ बना कऽ रखने रहथि । तेँ दलानपर गाय-बड़द, हर-पालो आ घरमे कोठी सबमे भरल नाना प्रकारक अन्न ।

भायमे छोट कपिलेश्वरझाक विवाह हुनक बीसम वर्षमे 1913मे लहेरियासरायसँ सटले दच्छिन स्थित सहोड़ा गामक पं. जीतलालमिश्रक आठ वर्षीया कन्या देवयती प्रसिद्ध बच्चादाइसँ भेलनि । दुःसंयोगवश विवाहक वर्ष बितैत-बितैत चैत मासक पूर्णिमा दिन गाममे पसरल महामारीमे हिनक पिता रामशरणझाक देहान्त भऽ गेलनि । रामशरणझा ओहि समयमे प्रौढ़ तँ छलाह, परन्तु मृत्युक अवस्था नहि छलनि । परिवारपर विपत्तिक पहाड़ खसि पड़लनि । हुनक पुत्रद्वय घर-परिवार, खेत-पथारकेँ जेना-तेना सम्हारलथिन ।

कपिलेश्वरझा युवावस्थामे प्रवेश कयनहि छलाह, तखनहि पितृवियोग भेलनि । ओ छोट होइतो अपना समयमे बेस बुझनुक, बुधियार ओ कर्मशील छलाह । ओ ने केवल घर-परिवारकेँ सम्हारलनि, अपितु अपन दुइ गोट छोटि बहिनिक बियाहदान सेहो नीक जकाँ करौलनि । किछु भू-सम्पदा सेहो अरजलनि । परन्तु ई सब होइतो बड़का विपत्ति पड़ि गेलनि हुनक नवपरिणीता पत्नी बच्चादाइपर जनिका सासु चतुरमनि (ओझौलवाली) अलच्छी बूझऽ लगलथिन । हुनक मोनमे अपन छोट पुत्रवधूक प्रति जे ओ शत्रु भाव जगलनि से मृत्यु पर्यन्त बनल रहलनि । बच्चादाइकेँ सासुरमे चिरकाल धरि प्रताड़ना देल जाइत रहलनि । पत्नीक प्रति परिवारक दुर्व्यवहार देखितो कपिलेश्वरझा लोक-लाजक कारणे मौन रहि घर सम्हारैत रहलाह । समय एहिना बीतैत रहल । कतेको वर्ष बीति गेल । कपिलेश्वरझाकेँ कोनो सन्तान नहि भेलनि ।

एही क्रममे 1934क बड़का भूकम्पसँ किछु वर्ष पूर्व हिनक जेठ भाय कुशेश्वरझा एकटा कन्या आ नवजात दूटा जौआँ बालककेँ छोड़ि असमये दिवंगत भऽ गेलथिन । परिवारपर भेल ई दोसर बज्रपात जेना हिनक घरकेँ फेरसँ अस्त-व्यस्त कऽ देलक । तथापि कपिलेश्वरझा साहसपूर्वक समस्त परिवारक बोझ अपन कान्हपर उठा लेलनि । एकर बादो कपिलेश्वरझाकेँ सुखद पारिवारिक जीवन दुर्लभे रहलनि । परिवारक स्त्रीगण लोकनि द्वारा बच्चादाइकेँ औरो बेसी उकसोबास देल जाय लगलनि ।

कपिलेश्वरझा अपन परिवारक एहि विषम परिस्थितिसँ सदिखन सीदित रहथि । एहि मानसिक क्लेशक कारणेँ ओ रुग्ण रहऽ लगलाह । पारिवारिक कलहसँ दूर रहबाक उद्देश्यसँ ओ अपन बेसी समय खाजासराय स्थित 'डेरापर' बिताओल करथि ।

डेरा पर : लहेरियासरायमे आफिसर्स क्वाटर्ससँ पच्छिम मिडिल स्कूलक निकट हथौड़ी रोडक तिनबट्टीसँ सटले सड़कक पच्छिम राजदरभंगाक एकटा सात-आठ बीघाक कोठी छलैक । एहिमे सड़क दिससँ पैघ मकान ओ तकरा पाछाँ खेत, चभच्चा, गाछी, बँसबिट्टी, तड़बनी आदि छलैक । कोनो समयमे राजक एकटा मनेजर गौरीशंकर प्रसादक ई कचहरी छलनि । पाछाँ ई राजनगरक जिम्मामे चल गेल । उनैसम शताब्दीक अन्तिम चरणमे एहि कोठीक स्थानीय व्यवस्थापक छलाह रामशरणझा । हुनक मृत्युक पश्चात कपिलेश्वरझा हुनक स्थान लेलनि । राजक जे पुरना मकान छलैक से भूकम्पमे ध्वस्त भऽ गेलैक । ओकर किछुए अंश सुरक्षित रहि सकल छल । यैह कहबैत छल- डेरा । कपिलेश्वरझाकेँ राजदरभंगाक राजनगर कार्यालयसँ वेतन भेटैत छलनि तथा भूमिक बन्दोवस्ती सेहो हिनकहि भेटैत छलनि । तेँ ओहि क्षेत्रक वास्तविक मालिक यैह बूझल जाइत छलाह ।

Scanned by CamScanner

खाजासरायक एहि डेराक चारू कातक क्षेत्र ओहि समयमे बुद्धिजीवीक केन्द्र मानल जाइत छल । महात्मा गान्धीक सहयोगी प्रसिद्ध अधिवक्ता ब्रजकिशोर प्रसाद, धरणीधर प्रसाद, प्रियनाथमित्र, हरिवंशी सहाय, शिवनारायणसिंह आदि लोकनिक आवास एही ठाम छलनि । खराड़ी ओ केओटसा-बरुआरीक डेउढ़ी, पुस्तक भंडारक अधिष्ठाता रामलोचनशरणक फुलवाड़ी ओ गोदाम एही डेराक अगल-बगलमे छलनि । कपिलेश्वरझाकेँ अपन एहि ठामक उक्त प्रतिवेशी लोकनिक संग बड़ आपकता छलनि । हिनका लोकनिक संग निरन्तर साहचर्यमे रहबाक कारणेँ कपिलेश्वरझाकेँ देश-दुनियाँक बात बुझबाक अवसर भेटल करनि । ब्रजकिशोरबाबूक पुत्रक संगे हिनक विशेष घनिष्ठता रहनि । दुनू परिवारक बीच खान-पीन, आन-जानक सम्बन्ध छलनि । कपिलेश्वरझाक छोट बहिन रामसखी ओ ब्रजकिशोरबाबूक पुत्री तथा जयप्रकाशनारायणक पत्नी प्रभावतीक बीच बहिनपा लागल छलनि ।

माता

रामदेवझाक माय देवयतीक विवाह सहोड़ा निवासी पं. जीतलालमिश्र बड़ मनोरथसँ कबिलपुरक निट्ठाह गृहस्थ परिवारक कर्मठ ओ पटु बालक कपिलेश्वरझासँ कयलथिन । जीतलालमिश्र स्वयं सहोड़ाक भगिनमान रहथि । केतुका (दरभंगा) निवासी वत्स गोत्रीय हरिअम्मय-आही मूलक भलमानुस वंशक संस्कृत पंडित कालिकामिश्रक विवाह सहोड़ाक शकिलवारे मूलक श्री-सम्पन्न जमीन्दार परिवारक कन्यामे भेल छलनि । कालिकामिश्र अपन सासुरमे बसलाह वा नहि से केओ कहनिहार नहि अछि, परन्तु हुनक पत्नी अपन तीनगोट पुत्रक संग नैहरेमे रहि गेलथिन । हुनक सबसँ ज्येष्ठ पुत्र छलथिन जीतलालमिश्र । जीतलालमिश्रक ममियौत छलथिन सहोड़ाक श्यामसुन्दरचौधरी प्रसिद्ध नन्हकूबाबू । जीतलालमिश्रकेँ एक गोट बालक ओ ताहिसँ छोटि तीनटा कन्या छलथिन । एहिमे जेठि कन्या छलथिन देवयती, जनिक दुलारक नाम छलनि बच्चादाइ ।

माय-बापक अतिशय दुलारी बच्चादाइ अत्यन्त गुणवती छलीह । लिखिया-पढ़िया, गीत-नाद, सियाइ-कढ़ाइ, सीकी-मौनी आदि सब लूरि-व्यवहारमे निपुण, तेहने व्यवहार-पटु । जखन अपन बेटीक विवाहक घटकैती हेतु जीतलालमिश्र कबिलपुर गेल छलाह तँ अपन कन्याक साक्षरा होयबाक प्रमाणस्वरूप बच्चादाइसँ पोड़ोक पाकल भुटकाक रंगमे कड़चीक कलमसँ कागतपर अपन, अपन पिता ओ पितामह तथा गामक नाम लिखबा कऽ लऽ गेल छलाह । एतावता 1913मे रामशरणकझाक कनिष्ठ पुत्र कपिलेश्वरझाक संग हिनक विवाह सम्पन्न भेलनि ।

द्विरागमन भऽ कऽ सासुर अयलाक बाद बच्चादाइकेँ सासुक स्नेह नहि भेटलनि । जा धरि ई अबोध छलीह ता धरि बेसी काल नैहरेमे रहथि । मुदा जखन सज्ञान भेलीह तखन हरसट्ठे नैहर जायब बन्द कऽ देलनि । अपना प्रति सभक प्रतिकूल व्यवहारकेँ देखितो मुँहपर सपटी लगौने सब किछु सहैत रहलीह । विवाहक 23 बरखक बाद हिनक आँचर भरलनि । ओहि समयमे कपिलेश्वरझाक वयस तैंतालिस ओ बच्चादाइ एकतीस बरखक रहथि । हिनक एहि नव समाचारसँ सासुरमे कोन तरहक प्रतिक्रिया भेल से नहि कहल जा सकैछ, मुदा नैहर सहोड़ामे हर्षक सागर उमड़ि पड़ल । पिता अपन बेटीकेँ लेयाओन करा कऽ लऽ गेलथिन । सहोड़ामे सन 1343 साल अर्थात 1936 इ. क अगस्त मासमे श्रावणी पूर्णिमाक दिन (शैक्षणिक प्रमाण-पत्रमे 3 मइ 1936)बच्चादाइ एकटा पुत्रकेँ जन्म देलनि । रामक परम भक्त मातामह जीतलालमिश्र अपन एहि प्रथम दौहित्रक नाम रखलनि- रामदेव । रामदेवक जन्मक चारि साल बाद 1940मे बच्चादाइकेँ दोसरो पुत्र भेलनि, जनिक नाम राखल गेल-बलदेव ।

यद्यपि रामदेवक जन्मक संग बच्चादाइपर लागल बाँझिनक अभिशाप समाप्त भऽ गेलनि, परन्तु कबिलपुरमे पिताक अतिरिक्त परिवारक अन्य लोकक मनमे हर्षक स्थानमे विषादेकेँ जन्म देलक । अपन एहि नवजात प्रथम पुत्रकेँ लऽ कऽ जखन ओ अपन सासुर कबिलपुर अयलीह तँ एहि ठामक दुर्व्यवहारमे वृद्धिए भऽ गेल । कुलमे बेटा जन्मक उत्साहक कोन कथा, उनटे किछु गोटाकेँ विषाद भऽ गेलनि जे पटीदार जन्म लऽ लेलक । दुनू माय-पूतक अवहेलना कयल जाय लगलनि । बच्चादाइकेँ भेलनि जे एहि स्थितिमे अपन सन्तानकेँ पोसबाक कोन कथा, ओकर प्राणरक्षा

Scanned by CamScanner

करबो असम्भव भऽ जायत । एहनामे एकदिन कुशल-क्षेमक जिज्ञासामे हुनक जेठभाय रामजतनमिश्र अयलथिन । बच्चादाइ अपन मातृत्वपर नियन्त्रण रखैत, अपन छातीकेँ वज्र बना कऽ दुधमुँहा शिशुकेँ अपन भायक कोरमे दऽ कऽ पालन-पोषणक हेतु सहोड़ा पठा देलथिन ।

बाल्यकाल

मायक दूध छोड़ा कऽ अबोध शिशुकेँ मातृक लऽ आनल गेलनि । मातामही सीतासुन्नरि पाथरपरक दूभि सन अपन नातिकेँ करेजसँ सटा लेलनि । गायक दूधपर बच्चाकेँ पोसल जाय लागल । एतहि रामदेव बाजब सिखलनि, डेगा-डेगी दऽ कऽ चलब सिखलनि । बच्चा भरि घरक खेलौना बनि गेल । नाना-नानी, मामा-मौसी, ममियौत भाइ-बहीन सभक अजस्र स्नेह पबैत रामदेवक बाल्यावस्था ओतहि बितलनि ।

ठाकुरजीक भरिया : हिनक मातामहक परिवार वैष्णव रहनि, सेहो दुद्धा वैष्णव । ठाकुरजीक विशेष पूजा होइनि । राम-सीता ओ गोपालजीक विग्रहक संग-संग शालग्राम-नर्मदेश्वर तथा महावीरजीक मूर्त्ति सब एकटा विशेष सिंहासनपर सजाओल रहैत छलनि । विष्णुक प्रति हुनका लोकनिक विशेष आस्थाहिक कारणे अपन परिवारक अधिकांश बच्चाक नामकरण रामहिक नामपर कयल गेल छल । जीतलालमिश्रक ममियौत नन्हकूबाबूकेँ सेहो ठाकुरजी रहथिन । कोनो अशौचक स्थितिमे ओ ठाकुरजीकेँ मिश्रजीक ओतऽ पठा देल करथिन । तहिना मिश्रजीक ओहि ठामसँ सेहो ठाकुरजीकेँ हुनका ओतऽ पठा देल जाइत छलनि । परगोत्री होयबाक कारणेँ बालक रामदेवकेँ बेसी काल ठाकुरजीक भरिया बनबाक सौभाग्य भेटल करैत छलनि । एहि धार्मिक वातावरणक प्रभाव बालक रामदेवक संस्कारपर पड़ैत चल गेलनि ।

साधु संगति : हिनक एहि आस्थावादी संस्कारकेँ औरो बेसी सुदृढ कयलक हिनक साधु-संगति । रामदेवक एकटा मातामह-भ्राता अर्थात् जीतलालमिश्रक कनिष्ठ सोदर रहथिन बिहारीमिश्र । बिहारीमिश्र बाल ब्रह्मचारी नागा सन्त छलथिन । हुनक आहार दूध मात्र छलनि । अपन जीवनक आरम्भिक कालमे बिहारीमिश्र विभिन्न तीर्थादिक भ्रमण करैत साधनामे लागल रहलथिन । वृद्ध भेलापर अपन गाममे दलानेपर धूनी रमा कऽ रहऽ लागल छलथिन । हुनक दर्शनार्थ दूर-दूरसँ श्रद्धालु लोकनि अबैत रहैत छलथि । इलाकामे नागाबाबा नामसँ प्रसिद्ध सन्त बिहारीमिश्र पहर रातियेसँ बाँसुरीक संग पराती ओ भजनक टाहि उठा देल करथिन । शिशु रामदेवकेँ नागाबाबाक सान्निध्य ओ आशीर्वाद भेटल करनि । रामदेव जँ-जँ बोधगर भेलाह तँ-तँ नागा बाबाक प्रति हुनक अन्तस्मे भक्ति आ अनुरक्ति बढ़िते गेलनि । बालक रामदेव हुनक विशेष सेवा-टहलमे रहल करथि । नागाबाबा जखन वैकुण्ठवासी (माघ, 30 जनवरी, 1948) भेलाह तँ रामदेवकेँ मातामही हुनक बाँसुरीकेँ नागाबाबाक आशीर्वाद कहि कऽ दऽ देलथिन । ओ बाँसुरी एखनहुँ हिनक परिवारमे जुगता कऽ राखल छनि । नागाबाबाक स्मृतिस्वरूप राखल एहि पित्तरिक बाँसुरीक नित्यप्रति पूजा कयल जाइछ ।

कहबी छैक जे कोनो बच्चाकेँ दूरि करबाक हो तँ ओकरा मातृकमे छोड़ि दी, मुदा रामदेव एकर अपवाद भेलाह । मातामह जीतलालमिश्र अपन दौहित्रकेँ शिक्षित-संस्कृत करबाक प्रति विशेष साकांक्ष रहल करथि । संस्कृतक पंडित, कर्मकांडी मातामह अपन दौहित्रकेँ सन्ध्या-वन्दन, पूजा-पाठक समय अपना लगमे बैसा कऽ रखथिन । नाना प्रकारक श्लोक ओ सूक्ति सब रटबथिन ।

मैञाक दुलार : मातामही सीतासुन्नरिकेँ परिवारक बच्चा सब मैञा कहल करनि तेँ रामदेव सेहो नानी नहि कहि हुनका मैञे कहल करथिन । मैञा विभिन्न विधि-बाधक विशेष ज्ञान रखबाक कारणे ओ लूरि-व्यवहार, गीतनादमे पटु रहबाक कारणे गामभरिमे पंडिताइन मानल जाथि । कोनो काज-प्रयोजनक अवसरपर हुनकेसँ पूछल जाइनि । मातामही नित्य सूतऽ कालमे अपन नातिकेँ रंग-विरंगक खिस्सा-पिहानी सुनबथिन । मैञाक मुँहेँ सुनल अनेक गीत, फकड़ा, कहबी आदि जेना बालक रामदेवकेँ कण्ठस्थ होइत चल गेलनि आ क्रमश: हिनक लौकिक संस्कार दिन-प्रतिदिन प्रगाढ़ होइत चल गेलनि ।

Scanned by CamScanner

रामदेवक मातृक सहोड़ासँ सटले अछि आनन्दपुर । सहोड़ा-आनन्दपुर नामसँ इलाकामे ख्यात एहि परिसरक अपन फराके सांस्कृतिक महत्त्व रहलैक अछि । आनन्दपुर डेउढ़ीक खरोड़य बबुआन लोकनिक जेहने बबुआनी नामी तेहने ओहि ठामक दुर्गापूजाक मेला प्रसिद्ध । सहोड़ा गाममे सेहो जमीन्दारी वैभवक प्रतीक स्वरूप सदिखन कोनो ने कोनो आयोजन भेले करय । जीतलालमिश्रक ममियौत श्यामसुन्दरचौधरीक दलान गाममे बड़का दलानक नामसँ प्रसिद्ध छलनि । कृष्ण, बलराम, सुभद्रा, नन्दमहर, वसुदेव, देवकी इत्यादिक मूर्त्तिक निर्माण कऽ कृष्णाष्टमी पूजा आ मेलाक आयोजन भेल करैत छल । ओहि अवसरपर भजन-कीर्त्तन, गीत-संगीत, नटुआ-पमरिया आदिक नाचक आयोजन भेल करैत छल। बालक रामदेव सेहो अपन ममियौत लोकनिक संग नाच-तमासा देखऽ जाथि । जयबा कालमे मैञा हिनका लोकनिक हाथमे तमही पैसा दऽ देल करथिन नटुआकेँ बख्शीशक रूपमे देबाक हेतु ।

मामाक छाया : रामदेवक एकमात्र माम पं. रामजतनमिश्रकेँ रंगकर्ममे विशेष अभिरुचि रहनि । उपनयनक बाद हुनका पिता संस्कृत पढ़यबाक हेतु काशी पठौलथिन । मुदा कोना ने कोना ओतऽ जा कऽ ओ नाटक-रंगकर्मसँ जुड़ि गेलाह । पश्चात् रंगकर्मेकेँ अपन वृत्ति बना पारसी थियेटर ओ रामलीला मंडलीमे रमि गेलाह । रामजतनमिश्र जाहि थियेटरसँ सम्बद्ध छलाह से हिन्दीमे तँ नाटक करिते छल, आमन्त्रण भेटलापर उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, बंगला आदि भाषहुमे नाटक खेलाइत छल । तेँ रंगकर्मी रामजतनमिश्रकेँ एहि सब भाषाक ज्ञान भऽ गेल छलनि । ओ जखन कोनो अवसरपर गाम आबथि तँ गामोमे नाटकक आयोजन होइक । बालक रामदेवकेँ नेनेसँ नाटक ओ रंगमंचक वातावरण भेटलनि ।

रामजतनमिश्र जेहने सिद्धहस्त रंगकर्मी छलाह तेहने काव्य रचनामे सेहो पटु रहथि । ओ आशुकवि छलाह । ककरोपर कविता गढ़ि देबामे निगुण । ओ 'पतित' उपनामसँ मैथिली आ ब्रजभाषा दुनूमे काव्य रचना करैत छलाह । चौगमा निवासी कविवर सीतारामझाक मातृक सेहो सहोड़े छलनि । काशी दुनू गोटेक कर्मभूमि छलनि, तेँ दुनूगोटामे बेस आपकता । सीतारामझा जखन देश आबथि तँ अपन मातृक जाथि । ओहि ठाम साहित्यिक गोष्ठी जमि गेल करय । बालक रामदेवकेँ एहि साहित्यिक गोष्ठीकेँ विशेष काल देखबा ओ सुनबाक अवसर भेटल करनि । मामक साहित्यिकता ओ मातृकक ई साहित्यिक परिवेश हिनकामे साहित्यक बीज-वपन कयलक जे क्रमशः झमटगर होइत आइ विशाल वटवृक्षक रूप धारण कऽ लेलक अछि ।

अपन गामक षड्यन्त्रमय वातावरणसँ दूर मातृकमे रामदेवकेँ स्वच्छ परिवेश भेटलनि, जतऽ नाना-नानीक असीम दुलार पबैत, स्वच्छन्द भावसँ नाटक-तमासा देखैत, सहोड़ाक अपन बाल संगी अपन जेठ ममियौत भाइ-बहीन रामसुजान ओ रामकलाक संग बाध-बोन, पोखरि-झाँखरि, गाछी-बिरछी, खेत-पथार घुमैत हिनक बाल्यावस्था बितलनि ।

शिक्षा-दीक्षा

रामदेवकेँ हुनक मातृकहिमे भट्ठा धराओल गेलनि । जखन ई पाँच वर्षक भेलाह तँ वसन्तपंचमीक दिन मातामह भट्ठासँ धरतीपर 'आँजी सिद्धिरस्तु' आ 'ओनामासीधं' दुनू लिखा विद्यारम्भ करौलथिन । तत्पश्चात् हिनक नामांकन सहोड़ाक लोअर प्राइमरी स्कूलमे कराओल गेलनि । रामदेव जखन लोअरमे रहथि तावत धरि हिनक माता-पिता अपन परिवारसँ भिन्न भऽ थोड़ेक व्यवस्थित भऽ गेल रहथिन । अपन जेठ बालककेँ निर्भय भऽ कऽ गामपर राखि पढ़यबाक विश्वास भऽ गेलनि, तखन ओ लोकनि रामदेवकेँ कबिलपुर लऽ अनलथिन ।

गाम अयलाक बाद डेरापरसँ निकट रहबाक कारणेँ खाजासरायक अपर प्राइमरी स्कूलमे हिनक नाम लिखाओल गेलनि ।

सम्पर्क विस्तार : एहि स्कूलमे आबि कऽ रामदेवकेँ पहिल बेर ब्राह्मणसँ इतर वर्गक विस्तृत मैथिल समाजकेँ निकटसँ देखबाक ओ संग रहबाक अवसर प्राप्त भेलनि । खाजासराय स्कूलमे सवर्णक विशेषतः ब्राह्मण छात्रक संख्या अत्यल्प । ताहि तुलनामे राजपूत आ कायस्थक संख्या बेशी । मुख्यतः एहि स्कूलमे धुनिञा आ कुजरा जातिक

Scanned by CamScanner

मुसलमान, सूड़ी, हलुआइ, तेली, मलाह, कुम्हार, लहेरी, यादव, मोची आदि जातिक धीयापुता सब पढ़ैत छल । मिथिलाक एहि सर्वजन समाजक संग हिनक सान्निध्य-लाभ हिनक भावी साहित्यिक जीवन ओ साहित्य-धाराक दिशाकेँ जेना निश्चित कऽ देलक । एहि स्कूलक बहुतो सवर्णेतर मित्रसँ आइयो हुनका ओतबे घनिष्ठता छनि ।

इतिहास पुरुषक अबोध दर्शन : एही खाजासराय मोहल्लामे डेरा रहनि महात्मा गान्धीक अनन्य सहयोगी वकील बाबू धरणीधर प्रसादजीक । ओहि समयमे ओ शहरक प्रबुद्धतम व्यक्तिमेसँ एक मानल जाइत छलाह । 1945मे जखन बूढ़-झुनकुट भऽ गेल रहथि, हुनकहि डेराक सामने दऽ कऽ रामदेवक स्कूल अयबा जयबाक बाट छलनि । से स्कूलक शिक्षक लोकनि रामदेवकेँ दूटा काजसँ नित्यप्रति धरणीधरबाबूक डेरापर पठबैत छलथिन । पहिल बेर टिफीनक छुट्टीमे हुनका ओतऽसँ अखबार अनबाक हेतु आ दोसर बेर छुट्टीसँ पहिने अखबार दऽ कऽ हुनका ओतऽसँ समय बूझि कऽ आबऽ लेल, जाहि आधारपर ठीक चारि बजे स्कूलक छुट्टीक घंटी बजाओल जाइत छल ।

धरणीधरबाबूसँ कपिलेश्वरझाकेँ पूर्वहिसँ आपकता छलनि । प्रतिदिनक आवाजाहीसँ ओ रामदेवकेँ सेहो नीक जकाँ जानि गेल छलथिन । ई जहाँ हुनका ओतऽ पहुँचथि की ओ अपनेसँ अखबार लऽ कऽ दैत पुछथिन- मन लगाकर पढ़ते हो न ?' रामदेव अपन मूड़ी डोला देथि । दोसर बेर जखन ई अखबार आपस करऽ जाथि तँ ओ टेबुलपर राखल टाइमपीस दिस एक नजरि देखि समय कहि देल करथिन । एक दिन धरणीधर बाबू कोनो काजमे लागल रहथि । रामदेव अखबार टेबुलपर राखि चुपचाप प्रतीक्षा करऽ लगलाह । धरणीधरबाबू हिनका थकमकायल ठाढ़ देखि कहलथिन- घड़ीमे देखकर बताओ कितना बजा है ?' रामदेव अकबका गेलाह । तथापि ओ घड़ी दिस देखलनि । दूर बैसल धरणीधरबाबू मुस्कियाइत पुछलथिन- बताओ कितना समय हुआ है ?' रामदेव अन्दाजेसँ कहलथिन- जी, चारि बाजि गेलै ।'

-ओ ! तो तुम जल्दी छुट्टी करबाना चाहते हो । घर जाने की जल्दी है क्या ? भूख लग गयी है !' एतेक कहैत धरणीधरबाबू पुनः अपनेसँ उठि कऽ अयलथिन । घड़ीमे तखन साढ़े तीने भेल रहैक । ओ बूझि गेलथिन जे एहि बच्चाकेँ घड़ी देखऽ नहि अबैत छैक । ओ अत्यन्त स्नेहसँ रामदेवकेँ बैसाय ओहि दिन घड़ी देखब सिखौलथिन । तकर बाद तँ रामदेवकेँ हुनकासँ समय पुछबाक प्रयोजने नहि रहि गेलनि । धरणीधरबाबू हँसैत कहथिन- बहुत काबिल हो गया है कपिलेश्वरझा का लड़का' । ताहि दिन की रामदेव जनैत रहथि जे जाहि व्यक्तिक संग हुनक प्रतिदिन गप्प होइत छनि से कोनो सामान्य हस्ती नहि, इतिहास पुरुष छथि । महात्मा गान्धीक आत्मकथामे जहिया ई धरणीधरबाबूक नाम देखलनि, तहिया ई चौंकल रहथि आ अपनापर गर्व भेल रहनि ।

भारत बालमंडली : अपर प्राइमरी पास कयलाक बाद रामदेवक नाम लहेरियासराय मिडिल इंगलिश स्कूलमे लिखाओल गेलनि । ओहि समयमे इलाकामे गुलटेनी स्कूल (गुरु ट्रेनिंग स्कूल) नामसँ प्रख्यात एहि स्कूलक जिलामे बड़ प्रतिष्ठा छलैक । ताहि दिन देशमे स्वतन्त्रता आन्दोलनक लहरि चरमपर छल । बच्चा-बच्चामे अंग्रेजी अत्याचारक प्रतिशोध लेबाक भावना जेना जागि गेल छलैक । स्कूलक हेडमास्टर रामदेवसिंह रहथि, नित्य खद्धड़क धोती-कुर्त्ता ओ गान्धी टोपी पहिरनिहार । मिडिल स्कूलमे अयला उत्तर रामदेवक मित्र मंडलीक परिधि औरो बेसी बढ़लनि । एहिनामे एक दिन राष्ट्रवादी भावनासँ प्रेरित भऽ रामदेवक अपन वर्गक दस गोट छात्रक एकटा गुप्त **भारत बालमंडली** बनल छल । एहि मंडलीक नियमित बैसाड़ स्कूलक छुट्टीक बाद कोनो एकान्त स्थानमे भेल करैत छल । एहि मंडलीमे हिनका अतिरिक्त रामबिहारीझा (देकुली), गंगाप्रसादझा (कबिलपुर), रामाश्रयउपाध्याय (कबिलपुर), वामदेवझा (थलवार), दिगम्बरचौधरी, आशनारायणचौधरी, नरसिंह चौधरी (तीनू पनिचोभ), महेन्द्रनारायण मण्डल इत्यादि व्यक्ति छलथिन । एहि मंडलीक बैसाड़मे एकदिन एकटा छूरा किनबाक निर्णय लेल गेल । एकर पाछाँ उद्देश्य छल जे जँ कदाचित् 'गोर्रा पलटन' मंडलीक कोनो सदस्यकेँ पकड़त वा किछु कहत तँ सब गोटा मीलि कऽ एहि छूरासँ ओकर प्रतिकार करताह । बैसाड़मे एहू बातक निश्चय भेल जे मंडलीक प्रत्येक सदस्य लग एक-एक दिन ओ छूरा रहत आ ई चक्र निरन्तर चलैत रहत । छूरा किनबाक हेतु मंडलीक प्रत्येक सदस्य द्वारा किछु किछु पैसा बेहरीमे देल गेल ।

Scanned by CamScanner

एक दिन चुपचाप बजारसँ छूरा कीनि कऽ लऽ आनल गेल । मुदा भारत बाल मंडलीकेँ ओहि छूराक प्रयोगक प्रयोजने नहि पड़लैक । 15 अगस्त 1947केँ देश स्वतन्त्र भऽ गेल । स्वतन्त्रता आन्दोलनक ओ अन्तिम समय रामदेवक बाल-मनपर कोन तरहक राष्ट्रवादी प्रभाव अंकित कयलक तकर अभिव्यक्ति छल ओ घटना । हिनक चिन्तन, साहित्य-लेखन ओ व्यक्तित्वमे जे असीम राष्ट्रप्रेम निहित अछि तकर उत्स एहि घटनामे ताकल जा सकैछ ।

शिक्षामे व्यवधान

1948मे मिडिल बोर्डक परीक्षा पास कयलाक बाद 1949क जनवरीमे सरस्वती हाइस्कूल (एम.एल.एकेडमी, लहेरियासराय)मे रामदेवक नाम लिखाओल गेलनि । उत्साहसँ भरल छात्र रामदेव स्कूल जायब प्रारम्भे कयलनि कि हठात् एकटा नव संकट आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेलनि । फरीक दिससँ देल जाइत मानसिक यातनाकेँ सहैत-सहैत हिनक पिता रुग्ण भऽ गेलथिन । हृदयशूलक रोगसँ पीड़ित भऽ ओछाओन धऽ लेलथिन । खेती-बारी सबटा चौपट होअऽ लगलनि । खाजासरायवला डेरा जे आयक बड़ पैघ स्रोत छल तकर 1949मे दरभंगा राज बन्दोवस्ती समाप्त कऽ जमीने बेचि देलक । कपिलेश्वरझाकेँ राजसँ जे वेतन भेटैत छलनि सेहो स्थगित कऽ देल गेलनि । लागल जेना चारू दिससँ एकहि बेर परिवारपर संकटक आक्रमण भऽ उठल । हिनक चिर शत्रु लोकनिकेँ ई नीक अवसर भेटलनि । ओ लोकनि नाना प्रकारक उपद्रव करऽ लगलथिन । स्थिति एहन भऽ गेल जे रुग्ण पिताकेँ कोनो उपाय नहि बुझा रहल छलनि जे अपन चिकित्सा कराबथु, की दुनू बेटाकेँ पढ़ाबथु, आ कि चारि प्राणीक बुतात जुटाबथु । रामदेवक पढ़ाइ कोना छूटि जाउन ताहि हेतु फरीक लोकनि प्रतिदिन एकटा कऽ नव षड्यन्त्र रचि हिनका ओझरा देल करथिन । कतहु कोनो मरनी-हरनी भेल कि अपन समाङसँ लऽ कऽ हुनक किछु पक्षधर लोकनि ठोंठपर सवार भऽ कऽ ई कहैत हिनका कठियारी चलऽ कहथिन जे अपन बाप ओछाओन धेने छौ मरतौ तँ के उठेतौ ?' लाचार, अप्रतिभ बनल रामदेवकेँ अपन जमीन-जालक ताक-क्षेम ओ सामाजिकताक निर्वाह हेतु स्कूल छोड़ऽ पड़ि जाइनि ।

प्रेसक शरणमे : स्थिति अन्ततः तेहन भऽ गेल जे रामदेवकेँ छमाही परीक्षामे नीक अंक पबितो पढ़ाइ छोड़ि देबऽ पड़लनि । घरक गाड़ी खिचबाक हेतु हुनका कोनो उद्यम करब आवश्यक भऽ गेलनि । ओहि समयमे कन्हैयामिश्र पोखरिपर मन्नाबाबूक प्रकाश प्रेस चलैत छलनि । रामदेव ओहि प्रेसमे कम्पोजिंगक काज सीखऽ लगलाह । एक साल काज सिखलाक बाद हुनका प्रेस दिससँ प्रतिमास किछु टाका भेटऽ लगलनि । ई टाका हुनका हेतु बड़का सम्बल बनलनि । एहिसँ कोनहुना अपन न्यूनतम आवश्यकता पूरा कयल करथि ।

एक तरहेँ ई निश्चित जकाँ भऽ गेल जे घोर आर्थिक संकटक कारणेँ रामदेवक पढ़ाइ आब आगू नहि भऽ सकतनि । एही प्रेस लाइनमे ओ आगू बढ़थि । मुदा ईश्वरक विधान तँ किछु दोसरे छल । ओ तँ हिनका लोकनिक धैर्यक परीक्षा लऽ रहल छलथिन । प्रेसमे कोनो महत्त्वपूर्ण सरकारी फारम छपि रहल छलैक । प्रिंटिंग मशीनपर फर्मा चढ़ि गेल छलैक । मुदा कम्पोजिंगमे कोनो बड़ पैघ त्रुटि रहि गेल छलैक । फारम छपब प्रारम्भ भऽ गेल की तखन ओहि त्रुटिपर रामदेवक दृष्टि गेलनि । ओ तत्काल प्रेसक मैनेजर अलखबाबूकेँ एकर सूचना देलथिन । प्रेस मैनेजर आबि कऽ देखलक तँ सन्न रहि गेल । छपाइ रोकि देल गेलैक । अलखकुमार सिन्हा रामदेवकेँ भरि पाँज कऽ धरैत कहलथिन-बड़का नोकसानसँ तोँ हमरा बचा लेलह ।'

एकर बाद तँ रामदेव प्रेस मालिक ओ मैनेजरक प्रियपात्र बनि गेलाह । दुनू गोटा हिनका अपन बेटा जकाँ मानऽ लगलनि । प्रेसक मैनेजरकेँ जखन ई बूझल भेलनि जे आर्थिक संकटक कारणेँ रामदेव पढ़ाइ छोड़ि देलनि अछि तँ हुनका एहि बातक बड़ पीड़ा भेलनि । ओ रामदेवक पीठ ठोकैत कहलथिन - तोँ फेरसँ अपन पढ़ाइ सुरू करह, भगवान सबटा पार लगौथुन ।'

छापाखानामे बीतल रामदेवक बालजीवनक ई डेढ़ दू वर्ष अत्यन्त कष्टप्रद ओ संघर्षमय रहलनि । मुदा एहि दू वर्षमे हिनका जे प्रेसक ज्ञान भेलनि से हिनक भावी साहित्यिक जीवनक बड़ पैघ सम्बल बनलनि । छपराक सखी

Scanned by CamScanner

सम्प्रदायक तेसर पीढ़ीक सन्त प्रदीप सखी, अपन सम्प्रदायक संस्थापक सन्त लक्ष्मी सखीक पदक संग्रह 'अमर कहानी' प्रकाश प्रेसमे अपनहि देख-रेखमे छपबैत रहथि । ओ हिनक भाषा ज्ञान, प्रूफ करेक्शनमे पटुता आदिसँ ततबा प्रभावित भेल छलाह जे ओ अपन 'अमर कहानी'क मुद्रणक मुख्य दायित्व हिनकहिपर दऽ देलथिन । हिनक कार्यक प्रति एकाग्रता ओ समर्पण देखि बाबा प्रदीप सखी माथ ठोकि आशीर्वाद दैत 'अमर कहानी' क एक प्रति प्रदान कयने छलथिन जे सम्प्रतियोमे ओ पुस्तक हिनक संग्रहमे विद्यमान छनि ।

पढ़ाइ पुनः पटरीपर

एकटा नव संकल्प ओ अभिनव आत्मविश्वासक संग 1951मे एम.एल. एकेडमीक आठम वर्गमे रामदेव पुनः अपन नाम लिखौलनि । 1950मे उच्च विद्यालयमे पुरना पाठ्य-पद्धतिक स्थानमे नव पाठ्य प्रणाली लागू भेलैक । एहि प्रणालीमे आठमे वर्गमे छात्रकेँ चुनाव करबाक रहैत छलैक जे ओ विज्ञान पढ़य वा कला ! विज्ञानोमे गणित सहित पूर्ण विज्ञान अथवा बायोलोजी सहित विज्ञान । गणित सहित विज्ञानक छात्रक हेतु आगाँ इंजीनियरिंगमे जयबाक विकल्प भेटैत छलैक । बायोलोजीक छात्रकेँ मेडिकलक पढ़ाइ कऽ डाक्टर बनबाक अर्हता भेटैत छलैक । भविष्यमे डाक्टर बनबाक संकल्पक संग रामदेव बायोलोजी सहित विज्ञान पढ़बाक निश्चय कयलनि ।

ओहि समयमे एम्.एल्. एकेडमीमे आठमसँ एगारहम वर्ग धरि तीन गोट सेक्सन रहल करैत छलैक । समान भाषा पत्र सहित सेक्सन- Aमे एडवान्स गणित सहित विज्ञान विषय, सेक्सन- Bमे गणित ओ विज्ञानसँ इतर इतिहास-भूगोल इत्यादि विषय तथा सेक्सन- Cमे बायोलोजी सहित विज्ञानक विषय । रामदेव भविष्यमे डाक्टर बनबाक उद्देश्यकेँ ध्यानमे राखि बायोलोजी विषय रखलनि आ सेक्सन- C केर विद्यार्थी बनलाह । आठम वर्गक छमाही परीक्षामे ई फर्स्ट कयलनि । हिनक मेधा ओ लगनसँ प्रभावित भेल कठोर अनुशासनक लेल प्रसिद्ध स्कूलक प्रधानाचार्य झिंगुरकुमर हिनका फुल फ्री-स्टुडेंटशिप दऽ देलथिन । ओमहर पिता सेहो मिश्रटोलाक वैद्य श्रीधरमिश्रक चिकित्साक कारणे पूर्वक अपेक्षा नीकेँ होअऽ लागल छलथिन । माय बच्चादाइ अपन साहस ओ श्रमसँ परिवारक बिखरल व्यवस्थाकेँ क्रमशः सरिआबय लगलीह । एवं प्रकारेँ जेना-तेना परिवारक गाड़ी घिचाय लागल ।

श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर'सँ निकटता

ओहि समयमे एम.एल.एकेडमीमे मैथिली-हिन्दीक शिक्षक रहथि स्वनामधन्य मनीषी साहित्यकार पं. श्री चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' । अमरजीक पारखी दृष्टि रामदेव सन प्रतिभाशाली छात्रपर पड़लनि । अमरजी एक दिस कठोर अनुशासन ओ समय पालनक पर्याय छलाह तँ दोसर दिस स्कूलमे साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजनक प्रतीक सेहो । स्कूलमे प्रतिवर्ष सरस्वती पूजाक भव्य आयोजन भेल करैत छलैक । पूजाक अवसरपर विशेष सांस्कृतिक आयोजन होइत छलैक जकर कर्त्ता-धर्त्ता अमरहिजी रहैत छलाह । छात्र रामदेवक सांस्कृतिक चेतना ओ साहित्यिक रुचि हिनका अमरजीक प्रियभाजन बना देलकनि । रामदेव स्कूलक प्रत्येक आयोजनमे बढ़ि-चढ़ि कऽ हिस्सा लेबऽ लगलाह । अमरहिजीक सान्निध्यक कारणे हिनका मातृभाषा प्रेमक पहिल पाठ पढ़बाक अवसर भेटलनि आ मैथिलीक हेतु सर्वस्व अर्पण कऽ देबाक भावना विकसित होअऽ लगलनि ।

मैथिली प्रेम बनल संकटक कारण

अमरजी जहिया एम.एल.एकेडमीमे ज्वाइन कयने रहथि तहिया ओहि ठाम मैथिलीक हेतु अनुकूल वातावरण नहि छलैक । स्कूलमे मैथिलीक जड़ि रोपबाक हेतु अमरजीकेँ बड़ संघर्ष करऽ पड़ल छलनि । स्कूलमे हिनक प्रबल प्रतिद्वन्द्वी रहथिन हिन्दीक शिक्षक महेशशर्मा 'प्रभाकर' । पतोर (दरभंगा) निवासी मैथिल ब्राह्मण शर्माजी मैथिलीक प्रबल विरोधी । ओ अपप्रचार कयल करथिन जे भुसकौल छात्र सब मैथिली पढ़ैत अछि । तेँ अमरजीक वर्ग पर्यन्तसँ ओ छात्र सबकेँ बलजोरी उठा कऽ लऽ जाथिन ।

Scanned by CamScanner

नवीन पाठ्य-प्रणालीमे अंगरेजी, राष्ट्रभाषा हिन्दी (उच्चस्तर एव अहिन्दी भाषीक हेतु निम्न स्तर) आ मातृभाषा अनिवार्य विषय छलैक । मातृभाषा पत्रमे आब मैथिलीयोकेँ स्थान भेटि गेल छलैक । एहि बातक जनतब अमरजी छात्र लोकनिकेँ विधिवत् दऽ देने छलथिन । विद्यालयक प्रधानाध्यापक झिंगुरकुमर मैथिली विरोधी छलाह से बात नहि । कला-विषय (B-सेक्सन)क छात्रकेँ ई सुविधा सहजेँ प्राप्त छलैक । परन्तु विज्ञान-विषय (सेक्सन- B एवं C)क छात्र मैथिली पढ़य तकर पक्षपाती नहि छलाह । आ एहि धारणाकेँ शर्माजी प्रयत्नपूर्वक पोख्ता करैत रहैत छलथिन ।

आठम वर्गमे सर्वोच्च स्थान प्राप्त कयनिहार रामदेव सन मेधावी छात्र एम.एल.एकेडमीमे अमरजीक टीममे चल गेलाह । अमरजीक निर्देशनमे ई नाटक सबमे भाग लेथि । स्कूलक साहित्यिक गोष्ठीमे सक्रिय रहल करथि । ई बात शर्माजीकेँ नीक नहि लगनि । शर्माजी हिनका एकान्तमे बजा कऽ बेसी काल पाठ पढ़बथिन, अमरजीक विरोधमे भड़कबथिन, मातृभाषा पत्रमे हिन्दी पढ़बाक हेतु कहथिन । मुदा रामदेवपर तँ मातृभाषा प्रेम से प्रगाढ़ भऽ गेल छलनि, जाहिपर चढ़ो न दूजो रंग । आरम्भिक वर्षमे रामदेवकेँ मैथिली पढ़बाक अनुमति नहि भेटलनि । परन्तु ओ बेर-बेर हेडमास्टर साहेब लग मातृभाषा मैथिली पढ़बाक दुराग्रह करैत रहलाह । अन्ततः हेडमास्टरकेँ अनुमति देबऽ पड़लनि ।

रामदेव स्कूलक परम्पराक विपरीत विज्ञानक छात्र होइतो मातृभाषा पत्रमे मैथिली रखलनि । रामदेवक देखा-देखी हुनक बायोलोजी वर्गक अधिकांश छात्र लोकनि मैथिलीए राखि लेलनि । स्कूलमे मैथिलीक झंडा बुलन्द भऽ उठल । तिलमिला उठलाह शर्माजी । हुनका अछैत हिन्दीमे छात्रक अकाल भऽ उठल । ओ एहि स्थितिक हेतु शिक्षक अमरजी ओ छात्र रामदेव अर्थात् एहि गुरु-शिष्यकेँ उत्तरदायी मानऽ लगलाह । हिनका दुनूक प्रति मोनमे एकटा कुन्नह भऽ गेलनि ।

स्कूलमे मैथिलीक हवा चलि पड़ल छलैक । विज्ञानक छात्र मैथिली विषय राखय ताहिमे प्रधानाचार्य झिंगुर कुमरकेँ सेहो अनिच्छे छलनि । शर्माजी एकर लाभ उठबैत अमरजीक विरोधमे प्रधानाचार्यक कान भरऽ लगलथिन । 1954मे स्कूल प्रशासनक संग अमरजीक तनाव बढ़ऽ लगलनि । 1954क मार्चमे अकारण छात्र रामदेवक फ्री-स्टुडेंटशिप समाप्त कऽ देल गेलनि । बिना कोनो दोषक भेटल एहि दंडसँ रामदेव हतप्रभ रहि गेलाह । हिनका सन मेधावी ओ अनुशासित छात्रकेँ बिना कोनो अपराधेँ दंडित कयल जयबाक घटनासँ स्कूलक शिक्षक लोकनि क्षुब्ध भऽ उठलाह । अपन छात्रक संग भेल अन्यायक विरोधमे हिनक वर्गशिक्षक देवेन्द्रप्रसादवर्मा प्रधानाचार्य संगे भीड़ि पर्यन्त गेलथिन । वर्माजी प्रधानाचार्यसँ रामदेवक अपराध दऽ पुछलथिन । तखन प्रधानाचार्य झिंगुर कुमर स्पष्ट कयलथिन जे - महेशशर्मा अभियोग लगौलथिन अछि जे छात्र रामदेव हुनका संग अपमानजनक व्यवहार कयलथिन अछि ।'

ई सुनि कऽ वर्माजी अवाक् रहि गेलाह । ओ प्रधानाचार्यक एहि एकदिशाहे निर्णयसँ क्षुब्ध भेल कहलथिन- की अपने एहि आरोपक सम्बन्धमे छात्रकेँ अपना दिससँ सफाइ देबाक अवसर देलियै ?'

प्रधानाचार्य चुप रहि गेलाह । वर्माजी पुनः कहलथिन - की एकटा शिक्षकक रूपमे अपनेक अन्तरात्मा ई कहैए जे कोनो छात्रक जीवनकेँ एना बरबाद कऽ देल जाय !' प्रधानाचार्यकेँ तखन अनुभव भेलनि जे क्रोधातिरेकमे हुनकासँ एना भऽ गेलनि । मुदा हुनक तरकससँ तँ तीर निकलि चुकल छलनि । तखन प्रधानाचार्य कहलथिन जे जँ रामदेव लिखित रूपसँ क्षमा माँगि लेथि तँ स्कूल प्रशासन हुनक विषयपर पुनर्विचार करत ।'

रामदेव जखन अपनापर लागल एहि आरोपकेँ सुनलनि तँ ओ हतप्रभ रहि गेलाह । हुनक दोष मात्र एतबे छलनि जे ओ शर्माजीक बात नहि मानि मैथिली रखलनि । एकर अतिरिक्त जखन ओ कोनो गलती नहि कयलनि तँ ओ क्षमा किएक माँगथु ? स्वाभिमानी छात्र रामदेव स्कूलसँ टी.सी. लेबऽ लय तत्पर भऽ गेलाह ।

रामदेवक संग घटित ई घटना स्कूलमे हलचल मचा देलक । समस्त शिक्षक समुदाय स्कूल प्रशासनक विरोधमे आबि गेलाह । एहि घटना ओ स्कूलक वातावरणसँ विषण्ण भेल अमरजी सेहो एम.एल.एकेडमीक सेवासँ त्यागपत्र दऽ देबाक निश्चय कऽ लेलनि । जिला स्कूल, दरभंगाक तत्कालीन प्रधानाचार्य पी.टी.रुद्र एहि दुनू गुरु-शिष्यकेँ अपना स्कूलमे लऽ जयबाक हेतु उत्सुक भऽ उठलाह । अन्ततः प्रधानाचार्य झिंगुर कुमरकेँ भेलनि जे एकटा व्यक्ति विशेषक

Scanned by CamScanner

कारणेँ समस्त स्कूलक वातावरण विस्फोटक भऽ रहल अछि । अपन कानि उतारबाक हेतु हुनक दुरुपयोग कयल गेलनि । हुनक कठोर प्रशासक हृदय हारल, उदार शिक्षक-मन जीति गेल । ओ अमरजी सन कुशल छात्रप्रिय शिक्षककेँ बौँसि लेलनि आ रामदेव सन भविष्णु छात्रक फ्री-स्टुडेंटशिप पूर्ववत् बहाल कऽ देल गेलनि । मैथिलीक लेल अपन छात्र जीवनमे रामदेव द्वारा लड़ल गेल ई पहिल लड़ाइ छल, जाहिमे ओ विजयी रहलाह ।

वर्गमे एको दिन अनुपस्थित नहि

एम.एल.एकेडमीमे रामदेव अपन स्कूली जीवनक आठमसँ लऽ कऽ एगारहम वर्ग धरि अपन कक्षामे सर्वोच्च स्थान प्राप्त करैत रहलाह । 1955मे मैट्रिक्यूलेशन बोर्डक परीक्षामे ई प्रथम श्रेणी प्राप्त कयलनि । हिनक स्कूली जीवनक दोसर महत्त्वपूर्ण बात ई भेल जे एहि चारि वर्षक अवधिमे एको दिन अनुपस्थित नहि रहि अपन एकटा अद्‌भुत रेकॉर्ड बना लेलनि । हिनक एहि विशिष्टताक कारणे 1954मे प्रदेशक तत्कालीन मुख्यमंत्री डा. श्रीकृष्णसिंह ननएवसेंस प्राइजक रूपमे चानीक मेडल आ लालटेन प्रदान कयलथिन । 1955मे हिनका तत्कालीन बिहार सरकारक स्वास्थ्य मंत्री पं. हरिनाथमिश्रक हाथेँ सेहो पुस्तकादि रूपमे पुरस्कार प्राप्त भेलनि ।

कॉलेज जीवन : जीवनक मोड़

1955मे मैट्रिकुलेशन परीक्षा उत्तीर्ण भेलाक बाद रामदेवक अग्रिम पढ़ाइक प्रश्न उठलनि । अपन मेधा ओ परिश्रमसँ बायोलोजी विषयक संग ई मैट्रिक पास कयलनि । सी.एम.कालेजमे नामांकनक हेतु आवेदन कयलनि आ विज्ञान विषयमे नामांकन हेतु हिनक चयन सेहो भऽ गेल । आइ.एस्-सी. कयलाक बादे मेडिकल कॉलेजमे प्रवेश भऽ सकैत छल । मुदा ताहिसँ पूर्वहि एक बेर पुनः अर्थक समस्या ठाढ़ भेल । विज्ञान विषय लऽ कऽ पढ़बामे तत्काल प्रचुर टाकाक आवश्यकता तँ छले, संगहि आगाँक पढ़ाइ सेहो । एहि टाकाक ओरिआओन कोना आ कतऽसँ होअय ? परन्तु धुनि लागल छलनि निरन्तर पढ़ैत जयबाक । शिक्षाक उच्चतम शिखर धरि पहुँचबाक जे अभिलाषा छलनि तकरा संकल्पक आधार दैत विज्ञानक बदला कला-निकायमे आगाँ बढ़बाक साहसिक निर्णय कयलनि । रामदेव सी.एम. कॉलेजमे आइ.ए.मे अपन नामांकन करौलनि । आइ.ए.मे हिनकर विषय सब छलनि- अंग्रेजी, मैथिली (मातृभाषा), हिन्दी (राष्ट्रभाषा), अर्थशास्त्र, तर्कशास्त्र ओ साहित्य (मैथिली) ।

सी.एम.कॉलेज (आब सी.एम्.साइंस कालेजक परिसर) हिनक गाम कबिलपुरसँ पाँच-छओ किलोमीटर दूर । रामदेव प्रतिदिन पैरे जाय क्लास कयल करथि ।

कॉलेजमे मैथिलीक ध्वजारोहण

स्कूलहिसँ आपादमस्तक मैथिलीक प्रेममे रंगल छात्र रामदेवकेँ सी.एम. कॉलेजमे आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन', प्रो. ईशनाथझा, प्रो. शैलेन्द्रमोहनझा प्रभृति मैथिली प्राध्यापक लोकनिक स्नेह ओ सान्निध्य प्राप्त भेलनि । ओहि समयमे कॉलेजहुमे मैथिली विषयमे छात्रक संख्या बड़ कम रहल करैत छलैक । जागरुकताक अभावमे ग्रामीण क्षेत्रक छात्र सब मैथिली पढ़बा दिस उन्मुख नहि भऽ पबैत छल । कॉलेजमे मैथिलीक छात्र बढ़यबाक हेतु रामदेव अपन किछु सहपाठी मित्रक संग बड़ चतुरतासँ काज लेबऽ लगलाह । गाम-देहातक जे अनभोआर छात्र कॉलेजमे नामांकन कराबऽ आबय तकरा बड़ आपकता ओ तत्परताक संग सब काज कराबथि आ ओकर एडमीशन फॉर्ममे कलासिक्स ओ मातृभाषा पत्रमे मैथिली भरबा देल करथिन । एहिना विज्ञानोक छात्रक मातृभाषापत्रमे मैथिली रखबा देल करथि । एम्.एल्. एकेडेमीक विज्ञान (गणित)क छात्रकेँ मैथिली पढ़बासँ वंचित कयल गेल छलनि अथवा जे स्वेच्छया मैथिली नहि पढ़ने छलाह, सेहो सभ मैथिली भाषा राखि लेलनि । हिनक एहि अभियानक सुफल ई भेल जे आइ.ए. क 1955-57क सत्रमे मैथिली विषयमे छात्रक संख्या ततेक बेसी भऽ गेल जे कॉलेज प्रशासनकेँ एहि हेतु दुइ गोट सेक्सन बनाबऽ पड़लैक । पूर्वमे सी.एम्. कालेजमे मैथिली छात्रक संख्या बड़ थोड़ रहैत छलैक— एक-आध दर्जन मात्र । एहि लय छोटका रूम आवंटित

Scanned by CamScanner

रहैत छलैक । एका-एक छात्रक संख्या ततबा बढ़ि गेलैक जे दू टा सेक्सन बनाबऽ पड़लैक । प्रत्येक सेक्सनमे डेढ़-पौने दू सय विद्यार्थी । दुनू लेल दूटा बड़का हॉल अपेक्षित छलैक । तहिना मैथिली छात्रक राष्ट्रभाषा (अहिन्दी) पत्रक स्थिति छलैक । एहने समस्या विज्ञानोक मैथिलीभाषी छात्रक भऽ गेल छलैक । 10.30 बजे सँ 4.20 बजे धरिक रूटिनमे कतहु अटावेस सम्भव नहि छलैक । तेँ मैथिली विषय (साहित्य ओ मातृभाषा)क हेतु 9.40 बजेसँ प्री-फर्स्ट पीरियड ओ 4.20सँ 5.10 बजे धरि राष्ट्रभाषा (अहिन्दी)क हेतु एक्स्ट्रीम लास्ट पीरियडक व्यवस्था भेलैक जे दुइ वर्ष धरि यथावत् चलैत रहलैक ।

स्वभावतः क्लासक संख्या सेहो बहुत बढ़ि गेलैक । विभागमे तखन दुइए गोट प्राध्यापक छलाह– प्रो. ईशनाथ झा ओ प्रो. सुरेन्द्रझा 'सुमन' । अतः दुइ गोट प्राध्यापक प्रो. रामचन्द्रमिश्र ओ प्रो. अमरनाथझा (वरिष्ठ)क अस्थायी नियुक्ति भेलनि । सी.एम. कॉलेजमे सेहो मैथिलीक सिक्का चलि पड़लैक ।

पिताक निधन

रामदेव आइ.ए. सेकेंड इयरमे पहुँचलाह । फाइनल परीक्षाक समय लगिचा गेल छलनि । तैयारी करबामे जी-जानसँ भिड़ल छलाह कि अकस्मात् 30 नवम्बर 1956 (अगहन कृष्ण चतुर्दशी, शुक्र)कें हिनक पिता कपिलेश्वरझाक देहान्त भऽ गेलनि । ई आघात जेना रामदेवक जीवनमे एक बेर पुनः हरविरड़ो मचा देलकनि । तथापि ई अपनाकें सम्हारलनि, निःसहाय भेल अपन परिवारकें सम्हारलनि । परिस्थितिसँ लड़ैत आइ.ए.क परीक्षा देलनि ।

साहित्यक डाक्टर बनबाक पथपर

आइ.ए. कयलाक बाद एक बेर पुनः कोन विषयमे प्रतिष्ठा राखल जाय से प्रश्न ठाढ़ भेल । ई आइ.ए.क जाहि विषयमे चाहितथि ताहिमे प्रतिष्ठा राखि सकैत छलाह । अपन मातृभाषा प्रेमक कारणें रामदेव बी.ए.मे मैथिली प्रतिष्ठा ओ अर्थशास्त्र विषय रखलनि । हिनका प्रति स्नेह रखनिहार कतेको अध्यापककें तत्काल ई नहि रुचल छलनि आ ओ लोकनि एहि निर्णयसँ आहतो जकाँ भेल रहथि । बाधा तँ अनेक प्रकारक अबैत रहलनि तथापि समस्त बिघ्न बाधाकें पार करैत अपन मेधा ओ परिश्रमक बलपर रामदेव 1959 मे बिहार विश्वविद्यालय (पटना)मे मैथिली प्रतिष्ठामे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान प्राप्त कयलनि । हिनक एहि सफलताक उपलक्ष्यमे बिहार विश्वविद्यालयक दीक्षान्त समारोहमे तत्कालीन कुलाधिपति डा. जाकिर हुसैनक द्वारा हिनका स्वर्णपदक प्रदान कयल गेलनि ।

पटना विश्वविद्यालयक प्रवास-जीवन

ओहि समयमे सम्पूर्ण बिहारमे एकमात्र पटना विश्वविद्यालयटामे मैथिलीमे स्नातकोत्तर अध्यापनक व्यवस्था छलैक । रामदेवकें पटना जा कऽ एम.ए. करबामे तारतम्य बुझाय लगलनि । एकर पाछाँ कारण छल वैह आर्थिक समस्या । दरभंगामे तँ अपना घरसँ खा कऽ कॉलेज करैत रहथि । मुदा पटनामे तँ सब किछु लय टका चाही । रामदेव ततमतमे पड़ि गेलाह । एक मोन भेलनि जे आगाँक पढ़ाइ छोड़ि कोनो नोकरी-चाकरी ताकल जाय मुदा दोसर दिस उच्चतम शिक्षा ओ उपाधिक अदम्य इच्छाक कारणे पटना प्रवासक व्ययक निमित्त आर्थिक साधनक सम्बन्धमे बिना विचार कयने सोझे पटना विश्वविद्यालयमे एम.ए. (मैथिली)मे नामांकन करा लेलनि ।

1959क जुलाइमे रामदेव पटना विश्वविद्यालयमे नामांकन करौलनि । पटनाक नया टोला मोहल्ला स्थित मैथिलक प्रसिद्ध होटल कंचन भवनमे डेरा लऽ कऽ रहऽ लगलाह । तावत धरि मैथिलीक लेखक ओ मैथिलीक समर्पित कार्यकर्त्ता रूपमे हिनक ततेक परिचिति भऽ गेल रहनि जाहि कारणे पटनामे किनको लग अपन परिचय देबाक हिनका प्रयोजन नहि पड़लनि । अपन मेधाविता, विनीत स्वभाव ओ सांस्कृतिक रुचिक कारणे ई शीघ्रे पटनाक मैथिली जगतक समस्त प्रतिष्ठित व्यक्ति लोकनिक प्रिय पात्र बनि गेलाह । पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक विभागाध्यक्ष डा. सुधाकरझा शास्त्री, प्रो. आनन्दमिश्र, सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. हरिमोहनझा, आर्यावर्त्तक सम्पादक श्रीकान्तठाकुर विद्यालंकार आदि

Scanned by CamScanner

हिनका विशेष रूपसँ मानऽ लगलथिन । पं. हीरानन्दशास्त्री, कुलानन्ददास 'नन्दन', बाबू लक्ष्मीपतिसिंह, आचार्य परमानन्दनशास्त्री, राजेश्वरझा (बिहार रिसर्च सोसाइटी), पं. जयनाथमिश्र, गोपेशजी, बाचाल बाँकीपुरी आदिसँ निकट परिचय भेलनि ।

सितम्बर 1960सँ पटनासँ मिथिला मिहिरक साप्ताहिकक पुन: प्रकाशन सुरू भेल । एकर सम्पादक बनाओल गेल रहथि दरभंगाक मिश्रटोला निवासी सुधांशुशेखरचौधरी । हिन्दीमे तावत लेखन कयनिहार शेखरजी मैथिली जगतक हेतु अनचिन्हारे रहथि । मुदा बेरोजगार शेखरजीकेँ कोनो तरहेँ रोजी लागि जाइनि, ताहीं उपकार भावसँ सुरेन्द्रझा 'सुमन', श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर', रमेन्द्रनारायणचौधरी आदि सम्पादक पदक हेतु पं. गिरीन्द्रमोहनमिश्र ओ राजपण्डित बलदेवमिश्र लग हिनक पैरवी कयने रहथिन । हिन्दीक कोनो व्यक्ति मैथिलीक सुप्रतिष्ठित पत्रक सम्पादक बनय से स्वाभाविक रूपसँ सबकेँ अनसोहाँत लागल रहैक, तेँ पटनामे शेखरजीक लेल वातावरण सर्वथा प्रतिकूल छलनि । पुबारि आ पछबारि पारक मतभेद से फराके । मिहिरक सम्पादक बनबाक लेल प्रयत्नशील श्रीमायानन्दमिश्र सन स्थापित साहित्यकार एहिमे पछड़ि गेलाह, तेँ ओ फराके रुष्ट रहथिन । ओहि विषम कालमे पटनामे अध्ययनरत रामदेवझा पटनामे शेखरजीक परिचिति बनयबामे, एकटा सफल सम्पादकक रूपमे हुनका स्थापित करबामे ओ मिहिरक निरन्तर प्रकाशन होइत रहबामे खुलि कऽ सहयोग देबऽ लगलथिन । दरभंगासँ विभिन्न लेखक सबसँ रचनाक संकलन, ओकर व्यवस्थित सम्पादन आदि कऽ कऽ देथिन ।

शेखरजीक सहायता करबाक कारणे पटनामे किछु गोटाक तँ ई कोपभाजन बनलाहे, प्रत्युत स्नातक प्रतिष्ठा जकाँ एम.ए.मे सेहो बाधकताक परिस्थिति अयलनि तथापि ई दृढ़तापूर्वक अपन साधनामे लागल रहलाह । 1961 मे एम.ए.क परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे प्रथम भेलाह आ स्थापित कयलनि एम.ए मैथिलीमे सर्वोच्च अंकक पटना विश्वविद्यालयमे नवीन कीर्तिमान । 1962मे पटना विश्वविद्यालयक दीक्षान्त समारोहमे बिहारक तत्कालीन कुलाधिपति ओ राज्यपाल डा. जाकिर हुसैनक हाथेँ पुन: दोसर बेर हिनका स्वर्णपदक ओ प्रमाणपत्र प्रदान कयल गेलनि । ई हिनक जीवनक एकगोट ऐतिहासिक उपलब्धि रहलनि ।

आजीविका

जुलाइक प्रथम सप्ताहमे एम.ए.क परीक्षा भेलनि आ अगस्तक अन्तिम सप्ताहमे रिजल्ट बहरयलनि । एम. ए. कयलाक बाद रामदेवक समक्ष आजीविकाक प्रश्न उपस्थित भेलनि । तीनटा क्षेत्रमे विकल्प छलनि- पत्रकारिता, आकाशवाणी आ अध्यापन । पटनामे अपन शैक्षणिक प्रवासक क्रममे मिथिला मिहिरक जाहि तरहेँ सेवा कयने छलाह ताहि आधारपर मिहिरक सम्पादकीय विभागमे हिनक नियुक्तिक सम्भावना बनैत छलनि । ताही समयमे पटना आकाशवाणीमे सेहो मैथिली उद्घोषकक एकटा पद रिक्त छल । रेडियोक नोकरी तहिया कम ग्लैमरवला नहि छलैक । परिस्थितिक अनुसार जाहि क्षेत्रमे पहिल आजीविका भेटितनि, पहिने ओकरहि स्वीकार करितथि । परन्तु आरम्भेसँ मैथिली भाषा ओ साहित्यमे अभिरुचि रखैत प्रचुर सामग्री-संकलन ओ तैयारी करैत रहलाह आ रिजल्टो तेहने उत्तम होइत गेलनि, से एहि बातक सूचक छल जे ई अध्यापन-वृत्तिकेँ आजीविका बनाबऽ चाहैत छलाह ।

एस.पी. कॉलेजमे योगदान

भागलपुर विश्वविद्यालयक अन्तर्गत एस.पी.कॉलेज, दुमकामे मैथिलीमे प्राध्यापक पद हेतु विज्ञापन बहरयलैक । रामदेवझा ओहि हेतु आवेदन कयलनि । 23 नवम्बर 1961 केँ इंटरव्यू भेलनि । पैनलमे हिनक नाम सबसँ पहिल छलनि। दोसरे दिन अर्थात् 24 नवम्बर 1961केँ सन्ताल परगना कालेज, दुमकामे (साम्प्रतिक झारखण्ड राज्यक) मैथिलीक आद्य प्राध्यापकक रूपमे अपन योगदान देलनि । दुमकाक वातावरण मैथिलीक लेल बंजर छलैक, मुदा प्रो. रामदेवझा अपन विदग्धता ओ कॉलेजक प्रिंसिपल प्रो. सुरेन्द्रनाथझा एवं अनेक सहकर्मी प्राध्यापकक सहयोगसँ सन्ताल

Scanned by CamScanner

परगनाक पठारी भूमिकेँ जोति-कोड़ि मैथिलीक हेतु उर्वर बनौलनि । शीघ्रे देवघर, गोड्डा, मोतिया, महेशपुर, बासुकीनाथ, दुमका आदि स्थानक कॉलेज-छात्रक भीतर एहि तरहक भावना विकसित करबामे सफल रहलाह जे कने-मने उच्चारणक भिन्नता रहितो हुनको लोकनिक मातृभाषा मैथिलीए थिकनि । दुमकामे मैथिलीक पक्षमे ताहि तरहक वातावरण बनल जे आरम्भमे जतऽ मैथिलीक छात्र आङुरपर गनबा योग्य रहैत छल, से किछुए समयक अभ्यन्तर छात्रक संख्यामे आशातीत वृद्धि भेल । दुमकामे हिनक दू वर्षक प्राध्यापकीय परिश्रमक प्रतिफल ई भेल जे पछाति देवघर, साहेबगंज स्थित कॉलेजहु सबमे विधिवत् मैथिली विभाग फूजल । नवम्बर 1962 मे सी.एम् कालेजमे एम.ए.क पढ़ाइ आरम्भ भेल । ओहिमे रामदेवझा व्याख्याता पदपर अस्थायी रूपसँ नियुक्त भेलाह । परन्तु मइ 1963मे पुन: एस.पी.कॉलेज आपस चल गेलाह ।

1963 मे पटना विश्वविद्यालय आ बिहार विश्वविद्यालय दुहू ठाम मैथिली व्याख्याताक नियुक्ति हेतु बिहार पब्लिक सर्विस कमीशन दिससँ विज्ञापन भेलैक । ई दूहू विश्वविद्यालय हेतु आवेदन कयलनि । पटना विश्वविद्यालयक हिनक इंटरव्यू अत्यन्त सफल रहलनि । विशेषज्ञ रहथिन म.म. डा. उमेशमिश्र ओ डा. सुधाकरझा 'शास्त्री' । पैनलमे हिनक नाम पहिल स्थानपर अनुशंसित भेलनि ।

बिहार लोकसेवा आयोगक समक्ष

बिहार विश्वविद्यालयक अन्तर्गत सी.एम.कालेजमे मैथिली व्याख्याता पदक हेतु बिहार पब्लिक सर्विस कमीशनक इंटरव्यू बोर्डमे एक्सपर्ट लोकनि रहथिन डा. सुभद्रझा ओ प्रो. रमानाथझां । इंटरव्यू कालमे डा. सुभद्रझा अभ्यर्थी रामदेवझाकेँ अयोग्य सिद्ध करबाक हेतु जेना सबटा शक्ति लगा देलथिन । एक घंटा धरि हिनकासँ एकसँ एक विकट प्रश्न सब पुछैत रहलथिन आ ई आत्मविश्वासपूर्वक तकर उत्तर दैत रहलथिन ।

नाटकक प्रसंगमे अनेक प्रश्न करैत अन्तत: डा. सुभद्रझा एकटा प्रश्न पूछि देलथिन- अभिज्ञान शाकुन्तलमे बीच सभासँ नायिका शकुन्तलाक प्रत्याख्यान भऽ जाइत अछि । नाट्य-प्रदर्शन कालमे ई कोना सम्भव अछि ?'

रामदेवझा एहि प्रश्नक उत्तर दैत कहलथिन- नाटककेँ जीवनक अनुकरण कहल गेलैक अछि तँ एहिमे बहुत बात संकेतेसँ प्रदर्शित कयल जाइत अछि । एहि संकेतक अभिज्ञान नाटकक पात्रक संग-संग दर्शकहुकेँ होयब आवश्यक अछि । शकुन्तला नाटकक आरम्भेमे शकुन्तला ओ सखी लोकनि द्वारा घैलसँ गाछक जड़िमे पानि पटयबाक प्रसंग अछि । जँ एकर अभिनय कालमे यथार्थमे पानि पटाओल जाय लागय तँ रंगमंचपर पानिक धारे बहि जायत । तँ एहि प्रसंगक प्रतीति सांकेतिके अभिनयसँ दर्शककेँ कराओल जाइत छैक, तहिना बीच सभासँ शकुन्तलाक प्रत्याख्यान हेतु कोनो विशिष्ट प्रकारक संकेतक आश्रय लेल जाइत होयतैक । नाट्यशास्त्रमे एहन अभिनयकेँ नाट्यधर्मी कहल गेल छैक ।' अभ्यर्थीक एहि तर्कसम्मत व्याख्यासँ बोर्डक सब सदस्य सन्तुष्ट भेलाह । डा. सुभद्रझा प्रश्नवाचक मुद्रामे प्रो. रमानाथझा दिस तकलथिन । ओ किंचित बिहुँसैत कहलथिन - हूँ ऽऽ ।'

बिहार विश्वविद्यालयक मैथिली पैनलमे सेहो हिनक नाम प्रथम स्थानक लेल अनुशंसित भेलनि । बादमे डा. सुभद्रझा दरभंगामे नेपथ्यमे रामदेवझाकेँ अभिघात पहुँचयबाक लेल प्रच्छन्न दुरभिसंधिक संकेत दैत अनेक ठाम बाजल रहथि जे - हम तँ विचारि कऽ गेल रही जे कोनो स्थितिमे हम बिहार विश्वविद्यालयमे एहि छौंड़ाकेँ नोकरी नहि होअऽ देबैक । मुदा ई तँ अपन असाधारण योग्यताक बलपर हमरा लोकनिकेँ निरुत्तर करैत हाथसँ नोकरी छीनि लेलक ।' वस्तुत: डा. सुभद्रझाक मोनमे आरम्भमे हिनका प्रति जे वितृष्णाक भाव रहल होइनि मुदा बादमे तँ ई डा. रामदेवझाक ततेक पैघ प्रशंसक भऽ गेलथिन जे नि:संकोच भावसँ कहल करथिन- ओझाजी मैथिलीक विद्वाने नहि, मैथिलीक आचार्य थिकाह ।' ओ अपन व्याकरण विषयक व्याख्यानक सम्पादन-प्रकाशनक विश्वास पूर्वक भार हिनकेपर देने छलथिन ।

Scanned by CamScanner

सी.एम. कॉलेजमे योगदान

अस्तु, पटना ओ बिहार दुनू विश्वविद्यालयमे प्रथम स्थानकलेल नाम अनुशंसित भेलाक बाद हिनका समक्ष विचारक प्रश्न ठाढ़ भेलनि जे कतऽ योगदान करथि । डा. सुधाकरझा 'शास्त्री' ओ प्रो. अमरेशपाठकक विचार छलनि जे ई पटना विश्वविद्यालयमे योगदान करथि । मुदा अन्ततः हिनक अपन विचार भेलनि जे बिहार विश्वविद्यालयक चयन कयल जाय । एहि निर्णयक पाछाँ हिनक मैथिली-सेवाक ध्येय छलनि । मैथिलीक जमीनपर रहि जे काज कयल जा सकैत अछि से प्रवासमे रहि कऽ नहि, जकर अनुभव हिनका अपन दू वर्षक दुमका प्रवासमे भऽ चुकल छलनि । पटना सन राजधानीमे ई नोकरिहारा बनि कऽ आरामसँ रहि सकैत छलाह, मुदा सामान्य लोकक मध्य जाय, विशेषतः छात्र वर्गमे मातृभाषा (मैथिली)-चेतना जगायब ओ मैथिली आन्दोलनकेँ जमीनपर आनब सम्भव नहि होइत । तहिना मैथिलीक अवडेरल, छिड़िआयल अजस्र साहित्यक अन्वेषण, संकलन, सम्पादन ओ प्रकाशन तथा मैथिली लोकवृत्तक क्षेत्रमे अनुसन्धान करबाक जे हिनक प्रवृत्ति तकर पूर्त्ति पटनामे रहि कऽ सुगम नहि छलनि । अतएव 6 दिसम्बर 1963केँ ई पटना विश्वविद्यालयसँ इतर बी.पी.एस.सी.सँ पहिल कमीशण्ड मैथिली व्याख्याताक रूपमे बिहार विश्वविद्यालयक तत्कालीन अंगीभूत एकांश दरभंगाक चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयमे योगदान कयलनि ।

निविष्ट प्राध्यापक

सी.एम.कॉलेजमे अयलाक बाद किछुए दिनमे छात्र वर्गमे हिनक छवि अनुशासनप्रिय विद्वान प्राध्यापकक रूपमे स्थापित भऽ गेलनि । मैथिलीक ई विश्वकोश मानल जाय लगलाह । मैथिलीक प्राचीन साहित्य हो वा आधुनिक, गद्य हो वा कि पद्य, महाकाव्य हो कि नाटक, समालोचना हो वा इतिहास, भाषाविज्ञान हो वा काव्यशास्त्र, सबपर समाने अधिकार, प्रत्येक विषयकेँ एक समानगतिसँ पढ़ा देब, कोनहुँ विषयपर धाराप्रवाह बजबाक हिनक क्षमता अद्वितीय रहलनि । हिनक व्याख्यानमे सदिखन किछु मौलिकता, किछु नवीनता रहलनि । सिद्धान्त प्रतिपादनक हिनक एही विशिष्ट क्षमताकेँ देखैत मैथिलीक मनीषी लोकनि हिनका आचार्यक उपाधिसँ विभूषित करैत रहलथिन । सब दिन अपनाकेँ अपडेट बना कऽ रखनिहार प्रो. रामदेवझाकेँ वर्गमे नोट वा किताब लऽ कऽ पढ़यबाक प्रयोजन नहि पड़नि । भाषा-विज्ञान सन कठिन विषयकेँ जाहि सहजताक संग ई छात्रक हेतु बोधगम्य बना दैत छलथिन किंवा काव्यशास्त्र सन दुरूह विषयकेँ (अथवा कीर्त्तिलताक अवहट्ठकेँ) जाहि रोचकताक संग पढ़बैत छलाह तकर वर्णन हिनक शिष्य लोकनिक मुँहसँ सुनल जा सकैत अछि ।

प्रो. रामदेवझा शिक्षण कार्यकेँ कहियो नोकरी नहि बुझलनि, सब दिन एकरा मैथिलीक बड़ पैघ दायित्वक रूपमे लैत रहलाह । हिनक मान्यता छनि जे प्राध्यापकक छओ गोट दायित्व छैक– पढ़ब-पढ़ायब, शोध करब–शोध करायब, लिखब ओ लिखबायब । एकटा प्राध्यापकक रूपमे उपर्युक्त छओ गोट दायित्वक सम्यक् निर्वहन करैत रहलाह । सर्वप्रथम ई स्वयं 1970 मे मैथिलीमे शैव साहित्य विषयपर पी-एच.डी. कऽ मैथिलीमे शोधक एकटा मानकता स्थापित कयलनि । तत्पश्चात् हिनक सान्निध्यमे अगणित छात्र शोधक क्षेत्रमे कीर्त्तिमान स्थापित कयलनि । कतेक छात्र हिनक प्रेरणा ओ प्रोत्साहन पाबि आइ साहित्यक क्षेत्रमे स्थापित भेल छथि । वर्त्तमानमे हिनक शिष्यक कोन कथा शिष्यक शिष्य लोकनि अध्यापनक क्षेत्रमे छथि । एहि अर्थमे हिनका मैथिली शिक्षा परम्परामे महामहोपाध्यायक विशिष्ट पद ओ गरिमा स्वतः प्राप्त भऽ गेल छनि । यद्यपि अपन छात्र जीवनहि जकाँ डा. रामदेवझाकेँ अपन प्राध्यापकीय जीवनहुमे निरन्तर प्रतिकूल हवा-बिहाड़िक सामना करऽ पड़ैत रहलनि, तथापि एहिसँ हिनक मेधा ओ विद्वत्ता कदापि प्रभावित नहि भेलनि । एकटा निविष्ट प्राध्यापकक रूपमे छात्र वर्गमे अजस्र ख्याति ओ विद्वद्वर्गमे अपरिमित सम्मान भेटैत रहलनि । मइ 1996मे ई यूनिवर्सीटी प्रोफेसरक पदसँ सेवानिवृत्त भेलाह तथापि एखनहुँ प्राध्यापकीय षट्कर्म-बूझब-बुझायब, पढ़ब-पढ़ायब, लिखब-लिखायब केर नैरन्तर्य यथावत् बनौने छथि । आइयो हिनक आवासपर जिज्ञासु-ज्ञानपिपासु लोकनिक भीड़ ओहिना लागल रहैत छनि जे मिथिलाक प्राचीन चौपाड़ि परम्पराक आभास दियबैत अछि ।

Scanned by CamScanner

प्रख्यात शोधप्रज्ञ

डा. रामदेवझा अपन छात्र जीवनहिसँ अनुसन्धानी स्वभावक रहलाह अछि । आरम्भमे ई अपन मातामही, माय ओ अन्यान्य महिला लोकनिक कण्ठसँ गीत, कथा, वचन, लोकोक्ति, वाग्धारा, लोक शब्दावली आदिक संकलन कयलनि । मैथिली लोकवृत्तक ओ प्रचुर संग्रह एखनहु हिनक संग्रहमे सुरक्षित राखल छनि । एहि सामग्री सभक उपयोग ई अपनहुँ करैत रहलाह अछि ओ अन्यहु शोधार्थीकेँ उपलब्ध करबैत रहलथिन अछि ।

1961मे मैथिलीमे एम्.ए. कयलाक बाद ई पटना विश्वविद्यालयसँ डा. सुधाकरझा 'शास्त्री'क निर्देशनमे मैथिलीमे शैव साहित्य विषयपर शोध करबाक हेतु पंजीयन करौलनि । एकर बाद तँ मिथिलामे शैव परम्परा, मैथिल जनजीवनमे शैवभावना, मिथिलामे रचित साहित्यमे शैव तत्त्वक अन्वेषणक जेना हिनकापर धुनि सवार भऽ गेलनि । मिथिलाक विभिन्न शैव तीर्थ ओ शिव मन्दिरक परिभ्रमण ओ गामे-गाम घूमि पांडुलिपि, टिपौत, हस्तलेख आदिक संग्रह जेना हिनक व्यसन भऽ गेलनि । एहि गवेषणा-यात्रामे हिनका मैथिलीक एक-सँ-एक दुर्लभ, अनभिज्ञात सामग्री सब भेटलनि । उमापति ओ नन्दीपति सन नाटककारक नाट्येतर स्फुट गीतक संकलन, धीरमती सन अज्ञात कवयित्रीक गीतक उपलब्धि, विष्णुपुरी ओ सदानन्द प्रभृति अनेक कविक रचना ओ परिचयक उद्घाटन ओही अन्वेषणी संचारक परिणाम कहल जा सकैत अछि ।

हरगौरीविवाहक उद्धार

मध्यकालमे नेपालमे रचित मैथिली साहित्यमे शैवभावक अन्वेषण करबाक क्रममे नेपालपर लिखित अनेक देशी-विदेशी लेखकक पोथी सभक अध्ययन सुरू कयलनि । डेनियल राइट नामक एकटा यूरोपीय विद्वान द्वारा लिखित 'हिस्ट्री ऑफ नेपाल' मे प्रो. रामदेवझाकेँ एक ठाम सूचना भेटलनि जे नेपाल उपत्यकाक मल्ल राजा जगज्ज्योतिर्मल्लक मैथिलीमे रचित हरगौरी विवाह नाटकक पाण्डुलिपि इंग्लैंडक कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयक लाइब्रेरीमे संरक्षित छनि । एहि सूचनाक आधारपर प्रो. झा कैम्ब्रिजसँ पत्राचार कयलनि । ओतऽसँ आशानुकूल उत्तर भेटलनि । तदुपरि सी.एम. कॉलेजक तत्कालीन प्रधानाचार्य डा. लक्ष्मीकान्तमिश्रक सहयोगसँ ओतऽसँ हरगौरी विवाह नाटकक पाण्डुलिपिक माइक्रोफिल्म मङबाओल गेल । ई कार्य जतबे श्रमसाध्य छल ततबे व्यय साध्य, तथापि हिनका एकर श्रेय नहि भेटउन ताहि लेल कतेक गोटा कतेक खेल कयलनि, कतेक षड्यन्त्र रचल गेल से एकटा फराके अन्तःकथा थिक । मुदा सूत्रमे एतबे जे लाख व्यवधानक बादो अपन अदम्य शोध प्रवृत्तिक बलपर प्रो. झा अत्यन्त श्रम ओ कौशलपूर्वक एहि गजपट पाण्डुलिपिकेँ क्रमबद्ध कऽ, एकर पाठोद्धार कऽ एहि दुर्लभ कृतिकेँ 1969 में सी.एम.कॉलेजक पत्रिका 'विदेह'क माध्यमसँ उपस्थित कयलनि । पछाति 1970मे ई पुस्तकाकार भेल आ एकर अनेक संस्करण बहरायल । साहित्यमे सम्पादन कार्य कतेक कठिन होइत छैक ओ कोनो सिद्धहस्त सम्पादकक हेतु विराट ज्ञान ओ विशेष दृष्टिबोध होयब कतेक आवश्यक रहैत छैक तकर परिचय हिनक एहि सम्पादित कृतिसँ भेटि जाइत अछि । वस्तुतः हिनक **हरगौरी विवाह नाटक** सम्पादन-कलाक एकटा प्रतिमान स्थापित कयलक जकर भूरिशः प्रशंसा डा. सुनीतिकुमार चटर्जी आ डा. सुकुमार सेन प्रभृति विद्वान लोकनि कयने छथिन ।

नेपाल यात्रा

हरगौरी विवाहक अन्वेषणसँ जे हिनका प्रतिष्ठा प्राप्त भेलनि से हिनक जिज्ञासु प्रवृत्तिकेँ औरो बेसी बढ़ा देलकनि । नेपालक राजकीय अभिलेखागारमे संरक्षित मैथिली साहित्यक अजस्र निधिकेँ अपना आँखिए जा कऽ देखबाक हिनक लालसा औरो प्रबल भऽ उठलनि । हरगौरी विवाहक प्रकाशनसँ पूर्व नेपालक मैथिली साहित्यक सम्बन्धमे विस्तारसँ जनबाक उद्देश्यसँ सर्वप्रथम 1967 मे ई शोध-यात्रापर नेपालक राजधानी काठमांडू गेलाह । ओतऽ मल्ल राजवंशक कालमे मैथिलीक स्वर्णिम अतीतक प्रत्यक्ष दर्शन करबाक अवसर प्राप्त भेलनि । नेपालक राजकीय अभिलेखागारमेसँ ताकि-ताकि कऽ जगज्ज्योतिर्मल्लक विभिन्न कृतिकेँ बाहर कऽ ओकर प्रतिलिपि करबौलनि । तदतिरक्त अपन शैव

Scanned by CamScanner

साहित्य विषयसँ सम्बद्ध नेपालक अन्यान्य रचनाकार लोकनिक कृतिक संकलन कयलनि । नेपालीय मनीषाक मर्मज्ञ प. घनश्याम पोड्येलसँ सम्पर्क कऽ हुनक निजी संग्रहमे राखल कतोक पाण्डुलिपिक सेहो स्वयं प्रतिलिपि कयलनि । नेपाल उपत्यकाक मन्दिर सभमे घूमि-घूमि ओहिमे शिलापर उत्कीर्ण मैथिली गीत सभक अन्वेषण कऽ कऽ ओकरा उतारलनि । एकर बाद तँ ई कतोक खेप काठमांडूक यात्रा कयलनि आ प्रति बेर किछु अभिनव सामग्रीक संग आपस भेलाह ।

नेपालसँ आनल एहि सारस्वत सामग्रीक उपयोग ई यथा प्रयोजन करैत रहलाह । सर्वप्रथम तँ हरगौरी विवाह नाटकक विस्तृत भूमिकामे जगज्ज्योतिर्मल्लक विराट साहित्य-साधनाक पहिल बेर विस्तारसँ परिचय प्रस्तुत कयलनि । हिनकासँ पूर्वक इतिहासकार लोकनि जगज्ज्योतिर्मल्लपर मात्र किछु शब्द खर्च कयने रहथिन । मुदा प्रो. रामदेवझाक शोधसँ ई पहिल बेर जानल जा सकल जे मल्ल राजा जगज्ज्योतिक साहित्यिक अवदान कतेक पैघ छनि । वस्तुतः प्रो झाकेँ मैथिलीमे जगज्ज्योतिक उद्धारक मानल जाइत छनि । पश्चात् हिनक अन्यान्यहु नाट्यकृति यथा कुञ्जविहार नाटक, दशावतारनृत्यम्, षोडशगीतम् आदिक सम्पादन कऽ कऽ ई प्रकाशित करौलनि । वर्त्तमानहुँमे जगज्ज्योतिक विशिष्टतम नाट्यकृति **मुदित कुवलयाश्वक** सम्पादन कार्य सम्पन्न कयलनि अछि ।

नेपालक मन्दिर एवं अन्यत्र स्थित शिलालेख सबसँ उतारल मैथिली गीत सभक पाठोद्धार कऽ एकर प्रकाशन **नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत** नामसँ कयलनि । तद्वते नेपालसँ जे ज्ञात-अज्ञात कवि लोकनिक पद सभ हिनका प्राप्त भेलनि तकरा वैज्ञानिक ढंगसँ सम्पादित कयलनि जे **मैथिली प्राचीन गीतावली** नामसँ प्रकाशित भेल । नेपालहिसँ प्राप्त एहि सामग्री सभक आधारपर प्रो. झा पारिजातहरणक रचयिता कीर्त्तनिञा नाटककार उमापतिक परिचय, काल ओ हुनक आश्रयदाता राजवंशकेँ लऽ कऽ ग्रियर्सनहिक कालसँ चलि रहल विवादक समाधान कऽ देलनि ।

मैथिली गवेषणाक क्षेत्रमे हिनक जे सबसँ महत्तम कार्य छनि ओ थिक मैथिली शैव साहित्य, जाहिपर 1970मे हिनका डाक्टरेटक उपाधि प्राप्त भेलनि । ई उपाधि हिनका मैथिली भाषा ओ साहित्यक आधिकारिक 'डाक्टर'क मान्यता ओ ख्याति प्रदान कयलकनि । पश्चात दू खंडमे प्रकाशित ई ग्रन्थ मैथिलीसँ इतरहु क्षेत्रक विद्वानक बीच चर्चित-समादृत भेल । मैथिली शैव साहित्यक अविच्छिन्न परम्पराक प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत करैत ई ग्रन्थ एहि भ्रमाह मान्यताकेँ समाप्त कयलक जे मैथिलीमे दुइये गोट काव्य परम्परा रहलैक अछि कृष्ण काव्य ओ शक्ति काव्य ।

निरन्तर अनुसन्धान

आधुनिक मैथिली साहित्यमे सेहो हिनक अनेकानेक नवीन अनुसन्धानसँ इतिहासमे बेर-बेर संशोधन करबाक स्थिति उत्पन्न भेल अछि । मैथिलीक प्रथम उपन्यास जीवनाथमिश्र प्रसिद्ध पुलकितमिश्र रचित **मोहिनी-मोहन,** मैथिलीक आद्य कथा जलधरझाक **विलक्षण दाम्पत्य,** जनार्दनझा जनसीदनक कथा **ताराक वैधव्य,** कुमार गंगानन्दसिंहक **मनुष्यक मोल,** चन्दाझाक **वाताह्वान,** म.म. परमेश्वरझाक **दुर्गाचरित नाटक,** जीवनझाक रचना-समग्र, नर्मदा सागर सट्टक आदिकेँ इतिहासक गर्त्तसँ निकालि कऽ जँ ई नहि प्रस्तुत करितथि तँ मैथिलीक अध्येता लोकनि एहि निधि सबसँ अपरिचिते रहि जैतथि । एहिना मैथिलीक आद्य पत्रिका **मैथिल-हित-साधनक** वास्तविक कर्त्ता-धर्त्ता चन्द्रदत्तचौधरीक अवदानक उद्घाटन नहि कयने रहितथि तँ इतिहासमे ई भ्रम पसरले रहि जैतय जे मैथिलहित साधनक संरक्षक सम्पादक म.म. मधुसूदनझा ओ न्यायाधीश रामभद्रझा छथि । वस्तुतः डा. रामदेवझाक अनुसन्धान कार्यक ई विशेषता रहलनि अछि जे एक बेर ई इतिहास बनबैत छथि आ तकर बाद पुनः अपन नूतन अनुसन्धानक आधारपर अपनहिसँ ओहि इतिहासकेँ खंडितो करैत छथि । हिनक अनुसन्धानक मैथिली क्षेत्रमे खूब सोरहो होइत रहल अछि । मैथिलीक प्रथम कथाकेँ लऽ कऽ कोनो इतिहासकारक मत सुनिश्चित नहि छलनि । जखन 1917 मे मिथिला मिहिरमे प्रकाशित जर्नादनझा जनसीदनक कथा **ताराक वैधव्यकेँ** ताकि कऽ सामने अनलनि तँ मैथिली जगत तरंगित भऽ उठल । मैथिली कथापर किछु लिखबासँ पूर्व **ताराक वैधव्यक** ढोलहो पीटब जेना सभक लेल आवश्यक भऽ गेल । एवं प्रकारेँ जखन ई मान्यता स्थापित भऽ

Scanned by CamScanner

गेल जे मैथिलीक आद्य कथा यैह थिक तखन डा. झा अपन गवेषणाक तरकसमेसँ पुनः एकटा तीर निकालि कऽ चलौलनि जलधरझाक **विलक्षण दाम्पत्य** जे 1906इ.मे मैथिल-हित-साधनमे प्रकाशित भेल छल। वस्तुतः हिनक ई प्रवृत्ति एहि तथ्यक परिचायक अछि जे अनुसन्धानमे पूर्णविराम नहि, अपितु ई निरन्तर चलैत रहऽवला प्रक्रिया थीक। तेँ अपन अनुसन्धानपर स्वयं आत्ममुग्ध होइत एकरा चरम उपलब्धि नहि मानि ई इतिहासक अन्तस्तलमे जा कऽ प्रतिक्षण किछु नवीन तथ्यक प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील रहैत छथि। तेँ हिनक अनुसन्धान ओ अनुसान्धानिक निष्कर्ष सदिखन अभिनवत्वसँ परिपूर्ण रहैत छनि, विद्यापतिक **तिले-तिले नूतन होय** सन उक्तिकेँ चरितार्थ करैत रहैत छनि आ अपन इतिहासकेँ नव ढंगसँ लिखबाक हेतु इतिहासकार लोकनिकेँ प्रभूत सामग्री उपलब्ध करबैत रहैत छनि।

अनुसन्धानक मानकसँ समझौता नहि

डा. रामदेवझा ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयमे शोध-अनुसन्धानक पर्याय मानल जाइत रहलाह अछि। मैथिलीसँ इतरहु विषयक गवेषक लोकनि शोध कार्यमे हिनकासँ परामर्श लैत रहलथिन अछि। शोध विषयक चयन, ओकर परिकल्पना ओ सामग्रीक उपलब्धताक मार्ग देखयबामे हिनका निष्णात मानल जाइत रहलनि अछि। शोध-निर्देशकक रूपमे हिनक एहि ख्यातिक कारणे अन्य प्रान्तीय, अपितु विदेशहुसँ अनुसन्धित्सु लोकनि आबि हिनक परामर्शसँ लाभान्वित होइत रहलाह अछि।

डा. झा जेना अपनेसँ अनुसन्धान करैत रहलाह अछि तद्वते अपना निर्देशनमे अनुसन्धान कयनिहार अनुसन्धाता सबसँ परिश्रम करबैत रहलाह। एहि कारणे ई बदनामो भेलाह जे स्कॉलरकेँ बड़ चरियबैत-पेरैत रहैत छथिन, नेपाल, काशी, गोहाटी, कलकत्ता आदि स्थान जाय लय कहैत छथिन, गामे-गामे दौड़बैत छथिन, लाइब्रेरी सबमे घुमबैत छथिन। तथापि एहि तरहक अपप्रचारक बादो ई अनुसन्धानक मानकतासँ कथमपि समझौता नहि कयलनि। एक बेर एकटा प्रभावशाली पिताक गवेषक पुत्र हिनका निर्देशनमे शोध कऽ रहल छलथिन। गवेषकक इच्छा जे अपन पिताक नामपर जे-से किछु लिखि छुतिया छोड़ा लेल जाय। मुदा डा. रामदेवझा एहि हेतु तैयार नहि भेलथिन। गवेषककेँ विभिन्न लेखकक पोथी ताकि कऽ पढ़बाक निर्देश दैत मिथिला ओ असमक प्राचीन सम्बन्धक सन्दर्भमे कालिकापुराण ताकि कऽ पढ़ऽ कहलथिन। बापक दुलारू गवेषक पूत अपन पितासँ जा कऽ कहलथिन। प्रभावशाली पिता तमतमाइत विभागाध्यक्ष डा. शैलेन्द्रमोहनझाकेँ जा कऽ उपराग देलथिन जे - हम एखन जीवितहिँ छी आ रामदेवबाबू हमर बेटाकेँ गरुड़पुराण पढ़ऽ कहैत छथिन।' शैलेन्द्रबाबू तँ तत्काल किछु नहि बुझलथिन, मुदा बादमे जखन ओ सब बात बुझलनि तकर बाद जे ठहक्का बजरल तँ गवेषक ओ हुनक पिताकेँ अपन गलतीक बोध भेलनि।

वस्तुतः जे गवेषक लोकनि हिनक अनुसन्धान करयबाक पद्धतिक अक्षरशः अनुपालन कयलनि तनिकर काज मैथिलीक किछु मानक शोध प्रबन्धक रूपमे जानल गेल अछि। मैथिली भाषा ओ साहित्यक सर्वथा अस्पृष्ट क्षेत्रमे अनुसन्धान करायब हिनक विशेषता रहलनि अछि। मैथिली नाटक ओ रंगमंच, लोकगाथा, लोक शब्दावली, विशेष साहित्यिक प्रवृत्ति आदि क्षेत्रक विषयमे हिनक निर्देशनमे सर्वाधिक अनुसन्धान भेलनि अछि। एखन धरि हिनक निर्देशनमे दर्जनाधिक गवेषक पी-एच.डी.क उपाधि प्राप्त कयलथिन अछि। एहिमेसँ अनेक शोध प्रबन्ध समस्त मैथिली अनुसन्धानक क्षेत्रमे अनुपम श्रीवृद्धि कयलक अछि।

साहित्य क्षेत्रमे प्रवेश

डा. झाकेँ साहित्यिक अभिरुचि मातृकसँ प्राप्त भेलनि मुदा साहित्य लेखनक प्रवृत्ति तहिया जगलनि जहिया ई एम.एल. एकेडमीक छात्र भेलाह आ ओतऽ श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर'क सान्निध्य भेटलनि। सामान्यतः कोनो व्यक्ति कविताक माध्यमसँ साहित्यमे प्रवेश करैत अछि, मुदा ई एकर अपवाद भेलाह। जहिया ई आठम वर्गक छात्र रहथि तहिया 1952 मे हिनक पहिल कथा **चन्द्रहार** हिनक अपन गाम कबिलपुरक प्रसिद्ध 'साहित्य-पुस्तकालय' दिससँ प्रकाशित होइत हस्तलिखित पत्रिका **संक्रान्ति**मे प्रकाशित भेलनि। एकटा कथाकारक रूपमे साहित्यजगतमे ई प्रविष्ट तँ भेलाह,

Scanned by CamScanner

मुदा जानल गेलाह ई अपन कथा **मुदा आब की ?**सँ । आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'क सम्पादनमे दरभंगासँ प्रकाशित प्रतिष्ठित मैथिली साप्ताहिक **मिथिला मिहिर**मे जुलाइ 1953मे हिनक ई कथा प्रकाशित भेलनि । पुनः हिनक एक गोट औरो कथा **दू ठोप नोर** 15 अगस्त 1953कें मिहिरमे प्रकाशित भेलनि । ओहि समयमे स्कूली छात्र होइतो मैथिलीक समकालीन कथाकारक रूपमे साहित्य जगतमे हिनका जानल जाय लगलनि । 1960 अबैत-अबैत निर्माण, वैदेही, पल्लव, इजोत, मिथिला दर्शन, अभिव्यञ्जना आदि प्रत्येक मैथिली पत्रिकामे हिनक अनेकानेक चर्चित कथा सब प्रकाशित भेलनि आ मैथिलीक निविष्ट कोटिक कथाकारक रूपमे ई जानल जाय लगलाह । अपन कथामे मिथिलाक उपेक्षित वृहत्तर समाजक इच्छा-आकांक्षा, ओकर दैन्य ओ पीड़ा, ओकर अभाव भरल जिनगीक सरसता ओ विवशताकें जाहि कलात्मक तानी-भरनीक संग अपन कथामे प्रस्तुत कयलनि, ताहि कारणे सभक दृष्टिपर हिनक चढ़ि जायब स्वाभाविक छल । कलमक एहि जादूगरकें कोना अपन खेमामे आनल जाय तकर प्रयत्न होअऽ लागल । केओ हिनका मार्क्सवादी छत्ता तर अनबाक प्रयास कयलनि, तँ किनको हिनकासँ अपेक्षा भेलनि जे ई फ्रायडीय कथा लिखथु । ओहि समयक चर्चित कथाकार ललित किछु दिन धरि हिनक शिक्षक सेहो रहल छलथिन, ओ स्पष्ट रूपसँ हिनका कहलथिन- रामदेव तों हॉट स्टोरी लिखह ।' आर्यावर्तमे हिनक **पहुना** कथाक हिन्दी रूपान्तरण **मेरा पहुना** पढ़ि ओहिसँ प्रभावित भेल राजकमल एकदिन हिनका ताकि कऽ अपन कथामे सेक्सक मशाला देबाक औचित्य बुझौलथिन । सोमदेवसँ जखन भेट होइनि तँ ओ मार्क्सवादक पाठ पढ़बथिन । मुदा कथाकार रामदेवझा हिनका लोकनिक बात सुनितो कोनो झंडा-पताका लगा कऽ लेखन करब, किंवा कोनो धारा विशेषमे दीक्षित होयब वा कोनो गोलमे सम्मिलित होयब नहि गछलनि । कथाक क्षेत्रमे अपन मार्ग अपनेसँ बनबैत ई आगू बढ़ैत रहलाह । हिनक **भितरिया धधरा** कथा ककरो हिनक मार्क्सवादी होयबाक भान करौलक, तँ **मनुक सन्तान** कथा समाजवादी, तहिना **एक खीराःतीन फाँक** कथा पढ़ि केओ हिनका फ्रायडवादी बुझलक तँ **धरतीमाता** कथा पढ़ि केओ हिनका संघवादी कहलक । मुदा के की कहैत अछि वा नहि कहैत अछि ताहि दिस बिना कोनो ध्यान देने ई विशुद्ध साहित्यवादी बनल, पूर्णतः सुचिन्तित भावसँ कथा लेखन करैत रहलाह । 1965मे हिनक पहिल कथा संग्रह **एक खीरा : तीन फाँक**, 1966 मे दोसर संग्रह **मनुक सन्तान** प्रकाशित भेलनि । एहि दुहू संग्रहक कतोक संस्करण भेल । हिनक तेसर कथा संग्रह **धरतीमाता** एकटा नमहर अन्तरालक बाद 1988मे प्रकाशित भेलनि ओ चारिम संग्रह **आजी माँ** 2009मे प्रकाशित भेलनि अछि । हिनक एहि संग्रह सभक कतोक कथा मैथिलीक किछु उत्कृष्टतम कथाक रूपमे परिगणित अछि । एहि मध्य हिनक अनेक कथा हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला, तेलुगू, पंजाबी आदि भाषामे अनूदित भऽ कऽ मैथिलेतर पाठक वर्ग द्वारा प्रशंसित भेल अछि । रामदेवझा कथालेखनकें पतलोक क्षणिक धधरा वा नारेबाजीक पर्याय नहि मानि एकरा साधना बुझलनि तें आइयो ओहिना कथा लिखि रहल छथि । मुदा हिनका संग जे लोकनि कथालेखन प्रारम्भ कयलथिन ताहिमेसँ अधिकांश कुंठा, अवसादसँ ग्रस्त भऽ वा अपन उपेक्षाक वेदनासँ त्रस्त भऽ किंवा गोल-गोलैसीमे नहि सकबाक कारणे पस्त भऽ कथा लेखनक क्षेत्रसँ अस्त भऽ गेलाह ।

साहित्य सर्जनक दृष्टिसँ हिनक दू वर्षक (1959-1961) पटना प्रवासक समय अत्यन्त उर्वर रहलनि । एक दिस अध्ययन तँ दोसर दिस ओही गतिमे लेखन चलैत रहलनि । सितम्बर 1960सँ पटनासँ प्रकाशित मिथिला मिहिरक प्रथमहि अंकमे हिनक **पिपासा** एकांकी प्रकाशित भेलनि । ई एकांकी हिनका बड़ ख्याति प्रदान कयलकनि । मिथिला मिहिरक प्रकाशनक ओहि आरम्भिक समयमे रचनाक घोर संकट रहैत छलैक । तें एकर प्रत्येक अंकमे अपन कोनो ने कोनो रचना देब हिनक प्रतिबद्धता रहलनि । कहल गेलैक अछि जे आवश्यकता आविष्कारक जननी होइत अछि । मिहिरकें लोकप्रिय बनयबाक हेतु ओ विभिन्न कोटिक पाठक वर्गक रुचिक अनुरूप साहित्य परसबाक प्रयोजनक पूर्त्तिक क्रममे हिनका द्वारा साहित्यमे एकटा चामत्कारिक प्रयोग भेल ।

अंगरेजीफूलक अवतरण

महिला लोकनिक रुचि ओ मानसिकताकें प्रतबिम्बित करैत मिहिरक सम्पादकक आग्रहपर रामदेवझा 'स्त्रीगण समाज' स्तम्भक हेतु **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** शीर्षकसँ एकगोट धारावाही लिखब गछलथिन । मुदा मिहिरक प्रायः प्रत्येक

Scanned by CamScanner

अंकमे हिनक कोनो ने कोनो रचना रहिते छलनि । सम्पादकीय दृष्टिएँ एकटा लेखकक दूटा रचना एक संग प्रकाशित होयब नीक नहि मानल जाइछ तेँ सैद्धान्तिक निर्णय भेल जे एहि धारावाहीमे लेखकक नाम नहि रहत । तकर पाछाँ दोसर कारण इहो जे मिहिरक पाठक ओ विशेष कऽ महिला पाठककेँ ई प्रतीति कराओल जाय जे एहि स्तम्भक लेखन कोनो महिले द्वारा कयल जा रहल अछि, जाहिसँ महिला वर्गमे मिहिरक प्रति आकर्षण बढ़य आ एही तरहक लेखनक स्फुरण होइक ।

पोस्टग्रेजुएटक छात्र रामदेवझाकेँ मिहिर-सम्पादक दिससँ ई चुनौतीपूर्ण लेखकीय दायित्व देल गेल छलनि । पुरुष भऽ कऽ महिलामुखी भाषामे महिलाक मनोवृत्तिकेँ ताहि तरहेँ अभिव्यंजित करब जाहिमे पठनीयता, रोचकता, क्रमबद्धताक संग-संग अग्रिम भाग पढ़बाक हेतु पाठकक मनमे उत्सुकता उत्पन्न कयने रहय । एहि स्तम्भक लेखन कोन शैलीमे होअय से एकटा पैघ समस्या छल । मिहिर सम्पादकक पहिने विचार भेलनि जे एकरा दूटा महिला सखीक बीच गप्प-शप्पक शैलीमे प्रस्तुत कयल जाय ।' एहिपर रामदेवझा हँसैत कहलथिन– तखन तँ ई पटना आकाशवाणीक चौपाल कार्यक्रम भऽ कऽ रहि जायत ।' अन्ततः सम्पादक एहि प्रस्तावित धारावाहीक शैलीक चयनक पूरा भार हिनकहि ऊपर धऽ देलथिन । बहुत चिन्तन-मननक बाद ई पत्रात्मक शैलीमे एकर लेखनक योजना बनौलनि जाहिसँ विछोहक स्थितिमे रहैत दूटा सखी पत्रक माध्यमसँ अपन सुख-दुखकेँ अपनामे बाँटय । एहि शैलीमे नारीमनक टीसकेँ उभारि कऽ प्रस्तुत करबाक प्रचुर अवसर छल, जकरा पढ़लासँ कोनो पाठिकाकेँ एहिमे अपन प्रतिबिम्बक दर्शन भऽ सकैक । एहि दुहू पत्र-लेखिकाक नाम की राखल जाय तँ ताहि सन्दर्भमे श्रीझाकेँ मन पड़लनि मिथिलाक गामघरमे बालिका लोकनिक बीच प्रचलित भैया, बहिना, बहिनपा, गंगाजली, प्रीतम, फूल, पान, सुपारी, लऽङ लगयबाक परिपाटी । ओही समयमे काजी नजरूल इस्लामक एकटा बंगला उपन्यास **बान्धनहारा**क कथावस्तु पढ़बाक हिनका अवसर भेटलनि । ओहिमे एक-दोसरकेँ कलमीलता ओ सोजेनफूल नामसँ सम्बोधित करैत दूटा सखीक बीच पत्राचार छैक । दूनू सखीक नाम हिनका प्रभावित कयलकनि । अपन स्तम्भक दुहू पत्र लेखिका नायिकाक सखीत्व संज्ञामे एकटा अभिनवत्व रहय तँ से हिनका प्रेरित कयलकनि अपन पत्नी योगमाया ओ मैथिलीक प्रसिद्ध गीतकार रवीन्द्रनाथठाकुरक पत्नी प्रेमलताक बीच चलैत पत्राचार । एक-दोसराकेँ दुहू सखी द्वारा अंगरेजीफूलक सम्बोधनक संग लिखल जाइत पत्रक भाषा, वर्त्तनी, शब्दक प्रयोग आ विषय-वस्तु हिनका अतिशय रोचक लगलनि । अन्ततः एहि स्तम्भक नामकरण कयलनि– **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** । एहि स्तम्भक रूप-रेखा एना बनल जे एकटा सखी गाममे रहत आ दोसर पटनामे । एक-दोसरासँ दूर रहैत दूनू सखीक बीच पत्राचार होयतैक जे पाठककेँ वास्तविके पत्राचारक भान करौतैक । एतावता गामवाली अंगरेजीफूलक दिससँ पहिल चिट्ठी लिखल गेल जे मिहिरक विद्यापति अंक (30 अक्टूबर 1960)मे प्रकाशित भेल । तत्पश्चात् उत्तर-प्रत्युत्तरक क्रममे प्रति सप्ताह धारावाही क्रममे एकर प्रकाशन चलऽ लागल । शीघ्रे ई स्तम्भ ततेक चर्चित भऽ गेल जे नारी-पाठकक कोन कथा व्यंग्यसम्राट प्रो. हरिमोहनझा, डा. सुधाकरझा 'शास्त्री' प्रभृति व्यक्तिकेँ ई अतिशय आकर्षित कयलकनि । आरम्भमे एहि पत्रात्मक उपन्यासक लेखकक नाम गुप्त रहल, मुदा से बेसी दिन नहि चलि सकल । प्रो. श्रीमायानन्दमिश्र ओहि समयमे पटना आकाशवाणीमे छलाह । ओ ओहि समयमे मिहिर-सम्पादकक विरोधी खेमामे छलाह । एक दिन ओ रामदेवझाकेँ पुछलथिन– ऐँ हौ अंगरेजीफूलक चिट्ठी तोँही लिखैत छह ?' ई चुप रहि गेलाह । हम तँ पहिले दिन पढ़ि कऽ बुझि गेलियह । मौगिआही आहे-माहे बड़ रोचक रहैत छह, मुदा अपन लेखकीय ऊर्जाकेँ एना कऽ उझिलब सेहो ठीक नहि ।' ई हुनक टिप्पणीपर बिहुँसि कऽ रहि गेलाह ।

अंगरेजी फूलक चिट्ठी स्तम्भक लेखकक नाम सामान्य रूपमे गुप्त छल, परन्तु पटनाक अन्तरंग मित्रमण्डली ओ दरभंगाक हुनक शुभेच्छु ओ आप्त जनकेँ ई नीक जकाँ बूझल छलनि जे ई स्तम्भ रामदेव लिखैत छथि । मइ 1961मे मिहिरक व्यवस्थाक सर्वेसर्वा श्रीकान्तठाकुर विद्यालंकार लग एहि स्तम्भक वास्तविक लेखकक नामक खुलासा भेलापर शेखरजीक हेतु किछु अप्रिय स्थिति सेहो उत्पन्न भेलनि । मिहिर सम्पादक सुरूमे जे उत्साह देखौने छलथिन से पछाति देखायब बन्द कऽ देलथिन आ एक दिन बिना कोनो पूर्व सूचनाक, कथानककेँ कोनो निष्कर्षपर पहुँचबासँ पहिने

Scanned by CamScanner

स्तम्भकेँ बन्द कऽ देलथिन । एहि स्तम्भक एकतालिस गोट पत्र प्रकाशित भेल । चारि गोट औरो पत्र जे सम्पादकक लग छलनि, तकरो दाबि कऽ राखि देल गेल ।

हरिमोहनझाक कन्यादानक नायिका बुच्चीदाइ जकाँ अकस्माते अवतरित भेलीह अंगरेजीफूल आ मैथिलीक पाठकक ह्रदयपर अपन अमिट छाप छोड़ि देलनि । मिहिरक स्त्रीगण समाजसँ अंगरेजीफूलक प्रत्याख्यान करायब पाठककेँ उचित नहि बुझयलैक । मिहिरक प्रति पाठकक आकर्षणक ग्राफ जेना नीचाँ उतरऽ लागल । तखन सम्पादककेँ जेना अपन गलतीक अनुभव भेलनि । अंगरेजीफूलकेँ फेरसँ सुरू करब तँ सम्भव नहि छल, मुदा पाठककेँ बान्हि कऽ रखबाक हेतु अंगरेजीफूल सन कोनो दोसर स्तम्भ यथाशीघ्र सुरू करबाक आवश्यकता हुनका बुझाय लगलनि । एहि तरहक लेखनक क्षमता हिनकेटामे छलनि, नारी मनोविज्ञानक जेहन सूक्ष्म पकड़ ओ ओकरा तद्वते उपस्थापित करबामे जे हिनक सिद्धहस्तता छलनि से तथ्य सर्वज्ञात भऽ चुकल छल । अतः सम्पादक पुनः हिनकासँ एहने सन दोसर स्तम्भ लिखबाक आग्रह कयलथिन । अंगरेजीफूलक संग भेल दुर्घटनासँ क्षुब्ध रहितो श्रीझा सम्पादकक अनुरोधक सम्मान करैत पत्रात्मके शैलीमे दोसर स्तम्भक लेखन सुरू कयलनि जकर शीर्षक भेल- **बहिनाक विरोग** । पुनः तेसरो पत्रात्मक स्तम्भ लिखलनि- **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** । ई तीनू धारावाही मैथिली साहित्यमे अविस्मरणीय बनि गेल । मैथिलीक प्रयोगधर्मी उपन्यासक कोटिमे परिगणित ई तीनू धारावाही, एकरहि अनुकरणपर रचना करबाक हेतु कतेको लेखक-लेखिकाकेँ प्रेरित कयलक । मिहिरमे पश्चात् एहि ढर्रापर अजस्त्र रचनाक प्रकाशन होइत रहल । एहि अर्थमे रामदेवझाकेँ मैथिली पत्रात्मक साहित्यक अधिष्ठाताक श्रेय देल जाइत छनि तँ से उचिते ।

मिहिरमे धारावाही प्रकाशनक दीर्घ अवधिक बाद पाठकक विशेष आग्रहकेँ देखैत 2002 मे उपर्युक्त तीनू पत्रात्मक उपन्यास मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभंगा द्वारा पुस्तकाकार प्रकाशित कयल गेल आ एकर छुहक्का उड़ि गेलैक । कोलकातासँ प्रकशित मैथिली दैनिक **मिथिला समाद**मे 2008-09क अवधिमे एहि तीनू उपन्यासकेँ पुनः धारावाही क्रमसँ प्रकाशित कयल गेल जे एकर कालजयिताक परिचायक थिक ।

हिनक दू वर्षक पटना प्रवास साहित्यक यावन्तो विधामे लिखबाक हेतु हिनका अवसर प्रदान कयलकनि । कथा, कविता, एकांकी ओ उपन्यासक अतिरिक्त एहि अवधिमे लोकसाहित्य विषयक हिनक अनेक ललित निबन्ध सब प्रकाशित भेलनि । पटनाक बाद दुमका सन शुष्क क्षेत्रमे सेहो हिनक लेखनी मधुवर्षा करैत रहलनि । दरभंगामे स्थायी रूपसँ अयलाक बाद तँ हिनक लेखनी सर्जनात्मक ओ अनुसन्धानात्मक दुनू क्षेत्रमे एक समान गतिसँ चलऽ लगलनि । से लेखनी पछिला पचपन वर्षसँ अविराम गतिएँ चलि रहलनि अछि । साहित्यक यावन्तो विधा हिनक लेखनीसँ समृद्ध भेल अछि । मैथिलीक जाही विधाकेँ ई कमजोर बुझलनि तकरे अपन लेखनीसँ समृद्ध करैत रहलाह । वस्तुतः रामदेवझाक रचना-संसार साहित्यकारक ओहि बहुआयामी स्वरूपक परिचायक थिकनि जाहिमे मैथिलीक विरले लेखक सन्तुलन राखि सकल छथि । हिनक लेखनक एही असीम बहुआयामी क्षमताकेँ देखैत मैथिलीमे हिनका **सव्यसाची** साहित्यकारक विशेषणसँ विशेषित कयल जाइत छनि, तँ से उचिते ।

कविता ओ कवि सम्मेलनक मंच

डा. रामदेवझाकेँ आरम्भमे कविता-गीत लेखन दिस सेहो अभिरुचि छलनि । एम.एल. एकेडमीक समारोह सबमे काव्यपाठ करैत छलाह । विद्यापति पर्वमे विभिन्न ठाम आरम्भमे आमन्त्रितो कयल जाइत रहलाह । कवि सम्मेलनक मंचपर हिनक परिचिति एकटा गीतकारक रूपमे बनलनि । ओना कविगोष्ठीमे ई मुक्तक ओ नवकविताक पाठ सेहो करैत रहल छलाह । हिनक पहिल कविता **भ्रान्त कविसँ** 1956मे वैदेहीमे प्रकाशित भेलनि । पटना आकाशवाणीसँ फरवरी 1958मे हिनक पहिल कविता **साँझुक कथाक** प्रसारण भेल छलनि ।

Scanned by CamScanner

फेर हेतै भोर

1961मे जखन ई प्राध्यापकक वृत्तिमे गेलाह तकर किछु वर्षक बादसँ क्रमशः ई मंचीय कवि सम्मेलनसँ दूर होइत चल गेलाह । एकर पहिल कारण छल विद्यापति पर्वक बढ़ैत भव्यताक संगहि कवि लोकनिक उपेक्षाक क्रमक प्रारम्भ, दोसर गद्यलेखनमे अतिव्यस्त भऽ जयबाक कारणे कवितासँ ई थोड़े दूर होइत चल गेलाह । यद्यपि स्वरुचिसँ यदा-कदा कविता-रचना करैत रहलाह । अनुरोधपर ई फरमाइसी पद्य ओ प्रशस्तिकाव्य सेहो लिखैत रहलाह अछि । नवगीत, गजल, बाल कविता लेखन दिस सेहो प्रवृत्ति रहलनि अछि । बहुत आग्रह भेलापर गोटेक मंचसँ कवितोक पाठ करैत रहलाह अछि । विगत किछु वर्षमे दरभंगामे ऋचालोक संस्थाक सक्रियता बढ़ल रहैक, तँ ओकर मासिक काव्य गोष्ठीमे ई नियमित रूपसँ उपस्थित भेल करथि । नवागन्तुक कवि लोकनिकेँ काव्य-शिक्षा दैत हुनक मार्गदर्शन करथि । ऋचालोकक एहि आयोजनमे मिथिलामे पूर्वमे प्रचलित समस्यापूर्त्तिक परम्पराकेँ ई प्रारम्भ कयलनि । हिनका द्वारा एक बेर एहने एकटा समस्यापूर्त्ति देल गेल- **फेर हेतै भोर** । एहि समस्यापर कतोक गोटे कविता लिखलनि । ई अपनहुँ एहिपर एकटा मुक्तक लिखने छलाह । एहि टुकड़ीकेँ लऽकऽ हास्य-व्यंग्यक प्रख्यात कवि डा. विद्याधरमिश्र कन्यादान ओ दहेजक समस्यापर जे एकटा मार्मिक व्यंग्य कविता लिखलनि से हिट कऽ गेल । पछाति डा. मिश्र अपन जे नवीन काव्य संग्रह प्रकाशित कयलनि तकर नामे राखि देलनि- **फेर हेतै भोर** ।

हिनक कविताक कोनो संग्रह अद्यावधि प्रकाशित नहि भेलनि अछि, मुदा विभिन्न पत्र-पत्रिकाक माध्यमे हिनक कविता, गीत ओ नवकविता लोकानुरंजन करैत रहल अछि । प्रो. रमानाथझा अपन नवीन गीत संग्रहमे समकालीन मैथिली गीति काव्यक सशक्त हस्ताक्षरक रूपमे हिनक गीतकेँ स्थान देने छलथिन । रामकृष्णझा 'किसुन' जखन नवकविताकेँ आधार प्रदान करबाक हेतु सम्यक विवेचनपूर्वक 'मैथिली नवकविता'क संकलन तैयार कयलनि तँ डा. रामदेवझाकेँ अपन एहि संग्रहमे प्रमुखताक संग स्थान प्रदान कऽ हिनक समकालीनता-बोधकेँ उजागर कयने छलथिन । परवर्त्ती कालमे सेहो ई **वह्निवन्या, कोपड़, उड़ाँत गेल्ह, हमर अहाँ, ले बलैया** सन किछु तेहन आधुनिक कविताक रचना कयलनि जे अपन वैचारिकता ओ गाम्भीर्यक कारणे मैथिली नवकविताक क्षेत्रमे मानक कहल जा सकैत अछि । ओना हिनक कविताक संग्रह आबि गेनहि हिनक कविस्वरूप फड़िच्छ भऽ प्रकट होयत आ कविता सभ सर्वजनसुलभ भऽ सकत ।

साहित्यिक उपनाम

साहित्यकार लोकनि द्वारा उपनाम रखबाक परम्परा रहल अछि । आधुनिक कालमे मैथिलीमे जनसीदन, यदुवर, द्विजवर, भुवन, मधुप, सुमन, किरण, यात्री, अमर, कलेश, मोहन, अज्ञात आदि सन कतोक साहित्यिक उपनाम देखल जाइछ । मुदा ई उपनाम सब ओहि लेखक लोकनिक कवि-व्यक्तित्वहिकेँ मुख्य रूपसँ उद्भासित करैत अछि । प्रायः मैथिली साहित्यमे उपनामक एही प्राचुर्यक कारणे अन्य भाषा-भाषी मध्य ई भ्रान्ति पसरल जे आधुनिक मैथिली साहित्यमे मुख्यतः कवितेक सृष्टि भऽ रहल अछि ।

आरम्भमे उपनामक अभिरुचि भेलनि तँ 'राजहंस' उपनाम रखलनि । एहि उपनाम सहित हिनक मात्र एकगोट निबन्ध **1954 ओ मैथिली** 1955मे कानपुरसँ प्रकाशित मिथिलादूतमे प्रकाशित भेलनि । एहि उपनामक प्रयोग आगुओ करितथि, मुदा ओही समयमे मन्त्रनाथझा अपन 'हंसराज' उपनामक संग साहित्य क्षेत्रमे प्रवेश कयलनि । राजहंस ओ हंसराज लऽ कऽ साहित्यमे भ्रम उत्पन्न होइतय । अतः एहि नामकेँ ई सर्वदाक लेल परित्याग कऽ देलनि । मैथिली साहित्यमे हिनक प्रवेशे एकटा गद्यकारक रूपमे भेलनि । उपनाम रखने साहित्य ओ साहित्यकारक व्यक्तित्वक प्रति कोन तरहक धारणा बनैत छैक ताहि खतराक बोध सेहो भेलनि । तँ पश्चात् अपना नामक संग कोनो उपनाम जोड़बाक पक्षमे ई कहियो नहि रहलाह । अपन मूल नामहिसँ साहित्य क्षेत्रमे जानल जाइ, सैह हिनकर ध्येय रहलनि, जाहिमे ई सफल रहलाह । मैथिलीमे डा. रामदेवझा कहने एकटा सम्पूर्ण सिद्धहस्त साहित्यकारक रूपमे हिनक छवि स्वतः उभरि कऽ सामने आबि जाइत छनि ।

Scanned by CamScanner

एतावता उपनाम तँ नहि मुदा आवश्यकता पड़लापर किछु छद्मनामसँ ई अवश्य लेखन करैत रहलाह अछि । एहेन हिनक एक गोट छद्मनाम छनि – सपूत । एहि नामसँ निर्माण जो मिथिलामिहिरमे हिनक बहुतो रचना सब प्रकाशित छनि । एहिसँ अतिरिक्त तारापतिसिंह, मुद्राराक्षस, अग्निजिह्व, महेश्वरझा, बलदेवझा आदि छद्मनामसँ सेहो विभिन्न पत्र-पत्रिकामे गोटपघरा रचना आदि प्रकाशित छनि ।

1955-56क अवधिमे हिनका मार्क्सवादी दर्शन पढ़ौनिहार कथाकार मित्र सोमदेव 'अमृतहसन' नामसँ साहित्यमे लिखबाक हेतु जोर देने रहथिन । उर्दूक सआदत हसन मंटोक तर्जपर अमृतहसन नाम धारण करयबाक पाछाँ हुनक तर्क छलनि जे ई नाम गंगा-जमुनी साझा संस्कृति ओ साम्प्रदायिक एकताक प्रतीक होयत । ई अपन मित्रक एहि परामर्शकेँ नकारैत कहलथिन- साहित्यमे हम एकमात्र अपन नामसँ परिचित होअऽ चाहैत छी, कोनो छद्म-कृत्रिम नाम-उपनामसँ नहि ।'

रंगमंच ओ नाटक

अपन रंगकर्मी माम पं. रामजतनमिश्रक प्रभावेँ हिनकामे बाल्यावस्थहिसँ रंगकर्मक प्रति अभिरुचि भऽ गेलनि । हिनक गाम कबिलपुरमे 'कबिलपुर ड्रामेटिक क्लब' नामक एकगोट संस्था छल । पश्चात् एकर नाम भारती कला परिषद भऽ गेलैक । एहि संस्था द्वारा दुर्गापूजाक अवसरपर गामक भगवती स्थान परिसरमे आयोजनपूर्वक तीन-चारि राति नाटकक मंचन होइत छल । मातृकसँ गाम अयलाक बाद बालक रामदेव स्वत: अपन गामक एहि नाट्य संस्थासँ सम्बद्ध भऽ गेलाह । ओहि समयमे विशेष रूपसँ भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक सत्य हरिश्चन्द्र, राधेश्याम कथा वाचकक ईश्वर भक्ति, सती-पार्वती, वीर अभिमन्यु, कृष्णावतार, श्रवणकुमार आदि पौराणिक नाटकक मंचन होइत छलैक जाहिमे ई बाल कलाकारक रूपमे सहभागी बनैत रहलाह ।

1951मे एम.एल.एकेडमीमे अयलाक बाद हिनक अभिनय प्रतिभाकेँ एकटा नवीन आयाम भेटलनि । स्कूलमे सरस्वतीपूजाक अवसरपर प्रतिवर्ष नाटकक मंचन होइत छलैक जकर व्यवस्थापक मैथिली शिक्षक श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर' रहैत छलाह । 1953मे स्कूलमे मंचित **शहीद भगतसिंह** नाटकमे छात्र रामदेव मि. पिटपिटक अभिनय कयलनि आ अपन उत्कृष्ट अभिनयक हेतु प्रशंसित ओ पुरस्कृत भेलाह । 1954 मे शेखरजीक **तमासा** नाटक खेलायल गेल जाहिमे मनोहरक भूमिकाक लेल ई भूरिश: प्रशंसाक भागी बनलाह ।

मातृभाषामे नाटक

ताहि दिन लहेरियासरायमे चित्रगुप्त सभा नामक एक गोट संस्था बेस सक्रिय छल । सभा द्वारा चित्रगुप्त पूजाक अवसरपर प्रति वर्ष कमला नेहरू स्मारक पुस्तकालयक परिसरमे नाटकक आयोजन कयल जाइत छलैक । ई संस्था वस्तुत: लहेरियासरायक कन्हैयामिश्र पोखरि, बलभद्रपुर-नवटोलियाक कायस्थ लोकनिक छलनि, तेँ एहिमे स्वभावत: हिन्दी नाटकेटा मंचित होइत छल । छात्र रामदेवझा अपन किछु कायस्थ मित्रक माध्यमे एहि संस्थाक सम्पर्कमे अयलाह । संस्थाक एकटा तेज-तर्रार सदस्य उपेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तवसँ हिनका बेस घनिष्ठता भऽ गेलनि । एक बेर अवसर पाबि ई श्रीवास्तवजीकेँ पढ़ा देलथिन जे सभा द्वारा मातृभाषामे नाटक नहि कयल जाइत अछि से बड़ लाजक बात थिक । श्रीवास्तवजी कहलथिन- बोलो, तुम करोगे मातृभाषामे नाटक, तो इस बार से जरूर मातृभाषामे नाटक होगा ।'

चित्रगुप्त पूजासँ पूर्व सभाक बैसाड़ भेल । ताहिमे श्रीवास्तवजी अड़ि गेलथिन जे– मातृभाषा मैथिलीमे भी होना चाहिए नाटक ।' सदस्य लोकनिकेँ हुनक एहि प्रस्तावकेँ मंजूर करऽ पड़लनि । तकर बाद तँ ई एहि संस्थाक मैथिली नाटकक मंचनक संयोजके बना देल गेलाह । अपन मित्र वर्गक सहयोगसँ रामदेवझा एहि संस्थाक मंचपर छींक, निरक्षरता निवारक पाठशाला, मलरवि, सत्यनारायण पूजा, बौआक दाम आदि कतोक हास्य एकांकीक मंचनेटा नहि कयलनि,

Scanned by CamScanner

अपितु एहि मंचक हेतु स्वयं गोनूझाक कतोक कथाकेँ नाट्य रूपान्तरित कयलनि । सभाक मंचपर मैथिली अभिनय खूब जमल करय । ध्यातव्य जे 1958 मे एही मंचपर सर्वप्रथम मिथिलेश ओ कृष्णकुमारझा नामक छात्र द्वारा पहिल बेर लोकनृत्यक रूपमे जटाजटिन नृत्य प्रस्तुत कयल गेल छल जे दर्शकके‌ँ खूब नीक लागल छलैक ।

1956मे दरभंगामे 'वैदेही समिति' द्वारा 'अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलन'क आयोजन कयल गेल छलैक । एहि अवसरपर रामकृष्णझा 'किसुन' रचित एकांकी **उदना रे मोर कतए गेलाक** मंचन भेल । एहिमे रामदेवझा उदनाक अभिनय कयलनि आ सर्वोत्कृष्ट अभिनेताक पुरस्कार हिनका प्रदान कयल गेलनि । 1958मे कोलकातामे मिथिला संघक अखिल भारतीय आयोजन भेल छलैक । एहिमे कवि रूपमे आमन्त्रित छलाह काशीकान्तमिश्र 'मधुप', श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर', सुधांशुशेखरचौधरी ओ रामदेवझा । ओहि समयमे कलकत्ताक रंगमंचक उदय नहि भेल छलैक । बाबूसाहेब चौधरी अमरजीक सुझावपर दरभंगामे जटा-जटिन लोकनृत्यकेँ पहिल बेर प्रस्तुत कयनिहार मिथिलेश ओ कृष्णकुमारकेँ सेहो आहूत कयलथिन जे ओतऽ पुन: जटाजटिन नृत्य प्रस्तुत कयलनि । सम्मेलनक आयोजक बाबूसाहेबचौधरी ओ प्रो. प्रबोधनारायणसिंहक आग्रहपर श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर' ओ शेखरजी द्वारा मूक-बधिरक अभिनय तथा **निरक्षरता निवारक पाठशाला** एकांकीक मंचन भेल जाहिमे रामदेवझा सेहो एकटा पात्र छलाह ।

1959सँ 1961 धरि दू वर्षक अपन पटना प्रवासक क्रममे ई एकटा कुशल अभिनेता ओ नाट्यकारक रूपमे सेहो अपन परिचिति बनौलनि । 1960मे पटना विश्वविद्यालयक मैथिली साहित्य परिषदक वार्षिकोत्सवक अवसरपर रामदेवझा मूक-बधिरक एकल अभिनय कयलनि जे बेस चर्चित भेल । हिनक ई अभिनय प्रो. हरिमोहनझाकेँ ततेक प्रभावित कयलकनि जे ओ विश्वविद्यालयक दर्शन शास्त्र विभागक छात्र लोकनिक विदाइ समारोहक अवसरपर रामदेवझाकेँ विशेष रूपेँ आमन्त्रित कऽ हिनकासँ पुन: ओ अभिनय करौलथिन ।

पटनाक रंगमंचपर

1960मे चेतना समिति, पटना द्वारा आयोजित विद्यापति पर्व समारोहक अवसरपर पुन: हिनका द्वारा मूक-बधिरक एकल अभिनय प्रस्तुत भेल जे बेस प्रशंसित रहल । संगहि प्रो. हरिमोहनझाक **आदर्श कुटुम्ब** कथाक नाट्य रूपान्तरणक मंचन सेहो भेल । एकर रूपान्तरणकर्त्ता छलाह रामदेवझा । एहि नाटकमे ससुरक भूमिकामे रूपान्तरकर्त्ता स्वयं रहथि । आदर्श कुटुम्बक मंचनक कोनो पूर्व सूचना हरिमोहनबाबूकेँ नहि देल गेल छलनि । जखन नाटकक अभिनय भेलैक तँ दर्शक हँसैत-हँसैत लोटपोट होइत रहलाह । दीर्घामे अगिला पाँतीमे बैसल हरिमोहनबाबूक हँसी रुकबाक नामे नहि लैनि । हुनक बगलमे बैसल बाबूसाहेबचौधरी आदर्श कुटुम्बकेँ एहन सफल नाट्य स्वरूप प्रदान करबाक हेतु जखन हरिमोहनबाबूकेँ साधुवाद देलथिन तँ हठात् ओ अवाक् रहि गेलाह । ई हुनकालेल बड़ पैघ सरप्राइजिंग छलनि जे हुनकहि कृतिकेँ मंचित कयल जा रहल छलनि आ से ओ बिना बुझने तकर आनन्दमे डूबल छलाह । हुनक आँखि छलछला उठलनि । अगिला दिन जखन हुनका रामदेवझासँ भेट भेलनि तँ ओ हुनक दुनू हाथ धऽ लेलथिन आ भावुक होइत कहलथिन- अपन रचना पढ़ि हम अनका हँसैत देखने रहियैक मुदा रातिखन हम स्वयं अपन रचनाक मंचन देखि खुलि कऽ हँसलहुँ अछि, तकर श्रेय तँ अहीँकेँ देब ।'

मूक-बधिरमे बौकाक अभिनय तथा आदर्श कुटुम्बमे ससुरक भूमिकामे उत्कृष्ट अभिनयक हेतु अभिनेता रामदेवझाकेँ हरिनन्दनठाकुर आइ.ए.एस. एवं बाबूसाहेबचौधरी पुरस्कारस्वरूप क्रमश: स्वर्ण पदक ओ रजत पदक देबाक घोषणा कयलथिन । पछाति आदर्श कटुम्बक प्रसारण पटना आकाशवाणीसँ सेहो भेल । हरिमोहनबाबू आकाशवाणीसँ प्राप्त पारिश्रमिकक राशि पुरस्कारस्वरूप एकर रूपान्तरकर्त्ता रामदेवझाकेँ प्रदान कयलथिन ।

रंगकर्ममे मातृभाषाक नाटकक फॉर्मूलाक प्रयोग रामदेवझा अपन गामक नाट्य संस्थामे सेहो कयलनि । अपन गाममे ई प्रयत्नपूर्वक मैथिली नाटकक आयोजन कराबऽ लगलाह । बादमे तँ स्थिति एहन भऽ गेल जे हिनक गाममे मैथिलीये नाटक बेसी जमऽ लागल जे बहुतो गोटाक हेतु ईर्ष्याक कारणो बनल । 1961मे प्राध्यापकक वृत्तिमे अयलाक

Scanned by CamScanner

बाद प्राय: हिनका रंगमंचपर अभिनय करैत नहि देखल गेलनि अछि । तथापि नेपथ्यक अभिनेताक रूपमे तँ क्रियाशील रहबे कयलाह अछि ।

नाट्य क्षति

रंगमंच ओ नाटकक यैह सूक्ष्म ज्ञान ओ दीर्घ अनुभव हिनका एकटा सफल नाटककार बनबामे योग देलकनि । पिपासा, नव बाट नव बटोही, चाननक बसात प्रभृति हिनक एकांकी श्रव्य ओ दृश्य दुहू माध्यमक द्वारा बेर-बेर प्रसारित-मंचित होइत रहलनि । 1959मे महाभारतक कथापर आधारित ई **प्रतिशोध** नामक एकटा पूर्ण नाटकक लेखन कयने रहथि । नाटकक मूल भाव छलैक महाभारतक विभिन्न पात्रक प्रतिशोध भावना आ तकर प्रतिफल ओ महायुद्ध । महाभारतक ओहि समस्त प्रतिशोध कथाकेँ गुम्फित-संयोजित कऽ हिनका द्वारा एकटा नव प्रयोग कयल गेल छल । आनन्दपुर डेउढ़ीक हिनक मित्र रोहितेश्वरसिंह (जामुनजी)केँ ओ नाटक ततेक पसिन्न पड़लनि जे ओ ओकरा डेउढ़ीमे दुर्गापूजाक अवसरपर 1960मे मंचनक हेतु लऽ गेलथिन । ओहि ठाम 'प्रतिशोध'क सफल मंचनो भेल मुदा तकर बाद नाटकक पांडुलिपि कतहु गुम भऽ गेल । नाटककार डा.झाक हेतु ई बड़ पैघ साहित्यिक क्षति साबित भेलनि ।

पसिझैत पाथरक पहिल मंचन

हिनक दोसर प्रयोगधर्मी नाटक **पसिझैत पाथर** सेहो बेस चर्चित भेलनि जकर अनेकश: मंचन भेल । एहिमे 1976मे चेतना समिति, पटनाक मंचपर भेल मंचनकेँ ऐतिहासिक कहल जायत । 1976मे मिथिला विश्वविद्यालयमे युवामहोत्सवक आयोजनमे रामदेवझाक निर्देशनमे विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली विभागसँ मैथिली एकांकीक सफल प्रदर्शन भेल छल जाहिमे छात्रा लोकनि सेहो भाग लेने छलीह । तत्कालीन कुलपति डा. मदनेश्वरमिश्र ओहिसँ प्रभावित छलाह । ओ चेतना समितिमे मिथिला विश्वविद्यालय द्वारा मैथिली नाटकक प्रस्तुतिक प्रस्ताव दऽ देलथिन । हुनकहि वचनानुसार मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक स्नातकोत्तर मैथिली विभागक छात्र-छात्रा लोकनि पसिझैत पाथर नाटकक संग ओतऽ पहुँचल रहथि । मुदा दरभंगा टीमकेँ ओहि ठाम उचित आतिथ्य देबाक बदला हतोत्साहित करबाक प्रयास कयल गेलैक । पटनाक रंगकर्मी द्वारा सेहो नाट्य प्रस्तुति आयोजित छल । दरभंगा टीमकेँ कखन अवसर देल जायत से कहबालेल केओ तैयारे नहि छल । अस्तु, जेना-तेना टीमकेँ समय भेटलैक आ नाटक सुरू भेल ।

पसिझैत पाथरक पहिल दृश्य नाटकमे नाटक छैक । गामक उत्साही युवक सभ नाटक करबालय एक दिस फाँड़ भिड़ने तँ दोसर दिस गामक किछु गोटा नाटक नहि होअऽ देबऽलय भाला-बरछी तनने । मंचपर धरा-पकड़ीक स्थिति उत्पन्न भऽ गेलैक । दर्शकक भीड़मसँ किछु गोटा छड़पि कऽ मंचपर चढ़ल । चारू दिस एके बेर हलचल मचि गेलैक । सब एकरा वास्तविके हंगामा बूझि लेलक । महिला लोकनि तँ जान बचा कऽ पड़यबालय उद्यत भऽ गेलीह । एहि कोलाहलक बीच मंचपर नाटकक अभिनय आगाँ बढ़ैत गेल तखन दर्शक समुदायकेँ बुझबामे अयलनि जे मंच आ मंचक नीचाँमे जे हंगामा भेल छल से नाटकक प्रथम दृश्य छल । तकर बाद जे तालीक गड़गड़ाहटि सुरू भेल से बन्द होयबाक नामे ने लेअय । प्रतिद्वन्द्वी नाट्य टीमक पेटक पानि डोलऽ लगलैक । नाटककेँ बीचेमे कोना भाँड़ल जाय, रंगमे भंग कोना कयल जाय तकर षड्यन्त्र नेपथ्यमे सोचल जाय लागल ।

नाटक दर्शककेँ नीक जकाँ बान्हि चुकल छल । नाटकक प्रथम दृश्यमे दर्शक दीर्घासँ छड़पि कऽ जे ग्रामीण युवक मंचपर चढ़ल छल ओकर नाम छलैक चानन । एकटा दृश्यमे शहरक सड़कक किनारमे चानन आ ओकर कमौआ पत्नी चम्पाक बीच रोचक संवाद चलि रहल छलैक । हठात् मंचपर एकटा कुकुरक प्रवेश भेल । ओ कुकुर आबि कऽ चाननक बगलमे पड़ल टिफीन कैरियर सूँघऽ लागल । कुकुरकेँ देखि अकस्मात् चम्पा चाननक दिससँ अपन दृष्टि हटा कुकुरकेँ हट्-हट् कहि रोमैत बाजलि- मार बाढ़नि धऽ कऽ सरधुए के ! तोरो दुख दै लय हमहीं भेटलियह ।' चम्पाक ई संवाद ओ आंगिक अभिनय ततेक स्वाभाविक आ स्वत: स्फूर्त्त छलैक जे दर्शककेँ ई नाटकक हिस्से बुझयलैक । पुन: एक बेर कसगर तालीक गड़गड़ाहटि पड़ल ।

Scanned by CamScanner

चम्पा आ चाननक भूमिका कऽ रहल (डा.) ललिताझा ओ (डा.) मुरलीधरझा तँ अपन प्रत्युत्पन्नमतित्वसँ स्थितिकेँ सम्हारि लेलनि, मुदा मंचक पाछाँ गल-गुल होअऽ लगलैक। आतिथेय लोकनि नीक जकाँ बूझि गेलाह जे पसिझैत पाथरक मंचनमे जानि-बूझि कऽ व्यवधान ठाढ़ कयल जा रहल छैक। ओ लोकनि सतर्क भऽ गेलाह। तकर बाद विरोधी लोकनिक किछु नहि चललनि। अपना सफलताक झंडा लहरबैत नाटक समाप्त भेल। पटनामे मैथिली रंगमंचक इतिहासमे पसिझैत पाथर अपन अविस्मरणीय छाप छोड़ि गेल। नाटकक समाप्तिक बाद प्रतिद्वन्द्वी नाट्य टीमक एक चर्चित साहित्यकार व्यंग्य करैत प्रो. रामदेवझासँ पुछलथिन- कहिये श्रीमैन ! ई कुकुर दरभंगे से लाये थे ?' प्रो. झा मुस्कियाइत उत्तर देलथिन- नहि-नहि ई कुकुर तँ विशुद्ध पटनियाँ छल।' व्यंग्यकर्त्ताकेँ अपन व्यंग्यक सटीक उत्तर भेटि गेलनि। ओ सकपकाइत हें हें करऽ लगलाह।

पत्रकारिता ओ पत्र-सम्पादन

स्कूली जीवनक अन्तरालमे जखन रामदेवझा प्रेस-व्यवसायमे प्रवेश कयने छलाह तखन पत्रकारिताक आरम्भिक संसर्ग भेल छलनि। ओहि समयमे विश्वहितकारक मण्डल नामक एकगोट संस्था छल। ओकर संयोजक-पोषक प्रकाश प्रेसक स्वत्वाधिकारीए छलाह। ओहि संस्थासँ **विश्वशान्ति** नामक हिन्दी मासिक पत्रिका बहराइत छल जे प्रकाशे प्रेसमे छपैत छल। ओहि पत्रिकाक प्रेसस्थ क्रिया-कलापकेँ हिनका लगसँ व्यावहारिक रूपमे देखबाक अवसर भेटल छलनि। अवचेतन मनमे पत्रकारिताक बीज प्रायः ओही समयमे रोपा गेल छलनि।

एम.एल. एकेडमीक छात्र-जीवन रामदेवझाक साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्कारकेँ विकसित होयबाक अवसर प्रदान कयलक। ओही क्रममे हिनका भीतर पत्रकारिताक बीजाङ्कुरण सेहो भेलनि।

1954मे अमरजीकेँ **वैदेहीक** सम्पादनक दायित्व सेहो भेटलनि। अमरजी अपन सम्पादन कालमे वैदेहीकेँ सामग्री ओ स्वरूप दुहू दृष्टिएँ आकर्षक बनौलनि। ओ जखन पटना आकाशवाणी जाथि तँ ओतऽसँ वैदेहीमे प्रकाशन हेतु प्रसारित मैथिली विषयक हिन्दी लेख सभ आनथि। कतिपय मैथिल विद्वान लोकनि द्वारा हिन्दीमे लिखित एहि लेख सभकेँ मैथिलीमे अनुवाद करबाक कार्य छात्र रामदेव कयल करथि। संगहि प्रूफ रीडिंग ओ प्रेसक अन्य काज सभ सेहो देखथि।

अनुवादक फोका

एतऽ एकटा रोचक रहस्यक उद्घाटन करब अप्रासंगिक नहि होयत। प्रो. जयदेवमिश्रक एकटा हिन्दी वार्त्ता 'मिथिला का हास्य-साहित्य' अकाशवाणी पटनासँ प्रसारित भेल छलनि। छात्र रामदेव ओकर मैथिली अनुवाद 'मिथिलाक हास्य-साहित्य' शीर्षकसँ कयलनि जे मार्च 1954क वैदेहीमे प्रकाशित भेल। एहि निबन्धमे हरिमोहनबाबूक रचनाक प्रसंग एकठाम कहल गेल छल-- समाज के जिस अंग पर श्रीहरिमोहनबाबू दिखाने के लिए हँसते-हँसते प्रहार करते हैं वहाँ छाले तक निकल आते हैं।'

मैट्रिकक फाइनल इयरक छात्र रामदेव अपन सहज बुद्धिसँ एह अंशक मैथिली अनुवाद कयलनि-- समाजक जाहि अंगपर श्रीहरिमोहनबाबू देखैबाक हेतु हँसैत-हँसैत प्रहार करैत छथिन्ह, ओतै फोका धरि बहार भै जाइत छैक।'

मैथिलीमे 'छाला' शब्दक अर्थकेँ व्यंजित करबाक हेतु कोनो सटीक शब्द प्रायः नहि अछि। अनुवादक एहि 'छाला'क हेतु 'फोका' शब्दक प्रयोग कयलनि। एकर पाछाँ कारण छल ओहि समयमे बेस चर्चित बैजू बाबरा फिल्मक ओ गीत--

किस्मत फूटी आस न टूटी
पावों में पड़ गये छाले
ओ दुनियाँ के रखवाले।

Scanned by CamScanner

फिल्ममे उपर्युक्त गीतकेँ फिल्मयबाक क्रममे बैजू बाबराक पैरपर विशेष फोकस करैत ओहिमे पड़ल ढल-ढल फोकाकेँ देखाओल गेल छल । बस अनुवादककेँ 'छाला'क सटीक मैथिली पर्याय 'फोका' भेटि गेलनि । मैथिलीमे फोका पड़ब, फोका उठब वा फोका बहार होयब एकटा वाग्धारा थिक जकर अर्थ अप्रिय वा अधलाह लागब होइछ से अनुवादक तखन बूझि नहि सकलथिन । तहिना हिन्दीक 'तक' लय मैथिलीमे 'धरि' शब्दक प्रयोग अपन सामान्य ज्ञानसँ कऽ देलनि । मुदा जखन जयदेवबाबूक ई निबन्ध हरिमोहनबाबूकेँ पढ़बाक अवसर भेटलनि तँ ओ अपना प्रति एहि रूपक नकारात्मक टिप्पणी देखि क्रुद्ध भऽ उठलाह आ तकर बाद ओ जखन-तखन कहल करथिन– हमर रचना पढ़ि कऽ तँ जयदेवबाबूकेँ फोका बहार भऽ जाइत छनि ।'

1960मे विद्यापति पर्वक अवसर पर चेतना समितिक मंचपर हरिमोहनबाबूक 'आदर्श कुटुम्ब' कथाक नाट्य-रूपान्तरणक मंचन भेल जे देखि दर्शकगण हँसैत-हँसैत लोटपोट भऽ गेल रहथि । ओकर अगिला दिन हरिमोहनबाबूक डेरापर साहित्यिक लोकनिक जुटान भेल । एहिमे एहि नाटकक रूपान्तरकार ओ अभिनेता एवं पटना विश्वविद्यालयक एम.ए. मैथिलीक छात्र रामदेवझा सेहो उपस्थित रहथि । साहित्यिक लोकनि मंचित नाटकक प्रशंसा करैत कहलथिन जे एखनो हुनका लोकनिक हँसी थम्हल नहि जाइत छनि । एहिपर हरिमोहनबाबू किञ्चित बिहुँसैत कहलथिन– अहाँ लोकनिकेँ हमर रचनाक मंचन देखि जतेक हँस्सी लागल होअय, मुदा जयदेवबाबूकेँ तँ ढल-ढल फोका बहार भऽ गेल होयतनि ।' तखन बहुतो गोटाकेँ हरिमोहनबाबूक एहि टिप्पणीक अर्थ लागल होइनि किंवा नहि से नहि जानि मुदा रामदेवझाकेँ तँ तुरत एकर अर्थ लागि गेलनि आ ओ सकदम्म भऽ उठलाह । तकर बाद जखन कखनो हरिमोहनबाबूक मुँहसँ ओ टिप्पणी बहरानि कि रामदेव अपन अनुवादक त्रुटिक अनुभव करैत संकुचित भऽ उठथि ।

निर्माणक सपूत

लहेरियासरायसँ प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी काँग्रेसी नेता बाबू जानकीनन्दनसिंह द्वारा **निर्माण** प्रकाशित कयल जाइत छल । अगस्त 1954मे साप्ताहिक निर्माणक सम्पादनक दायित्व चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'केँ देल गेलनि । ओ एहि हिन्दी पत्रक स्वरूपमे परिवर्त्तन करैत 'मातृभाषाक पृष्ठ' नामसँ किछु स्थान मैथिलीक हेतु निर्धारित कऽ देलथिन । छात्र रामदेवझा पत्र-सम्पादक अमरजीक आदेशसँ दरभंगा ओ लगपासक समाचार संकलन कऽ देल करथिन, तदतिरिक्त **सपूत**क छद्मनामसँ **की अहाँकेँ बूझल अछि** शीर्षकसँ स्तम्भ लेखन कयल करथि । एहि स्तम्भमे सामान्य ज्ञानसँ सम्बद्ध सूचनादि रहैत छल । निर्माण ओ वैदेहीक संग ई आरम्भिक जुड़ाव हिनक भीतरक पत्रकारकेँ अभिव्यक्त करबाक अवसर देलक ।

स्वदेशक हॉकर

1955मे 9 अक्टूबरसँ आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'क सम्पादनमे दरभंगासँ मैथिलीक पहिल दैनिक पत्र **स्वदेशक** प्रकाशन सुरू भेल । ओहि समयमे रामदेवझा सी.एम. कॉलेजमे आइ.ए.क छात्र छलाह । आचार्य सुमन एही कॉलेजमे मैथिलीक प्राध्यापक । छात्र रामदेवक प्रतिभासँ ओ पूर्वहिसँ अवगत रहथि । ओ हिनका दरभंगाक समाचार संकलनक अतिरिक्त शहरमे स्वदेशक वितरणक दायित्व सेहो दऽ देलथिन । रामदेव प्रतिदिन कॉलेजमे वर्ग समाप्त भेलाक बाद सन्ध्यामे कटहरबाड़ी स्थित सुमनजीक आवासपर जाय संकलित कयल समाचार दऽ देल करथिन । पुन: भोरमे अमरजीसँ साइकिल लऽ सुमनजीक डेरापर जाथि आ ओतऽसँ स्वदेशक बंडल उठाय आनथि । स्वदेशक एकटा बंडल अमरजीकेँ दऽ देथिन जकरा ओ स्वयं बाँटथि । दोसर बंडल लऽ कऽ पैरे-पैरे, डेरे-डेरे जा कऽ बाँटथि । एक दिन लहेरियासरायक एकटा नामी मैथिलीप्रेमी अधिवक्ता हिनका लापरवाह हॉकर बूझि नीक जकाँ फज्झति कऽ देलथिन आ पछाति अमरजीकेँ उपराग दैत सबटा वृत्तान्तो सुना देलथिन । हॉकर रामदेव स्वदेश हुनक बाहरी बरंडाक टेबुलपर राखि देथिन जकरा हुनक मोकील सब विरहा दैत छलनि । हुनक इच्छा जे स्वेदश देनिहार आवाज दऽ कऽ भीतर दऽ देल करय जे स्त्रीगणलोकनि सेहो पढ़थि । तखन अमरजी स्थिति स्पष्ट करैत कहलथिन जे- स्वदेश पहुँचौनिहार कोनो हॉकर नहि अपितु कॉलेजक छात्र अछि । साइन्ससँ मैट्रिकमे फर्स्ट डिवीजन भेलैक अछि । ओ मातृभाषाक सेवा भावनासँ काज करैत अछि ।' अधिवक्ता

Scanned by CamScanner

महोदयकेँ बड़ कचोट भेलनि । अगिला दिन जखन रामदेवझा स्वदेश देबऽ अयलथिन तँ ओ अत्यन्त स्नेहपूर्वक हिनका बैसाय अपन व्यवहारक हेतु खेद व्यक्त कयलथिन । ई स्वनामधन्य अधिवक्ता छलाह- प. दिनेश्वर मिश्र ।

1956-57क अवधिमे दरभंगाक नेहरा गामसँ मासिक पत्र **पल्लव**क प्रकाशन होइत छल । एकर सम्पादक छलाह प्रो. शैलेन्द्रमोहनझा । मुदा परोक्ष सम्पादन करैत छलाह हुनक छात्र रामदेवझा । हिनकामे प्रेस ओ प्रूफ रीडिंगक ज्ञान पहिनहिसँ छलनिहेँ संगहि प्रकाशनार्थ आयल रचनाक भाषा ओ वर्त्तनी संशोधनक कार्य सेहो कयल करथि । ई परोक्ष सम्पादन कार्य हिनकामे प्रभूत आत्मविश्वास बढ़ौलकनि ।

1957मे ई अपन एक उत्साही मित्र महेश्वरठाकुर (भीठ-भगवानपुर)क संगे मिलि **भावना** नामसँ एकटा हस्तलिखित पत्रिका प्रारम्भ कयलनि । एहिमे छोट-छोट गीत ओ गद्य सब रहैत छल । एहि पत्रिका हेतु मधुप, अमर, राधाकान्तदास प्रभृति कवि लोकनि पत्रिकाक आकारक अनुरूप छोट-छोट गीत लिखि कऽ देलथिन । आचार्य सुमन तँ प्रायः दीर्घ मुक्तक रचना करैत रहथि, मुदा एहि उत्साही छात्रक अनुरोधेँ ओ पत्रिकाक हेतु एकटा छोट सन गीत लिखि कऽ देलथिन- मन बसि घर के ऐल उजाड़य ।' सुमनजीक सम्पूर्ण काव्य साहित्यमे गीतक दर्शन दुर्लभे अछि । प्रायः गीत रचनाक ओ हुनक पहिल प्रयोग छलनि, जकर श्रेय 'भावना'केँ छैक । प्रायः दू-तीन अंक निकललाक बाद ई पत्रिका बन्द भऽ गेल ।

1957मे आनन्द मार्ग द्वारा लहेरियासरायसँ मैथिलीमे **नूतन विश्व** नामक एकटा मासिक पत्रिकाक प्रकाशन शुरू कयल गेल । यद्यपि एकर सम्पादकक रूपमे गिरिधर नारायण तथा सहायक सम्पादकक रूपमे डा. सीतारामदास ओ रत्नेश्वर नारायणक नाम छपैत छलनि मुदा परोक्ष रूपसँ एकर सम्पादन रामदेवझा करैत छलाह । मैथिलीक ई प्रथम आध्यात्मिक पत्रिका छल ।

मिहिरकेँ परोक्ष सहयोग

रामदेवझाक सम्पादन-योग्यताक लाभ मिथिला मिहिरकेँ सेहो आरम्भमे भेटलैक । 1960मे जखन मिहिरक प्रकाशनक सूर-सार भेल तँ सम्पादक पदक हेतु शेखरजीक नियुक्तिक पटनामे चतुर्दिक विरोध छल । स्वभावतः एहि विषम परिस्थितिमे हुनका काज करब अबूह बुझना जाइत छलनि । पटनाक निर्जन मरुभूमिमे हताश-निराश ठाढ़ भेल शेखरजीकेँ एकमात्र आशाक किरण दरभंगा निवासी ओ ओहि समयमे चर्चित मैथिली एक्टिविस्ट ओ पटना विश्वविद्यालयक छात्र रामदेवझामे भेटलनि । रामदेवझा ग्रीष्मावकाशमे पटनासँ गाम चल आयल रहथि तँ 29 मइ 1960केँ ओ पटनासँ रामदेवझाकेँ एकटा पत्रमे लिखलथिन - हमर इच्छा अछि जे सहायकक रूपमे अहाँ आबी । सहायककेँ चुनबाक भार सम्पादकजी हमरहि देलनि अछि- ई कहैत जे जकरापर अहाँक पूर्ण विश्वास हो एवं तिकड़मबाज नहि हो ।'

शेखरजीक एहि प्रस्तावकेँ तुरत स्वीकार करब रामदेवझाक लेल तखन तँ सम्भव नहि छलनि, किएक तँ ओ पटना पढ़ऽ लेल गेल छलाह, नोकरी करऽ लेल नहि । मुदा एम.ए. कयलाक बाद तँ कोनो जीविका ग्रहण करबाक छलनिहेँ । अतः मिहिरमे अपन भविष्य देखैत तत्काल निःस्वार्थ भावसँ मिहिरक सेवा ओ शेखरजीकेँ तन-मनसँ सहयोग देबाक आश्वासन देलथिन । तकर बाद जावत धरि ई पटनामे रहलाह मिहिरक सम्पादनमे नेपथ्यसँ सहयोग करैत रहलथिन, एतेक धरि जे शेखरजीक हिन्दी उपन्यास 'दो पाटन के बीच'क किछु आरम्भिक परिच्छेदक ई मैथिली अनुवादो कऽ देलथिन जे शेफालिकादेवीक नामसँ मिहिरमे **तऽर पट्टा उपर पट्टा** शीर्षकसँ धारावाही प्रकाशित भेल ।

ओहू समयमे मैथिलीमे वर्त्तनीक नामपर एखने जकाँ अजराकता व्याप्त छलैक । जतेक लेखक ततेक प्रकारक वर्त्तनी । मिहिरक प्रकाशनसँ पूर्व कतोक विद्वानक सहमतिसँ एकटा समन्वित वर्त्तनी सुनिश्चित कयल गेल । विभिन्न वर्त्तनीमे आयल रचनाकेँ मिहिरक स्वीकृत वर्त्तनीमे परिवर्त्तित करब एकटा कठिन काज छल । मुदा रामदेवझा सन सहयोगी भेटने शेखरजीक ई कार्य सुगम भऽ गेलनि । रामदेवझा राति-राति भरि जागि मिहिरमे प्रकाशनार्थ आयल रचनाक

Scanned by CamScanner

सब दृष्टिएँ संशोधन- सम्पादन करथि । स्वयं शेखरजी अपन मित्र अमरजीकेँ सम्बोधित कतोक पत्रमे एहि बातक उल्लेख करैत लिखल करथिन- फल्लाँ का लेख रामदेवजी को दे के ठीक करा लेंगे तब छापि देंगे ।'

यद्यपि रामदेवझाकेँ एम.ए. कयलाक बाद नोकरीक हेतु मिहिरक मुँह नहि ताकऽ पड़लनि, मुदा मिहिरक ई कार्यानुभव हिनक सम्पादन कलाकेँ औरो बेसी परिष्कृत कयलकनि । वर्त्तनीक मामलामे ई कट्टर भऽ गेलाह । अपन निजी लेखनमे तकर बाद ई मिहिरहिक वर्त्तनीकेँ अंगीकार कऽ लेलनि आ अपन पी-एच.डी. थिसिस पर्यन्त एही वर्त्तनीमे प्रस्तुत कयलनि । मैथिलीमे मिहिरक वर्त्तनीमे प्रस्तुत ई पहिल शोध-प्रबन्ध छल जे बड़ पैघ दुस्साहसक काज छल ।

वैदेहीक आङनमे

अपन पत्र-सम्पादन- दक्षताक सम्पूर्ण परिचय देबाक अवसर प्रो. रामदेवझाकेँ तखन भेटलनि जखन 1964मे हिनका मासिक वैदेहीक कार्यकारी सम्पादकक दायित्व प्रदान कयल गेलनि । बिहार विश्वविद्यालयक किछु कानूनी पेंचक कारणे ई **वैदेही**क सम्पादकक रूपमे अपन नाम छापब नहि स्वीकारलनि, तेँ सम्पादक रूपमे चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क नाम रहलनि, मुदा सम्पादकीय लेखनसँ लऽ कऽ सम्पादनक सबटा कार्य यैह कयल करथि । 1964सँ 1968 धरि पाँच वर्षक हिनक सम्पादन कालमे वैदेहीक स्वरूपमे आमूलचूल परिवर्त्तन भऽ गेल । वैदेही भाषा-साहित्य विमर्शक एकटा प्लेटफॉर्म बनि गेल । समकालीन मैथिली कथाक दशा-दिशापर कथाकार ललित द्वारा हिनका नामे पठाओल गेल दूटा व्यक्तिगत पत्रकेँ अत्यन्त निर्भीकतापूर्वक वैदेहीमे प्रकाशित कयलनि । ललितक ओ दुनू पत्र मैथिली साहित्यक शान्त सरोवरकेँ तरंगित कऽ देलक । एहि दुहू पत्रक प्रतिक्रियामे साहित्यिक विमर्शक जे एकटा प्रक्रिया चलल तकर अनुगूंज मिथिला मिहिर धरि पहुँचल । अपन सम्पादन कालमे ई चन्दाझापर केन्द्रित एकटा विशेषांकक प्रकाशन कयलनि जे संग्रहणीय बनि गेल । एहि विशेषांकक तत्काल लाभ भेल जे बिहार विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली पाठ्यक्रममे विशेष पत्रमे विद्यापतिक संग चन्दाझाकेँ सेहो स्थान देल गेलनि । हिनक सम्पादन कालमे आनन्दमोहनझा (मोहन भारद्वाज), शिवशंकरमिश्र 'नृसिंहन', राजेन्द्र विमल, कपिलदेव प्रभाकर प्रभृति कतोक नवीन साहित्यकार वैदेहीक माध्यमे साहित्यमे प्रवेश कयलनि । कार्यकारी सम्पादक प्रो. रामदेवझा मिथिला-मैथिलीक तत्कालीन ज्वलन्त समस्या यथा मैथिलीक संवैधानिक मान्यता, बी.पी.एस.सी.मे मैथिली, मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा, चन्दाझापर डाक टिकट, मोहमदपुर स्टेशनक नाम चन्दाझापर होअय आदि सन कतोक विषयपर अनेकानेक सम्पादकीय लिखलनि जे आब ऐतिहासिक दस्तावेज बनि गेल अछि ।

संकल्पक पाँच पुष्प

डा. रामदेवझाक अप्रतिम सम्पादन कौशलक प्रमाण अछि हिनका द्वारा सम्पादित संकल्पक पाँच गोट अंक । संकल्पलोक, लहेरियासरायक वार्षिक मुखपत्रक रूपमे प्रकाशित संकल्पकेँ ई मैथिलीक रिसर्च-जर्नलक स्वरूप प्रदान कयलनि । एहिमे शोधपूर्ण आलेखकेँ सर्वाधिक प्रश्रय देलनि । एहि पत्रमे भोलालालदास, सुरेन्द्रझा 'सुमन', जयमन्तमिश्र, उमानाथझा, सुभद्रझा, चन्द्रनाथमिश्र 'अमर', हरिहरझा प्रभृति स्थापित विद्वान लोकनिक आलेख आग्रहपूर्वक लिखबाय प्रकाशित करबैते रहलाह संगहि प्रख्यात चिकित्सक भवनाथमिश्र, इतिहासकार रत्नेश्वरमिश्र, समाजशास्त्री राजेन्द्रझाक संगहि मैथिलीसँ इतर क्षेत्रक भगवतीशरणमिश्र, रघुनाथसिंह पहाड़पुरी आदि लोकनिसँ सेहो मैथिलीमे लिखबौलनि । नवीन शोधकर्त्ता लोकनिक आलेखकेँ सेहो छाँटि-बनाय प्रकाशित कऽ हुनका प्रोत्साहित कयलथिन । एतावता संकल्पक ई पाँच गोट अंक अपन सामग्रीक कारणे स्मरणीय ओ संग्रहणीय कहल जाइत रहल अछि ।

राष्ट्रभाषा सेवा

डा. रामदेवझाकेँ राष्ट्रभाषा हिन्दीसँ कोनो विरोध भाव नहि रहलनि अछि । आरम्भमे तँ ई मैथिलीक समानान्तर हिन्दिअहुमे लिखैत छलाह, पछाति मैथिलीमे ततेक रमि गेलाह जे ओमहर दिस जयबाक अवकाशे नहि भेटलनि ।

Scanned by CamScanner

अपन स्कूली जीवनकालमे जहिया ई **निर्माण**सँ जुड़ल रहथि तँ हिनक पहिल व्यंग्यात्मक हिन्दी कहानी **जी हाँ** एही पत्रिकामे छपल रहनि । निर्माणमे प्रकाशित हिनक एक गोट लेख **मैथिल हिन्दी सेवी** चर्चित भेल छल । सी.एम.कॉलेजमे छात्र रूपमे अयलाक बाद मैथिलीक संग-संग हिन्दिअहुक साहित्यिक गतिविधिमे ई सक्रिय रहऽ लगलाह । 1957मे कॉलेजक हिन्दी विभाग द्वारा हिन्दीक कहानी लेखन प्रतियोगिता आयोजित भेल रहैक जाहिमे हिनक कहानी **भीतर की गरम लौ** प्रथम स्थान प्राप्त कयलक । पुन: 1958मे दोसर बेरक कहानीक लिखित प्रतियोगिता परीक्षामे हिनक कथा **सुनहला प्रभात** पुनः प्रथम स्थानपर रहल । दुहू बेरक प्रतियोगितामे निर्णायक रहथिन कॉलेजक हिन्दी प्राध्यापक प्रो. सुरेन्द्रमोहनप्रसाद ओ अन्य वरिष्ठ अध्यापकगण । एहि उपलक्ष्यमे धर्मेन्द्र ब्रह्मचारीक हाथेँ ई पुरस्कृत भेल रहथि । ई दुनू कथा सी.एम.कॉलेजक मैगजिन **विदेह**मे 1958 तथा 1959क अंकमे प्रकाशित भेल छल । 1956मे आर्यावर्त (13.05.1956)मे हिनक हिन्दी कहानी **मेरा पहुना** छपल रहनि । फरवरी ओ मार्च 1961क 'चुन्नू मुन्नू'क दू अंकमे **इजोतीरानी** बाल उपन्यासक हिन्दी रूपान्तर छपल रहनि जकर मूल रूप बादमे प्रकाशित भेल। दैनिक विश्वमित्र (पटना)मे पं. विनोदानन्दझा पर एकटा परिचयात्मक निबन्ध छपल छलनि (17.04.61) **जननायक कर्मयोगी पं. विनोदानन्दझा** । निबन्ध पढ़ि विनोदाबाबू हिनका बजबाय अपन प्रसन्नता व्यक्त करैत पीठ ठोकि आशीर्वाद देने छलथिन ।

मैथिली भाषा-साहित्यक गरिमा ओ लोकसाहित्यक सौन्दर्यकेँ हिन्दीक पाठकवर्ग धरि प्रेषित करबाक हेतु सेहो ई हिन्दीकेँ अपन अभिव्यक्तिक माध्यम बनौलनि । 1960 सँ 1962-63 क मध्य आर्यावर्तमे हिनक अनेकशः मैथिली विषयक आलेख ओ ललित निबन्ध सब प्रकाशित भेलनि जे विद्वान लोकनिक ध्यान अपना दिस आकृष्ट कयलक । 1960सँ 62 धरि रामनवमीक अवसरपर प्रति वर्ष चन्दाझापर केन्द्रित हिनक निबन्ध प्रकाशित भेलनि । ओहि समयमे चन्दाझाक जन्मतिथिक पता नहि रहनि । रामायणक रचयिता रहथि तँ रामनवमी दिवसक अवसरपर ओ विशेष निबन्ध रहैत छल । तद्वते **विदेशी विद्वान और मैथिली, मैथिली लोकसाहित्यमे कृष्णजन्म, मिथिलामे सीता संबंधी प्रचलित किंवदंतियाँ** सन कतोक आलेख; तँ **बरसो हे मेघराजा, नाविक नाव चलाये जा, त्योहारों की ऋतु शरद, खिले फूल कचनार के, फागुन में धरती अंगड़ाई** सन कतोक ललित निबन्ध सब प्रकाशित होइत रहलनि । एकर अतिरिक्त धर्मयुग, आज (काशी), दीपशिखा, दरभंगा समाचार, दैनिक नेपाल आदि पत्र-पत्रिकादिमे सेहो हिनक हिन्दी रचना सब प्रकाशित भेलनि ।

हिन्दी काव्य गगनमे

हिन्दीमे गद्य जकाँ पद्यहुमे ई आरम्भमे अपन लेखनी चलौलनि । कवि सम्मेलनक मंचपर हिनक भावप्रवण हिन्दी गीत सब बेस जमैत छलनि । मानव मनक अन्तर्वेदनाकेँ अभिव्यक्त करैत हिनक हिन्दी गीतक टीस सहजहिँ उद्वेलित कऽ दैत अछि । बानगीक रूपमे देखल जा सकैछ एकर किछु पंक्ति-

मेरे सपने तोड़-तोड़ तुम अपना जीवन हार बना लो
मेरे टूटे अरमानोंपर तुम मधुमास विहार बना लो
साँसों के कण जोड़-जोड़कर
जीवनका निर्माण किया है
जीवनके क्षण जोड़-जोड़कर
अपना पथ सन्धान किया है ।
मेरी कुटिया को उजाड़ तुम सोने का संसार बना लो ।

(आर्यावर्त, 6 सितम्बर 1959)

Scanned by CamScanner

एकटा अन्य गीतमे एकहि संग हर्ष ओ विषादक स्थितिक कलात्मक चित्रण भेल अछि–

जिन्दगी पायी मगर जिन्दादिली ही खो गयी
चाँदके बदले न क्यों यह रात काली हो गयी
आँसुओं से होड़ लेकर
बरसती बेदर्द बदली
रोशनी बदली नहीं पर
आँख में तसवीर बदली
मन शराबी के लिए यह आँख प्याली हो गयी ।

(आर्यावर्त, 15 जुलाइ 1962)

रामदेवझाक हिन्दी गीतमे जँ एक दिस करुणा छनि तँ दोसर दिस पौरुष ओ उत्साह सेहो ततबे । 1958मे लिखित हिनक 'हौसला' शीर्षक गीतक किछु पाँतीकेँ देखल जा सकैत अछि –

प्रखर वेग सा आगे बढ़ता, रुका न कूल कँगारों से
नहीं जानते पाँव हिचकना, डरे नहीं अंगारों से
बड़े फफोले पड़े पाँव में, फिर भी आगे बढ़ता हूँ
पत्थर की चट्टानों से भी नया आदमी गढ़ता हूँ
मेरी हिम्मत ऊपर चढ़ती, करती बात सितारों से
प्रखर वेग सा आगे बढ़ता, रुका न कूल कँगारों से ।

हिन्दीमे धरती ओ मेघक बीच संवादक माध्यमसँ पर्यावरण संरक्षणक सन्देश दैत हिनक 'बादल बोला' कविताक रोचकताकेँ देखल जा सकैछ –

बादल बोला धरती से जी ! कितना पानी दूँ मैं ?
कितने जल से प्यास बुझेगी
कितना सागर बाँट सकेगा
उस सागर से कितना पैंचा बोलो रानी लूँ मैं ?
बोली धरती धीमे-धीमे-
तुलसी का छोटा सा पौधा
काँप रहा 'तुलसी चौरा'पर
दुबला-पतला, सूखा-सूखा
पुरबैया का झोंका आता
आते-आते कहता जाता
'संभल-संभल रे बच्चे मेरे'
चन्द दिनों का जीवन तेरा'
'यही साध अभिलाष हृदयमे
बच जाये तुलसी का बिरवा
धरती हूँ, इसकी हूँ जननी माँ सम प्राणी हूँ मैं ।
बादल बोला धरती से जी! कितना पानी दूँ मैं ।

Scanned by CamScanner

रामदेवझाक हिन्दी रचनाक कोनो संग्रह अद्यावधि प्रकाशित नहि भऽ सकलनि अछि । पूर्वमे 'खिले फूल कचनारके' शीर्षकसँ ललित निबन्ध ओ 'जीवन संगीत' शीर्षकसँ गीतक संग्रह संकल्पित छलनि जे मूर्त्तरूप नहि लऽ सकल ।

अंग्रेजी लेखन

मैट्रिक धरि विज्ञानक छात्र ओ इंटरमे एकटा अनिवार्य विषयक रूपमे अंग्रेजी रहबाक कारणेँ डा. रामदेवझाकेँ अंग्रेजी भाषामे सेहो गति रहलनि अछि । हिनक अंग्रेजी लेखन आ वाचन दूनू पक्ष मजबूत छनि जकर परिचय विद्वत् जनकेँ समय-समयपर भेटैत रहलनि अछि । यद्यपि हिनक अंग्रेजी लेखन थोड़ छनि मुदा जतबे छनि से अत्यन्त महत्त्वक छनि । विशेषत: राष्ट्रीय स्तरक सेमिनारमे ई अपन पेपर अंग्रेजियहिमे प्रस्तुत करैत रहलाह अछि । एहि तरहक हिनक किछु प्रसिद्ध अंग्रेजी लेख छनि- **श्रीअरविन्दो'ज एस्थेटिक्स एण्ड मैथिली लिटरेचर** (रमण अभिनन्दन ग्रन्थ, 2004), **इण्डिजीनस नैरेटिव फॉर्म्स इन मिथिला** (डा. मदनेश्वरमिश्र अभिनन्दन ग्रन्थ, 2003), **मैथिली फोक सांग्स** (1990), **फोक लिटरेचर इन मैथिली** (1994), **कीर्त्तनिया थियेटर, मॉडर्न मैथिली ड्रामा** (इंडियन थियेटर, ऑक्सफोर्ड प्रेस, नई दिल्ली) इत्यादि । साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा छओ खण्डमे प्रकाशित **इनसाइक्लोपीडिया आफ इंडियन लिटरेचर**मे मैथिली साहित्य विषयक प्रविष्टिक ई प्रमुख लेखकमेसँ एक छथि । एहि इनसाइक्लोपीडियामे अंग्रेजीमे लिखित हिनक मैथिली विषयक जे प्रविष्टि अछि से निम्न अछि- **रघुनन्दनदास** (वो.-1) **हर्षनाथझा, ईशनाथझा, जीवनझा** (वो-2), **मलार, मान, मर्सिया, मिथिला मिहिर, मिथिला मोद** (वो.-3), **निर्गुण, प्रोज** (गद्य), **हरिनन्दनठाकुर 'सरोज'** (वो.-4), **प्रोवर्स** (वो.- 6) इत्यादि ।

संस्था सहभागिता

डा. रामदेवझामे संस्था संगठनक नैसर्गिक प्रवृत्ति रहलनि अछि । जखन ई स्वतन्त्रतासँ पूर्व मिड्ल स्कूलक छात्र रहथि तहिये 'भारत बालमंडली' सन संस्थाक गठनमे अपन सक्रियताक परिचय दऽ चुकल रहथि । तत्पश्चात् विभिन्न संस्थाक आयोजन-प्रयोजनमे सक्रिय रहैत कतोक संस्थाक विभिन्न पदभार ग्रहण करैत रहलाह अछि ।

साहित्य पुस्तकालय : हिनक गाम कबिलपुरमे 'साहित्य पुस्तकालय' नामक एक गोट जीवन्त संस्था छलनि । एहि संस्था द्वारा प्रतिवर्ष तुलसी आ विद्यापति जयन्ती मनाओल जाइत छलैक । एम.एल.एकेडमीमे अयलाक बाद हिनका जे मैथिलीक लसेढ़ लगलनि तँ साहित्य पुस्तकालयकेँ सेहो मैथिली आयोजन दिस मोड़लनि । ओहि समयमे मैथिली ओ हिन्दीक विवाद चरमपर रहैत छल । हिन्दीवला सब मैथिलीक उपहास करैत कहल करथि जे एहि भाषाकेँ विद्यापति छोड़ि और दोसर छैके के ? एहि अपप्रचारकेँ खंडित करबाक हेतु आधुनिक कालक युगपुरुष चन्दाझाक ध्वज लहरयबाक उद्देश्यसँ छात्र रामदेवझा चन्द्र-जयन्ती मनयबाक निर्णय लेलनि । मुदा तावत धरि चन्दाझाक जन्म तिथिक अन्वेषण नहि भऽ सकल छल । अत: रामायणक रचनाकार होयबाक कारणे चन्दाझाक जन्मतिथि निज रामनवमी दिन होयबाक एकटा विश्वास करैत रामदेवझा कतहुसँ एकर प्रमाणमे एकटा दोहा ऊपर कयलनि-

रामजन्म तिथि चन्द्र ऋषि धयलनि यशक शरीर ।
शिव संगम संवाद सुनि मिथिला परम अधीर ॥

एकरहि प्रमाण मानि साहित्य पुस्तकालय द्वारा ई चन्दाझा जयंती मनायब आरम्भ कयलनि । एहि जयन्ती समारोहक अवसरपर भव्य कवि सम्मेलनक आयोजन होइत छल जाहिमे मधुप, सुमन, किरण, अणु प्रभृति कवि लोकनि आमन्त्रित रहैत छलाह । एही संस्था द्वारा एक बेर सुमन जन्मदिवस समारोहक भव्य आयोजन सेहो भेल छल । विगत शताब्दीक छठम दशकमे साहित्यमे फ्रायडीय दर्शनक हवा बहल छल, ताहि लाथेँ साहित्यक सद्भावकेँ लोप करबाक एकटा प्रवृत्ति जोर पकड़ने जा रहल छल । एहि दुष्प्रवृत्तिक विरोधमे साहित्य पुस्तकालय द्वारा 'अश्लील साहित्य स्वाहा' नामक एक गोट आन्दोलन चलाओल गेल छल जाहिमे ई बढ़ि-चढ़ि कऽ भाग लेने रहथि । एहि आन्दोलनकेँ एतेक

Scanned by CamScanner

बेसी प्रचार-प्रसार भेटल रहैक जे हिन्दीक अनेक नामी-गामी लेखक सहित अन्यहु भाषाक रचनाकार लोकनि अपन पत्र द्वारा एहि आन्दोलनक समर्थन कयने छलथिन ।

विद्यापति गोष्ठी : एक समयमे दरभंगामे विद्यापति गोष्ठी संस्था बड़ जगजियार छल । कमला नेहरू पुस्तकालयमे एकर कार्यालय रहैत छलैक । प्रो. जगन्नाथप्रसादमिश्र, श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर' प्रभृति साहित्यकार एहि संस्थाकेँ सक्रिय बनौने रहैत छलाह । एम.एल. एकेडमीमे नामांकनक बाद रामदेवझा अमरजीक सान्निध्यक कारणे स्वतः विद्यापति गोष्ठीसँ सम्बद्ध भऽ गेलाह । एकर मासिक गोष्ठीमे सुधांशुशेखरचौधरी, उपेन्द्र साहित्यालंकार, विश्वनाथ तरुण, बेधड़क बिहारी, मायानन्दमिश्र, इन्द्रनाथझा, श्रीमन्तपाठक, अजेय अर्जुन कुमार वर्मा अनल, सोमदेव आदिक संग रामदेव नियमित रूपसँ अपन हिन्दी-मैथिली कविताक पाठ करैत छलाह ।

मैथिली छात्र परिषद : एम्.एल्. एकेडमीमे सहपाठी सभक सहयोगसँ ई मैथिली छात्र परिषदक स्थापना कयने छलाह । 1953क उद्धरार्द्धमे सुरेन्द्रझा 'सुमन'क नियुक्ति सी.एम्. कालेजमे मैथिली विभागमे प्राध्यापक पदपर भेलनि । विद्यालयक अध्यापक श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क प्रेरणा ओ पथप्रदर्शनमे मैथिली छात्र परिषद द्वारा कमला नेहरू स्मारक पुस्तकालय लहेरियासरायमे सुमनजीक सम्मानमे एक गोट गोष्ठीक आयोजन कयल गेल छल जकर अध्यक्षता बाबू भोलालालदास कयने छलाह ।

मैथिली साहित्य परिषद : 1953-57क अवधिमे प्रो.सुरेन्द्रझा 'सुमन' अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्क प्रधानमंत्री छलाह । सी.एम. कॉलेज दरभंगाक भवन (ओवल मार्केट बिल्डिंग)मे दक्षिण दिसक द्वारसँ पश्चिम रूम न.2मे अ.भा. मैथिली साहित्य परिषदक कार्यालय छलैक जाहिमे परिषदक पुरान-दिबड़लग्गू पोथीक ढेरी ओ उपस्कारादि राखल रहैक । रामदेवझा जखन ओहि कालेजक छात्र भेलाह आ सुमनजीक निकट सम्पर्की, घनिष्ठ एवं प्रिय छात्र बनलाह तँ सुमनजी हिनका कार्यालयक चाभी सुपुर्द कऽ देलथिन । ई गर्दा जमल कोठलीकेँ साफ-सुथरा कऽ अपन कालेजक मैथिली छात्रक संग लीजरवला घंटीमे आबि कऽ बैसथि । नियमित सफाइ करथि जेना परिषदक आदेशपाल वा कार्यालय सचिव होथि । मार्च 1957मे अ.भा. मैथिली साहित्य परिषदक अधिवेशन भेल छल । एहि समय धरि हिनक परिचिति एकटा ऊर्जस्वल लेखक-कार्यकर्त्ताक रूप स्थापित भऽ गेल छलनि । परिषद्क बहेड़ा अधिवेशनमे आद्यानाथझा निरंकुश ओ रामदेवझा निर्विरोध संयुक्त मन्त्री निर्वाचित भेलाह आ एहि पदपर दिसम्बर 1957 धरि रहलाह । परिषद कार्यालयक चार्ज 1959क दिसम्बरमे नव निर्वाचित प्रधानमंत्री प्रो. श्रीकृष्णमिश्रकेँ दऽ देलथिन ।

अ.भा. मैथिली साहित्य परिषदक संयुक्त मन्त्रीक रूपमे हिनक परिचय-फलक एवं कार्यक्षेत्रक खूब विस्तार भेलनि । यैह कारण भेल जे अत्यन्त युवा होइतो परिषदक अगिला प्रधानमंत्री प्रो. श्रीकृष्णमिश्र ओ प्रो. शंकरकुमारझाक, क्रमिक प्रधानमन्त्रित्वक कार्यकाल धरि तथा डा. गणपतिमिश्रक प्रधानमन्त्रित्वक प्रथम कार्यकाल धरि ई अ.भा. मैथिली साहित्य परिषद्क कार्यकारिणी समितिक सदस्य होइत रहलाह । मुदा अपन मुखरताक कारणे बादमे परिषदसँ ई सर्वथा बारि देल गेलाह ।

मिथिला रिसर्च सोसाइटी : सी.एम.कॉलेजमे प्राध्यापक पदपर नियुक्तिक बाद प्रो. रामदेवझा 1964मे मैथिलीक प्राचीनतम संस्था मिथिला रिसर्च सोसाइटीकेँ पुनर्जीवित कयलनि । 1905मे स्थापित ई संस्था निष्क्रिय भऽ गेल छल । प्रो. रामदेवझा सर्वप्रथम 1965मे एहि संस्थाक नामपर स्वसम्पादित पोथी 'नन्दीपति गीतिमाला' क प्रकाशन कयलनि । तकर बादसँ निरन्तर एहि संस्था द्वारा साहित्यिक आयोजन सब कयल जाइत रहल अछि आ कतोक उत्कृष्ट पोथीक प्रकाशनक द्वारा ई अपन नामकेँ सार्थक बनौने अछि ।

संकल्प लोक : लहेरियासरायक सांस्कृतिक चुप्पीकेँ भंग करबाक हेतु 1974मे संकल्पलोक नामक एकगोट संस्थाक स्थापना कयल गेल । एहि संस्थाकेँ डा. रामदेवझाक कुशल मार्ग निर्देशन प्राप्त भेलैक । कठोर अनुशासन ओ नियमबद्धताक कारणे ई संस्था अल्पे समयमे अपन एकटा इतिहास बना लेलक । संकल्पलोक नहि केवल प्रतिवर्ष

Scanned by CamScanner

विद्यापति पर्वक भव्य आयोजन, अपितु अपन विशिष्ट मुखपत्र संकल्प एवं दू-दूटा साहित्य अकादेमी पुरस्कृत पोथीक प्रकाशन एवं बहुआयामी सांगठनिक क्षमताक कारणे एखनहुँ मन पाड़ल जाइत अछि । एकर मूलमे डा. झाक श्रेयकेँ अपवारित नहि कयल जा सकैछ । ई संकल्पलोकक उपाध्यक्षो निर्वाचित भेल छलाह ।

मैथिली अकादमी : डा. रामदेवझा मैथिली अकादमी, पटनासँ विभिन्न रूपेँ सम्बद्ध रहलाह अछि । एकटा रचनाकारक रूपमे तँ सहजहिँ, एहि संस्थाक स्थापनाक बाद एकर प्रथम अध्यक्ष पं. श्रीकान्तठाकुर विद्यालंकार हिनका अकादमीक मैथिली लेखन शैली निर्धारण समितिक सदस्य बनौने छलथिन । शैली निर्धारणक हेतु भाषिक प्रकृतिक विश्लेषणपूर्वक प्रदत्त हिनक अनुशंसा एखनो अकाट्ये मानल जाइत अछि । अकादमी द्वारा मैथिली शब्दकोष निर्माण समितिक सेहो ई सदस्य रहलाह । एहि रूपमे ई विशेषज्ञक अभिमतक रूपमे अपन मूल्यवान सहयोग दैत रहलथिन । ईहो एकटा महत्त्वपूर्ण तथ्य अछि जे 2005मे जखन तत्कालीन बिहार सरकार मैथिली अकादमीकेँ भंग करबाक निर्णय लेलक तँ एहि निर्णयक विरोधमे सबसँ पहिल उठल स्वर हिनकहि छलनि । समाचार पत्रमे हिनक वक्तव्य छपलाक बाद ई जनान्दोलनक रूप धारण कऽ लेलक ।

साहित्य अकादेमी : देशक सर्वोच्च साहित्यिक संस्था साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीसँ हिनक परोक्ष जुड़ाव पूर्वहिसँ रहलनि अछि मुदा प्रत्यक्ष जुड़ाव 1988सँ भेलनि । आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'क द्वितीय संयोजकत्व कालमे डा. रामदेवझा मैथिली परामर्शदातृ समितिक सदस्य बनाओल गेलाह । पुन: 1993मे डा. सुरेश्वरझाक संयोजकत्व कालमे सेहो ई सदस्य रहलाह । एहि दस वर्षक अवधिमे मैथिली भाषा-साहित्यक हिनक गम्भीर अध्ययन ओ कार्य-दृष्टिक लाभ अकादेमी ओ मैथिलीकेँ प्राप्त भेलैक ।

1998मे डा. रामदेवझा स्वयं अकादेमीक सदस्य मनोनीत भेलाह । हिनका अकादेमीमे मैथिली परामर्शदातृ समितिक संयोजक पदक दायित्व देल गेलनि आ पदेन ई साहित्य अकादेमीक कार्यसमितिक सदस्य बनलाह । मुदा दुर्भाग्य जे हिनक परामर्शदातृ समिति वाम-दक्षिण विचारधारा द्वारेँ सन्तुलित नहि रहलनि । तथापि एहि प्रतिकूलताक बादहु संयोजक डा. रामदेवझा जाहि धैर्य ओ सूझ-बूझक संग अपन दायित्वक निर्वहन कयलनि से हिनक आत्मबलक धनी होयबाक परिचायक थिकनि । अपन पाँच वर्षक कार्यकालमे ई जतेक ओ जाहि तरहक काज सब करौलनि तकरा ऐतिहासिक उपलब्धि मानल जाइत अछि ।

हिनक कार्यकालमे मैथिलीमे लगभग साठि गोट पोथीक प्रकाशन भेल । एहिमे वर्णरत्नाकर, मिथिलाभाषा रामायण, रमेश्वरचरित मैथिली रामायण सन गौरव ग्रन्थ पुन:प्रकाशन योजनाक अन्तर्गत प्रकाशित भऽ कऽ एक बेर पुन: सर्वजन सुलभ भऽ गेल तँ विद्यापति गीत संचय, कीर्त्तिपताका ओ अन्यान्य महत्त्वपूर्ण पोथी सब प्रकाशित भेल । मैथिलीमे अनुवादक कार्य खूब प्रगति कयलक । बहुतो वृहदाकार विशिष्ट ग्रन्थक मैथिली अनुवादक पथ प्रशस्त भेल । अपना समयमे ई 'मैथिली कथाक विकास', मैथिली पत्र-पत्रिका, मैथिली नाटकक विकास ओ मैथिली लोकसाहित्य' विषयक चारि गोट राष्ट्रिय संगोष्ठी ओ मैथिली कथाक अंग्रेजी अनुवादक कार्यशालाक सफलतापूर्वक आयोजन करौलनि जकर ज्वलन्त प्रमाण अछि एतद् विषयक प्रकाशित पाँच गोट ग्रन्थ । हिनक कार्य कालमे मैथिलीक तीन गोट विशिष्टतम साहित्यकार पं. चन्द्रनाथमिश्र 'अमर', डा. जयकान्तमिश्र ओ पं. गोविन्दझापर केन्द्रित 'मीट द' ऑथर' कार्यक्रम आयोजित भेल । संगहि एकटा जे महत्तम उपलब्धि मैथिलीकेँ भेटलैक ओ थिक मैथिलीक आद्य इतिहासकार डा.जयकान्तमिश्रकेँ अकादेमी द्वारा मध्यकालीन साहित्यक क्षेत्रमे काज कयनिहार विद्वानकेँ देल जायवला विशिष्ट 'भाषा सम्मान'क प्राप्ति । ई अपन कार्यकालमे प्रयत्न कऽ साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित मैथिली ग्रन्थक पहिल बेर स्वतन्त्र पुस्तक (विवरणी) सूची प्रकाशित करबौलनि ।

उपर्युक्त संस्था सबसँ इतरो अनेकानेक संस्था सबसँ हिनक सम्बद्धता रहलनि अछि । 1955सँ 58 धरि ई सी. एम. कॉलेजक मैथिली साहित्य परिषदक संयुक्त सचिव रहलाह । 1960-61मे पटना कॉलेज मैथिली साहित्य परिषदक

Scanned by CamScanner

महासचिव छलाह । 1977सँ 80 धरि ई ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक सिनेटक सदस्य रहलाह । मैथिली साहित्य संस्थान पटनासँ हिनक प्रगाढ़ सम्बद्धता रहलनि । संस्थानक मुखपत्र 'मिथिला भारती'क सम्पादक मंडलक प्रथम सदस्यक रूपमे हिनक नाम पत्रिकामे अंकित कयल जाइत रहलनि । ऋचालोक, दरभंगाक ई उपाध्यक्ष छथि । विद्यापति सेवा संस्थानक स्थापना ओ संचालनमे निरन्तर योगदान दैत रहलाह अछि । संस्थान हिनका आजीवन सदस्यता प्रदान कयने छनि । वैदेही समिति, मैथिल महासभा, संस्कार भारती आदि कतोक संस्थाक संग हिनक सम्बद्धता रहलनि अछि ।

मैथिली मनीषाक संग्राहक

मैथिलीमे एकटा कहबी अछि– कागत, कपड़ा ओ कुलकेँ जेहन सुरक्षित राखी तेहन नीक । डा. रामदेवझाक सम्बन्धमे उक्त कहबी सद्यः चरितार्थ होइत छनि । 'कागत'केँ कोना ऊपर कयल जाय आ ओकरा कोना सुरक्षित राखल जाय ताहि दृष्टिसँ ई मैथिली संसारमे प्रायः एकमात्र छथि । मैथिलीक कोनो दुर्लभ पत्रिका, कोनो प्राचीन पोथीक प्रयोजन हो तँ हिनका घरक आलमारी वा ताखापर जुगता कऽ राखल भेटि जायत । मैथिलीसँ सम्बद्ध कोनो सरकारी कागत, मैथिलीमे छपल परचा-पोस्टर, मैथिलीसँ सम्बद्ध समाचार सभक कटिंग, पुरानसँ पुरान चिट्ठी-पत्री, आमन्त्रणपत्र ओ कार्ड पर्यन्तकेँ ई सुरक्षित रखैत अयलाह अछि ।

मैथिलीसँ सम्बद्ध वस्तुक अन्वेषण ओ संग्रहक ई प्रवृत्ति हिनका छात्रहि जीवनसँ रहलनि अछि । पहिने छायाप्रति करबाक सुविधा नहि छलैक तँ अध्ययनक क्रममे मैथिलीसँ सम्बद्ध जे कोनो सूचना भेटैत रहलनि तकरा टिपने चल जाथि । विभिन्न ठामसँ चन्दाझाक पोथाक अन्वेषण कऽ ओकर प्रतिलिपि हिनका द्वारा कयल छनि । सम्पूर्ण साहेबरामदास गीतावलीकेँ ई हाथसँ उतारि कऽ रखने छथि । एमहर आबि कऽ जखन जेरॉक्सक तकनीक विकसित भेलैक तकर बादसँ दुर्लभ सामग्री सभकेँ परिश्रमपूर्वक ताकि-ताकि ओकर छायाप्रति कराय ओकरा अपन निजी पुस्तकालयमे सुरक्षित रखैत छथि । नेपालीय मैथिली साहित्यक बहुतो विशिष्ट कृतिक व्यय साध्य प्रतिलिपि ओ माइक्रोफिल्मकेँ ई सुरक्षित रखने छथि । हिनक संग्रहमे मैथिली ओ संस्कृतक बहुतो प्राचीन पांडुलिपि सुरक्षित राखल अछि । मैथिलीसँ इतरहु अंग्रेजी हिन्दी, बंगला, असमी आदि भाषाक कोनो पोथी वा पत्रिकामे जँ मिथिला-मैथिलीसँ सम्बद्ध कोनो विचार भेल छैक आ तकर सूचना हिनका भेटैत छनि तँ ई ओकरा कीनि कऽ मङबा लैत छथि । हिनक पुस्तकालय जिज्ञासु ओ गवेषक लोकनिक हेतु सतत फूजल रहलनि अछि । तमिलनाडुसँ आयल विद्वान डा. एस. भूपति, कनाडासँ आयलि रिसर्चर आयलीस डेविस, एलिजावेथ स्मिथ, मिरियम वीबर, मैथिलीक विद्वान पं. गोविन्दझा, मेघन प्रसाद सहित कतोक गोटा हिनक पुस्तकालयक उपयोग करैत रहलथिन अछि तकर लेखा-जोखा देब कठिन अछि ।

हिनका द्वारा मैथिली मनीषाक संग्रहक जे ऐतिहासिक उपयोग भेल ओ थिक मैथिलीक संवैधानिक मान्यताक लेल चलल प्रयासक क्रममे तैयार कयल गेल वृहदाकार मेमोरेंडम । 2001मे अष्टम अनुसूचीक हेतु नव ढंगसँ अभियान प्रारम्भ कयल गेल । मैथिलीक प्रश्न सोझे तत्कालीन प्रधानमन्त्री अटलबिहारी वाजपेयी ओ उपप्रधानमन्त्री लालकृष्ण आडवाणीक समक्ष उपस्थित कयल गेल । मैथिली भाषाक प्राचीनता, एकर अपन स्वतन्त्र लिपि, एकर क्षेत्र, एहि भाषाभाषीक संख्या, एकर साहित्यक प्राचीनता, एहि भाषाक प्रचलन, एहि भाषाकेँ समय-मयपर भेटल सरकारी मान्यता आदि प्रश्नक समाधानमे आवश्यक समस्त दस्तावेज अपन निजी संग्रहमेसँ निकालि कऽ डा. रामदेवझा जे मेमोरेंडम तैयार कयलनि तकरा अद्वितीय कहल जयबाक चाही । एहि मेमोरेंडमक कारणेँ मैथिलीक पक्ष ततेक प्रबल भऽ गेलैक जे सरकारकेँ संविधान संशोधन कऽ कऽ 23 दिसम्बर 2003केँ अन्य भाषाक संग मैथिलीकेँ संवैधानिक मान्यता देबऽ पड़लैक ।

विभागीय पुस्तकालयक श्रीवृद्धिकर्त्ता

डा. रामदेवझा अपन निजी पुस्तकालय जकाँ ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली विभागक पुस्तकालयकेँ सेहो तद्वते समृद्ध करबाक प्रयास करैत रहलाह । 1963मे सी.एम. कॉलेजमे मैथिली विभागमे, पश्चात् कालेजसँ फराक भेलापर स्नातकोत्तर मैथिली विभागमे 1996मे सेवानिवृत्ति धरि विभागीय पुस्तकालयकेँ

Scanned by CamScanner

मैथिलीक कैम्ब्रिज बनयबाक अभियानमे लागल रहलाह । मुदा दुर्भाग्यवश हिनका ओतऽसँ हटलाक बाद मैथिली विभाग जेना श्रीहीन भऽ गेल, अध्ययन-अध्यापनक संस्कृतिये जेना समाप्त भऽ गेल । एहनामे पुस्तकालयक सारस्वत निधिक प्रयोजनीयते नहि रहि गेल अछि ।

पूर्वाञ्चलीय भाषा ओ साहित्यक विशेषज्ञ

मैथिली भारतक पूर्वाञ्चलीय भाषा परिवारक श्रेष्ठ सदस्या थिक । मैथिली, बंगला, उड़िया, असमी ओ नेपालीमे भाषिक, साहित्यिक ओ सांस्कृतिक तीनू स्तरपर बहुत किछु समानता छैक । स्वभावत: मैथिलीक विद्वान ओ मध्यकालीन साहित्यक विशेषज्ञ होयबाक कारणे डा. रामदेवझाकेँ पूर्वाञ्चलीय भाषा ओ संस्कृतिक विशेषज्ञता अर्जित भऽ गेल छनि । तिरहुताक ज्ञान रहबाक कारणे बंगला, उड़िया ओ असमी साहित्यकेँ ई सहजतापूर्वक पढ़ैत रहलाह अछि । स्वाध्यायक बलेँ एहि तीनू भाषापर हिनका अधिकार प्राप्त छनि । नेपालक प्राचीन लिपि नेवारीक तँ हिनका विशेषज्ञे मानल जाइत छनि । नेवारीमे लिखित अनेकश: मध्यकालीन मैथिली कृतिक ई देवनागरी लिप्यन्तरण कयने छथि । शंकरदेवक रामविजय अंकिया नाट ओ वरगीतकेँ असमीसँ देवनागरीमे लिप्यन्तरित कऽ ई सर्वप्रथम प्रकाशित करौलनि । हिनक अनुसन्धान कार्यसँ पूर्वाञ्चलक अन्यहु भाषा लाभान्वित भेल अछि । नेपालमे अनुसन्धानक क्रममे हिनका बंगलाक चण्डीदासक एकटा अभिनव पदावली प्राप्त भेलनि जकरा ई सम्पादित कऽ **मिथिला प्रकाश** (कोलकाता) मे प्रकाशित करौलनि जे बंगाली विद्वान लोकनिक ध्यान आकृष्ट कयलक । एहिना ई अपन अनुसन्धानसँ साबित कऽ देलनि जे **हरिचरितम्** नामक संस्कृत कृतिक रचयिता मैथिल नहि अपितु बंगाली चतुर्भुज छथि । हिनक इहो खोज बंगला साहित्यमे चर्चाक विषय बनल । कैम्ब्रिजसँ मङा कऽ अत्यन्त परिश्रमपूर्वक सम्पादित **हरगौरी विवाह नाटक** तँ समस्त पूर्वाञ्चलमे चर्चित भेल । प्रख्यात भाषाविद् डा. सुनीतिकुमारचटर्जी अपन 'द ओरिजिन एण्ड द डेवलपमेंट ऑफ बंगाली लैंग्वेज'क नव्य संस्करणमे डा. रामदेवझा द्वारा सम्पादित-प्रकाशित हरगौरी विवाहकेँ मध्यकालीन महत्त्वपूर्ण भाषिक अभिलेखक रूपमे चर्चा कयने छथि । पूर्वाञ्चलीय भाषा सभपर हिनक समाने अधिकार रहबाक कारणे ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयमे कतोक बेर हिनका बंगला ओ नेपालीक उत्तरपुस्तिकाक परीक्षक बनाओल जाइत रहलनि । पूर्वाञ्चलीय भाषाक बीच व्याप्त सांस्कृतिक समरूपताकेँ गम्भीरतापूर्वक विश्लेषित करबाक उद्देश्यसँ ई साहित्य अकादेमीक अपन सदस्यता काल (1998-2002)मे पूर्वाञ्चलीय भाषा समूहक समितिक संयोजकक रूपमे प्रयत्नपूर्वक कोलकातामे 'इम्प्रिंट ऑफ मैथिली ऑन द परफार्मिंग आर्ट्स ऑफ ईस्टर्न इंडियन लैंग्वेज' विषयक पूर्व क्षेत्रीय संगोष्ठी आयोजित करबौलनि । एहि संगोष्ठीमे मैथिली सहित बंगला, असमी, उड़िया, नेपाली ओ मणिपुरीक प्रख्यात विद्वान लोकनि भाग लेने रहथि ।

मैथिलीक प्रहरी

1947मे चन्द्रनाथमिश्र'अमर'क आगमनक संग एम.एल. एकेडमी मैथिलीक केन्द्र बनि गेल छल । अमरजीक मातृभाषा प्रेमक 'ट्रेनिंग कैम्प'सँ प्रशिक्षित भऽ निकलल रंगरूट सब समस्त देशमे मैथिलीक ध्वज फहरौलक । रामदेवझा सेहो एही कैम्पसँ जुड़लाह । हिनकापर तेहन मातृभाषा-प्रेमक गाढ़ रंग पड़ि गेलनि जे हिन्दी-मैथिलीक प्रश्नपर ककरहु संग अड़ि जयबामे ई संकोच नहि कयलनि ।

मैथिलीक प्रति अपप्रचार कयनिहार हिन्दीक विद्वान लोकनिकेँ ठामहि मुँहतोड़ उत्तर देबाक जेना ई संकल्प लऽ लेलनि । जाहि समयमे ई दशम-एगारहम वर्गक छात्र रहथि ताहि समयमे अर्थात् 1954मे पटनाक **पाटल** पत्रिकामे हिन्दीक विद्वान डा. रामविलासशर्मा एकटा लेख लिखि मैथिलीक विरोधमे अनर्गल प्रलाप कयलनि । हुनका द्वारा मैथिलीकेँ हिन्दीक बोली कहल जयबाक विरोधमे मिथिलामे तीव्र प्रतिक्रिया उभरल । हिन्दीक लेखक नागार्जुन (यात्री) पर्यन्तकेँ डा. शर्माक ओ प्रलाप खलबला देलकनि । ओ 'हिन्दी और मैथिली' शीर्षकसँ एकटा लेख लिखि डा. शर्माक विचारक प्रतिवाद कयलथिन । अमरजी सेहो डा. शर्माक जबाबमे एकटा लेख 'भ्रम इसे ही कहते हैं' तथा 'भ्रम एकरे कहल जाइछ' लिखलनि । स्कूलक छात्र रामदेवझा अपन मैथिलीप्रेमी मित्र लोकनिक संग एकटा योजना बनौलनि

Scanned by CamScanner

तदनुसार मैथिलीकेँ एकटा सर्वसामर्थ्यपूर्ण भाषा होयबाक सम्बन्धमे प्रमाण उपस्थित करैत ओहिपर अपन अभिमत देबाक हेतु हिन्दीयहिक तत्कालीन मुखर-प्रखर विद्वान ओ साहित्यकार लोकनिकेँ लिखलथिन । एकर पाछाँ उद्देश्य ई छल जे हिन्दीक विद्वान लोकनिसँ प्राप्त होअऽवला अभिमतक आधारपर ई साबित होयत जे हिन्दीक कतेक विद्वान डा. शर्माक विचारक विरोधी किंवा पक्षधर छथिन । रामदेवझाक ई पत्र अभियान आशातीत रूपसँ सफल रहलनि । डा. रामधारीसिंह दिनकर, आचार्य हजारीप्रसादद्विवेदी, महादेवीवर्मा, शिवदानसिंहचौहान प्रभृति कतोक विद्वान मैथिलीकेँ एकटा स्वतन्त्र भाषा होयबाक पक्षमे अपन अभिमत पठौलथिन, जकरा सबकेँ पुनः डा. शर्माकेँ पठा देल गेलनि ।

किशोरीदास वाजपेयीक पत्र

रामदेवझाक द्वारा किशोरीदास वाजपेयीकेँ सेहो पत्र पठौल गेल छलनि । मुदा हुनक अभिमत हिनका नहि प्राप्त भऽ सकलनि । पुनः हुनका स्मारपत्र देल गेलनि तँ एक सालक बाद हुनक एकटा पोस्टकार्ड 'पं. रामदेवझा'क पतासँ पहुँचल । हिन्दीक अन्य विद्वान लोकनिक मूल पत्र तँ डा. शर्माकेँ पूर्वहि पठा देल गेलनि । एहि अभियानक एकमात्र किशोरीदास वाजपेयीक ओ पत्र एखनहुँ धरि हिनक संग्रहमे सुरक्षित राखल छनि, जे निम्न प्रकारक अछि-

कनखल- 02.07.56

प्रिय बन्धु,

पत्र मिला । पहले पत्र का उत्तर दे दिया था । पता नहीं क्यों नहीं मिला । मैथिली को मैं एक स्वतन्त्र भाषा मानता हूँ, जिसे कई कारणों से हिन्दी की एक बोली समझा जाता है । 'बोली' और 'भाषा' में अन्तर है । किसी लेख में स्पष्ट करूंगा । ऐसी बातें यों व्यक्तिगत पत्र व्यवहार में नहीं लिखी जाती ।

-कि.दा.वाजपेयी

हिन्दीभक्त लोकनिक संग शास्त्रार्थ

मैथिलीकेँ हिन्दीक बोली कहनिहार विद्वानकेँ पहिनहुँ जबाब देल जाइत छलनि मुदा ओ जबाब भावनात्मक बेसी रहैत छल । प्रयोजन छल जे एहि तरहक अपप्रचारी लोकनिकेँ वैज्ञानिक ओ तार्किक पद्धतिसँ निरुत्तर कयल जाय । ताहि समयमे विद्यापति स्मृति पर्वक अवसरपर हिन्दिअहुक विद्वान ओ कवि लोकनिकेँ बहुधा आमन्त्रित कयल जाइत छलनि, जाहिमेसँ गोटेक कुच्चर स्वभावक हिन्दी शिक्षक साहित्यकार अवसर पबितहिँ मंचेपर मैथिलीकेँ हिन्दीक बोली कहि मैथिलीभाषी लोकनिक कुचेष्टा सुरू कऽ दैत रहथि । अध्यापक बनलाक बाद प्रो. रामदेवझा एहि तरहक मैथिली विरोधी विद्वानकेँ हतोत्साहित करबाक एकोटा अवसर छोड़लनि नहि ।

1965मे सिंहवाड़ामे विद्यापति पर्व भेल छल । अध्यक्ष रहथि प. जानकीवल्लभशास्त्री, उद्घाटक छलाह प्रो. रमानाथझा, मुख्य अतिथि रहथि बिहार विश्वविद्यालयक एकटा हिन्दी प्राध्यापक प्रो. वचनदेवशर्मा 'प्रलयंकर' ओ मुख्य वक्ता रहथि प्रो. रामदेवझा । प्रो. रमानाथझा अपन उद्घाटन भाषणमे मैथिलीक पछुअयबाक कारणपर प्रकाश दैत तिरहुता लिपिकेँ फेरसँ जिअयबाक आवश्यकतापर बल देलनि । प्रो. वचनदेवशर्मा 'प्रलयंकर'केँ जखने बजबाक अवसर भेटलनि कि ओ अपन भाषणक प्रारम्भे 'मैथिली हिन्दीक बोली थिक' ताहिसँ कयलनि । मैथिली ओ तिरहुताकेँ फेरसँ ठाढ़ करबाक प्रयासक ओ हँसी उड़ौलनि आ विद्यापतिकेँ हिन्दीक कवि रूपमे भेटि रहल प्रतिष्ठाक स्थानपर हुनका मैथिलीक संकीर्ण परिधिमे बान्हल जयबाक प्रवृत्तिक सोझे-सोझे निन्दा कऽ देलनि ।

प्रो. शर्माक बाद मुख्य वक्ताक रूपमे जखन प्रो.रामदेवझाकेँ बजबाक अवसर भेटलनि तँ ओ हिन्दी शिक्षकक ज्ञानपर प्रश्नचिह्न ठाढ़ करैत कहलथिन- लगैत अछि जे हिन्दीक शिक्षक आइ धरि छात्रकेँ भाषा विज्ञानक अशुद्धे पाठ

Scanned by CamScanner

पढ़बैत रहलथिन अछि । विद्यापति मैथिलीक कवि छथि आ मैथिलीक कवि रूपमे हुनका अखिल भारतीय स्तरपर जानल जाइनि, नहि की हिन्दीक कवि रूपमे ।' प्रो. झा सवा घंटा धरि बजैत रहलाह । जनसमुदाय स्तब्ध भेल हिनक भाषण सुनैत रहल । प्रो. शर्मा मुँहचुरू बनल बैसल रहलाह । बादमे जानकीबल्लभशास्त्री सेहो अपन अध्यक्षीय भाषणमे मैथिलीक स्वतन्त्र सत्ताक समर्थन करैत हिन्दीक दिससँ एहि तरहक विवाद उठौल जयबाक प्रवृत्तिक प्रति अपन अरुचि व्यक्त कयलनि ।

हमरो मातृभाषा मैथिलीये छै

एकटा दोसर घटना अछि 1967 क । बेगूसरायमे विद्यापति पर्वक उद्घाटक छलाह जी.डी.कॉलेज, बेगूसरायक हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. रामेश्वरमिश्र । ओ अपन भाषण हिन्दीमे दैत कहलथिन जे बेगूसरायक भाषा मैथिली नहि छैक, हुनका मैथिली नहि अबैत छनि, तेँ ओ हिन्दीमे बजलाह । हुनक भाषणक बाद मुख्य अतिथिक रूपमे प्रो.रामदेवझाकेँ बजबाक अवसर भेटलनि तँ ओ प्रो. मिश्रकेँ इंगित करैत कहलथिन जे ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरक अइसन, जइसन, तइसन, विद्यापति पदावलीक हमे आ तोँहे, उमापतिक गीतक 'हुनि'सन शब्दक प्रयोग एखनहुँ बेगूसरायमे धुरझाड़ होइत अछि । आब प्रो. मिश्र कहथु जे ई सब कवि किनकर छथिन ओ मैथिली किनका लोकनिक भाषा छनि ।'

प्रो. रामदेवझाक तर्कपूर्ण भाषण समाप्तिक बाद प्रो. मिश्र आह्लादित भेल उठि माइकपर आबि कहलथिन- प्रो रामदेवबाबू जे तर्क सब देलका से अकाट्य छै, हमे आर मानी लेलियै जे हमरो मातृभाषा मैथिलीये छै ।'

मैथिलीक झंडा इम्फालमे

15-17 जून 1990केँ इम्फालमे साहित्य अकादेमी द्वारा 'फोक सौंग्स इन ईस्टर्न इंडियन लैंग्वेजेज' विषयपर क्षेत्रीय संगोष्ठी आयोजित छल । मैथिलीमे आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन', प्रो.रामदेवझा, प्रो.प्रफुल्लकुमारसिंह 'मौन' आमन्त्रित छलाह । प्रो. मौनक जखन आलेख वाचन समाप्त भेलनि तँ मणिपुर विश्वविद्यालयक उत्तरप्रदेश निवासी एकटा हिन्दी-प्राध्यापक प्रश्नोत्तर कालमे एकटा मणिपुरी श्रोताकेँ ठाढ़ कऽ प्रश्न करबौलथिन- मैथिली ओ भोजपुरीकेँ हिन्दीक बोली कहल जाइछ ताहिपर अपनेक की विचार ?' प्रो. मौन सोझे कहलथिन जे- हम एकर कोनो उत्तर नहि देब' ओ अपन आसनपर जा कऽ चुपचाप बैसि रहलाह । मणिपुरी आर्येतर परिवारक भाषा थिक । अत: मणिपुरीक बेसी विद्वानकेँ मैथिली स्वतन्त्र भाषा थीक आ कि हिन्दीक बोली, एहि विवादक अभिज्ञान नहि । तेँ प्रश्नक मर्मोकेँ ओ लोकनि नहि बूझि सकल रहथि । अध्यक्षता कऽ रहल विद्वान ओ अन्य प्रतिभागी लोकनि मंचपर स्थित संयोजक आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'क मुँह दिस ताकऽ लगलथिन । सुमनजीक ललाटपर पसेना बुनबुना गेलनि । मैथिलीक प्रतिष्ठाक प्रश्न ठाढ़ भऽ गेल छल । तखन मंचपर स्थित प्रो. रामदेवझा कहलथिन जे एकर उत्तर हम देब मुदा एखन नहि, अपना समयमे ।

जखन हिनक सत्र सुरू भेलनि तँ अपन आलेख पाठक बाद सर्वप्रथम तँ डा.रामदेवझा ओहि प्रश्नहिकेँ संगोष्ठीक निर्धारित विषयसँ असम्बद्ध, तेँ अप्रासंगिक सिद्ध कयलनि तथापि ओकर समीचीन उत्तर दैत मैथिलीक उत्पत्ति, शौरसेनी ओ मागधी परिवारक विभिन्न भाषाक बीचक दूरी ओ निकटता आदि विविध पक्षपर एक घंटा धरि अंग्रेजीमे भाषण दैत रहलाह । हिनक उत्तरक अनुकूल प्रभाव श्रोतापर पड़लैक । अकादेमीक क्षेत्रीय सचिव प्रो. निर्मलकान्ति भट्टाचार्य हिनक उत्तरसँ प्रभावित भेल आभार व्यक्त करैत कहलथिन- झा साहेब आइ अहाँ पूर्वाञ्चलीय भाषा परिवारक लाज राखि लेलहुँ ।' पछाति ओ हिन्दीक प्राध्यापक सेहो आबि कऽ हिनकासँ भेट कयलथिन आ गछलथिन जे मैथिलीकेँ लऽ कऽ हुनक मोनमे बनल भ्रम दूर भऽ गेलनि ।'

इम्फालसँ दरभंगा घुरलाक बाद आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन' एकदिन भरल सभामे कहलथिन जे- हमरा नहि बूझल छल जे रामदेवबाबू एहन नीक, एहन धाराप्रवाह अंग्रेजी बाजि सकैत छथि । इम्फालमे ई मैथिलीक झंडा गाड़ि साबित कऽ देलनि जे मैथिली मौन लोकक नहि मुखर लोकक भाषा थीक ।'

Scanned by CamScanner

वस्तुतः डा. रामदेवझाकेँ एहि तरहक अवसरक कतोक बेर सामना करऽ पड़लनि । प्रत्येक बेर ई मैथिलीक प्रहरी बनल एहि भाषाक निन्दक ओ विरोधी लोकनिकेँ शास्त्रार्थमे पराजित कऽ मैथिलीक स्वाभिमानकेँ झुकऽ नहि देलनि ।

मैथिली आन्दोलनक पथ प्रदर्शन

डा. रामदेवझा मैथिलीक समुचित अधिकारलेल भेल आन्दोलन सबमे अपन सक्रिय सहभागिता दैत रहलाह अछि । यावत् स्वयं छात्र रहथि तावत मैथिलीक प्रश्नकेँ लऽ कऽ धरना-प्रदर्शन, देवाल-लेखन आदि सन कार्य करबामे सदिखन आगाँ रहलाह । अध्यापन वृत्तिमे अयलाक बाद जहिना-जहिना हिंनक शिष्य ओ शिष्योपशिष्यक विस्तार होइत चल गेलनि, तहिना-तहिना आन्दोलनक मशाल नव पीढ़ी सम्हारऽ लागल । तखन ई अभिभावक किंवा पथ-प्रदर्शकक भूमिकामे आबि गेलाह । मैथिली आन्दोलनक एहि पचास वर्षमे ई कतेक संगठन करैत रहलाह, कतेक आन्दोलनक रणनीति बनबैत रहलाह, कतेक बेर कतेक तरहक ज्ञापन ओ स्मारपत्र तैयार कयलनि, कतेक परचा-पोस्टर लिखलनि, कतेक नारा गढ़लनि तकर ठेकान नहि अछि ।

पोस्टकार्ड अभियान

1963-64मे साहित्य अकादेमीमे मैथिलीकेँ स्थान दिअयबाक हेतु तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरूक नामे पोस्टकार्ड अभियान प्रारम्भ कयल गेल । प्रो. रामदेवझा ओहि समयमे गामे-गाम घूमि प्रयत्नपूर्वक लोक सबसँ हजारोक संख्यामे पोस्टकार्ड लिखबाय पठौलथिन । ई अभियान आशातीत ढंगसँ सफल रहल । डा.जयकान्तमिश्रक कथनानुसार प्रधानमंत्रीक कार्यालयमे पोस्टकार्ड सबकेँ पढ़बाक हेतु दुइटा मैथिलीभाषी कर्मचारीक बहाली भेल आ अन्ततः अकादेमीमे मैथिलीकेँ मान्यता भेटलैक ।

नारा लेखनसँ मेमोरेंडमक तैयारी धरि

1977मे जखन बिहारमे जनतापार्टीक सरकार बनल तँ एहि सरकार द्वारा मैथिलीपर अभिघात करैत मैट्रिक्यूलेशनक मातृभाषापत्रसँ एकरा हटा देल गेलैक । स्वाभाविक रूपसँ एकर विरोधमे चतुर्दिक स्वर उभरल । सरकारक एहि अविवेकपूर्ण निर्णयक विरोधमे आन्दोलनक मेघ उमड़ऽ-घुमड़ऽ लागल । ओहि समयमे हिनक आवासपर युवा आन्दोलनी सभक जुटान भेल करय । आन्दोलनक क्रममे देवाल लेखनक हेतु नारा तैयार करबाक दायित्व हिनका भेटलनि । ओहि निमित्त ई जे नारा सब बनौलनि तकर किछु बानगी देखल जा सकैत अछि –

'मैथिल मुँहक बोल छिनै छेँ रे सरकार कसाइ रे :
मायक चीर हरण होइत छौ सूतल नहि रह भाइ रे'
'मातृभाषा पत्रमे मैथिली पढ़ाइ हो : ताहि हेतु पटनासँ दिल्ली धरि चढ़ाइ हो'
'मैथिलीक ई नारा : बाजल युद्ध नगाड़ा'
'जन्मसिद्ध अधिकार हमर छी : मातृभाषा मैथिली'
'तीन कोटि मिथिलाकेर वासी : जागू-जागू-जागू'
'तीन कोटि जनताकेर भाषा : मैथिली थिक मातृभाषा'

हिनका द्वारा तैयार कयल गेल ई नारा सब बेस चर्चित भेल, विभिन्न ठाम देवालपर लिखल गेल । मैथिलीक कवि ओ प्राध्यापक, हिनक शिष्य प्रो.शिवाकान्तपाठक आन्दोलनक अगुआ रहथि । डाः रामदेवझा ई सबटा नारा हुनका देलथिन जे हुनका पसिन्न पड़लनि । एकटा नाराक आधा भाग लिखल छलनि– मिथिलापर जे करय प्रहार' एकर तुकबन्दी नहि भेटि रहल छलनि । डा. रामदेवझा शिवाकान्तपाठक लग ई अपूर्ण नारा रखलथिन की ओ तपाकसँ एकर तुक

Scanned by CamScanner

मिलबैत कहलथिन- ताहि व्यक्तिकेँ जूता मार ।' डा. रामदेवझा हँसि देलथिन आ कहलथिन- एहि तुकबन्दीसँ गरिमा घटैत अछि ।' शिवाकान्त पाठक कहलथिन- आब गरिमा त्यागबेमे मैथिलीक कल्याण छैक ।' डा. रामदेवझा एहिसँ सहमत नहि भेलथिन । पुनः ओ अपूर्ण नाराकेँ निम्न तरहेँ परिवर्त्तित कयलथिन- मैथिलीक रोकय अधिकार : से तानाशाही सरकार ।'

1982मे जखन बिहारक तत्कालीन कांग्रेसी सरकार मैथिलीक अवहेलना करैत उर्दूकेँ प्रदेशक द्वितीय राजभाषा बना देलक तकर विरोधमे चलल आन्दोलनक ई पथप्रदर्शन कयलनि । एहू आन्दोलनमे हिनका द्वारा तैयार नारा सब छल– जे क्यो छथि मिथिलावासी : सब क्यो छथि मैथिलीभाषी, मिथिलाक भाषा की : शत-प्रतिशत मैथिली, मिथिलाक राजभाषा : मैथिली हो मैथिली आदि ।

मैथिलीक संवैधानिक मान्यताक हेतु चलि रहल प्रयासक क्रममे अगस्त 2003मे तत्कालीन उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणीक दरभंगा आगमनक अवसरपर हुनक ध्यान आकृष्ट करयबाक हेतु ई एकटा नारा बनौलनि जकरा सभा स्थलसँ लऽ कऽ शहर भरिमे विभिन्न ठाम बैनरपर लिखि कऽ टाँगल गेल छल । ओ नारा अछि-

हमहूँ सब छी भारतवासी हमर अपन अछि वाणी ।
मैथिलीक अधिकार दियाबथु लालकृष्ण अडवाणी ॥

मैथिलीक संवैधानिक मान्यतालेल हिनका जे कोनो मंच वा अवसर प्राप्त भेलनि तकर ई सदुपयोग करैत रहलाह । 2001 मे भाजपा नेता डा. सी.पी. ठाकुरक नेतृत्वमे जखन मैथिलीक संवैधानिक मान्यता हेतु प्रयत्न सुरू भेल ताहिमे हिनक योगदान अभूतपूर्व रहलनि । मैथिलीक समस्यासँ अनभिज्ञ डा. ठाकुरकेँ ई विस्तारसँ मैथिलीक केस हिस्ट्री बुझौलथिन, मैथिलीकेँ संविधानमे स्थान भेटला उत्तर मिथिलाकेँ भेटऽवला लाभ सभक चर्च कयलथिन । तखन डा. ठाकुर सन्तुष्ट होइत कहलथिन- मैथिली संविधानमे स्थान पयबाक सबटा योग्यता रखैत अछि, एकरा तँ बहुत पहिने स्थान भेटि जयबाक चाहैत छलैक । मुदा ठीक ढंगसँ एकर केओ पैरवीये नहि कयलकैक । जँ अहाँ लोकनि संग दी, हमरा मैथिलीसँ सम्बद्ध सब कागज-पत्र जुटा दी तँ हम मैथिलीक लड़ाइ लड़ब आ जितलाक बादे दरभंगा आयब ।' एकर पश्चात् डा. ठाकुर दिल्लीसँ फोन द्वारा हिनकासँ मैथिलीक सम्बन्धमे जे-जे कागज ओ प्रमाण सब मङथिन तकरा ई ताकि-ताकि जुटौलनि आ तकर बाद ओ ऐतिहासिक मेमोरेंडम तैयार भऽ सकल । वस्तुतः एकटा आन्दोलनीक रूपमे हिनक ई योगदान मैथिली भाषा-साहित्यक इतिहासमे अविस्मरणीय रहत ।

पुरस्कार ओ सम्मान

डा. रामदेवझा अपन लेखनीक बलपर छात्रहि जीवनसँ अनेक सम्मान ओ पुरस्कार प्राप्त करैत रहलाह अछि । साहित्यक सर्वोच्च सम्मान साहित्य अकादेमी पुरस्कारक हिनका भेटल छनि । ई पुरस्कार हिनका 1991मे नाट्य संग्रह 'पसिझैत पाथर' पर प्रदान कयल गेलनि । अपन प्रयोगधर्मिता, शिल्प ओ प्रभान्वितिक कारणे एहि कृतिकेँ भारतीय साहित्यमे अनुपम योगदान मानैत अकादेमीक प्रशस्तिवाक्यमे कहल गेल अछि–

पसिझैत पाथर सातगोट नाटकक संकलन अछि, जाहिमेसँ छओटा एकांकी थिक । विविध ऐतिहासिक, पौराणिक वा समकालीन सामाजिक विषयपर आधारित एहि नाटकमे लेखकक उद्देश्य प्रायः शिक्षात्मक छनि । एहि विधाक उपयोग लेखक सामाजिक कुरीतिसँ लड़बाक हेतु कयलनि अछि । नाटककारक भाव-प्रयोजन ओ तकनीक आधुनिक छनि, संगहि भाषा सहज सोझ आ सम्प्रेषणीय । व्यापक विषय वस्तुक कुशल निर्वाह, समाज सुधारक प्रति अपन प्रतिबद्धता ओ अभिव्यक्तिक निपुणताक लेल ई कृति मैथिलीमे लिखित भारतीय साहित्यक हेतु विशिष्ट योगदान मानल गेल अछि ।

डा. रामदेवझा मैथिलीक निविष्ट अनुवादको रहल छथि । हिनका द्वारा राजेन्द्रसिंह 'बेदी'क उर्दू उपन्यास 'इक

Scanned by CamScanner

चादर मैली सी'क मैथिली अनुवाद **सगाइ** नामसँ कयल गेल अछि । पंजाबक जनजीवनपर उर्दूमे लिखित एहि उपन्यासकेँ ताहि कुशलताक संग मैथिलीमे अनूदित कयल गेल अछि जे पाठककेँ ई मौलिके उपन्यास होयबाक प्रतीति दैत अछि । अनुवादक एहि उत्कृष्टताक कारणे 1994मे साहित्य अकादेमी द्वारा हिनका अनुवाद पुरस्कार प्रदान कयल गेलनि । एहि अनूदित पोथीक सम्बन्धमे अकादेमीक प्रशस्तिवाक्यमे कहल गेल अछि–

पुरस्कृत कृति सगाइ राजिन्दरसिंह बेदीक प्रतिष्ठित उर्दू उपन्यास 'इक चादर मैली सी'क मैथिली अनुवाद थिक । अनुवादक मूल कृतिक कलात्मक ऊष्माकेँ उल्लेखनीय सफलताक संग रूपान्तरित कयलनि अछि । मानवीय सम्बन्धक संवेदनशील चित्रण, लोकोक्तिक तीक्ष्ण ओ सटीक प्रयोग तथा अपन सशक्त पात्रांकनक लेल एहि कृतिकेँ मैथिली अनुवादमे भारतीय साहित्यकेँ एक उल्लेखनीय देन मानल गेल अछि ।

अकादेमी पुरस्कारसँ इतर विभिन्न साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थादि द्वारा हिनका विभिन्न सम्मानोपाधिसँ अलंकृत कयल जाइत रहलनि अछि । 2001 मे साहित्यकार संसद, समस्तीपुर द्वारा हिनका एकटा विशेष समारोहमे 'महाकवि विद्यापति राष्ट्रिय शिखर साहित्य सम्मान' प्रदान कयल गेलनि । विद्यापति समिति, समस्तीपुर 2003मे एवं विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा हिनका 2004मे 'मिथिला विभूति' सम्मानोपाधिसँ समलंकृत कयलकनि । साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली 6 मइ 2006 केँ हिनक सम्मानमे राष्ट्रिय स्तरक 'मीट द' ऑथर (रचनाकारसँ भेट) कार्यक्रम आयोजित कयलक । अन्तारराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन हिनका मिथिला-मैथिलीक विशिष्ट सेवाक उपलक्ष्यमे 2008मे 'मिथिला रत्न' सम्मानोपाधिसँ सम्मानित कयलकनि । साहित्य अकादेमी द्वारा 2009मे हिनका 'स्कालरर्स एट रेजीडेंस' प्रदान कयल गेलनि । चेतना समिति, पटना द्वारा 2010 मे हिनका मिथिला विभूति सम्मान ओ ताम्रपत्र प्रदान कयल गेलनि । कवीश्वर चन्दा सेवा संस्थान, पिण्डारूच (दरभंगा) द्वारा हिनका 'कवीश्वर चन्दाझा सम्मान- 2011' प्रदान कयल गेलनि अछि ।

वस्तुतः डा. रामदेवझाक जे बहुआयामी सेवा ओ विराट उपलब्धि छनि से देखैत कोनो पुरस्कार किंवा सम्मान न्यूने बुझना जाइत अछि । हिनका सन विद्वान-साहित्यकारकेँ सम्मानित कऽ कोनो संस्था स्वयं गौरवान्वित होइत रहल अछि, हिनक आश्रय ग्रहण कऽ स्वयं ऊर्जान्वित होइत रहल अछि । हिनक वास्तविक पुरस्कार ओ सम्मान तँ थिकनि मैथिलीप्रेमी समुदाय, अपन शिष्योपशिष्यक विशाल समूह ओ पाठकवर्गक हृदयमे बनल असीम सम्मान, श्रद्धा, स्नेह ओ सद्भावना ।

प्रखर शिक्षाविद्

डा. रामदेवझा एकटा निविष्ट अध्यापक होयबाक संगहि एकटा प्रखर शिक्षाविद् सेहो छथि । स्वयं लोअर प्राइमरीसँ लऽ कऽ स्नातकोत्तर धरि जाहि नैरन्तर्यक संग ई शिक्षा ग्रहण कयलनि तकर सूक्ष्म अनुभवसँ हिनका ज्ञात छनि जे कोन वयक ओ वर्गक छात्र हेतु कोन तरहक पाठ्य सामग्री प्रस्तुत कयल जाय । हिनक एहि अनुभव ओ दृष्टिबोधक लाभ प्राथमिकसँ लऽ कऽ उच्च शिक्षा धरिक पाठ्यक्रम निर्धारण ओ पाठ्य पुस्तक सम्पादनक क्रममे लेल जाइत रहल अछि । उच्च शिक्षाक मैथिली पाठ्यक्रमक निर्माणक क्रममे अपन विश्वविद्यालयमे तँ सहजहि ई अपन योगदान करैत रहलाह, अन्यहु विश्वविद्यालयमे हिनक अभिमत लेल जाइत रहल आ ओ पाठ्यक्रम आदर्श ओ मानक मानल जाइत रहल ।

बालवर्गक पोथीक लेखन-सम्पादन

उच्च शिक्षासँ बेसी कठिन अछि प्राथमिक ओ माध्यमिक शिक्षाक हेतु पाठ्य सामग्रीक चयन ओ सम्पादन करब । जनिका लेल ई कार्य अर्थोपार्जन ओ पोथीपर अपन नाम छपायब उद्देश्य मात्र धरि सीमित छनि तनिकालेल ई कोनो कठिन काज नहि । मुदा बाल ओ किशोर मनोविज्ञानक अनुरूप पाठ्य-सामग्रीक चयन, नवीनतम अवधारणा ओ प्रयोजनक समायोजन, क्षेत्रीयता ओ राष्ट्रियताक बीच सन्तुलन तथा स्वस्थ ओ ज्ञानवर्द्धक विचारक प्रतिपादनक संगहि पाठ्यपुस्तकक अन्यान्य अवयवकेँ वैज्ञानिक ढंगसँ प्रस्तुत करब अवश्ये एकटा दुरूह ओ चुनौतीपूर्ण दायित्व थिक । डा. रामदेवझा अनेक बेर एहि दायित्वक निर्वहन कऽ कुशल शिक्षाविद् होयबाक परिचय दऽ चुकल छथि ।

Scanned by CamScanner

1984मे बिहार टेक्स्ट बुक कमिटीक आग्रहपर ई छठम वर्गक मैथिली पाठ्य पुस्तक 'मैथिली भाषा सरिता' (भाग-4)क सम्पादन कयलनि । एहि पोथीमे जाहि परिश्रमक संग ई सामग्रीक चयन कयलनि ताहि रूपमे ई मैथिलीक आदर्श पाठ्यपुस्तक सिद्ध भेल । 1988 मे बी.टी.सीक लेल ई जीव विज्ञान (प्रथम भाग) ओ पृथ्वी परिचय (भाग चारि)क अनुवाद मैथिलीमे प्रस्तुत कयलनि । हिन्दीसँ अनूदित एहि दुहू पोथीमे विषयसँ सम्बद्ध प्रचलित हिन्दी तकनीकी शब्द सभक मैथिली पर्यायक अन्वेषण ओ नवीन शब्द सभक निर्माण कऽ कऽ जाहि रूपमे ई पोथी प्रस्तुत कयलनि से निश्चये मैथिलीमे साहित्येतर विषयक लेखन लेल एकटा गाइड लाइनक काज कऽ सकैत अछि ।

1994मे बिहार टेक्स्ट बुक कमिटी द्वारा हिनका पहिल आ दोसर वर्गक हेतु मैथिली पाठ्य पुस्तकक लेखन ओ तिसरा वर्गक पोथीक सम्पादनक दायित्व देल गेलनि । मिथिलाक शैक्षणिक परिपाटी ओ आधुनिक शिक्षण प्रणाली दुहूकेँ समन्वित करैत लगभग छओ मासक अथक परिश्रमक बाद ई तीनू पोथी तैयार कयलनि । पहिल ओ दोसर वर्गक पोथी हेतु कोमलमति बच्चाक ग्रहणशक्तिक अनुरूप छोट-छोट कविता, रोचक बाल कथा, पर्यावरण संरक्षण, ग्राम्य परिवेशक चित्रण, पत्र लेखन, मिथिलाक संस्कृतिक परिज्ञान, विज्ञानक अवबोध, पत्रात्मक लेखन आदिसँ सम्बद्ध छोट-छोट रचना सब देलथिन । तेसर वर्गक पोथीमे ताकि-ताकि कऽ विभिन्न लेखकक बालोपयोगी रचनाकेँ माँजि-तरासि संकलित कयलनि । मैथिली भारती भाग 1, 2 एवं 3 शीर्षकसँ तैयार तीनू पोथीक पाण्डुलिपि प्रकाशनार्थ टेक्स्टबुक कमिटीमे जमा कयलनि । मुदा एक तँ तत्कालीन बिहार सरकारक मैथिलीक प्रति वक्रदृष्टि आ दोसर मैथिलीक बीच व्याप्त अन्तर्विरोध, अनकर कयल-धयलक श्रेय स्वयं लऽ लेबाक किछु गोटाक दुष्प्रवृत्तिक झमेलमे पड़ि कऽ ओ तीनू बाल पोथी प्रेससँ छपि कऽ बाहर नहि निकलि सकल । एहि घटनाकेँ हिनक परिश्रमक अपव्यय ओ 'साहित्य-क्षति' कहल जा सकैत अछि । मुदा जँ ओ तीनू पोथी प्रकाशित भऽ जैतय तँ हिनक शिक्षा-दृष्टिक परिचायक होयबे करितय संगहि प्राथमिक वर्गक मैथिली पाठ्य पुस्तक निर्माणक कड़ीमे ओ एकटा आदर्श ओ मानक रूपमे सोझाँ अबितय ।

शिक्षण संस्थान स्थापनामे सहयोग

डा. रामदेवझा शिक्षाक विस्तार हेतु सदिखन चिन्तनशील रहलाह अछि आ तेँ लहेरियासरायमे अनेक शिक्षण संस्थानक स्थापनाक ई प्रेरणास्रोत रहलाह अछि । 1970सँ पूर्व दरभंगा जिला मुख्यालय लहेरियासरायमे कॉलेज नहि छल। एहि परिसरक छात्रकेँ दरभंगा जा कऽ पढ़ऽ पड़ैत छलैक । 1970मे डा. रामदेवझा अपन मित्र सेवानिवृत्त समाजशास्त्रक प्राध्यापक डा. राजेन्द्रझाक संग एहि प्रसंगपर विचार कऽ कऽ प्रख्यात अधिवक्ता ओ शिक्षाविद् नागेश्वरमिश्रसँ भेट कयलथिन । कॉलेज स्थापनाक दिशामे प्रयास सुरू भेल आ धीरे-धीरे बहुतो गोटा एहि अभियानक सहभागी बनि गेलाह । एम.एल एकेडमीमे पं. ललितनारायणमिश्रक हाथेँ 1970मे महारानी कल्याणी महाविद्यालय, लहेरियासरायक उद्घाटन कराओल गेल आ एहि नवस्थापित कॉलेजक पहिल वर्ग लेलनि डा. रामदेवझा । आइ ई कॉलेज लहेरियासराय नगरक एकटा प्रमुख शिक्षण संस्थानक रूपमे अपन परिचिति बना चुकल अछि ।

लहेरियासरायमे एकटा महिला कॉलेज सेहो हो ताहि व्यग्रताक अनुभव हिनका होइत रहलनि । अतः वैद्यनाथ चौधरी 'बैजू'केँ प्रेरित कऽ एतऽ मिथिला महिला कॉलेजक स्थापना करौलनि । चिकित्सक डा. भवनाथमिश्रक बेलवागंज स्थित आवासमे कॉलेजक उद्घाटन भेल आ एहू कॉलेजक पहिल वर्ग डा. रामदेवझा लेलनि । एहि कॉलेजक पहिल छात्रा छलीह मैथिलीक दिवंगता कवयित्री वाणीमिश्र । रामदेवझा अपना स्तरसँ बहुतो दिन धरि अपन छात्रवर्ग ओ स्वतन्त्र परीक्षार्थी लोकनिसँ स्वेच्छया देल चन्दाक संकलन कऽ कॉलेज प्रबन्धककेँ दैत रहलथिन किन्तु एहि कॉलेजकेँ स्थायित्व प्रदान करबाक दिशामे अनेक बाधा ओ एकर संचालक लोकनिक बहुतो दिन धरि प्रमादक कारणे लहेरियासरायमे महिला कॉलेजक अभावक पूर्ति ई नहि कऽ सकल । डा.रामदेवझा पुनः चिन्तनशील भेलाह । अनेक इष्ट-मित्र ओ कर्मठ कार्यकर्त्ताकेँ महिला कॉलेजक स्थापनाक हेतु प्रेरित करैत रहलाह । तखन 1984मे एकटा दोसर शिक्षण संस्थान नागेन्द्रझा महिला कॉलेजक स्थापना भेल । संकल्प लोक संस्थाक गर्भसँ निकलल एहू कॉलेजक प्रथम

Scanned by CamScanner

वर्ग लेबाक सौभाग्य डा. रामदेवझाहिकेँ प्राप्त भेलनि । एहि कॉलेजमे नामांकन हेतु लोककेँ प्रेरित करबाक हेतु ई सर्वप्रथम अपन कन्या कविता कुमारीक नामांकन करौलनि । वर्त्तमान समयमे सर्वसाधन सम्पन्न ई कॉलेज लहेरियासरायक प्रमुख शिक्षण संस्थानक रूपमे मान्य भऽ चुकल अछि ।

दरभंगाक एम.एल.एस.एम कॉलेजक स्थापनाक प्रेरक लोकनिमे सेहो ई रहलाह अछि । हड़ाही पोखरिक मोहारपर जाहि भवनमे ई कॉलेज अछि से पहिने दरभंगा राजक धर्मशाला छल । कालान्तरमे ई धर्मशाला असामाजिक तत्त्वक अड्डा ओ कबाड़खानाक रूप धारण कऽ लेलक । दरभंगामे नाक परक एहि जमीन ओ भव्य भवनक उद्धार कोना हो ताहि हेतु ई एकर संस्थापक वैद्यनाथचौधरीकेँ प्रेरित कयलथिन जे जँ एहि जमीनपर शिक्षाक मन्दिर बना देल जाय तँ बेजाय की ?' हिनक यैह प्रेरणा एम.एल.एस.एम. कॉलेजक स्थापनाक कारक बनल । पछाति एही कॉलेजक गर्भसँ निकलल विद्यापति सेवा संस्थान सन संस्था ।

उद्घाटन : लहेरियासरायमे एम.एल. एकेडमी सन स्कूल तँ छल मुदा एहि स्कूलमे सभक नामांकन कठिन छलैक आ पुनः एकरहु अपन सीमा छलैक । एहनामे एहि परिसरक विशाल आबादीक छात्रवर्गकेँ हाइस्कूलमे नामांकन हेतु बौआय पड़ैत छलैक । एहि शैक्षणिक समस्याक आंशिक समाधान हेतु 1976-77मे डा. रामदेवझा स्थानीय बुद्धिजीवी लोकनिकेँ एकत्रित कऽ लहेरियासरायक रेलवेलाइनक पूर्वी क्षेत्रमे एकटा हाइस्कूल स्थापनाक प्रयत्नक निर्णय कयलनि आ तकर बाद 'पूर्वाञ्चल उच्च विद्यालय'क नामसँ एकर स्थापना भेल जे आब राजकीयकृत भऽ चुकल अछि । एही विद्यालयक पृष्ठभूमिपर हिनक 'उद्घाटन' नामक कथा प्रकाशित भेल छलनि ।

वस्तुतः हिनक प्रेरणा ओ सहयोगसँ बहुतो शिक्षण संस्थानक स्थापना भेल अछि जे शिक्षाक ज्योति पसारऽमे अपन योगदान दऽ रहल अछि ।

घर-परिवार

ई जखन इंटरक छात्र रहथि ताही समयमे मैथिलीक एकट प्रख्यात कवि अपन कन्याक हेतु प्रस्ताव लऽ कऽ हिनक पिता लग पहुँचलथिन । मुदा हिनक शिक्षानुरागी पिता ओहि प्रस्तावकेँ सविनय अस्वीकृत कऽ देलथिन आ कहलथिन जे-एखन विवाह करौलासँ हिनक आगाँक पढ़ाइ प्रभावित होयतनि ।'

दुर्भाग्यवश 1956मे हिनक पिताक निधन भऽ गेलनि, अपन पुत्रक विवाह देखब हुनक भाग्यमे प्रायः नहि लिखल छलनि । हिनक स्कूलक गुरु श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर' हिनक तेजस्वितासँ पहिनहिसँ प्रभावित छलथिन । हिनक शालीनतासँ अमरजीक समस्त परिवार सेहो तहिना प्रभावित । अमरजीक माय अपन मृत्युसँ पूर्व किछु संकेत देने छलथिन । तदनुसार अमरजी अपन जेठ कन्या योगमाया जनिक दुलारक नाम बसुली छनि तनिका प्रसंगे कथाक उपन्यास कयलथिन । एहि लऽ कऽ अमरजीकेँ अपन सम्बन्धी वर्गक कटु निन्दा सेहो सहऽ पड़लनि जे स्वयं भलमानुस भऽ कऽ जयवारमे कुटमैती कऽ रहल छथि । मुदा अमरजी कुलीनताक एहि बन्धनकेँ तोड़ि मात्र मेधाकेँ महत्त्व दैत रामदेवझाकेँ अपन जमायक रूपमे वरण कयलनि आ 18 जून 1959केँ योगमायाक संग हिनक विवाह भेलनि । संयोग एहन जे विवाहक दोसर दिन हिनक स्नातक प्रतिष्ठाक रिजल्ट बहरयलनि । 19 जून 1959क एकबारमे मैथिली विषयमे प्रथम वर्गमे प्रथम । ई स्थिति हिनकालेल हर्षमय ओ विषादमय दुनू छल । विवाहक संग नवजीवनमे प्रवेश आ परीक्षामे टॉप दुनू एकहि संग मुदा ई शुभ कार्य देखबाक ओ पुत्रक उपलब्धिक बखान सुनबाक लेल हिनक पिता कपिलेश्वरझा एहि संसारमे नहि रहि गेल छलथिन ।

24 नवम्बर 1961केँ एस.पी कॉलेज दुमकामे प्राध्यापक पदपर योगदानक संगहि हिनक आर्थिक समस्याक समाधान भऽ गेलनि । विवाहक तेसरे वर्षे योगमाया दुरागमन भऽ कऽ अपन सासुर कबिलपुर चल अयलीह । ओ अपन घर-गृहस्थी सम्हारि लेलनि । 1965मे हिनक जेठ सन्तान कृष्णदेवझाक जन्म भेलनि । कृष्णदेवक दुलारक नाम ललनजी

Scanned by CamScanner

छनि । ललनजी फिजिक्समे एम.एस-सी. छथि, फर्स्ट क्लास फर्स्ट । एकटा शिक्षक पिताक सन्तान होयबाक कारणेँ शिक्षणे वृत्तिमे जायब ई बेसी पसिन्न कयलनि । वर्त्तमानमे ई मध्य विद्यालय सहोड़ा (दरभंगा)मे पदस्थापित छथि । 1998 मे हिनक विवाह कसेरा (मधुबनी) निवासी श्रीकृष्णकान्तझा ओ एम. आर. एम. कॉलेज, दरभंगामे मैथिलीक प्राध्यापिका डा. इन्दिराझाक द्वितीया कन्या नीतूक संग सम्पन्न भेलनि । हिनका एकटा बालक प्रशान्त ओ एकटा कन्या रुचि छथिन । ललनजीकेँ सेहो साहित्यमे रुचि छनि आ यदा-कदा हिनक रचना सब पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित होइत रहैत छनि ।

डा. रामदेवझाक दोसर पुत्र शंकरदेवकझाक जन्म 1969मे भेलनि । ई इतिहास विषयमे एम.ए. ओ पी-एच.डी. छथि । ई राँची विश्वविद्यालय, राँचीसँ पत्रकारिता ओ जनसंचार (बी.जे.एम.सी)मे पी.जी. डिप्लोमा सेहो कयने छथि । वर्त्तमानमे ई पत्रकारिता वृत्तिसँ जुड़ल छथि । 2000मे हिनक विवाह एस. पी. कॉलेज, दुमकामे मैथिलीक विभागाध्यक्ष पश्चात् प्रधानाचार्य डा. विद्यानाथझा 'विदित'क मध्यमा कन्या जाह्नवीक संग भेल छलनि । विवाहक मात्र सवा सालक बाद जाह्नवी एकटा नवजात पुत्रीकेँ जन्म दऽ कऽ अप्रैल 2001मे दिवंगता भऽ गेलथिन । ई दुर्घटना डा.रामदेवझाक परिवारकेँ जेना झकझोरि कऽ राखि देलकनि । 2004मे शंकरजीक विवाह मोहन-बढ़ियाम (मधुबनी) निवासी राजकुमारचौधरीक जेठ पुत्री कंचनमालाक संग सम्पन्न भेलनि । हिनका दूटा पुत्री जूही (रश्मिप्रिया) आ लिपि छनि । शंकरजी अपन पिताक साहित्यिक परम्पराकेँ आगू बढ़यबाक दिशामे प्रयत्नशील छथि । हिनक चारि गोट पोथी ओ कतोक शोध-समालोचनापरक आलेख, इतिहास विषयक रिसर्च पेपर सब पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशित छनि । कतोक साहित्यिक पुरस्कार सेहो हिनका भेटलनि अछि ।

तेसर पुत्र विजयदेवझा छथिन । हिनका घरक नाम बच्चामे परागजी छलनि किन्तु आब राजू भऽ गेल छनि । हिनक जन्म 1977मे भेलनि । पटना विश्वविद्यालयसँ अंग्रेजीमे एम.ए.कयलाक बाद हैदराबाद विश्वविद्यालयसँ अनुवाद कोर्स आ पुनः जामिया मिलिया विश्वविद्यालय, नई दिल्लीसँ जर्नलिज्म एंड मास-कम्युनिकेशनक कोर्स कयलनि । वर्त्तमानमे विजयदेव राँचीसँ प्रकाशित अंग्रेजी समाचार पत्र 'द पायोनियर'मे जीविकापन्न छथि । मैथिली ओ हिन्दीसँ अंग्रेजीमे अनुवाद करबामे हिनक विशेष रुचि छनि । हिनका द्वारा अंग्रेजीमे अनूदित कतोक रचना राष्ट्रिय ओ अन्तराष्ट्रिय स्तरक पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित भऽ चुकलनि अछि ।

जेठ कन्या ममताक जन्म 1967मे भेलनि । मैथिलीसँ स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त ममता, बिहार सरकारक प्रशासनिक सेवामे वर्त्तमानमे दरभंगा जिलाक मनीगाछी प्रखंडमे महिला प्रसार पदाधिकारीक पदपर पदस्थापित छथि । हिनक विवाह सवास (मुजफ्फरपुर) निवासी ओ पटना आवासी पी. एच. ई. डी. क संयुक्त सचिव पदसँ सेवानिवृत अभियन्ता सत्यनारायणझाक जेठ अभियन्ता पुत्र भारतेन्दुकुमारझाक संग 1986मे भेलनि । हिनका तीन गोट कन्या शिल्पी, तूलिका ओ प्राची छनि जे सभ युगानुकूल तकनीकी ओ व्यावसायिक शिक्षा दिस अग्रसर छथिन ।

मध्यमा कन्या कविता कुमारीक जन्म 1971मे भेलनि । ई इतिहास ओ संगीतमे एम. ए. ओ पी-एच.डी. छथि । हिनक विवाह मछैता (दरभंगा) निवासी जे. एन. कॉलेज, नेहरा (दरभंगा)सँ सेवानिवृत्त मैथिली विभागाध्यक्ष डा. भोलाझाक दोसर बालक सतीशकुमारझाक संग 1998मे भेलनि । सतीशजी जे.एन.बी., परतूर (महाराष्ट्र)मे भौतिक विज्ञानक शिक्षक (पी.जी.टी.) छथि । हिनका एक गोट कन्या कृतिका छवि ओ एकटा बालक अभिनव भास्कर (बिट्टू) छथिन ।

सबसँ छोटि कन्या कल्पनाक घरक नाम विद्या छनि । हिनक जन्म 1974मे भेलनि । प्राचीन भारतीय इतिहास ओ संस्कृतिमे एम.ए. तथा बी.लिस.क डिग्री प्राप्त विद्याक विवाह 2005मे शोभेपट्टी-रामभद्रपुर (दरभंगा)क शोभाकान्तमिश्रक छोट बालक प्रभुकान्तमिश्रक संग भेलनि । प्रभुकान्तजी कोटेक महेन्द्रा बैंकमे मुम्बइमे रिजनल मैनेजर छथि आ ओतहि स्थायी रूपसँ रहैत छथि । हिनका दू गोट कन्या अनन्या ओ साम्या छनि ।

Scanned by CamScanner

आदर्श गृहणी

डा. रामदेवझाक छबहु सन्तान उच्च शिक्षा प्राप्त छथिन । सब साहित्यिक रुचिसँ सम्पन्न । तीनू कन्या संगीत ओ चित्रकलामे विशेष निपुण छथिन ओ विभिन्न प्रतियोगितामे ई लोकनि प्रशंसित-पुरस्कृत होइत रहलीह अछि । ई संस्कार हिनक सब पौत्र-पौत्री ओ दौहित्र-दौहित्रीमे सेहो क्रमशः विकसित भऽ रहल छनि । अपन धियापुताकेँ अनुशासित ओ संस्कारित करबाक दिस हिनका लोकनिक माय योगमाया आरम्भेसँ विशेष सचेष्ट रहलीह । हिनक अपन पढ़ाइ विवाहक कारणेँ बीचेमे छूटि गेल छलनि, तथापि आगाँ पढ़बाक हिनक सेहन्ता समाप्त नहि भेलनि । धियापुताक छेँटगर भेलाक बाद योगमाया पुन: एकबेर नवसँ अपन पढ़ाइ प्रारम्भ कयलनि आ मैथिलीमे स्नातकोत्तर धरि कऽ गेलीह । तदुपरि 'मैथिली साहित्यमे गंगा' विषयपर पी-एच.डी. कयलनि । हिनक ई मूल्यवान शोधप्रबन्ध आब प्रकाशनक पथपर छनि । डा. योगमायाझाक रचना सब सेहो यदा-कदा पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित होइत रहलनि अछि । अपन पति डा. रामदेवझाक प्रत्येक गतिविधिमे हुनक संग पुरैत रहलथिन अछि । हिनकालेल परिवार सर्वोपरि रहलनि अछि । एम. ए. कयलाक बाद किछु दिन मिथिला महिला महाविद्यालय, लहेरियासरायमे अध्यापन सेहो कयलनि । मुदा जखन ई अध्यापन हिनक अपन पारिवारिक दायित्वक निर्वहनमे बाधक बनऽ लगलनि तखन ई स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लऽ लेलनि । डा. योगमायाझाकेँ धर्म-कर्म, व्रत-उपवासमे विश्वास छनि । अतिथि सत्कारमे सेहो ई ततबे अग्रणी रहैत अयलीह अछि । डा. रामदेवझाक अध्यापन वृत्तिमे अयलाक बादसँ हिनका ओतऽ शिष्य, गवेषक, जिज्ञासु लोकनिक सतत आवाजाही लागल रहैत छनि । डा. योगमायाझा एहि अतिथि लोकनिक हेतु चाह, जलपान, भोजन आदिक प्रबन्ध करबामे दत्तचित रहैत अयलीह अछि । यद्यपि अतिथि सत्कारक निरन्तरताक कारणे हिनक अपन लेखन प्रभावित भेलनि । 1960-61मे ई मिहिरक माध्यमसँ लेखन सुरू कयने रहथि आ ओही गतिसँ लिखैत रहितथि तँ आइ कतेक आगू गेल रहितथि । तथापि एहि बातक हिनका कनेको कचोट नहि रहलनि । अपन पति ओ सन्तानक साहित्यिक उपलब्धियहिकेँ ई अपन चरम उपलब्धि मानैत छथि आ प्रसन्न रहैत छथि ।

डा. झाक अनुज बलदेवझाक पारिवारिक जीवन सुखद छनि । एकरा संयोग कहक चाही जे 24 नवम्बर 1961केँ दुनू भाय एके संगे नोकरी ज्वाइन कयने रहथि । 1963मे बलदेवझाक विवाह ढंगा-हरिपुरक गोवर्द्धनमिश्रक पुत्री मनोरमादेवीसँ भेलनि । हिनक चारि गोट सन्तानमे पुत्र द्वय इन्द्रदेवझा (सुमन) तथा चन्द्रदेवझा (रमण), पुत्री द्वय विभा (गुड्डी) ओ निभा (पुतली) उच्च शिक्षा प्राप्त छथिन । चारू भाय-बहिन अपना-अपना स्थानपर सुखी ओ प्रसन्न छथिन ।

घर-आश्रम

गाममे हिनक जे अपन पैतृक डीह छलनि ताहिमे देयाद लोकनि हिस्सा नहि देलथिन । पहिने जे मालक घर छल तकरे वास घर बना कऽ माता-पिता निर्वाह कयलथिन । मुदा दुनू भायक विवाहक बाद परिवार बढ़ला उत्तर ओहि संकीर्ण घराड़ीपर निर्वाह होयब कठिन होअऽ लगलनि । गाममे एकटा दोसर खतियानी जमीन छलनि ताहिपर घर बनयबाक सूर-सार कयलनि कि पुन: ओ देयाद लोकनि बाधा ठाढ़ कऽ देलथिन । तखन गाममे एकटा फराकसँ जमीन किनलनि । ओहिपर मकान बनायब प्रारम्भ कयलनि । खिड़की-केबाड़ी सब लागि गेल । मात्र छत देब शेष रहि गेल छलनि की बीचेमे एकदिन हिनक एकटा एहन प्रतिवेशी घनिष्ठ मित्र जनिका ई जी-जानसँ बढ़ि कऽ उपकार करैत रहलथिन, से हिनका संग विश्वासघात करैत जमीनपर जायवला सरकारी रस्तापर देबाल जोड़ि बाट बन्द कऽ देलथिन । ई तकर बाद एको बेर हुनकासँ एहि बातक चर्चो नहि कयलथिन आ ओहि अर्द्धनिर्मित घरकेँ ओहिना छोड़ि देलथिन जे औखन पर्यन्त ढहल-ढनमनायल पड़ल अछि । मित्रक मित्रताक फल यैह भेटलनि ओहिमे लागल जमा-पूजी पानिमे डूबि गेलनि ।

एहि दुर्घटनाक बाद पुन: एक बेर साहस जुटौलनि आ गामसँ उत्तर चन्द्रधारीसिंहक कॉलोनीमे मुख्य सड़कक कातमे एकटा पुरान मकान सहित जमीन कीनलनि । एही मकानक मरम्मति कराय 1975क जलप्लावनहिमे 11 अगस्तकेँ

Scanned by CamScanner

घरवास लेलनि । जमीन-मकानक एहि हेराफेरीक कारणेँ एहि नवका घराड़ीपर सुनियोजित ढंगसँ पक्का मकान नहि बना सकलाह । तथापि ओहि विषाक्त वातावरणसँ बाहर निकलि गेलाह, से कम सन्तोषप्रद बात हिनकालेल नहि छलनि । पछाति एही ठाम एकटा औरो भूखंड किनलनि ।

परिजन ओ कुटुम्ब

रामदेवझाक पिता कपिलेश्वरझा अल्पायु नहि, तँ दीर्घायु सेहो नहि भेलथिन । जखन ई इंटरक छात्र रहथि तहियै 1956मे आँखि मूनि लेलथिन । फलतः समस्त परिवार ओ कौटुम्बिकताक निर्वाहक दायित्व हिनक कान्हपर पड़ि गेलनि ।

हिनक पिता कपिलेश्वरझाक एकटा पिउसि सुसारीमे छलथिन, तनिक पुत्र अर्थात पिताक पिसियौत नरसिंहझा आ पश्चात् हुनक सन्तति लोकनिक संग पुरान सम्बन्धक निर्वहन करैत रहलाह अछि । सुसारीमे हिनक अपन सबसँ जेठ पिउसि पार्वतीक विवाह छलनि । ई अपन जेठ पिउसिकेँ देखनहुँ नहि छलाह । हुनका चारि गोट पुत्र क्रमशः पं. सूर्यनारायण, पं. सुबुधझा, पं. अनिरुद्धझा ओ पं. राजेन्द्रझा । ई सब पिसियौत विख्यात पंडित ओ बहुत वयसक छलथिन । प्रत्युत सबसँ जेठ सूर्यनारायणझा तँ हिनक पिताक समवयस्के छलथिन । सुसारीमे पंडित परिवारक नामसँ ख्यात हिनक पिउसिक दलानपर चौपाड़ि चलैत छलनि । आइयो ओहि गाममे हुनक दलानपरक माटिसँ बच्चाकेँ अक्षराम्भ कराओल जाइत छैक । हिनका दोसर पिउसि रामरतीक सासुर नवादा (दरभंगा)क एकटा गृहस्थ परिवारमे छलनि । तेसर पिउसि रामसखीक सासुर, नेनापट्टीक प्रसिद्ध विद्वान ओ दरभंगा महाराज महेश्वरसिंहसँ पुरस्कृत- सम्मानित प. भवदत्तझाक परिवारमे छलनि । हिनका घरमे प्राचीन पांडुलिपि ओ पोथीक नीक संग्रह छलनि । नेनापट्टीवाली पिउसि अपन सासुरक सारस्वत निधिक किछु अंश अपन भातिज रामदेवकेँ देलथिन जकरा ई आइ धरि सुरक्षित रखने छथि । एहि पीसीक बालक पं. रत्नेश्वर झा एखनहुँ छथिन । सबसँ छोट पिउसि रामसतीक सासुर सेहो सुसारी । रामसखी ओ रामसतीक मित्रता अधिवक्ता बाबू ब्रजकिशोर प्रसादक पुत्री ओ जयप्रकाशनारायणक पत्नी प्रभावतीक संग छलनि ।

डा. रामदेवझाक चारू पिउसि सखा-सन्तान सबसँ भरल-पुरल । हिनका लोकनिक पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र, आदि लोकनिक संग आइयो ई ओहिना सम्बन्ध बना कऽ रखने छथि । 1976मे जखन ई अपन नवीन आवासपर अपन बालक लोकनिक उपनयन कयने रहथि ताहि अवसरपर तीनू परमवृद्धा पिउसि लोकनिकेँ लेयाओन करा कऽ अनने छलथिन । एहिना हिनक माय पूर्णायु प्राप्त कऽ कऽ 27 मइ 1999कें दिवंगता भेल छलथिन तँ हुनक श्राद्धक अवसरपर सब पिउसिक सखा-सन्तान लोकनि उपस्थित भेल छलथिन ।

डा.झाक बाल्यावस्थाक अधिकांश समय अपन मातृकमे बितलनि तेँ माम ओ मौसी लोकनिसँ विशेष स्नेह रहलनि । हिनक माय तीन बहिन ओ एक भाय । एकमात्र माम पं. रामजतनमिश्र परम वृद्ध भऽ कऽ 91-92 वर्षक वयसमे 1984मे दिवंगत भेलथिन । हिनका तीन गोट पुत्र ओ एक कन्या । ममियौत लोकनिमे जेठ पं रामसुजानमिश्र आब नहि छथिन । दोसर आ तेसर ममियौत तेजनारायणमिश्र ओ उदयकान्तमिश्र नीक स्थितिमे छथिन । ममियौत बहिन रामकलाक विवाह हिनक अपनहि गाम कबिलपुरक पुबारि टोलक परमेश्वरसँ छलनि । परमेश्वरझा अपना समयक नामी लोक आ गामक मुखिया रहथि । अपना सहोदर बहिन नहि रहलाक कारणेँ बहिन-बहिनोइक सौख-मनोरथ हिनकहि लोकनिसँ पुरैत रहलनि ।

हिनक माय बहिनमे सबसँ जेठ । ताहिसँ छोट हिनक मझिली मौसी राजकिशोरीक विवाह हिनक पार्श्ववर्त्ती गाम डरहारमे । सबसँ छोट मौसी रामकिशोरीक सासुर सहोड़ाक बगलेमे माखनपुर । हिनक मायहि जकाँ दुनू मौसी दीर्घजीवी भऽ कऽ मुइलथिन । मसियौतमे माखनपुरक रामकुमारचौधरी ओ डरहारक रामप्रीतचौधरी ओ राजकुमार चौधरी लोकनिक संग निरन्तर प्रगाढ़ सम्बन्ध बनल रहलनि अछि । मामा पं.रामजतनमिश्र तँ अपन वार्द्धक्यामे विशेष काल कबिलपुरहिमे हिनका ओतऽ रहल करथिन ।

Scanned by CamScanner

विवाहक बाद डा. रामदेवझाक कौटुम्बिकताक पसार औरो बढ़लनि । हिनक श्वसुर पं. चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क फराकसँ कोनो परिचय देबाक प्रयोजन नहि अछि । आधुनिक मैथिली भाषा-साहित्यक पर्याय बनल अमरजीकेँ तीन गोट सन्तान । दूटा कन्या ओ एकटा बालक । डा.रामदेवझाक पत्नी योगमाया सबसँ जेठ ताहिसँ छोट सावित्री । सावित्रीक विवाह बलभद्रपुर निवासी स्टेट बैंकमे अधिकारी महेन्द्रझाक संग भेलनि । सावित्री सर्वगुण सम्पन्ना होइतो सन्तान-सुखसँ वंचित रहि गेलीह आ यैह कमी हिनका रुग्णा बना देलकनि जाहि कारणे मइ 2005मे हिनक निधन भऽ गेलनि । सम्बन्धे सारि होइतो डा. रामदेवझा सावित्रीकेँ सब दिन अपन सन्तानवत् बुझैत रहलथिन । सावित्री अपन मृत्युकालमे हिनका लोकनिसँ दूटा वचन लेलथिन । प्रथम ई जे हुनक मृत्युक बाद हुनक पति महेन्द्रझाक दोसर विवाह करा देल जाइनि, दोसर 'मैथिली गद्य साहित्यक विकासमे सुरेन्द्रझा सुमनक योगदान' विषयपर जे हुनक पी-एच. डी.क थीसिस छनि तकरा प्रकाशित करा देल जाइनि । डा. रामदेवझा सवित्रीकेँ देल ओहि दुनूटा वचनक निर्वाह कयलनि । अपन साढ़ू महेन्द्रझाक विवाह नरहा (सीतामढ़ी) निवासी कालीकान्तझाक कन्या विभासँ करा देलथिन । महेन्द्रझाक घर एक बेर फेर बसि गेलनि । हिनका एकटा पुत्री मेधा आ एकटा नवजात बालक छनि । सावित्री तँ नहि रहलीह मुदा हुनक छवि विभामे देखैत ई अपन सम्बन्ध तद्वते बनौने छथि । महेन्द्रबाबू सेहो हिनका साढ़ूसँ बेसी अभिभावकक सम्मान दैत छथिन । सावित्रीक शोध-प्रबन्धकेँ ई अस्वस्थ रहितो परिश्रमपूर्वक 2008 मे 'आचार्य सुरेन्द्रझा सुमनक गद्य-गरिमा' नामसँ प्रकाशित करा देलथिन । ई ग्रन्थ मानस सन्तानक रूपमे सावित्रीकेँ अमरत्व प्रदान कऽ देलकनि अछि ।

हिनक एकमात्र सार शम्भुनाथमिश्रक जन्म हिनक विवाहक बाद भेलनि । जहिया अमरजी अपन कन्याक प्रसंग हिनका ओतऽ कथाक उपन्यास कयने छलथिन तहिया रामदेवझाक मायक मोन एहि लऽ कऽ छोट भऽ गेल छलनि जे हुनका बेटाकेँ सासुरमे सार नहि छनि । ओ छठि परमेश्वरीकेँ कबुला कयलथिन जे हुनका बेटाकेँ जँ सार होयतनि तँ ओ कोनियाँक अर्घ्य चढ़ौथिन । एकरा छठि परमेश्वरीक कृपा कही, हिनक मायक आशीर्वाद कही, 1962मे शम्भुनाथजीक जन्म भेलनि । हिनक दुलारक नाम मुन्नूजी छनि । डा. रामदेवझा मुन्नूजीकेँ सन्तानतुल्ये मानैत रहलथिन अछि । मैट्रिकसँ लऽ कऽ एम. ए. (मैथिली) धरि सर्वत्र प्रथम श्रेणी प्राप्त कयनिहार मुन्नूजी यद्यपि अपन कौलिक परम्पराक अनुसार शिक्षण-वृत्तिमे नहि जा सकलाह तथापि स्टेट बैंकक नोकरी करितो ई साहित्यसँ विशेष रुचि रखैत छथि, लेखन करैत छथि, मंचपर सस्वर कविताक पाठ कयल करैत छथि । 'मैथिली दधीचि बाबू भोलालादास' नामसँ हिनक एकगोट पोथी सेहो प्रकाशित छनि । हिनक विवाह कटैया (मधुबनी) निवासी जगन्नाथझाक कन्या अपर्णासँ भेल छनि । हिनका दू गोट बालक आदित्य ओ विभूति छथिन । दुनू भाय समकालीन शिक्षाक हेतु दत्तचित्त रहितो साहित्यकर्मसँ जुड़ल छथि ।

अमरजीक जेठ भाय गणेशमिश्रक जेठ पुत्र रमानाथमिश्र मिहिर मैथिलीक प्रसिद्ध साहित्यकार ओ प्रकाशक छलथिन । घरमे बचकुन नामसँ जानल जाइत मिहिरजीकेँ अमरजी अपनहि संग राखि कऽ पढ़ौलथिन-लिखौलथिन । रामदेवझाक जखन विवाह भेलनि तखन सारक रूपमे मिहिरेजी छलथिन । सार-बहिनोइक सम्बन्धक सेहन्ता हिनकहिसँ पूर्ण भेलनि । अतः दुनू गोटाक मध्य जतबे अत्यन्त माधुर्यपूर्ण घनिष्ठता रहलनि ततबे साहित्यिक क्षेत्रमे प्रतियोगिता सेहो । मुदा दुर्भाग्यवश 1999मे मिहिरजीक असमय निधन भऽ गेलनि । मिहिरजीक छोट भाय कलानाथमिश्र छथिन जनिक घरक नाम टुनटुन छनि । ई गृहस्थ छथि । गणेशमिश्रक दुइ गोट कन्यामे जेठकीक विवाह सनहा (बेगूसराय) ओ छोटकीक विवाह श्याम सिधप । हिनकहु लोकनिक संग डा. रामदेवझाक मधुर सम्बन्ध बनल रहलनि अछि । एतबे नहि अमरजीक दूरक सम्बन्धी लोकनि यथा हुनक भातिजक सम्बन्धमे अबैत डा. जयकान्तमिश्र, डा. कृष्णकान्तमिश्र, प्रो. रमाकान्तमिश्र (सी. एम. कॉलेजसँ सेवानिवृत्त अंग्रेजीक प्राध्यापक), अमरजीक सम्बन्धेँ माम प्रसिद्ध भाषाविज्ञानी ओ साहित्यकार डा. सुभद्रझा, अमरजीक सम्बन्धेँ भागिन प्रसिद्ध कवि वैद्यनाथमिश्र 'यात्री', गुरु-शिष्यक सम्बन्धेँ भातिज प्रसिद्ध गीतकार रवीन्द्रनाथठाकुर, एहिना दूरक सम्बन्धेँ अमरजीक भातिज सुधांशु शेखर चौधरी इत्यादि लोकनिक संग हिनक मधुर सम्बन्ध रहलनि ।

Scanned by CamScanner

वेश-भूषा, परिधान ओ रहन-सहन

छात्र जीवनसँ लऽ कऽ प्राध्यापकीय जीवन ओ साहित्य अकादेमी सन संस्थाक सदस्य होयबा धरि डा. रामदवेझाक जीवन शैलीमे कोनो विशेष परिवर्त्तन नहि अयलनि । ई सब दिन सादगी-पसन्द व्यक्ति रहलाह अछि । छात्र जीवनमे हिनक परिधान धोती आ कमीज छलनि । दहिना कानमे कनौसी । पछाति आइ. ए.क बाद कनौसी निकालि लेलनि । परिधान मुदा पूर्ववते । माथपर शिखा बेस मोटगर । हिनक एही स्वरूपकेँ लक्ष्य करैत गोपालजीझा 'गोपेश' मिथिला मिहिरमे प्रकाशित अपन **अंगरेजीफूलक डायरी**मे हिनक धोती ओ शिखापर व्यंग्य कयने छलथिन । प्राध्यापक बनलाक बाद कमीजक स्थान कुरता लऽ लेलक । टीक स्वत: पतराइत चल गेलनि । चप्पलक स्थानपर पैरमे हाफ-शू पहिरऽ लगलाह । आवागमनक माध्यम साइकिल रहलनि । सी. एम. कॉलेजसँ लऽ कऽ नरगौना पैलेस स्थित स्नातकोत्तर मैथिली विभाग धरि वर्ग लेबाक हेतु साइकिलसँ जाइत रहलाह आ से सब दिन नियते समयपर पहुँचल करथि । हिनक साइकिल सवारीकेँ लऽ कऽ बहुधा व्यंग्यो कयल जाइनि । फगुआक अवसरपर पत्र-पत्रिकामे हिनक नामक आगाँ 'साइकिलसँ विश्व भ्रमण' सन उपाधि जोड़ल जाइनि । पछाति 1986मे एकटा स्कूटर किनलनि । किछु दिन एकरा चलयबाक अभ्यासो कयलनि मुदा पुन: अपन पुरने सवारीपर चल अयलाह ।

मिथिलाक भोजन परिपाटीक अनुरूपेँ हिनक खान-पान छनि । माछ-मांस खाइतो ओकर विशेष प्रेमी नहि । प्राय: मातृकक वैष्णवी परम्पराक किछु प्रभाव हिनक संस्कारपर छनि । दूध, दूधसँ बनल वस्तुक विशेष प्रेमी । धात्रीक चटनी ओ तेतरिक खटमिट्ठी विशेष प्रिय छनि ।

धार्मिक आस्था ओ कर्मकांड

धर्म-कर्ममे हिनक आस्था छनि, मुदा बहुत बेसी धार्मिक कर्मकांडक आडम्बर पसारबाक हिनका पलखतिये नहि रहलनि अछि । स्नानक बाद विधि-विधानपूर्वक सन्ध्यावन्दन तँ नहि मुदा गायत्री ओ सावित्री मन्त्रक जाप अवश्य करैत छथि । दीक्षित भेलाक बादसँ अपन इष्ट मन्त्रक जाप सेहो करैत छथि ।

धार्मिक दृष्टिसँ तीर्थाटन करबाक अभिरुचि नहि रहलनि, मुदा देशाटनक क्रममे मार्गमे जे कोनो प्रसिद्ध तीर्थस्थान ओ मन्दिर भेटलनि तँ ओतऽ जा कऽ आवश्यक रूपसँ दर्शन-पूजन करितहिटा छथि । जावत ई दुमकामे रहलाह गाम अयबा काल वैद्यनाथधाममे रुकि कऽ पूजा-अर्चना करैत रहलाह । गीता, रामायण, पुराण किंवा कोनो अन्य धर्मग्रन्थकेँ ई पुण्यलाभक दृष्टिसँ नहि अपितु साहित्यिके दृष्टिसँ पढ़ल करैत छथि । पितृपक्षमे ई तर्पण-पार्वण करैत छथि । पहिने आर्द्राक (अरदारा) पार्वण सेहो कयल करैत छलाह । पटना ओ दुमका प्रवासक क्रममे ओ छूटि गेलनि से छुटले रहि गेलनि । माता-पिताक बरखी प्रति वर्ष ई विधानपूर्वक करैत छथि ।

राष्ट्रिय स्वयंसेवक संघसँ सम्बद्धता

डा. झाक आस्था प्रखर राष्ट्रवादक प्रति छनि , तकर कारण अछि संघसँ हिनक प्रत्यक्ष सम्बद्धता । ई अपन छात्रहि अवस्थासँ संघक शाखामे जाइत रहलाह । हिनक पैतृक गाम कबिलपुरमे संघक जड़ि बड़ मजबूत छलैक । किछु वर्ष धरि ई शाखाक मुख्य शिक्षक सेहो रहलाह । बादमे व्यस्तता बढ़लाक बाद ई संघक शाखामे जायब छोड़ि देलनि । आरम्भमे राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघकेँ राष्ट्रभाषा हिन्दीपर अत्यन्त जोर तथा मैथिलीक प्रति विरक्ति जकाँ रहल करैक । इहो कारण छल जे पश्चात् शाखाक नियमित उपस्थितिसँ विरत रहऽ लगलाह । गुरु पूर्णिमाक अवसरपर ई नियमित रूपसँ गुरुदक्षिणा देबाक हेतु संघ कार्यालय जाइत रहलाह अछि । अनेक बेर संघ द्वारा हिनका बौद्धिक व्याख्यानक हेतु सेहो आमन्त्रित कयल जाइत रहलनि अछि ।

Scanned by CamScanner

राजनीतिमे रुचि

डा. रामदेवझा कहियो प्रत्यक्ष रूपसँ ने तँ राजनीतिमे रहलाह आ ने कोनो राजनीतिक दलक सदस्यते ग्रहण कयलनि। देशक जे कोनो सर्वमान्य नेता पं. जवाहरलालनेहरू, लालबहादुरशास्त्री, विनोवाभावे, लोहिया, अब्दुलगफ्फार खाँ (सीमान्त गान्धी) इन्दिरागाँधी, अटल बिहारी वाजपेयी आदिक जँ कहियो दरभंगामे सभा भेलनि तँ पलखति भेटलापर ई भाषण सुनबाक हेतु अवश्य जाइत रहलाह। राजनीतिक घटनाचक्रपर ई अपन तीक्ष्ण दृष्टि रखैत छथि, राजनीतिक प्रश्नपर खुलि कऽ विमर्श करैत छथि।

आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'क संग अत्यन्त निकटता रहबाक कारणेँ हुनक चुनाव अभियानमे हिनक सघन सहभागिता देखल गेलनि। एकटा मैथिलीक विद्वान द्वारा चुनावी समर क्षेत्रमे उतरबाक कारणेँ एहिमे सक्रिय रूपसँ भाग लेने रहथि।

1977मे आपातकालक समाप्तिक बाद भेल लोकसभा चुनावमे आचार्य सुमन दरभंगा लोकसभा क्षेत्रसँ जनतापार्टीक प्रत्याशी बनाओल गेलाह। सुमनजीक संग घनिष्ठता ओ राष्ट्रव्यापी राजनीतिक परिवर्त्तनक आकांक्षाक अनुरूपे ई ओहू चुनावमे हुनका संग अभियानमे भाग लेलनि।

ई सतत एहि बातक पक्षधर रहलाह अछि जे मतदान प्रत्येक भारतीय नागरिकक जन्मसिद्ध अधिकार ओ कर्त्तव्य थिकैक। एकर प्रयोग अवश्य करबाक चाही। मत योग्ये व्यक्तिकेँ देबाक चाही आ अवश्य देबाक चाही।

शुभमस्तु

डा. रामदेवझा अपन जीवनमे निरन्तर अबैत विभिन्न प्रकारक विघ्न-बाधाक उपरान्तो कहियो अपन लक्ष्यसँ विचलित नहि भेलाह। सत्यसाची अर्जुन जकाँ अपन लक्ष्यक सन्धान करैत रहलाह अछि। एकटा सामान्य परिवारमे जन्म लऽकऽ पालित-पोषित भेनिहार ई जँ स्वयंकेँ मात्र एकटा सामान्ये व्यक्ति जकाँ ठाढ़ कऽ लितथि तँ तकरो छोट उपलब्धि नहि कहल जैतय। मुदा ई अपन संघर्ष ओ आत्मबलसँ जीवनक प्रत्येक क्षेत्रमे जे प्रतिष्ठा ओ सम्मान अर्जित कयलनि से समाजमे एक मानदण्डे मानल जाइत अछि। अपन जीवनक आरम्भहि कालमे जँ ई विद्या व्यसनकेँ अपन जीवनक चरम लक्ष्यक रूपमे देखलनि तँ फेर दोर दिस घूरि कऽ तकबो नहि कयलनि। एकनिष्ठ भऽ सरस्वतीक आराधना करैत सफलतम प्राध्यापक रूपमे मान्य भेलाह आ मैथिलीक 'आचार्य' ओ 'पंडित' सन विभूषणसँ विभूषित भेलाह। अपन बाल्यवस्थहिमे लेखनी गहि कऽ साहित्यदेवताक जे आराधना प्रारम्भ कयलनि ताहि बलेँ आइ ई साहित्यक चरमोत्कर्षपर पहुँचल छथि। मैथिलीये नहि अपितु भारतीय साहित्य हिनक लेखनीसँ समृद्ध ओ गौरवान्वित भेल अछि। यैह एकनिष्ठ साधना हिनक सर्वोच्च गुण थिकनि आ यैह हिनक जीवनक चरम सफलता थिकनि। डा. रामदेवझाक जीवन दर्पणक अवलोकन कयला उत्तर चाणक्यक एकटा नीतिक स्मरण भऽ अबैत अछि जे हिनकापर शब्दशः बैसैत छनि–

स जीवति गुणा यस्य यस्य धर्म स जीवति।
गुण धर्म विहीनस्य जीवितं निष्प्रयोजनम्॥

अर्थात् जकरामे गुण ओ धर्म छैक वैह मनुष्य वास्तवमे जीवित अछि। गुण आ धर्मसँ हीन मनुष्यक जीवन व्यर्थ अछि। शुभमस्तु श्रीरस्तु॥

●

Scanned by CamScanner

गरिमामय सुत पाओल

डा. हरिवंश तरुण

पाबि द्विव्य सुत रामदेव सन मिथिला अति हुलसायल
मनुज रूपमे बालारुणकें निरखि हिया हर्षायल
स्नेह-सरलता-मेधा धैने देह धरापर आओल
दीर्घ काल धरि तप कय धरती गरिमायुत सुत पाओल

अहंकार पदतल, मस्तकपर मेधा-मुकुट विराजय
करतलमे लेखनी, हृदयमे ममता-शतदल राजय
मानसमे साहित्य-गंग छिलकाय रहल अछि धार
जिह्वापर हुनका गुंजित अहरह वीणा-झंकार

काव्य-कला-संगीत-त्रिवेणीपर शोभित व्यक्तित्व
'रामदेव'मे दमकि रहल अछि शुचि नरता अस्तित्व
दीप्त भानु ओ सतत गगनसँ जगमे ज्योति लुटाबथि
शिक्षा-दीप प्रखर लय करमे ज्ञान-रश्मि छिलकाबथि

पाबि पूत हुनका सन मैथिली केर-लिलार चमकाबय
मिथिला उमगि-उमगि कय अप्पन हिय-उल्लास देखाबय
गीति-गन्ध पा 'रामदेव' केर जन-मानस अछि सुरभित
दीपशिखा शिक्षाक प्रखर हुनका मानसमे ज्योतित

राष्ट्र-गगनमे ध्वजा मैथिली केर सहजे फहरौलनि
अस्मिता मातृभाषाक राष्ट्र-स्तरपर खूब बढ़ौलनि
गुरु-गरिमासँ मंडित दमकय हुनकर स्नेहिल आनन
हुनका पाबि फुलायल-बिहुँसल सुरभित वाणी-कानन

मिथिला-रत्न 'रामदेव' हिमगिरि सम उन्नत पावन
बहय मैथिली-गंग सतत मानसमे हुनक सोहाओन
देल मैथिलीकें राष्ट्रीय भाषा केर गौरव-मान
अर्पित, हे साहित्य-देव, अछि जन-गन-मन सम्मान

●

Scanned by CamScanner

शिव-संकल्प

प्रो. श्रीशिवाकान्तपाठक

अपने माटि महादेव अपने, अपने शिव-संकल्प
सम्प्रति भेटि रहल नहि दोसर अपनेकेर विकल्प

अपन सूर्य आ अपन चन्द्रमा, तारावली - पथार
सभटा नदी-नहरिकेर सर्जन कलित - ललित बेवहार

कित्ता-कित्ता लागल चतरल जेहने गद्य-गेन्हारी
तेहने पद्य - पुदीना लतरल मह-मह बाड़ी -झाड़ी

सभमे अपन सुगन्ध-बन्ध बेछप अजगुत सुरलहरी
मुदा उबानि न कनिञों कत्तौ ने कत्तौ भुतऽहरी

फलद गाछ सन ठाढ़ भेल छी मौन-मुखर संन्यासी
अपना लय अपनेटापर सदिखन अखण्ड विश्वासी

चुट्टी -पिपरी घोरन उतरौ-चढ़ौ, ने कोनो बात
खोँता लगा रहौ खग चट्टक कयने सिहरय गात

रगड़ा खेला, छिला अप्पन तन, भैंसा-साँढ़क जाति
कंत आयल, चल गेल पड़ायल पाबि अन्हरिया राति

श्यामल नमछड़ देह-कांति मन घनश्याम सन राजित
तृषित-पिपासित पथिकक हित नव जलद सदच्छन साजित

कते माटि तर गड़ल-हेरायल अनगढ़ पाथर-प्रतिभा
ताकि माँजि-धो कयल प्रतिष्ठित अपने मण्डित-महिमा

ताहि सदाशिव पतित-पावनक शतदल पदपर अर्पण
निराकांक्ष भावनेँ सतत् हो हमर जीवनक चन्दन

●

Scanned by CamScanner

रहथु देखबिते माय मैथिली रामक झाँकी

डा. श्रीभीमनाथझा

अध्ययनहिँ जीवनसँ विद्याधनकेँ अपने
आ अध्यापन अनुखन तकरे रहलहुँ गहने
कर्णक कवच-कुण्डले सन लेखन आ वाचन
रहल अहाँमे सटल– बँटल रहितहुँ एकासन

अनुशासनमे रहलहुँ, अनको रखलहुँ तहिना
उच्चासन छल बाम, रहल विद्या-यश दहिना
शास्त्र-व्यसन संक्रमित भेल गुरुसँ अपनेमे
तकरा देल पसारि छात्र-बिच खेमे-खेमे

कथा, काव्य हो, नाट्यविधा हो वा निबन्ध हो
शोध-रोध हो, बालबोध हो– जे प्रबन्ध हो
सम्पादन, अनुवाद-काज बरु जे वर्गक हो
भनहि शुष्क हो, अहँक कलम चढ़ि मधु-वर्षक हो

लेखनमे उत्कर्ष प्रमाणित भेल दोबारा
अकादमी सम्मान-स्नात छी दूनू धारा
पाथर धरि पसिझैछ अहँक साहित्य-आगिसँ
धरतीमाता धन्य भेल छथि अहँक लागिसँ

सहस-सहस शिष्योपशिष्य गुण अहँक बखानय
पाण्डित्यक प्रतिमान अहाँ छी– सभ से मानय
आब विश्वविद्यालय-सेवासँ निवृत्त छी
किन्तु विश्व विद्या-सेवामे दत्तचित्त छी

रामदेव ! आराम देब नहि जानल तनकेँ
ज्ञान-आम-रस बँटबेमे झोँकल जीवनकेँ
आर अहाँकेँ एखन बहुत बाँटब अछि बाँकी
रहथु देखबिते माय मैथिली रामक झाँकी

●

Scanned by CamScanner

करत जगत अभिनन्दन

श्रीमैथिलीपुत्र **'प्रदीप'**

विद्वद्वर श्रीरामदेव बाबूक विषय किछु लीखी ?
हमरा तँ मन होइत रहइए साधकसँ किछु सीखी ।।
रहथु सदा अतिशय प्रसन्न मन सत्पुरुषक हो सेवा ।
सेवाभाव रहत जँ सदिखन प्राप्त होयत विभु मेवा ।।

डा. झा रहलाह निरन्तर जे ँ ई अध्यवसायी ।
प्राप्त कयल प्राध्यापन सेवा, छात्र बनल अनुयायी ।।
बहुत कथा, कविता, अनुवादक लागल पैघ पथार ।
सार्थक जीवन रहत सदा जँ सन्मार्गक आधार ।।

हमरे जकाँ साधारण शाण्डिल्य गोत्र सदनमे लेलनि जन्म ।
नित विद्याव्यवसायी रहला तेँ हुनि जीवन धन्य ।।
अकादमी धरि पहुँचि गेला जे ँ ब्रह्माणिक वरदान ।
मा वाणीक कृपासँ निश्चय होइछ व्यक्ति महान ।।

मानव जीवन बहुत अकिञ्चन, सत्य मात्र परमेश्वर ।
ईश भजनमे जँ मन लागत, सफल होयत तन नश्वर ।।
तुच्छ प्रतिष्ठा क्षण भंगुर थिक, जग जननिक हो वन्दन ।
मानव तन जँ सार्थक होयत, करत जगत अभिनन्दन ।।

प्रतिभा जे पाथेय बनल अछि, देलनि अम्ब भवानी ।
भ्रमण करी जँ भक्ति मार्गपर निश्चय हुनका जानी ।।
तुच्छ मान-सम्मान प्राप्त कऽ नहि हो सुपथ समीप ।
जननि स्नेह सहयोग प्राप्त कऽ जगमग ज्योति **प्रदीप** ।।

●

Scanned by CamScanner

डा. श्रीरामदेवझाक प्रति

श्रीफजलुर रहमान 'हाशमी'

बड़ उदार आ अति महान
मैथिलीक उद्‌भट विद्वान
जे लिखलनि ओ भेल प्रशंसित
मातृभाखी मस्तिष्कमे अंकित
मैथिलीकेर उत्थानक खातिर
मोनकेँ राखल सदा प्रफुल्लित
यादगार अछि "मनुसन्तान"
बड़ उदार आ अति महान
"इजोतीरानी" आ "धरतीमाता"
देखू "मैथिली भाषा सरिता"
"पसिझैत पाथर" सनि जे रचना
मिथिला संस्कृतिक साकार प्रतिमा
भाखाकेँ देलनि नव प्राण
बड़ उदार आ अतिमहान
"उमापति"-"जनार्दन जनसीदन"
श्रद्धांजलि कयलनि अर्पण
आ अपन सूक्ष्म दृष्टिसँ
ओहिमे देलनि नवजीवन
"पृथ्वीपरिचय"-"जीव विज्ञान"
बड़ उदार आ अति महान
रचनामे अजस्र प्रवाह
जे पढ़लक से कयलक वाह
भाव-विचार दुनू अथाह
"गीतमंजरी"-"हरगौरी विवाह"
"मिथिलामिहिर", 'वैदेही'क शान
रामदेव झा अति महान



Scanned by CamScanner

गुरवे समर्पितम्

डा. श्रीदेवकान्तमिश्र

जनिकर देल सुशिक्षासँ
भऽ धन्य आइ उन्नत अछि माथ ।
ताहि गुरुक पद-पद्म चढ़ाबी
काव्य-पुष्प, भऽ परम सनाथ ।।

एखनहुँ कान बीच टपकै अछि
स्नेह-सिक्त ओ कोमल बोल ।
केहनो गूढ़ विषय सोझराबथि
बुझा देथि फरिछाय भुगोल ।।

कौखन क्रोधक लेश न देखल,
सतत् सिनेहक भाव बँटैत ।
दुख बुझि दुखी बनथि झट श्रीमन्
कष्ट निवारण सकल करैत ।।

माता-मैथिलीक हित चिन्तन,
ताही लै सदि काल बेहाल ।
पाबि जनिक आशिष कत भऽ गेल
हमरा सन-सन शिष्य नेहाल ।।

सर्जक गद्य-पद्य दुनू केर
एक समान सिनेह रखौत ।
तदपि गद्य-काननमे विचरण
ताहीमे सुख बेस पबैत ।।

विविध विधामे लीखल कतिपय
ग्रन्थ, जकर चर्चा सब ठाम ।
माइक भाषा धन्य भेल अछि
रचना नव-नव पाबि ललाम ।।

आइ तनिक अभिनन्दन-वन्दन
केर वेलामे होइछ भान ।
कर्मशील जे बनय जगतमे
तकर होइत अछि एहिना गान ।।



Scanned by CamScanner

प्रेरक नवल उदार

डा. श्रीजयप्रकाशचौधरी 'जनक'

मानल लोक अहाँ मिथिलामे, अनुपम प्रतिभावान्
नत अवनत शिष्योपशिष्य कण-कणमे पटु विद्वान्,
नीरक्षीर विवेचनमय, अध्यापन सुगम सुबोध
यश पसरल सम्पूर्ण राष्ट्रमे, शब्द न सुनल विरोध
गुणक अहाँ रस सागर रहितो सरल सहज व्यवहार
रुचि अभिरुचि प्राचीनक रहितो, प्रेरक नवल उदार
वसुधामे **पसिझैत पाथर**क अहीं व्यथा बुझि लेल
रमि साहित्य अकादमीक ओ स्वर्ण मुकुट बनि गेल
राखल ताकि पुरुष बीजी, हम एक **मनुक सन्तान**
मन-मन बाँटल फाँक तीन सब, खीरा एक प्रमाण
देल गद्य आ पद्य नाट्यकेँ एक रंग सम्मान
वशीभूत कऽ बहुल विधाकेँ, पुरातत्त्व दिश ध्यान
बाजल बात अहाँ नहि बाजी, नवल कथ्य नव तथ्य
बूझल अनबूझल अन्वेषी, ताकि-ताकि चिर सत्य
कबुला कैल कबिलपुर वसुधा, वरद पुत्र अवतार
चमकाओल साहित्य मूर्त्ति, दऽ आभूषण उपहार
रचलहुँ **पार्वती परिणय**, पुनि हरगौरीक विवाह
नर पुंगव पद काव्य कुसुम लऽ अर्चनटा निर्वाह
कलमक धनिक रहैत, कैल नहि, सपनो परअपकार
मधुर मृदुल मन वचन कर्ममे, समदर्शी साकार
लचरल शैव उबारल, कौलिक-मौलिक शाक्त रहैत
मेरुदण्ड बनि रही महाशय, स्नेह दुलार बँटैत

●

Scanned by CamScanner

कुसुमाञ्जलि

डा. श्रीनरेशकुमार 'विकल'

श्रील-राम रघुनन्दन जहिना अमृत-घट छिलकओलनि
पाबि अहाँ सन सुत वैदेही वंचित सुख सभ पओलनि ।
अहाँसँ पूरित भेल प्रतीक्षित जन-जन केर अभिलाषा
पूजित भेल अहींक प्रयाससँ अप्पन माइक भाषा ।
अहाँसँ उन्नत भाल मैथिली केर, मुदित मिथिला अछि
शाश्वत सिरजनहार पाबि कऽ प्रफुल्लित मिथिला अछि ।
कथा, काव्य की शोध, समीक्षा सबहक सब अछि भास्वर
नाट्यकृति मे सेहो औअल अहाँक **पसिझैत पाथर** ।
अंगरेजीफूलक चिट्ठी अछि बाँचि रहल जहियासँ
बहिनाक विरोगमे बैसलि बहिना बाट तकै तहियासँ ।
एक्के खीराः तीन फाँक भऽ बिलहल चओर-चाँचर धरि
धरती माता आब कुहरि कऽ रहती ने आँचर धरि ।
जेना **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** तहिना **मनुक सन्तान**
इजोतीरानी फुदकि रहलि छथि पाबि मान-सम्मान ।
मुदा आब की ? एतबेपर ने छै ककरो सन्तोख
'बत्तीसे टा कृति' कहतै कोना केओ भरि पोख ।
लाबा-दुआमे पत्र-पत्रिका केर कुशल सम्पादन
पुरना खाढ़िक कृति सभकेँ कयल सदति अवगाहन ।
मैथिलीक उपवनकेँ एहिना रहियौ कयने इजोत
किन्नहु देब सुखाय ने कहियो सुर-सरिता केर स्रोत ।
शान्ति, सरलता, सौम्य-स्नेह आननपर चमकैए
मैथिलीक आङन केर कुसुमित पारिजात गमकैए ।
झाड़ि-ओसा कऽ कहलहुँ ककरो ठाँहि-पठाँहि मुँहेपर
छल-कपट ने भीतर कनिको ने ऊपर धुयेपर ।
एहेन अक्षरपुरुष-तपस्वी केर शत्-शत् अभिनन्दन
चरण युगलपर अर्पित थिक ई अक्षत-चन्दन-वन्दन ।

●

Scanned by CamScanner

पथ हो अहँक प्रशस्त

डा. श्रीयोगानन्दझा

कविता-कथा-नाट्य-आलोचन विविध विधामे दक्ष ।
महामनीषी मैथिलीक छथि प्रेरक, श्रेष्ठ, समक्ष ।।

श्रीसम्पन्न प्रसन्न सदा छथि, गुण गरिमा हिमवान ।
राखि ज्ञान कर दीप प्रज्ज्वलित भाषा केर सम्मान ।।

महिमा जनिक जानि सकइत छथि, कला ज्ञान विज्ञानी ।
देवतुल्य संस्कृति संरक्षक, लेखनीक जे प्राणी ।।

झाड़ि झोल आनल पुरना कृति जोड़ि नेपालक नाता ।
के जनैछ नहि जनिक सृष्टिसँ पुलकित **धरती माता** ।।

साञ्जलि अर्पित कैल राष्ट्रकेँ, रचि **पाथर पसिझैत** ।
दय नव-नव कृति रहथु सदा ई हृदय सभक जुड़बैत ।।

रहय कीर्त्ति अक्षय भारत भरि, बढ़ओ मैथिलिक मान ।
महामंगला आशिषसँ हो, अमर **मनुक सन्तान** ।।

अभिनन्दन-वन्दन स्वीकारी, अछि नत स्वजन समस्त ।
वरद पुत्र मिथिलाक ! मनस्वी ! पथ हो अहँक प्रशस्त ।।

●

Scanned by CamScanner

मिथिलाकेर छी स्वाभिमान

–श्रीशशिबोधमिश्र 'शशि'

श्री रामदेव केर पुण्य प्रसूता अवनि कबिलपुर उठल भाल,
साहित्य सरोवर पुलिन बीच बिचरैत सदा छथि ओ मराल;
विख्यात भेल अज्ञात गाम, यश कीर्त्तिक निधिसँ बनि नेहाल,
अनुप्राणित प्रेरित कयल अहाँ अछि लागल आइ ज्ञान-टाल ।।

राजित छी अपने ज्ञान पुंजसँ मिथिला केर छी स्वाभिमान,
कथा, नाट्यसाहित्यक रचनामे उत्तम मानल अवदान;
साहित्य-समीक्षा, सम्पादनमे फूटल प्रतिभा अछि महान्
अनुसन्धानक सङ सम्पादन, अनुवादहु सभ प्रवहमान ।।

मकरन्द अहाँ सुरभित फूलक उधिआइत नगरसँ गाम-गाम,
घ्राणक रन्ध्र मुदित भऽ नाचय प्रांजल भाषा सगरे ठाम;
पत्रकारिता सफल अहाँ केर धारावाहिक कथा ललाम,
सम सम्पादन, गीतक संचयमे अभरल प्रतिभा अभिराम ।।

देसिल वयना महिमान्वित जे अहूँक साधना कारण,
भेली अलंकृत आब मैथिली संविधान कएलक धारण;
भाषा आन्दोलनमे साहस, धैर्यक छल अनुशासन,
पूर भेलै मनसाध्य मैथिलक केवल लेखन छल साधन ।।

वत्सल छी शिष्यक अध्यापनमे, अन्वेषणमे, निर्देशनमे,
आदर्शक उत्कर्ष अहाँ अत्यन्त कुलिश अनुशासनमे;
चारित्रिक निर्माणक शिल्पी, सिद्धान्तक अनुपालनमे,
पसिझैत पाथरक सम कौखन छी अनकर कष्ट निवारणमे ।।

झाम, झूर-झमान लोकक कष्टमे उपचार छी,
निर्बलक बल वेदनामे संबलक संचार छी,
हमर अछि चिर कामना जे शरद शत तक अहाँ जीबी,
चिर नवीना लेखनीसँ और किछु दी, और किछु दी ।।



Scanned by CamScanner

आचार्य-प्रवर श्रीरामदेवझा

-डा. श्रीविद्याधरमिश्र

काया सीटल सात फीट केर तेहने सीटल वाणी
साफ बात कहताह मुहेँ पर मानी वा नहि मानी

गढ़ल कथासब तेहन-तेहन जे पाछू काल भिजै छै
पढ़निहारकेँ अप्पन अनुभव सोझाँ आबि नचै छै

अपना बाड़िक साग जकाँ अनुपम आ परम चहटगर
नवका घैलक पानि जकाँ पीबामे लागय सोन्हगर

कथा, नाट्य आ अनुसन्धानक तेहन लगौल संचार
स्वादो अद्‌भुत, अद्‌भुत चिन्तनकेर करइछ सँचार

जेना रसायन-बटी कनीटा छोड़बय बड़का रोग
मितभाषी किछुओ बजता तँ बड़का अर्थक योग

मैथिलीक भाषा-आन्दोलन जतऽ लगै छल ओझर
छोट-मोट गुरुज्ञानयोग दऽ सहजे बनबथि सोझर

गढ़ल कथा आ बात सात लाखक कहि देलनि
कवियो छथि, नहि बजता तैयो सभ केओ स्वयं जनै छनि

मैथिलीक साहित्यकारमे नामक चर्चा लेब
प्रथम पंक्ति आसनपर राजथि डाक्टर **श्रीरामदेव**



Scanned by CamScanner

भावानुभूति

श्रीपरमानन्द प्रभाकर

राहित्य-भाव रहितम् शशि-हास युक्तम्
कार्पण्य-दोष विरतम् करुणार्द्र चित्तम्
सम्रूप-भाव रुचिरम् पथ-पथ्य-दर्शकम्
श्रीरामदेवम् शिरसा नमामि ।।

मन्दाग्नि-दोष रहितम् बुध-वन्दनीयम्
भावाभिव्यक्ति कुशलम् परिहास दक्षम्
पैशून्य-दोष-मुक्तम् कवि-कर्मलीनम्
श्रीरामदेवम् शिरसा नमामि ।।

देहाभिमान विरतम् व्यवहार विज्ञम्
विज्ञान-ज्ञान-सकलासु-कलासु निपुणम्
अध्यात्म-भाव शुचितम् मिथिलावतंशम्
श्रीरामदेवम् शिरसा नमामि ।।

वक्तृत्व-शक्ति परिमार्जित माननीयम्
विद्या प्रभाव नमितम् श्रुतिशास्त्र रमणम्
शान्तस्वभाव-युक्तम् लब्ध प्रतिष्ठम्
श्रीरामदेवम् शिरसा नमामि ।।

झोपाख्ययुक्तम् द्विजवंश रत्नम्
कविता-कथा-सृजन-वाचन दत्तचित्तम्
दौर्बल्य-दोष रहितम् खलु-अद्वितीयम्
श्रीरामदेवम् शिरसा नमामि ।।

●

Scanned by CamScanner

हम जे कन्यादान कयल

श्रीचन्द्रनाथमिश्र‘अमर’

पहिने संक्षेपमे अपन वस्तुस्थितिपर प्रकाश दऽ दी जे हमर एक एहन संस्कृतक अध्यापकक पुत्र रूपसे जन्म भेल जनिका अध्यापन आ अध्यात्म एही दूटा विषयसँ अनुराग छलनि । एहिसँ अतिरिक्त जे संसार ताहिसँ जीवन-यापन मात्र धरि सम्बन्ध । से अत्यन्त बाल्य कालसँ गुरु-शिष्यक जे एक आदर्शपूर्ण संसार ताहिसँ सर्वथा प्रभावित हमर छात्र जीवन रहल ।

दोसर स्थिति ई भेल जे हम पाँच सोदर भाय जाहिमे तीन गोटेक अवसान अल्प वयसेमे भऽ गेलाक कारणेँ हमर पिता पं. मुक्तिनाथमिश्र पुत्रशोकक असहनीय पीड़ासँ मर्माहत रहलाक कारणेँ संसारसँ और अधिक नि:स्पृह भऽ गेल छलाह ।

तेसर स्थिति ई जे 1907 इ.मे महारानी रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालयक स्थापनाक दिनहिसँ मिथिलेश रमेश्वरसिंहक आश्रयमे अयलाह आ ओही वर्षक अन्तमे महाराज कुमार कामेश्वरसिंहक जन्म भेलनि, तँ राजमाताकेँ हमरा पिताक प्रति विशेष आस्था प्रयुक्त हमर प्रवेश राजमाताक अन्त:पुर धरि निर्बाध रहल, जाहि कारणेँ बाल सुलभ मतिक अनुसार अपनाकेँ विशिष्ट लोक बुझबाक मिथ्या भ्रम बनल रहल । एक तँ पितियौतक निकट सम्बन्ध, दोसर हमर पिताक एकनिष्ठ छात्र रहलाक कारणेँ राजपण्डित बलदेवमिश्र हमर अभिभावकत्वक निर्वहन करैत रहलाह ।

एहने परिवेशमे परिपालित हमरा परिस्थिति तारुण्येमे प्रौढ़ बना देने छल । परिणामत: बीसमे वर्षक अवस्थामे सरसरायल आचार्य परीक्षोत्तीर्ण होइत बाल्यकालक भ्रान्ति दूर भऽ गेल आ भविष्यक चिन्ता आक्रान्त करऽ लागल । मैथिलीक अनुकम्पा छलनि जे पिताक जे आजीविका छलनि तदनुरूपे अध्यापन वृत्ति सहज रूपेँ प्राप्त भऽ गेल । पिताक आदर्श सम्मुख छले, गुरु-शिष्यक जेहन सम्बन्ध हुनक छलनि, ओही परम्पराक पालन करैत हमरो शिष्य वर्गक अजस्र श्रद्धा प्राप्त होइत रहल । छलहुँ तँ हाइ स्कूलमे, संस्कृत पढ़यबाक सुयोग तँ बहुत दिनक बाद भेटल, मुख्यत: मैथिली आ हिन्दी व्याकरणे पढ़बऽ पड़ैत छल तथापि छात्रक मध्य पण्डितजीक नामेँ सम्बोधित होइत छलहुँ संगहि संस्कृत विद्यालयक परम्परानुसार जतऽ अन्यान्य शिक्षक लोकनिकेँ छात्र समुदाय हाथ जोड़ि प्रणाम सर !' कहि अभिवादन करैत छलनि ततऽ हमरा पैर छूबि प्रणाम करैत छल । एकर कारण हमरा जनैत ई छल जे मातृभाषामे छात्रक संग हमरेटा संवाद होइत छल तेँ सब हमरा आत्मीय लोक बुझैत छल होयत ।

जे हृदयसँ शिक्षक होइत छथि तनिका तेजस्वी तथा अनुशासनप्रिय छात्रक प्रति स्वभावत: आकर्षण किछु विशेष रहैत छनि । एहने तेजस्वी ओ अनुशासनप्रिय छात्र सबमे एक छात्र कबिलपुर ग्रामवासी कपिलेश्वरझाक जेठ पुत्र श्रीरामदेवझा प्राय: अष्टम वर्गमे नामांकन करौलनि । परिवार सम्पन्न तँ नहि किन्तु तेहन विपन्नो नहि तथापि पिता चिर रोगी, जे किछु थोड़-बहुत भू-सम्पत्ति तकरो देख-भाल करबाक, पिताक औषधि-बाड़ीक व्यवस्था करबाक दायित्व सेहो एही किशोरपर, तेँ किछु अर्थक उपार्जन करबाक चिन्ता सेहो रहनि ।

ई प्रवेशिका परीक्षामे गणितक बदला जीवविज्ञान विषय रखने रहथि । एम्.एल्. एकेडमीमे हम छठमे वर्गसँ मातृभाषा पत्रमे मैथिली पढ़बाक व्यवस्था करबा चुकल रही । नव छात्र जे नामांकन कराबथि तनिका हिन्दीक अध्यापक अपन वाग्जालमे फँसाय मातृभाषा पत्रोमे हिन्दीए पढ़बाक दुराग्रह करथिन । हमरा ओहि स्पर्द्धामे सजग रहऽ पड़य ।

Scanned by CamScanner

प्रसंगत: एकर उल्लेख कऽ दी जे जखन मैथिलीक सुप्रसिद्ध कथाकार जे कथा विधामे साहित्य अकादेमी पुरस्कार सेहो प्राप्त कयलनि, जे आब इतिहास पुरुष भऽ गेल छथि से प्रभासकुमारचौधरी दशम वर्गमे पिण्डारुच स्कूलसँ आबि एम्.एल्.एकेडमीमे नाम लिखौलनि तँ दशम वर्ग धरि हिन्दीक अध्यापकक वाग्जालमे फँसि गेलाह किन्तु एकादश वर्गमे आबि मोह भंग भेलनि तँ मैथिली पढ़ऽ लगलाह ।

श्रीरामदेवझा प्राय: आठमे वर्गसँ मैथिली पढ़ैत रहथि । रहथि तँ ई विज्ञानक छात्र किन्तु हिनकामे साहित्यिक रुचि आदिएसँ परिलक्षित भेल । हिनका रचनात्मक प्रवृत्तिकेँ उभारबाक लेल प्राय 1953 इ. मे हिनक एकटा कथा मिथिलामिहिरमे प्रकाशित कराओल । तकर बाद तँ ई मैथिलीक समर्पित कार्यकर्त्ता भऽ गेलाह । फलत: छात्रावस्थेमे मैथिलीक महान साहित्यकार सभ यथा सुमनजी, मधुपजी, किरणजी आदिसँ सुपरिचित भऽ गेलाह । 1955मे जखन हम जिला परिषदक तत्कालीन अध्यक्ष मिथिलाकेसरी बाबू जानकीनन्दनसिंह द्वारा संचालित हिन्दी साप्ताहिक 'निर्माण'क सम्पादन करऽ लगलहुँ तँ अपन पारिश्रमिक रूपमे ओहि पत्रिकामे चारि पृष्ठ 'मातृभाषाक पृष्ठ' क रूपमे जोड़बाओल । ओहिमे 'सपूत' नामसँ ई अव्याहत लिखऽ लगलाह । ततबे नहि, जखन पहिल खेप 1955 मे आचार्य सुमन दैनिक 'स्वदेश'क प्रकाशन आरम्भ कयलनि तँ एक सय प्रति ई नित्य तकर वितरणमे सहयोग करऽ लगलाह । एतऽ ईहो उल्लेख कऽ देब अप्रासंगिक नहि होयत जे अपने पढ़ब, पिताक रुग्णताक संग गृहस्थीक चिन्ता राखब, ट्यूशन पढ़ाय किछु अर्थोपार्जन करब, ताहि परसँ साहित्यिक-सामाजिक कार्यमे सहयोग करब, तथापि आठमसँ एगारहम कक्षा धरिक अध्ययन कालमे ई वर्गसँ एको दिन अनुपस्थित नहि रहलाह, जाहि हेतु स्कूलक वार्षिकोत्सवमे पं. हरिनाथमिश्रक हाथेँ पुरस्कार प्राप्त कयलनि । हमरा बुझना जाइछ जे एहन उदाहरण दोसर तकलो उत्तर भेटब दुर्लभ अछि । अपन कर्त्तव्यक प्रति एहने सजगताक फलस्वरूप अन्त-अन्त धरि प्रवेशिकासँ स्नातकोत्तर परीक्षा धरि प्रथम श्रेणी ओ स्नातक प्रतिष्ठा तथा स्नातकोत्तर परीक्षा, दुनूमे विश्वविद्यालय द्वारा स्वर्णपदकसँ पुरस्कृत होइत रहलाह ।

ई तँ भेल पूर्वपीठिका प्रकृत विषय एना अछि :-

कविचूड़ामणि मधुपजीकेँ कन्यादान छलनि । 1955मे जखन प्रवेशिका परीक्षामे उत्तम अंक प्राप्त कऽ प्रथम श्रेणीमे ई उत्तीर्ण भेलाह तँ एक रवि कऽ मधुपजी हमरा डेरापर पूर्वाह्नेमे पहुँचलाह । ओहि समय हमर डेरा शाहगंज, लहेरियासरायमे छल । हमर माय हमरा संगहि रहैत छलीह । हम सन्ध्यावन्दन करैत रही से सम्पन्न कऽ आदरणीय मधुपजीसँ अकस्मात् अयबाक प्रयोजन पुछलापर कहलनि-हमरा कन्यादान अछि आ अहाँक कबिलपुरक विद्यार्थी बड़ तेजस्वी छथि । ई काज हमरा करा दी तँ अयलहुँ ।

हम मायकेँ मधुपोजीक भोजनक व्यवस्था करबाक हेतु कहैत एक घंटामे अबैत छी से कहि विदा भऽ गेलहुँ । कबिलपुर जा जखन हिनका पिताक समक्ष मधुपजीक ख्याति, सुयश, प्रतिष्ठा आदिक विस्तारसँ वर्णन करैत प्रस्ताव उपस्थित करौलियनि तँ हिनक पिता उत्तरमे कहलनि-पण्डितजी, हम हिनकर जन्मदाता मात्र छियनि, हम हिनक पालन-पोषण की करबनि, उनटे हमरो चिन्ता हिनके करऽ पड़ैत छनि । हमर स्थिति देखिते छी । हम हिनक धर्मक पिता अपनहिकेँ मानैत छी । हमर इच्छा अछि जे बी.ए. पास करबासँ पहिने हिनक विवाह नहि करबियनि ।

हम कहलियनि-अपनेक ई जर्जर अवस्था देखि मनमे भेल जे अपना अछैत हिनक विवाह करा देबाक इच्छा जँ अपनेक हो तँ मधुपजी सन विशिष्ट व्यक्तिसँ सम्बन्ध....।'

ओ बीचेमे टोक दैत कहलनि-हमर सौभाग्य होइत, मुदा एक अपाहिज हम हिनका कपारपर छियनिहेँ, दोसर विवाह कराय गराँमे ढोल लटका दियनि एहन सेहन्ता रखनिहार पिता हम नहि । तँ हम रही वा नहि रही, बी.ए. पास करबासँ पहिने विवाह नहि होइनि ताहीमे कल्याण छनि ।'

मधुपजी हुनक विचार सुनि मुग्ध भऽ गेलाह बारहसँ ऊपर समय भऽ गेल छलैक । कहलनि-चलू ।'

Scanned by CamScanner

घूरि कऽ डेरा अयलहुँ । माय कहलनि- कतऽ चल गेलहुँ ? कोन काज छलनि हिनकर जे एतेक अबेर भऽ गेल ?'

कहलियनि-पहिने भोजन करा दिअऽ, बादमे सब वृत्तान्त कहब ।' भोजनादि करैत अढ़ाय बाजि गेल । मधुपजी कँ तीन बजे बस छलनि तँ भोजन कऽ तुरन्त बिदा भऽ गेलाह । तखन मायकँ विस्तारपूर्वक सब वृत्तान्त सुना देलियनि । सब बात सुनि माय कहलनि-ई कथा अपने किएक ने करब ? रामदेवकँ बी.ए. पास करबामे एखन चारि वर्ष लगतनि, तावत अपनो कन्यादान करबाक योग्य भऽ जायत । एखन गरीब छैक तँ छैक । एहन होनहार लोक अपने उपार्जनसँ द्ररिद्राकँ झोंट पकड़ि घरक सिमानसँ दूर फेकि औतैक ।'

समय चक्र बदललै । ईहो डाक्टर बनबाक चिन्तन छोड़ि मैथिलीए आगाँ पढ़बाक निर्णय लेलनि । ताहि कारणँ हमर सम्पर्क पूर्ववत् बनल रहल । 1956 क 30 नवम्बरकँ हिनक पिताक देहान्त भऽ गेलनि । आर्थिक दृष्टिएँ हमरो स्थिति 'लूटि लाउ कूटि खाउ' तेहने सन छल, तँ धन तँ नहि, मुदा तन ओ मनसँ जहाँ धरि भेल श्राद्धमे ठाढ़ रहि सकलियनि । हमर-हिनक शिक्षक-छात्रक सम्बन्ध दृढ़तरे होइत गेल । दुर्योग एहन भेल जे 1957 क दिसम्बर, पूस कृष्ण चतुर्थीकँ हमरा मायक देहान्त भऽ गेलनि । ताबत हम मिश्रटोलामे ओही वर्ष श्रावण शुक्ल सप्तमीकँ एकटा फूसक बंगलानुमा घर बना लेने छलहुँ ताहीमे हमर माय दिवंगता भेलीह । हुनक दाह-कर्म दरभंगा तथा श्राद्ध खोजपुर जाय कयलियनि । ई दाहकर्मसँ श्राद्ध धरि खोजपुर जाय हमर सहयोगमे तत्पर रहलाह । सामाजिक परिवर्त्तन ताहि तीव्र गति सँ भऽ रहल छलैक जे हिनका संग दोसर छात्र रामनाथ यदि दरभंगासँ नहि गेल रहितथि तँ ने जानि कोन प्रकारक पराभवमे पड़ि जइतहुँ ।

प्रसंगत: माता-पिताक मुँहक सुनल अपन सबसँ ज्येष्ठ भाय गणेशमिश्रक उपनयनमे भेल घटनांक उल्लेख कऽ दी । हमर जन्मो नहि भेल छल । हमर पिता नवघरिया रहथि खोजपुरमे । एक प्रकारँ नि:स्व रहथि । तथापि पाँच गोट महामहोपाध्यायकेँ गुणीक रूपमे आमन्त्रित कयने रहथिन । महाराजाधिराज रमेश्वरसिंहक अनुकम्पासँ राजनगरसँ सहाय्य रूपमे ततवा राउटी आ टेंट, सामियानाक सहयोग भेटलनि जे आवासक सब सुन्दर व्यवस्था भऽ गेलनि । गामक समाज पूर्ण सहयोग नहि कयलकनि, किन्तु 18-20 गोट छात्र दरभंगासँ गेल छलथिन । पानिसँ लऽ पात फेकबा धरिक काजमे कोनो विथूति नहि होअऽ देलथिन । गामक प्रमुख लोक नन्दीझा गामक लोककँ बजाय सहमत कयलथिन तँ उपनयन दिनक निमन्त्रण गौआँ सब स्वीकार कयलथिन । हमरा तँ यैह दू गोटे छात्र पंथक पाकड़ि भेलाह ।

1959 मे ई बी.ए. प्रतिष्ठामे स्वर्णपदक प्राप्त कऽ उत्तीर्ण भेलाह । हमरो कन्यादान कर्त्तव्य छल । हमरा हिनक पिताक कहल बात स्मरण भऽ आयल, संगहि माय जे इच्छा व्यक्त कयने रहथि सेहो स्मरण रहय । परन्तु प्रश्न ई छल जे एहि कथाक उपस्थापन ककरा लग कयल जाय? पितृविहीन बालकक अभिभावक जेठ भाय अथवा माय भऽ सकैत छैक, किन्तु भैयारीमे ई स्वयं जेठ छथि, स्त्रीगण समक्ष पहुँच दुरूह, विषयक गोपनीयता परम आवश्यक । मौखिक रूपमे साक्षात कहबामे परम तारतम्य । बुद्धि किछु काज नहि करय ।

अन्तत: दुस्साहस कऽ एक विस्तृत पत्र लिखि हम हिनकेसँ सूत्र तकबाक उपक्रम कयल । ने जानि ओ पत्र पढ़ि हिनकापर की प्रतिक्रिया भेलनि, परन्तु हमरा सूत्र पकड़ा देलनि । हिनक एक गोट ममियौत बहिनक विवाह कबिलपुरेक बेस प्रभावशाली सामाजिक कार्यकर्त्ता परमेश्वरझासँ जे भूतपूर्व मुखिया रहथि आ मुखियेजी नामसँ सम्बोधित होइत छलाह । हमरा हुनकासँ सामाजिक स्तरपर पूर्ण परिचय, परिचये नहि, अपेक्षो रहय । गत दस वर्षक अध्यापनक अवधिमे मैथिलीमे छात्रक संख्यामे वृद्धि हेतु हम मैथिली साहित्य परिषद्‌क दिससँ एक परिपत्र छपवाय गाम-गाम जाय अभिभावक लोकनिसँ सम्पर्क कऽ हुनका लोकनिसँ हस्ताक्षर कराबी । मुखियाजी ताहि काजमे पूर्ण सहयोग करथि । हम आश्वस्त भऽ मुखियाजीकेँ अपन मनक बात कहलियनि । पहिने ओ चकित-विस्मित होइत कनेक काल तकैत रहलाह आ तखन पुछलनि- अपने जयवारमे सम्बन्ध करबै ?'

Scanned by CamScanner

हम कहलियनि-हम ब्राह्मण समाजमे भेल एहन कृत्रिम विभाजनक पक्षमे नहि छी । जाहि सदाचारक आधारपर कहिओ ई विभाजन भेल रहैक ताहि सदाचारक पालन कतेक सोति-योग-पंजिबद्ध लोकनि कऽ रहल छथि ? यद्यपि एहिसँ पूर्व हमरा उतेढ़मे कतहु जयवारसँ सम्बन्धक अभिलेख नहि भेटैत अछि, तथापि हम एकरा तोड़बाक लेल प्रस्तुत छी ।'

मुखियाजी हमरा आश्वस्त करैत कहलनि-हिनको एहिसँ उत्तम कथा कोन भऽ सकैत छनि ? मुदा दूनू पक्षक भार अपनहिकेँ उठाबऽ पड़त ।' हम यथाशक्ति दूभिधान लऽ ई काज करबाक वचन देलियनि । ई बात कमसँ कम कान धरि जाय, कारण जे 'श्रेयांसि बहुविघ्नानि' । हम केवल चिरस्मरणीय झिंगुर कुमरकेँ कहलियनि । ओ हमरा 'पारखी'क उपाधि दैत कहलनि- अहाँ बड़ पारखी लोक छी । बहुत उत्तम निर्णय लेलहुँ अछि ।' परम आत्मीय भाव रखनिहार सुमनजी पर्यन्तकेँ कन्यादानक दिन सूचना देलियनि ।

प्रसंगत: एकरो उल्लेख अप्रासंगिक नहि होयत जे हमर अभिभावक राजपण्डित बलदेवमिश्र रहथि । ओ सुमनोजीक अभिभावके छलथिन । कन्यादानेक प्रकरणमे एक दिन सुमनजी हमरा डेरापर आयल रहथि । ताही कालमे हिनका राजपण्डितजीक बजाहटि भेलनि । एतऽसँ डेरा पहुँचलापर ज्ञात भेलनि तँ उनटे पैरे ओतऽ चल गेलाह । वार्त्तालापक क्रममे एहि कन्यादानक चर्चा कयलथिन । राजपण्डितजी क्षुब्ध होइत कहलथिन-एँ चन्द्रनाथ कन्यादान कऽ लेलनि आ एकबेर पुछबोटा नहि कयलनि !, सुमनजीकेँ सेहो एहन अनुमान नहि छलनि । हमरासँ बादमे भेट भेलापर सुमनजी जिज्ञासा कयलनि-पण्डितजीकेँ नहि पुछने छलियनि ?'

हम उत्तरमे सम्पूर्ण वस्तुस्थितिक विवरण दैत कहलियनि— एहि बालकक प्रति एक तरहेँ मायक अनुमति भेटि चुकल अछि । बड़का भाइ अर्थात् राजपण्डितजी पहिने उतेढ़ देखितथिन तकर बाद वर गुणपर विचार करितथि । उतेढ़ देखि जँ निषेधात्मक भाव व्यक्त करितथि तँ हम धर्मसंकटमे पड़ि जइतहुँ ।

1959 मे हम कन्यादान कयल आ ओही वर्ष अजमेरमे मैथिल महासभाक अधिवेशन भेलैक । ई एम्.ए.मे पढ़बा लय पटना चल गेल छलाह । राजदरभंगाक प्रतिनिधिक रूपमे विषय-निर्धारिणी समितिक हेतु किछु सदस्य मनोनीत कयल जाथि । से करैत छलथिन सचिव रायबहादुर शिवशंकरझा । ओना रायबहादुर, राजपण्डितजीक सार रहथिन, दोसर हम अपनहुँ अड़ाइडंगा (मालदह) अधिवेशन (1951) सँ उक्त समितिमे मनोनीत होइत छलहुँ तँ रायबहादुरसँ घनिष्ठता छले, तथापि जेना शतरंजमे कोनो पात्रक जोरपर खेलाड़ी प्यादाकेँ आगाँ बढ़बैत अछि तहिना सुमनजीक जोरपर हिनकर तथा सुधांशुशेखरचौधरीक हेतु पैरवी लगाओल जाहिमे सफल भेलहुँ ।

ध्यातव्य जे मैथिल महासभाक ओही अधिवेशनमे दरभंगासँ प्रकाशित मिथिला मिहिर पैंतालिस वर्ष धरि चलि 1954मे बन्द भऽ गेल छल, तकर पुन: प्रकाशन हेतु प्रवासी मैथिल लोकनिक प्रस्तावक पक्षमे हम महाराजक समक्ष ओकालति कयने रहियनि आ 1960 क 10 सितम्बरसँ पटनासँ 'मिहिर' क प्रकाशन आरम्भ भऽ सकल छल । एहि घटनाक साक्षी आब यैह मात्र रहलाह अछि । हँऽ लिखित रूपमे प. गिरीन्द्रमोहनमिश्र अपन 'किछु देखल : किछु सुनल' नामक ग्रन्थमे एकर उल्लेख कयने छथि ।

हिनका तथा शेखरजीकेँ संग लऽ जयबाक उद्देश्य ई छल जे राजपण्डितजीकेँ एहि दूनू व्यक्तिक मेधा ओ प्रतिभाक आभास भऽ सकनि जाहिसँ हमरा प्रति भेल आक्रोश दूर भऽ सकनि आ शेखरजीकेँ मिथिला मिहिरक सम्पादकक पदपर प्रतिष्ठापित करयबामे बल भेटय । ई दूनू उद्देश्य फलीभूत भेल । ओहि यात्रामे संग रहलाक कारणेँ हिनक शील, स्वभाव, विनयशीलतासँ सन्तुष्ट भेलाह से एहि द्वारेँ बुझबामे आयल जे हमरासँ एहि प्रसंग कहियो चर्चा नहि कयलनि तथा शेखरजीक पदस्थापनामे अपन सहमति व्यक्त कयने छलथिन ।

जीव विज्ञान विषय लऽ प्रवेशिकामे प्रवेश करबाक इच्छामे निश्चित रूपेँ शरीर विज्ञान पढ़ि डाक्टर होयबाक

Scanned by CamScanner

उद्देश्य निहित रहिते छैक । ईहो जीव विज्ञान पढ़ैत छलाह । घरे लग मेडिकल कॉलेज छलनि, घरोसँ खा कऽ पढि सकैत छलाह, किन्तु से छोड़ि साहित्य दिस उन्मुख भेलाह तथा एहिमे अपनेटा डाक्टर नहि भेलाह अपितु अपना निर्देशन दर्जनो छात्रकेँ डाक्टर बनयबाये कृतकार्य भेलाह ।

एकटा घटना आरो मन पड़ैत अछि । हिनके कुल-खूटमे एक परम प्रतिष्ठित ओकील छलथिन जीवछझा जे एम्.एल. एकेडमीक प्रबन्ध समितिक एक मुखर सदस्य मानल जाइत छलाह । संयोगवश श्रीरामदेवझाक अनुज श्रीबलदेव, जे हमर छात्र रहि चुकल छलाह, हुनक विवाह हम करबौलियनि ढंगा पुवारि टोलक गोवर्द्धनमिश्रक कन्यासँ । ओ हमर बहिनोय गोपालमिश्रक अनुज रहथिन । जीवछबाबू एक दिन हमरापर काकु करैत कहलनि-औ पण्डितजी अहाँ हमरा गामक वर सबकेँ ठकि-ठकि लऽ जयबामे परकि गेलहुँ अछि ।'

हम उत्तर देलियनि- ओकील साहेब, हम अपनेक गामक नस्ल सुधारमे लागल छी ।'

एहि उत्तरपर ओ क्रुद्ध भऽ गेलाह । तत्काल किछु बजलाह नहि मुदा हमर प्रधानाचार्य आदरणीय झिंगुरकुमरजीकेँ उपराग देलथिन जे- अहाँक स्कूलक मैथिलीक शिक्षक बड़ अलगटेंट छथि । हमरा उज्झट कथा कहि देलनि ।'

दोसर दिन मास्टरसाहेब हमरा कहलनि- जीबछबाबूकेँ अहाँ की कहि देलियनि ? ई बूझल नहि अछि जे ओ मैनेजिंग कमीटीक मेम्बर छथि ?' हम उत्तर देलियनि-जखन ओ मैनेजिंग कमीटीक बैसकमे रहैत छथि तखन एकर मेम्बर, जखन ओकालतिखानामे रहैत छथि तखन ओकील आ जखन अपना दलानपर रहैत छथि तखन हमर समधि रहैत छथि । हम हुनका जे किछु कहलियनि से हुनका दलानपर तँ ताहि सम्बन्धेँ कहने होयबनि ।' तकर बाद हुनका दूनू गोटेमे की गप्प भेलनि से हमरा ज्ञात नहि, मुदा एक युगक बाद, जखन ओ वार्द्धक्यक कारणेँ अशक्त भऽ गेल रहथि तखन एक दिन कबिलपुर जाइत रही तँ हुनके दलानपर दऽ बाट छलैक, ओ हाक देलनि- औ पण्डितजी, कने सुनब ।' हम साइकिलसँ उतरि सोझाँमे ठाढ़ भेलियनि तँ कहलनि-कने ऊपर नहि आयब ?' हम दलानपर गेलहुँ । ओ आश्वस्त सन भेल बजलाह- अहाँ जहिया कहने रही नस्ल सुधार कऽ रहल छी तहिया हमरा अहाँपर क्रोध-क्षोभ सब भेल छल, मुदा आब रामदेवक धीया-पूताक जे व्यवहार-बात देखै छिऐ आ बोली-वानी सुनै छिऐ तँ अहाँक कहल यथार्थ बुझना जाइत अछि ।'

दोसर एक प्रसंग अछि डा. सुधाकरझा शास्त्रीक । हुनको हमरा प्रति बड़ स्नेह भाव रहैत छलनि । हुनके निर्देशनमे ई **मैथिली शैव साहित्य**पर अनुसन्धान कऽ रहल छलाह । एक बेर भेट भेलापर कहलनि- अहाँकेँ हम बहुत साधुवाद देबऽ चाहैत छी । अनुसन्धानक जे वास्तविक रूप थिकैक नवीन क्षितिजक उदघाटन से अहाँ तेहन सुबोध छात्र देल जाहिसँ हम अपनहुकेँ गौरवान्वित अनुभव करैत छी जे एहन विशिष्ट कार्य दोसर हमरा निर्देशनमे आइ धरि नहि भेल छल, से भेल ।'

ओना अपन धीया-पूताक प्रशंसा सबकेँ नीक लगैत छैक, सब करितो अछि, परन्तु हम मिथ्या प्रशंसा नहि कऽ यथार्थ मात्रक उल्लेख कयल अछि । चिरस्मरणीय आचार्य सुमन हिनका मैथिलीक पण्डित मानैत छलथिन ।

●

Scanned by CamScanner

प्रोफेसर श्रीरामदेवझाक मैथिली सेवा

–डा. जयकान्तमिश्र

हमरा हर्ष होइत अछि जे आइ प्रो. श्रीरामदेवझाकेँ हमसब अभिनन्दन कए रहल छिअनि । आइ मिथिला–मैथिली जगतमे हुनकासँ बड्ड कम्मे लोक अपरिचित होएताह । ओ अपन समस्त समय ओ प्रतिभा लए ठाढ़ छथि । की साहित्य रचना की अनुसन्धान, आ की भाषा साहित्यक विचार एवं संवर्द्धन सभ दिशामे अनुपम कार्य कए रहल छथि । हमरा दृष्टिमे वर्त्तमान समयमे हिनकासँ उत्कर्ष कार्य करएवला मात्र दुइ–चारि विद्वान छथि । हम सभ आशीर्वाद दैत छिअनि जे एहिना ओ प्रगति करैत रहथु । दिल्लीक साहित्य अकादेमीमे जतबा दिन छलाह मैथिलीक सर्वथा कार्य कए यशस्वी भेलाह आर एखनहुँ हिनकासँ विशेष कार्य होएबाक लोक अपेक्षा करैत अछि ।

हम मात्र एकटा दिशा दिस जे ई लिखलनि ओ योगदान देलनि तकर वैज्ञानिकता ओ पूर्णताक चर्चा करब । उमापति उपाध्यायक पूर्ण परिचय बहूत दिन धरि नहि स्थिर होइत छल । किछु विद्वान हुनका 14–15 शताब्दीमे रखैत छलाह आर किछु सत्रहम शताब्दीमे । हम स्वयं बहुत परिश्रमसँ हुनक साक्ष्य तेसरे ठाम तकैत बौआइत छलहुँ । मुदा आब ककरो हुनक पूर्ण परिचय सन्दिग्ध नहि रहल । तकर सम्पूर्ण श्रेय श्रीरामदेवबाबूक निर्णायक अनुसन्धानकेँ छनि । एहि कथाकेँ ई मैथिली साहित्यक इतिहासमे एतेक सरलतापूर्वक प्राप्त करओलनि आर मकमानी राज्यक इतिहास, हरिहर नामक राजासँ समन्वय कराए सभ प्रकारेँ जेना अपन इतिहास स्थापित कएलनि तकरा हम अपना इतिहासमे पृष्ठ संख्या 169सँ172 धरि संक्षेपमे लिखने छी ।

हम बुझैत छी जे आन जे कोनो काज श्रीरामदेवबाबू कएलनि ताहिमे ई कार्य सर्वश्रेष्ठ छनि आर हमरा लोकनिक साहित्यक परम्पराकेँ ई स्थिर कएलनि अछि ।

श्रीरामदेवबाबू मैथिलीक लेखक ओ कार्यकर्त्ता तँ विशेष रहबे कयलाह अछि मुदा ई जे लिखलहुँ अछि से सबसँ वाजिव हुनक योगदान मानैत छी ।



Scanned by CamScanner

हमर प्रिय शिष्य डा. श्रीरामदेवझा

-डा. श्रीअमरेशपाठक

हमर प्रिय शिष्यमेसँ एक रामदेवजी रहलाह अछि । हिनका सन सुयोग्य ओ विनीत छात्र भेटब पूर्वहुमे ओ वर्त्तमान समयमे तँ औरो बेसी दुर्लभ अछि । मैथिलीक अध्यापन ओ साहित्य एहि दुनू क्षेत्रमे जे हिनक यश, प्रतिष्ठा ओ उपलब्धि छनि से विशेष कऽ हमरालेल तँ गौरवक विषय थिक । एकरा मैथिली भाषाक सौभाग्ये कहबैक जे हिनका सन प्रतिभावान्-तेजस्वी व्यक्ति मैथिलीमे अयलाह, अन्यथा ई जाही क्षेत्रमे जैतथि ताही क्षेत्रमे ख्याति अर्जित करितथि से निर्विवाद । तखन अपन प्रारम्भिक छात्रजीवनहिसँ मातृभाषा मैथिलीक प्रति अतिशय अनुराग ओ साहित्य लेखनक अपन अभिरुचिक कारणे ई मैथिलीएकेँ अपन कैरियर बनौलनि आ अपन योग्यताक बलपर निरन्तर उत्तम रिजल्ट प्राप्त करैत रहलाह । पटना विश्वविद्यालयमे 1960-61मे जहिया ई एम.ए. मैथिलीक छात्र रहथि ई हमर सम्पर्कमे अयलाह । हिनक प्रतिभासँ हम विशेष प्रभावित भेल रही । अपन योग्यता ओ विनम्रताक कारणे ई हमर विशेष स्नेहभाजन बनलाह आ तद्वते आइयो छथि । पश्चात् ई मैथिलीक प्राध्यापक पदपर सेहो नियुक्त भेलाह । एकटा सुयोग्य प्राध्यापकक ख्याति अर्जित करैत सेवानिवृत्तो भेलाह तथापि आइयो हमरा प्रति हिनक सम्मान भाव ओहिना अक्षुण्ण छनि । ओही सहजता आ विनम्रताक संग आइयो ई हमरा समक्ष प्रस्तुत होइत छथि ।

डा. रामदेवझामे भावयित्री ओ कारयित्री दुनू प्रकारक अजस्र प्रतिभा रहलनि अछि । रचनात्मक लेखनक क्षेत्रमे तँ ई अपन आरम्भिक स्कूली छात्रजीवनहिमे प्रवेश कऽ चुकल छलाह । पं. सुरेन्द्रझा सुमनक सम्पादनमे दरभंगासँ प्रकाशित भेनिहार मिथिला मिहिरमे 1953मे हिनक दू गोट कथा **मुदा आब की ?** ओ **दू ठोप नोर** प्रकाशित भेल छलनि । तकर बादसँ मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे निरन्तर हिनक कथा सभक प्रकाशन होइत रहलनि । क्रमशः हिनक कथा सब प्रौढ़सँ प्रौढ़तर होइत गेलनि आ ई मैथिलीक एकटा निविष्ट कथाकारक रूपमे अपन स्थान बना लेने छथि । हमरा दृष्टिमे तँ रामदेवझा मैथिलीक किछु श्रेष्ठ कथाकारमेसँ एक छथि । हिनक **एक खीराःतीन फाँक, मनुक सन्तान, धरती माता** ओ **आजी माँ** कथा-संग्रह मैथिलीक विशिष्ट कथा-संग्रहक कोटिमे परिगणित करबा योग्य अछि । मिथिलाक सामान्य जनजीवनक कथा-व्यथा, ओकर सामाजिक स्थिति-परिस्थिति, ओकर रुचि-रोचन, ओकर मनोविज्ञान ओ अन्तर्द्वन्द्वकेँ जाहि सूक्ष्मताक संग ई अपन कथा सबसे चित्रित-रेखांकित करैत छथि से अन्यत्र दुर्लभ अछि । मिथिलाक व्यापक समाजक जे प्रतिच्छवि हिनक कथा सबमे देखल जाइछ ताहि आधारपर ई कहल जा सकैछ जे ई मात्र कथाकार कहयबाक लेल कथा-लेखन नहि करैत रहलाह अछि अपितु एकटा वास्तविक साहित्यकारक जे सामाजिक दायित्व होयबाक चाही तकरो निर्वहन ई सफलतापूर्वक करैत रहलाह अछि । वर्त्तमानहु कालमे ई ओही ऊर्जा ओ सजगताक संग कथा लेखन कऽ रहलाह अछि । बच्चा सभक हेतु, लिखल गेल हिनक कथा **इजोती रानी**मे बाल मनोविज्ञानक अनुरूप जाहि सहजताक संग रोचकता ओ औत्सुक्यक तानी-भरनी बूनल गेल अछि आ संयुक्ताक्षर रहित भाषाक प्रयोग कयल गेल अछि से मैथिलीमे विरले अछि । जँ रामदेवझा मैथिलीमे बालसाहित्य लेखनक अपन एहि धाराकेँ आगुओ विकसित करितथि तँ एहू क्षेत्रमे ई बेजोड़े रहितथि । तथापि बाल साहित्यमे हिनक एकमात्र **इजोतिये रानी**केँ कम नहि कहल जा सकैछ ।

रामदेवजी मैथिलीक एकटा सफल नाटककारो छथि । जखन ई पटना विश्वविद्यालयमे पढ़ैत छलाह ओही समयमे सितम्बर 1960मे पटनासँ मिथिला मिहिरक पुनः प्रकाशन प्रारम्भ भेल रहय आ मिहिरक प्रथमहि अंकमे हिनक

Scanned by CamScanner

पिपासा नामक एकांकी प्रकाशित भेल छलनि । कृष्ण ओ उत्तंक सन पौराणिक पात्र ओ कथाक सन्दर्भ लैत एहि एकांकीमे जाहि कलात्मकताक संग भारतीय समाजमे व्याप्त अछूत समस्याकेँ उठबैत एहिमे चोट कयल गेल अछि ताहिसँ हम चमत्कृत भेल रही आ हिनक नाट्य-लेखनक संग अभिनय करबाक प्रतिभासँ सेहो अवगत भेल रही । पटना विश्वविद्यालयक छात्रक रूपमे अपन पटना प्रवासक क्रममे ई कतोक आयोजनक अवसरपर नाटक आदिमे भाग लऽकऽ एकटा कुशल अभिनेताक रूपमे चर्चित- प्रशंसित भेल रहथि । विशेष कऽ प्रो. हरिमोहनझाक **आदर्श कुटुम्ब** कथाक हिनके द्वारा कयल गेल नाट्य रूपान्तरणक अभिनय चेतना समितिक मंचपर भेल छल से हमरा एखनहुँ मोने अछि । अभिनय ओ रंगमंचक ज्ञानक कारणे डा. रामदेवझा मैथिली नाट्य साहित्यकेँ सेहो समृद्ध करैत रहलाह अछि । हिनक **पसिझैत पाथर** नाट्य संग्रहपर 1991मे साहित्य अकादेमी द्वारा हिनका पुरस्कृतो कयल गेलनि **पसिझैत पाथर**क नाटक सबमे समकालीन सामाजिक समस्याकेँ जाहि तरहेँ उठाओल गेल अछि आ विराट् मानवीय संवेदनाक पुट दैत ओकर समाधान देखाओल गेल अछि से हिनक एकटा सहृदय मानवतावादी साहित्यकार होयबाक प्रमाण दैत अछि । नाटकक दृश्य-योजना, छोट-छोट पात्रोचित संवाद ओ कथानकक गुम्फन-कौशलक कारणे पसिझैत पाथर आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यमे एकटा विशिष्ट कृतिक रूपमे अपन स्थान बना लेने अछि ।

डा. रामदेवझा एकटा सफल निबन्धकारो छथि । हिनक निबन्धक भाषाक शब्द-लालित्य ओ प्रवाह हमरा सब दिन आकर्षित करैत रहल अछि । विशेष रूपसँ मिथिला मिहिरमे प्रकाशित होइत हिनक लोकसंस्कृति विषयक निबन्ध सब **काँचहि बाँसक एहो नव कोबर, अँचरा सितल बसात, तुइल महु डारि, प्रकृतिक दुलरैतिन बेटी नागवल्ली** आदि पढ़बामे रोचक लागय । एमहर हिनक लोकसाहित्य विषयक एक गोट पोथी **मैथिली लोकसाहित्यः स्वरूप ओ सौन्दर्य** सेहो प्रकाशित भेलनि अछि । हमरा जनैत मैथिली लोकसाहित्यक सिद्धान्त पक्षक एतेक गम्भीरताक संग विवेचित कयनिहार ई पहिले पोथी थिक । एही पोथीक दोसर भागमे हिनक लोकसंस्कृति विषयक साहित्यिक ललित निबन्ध सब सेहो संकलित छनि ।

रामदेवजी समय-समयपर कविता सेहो लिखैत रहलाह अछि । कविताक हिनक कोनो स्वतन्त्र संग्रह एखन धरि प्रकाशित नहि भेलनि अछि वा भेलो होइनि तँ से हमरा दृष्टिपथपर नहि आयल अछि । विभिन्न संकलन सबमे हिनक कविता, गीत इत्यादि देखैत रहलियनि अछि जेना आचार्य प्रो. रमानाथझा अपन **मैथिली नवीन गीत**मे समकालीन मैथिली कविताक सशक्त हस्ताक्षरक रूपमे हिनक गीत लेने छथिन तँ स्व. रामकृष्णझा किसुन द्वारा सम्पादित **मैथिली नव कविता**मे हिनक 'नव कविता' सब संकलित छनि । एकटा कविक रूपमे ई गीत, मुक्तक ओ नव कविताक लेखन करैत रहलाह अछि मुदा हिनक कविताक विशेषता किंवा ओहिमे प्रतिपाद्य विषय ओ विचारक सम्बन्धमे हम किछु नहि कहब । एक तँ आजुक मैथिली कविताक जे स्थिति अछि ताहिपर हम अपन कोनो विचार देब उचित नहि बुझैत छी, संगहि मैथिली समीक्षा, विशेषतः कविताक समीक्षा जाहि स्थितिमे पहुँचि गेल अछि ताहिपर किछु नहि कहबे ठीक होयत । ओहुना हम गद्यक समीक्षा अधिक कयल अछि ।

डा. रामदेवझा मैथिलीक प्रसिद्ध समालोचक ओ गवेषक छथि । मैथिलीक रचनात्मक लेखनक क्षेत्रमे तँ ई सर्वविदिते छथि, अपन प्राध्यापकीय दायित्वक निर्वहनक क्रममे ई अनुसन्धान-आलोचनाक क्षेत्रमे उतरलाह तँ एहू क्षेत्रमे अपन विशिष्ट स्थान बना लेलनि । पटना विश्वविद्यालयक शिक्षकक रूपमे हम छात्र लोकनिकेँ इतिहास ओ विद्यापति पढ़बैत रहलियनि । मुदा एकटा समालोचकक रूपमे हम आधुनिके मैथिली साहित्यपर अपन ध्यान केन्द्रित कयलहुँ, ताहूमे मुख्य रूपसँ गद्येपर । अपन डी. लिट्.क शोधक विषय सेहो हम पाश्चात्य साहित्यक प्रभावेँ मैथिलीमे आयल उपन्यास विधाकेँ चुनलहुँ । मुदा हमरा एहि बातक गौरव अछि जे हमर सुयोग्य शिष्य डा. रामदेवझा प्राचीन, मध्य ओ आधुनिक तीनू कालक मैथिली साहित्यकेँ अपन शोध-समालोचनाक आधार बनाय मैथिलीक दुर्बल समालोचना विधाकेँ सम्पुष्ट करैत एकटा नवीन दिशा देलनि अछि । मैथिलीक एहि तीनू कालक साहित्यक विशेषज्ञता हिनका सन विरलहि व्यक्तिमे पाओल जाइछ । हमर गुरुवर आचार्य रमानाथझा कहल करथि जे- समालोचना दुर्वह कार्य थीक ।

Scanned by CamScanner

अधलाह किंवा भ्रान्त समालोचनासँ रुचि भ्रष्ट भऽ जयबाक सम्भावना । एहि हेतु शास्त्रीय ज्ञान ओ निष्पक्षता आवश्यक ।' मुदा वर्त्तमान कालमे मैथिली समालोचनाक जे स्थिति अछि ताहि सम्बन्धने एतबे कहि सकैत छी जे 'जकर कतहु ने पुछारी से सौराठक नोतहारी ।' जे साहित्यक आन विधामे सफल नहि भऽ सकलाह से बिना समीक्षा-शास्त्र पढ़नहि, समीक्षाक पारम्परिक किंवा पाश्चात्य पद्धतिक बिना कोनो ज्ञान रखने समालोचना लिखऽ लगलाह आ लाठी हाथेँ अपनाकेँ सर्वश्रेष्ठ समालोचको कहबा लेलनि । समालोचना सन कठिन विषय जाहि तरहेँ मैथिलीमे किछु गोटाक कारणे हलुका गेल अछि ताहि स्थितिमे डा. रामदेवझाक समालोचक स्वरूप मोनकेँ आश्वस्त करैत अछि जे समालोचनाक गरिमा हिनके सन किछु विरल व्यक्तित्वक कारणे शेष अछि । जेना कि पूर्वे कहलहुँ अछि जे डा. रामदेवझा सन 'सुयोग्ये' व्यक्ति समालोचनाक कर्मक निष्पक्षताक संग निर्वहन कऽ सकैत छथि । हिनका समीक्षाशास्त्रक गम्भीर अध्ययन छनि । ई आरम्भहिसँ जिज्ञासु ओ अध्ययनशील रहलाह अछि तेँ साहित्य ओ समालोचनाक प्राच्य ओ पाश्चात्य दुहू धाराक प्रवृत्ति ओ वैशिष्ट्यक अवगाहन करैत स्वयंकेँ अपडेट बनौने रहलाह अछि । मैथिलीक अतिरिक्त संस्कृत, अंग्रेजी ओ किछु अन्यो भाषाक ज्ञान रहलाक कारणेँ डा. रामदेवझामे एकहि संग मैथिलीक प्राचीन, मध्य ओ आधुनिक साहित्यक विश्लेषण-विवेचन करबाक विशिष्ट क्षमता रहलनि अछि जकर प्रचुर उपयोग ओ करैत रहलाह अछि ।

मैथिली शैव साहित्य जे हिनक पी-एच.डी. उपाधि हेतु पटना विश्वविद्यालयमे प्रस्तुत स्वीकृत शोध प्रबन्ध थिकनि से हमरा दृष्टिएँ मैथिली साहित्यक प्रचुर अनभिज्ञात सामग्री-सम्बलित एकटा खण्ड-इतिहास थिक । मैथिलीक प्राचीन, मध्य ओ आधुनिक तीनू कालक शैव साहित्यक अनुसन्धान ओ विवेचन जाहि मानकता ओ वैज्ञानिकताक संग भेल अछि से मैथिली साहित्यक शैव धाराकेँ प्रमुखताक संग स्थापित करैत अछि । हिनक एहि शोध प्रबन्धहिक विस्तृत भूमिका **मैथिली शैव साहित्यक भूमिका** शीर्षकसँ स्वतन्त्र रूपेँ प्रकाशित अछि । एहि पोथीमे मिथिलाक संस्कृति, परम्परा ओ साहित्यमे वैदिक कालसँ लऽकऽ अद्यपर्यन्त शैव भावनाक जाहि तरहेँ निरूपण भेल अछि से अचम्भित करबा योग्य अछि । मध्यकालीन मैथिली कवि ओ नाटककार नन्दीपतिक जाहि तरहेँ प्रामाणिक परिचय ओ हुनक छिड़िआयल गीतक संकलन ई कयलनि अछि से हिनक अनुसन्धानी प्रवृत्तिक परिचायक अछि । एहूसँ बढ़ि कऽ पारिजातहरण नाटकक रचयिता उमापतिक परिचय, समय ओ आश्रयदाताक सम्बन्धमे जे हिनक अनुसन्धान कार्य छनि से वस्तुतः ऐतिहासिक अछि । उमापतिक परिचयक सम्बन्धमे जार्ज ग्रियर्सनहिक समयसँ भ्रान्ति पसरैत आयल अछि । मुदा डा. रामदेवझा अपन अनुसन्धान द्वारा इतिहासक एहि भ्रान्तिकेँ समाप्त कऽ सराहनीय कार्य कयलनि अछि । मैथिली साहित्यक अनेक अज्ञात कृति ओ कृतिकारकेँ इतिहासक गर्त्तमेसँ निकालि बौद्धिक जगतक समक्ष अनबाक हिनका श्रेय छनि । नेपालक मल्लराजवंशक नाटककार-गीतकार जगज्ज्योतिर्म्मल्लक दुर्लभ नाट्यकृति **हरगौरीविवाह** सहित हुनक अन्यो कतोक कृतिक अनुसन्धान कऽ ई ओकर विस्तृत भूमिकाक संग सम्पादन कयलनि अछि । साहित्य अकादेमीसँ **जगज्ज्योतिर्म्मल्ल** ओ **जगत्प्रकाशमल्ल**पर प्रकाशित हिनक विनिबन्ध हिनक गम्भीर विद्वत्ताक परिचायक अछि जाहिमे मध्यकालीन नेपालीय मैथिली साहित्यक विशद विवेचन प्रस्तुत कयल गेल अछि । एहिना पं. सुरेन्द्रझा 'सुमन'क संग सम्पादित **मैथिली प्राचीन गीतावली**मे लिखित हिनक विस्तृत भूमिका उल्लेखनीय अछि । हिनक ई भूमिका इतिहासकार लोकनिकेँ प्राचीन ओ मध्यकालीन साहित्यक सम्बन्धमे अपन मान्यतापर पुनर्विचार करबाक लेल विवश करैत अछि ताहिमे कोनो दू मत नहि । वस्तुतः डा. रामदेवझा इतिहासक खण्डहरमेसँ निरन्तर ताकि-ताकि कऽ अनेक अज्ञात कवि-कवयित्री सबकेँ सामने अनैत रहलाह अछि । एमहर हालेमे ई धीरमती नामक एकटा कवयित्रीक अनुसन्धान कयलनि अछि जे विद्यापतिक उत्तर समकालीन ओइनिवारवंशीय राजा नरसिंहदेवक पत्नी छलीह । धीरमतीक कविताक भाव-गाम्भीर्य ओ सौन्दर्य वस्तुतः अपन प्राचीन साहित्यपर गौरव करबाक लेल विवश करैत अछि । एकर समग्र श्रेय डा. रामदेवझाक अनुसन्धानी व्यक्तित्वकेँ देल जयतनि जे अध्यापन वृत्तिसँ सेवानिवृत्त भेलाक बादो एहि तरहक कार्यमे निरन्तर लागल रहैत छथि । आधुनिको मैथिली साहित्यपर डा. रामदेवझाक गम्भीर पकड़ छनि । आधुनिको कालक कतोक अज्ञात-दुर्लभ कृतिकेँ ताकि-ताकि ई सामने अनैत रहलाह अछि । अमरजीक संग सम्पादित **कविवर जीवनझा**

Scanned by CamScanner

रचनावलीमे हिनका द्वारा लिखित भूमिका जीवनझा ओ हुनक नाटकक विस्तृत परिचय तँ दैते अछि, आधुनिक मैथिली साहित्यक उत्थानक आरम्भिक परिदृश्यकेँ सेहो प्रामाणिकताक संग उपस्थापित करैत अछि । आधुनिक कालक प्रसिद्ध उपन्यासकार जनार्दनझा 'जनसीदन' पर लिखित हिनक बिनिबन्ध मैथिली समालोचनाक क्षेत्रमे विशिष्ट स्थान पयबाक अधिकारी अछि । तद्वते आधुनिक मैथिली साहित्यक विविध पक्ष ओ विधा आदिपर समय-समयपर हिनका द्वारा लिखित फुटकर निबन्ध सभ पढ़बाक अवसर भेटैत रहल अछि जाहिसँ हम आश्वस्त होइत छी जे एखनहुँ मैथिलीमे नीर-क्षीर-विवेचन कयनिहार डा. रामदेवझा सन गम्भीर समालोचक छथि। अन्यथा वर्त्तमान समयमे समालोचनाकेँ निन्दा, खिधांश ओ छिद्रान्वेषणे मानि लेल गेल अछि ।

साहित्य अकादेमी द्वारा **पसिझैत पाथर**पर मौलिक लेखनक हेतु ओ राजिन्दरसिंह बेदीक उर्दू उपन्यास **एक चादर मैली सी**क **सगाइ** नामसँ कयल मैथिली अनुवाद हेतु अनुवाद पुरस्कारसँ सम्मानित डा. रामदेवझा साहित्य अकादेमीक सदस्य एवं मैथिली परामर्श समितिक संयोजक भेलाह । एहू रूपमे ई मैथिलीक श्लाघनीय सेवा कयलनि। विशेष कऽ अपन कार्यकालमे ई **वर्णरत्नाकर, कीर्त्तिपताका, मिथिलाभाषा रामायण** ओ **रमेश्वरचरित मिथिला रामायण** सन अप्राप्य गौरव ग्रन्थकेँ साहित्य अकादेमीसँ पुनर्मुद्रित कराय मैथिलीक बड़ पैघ उपकार कयलनि । वस्तुतः रचनात्मक ओ आलोचनात्मक दुहू लेखनक क्षेत्रमे एक समान गति रखनिहार अध्यापनसँ लऽकऽ मैथिली आन्दोलन धरिमे अपन विशिष्ट भूमिकाक निर्वाह कयनिहार डा. रामदेवझाक बहुआयामी व्यक्तित्वकेँ देखैत जँ आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन' हिनका 'सव्यसाची' विशेषणसँ विभूषित कयलनि अछि तँ से उचिते ।

डा. रामदेवझाक प्रसंग हमरा एकटा औरो महत्त्वपूर्ण तथ्यक स्मरण भऽ रहल अछि ।

1963 ई.मे बिहार पब्लिक सर्विस कमीशनसँ मैथिली लेक्चररक पदक विज्ञापन भेल रहैक पटना विश्वविद्यालयमे पटना कालेजक लेल तथा बिहार विश्वविद्यालयमे मैथिलीमे पोस्टग्रेजुएटक पढ़ाइ आरम्भ भेलापर सी.एम. कालेजक लेल । प्रत्याशीक संख्या प्रचुर, दुहू ठामक हेतु अक्टूबर-नवम्बरमे बेरा-बेरी इण्टरव्यू भेल रहैक । पटना विश्वविद्यालयक हेतु डा. सुधाकरझा शास्त्री तथा म.म.डा. उमेशमिश्र कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक तत्कालीन कुलपति एवं बिहार विश्वविद्यालयक हेतु प्रो. रमानाथझा ओ डा. सुभद्रझा मैथिली-एक्सपर्ट रहथि । चारू मैथिलीक महारथी । पटना विश्वविद्यालय ओ बिहार विश्वविद्यालय दुहू ठामक हेतु पैनलमे रामदेवजीक नाम प्रथम स्थानमे अनुशंसित भेल छलनि । हमरा सबकेँ पूर्णविश्वास छल जे ओ पटना विश्वविद्यालय ज्वाइन करताह । परन्तु प्रायः होमसीकनेसक कारणे बिहार विश्वविद्यालयमे सी.एम्. कालेजमे ज्वाइन कयलनि । एहि सन्दर्भमे हमरा पुछलापर ओ अपन कैफियति देने रहथि जे- सर, हम मिथिलामे रहि कऽ मैथिलीक काज करऽ चाहैत छी । हम हुनक तर्क सुनि चुप्प भऽ गेल रही । पुनः मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना ओ मैथिली पोस्टग्रेजुएट वर्गक सी.एम्. कालेजसँ फराक भेलापर पोस्टग्रेजुएट विभागमे ई चल गेलाह । हम नहि कहि सकैत छी जे पटना कर्मक्षेत्र रहलापर रामदेवजीक विकास कोन रूपक होइतनि । परन्तु दरभंगाकेँ कर्मक्षेत्र बनौने रामदेवजीकेँ विशाल छात्रसमुदायकेँ निरन्तर पढ़बैत रहबाक अवसर भेटलनि । मैथिली आन्दोलनकेँ गतिमान बनयबाक अवसर भेटलनि । आइ हुनक दर्जनो शिष्य सभ विभिन्न कालेजमे अध्यापक रूपमे कार्यरत छथिन वा सेवानिवृत्त भेलथिन । हमरा एहि हेतु प्रसन्नता होइत अछि ओ लोकनि हमरहु तँ प्रशिष्य वा उपशिष्ये भेलाह । आइ लगैत अछि जे ताहि दिनुक हुनक निर्णय सर्वथा उचित छलनि जकरा ओ चरितार्थ कऽ कऽ देखौलनि ।

मैथिली भाषाक माटिसँ सम्पृक्त रहि कऽ रामदेवझा आइ धरि विश्वसनीय सर्जनात्मक, आलोचनात्मक, गवेषणात्मक, लोकसाहित्य- विषयक साहित्यिक ओ संगठनात्मक कार्य द्वारा जे दुर्लभ प्रतिष्ठा अर्जित कऽ सकलाह, से पटनामे रहलापर भऽ सकितनि ताहिमे हमरा सन्देह अछि । हम अपन प्रिय शिष्य डा. रामदेवझाकेँ हृदयसँ आशीर्वाद दैत छियनि जे ओ स्वस्थ आ दीर्घायु होथि आ मैथिलीक सेवा-कार्यमे निरन्तर लागल रहथु । शुभास्ते सन्तु पन्थानः ।

●

Scanned by CamScanner

मैथिली साहित्यक पंडित

डा. श्रीसुरेश्वरझा

आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन' प्रो. रामदेवझाकेँ पंडित कहैत छलथिन । हुनक कथन अक्षरशः ठीक छलनि । रामदेवबाबू मैथिली भाषा आ साहित्यक अप्रतिम विद्वान छथि । हिनका निकटसँ देखबाक एवं बुझबाक जकरा ककरो अवसर प्राप्त भेलैक अछि से ई जनैत अछि । हिनका मैथिलीक प्राचीन साहित्यक जकर इतिहास लगभग एक हजार वर्षक छैक, प्रारम्भिक कालक बौद्धगान ओ दोहा अथवा नेपालमे लिखल गेल नाटक, किंवा कीर्तनियाँ नाच आकि नाटक सभक गम्भीर अध्ययन छनि, ज्योतिरीश्वर आ विद्यापतिक लेखनपर अधिकारपूर्वक कहि सकैत छथि । ई खोजी स्वभावक तँ छथिहे, मैथिली साहित्यक विभिन्न विधापर सर्जनात्मक एवं मौलिक रचनाक लेखक सेहो छथि । कविता, कथा, नाटक, समीक्षा एवं अनुवाद सभ विधापर समान रूपसँ सहजतापूर्वक लेखनमे हिनका सन ककरो दोसरकेँ ताकब सम्भव नहि अछि । रामदेवबाबू कोनो विषयपर हल्लुक-फल्लुक ढंगसँ नहि लिखि सकैत छथि । जेहने हिनक स्वरूप सौम्य आ गम्भीर छनि तेहने ई गम्भीर शैलीमे लिखब पसिन्न करैत छथि । हिनका साहित्य अकादेमीक दुनू पुरस्कार-सर्जनात्मक ओ अनुवादसँ अलंकृत कयल गेल छनि । हिनक निर्देशनमे लिखल गेल सभ शोध-प्रबन्ध उच्च कोटिक छनि । नाटकपर जखन रामदेवबाबू किछु स्वयं लिखैत छथि अथवा दोसरसँ शोध-प्रबन्ध लिखयबाक लेल निर्देशन करैत छथि तँ हिनक प्रतिभा आओरो चमकि उठैत छनि । हिनक निर्देशनमे नाटकपर लिखल गेल प्रकाशित ओ अप्रकाशित शोध-ग्रन्थ सभ एकर स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि ।

हम दरभंगामे छात्रावस्थामे कहियो नहि रहलहुँ । एहि शहरक ने हम उच्च विद्यालय देखलियैक आ ने कॉलेज । मात्र राज उच्च विद्यालय, एम.एल.एकेडमी आओर सी.एम.कॉलेजक नाम सुनैत रहलियैक । 1941 आ 1942 इ. मे किछु मासक लेल अवश्य लहेरियासरायमे जिला कलक्टरक आवासक निकटस्थ एक गोट मिड्ल स्कूल, जकरा सम्प्रति गुलटेनी स्कूल कहल जाइत छैक, ताहिमे पढ़ने रही । 1942 क अगस्त आन्दोलनक बाद हमरा ओहो स्कूल छोड़ि देबऽ पड़ल । तँ हमरा आरम्भमे रामदेवबाबू तथा हुनक गाम कबिलपुरसँ कोनो परिचय नहि छल । सी.एम.कॉलेजमे जखन रामदेवबाबू शिक्षक भेलाह आ हुनक लेखन साठिक दशकसँ पटनाक 'मिथिलामिहिर' मे प्रकाशित होअऽ लगलनि तखन हुनक नाम ओ साहित्यसँ परिचय भेटल । बीसम सदीक छठम ओ सातम दशकक बीचमे रामदेवबाबू हमरासँ सकरीमे भेट कयने रहथि । हम ओहि कालखण्डमे पण्डौल (मधुबनी)क आर.एन.कॉलेजमे राजनीति विज्ञान पढ़बैत रही तथा सकरीमे रहैत रही । हम हिनक वर्त्तमान आवासक पाछूमे कबिलपुरक बाबूसाहेब कॉलनीमे डेढ़ कट्ठा जमीन अपनालेल भवन निर्माणक हेतु किनने रही, पछाति ओकरा बेचि देबाक विचार भऽ गेल छल । रामदेवबाबूकेँ एकर सूचना कतहुसँ भेटलनि आ हमरा ओतऽ आबि ओ जमीन दऽ देबाक लेल आग्रह कयलनि । हम एक खेपक आग्रहपर जाहि दामपर चन्द्रधारीबाबूक जेठ बालकसँ ओ जमीन किनने रही, ततबेमे हुनका दऽ देलियनि । ई हुनकासँ हमर प्रथम साक्षात्कार छल ।

रामदेवबाबूसँ परिचय ओ निकटता तखन स्थापित भेल जखन हम सी.एम.कॉलेजमे अपन योगदान कयलहुँ । दरभंगाक मैथिली लेखक एवं साहित्यकार लोकनिसँ सुमनजीक ओतऽ भेट होअऽ लागल । दूरमे रहबाक कारणे रामदेवबाबू ओहिठामक सांध्यगोष्ठीमे यदा-कदा सम्मिलित होइत रहथि । हम यद्यपि 1964 इ.क अक्टूबर मासमे साहित्य अकादेमीक ओहि उपसमितिक सदस्य लोकनिकेँ मैथिलीक लेल स्मारपत्र देबाक हेतु 'चेतना समितिक' एकमात्र

Scanned by CamScanner

प्रतिनिधिक रूपमे नई-दिल्ली गेल रही, मुदा ओकर बाद 1965 इ. सँ लगभग 1985-1986 इ. धरि साहित्य अकादेमीक सम्बन्धमे किछु सुनबाक आ बुझबाक कोनो रुचि नहि रहि गेल छल । ओहि समयमे 'सुमन'जी अकादेमीमे अपन दोसर 'टर्म' क सदस्य रहथि । 1992 इ. मे जखन हुनक कार्यकाल समाप्त भऽ रहल छलनि, तखन बिना हमरा विचारेँ स्व. कृष्णकान्तमिश्र हमर नाम अपना द्वारा पठाओल गेल 'पैनेल'मे सम्मिलित कऽ देलथिन तथा 'सुमन'जी हमरा सदस्य बना देलनि ।

1993 सँ 1997 इ. धरि हम साहित्य अकादेमीक सदस्य रहलहुँ आ ओहिमे अपन परामर्शदातृ परिषद'मे प्रो. रामदेवझाक प्रथम नाम रखलहुँ । ओहि पाँच वर्षक अपन कार्यकालमे हमरा जे सफलता भेटल ताहिमे रामदेवबाबूक अवदान सर्वोपरि रहलनि । ओ अत्यन्त नीक सूझ-बूझ रखैत निष्पक्षताक संग हमरा अपन विचार दैत रहलाह, जाहिसँ मैथिली भाषा ओ साहित्यक यात्रामे ओ पाँच वर्ष एक गोट इतिहास बनि गेलैक । हमरा लोकनि दू गोट संस्थाक बदलामे सात गोट मैथिलीक साहित्यिक संस्थाकेँ साहित्य अकादेमीमे मान्यता दिआओल जकरा सदस्य बनयबाक लेल 'पैनेल' पठयबाक अधिकार भेटि गेलैक । ओहि सूचीमे अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा; चेतना समिति, पटना आओर मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कोलकाताक नाम विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि । 'मैथिली साहित्यक इतिहास' अंगरेजीमे लिखयबाक निर्णय लेल गेल जे बादमे डा. देवकान्तझा द्वारा लिखबाय साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित भेल । हमरा लोकनि एक गोट वृहत् मैथिली शब्दकोशक निर्माण एवं प्रकाशन अकादेमीसँ करयबाक लेल बहुत प्रयास कयलहुँ, मुदा अकादेमीक तत्कालीन विद्वान एवं उदार सचिव इन्द्रकान्त चौधुरी ई कहि अस्वीकृत कऽ देलनि जे यदि मैथिलीमे ई कार्य होयतैक तँ अकादेमीमे सम्मिलित सभ भाषा अपन-अपन कोश बनयबाक निर्णय लऽ लेत, जकरा बनबायब एवं प्रकाशित करब सम्भव नहि छैक । ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरक एकोगोट प्रति नहि रहि गेल छलैक आ खोज कयलापर पता चलल जे ओकर मूल पाण्डुलिपि सेहो कोलकाताक रॉयल एसियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल'क पुस्तकालयमे नहि छैक । तखन हम आ रामदेवबाबू बहुत चिन्तित भऽ गेलहुँ । अकादेमी ओहि अमूल्य ग्रन्थक 'पुनर्मुद्रण'क लेल तुरन्त तैयार भऽ गेल । ओकर एक प्रति प्राप्त करबाक प्रश्न उठलैक तँ रामदेवबाबू सहर्ष अपन निजी पुस्तकालयसँ अपन प्रति अकादेमीकेँ उपलब्ध करा देलथिन आ ओ ग्रन्थ पश्चात प्रकाशित भऽ गेलैक ।

हमरालोकनि मैथिलीक तीनू संत कवि-लक्ष्मीनाथगोसाँइ, साहेबरामदास एवं भवप्रीतानन्दपर विनिबन्ध अकादेमीसँ प्रकाशित करौलहुँ तथा चन्दाझा रामायणक सेहो पुन: प्रकाशन भेल । ई तँ प्रधान ग्रन्थक नाम गनाओल अछि । एकर अतिरिक्त अन्य कतोक 'मोनोग्राफ', संकलित एवं सम्पादित पुस्तकक प्रकाशन, राष्ट्रीय संगोष्ठी, 'मीट द ऑथर', कवि सम्मेलन, कथा संगोष्ठी आदि जे रामदेवबाबूक विचार ओ निर्देशनमे होइत रहल तकर लेखा-जोखा एहि छोट संस्मरणमे सम्भव नहि अछि । ओहि पाँच वर्ष धरि रामदेवबाबूक संग यात्रा, बैसार एवं गोष्ठीमे रहबाक जे अमूल्य अवसर भेटल तकरा हम अपन जीवनक गौरवपूर्ण समय मानैत छी । साहित्य अकादेमीक अपन कार्यकालक प्रारम्भमे हम ई घोषणा कऽ देलियैक जे हम अपन उत्तराधिकारी रामदेवबाबूकेँ बनयबनि तथा से करबामे हम सफल भेलहुँ । ओहि कालमे हम मैथिलीक कतोक तथाकथित साहित्यकार किंवा स्पष्ट शब्दमे कही तँ गुट्टबाजक दुश्मन बनि गेलहुँ । ओ तत्त्व डेग-डेगपर हमर अनिष्ट करबामे नहि चूकल आओर आइयो ओहिमे संलग्न अछि । हमरा ओकर कोनो चिन्ता नहि अछि ।

रामदेवबाबू सन सौम्य, शान्त, विद्वत्तापूर्ण, सहज ओ सुन्दर व्यवहारवला व्यक्तित्व आजुक समाजमे भेटब अत्यन्त कठिन अछि । ओ उचितो बात कटु रहलापर बजबामे पूर्ण परहेज करैत छथि । एहिसँ कतोक ठाम हमरा लोकनिकेँ असुविधा होइत अछि । ओना सिद्धान्तक रक्षाक लेल ओ ककरो समक्ष विरोध एवं अपन अस्वीकृति सहज रूपेँ प्रकट करैत छथि । मैथिली-साहित्यक जतेक सेवा करबामे ई सफल भेल छथि, तकर ईर्ष्या ककरो भऽ सकैत छैक ।

●

Scanned by CamScanner

मैथिलीक ध्वजाकेँ झूकऽ नहि देलनि

डा. श्रीलोकनाथमिश्र

"किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या" - आ
"विवेकः सह सम्पत्या, विनयो विद्ययासह,
प्रभुत्वं प्रथमोपेतं, चिन्हमेतन्महात्मनाम् ।"

कहल गेल अछि, विद्याक कल्पलता हमर सभ मनोरथकेँ पूर्ण कयनिहारि होइछ ओ विभवक संग विनय, प्रभुत्वक संग विनम्रताकेँ रहब सत्पुरुषक लक्षण; ओतहि इहो कथन अछि जे कलाक-'सत्य' जीवनक परिधिसँ सौन्दर्यक माध्यमे व्यक्त, अखण्ड सत्य थिक ।

उपर्युक्त अनुपम भावकेँ आत्मसात् कऽ साधनारत भेल अनेक विलक्षण उपलब्धि पओने मिथिलाक एक विशिष्ट विभूति छथि ' साहित्य अकादेमी पुरस्कार' ओ 'साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार' दुहूसँ, सम्मानित ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर मैथिली विभागक पूर्व विश्वविद्यालय प्राचार्य एवं साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीक पूर्व मैथिली विभागक परामर्शदातृसमितिक संयोजक (प्रतिनिधि) यशस्वी सदस्य स्वनामधन्य प्रो. डा. श्रीरामदेवझाजी ।

मिथिलान्तर्गत अवस्थित एक ऐतिहासिक गाम अछि -'कबिलपुर', जिला दरभंगा मध्य, जतऽ अपन जन्मभूमिपर साहित्य-सृजन, लोकसेवा ओ चिन्तन-मनन, अध्ययन-अध्यापनक संग लौकिक आ आध्यात्मिक आनन्द पबैत मिथिलाक विकास हेतु अपन समुचित सहयोग देबामे सक्रिय रहि एक लोकनायकक स्वरूपेँ डा. श्रीझा श्रद्धावान् बनल छथि । अनुभवी, विचारक, सहृदय आ संयमी परमस्नेही श्रीरामदेवजी अपन कुशाग्र बुद्धिसँ परिमल भेल हृदयोच्छवसित भावकेँ सशक्त गतिशील लेखन ओ प्रभावोत्पादक वक्तृत्वकलासँ उद्भासित करैत रहल छथि, जे वस्तुतः अतिश्लाघनीय थिक ।

ध्यातव्य अछि जे 1953 इ.सँ रचना आरम्भ कऽ अद्यावधि अपन साहित्य सेवा आ लोक सेवाक दिव्य आनन्द पबैत आबि रहल छथि, चाहे साहित्यक अनेक विधामे विविध विषयक आधारभूत सृजन कार्य हो वा लोकजीवनक अनेक लौकिक-आध्यात्मिक मंच आदिक अध्यक्षता, उद्घाटन आ संचालनक (उद्घोषणाक) विशिष्टताद्योतन हो, डा. श्रीझा अपन गरिमामय स्थान पबैत, आनहुँकेँ उल्लसित करैत छथि आ तेँ धन्यवादार्ह छथि ।

श्रीरामदेवबाबू जिज्ञासु छथि आ अध्ययन-अध्यापन, अनुशीलन-आलोचन ओ अनुसन्धानमे अपन प्रगाढ़ पाण्डित्य, प्रखर प्रतिभा आ मेधाशक्तिएँ ललित-कलित कलासँ एक दिशि कुशल लेखनी द्वारा आकृष्ट करैत छथि, ओतहि मधुर विनम्र वाणीसँ प्रवचन आदिक माध्यमे जनमानसकेँ भावविह्वल बनयबामे प्रवीण छथि । एक विशिष्टता तँ हुनकामे प्रत्यक्ष रूपेँ देखबामे अबैछ जे अवाध गतिएँ अपन अनुभूत चेतना द्वारा अतीत दिशि ध्यान दैत, भविष्यक विकासोन्मुख कल्पनामे वर्त्तमानकेँ गतिशील बनौने ठीकसँ बुझैत परिस्थितिक अनुरूप आचरण करैत छथि, जे प्रेरणादायक अछि ।

साधनाक मूलमन्त्र थिक श्रद्धा ओ विश्वास । कहलो गेल अछि- 'उतिष्ठत्, जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत्' अर्थात् उठू, जागू ओ लक्ष्यक प्राप्ति धरि रुकू नहि आ से भाव पबैत छी साधक, भाषाविद् डा. श्रीझामे ।

Scanned by CamScanner

विदित अछि जे मनुष्यक गति सुन्दर वस्तुसँ सुन्दर मनोभावक दिशि, जीवन दिशि आ सुन्दर जीवनसँ पूर्ण जीवन दिशि उन्मुख रहैछ । 'मधुर स्मृति' कोनो ईश्वरीय संगीतक सदृश जीवनक तार-तारमे व्याप्त रहैछ आ ईहो कहल गेल अछि जे– आत्मविश्वास, आत्मज्ञान ओ आत्मसंयम ई तीनटा जीवनकँ परमशक्ति सम्पन्न बना दैत अछि । कहऽ नहि पड़त जे एहि गुणक संग लगनशीलता, अध्यवसायिता, तत्परता, प्रवल इच्छाशक्तिएँ आत्मबली बनल दृढ़संकल्पित भेल साहित्यसृजन द्वारा लोकमानसकँ आनन्दित-प्रमुदित करैत चरित्रवान् डा. श्रीझा अपन सरल, शान्त आ शीलवान स्वभावक परिणामस्वरूप गरिमामय स्थान बनौने छथि, जे सराहनीय-अनुकरणीय अछि ।

देखबामे अबैछ जे विद्यार्थीक मध्य प्रफुल्ल व्यक्तित्व, मेधाशक्ति, सिद्धहस्त लेखनकला, प्रौढ़ पाण्डित्य, वाचन प्रतिभा, उद्घोषणा सामर्थ्य, अभिनय छटा, वादविवाद मेधा, वाग्मिता एवं सृजनशक्तिक समुचित विकास भेने सफल शिक्षक कहल जाइछ आ से ज्ञात अछि जे चि. श्रीरामदेवजी एहि गुणक आगर, श्रद्धाविश्वासरूपी साधनाक मूलमन्त्र रखनिहार छथि, जे हुनक कृतित्व आ व्यक्तित्वमे दृष्टिगत होइछ ।

साहित्य अकादेमी पुरस्कृत हिनक **पसिझैत पाथर** नामक पोथीक हिन्दीमे अनुवाद करबाक सुयोग बहुत वर्ष पूर्व हमरा प्राप्त भेल छल । एहि पोथीक विशिष्टता तँ एहिसँ बुझना गेल जे जेहने एकर कथानक महत्ता रखैत अछि, ओहने कथोपकथनक भाषाशैली आ मार्मिक हृदयद्रावक युक्तियुक्त भाव आदि शब्दक लालित्य, उपयुक्त एवं आकर्षक दृश्यादिक चित्रण भेटल, जे पढ़ि कतेक ठाम अश्रुप्लावित भेल, जाहिसँ लेखनक सार्थकताक स्पष्ट बोध भऽ सकल ।

एक घटना स्मृति पटलपर ओहिना आबि गेल, जाहिमे हम सेहो हिनक सहभागी छलहुँ । हम राजा शिवसिंहसँ सम्पृक्त एक पुरातन सांस्कृतिक आ ऐतिहासिक गरिमामय क्षेत्र मध्य, सिंहवाड़ा प्रखण्ड (दरभंगा) मुख्यालयमे अवस्थित चौधरी केदारनाथ उच्च विद्यालय, सिंहवाड़ा (दरभंगा)मे प्रधानाध्यापकक पदपर रही आ ओहि प्रखण्डक प्रखण्ड विकास पदाधिकारी श्रीभुवनेश्वरीप्रसादसिंह अपन गुरुतर भारक संग साहित्य ओ समाजसेवामे रहल लोकप्रिय बनल छलाह । दिनांक 17 दिसम्बर 1967 इ.केँ लोकसेवाक दृष्टिएँ स्थानीय जनमानसक सद्इच्छासँ महाकवि विद्यापतिक पावन स्मृतिमे मैथिली, हिन्दी, उर्दू आ अंग्रेजी भाषाक कवि लोकनि ओ गीतकार आदि कतेको महानुभाव आमन्त्रित छलाह । आचार्य पं. श्रीजानकीबल्लभशास्त्री समारोहक अध्यक्षता कयलनि, आचार्य प्रवर विश्रुतविद्वान प्रो. रमानाथझाजी द्वारा उद्घाटन कार्य सम्पन्न भेल, आयोजनक स्वागताध्यक्ष श्री भुवनेश्वरीप्रसादसिंह भेलाह, ओतऽ स्वागतसचिवक कार्यसम्पादनमे सक्रिय रहलहुँ ।

ध्यातव्य अछि जे उपस्थित ख्यातिप्राप्त कवि समुदाय मध्य अपन नामकँ सार्थक बनबैत एक हिन्दी विषयक **'प्रलयंकर'** नामधारी कविजी उपस्थित छलाह ओ उद्घाटनक क्रममे महाकवि विद्यापतिक सम्बन्धमे कहल गेल किछु विशेष उक्तिक विपक्षमे एक प्रश्न चिह्न ठाढ़ करऽ लागल रहथि, आ से काल्पनिक, सुन्दर, अनुप्रासिक, आकर्षक एवं अलंकारिक भाषामे, अपन बोधक अनुसारेँ । किछु काल तँ शब्दकँ गुँजैत देखि स्तब्ध वातावरण बुझबामे आबऽ लागल ता अपन निर्भीकताक संग अध्ययनक गाम्भीर्यक स्वरूपमे अनुप्रासिक-अलंकारिक तँ नहि, मुदा सरल भाषामे मृदुवाणीसँ डा. श्रीरामदेवझा बीचहिमे अनुमति माँगि ठाढ़ भऽ प्रबुद्ध श्रोतागणकँ युक्तियुक्त समुचित व्याख्या जताओल आ ओकर बादहि अध्यक्ष श्रीजानकीवल्लभशास्त्री उद्घाटनकर्त्ता प्रो. रमानाथझाक ससम्मान अभ्यर्थना करैत कवि प्रलयंकरकँ वास्तविकताक बोध कराओल । एहि विद्वत् समाज मध्य अवसर विशेषपर भावक स्फुरण ओ तर्कक सम्प्रेषण आ विमल उक्ति डा. श्रीरामदेवझाजीक योग्यता-क्षमताक देखल-सुनल चिरस्मरणीय अनुपम उदाहरण अछि, ओ मैथिलीक ध्वजाकेँ झूकऽ नहि देलनि से स्तुत्य थिक ।

●

Scanned by CamScanner

एक बहुमुखी साहित्यकार

श्रीसीतारामझा

साहित्यकार विभिन्न प्रकारक होइत छथि । किछु पद्य-लेखनमे पारंगत छथि ओहूमे किछु शैली विशेषेमे । किछु गद्यक क्षेत्रमे निपुण छथि । ओहूमे किछु निबन्धकार, किछु गल्पकार आ किछु उपन्यासकारक रूपमे ख्याति अर्जित कयने छथि । किछु साहित्यकार अनुसन्धान वा शोधक कार्यमे दक्ष छथि । किछु गोटेक आलोचना-समालोचनाक लेखनमे नाम छनि । किछु नाटककार छथि । किछु अनुवाद आ सम्पादनक क्षेत्रमे जानल जाइत छथि । एहि प्रकारेँ हम देखैत छी जे साहित्कार बहुतो छथि मुदा विधा विशेषेमे हुनकर नाम छनि । डा. रामदेवझा मैथिली साहित्याकाशक एहन रवि छथि जे अपन रश्मिसँ उपर्युक्त समस्त विधाकेँ भासमान कऽ रहल छथि ।

डा.रामदेवझाजीसँ हमर प्रथम भेट 15 सितम्बर, 1984 इ.केँ भेल छल जखन हम अपन मैथिली पोथी **भारत-विभूति : विद्यापतिक** पाण्डुलिपि लऽ कऽ दरभंगा आयल रही । आदरणीय पं. श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'जीक डेरापर छलहुँ । ओ हमरा हिनकर कबिलपुर, लहेरियासराय स्थित आवासपर लऽ गेलाह आ हुनका सम्मति लिखबाक लेल कहलथिन । ओ सहर्ष तैयार भऽ गेलाह आ पोथीक विषयमे अपन निम्न विचार प्रकट कयलनि-

श्रीसीतारामझा प्रवासी मैथिल छथि आ मैथिलीमे 'भारत-विभूति : विद्यापति' नामक ग्रन्थक रचना अत्यन्त मनोयोगपूर्वक कयलनि अछि । अवश्ये ई उत्साहवर्धक कार्य मानल जायत । एहि ग्रन्थमे लेखक महोदय विद्यापतिक सम्बन्धमे अपन मौलिक चिन्तन प्रस्तुत कयने छथि । एहि ग्रन्थसँ विद्यापतिक प्रति जिज्ञासाक पूर्त्ति होयत से विश्वास कयल जा सकैत अछि । एक प्रवासी बन्धुक ई सत्प्रयास स्वागतयोग्य तँ अछिहे, अन्य प्रवासी बन्धु लोकनिक हेतु अनुकरणीय एवं अनुसरणीय सेहो अछि । हमर तीव्र आकांक्षा अछि जे ई ग्रन्थ शीघ्र प्रकाशित भऽ जाय ।

चलबा काल ओ हमरा अपन तथा किछु दोसर मैथिली लेखकक पुस्तक सेहो देलनि । तदुपरान्त जखन-जखन हम दरभंगा आबी, हिनका ओहिठाम अवश्य गेल करी आ ई क्रम एखनहुँ चलि रहल अछि । हिनकर माध्यमसँ कबिलपुरक किछु औरहु साहित्यकार लोकनिसँ भेट-परिचय गेल । ओहि सभमे डा. मुरलीधरझा एव डा. योगानन्दझाक संग हमर सम्बन्ध एक परिवार जकाँ भऽ गेल अछि ।

डा.रामदेवझाजीसँ हम प्रथमहि भेटमे प्रभावित भऽ गेल रही । गम्भीर चिन्तन मुदा मुखपर मुस्कान हिनकर विशेषता छनि । गप्प करितहि विद्वत्ता प्रकट होअऽ लगैत छनि । हिनकर पोथी पढ़लासँ आ दरभंगा अयबा काल भेट आ सम्पर्कसँ ई ज्ञात भेल जे ई एक बहुमुखी साहित्यकार छथि । बहुमुखी प्रतिभा छनि । ओहिसँ ई सम्पन्न छथि । कारण, ई एक कवि, कथाकार, नाटककार छथि । अनुसन्धान आ आलोचनाक क्षेत्रमे पारंगत छथि । एक सिद्धहस्त अनुवादक छथि । संगहि एक नीक सम्पादक सेहो छथि ।

डा.रामदेवझा एक नीक कवि छथि । हिनकर रचना तुकान्त आ अतुकान्त दुनू रूपमे पाओल जाइछ । गीत सभमे गेयताक संग-संग भावक उच्चता रहैत छनि ।

कथाकारक रूपमे हिनकर नाम मैथिली साहित्यमे अग्रणी छनि । हिनकर अनेक कथा संग्रह प्रकाशित छनि जेना **एक खीराः तीन फाँक, मनुक सन्तान, इजोती रानी, धरती माता** । किछु कथा पुरनका मिथिला मिहिरमे प्रकाशित भेलनि जाहिमे **मुदा आब की ?**, आ **दू ठोप नोर** । **अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग** आ **रामजोड़ी**

Scanned by CamScanner

कागतक पाँखिपर मिथिला मिहिरमे धारावाहिक प्रकाशित पत्रात्मक शैलीक प्रयोगधर्मी रोचक उपन्यास छनि । हिनकर कथा केवल कल्पनहिपर आधारित नहि रहैत अछि अपितु जीवनक यथार्थ एवं अनुभूतिक दर्शन सेहो करबैत अछि । मनुक्ख समाजसँ बान्हल अछि । सामाजिक दायित्वक चित्रण हिनकर कथामे भेटैत अछि । सामाजिक दायित्वक आधार मनोवैज्ञानिक सेहो होइछ । ओहि सभकेँ लऽ कऽ ई अपन कथामे एहि प्रकारेँ गुम्फित कयलनि अछि जे 'कथा' कथा नहि प्रत्युत् एक फिल्मक रील जकाँ प्रतीत होइछ जे आँखिक समक्ष नहुँए-नहुँए चलैत अछि । निम्नवर्गीय परिवारक वेदना आ संघर्ष हिनकर कथामे एक संवेदनाक संग प्रकट होइत अछि । हिनक कथा मिथिलाक जीवनक झाँकी सेहो प्रस्तुत करैछ । जतऽ धरि कथाक भाषाक प्रश्न थिक ओ पात्रक अनुसार अछि । ठेठ मैथिलीक दर्शन सर्वत्र होइछ ।

डा. झा एक नीक नाटककार सेहो थिकाह । ई किछु एकांकीक रचना कयने छथि जाहिमे **पिपासा** आ **दुलारक भूख** प्रसिद्ध छनि । जेना हिनक स्वभाव करुण भावक छनि, एकांकियोमे मध्य एवं निम्न वर्गक समस्याकेँ उठौने छथि । भाषाक स्टिअर घुमयबामे ई निपुण छथि । जहिना पात्र तहिना भाषा, जहिना भाषा तहिना पात्र । ई गुण सभ लेखकमे नहि पाओल जाइछ । **पसिझैत पाथर** हिनकर प्रसिद्ध नाट्यकृति थिकनि । ई 1989 इ. मे प्रकाशित भेल आ 1991 इ. मे एकरा साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटलैक । एहिमे सातटा नाटकक समावेश अछि । **पसिझैत पाथर** प्रथम नाटक छैक जाहिपर एहि पोथीक नामकरण भेल अछि ।

अनुसन्धानक क्षेत्रमे डा.रामदेवझा एक कीर्त्ति बनौलनि अछि । अनुसन्धानक अन्तर्गत ई बहुतो ग्रन्थक अध्ययन कयने छथि आ ओहिमे लोकक जे प्रचलित धारणा छल तकरा भ्रामक सिद्ध कऽ अपन विचार देलनि अछि । कोनो भ्रामक विचारकेँ समाप्त करबामे हिनकर अपन कोनो निजी उद्देश्य नहि रहैत छनि अपितु ओकरा ओ अपन तथ्यक आधारपर खण्डित कयलनि अछि जे विद्वान लोकनिक द्वारा बड़ सराहल गेल अछि । अनुसन्धान-आलोचनाक क्षेत्रमे **शकुन्तला नाटक : एक अध्ययन, पार्वती परिणय नाटक : एक अध्ययन, उमापति, मैथिली शैव साहित्य, मैथिली शैव साहित्यक भूमिका, मैथिली लोक साहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य, जगत्प्रकाशमल्ल, जगज्ज्योतिर्म्मल्ल, जनार्दनझा जनसीदन, सुभद्राझा** प्रभृति प्रमुख ग्रन्थ छनि । अपन अनुसन्धानकेँ पूर्ण बनयबाक उद्देश्यसँ ओ नेपाल आ देशक पैघ-पैघ पुस्तकालयमे समय व्यतीत कऽ सामग्री एकत्रित कयने छथि आ हिनकर ई काज एखनहु चलिये रहलनि अछि । मैथिली साहित्यमे अनुसन्धानक क्षेत्रमे हिनकर बड़ नाम छनि ।

डा. रामदेवझा एक अनुवादक सेहो थिकाह । अनुवाद करब एकटा कठिन काज छैक मुदा ओ अंग्रेजी, उर्दू आ दोसर भाषा सभसँ अनुवाद कऽ मैथिली साहित्यक संवर्धन कयलनि अछि । प्रमुख पोथी जकरा ई अनुवाद कयने छथि ओहिमे **पृथ्वी परिचय, जीव विज्ञान** (प्रथम भाग), **वाणभट्ट, सगाइ** (इक चादर मैली सी) आदि अछि । 'इक चादर मैली सी' क अनुवादपर साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली हिनका अनुवाद पुरस्कारसँ सम्मानित कयलकनि ।

पोथी सम्पादनक कार्य साहित्यक अन्तर्गत अबैछ आ ई कार्य सभ केओ नहि कऽ सकैछ । कारण, पोथीक प्रारम्भमे सम्पादक महोदय अपन टिप्पणी दैत छथि जाहिमे मूल लेखक, हुनकर लेखनशैली, विषय-वस्तु, प्रभाव आदिपर अपन विचार प्रकट करैत छथि जे सामान्य व्यक्ति नहि कऽ सकैछ । डा. झा एहू विधामे सराहनीय काज कयलनि अछि । ओ **रमेश्वरचरित मिथिला रामायण, हरगौरी विवाह नाटक, राम विजय नाट ओ वर गीत, नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत, मैथिली भाषा सरिता (भाग चारि), नन्दीपति : गीतिमाला, मैथिली प्राचीन गीत मञ्जरी, दुर्गाचरित नाटक, कुञ्जबिहार नाटक** आदिक सफल सम्पादन कयने छथि । एकर अतिरिक्त ओ किछु पोथीक सम-सम्पादक सेहो रहलाह अछि जाहिमे **मैथिली प्राचीन गीतावली, कविवर जीवन झा रचनावली विद्यापति गीत संचय** आ मैथिली कथा : शताब्दी संचय प्रमुख अछि । ओ किछु पत्र-पत्रिकाक सेहो सम्पादन कयने छथि जाहिमे **वैदेही** आ **संकल्प** उल्लेखनीय अछि ।

एतद्तिरिक्त, हिनकर **मन्तव्य** आ **भूमिका** आदि विभिन्न लेखक लोकनिक पोथीमे छिड़आयल छनि । एहिना

Scanned by CamScanner

ओ दोसर साहित्यकारक लेल प्रेरणा-स्रोत सेहो छथि । ओ नव पीढ़ीक रचनाकारमे साहित्यक प्रति रुचि आ उत्साह उत्पन्न करैत छथि, फलतः ओहिमेसँ किछु नीक साहित्कार भऽ गेलाह आ सम्प्रति ओ लोकनि मैथिली साहित्य जगतमे नाम अर्जित कऽ रहल छथि ।

साहित्यक अतिरिक्त एक बात जे हम हुनकामे देखने छी ओ अछि मञ्च संचालनक कला । ई एक नीक मञ्च संचालक छथि । आदरणीय सुमनजीक अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पण समारोह ओ किछु दोसरो समारोहमे हम हिनकर ई कला देखने रही । मञ्च संचालनक समय हिनकर ओजस्वी भाषा, श्रोता लोकनिकेँ मुग्ध कयनिहार वाणी, बॉडी लैंगुएज, मञ्चासीन लोकनिक प्रति समयानुकूल सम्मान, भाषणकर्त्ताक प्रति सौम्य सम्बोधन, आत्मीयता भरल टिप्पणी आदि हिनकर मञ्चीय विशेषता छनि । यैह कारण थिक जे सभा-गोष्ठी आदिमे मञ्चक संचालनक कार्य हिनकहि देल जाइत छनि ओ खाहे मिथिला होअय अथवा मिथिलाक बाहर ।

डा. झा अपन एहि सभ साहित्यिक गतिविधिक कारणेँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार आ साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारसँ सम्मानित भेलाह अछि । एतबे नहि, ओ ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक मैथिली विभागक प्राचार्य तथा साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीमे मैथिलीक प्रतिनिधियो रहलाह अछि ।

कबिलपुरमे हिनकर आवास एक साहित्य सदन अछि । परिवारक सब लोक साहित्यक प्रति अभिरुचि रखनिहार छथिन । हिनकर पुत्र श्रीशंकरदेवझा एक नीक साहित्यकार छथिन जनिकर आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित होइत रहैत छनि आ ओ पोथी सेहो लिखने छथि । लब्ध प्रतिष्ठ एवं महान साहित्कार पं. श्रीचन्द्रनाथमिश्र अमरजीक डा. रामदेवझा जमाय छथि जनिकर आशीर्वाद हिनकापर सदिखन रहैत छनि ।

हम ईश्वरसँ प्रार्थना करैत छी जे रामदेवबाबू दीर्घायु होथु आ साहित्य-साधनामे एहिना लागल रहथु ।



Scanned by CamScanner

अजातशत्रु डा. श्रीरामदेवझा

श्रीउग्रनारायणमिश्र 'कनक'

मैथिली-भाषा आन्दोलनक प्रखर प्रहरी डा. रामदेवझाकेँ अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित करबाक नेयार कयल गेलनि अछि तत् सम्बन्धित पत्र सौभाग्यपवती श्रीमती ममताकुमारी एल.इ.ओ, प्रखण्ड-मनीगाछी, श्रीरामदेवबाबूक सुपुत्री द्वारा प्राप्त भेल । मोन हर्षित भऽ उठल ।

डा.श्रीरामदेवबाबूक सम्बन्धमे किछु लिखबाक उपक्रम करबासँ पहिने हुनक नामक प्रति ध्यान आकर्षित होइत अछि । नाम तथा चरित्रमे अभिन्नता विरले व्यक्तिमे पाओल जाइत अछि– रामदेव, अर्थात मिथिला-मैथिलीक आदर्श पुरुष डा. श्रीरामदेवझा ।

चन्द्रमा आ चन्द्रमाक विशेषताकेँ के नहि जनैत अछि । किरण तथा स्निग्धताक अनमोल मेल थिक, चन्द्रमा, जकरा मनुक्ख सृष्टिक आदिकालहिसँ देखैत आबि रहल अछि तथापि ओकर आकर्षणक प्रति कोनो कमी नहि अयलैक अछि, ओकर प्रकाशसँ दिशा आलोकित होइत अछि । ओकर प्रकाश मनुक्खक हेतु कहियो कष्टकर नहि होइत अछि। मुदा एहिसँ सहस्त्रो गुणा अधिक प्रकाश सूर्यसँ प्राप्त होइत अछि । परन्तु मनुक्ख सदिखन ओकर प्रकाशकेँ सहन नहि कऽ पबैत अछि । जखन की सूर्यक माध्यमसँ परिपोषित होयबाक कारणे ओही चन्द्रमाक प्रकाश मनुक्खक हेतुएँ मनोरम एवं सोहाओन होइत अछि । पैघ आ छोट जे कोनो व्यक्तिकेँ कनियोँ कालकलेल रामदेवबाबूक साहचर्य प्राप्त भेल होयतनि तँ हुनका हुनक सौम्यता आ विनम्रताक अनुमान अवश्य भेल होयतनि ।

हमर विचारसँ पैघ लोक दुइ प्रकारक होइत अछि । एक तँ एहन जनिका समक्ष सामान्य जनकेँ पहुँचबामे संकोचक अनुभव होइत छैक, जँ कदाच् पहुँच सम्भव भेबो कयल तँ ओहि प्रखर व्यक्तित्व लग बेसीकाल धरि अटकि नहि सकैत अछि । दोसर प्रकारक पैघ लोक होइत छथि जनिका लग पहुँचबालेल सामान्य जनहुँकेँ प्रत्येक क्षण इच्छा बनल रहैत छैक । ओहि प्रकारक लोकक समक्ष, ओकर व्यक्तित्व कुण्ठित होयबाक अपेक्षा प्रफुल्लित भऽ उठैत छैक । बेर-बेर जयबाक, सान्निध्य प्राप्त करबाक अहर्निश इच्छा बनल रहैत छैक । डा. श्रीरामदेवबाबू दोसर श्रेणीक पैघ लोकमे समादृत छथि ।

मैथिली भाषा एवं साहित्यक सेवामे हिनक योगदान अद्वितीय छनि । ई अनेको ग्रन्थक प्रणेता छथि । ई सफल कथाकार छथि, नाटककार छथि, कवि छथि, साहित्य आकादेमीसँ सम्मानित छथि, आलोचक छथि, समीक्षक छथि, निबन्धकार छथि, मधुर वक्ता छथि । ई मिथिलाक संस्कृति ओ मैथिली भाषाक ध्वजारोहक छथि । हिनक कीर्त्ति-यश, मिथिला ओ मिथिलाक लोककेँ गौरवान्वित कयने अछि आ भविष्यमे सेहो कयने रहत ।

हमरा हिनकासँ पहिल खेपक भेटक तिथि मोन नहि पड़ि रहल अछि । राजकुमारगंज स्थित आचार्य सुरेन्द्रझा'सुमन'जीक डेरापर हिनकासँ परिचय भेल रहय । ओहि समय एहि उदीयमान प्रतिभासम्पन्न युवकसँ पूर्ण परिचय नहि भऽ सकल रहय । डा. कांचीनाथझा'किरण'जीकेँ 'ट्रेन' पकड़बाक धरफरी रहनि, हमरो हुनका संग जयबाक रहय ।

दोसर खेपक भेट थिक हिनकासँ हमरा मिश्रटोला स्थित पं. श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'जीक निवास स्थानपर । ओतऽ कविगोष्ठीक आयोजन रहैक । अनेको कवि, कथाकार एवं साहित्य प्रेमीलोकनिक जुटान भेल रहनि ।

Scanned by CamScanner

हमरा एकाएक ज्वर लागि गेल । मैथिलीक हास्यकवि स्व. रमानाथमिश्र'मिहिर' हमर देह छूलनि, नाड़ी देखलनि । ओ चिन्तित भऽ उठलाह । ठंढा जलसँ 'मिहिर'जी मुँह-हाथ धोऔलनि आ श्रीरामदेवबाबूकेँ हमरापर डिप्युट कऽ देलथिन । बड़ सेवा कयने रहथि रामदेवबाबू । ओहि समयमे प्रायः छात्र जीवनमे रहथि ओ । हुनक सौम्यता, विनम्रता, सेवाभाव, सादगी एवं निश्छल व्यवहारसँ बड़ प्रभावित भेल रही हम । ओही समय हमरा विश्वास भऽ गेल रहय जे ई ऊर्जावान युवक निश्चित रूपसँ मैथिली भाषा एवं मिथिलाक संस्कृतिक ध्वजारोहक बनताह । मृदुभाषी रामदेवबाबूक प्रत्येक व्यवहार आत्मीयतासँ परिपूरित रहैत छनि ।

लहटा ग्राम, पहिने मनीगाछी प्रखण्डमे रहय आब अलीनगर प्रखण्डमे आबि गेल अछि । विद्यापति पर्वक आयोजन रहैक संस्कृत विद्यालयक प्रांगणमे । आयोजक रहथि कांग्रेसकर्मी स्व. ताराकान्तझा आ श्रीबौआकान्तझा, श्रीफूसीमिश्र । सुरेन्द्रझा'सुमन', पं. श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर', काशीकान्तमिश्र 'मधुप', कांचीनाथझा'किरण', ब्रजकिशोरवर्मा मणिपद्मक अतिरिक्त अनेको कवि, कथाकार, ओ साहित्यकारगण वृहत् रूपमे उपस्थित भेल रहथि । कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक अनेक पदाधिकारी-कर्मचारीगण सेहो उपस्थित भेल रहथि । तत्कालीन डी.पी.आइ., पश्चिम बंगाल पं. श्रीमुनेश्वरझा सभाक अध्यक्षता कयने रहथि । श्रीझा अपन अध्यक्षीय भाषण हिन्दीमे प्रारम्भ कयलनि, हम उठि कहलियनि- महोदय, मंच मैथिली भाषाक थिकैक, मैथिलीमे भाषण कयल जाओ । श्रीझा कहल- हम एखन सरकारी पदपर आसीन छी । मैथिलीमे भाषण करब हमर लेल अनुचित होयत ।'

पं. श्रीमुनेश्वरझाजीक बात सुनि कऽ सभास्थ लोक क्षुब्ध भऽ गेलाह । स्थानीय युवक लोकनि आक्रोशित भऽ उठल रहथि । डा. श्रीरामदेवझा, मिहिरजी, विन्देश्वरपाठक हमर सुझावक समर्थन कयने रहथि । आक्रोशित युवक लोकनिकेँ कोनहुना कऽ शान्त करैत गेलहुँ ।

तिथि मोन नहि पड़ि रहल अछि मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगाक महाधिवेशनक आयोजन रहैक, दरभंगाक लालबाग स्थित लक्ष्मीश्वर पब्लिक लाइब्रेरीक प्रांगणमे । तत्कालीन आकाशवाणी, दरभंगाक निदेशक, चतुर्भुज, अध्यक्षता कयने रहथि । चतुर्भुजजी, हिन्दीमे भाषण देब प्रारम्भ कयलनि । हम उठि हुनक भाषणक विरोध कयल । कहल-महोदय ई मंच अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक थिकैक, मैथिलीमे भाषण कयल जाय । चतुर्भुजजी बिना संकोच कहल, हम जँ भोजपुरीमे भाषण करब तखन केहन लागत? 'अति सुन्दर होयतैक' हम कहलियनि ।

चतुर्भुजजी विरोध कयलाक बादो मैथिलीमे भाषण नहिएँटा कयलनि । जखन की ओ धुरझार मैथिली बजैत छलाह ।

हम सभाभवनसँ बाहर भऽ गेलहुँ । सभावभन, मैथिली सेवी लोकनिसँ खचाखच भरल रहय । ख्याति प्राप्त मैथिलीसेवी लोकनिक उपस्थिति सभामे कम नहि रहनि । लागल जेना ओहि समयमे सभक कान बहीर भऽ गेल होइनि । डा. श्रीरामदेवबाबूक ओहि समय हमरा नैतिक समर्थने नहि भेटल रहय अपितु ओ हमर संग पुरलनि ।

डा. श्रीरामदेवझा मैथिली भाषाक उच्चतम शिखरपर पहुँचि चुकल छथि । एहिमे हिनक अहंकारमुक्त विनम्र जीवनक कम योगदान नहि छनि । विनम्रता हिनक कौलिक गुण थिकनि जे हिनक व्यक्तित्वमे रचल-बसल छनि । यैह विनम्रता हिनका अजातशत्रु बनौलकनि अछि । डा. श्रीरामदेवबाबू दीर्घजीवी होथि हमर यैह शुभकामना, माँ मैथिलीसँ हमर यैह प्रार्थना ।

●

Scanned by CamScanner

एक आस्थावान अध्यापक ओ संवेदनशील शब्द-शिल्पी

डा. श्रीविद्यानाथझा 'विदित'

मैथिलीक अध्ययन-अध्यापन क्षेत्रमे यशस्वी तथा बीसम शताब्दीक उत्तरार्द्धहिसँ अपन सारस्वत-प्रतिभा ओ सृजन-सामर्थ्यक आधारपर स्थापित साहित्यकार डा. रामदेवझाक व्यक्तित्त्व एवं कर्त्तृत्व कोनो विशेष परिचयक अपेक्षा नहि रखैछ तथापि हुनका सम्बन्धमे बहुतो बात एहन अछि जे एखनहुँ प्रकाशमे नहि आयल अछि जेना ई कतेक गोटे जनैत छथि जे ओ झारखण्डक (तत्कालीन दक्षिण-बिहारक) पहिल मैथिली-शिक्षक छलाह, संताल परगना कालेज, दुमकामे मैथिलीक विभागाध्यक्ष रहथि। 1961 सँ 1963 धरिक अपन दुमका प्रवासमे ओ एक दिस यदि स्थानीय छात्र लोकनिक हृदयमे मैथिली पढ़बाक उत्कण्ठा उत्पन्न करबामे सफल भेलाह तँ दोसर दिस कालेजक मैथिली विभागीय पुस्तकालयकेँ अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थक भंडार बना देलनि। से खाली बनाइएटा नहि देलनि तकरा सरिया कऽ स्वयं पढ़बो कयलनि। प्राय: प्रत्येक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थक बीच-बीचमे डा. झा द्वारा चिन्हित वाक्यांशे तकरा प्रमाणित करैछ।

ओहि अवधिमे पटनासँ प्रकाशित होअऽबला मिथिलामिहिरक ओ कतोक स्थायी स्तम्भक लेखक तँ छलाहे जे समय-समयपर मिहिरक जे विशेषांक सभ प्रकाशित होइत छल ओहिमे तत्कालीन युवा-लेखकक प्रतिष्ठित पंक्तिमे आँगुरपर गनल जायबला किछु लेखकक रचना प्रकाशित होइत छल ताहूमे डा. झा एक चर्चित नाम छलाह। हमरा ओहिना मोन अछि जे 6 दिसम्बर 1963 इ. मे कालेजक विभागीय प्रभार हमरा सौंपैत अपन सहज-स्वाभाविक मुसकानमे सानि प्रो. झा कहने रहथि– अब तेरे हवाले वतन साथियों।'

सन्ध्याकाल जखन हुनका विदा करऽ लय हमरा लोकनि दुमकाक पुरना बस स्टैण्ड जे वर्त्तमान कुँवरसिंह चौकपर छल, ओतऽ गेलहुँ तँ ओतऽ बस खुजबामे एक घंटाक विलम्ब छल। दुमकासँ जसीडीह जायबला ओ बस रामपुरहाटसँ अबैत छल, से ओहि समय धरि पहुँचले नहि छल। हमरा सभक समक्ष दुइएटा विकल्प छल की तँ डेरेपर पुन: जा कऽ किछु काल बैसी किंवा ओतहि सिन्धिया होटलमे चाह पिबैत, ओहि प्रतीक्षाक मुहूर्त्तकेँ गप्पहिमे बिता दी। हमरा लोकनि दोसरे विकल्प चुनलहुँ।

कालेजमे एकटा घंटी पचास मिनटक होइत छल। एहि पचास मिनटक प्रतीक्षाक अवधिमे प्रो. झा जाइतो-जाइत हमर एकटा जेना क्लासे लऽ लेलनि। ओही क्लासमे हम, कालेजमे मैथिलीक पढ़ाइ प्रारम्भ होयबाक इतिहास-भूगोलसँ सेहो परिचित भेलहुँ तथा कोन-कोन कक्षामे कतेक छात्र छथि, हुनका सभक नाम-गाम की छनि, रुचि केहन छनि, पढ़बामे के केहन छथि आदि-आदि सूचनासँ सेहो अवगत भेलहुँ। अपन ओहि आपात्कालीन परिचयात्मक कक्षामे प्रो. झाक आत्मीयता ओ मैथिलीक प्रति अप्रतिम आस्थाकेँ देखि हमरा मोनमे शिक्षकक एकटा आदर्श-चित्र सेहो तखनहि उभरल जे एकटा कुशल शिक्षककेँ मात्र अपन छात्र लोकनिक मस्तिष्केटासँ नहि वरन् शिष्यक सम्पूर्ण व्यक्तित्त्व आ परिवेशसँ सेहो भिज्ञ बनबाक चाही।

तावत् कालेजक मैथिलीक किछु छात्र लोकनि सेहो प्रो. झाकेँ तकैत-तकैत ओतऽ पहुँचि गेलाह। ओ छात्र लोकनि पहिने सरकारी बस-स्टैण्ड चल गेल छलाह। छात्र सभसँ हमर परिचय करबैत प्रो. झा कहलनि जे– अहाँ सब कोनो स्थितिमे टयूटोरियल नहि छोड़इ जायब। विदितजीकेँ सेहो हम अहाँ सभक कठिनाइ बुझा देलियनि अछि जे एतऽ समयपर पोथिओ नहि भेटैत छैक। दू एकटा पाठ्यग्रन्थकेँ तँ हाथेसँ उतारि कऽ पढ़बऽ पड़ैत छल। यदि टयूटोरियल नहि छोड़इ जायब तँ मैथिली पढ़ऽगे मोनो लागत आ परीक्षामे नीक अंको भेटि सकैछ।'

Scanned by CamScanner

तावत रामपुरहाटवाली गाड़ी सेहो आबि गेल आ हमरो लोकनि प्रो. झाकेँ ओहिपर चढ़ा कऽ विदा भऽ गेलहुँ। यद्यपि ओ दुमका कालेजसँ नीक कालेजमे दरभंगाक सी.एम.कालेजमे जा रहल छलाह, तथापि गुड़कैत बसक खिड़कीसँ हुनक उदास मुखाकृति आ हाथ हिला कऽ हमरा सबकेँ जे ओ 'जोहार' कहलनि से यैह कहि रहल छल जे संताल परगनाक संस्कृतिसँ ओ निश्चित रूपसँ सम्मोहित छलाह आ तहिना आदिवासी जन-जीवनसँ प्रभावित सेहो।

प्रो. झाक दुमकासँ प्रस्थानक बादो स्टाफ-रूममे हुनक योग्यता, व्यवहार कुशलता, नम्रता ओ उन्मुक्त हँसीक चर्चा बहुत दिन धरि होइत रहल। ओही चर्चाक सूत्रसँ हमरा इहो ज्ञात भेल जे एहिठामक पर्वत-शृंखला ओ हरीतिमासँ ओ अत्यधिक प्रभावित छलाह। ततबे नहि अपन दुमकाक प्रवासमे हुनका जखन-जखन पलखति भेटैत छलनि ओ बाबा बैद्यनाथधाम, बाबा बासुकीनाथधाम, बौंसीक मन्दार मधुसूदन तथा रामपुरहाटक बगलमे स्थित तारापीठक दर्शन-भ्रमण अवश्ये करैत छलाह। शिव ओ शक्तिक अद्‌भुत साधना-भूमिमे रहैत हुनका हृदयमे आस्तिकता ओ मातृशक्तिक प्रति जे स्थायीभाव स्थापित भेलनि, तकर प्रयोग ओ बादमे अपन सारस्वत साधनामे सेहो कयलनि।

आइ चौआलिस बरखक बादो हम ई कहि सकैत छी जे साहित्यकार रामदेवक वाणीमे जे छवि-छटा छनि, हुनक विभिन्न रचनामे जे इन्द्रधनुषी रंग पसरल छनि ओहिमे कतहु ने कतहु संताल परगनाक पर्वतीय हरीतिमाक सोन्हगर सुगन्ध सेहो सन्हिआयल अछि।

प्रो. झा वाणी ओ लेखनी दुनूमे धनी रहितहुँ अपन एहि ऐश्वर्यक कण-कण मैथिलीएकेँ निछाओर कऽ देने छथि, यद्यपि राष्ट्रभाषा, संस्कृत, ओ आंग्ल भाषापर सेहो हुनका नीक अधिकार छनि तथापि मैथिलीक अभ्युत्थानक प्रति रहैत अपन अदम्य आस्थाक करणेँ ओ अपन अन्तःकरणक समस्त भाव-रत्न मैथिलीएक 'पीड़ी' पर चढ़ा देलनि।

प्रो. झाक रचनामे समाजक दलित, शोषित एवं उपेक्षित वर्गक प्रति जे ममता प्रवाहित भेलनि अछि, से एहन उर्वरक थीक जाहिसँ मेधाक अनेक वल्लरी साहित्यक ढाठपर लहलहा सकैछ। साहित्यक संगहि गवेषणाक क्षेत्रमे, साहित्येतिहासक अनुसन्धानक क्षेत्रमे तथा आलोचनात्मक शोधक क्षेत्रमे सेहो प्रो. झाक योगदान प्रसंशनीय रहलनि अछि। जेना हुनक दुमकाक एक मित्र हिन्दीक प्राध्यापक स्व. विद्यापतिठाकुर कहैत छलाह जे– रामदेव बाबूमे ओहि समयमे अदम्य उत्साह छलनि, प्रत्येक सभा-संगोष्ठीमे ओ जे किछु विषय रखैत छलाह ओहिसँ यैह सिद्ध होइत छल जे ओ खूब पढ़ैत छलाह आ एहि गहन अध्यवसायक बलेँ हुनक प्रतिभा साधारणो गप-सपमे जिह्वापर नचैत सन बूझि पड़ैत छल। हुनकामे मैथिलीमे प्रयुक्त होअऽवला सभ प्रकारक गद्यशैलीक प्रयोग-उपयोग करबाक अद्‌भुत क्षमता छलनि।' से बादमे अक्षरशः सत्य प्रमाणित भेल।

प्रो. झाक रचना-संसार कोनो एक वर्ग, धर्म, परम्परा अथवा कोनो सामाजिक संकीर्णतासँ प्रभावित नहि भऽ कऽ मैथिल समाजक विराट स्वरूपेसँ जुड़ल रहलनि। हुनक अभिनन्दनक एहि अवसरपर हम सम्प्रति एतबे कहि सकैत छी जे समय-समयपर विभिन्न सम्मानजनक पदपर आसीन होइतहुँ ओ कहियो तकर 'अहं' नहि पोसलनि आ निरन्तर अपन अन्तर्छविकेँ चमत्कारी बनौने रहलाह, हुनक एहि अन्तर्छविक विश्लेषण औखन 'शेष' अछि। किमधिकम्।

●

Scanned by CamScanner

मैथिली भाषा-साहित्यक गौरव

प्रो.श्रीकालीकान्तमिश्र

'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' कविराज विश्वनाथक ई उक्ति माननीय प्रो. रामदेवबाबूमे स्पष्ट परिलक्षित होइत छनि। यद्यपि कतेको कविवर द्वारा-काव्यलक्षण समादृत अछि जेना-

काव्यंयशसेऽर्थकृते व्यवहार विदेशिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिवृतये कान्तासम्मितयोपदेशयुजे ॥

ई मम्मटाचार्यक काव्यलक्षण थीक तँ 'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' कविराज जगन्नाथक काव्यलक्षण थीक। एहिना काव्यदीपिका आदि ग्रन्थकार काव्यलक्षण प्रतिपादित कयने छथि।

परंच हमरा दृष्टिमे जतेक काव्यलक्षण अछि; ताहिमे विश्वनाथक द्वारा प्रतिपादित साहित्य दर्पणक काव्यलक्षण सर्वोपरि अछि। हिनक तीनू शब्दमे सब काव्य लक्षण समाहित अछि। स्पष्टार्थ अछि– रसात्मक वचन काव्य थिक। प्रो. रामदेवबाबूक गात रसात्मक वचन, रसात्मक बिहुँसैत मुखाकृतिसँ भरल-पूरल छनि।

हमरा हिनकासँ परिचय 1994 सँ अछि। हम संस्कृत महाविद्यालय, दीपमे अक्टूबर 1961 सँ मार्च 1985 इ. धरि ज्योतिष शिक्षक रूपमे सेवारत छलहुँ; ताहि समय यदा-कदा जनता कोशी महाविद्यालय, झंझारपुरक मैथिलीक प्राध्यापक प्रो. खुशीलालझा अधिकाधिक प्रशंसा-अवनत भऽ युगलचरणक ध्यान करैत कहथि-हमर गुरु पूज्यतम् प्रो. रामदेवबाबू मैथिलीक विशिष्ट विद्वान् छथि।

हमर गाम थिक तुमौल, जिला-दरभंगा। 1972 इ.सँ हम गामहिसँ साइकिलसँ लोहना टीसन गाड़ी पकड़ऽ जाइत छलहुँ। लोहना टीसनक दक्षिण नरुआड़ निवासी प्रो. मधुकरजीक दोकानपर साइकिल राखि दीप यातायात करैत छलहुँ। मधुकरजी अपन कविता सुनबैत छलाह। गाड़ीमे विलम्बक कारणेँ बेसीकाल बैसल रहैत छलहुँ। मधुकरजीक दोकानपर स्वनामधन्य किरणजीसँ भेट होइत रहैत छल। प्रणाम करैत छलियनि। आशीष वचनमे कहैत छलाह 'कि आशीर्वाद देब? अहाँ तँ जोतिखी छी। वेदाङ्गशास्त्रमे ज्योतिष नेत्र थीक से सत्य, मुदा अध्येताक संज्ञा थिका जोतखी। ओ ताहि मुद्रामे तेना कहैत छलथिन जे दोकानक मालिक ओ ग्राहक सभ ठहाका मारि हँसैत छलाह, मुदा हमर तेहन हँसी नहि देखि कहैत छलाह-हम जनैत छी– ''प्रत्यक्षंज्योतिषंशास्त्रम्'' नेत्रशास्त्रक ज्ञाता-दैवज्ञ थिकाह देखैत नहि छियैक- जोतखिआइन भाषाक प्रयोगसँ अमरजी कविसम्मेलनमे सभसँ अधिक प्रशंसनीय छथि। हुनक जमाय श्रीरामदेवबाबू तँ मैथिलीक शब्दकोषक पेटारे खोलब आरम्भ कयलनि अछि। ओ क्रमशः यशस्वी होयताह।'

1992 इ.सँ विजयादशमी दिन प्रातस्मरणीय-ब्रह्मर्षि कहू वा महर्षि सुमनजीसँ आशीष लेबाक लेल जाइत छलहुँ। गप्पक प्रंसगमे दू दिन कहलनि-'अमरजी विद्वान छथि। मुदा रामदेवबाबू मैथिलीक प्रकाण्ड विद्वान् छथि, ओ मैथिलीक आचार्य छथि।' प्रो.रामदेवबाबूक प्रशंसा सुनि-सुनि दर्शनक प्रबल अभिलाषा छल; ताहूमे 1994 इ.मे 'श्री सुमन साहित्य सौरभ'मे प्रो. रामदेवबाबूक लेख पढ़ि प्रशंसनीयताक-प्रत्यक्ष दर्शन भेल। संयोगसँ 1995मे रामदेवबाबूक दर्शन भेल। जकर भूखल छलहुँ से भेटि गेल। वास्तवमे रामदेवबाबू मैथिली साहित्यक भण्डार भरैत-प्रतिष्ठा लाभ करैत रहलाह अछि।

माननीय प्रो.रामदेवबाबूक प्रति भगवतीसँ हार्दिक प्रार्थना अछि जे शारीरिक-मानसिक स्वस्थताक संग दीर्घकाल धरि सारगर्भित शब्दविन्याससँ माँ मैथिलीक भण्डार भरैत रहथि।

●

Scanned by CamScanner

मैथिली भाषा-साहित्यक एकटा मान्य व्यक्तित्व

श्रीमोहनभारद्वाज

आचार्य दण्डी प्रतिभा, व्युत्पत्ति तथा अभ्यासकेँ काव्यक कारण कहलनि अछि । एहि तीनू शब्दक व्याख्या विभिन्न प्रकारसँ कयल गेल अछि । मतभेद विस्तारमे नहि जा एतेक कहि सकैत छी जे प्रतिभाक अर्थ अछि 'नवनवोन्मेषशालिनी बुद्धि'; अत्यन्त शास्त्र-श्रवण व्युत्पत्ति थिक तथा निरन्तर यत्न अछि अभ्यास । काव्यक अर्थ-व्याप्ति जँ समस्त साहित्यिक लेखन धरि कयल जाय तँ हमरा ई कहबामे संकोच नहि अछि जे रामदेवझाक लेखनमे प्रतिभा, व्युत्पत्ति एवं अभ्यास-तीनूक योगदान छनि । हिनकामे नैसर्गिक प्रतिभा छनि आ उपयुक्त परिवेशक भरिपोख उपयोग तथा अनवरत श्रम करबामे सेहो ई कोताही नहि कयलनि अछि । यैह कारण थिक जे आइ डा.रामदेवझा मैथिली शिक्षा-जगतसँ लऽ कऽ साहित्य-संसार धरि एकटा मान्य एवं आदरास्पद नाम अछि ।

डा. रामदेवझाक जन्म 3 मइ 1936 कऽ कबिलपुर, लहेरियासराय (दरभंगा)मे भेलनि । परिवारक आर्थिक स्थिति नितान्त साधारण छलनि । अनेक प्रकारक विघ्न-बाधाक कारण ई मैट्रिकक परीक्षा 19 वर्षक आयुमे (1955 इ.) पास कयलनि, मुदा से प्रथम श्रेणीमे । तकरा बाद हिनक अध्ययनक क्रम कहियो भंग नहि भेल । 1957 इ.मे बिहार विश्वविद्यालयसँ आइ.ए. कयलनि । मैथिली आनर्सक संग स्नातक भेलाह 1959 इ.मे- बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुरसँ । एहिमे हिनका प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान प्राप्त भेलनि । एम.ए (मैथिली) मे सेहो ई अपन आनर्सक परीक्षाफलकेँ अक्षुण्ण रखलनि । एम.ए. क परीक्षाफल घोषित होइतहि एस.पी.कॉलेज, दुमकामे मैथिलीक व्याख्याता पदपर हिनक नियुक्ति भेलनि । दिसम्बर 1962 मे सी.एम.कॉलेज, दरभंगामे व्याख्याता बनि कऽ आबि गेलाह । सम्प्रति ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगामे मैथिली विभागमे विश्वविद्यालय प्राचार्यक पदपर कार्यरत छथि (आब सेवानिवृत्त –स.) ।

रामदेवझा जहिना एकटा मेघावी एवं अनुशासित छात्रक रूपमे चर्चित छलाह तहिना व्युत्पन्न एवं कुशल प्राध्यापकक रूपमे सेहो प्रसिद्ध छथि । अध्यापनक संग हिनक लेखन-कार्य सेहो चलैत रहलनि अछि । आइ-काल्हि एकटा सामान्य धारणा बनि गेल अछि जे अध्यापकलोकनि केवल वेतन एवं पदोन्नतिक लाभक हेतु पी-एच.डी. करैत छथि । रामदेवझाक शोध-कार्य एहि धारणाकेँ खण्डित करैत अछि । **मैथिली शैव साहित्य** विषयक शोधप्रबन्ध हिनक प्रतिभा, व्युत्पत्ति तथा परिश्रमक परिचायक थिक । ई शोधप्रबन्ध आब पुस्तकाकार प्रकाशित अछि आ एकर अध्ययनसँ स्पष्ट अछि जे रामदेवझा अध्यापनवृत्तिक प्रयोजनार्थ एकर रचना नहि कयलनि अछि । कहबाक आवश्यकता नहि जे मैथिलीमे एहि प्रकारक शोध-प्रबन्ध अत्यल्प अछि ।

रामदेवझा बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न रचनाकार छथि । हिनक मौलिक एवं सम्पादित पुस्तकक सूची बेस पैघ अछि । हिनक तीनटा कथा-संग्रह प्रकाशित छनि- **एक खीरा : तीन फाँक, मनुक सन्तान** तथा **धरती माता** । एकर अतिरिक्त **इजोतीरानी** नामक एकटा बालकथाक संग्रह सेहो प्रकाशित छनि जकर प्रमुख विशेषता ई थिक जे ओहि कथामे संयुक्ताक्षरक प्रयोग कतहु नहि कयल गेल अछि । समालोचनाक चारिटा पोथी छनि- **मैथिली शैव साहित्य, मैथिली शैव साहित्यक भूमिका, उमापति एवं जगत्प्रकाशमल्ल** । अनुसन्धान विषयक सम्पादित ग्रन्थमे प्रमुख छनि- **जगज्ज्योतिर्म्मल्ल कृत हरगौरी विवाह नाटक, दशावतार नृत्यम् ओ षोड़श गीतम्, नन्दीपति गीतिमाला, शंकरदेव कृत रामविजय नाट, जगज्ज्योतिर्म्मल्ल कृत कुंजबिहार नाटक, मैथिली प्राचीन गीत मंजरी, मैथिली भाषा सरिता । मैथिली प्राचीन गीतावली**

Scanned by CamScanner

तथा **कविवर जीवनझा रचनावली**क संग-सम्पादन (क्रमश: सुरेन्द्रझा 'सुमन' तथा श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क संग) सेहो कयलनि अछि। एहि दुनू पुस्तकक महत्त्वपूर्ण अंश अछि भूमिका जकर लेखक छथि रामदेवझा। हिनक अनुसन्धानमूलक क्षमता तथा विषयोपस्थापनक पटुता एहि दुनू ग्रन्थक विशालकाय भूमिकामे सहजेँ ध्यान आकृष्ट करैत अछि। हिनक दूटा अनुवाद ग्रन्थ छनि- बाणभट्ट (अंग्रेजी विनिबन्धक अनुवाद)। तथा **सगाइ** (राजेन्द्रसिंह वेदीक 'एक चादर मैली सी' उर्दू उपन्यासक अनुवाद) हिनक नाट्य-कृति **पसिझैत पाथर**केँ 1991 मे साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत कयल गेलनि अछि।

रामदेवझाक उपलब्धि छनि कथा एवं अनुसन्धानपरक निबन्धक क्षेत्रमे। किन्तु, रचना कयलनि अछि ई अनेक विधामे। हिनक गीत आ कविता, संस्मरण आ समालोचना पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल छनि। गीतकार आ कविक रूपमे हिनक ख्याति कम छनि आ से एहि लेल नहि जे ओहि सभ विधाक रचना कमजोर छनि, प्रत्युत् एहि लेल जे कथाकारक रूपमे हिनक छवि बेसी प्रशस्त छनि। साहित्य-क्षेत्रमे हिनक पदार्पण कथाकारेक रूपमे भेल। पुरना (दरभंगा) 'मिथिला मिहिर'मे हिनक दूटा कथा प्रकाशित भेल 1953 इ.मे- **मुदा आब की ?** तथा **दू ठोप नोर**। ई छात्रावस्थाक रचना छलनि। छात्रक रूपमे गीत, कविता तथा कथा खूब लिखलनि आ छठम दशकक अन्त धरि साहित्यकारक रूपमे हिनक चर्चा होअऽ लागल।

किन्तु, स्थापित रचनाकारक रूपमे रामदेवझा मान्य भेलाह सातम दशकमे; आ सेहो मुख्यत: कथाकारक रूपमे। उल्लेखनीय अछि जे एहि समय धरि ललित, राजकमलचौधरी, मायानन्दमिश्र, सोमदेव, धीरेन्द्र, बलराम, हंसराज आदि कथाकार स्वतन्त्र भारतक समकालीन चेतनाकेँ चिन्हबाक आ तदनुसार समय ओ समाजकेँ मूल्यांकित करबाक काज प्रारम्भ कऽ देने छलाह। युगीन बोध आ व्यापक दृष्टिकोणक एही पृष्ठभूमिमे रामदेवझाक कथाकार अपन उत्कृष्टता प्राप्त करैत अछि। माटि-पानिक सोन्हाओन गन्ध, जन-जीवन आ लोक-संस्कृतिसँ सुरुचिपूर्ण सम्पर्क आ स्वाभाविक भाषाक कारणेँ हिनक कथा अपन एकटा विशिष्ट स्थान रखैत अछि। कुलानन्दमिश्र हिनका सम्बन्धमे लिखैत छथि-

ललित, राजकमल आ मायानन्दमिश्रक पीढ़ीमे रामदेवझा एकटा अत्यन्त सहज आ सुरुचि-सम्पन्न कथाकारक नाम थीक। रामदेवबाबू अपन माटि पानिक संग किछु अबोध, मुदा अत्यन्त गाढ़ परिचय आ सम्बन्ध रखनिहार कथाकार छथि। मिथिला प्रदेशक सामान्य जन-जीवन आ बन्न होइतो मुक्त लगनिहार संस्कार हिनक कथामे खूब ठेठ भाषामे चित्रित भेल अछि। मोनक सुकुमारता, मनोवैज्ञानिक नजरि आ सामाजिक प्रश्नक प्रति अनुरक्ति रामदेवझाक कथा-संसारकेँ फराक आ नितान्त अपन रंग-रूप प्रदान कयलक अछि।

किन्तु, रामदेवझाक साहित्यक एकटा सीमा छनि। सर्जनात्मक साहित्यक माध्यमसँ सामाजिक स्थितिक प्रति व्यक्त विचार हो अथवा कोनो साहित्यिक कृति वा कृतिक विश्लेषण-विवेचन-ओ कतहु प्रखर नहि होइत छथि। भोरक रौद, आ ताहूमे जाड़क मास हो तँ आओर, नीक लगैत छैक, किन्तु जखन मध्याह्नक सूर्यक प्रखरता आवश्यकता हो तखन भोरक रौद काज नहि दैत छैक। रामदेवझाकेँ स्थितिक परिचय छनि, मुदा खखसि कऽ बजबामे जेना संकोच होइत छनि। यैह कारण थिक जे हिनक कथामे ओ ताप नहि भेटैत अछि जाहिसँ मूल्यहीन मान्यता जरि कऽ छाउर भऽ जाय। हिनक आलोचनामे सेहो कहितो छी, मुदा कतहु खराब ने लागि जानि वला मानसिकता भेटैत अछि। सम्भव थिक, रामदेवझा 'अर्ध ढकत छवि पातु हैं, कवि-अच्छर, कुच, केश' वला सिद्धान्तक पोषक होथि, किन्तु आधुनिक युग एकर समर्थन नहि करैत अछि।

(शिखरिणी, चेतना समितिसँ साभार)

●

Scanned by CamScanner

आकुंचित नहि प्रशस्त

डा. श्रीरत्नेश्वरमिश्र

रंग-रूप, वेश-भूषा आ समेकित रूपसँ अपन प्रत्यक्ष कायिक प्रतीतिसँ क्षीण आ आकुंचित सन मुदा वस्तुतः शान्त, विनीत, निरभिमानी, सरल आ सर्वतोभावेन मैथिली भाषा आ साहित्यक सेवामे सतत् संलग्न स्पृहणीय आ सम्पन्न व्यक्तित्वक स्वामी डा. रामदेवझा एहन गनल-बीछल लोकमेसँ छथि जनिकर साहित्यिक सर्जनात्मक उपलब्धि तँ विशिष्ट, समादृत आ पुरष्कृत छनिहें ओ आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन' आ प. चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क परम्परामे लेखक साहित्यकार लोकनिक निर्माता सेहो छथि आ से कोनो लम्फ-लम्फा अथवा दैनन्दिन व्यवहारमे शब्दाडम्बर आ वस्त्राभरणक कोनो चाकचिक्यक बिना ।

रामदेवबाबूसँ हमर परिचय कहिया भेल से मोन नहि अछि, मुदा ई मोन अछि जे 1974 इ. मे जखन हम इतिहासक व्याख्याताक रूपमे एस.पी. कॉलेज, दुमका छोड़ि सी.एम. कॉलेज दरभंगा अयलहुँ तँ अनायासे एतुक्का मैथिली विभागक तत्कालीन अध्यक्ष डा. शैलेन्द्रमोहनझा आ हिनकासँ आत्मीय सम्बन्ध स्थापित भऽ गेल आ क्रमशः ओ दृढ़तर होइत चल गेल । ओना हिनका विषयक अभिज्ञान हमरा 1967 इ.सँ एस.पी. कॉलेजमे व्याख्याताक पद ग्रहण कयलाक बादेसँ भऽ गेल छल जतऽ 1963 इ. धरि दू वर्ष लेल ओ मैथिलीक व्याख्याता रहि चुकल रहथि । ओतऽ हिनकर कतिपय निकटस्थ आ प्रशंसक सहकर्मी, विशेष रूपसँ हिन्दीक स्व. प्रो.विद्यापतिठाकुर आ मैथिलीक हिनकर उत्तराधिकारी व्याख्याता आ स्वयं विशिष्ट मैथिली साहित्यकार डा. विद्यानाथझा 'विदित', हिनका विषयमे कहल करैत रहथि आ हमरा मोनमे हिनकर व्यक्तित्वक एक छवि बनैत चल गेल छल, मुदा हिनकासँ साक्षात्कार-परिचय सम्भवतः 1974 क बादे भेल आ 1975 सँ जखन मिथिला विश्वविद्यालयक अधिकांश स्नातकोत्तर विभाग नरगौना पैलेस स्थानान्तरित भेल तँ हिनकर मैथिली विभाग आ हमर इतिहास विभाग दुनू पड़ोसी भेलाक कारणें हमरा लोकनिक निकटता बढ़िते गेल ।

हम नित्य अपन विभाग हिनकर विभागक सोझाँ दऽ कऽ होइते जाइत छलहुँ - वैह हमर विभागक मार्ग छल । जाइत-अबैत कहियो अपना मोने तँ कहियो हिनका अथवा शैलेन्द्रबाबू द्वारा बजा लेल गेलाक कारणें प्रतिदिन नहियो तँ एक-दू दिन बाद कऽ कऽ हमर बैसार, नहि तँ कम-सँ-कम प्रणाम-नमस्कार, हिनका संग होइतहि छल । मैथिली विभाग आ ओहि दऽ कऽ जयबा-अयबाक क्रममे आ अन्यथा ओहि विभागक छात्र लोकनिसँ जखन-तखन हुनका विषयमे किछु-किछु देखबा आ बुझबाक जे सुयोग होइत छल ताहिसँ हमर अकाट्य निष्कर्ष अछि जे रामदेवबाबू अपन वर्गमे कहियो बिना तैयारीक नहि जाथि आ बिना पर्याप्त कारणें नहि जाथि से तँ सम्भवे नहि रहैक । एतऽ ई कहि देब आवश्यक जे पर्याप्त कारण रहलोपर ओ कोन दिन वर्ग नहि गेलाह से हुनका प्रायः स्मरणे होयतनि आ प्रतिवर्षक हुनकर छात्रलोकनि सेहो एहन एक अथवा दू दिनक विषयमे बहुत अवधि बीति गेलाक बादो स्मरणसँ कहि सकैत छथि । हमर व्यक्तिगत मान्यता अछि जे शोध आ लेखन सेहो शिक्षकक धर्म छैक, मुदा वर्गमे अध्यापन करब ओकर पहिल धर्म थिकैक, प्रायः सभसँ महत्त्वपूर्ण धर्म सेहो । रामदेवबाबू ख्यातनामा साहित्यकार आ शोधकर्त्ता छथि मुदा निष्ठावान शिक्षक रहलाक कारणें ओ हमर आकलनमे सम्मान आ श्रद्धाक बेसी पैघ अधिकारी छथि ।

हमरा तीन-चारि अवसरपर हिनक गाम कबिलपुर (आब दरभंगाक उपनगर लहेरियासरायक एक मोहल्ला) जयबाक सुयोग सेहो भेटल जाहिमे एक बेर हिनकर कन्याक विवाह आ आओर एक बेर एहने कोनो मांगलिक आयोजनमे सम्मिलित होयबालेल आ एकाधिक बेर मैथिलीमे लिखल अपन निबन्धादिपर चर्चा आ परिणामिक परिष्कार लेल ।

Scanned by CamScanner

प्रत्येक बेर आ खास कऽ कन्याक विवाहक अवसरपर ओ अत्यन्त आत्मीयतापूर्वक हमरा अपन निवासक भीतरी भागमे सेहो लऽ गेलाह, चाह-मधुर तँ सभ बेर होयबे करैत रहैक । हिनकर व्यक्तित्वे जकाँ हिनकर घरो बाहरसँ आकुंचित आ दीन-हीन सन मुदा भीतरसँ बेस प्रशस्त, सम्पन्न आ सुरुचिपूर्ण । घर आ व्यक्तित्वक ई वाह्य आ आभ्यन्तरिक द्वित्व प्रत्यक्षत: सेठ-महाजन सभक घर सन प्रतीत होइत अछि मुदा ओ लोकनि एहन प्राय: प्रशासनिक अथवा लूट-पाटक प्रकोपसँ बचबा लेल करैत होयताह मुदा रामदेवबाबूक सन्दर्भमे ई सहज नैसर्गिक तथ्य अछि । हुनका ककरहुँसँ बचबाक प्रयोजने नहि छनि मुदा हुनका लग मात्र साहित्यकर्मी आ ज्ञानार्थी, जिज्ञासु आ पिपासु पहुँचि सकथि ताहि लेल आवश्यक जे हुनकर आभ्यन्तरिक विस्तार, सम्पन्नता आ सुरुचि जकरा - तकरा लेल आकर्षक नहि बनय आ ई हमर व्यक्तिगत अनुभव अछि जे साहित्य चर्चा लेल अथवा जिज्ञासु-पिपासुक सन्तुष्टि लेल हुनका कखनहु समयक अभाव नहि रहलनि, ओ कखनहु आकुंचित नहि रहलाह । वस्तुत: ओ एकान्त साधक छथि, मुदा मैथिलीक हित साधनमे ओ ऐकान्तिकताक कोन कथा आनो बहुत किछु निछाओर कऽ सकैत छथि ।

हम हिनकर साहित्यिकी उपलब्धिक मूल्यांकन करबाक धृष्टता नहि कऽ सकैत छी तकर सर्वोपरि कारण हमर अल्पज्ञता अछि अर्थात् हम हिनकर साहित्यसँ पूर्ण परिचित नहि छी, सभटाक कोन कथा, किछु अंश मात्रे हमर पढ़ल अछि । इतिहास हमर रोजी-रोटीक माध्यम रहल आ ताहिलेल वैह हमर प्रथम प्रेम सेहो अछि । स्वभावत: हम ताहिमे बेसी काल ओझरायल रहलहुँ आ हमर क्रियाकलापक वैह केन्द्र रहल । मैथिलीक रचना सभ बहुत कम पढ़ि पौलहुँ । जे थोड़-बहुत पढ़लहुँ से प्राय: कोनो दबावमे । दबाव एहि बातक जे इतिहासक शिक्षक भेलाक कारणेँ हमर जे किछु प्रतिष्ठा बनल तकर आधारपर मैथिलीक कोनो कोनो मंचपर भाषण देबालेल हमरा आमन्त्रित कयल जाइत छल आ ताहि लेल तैयारी करबाक क्रममे किछु तँ पढ़ऽ पड़ितहि छल । एक दोसरो दबाव बादमे पड़ऽ लागल आ से छल लगभग पन्द्रह वर्ष पूर्व दिल्लीक साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शी मंडलक तत्कालीन संयोजक डा. सुरेश्वरझा जखन-तखन हमरा कोनो-कोनो विचारगोष्ठीमे विचारार्थ स्वीकृत विषयक पृष्ठभूमि लिखबा लेल कहथि । मैथिलीये किएक कोनहुँ विषयक पृष्ठभूमि भेलैक तँ इतिहासे आ तकरा हम अस्वीकार कोना कऽ सकैत रहियैक । एहि प्रकारक लेखन लेल हमर इतिहास ज्ञान अपन स्थानपर मुदा वांछित मैथिली साहित्यक ज्ञानलेल हम जाहि दू गोटापर अवलम्बित भेलहुँ ताहिमे एकटा छथि स्वयं डा. रामदेवझा । एहि प्रकारक पहिल अवसर छल 28-29 जनवरी 1995 केँ 'मैथिली काव्यक विकास'पर साहित्य अकादेमी तथा मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ताक संयुक्त तत्त्वावधानमे कलकत्ताक महाजाति सदनमे आयोजित संगोष्ठी जाहिमे हमरा 'मैथिली काव्य विकासक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि' विषयपर पत्र प्रस्तुत करबालेल कहल गेल । उक्त आलेख मैथिलीमे एवं मैथिली साहित्यक कोनो विषयपर निबन्ध लिखबाक हमर पहिल प्रयास छल । हमरा ई कहबामे कोनो संकोच नहि अछि जे ई निबन्ध लिखबाक क्रममे हम मैथिलीक अनेक उपलब्ध काव्य ग्रन्थ आ तकरा सभक यथासम्भव उपलब्ध समीक्षा सभ सेहो पढ़ि गेलहुँ । संगोष्ठीमे प्रस्तुत करबासँ पूर्व अपन निबन्ध हम रामदेवबाबूकेँ सुनौलियनि । एहि तरहेँ संगोष्ठीमे संभावित प्रश्नोत्तर लेल सेहो हम अपनाकेँ तैयार करऽ लगलहुँ मुदा हमर निबन्धसँ रामदेवबाबू ततबा प्रभावित भेल रहथि जे संगोष्ठीमे प्रश्न पूछि जखन हमर काव्यज्ञानक जाँच करबाक क्यो-क्यो चेष्टा कयलनि तँ वैह आगू बढ़ि तकर निराकरण करऽ लगलाह । हम अपन रक्षा कऽ सकितहुँ की नहि से भिन्न बात मुदा रामदेवबाबू जे कयलनि से सम्भवत: एहू कारणेँ जे मैथिलीसँ इतर कोनो आन विषयक लोक मैथिलीमे लेखन दिस प्रवृत्त भेल छथि, तँ ओ आरम्भहिमे बिदकि नहि जाथि । जे हो, हुनकर एहि प्रोत्साहनकेँ हम बिसरि नहि सकैत छी ।

रामदेव बाबूक सदाशयता पुन: तखन देखबामे आयल जखन 5 सँ 7 फरवरी धरि 2002 इ.मे पटनामे श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकारक जन्मशतीक अवसरपर साहित्य अकादेमी द्वारा 'मैथिली पत्र-पत्रिका' विषयपर आयोजित संगोष्ठीमे हमरा 'मिथिलाक कला एवं संस्कृति आ पत्र-पत्रिका' विषयपर आलेख प्रस्तुत करबाक लेल कहलनि । हमर प्रस्तुतिक संगोष्ठीमे बेस सराहना भेल आ हमरा लागल जे हम मेहनतिसँ जे लेख लिखलहुँ से सफल भेल, मुदा बादमे बहुतो गोटे कहलनि जे हुनका तँ रामदेवबाबू पहिनहि कहि देने रहथिन जे रत्नेश्वरबाबू बहुत बढ़ियाँ आलेख प्रस्तुत करऽवला छथि ।

Scanned by CamScanner

वस्तुत: ओहू बेर हम जे किछु लिखने छलहुँ से हम पहिने हुनकहि सुनौलियनि आ ओ ततबा प्रभावित भेलाह जे सभकेँ ई बात कहि देलथिन ।

एतऽ ईहो उल्लेखनीय जे ओ बहुत पहिने 1977मे लहेरियासरायक संकल्पलोकक तत्त्वावधानमे आयोजित विद्यापति पर्व समारोहक अवसरपर प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'संकल्प'मे हमरा सँ 'बल्दियाबाड़ीक लड़ाई' नामक लेख लिखबौलनि आ प्रकाशित कयलनि । ई लड़ाई बंगालक नबाव सिराजुद्दौला आ तकर पितियौत-मसियौत पूर्णियाँक नबाब शौकतजंगक बीचमे भेल रहैक जाहिसँ कमजोर भऽ सिराजुद्दौला अंग्रेजसँ कलकत्ताक लड़ाइमे परास्त भेल आ ओत्तहिसँ भारतपर अंग्रेजी शासनक स्थापना प्रारम्भ भेल । एक-दू बरखक बाद ओहि संकल्पक अंगिला अंकक लेल ओ एकटा आरो लेख हमरासँ लिखबौलनि जाहिमे हम एहि सम्भावनाक ऐतिहासिक आधार दिस इंगित कयने रहियैक जे मिथिलाक याज्ञवल्क्यक सूर्योपासनासँ मिस्र देशक राजा अखनाटन अपना ओहिठाम सूर्य क्रान्ति कयने होयताह । एहि उपकल्पनापर हम आगाँ नहि बढ़ि सकलहुँ मुदा एहिपर काज कऽ एम्हर अथवा ओम्हर कोनो निष्कर्ष निकालबाक चेष्टा कयल जाय सकैत अछि । जे हो, हम एहि तरहेँ मैथिली साहित्यक अनुशीलनमे प्रवृत्त भेलहुँ आ एखनो बहुत तँ नहि किछु-किछु समीक्षात्मक लेख जखन-तखन लीखि लैत छी । ओना रामदेवबाबू एकबेर हमरा कहने रहथि जे हम ललित निबन्ध लिखबाक चेष्टा करी तँ नीक हेतैक । हम ई नहि कऽ सकलहुँ । हमर एकमात्र लेख जकरा घीच-घाचि कऽ ललित कहल जाय सकैत छैक से थिक चेतना समिति, पटनाक पत्रिका 'घर-बाहर'मे प्रकाशित नेपालक मधेसी समस्यापर 'कमाय धोतीवाला खाय टोपीवाला' ।

रामदेवबाबूक साहित्यिक उपलब्धिक हम मूल्यांकन करबाक धृष्टता नहि करी तकर आनो कारण अछि । हुनका विषयमे बनल हमर धारणा हुनकर साहित्यक अनुशीलनक अपेक्षा व्यक्तिगत सम्पर्कपर बेसी आधारित अछि । मिथिला तँ सहजे मैथिली साहित्यो, जतबा धरि हम बूझि सकलहुँ अछि, परम्पराप्रिय अछि आ परम्पराक वर्चस्व स्थापित करबालेल मान्य आदर्शसँ सतत् आबद्ध अछि । रामदेवबाबू एक दिस सुमनजी आ अमरजीक अनुसरणमे परम्परावादी छथि तँ दोसर दिस अपन माँटि-पानिसँ सम्पृक्त निजत्वक संग ओ युगचेतना आ सतत् परिवर्त्तनशील लोक-संस्कृतिक प्रखर प्रवक्ता सेहो छथि । एहू रूपमे ओ यात्रीजीक अनुगामी सन लगैत छथि मुदा यात्री जेना नीककेँ नीक आ बेजायकेँ बेजाय ठाँहि-पठाँहि कहि सकैत छथि तेना रामदेवबाबू कोनो बात ओहन भाषामे अथवा ओहन ध्वनिक संग नहि कहि सकैत छथि जाहिसँ ककरहु चोट लगैक । ओ सत्य तँ बजताह मुदा चेष्टा करताह जे प्रिय बाजी । ई धरि निश्चय जे ओ असत्य नहि बजताह । हमर ई आकलन मात्र रामदेवबाबूक साहित्येक विषयमे नहि, बल्कि हुनकहुँ विषयमे अछि । मैथिली साहित्यक बेसी गम्भीर अध्येता हमर एहि आकलनसँ सहमत नहिओ भऽ सकैत छथि, मुदा लगभग तीस वर्ष पूर्व पढ़ल हुनकर कथाकृति 'एक खीरा : तीन फाँक' आ लगभग तीस वर्षसँ बेसीक हुनकासँ अपन सम्पर्कक आधारपर हमर हुनका विषयमे यैह धारणा बनल अछि ।

प्राय: 2007 इ.मे मधुबनीमे मिथिला लोक संस्कृतिक विभिन्न आयामपर आयोजित एक संगोष्ठीक हमरा अध्यक्षता करबाक छल आ ओहिमे रामदेवबाबू मुख्य वक्ताक रूपमे उपस्थित रहथि । ओ लोक संस्कृतिक सभ पक्षक विवेचना करैत अत्यन्त शास्त्रीय प्रस्तुतिसँ सभक मोन मोहि लेलथिन । हुनकर ई शास्त्रीयता हुनक सद्य: प्रकाशित एहि विषयक पोथी 'मैथिली लोक साहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य'मे बादमे देखबालेल सेहो भेटल । ओना एहि बातक परिचय हुनकर एक योग्य शिष्य श्रीयोगानन्दझाक पुस्तक 'आलेख संचयन'क समीक्षा करबाक क्रममे किछु वर्ष पूर्व पहिनहुँ भेटल छल जकर सुविस्तृत भूमिका हिनके लिखल रहनि । मुदा, विनयावनत एहि व्यक्तिकेँ हम जखन अध्यक्षीय भाषणमे आ सभा समाप्तिक बादो अत्यन्त ज्ञानवर्द्धक आ सुसंगठित भाषणलेल बधाइ देलियनि तँ ओ हमरहि ई कहि उत्साहित करऽ लगलाह जे हमर भाषणमे हुनका कयटा नव बात सिखबा लेल भेटलनि । हम, अपन भाषणमे, आन अनेक बातक अतिरिक्त 'नबाबक नाति', 'चल कबड्डी आरा', 'बरगाहीं साँय' प्रभृति कतिपय लोकोक्तिक निहितार्थक उद्घाटन करबाक चेष्टा कयने छलियैक । नबाबक नाति कहबाक प्रचलन सम्भवत: बंगालक अठारहम शताब्दीक प्रसिद्ध नबाब

Scanned by CamScanner

अलीवर्दीखाँक दू बिगड़ल मिजाज नातिक चरित्र-चित्रण छल तँ चल कबड्डी आरा 1857क राष्ट्रीय विद्रोहक महानायक कुँअरसिंहक प्रति दूर-दूर तक पसरल भूखण्डक जन-जनक एकाकार होयबाक परिचायक आ 'बरगाही साँय' पाँच पतिवाली पत्नीकेँ वरण करबाक मिथिलाक अंग अंचलमे प्रचलित गारि छल जे कर्णक राज्यमे द्रौपदीक प्रति लोकक दृष्टिकेँ उद्घाटित करैत अछि। जे हो, हम अपना विषयमे नहि बल्कि रामदेवबाबूक विषयमे कहऽ चाहैत छलहुँ जे ओ विचित्रतासँ मंडित आरोह-अवरोहपूर्ण भाषणलेल कहियो नहि जानल गेलाह मुदा तथ्यपूर्ण, तर्कसम्मत, सुसंगत आ सुस्पष्ट बात कहबाक क्षमताक कारणेँ सदैव नीक वक्ता आ नीक प्रोफेसर मानल गेलाह। हम हुनका विषयमे सुमनजीक एहि आकलनसँ पूर्णतः सहमत छी जे– ओ लेखन-भाषण दुनूमे अनुपम उपहार छथि।'

साहित्यकारक रूपमे रामदेवबाबूक विषयमे हम एतबहि कहि सकैत छी जे ओ महान कथाकार छथि आ जहिया मैथिलीक पटलपर ललित, राजकमल, मायानन्द प्रभृति कालजयी कथाकार सभ परिव्याप्त रहथि तहिया ओ अपन बल-बूतापर **एक खीरा : तीन फाँक, मनुक सन्तान** आ **धरती माता** सदृश कथा-संग्रह सभक माध्यमसँ अपन विशिष्ट स्थान बनौलनि। ओ नाटककार छथि आ जहिया हुनका हुनकर नाटकक संकलन **पसिझैत पाथर**पर साहित्य अकादेमीक पुरस्कार भेटलनि तँ लोककेँ आश्चर्य भेलैक मुदा हुनकर नाटको सभ सामाजिक परिस्थिति आ समस्याक विषयमे हुनकर अन्तर्दृष्टिक परिचायक अछि। कोनो ने कोनो रूपमे ओ एहि माध्यमसँ शहरक तुलनामे गामक वर्चस्वकेँ स्थापित करबाक चेष्टा सेहो कयलनि अछि। कहानी आ नाटकक अतिरिक्त ओ गीत, कविता, संस्मरण आदि सेहो प्रचुर मात्रामे लिखलनि आ एहू सभमे कतहु ओ अपन निर्धारित उत्कृष्टताक मानदंडसँ विचलित नहि भेल छथि, मुदा हमर दृष्टिमे हुनकर प्रतिष्ठाक सबलतम आधार हुनक समालोचना आ शोधपरक ग्रन्थ सभ छनि जकर गुणवत्ता तँ स्पृहणीय छैके, परिमाणो पर्याप्त छैक। हुनकर अनुसन्धानात्मक प्रवृत्ति आ क्षमताक परिचय हमरा हुनकर प्रकाशित पोथी सभक अतिरिक्त एक आन प्रसंगमे तखन भेटल जखन ओ हमरा महाकवि लाल दास रचित **विरुदावलीक** एक प्रति देलनि आ कहलनि जे एहिमे दरभंगाक महाराज रमेश्वरसिंहक शासनकालक कतिपय एहनो बातक उल्लेख भेटत जे अन्यत्र उपलब्ध नहि अछि। कविताक उक्त पोथी दुर्लभ सन अछि, मुदा ओ हमरा देलनि आ ओकरहि आधारपर पटनामे 'बिहार क्षेत्रीय अभिलेख संरक्षण समिति' द्वारा आयोजित 'क्षेत्रीय भाषामे इतिहास' विषयपर आयोजित संगोष्ठीमे हम 'लाल दासक विरुदावलीमे इतिहास' शीर्षक अपन पत्र प्रस्तुत कयलहुँ जे बादमे अमरजीकेँ समर्पित अभिनन्दन ग्रन्थ **श्री अमर-अर्चना**मे प्रकाशित भेल।

हम रामदेवबाबूक अभिनन्दनमे 'बुकाननक पूर्णियाँ विवरण आ मिथिला'पर लेख प्रस्तुत करऽ चाहैत छलहुँ मुदा कतिपय विवशतावश ओ लेख पूर्ण नहि भऽ सकल अछि। भविष्यमे हम ओ लेख पूर्ण करब अवश्य किएक तँ ओहिसँ पूर्णियाँक ऐतिहासिक ओ सांस्कृतिक दृष्टिसँ मिथिलाक संग होयबाक तथ्य अधिक दृढ़तासँ स्थापित करब सम्भव होयत आ ई स्पष्ट करब सम्भव होयत जे कोना कोसी सहरसाक संग पूर्णियाँकेँ मुख्य भूमि मिथिलासँ काटि एक भिन्न प्रकारक संस्कृतिक अवलम्बन करबालेल विवश कयलक। हम नितान्त व्यक्तिगत कारण सभसँ सेवा निवृत्तिक बाद दरभंगा छोड़ि 2005 मे पटना आबि गेल छी, मुदा हमर हृदय दरभंगा रहितहि अछि जाहि लेल रामदेवबाबू प्रभृति कतिपय शोधकार्यकेँ समर्पित व्यक्ति सभ छथि जे सदैव हमरा हमर उपलब्धिसँ बेसी सम्मान देलनि आ दिऔलनि। सुरेश्वरबाबू कोना हमरा साहित्य अकादेमीक क्रियाकलापसँ जोड़लनि आ रामदेवबाबू कोना प्रोत्साहन देलनि से तँ पहिनहि कहि चुकल छी, मुदा तकर परिणति भेल अमरजी द्वारा हमरा 2002 सँ 2007 धरि साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शी मंडलक सदस्य मनोनीत करबामे। साहित्य अकादेमीमे अमरजी रामदेवबाबूक आ रामदेवबाबू सुरेश्वरबाबूक उत्तराधिकारी रहथि। हम अमरजीक स्नेहभाजन तँ रहबे करी मुदा हमरा मनोनित करबाक हुनकर निर्णयमे रामदेवबाबूक अदृष्ट हाथ सेहो रहल होइनि से सम्भव। हम हुनकर सुदीर्घ साहित्यिक जीवनलेल मंगल कामना करैत छी।

●

Scanned by CamScanner

सतीर्थ डाक्टर रामदेवबाबू

–डा. श्रीरूपनारायणचौधरी

रामदेवबाबूसँ सर्वप्रथम कहिया भेट भेल वा परिचय भेल से नीक जकाँ मोन नहि अछि । किन्तु एतबा धरि सत्ते जे रामदेवबाबू आ हम सरस्वती स्कूलमे पढ़ैत रही आ हमरा डेरापर जखन कखनहुँ कबिलपुर निवासी मोतीबाबू मुखतार हमरा पिताजीसँ भेट करऽ अबथिन, तँ रामदेवक चर्चा हमरा पिताक समक्ष अवश्ये करथिन । ओ चर्चा एहि लेल नहि जे रामदेव हुनक गामक (कबिलपुरक) छलथिन, ओ रामदेवक प्रशंसामे कहथिन जे हमरा गाममे एकटा तेजस्वी बच्चा अछि जे सरस्वती स्कूलमे पढ़ि रहल अछि । हमरा गामक नामकेँ ओ अवश्ये उजागर करत । मोतीबाबूक कथनसँ हमर पिताजी रामदेवक प्रति एकटा नीक विचार बना लेने छलाह । स्कूल-जीवनमे हमरा संग जहिया कहियो रामदेव हमरा डेरापर आबथि तँ हमर पिताजी हिनकासँ अवश्ये कोनो ने कोनो पढ़ऽ-लिखऽ सम्बन्धी गप्प करथिन । रामदेवक संग हमरा देखि हुनका प्रसन्नता होइनि । से सत्ते, मोतीबाबूक ओहि भविष्यवाणीकेँ रामदेव चरितार्थ कयलनि । रामदेवक कारणेँ कबिलपुरक नाम राष्ट्र स्तरपर उजागर अवश्ये भेलैक ।

रामदेवबाबूसँ मित्रता हमरा स्कूले जीवनसँ भेल । किन्तु हम हिनकासँ ओहि समयमे ओतबा प्रभावित नहि रही जतबा धीरे-धीरे बादमे भेलहुँ । मैट्रिक प्रथम श्रेणीमे पास कयलापर ई जीवविज्ञानक छात्र होइतहुँ सी.एम.कॉलेजमे आइ.ए.क छात्र बनलाह । पुन: आइ.ए.पास कयलाक बाद ई बी.ए.आनर्समे मैथिलीमे नाम लिखौलनि । हम आ रामदेवबाबू बी.ए.ऑनर्समे संगे-संग पढ़ैत रही, एही बीच हमरा रामदेवक प्रति स्नेहिल आदरक भाव उत्पन्न होइत गेल जे आइ धरि अछि । जाहि समयमे हमरा लोकनि मैथिली प्रतिष्ठामे पढ़ैत रही, लोकक धारणा मैथिली पढ़निहार छात्रक विषयमे नीक नहि छलैक । मैथिली ऑनर्समे पढ़निहार छात्रकेँ लोक मन्दबुद्धिक बुझैत छलैक । रामदेव विज्ञानक संग मैट्रिकमे प्रथम श्रेणीसँ पास कऽ आयल छलाह जे ओहि समयमे बड़ दुर्लभ छल । किछु लोककेँ आश्चर्य लगलैक । एतबा धरि जे किछु प्रोफेसरो लोकनिकेँ अनसोहाँत जकाँ लगैत छलनि । किन्तु रामदेव भविष्यद्रष्टा बनि विज्ञान नहि पढ़ि, कला आ पश्चात् मैथिली ऑनर्समे नाम लिखौलनि । अपन दृढ़ इच्छाशक्तिक बलेँ ओ बी.ए. ऑनर्सक परीक्षामे प्रथम वर्गमे प्रथम स्थान प्राप्त कयलनि अर्थात् गोल्ड मेडलिस्ट भेलाह । सी.एम.कॉलेजमे पढ़ैत काल रामदेवसँ अतीव आत्मीयताक अनुभव कयलहुँ ।

रामदेव एम.ए.मे पटना विश्वविद्यालयक छात्र बनलाह । डा. सुधाकरझा शास्त्रीक बड़ नजदीकी । हमहुँ पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीयेमे एम.ए.क छात्र बनलहुँ । ओना हमर विचार राजनीतिविज्ञानमे नामांकन करयबाक छल आ ताहि लेल हम चेष्टा सेहो करैत रही । किन्तु एक दिन नागेन्द्रबाबू, स्व. सहदेव महतो, (मंत्री, बिहार सरकार, जतऽ हम ठहरल रही)क ओतऽ हमरासँ भेट कऽ, हमरा अपना संग डा. सुधाकरझा शास्त्रीक डेरापर लऽ गेलाह आ मैथिलीमे नामांकन करयबालय प्रेरित कयलनि । हम ओकर प्राते पटना विश्वविद्यालयमे मैथिली विभागमे नामांकन कराओल । आब तँ प्राय: नित्य रामदेवबाबूसँ भेट होअऽ लागल । सब तरहक गप्प होअय । रामदेवबाबूक संग पटना विश्वविद्यालयसँ ऑनर्समे प्रथम स्थान प्राप्त कयनिहारकेँ हिनकासँ कतेक ईर्ष्या छलनि ताहू प्रसंगे गप होअय आ हम अपन मित्रकेँ सहमल जकाँ देखलियनि – तँ हम हुनका ढाढ़स दैत कहने रहियनि जे तोँ कनेको चिन्ता नहि करऽ, सब ठीके रहतैक ।

एही बीच मिथिला मिहिरमे एकटा स्तम्भ छपब प्रारम्भ भेल जकर नाम छलैक- **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** । ई चिट्ठी बड़ लोकप्रिय भेलैक । खास कऽ स्त्रीगण समाजमे । कारण छल मौगियाही बात लिखबामे दक्षता । पाठककेँ भेलैक जे ई कोनो महिला द्वारा लिखल जाइत अछि । ई कहि सकैत छी जे अंगरेजीफूलक चिट्ठी पढ़बा लेल लोक

Scanned by CamScanner

मिथिला मिहिर कीनऽ लागल । हमहूँ मिथिला मिहिर कीनी आ सर्वप्रथम ओहि चिट्ठीकेँ पढ़ी । हमरा कोना ने कोना विश्वास भेल जे ई स्तम्भ रामदेवे लिखैत छथि । हम रामदेवक डेरापर गेलहुँ आ जाइते पुछलियनि– ऐँ हौ, अंगरेजी फूलक चिट्ठी के लिखैत अछि ?' ओ उत्तर देलनि जे– हम की जानऽ गेलियैक, शेखरजीसँ पुछहुन ।' शेखरजी ओहि समयमे मिथिला मिहिरक सम्पादक छलाह । हम कहलियनि– रामदेव ! तोँ हमरा ठकह नहि, ई स्तम्भ तोँही लिखैत छह, कृपा कऽ हमरा लग असत्य नहि बाजह ।' तखन ओ स्वीकृतिमे माथ हिलौलनि आ कहलनि जे– ई बात ककरो लग नहि बजिहक ।' हमहूँ एकरा गुप्ते रखबाक आश्वासन देलियनि । महिला मनोवृत्तिकेँ नीक जकाँ प्रस्तुत करबाक क्षमता रामदेवबाबूमे नीक जकाँ छनि । हिनक महिला–परक जे कोनो कथा वा निबन्ध छनि ताहिमे स्त्रैण भाषाक प्रयोगक संगहि स्त्री–मनोवृत्तिक चित्रांकन हिनक आनो–आन रचना सबमे भेटैत अछि ।

पुनः ईश्वरक कृपा आ अपन दृढ़ संकल्पक कारणे रामदेवबाबू एम.ए.मे प्रथम वर्गमे प्रथम स्थान, पटना विश्वविद्यालयमे सेहो प्राप्त कयलनि, ततबे नहि, पटना विश्वविद्यालयमे मैथिली एम.ए.मे सर्वोच्च अंक प्राप्तिक 1954मे स्थापित रेकॉर्डकेँ रामदेव तोड़लनि । हिनक ओ रेकॉर्ड तखने टूटल जखन पटनो विश्वविद्यालयक परीक्षामे पोथी खोलि कऽ लिखबाक परिपाटी आ पैरवी–पैगामक उदाम चलनिसारि भऽ गेल । आ हिनकासँ जे केओ द्वेष वा ईर्ष्या करैत छलथिन से मुँह तकिते रहि गेलाह ।

एम.ए. पास कयलाक बाद रामदेवबाबू दुमकाक एस.पी. कालेजमे प्राध्यापक पदपर योगदान देलनि । हमहूँ एम.ए.क बाद रोसड़ा कॉलेजमे प्राध्यापक पदपर योगदान कयलहुँ । किछु दिनुका बाद 1963मे पटना कालेज आ सी.एम.कॉलेज लेल मैथिली–व्याख्याता–पदक हेतु बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा अन्तर्वीक्षा आयोजित भेल । रामदेवभाइ अन्तर्वीक्षा लेल प्रस्तुत भेल छलाह आ हमहूँ गेल रही । रामदेवकेँ देखि हम पुछलियनि– जँ कहऽ तँ हम इन्टरभ्यू नहि देब ।' ओ कहलनि– नै नै, तोहूँ दहक आ हमहूँ दैत छी । जे हेबाक हेतैक से हेतैक ।' हमर पिताजी प्रयासरत छलाह हमरा सी.एम.कॉलेज अनबा लेल । किन्तु हम ईश्वरसँ मनबैत रही जे एतऽ कोनहुना रामदेवकेँ भऽ जाइनि । हिनका सी.एम.कॉलेजमे स्थिर भेलापर हम पुनः एहि कॉलेजमे अयबाक चेष्टा करब । कारण इहो छल जे ओहि समयमे पैरवी कम होइत छलैक । ककरो योग्यताक अनदेखी प्रायः नहिएँ जकाँ होइत छलैक । हमरासँ बड़ नीक रिजल्ट रामदेवक छलनि– तेँ सेहो हमरा मोनमे ई भाव आयल जे रामदेव लग हमरा नहिएँ होयत ।' रामदेवबाबूक प्रति हमर समर्पण भाव यैह छल । पटना कालेज आ सी.एम्. कालेज दुहू ठामक लेल रामदेवक पहिले स्थानमे नाम अनुशंसित भेलनि । ई सी.एम. कालेज ज्वाइन कयलनि । एहि रूपमे रामदेवबाबू पटना विश्वविद्यालयसँ भिन्न बिहारक कोनहु विश्वविद्यालयमे बिहार लोकसेवा आयोग द्वारा अनुशंसाक आधारपर मैथिली व्याख्याताक पद पर नियुक्त भेनिहार पहिल व्याख्याता भेलाह । हमहूँ बादमे सी.एम. कॉलेज अयलहुँ । हमरा सी.एम. कॉलेजमे स्थिर होयबामे समय लागल । किन्तु अन्ततोगत्वा सफल भेलहुँ ।

एही बीच हिनक एकटा कथासंग्रह प्रकाशित भेलनि– **एक खीरा : तीन फाँक** । एहि कथाकेँ पढ़लापर हम रामदेवबाबूकेँ साधुवाद देबऽ हुनक कबिलपुर स्थित घरपर गेल रही । एहि कथामे जे हिनक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण अछि तकरा विषयमे की लिखू ! संयोगसँ एहि कथा संग्रहकेँ अन्तरस्नातक वर्गक कोर्समे दऽ देल गेल रहैक । हमहीँ सी.एम.कॉलेजक विज्ञान संकाय ओ कला संकाय दुहू ठाम पढ़बैत रही । एक दिन विज्ञान संकायमे वर्ग समाप्त कऽ जखन हम डा. एल.के.मिश्रजी (प्रधानाचार्य)क डेरापर गेलहुँ तँ ओ एहि कथाक प्रसंग प्रश्न कयलनि जे– **एक खीरा : तीन फाँक** ? एहि कथाक एहन नाम किएक पड़लैक ?' हम विस्तारसँ कथाक प्रसंग बुझौलियनि– आ अन्तमे इहो कहलियनि जे– सर, खीराकेँ पटकबै तँ तीने फाँक होइत छैक ।' ओ हँसऽ लगलाह । ओ प्रायः एकर प्रयोग सेहो कयलनि । आ एहि कथाकेँ अपन बेटीसँ लऽ कऽ पढ़बो कयलनि ।

एक खीरा : तीन फाँक बड़ प्रसिद्ध भेल । एतबा जे एकर अनुवाद हिन्दीमे सेहो भेल जे ओहि समयमे धर्मवीर भारती द्वारा सम्पादित हिन्दीक प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्रिका **धर्मयुग**मे प्रकाशित भेल छल ।

Scanned by CamScanner

एकर बाद **मनुक सन्तान** कथा संग्रह प्रकाशित भेलनि आ ओहो कोर्समे दऽ देल गेलैक । हमही एकरो पढ़ाओल करी । किन्तु **एक खीरा : तीन फाँक** सदृश नहि भेलनि । प्रगतिवादी लेखक बनबाक इच्छा भेलनि तकरा चरितार्थ करबाक चेष्टा कयलनि । मैथिलीमे कथा साहित्यकेँ समृद्ध करबामे हिनक योगदान स्तुत्य छनि । मैथिली साहित्य हिनक **एक खीरा : तीन फाँक, मनुक सन्तान, इजोती रानी, धरतीमाता, आजी माँ** एवं कतेको असंकलित श्रेष्ठ कथासँ समृद्ध भेल अछि । **अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग, रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** इत्यादि मिहिरक धारावाहिक स्तम्भक रूपेँ पाठकक समक्ष आयल छल आ अपना समयमे खूब लोकप्रिय भेल छल । आब ओ तीनू पत्रात्मक उपन्यास पुस्तकाकाकार प्रकाशित भऽ गेल अछि जकरा मिथिला मिहिरक पुरना पाठक सब तँ सहजहिँ, नवको तूरक पाठक सब रुचिपूर्वक पढ़ि रहल छथि । रामदेवबाबूक नाट्य-कृति सेहो छनि **पसिझैत पाथर** जे बड़ लोकप्रिय भेल आ एही पुस्तकपर हिनका साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत सेहो कयल गेलनि । ई अनुसन्धान-आलोचना, अनुवाद, सम्पादन आदि समस्त साहित्यिक विधाकेँ अपन लेखनीसँ समृद्ध कऽ ओकरा जे ऊँचाइ प्रदान कयलनि अछि से अकथनीय अछि ।

किन्तु एहि साहित्य-साधक आचार्यकेँ एकर पुरस्कार हुनक अपने विभाग(मैथिली विभाग च.मि.कॉलेज एवं स्नातकोत्तर मैथिली विभाग) नहि देलकनि । सतत् योग्यताक अनदेखी कयल गेल आ ई साधक मौनभावसँ सब अन्यायकेँ देखैत रहलाह आ अन्ततोगत्वा 1996 इ.मे विभागसँ सेवानिवृत्त भऽ पुनः साहित्य-साधनामे अपनाकेँ लगा लेलनि ।

रामदेवबाबू आ हम सी.एम.कॉलेजमे संगहि रहलहुँ । विभागमे सबसँ बेसी वर्ग हमरे दुनूकेँ लेबऽ पड़य – गुरु लोकनिक कृपासँ । एहि तरहेँ समय बितैत गेल आ रामदेव स्नातकोत्तर विभाग, जे नरगौनामे चलऽ लगलैक ततऽ चल गेलाह । किछु दिनुका बाद 1984 इ. मे हमरा प्रधानाचार्य पदपर सी.एम.कॉलेजसँ, जे.एन.कॉलेज, नेहरा स्थानान्तरित कयल गेल । ताहू दिन हम सर्वप्रथम रामदेवकेँ पूछऽ गेलियनि जे – प्रधानाचार्य पदपर योगदान करबाक अछि, कहिया करी ?' ओ कहलनि जे- सुमनजीसँ नीक दिन तका लैह ।' रामदेवबाबू हमरा संगे गेलाह सुमनजीक ओतऽ आ दिन निश्चित कऽ हम प्रधानाचार्यक रूपमे कॉलेजमे योगदान कयलहुँ । हमरा लोकनिक कार्यक्षेत्र दू भऽ गेल मुदा सान्निध्य कम नहि भेल ।

सी.एम.कॉलेजसँ छात्र ओ शिक्षक लोकनि सालमे एक बेर टूरपर जाइत छलाह । नवम्बर 1965 इ.मे मैथिली विभागसँ सेहो टूरक प्रोग्राम बनलैक । शिक्षकक रूपेँ डा. शैलेन्द्रमोहनझाजी, रामदेवबाबू आ हम रही आ प्रायः चारिटा छात्र सेहो छलाह जाहिमे डा. झाक जेठ बालक अरुणजी सेहो छलाह जे सम्प्रति विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर अंग्रेजी विभागमे अध्यक्ष छथि । ई यात्रा छल रामेश्वरम् धरिक । ओहि यात्रामे रामदेवबाबूक संग यात्रा करबाक जे अनुभव भेल तकरो वर्णन अपेक्षित अछि । जाइत काल हम सब सोझे रामेश्वरम् धरि गेलहुँ – किन्तु घुमबाकाल मद्रास (आब तमिलनाडु) राज्यक प्रायः सब तीर्थ स्थलपर गेलहुँ आ अन्तमे जगन्नाथधाम होइत घुरि कऽ अयलहुँ ।

रामदेवबाबू हृदयसँ कलाकार छथि । ओ भाँति-भाँतिक कला सिखने-जोगौने छथि । ओकरा सभकेँ अवसर पड़लापर अभिव्यक्त करैत छथि । ई विलक्षण रूपसँ चम्पी से कऽ सकैत छथि तकर अनुभव हमरा ओही यात्रामे भेल । एक दिन ट्रेनमे सन्ध्याकाल हमरा माथमे दर्द होअऽ लागल । सौंसे देह टटाय लागल दर्द जखन बेसी होअऽ लागल तँ रामदेवकेँ कहलियनि । ओ तुरत हमरा माथक चम्पी आ देहक मालिश करऽ लगलाह । करीब दस मिनट ओ हमरा मालिश कयलनि आ हमरा माथक दर्द समाप्त भऽ गेल । हम एहि प्रसंगकेँ बिसरि नहि सकैत छी । जखन कखनो ई घटना स्मरण अबैत अछि तँ सहजहि जॉनी वाकरक 'इस चम्पी मे बड़े बड़े गुण' वला प्रसिद्ध गीत अनायास मोन पड़ि जाइत अछि ।

एहि यात्रामे रामदेवबाबूक व्यावहारिक ज्ञानक कतेको ठाम अनुभव भेल । पन्द्रह दिनुका एहि टूरक प्रोग्राममे कखन कोन वस्तुक आवश्यकता होयत आ परदेशमे नहि उपलब्ध भेलापर जे असुविधा होइतय तकर ध्यान हिनके छलनि । यात्रामे दतमनि पर्यन्त ओ अपना झोड़ामे रखने छलाह आ हमरा चुप-चाप भोरे एकटा कऽ दतमनि दऽ देल

Scanned by CamScanner

करथि । कखनो भूख लागत आ खयबाक वस्तु जँ उपलब्ध नहि होयत, तँ ताहि लेल ओ अपना झोड़ामे सातु आ खजूर बनबा कऽ लेने गेल रहथि ।

रामेश्वरम् यात्राक क्रममे एकटा स्मरणीय बात ई भेल जे– रामदेवबाबू जयबाकाल अपना संग एकटा छाता सेहो लऽ नेने छलाह । ओहि छाताकेँ देखि सबसँ बेसी डा. झा आ संगहि हमहूँ बड़ आलोचना कयने रहियनि । हमरा लोकनिक आलोचना एहि हेतु छल जे एहि यात्रामे छाताक कोन काज हेतैक । हमरा लोकनि ट्रेनमे रहब, ट्रेनसँ उतरलाक बाद कतहु जयबा-अयबा काल सेहो कोनो ने कोनो सबारी रहबे करत, तखन एहि छाताक की प्रयोजन ? तेँ हम सब ओहि छाताकेँ देखि खूब हँसल रही । किन्तु जखन त्रिचनापल्ली गेलहुँ । ओहिठामसँ ऊपर पहाड़पर रॉकफोर्ट स्थित गणेश मन्दिर जयबाक छल तँ बुन्नी पड़ऽ लगलैक । रामदेव अपन छत्ता तानि ऊपर पहाड़पर चलि गेलाह । तावत वर्षा जोरसँ होअऽ लगलैक । सब केओ यैह निश्चय कयलनि जे एहि वर्षामे जायब कठिन तेँ नहि गेल जाय । हम आ अरुणजी साहस कऽ रामदेवबाबूक छाता लऽ पहाड़पर चढ़ैत-चढ़ैत ऊपर धरि चल गेलहुँ । रस्ता बड़ दुरुह छल, वर्षा खूब जोरसँ होइत रहैक । हम आ अरुणजी एकहि छातामे पहाड़पर चढ़ैत रही । एही बीच अरुणजी कहलनि जे– सर, छाताक डंटा लोहाक थिकैक आ विद्युत पकड़बाक क्षमता लोहामे बड़ होइत छैक । तेँ ई छाता खतरनाक अछि एहन झंझावातमे । ई सूनि मोनमे औरो डर होअऽ लागल । किन्तु ईश्वरक इच्छासँ आरती बेर धरि गणेश मन्दिर कोनहुना आपस पहुँचलहुँ । बरखे नहि रौदोमे ओ छाता उपकारी सिद्ध भेल । मास रहैक कतिकहरक आरम्भ । ओहि समयमे अपनो ओहि ठाम रौद छिलमिला दैत छैक, तखन तँ हम सभ सुदूर दक्षिण भारतमे रही । एक दिन हम सब गेलहुँ पक्षीतीर्थम् । गोटेक हजार सीढ़ी चढ़ि ऊपर शिखरपर जाय पड़ैत छैक । ओतऽ ठीक मध्याह्नमे दुइ गोट पक्षी नित्य अबैत छैक आ गुड़ान्न खा कऽ उड़ि जाइछ । ओकरा शिव-पार्वती लोक मानैत छैक । हम सभ सीढ़ीपर चढ़ऽ लगलहुँ । कड़कड़ौआ रौदमे सभ पसेनासँ तर-बतर भेल । रामदेव भाइ अपन छाता तानि देलनि आ हमरा इसारा कयलनि जे– तोँहू चल आबह । चढ़बा-उतरबामे जे श्रम भेल मुदा रौदक तापसँ साफे बचि गेलहुँ ओहि छाताक प्रतापेँ । चिदम्बरम्क नटराज मन्दिरमे हमरा दुनू गोटेक एकटा फोटो घीचल गेल छल जाहिमे रामदेवबाबूक बामा हाथमे बैग आ दहिना हाथमे वैह छाता छलनि । एहि प्रसंगकेँ लिखबाक प्रयोजन यैह जे रामदेवबाबूक यात्रामे छाता लऽ जायब कतेक प्रयोजनीय सिद्ध भेल से बुझलहुँ ।

कहल जाइत अछि जे– भगवानक घरमे अबेर होइत छनि, अन्हेर नहि' से चरितार्थ भेल जखन सेवानिवृत्त भेलाक उपरान्त रामदेवबाबूकेँ साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीक सदस्य बनाओल गेलनि । हिनक साहित्य साधनाक उपहार रूपेँ एहि पदपर हिनक चयन कयल गेलनि । एहि पदपर जा ई तदनुकूल मैथिली साहित्यक कतेको ग्रन्थक प्रकाशन अपन देख-रेखमे करओलनि ।

रामदेवबाबू हमरासँ किछु लिखबाक आग्रह सतत् करैत रहलाह किन्तु आलस्यवश हम नहि लिखि सकलहुँ । जे किछु कहियो काल लिखलहुँ ओ हिनके प्रेरणासँ, हिनके आग्रहसँ । पढ़बा-लिखबासँ लऽ घर-गृहस्थीक सेहो सब काज हम हिनकेसँ विचारि करैत रहलहुँ । हमरासँ वयसमे जेठ छथि तेँ सतत आदरक भाव रहल अछि । ओना बेसी नजदीकीमे गुण-दोष दुहू होइत छैक । हम अपन जेठ भाइक रूपेँ हिनका देखैत रहलियनि अछि ।

जीवनमे बहुतो बिहाड़ि-बिर्रोक सामना करैत ई अपन जीवनकेँ सम्हारि लेलनि । ई साहित्य-साधक अपना साधनाकेँ चरमोत्कर्ष धरि पहुँचौताह अवश्ये बढ़ौताह यैह हमर ईश्वरसँ कामना अछि ।

●

Scanned by CamScanner

मैथिलीक समर्पित साधक

-डा. श्रीराजेन्द्रझा

अपन विवेक आ अधिगमक आधारपर अपन बुद्धिबलसँ, अपन कर्मक्षेत्रकेँ विशेष उजागर कयनिहार, मैथिली साहित्यकेँ विशिष्ट अवदान देनिहार, स्वयं निर्मित, मृदुभाषी, सामाजिक, लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यसेवी, चिन्तक, शिक्षक, मैथिली साहित्यक विविध विधाक प्रणेता मित्रवर डा. रामदेवझाजीक योगदानक चित्रणक ई एकटा क्षुद्र प्रयास अछि । मातृभाषा मैथिलीक सेवाक महत्त्वक गहन अनुभव कयनिहार, ओहिमे निहित भावकेँ बूझि-सूझि कऽ ओकर सफलतापूर्वक निर्वहन कठिन भेल करैछ आ जनिकामे ओ भाव होइछ ओहि व्यक्ति द्वारा कयल गेल सेवाक उल्लेख महत्त्वपूर्ण भेल करैछ । एही क्रममे कबिलपुर ग्रामवासी ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक मैथिली विभागक जीवन्त, यशस्वी प्राध्यापक, साहित्य अकादेमीक सक्रिय सदस्य, प्रबुद्ध मैथिली साहित्यकार, प्रतिभाक धनी, सादगीक प्रतिमूर्त्ति, अपनत्वक भावसँ भरल, उत्तरदायित्वक बोधसँ युक्त, साहित्य-सृजनमे लीन, नव-नव विन्दुकेँ उजागर करबाक क्षमतासँ परिपूर्ण, अनुसन्धानमे विशेष अभिरुचि रखनिहार डा. रामदेवझाजीक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक संक्षिप्त परिचयात्मक विवरणी प्रस्तुत करबाक एतऽ प्रयास अछि जे मैथिली साहित्य साधनामे सक्रियताक संग स्वयंकेँ समर्पित कऽ अनुकरणीय छथि ।

मैथिलीमे लेखन, प्रकाशन ओ पाठकक समस्यासँ पूर्ण अवगत रहितहुँ रामदेवजीक लेखनी सतत चलैत रहलनि अछि आ ओ हुनका भाषा-साहित्यक कार्यमे कहिओ अवरोधक नहि बनि सकल । हुनक परिश्रम ओ प्रयासकेँ लाभप्रद अनुभव कहल जाइत अछि । मैथिलीकेँ साहित्य अकादेमीमे स्थान प्राप्त होयब, संविधानक अष्टम अनुसूचीमे स्थान भेटब तथा आनो ठाम ओकर महत्ता स्वीकार भेलासँ सरिपहुँ हुनक प्रसन्न होयब स्वाभाविक मानल जा सकैछ, मुदा जनसाधारणमे मैथिलीक प्रति प्रचलित राजनीतिक पूर्वाग्रहजन्य भावकेँ ओ अज्ञानताक परिचायक मानैत रहलाह अछि आ ओहिसँ कहिओ ओ हतोत्साहित नहि भेलाह ।

विदित हो कि रामदेवजीक मैथिलीक प्रति अनुराग ओ कर्मठताक परिचय हमरा ओहि समयमे भेल जखन कि ओ एम.एल. एकेडमी, लहेरियासरायक छात्र रहथि । पढ़बामे नीक, सम्पर्क साधबामे कुशल, लोकक हृदयमे स्थान बनयबामे निपुण, सहज जीवन, सादगीक रूप, अपन ध्येयपूर्त्तिमे अटल, निर्विकार भावसँ मैथिलीक सेवामे लागल, कार्य सम्पादनक अद्भुत क्षमता ओ उत्साह, क्रियाशीलता, सक्रियता, ईमानदारी, निष्ठापूर्ण जीवनक परिचय दैत मैथिलीक कार्यमे तत्पर रहनिहार हुनक चित्र मानस पटलपर सहजहि अंकित भऽ जाइत अछि । ज्ञातव्य हो कि ओहि समयमे मैथिलीमे समाचार पत्रक प्रकाशन प्रारम्भ भेल छल आ जकर वितरणक क्रममे हिनक दायित्व निर्वाहक रूप सरिपहुँ विलक्षण एवं हृदयग्राही छल आ ओ हिनक अध्यनक मार्गमे कोनो तरहेँ बाधक नहि छल । हँ, हिनक परिश्रमक रूप बढ़ि अवश्य गेल छलनि । मुदा ओहि चुनौतीपूर्ण कार्यकेँ ई सहज रूपमे निर्वहन करैत रहलाह आ लोकक प्रियपात्र बनल रहलाह ।

मित्र रामदेवजी शहर कातक गाम कबिलपुरसँ बिना कोनो वाहनकेँ एम.एल.एकेडमी, लहेरियासराय जे ओहि समय सरस्वती स्कूलक नामसँ विशेष प्रचलित छल अबैत रहथि । मुदा शहरुआ वेष-भूषा ओ आचरणसँ परे एक आदर्श छात्रक रूपमे जानल जाइत रहथि । एक अनुशासनप्रिय छात्र होयबाक फलस्वरूप गुरुजनक कृपा हिनक संबल रहनि । ओहि समयमे एम.एल.एकेडमीक विशेष प्रसिद्धि छलैक आ ताहूमे प्रधानाध्यापक मान्यवर झिंगुर कुमर महोदयक अनुशासनक धाख विशेष छल । ओ एक यशस्वी अनुशासनप्रिय एवं कुशल शिक्षक आ प्रशासक रूपमे प्रख्यात रहथि

Scanned by CamScanner

आ स्कूलक वातावरणकेँ उत्तरोत्तर नीक बनयबाक हुनकामे विलक्षण कौशल ओ क्षमता रहनि । स्कूलक शैक्षणिक वातावरण नीक रहैक संगहि छात्रावासक वातावरण सेहो नीक रहय तदर्थ ओ सतत प्रयत्नशील रहल करथि । ओही शिक्षाप्रेमी, कुशल प्रधानाध्यापकक छत्र छायामे हिनक स्कूलक शिक्षा नीक जकाँ सम्पन्न भेलनि । एहिमे ओही विद्यालयक मैथिली अनुरागी प्रेरक शिक्षक पं. चन्द्रनाथमिश्र अमरजीक कुशल निर्देशन हिनका सहजहि प्राप्त होइत रहलनि । स्वयं अपने मेघावी, परिश्रमी, संयमी, आ अनुशासनप्रिय रहबे करथि, फलस्वरूप स्कूलक परीक्षाफल उत्तम रहलनि । अनुशासनप्रिय ई तेहन रहथि जे स्कूलक छात्र जीवनमे केहनो परिस्थितिमे ई कहिओ अनुपस्थित नहि भेलाह आ तकर परिणामस्वरूप हिनका प्रशस्तिपत्र सेहो भेटलनि । एहि तरहे आदर्शपरक रहल हिनक स्कूल जीवन ।

ओहि समयक प्रचलित व्यवस्थाक अनुरूप नीक छात्रक झुकाओ सामान्यत: विज्ञानक शिक्षा पाबि डाक्टर, इंजिनियर बनबा दिस विशेष रहैत छलैक । विकल्पमे प्रशासनिक अधिकारी बनबाक इच्छा रहैत छलैक । मित्र रामदेवजी परिश्रमी आ मेघावी छात्र रहथि । जँ चाहितथि तँ इहो डाक्टर, इंजिनियर वा अन्य उच्च अधिकारी बनि सकैत छलाह मुदा मैथिलीक प्रति अपन असीम अभिरुचिक कारणे ई साहित्य विधाक सफल छात्र बनब स्वीकार कयलनि आ मैथिलीक आधारपर अपन प्रतिभा विकासक हेतु विशेष रूपसँ उद्यत भेलाह । ओही क्रममे स्कूलमे भाषा अनुरागी शिक्षक आदरणीय अमरजीक सान्निध्य ओ आशीर्वाद सोनामे सुगन्धिक काज कयलक । ओ हिनका प्रगति पथक पथिक बनयबामे पाथेयक रूपमे सतत सम्बल स्वरूप रहलथिन । ओहि समयमे अमरजी लहेरियासरायमे रहैत छलाह बादमे ओ मिश्रटोला, दरभंगामे आवास बनौलनि जतऽ एखन रहि रहल छथि ओ ओही समयमे एक यशस्वी कविक रूपमे विख्यात भऽ गेल रहथि । ओना हुनक लेखनी उपन्यास, कथा, हास्य-व्यंग्य आदि विभिन्न विधामे सेहो चलैत रहैत छलनि । स्कूलक जीवनमे रामदेवजीक अपन शिक्षक अमरजीसँ पहिने सम्पर्क बनलनि आ ओ क्रमश: बढ़ैत-बढ़ैत परिवारक सदस्य जकाँ भऽ गेलाह आ बादमे आबि कऽ सम्बन्धक रूपमे बन्हि गेल अर्थात सामान्य छात्र, प्रिय छात्र, शिष्य, आज्ञाकारी शिष्य आ अन्तमे जामाताक सम्बन्धक रूप हिनक विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न अनुशासनप्रिय शिष्यक प्रतिफल कहल जा सकैछ । अर्थात् रामदेवजीक परिणय अमरजीक जेठ कन्या योगमायाजीसँ भऽ गेलनि । सम्बन्ध भेलाक बादहुँ रामदेवजी हिनक अनुशासनप्रिय शिष्यक रूपमे अपन प्रतिभाक विकास सहज रूपमे करैत रहलाह जकर प्रतिफल हुनक आजुक स्थिति एवं उपलब्धि कहल जा सकैछ ।

स्कूलक सफल जीवनक बाद स्थानीय चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयक छात्र बनलाह । ओतहु चारि वर्ष धरि अपन योग्यता, अनुशासनप्रियताक परिचय दैत रहलाह आ स्नातक स्तरपर मैथिली प्रतिष्ठामे सर्वोत्तम परीक्षाफल अर्थात प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान प्राप्त कऽ अपन उज्ज्वल भविष्यक दिशामे अग्रसर होइत पटना विश्वविद्यालय, पटनामे स्नातकोत्तर मैथिली विभागक छात्र बनलाह । ओहि ठाम सेहो दू वर्ष धरि अपन प्रतिभाक परिचय दैत प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान, स्वर्णपदक प्राप्त करबामे ओ सफल रहलाह ।

बादमे एस.पी.कालेज, दुमकामे प्राध्यापक बनि अपन प्रतिभासँ छात्रलोकनिकेँ प्रेरित ओ उत्साहित करैत रहलाह । संयोगसँ ओतहु एक सुयोग्य, कुशल, अनुशासनप्रिय अभिभावक प्रधानाचार्य सुरेन्द्रनाथझाक सान्निध्य पाबि अपन प्रतिभाकेँ विकसित करैत रहलाह । मुदा ओहिठाम विशेष समय धरि नहि रहि सकलाह आ सी.एम.कालेज, दरभंगामे व्याख्याता पदपर चयनित भेला सन्ता दुमकासँ दरभंगा आबि गेलाह आ एहिठाम अपन पुरान परिवेश, परिचित-अपेक्षित लोकक संग नवढंगसँ जीवन आरम्भ कयलनि । एहिठाम स्नातक स्तरक गुरुलोकनिक संग-संग अपन मित्रलोकनिक सेहो संग भेटलनि आओर भेटलनि एहिठाम आचार्य सुरेन्द्रझा सुमन डा. शैलेन्द्रमोहनझाजीक कुशल निर्देशन जाहिमे उत्तरोत्तर अपन प्रतिभाक विकास आ मैथिली साहित्यक भंडारकेँ भरबाक लेल तत्पर रहलाह । मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापनाक बाद किछु समय धरि स्नातकोत्तर विभागक अध्यापन सी.एम. कालेजमे चललाक बाद स्नातकोत्तर विभागकेँ नरगौनामे स्थानान्तरित भेला सन्ता ई ओतहि प्राध्यापकक कार्यक निपुणतापूर्वक सम्पादन करैत रहलाह आ अनुसन्धानमे विशेष अभिरुचि रहबाक फलस्वरूप स्वयं अनुसन्धान कयलाक बाद लोककेँ ओहि दिशामे सकारात्मक सहयोग आ

Scanned by CamScanner

कुशल निर्देशनसँ लाभान्वित करैत रहलाह । मित्र डा. रामदेवजी मैथिलीक सभ विधाकेँ अपन लेखनीसँ समृद्ध करैत आबि रहल छथि आ अपन योग्यताक आधारपर साहित्य अकादेमीक सदस्य बनि अपन भूमिकासँ मैथिलीक विकासमे सकारात्मक सहयोग करैत रहलाह अछि ।

कालेजक प्राध्यापकीय जीवनमे साँझ खन कऽ हमरा सभक बैसार आदरणीय डा. शैलेन्द्रमोहनझाजीक आवास वीणापाणि क्लबक समीप बंगालीटोला, लहेरियासरायमे नियमित रूपसँ होइत रहल जाहिमे मुख्य रूपसँ रामदेवजी, हम, प्रबोधकुमारझा, अपूर्वकृष्णझा सम्मिलित भेल करी । ओहिठाम साहित्यिक एवं समसामयिक विषयपर विशेष रूपमे चर्चा होइत रहैत छल । डा.रामदेवझाजीक कुशल-निर्देशनमे कतोक शोध कयनिहार सभ पी-एच.डी.क उपाधिसँ लाभान्वित होइत रहलाह अछि जाहिमे अधिकांश प्राध्यापकक सफल जीवन व्यतीत कऽ रहल छथि । एहिमे हिनक विलक्षण सूझ-बूझक परिचय भेटैत रहल अछि ।

हिनक वैवाहिक जीवनक सफलता आ दाम्पत्य जीवनक पूर्णताक संग पारिवारिक जीवनक सम्पन्नताक क्रममे कहल जा सकैछ जे अर्धाङ्गिनी डा. योगमायाझाक सहयोग सदा सकारात्मक एवं उत्साहवर्द्धक रहलनि अछि । हिनक सफलतामे हुनक योगदान अप्रतिम रहलनि अछि । तीन पुत्र आ तीन पुत्रीक पिता मित्र रामदेवजीक जीवन सहजताक रहलनि अछि । सभ सन्तान सुयोग्य, अनुशासित, संयमी, परिश्रमी आ सामाजिक छथिन जे हिनक पारिवारिक दायित्वबोधक उचित निर्वहनक प्रतिफल कहल जा सकैछ । हिनक कौटुम्बिक सम्बन्ध निर्धारणक क्रम सेहो विलक्षण रहलनि अछि। स्वयं साहित्यिक परिवारमे परिणयक संग-संग धियापूताक विवाहमे सेहो साहित्यिक परिवेशकेँ प्रमुखता देलनि अछि आ ओहूमे विशेष कऽ मैथिली संसदक सदस्यक रूपमे समधिन ओ समधिलोकनि सेहो छथिन । एहि तरहेँ अनुकूल सम्बन्धीक संग-संग, अनुकूल सहयोगी-संगीक सेहो एक पैघ सूची प्रस्तुत कयल जा सकैछ आ ओही क्रममे शिष्य परम्पराक सेहो गणना कयल जा सकैछ ।

वस्तुतः डा. रामदेवझाजीक जीवन, क्रियाकलाप, प्रेरणा, साधना ओ सोच एक कल्पनाशील चिन्तकक रहलनि अछि । ओ अपन समसामयिक परिस्थितिमे मैथिली साहित्य जगतमे एक उज्ज्वल नक्षत्रक रूपमे विराजमान छथि । कुटिल समाजक कुचक्रक कारण एकाध बेर समस्याग्रसित भेलाक बादहुँ ओ सहजरूपमे जीवन निर्वाह करैत रहलाह अछि आ लोकक प्रिय बनल रहलाह अछि । मनसा, वाचा, कर्मणा सरस्वतीक मन्दिरमे रहि लक्ष्मीक आराधनापर कहियो ध्यान आकर्षित नहि कयलनि, आ मैथिली साहित्यक मौन साधक रूपमे, मातृभाषाक अनन्य भक्त बनि मातृभाषाक उन्नतिकेँ सभ प्रकारक उन्नतिक मूल मानैत रहलाह अछि । संगहि प्रकृतिसँ अध्ययनशील आ साहित्य सेवामे संलग्न, गम्भीर विषय सभपर लेखन करैत मैथिली साहित्यक भण्डार भरबाक ध्येयसँ साहित्यक कतोक मौलिक ग्रन्थक प्रणयन करैत आबि रहलाह अछि । हिनक सम्मानमे अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पण करबाक क्रममे एक आत्मीयजनक दिशसँ उद्‌गार व्यक्त करबाक प्रयास अछि मालाक एक पुष्पक रूपमे जकरा हिनक व्यक्तित्व एवं कृतित्वक परिप्रेक्ष्यमे परखबाक प्रयत्न कहल जा सकैछ ।

एहि तरहेँ थोड़मे प्रस्तुत अछि माँ मैथिलीक अनन्य सेवक, अनुपम अनुरागी आ समर्पित साधक डा. रामदेवझाजीक प्रस्थिति एवं भूमिकाक झलक ।

●

Scanned by CamScanner

मैथिली मानसरोवरक राजहंस

-डा. श्रीइन्द्रकान्तझा

डा. रामदेवझा अभिनन्दन ग्रन्थ समितिक पत्र पढ़ैत-पढ़ैत अभिनन्दनीय व्यक्तित्वक सौम्य ओ गरिमामय मुखाकृति मानस-पटलपर खचित होअऽ लागल । एके सूरमे ओहि वृहदाकार पत्रकेँ आद्योपान्त पढ़ि हमर कवि जेना जाग्रत भऽ गेल होथि । मोन गुनगुनबैत चल गेल -

काव्यरसिक, कलाकार, मसृण तन्तु बिननिहार
कविता-कथेक नहि, नाटकोक जान छथि
रूपान्तर, शोध-सन्धान-मार्ग हेरथि नित
भाषा, साहित्य, समालोचनाक प्राण छथि
मिथिला-मैथिल मध्य, मसिजीवी कहू कोन
मैथिली-सपूत, भूमिजाक मुसकान छथि
मैथिलीक आनन जनु चानन श्रीरामदेव
अनुपम सुवास-सिक्त, मिथिला महान छथि

से श्रद्धेय डा. रामदेवझा सासुरक सम्बन्धेँ ससुर छथि । विद्यालय-महाविद्यालयमे हम हुनकासँ पढ़ने नहि छी, । मुदा छथि ओ गुरुक समाने । हम गौरवक बोधसँ ओतप्रोत भऽ उठलहुँ आ हुनका संग बिताओल अनेक सुमधुर क्षण मानस-पटलपर आबऽ लागल ।

हिनक प्रथम दर्शनक सौभाग्य हमरा 1962 इ.सँ पूर्वहि प्राप्त भऽ गेल छल मुदा जखन दैववशात् 23 जून 1962 कऽ हमर विवाह हिनके गाम कबिलपुरमे प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी रमाकान्तझाक जेठि कन्याक संग भेल, तँ स्वभावत: प्रगाढ़ परिचयक अवसर भेटैत चल गेल । ताहिसँ पहिने हमरा सुनल छल जे श्रीरामदेवझा एक गोट विशिष्ट साहित्यकार छथि, मिथिला मिहिरमे धुरझार लिखैत छथि आ मैथिलक विद्वान प्राध्यापकमे गनल जाइत छथि । कबिलपुरसँ सम्पर्कक बाद हिनक सहज सान्निध्यक अवसर प्राप्त भेल छल ।

हमर ससुर रमाकान्तझा आ हिनक घरक बीच एक गोट एकपेरिया छलैक । दुनू परिवार प्रतिवेशी, दुनूमे प्रगाढ़ सम्बन्ध । हम एम.ए.(मैथिली)क पटना विश्वविद्यालयक छात्र रही । हमर ससुरजीक आग्रहपर हमर कबिलपुर प्रवासक क्रममे ई आबि हमर खोज-पुछारि कयल करथि । ताही क्रममे हिनकासँ अध्ययनक औत्सुक्य जागल । मैथिलीक विभिन्न विषयपर चर्चा होअऽ लागल । हिनक सारगर्भित ओ सहज शिक्षण-वृत्तिक लाभ हमरा भेटैत रहल, विभिन्न पत्रक हेतु पोथीक सहायता भेटऽ लागल । स्वभावत: विभिन्न विषयमे हमर शंका सभक समाधान होइत रहल । विषयकेँ सहज रूपेँ सोझरा कऽ छात्रक अन्त:स्थलमे प्रवेश करा देबाक हिनक योग्यतासँ हम अभिभूत होइत गेलहुँ । एकर परिणाम ई भेल जे क्रमहि हमर संकोच जाइत रहल आ हम हिनका अपन ससुरसँ बेसी शिक्षा-गुरुक सम्मान देबऽ लगलियनि । आब हमरा ई नीक नहि लागय जे गुरु स्वयं आबि हमरा पढ़ाबथि । तेँ बादमे जहिया कहियो हम छुट्टीमे कबिलपुर जाइ तँ हिनक तुरत भेट कऽ आशीर्वाद तऽ लैते रही, हिनके ओहिठाम जा कऽ विषयक ज्ञान सेहो ग्रहण करऽ लगलहुँ ।

Scanned by CamScanner

मोन पड़ैत अछि जे ताही समयमे श्रीप्रेमशंकरसिंह, पूर्व अध्यक्ष, मैथिली विभाग, भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, सेहो श्रीझासँ पढ़बाक हेतु आयल करथि । हुनका ई खूब पोथी दऽ कऽ मदति करथिन । से देखि कखनो हमरा इर्ष्या सेहो होअय । बुझना जाय जे ई हमरोसँ बेसी प्रेमशंकरेकेँ मानैत छथिन । मुदा बादमे बुझना गेल जे अयाची जकाँ विद्यादानक हेतु हिनक दरवज्जा समस्त जिज्ञासुक हेतु सदति फूजल रहैत छनि, जे आइयो हुनक जीवन-वृत्ति ओ संस्कारक विशिष्ट अंग थिकनि ।

घनिष्ठता बढ़ल तँ हम श्रीरामदेवबाबूक संग जाय कतोक सन्ध्या गुरुवर शैलेन्द्रमोहनझाक संग बिताबऽ लागल रही । हुनका ओहिठामक शास्त्रीय चर्चासँ हम निरन्तर ऊर्जायित अनुभव करऽ लागल रही । ओ कहल करथि जे 'ओझाजी ! अपने स्पेशल पेपर बदलि पुनः परीक्षा दी । बिनु प्रथम श्रेणीक प्राध्यापक नहि बनि सकब । मुदा ई हमर सौभाग्य कहल जाय जे हमरा नोभेम्बर 1964मे मिथिलेश रमेश्वर मैथिली चेयर फण्ड पटना विश्वविद्यालय, पटना दिससँ रिसर्च स्कॉलरशिप एवं यू.जी.सी.सँ जुनियर-रिसर्च फेलोशिप प्राप्त भऽ गेल आ हुनक ओहि आकांक्षाकेँ हम पूर्ण नहि कऽ सकलियनि । मुदा हुनक सदिच्छा ओ आशीर्वचनक प्रभाव ततेक प्रबल भेल जे केवल प्राध्यापके नहि अपितु पटना विश्वविद्यालय, मैथिली विभागक स्पृहणीय अध्यक्ष पद, मैथिली अकादमी, पटना ओ संस्कृत अकादमी, पटना पर्यन्तमे निदेशक धरि बनि सकलहुँ । ई हुनके सन-सन देव-ऋषिक कृपा-प्रसाद बूझैत छी ।

प्रो. रामदेवझा हमर शोध-प्रबन्धक प्रणयनमे तत्परतासँ सामग्री-संकलन, विवेचन-विश्लेषण ओ उपस्थापन शैलीक निर्णयमे मदति दैत रहलाह । हमरा मोन अछि जे ई हमरा संग लऽ कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगाक पुस्तकालयमे गेलाह आ ओहिठाम अधिकारी सभसँ परिचय कराय अनुसन्धान सम्बन्धी पोथी ओ हस्तलेख सभकेँ देखबाक-पढ़बाक मार्ग सुलभ कऽ देने रहथि ।

सुरेन्द्रझा 'सुमन', चन्द्रनाथमिश्र 'अमर', सदृश मैथिली महारथी लोकनिसँ हमर परिचय ओ सान्निध्यक मूलमे वैह छलाह । ओ हमरा मैथिलीक निविष्ट प्राध्यापकक संगहि विशिष्ट विद्वानक रूपमे देखबाक मनोरथ पोसने रहथि । दरभंगामे जतऽ कतहु कार्यक्रम होइक तँ अपन सक्रियताक अंगक रूपमे हमर उपलब्धताक उपयोग कयल करथि, हमरासँ बजबयबाक हेतु अवसर प्रदान कराबथि । मोन पड़ैत अछि जे हिनके सान्निध्यमे देवनारायणझाक सुन्दरपुर आवासपर आयोजित चन्दाझा जयन्तीमे हम नहि केवल भाग लेने रही, बजलो रही आ अपन योग्यता ओ क्षमताक परिचय सेहो प्रदान कयने रही ।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामक अभिधान युक्त श्रीरामदेवबाबूक मर्यादाक एक गोट गाथाक उल्लेख करब एतऽ समीचीन बुझना जाइत अछि । प्रसंग 1967क थिक । रिसर्चक काजसँ हम, शैलेन्द्रमोहनझा, श्रीरामदेवझा एवं सी.एम. कालेजक छात्रमंडलक संग काठमाण्डूक यात्रा कयने रही । छात्रमंडलक सम्भार एही दुनू गोटेक अधीन छलनि । हम तँ अपना काजेँ संग लागि गेल रहियनि । ओहि ठाम नेपालक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे मैथिली पाण्डुलिपि सभक अन्वेषणक प्रति गुरुवरलोकनिक निदेशित रुझान छल । मारवाड़ी वासामे सभ गोटे टिकल रही । अबैत काल बासाक भाड़ा देबाक हेतु सभ गोटे अपन-अपन बखरा निकालऽ लगलाह । हमहूँ अपन बखरा हेतु टाका बहार करऽ लगलहुँ । मुदा रामदेवबाबू हमरा रोकैत कहलनि- ओझाजी ! अपने हमरा संग आयल छी तेँ भाड़ाक दायित्व हमर थिक । टाका राखू ।' आ ओ हमरो भाड़ा दऽ मिथिलाक सांस्कृतिक उदारता ओ मर्यादाक प्रति अपन कटिबद्धताक निदर्शन प्रस्तुत कयलनि आ अद्यपर्य्यन्त तकर निर्वाहमे दत्तचित्त देखल जाइत छथि ।

डा. झा साहित्यकार छथि । साहित्यक सेवामे अपन तन-मन-धन अर्पित करैत रहलाह अछि । हिनक समस्त साहित्य-वाटिका मिथिलाक माटि-पानिसँ सिंचित अछि, तकर सौरभ, तकर सोन्ह सुगन्ध हिनक प्रत्येक रचनामे भेटैत अछि । छिन्नमूल रचनासँ ई कहियो सरोकार नहि रखलनि । तेँ हिनक रचनावलीमे दलित-उत्पीड़ित मिथिलाक लोकजीवनक चित्र अछि, मध्यम वर्गक मानसिकतामे मिथिलाक मानसिकता झलकैत छैक, नारी पात्रमे मिथिलाक नारी

Scanned by CamScanner

जीवनक चित्र छैक । हिनक रचनामे मिथिलाक लोकवृत्तक प्रति रागानुराग छनि । सभ ठाम मिथिला अपन समग्रतामे चित्रित अछि खाहे कविता हो, कथा-उपन्यास हो, नाटक-अनुवाद हो । तेँ ने हिनका द्वारा रूपान्तरित **एक चादर मैली सी** पर्य्यन्त **सगाइ** भऽ जाइत अछि । तथापि हिनक साहित्यकार साहित्ये धरि सीमित नहि छनि, ओकर प्रतिबद्धता साहित्यकारक सृजनक प्रति सेहो रहलैक अछि । एहि ठाम ई उल्लेख करब समुचित बुझना जाइत अछि जे हिनक छत्रच्छायामे बीस गोट अधीत विद्वानक पी-एच.डी.क वास्तविक आ मानक शोधकार्य सम्पन्न भेल अछि । हिनक कलमक नोंकसँ सैकड़ो पोथीक संशोधन-वाचन भऽ चुकल अछि । सर्वथा असम्बद्धो शोधार्थी-जिज्ञासु हिनक चटिसारसँ किछु लइये कऽ जाइत रहल अछि । 1970 मे हमरो **विद्यापति-विमर्श** हिनके संशोधन आ प्रकाशन-पूर्व परिश्रमक प्रतिफल थिक । डा. श्रीअमरनाथचौधरी, पनिचोभक **पाँच बून्द नोर**क सम्बन्धमे तँ हमरा जनलो अछि जे ओ मैथिली जगतकेँ हिनके प्रकाशन-पूर्व परिश्रमक फल थिक आ एहन-एहन अनेक उदाहरण भेटत जकर हमरा जंनतब नहिञो अछि । एहन प्रेरक आ मार्गदर्शकसँ आब मैथिली जगत शून्य दिस अग्रसर भेल जा रहल अछि जे विचारणीय थिक ।

अक्षरपुरुष डा. रामदेवझाक सृजनशीलताक दोसर आयाम पत्र-पत्रिकाक प्रति हिनक स्नेह-संवर्द्धना अछि जकर लाभ **वैदेही, संकल्प, विद्यापति टाइम्स, मिथिला समाद, मिथिला मिहिर** आदिकेँ खास कऽ भेटलैक अछि । **स्वदेश**मे तँ ई हॉकर पर्य्यन्तक दायित्व ग्रहण कयने छलाह आ ओहि पत्रिकाकेँ ऐतिहासिक बनयबामे हिनक योगदानकेँ कहियो बिसरल नहि जा सकैछ । नेना-भुटकाक हेतु लेखनक जखन कखनो चर्च होइछ तँ हिनक **इजोती रानी** एकटा दीपवर्त्तिका जकाँ ठाढ़ि बुझना जाइत छथि । मैथिली आन्दोलनक एहन कोनो सूत्र नहि जकरा ई अपवारित छोड़ने होथि आ तकरो परिणाम थिक जे आइ मिथिलावासी अपन भाषाकेँ संविधानमे समादृत देखि गौरवान्वित छथि ।

साहित्यकारक दायित्वकेँ ग्रहण कयने डा.रामदेवझा अपन वृत्ति-पक्षक इमानदारीसँ कहियो कोनो रूपमे विचलित नहि भेलाह— अपितु ओकर सदैव सम्मार्जनमे जुटल रहलाह । निरन्तर शोध-समालोचनात्मक कार्यक विशदता आदिसँ हिनक एहि पक्षक उद्घाटन होइछ । मैथिली साहित्यक प्राचीन ओ नवीन सामग्रीक अनुसन्धान करबाक कारणे हम हिनका आधुनिक चन्दाझा बुझैत छियनि । एकर परिणामस्वरूप नहि केवल नेपालीय मैथिली साहित्यकार मध्य **जगज्ज्योतिर्मल्ल, जगत्प्रकाशमल्ल** आदि जगजियार भेलाह अछि अपितु **उमापति**क काल निर्णीत भऽ सकल, शैव साहित्यधाराक सुस्थापन भेल आ **जीवनझा, जनसीदन, सुभद्रझा** आदि चमचमाइत नक्षत्र जकाँ उद्भासित भेलाह । ट्यूशन उद्यम, प्रेतलेखन आदिकेँ ई कहियो अपन वृत्तिपरक प्रदूषणक कारण नहि बनौलनि ।

हमरा मोन पड़ैत अछि जे जखन साहित्य अकादेमीमे पहिल बेर **भाषा-सम्मान** सुरू भेल छल आ संयोगसँ मैथिलीक डा. जयकान्तमिश्र चयनित भेल छलाह तँ दोसर के ? क सवाल मैथिल-मस्तिष्ककेँ मथने छल । हुनक उत्तराधिकारीक रूपमे हिनकेपर लोकक नजरि पड़ल छलैक । ज्ञातव्य जे सम्मानक अगिला प्राप्तिकर्त्ताक रूपमे कीर्त्तनिञा नाटकक उद्धर्त्ता डा. श्रीशशिनाथझाक चयन भेलनि अछि ।

हिनक सांस्कृतिक प्रतिबद्धताक कतोक उदाहरण सभक हम भुक्तभोगी रहि चुकल छी । ई जे कोनो पत्र लिखैत छथि ताहिमे आँजी जरूर गबैत छथि । हम जखन कखनो गोड़ लागऽ चाहलियनि तँ चट्टी पैरसँ बाहर कऽ लेल करथि ।

एतावता डा. रामदेवझा एक गोट महान साहित्यिक पुरुष तँ छथिहे, अपन परम्परा ओ संस्कृतिक प्रति सेहो प्रतिबद्ध छथि । एहि ऋषिकल्प गुरुक प्रति हमर कोटिशः वन्दन-अभिवन्दन-नमन ।

●

Scanned by CamScanner

बॉस, हम, पटना आ मैथिली

श्रीभाग्यनारायणझा

मनुष्यक जीवनमे उतार-चढ़ाव, उत्थान-पतन आ उन्नति-अवनति प्रकृतिक नियम छैक, मुदा किछु लोक एहन होइत छथि जे अपन दृढ इच्छाशक्ति, लगन, परिश्रम आ कर्त्तव्यनिष्ठाक बदौलति निर्धारित लक्ष्यकेँ प्राप्त कऽ लैत छथि। ओहने लोकमेसँ एकटा छथि मूर्धन्य साहित्यकार आ ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली विभागक सेवानिवृत्त प्राध्यापक डा. रामदेवझा। सादा जीवन आ उच्चविचारक (Simple living and high thinking) सिद्धान्तमे निष्ठा रखनिहार रामदेवझाजीसँ हमरा सामीप्य 1960 मे भेल। ओ पटना विश्वविद्यालयमे मैथिली स्नातकोत्तर विभागमे एम.ए. फाइनलक विद्यार्थी रहथि आ हम ओही विश्वविद्यालयमे राजनीति विज्ञान विभागमे 'फिफ्थ इयर'क छात्र। हम भिखनापहाड़ीमे पांडु लॉजमे रहैत रही आ ओ मंडल लॉजमे। दुनू लॉज रहैक आमने-सामने। बीचमे चाकर-चौरस बढ़िया रोड। हम बरोबरि देखियैक एकटा श्याम वर्णक चमकैत ललाटवला युवककेँ धपधप धोती-कुर्त्ता, हाफ-जूता पहिरने आ माथपर बेस मोटगर टीकी रखने नम्हर-नम्हर डेगमे रमना रोडसँ यूनिवर्सिटी दिस जाइत। हम मोने-मन सोचैत रही जे ई मोटगर टीकीवला युवक कोनो मैथिलीभाषी होयताह। वस्तुस्थिति रहैक सैह। हमर आ हुनक लॉजक समीप एकटा चाहवलाक दोकान रहैक। संयोगवश, ओही ठाम रामदेवबाबूसँ साक्षात्कार भऽ गेल आ दुनू गोटेक परिचय-पात भेल। तकर बाद तँ दुनू गोटेमे ततेक ने स्नेह आ निकटता भऽ गेल जे एक-दोसरासँ भरि दिनमे कतेको बेर भेंट-घाँट होइत रहल। हम हुनका बॉस कहियनि आ ओहो हमरा बॉस कहथि। एखनोधरि दुनू गोटामे बॉस-बॉस होइत रहैत अछि आ ओहि चाह दोकानक चाहक मधुर स्वादक स्मरण होइत रहैत अछि। मैथिलीभाषी विद्यार्थी सभक जमघट मंडल लॉजमे बेस जखन-तखन जमैक। मैथिली भाषा ओ साहित्यक दुर्दशा आ ओकर निवारणक विषयमे रोचक गप्प-सप्प होइत छल आ रामदेवझाजीक ओहि सकारात्मक योगदानक हमरा स्मरण होइत रहैत अछि।

पटना आकाशवाणीसँ सायंकाल प्रसारित होअऽवला चौपाल कार्यक्रममे मधुर ओ आकर्षक शैलीसँ मैथिली भाषीकेँ अपन भाषाक प्रति जागरुकता उत्पन्न कयनिहार भांगक लोटाक चर्चित साहित्यकार मायानन्दमिश्रजी सेहो मंडल लॉजमे धोती-कुर्त्तामे साइकिलसँ रामदेवझाजी ओतऽ अबैत छलाह। बेस जमैक गोष्ठी। मायानन्दमिश्रजी आ रामदेवजीमे श्लाधा दरभंगेसँ छलनि। हमरा जेना बूझल भेल जे ई दुनू गोटे सुमनजी आ अमरजीक करीबी छलाह। तकरो कारण छैक, मायानन्दबाबू सुपौल जिलाक प्रख्यात साहित्यकार रामकृष्णझा किसुनजीक भागिन रहथि आ रामदेवबाबू ख्यातिप्राप्त साहित्यकार पंडित चन्द्रनाथमिश्र'अमर'जीक जामाता। संयोग एहन भेलैक जे सहरसा कालेजमे मैथिलीक लेक्चररक बहालीक विज्ञापन भेलैक आ ओहिमे मायानन्दमिश्रक बहाली भऽ गेलनि। ताहिसँ एहि दुनू साहित्यकारमे किछु खटास उत्पन्न भऽ गेल रहनि, मुदा बादमे शनैः -शनैः ओ कटुता खत्म भऽ गेलनि। बादमे रामदेवबाबूक नियुक्ति संतालपरगना कालेज, दुमकामे लेक्चररक रूपमे भऽ गेलनि। ओहि समय ई सभ कालेज अंगीभूत नहि रहैक। एस.पी.कालेजमे ओहि समयमे गणितज्ञ आ चतरिया (दरभंगा) निवासी प्रो. एस.एन.झा प्राचार्य रहथि। रामदेवबाबूकेँ बादमे सी.एम.कालेज, दरभंगामे बहाली भऽ गेलाक उपरान्त, साहित्य अकादेमीक वर्त्तमान प्रतिनिधि डा.विद्यानाथझा 'विदित' एस.पी. कालेजमे मैथिली विभागमे कार्यभार ग्रहण कयने रहथि। 'विदित'जी आ रामदेवजी दुनू गोटे बादमे समधि भऽ गेलाह। एकरा कहैत छैक संयोग !

1960 क दिसम्बरमे हम आर्यावर्तकक यूनिवर्सिटी रिपोर्टर स्वनामधन्य पत्रकार पंडित श्रीकांतठाकुर

Scanned by CamScanner

विद्यालंकारक कृपासँ बनाओल गेल रही । रामदेवबाबू आ हम, किछु अन्यहु मित्रक सहयोगसँ पटनाक विभिन्न कालेजमे मैथिलीक पढ़ाइ, पटना आकाशवाणीसँ मैथिलीक स्वतन्त्र प्रोग्राम-प्रसारण, जनगणनामे मातृभाषा मैथिली लिखयबाक हेतु विश्वविद्यालयक मैथिलीभाषी छात्र ओ अन्यहु मैथिली-समर्थक लोकनिक मध्य हस्ताक्षर अभियान चलाय ओकरा समाचार बनाबी । चन्दाझा जयन्ती मनयबाक हेतु पत्राचार करी । रामदेवबाबूक संग हम बैसि कऽ बिहार लोकसेवा आयोगमे मैथिलीकेँ ऐच्छिक विषयक रूपमे आ भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे सम्मिलित करबाक माँगक विषयमे गढ़ि-गढ़ि कऽ समाचार बनबैत रही आ ओहि समाचार सभकेँ 'आर्यावर्त'मे प्रमुखतासँ छपबबैत रही । रामदेवबाबू बिहार लोकसेवा आयोगमे ऐच्छिक विषयक रूपमे मैथिली भाषा-साहित्यकेँ स्थान देबाक सम्बन्धमे अत्यन्त परिश्रमसँ महत्त्वपूर्ण प्रमाण सब जुटाय एकटा मेमोरेंडम तैयार कयलनि । रामदेवबाबू आ हम ओ मेमोरेंडम बिहार लोकसेवा आयोगकेँ समर्पित कयने छलियैक, ई बुझितो जे परिणाम नकारात्मके हेतैक । विभिन्न एकबारमे ई समाचार छपल रहैक । मिथिला मिहिरक 11 जून 1961क अंकमे पृष्ठ 26 पर संयुक्त वक्तव्यक रूपमे ओ समस्त मेमोरेंडम अविकल रूपमे छपल छल । हमरा जनैत ओ वक्तव्य एवं मेमोरेंडम अतीतक एकटा महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ थिक जे डा. रामदेवझाक मैथिलीक प्रति समर्पण ओ ओकरा हेतु हुनक संघर्षशीलताकेँ प्रमाणित करैत अछि । हम मिथिला मिहिरमे प्रकाशित वक्तव्य ओ मेमोरेंडम एतऽ अविकल रूपमे दऽ रहल छी ।

बिहार लोकसेवा आयोगमे मैथिलीकेँ स्थान भेटय, मैथिली-भाषी जनताक माङ–

श्रीरामदेवझा आ श्रीभाग्यनारायझा (पटना वि.वि.) निम्नलिखित वक्तव्य प्रकाशनार्थ पठौने छथि– **आजुक जनतन्त्रात्मक युगमे सभकेँ अपन अधिकारक सुरक्षा सरकार दिससँ भेटैत छैक, सभवर्गकेँ विकास करबाक समुचित अवसर ओ अधिकार छैक, किन्तु, खेद अछि जे बिहारमे एखनधरि एहि पवित्र सिद्धान्तक सार्थकता सिद्ध नहि भऽ सकल अछि । हजारो-हजार मैथिली छात्र-छात्रा आजीविका पयबाक अवसर-प्राप्तिक सुविधासँ वंचित कयल जाइत छथि । मैथिलीभाषीक विकासकेँ कुंठित रखबाक प्रयास कयल जाइत अछि । मैथिलीभाषी जनताक माङ अछि जे बिहारक जनसेवा आयोगक परीक्षामे मैथिलीकेँ स्थान देल जाय किएक–**

1. **मैथिली एक स्वतन्त्र विकसित, साहित्य-भाषा थिक ।**
2. **मैथिली भाषा-भाषी जनता दू करोड़ अछि ।**
3. **एकर क्षेत्र-मुजफ्फरपुर, दरभंगा, मुंगेर, सहरसा, भागलपुर, पूर्णिया, संतालपरगना, नेपालमे- सप्तरी, महोत्तरी, रौतहट, मोरंग और अन्य जिला अछि ।**
4. **साहित्य- आठम शतीसँ अद्यावधि, विभिन्न अनुसन्धान एवं शोधकार्य ।**
5. **लिपि-मिथिलाक्षर, भारतक प्राचीनतम लिपिमेसँ एक, लक्षावधि पुस्तक संसारक विभिन्न पुस्तकालयमे एहि लिपिमे सुरक्षित ।**
6. **मैथिलीमे 1923 सँ विश्वविद्यालीय शिक्षा प्रारम्भ भेल ।**
7. **प्राथमिक शिक्षाक माध्यमक रूपमे स्वीकृत ।**
8. **माध्यमिक शिक्षामे मातृभाषा ओ स्वतन्त्र विषयक रूपमे अध्यापन होइछ ।**
9. **विश्वविद्यालय स्तरपर मातृभाषा ओ स्वतन्त्र विषयक भाषा (classics) रूपमे अध्यापन होइछ ।**
10. **भारतक बाहरो तथा भारतक अनेक विश्वविद्यालयमे मैथिलीक अध्यापन होइत अछि जेना कि कलकत्ता, पटना, बिहार, राँची, भागलपुर, हिन्दू विश्वविद्यालय (बनारस) आर त्रिभुवन विश्वविद्यालय (काठमांडू, नेपाल) ।**
11. **मैथिली भाषी क्षेत्रक सैकड़ो हाइ स्कूलमे मैथिलीक अध्यापन होइछ तथा हजारो छात्र-छात्रा मैथिली विषय लऽकऽ परीक्षा दैत छथि ।**

Scanned by CamScanner

12. मैथिली क्षेत्रक अधिकांश कालेजमे मैथिलीक अध्यापन होइत अछि ।

13. बिहार राज्यक विभिन्न विश्वविद्यालयमे एम.ए. धरिक पढ़ाइ ओ परीक्षाक व्यवस्था छैक ।

14. पटना कॉलेज ओ पटना विश्वविद्यालयमे स्नातकोत्तर एवं स्नातक धरिक अध्यापन होइत अछि आओर प्राध्यापकक नियुक्ति बिहार लोकसेवा आयोग द्वारा होइछ ।

15. बिहार लोकसेवा आयोगक एहन सन परम्परा छैक जे जाहि विषयक एम.ए. वा बी.ए. आनर्सक पढ़ाइ पटना विश्वविद्यालयमे होइत अछि, तकरा आयोगमे स्थान भेटैत छैक ।

16. बिहार विश्वविद्यालय द्वारा 1956 मे बिहार सरकारसँ आग्रह कयल गेल छलैक जे मैथिलीकेँ आयोगक परीक्षामे स्थान भेटय ।

17. मैथिली-भाषीक माङक उपेक्षा सरकार द्वारा निरन्तर होइत आयल अछि; जाहिसँ मैथिली-भाषीक क्षोभमे निरन्तर वृद्धि भऽ रहल छैक ।

18. मैथिली छात्रमे, जे प्रारम्भिक कक्षासँ बी.ए. धरि पन्द्रह वर्ष ओ एम.ए. धरि सत्रह वर्ष लगातार मैथिली पढ़ैत रहलाह अछि– आयोगमे ओहि विषयक मान्यता नहि रहने विषाद ओ निराशा पसरि रहल अछि ।

19. अतः सरकारसँ अनुरोध अछि जे एहि माङक उपेक्षा नहि कऽ जनमतक सम्मान करबाक सुबुद्धि देखाबय ।

20. अपन मैथिलीभाषी जनतासँ आग्रह जे अपन न्यायोचित माँगक हेतु दृढ़ भऽ संघर्षशील रहय, संगहि मैथिलीभाषी जनप्रतिनिधि अपन अभिरुचि एहि विषयमे देखाय अपन जनप्रतिनिधित्व सिद्ध करय ।

रामदेवबाबू अपना विषयमे बड़ संकोची रहलाह अछि । परन्तु मैथिली-मिथिलाक प्रसंगमे खूब बोल्ड भऽ जाइत छलाह । सुनने छलहुँ जे बिहार विश्वविद्यालयक दीक्षान्तसमारोह 1960इ.क जनवरीमे बिहार वेटनरी कालेजमे भेल रहैक । ओहिमे अपन बी.ए. ऑनर्सक डिग्री आ गोल्डमेडल प्राप्त करबाक हेतु रामदेवबाबू पाग पहिरि कऽ गेल छलाह । दर्शकलोकनि हुनका 'दलाइलामा' कहि-कहि कऽ टौण्ट कयने रहनि परन्तु ओ मुस्कुराइत रहलाह । पुनः 1962क जनवरी-फरवरीमे पटना विश्वविद्यालयक दीक्षान्त समारोह साइन्स कालेजमे आयोजित भेल रहैक । ओहूमे रामदेवबाबू पाग पहिरि कऽ गेल रहथि । अपन एम.ए.क डिग्री तथा कुलाधिपति डा. जाकिर हुसैनक हाथसँ गोल्ड मेडल प्राप्त कयने रहथि । आर्यावर्त्तक छायाकारकेँ कहि ओहि कालक फोटो घिचबौने रहियन । ओ फोटो हुनक लगमे अवश्ये होयतनि ।

चर्चित कथा-संग्रह 'एक खीरा : तीन फाँक' आ 1991 मे साहित्य अकादेमीसँ नाट्य-संग्रह 'पसिझैत पाथर'क पुरस्कृत लेखक प्रो. रामदेवझा सेहो साहित्यकार एवं यशस्वी प्राध्यापकक रूपमे उल्लेखनीय उपलब्धि सभक कारणे किछु लोकक नजरिमे ईर्ष्याक पात्र बनल रहलाह । ईर्ष्या एवं डाह होयब नीक बूझल जाइछ । अंग्रेजीमे एकटा कहबी छैक- "Greatness of the man is known by his enemy" अर्थात् व्यक्तिक व्यक्तित्वक महानता एहिसँ बूझल जाइछ जे ओकरा दुश्मन कतेक छैक ।" अंग्रेजीमे एकटा शब्द छैक 'Sadist' अर्थात् किछु लोक एहन होइत छथि जे ककरो दुःख आ पीड़ासँ दुःखी आ पीड़ित नहि होइत छथि, किन्तु ककरो खुशी वा उपलब्धिसँ दुःखी अवश्य भऽ जाइत छथि । एहि सन्दर्भमे महान वैज्ञानिक एवं पूर्व राष्ट्रपति देशरत्न डा. ए.पी.जे. अबुल कलाम द्वारा **विंग्स ऑफ फायर** नामक अपन 'आत्मकथा' पेज-105 पर लिखल एहि पाँतीकेँ उद्धृत करऽ चाहैत छी- "भारत सरकार द्वारा 1981क गणतन्त्र दिवसक अवसरपर हमरा 'पद्म विभूषण' पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गेलापर हमर सहयोगी सभमे मिश्रित प्रतिक्रिया भेलनि । किछुकेँ प्रसन्नता भेलनि, तँ किछुकेँ अप्रसन्नता ।" डा. कलाम बादमे 1998मे देशक सर्वोच्च सम्मान **भारत रत्नसँ** अलंकृत कयल गेलाह । प्रो. रामदेवझा अपन निष्ठा, पारदर्शी व्यक्तित्व एवं लगनसँ मैथिली भाषा आ साहित्यक अनवरत सेवामे लागल रहलाह अछि एवं एखनो लागल छथि । ओ मैथिली साहित्यक समर्पित साधकक संग-संग यशस्वी प्राध्यापक रहलाह अछि । हम हुनकासँ स्वस्थ रहि अपन भाषा आ साहित्यकेँ आर समृद्ध करबाक आशा एवं भरोसा करैत छी ।

●

Scanned by CamScanner

सरस्वतीक वरदपुत्र

डा. श्रीदेवेन्द्रझा

समाजक प्राण साहित्य, साहित्यक स्रस्टा साहित्यकार । की साहित्यकारक मूल्य देल जा सकैत अछि ? कथमपि नहि । तखन तँ साहित्यकारक हेतु फूल-पात सैह ने अर्चनाक हेतु समर्पित कयल जा सकैछ, अन्य सामग्रीक कोन उपाय?

डा. रामदेवझा सरस्वतीक साक्षात वरदपुत्र छथि आ तँ ओ एकहि संग लोकप्रिय शिक्षक, कुशल शोध निदेशक, मर्मज्ञ समालोचक, सफल अनुवादक, रससिद्ध कवि, प्रसिद्ध कथाकार, यशस्वी उपन्यासकार, प्रख्यात नाटककार, प्रखर अनुसन्धानकर्त्ता एवं प्रतिष्ठित सम्पादक रहबाक कारणेँ मूर्धन्य साहित्यकारक श्रेणीमे परिगणित कयल जाइत छथि । एहन सारस्वत साधनाक सरोवरमे सिद्धिक सरोज प्रस्फुटित करऽवला मैथिलीक उन्नायक डा. रामदेवझा सर्वथा स्तुत्य छथि, हम हिनक हार्दिक अभिनन्दन अपन भावक पुष्पसँ कऽ स्वयं अभिनन्दित भऽ रहल छी ।

व्यक्तिक पुनीत धर्म होइछ समाजक सेवा करव, डा. रामदेवझा सेहो आइ लगभग पछिला पचास वर्षसँ साहित्य-साधना द्वारा समाजमे व्याप्त तिमिराच्छन्न वातावरणकेँ आलोकित-प्रकाशित करबाक निरन्तर प्रयास करैत रहलाह अछि । ई अपन अथक परिश्रम एवं अनवरत अध्ययनसँ साहित्यक प्रायः प्रत्येक विधामे अमूल्य कृतिक सृजन कयलनि अछि । हिनक प्रथम रचना कहल जाइत अछि **मुदा आब की ?** जे 1953 मे मिथिला मिहिर (दरभंगा)मे प्रकाशित भेल छलनि । तकर बादसँ जे हिनक लेखनी चलब सुरू कयलक से पुनः घुरि कऽ पाछाँ नहि देखलक । अपन एहि छओ दशकक साहित्य साधनामे डा. रामदेवझा साहित्यक यावन्तो विधाकेँ समृद्ध करैत ओकरा एकटा नव ऊँचाइ प्रदान कयलनि अछि । मैथिलीमे तीन दर्जनसँ ऊपरे मौलिक, सम्पादित ओ अनूदित पोथी प्रकाशित छनि । हिनक जेहने कथा, तेहने उपन्यास, जेहने नाटक तेहने कविता, जेहने अनुसन्धान तेहने समालोचना सब एकसँ बढ़ि एक । हिनका सन साहित्य स्रष्टाकेँ कोनो विशेष विधाक परिधिमे बान्हि कऽ नहि राखल जा सकैत अछि । जीवनक पिच्छड़ पथपर चलैत डेग-डेग पर संघर्ष करितो ई साहित्यक जे अमार लगौलनि अछि से हिनक कठोर साधना ओ असीम मातृभाषा प्रेमक परिचायक थीक । हिनक साहित्यिक उपलब्धि ककरो लेल ईर्ष्याक विषय भऽ सकैत अछि । एहि अर्थें मैथिलीकेँ सौभाग्यशालिनी कहल जयबाक चाहिऐक जे ओकरा डा. रामदेवझा सन सेवक पुत्र भेटलैक ।

डा. रामदेवझा जेहने साहित्यकार छथि तेहने यशस्वी प्राध्यापको भेलाह । स्कूलमे विज्ञानक छात्र रहथि, जँ ओहीमे रहितथि तँ कतहु डाक्टर-इंजिनियर भेल रहितथि । सुख-सुविधाक यावन्तो सामग्री रहितनि । आलिशान घर, गाड़ी आदि-आदि । मुदा आदियेसँ हिनकापर मातृभाषा प्रेमक से संस्कार पड़लनि जे मैट्रिकमे विज्ञानक फर्स्ट डिवीजनर छात्र होइतो ई आइ.ए.मे कला विषयक चयन कऽ कऽ अन्ततः सेवा भावेँ मैथिलीकेँ धयलनि आ एहूमे अपन प्रतिभाक लोहा मनबैत आनर्स आ एम.ए. दुनूमे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान कीर्त्तिमानक संग प्राप्त कयलनि । प्राध्यापकीय वृत्तिमे अयलाह आ अपन मेधा आ लेखनीसँ मैथिलीक दुर्बल पक्ष सबकेँ ताकि-ताकि ओकर चिकित्सा कऽ ओकरा सबल बनौलनि । मानवक डाक्टर नहि बनलाह ताहिसँ की, साहित्यक डाक्टर बनि ई अपन भाषा ओ साहित्यक जे सेवा कयलनि तकर ककरोसँ तुलना नहि हो । छात्रावस्थहिमे साहित्यक बीज हिनकामे पड़ि गेल छलनि तेँ कथा, उपन्यास, नाटक, कविता, संस्मरण, ललित निबन्ध आदिक क्षेत्रमे निरन्तर लेखन करैत रचनात्मक साहित्यक क्षेत्रमे अपन विशिष्टतम स्थान बना लेने छथि । दोसर दिस अपन प्राध्यापकीय वृत्तिसँ जुड़ल दायित्वक निर्वहन करैत शोध-समालोचना, सम्पादन-अनुसन्धानक

Scanned by CamScanner

क्षेत्रमे अग्रगण्य छथि । दुहू तरहक प्रतिभा कोनो एक व्यक्तिमे विरले देखल जाइछ । एहि अर्थमे डा. रामदेवझा मैथिली भाषा ओ साहित्यमे एकसर व्यक्ति छथि । भाषा-साहित्यक प्रत्येक मोरचापर ठाढ़ मैथिलीक एकनिष्ठ सेवकक रूपमे हिनक जे सेवा ओ विराट साहित्यिक अवदान अछि ताहि कारणेँ जँ साहित्य अकादेमी हिनका मूल लेखन ओ अनुवाद दुहूक हेतु पुरस्कृत कयने छनि तँ एहि सँ स्वयं अकादेमीक गरिमा ओ ओकर विश्वसनीयतामे अभिवृद्धि भेलैक अछि।

एहन महापुरुषकेँ जँ अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित नहि कयल जाय तँ समाजोक लेल ई श्रेयस्कर नहि होयतैक । हिनका द्वारा जे मैथिलीक रिक्त भंडारकेँ भरल गेल अछि, हिनक जे साहित्यिक परिधि अछि, हिनक जे काव्याराधना अछि से वस्तुतः हिनक यशः शरीरकेँ जरा-मृत्युक भयसँ सर्वथा मुक्त कऽ देने अछि । डा. रामदेवझाक साहित्यिक अवदान देखि यैह कहल जा सकैत अछि-

तुमने दिया देश को जीवन, देश तुम्हे क्या देगा ?
अपनी ताप कायम रखने को नाम तुम्हारा लेगा ।



Scanned by CamScanner

गुरु-समधि

डा. श्रीभोलाझा

मनु-स्मृतिक वाक्य अछि 'गुरुदेवो भव'। गुरुक अर्थ होइछ अन्हारसँ इजोतमे आनब। गुरुक महत्ता कबीरदासक शब्दमे गुरु गोविन्द दोउ खरो काको लागौ पाय बलिहारी गुरु आपनो जिनि गोविन्द दियो वताय' ईश्वर धरि अर्थात् सद्ज्ञान मात्र गुरु द्वारा होइछ। अस्तु गोविन्दसँ उच्च स्थान गुरुक मानल जाइछ। गुरु अनेक होइछ। अक्षरारम्भ कराबऽबला गुरु, उपनयनक गुरु, दीक्षा देबाक गुरु, स्कूल-कॉलेजक शिक्षक तथा निदेशक किंवा मार्गदर्शक। डा. रामदेवबाबू हमर निर्देशक रहलाह। गुरुजी आचार्य सुमनजीसँ विमर्श कयलहुँ जे अपनेक निर्देशनमे रिसर्च करबाक प्रवल कामना अछि। गुरुजी अपन वार्द्धक्यजन्य व्यथा कहैत कहलनि– अहाँक रिसर्चक निर्देशक मैथिली जगतमे मात्र रामदेवबाबू सक्षम भऽ सकैत छथि। गुरुक ई आशीर्वचन छल।

एतावता विमर्शोत्तर डा. रामदेवबाबूक दर्शन करबाकलेल कबिलपुरक हेतु राजकुमारगंजसँ विदा भेलहुँ। हुनका ओतऽ गेलहुँ तँ हुनक मध्यमा पुत्री कवितासँ जिज्ञासा कयल जे श्रीमान् कतऽ छथि ? रास्तामे अनेको ऊहा-पोहमे डुबल रही, जेना वैवाहिक परिवेशमे युगल दम्पती विवाहसँ पूर्व रहैछ। बिना तारतम्यकँ हम श्रीमान्सँ रिसर्च सम्बन्धी गप्प-कयल। ओहिसँ पूर्व दुमका कॉलेजकलेल हमरा गुरुदेव आचार्य सुमन शैलेन्द्रबाबू ओ स्वयं सुरेन्द्रबाबू प्रधानाचार्यक नामँ पत्र देने छलाह। हमर बेकारी जीवनलेल जँ किनको दरेग छलनि तँ सुमनजी, शैलेन्द्रबाबू ओ स्वयं श्रीमान्कँ। बुद्धजीवीकँ बुद्धजीवीलेल जे चिन्तन व्यापार होइछ से दोसरकँ नहि कारण 'स्ववर्गे परमा प्रीती'। ओहिसँ पूर्व अंग्रेजीमे सिनापसिस बनवाय तथा पालित साहेबसँ शुद्धीकरण करबाय यू.जी.सी. स्किमक अन्तर्गत आवेदन पठौने रही। जखन फेलोशीपबला चिट्ठी विश्वविद्यालय एवं हमरा जे.एन. कॉलेज, नेहराक पतासँ हस्तगत भेल हमरा लोमहर्षक परमानन्द भेल। हम पत्र नेने कविलपुर गेलहुँ श्रीमान्क ओतऽ। श्रीमान् मार्गदर्शन देब प्रारम्भ कयलनि एवं चाह सेहो पिआबथि।

भार कठिन छल। रास्ता दुर्गम। मुदा मार्गदर्शन ततेक विलक्षण जे ओहिमे रमि गेल रही। सबसँ पहिल अवसर प्राप्त भेल काठमाण्डू जयबाक, जतऽ पशुपतिक दर्शन मुरारिमधुसूदनठाकुरक संग, तथा चीफ ऑफ द नेशनल आर्काइब्सक कर्मठ एवं धुरीन व्यक्तित्वक संग दस दिनक अनन्य साहचर्यक प्रतिफल भेल पचास गोट देवी गीतक प्राप्ति सेहो लिप्यन्तर कयलाक बादे। ओ हमरा सहर्षा जिलान्तर्गत 'महिषी' सेहो पठौने छलाह। व्ययसाध्य-कष्टसाध्य एवं स्थानक अनभिज्ञतासँ मोने मोन श्रीमान्पर आक्रोश होइत छल आ सोचैत रहैत छलहुँ जे कतऽ अनावश्यक रूपसँ पठबैत छथि। ई रिसर्च हमरा बुते होयत नहि कारण लिखबाक अवगति हमरा नहि छल। हमरा होइत छल जे– पाण्डुलिपिक संचय श्रीमान् अपना हितमे ने तँ करैत छथि ? मुदा आब बुझैत छी जे कविशेखरक शब्दमे 'सहि सामाजिक उलहन अनेक, कयलहु तथापि साहस कनेक' कँ आश्रय लैत कृतकार्य भेलहुँ आ शोध-प्रबन्ध विश्वविद्यालयमे समर्पित कयलहुँ। पाण्डित्यसँ बेसी मौद्रिक सुख भेटल जे भौतिक सुखभोगी संस्कृतिक लेल परमावश्यक होइछ। डी. लिट् तँ नहिये कयल, मुदा एकोटा स्कॉलर अपन अधीन जँ उत्पन्न करितहुँ तँ औरो मौद्रिक लाभ होइत। श्रीमान् बहुतो उसकओलनि किन्तु कपारमे लिखले नहि छल। प्रोन्नतिक तेसर सोपानक लाभ नहि भेटल। श्रीमान्क स्नेह, सौहार्द्र, सदाविचार, अनुसन्धित्सु प्रवृत्ति, अध्यवसायी रूप, साहित्यिक सर्जनाक प्रेरणा ओ सहानुभूति डेग-डेगपर जे हमरा भेटल ओ अविस्मरणीय अछि।

हमर संस्मरणक शीर्षक दुइ पद युक्त अछि। हम ओकरा द्वन्द्व समास मानि आब उत्तर पदमे प्रवेश करब।

Scanned by CamScanner

हम कहियो ने सोचैत छलहुँ जे श्रीमान् हमर समधि एवं हुनक कन्या कविता हमर छोटि पुतोहु होयतीह । हम परम भाग्यवान् एहि अर्थमे छी जे डा. रामदेवबाबू हमर समधि सेहो छथि । शिवक बहुतो कृपा हमरा ऊपर छनि जाहि क्रममे ई पहिल प्राथमिकता शिव अनुग्रहक थिक । वैद्यनाथ बहुतो तरहेँ सनाथ कयने छथि से निश्चित, मुदा ई हुनक परम अनुग्रह हमरा सन भक्तक ऊपर छनि । सतत कलम ओ किताबक बीचमे जीवन निछाओर कयनिहार साधक डा. रामदेवबाबू स्वयंमेव सिद्धि-ऋद्धि प्राप्ति कयने अविरल जीवन-धारमे प्रवहमान छथि । गीताक कर्मयोगी साधक सिद्ध सुजान हम बुझैत छियनि । ई सम्बन्धजन्य पक्षपातपूर्ण विचार भऽ सकैछ, मुदा ई हिनक अविरल अध्यवसायी स्वभावकेँ देखि शाश्वत सत्यक अंकन कयल अछि । ई एक निर्दुष्ट व्यक्तिक रूपमे अपन छात्र जीवनसँ साहित्यिक सर्जनामे संलग्न रहलाह अछि । जहिना बहेड़ा परिसरक अणु-अणुमे मधुप-मणिपद्म योग देल तहिना कबिलपुरक परिसरमे साहित्यिक लोकनिक निर्माणमे ई दत्तचित रहलाह अछि । अनेको युवा पीढ़ीक व्यक्ति सब हिनक सत्प्रेरणा ग्रहण कऽ साहित्यिक बनि गेल छथि । स्वयं श्रीमान् सिद्ध शिल्प विधानमे हिन्दीक हजारीप्रसादद्विवेदी एवं आचार्य महावीरप्रसादद्विवेदीसँ कनेको न्यून नहि बुझना जाइत छथि ।

साहित्यिक विषय-विवेचन प्रतिपल हिनक लोचनक समक्ष रहैछ । कोनो समय, केओ चिन्हार किंवा अनचिन्हार लोक हिनक समक्ष साक्षात्कार करबाकलेल आबि जाइछ। अपन व्यक्तिगत कार्य-कलापसँ सबकेँ उपकृत करैत छथि । हिनक सज्जनता, स्मितमुखी भाव, कर्मठता, आ लगनशीलता, प्रोत्साहनक पाथेय अनेको गोटाकेँ अपन व्यक्तित्वक निर्माणमे भेटलनि अछि ।

साहित्यिक सर्जनलेल कोनो आवर्जन नहि । प्रत्येक व्यक्तिकेँ नव-नव तकनीकीक ज्ञान कराय पूर्ण सक्षम ओ सामर्थ्यवान बनाय दैत छथि । एकटा हमर कालेजक मित्र अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डा. राजानन्दझा सतत हिनक गुणगान करैत रहैत छथिन । बहुमुखी प्रतिभासँ युक्त डा. श्रीरामदेवबाबू साहित्यलेल युग पुरुष छथि । कथा, एकांकी, उपन्यास, नाटक, कविता तथा दुरूह एवं गम्भीर विषयक अवगाहन सतत करैत अध्ययन अनुशीलन, चिन्तन एवं कठोरसँ कठोर विषयक सहज विश्लेषण करबामे सिद्धहस्त छथि । सुमनजीक शब्दमे ई आधुनिक मैथिली भाषा-साहित्यक आचार्य थिकाह ।

'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' एहि उक्तिक सार्थकता हिनकर प्रत्येक शब्दमे, प्रत्येक कृतिमे भेटैत अछि । गवेषणाक क्षेत्र तँ प्रत्येककेँ अबूह ओ अथाह लगैत छैक, किन्तु डाक्टरसाहेब अपन असीम ज्ञान ओ विशिष्ट कार्यपद्धति सँ दुर्गमकेँ सुगम बनाय दैत छथिन ।

हिनका संग सम्बन्ध-स्थापनमे मध्यस्थता कयलनि डा. रूपनारायणबाबू, प्रधानाचार्य, जे. एन. कॉलेज, नेहरा । हम दुनू मित्रकेँ स्कूटरपर सवार अबैत देखि तुरत अनुमान कऽ लेल जे श्रीमान् आइ कोनो कथावार्त्तामे आयल छथि । बिना कोनो तारतम्यक हिनका स्वीकारोक्ति दऽ आतिथ्य सत्कार कयलियनि । गुरुचरण सरोज रजसँ निज मन मुकुर सुधार' कयल । बीचमे कने हमर बालक 'सतीश' थोड़े व्यवधान उत्पन्न कयलनि । मुदा विधनाक विधान लग मनुक्खक किछु नहि चलैछ । ताहूमे विवाहो जन्म मरणं, चऽ यदायत्र भविष्यति'- एहि सिद्धान्तक पूर्ण अनुगामी हम छी । सबसँ उत्तम दिन ओ बुझायल जे अमरजी सन धुरीन पंडित राजकुमारगंजक गोष्ठीमे अनवरत सम्मिलित भेनिहार हमरा सतीशक पाणिग्रहण प्रक्रियाक सम्पादन वैदिक वाक्यक उच्चारणसँ कयलनि ।



Scanned by CamScanner

रामदेवभाइ : किछु अन्तरंग प्रसंग

डा. श्रीमतीशेफालिकावर्मा

आँखि अप्पन पाँखि अप्पन
अपन विद्या अपन पौरुष
यौवनक उत्साह अप्पन
और छह विश्वास, मुक्त छह आकाश ....

अप्रतिम विश्वास, अदम्य उत्साहक संग मुक्त आकाशमे विचरण करबाक प्रेरणा दैत ई पाँती सभ बेर-बेर पढ़बाक मोन होइत अछि आ आँखिक आगाँ एहि पाँती सभक रचयिता प्रो.रामदेवझाजीक स्नेह आ ममतासँ भरल चेहरा नाचऽ लगैत अछि । उज्जर धोती कुरतामे आवेष्टित, ठोरपर प्रत्येक व्यक्तिकलेल एकटा आत्मीय मुस्कानक संग सभक स्वागतलेल सदैव तत्पर । सादा जीवन उच्च विचारक परिपोषक रामदेवजी ओहि कालक कवि छथि जखन साहित्य-समाजमे एक दोसराक लेल आदर रहैत छलैक, स्नेह ओ सम्मान रहैत छलैक ?

प्रायः लोक बाहरसँ किछु आ भीतरसँ किछु फराके होइत अछि, किन्तु रामदेवजीक व्यक्तित्व क्रिस्टल सन निरभ्र छनि । रेमंड विलियम्स कहने छथि-'हमरा सभकँ कलामे सदैव सामाजिक सत्यताक सोझ प्रतिच्छविक आश नहि करबाक चाही किएक तँ साजाजिक सत्यता प्रायः अन्तर्वर्त्ती प्रक्रियासँ उदभूत होइत अछि- एहि क्रममे ओकर मौलिक कथ्य रूपान्तरित भऽ जाइत छैक- कोनो भाषाक साहित्यमे स्थायित्वक बड़ महत्त्व होइत अछि- काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह प्रेम, वात्सल्य आदि भावना सभ चिरन्तन होइत अछि, शास्वत होइत अछि । अस्तु, कोनो काल, परिस्थितिमे एकर महत्त्व कम नहि होइत अछि, हृदयसँ हृदय धरि पहुँचिते अछि । साहित्यकारक व्यक्तित्त्व आ कृतित्त्वमे तेँ सामञ्जस्य आवश्यक ।

रामदेवजीसँ परिचय हमरा हमर पति ललनकुमारवर्माजी करौने छलाह । दूनू गोटे पटना विश्वविद्यालयक छात्र छलाह कला ओ विज्ञानक । हम बाल्यकालेसँ हिन्दीमे लिखैत रही । पत्रिकामे छपैत रही । हँ हमरा घरमे मैथिली बाजब आवश्यक छल- हिन्दीमे बजबाक कल्पनो नहि कऽ सकैत छलहुँ । मैथिली लिखबा-पढ़बाक भाषा सेहो भऽ सकैत अछि ई नहि बुझैत रही । ओहि समयमे आदरणीय चाचाजी (हरिमोहनझाजी) हमर सभक परिवारक सदस्य छलाह । हुनकर देल कन्यादान, प्रणम्य देवता, खट्टर ककाक तरंग आदि पुस्तक हमर सभ भाय बहिनिकलेल मनोरंजनक विषय रहैत छल । खास कऽ कन्यादानक उक्ति- 'अहाँक नाम सीसी मिश्रा अछि तँ बापक नाम बोतल मिश्रा होयत की ?' एखनो ओकर स्मरण मात्रसँ हँसी लागि जाइत अछि । एक दिन वर्माजी बजलाह-अहाँ मैथिलीमे किएक नहि लिखैत छी ? अहाँ लिखू मैथिलीमे, ई अपन भाषा थिक ।'

पहिने तँ हम एकदमसँ सकपका भऽ गेलहुँ, पतिक ई केहन आग्रह ? आग्रह नहि दुराग्रह ! फेर खूब हँसलहुँ- सागे पात जँ चिबयबाक छल तँ... मुदा, वर्माजी गम्भीर छलाह- हमर मित्र रामदेवजीक आग्रह छनि जे अहाँ मैथिलीमे कथा-कविता लिखू...।'

आब ई बीचमे रामदेवजी कतऽसँ आबि गेलाह ?' हम बजलहुँ- हमरा मैथिलीमे भावना नहि आयत- मैथिली लिखबा आ बजबामे बड़ अन्तर छैक ।' ओ फेर बजलाह- अहाँ लिखू ने हम सुधारि देब ।'

Scanned by CamScanner

हम तर्क देलियनि–हे यौ हम अंग्रेजक जमानाक अफसरक बेटी छी । गाम–घर कहियो देखने नहि छी आ मैथिलीमे बेसी गामे–घरक खिस्सा रहैत छैक, उधारक अनुभूतिसँ कतहु साहित्य रचना होइत छैक ?'

मुदा वर्माजीपर तँ जेना अपन मित्र रामदेवजीक भूत सवार छलनि । तर्क एतेक दैत छलाह– तेँ ने साइन्टिस्ट बनैत–बनैत अधिवक्ता बनि गेलाह । ओ हमरा बुझबैत कहलनि की हेतैक अहाँ शहरक परिवेशक कथा मैथिलीमे लिखू आ मैथिलीक गामक कथाकेँ हिन्दीमे अनुवाद करू । ई एकटा नव प्रयोग होयत ।' आ हम अपन पतिपर सवार रामदेवजीक ओहि भूतक आगू अपनाकेँ सरेंडर कऽ देलहुँ । कऽ–टऽ–कऽ मैथिलीमे लिखनाइ आरम्भ कऽ देलहुँ । मैथिलीक विद्वान–आलोचक लोकनिक समक्ष हमरा लेल तरुआरिक धारपर चलबाक बराबर सन छल ।

प्रथम कविता **पावस प्रतीक्षा**क मिहिरमे प्रकाशनक बाद हम आकाशवाणीक कार्यक्रममे दरभंगा गेल छलहुँ । ओहि ठाम रामदेवजीसँ प्रथम बेर भेट भेल छल । हमर लेखनलेल हँसैत–मुस्किआइत, वर्माजीकेँ धन्यवाद दैत लहेरियासराय टावर लग स्वीट होममे ओ हमरा सभकेँ मधुर खुऔलनि । 'पावस प्रतीक्षा'लेल हमरा बड़ उत्साहित कयलनि संगे आगू लिखैत रहबाक प्रेरणा देलनि । विश्वास नहि होइत छल जे मैथिलीक एतेक पैद्य विद्वान हमर प्रशंसा करैत उत्साहित कऽ रहलाह । आइ मैथिली साहित्यक जँ देहरियोपर हम ठाढ़ छी तँ रामदेवेजीक प्रेरणासँ । तकर बाद तँ हम मैथिलीक आलोचक–लेखक लोकनिक प्रेरणा–प्रोत्साहनसँ मैथिली साहित्यमे शंखघोष सन प्रसृत होइत रहलहुँ ।

फेर तँ सुमनजी, अमरजी, मिहिरजी, रामदेवजी, मणिपद्मजी, सोमदेवजी, मायानन्दजी, किरणजी, हंसराजजी आदि कतेको ओहि कालक कवि सभक संग ठाम–ठाम मंचपर अबैत रहलहुँ जाहि ठाम नहि तँ केओ नव छल ने पुरान–बस हृदयसँ हृदयक परिचय छल ।

सभसँ पैद्य बात छैक जे कोनो फोटोक निगेटिव देखलासँ खाली अन्हार आ कुरूपे रूप देखाइ पड़ैत छैक, मुदा ओकरे पोजिटिव (सकारात्मक) छवि देखलासँ सभ किछु सुन्दर आ आनन्दमय बुझाइ पड़ैत छैक । रामदेवजीक सोच आ दृष्टि सतत सकारात्मक रहलनि अछि ।

रामदेवजीक व्यक्तित्वेटा नहि अपितु हुनक समस्त परिवार–पत्नी, पुत्र, पुत्रवधू, नाति–पोता सभ रूपमे सिनेहक विशाल सागर अछि । हमरा लगैत अछि जाहि ठाम जा कऽ हम तीति–भीजि जाइत छी । खास कऽ पुत्रवत शंकरदेवजी कखनो कतहु भेटि जाइत छथि तँ छाहरि जकाँ हमर पाछाँ रहैत छथि सदिखन हमर ध्यान रखैत छथि ।

रामदेवजीक सिनेह–आदर पाबि हमरा लगैत अछि जेना हम अपन पैघ भाय लग पहूँचि गेल छी । अभाग्यवश, परिवारमे पैघ होयबाक कारणेँ हमरा कोनो पैघ भाइ नहि छथि । एकठाम ओ हमरालेल लिखने छथि– **वास्तवमे जे भावुक नहि होयत, जकरामे सहज हार्दिक द्रवणशीलता नहि होयतैक से कवि भैए नहि सकैत अछि । आ से शेफालिकावर्मामे किछु अधिके छनि । भावनाक कोमलता ओ कल्पनाक माधुर्य हिनक कविताक विशेषता छनि ।**

किन्तु, हम तँ कोनो मैथिलीक विद्वान नहि थिकहुँ ने मैथिली भाषा आ साहित्यक गहन अध्ययने अछि जे हम रामदेवजीक कृतित्वक विषयमे किछु बजबाक दुस्साहस करी । मुदा हुनक व्यक्तित्वक शारदीय गरिमामे हमरा अपनत्वक ओ सिनेहक असीम भंडार भेटल । रामदेवजी दीर्घायु होथि, सरस्वतीक विपुल कोषकेँ औरो समृद्ध करथि आ आगुक पीढ़ीकेँ अपन आशीर्वादसँ पल्लवित–पुष्पित करथि– यैह हमर कामना ।

●

Scanned by CamScanner

एकटा प्रेरक व्यक्तित्व

डा. श्रीमतीनीरजा 'रेणु'

हम जखन-जखन डा. श्रीरामदेवझाक चर्चा सुनैत छियनि तँ एक्के संग हुनक तीनटा रूपक स्मरण भऽ जाइत अछि- लेखक रामदेवझा, अध्यापक रामदेवझा एवं संयोजक रामदेवझा ।

लेखक रामदेवझाकेँ 1960 सँ 83-84 इ. धरि प्रकाशित मिथिला मिहिरक अनेक धारावाही स्तम्भ ओ कथामे देखल जाय सकैत छनि । हिनक कथामे **एक खीरा:तीन फाँक, जेठांश, जलक तलपर लिखल नाम** आदि चिरस्मरणीय अछि ।

एकर अतिरिक्त ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आदिक रचनापर हिनक सारगर्भित निबन्ध एवं अनेक कवितासँ हिनक भावयित्री एवं कारयित्री प्रतिभासँ मैथिलीक पाठक परिचित छथि ।

हेवनिमे **अंगरेजीफूलक चिट्ठी**क प्रणेता डा. रामदेवझा थिकाह से जानि मैथिलीक पाठककेँ हिनक लेखन शैलीक विविधताक एकटा आओर विशिष्ट उदाहरण भेटलनि अछि ।

एहिना हिनकर अध्यापन कलाक ओ दिन स्मरणीय अछि जहिया भाषा विज्ञानक नामेसँ डेराय हम परीक्षा नहि दिअऽ चाहैत रही । भाषा विज्ञानक मोटका पोथी देखितहिँ हम अकछा जाइत रही । मुदा रामदेवबाबू कहलनि जे अहाँ पोथियो देखियौ, फलाँ अध्याय पढ़लाक पश्चात् फलाँ पृष्ठ देखियौ, पढ़ल नहि अछि तँ पढ़ियौ ...इत्यादि । थोड़ेक परिश्रम अवश्य लागत मुदा पास अवश्य करब । समय-समयपर ओ अनेक ओझरायल प्रश्नक समाधान ताकि देथि आ हमरा आशासँ अधिके अंक प्राप्त भेल ।

मुदा, कोनो आन पत्रक परीक्षा दिन हमरासँ एहेन गलती भऽ गेल जे आइ धरि ओकर स्मरण मात्रसँ हम लज्जित भऽ जाइत छी । भेलै ई जे काव्यशास्त्रक प्रश्न पत्र किछु कठिन रहैक । पढ़ि कऽ तँ गेल रही तेँ हम उत्तर लिखबामे लीन भऽ गेलहुँ । लिखैत-लिखैत हमरा पिआस लागल । तावत पानि देवऽवलाकेँ अबैत देखलिऐक । ओ हमर सीटसँ प्राय: छओ वा सात सीट पहिनेवला व्यक्तिकेँ पानिक गिलास दऽ रहल छलैक । हम ई सोचि लिखबामे पुन: तल्लीन भऽ मुँह नीचा कऽ लेलहुँ जे जावत ओ गिलासवला अओताह तावत थोड़ेक समयक उपयोग कऽ लेब । किछुए कालमे बुझि पड़ल जे आगाँमे केओ ठाढ़ छथि । हम बुझलिऐक जे ओ पानियेवला व्यक्ति थिकाह । हम मूड़ी नीचा कयनहि बाजि उठलहुँ- 'एक गिलास पानि ।' सुनाय पड़ल- 'लऽ लिअऽ ने ..... ।' मुँह उठौलहुँ तँ देखैत छी जे निरीक्षणक कार्यमे रत प्रोफेसर रामदेवझा थिकाह । लाजेँ तँ गड़ि गेलहुँ । हमरा अपन स्वभावमे ओ व्यावहारिकता अछिए ने जे 'गलती भऽ गेल' ..... 'सॉरी सर......' ई सभ किछु बजितहुँ, उनटे बकारे बन्न भऽ गेल । हिनका एहि घटनाक स्मरण रहनु वा नहि, हम तँ एखन धरि अपराध-बोधसँ ग्रस्त छीहे ।

डा.रामदेवझाक तेसर परिचितिमे हमरा स्मरण होइत अछि एकटा संयोजकक स्वरूपक । लहेरियासरायमे एकटा संस्था स्थापित भेल रहैक-'संकल्प लोक' ओहि समयमे हम इलाहाबादमे रहैत छलहुँ । डा.रामदेवझाक पत्र आयल छल जे एहि संस्थासँ एकटा पत्रिका प्रकाशित होयतैक, कोनो रचना पठाउ। मोनमे घुरिआइत भावना पन्नापर उतरऽ लागल । शीर्षक देलिऐक- 'महाकविक तन्वंगीसँ ।' हमर कविता 'संकल्प' नामक पत्रिकामे ओ प्रकाशित कयलनि । हमरा घरसँ बाहर जयबाक अवसर कम होइत अछि, मुदा, जखन अत्यावश्यक होइत छैक तँ कतहु-कतहु जाइतो छी । से, साहित्य

Scanned by CamScanner

अकादेमी द्वारा प्रस्तावित स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथा संग्रहक सम्पादनक भार हमरा छल (1968-69 इ.) । ओहि क्रममे मैथिलीक कथाकेँ हम आलोचकक दृष्टिसँ पढ़लहुँ आ, नीक-नीक कथा सभक चयन हम अपना मोने कयलहुँ । एहिमे कतेको कथा महिला द्वारा लिखल रहैक । अकादेमीक तत्काल प्रस्तावित कथा-संग्रहमे पन्द्रह-सोलहटा कथा मात्रक समावेश करबाक छलैक । ओही अवधिमे हम हिन्दीक एकटा महिला कथाकारक संग्रह देखलिऐक । हमरा मनोरथ भेल जे मैथिलीमे सेहो एहेन कथा-संग्रहक प्रकाशन होअय । हम उक्त (स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथा) संग्रहक क्रममे महिला लोकनिक रचनाकेँ एकटा भिन्ने पाण्डुलिपि तैयार कऽ लेलहुँ । इच्छा भेल जे एकर प्रकाशन स्वयं करी, मुदा ओतेक व्यय करबाक सामर्थ्य नहि छल । से, ओ पाण्डुलिपि बहुत दिन धरि घरमे पड़ल रहल ।

1996 इ.मे इलाहाबादमे डा.अमरनाथझा जन्म शतवार्षिकी मनाओल गेलैक । मिथिला सांस्कृतिक संगम, प्रयागक ओहि समयक अध्यक्ष रहथि प्रभासकुमारचौधरी । मैथिलीक अनेक विद्वान लेखकगण ओहि आयोजनमे निमन्त्रित छलाह । डा.रामदेवझा सेहो आयल रहथि । हम गप्पक क्रममे हिनकासँ अपन महिला कथा संग्रहक मादे जनौलिअनि । अपन आर्थिक असामर्थ्यक उल्लेख करैत पुछलिअनि जे– की, कोनो संस्था द्वारा एहि संग्रहक प्रकाशन सम्भव छैक ?' डा. झा कथाक संग्रहकेँ देखलनि आ किछु कालक पश्चात बजलाह जे– हम समय देखि एकर उत्तर देब ।'

28 फरवरी, 1998 इ. केँ साहित्य अकादेमी दिससँ एकटा पत्र भेटल । ओहिमे **महिला लेखन : बीसम शताब्दीक** सम्पादनक भार हमरा देल गेल छल । संयोजक रहथि डा.रामदेवझा । ओ अकादेमी दिससँ केवल पत्रेटा नहि पठबौलनि, अपितु समय-समयपर उचित मार्गदर्शन सेहो दैत रहलाह ।

हम अनुभव कयलहुँ जे डा.रामदेवझा स्वयं परिश्रम करैत छथि, संगहि मैथिलीक रचनाकारक प्रति ममता तथा जिज्ञासा हिनका सतत रहलनि अछि । हमरा ई पुछने रहथि जे की सभ लिखैत छी, हम अपन लिखल कविता सभ हिनका देखौलिअनि । हमर निवेदनपर ओहि कविता संग्रह 'आगत क्षण ले'क हेतु ई भूमिका सेहो लिखि देलनि ।

एहि तरहेँ, डा.रामदेवझासँ हम बेर-बेर उपकृत होइत रहलहुँ अछि । श्री 108 जगदम्बासँ प्रार्थना जे ओ हिनका चिरायु रखथुन, हमरा सभकेँ एहेन गुरुक आशीर्वाद सतत भेटैत रहय ।

●

Scanned by CamScanner

बहुआयामी व्यक्तित्व : डा. रामदेवबाबू

डा. श्रीताराकान्तझा

सम्माननीय डा. रामदेवबाबू– व्यक्ति एक, रूप अनेक, साहित्यकार, कथाकार, निबन्धकार, नाटककार, कवि, अनुवादक, सम्पादक, आलोचक, समीक्षक, अनुसन्धानवेत्ता, शोध-निदेशक, लोकसाहित्य मर्मज्ञ, पत्रकार, सफल प्राध्यापक, गम्भीर विचारक तथा लोकप्रिय सांस्कृतिक कार्यकर्त्ता । आधुनिक मैथिली साहित्यक मर्मज्ञ विद्वान एवं प्रशंसनीय वक्ता । अनुभवी, व्यवहार कुशल तथा लोकज्ञाता, डा. रामदेवबाबूक ई सभ रूप प्रशंसनीय छनि । को बड़ छोट कहत अपराधू । सम्प्रति मैथिली साहित्यक यशस्वी शोध विशेषज्ञक रूपमे हिनक मान्यता सुरक्षित छनि ।

अतः हमहुँ हिनकर भक्त छी । सौभाग्यवश गुवाहाटी (गौहाटी)मे अपन आवासपर सेहो हिनकासँ सामीप्य बोधक अवसर प्राप्त भेल अछि । एक बेर नहि, दू बेर । एसगरे नहि दू महिमा मण्डित व्यक्तित्वक संग । एक बेर श्रद्धेय 'सुमन'जीक संग । दोसर बेर परम आदरणीय डा. शैलेन्द्रबाबूक संग । की अपूर्व मिलन-पर्व छल ओ ! कोनो टीम-टाम नहि । कोनो श्रेष्ठत्वक दर्प नहि । अत्यन्त सहज, सरल एवं सरस ओ सत्संग अविस्मरणीय अछि । खान-पान, रहन-सहन, आहार-व्यवहार, विचार-विमर्श आदि सभमे – अपनत्व एवं प्रेमक निर्मल तरंग तरंगित छल । अतः ओहि प्रेरक स्मृतिकेँ हम खूब नीक जकाँ धरोहरक रूपमे सुरक्षित रखने छी ।

अपन साहित्यिक सर्जनामे डा.रामदेवबाबू लोकधर्मी साहित्यकार सिद्ध होइत छथि । व्युत्पत्तिक दृष्टिसँ 'लोक' एवं 'वेद' (अथवा शास्त्र) दुनूक अर्थ एक समान छैक । लोक धातुसँ निष्पन्न 'लोक' शब्दक अर्थ– 'दर्शन' अथवा 'साक्षात' अपरोक्षानुभूति थिक । तहिना विद् धातुसँ निष्पन्न 'वेद' शब्दक अर्थ– 'ज्ञान' थिक – सत तथा आह्लादक संग । दुनू शब्द अपन परम्पराक प्रमाण मानल जाइत छैक । रामदेवबाबूक सर्जनामे 'लोक' अथवा परम्परा ऊर्ध्वगामी रूपमे अयलनि अछि । तेँ हिनक रचना शीघ्रहि हृदयकेँ स्पर्श करैत अछि संगहि दैत अछि आत्म सन्तोष । **एक खीरा : तीन फाँक, मनुक सन्तान, धरतीमाता, अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग, रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** आदिमे लोक अथवा समाज परम्पराक सटीक वर्णन हृदय प्रदेशकेँ आन्दोलित करैत अछि । एहने साहित्य दीर्घजीवी होइत छैक, कालजयी होइत छैक । महाभारतकार साधिकार कहैत छथि –

यस्य नास्ति निजा प्रज्ञा केवलन्तु बहुश्रुतः ।
शास्त्रार्थ न विजानाति दर्वी सुपरस यथा ॥

अर्थात् जिनका व्यावहारिक अनुभवसँ उत्पन्न अपन ज्ञान नहि छनि, मात्र पोथीक ज्ञान छनि, ओ व्यक्ति शास्त्र एवं पोथीकेँ ठीकसँ नहि बुझि सकैत छथि । अतः लोकानुभवकेँ सभ महत्त्व दैत छथिन । चाणक्य तेँ अलोकज्ञकेँ मूर्ख कहलथिन अछि । यैह लोकचेतनाक सुन्दर आओर पारदर्शी चित्र डा. रामदेवबाबूक साहित्यमे चित्रित अछि । तेँ ओहिमे चुम्बकीय आकर्षण रहैत छैक, कमनीय भावना रहैत छैक ।

सामान्यतः आदरणीय रामदेवबाबूक साहित्यमे सांस्कृतिक परम्पराक विशेष महत्त्व छनि । एहिमे अनावृत्त होइत अछि मानवीय संवेदना से सहज-बोधसँ सराबोर भऽ कऽ । परम्पराक प्रति मोह अन्धानुकरण नहि होइत छैक । अपितु परम्पराक सातत्य थिक, निरन्तरता थिक, आओर थिक अविच्छिन्न प्रवाह, जे अतीतक साहित्यिक-सांस्कृतिक धरोहर उत्तमांशसँ वर्त्तमानकेँ सम्पन्न एवं सार्थक बनबैत अछि तथा भविष्यक लेल मार्ग प्रशस्त करबाक महत्त्वपूर्ण कार्य करैत

Scanned by CamScanner

अछि । एहि दृष्टिसँ परम्पराक एहि दृष्टिकोणसँ रामदेवबाबू श्रेष्ठ साहित्यकारक कोटिमे आसन ग्रहण करैत छथि । डा. जयकान्तबाबूक अभिमत सेहो तर्क संगत छनि- **Dr. Ramdev Jha has attempted to paints similar aspects of life, particularly among the lower classes in new manner taking up little, insignificant things that matter for a happy and successful life.**

हिनकर रचनाधर्मिताक प्रधान उद्देश्य स्वस्थ, वैभवपूर्ण तथा सुरक्षित समाजक स्थापना अछि जाहिसँ राष्ट्र सुरभित हो, मंगलमय हो । हिनक काव्यिक प्रतिभापर तँ श्रद्धेय रमानाथबाबू सदृश गम्भीर विवेचक सेहो मुग्ध रहथि । 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'क साकार रूप हिनक निम्न पाँतीमे दृष्टिगोचर होइत अछि –

आकुल प्राण पियासल तकइछ नीलिम नयन कटोरमे
सुधा-सिन्धु संचित राखल छल हँसित सम्पुटित ठोरमे
चंचल सिन्धु अचंचल लहरी
डूबि रहल जलयान हे
अनुभव विफल, भेल अछि खण्डित
नाविक केर अभियान हे ।

हम लिखि चुकल छी जे मान्य रामदेवबाबूक व्यक्तित्त्वमे अनेक प्रकारक भावराशि उद्वेलित छनि । सभ एकसँ एक बढ़ि कऽ । किन्तु हमर व्यक्तिगत अनुभव कहैत अछि जे हुनक अनुसन्धानात्मक तथा विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति विशेष उल्लेखनीय एवं प्रशंसनीय छनि । उमापतिक सम्बन्धमे हुनक युक्तिसंगत तर्क, नेपाल जाय तथा ओहि ठामसँ बहुतो महत्त्वपूर्ण मैथिलीक सामग्रीकेँ विस्तृत प्रचार-प्रसारक हेतु प्रस्तुत करब, सम्पादित करब हुनक आसाधारण आओर अति सराहनीय कार्य थिकनि ।

व्यक्तिगत रूपसँ हमरा किछु शोध-प्रबन्ध तथा शोध समस्यापर हुनकर विलक्षण प्रतिभाक परिचय भेटल अछि जे सिद्ध करैत अछि जे ओ महान विचारक, विद्वान वक्ता, समीक्षक एवं अध्येता छथि । एहि सन्दर्भमे हम अमरीकाक विख्यात कवि, नाटककार एवं समीक्षक टी. एस. एलियटक मान्यताकेँ उद्धृत करैत छी जे एलियट अपन सृजन अनुभवसँ एहि निश्चयपर पहुँचलाह जे कारयित्री और भावयित्री प्रतिभा दुनू परस्पर एक-दोसराक पूरक होइत अछि । अत: सर्जक और आलोचक दुनू एकहि व्यक्तिकेँ होयबाक चाही । एहि कथनक अर्थ ई भेल जे नीक सर्जके एकटा नीक आलोचक भऽ सकैत अछि ।' ई मत नियमक रूपमे स्वीकृत नहि भेल अछि किन्तु एलियटक मतमे बहुत सार्थकता छैक, विशेषत: सम्मानीय रामदेवबाबूक सम्बन्धमे एलियटक कथन एकदम समीचीन बुझना जाइत अछि । एलियटक सिद्धान्तक अनुरूप डा. रामदेवबाबूक समीक्षासँ साहित्यक ज्ञान तथा आस्वादन चेतनामे अभिवृद्धि होइत अछि । अस्तु, एहू दृष्टिकोणसँ हिनकर विद्वत्ताक परिपक्वता एवं बौद्धिक सम्पदाक जानकारी प्राप्त होइत अछि ।

सम्मानीय रामदेवबाबू मैथिली साहित्यक वरदपुत्र छथि तथा छथि गरिमा मंडित साहित्यकार । हिनक सृजनशीलतासँ हमरा सभकेँ आओर अधिक अपेक्षा अछि, आओर अधिक आशा अछि । अस्तु हिनक गत्वर, सफल, स्वस्थ एवं सुरभित जीवनक मंगल कामना करैत छी **किम् किम् न साधयेत कल्पलतेव विद्या ।**

●

Scanned by CamScanner

In appreciation of Dr. Ramdeo Jha

Elizabeth Smith & Miriam Weber

Some people impress us by their scholarship, some by their warmth as friends, some by their dedication to their work, some by their appreciation and love for their family. In the years that we have been acquainted with Dr. Ramdeo Jha he has impressed us in all these areas.

We have seen Ramdeo Babu's scholarly side both in visits we made to the Maithili Department and also as he patiently answered our questions related to language use and grammar for countless hours in the front room of his home, where he so patiently encouraged us and explained details of the Maithili language to us, even though we were like infants in our language skill. It takes a real scholar to explain difficult concepts on a level beginners can understand. Time spent with him was always stimulating and profitable. From a linguistic point of view, one often finds that there are few people who are gifted in providing insight on technical grammatical aspects of a language as well as on aspects of language use as it is colloquially spoken- Ramdeo Babu is one of those few gifted people.

Among Ramdeo Babu's many published works, the ones we have enjoyed the most are his short story collections, including **Dharti Mata**, and his modern-day dramas, including **Pasijhait Pathar**. These works are not only a pleasure to read because of his pleasing writing style, but each one touches a chord in the readers' hearts as it addresses some of the joys and sorrows of life and society. For us as foreigners, these writings have given us a wealth of insight into the culture of Mithila, the social challenges that the members of this culture have faced over the last fifty years, and a taste of the richness of the Maithili language.

We have been blessed to see Ramdeo Babu in his home as a loving son, husband, father and grandfather. In fact, when we think of Dr. Ramdeo Jha, we cannot do so without thinking of the whole family- they all seem to take joy in each other's activities and interests, functioning together so well. We have experienced the warm welcome of friendship given to us in their home again and again. And besides all this, her reminds us of **Miriam's Mousa**, who was also her **Kaka**, which all helps give Dr. Ramdeo a special place in our hearts! We want to express our thanks to this respected friend and wish him much blessing and meaningful experience in the coming years, as even in his " retirement" he continues to touch many lives.

●

Scanned by CamScanner

एकटा समग्र व्यक्तित्व गुरुवर डा. रामदेवझा

डा. श्रीमतीवीणाठाकुर

'डा. रामदेवझा' ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक मैथिली विभागक पूर्व प्राचार्य, यशस्वी प्राध्यापक, विशिष्ट विद्वान, कलाकार, आलोचक, गवेषक, नाटककार, निबन्धकार, कवि, लोकसाहित्यक मर्मज्ञ, सम्पादक, अनुवादक, बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न एवं उच्च कोटिक व्यक्तित्त्वसँ सम्पन्न व्यक्तिक नाम थिकनि । डा.रामदेवझा कथाकारक रूपमे बहुचर्चित छथि । कतेको साहित्यक कृतिकेँ सम्पादित कऽ मैथिली साहित्यक भंडारकेँ समृद्ध कयलनि अछि । एक खीरा : तीन फाँक, मनुक सन्तान, धरती माता, इजोती रानी, रामविजय नाट, हरगौरी विवाह नाटक, नन्दीपति गीतिमाला, मैथिली शैव साहित्य, प्राचीन मैथिली गीतावली, उमापति एवं नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत आदि हिनक प्रकाशित पोथी थिकनि । माटि-पानिक सोन्हाओन गन्ध, जन-जीवन एवं लोक संस्कृतिक अभिव्यक्ति एवं स्वाभाविक ठेठ भाषा हिनक बड़ पैघ विशेषता छनि । मानवीय सुकुमार संवेदना, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक चेतनाक स्पन्दन हिनक कथामे भेटैत अछि । निम्न एवं मध्यमवर्गीय समाजक चित्रण ई अपन रचनामे कयलनि अछि । भाषामे परिनिष्ठता, वर्णनमे स्वाभाविकता ओ मार्मिकता, चिन्तनमे मौलिकता हिनक लेखनीक सशक्तताक परिचायक अछि ।

अतीतकेँ बिसरब सामाजिक पतनक लक्षण थिक, कारण समाजक, साहित्य ओ संस्कृतिक अट्टालिका ओहि अतीतेक शिलापर ठाढ़ रहैत अछि । प्राय: एहि भावनासँ प्रेरित भऽ मैथिली अकादमी मिथिलाकेँ आलोकित कयनिहार महापुरुषक परिचयक ग्रन्थमाला 'मिथिला विभूति' नामसँ प्रकाशित करब आरम्भ कयलक । डा. रामदेवझा **उमापति** नामक पोथीक लेखन कयलनि । मैथिली साहित्यक इतिहासमे विद्यापतिक बाद जनिक नाम प्रमुखतासँ लेल जाइत रहलनि अछि ओ छथि उमापति । किन्तु हिनक परिचय ओ काल दुनू सर जार्ज ग्रियर्सनक समयहिसँ जटिल विवादक विषय रहल ।

उमापति निर्विवाद रूपेँ श्रेष्ठ नाटककार ओ गीतकार थिकाह । हिनक विषयमे प्रचुर चर्चा भेल तथापि हिनक आश्रयदाता, स्थितिकाल ओ परिचयक सम्बन्धमे भ्रम बनले रहल । डा. ग्रियर्सन, पं. चेतनाथझा ओ डा. जयकान्तमिश्रक तीन दिशामे विचार छलनि । एकर प्रभाव हिन्दी, बंगला, उड़िया एवं असमीमे उमापति विषयक विचारपर सेहो पड़ल । इतिहासकार ओ आलोचक लोकनिक द्वारा अनेको निष्कर्ष एवं सिद्धान्त प्रतिपादित कयल गेल, जे भ्रामक छल । डा. रामदेवझाक व्यापक अन्वेषण एवं अनुसन्धान एहि विवादकेँ अन्त कऽ देलक एवं हिनक निष्कर्ष सर्वमान्य भऽ गेल । ई हिनक विशिष्ट अध्ययन एवं विद्वत्ताक परिचायक अछि ।

डा. रामदेवझाक विशिष्ट अध्ययनक परिचायक **हरगौरी विवाह नाटक**क प्रस्तुति थिकनि । इतिहासमे नेपालक राजा जगज्ज्योतिर्म्मल्लक हरगौरी विवाह नाटकक उल्लेख भेल छल मुदा कतहु एकर विस्तृत चर्चा, परिचय व समीक्षा नहि देल गेल छल । नेपालक कोनो व्यक्तिगत अथवा सार्वजनिक पुस्तकालयमे एकर हस्तलेखो नहि छल । मुदा, 'मैथिली शैव साहित्य'क अनुसन्धानक क्रममे डेनियल राइटक 'हिस्ट्री आफ नेपाल'क परिशिष्ट भागमे नेपालमे संगृहीत एवं कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय पुस्तकालयकेँ प्रदत पाण्डुलिपिक सूचीमे एहि नाटकक नाम ओ क्रमांक देखबामे हिनका अयलनि, ई ओकरा ओतऽसँ मँगाय ओहि पाण्डुलिपिक माइक्रोफिल्मक आधारपर एहि नाटकक सम्पादन कयलनि । नाटकक भूमिका ओ परिशिष्ट भागमे अनेक नवीन सामग्रीक समावेश कयलनि, जे आलोचक एवं अनुसन्धानकर्त्ताक ध्यान आकृष्ट कयलक, अनेको मान्यताकेँ तोड़लक-बनौलक एवं नेपालीय मैथिली साहित्य दिश अनुसन्धाता लोकनिक ध्यान उन्मुख कयलक । एहि क्रममे डा. रामदेवझाक जगज्ज्योतिर्म्मल्लक दुइ लघु नाट्य कृत्ति **दशावतार नृत्यम् एवं षोडश गीतम** अनुसन्धानात्मक प्रयासक महत्त्वपूर्ण अवदान थिक । वास्तविक अनुसन्धान ओ थिक जे इतिहासक मान्यताकेँ बदलय, नव मान्यता

Scanned by CamScanner

स्थापित करय अथवा कोनो दुर्बल एवं सन्दिग्ध मान्यताकेँ सप्रमाण सम्पुष्ट करय । डा. रामदेवझा अनुसन्धानक क्रममे अपन विशिष्ट स्थान बनबैत इतिहासकार लोकनिकेँ अपन धारणापर पुनर्विचार करबालेल विवश कऽ दैत छथि। जगज्ज्योतिर्म्मल्लकेँ मैथिली साहित्यक इतिहासमे प्रतिष्ठित करबाक श्रेय हिनकहि छनि ।

डा. रामदेवझा मैथिली साहित्यक प्रसिद्ध साहित्यकार छथि । आलोचना साहित्यमे हिनक महत्त्वपूर्ण स्थान छनि। हिनक शोध प्रबन्ध **मैथिली शैव साहित्य** हिनक विद्वत्ताक परिचायक अछि । मिथिलामे शैव भावनाक व्यापकता, शैव साहित्यक विविधता तथा शिवभक्तिक विभिन्न स्वरूपक स्पष्ट निरूपण एहि पोथीमे भेल अछि । मैथिली साहित्यक प्रादुर्भाव कालमे शैवसाहित्यक की रूप छल तकर निरूपण एहि पोथीमे भेल अछि, ओकर पृष्ठभूमि एवं प्रेरक तत्त्वक विश्लेषण सेहो भेल अछि । 'मैथिली शैव साहित्य' वस्तुतः भक्ति भावना एवं साहित्य साधनाक समन्वित रूप थिक ।

'कविवर जीवनझा रचनावली'क सम्पादन डा. रामदेवझा श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क संग कयने छथि । एहिमे कविवर जीवनझाक अद्यपर्यन्त उपलब्ध समस्त रचना-सामवती पुनर्जन्म, सुन्दर-संयोग, नर्मदासागर ओ छिटफुट गीत संगृहीत अछि । सामवती पुनर्जन्म एवं सुन्दर संयोग पहिनहुँ प्रकाशित भेल छल मुदा नर्मदा सागर ओ स्फुट गीत सभ पहिल बेर पुस्तकाकार रूपमे प्रकाशित भेल । एहि पोथीक महत्त्वपूर्ण वस्तु अछि एकर विशाल भूमिका । विद्वान सम्पादक जाहि परिश्रम ओ निष्ठासँ, गहन अन्वेषणसँ कविवर जीवनझाक व्यक्तित्त्व ओ कृतित्त्वक सम्बन्धमे पर्याप्त सामग्री प्रामाणिक रीतिसँ प्रस्तुत कयलनि अछि, ताहिसँ मैथिली साहित्यक इतिहासपर नव प्रकाश पड़ैत अछि । डा. झा आचार्य सुमनक संग **मैथिली प्राचीन गीतावली**क संग-सम्पादन सेहो अत्यन्त श्रम एवं निष्ठासँ कयलनि । एहू पोथीक भूमिका पाठकक लेल अत्यन्त महत्त्वक अछि संगहि गवेषणा कयनिहार लेल बड़ उपयोगी सेहो ।

नाट्य साहित्यक क्षेत्रमे असमी ओ मैथिली दुनू साहित्यमे शंकरदेवक स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण । असममे नाटक लिखबाक परम्पराक श्रीगणेश शंकरदेव कयलनि । हिनक लिखल **रामविजय** नाटक सम्पादन कऽ महत्त्वपूर्ण भूमिका लिखि ई पाठक एवं शोधकर्त्ता लेल एकटा नव द्वार खोलि देलनि ।

डा. रामदवेझाक साहित्यिक अवदानसँ मैथिली जगत पूर्ण परिचित अछि । हिनक **पसिझैत पाथर** नाटक नाट्य विधामे प्रयोगधर्मिता, कथानक, कथोपकथन, भाषा-प्रयोग, युगीन विचारधारा इत्यादिक दृष्टिएँ, विशिष्ट कोटिक अछि एवं नाट्य साहित्यमे महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत अछि । **पिपासा** एवं **दुलारक भूख** हिनक प्रसिद्ध एकांकी छनि। डा. झाक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्नताक प्रमाण थिकनि हिनक कविता । हिनक कवितामे मिथिलाक माटि-पानि, सामान्यजनक हास-अश्रु एवं इच्छा-आकांक्षाक अभिव्यक्ति भेटैत अछि । भावक गम्भीरताक संग-संग गेयधर्मिता एवं कर्णप्रियता हिनक काव्यक मुख्य विशेषता थिकनि । हिनक समस्त कृति मैथिली साहित्यक भण्डारक विशिष्ट सामग्री थिक जकर तात्कालिक एवं स्थायी महत्त्व दुनू प्रकारक अछि ।

ई तँ भेल हिनक प्रतिभाक साहित्यिक पक्ष । एक दोसर पक्ष जे अत्यन्त महत्त्वक अछि ओ थिक प्रथम तँ एक सफल शिक्षक, दोसर एक बड़ पैघ मानवक । हम 1974-75 बैचमे मैथिलीक स्नातकोत्तरक छात्रा छलहुँ। परम सौभाग्यशालिनी छलहुँ, जे हिनकासँ पढ़बाक सुअवसर हमरा भेटल । भाषा-विज्ञान हमरा सबकेँ ई पढ़बैत छलाह। बत्तीस वर्ष व्यतीत भेलाक पश्चातो जहिना पढ़ौलनि तहिना मोन अछि । हुनक एक-एक शब्द, हाव-भाव, आत्मविश्वास एवं वर्गक प्रति प्रतिबद्धता ओहिना मोन अछि । हम अपन छात्र जीवनमे सबसँ बेसी हिनकेसँ प्रभावित छलहुँ। एकटा शिक्षकक लेल एहिसँ बेसी सार्थकता आओर की होयत, जे ओकर एक-एक शब्द ओकर छात्रकेँ जीवन पर्यन्त मोन रहैक । हिनक विशाल हृदय एवं मानवीयताक एक घटना मोन पड़ैत अछि । 2002 मे हमर प्रथम पोथीक विमोचनक अवसर छल । गुरुदेवसँ किछु शब्द कहबाकलेल आग्रह कयल गेलनि तँ हम अत्यन्त रोमांचित भऽ उठलहुँ जखन अपन वक्तव्य क्रममे गुरुदेव एकटा विगत घटनाक चर्चा कयलनि । हम स्नात्तकोत्तरक छात्रा छलहुँ, एक दिन वर्गमे किछु क्षण लेल अचेत भऽ गेल छलहुँ । बात अत्यन्त साधारण छल, मुदा गुरुदेवकेँ एतेक वर्ष बितलाक पश्चातो ओ मोन छलनि । हिनक सम्पूर्ण व्यक्तित्त्व समाजक सेहो अत्यन्त प्रेरणादायक अछि ।

●

Scanned by CamScanner

अभिभावक श्रीरामदेव बाबू

डा. श्रीधीरेन्द्रनाथमिश्र

कौलिक संस्कार आ श्रम-साधनाक प्रसादेँ केओ साधक, तपस्वी किंवा मनीषीक अभिधा पबैत अछि। –'सत्य श्रमाभ्यां सकलार्थ सिद्धिः –निस्सन्देह ई कथन असत्य नहि। यथार्थ श्रमहिसँ केओ इहलौकिक जीवनमे यशस्वी भऽ अलौकिक आनन्दानुभूति प्राप्त कऽ सकैछ।

मिथिलाक विभूति, बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न, साहित्य अकादेमीसँ 'पसिझैत पाथर' नामक नाट्य संग्रहपर पुरस्कृत, शैवसाहित्यक विशेषज्ञ, साहित्यक बहुविध विधामे निष्णात, स्वाभिमानी, दृढ़ इच्छाशक्ति रखनिहार जाहि व्यक्तिक नाम मैथिली-जगतमे अतीव आदरक संग लेल जाइछ, ओ थिकाह **प्रो. डा. श्रीरामदेवझाजी**।

संघर्षमय जीवनक कंटकाकीर्ण बाट-घाट पार करैत, परिस्थितिक प्रतिकूलतोमे धैर्यावलम्बन कयने आगाँ लक्ष्यक दिशि बढ़ैत, विज्ञान पढ़ि वैज्ञानिक होयबाक आकांक्षा रखैत पुनः, लीक बदलैत, काव्य-कलाक चरमोत्कर्षपर पहुँचैत एहि महान साहित्यकारक जीवनक आरोह-अवरोह, आहार-व्यवहार, लगनशीलताक तथा चिन्तन-अध्ययनक मौलिकता निस्सन्देह प्रेरणाक अक्षयपुंज थीक संगहि गौरव-गरिमा ओ कीर्त्ति महिमाक प्रतीक।

डा. झा बहुभाषाविद् छथि। कोनो विषयपर व्याख्यान दैत काल सन्तुलित शब्दक प्रयोग, वाक्-संयम, निर्भीकता ओ श्रोताकेँ अपना दिशि आकृष्ट करबाक विलक्षण क्षमता हिनकामे दृष्टिगत होइछ। लेखन ओ वाचन दुनू पृथक-पृथक महत्त्व रखैत अछि। एहि दुनू क्षेत्रमे विवेच्य विद्वान पारंगत छथि। कल्पना शक्तिक प्रखरता ओ प्रौढ़ता, वर्णन शैलीमे सहजता-सरलता, कथ्यमे कुतूहलता ओ सरसता आदि हिनक रचनाक विशिष्टता थीक।

गुरुवर रामदेवबाबू साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक पूर्व प्रतिनिधि, परामर्शदातृ समितिक सदस्य आ एतदतिरिक्त कतोक संस्थासँ जुड़ल बहुआयामी व्यक्तित्वक धनी छथि। साहित्यिक-सांस्कृतिक मंचपर उद्घोषकक रूपमे दक्ष छथि। लहेरियासरायक 'संकल्प लोक' आ दरभंगाक 'विद्यापति सेवा संस्थान'क मंचपर हिनक एहि कलाकेँ देखबा-सुनबाक सुअवसर हमरहु प्राप्त भेल अछि।

विवेच्य व्यक्तिमे साहित्यिक प्रवृत्ति बाल्य-जीवनहिसँ रहल छनि। स्कूलक छात्रक रूपमे हिन्दीक प्रतियोगितामे सर्वश्रेष्ठ कथाकारक पुरस्कार पाबि हिन्दीक छात्र ओ शिक्षक लोकनिकेँ चकित कऽ चुकल छथि। सहभागी सभकेँ राग-द्वेषक कोपभाजन बनितहु पुनः आयोजित प्रतियोगितामे अपन पूर्वहिक स्थानकेँ सुरक्षित राखि सभक मुँहतोड़ उत्तर दऽ चुकल छथि। ई प्रवृत्ति हिनक बढ़ले गेलनि आ हिनक रचना सभ हिन्दीक पत्र-पत्रिका, दैनिक अखबारमे छपऽ लगलनि।

डा. झाक भाषामे क्लिष्टता, दुरूहता किंवा शब्दजाल नहि दृष्टिगत होइछ। जकरा 'टू दी प्वाइंट' कहल जाइछ सैह। विशेष भूमिका नहि, पृष्ठभूमिमे पसार नहि, डारि-पात विशेष नहि पकड़ि मात्र विषयवस्तुपर केन्द्रित भऽ रचनाक प्रसार दिशि प्रवृत्त होइत छथि।

डा. झा भाषा-विज्ञानक विशिष्ट अध्येता ओ विशेषज्ञ छथि। एम. ए. क्लासमे मनोयोगपूर्वक भाषा-विज्ञानक विविध पक्षकेँ सोझरा कऽ कथा-पिहानी सदृश पढ़यबामे पटु। जेना सूनल अछि, जे हिनका द्वारा भाषा विज्ञानसँ सम्बद्ध विषयपर बहुत किछु काज भेल अछि, परंच से अद्यपर्यन्त प्रकाशित नहि भऽ सकलनि अछि। आशा कयल जाइछ, जे

Scanned by CamScanner

इहो पुस्तकाकार भऽ एहि विषयक अध्येताक समक्ष आओत । भाषा-विज्ञानक पोथीक मैथिलीमे नितान्त अभाव अछि। जे किछु उपलब्धो अछि से एकर सभ पक्षक समाधान नहि कऽ सकल अछि ।

डा. झा विद्यासागर छथि । काव्य-कला मर्मज्ञ छथि । रचनामे प्रवाह, आरोह-अवरोह, शास्त्रीय संगीतक व्याकरण-पद्धति जकाँ । कवितामे छन्द, लय, तुक, मात्रा, अलंकारक शब्द, आ भावपर विचार करैत तँ गद्यमे सरलता आ रोचकता दिशि मूलतः ध्यान दैत, विषय वस्तुक ठोस स्वरूप ठाढ़ करैत, जे मीलक पाथर प्रमाणित होइछ ।

एतऽ रामदेवबाबू द्वारा प्रणीत एकटा **रूप-दर्शन** शीर्षक कविताक किछु अंश प्रस्तुत करब प्रासंगिक बुझैत छी, जे हिनक काव्य वैदुष्यकेँ उजागर करैत चकित करबा योग्य अछि-

स्वर्ण शिखर पर बादरि उमड़ल नहुँ-नहुँ झाड़य केश हे ।
दर्पण किरण मुखक छवि चोरबय छविकेँ नुकबय वेश हे ॥
दुपहर केर सुरुज गरमायल चमकल सोनहुल देह हे ।
दृष्टिक चरण पिछरि तलमल कर छह-छह सघन सिनेह हे ॥
नयनक गति अवरुद्ध करइलय लागि ने जाय कुहेस हे ।

एगारह दिसम्बर 1959 इ.क लिखल एहि कवितामे केहन शब्द-चयन ओ भाव-लावण्य अछि तकर रसबोध सहृदय पाठक कऽ सकैत छथि ।

कतोक अवसरपर अपना विषयमे अवाच्यो कथाक श्रवण कयलो उत्तर ओहिपर कोनो कान बात नहि देब हिनक वैशिष्ट्य रहलनि अछि । कटुतोमे यदि मधुर भाव राखल जाय तँ ओकरा प्रति ककरो श्रद्धा-भाव रहब स्वाभाविक मानल जाइछ । रामदेवबाबू ई बात बुझितो जे अमुकक कोपभाजन बनि चुकल छी, तथापि ओकरा प्रति प्रतिशोधक भाव नहि राखि सहृदयता आ सहिष्णुताक परिचय दैत रहलाह अछि । हमरा जनैत एहि बातक पुष्टिक हेतु केओ एकर परीक्षण कऽ सकैछ ।

डा. झा पक्षक पहाड़ छथि । जकर पक्ष करताह तँ से कृत्रिमताबोधक नहि, स्वार्थलिप्त भऽ नहि । ककरो किछु जिज्ञासा अछि, तँ निधोख हिनका ओतऽ पहुँचि ओकर समाधान करबा सकैछ । एहिलेल हिनका कोनो तारतम्य नहि, अपितु अपन अल्पज्ञते देखबैत समाधानक सरिता बहबैत महानताक परिचय दैत छथि ।

सर्वप्रथम हिनक साहित्यिक पक्षक अवलोकन करब अपेक्षित बुझना जाइछ । साहित्यकारक रूपमे ई शीर्षस्थ मानल जाइत छथि । गत शताब्दीक पाँचम दशकसँ हिनक लेखनी चलल सर्वप्रथम कथा-विधामे आ एहि संगहि कविता, एकांकी आ समीक्षा-विधामे सेहो । कथा-विधामे हिनक भाषामे जतबे सरलता भेटैछ, समीक्षामे ओतबे गाम्भीर्य । जाहि विषयपर लिखबाक रहैत छनि ताहिसँ सम्बद्ध प्रामाणिक तथ्य प्रस्तुत करैत छथि । अधिकसँ अधिक पोथीक पारायण करैत छथि, आ ओकर सन्दर्भ सेहो प्रस्तुत करैत छथि, जे दस्तावेजक रूपमे साहित्यिक धरोहर प्रमाणित होइछ । एतबा श्रम बहुत कम लोक करैत अछि । हिनका तावत धरि सन्तोष नहि होइत छनि जावत धरि विषयवस्तुसँ सम्बन्धित आँकड़ा अपन आँखिए नहि देखि लैत छथि । ककरो कहला-सुनलापर मात्र नहि रहि जाइत छथि । एकरहि परिणाम थीक जे जाहि कोनो विषयपर हिनक लेखनी चलल अछि ताहिमे मौलिकताक संग प्रामाणिकता भेटैछ ।

रामदेवबाबूक कथामे निम्नवर्गीय समाजसँ लऽ मध्यमवर्गीय समाजक दुखदैन्य, सामाजिक वैषम्य, मानवीय मूल्यक अवमूल्यन आ एवमविध अनेकानेक समस्या ओ तकर निदानक चेष्टा भेल अछि जाहिमे संवेदनाक सूक्ष्मता, कल्पनाक प्रौढ़ता ओ दृढ़ता, प्रबल इच्छाशक्ति ओ आत्मविश्वासक अविस्मरणीय चित्र भेटैछ ।

ई निर्विवाद जे रामदेवबाबू अत्युच्च कोटिक विशुद्ध कथाकार छथि । लगैत अछि जे ई कथाक परिभाषा ओ लक्षणकेँ नीक जकाँ धुनने छथि । अनेकानेक भाषाक शीर्षस्थ रचनाकार सभक श्रेष्ठ कृति सभक अध्ययन गम्भीरतापूर्वक

Scanned by CamScanner

कयने छथि । ओ खाहे शरत्चन्द वा विमल मित्र होथि, देवकीनन्दनखत्री होथि वा प्रेमचन्द, गुलेरी होथि किंवा गोर्की वा मोपांसा, चेखब, सॉमरसेट मॉम होथि अथवा मैथिलीक हरिमोहनझा । सभक कथा-लेखनक प्रवृत्ति ओ शैलीक ई जेना गम्भीरतापूर्वक अवगाहन कयने छथि तेँ कथानकसँ लऽ वर्णनमे हिनक कथा साहित्यमे सर्वत्र रोचकताक परिदर्शन होइछ ।

विवेच्य साहित्यकारक जखन समीक्षापरक वृत्तिपर दृष्टि निक्षेप करैत छी तँ दृष्टिगत होइछ जे हिनक समीक्षामे आलोचकक गुण व्यापक रूपेँ अनुवर्त्तमान-विद्यमान छनि । हंसन्यायक प्रबल पक्षधर । नीर-क्षीर-विवेकक शरण ग्रहण करैत । नुकतीसँ नापल-तौलल शब्द-संयोजन । पक्ष-विपक्ष दुनूकेँ निर्भीकतापूर्वक समक्ष राखि ककरोसँ शास्त्रार्थ-विमर्श हेतु प्रस्तुत आ परामर्श दैत कल्याण भावेँ । लगैछ जेना आलोचना-समालोचना शास्त्रकेँ सेहो ई उत्तम रीतिएँ पारायण कयने छथि । स्पष्ट कहबामे तिल मात्र संकोच नहि ।

पुस्तकक प्रति यदि ककरो मोह देखबाक हो तँ से रामदेवबाबूक ओतऽ जा कऽ देखि सकैत अछि । पुस्तकक अद्भुत संग्रह हिनका ओतऽ । 'रेयर बुक' सभक संगह । ककरो सन्दर्भक प्रयोजन पड़लापर स्वयं पोथी सभ निकालि दिशा-निर्देशन करब हिनक औदार्य ओ सद्भावनाक प्रतीक अछि ।

पटना विश्वविद्यालयक छात्र रहैत प्रवास-जीवन बितओलाक कारणेँ हमरा रामदेवबाबू सन गुरुसँ प्रत्यक्ष रूपेँ अध्ययनक सुयोग नहि प्राप्त भऽ सकल, पंरच कतोक बाट-घाट पार करैत दरभंगा अयलापर हिनक सम्पर्कमे शनैःशनैः अबैत गेलहुँ आ एही क्रममे साहित्यिक-सांस्कृतिक चेतनाक पाठ पढ़लहुँ जे हमरा हेतुएँ वर्त्तमाने नहि, अपितु भावी जीवन पर्यन्त हेतु सबल सम्बल बनल अछि ।

रामदेवबाबू सदृश काव्य-कलाकारकेँ अभिभावकक प्रयोजन छलनि । सौभाग्यवश ऋषितुल्य साहित्यमनीषी सुमनजी ओ आचार्य प्रवर स्वनामधन्य अमरजी सदृश महान व्यक्तित्त्वसँ हिनका परिचय भेलनि, दुनू गोटे हिनक गुरु रहलथिन । अमरजी विद्यालय-स्तरक तँ सुमनजी विश्वविद्यालय स्तरपर । पछाति अमरजीक ई विष्णुतुल्य बनलाह । एहि श्रेष्ठ पदक निर्वाह सेहो मिथिलाक संस्कृतिक अनुरूप करैत रहल छथि । एकहि मंचपर अनेक बेर स्वसुर-जामाताकेँ अध्यक्षता-लोकार्पणकर्त्ता किंवा मुख्य अतिथि-विशिष्ट अतिथिक रूपमे आसीन देखि गौरवानुभव होइत रहब स्वाभाविक । ककरो लेल सेहन्ताक विषय । हमहूँ ई आनन्द लैत रहैत छी । साहित्यिक-सांस्कृतिक अभिरुचि रहने ई सुयोग प्राप्त होइत रहैछ ।

रामदेवबाबूक स्नातक स्तर धरि अध्ययन बिहार विश्वविद्यालय आ स्नातकोत्तर पटना वि.वि.सँ कयलनि । पश्चात् पी-एच.डी. सेहो कयलनि । प्राध्यापकीय जीवनक श्रीगणेश एस.पी.कालेज, दुमका (सम्प्रति झारखंड राज्य)सँ कयलनि आ तदुपरान्त दरभंगाक सी.एम.कालेज आ पुनः स्नातकोत्तर मैथिली विभागमे वि.वि. प्राचार्यक रूपमे सफलतापूर्वक कार्य करैत अवकाश प्राप्त कयलनि । आचार्य सुमन, प्रो. रमानाथझा, किरणजी, ईशनाथबाबू ओ डा. शैलेन्द्रमोहनझा लोकनिक पश्चात् शिक्षकक रूपमे सर्वाधिक ख्याति हिनका प्राप्त भेलनि । हिनक अध्यापन-कलासँ छात्र मुग्ध रहैत छल । हिनका द्वारा देल गेल व्याख्यानक बाद छात्रकेँ ओहि विषयक अध्ययन हेतु अधिक श्रम नहि करऽ पड़ैत छलैक । अपन वर्गमे सर्वप्रथम स्थान पाबि चुकल मेधावी एहि व्यक्तिक रूप सर्वदा छात्रहिक रूपमे बनल रहल । जीवनक प्रायः छठम दशक पर्यन्त हिनक वैह रूप । एखनो पोथीकेँ मित्रक रूपमे सतत हाथसँ पकड़ने । पोथी हाथसँ छूटल तँ लेखनी हाथमे । दुनूक अद्भुत सामञ्जस्य, बेजोड़ संयोग ।

रामदेवबाबू आस्था रखैत छथि विद्वत्गणक प्रति आ स्नेह-वात्सल्य दैत छथि छात्रकेँ आ यथोचित व्यवहार रखैत छथि मित्रक संग, गुरुक प्रति आदर-श्रद्धा-भाव, आ तकरहि फलस्वरूप हिनकहु समाजसँ लऽ शिक्षा-जगत, साहित्य-जगत ओ संस्कृति-जगतमे प्रतिष्ठा हस्तगत भेलनि । मुदा, एकर बादो अहं हिनक मानसमे स्थान नहि पाबि सकलनि, सर्वथा ओकर परित्याग कयने कर्मयोगी बनल जीवनक ऊबर-खाबर पथपर अग्राभिमुख रहलाह । वस्तुतः एहि तरहक हिनक जीवन-पद्धतिकेँ देखि ककरा नहि आह्लाद होयतनि आ के नहि एकर अनुकरण करऽ चाहताह ?

Scanned by CamScanner

हिनक परिवारमे वाणीक विशेष कृपा छनि । धीयापुता सभ सुशिक्षित ओ तज्जन्य सुसभ्य-सुसंस्कृत । धर्मपत्नी, पर्यन्त स्नातकोत्तर आ डाक्टरेटक उपाधि पओने । मैथिलीक सभ अनन्य उपासक । मैथिलीक नामपर किछु करबा लेल सभ तत्पर । कन्यारत्न सभ सामान्य शिक्षासँ लऽ संगीतक सर्वोच्च शिक्षा प्राप्त कयने । चित्रकला, मिथिला पेंटिंग आ अरिपन आदि मिथिलाक व्यवहार-कलामे निपुण ।

बहुत रास बात हमरा रामदेवबाबूक सम्बन्धमे नहि बूझल अछि । कतोक बात बुझबाक हमरामे सामर्थ्यो नहि । जतऽ सरस्वतीक सद्यः कृपा छैक, ओहिठाम कोनो बात बजबामे वा विषय-विवेचन करबामे डेग फूकि-फूकि कऽ राखऽ पड़ैत छैक । हँ एतबा अवश्य बुझैत छियैक जे गुरुक शिष्यक प्रति जे भाव होयबाक चाही से हमरा प्रति अत्यधिक छनि आ आशीर्वाद-प्रसाद एक के कहय जे दुनू हाथसँ दैत छथि आ बिना गुण रहनहुँ हमरा भद्र व्यक्तिक कोटिमे रखने रहैत छथि । एहिसँ पैघ सौभाग्य हमरा हेतुएँ आर की हैत ?

रामदेवबाबू एक कुशल पत्रकार सेहो रहल छथि । 'वैदेही'क सम्पादन कयने छथि । 'मिथिलामिहिर'क अंगरेजीफूलक चिट्ठी, रामजोड़ी कागतक पाँखिपर, बहिनाक विरोग आदिमे औपन्यासिक कृतिमे हिनक पत्रकारिताक-छविक छटा विलक्षण देखि पड़ैछ ।

विषयक अधिक अध्ययनक केओ कऽ सकैत अछि, मुदा विशेषता छैक विषयवस्तुक उपस्थापनमे, ओकरा समेटि कऽ सन्तुलित रूपेँ प्रस्तुत करबामे तखनहि ओकर कोनो रचना प्रभावकारी होयतैक । रामदेवबाबू खूब पढ़ैत छथि, मुदा लिखबाकाल वेसी सोचैत छथि आ लिखबामे विशेष समय लगबैत छथि । कारण स्पष्ट अछि, फड़िछा कऽ कोनो बातकेँ रखबामे समय लगबे करतैक । किछु कहि देब वा किछु लिखि देब, से हिनका कथमपि मान्य नहि । 'किछु लिखब' ओहि विषयक प्रति अन्याय होयत, जाहिपर ओ लिखऽ जा रहल छथि – एहेन हिनक अवधारणा छनि । एहिसँ सर्वदा रामदेवबाबू बचैत रहल छथि । ई जे लिखैत छथि ताहिमे विश्वसनीयता रहैछ, कारण बहुत प्रकारेँ विषयक मन्थन कयने रहैत छथि जेना 'रही' सँ मट्ठा मथल जाइछ ।

रामदेवबाबू अपन कथामे ठेठ शब्दक प्रयोग करैत छथि, जे सर्वबोधगम्य होइछ, मुदा समालोचनामे परिनिष्ठित-परिष्कृत शब्दक प्रयोग । दुनूक शब्दावलीमे आकाश-पतालक अन्तर । ई भिन्नता हिनक वैदुष्यक प्रबल प्रमाण थीक । जतऽ जेहेन समाज, जेहेन वातावरण, जेहेन परिवेश ओतऽ ओही रूपक भाषा, ओही रूपक टोन, ओही रूपक भाव, ओही रूपक शिष्टाचार-व्यवहार । रामदेवबाबू आस्तिक छथि, मुदा आडम्बर पसिन्न कयनिहार नहि । हम हिनका मन्दिरमे जाय वा प्रवचन आदिमे बैसल कहियो नहि देखलियनि अछि । यद्यपि जखन हिनक साहित्यिक अवदान दिशि ध्यान दैत छी तँ ताहिमे धार्मिक ओ पौराणिक विचारक प्रस्तुति उदारताक संग पबैत छी । एकर सभक उदाहरण हेतु हिनका लिखित **मैथिली शैव साहित्य** प्रभृतिकेँ देखल जा सकैछ, किंवा एतदिरिक्तो कृति सभ दृष्टिपथपर अबैछ ।

अवकाश ग्रहण कयना कतोक वर्ष भऽ चुकल छनि, तथापि जीवन-शैलीमे पूर्वापेक्षा कोनो परिवर्त्तन नहि । सतत् क्रियाशील । सदैव मुखमंडलपर हँसीक रेख । साहित्यिक-सामाजिक गतिविधि ओ विभिन्न संस्था-संगठनक खोज-खबरि लैत रहब हिनक प्रवृत्ति पूर्ववत विद्यमान दृष्टिगत होइछ ।

हम एतऽ एहि महान साहित्यकारक रचना सभपर प्रकाश देब एहि हेतु उचित नहि बुझैत छी, जे रचना सभक चर्चा कतोक गोटे द्वारा हैत आ पुनरावृत्ति कऽ पृष्ठ बढ़यलासँ लाभ कोन ? मूलतः एतबे जे ई जाही विधाकेँ स्पर्श कयल से स्वर्णवत् चमकि उठल । एहि श्रेष्ठ विभूतिक प्रति शत-शत प्रणाम ।

●

Scanned by CamScanner

गप-सप कहैत छथि । अहाँ ओतऽ पहुँचब तँ एक-ने-एक साहित्य-प्रेमीकेँ बैसल हिनकासँ किछु-ने-किछु ग्रहण करैत पायब । अहाँक कोनोटा जिज्ञासा, कोनोटा बेगरता, तकर तुरन्त समाधान । सदिखन तैयार । तँ जखन 'सुमन'जी द्वारा हिनका मादे लिखल पढ़लहुँ जे **अध्यापक-जीवनमे ई कहियो अप्रस्तुत भऽ कऽ नहि गेलाह ।** - तँ अर्थ स्पष्ट भेल । प्रस्तुत होयबाक स्थिति तँ तखन होइत छै जखन...., से ई तँ 'वेल रीड' आरम्भेसँ रहलाह,आ जकर गवाही हिनक निजी पुस्तकालयक विशाल-भंडार तँ दैते अछि, वर्त्तमानमे साहित्य-प्रेमी लोकनिक बरोबरि कोनो-ने-कोनो जिज्ञासा लऽ कऽ पहुँचब आ तकर यथोचित समाधान लऽ कऽ घुरब-दैत अछि । से, साहित्ये-प्रेमी किएक, एहिसँ इतर लोक सेहो जँ कोनो बेगरता लऽ कऽ पहुँचैत छथि, आ से बेगरता मैथिली-हितमे होइत अछि, तँ ई तकर पूर्त्ति करबामे कोनो तरहक आलस्य नहि देखबैत छथि । से अभिनन्दन-पत्र हो आ कि विवाह-उपनयन-मुण्डन कार्ड, आ कि पर्चा-पोस्टर- अहाँ आँखि मूनि कऽ कबिलपुर चलि जाउ आ साधिकार अपन इच्छापूर्त्ति कऽ घुरि आउ।

से, अनवरत अध्ययनशील ओ चिन्तनशील रामदेवबाबू एखनो धरि थाकल नहि छथि, लेखन मिझायल नहि छनि । लेखनक धाह आ प्रवाह एखनो अक्षुण्ण छनि । तँ एसगरमे कखनो कऽ सोचैत छी जे हिनक वयसक अंकगणित अशुद्ध तँ नहि अछि । नहि, से तँ नहि । तखन ? तखन निष्कर्ष यैह बहार करैत छी जे रामदेवबाबूक लेल वार्धक्य सेहो कोनो माने-मतलब नहि रखैछ ।

जाह ! कतऽ-सँ-कतऽ भसिया गेलहुँ हम ! नः, अपन सोचक टेढ़-टूढ़ प्रवाहकेँ व्यवस्थित करबाक लेल मैथिली साहित्यमे हिनक अवदानकेँ पहिने प्रस्तुत करैत छी । मुदा से कतऽसँ आरम्भ करू ! हिनक कलम तँ साहित्यक विभिन्न क्षेत्रमे क्रियाशील रहलनि अछि आ जे अनेक पत्र-पत्रिकाक अनेक अंकमे छिड़िआयल पड़ल अछि आ जकर संख्या अगणित अछि । मुदा जे गनल अछि आ पुस्तकाकारमे उपलब्ध अछि, ताहिसँ पहिने अहाँकेँ परिचय कराबी—

कथाकृति

एक खीरा : तीन फाँक, मनुक सन्तान, इजोती रानी, धरती माता, अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग, रामजोड़ी : कागतक पाँखिपर, आजी माँ ।

नाट्यकृति

पसिझैत पाथर ।

अनुसन्धान-आलोचना

शकुन्तला नाटक : एक अध्ययन, पार्वती परिणय नाटक : एक अध्ययन, मैथिली शैव साहित्य, उमापति, मैथिली शैव साहित्यक भूमिका, जगतप्रकाशमल्ल, जगज्ज्योतिर्म्मल्ल, जनार्दनझा जनसीदन, मैथिली लोक साहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य, सुभद्रझा ।

सम्पादन (पोथी)

नन्दीपति : गीतिमाला, रामविजय नाट ओ वर गीत, हरगौरीविवाह नाटक, नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत, कुंजविहार नाटक, मैथिली भाषा सरिता (भाग-4), दशावतार नृत्यम् ओ षोडश गीतम्, मैथिली प्राचीन गीतमंजरी, दुर्गाचरित नाटक, रमेश्वरचरित मिथिला रामायण ।

सम-सम्पादन

मैथिली प्राचीन गीतावली, कविवर जीवनझा रचनावली, विद्यापति गीत संचय, मैथिली कथा : शताब्दी संचय ।

Scanned by CamScanner

सम्पादन (पत्रिका)

वैदेही (64 सँ 67 धरि), संकल्प (1 सँ 5 अंक धरि)

अनुवाद

पृथ्वी परिचय (भाग-4), जीव विज्ञान (भाग-1), वाणभट्ट (अंग्रेजी विनिबन्ध), सगाइ ।

रामदेवबाबूक उक्त साहित्यिक यात्राक परिणामे थिक जे हिनका 1991 मे नाट्यकृति 'पसिझैत पाथर'पर 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार' तथा 1994 मे 'सगाइ' नामक उपन्यासपर 'साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार'सँ सम्मानित कयल गेलनि । स्थानीय स्तरपर सेहो अनेक संस्था द्वारा अनेक खेप सम्मानित-पुरस्कृत होइत रहलाह अछि ।

मैथिलीमे एहि तरहक धारणा रहल अछि जे पुरस्कृत-सम्मानित भऽ गेलाक बाद साहित्यकार अपन लेखन-कर्मसँ विमुख भऽ जाइत छथि । रामदेवबाबू एहू सन्दर्भमे फराक छथि। सम्मान अथवा पुरस्कार हिनक साहित्यकारकेँ मारि नहि सकल । साहित्य अकादेमीक मैथिली-प्रतिनिधि रूपमे सेहो ई अनेक तरहक हवा-बसातकेँ सहैत, ताहिसँ संघर्ष करैत अपन साहित्य-साधनामे लागल रहलाह । एखनो तरह तरहक हवा-बसातकेँ धाँगैत, लेखन-चिन्तन-क्रममे अव्याहत रूपेँ अग्रसर छथिहे । तेँ ई प्रकाशन अथवा सम्मान-पुरस्कार सेहो हिनका सन व्यक्तित्वक लेल कोनो माने-मतलब नहि रखैत अछि।

मुदा एक मिनट ! ई माने-मतलबवला गपपर एक मिनट रोकऽ चाहब ! मानल जे रामदेवबाबू सन लेखकक लेल भने ई सभ कोनो महत्त्वक नहि रहि गेल होइनि, ई अपन साधनामे रमल चलल जा रहल होथि, मुदा साहित्य-प्रेमी-वर्ग हिनक साहित्य संसारमे भ्रमण करैत हिनका आ हिनक उपलब्धिक मादे जरूर कुशल-क्षेम बुझबाक आकांक्षी होयत ! तखन प्रश्न उठत जे हिनकर साहित्यिक खेती तँ बड़ विशाल, ई रमल रहैत छथि साहित्यक विभिन्न विधामे, मुदा हिनकर डीह कतऽ, जतऽसँ बैसि ई रंग-रंगक उपजा-बाड़ी करैत छथि ! एकटा विशेष परिचिति तँ चाही ! आब देखल जाय, एकबेर मोन उमकलनि तँ विदा भऽ गेलाह नेपाल । ओतऽ पुस्तकालयक कीड़ा बनि किछु तेहन वस्तुकेँ उठौने अयलाह, जे मैथिलीकलेल सर्वथा अपरिचित छल । आब ई स्वाद तेहन लागि गेलनि जे ताहीमे बहुत दिन धरि रमल रहलाह । एखनो से मोह कहाँ छुटलनि अछि ! नेनाक स्थिति देखू ! जेना कहलहुँ, मातृकेमे जनमलाह, ओतहि बहुत समय धरि रहियो गेलाह । आ ओतऽ अपन नानी, फेर अपन मायसँ जे लोकगीत, विधि-व्यवहारक व्यावहारिक दर्शन-बोध कयलनि, तँ बोधगर होइत तकरा विस्तार दैत लोक-साहित्यक घर-दुआरिसँ लऽ कऽ देस-परदेस धरिकेँ धाँगि गेलाह । एकटा कहबी छै जे बच्चाकेँ दूरि करबाक हो तँ मातृकमे धऽ दियौ । मुदा रामदेवबाबू ताहू लोक-मान्यताकेँ फूसि सिद्ध कऽ देलनि । आब की कहल जाय एकरा ! हम तँ हिनकर अनुसन्धान-आलोचनाक सूचीए सुना गेल छी । हिनकर जे थीसिस छनि, शैव साहित्यपर, से अद्वितीय अछि । शैव साहित्यपर एहन विलक्षण ग्रन्थ आनो भाषामे दुर्लभ अछि । भारतीय वाङ्मयमे शैव-साहित्य विषयक ई एक एहन निस्सन काज भेल अछि जे जँ एकर अनुवाद अंग्रेजी भाषामे होअय तँ रामदेवबाबू मात्र एहीटा काज लऽ कऽ अखिल भारतीय स्तरपर तँ सहजहि, सीमा पार धरि स्मरणीय रहताह । मुदा दुर्भाग्य जे हमरा लोकनि हिनक एहि गम्भीर काज दिस ओहन ध्यान नहि दऽ सकलहुँ अछि, अपन बाड़ीक पटुआकेँ तीत बुझैत रहलहुँ अछि । हमरा नहि बुझल अछि जे ई एहि दिशामे कोना आ किएक डेग उठौलनि, मुदा आजुक समयमे रंग-रंगक जे थीसिस सभ आबि रहल अछि, तकरा देखि अवश्य लगैत अछि जे ई एहि युगक लोक नहि छथि ।

जाह ! हम फेर बहकि गेलहुँ ! हम तँ हिनकर अनुवाद-गुणपर सेहो गप करऽ चाहैत रही । हिनकर नाटककार-अभिनेता-रूपपर सेहो बतिआय चाहैत रही । कते कहू ! ई जे गीत-कविता लिखैत छथि, ओहिमे जे शब्द-संयोजन द्वारा नव-नव अर्थ भरैत छथि ताहू मादे किछु-किछु कहऽ चाहैत रही । मुदा नहि, बेसी विस्तारमे जायब खतरासँ खाली नहि अछि । अस्तु ।

Scanned by CamScanner

हम ई मानैत छी जे रामदेवबाबू भगवान नहि छथि । गुण-अवगुण सहजात धर्म थीक । गप एहूपर हो, से सहज प्रतिक्रिया लोकक मोनमे उठि सकैत अछि । मुदा हम मानैत छी जे साहित्यमे कृतित्वक महत्त्व विशेष रूपेँ होयबाक चाही, व्यक्तित्वक ताहिसँ कम । अन्तमे यैह कृतित्व शेष रहि जाइत छै । दोसर, जँ व्यक्तित्वक महत्त्व छैको, तँ दृष्टिकोणक भिन्नतामे सेहो बहुत रास गप ओझरा-सोझरा सकैत अछि । एहि प्रसंग संवादहीनता सेहो एक पैघ कारक बनैत अछि, आ.....आ.....

.....नहि-नहि, हम ठीके बहकि गेलहुँ ! हम तँ ई कहबा लेल भूमिका बन्हैत रही जे सम्पूर्णतामे देखी तँ लेखक रामदेवझाक दूटा रूप समानान्तर ठाढ़ होइत अछि-एक अनुसन्धानकर्त्ताक आ दोसर कथाकारक । दूनूमे कोन उनैस, कोन बीस, से तय करब मुश्किल । ओना ई अपन लेखनारम्भ कथेसँ कयने रहथि । प्राय: मात्र सतरह वर्षक काँच वयसमे । आगू, 'मिथिला मिहिर' मे विभिन्न स्तम्भक माध्यमे जे लेखन कयलनि विभिन्न छदमनामसँ, सेहो तँ सैह थीक । एखनो धरि से लति छुटल नहि छनि । हालहिमे हमरा सभ 'जखन-तखन' पत्रिकामे एकटा विलक्षण कथा 'टीस' छपने रही । से हिनक पूर्ववर्त्ती कथा सभक (एक खीरा : तीन फाँक, मनुक सन्तान, धरती माता समेत) तुलनामे कनियो बासि नहि लगैत अछि तहिना 'परस्पर', 'आजीमाँ' आदि कथा सभ सेहो युगीन भाव-बोधसँ सराबोर अछि । से, हिनक कथा-धारापर विस्तारसँ बतिआयल जा सकैए । मुदा विस्तार भयक कारणेँ तकरो एतहि छोड़ैत सूत्र रूपमे यैह कहऽ चाहब जे हिनकर कथामे जे जीवन अछि, जीवनक जे यथार्थ अछि, यथार्थक जे आदर्शोन्मुख प्रस्तुतिकरण अछि, से हिनकर, नहि नहि, सैह हिनकर निजता अछि आ यैह निजता रामदेवबाबूक असली डीह बुझाइत अछि । किएक तँ शोध-आलोचना सन नीरस बाटपर चलैत रहितो ई कथाक सरस-सिनेहसँ विमुख नहि भऽ सकलाह । तँ हमरा लगैत अछि जे हिनकर नीरस बाटपर कथे-लेखन एहन पाथेय लऽ कऽ संग रहल अछि जे ई एखनो सहृदय बनल लेखनरत छथि ।

एहि प्रसंग हम हिनक पोथी **मैथिली लोक साहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्यकेँ** सोझा आनऽ चाहब । अहाँ ओकरा पढ़ि जाउ । 'स्वरूप' खण्ड पढ़ैत-पढ़ैत लागऽ लागत जे ई कोन रेगिस्तानमे फँसि गेलहुँ ? मुदा जखने एकर 'सौन्दर्य' खण्डमे प्रवेश करब, सभटा घाम, सभटा नीरसता समाप्त भऽ जायत, आ स्वत: सोचऽ लागब जे ई रेगिस्तानमे पानिक सोआ कोना कऽ फुटि गेल ! अनुसन्धान-आलोचना पढ़ैत-पढ़ैत कथा पढ़ऽ लागब .... एकपर एक कल्पना आ यथार्थ ...स्मृति ! तँ हम कहब जे रामदेवबाबूक दूनू रूप एके ठाम देखबाक हो तँ एहि पोथीकेँ एक बेर जरूर उन्टाउ। हिनक मूल रूप स्वत: स्पष्ट भऽ जायत ।

अरे हँ, एकटा एकान्त समय मोन पड़ि गेल ! हम कथाकार ललितपर विनिबन्ध लिखबाक क्रममे हिनक अहेर करैत रही, जे किछु पत्रिकाक पुरना फाइल देखऽ देथि ! से तँ फराक प्रसंग अछि, रामदेव बाबू ललितक चर्च करैत कहलनि जे ओ हिनका 'हॉट' कथा लिखबाक लेल कहल करथिन । मुदा हिनक जे संस्कार आ परिवेश, से हिनका रोकनि, बरजनि । तहिया एकर हमरा अर्थ नहि लागल । आब लगैत अछि । 'हॉट' शब्दकेँ आइ-काल्हि जाहि भावक संग जोड़ल जाइत अछि, से प्राय: तहिया नहि छल होयत । असलमे तहियाक पूर्ववर्त्ती कथा सभ कठहँसी हँसैत, करुणामे डूबल, व्यक्तिवादी सोचमे ओझरायल रहैत छल, से तँ ललित ..... ! आ अजुको अर्थमे जँ ली तँ ललित स्वयं अपनो कहाँ लिखलनि तेहन ! लऽ दऽ कऽ एकटा 'मुक्ति' ! तखन अपन शिष्य आ समकालीन कथाकार रामदेवझासँ एना किएक कहितथि ! वास्तवमे 'हॉट'सँ हुनक तात्पर्य रहल होयत जीवनक यथार्थसँ, से ओ कोनो वर्ग वा वर्णक हो । ओना दबल-पछुआयल वर्गसँ कथा आबय से हुनक हार्दिक इच्छा रहनि । तँ रामदेवबाबू अपन नेनपनक परिवेश राममय रहबाक करणेँ तथा युवतमसँ अद्यतन परिवेश पण्डितमय रहबाक करणेँ 'हॉट'क जे अर्थ लगबैत होथि, हम तँ कहब जे ई ओही तरहक लेखन तँ करैत छलाह, एखनो करैत छथि, जकर आग्रह ललित करैत रहलथिन । हँ, जखन कखनो गड़बड़ाय लगलाह तँ ललित लेखनकेँ 'ट्रैस' कहैत एके दाबिये कतोककेँ लाड़ि देलनि । मुदा, से ई सभ गुरु-शिष्य अथवा समकालीन रचनाकारक आपसी विचार-विमर्शक प्रसंग थिक।

Scanned by CamScanner

हम एखन एहि विमर्शमे नहि पड़ऽ चाहैत छी । मुदा हम जे विमर्श करहु चाहैत छी, से फड़िछा नहि रहल अछि । लगैए, आब से एहि शब्दसँ सम्भव नहि अछि । तँ, हम आब एकटा चित्र बनबैत छी- रामदेवबाबू चिन्तनशील मुद्रामे पलंगपर पड़ल छथि । हिनकर माथ तर एकटा गेरुआ छनि । दोसर गेरुआ सेहो अछि, जे हिनकर छातीपर छनि, ओ जकरा ई दुनू बाँहिसँ स्नेहपूर्वक दबने छथि । हम चित्र बनबैत-बनबैत कूची राखि दैत छी । एकबेर माथकेँ झाड़ैत छी जेना गेरुआपर किछु लिखल बुझाइत अछि । पढ़ैत छी । माथ तरक गेरुआ पर लिखल अछि-शोध एवं आलोचना आ छातीपरक गेरुआपर- कथा......कथा......कथा.....!

हम प्रसन्न भऽ उठैत छी । स्वयंकेँ फड़िच्छ अनुभव करऽ लगैत छी । अर्थात शोधकर्त्ता ओ आलोचकक रूप रामदेवबाबूक मस्तिष्कसँ बहरायल छनि, आ कथाकार-रूप हृदयसँ । आब तखन हमरा-अहाँकेँ तय करबाक अछि जे हृदयसँ बहरायल रूप हिनकर स्व-रूप छनि, आ कि मस्तिष्कसँ बहरायल ! हम तँ स्पष्ट छी ।

जाह ! देखू, हम फेर पिंगल पढ़ऽ लगलहुँ । हमरा तँ हिनक परिचय प्रस्तुत करबाक छल- पजियाड़ बनि कऽ ! आ तँ हम पुनः हिनक हालक कथा 'टीस'पर अबैत छी । 'टीस'क नायिका बहुत समयक बाद अपन गाम, अपन नैहर, अबैत अछि । ओ अबैत तँ अछि एकटा मांगलिक कार्यमे सम्मिलित होयबाकलेल, मुदा ओ ताहिसँ फराक किछु तकैत रहैत अछि सदिखन । कखनो आँगन-घरमे, कखनो दलान-दरबज्जापर, तँ कखनो टोल-परोसमे । ओ तकैत रहैत अछि. .... तकैत रहैत अछि । से, जखन तकने भेटैत नहि छै, तँ टीस उठैत छै । आ तखन ओ फेर आगू बढ़ि जाइत अछि दोसर किछु तकबाक लेल ।....

से, ई ताकब की थिक ?

हमरा लगैत अछि, ई रामदेवबाबूक आँखि अछि । जे जीवन भरि किछु-ने-किछु तकैत रहल । ओकरे हम शब्दान्तर करैत कही जे ओ अनुसन्धान करैत रहल । तहिना, कथा-नायिकाक अन्तसमे जे एकटा भावुकता छै, ओहिमे जे यथार्थ छै, नैरन्तर्य छै, आ जे हृदयकेँ छूबैत छै-सैह तँ थिकै कथा ! सदिखन हिनक अनुसन्धान-रूपपर चढ़ल... बढ़ल... हिनका अन्दर हिनकासँ संघर्ष करैत... आ अन्तत... परास्त नहि होयबाक हूबा बन्हैत, आगू बढ़ैत... आगू बढैत...

●

Scanned by CamScanner

मोने अछि अंगरेजीफूलक चिट्ठी ओ बहिनाक विरोग

डा. श्रीमतीरमाझा

'मिथिला मिहिर' मे जखन **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** स्तम्भ पहिल बेर प्रकाशित भेल तँ ककाजी (प्रो. हरिमोहनझा) हमरा कहलनि जे तोँ ई हमरा पढ़ि कऽ सुना ।' हम ओही वर्ष अर्थात् 1960 मे पटना आबि गेल रही और आर्य कन्या विद्यालयमे हमर नाम लिखाओल गेल छल । रानीघाट प्रोफेसर्स क्वार्टरकक गंगा-किनारबला डेरामे तखन सबगोटे रहैत छलहुँ । एकसँ एक मूर्धन्य विद्वान, दार्शनिक तथा साहित्यकार सभक जमघट भरि दिन डेरापर लागल रहैत छल । जस्टिस सतीशचन्द्रमिश्र, राष्ट्रकवि रामधारीसिंह दिनकर, यात्रीजी, छविनाथपाण्डेय, जयनारायणमल्लिक, मधुपजी, अमरजी, नायानन्दमिश्रजी, डा. बी. एल. अत्रे, श्रीरामदेवजी - कतेको नाम स्मृतिपटलपर अंकित अछि । घरमे एहन साहित्यिक वातावरण छल जे हमरा सभक खेल सेहो शब्देसँ होइत छल । कनियाँ-पुतरा खेलायब तँ कहियो बुझबे नहि कयलियैक । जतेक समाचार पत्र, पत्रिका छपैत छलैक ताहिमेसँ लगभग सभटा डेरापर अबैत रहैक । पुस्तक सब समीक्षाक लेल अवैत छल । तखन हम बहुत छोट रही किन्तु सभक समीक्षा ककाजी हमरा करबाक लेल कहैत छलाह । जे सही रहैत छलैक तकर बहुत प्रशंसा एवं जे ठीक नहि रहैत छल तकर विवेचना करैत छलाह । नीक बातपर सभक उत्साहवर्द्धन करैत छलाह ।

ककाजीकेँ **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** बहुत रुचलनि । ओ फेर कहलनि जे काकी (स्व.सुभद्राझा) केँ सेहो बजा कऽ ला आ फेरसँ सुना ।' किछु दिनक बाद ओझाजी (डा. शैलेन्द्रमोहनझा) अयलाह तँ ककाजी हुनकासँ पुछलथिन जे- 'मिथिला मिहिर'क स्तम्भ **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** ओ पढ़ि रहल छथि कि नहि ?' हमरा सभकेँ हुनकासँ ज्ञात भेल जे श्रीरामदेवझा ई स्तम्भ लीखि रहल छथि । जतऽ धरि हमरा मोन अछि एहि स्तम्भमे लेखकक नाम नहि रहैत छलैक । हम सभ 'मिहिर'क आ एहि स्तम्भक व्यग्रतासँ प्रतीक्षा करैत रहैत छलहुँ । मिथिलाक माँटि-पानिक सुगधसँ सुगन्धित एहि स्तम्भक चर्चा हरदम होइत रहैक ।

श्रीरामदेवजी ओहि डेरापर बेसी काल अबैत रहथि । हमरा एखनो ओहि डेराक लॉनमे मूकबधिर बला अभिनयक वृत्तान्त मन अछि । हुनक बौकाक अभिनय सेहो मन अछि । 'चेतना समिति' 1960 मे पटना विश्वविद्यालयक ह्वीलर सिनेट हॉलमे आयोजित विद्यापति स्मृति-पर्वमे ककाजीक प्रसिद्ध कथा **आदर्श कुटुम्बक** कयल गेल अभिनय सेहो मन अछि । ओहिमे श्रीरामदेवजी ससुरक बेजोड़ अभिनय कयने रहथि आ ओहि प्रभावशाली अभिनयक हेतु दुइ गोटे अपना-अपना दिससँ हुनका स्वर्णपदक प्रदान करबाक घोषणा कयने रहथिन ।

हम ककाजी एवं काकीक बड़ दुलारू छलियनि । बहुत कम गोटेकेँ ई ज्ञात छनि और छलनि जे हम हुनकर भतीजी छियनि । बेसी लोक तँ बेटिये बुझैत रहथि । एखनो ओ हमरा लेल पितृवत् छथि और जे किछु सीखि सकलहुँ से हुनके सभसँ । पाँच मासक छलहुँ तँ पिता- इन्द्रमोहनझाक असामयिक निधन दुर्घटनामे भऽ गेल रहनि । पटनामे वा गाममे (कुमर बाजितपुरमे) कोनो समाजिक, साहित्यिक अथवा पारिवारिक गतिविधि एहन नहि होइत छलैक जतऽ ककाजी आ काकी हमरा छोड़ि कऽ जाइत होथि ।

ककाजीक विस्मरणसँ तँ सभ परिचित छथि । कतेको बेर तँ ओ काकी धरिकेँ बिसरि जाइत छलथिन । हमरा सभकेँ नेन्नेसँ हिस्सक रहय जे गोड़ लागऽ कालमे अपन नाम कहियनि । भने ओ गोपालजी (बड़का भैया

Scanned by CamScanner

श्रीराजमोहनझा) कि लखनजी (श्रीकृष्णमोहनझा) कि रमणजी अथवा भुवनजी वा रत्ना कि हम रमा होइ। तोँ के रत्ना कि रमा ? तोँ के गोपालजी कि लखनजी ? एहि स्थितिसँ बचबाक लेल हम सभ सामने जाइते अपन नाम कहि दियनि। पटनाक डेरामे आबऽबला लोक सभकेँ हमहूँ मन होयबे करबनि। डेरा भरि दिन– रमा ई कर, रमा ओ करसँ गुंजायमान रहैत छल। भरि दिन ऊपर-नीचा करैत छलहुँ। डेरामे ककाजी ऊपरमे रहैत छलाह। 'जे क्यो आबथि हुनकर नाम, काज एवं गाम पूछि लहुन आ तखने हमरा कह– ई हरदम ककाजी कहथि। एहिमे कतेको बेर अभ्यागत सभकेँ असुविधा भऽ जाइत छलनि। श्रीरामदेवजीकेँ सेहो हमरा द्वारा ई पुछलासँ कतेको बेर असुविधा भेल होयतनि ताहि लेल ओ हमरा क्षमा करताह से हमरा पूर्ण विश्वास अछि। बादमे तँ ककाजीक ई आदति सबकेँ बुझा गेल छलनि।

'साहित्य समाजक दर्पण अछि'– एहि उक्तिकेँ चरितार्थ करैत 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी'मे गाम एवं शहरक रहन-सहनक सूक्ष्मतासँ निरूपण कयल गेल अछि। बात-बातमे सपत खयनाइ एवं देनाइ, उँचका एड़ीवला चप्पल, शहरमे आबि कऽ छोट परिवारमे सबटा कार्यक भार अपनेपर पड़ब, घरबलाक काजपर गेलाक बाद साँझ धरि बाट ताकक प्रसंग सभ हृदयपर अपन छाप छोड़ने बिना नहि रहि सकैत अछि।

'बहिनाक विरोग' हम कहियो नहि बिसरब, किएक तँ सासुर गेलाक बाद धानक डालापर पैर राखऽसँ लऽ कऽ हरदि तोड़ऽमे तथा अहिबातक पातिलकेँ खोलऽमे ई गप जे– एक बापक बेटी छी तँ एके हाथे तोडू' ओहिना सुनऽ पड़ल छल। कनियाँक मुँहदेखाइक समय सेहो– कनियाँ छथि तऽ बड़ सुन्नरि मुदा मुँहपर केशक लट छनि, देखू कोना मूड़ी गोतने छथि ?' आदि तरहक सब लोक रंग-रंगक गप करथि आ हमरा श्रीरामदेवजी मन पड़ैत छलाह।

'रामजोड़ी कागतक पाँखिपर' स्तम्भ सेहो सखी-बहिनपाक मनोभावकेँ उजागर करैत अछि। तीन वर्ष धरि लगातार चलल ई तीनू पत्रात्मक स्तम्भ सभक मनकेँ मोहित कयने रहल। अँगरेजीमे एकटा कथन छैक– Man is style. से कथन श्रीरामदेवजीक एहि तीनू स्तम्भपर लागू होइत छनि। तीनू स्तम्भक संगहि वैदेहीक सेहो हम नियमित पाठक छलहुँ।

सन छियासठिमे विवाहक उपरान्त बाहरे बाहर रहऽ लगलहुँ तेँ विशेष सम्पर्कमे नहि रहि सकलहुँ। एखनो ओ सभ घटना चलचित्र जकाँ आँखिक आगू आबि रहल छथि।

हमर ई हार्दिक शुभकामना अछि जे डा. रामदेवझाजी शतायु होथि तथा अपन साहित्यक सौरभसँ सभक मार्गदर्शन करैत रहथि।

●

Scanned by CamScanner

एवरग्रीन - अंगरेजीफूल

श्रीमतीनीलिमाझा

मैथिलीक चर्चित कथाकार, नाटककार एवं समालोचक डा. रामदेवझा द्वारा लिखित **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** मैथिलीमे पहिल बेर पत्रक माध्यमसँ लिखल गेल उपन्यास थिक। जहिया 1960-61मे मिथिला मिहिरमे ई धारावाहिक रूपमे ई प्रकाशित होइत छल तहिया अपना समयमे खूब आदर पौलक, लोकप्रिय रहल। विशेषत: महिला-पाठककेँ अधिक रुचिकर लगनि। पुरुष-वर्गमे सेहो ई कम चर्चित नहि रहल। प्रसिद्ध कथाकार प्रो. हरिमोहनझा एकर बहुत पैघ प्रशंसक छलाह, नियमित पाठक सेहो। हमरा स्मरण अछि जे स्वयं हमर पिताजी डा. रमानाथझा अंग्रेजी विभागाध्यक्ष, राँची विश्वविद्यालय, राँची सभसँ पहिने मिथिला मिहिरक अंक हाथमे अबैत देरी, अंगरेजीफूलक चिट्ठी खोलि कऽ बैसि जाइत रहथि। हम सभ बहिन प्राय: हुनके लगमे घुरियाइत रहैत छलहुँ जे कखन पढ़ि कऽ समाप्त करताह आ ककरा हाथ लागत ? छीना-झपटी-मारा-मारी पर्यन्त भऽ जाइत छल।

वस्तुत: अंगरेजीफूलक चिट्ठी अनमोल चिट्ठी अछि। देखा-देखी एहि पैटर्नपर मैथिलीमे कतेको कथाक लेखन कयल गेल। महिला मनोविज्ञानक सूक्ष्म विश्लेषण करब अत्यन्त कठिन काज अछि। एहिमे नारी अन्तर्मनक चित्रण सहज एवं स्वाभाविक बुझना जाइछ। दूटा सखी जे अपनामे अपन मित्रताकेँ आधुनिक नाम देने छथि अंगरेजीफूल - विवाहोपरान्त दुनू फराक भऽ जाइत छथि। एकटा सखी पटना चलि जाइत छथि पतिक संग जे नोकरी करैत छथिन। दोसर गाममे रहि जाइत छथि, हुनक पति बेरोजगार छथिन। दुनू परस्पर पत्रक माध्यमसँ बतियाइत छथि। दू सखीक पत्राचारक माध्यमसँ तत्कालीन मिथिलाक सामाजिक, पारिवारिक रहन-सहन, आचार-विचारक वर्णन अत्यन्त सरल भाषामे कयल गेल अछि। नारीक विभिन्न रूपक सजीव चित्रण भेल अछि।

सासुरमे रहऽबाली सखीक शहरक प्रति आकर्षण, पटना देखबाक व्याकुलता हृदयस्पर्शी अछि। जखन ओ लिखैत छथिन- **पटना केहन छैक से जरूरे लिखिहह। अपना जिनगीमे तँ नहिए देखबैक मुदा तोहर चिट्ठीसँ तँ बुझबैक जे केहन छैक पटना ?'** वस्तुत: कतेक लौल छनि बेचारीकेँ जे होइत छनि हुनको पतिकेँ जँ नोकरी लागि जैतनि पटनामे तँ दुनू सखी फेर एकहि ठाम रहितथि पटनामे ! से सेहन्ता होइत छनि।

ओमहर पटनावाली ओतऽ रहितहुँ प्रसन्न नहि छथि। हुनका शहरक चमक-दमक, हो-हल्ला, अपसंस्कृति, स्त्रीगणक उच्छृंखलता कनेको नहि सोहाइत छनि। ओ पटनासँ लिखैत छथिन सखीकेँ - **गामक परतर की कऽ पाओत ई पटना ? गाम गामे अछि।'** ग्रामीण एवं शहरी परिवेशक बीचक अन्तरक एहिमे बहुत सुन्दर वर्णन भेल अछि।

एकहि संग दू परिवेशक दू नारीक चित्रण करब आसान काज नहि अछि। लेखकक ई प्रयोग नि:सन्देह अद्‌भुत छनि। लेखक स्वयं अंगरेजीफूल बनि जाइत छथि आ नारी अन्तर्मनकेँ पत्राचारक माध्यमसँ कागतपर उजागर करैत छथि, साकार करैत। धारावाहिक रूपमे जहिया ई मिथिला मिहिरमे प्रकाशित होइत छल तहिया एकरा वास्तविक पत्राचार बूझि लोक दुनू लेखिकाक सम्बन्धमे नाना प्रकारक अनुमान लगबैत रहल। बहुत कम्मे लोक जनैत छल जे अंगरेजीफूलक चिट्ठी प्रो. रामदेवझाजी लिखैत छथि। हमर पिताजीकेँ ई बात बूझल छलनि। एहि सम्बन्धमे एकटा रोचक प्रसंगक चर्चा करबाक लोभक हम संवरण नहि कऽ पाबि रहल छी। भेलैक ई जे हमर एकटा मसियौत बहीन पटना होइत राँची अयलीह। 1960-61 इ.क ई घटना अछि जाहि समयमे अंगरेजीफूलक चिट्ठी लोकप्रियताक शिखरपर छल।

Scanned by CamScanner

कुशल-मंगलक औपचारिकताक बाद ओ अत्यन्त गद्‌गद्‌ स्वरमे हमरा माँसँ कहलथिन - गय मौसी ! पटना स्टेशनपर दुनू अंगरेजीफूलकेँ देखलियनि । दुनू बड़ सुन्दर छथि । गामवाली आयल छलथिन पटनावाली लग । पटनावाली हुनका लेबऽ स्टेशनपर आयल छलथिन । दुनू जे घरा-जोड़ी कऽ कनलीह से की कहियौ ?' बहुत गर्वसँ ओ बखान करऽ लगलीह एहन सन क्रम जे तोँ सभ तँ खाली हुनकर चिट्ठी पढ़ैत छेँ, हम तँ सद्यः दुनू सखीकेँ देखि अयलहुँ अछि। हमर पिताजी रमानाथझा (अंग्रेजी विभागाध्यक्ष, राँची विश्वविद्यालय) तखन हुनकर भ्रमकेँ तोड़ैत कहलथिन जे ओ दुनू आन केओ दोसर छल होयतीह जे मिथिला मिहिरक देखसीसँ अंगरेजीफूल अपनामे लगौने होयतीह । वास्तवमे एकर लेखक तँ रामदेवझा छथि तँ ओ बकर-बकर मुँह ताकऽ लगलीह । जेना हुनका विश्वासे नहि भऽ रहल छलनि । मुदा ई छल अंगरेजीफूलक लोकप्रियता । सामान्यतया अंगरेजीफूलमे सुगन्धि नहि होइत अछि । मुदा ई अंगरेजीफूल तँ एहन अद्वितीय, सुगन्धित फूल अछि जकर सुगन्धि सालो-साल, कतेको साल बनल रहत । गम-गम करैत रहत । ने कहियो कुम्हलायत, ने झड़त । सदाबहार फूल अछि- अंगरेजीफूल एवर ग्रीन !

अंगरेजीफूलक चिट्ठीक तुरत बाद लेखकक दोसर कृति मिथिला मिहिरमे धारावाहिक रूपमे आयल- **बहिनाक विरोग** । पत्रात्मक शैलीमे लिखल लेखकक इहो रचना अपना समयमे कम धूम नहि मचौलक । बुझना गेल जे लेखक बहिनाक नहि, अपितु हमरे विरोग कागतपर उतारि देने होथि । एकदमसँ अपन सन लागल । अतीतक स्मरण करा देलक । एहि सम्बन्धमे एकटा रोचक संस्मरणक विषयमे लिखबाक धृष्टतासँ अपनाकेँ रोकि नहि पाबि रहल छी । धारावाहिक रूपमे जखन ई प्रकाशित होइत छल, प्रायः रवि दिन अखबारबला मिथिला मिहिरक अंक दऽ जाइत छल । हम सभ बहिन सतर्क रहैत छलहुँ जे कखन ओ आयत आ के पहिने लुटैत अछि ? कान पथने रहैत छलहुँ साइकिल घंटीक टनटनायब सुनऽ लेल । से मैराथन दौड़ लगैत छल जे पूछू नहि । छीना-झपटीमे कतेको बेर अंकक दू टुकड़ो भऽ जाइत छल । हमर माँ एकदिन तमसा कऽ पिताजीकेँ कहलथिन- जावत धरि बहिनाक विरोग छपैत छैक पाँचटा कऽ लेल करू, हम अकच्छ छी एकरा सभसँ ।' ओ कहलथिन पाँचटा लऽ कऽ की हेतै ? बेरा बेरी पढ़ै जाथु ।' माँ कहलथिन- किछु नहि, सासुर जाय लागत तँ सभक पेटारमे एक-एक सेट कऽ धऽ देबै ।' एही संगेँ एकटा और रोचक प्रसंगक चर्च करब अनुचित नहि होयत । जखन विवाहक बाद सासुर अयलहुँ तँ ई जानि सुखद आश्चर्य भेल जे अंगरेजीफूलक लेखक प्रो. रामदेवझा हमर प्रातःस्मरणीय ससुर डा.सुधाकरझा शास्त्री (पूर्व विभागाध्यक्ष मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना)क प्रिय शिष्य छथिन हुनके संगे पी-एच.डी. कयने छथिन । तकर बाद तँ हिनका प्रत्यक्ष देखबाक उत्सुकता भऽ गेल । एक दिन संयोग एहन भेल जे प्रो. रामदेवझा अपन गुरुक दर्शक करऽ लय हमर डेरापर अयलाह तँ बाबूजी (डा. सुधाकरझा शास्त्री) अङना दिस सुना कऽ कहलथिन– हे लिअऽ आबि गेलाह अंगरेजीफूल, बहिनाक विरोग ओ रामजोड़ीक लेखक' तखन हम परदाक अऽढ़सँ हिनका देखने रहियनि आ सोचने रही जे पुरुष भऽकऽ एतेक मौगिआही बात सब कोना लिखल भेलनि ।'

वस्तुतः नारी हृदयक भीतर धरि पैसि, खोँइचा छोड़ा कऽ मनःस्थितिक चित्रण, अन्यत्र दुर्लभ अछि । चारि दशकक बाद पोथी रूपमे लेखकक तीनू कृति छपि कऽ आयल अछि । सोनमे सुगन्धि । सभ रससँ परिपूर्ण दुनू पोथी हाथमे आयल, बुझायल जेना कोनो हेरायल अमूल्य निधि हाथ लागि गेल होअय । बहुत दिनुका बाद एक बेर फेरसँ पढ़बाक अवसर आयल । एतेक दिन मन मसोसि कऽ छलहुँ । एक बेर पोथी हाथमे लेलाक बाद छोड़ऽ केर मन नहि करैत छैक । जतेक बेर पढ़ब-नवीनताक अनुभव होयत । तीनू पोथी संजोगि कऽ राखऽवला अछि । कोन रूपेँ लेखकक प्रशंसा करियनि, शब्दे नहि अछि । पोथीक समीक्षा करबाक दुःसाहस कोना कऽ सकैत छी ? एहन महान कथाकारक महान कृति वास्तवमे अनमोल अछि । रुचिकर, खटगर, रसगर, चहटगर लागल । अनुपम - अतुलनीय । विद्यापतिक शब्दमे - "उपमा तोहर करब ककरासँ कहितहुँ अधिक लजाई ।" हार्दिक शुभकामना एवं कोटि-कोटि साधुवाद ।

●

Scanned by CamScanner

गुरुवरक प्रसंग

डा. श्रीशान्तिनाथसिंहठाकुर

गेहे गेहे कलौ काव्यं श्रोतातस्य पुरे पुरे,
देशे देशे रसज्ञाता दाता जगत दुर्लभः

पुनः

सुअण पसंदइ कव्व मझु दुज्जन बोलइ मन्द,
अवसओ विसहर विस वरइ अमिअ विमुक्कइ चन्द ।

कलियुगमे काव्यक स्थिति, सज्जन–दुर्ज्जनक स्वभाव आदिक प्रसंग संकेत दैत महाकवि विद्यापतिक अमरकृति कीर्त्तिलताक ई आरम्भिक अंश वर्गमे प्रवेश करितहिँ कानमे पड़ल । ई स्नातकोत्तर कक्षाक हमर प्रथम दिनक वर्ग छल । पद सभक अर्थ ओ व्याख्या सूनि प्रभावित भेलहुँ । अध्यापनक ढंग हमरा सर्वाधिक आकृष्ट कयलक । सामान्यतया नव प्रवेशी छात्रलोकनिक वर्ग संचालन आरम्भ भेलापर प्रथम दिन छात्र–लोकनिसँ परिचयपात होयबाक परम्परा रहलैक अछि । मुदा संयोगवश पहिल दिन हम वर्गमे उपस्थित नहि भऽ सकल रही । स्वाभाविक छैक जे ई हमर पहिल दिनक वर्ग छल । एकटा मित्रकेँ कानमे पुछलियनि जे अपन एहि श्रीमान्क की नाम थिकनि ? कहलनि– आहि रे वा, अहाँ नहि चिन्हैत छियनि ? यैह थिकाह डा. रामदेवझा । अपना सभकेँ यैह भाषाविज्ञान सेहो पढ़ओताह ।' उत्तर सूनि नहि जानि किएक, अति प्रसन्नता भेल । पछाति एहि प्रसन्नताक कारणक पुष्टि होइत गेल ।

भाषा विज्ञान अपेक्षाकृत किछु कठिन एवं नीरस विषय मानल जाइछ । मुदा गुरुवरक अध्यापन–शैली एहेन नीरस विषयकेँ सेहो रोचक ओ सरस बना दैत छल । भाषोत्पत्तिक सिद्धान्त, भाषाक आकृतिमूलक वर्गीकरण, भारतीय आर्यभाषा मध्य मैथिलीक स्थान, ध्वनि सिद्धान्त एवं ध्वनि-परिवर्त्तन, विभिन्न भाषाक संग मैथिलीक सम्बन्ध आदिक प्रत्येक विषयकेँ गुरुवर द्वारा ततेक फरिछा कऽ दृष्टान्तक संग बुझाओल जाइत छल जे थोड़बो ध्यान देनिहार छात्रकेँ बुझबामे कठिनता नहि होइत छलनि । ओहि समयमे मैथिलीमे भाषा विज्ञानक पोथी विरल छल, तेँ छात्र लोकनिक सुविधा हेतु वर्गमे लिखा सेहो देल जाइत छल । एतेक धरि जे हमरा सन मन्द बुद्धि ओ अल्पश्रम कयनिहार छात्रकेँ सेहो भाषा विज्ञान (एक–आध अध्यायकेँ छोड़ि) बेसी कठिनाह नहि लागल । एहेन छल गुरुवरक विलक्षण अध्यापन शैली । छात्रवर्गक हिनका जकाँ एहि प्रकारेँ ध्यान रखबाक परिपाटी जेना आब कम भेल जा रहल अछि ।

ओना गुरुवर लोकप्रिय मैथिली प्राध्यापकक रूपमे जे ख्याति अर्जित कयलनि से ककरहुसँ नुकायल नहि अछि । सर्वाधिक महत्त्वक विषय ई जे हिनक लेखनी मैथिली साहित्य–भण्डारक प्रत्येक विधाकेँ समृद्ध करबामे सफल भेल अछि । साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत **पसिझैत पाथर** हो वा **मनुक सन्तान, धरतीमाता** हो वा **एक खीरा : तीन फाँक, रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** हो वा **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** प्रभृति अनेकानेक रचना, विभिन्न भाव–बोधसँ भरल । तहिना अनुसन्धान हो वा आलोचना, अनुवाद हो वा सम्पादन, प्रत्येक क्षेत्रमे हिनक लेखनी समाने रूपेँ चलैत रहलनि अछि । मैथिली भाषाक उचित अधिकारक प्रश्न हो वा संविधान धरि एकरा पहुँचयबाक हेतु संघर्षक आह्वान, एक सजग प्रहरी जकाँ सतत तत्पर । तेँ ई मानबामे कोनो तारतम्य नहि जे गुरुवर अपन व्यक्तित्व–कृतित्व लऽ जाहि उच्च शिखर धरि

Scanned by CamScanner

पहुँचल छथि, निश्चय मिथिला-मैथिलीक लेल गौरवक विषय थिक । एहेन महान गुरुक शिष्य होयबाक जँ गौरवबोध होइछ तँ अनुचिते कोन ?

गुरुवरक चर्चा भेल अछि तँ मोन पड़ैत अछि 1981-82 इ. मे 'संकल्पलोक' (लहेरियासराय) द्वारा विद्यापति-स्मृति पर्वक आयोजन, ओहि अवसरपर मिथिला विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली विभागक छात्र-छात्रा द्वारा डा. उषा किरणखाँ रचित मैथिली एकांकी 'चानोदाइ'क सफल मंचन भेल छल, एहि अभिनयमे सर्वाधिक उल्लेखनीय बात ई रहल जे मिथिलाक केन्द्रमे अवस्थित एतेक पैघ मंचपर सर्वप्रथम महिला पात्रक भूमिकाक निर्वाह विभागक छात्रालोकनि द्वारा सफलतापूर्वक कयल गेल । एहि क्षेत्रमे बहुत दिन धरि ई चर्चाक विषय बनल रहल । एहि एकांकीमे एकटा पुरुष पात्रक भूमिकाक निर्वाह हमहूँ कयने रही । एकांकीक समापनपर विश्वविद्यालयक तत्कालीन प्रतिकुलपति डा. उमानाथझा द्वारा पुरस्कार ओ प्रशस्ति-पत्र प्रदान कयल गेल छल । एहि समस्त आयोजनक पूर्ण श्रेय गुरुवर डा. रामदेवझाकेँ जाइत छनि जे स्वयं अपन निर्देशनमे छात्र-छात्रालोकनिकेँ प्रेरित-प्रोत्साहित कऽ मंच धरि पहुँचौलनि । ओना हमरालेल एहि घटनाक महत्त्व दोसरो दृष्टिएँ अछि, जकर उल्लेख एतऽ अप्रासंगिक नहि मानल जायत । गुरुवरक आदेश भेल जे स्नातकोत्तर मैथिली विभाग एहि बेर संकल्पलोकमे अभिनय प्रस्तुत करय, जाहिमे अन्य छात्र-छात्राक संग एकटा पात्रक भूमिका हमरो करबाक अछि । डेरा (कन्हैयाजी कोठी) पर आबि मोनमे विचार आयल जे किएकने स्वयं एकटा मंचोपयोगी एकांकी लीखि श्रीमानसँ मंचन हेतु अनुमोदन कराबी । तत्काल कलम लऽ बैसलहुँ । बारह बजे राति धरि एकटा छोट-छीन एकांकी लिखि समाप्त कयलहुँ । भाषा समस्यापर आधारित एहि एकांकीक शीर्षक छल- 'मिथिलावासी जागि गेल' । दोसर दिन गुरुवरक हाथमे अपन एकांकी स्वीकृति हेतु देलियनि । ओना जाहि उद्देश्य लेल एहि एकांकीक रचना भेल छल ताहिमे तत्काल सफलता नहि भेटि सकलाक कारणेँ उत्साह किछु मन्द पड़ि गेल छल । पछाति साप्ताहिक मिथिला मिहिर (25 दिसम्बर 1983क अंक) मे ई एकांकी प्रकाशित भेल । पटना स्थित प्रसिद्ध नाट्य संस्था 'अरिपन' द्वारा 15 अगस्त 1984 इ.केँ ई एकांकी अभिनीत ओ प्रशंसित भेल । हम गुरुवरक प्रति कृतज्ञ छी जे अप्रत्यक्ष रूपेँ हमर एहि एकांकी लेखनक पाछाँ प्रेरक वैह रहलाह । कारण, दोसर एकांकी पुन: आइ धरि हम लिखियो नहि सकलहुँ अछि । तेँ एहि एकांकीक महत्त्व हमरालेल विशेष अछि ।

संस्कृत ग्रन्थ सबमे 'गुरु' शब्दक व्याख्या अनेको प्रकारेँ कयल गेल अछि । जेना- 'गरति सिञ्चति कर्णयोर्ज्ञातामृतम् इति गुरुं' अर्थात् शिष्यक कानमे ज्ञानरूपी अमृत सिञ्चित कयनिहार गुरु थिकाह, तहिना शिष्यक अज्ञानरूपी अन्धकारकेँ नाश कयनिहार गुरु थिकाह - 'गिरति अज्ञानान्धकारम् इति गुरुः'

गुरुवरक प्रसंग एकटा विषय आर महत्त्वपूर्ण अछि, से थिक गुरुवरक आशीर्वाद । छात्र जीवनक तँ कथे नहि; एखनो गुरुचरणक स्पर्श करबा काल माथपर हुनक स्नेहसिक्त हाथक स्पर्शसँ जे आन्तरिक सन्तोष ओ आनन्दक अनुभूति होइछ से वर्णनातीत अछि । गुरुक आशीर्वादमे कतेक सामर्थ्य होइछ, तकर अनुभूति आस्थावान व्यक्ति सैह कऽ पबैत छथि ।

व्यक्तित्व निर्माणमे गुरुकृपाकेँ नकारल नहि जा सकैछ । हमर दृढ़ विश्वास अछि जे, आइ जे किछु छी वा जतबे दूर धरि पहुँचि सकल छी, से गुरुवरेक आशीर्वादक प्रतिफल थिक ।

●

Scanned by CamScanner

हे! अन्तरंग द्रष्टा

श्रीपंचाननमिश्र

मैथिली ओ मिथिलाक विश्रुत विद्वान प्रो. श्रीरामदेवझाजीक संग हमरा पछिला साढ़े तीन दशकसँ सम्पर्क अछि। भनहि हुनक सामीप्य-सम्पर्क न्यूनाधिके किएक नहि रहल होअय मुदा हम मानसिक स्तरपर आजुक तिथियोमे हिनकहिटा मैथिलीक प्रथम कोटिक आचार्य मानैत छियनि। भाषा-साहित्यक अनुसन्धायक ई पहिलहिँ श्रृंखलामे रहलाह अछि। मैथिलीक सर्वव्यापीकरण हिनकहु नायकत्वमे क्रियान्वित होइत रहलनि अछि। सभ्यता-ओ संस्कृतिक ध्वजाकेँ दलमलित नहि होअऽ देनिहार कृत-संकल्पी ई थिकाहे। मैथिली सेवी संस्था सभ हिनक विराट बहुविध व्यक्तित्वक छाहरि तऽर पल्लवित-पुष्पित होइत रहल अछि। एहिसँ विलग हिनक राजनीतिक एवं सामाजिक दर्शन हिनका समकालीन चिन्तकसँ फराक स्थान निरूपित करैत छनि। सुस्पष्ट विचाराभिव्यक्ति, दृढ़ सिद्धान्तवादिता ओ समन्वयवादी दृष्टिकोण हिनक चारित्रिक वैशिष्ट्य रहलनि अछि। वास्तविकता तँ ई थिक जे रामदेवबाबू 'सेल्फ मेड ग्रेट'क दृष्टान्त थिकाह।

राजनीतिसँ सरोकार राखब आधुनिक शताब्दीमे नागरिक कर्त्तव्य मानल जाय लागल अछि। रामदेवबाबूक राजनीतिक दल विशेषसँ कहियो सम्बद्धता नहि रहलनि अछि। मुदा हिनक राजनीतिक चिन्तनमे एकटा स्थायीत्व रहलनि अछि। जाहि परिप्रेक्ष्यमे ई राष्ट्रिय परिदृश्यक मूल्यांकन करैत रहलाह अछि, दलीय राजनीतिक प्रति निरपेक्ष रहैत निज हित अपेक्षा कहियो नहि रखलनि। जाहि राजनीतिक चिन्तनक प्रति हिनक आस्था, अनुगमन ओ पक्षधरता रहलनि अछि ताहिमे ई अपन सनानत सांस्कृतिक वैभव, धार्मिक आस्था आ मुखर राष्ट्रवादक सर्वोच्चताक अवलोकनोपरान्तहि समर्पित भेलाह अछि। तेँ आजुक छद्म राष्ट्रवाद एवं छद्म धर्मनिरपेक्षता सन शब्दावली हिनक स्वीकृत कोटिमे नहि आबि सकल।

हिनक राजनीतिक चिन्तन उदारवादी अछि। भगवान रामचन्द्रकेँ अगबे धर्म विशेषक समपूज्य नहि मानि हिनक मानवतावादी चरित्रक विवेचन रामदेवबाबूक 'मास सेकुलरिज्म' दर्शनक अभिव्यक्ति अछि। हिनक 'बलिदानीकेर धारी' शीर्षक कविताक निम्न पाँती एकरा स्पष्ट करैछ–

राम छला नहि पीर-पगम्बर ने गुरु कोनो पन्थक
निर्माता नहि सम्प्रदाय वा कोनहु धर्मक ग्रन्थक
राम छला दीनक उद्धारक अन्यायी केर नाशक
अत्याचार अनीतिक बलपर जे छल पृथ्वी शासक

मैथिली साहित्यक प्रति लोकरुचि उत्पन्न करौनिहार बड़ थोड़ व्यक्तिमे रामदेवबाबू परिगणित रहलाह अछि। ई हिनक योगकारी व्यक्तित्वक परिणाम अछि जाहिमे सहयोग, सद्भाव आ साहचर्य अनवरत समाहित रहलनि अछि। हमरा एखनहुँ मोन अछि 1974 इ.। पंडित श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क सौजन्यसँ एक दिन हिनक कबिलपुर स्थित पुस्तैनी घरपर पहिले-पहिल हिनकासँ परिचय होइत अछि। ओहि डीहपर प्राय: एक घंटा विलमल होयब। पछाति हिनकहि संग लहेरियासराय स्टेशनक सन्निकट हुनक दोसर मकानपर अयलहुँ। बिहार लोक सेवा आयोगक मैथिली पाठ्यक्रममे भाषा विज्ञान विषयक अध्ययन सामग्री-प्रसंग हिनक पर्याप्त सहयोग भेटल। मैथिली शब्दक व्युत्पत्तिक कतेको जनतब

Scanned by CamScanner

लेल व्यावहारिक मार्गनिर्देश हुनकासँ प्राप्त भेल छल । ताहि अवधिमे भाषा विज्ञानपर पाठ्यक्रमानुसारेँ पोथी नगण्य छल । एतबे नहि, आयोगक पाठ्यक्रममे मैथिलीक समावेशक उपरान्त पहिल अर्द्धदशक अत्यधिक असमंजसपूर्ण अवधि छल । परीक्षार्थी लोकनिकेँ जँ एक भागक अनुकूल यथेष्ट पोथी नहि भेटि रहल छलनि तँ दोसर भागक हेतु सकल मैथिली शिक्षक वर्गसँ जाहि कोटिक सहयोग मार्गदर्शन आ उत्साहवर्द्धनक प्रत्याशा कयल गेल छल तकर नितान्त अभाव देखबामे आयल छल, मुदा रामदेवबाबू सदृश्य अत्यल्प अध्यापक लोकनि अपवादस्वरूप बौद्धिक, शारीरिक आ सामग्रीक स्तरपर अतुल्य सहयोग प्रदान करैत जाइत गेल छलाह तकरहि परिणामस्वरूप आइ प्रान्तक राजकीय सेवामे कतेको मैथिली पृष्ठभूमिक अधिकारी कार्यरत छथि ।

मैथिली शिक्षक वर्गक सामाजिक भूमिका एखनहुँ धरि विभ्रमित अछिये । समाज, शासन ओ राष्ट्रक मुख्य धारामे मैथिलीक प्रस्थितिक अवलोकन करैत एहि संवर्गक दायित्व हिन्दी, अंग्रेजी किंवा आन भाषाक शिक्षक वर्गसँ सर्वथा भिन्न विर्निधारणक प्रयोजन अछि । मुदा रामदेवबाबू आओर किछुए तटस्थ व्यक्ति एहि औचित्यक अनुभूति करैत समकालीन परिदृश्य मध्य अपन कर्त्तव्यक सकारात्मक स्वरूप गढ़ने रहलाह अछि । आइ राजकीय सेवामे जे केओ मैथिली पृष्ठभूमिक अधिकारी छथि, हुनक प्रशासनिक कार्यक अनुक्रममे मैथिलीक प्रश्न-प्रसंग सोझाँ अबैत अछि तँ एक अनिर्वचनीय सद्भाव सहजहिँ आबि जाइत छनि आ यैह प्रशासनिक मानसिकता, सम्बल एवं क्रियाशीलता मैथिलीक पक्षमे नीति निर्धारण लेल 'फीडबैक'क काज करैत आयल अछि । एहि फीडबैकक स्थापनमे, संचयनमे आ एकत्रणक मूलमे मैथिली शिक्षकक सामयिक दायित्वक अहमन्यताकेँ अंगीकार कयनिहारक पहिल पाँतीमे श्रीरामदेवबाबूक स्मरण हम आ हमर स्तरक सहधर्मी लोक निश्चय करैत रहताह ।

प्राय: 1975इ.क घटना अछि । दरभंगाक लक्ष्मीश्वर सार्वजनिक पुस्तकालयसँ डा. आशागुप्तक शोधपरक पोथी 'जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन और बिहारी भाषा' हम आनि कऽ पढ़लहुँ आ प्रसंगवश तकर चर्च रामदेवबाबू सँ कयने रहियनि । संयोगवश एहि चर्चसँ पूर्व ई पोथी हिनक दृष्टिमे नहि आयल छलनि । हम लगले पोथी स्वयं जा कऽ हुनका उपलब्ध करा देलियनि । पछाति हमर अनुपस्थितिमे ओ हमर घरपर आबि पोथी घुरा देने रहथि । अभिप्राय जे पोथीक प्रति हिनक उत्कट इच्छा हिनक अन्वेषणात्मक व्यक्तित्वकेँ प्रतिभासित करैत अछि । गवेषणा, अनुसन्धान प्रवृत्ति हिनकामे आरम्भहिसँ स्थापित रहलनि अछि तेँ **पार्वतीपरिणय नाटक : एक अध्ययन, मैथिली शैव साहित्य, उमापति, जगत्प्रकाशमल्ल, जगज्ज्योतिर्म्मल्ल** आदि मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि तकरहि परिणाम अछि । हमरा व्यक्तिगत रूपेँ एक खेप विश्रुत विद्वान डा. जयकान्तमिश्र कहने रहथि जे उमापति उपाध्यायक काल निर्धारण निर्विवाद रूपसँ जाहि अकाट्य अनुसन्धानात्मक तथ्यपर रामदेवबाबू सुस्थिर कयलनि अछि से पहिले-पहिल बेर सम्पन्न भऽ सकल अछि आओर डा. मिश्र ईहो स्पष्ट रूपसँ कहने रहथि जे हिनक ई ऐतिहासिक योगदान मैथिली साहित्यक लेल अविस्मरणीय अछि ।

सृजनात्मक कार्यकेँ प्रोत्साहन आ सहयोग देब रामदेवबाबूक मौलिक धर्म रहलनि अछि । मिथिला मिहिरमे दिनांक 06 अप्रैल 1976 इ.क अंक आ तकर अगिला अंकमे (लगातार दू किस्तमे) हमर संयोजकत्वमे 'चिन्तनमे लीन-अनुभवी मानस' परिचर्चा प्रकाशित भेल छल जाहिमे संस्कृत विश्वविद्यालयक तखनुक उपकुलपति डा. रामकरणशर्मा, प्रतिकुलपति डा. एम.ए.एम गिलानी (मिथिला विश्वविद्यालय) आदि दस व्यक्तिक विचार शामिल अछि । रामदेवबाबूक परामर्शहिपर विभिन्न क्षेत्रक लोकक चयन कयने रही । मिथिला विश्वविद्यालयक मैथिली प्राध्यापिका डा. नीताझा ताहि समयमे एम.ए.क छात्रा छलीह आ रामदेवबाबूक निर्देशानुसारहि हुनकहुँ दृष्टि एहि परिचर्चामे सम्मिलित कयल गेल छलनि । ओना एहि आयोजनक प्रकाशन सम्बन्धमे हुनक विचार छल जे मिहिरक प्रति अंकमे एकहि व्यक्तिक विचार विस्तृत रूपसँ शृंखलाबद्ध प्रकाशनक योजना बनाओल जाय । मुदा समयाभाव, विस्तृत कार्य योजनाक अभाव आदिक कारणेँ दू अंकहिमे ई प्रकाशित कऽ देल गेल छल । हिन्दी कवि कलक्टरसिंह 'केशरी'क संग हमर साक्षात्कार कालावधिक सन्निकट मिहिरमे प्रकाशित भेल छल । सर्वप्रथम रामदेवेबाबू हुनक लहेरियासराय प्रवासक सूचना देने रहथि आओर भेट करबाक प्रेरणा देने छलाह । आइ अनुभव भऽ रहल अछि जे जँ रामदेवबाबूक संग सम्पर्कमे

Scanned by CamScanner

नहि रहल रहितहुँ तँ कदाचित् केशरीजीक भेट-वार्त्ता नहि छपि पबैत । तहिना मिहिरक फगुआ अंक (दिनांक 06 मार्च 1977)मे 'तीन दरभंगिया तेरह पाक' शीर्षक हमर रचना प्रकाशित भेल छल जाहिमे रामदेवबाबू, सोमदेव आ साकेतानन्दक दाम्पत्य जीवनपर साहित्यिक व्यंग्य अछि । एकर प्रकाशनोपरान्त हमहूँ सरकारी सेवाक्रममे पूर्णियाँ दिस प्रवास करऽ लगलहुँ । रामदेवबाबूसँ सम्पर्क सामीप्य भंग भऽ गेल । बहुत पैघ अन्तरालक उपरान्त (सम्भवत: 1983 इ. वा 1984 इ.) सरस्वतीपूजाक अवसरपर भेट होइत अछि आ अपनहि मोन पाड़ि एहि व्यंग्य रचनाक प्रतिक्रियामे 'हेल्दी ह्यूमर' शब्द व्यक्त कयने रहथि । रचनाधर्मीक प्रति हिनक व्यवहारमे हम सदिखन आह्लाद, प्रसन्नता एवं सगुणता पौलहुँ अछि । लेखन प्रवृत्तिकेँ मजगूत आ आगाँ बढ़यबाक लेल ई उदारवादी बनल रहलाह अछि । सभसँ टटका हमर अनुभूति अछि जे साहित्य अकादेमीक 'मैथिली उपन्यासक विकास' विषयक सेमिनारमे हमरा अपन आलेख 'मैथिली ओ कन्नड़ उपन्यासमे सांस्कृतिक साम्य' तैयार करबाक लेल हिनकासँ वांछित मार्ग निर्देशन भेटल छल ।

रामदेवबाबू संस्कृतिक संरक्षणवादी रहलाह अछि । हिनक ई संरक्षणवाद सांस्कृतिक तत्त्वक विभिन्न अवयवक अगबे बौद्धिक उपस्थापन धरि सीमित नहि रहलनि अछि अपितु ओकर प्रायोगिक पक्षपर सेहो । 'संकल्प लोक'केँ विशेष रूपसँ नेतृत्व प्रदान करैत काल आओर 'विद्यापति सेवा संस्थान' आदि संस्थासँ सम्बद्ध रहैत काल मिथिलाक सांस्कृतिक धरोहरकेँ लोकमंच प्रदान कयने छथि । जतऽ धरि हमरा बूझल अछि जे अपन पारिवारिक जीवनहुँमे चित्रकला, हस्तकला आ शिल्पकलाकेँ पूर्णरूपेण व्यवहारसम्मत बनौने रहलाह अछि । ताहिसँ विलग अपन पोथीक माध्यमसँ मिथिलाक ओहि साविक-कालक हस्तकलाक विशद् उल्लेख कऽ नव खाढ़ीकेँ ज्ञानार्जनक सर्वथा नवीन क्षेत्र प्रदान कयने छथि । हिनक एकाधिक पोथीमे विशेष कऽ हिनका द्वारा 1960सँ 63क बीच मिथिला मिहिरमे लिखित धारावाही पत्रात्मक उपन्यास **अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग** ओ **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** (वर्तमानमे तीनू पुस्तकाकार प्रकाशित)मे कोबर, लिखिया, तिरहुतिया कढ़ाइ, सुजनी, मधुश्रावणीक विधि-विधान, अमौट-अदौरी आदि बनयबाक लूरि, कातिक मासमे सिमरियाघाटक मास मेला, अक्षय नवमी कऽ धातरी गाछ तऽर भानस, सामा-चकेबा, विजया दसमीक तनुका, जूड़शीतलक हुड़दंग, वंशदान आदि कैक तरहक स्थानीय वैशिष्ट्य स्थान पओने अछि । हिनक पोथीक ई पाँती जे 'जहाँ धरि पार लागत तहाँ धरि अपन सभ्यता संस्कृतिकेँ बचयबाक चेष्टा तँ करबे करबैक' हिनक सांस्कृतिक चिन्तन ओ दृष्टिकोणकेँ सुस्पष्ट करबा लेल पर्याप्त अछि ।

इस्ट-वेस्ट कोरिडोर राजमार्गक कतबइमे ठाढ़ भऽ रहल मिथिलाक भौगोलिक संरचना एतुक्का जनजीवनक प्राय: समस्त पक्षकेँ त्वरित गतिसँ अमिट रूपेँ प्रभावित करबाक सम्भावना बनौने जा रहल अछि । हमर सांस्कृतिक मूल्य, भाषा-साहित्य आ आचार-विचारक निजत्व रक्षाक संकट सन्निकट अछि । एहि परिवर्त्तनकामी समयमे रामदेवबाबू सन समन्वयवादी व्यक्तिक पथ प्रदर्शनक प्रयोजनक हम सभ अनुभव कऽ रहलहुँ अछि ।

●

Scanned by CamScanner

से ओहि दिन

डा. श्रीमहेन्द्र

से ओहि दिन ई निर्णय भइये गेलैक जे आइ ओहि बेरमे सबेर-सकाल कबिलपुर दिस चलल जाय । दरभंगा आ लहेरियासरायमे जे अग्रिम पंक्तिक साहित्यिक विभूति रहथि, एतबा दिनमे हुनकालोकनिक दर्शन कऽ चुकल रही आ डा. रामदेवझा, साकिन कबिलपुर, भाया लहेरियासराय, जिला दरभंगा शेष रहथि जे आइ हमरा लोकनिक टारगेटपर रहथि ।

हमरा लोकनिकेँ बर्खमे एके दू बेर ई संयोग भेटय जे दरभंगाक साहित्यकार, विभूति एवं साहित्यिक बन्धुसँ भेट-घाँट भऽ जाय । भेटक अवसर देअय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित कोनो ने कोनो वर्गक मूल्यांकन अथवा रेडियो कार्यक्रम अथवा पी-एच्.डी. भाइभा वा कार्यालयीय कार्य सभ । ई अवसर 1972 इ.सँ 1990 इ. धरि निर्बाध रूपसँ भेटैत रहल । सुकठीक वनिज आ पशुपतिक दर्शन ।

ओहि कालखण्डमे अधिकांश बर्ख रेडियो छोड़ि *ड्राइंगरूमी* मनोरंजनक आन कोनो साधन नहि छलैक प्रायः जे लोक साँझू पहर *फ्री* नहि रहितय । टी.वी.क ने एतेक प्रचलन छलैक आ ने छलैक शहरे-शहर एतेक टी.वी. *टाबरे*। तेँ सायंकालीन समय बेसी लोक सामाजिक सरोकार, साहित्य-चिन्तन-चर्चा आ भेट-घाँटमे अपनाकेँ *इंगेज* राखय से हमरा एखनहुँ, मोन अछि ।

हमरा एखनहुँ मोन अछि जे मूल्यांकन कार्यक अवधिमे अधिकांश शिक्षक ओ साहित्यकार बन्धु केन्द्रहिपर अथवा केन्द्रक लगपासमे भेट भऽ जाथि आ हमरा लोकनि जमि कऽ गप्प-सप्प कऽ मोनकेँ *मोनोटोनीसँ* बचबी । हिनका सभक सङे साँझुक बैसारीक प्रयोजन नहिएँ जकाँ पड़य । मुदा दरभंगामे सुमनजी, अमरजी लोकनि आवश्यक विभूति रहथि जनिकासँ बिनु दर्शने सहरसा दिस डेग नहि ससरय । मने लगैत रहय जे जानकीक सभ डिब्बा एकदम हल्लुक अछि । नितान्त हल्लुक । एकर कारण छलैक ।

एक बेर जेना हमरा मोन पड़ैत अछि जे डा. रामदेवझाजी अपन उद्‌गारमे बाजल रहथि जे– ओ मूलतः विज्ञानक छात्र रहथि । मुदा ओ समयक संकेतेँ आ मैथिली प्रेमी शुभचिन्तक लोकनिक सम्मतिसँ मैथिलीकेँ अपन विषय बनाओल । एहि उद्‌गारमे अमरजीक नाम विशेष रूपेँ उल्लेख कयलनि । हमरा तखन लागल रहय जे रामदेवबाबू कोनो विषय पढ़ितथि, कोनहु क्षेत्रमे जइतथि, ओतहु हुनका ओतबहि प्रतिष्ठा प्राप्त होइतनि जतबा आइ मैथिली पढ़ला आ मैथिलीमे लिखलासँ छनि । हुनकामे ओ *स्किल* छलनि जकरा ओ भजा कऽ कोनहु क्षेत्रमे अपन झंडा गाड़ि सकैत रहथि । तेँ आइ कहऽ पड़त जे श्रीरामदेवझाजी अधिकारपूर्वक अपन विद्वत्तासँ आश्वस्त कयनिहार मैथिली भाषा ओ साहित्यक गम्भीर व्यक्तिक रूपमे चर्चित छथि ।

दरभंगामे, दरभंगा शहरक कोनहु दिसकेँ टेबि लियऽ सभ दिस नामी-चर्चित साहित्यकार, साहित्य प्रेमीसँ दर्शनक सौभाग्य भेटि जायत ।

तेँ पूर्वांचल मिथिलाक साहित्यकार-शिक्षक लोकनिक दुनू हाथमे लड्डू । कर्त्तव्याकर्त्तव्यक कारणेँ आदेशक अनुपालन, मिलनोत्सवक फराके आनन्द आ मैथिलीक तीर्थ दरभंगाक साहित्यिक शीर्षसँ सामीप्य सहजहि.... । ओना जे नवतूरक साहित्यिक प्रवृत्तिक लोक रहथि हुनका लोकनिसँ रेडियो स्टेशन, विद्यापति सेवा संस्थान, संकल्पलोकक कार्यालयमे आवश्यक रूपसँ भेट भऽ जाइत छल ।

Scanned by CamScanner

... से ओहि दिन मूल्यांकन कार्यक लेल निर्धारित अवधिमे मात्र तीन दिन बचि गेल छलैक । दरभंगाक प्राय: सभ साहित्यिक मनीषी लोकनिसँ भेट कऽ आयल रही । *सोमदेव* मूल्यांकनेमे दर्शन दैत रहलाह । *रमानन्दरेणुसँ* एक दिन टावरे पर जमि कऽ गप्पबाजी भऽ गेल रहय । बचलाह रामदेवबाबू, कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा । कथाकार, प्राध्यापक एवं शोध-निदेशक, अन्वेषक ओ समालोचक आदि आदि... ।

कबिलपुर जयबाक लेल नियारऽ पड़त । दिन आ समय निर्धारित करऽ पड़त एही तीन दिनमे । ...एहि तीन दिनमे अन्तिम दिन भागम-भागक रहैछ । ...प्रधान परीक्षकसँ *बिल*पर आ *डिटेल्स*पर दसखत कराउ । फेर *कॉ-आर्डिनेटर*सँ बिलपर आ डिटेल्सपर दसखत कराउ तकर डाइरेक्टर लग सुपुर्द कऽ सुस्ताउ... तखन *चेक* लऽ कऽ बैंकमे भजाउ... फेर स्टेशनक आ टिकटक तैयारी...बहुत रास झंझटि रहैत छैक... । तेँ बचल दू दिन । ...आइये कोनो निर्णय कऽ लेबाक चाही ।

आइ सबेरे केन्द्रक काज सम्पन्न कऽ हमरा लोकनि चलब । ...दोनारिमे माछ कीनल जायत । माछ राजारामजीक ओतऽ बनत... आ भोजनसँपूर्व रामदेवबाबूसँ गप्प-सप्प कऽ एहि बेरुक ट्रिपक समापन करब... ।

सभ गोटा हाँत्रि-हाँत्रि सभटा काज समेटैत मूल्यांकन केन्द्रसँ फुर्सति पओलहुँ । बाटमे नियारल काजकेँ सम्पन्न करैत सवारीसँ लहेरियासराय टाबरपर आबि गेलहुँ... । राजारामजी पानक स्मरण करौलनि... ।

...से हमरा लोकनि टाबरसँ पूब मुहेँ चलैत गेलहुँ । बीच-बीचमे हमरा कम मुदा शेष सभ गोटाकेँ परिचितमे *हाय-हेलो* होइत रहल । ओतबा दूर सभ गोटाकेँ ठमक़ि-ठमकि कऽ चलब विवशता ओ अनिवार्यता छल । येन-केन प्रकारेण हमरा सभ रेलबे ढालासँ पूब आबि गेलहुँ... ।

ओहि ठामसँ तीन गोट बाट फुटैत छैक । एकटा बाट बाम दिस जाहि टोलमे रमानन्द रेणुक घर छनि । दहिन दिस दूटा सड़क जाइत छैक । पूब-दक्षिण रायसाहेब पोखरिक कात बाटे जाइत सड़क डरहार दिस जाइत छैक आ सोझे दक्षिण दिस पुलियाकेँ पार करैत जे सड़क जाइत छैक ओहीमे पड़ैत छैक कबिलपुर । एही गाममे डा. रामदेवझा, डा. राजारामप्रसाद, डा. भाग्यनारायणझा आ डा. मुरलीधरझाजीक निवास छनि । कबिलपुर अपन नामक अनुरूपेँ *जस्टिफाइ* करैत रहल अछि । पढ़ल-लिखल ओ विचारवान लोकक सङहि मैथिल संस्कृतिक संरक्षिका महिला समाजक सहज बानगीक खजाना भेटत एतऽ.... ।

कबिलपुर गामक पछबरिया सिमानपर लहेरियासराय रेलबे स्टेशन अछि जतऽ किछु महत्त्वपूर्ण गाड़ीकेँ छोड़ि प्राय: सभ गाड़ीक ठहराव छैक । स्टेशनसँ कबिलपुर अयबाक लेल पातर-मोट बहुत रास रस्ता छैक जकर उपयोग गामक लोक सभ सुविधानुसार करैत छथि ।

हमरा लोकनि मुख्ये सड़कक उपयोग कयलहुँ । पहिने राजारामजीक ओतऽ *फ्रेश* होयब । माछक झोरा राजारामजी लालपरीकेँ थम्हा देथिन । तखन रामदेवबाबू दिस एक कप चाह पीबि विदा भऽ जायब । तावत् ओहो अर्थात् रामदेवोबाबू घूमि-फिरि कऽ डेरा आबि गेल रहताह ।

...हम रामदेवबाबूकेँ पहिने मूलत: कथाकार मानैत छियनि, तखन शिक्षक, आलोचक आदि-आदि... । कथा लेखनमे अपन सूक्ष्म दृष्टि, सामाजिक-सांस्कृतिक गम्भीर दायित्वबोध ओ भाषाक जादूगरीसँ हिनक कथाकारितामे विलक्षणता अयलनि । फलत: एक खीरा : तीन फाँक, मनुक सन्तान, धरती माता सन विलक्षण ओ सधल कथासंग्रह संग्रहणीय संग्रहक रूपमे प्रतिष्ठित भेल । एकर कारण भेल जे ई अपन कथाकारक बीजकेँ अपन परिश्रमसँ एना संपोषित कयलनि जे अपना समाजकेँ अपन कथाक माध्यमे जे कहऽ चाहलनि, जेना कहऽ चाहलनि, जाहि वर्गकेँ सोझा राखि सम्यक् विचार करऽ चाहलनि – हुनक कथाक सभ कथ्य आ तथ्य तहिना अङैठी-मोड़ लैत रहल ।

Scanned by CamScanner

मुदा मैथिलीमे एकर जस्टिफिकेशन छैक कहाँ । मायानन्दमिश्रकेँ चन्द्रविन्दु कथासंग्रहपर साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटबाक चाहियनि मुदा भेटलनि उपन्यास रचनापर । अमरजीकेँ कवितापर पुरस्कृत होयबाक चाहियनि मुदा सम्मानित भेलाह गद्यपर । ठीक तहिना रामदेवबाबूकेँ कथापर पुरस्कार भेटबाक चाहियनि किन्तु भेटलनि पसिझैत पाथर नाट्यकृति पर.... । हमरा मोन पड़ल पुरस्कार वर्षपर हुनक इन्टरभ्यू जाहिमे एहि मादे ओ बीचो-बीच बहराइत कहने रहथि जे सृजनशीलता तँ दुनूमे छैक । पीड़ा आ खुसी लेखक समान रूपेँ भोगैछ ...।

...गदहबेर बीति गेलैक । फ्रेश भऽ कऽ चाहो पीबि नेने रही आ चलबाक सूरसार करऽ लागल रही... । ओना जयबाके कतेक दूर अछि । ...यैह दस डेग... ।

हमरा लोकनि रामदेवबाबूक डेरापर रही । अत्यन्त सरलता ओ प्रसन्नतापूर्वक ड्राईंग रूपमे बैसौने रहथि । सहरसा -सुपौलक साहित्यकार लोकनिक, कुशलक्षेम भेल । पूर्वांचल मिथिलाक लेखन, संगोष्ठी ओ प्रकाशनपर विस्तारसँ चर्च भेल... । तावत् हुनक जेठ बालक ललनजी रिकबीमे मिठाइ लऽ अनलनि । ...लड्डू-बालसाही-खाजा आ किछु नमकीन। खाजा देखि हमरा सुपौल जिलाक पिपरा मोन पड़ि गेल । अकस्मात् कहना गेल जे ई खाजा तँ... ।

एम्हुरका नहि थिक सैह ने... -रामदेवबाबू बजलाह- अरे, की कहू महेन्द्रजी ! पछिला मास बेटीक विवाह कयने रही ... राजारामजीक अनुरागेँ खाजा ओही इलाकासँ आयल छल... बरियाती लोकनि तँ एहि खाजाकेँ मैन ऑफ द मिठाइ घोषित कऽ देलनि... । राजारामजीक मुँह गर्वे बौरा गेलनि । खूब जोरसँ ठहक्का पड़ल... । फेर कने काल चुप्पी ... । खाजा-लड्डू-बलूसाही टुटैत रहल...।

चुप्पी तोड़ैत हम कहलियनि- 'अपनेक एक खीरा : तीन फाँक अपनेक आन संग्रहक सोझाँमे खाजे जकाँ सुअदगर आ चर्चित भेल । ओना अपनेक दोसर-तेसर संग्रह सिलेबसमे रहबाक कारणेँ बेसी पढ़ल गेल । मुदा एक खीरा : तीन फाँककेँ से सौभाग्य नहि भेटलैक । बहुत गोटा लग तँ संग्रहो उपलब्ध नहि छैक.... । मुदा ई संग्रह अपनेक सभ कथा संग्रहमे व्यक्तिगत रूपेँ हमरा बेसी क्लासिक आ जमीनकेँ अखियासैत संग्रह लागल..... ।

..... नो कमेंट..... रामदेव बाबू चुपचाप... खाली बाल हँसी..... ।

तावत् ललनजी चाह लऽ अनलनि । हम घड़ी देखलहुँ.... । साढ़े दस..... ।

●

Scanned by CamScanner

प्रेरणादायी रहल अछि गुरुदेवक साहचर्य

डा. श्रीमतीललिताझा

मोन पड़ैत अछि ओ दिन जहिया प्रथम बेर श्रीमान् (डा. रामदेवझा)सँ भेट भेल छल । एल.एन. मिथिला विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर विभागमे नामांकन भेल छल । नियमित रूपसँ वर्ग जाइत रहलहुँ, सभसँ रुचिपूर्वक हम हिनके क्लास कयल करियनि । हिनक पढ़यबाक कौशल सभसँ भिन्न छलनि । कठिनसँ कठिन बिन्दुकेँ सहजतापूर्वक ग्राह्य बना दैत छलाह जे मस्तिष्कमे अमिट छाप छोड़ि जाइत छल ।

हिनक घरपर पहिलबेर जयबाक मौका हिनक ज्येष्ठ ओ माँझिल पुत्रक जनउमे भेटल । सभकेँ हकार देने छलथिन । संयोगसँ हमर निवासस्थान लहेरियेसरायमे अछि । एहि सुअवसरपर पहुँचलहुँ तँ समस्त परिवारसँ परिचय-पात भेल । गुरुआइनि श्रीमती योगमायाझाक एहन सरल स्वभावक परिचय ओही दिन भेटि गेल छल । तहियासँ आयब-जायब लगले रहल । ओहिठाम गुरुवरक मायसँ सेहो परिचय भेल । हिंनक नाम तँ सुनिते छलियनि मुदा दर्शन ओही दिन भेल छल । अपने घर सन बुझना गेल ।

चेतना समिति, पटनामे प्रत्येक वर्ष नाटकक आयोजन होइत छलैक । विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्ताव अयलैक जे एहि कार्यक्रममे जनिका इच्छा होइनि से भाग लऽ सकैत छथि । विश्वविद्यालयक मैथिली विभागकेँ नाटकक मंचन करबाक दायित्व देल गेलैक । डा. नवीनचन्द्रमिश्रक अध्यक्षतामे श्रीमानक लिखल **पसिझैत पाथर** नाटककेँ अभिनयक हेतु चुनल गेलैक । ओहि समयमे ई नाटक छपल नहि छलैक । स्क्रीप्टेपर काज चलाओल गेलैक । लगभग दससँ एगारह गोट छात्र-छात्राक संख्या छल जाहिमे दू गोट मात्र हमरा लोकनि छात्रा छलहुँ । जखन पटना जयबाक बात उठलै तखन तँ साहसे ने भेल जे कहबनि- हँ हमहुँ भाग लऽ सकैत छी ।' मुदा श्रीमान्क प्रोत्साहनसँ अन्तरात्मामे साहसक दीप जरऽ लागल आ क्रमशः रिहलसलमे भागो लेबऽ लगलहु । नाटकमे हमरा चम्पाक अभिनय करबाक छल । अपन संवाद बजबामे हमरा सुरू-सुरूमे धाख-संकोच होअय, अँटकि गेल करी मुदा कोनो प्रकारक कठिनाइ अयलापर श्रीमान् सहजतासँ आगू बढ़बैत गेलाह ।

निर्धारित समयमे हमरा लोकनि पटना पहुँचि गेलहुँ । दोसर दिन मंचपर उपस्थित भेलहुँ । एकर पहिल दृश्य एहन छल जाहिमे चारि-पाँचटा पात्रकेँ एके बेर मंचपर उपस्थित भऽ अपनामे कहासुनी करबाक छलैक । एहन दृश्य देखि दर्शक दीर्घामे अनघोल होअऽ लगलैक जे कहीँ असलेमे मारि तँ नहि भऽ रहल छैक ? एकटा दोसर दृश्यमे जाहिमे हम स्वयं रही अचानक एकटा कुकुर सेहो मंचपर आबि टपकल जकरा देखि केओ पूछि बैसलथिन जे इहो नाटकक पात्रे थिकैक की ?' मुदा श्रीमान् सहजतासँ स्थितिकेँ सम्हारि देलनि ।

जाहि समयमे हमरा लोकनि नाटकमे भाग लेने छलहुँ ओ बड़ पैघ दुःसाहसक काज छल । किएक तँ ओहि समयमे नाटकक लेल महिला पात्री भेटब दुर्लभे छलैक । मैथिल महिला मंचपर उपस्थित भऽ नाटकमे भाग लेतीह से अन्यन्त कठिन प्रश्न छल । हमरा लोकनि ओ प्रथम महिला छलहुँ जे दरभंगासँ जा कऽ पटनाक चेतना समितिक मंचपर प्रदर्शन कयलहुँ जतऽ हजारोक संख्यामे दर्शक उपस्थित छलाह । कार्यक्रम प्रशंसनीय रहल । ई अदम्य साहसक प्रदर्शन श्रीमान्क निरन्तर प्रोत्साहनक प्रतिफल छल ।

हिनक संयोजकत्वमे साहित्य अकादेमी द्वारा समस्त उत्तर-पूर्व भारतीय भाषा- बंगला, असमियाँ, उड़िया,

Scanned by CamScanner

मणिपुरी तथा मैथिलीमे 'लोक कथा'पर आधारित कार्यक्रम आयोजित छलैक जाहिमे महिले मात्रकेँ भाग लेबाक छलनि। एहि कार्यक्रममे तीन महिला भाग लेने छलहुँ। तीनू गोटाकेँ तीन अवसरपर आधारित मैथिली लोक कथा प्रस्तुत करबाक छल। घरसँ बड़ हुलासक संग पहुँचलहुँ बंगाल। कोलकाताक महाराष्ट्र हाउसमे ठहराओल गेल छल। भोरक अल्पाहारसँ लऽ कऽ रात्रि भोजनक व्यवस्था सेहो ओहीमे छलैक।

आन-आन क्षेत्रसँ आयल प्रतिभागी सभ झालि, ढोल, मजीरा इत्यादि वाद्य यन्त्रक संग आयल छल आ किछु जानवरक आकृतिक खोल सभ सेहो अनने छल जकरा धारण कऽ ओहि क्षेत्रक नाचकेँ देखाओल जइतय। हमरा लोकनि एहि प्रकारक तैयारी कऽ कऽ नहि गेल रही। मोन अकबका गेल, किंकर्त्तव्यविमूढ़ भऽ एक दोसराक मुँह देखऽ लागल रही। मुदा पलभरिमे श्रीमान् अपन तीक्ष्ण सोचक द्वारा पाशा पलटि देलनि। ओ जट-जटिनपर आधारित कथाकेँ गीत रूपमे परिवर्त्तित कऽ रिहलूशल करबओलनि तथा हमरा लोकनि ओकरा मंचपर गओलहुँ। इहो घड़ी अविस्मरणीय अछि। प्रात भेने हमरा लोकनिकेँ घर घुरबाक छल तेँ किछु दर्शनीय स्थानक सेहो भ्रमण कयल आ ओतुका किछु प्रसिद्ध सामान सेहो किनने अयलहुँ।

एहि प्रकारेँ आचार्य, गुरुवर, एकटा विशिष्ट निर्देशकक रूपमे हमरा क्रमशः अपन सौहार्दसँ अभिभूत करैत रहलाह अछि। हिनक कृपेसँ परवर्त्तीकालमे हम 'मैथिली भाषा ओ साहित्यमे भोजन सम्बन्धी शब्दावली'पर हिनके निर्देशन एवं पर्यवेक्षणमे शोध-प्रबन्धक प्रणयन कयलहुँ जाहिपर हमरा वर्ष 1988 इ.मे ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा द्वारा पी-एच.डी. डिग्री प्राप्त भेल। मैथिली शब्द कोषक दिशामे कयल गेल ई श्रमसाध्य काज हमरासँ नहिए भऽ सकैत छल जँ हिनक निरन्तर प्रोत्साहन नहि भेटल रहैत। कहल जा सकैछ जे डा.श्री झा शैक्षणिक जगतमे गुरुवरक प्राचीन आख्याकेँ सर्वथा जीवन्त रखने छथि आ मैथिली जगतमे हमर जे किछुओ परिचिति अछि से हिनके कारणेँ। एहि मनीषीक प्रति हमर कोटिशः नमन-अभिनन्दन-वन्दन।

●

Scanned by CamScanner

प्रेरणापुरुष : ककाजी

डा. श्रीमुरलीधरझा

आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन' क कहब छलनि-''ई कोनो आवश्यक नहि जे अहाँ जँ ककरो किछु बिगाड़बैक तखने केओ दुश्मनी करत । अहाँ जँ उन्नति करब ताहूसँ लोक ईर्ष्या करत । ओकरा अखरतैक । ई दुष्ट मनुष्यक दुर्गुण थिकैक । एहन बहुत लोक गाम-समाजमे रहैत अछि जकरा दोसराक उन्नति सह्य नहि होइत छैक । मुदा इहो सत्य जे अहाँक विकासमे, उन्नतिमे ओकर उपस्थिति महत्त्वपूर्ण छैक । कखनो कऽ ओकर दुष्टता अभिशापक बदलामे वरदान भऽ जाइत छैक । '' एहि प्रसंगक अनेको उदाहरणक विवरण हुनकासँ सुनि स्तब्ध भऽ जाइत छलहुँ ।

ककाजी (डा. श्रीरामदेवझा)क जीवनक प्रसंगमे सुमनजीक ओ सोच सोलह आना सटीक बैसैत छनि । ओ संघर्षहुमे कखनो विचलित नहि भेलाह । लिखबे-पढ़बेकेँ ओ महत्त्वपूर्ण मानलनि । बाल्यावस्थहिसँ प्रतारणा सहैत रहलाह । ओकर कोनो दुष्प्रभाव हुनकापर नहि पड़लनि । ओलतीक पानि जकाँ ओ अपन मार्ग स्वयं तकैत बढ़ैत रहलाह । हुनक चरैवेतिकेँ केओ रोकि नहि सकल । अपन मायक मुहेँ हुनक बाल्य जीवनक बहुतो घटना सभ सुनि सिहरि उठैत छलहुँ ।

ककाजीक नीति शुद्ध कऽ गान्धीवादी रहलनि अछि । केओ किछु हड़पियो लैत छनि तँ ओ प्रतिकार नहि करैत छथि । यद्यपि मानसिक क्लेश अवश्य होइत छनि मुदा ओहि पाछाँ वेकल नहि भेल रहैत छथि । हुनक ध्येय तँ मात्र अधिकसँ अधिक लिखबे-पढ़बे रहलनि अछि । ताहिमे कोनो तरहक बिघ्न-बाधा उपस्थित नहि होअऽ दैत छथि । जेना हुनकापर ओकर कोनो असरि पड़िते नहि छनि । जखन भेट करबालेल जाइत छी तँ ओहिना साधनामे लीन । देखैत छियनि किछु पढ़ैत वा किछु लिखैत ।

निरक्षरकेँ साक्षर बनयबाक दिस सेहो ओ उन्मुख रहैत रहलाह अछि । मोन पड़ैत अछि-जखन हम नेना रही, हमर माय नित्य रामायण पाठ करैत छलीह । मुदा हुनका लिखऽ नहि अबैत छलनि । हम मिडिल स्कूलमे पढ़ैत रही । सोची जे हिनका पढ़ऽ तँ अबैत छनि आ लिखऽ नहि ! एकर की कारण भऽ सकैछ ? हम एक दिन पुछि देलियै-एँ गय माय, तोँ रामायण तँ खूब नीक जकाँ पढ़ि लैत छेँ मुदा कहियो लिखैत नहि देखलियौ, तकर की कारण ?

ओ बाजलि- इहो तऽ रामदेवे बौआ सिखा देलनि । हम एक दिन कहलियनि-'बौआ ! कने कऽ हमरा पढ़ब सिखा दिअऽ, मोन होइए जे जँ पढ़ऽ आबि जाइत तँ कने-मने रामायणो पढ़ि लितहुँ । वैह किताबो आनि देलनि आ जखन कऽ छुट्टी होइनि तँ पढ़ा देल करथि । प्रयास तँ लिखबो सिखयबाक कयलनि मुदा घरक झंझटिमे सभ दिन ओझरायल रहलहुँ । एसगरुआ लोक, घर-गृहस्थी, ताहि परसँ धिया-पुता छोट-छोट । लिखब नहि सिखि पओलहुँ ।'

हम सोचलहुँ-ई तँ ककाजी बड़का काज कयलनि । बिनु पढ़ल-लिखल लोक कोनो काजक होइत अछि ? निरक्षर आ पशुमे कोनो भेद नहि । रामायण पाठक महत्त्व बूझल छल । पिताजी सेहो नित्य दस दोहा धरि पाठ कयल करथि । से कतबो अबेर किएक ने होइनि नहयबामे । हट्टासँ डेढ़-दू बजे अबैत छलाह तखनो स्नान कऽ रामायण पाठ आ सहस्रशीर्षा पढ़लाक बादे भोजन करैत छलाह ।

कहल गेल अछि-जतऽ नित्य रामायण पाठ हो ओतऽ दरिद्रताक प्रवेश नहि होइत अछि । माता-पिताकेँ देखि हमहूँ नित्य स्नानादि कऽ पूजा-पाठ करी आ ताहिमे दस दोहा धरि रामायण पाठ अवश्य करी । से एखनहुँ करैत छी ।

Scanned by CamScanner

ककाजी कॉलेज जाथि तँ हमरा साइकिलसँ मिडिल स्कूल लहेरियासरायक मोड़पर छोड़ि देथि । हम स्कूल चल जाइ आ ओ कॉलेज । एक दिनक बात मोन पड़ैत अछि-गाम परसँ चलले रही कि एकटा गाय आगाँमे आबि गेलैक जाहि कारणे साइकिलसँ दुनू गोटे खसि पड़लहुँ । ककाजीक साइकिलक आगाँ डलियामे लागल बहुत रास कागत-पत्तर सभ छलनि से उड़िया कऽ पोखरिमे चल गेलनि । बड़ दुख भेल । पता नहि कतेक क्षति भेल होयतनि ।

नित्य दैनिक समाचार पत्र लेल करथि । अपने तँ दिन-राति पढ़बेमे अपस्याँत रहैत छलाह । अखबारक बेरमे हम दलानपर ठाढ़ रहैत छलहुँ । अखबार हॉकर हमरा हाथमे दैत छल । हम ओकरा ओरिया कऽ पढ़ि ली आ ककाजीकेँ दऽ अबियनि । मुदा ओ हमर चलाकी बुझि जाथि । कहथि-आब की हम बसिया अखबार पढ़ू !' हम कहियनि- हम पढ़लहुँ कहाँ अछि ।' ओ हँसऽ लागथि आ अखबार खोलि कऽ पढ़ऽ लागथि ।

हुनकासँ भेट करबालेल अनेक विद्वान, प्राध्यापक, छात्र इत्यादि अबैत छलाह । डा. रूपनारायणचौधरी, प्रो.शिवाकान्तपाठक अधिक काल आयल करथि । डा. इन्द्रकान्तझा ओहि समयमे अधिक काल सासुरेमे रहैत छलाह। प्रात: काल नित्य ओ ककाजीसँ दू-तीन घण्टा कोनो ने कोनो विषयपर विचार-विमर्श करथि । डा. प्रेमशंकरसिंह तँ पढ़बाक हेतु नित्य आयल करथि ।-जा धरि ककाजीसँ भेट नहि होइनि ताबत हम हुनकासँ खूब गप-सप कयल करी ।

गाममे अनेक दलानपर सरस्वती पूजा होइत छलैक । हमरा टोलमे नहि होइत छल । हम मिडिल स्कूलमे पढ़ैत रही । एक दिन अपन संगी-तुरियाक संग विचार कऽ अपनहु टोलमे पूजा आरम्भ कयलहुँ । ककाजीसँ दू टाका चन्दा लेने रही । 20-25 टाकामे खूब धूम-धामसँ पूजा कयने रही । ओ क्रम एखनो चलि रहल अछि । जखन एहि ठाम रहैत छलाह तँ हुनक नियम छलनि जे पूजाक समय आ भसानक समय ओ निश्चित रूपेँ उपस्थित रहैत छलाह ।

गाममे भारती कला परिषद नामक एकटा नाट्य संस्था छल जे प्रतिवर्ष दुर्गापूजाक अवसरपर चारि-पाँच राति नाटक खेलाइत छल । ककाजी नाटको खेलाथि आ निर्देशनो करथि । हम कोरसक पाठ करैत रही । कोरसमे जय जय भैरवि वा आन कोनो प्रार्थना पाँच-सात बाल कलाकार द्वारा गाओल जाइत छलैक । मोन पड़ैत अछि, ककाजी पर्दाक पाछासँ मंचपर जयबाक हेतु ठेलथि । डरे अपन डेग नहि ससरय । जखन मंचपर जाइ तँ दृढतापूर्वक प्रार्थना करी । प्रारम्भमे पैरो थरथराइत छल । ओहि परिषद्मे तँ अनेक नाटकक अभिनय कयबे कयलहुँ, संगहि अनेक संस्था द्वारा आयोजित नाटकमे अभिनय करबाक अवसर सेहो भेटल ।

कमला लाइब्रेरी, लहेरियासरायमे चित्रगुप्त सभा द्वारा दोआति पूजाक अवसरपर हरिश्चन्द्रझा 'हरीश' रचित 'छींक' प्रहसन भेल छलैक । हमहूँ ओहिमे एकटा पात्र रही । ककाजी ओहि नाटकक निर्देशक छलाह । नाटक खूब जमल रहैक ।

1976मे मिथिला विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित युवा महोत्सवक अवसरपर सी.एम.साइंस कालेजमे गोविन्दझा रचित 'मिथिलाक प्रतिनिधि' एकांकी नाटकमे नोकरक भूमिका कयने रही । एहू नाटकक निर्देशन ककेजी कयने छलाह। नाटक खूब सफल भेल छलैक । एखनहुँ विश्वविद्यालयक कर्मचारीलोकनि ओहि अभिनयकेँ स्मरण करैत हाल-चाल पुछैत रहैत छथि आ सम्बोधनमे ओहि डायलागक चर्चा करैत रहैत छथि ।

ओहि वर्ष चेतना समिति, पटना द्वारा आयोजित विद्यापतिपर्व समारोहक आयोजन हेतु बैसारमे मिथिला विश्वविद्यालयक कुलपति डा. मदनेश्वरमिश्र सेहो उपस्थित छलाह । ओ उक्त अभिनयक ओहि बैसारमे चर्चा कयलनि जे मैथिली विभागक टीमकेँ नाटक खेलयबाक हेतु आमन्त्रण पठाओल जाय ।

चेतना समितिक आमन्त्रणपर विश्वविद्यालयक मैथिली विभागक छात्र-छात्रा लोकनि ककाजीक 'सिन्दूरक मोल' (पसिझैत पाथर) नाटकक अभिनय करबाक हेतु पटना गेल । सब खर्च विश्वविद्यालय द्वारा कयल गेल छलैक ।

Scanned by CamScanner

एहि नाटकक निर्देशक सेहो ककाजी छलाह । हुनकहि संग हमरालोकनि गेल छलहुँ । नाटकक आठ–दसटा रिहर्सल एही ठाम भेल छलैक आ पटना पहुँचलापर डा. नागेन्द्रझा (एम.एल.ए.)क डेरापर दस–बारह गोट रिहर्सल भेलैक ।

ककाजीक कहब छलनि–नाटकमे सबसँ अधिक महत्त्वपूर्ण अछि रिहर्सल । सफल नाटक तखने होइत छैक जखन ओहि नाटकक कमसँ कम 30–32 रिहर्सल भेल हो आ से ठीके ककाजी रिहर्सल करबैत–करबैत सभ पात्रकेँ तेना ने संवादक अभ्यास करा देथिन जे पर्दाक पाछाँसँ प्रोम्प्ट करबाक कोनो प्रयोजने नहि रहैक ।

हम चाननक भूमिका कयने रही आ चम्पा छलीह ललिताझा । नायक–नायिकाक भूमिकामे छलाह स्व. सदानन्द झा ओ कमलाचौधरी । अन्य पात्र सभ छलाह उमाकान्तझा, दयाकान्तमिश्र, कमलनारायणराय, देवकान्तमिश्र, महेशशर्मा, दयानन्दमिश्र इत्यादि ।

ककाजीक परिश्रमेक परिणाम छल जे सचिवालयक आगाँ प्राङ्गणमे पचास हजारसँ उपरे दर्शकक बीच नाटक पूर्ण सफल रहल पूरा पण्डालक लोक शान्तिपूर्वक हमरालोकनिक अभिनयसँ आनन्द उठौलनि आ बीच–बीचमे करतल ध्वनिसँ उत्साह बढ़बैत रहलाह । नाटक समाप्तिक बाद कतेको काल धरि थपड़ी पड़िते रहि गेल । एतेक लोकक बीच ओ हमर पहिल अभिनय छल । मंचसँ उतरि गेलाक बाद ककाजी हमर पीठ ठोकि देलनि । हम पैर छूबि प्रणाम कयलियनि आ कहलियनि–सभ अहाँक कृपा अछि ।'

किछु वर्षक बाद संकल्पलोक, लहेरियासराय तथा भारती कला परिषद्, कबिलपुरमे सेहो एहि नाटकक मंचन भेल । दुनू ठाम हम भाग लेने रही आ ककाजी निर्देशन कयने रहथि । एहि तरहेँ नाट्य कला दिस अभिरुचि जगयबामे हुनक प्रमुख योगदान रहलनि अछि । एकरे प्रतिफल थिक जे हम आकाशवाणी, दरभंगामे सेहो अनेक नाटकमे भाग लेलहुँ जकर रेकॉर्ड एखनो समय–समयपर बजाओल जाइछ । बी.ए. आनर्समे पढ़ैत रही ।

छओ भायमे हम मात्र दू भाय बाँचल रही । हमरासँ छोट वंशीधर । ओ सदिकाल अस्वस्थे रहैत छल । अवस्था छलैक उनैस वर्षक । हम ओकरासँ दू सालक पैघ । अकस्मात् हृदय गति रुकि जयबाक कारणे ओकर मृत्यु भऽ गेलैक । अपना पढ़बा–लिखबामे मन नहि लागय । सदिकाल कनिते रही । किछु फुराइते नहि छल । चिन्तासँ रुग्ण भेल जा रहल छलहुँ । परीक्षाक समय निकट आबि गेल छल ।

ककाजी परबोधैत कहलनि–जे होयबाक छलैक से तँ भऽ गेलैक । भगवानक यैह इच्छा छलनि तँ के की कऽ सकैछ ? अहाँ फार्म भरि दिअऽ । गेल समय फेर घुरि कऽ नहि आओत ।'

हम कहलियनि–तैयारी नहि अछि तँ बैसिये कऽ की होयत ?' ओ कहलनि–तैयारीमे जुटि जाउ । नहि हो तँ पासे कोर्ससँ परीक्षा दऽ दियौक मुदा छोड़ू नहि ।'

हम इतस्ततः करैत हुनक आज्ञाक पालन कयलहुँ । फार्म भरलहुँ । परीक्षा देलहुँ । पास कयलहुँ तँ ओ फेर एम.ए.मे नामांकन करयबाक हेतु दबाब देबऽ लगलाह । ओहि समयमे हम बुझैत छलहुँ जे ई हमर विनाश करबापर तुलल छथि । पिताजीक इच्छा सेहो छलनि जे हम आब कतहु नोकरी–चाकरी करी । कतेक अछता–पछता कऽ हम एम.ए. मे नाम लिखओलहुँ । ककाजी पुस्तकादिक सहयोग कयलनि । अन्ततः हम एम.ए. सेहो पास कऽ गेलहुँ ।

1976मे एम.ए. कयलाक बाद ककाजी पी–एच.डी. करबाक आदेश देलनि । अपनो इच्छा भेल । हुनक परामर्शसँ प्रारूप तैयार कयलहुँ । शीर्षक छल–'मिथिला भाषा रामायण ओ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक तुलनात्मक अध्ययन' । हम ओहि प्रारूपकेँ जाहि रामायणक नित्य पाठ करैत रही ओहीमे राखि देलियैक ।

तखन आवश्यकता छल एकटा रोजगारक । ओहि प्रयासमे लागि गेलहुँ । पी–एच.डी. करबाक प्रयास छोड़ि देलहुँ । रोजगारक हेतु प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारी करऽ लगलहुँ । ओहि बीच पिताजी ओ ककाजी (स्व. गंगाधरझा)क उपदेशपर जयपुर चल गेलहुँ । ओतऽ एकटा फैक्ट्रीमे सुपरवाइजरक काज करऽ लगलहुँ ।

Scanned by CamScanner

ओहू समयमे रामदेव ककाजी पत्र लिखैत छलाह आ कहैत छलाह-किएक चल गेलेँ ? एतहु कोनो ने कोनो जोगार लागिये जइतैक !' चल अयबाक हेतु ओ पुनः आग्रह कयल करथि ।

एहन संयोग भेल जे सात मासक बाद गाम अयलहुँ तँ एही ठाम ट्यूशन आरम्भ कऽ देलहुँ । जयपुरमे जतबा भेटैत छल ततबा उपार्जन एहू ठाम होअऽ लागल ।

एही बीच आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' स्वदेश दैनिक प्रकाशित करऽ लगलाह । ककाजी आ हमरहि गामक रमाकान्तजीकेँ पचास प्रति स्वदेश आयल करनि । दुनू गोटेक आग्रहपर हम बेचि देल करियनि ।

एहि तरहेँ जखन दू-चारि मास बीतल तँ हमर खोज होअऽ लागल । ककाजी द्वारा अनेको समाद पठाओल गेल । मुदा हमरा पलखतिये नहि होइत छल । कतेक आग्रहक बाद सुमनजीक ओहि ठाम गेलहुँ । हुनक आग्रहपर प्रेसोमे समय देबऽ लगलहुँ । पत्रकारितामे खूब मन लागऽ लागल । सन्ध्याकालमे विभिन्न विद्वानसँ भेट होइत छल । पं. श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', डा. सुरेश्वर झा, सदृश महान विद्वानक सान्निध्य प्राप्त करबाक प्रमुख श्रेय डा. रामदेवझाकेँ छनि ।

जखन एम.एल.एस.एम.कालेज, दरभंगामे प्राध्यापक पदपर हमर नियुक्ति भेल तँ हमरा एम.ए.मे साढ़े बाबन प्रतिशत नम्बर नहि छल । पी-एच.डी. करब आवश्यक भऽ गेल ।

मोन पड़ल ककाजी द्वारा निर्देशित प्रारूप जे यथावत् रामचरितमानसमे राखल छल । ओकरा निकालि ककाजीकेँ देखऽ देलियनि । ओ ओहिमे कने काटि-छाँटि टाइप करा लेबाक सुझाव देलनि । टाइप करओलाक बाद हम हुनकेसँ आग्रह कयलियनि जे अपने अधीन हमर रजिस्ट्रेशन करा दिअऽ । मुदा जगह नहि रहबाक कारणे सुमनजीक अधीन करयबाक परामर्श देलनि । सैह कयलहुँ । सुमनजी प्रसन्न होइत गाइड लेटर लीखि देलनि । आवेदन दऽ देलियैक । किछु दिनक बाद रजिस्ट्रेशन भऽ गेल । 1988मे पी-एच्.डी.क डिग्री सेहो प्राप्त भऽ गेल ।

आइ कचोट होइत अछि जे जँ ककाजीक आग्रह तहिया नहि कटने रहितियनि तँ आइ दूटा इनक्रीमेंटसँ वंचित नहि रहितहुँ । मुदा एहि सबमे विधाताक हाथ रहैत छनि । जे जहिया होयबाक रहैत छैक से तहिये होइत छैक ।

संकल्प लोक, लहेरियासराय प्रतिवर्ष त्रिदिवसीय विद्यापति पर्व मनबैत छल । ओहि संस्थाक ककाजी उपाध्यक्ष रहथि आ हम साधारण कार्यकर्त्ता । मुदा संस्थाक महत्त्वपूर्ण सदस्यक रूपमे हमर स्थान छल तेँ नाटक प्रभारी सेहो रही आ पुस्तक प्रकाशनक प्रभारी सेहो । संकल्पलोक द्वारा मायानन्दमिश्रक 'मन्त्रपुत्र' उपन्यास हुनकहि देख-रेखमे छपल छल । पश्चात् ककाजीक 'पसिझैत पाथर' नाटक संग्रह सेहो छपल छल जाहिपर हुनका साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटल छलनि ।

ओहि समयमे हमर 'भूकम्प-काव्य' संकलन प्रकाशित भऽ रहल छल । दुनू किताब एकहि प्रेसमे छपैत छल । ओहि समयमे ककाजीक परिश्रम ओ हुनक सूक्ष्म दृष्टिसँ अवगत भेलहुँ । अपना किताबक प्रूफ तँ ओ पढ़बे करथि संगहि हमरो पोथीक प्रूफ ओ ध्यानसँ देखथि । स्वदेश' दैनिकमे तँ अनुभव प्राप्त कयने रही मुदा एहिठाम हुनक सहयोगसँ औरो किछु सिखबाक अवसर प्राप्त भेल । ककाजीकेँ सेहो हमरा सम्पादक बनयबाक पूर्ण श्रेय छनि । संकल्पक ओ सम्पादक रहैत छलाह आ हम उपसम्पादक छलहुँ ।

मौलिक पोथी प्रकाशित करयबाक हेतु एम्हर ओ विशेष तत्पर बुझना गेलाह । तकरे प्रतिफल थिक जे हमर शोध-ग्रन्थ 'चन्दाझा ओ लालदासक रामायणक तुलनात्मक अध्ययन' शीर्षकसँ प्रकाशित भेल । एहि पोथीक दूटा प्रूफ तँ हम अपने पढ़ने रही । तकरा बाद हुनका भूमिका लिखबाक हेतु देलियनि । ओ जखन पढ़ऽ लगलाह तँ मोन भिनभिना गेलनि । हमरा कहलनि-बड़ अशुद्ध अछि । खास कऽ संस्कृत श्लोकमे तँ आओर विशेष अशुद्ध अछि । सभकेँ मूल पुस्तकसँ

Scanned by CamScanner

मिलाबऽ पड़त ।' हम हुनक आदेशकेँ यथासम्भव पालन करबाक प्रयास कयलहुँ । मूल पोथी जतऽ धरि उपलब्ध भऽ सकल ओहिसँ मिला कऽ सुधारि देलियैक । जे नहि भेटल ताहिपर हम अपन असमर्थता व्यक्त कयलियनि ।

ओ कहलनि-धरफड़ा कऽ पुस्तक प्रकाशित कयने कोनो लाभ नहि । प्रयास होयबाक चाही जे एकहुटा अशुद्धि नहि रहय । जे पोथी नहि भेटैत अछि ताहि लेल अहाँ डा. विघ्नेशजीक ओतऽ चल जाउ । सम्भव अछि ओहि ठाम अहाँकेँ ओ सबटा भेटि जायत ।

हुनक परामर्शक हम पालन कयलियनि आ विघ्नेशजी प्रसन्न होइत हमरा सहयोग कयलनि । प्रिंटवेल प्रेसमे पोथी छपैत छल । ओहि प्रेसक कम्पोजीटरसँ रामायणक चौपाइ वा दोहाक पाँती एक सीधमे नहि टाइप कयल होइत छलैक । मुदा ककाजीक पुनः पुनः आदेशपर निर्देशक पालन करऽ पड़लैक । अर्थात् पोथीक जे आकर्षक स्वरूप तकरा बनाबऽमे ककाजीक महत्त्वपूर्ण योगदान छनि । वृहदाकार भूमिका लीखि कऽ तँ ओ पोथीक गरिमा ओ लोकप्रियता बढ़यबे कयलनि संगहि बेर-बेर परिश्रमपूर्वक ओहि पोथीक प्रूफकेँ पढ़ि एकहुटा अशुद्धि नहि रहऽ देलनि । तकरे प्रतिफल थिक जे पं. गोविन्दझा ओहि पोथीकेँ पढ़ि लिखलनि- 'चन्दाझा ओ लालदासक रामायणक तुलनात्मक अध्ययन' पाबि प्रसन्न भेलहुँ । नामक अनुरूप तुलनाक बहुतो तथ्य एहिमे नवोद्घाटित भेटल । हमर दृष्टि सभसँ पहिने भाषापर पड़ैत अछि । ताहि दृष्टिसँ हमरा ई उत्तम कोटिक प्रतीत भेल । तुलना योग्य प्रायः सभ तथ्य पकड़ायल अछि ।'

आकाशवाणी, दरभंगासँ कथा वा वार्त्ताक अनुबन्ध अबैत छल तँ आलेख लिखि लेलाक बाद हुनका देखबैत छलियनि । ओ काटि-छाँटि कऽ अपन परामर्श दैत छलाह आ हम तदनुरूप ओकरा परिमार्जित कऽ रेकार्डिंग करबैत छलहुँ ।

जमशेदपुरक सेमिनारमे साहित्य अकादेमीसँ प्रतिभागी होयबाक पत्र आयल । विषय छल 'मैथिली उपन्यासमे ग्रामीण परिवेश' । ककाजीक निर्देशपर अनेको मैथिली उपन्यास किनलहुँ तथा जे नहि भेटि सकल तकरा विभिन्न विद्वानसँ प्राप्त कयलहुँ । प्रत्येक उपन्यासकेँ पढ़ि आलेख तैयार कयलहुँ । ककाजी एहि आलेखकेँ तैयार करयबामे बड़ परिश्रम करौलनि । जखन आलेख तैयार भेल तँ ओ बेर-बेर काटि-छाँटि ओकरा परिमार्जित करबाक निर्देश देलनि । पुनः ओकरा फेयर आ संशोधित कऽ हुनका लग लऽ गेलहुँ तँ ओ बड़ प्रसन्न भेलाह । खास कऽ उपसंहार पढ़ि गद्गद् होइत बिहुँसऽ लगलाह । बजलाह-एकदम ठीक । खूब सुन्दर !' हम हुनक पैर छूबि प्रणाम कयलिनि । ओ पीठ ठोकि आशीर्वाद देलनि ।

गाम-समाजमे आदिकालसँ सज्जन पुरुष सीदित होइत रहलाह अछि । डा.रामदेवझा ओहिसँ वंचित नहि कहल जा सकैत छथि । हुनको ई पराभव सहैत रहऽ पड़लनि अछि । ओ धैर्य तथा सहनशीलताक प्रतिमूर्त्ति तँ छथिहे मुदा अपन सिद्धान्त ओ स्वाभिमानक आगाँ झुकबालेल कहियो तैयार नहि भेलाह ।

गाममे जतबा घराड़ी हुनका छनि से बड़ कम लोककेँ रहैत छैक । तथापि मात्र आठ धूरक घराड़ीपर दू कोठरीक खपड़ैल मकानमे माता, भाइ-भावहुक परिवार संग अपन परिवारक आठ सदस्य सहित पन्द्रह व्यक्तिक निर्वाह बहुतो दिन धरि कयलनि । पाछाँ गाममे किछु भूखण्ड कीनि ओहिमे दू कोठरी आ एक बरामदाक निर्माण कयलनि । केबाड़-खिड़की-चौकठि लागि चुकल छलनि मात्र घरपर चार चढ़ा खपड़ा देबाक छलैक कि एक निष्ठुर प्रतिवेशी जे हुनक मित्रो छथिन बाट घेरि देलथिन । तकर कोनो प्रतिकार नहि कऽ किछु दिन बाद चन्द्रधारी कालोनीमे एकटा खण्डहर मकान कीनि लेलनि । ओहि मकानक सभ ईंटमे नोनी लागल छलैक । बुझि पड़ैत छल कखनो खसि पड़ि सकैत छैक । ओहि मकानमे रहऽ लगलाह आ शनैः -शनैः ओकर मरम्मति करबैत रहलाह ।

उछन्नर देबाक परकाष्ठा तँ तखन देखऽमे आयल जखन हुनक मरौसी भूमिपर एकटा दबंग बाउण्ड्री दऽ देलकनि । ककाजीक स्वाभिमान जागि उठलनि । ओ भविष्यक चिन्ता छोड़ि अपन परिवारक सभ सदस्यक नेतृत्त्व करैत देबालक कुल ईंटकेँ उखाड़ि कऽ फेकि देलनि । हुनक निर्भीकताक एहिसँ पैघ उदाहरण भेटब असम्भव अछि ।

Scanned by CamScanner

बहुआयामी प्रतिभाक धनी डा.रामदेवझाकेँ विभिन्न भाषाक ज्ञान छनि । मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजी भाषाक ज्ञान तँ छन्हिहेँ संगहि संस्कृत बंगला, नेपाली, असमी इत्यादि भाषामे सेहो निष्णात छथि ।

हुनक कनिष्ठ पुत्र विजयदेवझा (राजू) अंग्रेजीसँ एम.ए. कयने छथिन । जखन ओ ऑनर्सक छात्र छलाह तँ ककाजीकेँ देखियनि घंटहु हुनका अपना समीपमे बैसा अंग्रेजीमे डिस्कशन करथि । ग्रामरक ज्ञान करबथिन । हम ठकमकायल सुनैत रहि जाइ ।

एम.ए.क वर्ग लेबऽ आबथि तँ कहियो कोनो किताब वा नोट लऽ कऽ नहि पढ़बथि । भाषा विज्ञान विशेष रूपेँ पढ़बैत छलाह । जेना सम्पूर्ण भाषाविज्ञान हुनका कण्ठस्थे छलनि । हम सब आग्रह करियनि जे किछु नोट लिखा दिअऽ तँ ओ कहथि-पहिने सुनि लिअऽ फेर लिखा देब । आ सैह करथि । सभ छात्र-छात्रा हुनक व्याख्यानसँ प्रभावित रहैत छल ।

सुमनजीक समक्ष जखन हुनक पढ़ौनीक चर्चा करैत छलियनि तँ कहैत छलाह- डा.रामदेवझाक जोड़ मैथिली साहित्यमे नहि अछि । अध्ययन, अध्यापन, अनुशीलनमे हुनक तुलना ककरो संग नहि कयल जा सकैछ ।'

मैथिली साहित्यक एहन वरद पुत्र जे मैट्रिकसँ एम.ए. धरि कहियो प्रथम श्रेणीसँ नीचा नहि भेल होथि, जे बिहारक राज्यपाल, बादमे भारतक राष्ट्रपति डा.जाकिर हुसैनसँ दू-दू बेर गोल्ड मेडल प्राप्त कयने होथि, जे साहित्य अकादेमी, दिल्लीसँ मौलिक ओ अनुवाद पुरस्कार प्राप्त कयने होथि तथा ओहि अकादेमीमे मैथिलीक परामर्शदातृ समितिक सदस्य एवं संयोजक भेल होथि, जनिका निर्देशनमे अठारह-बीस प्राध्यापक पी-एच्.डी.क डिग्री प्राप्त कयने होथि, जनिक दर्जनो पोथी प्रकाशित भेल होइनि, जनिक कथा सभक आन-आन भाषामे अनुवादो भेल होइनि, जे मैथिली साहित्यमे आलोचना विधाक ऋषि तथा कथा-नाटक विधाक मनीषी होथि, एहन पुत्रक जन्म जाहि भूमिमे भेल अछि ओ भूमि धन्य अछि, जाहि गर्भसँ जन्म लेलनि ओ माता प्रणम्य छथि, पिता, पितामह, प्रपितामह सब पूज्य छथि । संगहि हुनक कीर्त्ति-पताका जे दिग्-दिगन्तमे फहरा रहल छनि ताहिलेल ओहि गाम-समाजकेँ गौरव होयबाक चाही । एहन महान पुरुष सम्पूर्ण मिथिलाक गौरव छथि आ भावी पीढ़ीक हेतु प्रेरणा-पुरुष सेहो ।



Scanned by CamScanner

गुरुवर डा.रामदेवबाबू : जेना हम जनलियनि

–डा. रवीन्द्रकुमारचौधरी

मैथिली भाषा-साहित्यक वरिष्ठ ओ यशस्वी प्राध्यापक, विशिष्ट विद्वान, प्रतिष्ठित कथाकार, सम्पादक, अनुवादक, मैथिली भाषा आन्दोलनक सजग प्रहरी, साहित्य अकादेमी पुरस्कार ओ साहित्य अकादेमीक अनुवाद पुरस्कारसँ सम्मानित डा. रामदेवझाक नाम तँ मैथिली भाषी छात्रक रूपमे जनैत रहियनि, मुदा हुनक व्यक्तित्व एवं कृतित्वक सम्बन्धमे विस्तारसँ जनबाक अवसर वर्ष 1987 इ.मे भेटल, तहिया हम टी.एन.बी. कॉलेज, भागलपुरमे मैथिली प्रतिष्ठाक छात्र रही । पुनः एम. ए.कक्षामे जखन हम अपन विशेष पत्रमे 'मैथिली नाटक ओ रंगमंच' रखलहुँ तँ डा. झाक नाट्यकृतिसँ विशेष रूपेँ अवगत भेलहुँ मुदा हुनक पहिल दर्शन भेल 20 अक्टूबर 2000 केँ । अवसर छल समन्वित मिथिला जागरण अभियानक क्रममे हुनक साक्षात्कारक ।

छात्र जीवन पार कऽ प्राध्यापक भऽ गेलहुँ । जमशेदपुरक एल.बी.एस.एम. कॉलेजमे मैथिली विभागमे व्याख्याताक पदपर 1996मे पदस्थापित भेलाक पश्चात् एहि ठामक प्रमुख मैथिली सेवी संस्था 'मिथिला सांस्कृतिक परिषद्,सँ जुड़ि परिषदक गतिविधिमे सहयोग करब प्रारम्भ कयलहुँ । परिषद दिससँ एकटा अनियतकालीन मैथिली पत्रिका 'कचोट' बहार भऽ रहल छल । ओहिमे हम सहसम्पादक छलहुँ । अक्टूबर 2000 मे परिषदक तत्कालीन महासचिव आ कचोटक प्रबन्ध सम्पादक अरुणकुमारझा आ सम्पादक अशोक 'अविचल'क संग एक बैसार भेल । एहिमे मिथिलाक उपलब्धि, उपेक्षा, आ अपेक्षाक पृष्ठभूमिमे साहित्यिक, राजनीतिक, समाजसेवी, प्रशासनिक, उद्योगपति आदि पुरोधा लोकनिसँ साक्षात्कार लऽ हुनक दृष्टिकोण सामान्य लोकक समक्ष अनबाक लेल 'समन्वित मिथिला जागरण अभियान' प्रारम्भ करबाक निर्णय लऽ संयोजनक भार हमरा देल गेल तँ तत्काल अथाह बुझि पड़ल मुदा फेर अपन पूर्ण उत्साह आ सामर्थ्यसँ एहि दिशामे प्रयत्नशील भेलहुँ । एहि उद्देश्यसँ पहिल चरणक यात्रा प्रारम्भ भेल 18 अक्टूबर 2000 केँ ।

यात्रा क्रममे हमर पहिल लक्ष्य छलाह डा. रामदेवझा जे लालदास कृत 'रमेश्वरचरित मिथिला रामायण'क साहित्य अकादेमी द्वारा पुनर्मुद्रणक क्रममे किछु पत्र-पत्रिका आ एकटा विशेष बुद्धिजीवी वर्गक आलोचनाक केन्द्रमे छलाह । लालदासक फोटो आ किछु गोटाक भूमिका सम्मति आदिकेँ छाँटबसँ सम्बन्धित विवाद ओहिकालमे चरमपर छल । कतेको पत्र-पत्रिकामे एहि सम्बन्धमे टिप्पणी भऽ रहल छल । एहि विवादक केन्द्रमे साहित्य अकादेमीक मैथिली सलाहकार समितिक संयोजक डा.रामदेवबाबू स्वयं रहथि । 20 अक्टूबर 2000केँ करीब आठ बजे भोरमे हुनकासँ भेट करबाकलेल लहेरियासराय स्टेशन लग 'कविलपुर' स्थित हुनक निवासपर गेल रही । एहि क्रममे तीन घंटा धरिक गप-सपक उपरान्त डा.रामदेवझाक एकटा फराके व्यक्तित्वक अमिट छापसँ हम अभिभूत भेल रही ।

साक्षात्कारक क्रममे हम हुनकासँ पुछने रहियनि जे एहि विवादक मूल बात की थीक आ विवाद किएक भेल ?' हमर एहि प्रश्नक उत्तर ओ सविस्तार देने रहथि जे मैथिली पत्रिका कचोटक नवम्बर 2000क अंकमे पृष्ठ 30-31 मे प्रकाशित भेल अछि । हमर प्रश्नक उत्तरमे ओ कहलनि- 'पहिल बात ई जे नव मुद्रित पोथीमे सम्पादकक नाम कतहु नहि छैक । मूल पोथीकेँ हम देखलियै आ ओहिमे जे प्रिन्टिंग मिस्टेक छलै तकरा संशोधित कयलिये । साहित्य अकादेमी ओहने कृतिक मूलकेँ पुनर्मुद्रित करबैत छै जे पोथी कोनो भाषामे महत्त्वपूर्ण छैक वा दुर्लभ भऽ गेल छैक आ कोनो प्रकाशक फेरसँ प्रकाशित करबाक लेल तैयार नहि छैक । एहि योजनाक अन्तर्गत कवीश्वर चन्दाझाक 'मिथिला भाषा रामायण' आ लालदासक 'रमेश्वरचरित मिथिला रामायण'क पुनर्मुद्रण भेल ।'

Scanned by CamScanner

आब बात रहल विवाद किएक भेल ? विवाद उठौनिहारकें ई पसिन्न नहि छनि जे एकैसम शताब्दीमे कवीश्वर चन्दाझा आ कविवर लालदासक रचना जकरा अप्रासंगिक कहल जाय लागल छल– रामायण होयबाक कारणें से पुनर्जीवित भऽ कऽ राष्ट्रिय स्तरपर प्रतिष्ठापित भऽ भेल अछि ई हिनका लोकनिकें पसिन्न नहि छनि। हिनका लोकनिक इच्छा यैह छल जे लालदासक प्रतिष्ठा खण्डित बनल रहनु, ओ रामायण पढ़ि कऽ लोक बुझैत रहय जे लालदास एहिना अशुद्ध लिखैत छलाह, से धारणा बनल रहय, ओ जे प्रेसमे कहियो अशुद्ध भऽ गेल से ओहिना यथावत रहय।"

एतऽ ई स्पष्ट कऽ दी जे विवादक क्रममे किछु गोटे निम्न दूटा पँक्ति उद्धृत कऽ रहल छलाह–

खरदूषण वध सीताहरण। विपिन काण्ड मुनिशवरी तरण।
बालिक वध सुग्रीवक राज। किस्किन्धा कपि दूत समाज।

हुनक आरोप छलनि जे ई पंक्ति लालदासक रामायणक पुरना संस्करण 1954 क पृष्ठ 12 पर अछि। एहि पाँतीकें साहित्य अकादेमीक संस्करणमे बदलि कऽ डा. रामदेवझा जे कऽ देलथिन अछि से थीक–

'खर दूषण वध सुग्रीवक राज। किस्किन्धा कपि दूत समाज।'

हमरा लालदासक रामायणक सम्बन्धमे रामदेवझा द्वारा कथित रूपसँ बहुत किछु फेर-बदल करबाक सूचना देल गेल छल जे प्रश्न हम अपन साक्षात्कारमे हुनका समक्ष रखलियनि। रामदेवबाबू रामायणक दुनू संस्करण हमरा सोझाँ राखि देलनि। मिला कऽ देखलहुँ तँ रामदेवझा कतहु कोनो परिवर्त्तन नहि कयने छथि। उपर्युक्त विवादित दोहा यथावत रामायणक 1954वला प्रथम संस्करणमे अछि तद्‌वते ई पुनर्मुद्रित पोथीमे पृष्ठ 34 पर अछि। एकर भूमिका पृष्ठ 5सँ आरम्भ भऽ पृष्ठ 16 पर समाप्त होइत अछि, एकरा 16 पृष्ठक भूमिका नहि कहि सकैत छी। लालदासक वंशजक चर्चा पुनर्मुद्रित पोथीक भूमिकामे पृष्ठ सं. 6 मे अछि जतऽ पूर्व संस्करण (प्रभुनारायण दास, खड़ौआ)क स्पष्ट उल्लेख भेल अछि। हँ एकटा जे छुटि गेल ओ थीक– 'लालदासक फोटो'। मुदा पूर्व संस्करणक फोटो से बुत्त अछि जकर पुनरुद्धार सम्भव नहि छल। ओना कोनो रचनाकारक फोटो रहब, नहि रहब ई कोनो विवादक विषय नहि भऽ सकैत अछि।

डा.रामदेवझासँ भेल साक्षात्कार प्रकाशित भेलाक पश्चात् कचोटक अंक जखन मैथिलीक पाठकक हाथमे गेल तखन जा कऽ विवाद समाप्त भेल। सामान्य पाठक लोकनि वस्तुस्थितिसँ अवगत भेलाह। पूर्वमे तेना प्रचारित कऽ देल गेल छल जे कोनो पाठक ओकरा पढ़ि आक्रोशित भऽ सकैत छल। हम स्वयं आक्रोशित भेल रही आ हमरो टिप्पणी एकटा पत्रिकामे छपल छल। मुदा जखन वास्तविकतासँ स्वयं अवगत भेलहुँ तखन जा कऽ दुष्प्रचारक महिमा बुझलहुँ। एहि तरहें समस्याक समाधान भेल।

डा. रामदेवबाबूसँ भेट हमरा लेल कतेको दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण छल। एक तँ पहिल यात्रा छल। दरभंगा शहर पहिल बेर गेल रही। मैथिली पढ़लहुँ, अध्यापक सेहो भेलहुँ मुदा एहिसँ पूर्व दरभंगा दिस कहियो नहि गेल रही।

डा. रामदेवबाबूसँ दोसर-तेसर-चारिम कतेको बेर भेट भेल। कहियो चेतना समितिमे तँ कहियो कोनो विचारगोष्ठीमे। मुदा महत्त्वपूर्ण भेट भेल 9 दिसम्बर 2006कें जमशेदपुरमे। ओ अपन विभागीय कार्यसँ एहिठाम आयल रहथि। संगमे रहथिन पं. चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' आ प्रो.खुशीलालझा। सभ गोटे होटल 'सुविधा'मे ठहरल रहथि। सूचना भेटितहि भेट करबाक लेल गेलहुँ। कतेको प्रसंगमे गप्प भेल। दोसर दिन होटलमे आ टाटानगर रेलवे स्टेशनपर सेहो भेट भेल। भेटक महत्त्वपूर्ण बात हमरा लेल ई अछि जे– 'हुनकासँ भेटक अर्थ अछि किछु सिखब।' बजबाक क्रममे जँ कोनो शब्द गलती बजा गेल तँ तुरत टोकि सही शब्दक प्रयोगक दिस जे ध्यान आकृष्ट करयबाक हुनक स्वभाव छनि ई एखनहुँ हुनका एक सुयोग्य प्राध्यापकक श्रेणीमे रखने अछि। हुनकासँ भेल भेट अगिला भेटक प्रतीक्षाक लेल आकुल कऽ दैत अछि– सतत् नवीनतासँ परिपूर्ण आ ज्ञानवर्द्धक।'

●

Scanned by CamScanner

नारिकेर सन कठोर आ नेनु सन कोमल गुरुवर

श्रीचन्द्रमोहनझा 'पड़बा'

गुरुवर डा. रामदेवबाबूसँ साहित्यिक सम्पर्क दलशृंगार बलदेव कॉलेज जयनगरहिसँ पठन-पाठनक क्रममे पोथीक माध्यमे भऽ चुकल छल । दर्शन ओ हुनक साहचर्य भेटत से नहि बुझैत छलियैक । स्नातकोत्तर मैथिली विभागमे नामांकनक पश्चात् एहि विभूतिक दर्शनक सौभाग्य प्राप्त भऽ सकल । मुदा, नहि जानि किएक ! हिनका प्रति नेह नहि जागि सकल । तकर कारण इहो भऽ सकैत छैक जे परिचयदाता स्वयं हुनक स्वभावसँ परिचित नहि छल होयताह किंवा हमरा हुनक सान्निध्यसँ वंचित राखऽ चाहैत छल होयताह । हमरा पहिल खेप हुनका लऽग जयबाक अवसर भेटल छल 1984 इ.क विद्यापति सेवा संस्थान दरभंगा द्वारा 'मिथिला विभूति पर्व' समारोहक अवसरपर । स्नातकोत्तर मैथिली विभागमे संस्थान द्वारा मिथिला विभूति पर्वक हकार-पत्र देल गेल छलैक । ई सूचना हमरा हमर मित्र अशोककुमारझा देलनि, आ संगहि इहो कहलनि जे कवि सम्मेलनक मंच संचालक श्रीमान् रामदेवेबाबू रहैत छथि ।' डा. रामदेवबाबूसँ हम अपन मनोभाव कहलियनि । श्रीमान संस्थानक नियमक जानकारी दैत मिहिरजीसँ भेट करबाक भाँज देखौलनि आ हमर जीवन पहिल काव्य-पाठ हुनके संचालनमे भेल छल - 'टूटल एकचारीमे दुबकल छै बुढ़वा' ।

महाराज महेश ठाकुर मिथिला महाविद्यालय, दरभंगा द्वारा व्याख्याताक साक्षात्कार भऽ रहल छल 1987 इ.मे । हमहूँ एकटा अभ्यर्थी रही, मैथिली विभागक हेतु । तत्कालीन समयमे महाविद्यालय पूअर होममे चलैत छल । डा. रामदेवबाबू सेहो विशेषज्ञक रूपमे साक्षात्कार लेबाक हेतु आयल छलाह । हम आश्वस्त छलहुँ जे हमरा तँ नहिएँ होयत । जखन सूची टाँगल गेल ओहिमे हमर स्थान सुरक्षित छल । तकर कारण जे हम निर्भीक भऽ प्रश्नक उत्तर दैत रहलियनि । जे स्मरणसँ बाहर छल, स्पष्ट कहि देलियनि हमरा स्मरणमे नहि अछि, प्रायः यैह हमर स्पष्टवादिता हुनका आकर्षित कयने होइनि, से सम्भव थिक ।

एक बेर इन्टर कॉउन्सिल पटना द्वारा प्रायः 1990 इ.मे कापी मूल्यांकनक हेतु हमरो पत्र आयल छल । जकर प्रधान परीक्षक श्रीमाने छलाह । सरिपहुँ हम गद्-गद् भऽ उठलहुँ । तकर कारण ई जे हम नवसिखुआ परीक्षक रही । अपना भरोस छल जँ गलतीओ होयत तँ रामदेवबाबू सम्हारि लेताह । टी.पी.एस.कॉलेज, पटनामे जखन दर्शन भेल आ चरण स्पर्श कयलियनि तँ ओ अचम्भित भऽ गेलाह । अहाँ कत्त ?' श्रीमान्क मुँहसँ अनायास निकलि पड़लनि । हम सगर्व आ सकुचाइत अपन जेबीसँ कॉउन्सिलबला पत्र निकालि देखबैत कहलियनि- 'हम अपनहिक को मे छी' । श्रीमानकेँ जेना ओरिआयले रहनि, ... आ हम छी नेरहा ?' हमरो ठोरपर हँसी आबि गेल । श्रीमान् आश्वस्त कयलनि- अच्छा बेस ।' पहिल दिन छल तेँ सभ केओ आधा-छिधा काज कऽ, रातुक ठऽर लगाबऽमे विदा होइत गेलहुँ ।

दोसर दिन जखन मूल्यांकित कापीपर प्रधान परीक्षकक स्वीकृति हेतु गेलहुँ आ श्रीमान् रामदेवबाबूक जे व्यवहार भेल से एखनहुँ सद्यः साकार भऽ उठैत अछि । जी. डी. कॉलेज बेगूसरायक दू गोट कॉपी अति विलक्षण छल । जेहने मोती सन-सन आखर तेहने प्रस्तुति । हम अस्सी नम्मर ओहिमे देने छलियैक । रामदेवबाबू अपन वाक चातुर्यताक संग कहलनि - की पैरबी अछि ?' हम कहलियनि- नहि ।' ओ कहलनि- जँ अछि तँ बाजू ।' एहि प्रकारेँ ओ बेर-बेर स्थिर भावसँ जिज्ञासा करैत गेलाह आ हम भीतरे-भीतर कुंठित होइत रहलहुँ । तखन एतेक नम्मर कोना देलियैक ?' हम कहलियनि - अपने देखि लियौ, जँ बेसी बुझाइत अछि तँ काटि दियौ । ई तँ अपनेक अधिकार अछि ।'

Scanned by CamScanner

रामदेवबाबू कापी उनटौलनि आ प्रत्येक प्रश्नोत्तरकेँ देखि प्रसन्न भऽ दू नम्मर आओर थापि देलथिन ।

डा. रामदेवबाबू महकारी फर किंवा बैर सन नहि । हुनक विनोदी स्वभावकेँ बुझब सभक बसक बात नहि।

एकटा दोसर कापीमे मात्र दूटा शब्द एक गोट प्रश्नमे लिखल छल । हम ओहि प्रश्नकेँ काटि देने छलियैक । श्रीमान् कहलनि– एकरा काटि देलियैक ! एहिमे नम्बर नहि देबैक ?' हम कहलियनि – एहिमे की नम्बर देबै ?' श्रीमान् कहलनि– जखन ई प्रश्न संख्या लिखि देने अछि तखन किछु तँ नम्बर देबैक ने ?' हम नहुँएसँ कहलियनि– अपने जे देबैक से दऽ दियौक ।' ओ आश्चर्य चकित भऽ कहलनि – आ अहाँ नहिऐँटा किछु अंक देबैक ?' हम भीतरे–भीतर कूही होइत रहलहुँ आ ओ निर्विकार भावेँ हमरा तरंगित करैत रहलाह । हम मूक–दर्शक भेल ठाढ़ रहलहुँ । श्रीमान् चट दऽ सुन्ना धऽ देलथिन ।' ओ कहलनि कापीक उपरमे अहाँ काटि देलियैक । एकर मतलब भेल ओ प्रश्न नहि लिखने अछि । जँ किछु लिखने अछि तँ ओकरा सुन्ने दिऔ, तकरा कापीक उपरोमे लिखि दियौक ।'

यद्यपि हमर मोन प्रसन्न नहि भऽ सकल, मुदा हुनक एहि वाणीकेँ हृदयंगम अवश्य कयलहुँ । आन सभ सहायक परीक्षककेँ छोड़ि, सम्पूर्ण काज जेना कापी आनब, लिफाफ तैयार करब आ कापी जमा करब सभ काज हमरे ऊपर दऽ देल करथि । भरोस नहि छल जे हिनकासँ पिण्ड छुटत ।

आबऽ काल अपन संस्कृतिक अनुकूले जखन चरण स्पर्श कयलियनि तँ अत्यन्त स्नेहसँ कहलनि– हमरापर तँ बड़ तमसायल होयब ?' वस्तुतः हम अपनाकेँ नहि सम्हारि सकलहुँ, हमर कंठ अवरुद्ध भऽ गेल । बकार नहि निकलल। श्रीमान् कहलनि – ई बादमे लाभ करत ।'

गुरु कतेक गम्भीर–दूरदर्शी होइत छथि हमरा सन अल्पज्ञ की बुझि सकत ।

मासो नहि बितल । बेतिया जायब–आयब भऽ गेल । ओहिठाम पता लागल जे दरभंगाक चारि सेन्टरक मैथिली कापीक जाँच पटनामे नहि भऽ सकलै, ओ कापी सभ एतहि अछि । कॉउन्सिलसँ मात्र दू आदमी विष्णुकान्तझा आ सच्चिदानन्दसिन्हा आयल रहथि । चारि टा स्थानीय परीक्षकक नियुक्त कयल गेलनि, जाहिमे कान्तजी सेहो छलाह । मुदा, दोसर दिन कान्तजी नहि गेलाह ।

विष्णुकान्तजी प्रथम पत्रक प्रधान परीक्षक भऽ चुकल रहथि । दोसर पत्रक प्रधान परीक्षकक भार हमरे देल गेल, जे कुशलताक संग निर्वहन कऽ सकलहुँ । तकर कारण छल गुरुदेवक कृपा ।

डा. रामदेवबाबूक मैथिली साहित्यक प्रति कयल गेल काज स्मरणीय अछि, आ अनन्त काल धरि रहबेटा करत । हुनका प्रति हमरा लोकनिक कलम मात्र सूर्यकेँ दीप देखायब अछि । रामदेवबाबू 'पावर हाउस' छथि जनिकर प्रकाशसँ कतेको गोटा आइ साहित्यसम्राट बनल छथि । मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धि करबामे हिनक जे अनुसन्धानात्मक काज छनि ताहिपर बहुतो विपक्षी सुविज्ञ पर्यन्त कलम उठयबाक साहस नहि कऽ रहल छथि ।

वैयक्तिक रूपेँ भनहि वैचारिक भिन्नता किनको रामदेवबाबूसँ भऽ सकैत छनि, परंच विद्वत्ता आ कलमक तीक्ष्णताक सभ प्रशंसके छनि । ई सौभाग्य दोसर व्यक्तिक प्रति नहि देखल गेल अछि ।

अज्ञानतावश कयल गेल अपराध गुरुक सम्मुख क्षम्य होइत छैक । सिद्धिक हेतु साधना करहि पड़ैत छैक । अन्यथा ओ साधक नहि ढोंगी कहबैत अछि । आ से भेटला ऊपरसँ नारिकेर सन कठोर आ अन्तःसँ नेनु सन कोमल गुरुवर डा. रामदेवबाबू ।

●

Scanned by CamScanner

हम परिणाम...

डा. श्रीविश्वनाथ

17 जून 2009 । अषाढ़ चढ़ल जाइत रहैक । गाछी सबमे अगता मालदह टुटैत रहैक । गुलाब खास .. जर्दालू... बम्बइ । बरामदाकेँ घेरि कऽ छोटछीन बैसकी । कातमे मोटरसाइकिल । सोफाक कुर्सीपर बैसैल छी । चुपचाप । सामनेमे आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन' क भव्य तैल चित्र । कातमे कविकोकिल विद्यापतिक फोटो-कैलेण्डर -गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोरक प्रदीप्त आनन । स्वीच ऑन कऽ दैत छियैक । पंखा चक्कर काटऽ लागल । गर्मी मने बढ़ले जा रहल छैक...।

-हम दरबजापर थाप दैत छियैक-श्रीमान् छथि ? किछुए पलमे आदरणीय रामदेवबाबू बहराइत छथि । हम पैर छुबि कऽ प्रणाम करैत छियनि । रामदेवबाबू हमर गुरू ... सी.एम.कॉलेजमे । धोती आ कुर्त्ता, श्यामवर्ण, प्रखर व्यक्तित्व, ओजस्वी स्वर, एहि खेप मुदा अवसन्न जकाँ... आवाज कनेक मद्धिम ।

-बैस...बैसू ने !

मोबाइलसँ अहाँ सूचित कयने रही-इन्टरव्यूक लेल ।

-जी....

हम सोफाक कुर्सीपर बैसैत बजलहुँ .... सामनेमे रामदेवझा । कातमे राखल कुर्सीपर शंकरदेवझा-प्रोफेसर साहेबक माँझिल बालक... पत्रकार-लेखक ।

सामनेक डेरामे विवाहक तैयारी । साँझमे औतैक वर-वरियाती । लाउडस्पीकर । ..हवामे हेलैत गीत.. । घड़ीमे बजैत रहैक नओ बाजि कऽ पचास मिनट । कबिलपुर । दरभंगाक पुरान मोहल्ला ।

-जी..एखन कोन आममे अधिक स्वाद लगैत अछि ?

-कोनो स्वाद नहि लगैत अछि-ने मधुरे ने अम्मते ।

-गाछी-बिरछीमे बुलैत नीक लगैत छल ?

-गाछी-बिरछीमे तँ हमर बाल्यकाल बीतल अछि । नानाक आँगुर पकड़ने..मामक कन्हापर बैसल हम गाछीमे नव-नव गाछक नव-नव कलश, पात-पल्लो दिस तकैत रही-मामा देखियौ अइ गाछमे नवका कलश फुटलैए ! सहोड़ा भेल हमर मातृक । मातृकमे हमर बाल्यावस्था बीतल । झोटहूबाबूक आनन्दपुर ड्यौढ़ी । कनेक हटि कऽ रहैक लक्ष्मीपुर ड्यौढ़ी । बड़कीटाक छहर-बान्ह जेना मोहनपुर हाउसमे छैक । बड़का गाछी रहैक । पैघ-पैघ धात्रिक गाछ, बेलक गाछ, कटहरक गाछ । बँसबिट्टी । आमक गाछ... तेतरिक गाछ ।

-अपन हाथसँ गाछी लगौने छी.. ?

-हँ ! लगौने छी । बेसी कलकतिया.. किसुनभोग.. किछु बिज्जू !

-कतेक टाक गाछी अछि.. ?

Scanned by CamScanner

प्रश्न सूनि कऽ रामदेवबाबूक आकृति मुकुलित भऽ उठलनि । प्रफुल्ल । मुस्कियाइत आँखिसँ शंकरजी दिस ताकऽ लगलाह.. शंकरजी हड़बड़ाइत-सन बजलाह-' हेतैक, दस बारह कट्ठाक हेतैक ।'

अरण्यगाथामे हम डूबल रही । पुछलियनि-'अपनेकेँ कोन पंछी आकर्षित करैत अछि ?'

-पंछी सब अबैक.. आमक समयमे चिड़ै सब अबैक । पीयर, चितकाबर, लाल.. पाँखि पसारने । पोखरि-चभच्चामे पानि पिबैत-उबडुब करैत । मैनाक गेल्ह । पउड़की । पड़बा । बगुला ।

-कोन अवस्थामे कोइलीक स्वर आकर्षित करऽ लागल ?

-से जुनि पुछू, कोइलीक स्वर सदिखन आकर्षित करय । मुदा सबसँ बेसी आकर्षित करय मुँह दुसऽबला पंछी-हमसब-बच्चासब कहियैक-कूऽऽऽ.. मुँह दूसऽबला पंछी उनटि कऽ आबाज दैक-कूऽऽऽ... तकर बाद तँ कूऽऽऽ-कूऽऽऽ- पिकहा-पिकहा, गाछीमे हिलकोर मचि जाइक । आ तखन झूला-मचकी । गाछमे बान्हल मचकी.. मचकीपर झुलैत बच्चाक दल । सहोड़ा गाम । हमर मातृक । मानरि आ ढोल । बरहमस्थान आ चैतावर । मचकीपर झुलैत...

डा.रामदेवझा-मैथिलीक लब्धप्रतिष्ठ विद्वान । लोकसाहित्यक गम्भीर अन्वेषक । शैव साहित्यक प्रखर विश्लेषक । जगत्प्रकाशमल्ल, जगज्ज्योतिर्मल्ल आदिक साहित्यपर अनुसन्धान । एस.पी.कॉलेज, दुमका आ सी.एम.कॉलेज, दरभंगामे मैथिलीक यशस्वी शिक्षक-अधीत मध्मापितभार्जितयशः -विश्वविद्यालयक मैथिली विभागसँ 1996मे वरिष्ठ प्रोफेसरक रूपमे अवकाश ग्रहण कयलनि । विविध विधाक निष्णात लेखक-कथा कविता, निबन्ध, शोध-पत्र, नाटक-एकांकी, पत्रात्मक लेखन, धारावाहिक स्तम्भ, संस्मरण आदि विधामे निर्वाध लेखन । कठिन जीवन-संघर्ष । विपरीतो परिस्थितिमे संघर्ष करबाक अदम्य ऊर्जा । डा. रामदेवझाक जन्म मातृक सहोड़ा, जिला-दरभंगामे 1936मे श्रावणी पूर्णिमाकेँ भेल रहनि ।

पंखा चलैत रहैक । अन्दाज दिनक एगारह बजैत रहैक । रामदेवबाबू पीठक आँखिसँ अतीतकेँ मोन पाड़ैत कहलनि-'एकटा रहस्यक गप्प कहैत छी ।'

-जी, कहल जाय...

-'हमर जे नाम अछि रामदेवझा .. तकर पाछाँ एकटा रहस्य अछि ।'

-से की ?

-हमर मामक नाम रहनि रामजतनमिश्र ... हुनक नामक पहिल अंशसँ हमर नाम भेल 'राम'...

हम पुछलियनि-'आ देव' ?'

-से कहैत छी । हमर मायक नाम रहनि 'देवयती' प्रसिद्ध बच्चा दाइ । से 'देव' हुनकेसँ प्राप्त भेल । तेँ हमर नाम भेल 'रामदेव' । एकटा गप्प आर कहैत छी । ...

सामनेमे गिलास । गिलासमे पानि । बजबामे शिथिलता ... अवसन्न ... अस्वस्थ । मार्च 2008सँ इलाज । पानि पीलनि । पल किछुएक विलमि कहलनि-परुकाँ साल दुःखित पड़ि गेल रही ।' हम कनेक भावुक जकाँ भऽ गेल रही । पुनः साकांक्ष आ गम्भीर होइत पुछलियनि-जी, अपने एकटा गप्प कहैत रहियैक ।'

-असलमे हमर परिवारक स्थिति विकराल भऽ गेल रहए । खेत-पथार रहय । गाछी-बिरछी रहय । मुदा फरीक सभक उपद्रव । खेत-पथार दबने रहथि । हमर पिताकेँ रहनि पेटक बेमारी-रुग्ण ! जखन हम मात्र छओ मासक रही तँ हमर माम हमर मायसँ भेट करबाक हेतु आयल रहथि । परिवारक स्थिति देखि मायक कोंढ़ फटैत रहैक । देयादी

Scanned by CamScanner

उपद्रव चरमपर । बच्चा नहि बचतैक । मामाकेँ कहलथिन- बच्चाकेँ लऽ जाउ । एहिठाम नहि बचतैक । हमर माय हमरा मामक कोरामे राखि देलनि । तहिया हम मात्र छओ मासक रही । हम सब नानीकेँ मैञाक कहियनि । हमर मैञाक नाम रहनि सीतासुन्नरि-लोक व्यवहार, गीतनाद, लूरिभासमे अत्यन्त वितपन्नि । हम गछैत छी ...।'

-जी...

-से हम गछैत छी... मैञाक स्नेहिल कोर आ आँचरक शीतल छायामे हमर अबोध बाल-मानसमे बहुत किछुक संग लोकगीत, लोकव्यवहार विषयक संस्कार सेहो पड़ल.. यैह कारण भेल जे बादमे हम लोकसाहित्यक अध्ययन-अनुसन्धान दिस समर्पित भऽ गेलहुँ ।

-एकटा गप्प आर कहैत छी ।

-कहल जाय...

-मैथिलीमे कहबी छैक जे माय गुन धी, मुदा हमर माय तकरा चरितार्थ नहि करैत छलीह, अपितु हुनकासँ किछु बेसिये छलीह । मैञा आ मायक संग हकार पुरबालेल जाइत-अबैत मिथिलाक माटि-पानिक नेह-छोह, सौरभ-संस्कार मोनकेँ अभिभूत करैत रहल । नानी-बाबी, मामी-काकी, पीसी-मौसी, बहिनि-भाउज-सबसँ सम्पर्क होइत रहल ।

रामदेवबाबूक बासाक बगलमे विवाहक तैयारी । किछु काल ढोल बजैत रहलैक -ताकधिनाधिनताक ! लाउडस्पीकरक आवाज थमि गेल रहैक । हमरा पियास लागि गेल रहय । बिचला जूनक बेकहल गर्मी । शंकरदेव गिलासमे पानि देलनि । पानि पीलहुँ । जेबीमे पान रहय.. एक खिल्ली पान । सुपारी आ चून । तुलसी जर्दा फँकलहुँ ।

साकांक्ष होइत पुछलियनि-'मातृकमे अपनेक बाल्यकाल बीतल । अनेक अनुभव .. अनेक दृश्यखंड .. स्मृति ! की तकर सभक प्रभाव अपनेक कथा-कवितापर पड़ल ?'

रामदेवबाबू भाव-विह्वल होइत कहलनि-हमर अधिक कथामे हमर बाल्यकालक अनुभव, स्मृति आ दृश्यक खण्डक प्रभाव देखल जा सकैत अछि .. हमर मोन-प्राणमे बसल अछि । हमर रक्त-स्पन्दनमे बाल्यकालक स्मृति पघिलैत रहल । हम सहोड़ासँ कबिलपुर आबि गेलहुँ- पटनामे रहलहुँ, दुमकामे रहलहुँ-कतऽ-कतऽ नहि गेलहुँ-मुदा मैञा आ मायक कोरामे झुलैत, स्नेहक आँचरमे झुमैत, बाल्यकालक रससँ परिप्लावित होइत हमर मोन हमरा अभिभूत कयने रहल !'

हम साकांक्ष होइत पुछलियनि- कथाकार रामदेवझाक जन्म कोना भेलनि ?'

-देखू, हम पहिने फकड़ा आदिक अनुकरणमे तुकमे तुक मिलयबाक प्रयास आरम्भ कयलहुँ । जेना-

सड़कक कातमे हमर गाम, बाड़ीमे अछि फड़ल लताम

हमरामे क्रमिक साहित्यिक रुचि जागऽ लागल । जखन हम किछु पैघ भेलहुँ तँ अपन गाम कबिलपुरमे अबि रहऽ लगलहुँ । कबिलपुरमे एकटा पुस्तकालय रहैक-'साहित्य पुस्तकालय' ! एहि पुस्तकालयमे एक-सँ-एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक ग्रन्थ सब रहैक । पुस्तक पढ़बा दिस रुचि जागल । पुस्तकालय-परिसरमे प्रतिवर्ष कार्त्तिक धवल त्रयोदशीकेँ विद्यापति-स्मृति पर्वक आयोजन होइत रहैक । साओनमे तुलसी जयन्तीक आयोजन । साहित्यिक वातावरण भेटऽ लागल । हम एहि आयोजन सबमे बढ़ि-चढ़ि कऽ भाग ली । एहि पुस्तकालयसँ एकटा पत्रिका बहराइत रहैक-संक्रान्ति । मूलतः हिन्दीमे । हमरो लिखबाक लेल किछु कहल गेल-मुदा हम कहलियनि जे हम लिखब मैथिलीमे । हमर पहिल कथा एही हस्तलिखित पत्रिका संक्रान्तिमे बहरायल ।

-जी, शीर्षक की रहैक ?'

Scanned by CamScanner

-शीर्षक तँ ठीकसँ मोन नहि अछि । कोनो गहनाक नाम पर रहैक प्राय: चन्द्रहार । हेतैक ओकर मूलप्रति कतहु सुरक्षित-तकबैक । 1951-1952इ.क गप्प थिक । 1953मे नाइन्थमे पढ़ैत रही-एम.एल.एकेडमीमे । यशस्वी शिक्षक पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'सँ सम्पर्क भेल, स्नेह । आशीर्वाद प्राप्त भेल । मैथिलीमे एकटा कथा लिखलहुँ-'मुदा आब की ? आदरणीय अमरजीकेँ देखऽ देलियनि । बड़ प्रसन्न भेलाह । कहलनि-लाबह, छपि जयतह मिथिलामिहिरमे । सम्पादकजीकेँ देबनि । सम्पादकजी अर्थात आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन' । कथा छपल । मिथिला मिहिरक 13 जुलाइ 1953क अंकमे । अमरजी स्कूलमे मिथिला मिहिरक लेखकीय प्रति देलनि । तेँ 'मुदाआब की ?' हमर पहिल छपल कथा थिक । छपल कथा देखि भाव-विभोर भऽ गेलहुँ । नव प्रेरणा-नव ऊर्जा भेटल । 'सुमन'जीसँ भेट करबाक निमित्त हुनक कटहरबाड़ी डेरापर पहुँचलहुँ । आदरणीय 'सुमन'जीसँ भेट भेल । आशीर्वाद देलनि । प्रोत्साहित कयलनि । कहलनि-अहाँक दोसरो कथा छपत । ओही वर्ष अगस्त 1953मे हमर दोसर मैथिली कथा छपल-'दू ठोप नोर' ।'

-अपनेक रचना-प्रक्रियापर सुमनजीक केहन प्रभाव ?'

-कोनो प्रभाव नहि । ककरो प्रभाव नहि । ककरो अनुकरण नहि । हम अपन रस्ता स्वयं बनबैत रहलहुँ आ अपन रस्तापर चलैत रहलहुँ । 'सुमन'जीक व्यक्तित्वसँ प्रभावित रही । हुनक प्रकांड पाण्डित्यसँ प्रभावित रही । मुदा लेखन पर कोनो प्रभाव नहि । 1953मे 'सुमन' जीक नियुक्ति सी.एम.कॉलेजमे मैथिलीक प्राध्यापकक रूपमे भेल रहनि । 'अमर'जीक नेतृत्वमे हमरालोकनि-अर्थात् मैथिली भाखाक छात्र लोकनि उत्साहक संग कमलानेहरू पुस्तकालय-परिसरमे 'सुमन' जीक अभिनन्दन कयने रहियनि । समारोहक अध्यक्षता कयने रहथि मैथिली सेनानी बाबू भोलालालदास ।'

-ओहि समय कोन-कोन पत्रिकाक धूम मचल रहैक ?'

-धूम मचल रहैक वैदेहीक... दोसर खेप वैदेहीक प्रकाशन आरम्भ भेल रहैक । ...भुवनेश्वरीबाबू मास्टर साहेबक डेरामे ... प्रेसकार्यमे हमहूँ सहयोग कयने रहियनि । हम कथा लेखन आरम्भ कयने रही संक्रमण कालमे-1950-1960क बीचमे । छठम दशकक पूर्वार्द्धमे । ओहि समय वैदेहीक अतिरिक्त मिथिला दर्शन, पल्लव, इजोत आदि स्थापित आ लोकप्रिय पत्रिका रहैक ।'

-ओहि समय कोन-कोन कथाकार अधिक लोकप्रिय रहथि ?'

-अधिक लोकप्रिय रहथि प्रोफेसर हरिमोहनझा -अपार लोकप्रियता । कन्यादान-द्विरागमन, प्रणम्य देवता, रंगशाला आदिक धूम मचल रहैक । मनमोहनझाक अश्रुकणक चर्चा करब । हुनक कथामे मानव मनकेँ झकझोड़ि देबाक क्षमता रहैक ।'

बगलमे वियाहक तैयारी चलैत रहैक । कनेक काल बैण्डबाजापर नवका कोनो फिल्मक गीत झमाझम भेल रहैक । आब फेर हवामे लाउडस्पीकरक स्वर उड़िआइत रहैक । हम गम्भीर होइत पुछलियनि-प्रोफेसर उमानाथझाक कहब छनि जे हरिमोहनझा कथाकार नहि रहथि, गप्पी रहथि । अपनेक की प्रतिक्रिया ?'

-प्रोफेसर उमानाथझाक धारणा समुचित नहि छनि । ई हुनक अपन विचार थिकनि । हरिमोहनबाबूक रचनामे विविधता छनि । भोलबाबाक गप्पकेँ अवश्ये गप्प कहल जा सकैत अछि । शास्त्रीय आ शास्त्रार्थ शैलीमे लिखल हुनक खट्टरककाक तरंग छनि । मुदा ओ मूलत: कथाकार छथि । वस्तुत: हुनक कथा आधुनिक मैथिली कथा-साहित्यक मूल आधार थिक । केओ पढ़ि कऽ देखय पाँचपत्र, कन्याक जीवन आदि । शिल्प, शैली, संरचना, वातावरण, कथातत्त्व, कथाक विकास-विश्व साहित्यक कोनो कथासँ टक्कर लऽ सकैत अछि ।'

-अपनेक कथाक सेन्ट्रल थीम की रहल अछि ?'

-कोनो सेन्ट्रल थीम नहि अछि । कोनो विशेष बिन्दुपर केन्द्रित हमर कथा नहि अछि । कतहुसँ प्रतिबद्ध नहि ।

Scanned by CamScanner

कोनो विचारधाराक प्रति प्रतिबद्ध नहि । कोनो धुरीसँ खुटेसल नहि । हम कहियो ककरो झण्डा नहि उठौलहुँ । जनवादी, वामपंथी, प्रगतिवादीक झमेलामे नहि पड़लहुँ !'

-तखन अपने कथाक ... ?'

-हँ, से कहैत छी ।'

-जी ...।'

हमर कथामे रहैत अछि जनसामान्यक पीड़ा, कोनो मार्मिक अनुभूति, कोनो टीस, कोनो घाओ-जे घटना छूलक, झकझोड़ि कऽ राखि देलक, जे मोन-प्राण-आत्मामे हिलकोर मचा देलक-सैह कथा बनैत अछि, स्वाभाविक रूपमे बनैत अछि । हम ककरो पछिलग्गू नहि छी । हमर कथा नारा नहि थिक !.. एकटा बात आर कहब ...।'

-जी...।'

हमर कथामे परफेक्सन भेटत । सुविचारित रूपसँ कथा लिखैत छी । ठोकि-बजा कऽ लिखैत छी । जखन स्वयं कथासँ सन्तुष्ट भऽ जाइत छी तखने छपबैत छी । कथाक संख्या बढ़यबामे विश्वास नहि अछि । छपासक रोग नहि अछि । कथाक उजाहि लगयबामे विश्वास नहि अछि ।'

मिथिलाक माँटि-पानिसँ जुड़ल, दाम्पत्य जीवनक ओझराहटिक विलक्षण कथाकार डा.रामदेवझाक कथामे पीढ़ीक संघर्ष, बेरोजगारी, गरीबी, आर्थिक अनास्था आ बितैत पीढ़ीक दु:ख-दर्द रूपायित भेल छनि । सहज भाषा, सोझ-सोझ दृश्य-खण्ड, गामघरक परिवेश, नचैत शहरक ताल-लय आ अकावोन जंगलमे घुरिआइत मनुक्खक अदम्य संघर्ष पाठककेँ सम्मोहित करैत रहलैक अछि । 1953सँ अविराम गतिसँ कथाक लेखन करैत रहलाह अछि । 1965मे प्रकाशित भेलनि-कथा-संग्रह 'एक खीरा : तीन फाँक', 1966मे छपल रहनि- 'मनुक सन्तान' आ 1985मे बहरयलनि-'धरतीमाता' । आब 2009मे छपि रहल छनि-'आजीमाँ' ।

ऊपर नचैत रहैक सिलिग फैन । 17 जून 2009 । आब बारह बजतैक । रामदेवबाबू सामने राखल गिलास उठा लेलनि आ आस्ते-आस्ते पानि पीबऽ लगलाह । फेर स्थिर होइत कहलनि-आजीमाँ 'रचना'मे छपल रहैक । ओही नामसँ हमर कथा संग्रह छपि रहल अछि । रमाकान्तमिश्र भूमिका लिखलनि अछि ।'

हम कनेक गम्भीर होइत कहलियनि-क्षमा कयल जाय, एकटा जनता दिससँ हम सवाल करऽ चाहैत छी ।'

-से की ?'

-शंकरजी-से की ?'

-लोकक आरोप छैक जे अपने समयसँ पाछाँक कथा लिखैत छियैक ?'

रामदेवबाबूक मोन अप्रतिभ भऽ उठलनि-पहिने एकर तँ परिभाषा भऽ जाय जे समयसँ पाछाँक कथा ककरा कहबैक-समयसँ पाछाँक कथाक की कसौटी अछि ? पहिने एकर तँ स्पष्टीकरण भऽ जाय जे समयक संग चलऽवला कथाक मापदंड की अछि ? पहिने एकर तँ निर्धारण भऽ जाय जे समयसँ आगाँ चलैत कथाक आधार की अछि ? ई सब आरोप हमर विरुद्ध चलैत एकटा षड्यन्त्रक हिस्सा थिक !'

-जी, बारह बजैत छैक । अपनेक भोजनक समय भऽ गेल अछि । अपने आराम-विश्राम कयल जाय ।.. तकर बाद देखल जयतैक ।'

-हम की भोजन करब ? दूध-रोटी गूड़ि-गाड़ि कऽ... स्वादहीन । एक बजेक बाद हेतैक भोजन ।'

Scanned by CamScanner

शंकरजी टेबुलपर जलपानक पथार लगा दैत छथि । पाकल केरा । घरक बनल नारिकेरक मधुर...बिस्कुट..गप्पक क्रम जमि जाइत अछि । हम एकाध पाकल केरा उठा लैत छी । नारिकेरक मधुर । तकर बाद जेबीसँ एकटा पानक खिल्ली... तुलसी जर्दा फँकैत छी । सुपारी आ चून.. हम साकांक्ष होइत पुछलियनि–'जनताक दिससँ एकटा सवाल आर अछि...।'

–से की ?'

–अपनेपर आरोप अछि जे अपने वैष्णवी कथा लिखैत छी ?'

–तकर की माने ?'

–तकर माने जे ... जीवधारी प्राणीक लेल सेक्स आ भूख अनिवार्य । मुदा अपनेक कथामे दमित यौन इच्छा, विवाहेतर यौन-सम्बन्ध आदि निपत्ता अछि ।'

–से बात नहि अछि । दाम्पत्य जीवनक ओझराहटि आ यौन-सम्बन्धक अनेक रेखा हमर कथा सबमे अछि–मुदा अनावश्यक नहि । नङटे मनुक्खक कथा हम नहि लिखैत छी । हमर कथा अछि 'एक खीरा : तीन फाँक' एहि कथामे एकटा स्त्रीक तीनटा पुरुषक संग सम्बन्ध बनैत छैक-शारीरिक सम्बन्ध ... मुदा वल्गैरिटी नहि । कामुकता नहि । .. हम मृत शरीरक संग संभोग करयबामे विश्वास नहि रखैत छी ।'

–जी, ओ तँ यथार्थवादी कथाक क्लाइमेक्स छैक ...।'

–एहन वल्गेरिटीबला क्लाइमेक्समे हमरा विश्वास नहि ।'

–अपने मैथिलीक लब्धप्रतिष्ठ विद्वान-विख्यात अनुसन्धानकर्त्ता... –एहिसँ कथाकार रामदेवकेँ क्षति भेलनि ?'

–एहिमे क्षतिक की बात छैक ? जखन कथा लिखैत छी तँ कथाकार छी । पूर्णतः कथाकार । जखन अनुसन्धान करैत छी तँ अनुसन्धानकर्मी छी । ... से सब बात नहि छैक ।'

–तखन की बात छैक ?'

–कथाकार रामदेवझाक उपेक्षा भेलनि अछि ? कथाकारक सूचीसँ रामदेवझाक नाम रद्द करबाक षड्यन्त्र होइत रहल अछि ?'

–से की कलहुँ । उपेक्षा आ षड्यन्त्र ।'

–तखन प्रमाणक संग हम विवरण दैत छी । हमरे उपेक्षा भेल अछि से नहि, ललितक सेहो उपेक्षा होइत रहलनि । 1964मे ललित अपन एकटा पत्रमे उपेक्षाक चर्चा कयने छथि !'

–साहित्य अकादेमीक पहिल कथा-संग्रहमे ललितकेँ स्थान नहि देल गेलनि । अपनेक की प्रतिक्रिया ?

–सैह बात हम कहऽ चाहैत छी । पटनासँ साप्ताहिक मिथिला मिहिरक प्रकाशन आरम्भ भेल रहैक-1960मे । मैथिली लेखनकेँ एकटा नव ऊर्जा प्राप्त भेलैक, एकटा नव धारा । मुदा एहि सभक बीच एकटा संगठित गिरोह... एहि गिरोहक अनेक धारा-उपधारा विकसित होइत रहल अछि । एहि गिरोहक काज रहैक प्रतिभाशाली कथाकारक मनोबलकेँ तोड़ब । नव-नव चेला-चटिया तैयार करब । गिरोहसँ फराक रहनिहार लेखकक नाम लोप कऽ देब । हम पढ़ैत-लिखैत रही । अनुसन्धान करैत रही । क्लासमे पढ़बैत रही । मैथिलीक प्रति निष्ठा । कोना मैथिलीक विकास होयत-तकर चिन्तनमे राति-दिन लागल । एहन परिस्थितिमे हमर उपेक्षा होबऽ लागल । जेना एकटा उदाहरण दैत छी ।'

–जी...।'

Scanned by CamScanner

–पटनासँ आनन्दमिश्रक सम्पादनमे 'अभियान' पत्रिका आरम्भ भेल रहैक । आनन्दबाबू पटनासँ पत्र लिखलनि-एकटा नवका कथा पठाउ-अभियानक निमित्त । एकटा कथा तैयार कयल-'मनुक सन्तान' । पठा देलियनि । अभियानक दोसर अंकमे प्रकाशित भेल । ई कथा बड़ प्रसिद्ध भेल । बादमे 1966मे जखन हमर दोसर कथा-संग्रह प्रकाशित भेल तँ कथा-संग्रहक नाम देलियैक-'मनुक सन्तान' । .. हम आनन्दबाबूक विद्यार्थी, प्रिय शिष्य । एम.ए.क परीक्षामे एकटा पत्र रहैक-मैथिली साहित्यक इतिहास-ओहिमे ओ हमरा सर्वाधिक अंक देने रहथि ।'

–जी, उपेक्षा...।'

–आब देखू ... आनन्दबाबू मैथिली कथाक प्रसंग अनेक समीक्षात्मक लेख लिखलनि । ठाम-ठाम छपल छनि । बादमे हुनक लेखक संकलन 'विचार-विथी' नामसँ प्रकाशित भेलनि । एहि सब लेखमे हमर कथाक कतहु विवेचन नहि, चर्चा नहि-कथाकारक नामावली धरिमे हमर नामक उल्लेख नहि । ओ स्वयं 'मनुक सन्तान' छपने रहथि- तकरो चर्चा नहि । सूचीसँ नाम रद्द करबाक षड्यन्त्र ! हमर उपेक्षा आ अपमान होइत रहल ... एकटा आर विवरण दैत छी ।'

–जी, कहल जाय ...

–मायानन्दमिश्र... 1960मे मिथिला दर्शनमे अपन एक समीक्षात्मक आलेखमे स्थापित कथाकारक रूपमे हमर चर्चा कयने छथि । मुदा बादमे ओ ललित-राजकमलक परोक्ष भऽ गेलाक बाद त्रिपुण्डक संगठन कयलनि-ललित, राजकमल, मायानन्द । 1984मे ओ 'चन्द्रबिन्दु'क भूमिकामे मैथिली कथाक विकासक चर्चा करैत लिखैत छथि-'ओहि समय रामदेवझा कथा लेखनक तैयारी कऽ रहल छलाह ।'... आब देखू अपने विचारमे स्थिरता नहि । 1960मे किछु लिखलहुँ-1984मे किछु लिखलहुँ । एकरा की कहबै ? एकटा आर उदाहरण दैत छी...।'

–जी...।'

1960मे बाबूसाहेबचौधरी कहलनि जे अहाँक कथा संग्रह 'एक खीरा : तीन फाँक' कलकत्तासँ छपत । पाण्डुलिपि लऽ गेलाह । ओहि समयमे राजकमलचौधरी कलकत्तामे छलाह । मायानन्दमिश्रक कथासंग्रह छपि गेलनि । मुदा हमर कथा संग्रहकेँ लटका देल गेल । सँउसे देशमे हमर कथाक डंका बजैत छल । 1966मे हिन्दीक प्रतिष्ठित पत्रिका धर्मयुगमे हमर कथा 'एक खीरा : तीन फाँक'क अनुवाद प्रकाशित भेल । एहि कथाक प्रकाशन धर्मयुगमे विशिष्ट सन्दर्भमे भेल रहैक-एकटा स्तम्भ चलैत रहैक-'उलझा हुआ मंगलसूत्र' अर्थात दाम्पत्य जीवनक ओझरओटक कथा । एहि स्तम्भक अन्तर्गत हमर कथा 'एक खीरा: तीन फाँक'केँ छापल गेल रहैक-कथाक प्रसंग कहल गेल रहैक-'एक औरत के साथ तीन मर्दो का सम्बन्ध दिखाया गया है ।'... बाबूसाहेबचौधरी हमर कथा संग्रहकेँ गतालखानामे राखि देलनि । किएक एना कयलनि ? आब सुनू एकटा औरो प्रसंग...।'

–जी...।'

–राजकमलचौधरी कथा परागक सम्पादन करैत रहथि । हमरासँ कथा मङलनि । पत्राचार होइत रहय । कथा पठा देलियनि । मुदा कथा नहि छपलनि । दाबि लेलनि । पटनाक मिथिलामिहिर आ आनो ठाम छोट-पैघ गिरोह काज करैत रहल । 1976मे हमर एकटा कथा प्रकाशित भेल 'हत्थाजोड़ी'-मिथिलामिहिरमे । जमशेदपुरसँ गंगेशझा 'रश्मि' नामक एक पाठक एहि कथापर अपन मार्मिक प्रतिक्रिया पठौने रहथिन । लिखने रहथिन जे 'रामदेवझाक कथा 'हत्थाजोड़ी पढ़लाक बाद अपन दुःख-दर्द भूलि गेलहुँ ।' ओहि समय मिथिला मिहिरमे एक जन कनिष्ठ उपसम्पादक बेस चरफर.. ओ पाठकक पत्र नहि छपल –आब जे रहस्य रहल हो –बादमे ओ पत्र हमरा हस्तगत भेल ।'

शंकरजी तीन गिलास चाह राखि देलनि । ...चाह चलैत रहलैक । कबिलपुर गाम । छोटछीन बैसकी । सामनेमे रामदेवझा । शंकरजी । टेबुलपर अनेक पोथी-मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य, इजोती रानी.. छोट

Scanned by CamScanner

कलेवर-बटुक कार्यालय प्रयागसँ प्रकाशित । मनुक सन्तान, एक खीरा : तीन फाँक, अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग, रामजोड़ी कागतक पाँखिपर । नवका कथा-संग्रह 'आजीमाँ'क प्रूफ कॉपी-फाइनल शेपमे । किछु पुरान पत्र सब । गंगेशझा 'रश्मि'क प्रतिक्रिया, ललितक पत्र.. राजकमलचौधरीक पत्र...।'

चाहकेँ शेष करैत पुछलियनि-'अपनेकेँ राजकमलचौधरीसँ एलर्जी किएक अछि ?'

-हमरा राजकमलचौधरीसँ नहि हुनक अनेक बातसँ एलर्जी अछि ।'

-जेना...।'

पहिल बात तँ ई जे राजकमलचौधरी साहित्यकेँ निर्वस्त्र कऽ कऽ राखि देलथिन । नाङ्ट स्त्री.. नाङ्ट पुरुष । दोसर...।'

-जी...।'

-दोसर हुनक सूत्र रहनि-एक गिलास दारू आ एकटा मौगी ।'

हम स्थिर होइत पुछलियनि-एहिसँ अपनेकेँ एलर्जी किएक ? ई तँ राजकमलचौधरीक व्यक्तिगत जीवनक मामला छनि ।

-व्यक्तिगत जीवनक मामला कोना रहलनि ? हुनक सँउसे साहित्यमे वैह दारू...वैह मौगी... कविता पर्यन्तमे देहक नोचल-खखोरल-गीजल चित्र । ...देखू, हमरालोकनिक लालन-पालन संस्कार-सम्पन्न परिवारमे भेल । बेटी अछि, भगिनी अछि । नाति-नातिन सर-समाज । कर-कुटुम्ब । हम जँ एहन निर्वस्त्र कथा लिखब तँ हमर सर-समबन्धी की कहत ? बाल-बच्चा की कहत ! वल्गैरिटीक कोन प्रयोजन ? तकर बाद हम रहलहुँ शिक्षक-संगहि 1961सँ 1996 धरिक अवधिक हमर अजस्र संख्यक छात्र लोकनिक वृहत् शृंखला जे हमरा श्रद्धेय बुझैत रहलाह अछि, से की बुझताह ? एहि दृष्टिएँ नग्न कामकथा लिखनिहारक प्रभाव-परिधि बड़ संकीर्ण छनि । विद्यार्थीकेँ कहबैक अनुशासित रहबाक लेल आ अपने अराजक भऽ जायब... अनुशासनहीन भऽ जायब से सम्भव छैक ? दारू आ मौगीवला कथा लिखब-से अहीँ कहू, लोक की कहत ?'

-राजकमलचौधरीक 'फुलपरासवाली' कथाक प्रसंग अपनेक की प्रतिक्रिया ?'

-'फुलपरासवाली' कथामे की रहैक-से एखन मोन नहि पड़ैत अछि ।'

-अपने सुभाषचन्द्र यादवक लिखल राजकमलचौधरीक मोनोग्राफकेँ रिजेक्ट किएक कऽ देलियैक ?'

-साहित्य अकादेमीमे मोनोग्राफ लिखबाक हेतु एकटा स्पष्ट नियमावली छैक । लेखक लोकनिकेँ सेहो नियमावली पठाओल जाइत छनि । दुःखक विषय रहल जे सुभाषचन्द्रयादव साहित्य आकादेमीक नियमावलीक अनुपालन नहि कयलनि । अनेक स्थलपर एहि नियमावलीक उल्लंघन कयलनि । यैह कारण भेल जे हमरा सुभाषचन्द्रयादवक लिखल राजकमलचौधरीक मोनोग्राफकेँ रिजेक्ट करऽ पड़ल ।'

-सुभाषचन्द्रयादव कोन नियमक उल्लंघन कयलनि ?'

-'रचना'मे सुभाषचन्द्रयादवक लिखल राजकमलचौधरीक मोनग्राफकेँ प्रकाशित कयल गेल । हमरा प्रसन्नता अछि जे रचनामे हमर रिपोर्ट आ सुभाषजीक आरोप-दुनूकेँ छापल गेल रहैक । आब अहीँ कहु जे मोनोग्राफमे ई लिखबाक कोन प्रयोजन छैक जे राजकमलचौधरीकेँ कैकटा मौगीसँ शारीरिक सम्बन्ध रहनि ? ई लिखबाक कोन प्रयोजन छैक जे राजकमलचौधरीकेँ मेलाक संयोजकसँ की त्वञ्चाहञ्च भेलनि ? भ्रामक प्रचार कयल गेल जे हम राजकमलचौधरीक विरोधी छी, राजकमलचौधरीसँ एलर्जी अछि तेँ हम राजकमलपर लिखित मोनोग्राफकेँ रिजेक्ट कयलियैक । अहाँ नोट करू...।'

Scanned by CamScanner

–जी, कहल जाय...।'

–हमरा ककरोसँ कोनो विरोध नहि । हम वस्तुनिष्ठ आधारपर एहि मोनोग्राफक मूल्यांकन कयने रहियैक । आब अहीँ कहू जे मैथिली लेखकक रूपमे राजकमलक मोनोग्राफ तैयार करबाक हेतु सुभाषजीकेँ कहल गेल रहनि । मुदा सम्पूर्ण मोनोग्राफमे राजकमलक मैथिली लेखनक प्रसंग मात्र सात पृष्ठ खर्च कयल गेल रहैक । ई भेलै उचित ? एहि प्रसंग एकटा बात आर अछि ...।'

–से की ?'

–एहि मोनोग्राफक पुनर्मूल्यांकनक भार सुभाषचन्द्रयादवक प्रिय मित्र मोहन भारद्वाजहिकेँ देल गेल रहनि । भारद्वाजजी तथाकथित प्रगतिवादी वामपंथी खेमाक झंडा उठबैत रहलाह अछि । मुदा हुनको कहाँ साहस भेलनि एहि मोनोग्राफक पक्षमे सम्मति पठयबाक !'

एक बाजि कऽ दस मिनट । 17 जून 2009 । बगलमे बियाहक तैयारी । शामियाना-कुर्सी आदिकेँ अन्तिम रूप देल जाइत रहैक ।

हम कहलियनि–आब भोजन कऽ लेल जाय । आराम-विश्राम । तकर बाद फेर देखल जयतैक ...।'

रामदेवबाबूक मोन अवसन्न भऽ गेलनि– भोजन की करब ? भोजन करबामे असौकर्य होइत अछि । मार्च 2008 मे अस्वस्थ भऽ गेल रही । सर्दी-खोँखीक बेमारी । गला बाझि गेल । गलामे छोटछीन गिल्टी । दरभंगामे उपचार चलल । उपचार सन्तोषजनक नहि भेल । पटनामे इलाज चलि रहल अछि । डाक्टर कहलनि–धीरे-धीरे गला खुजि जायत ।.. हमरा माछ आदिपर विशेष मोन कहियो नहि भेल । मधुरक प्रति सेहो आसक्ति नहि रहल । हँ, तखन खटमिट्ठीपर मोन जाइत छल–विशेष प्रिय । मुदा आब की ? सब स्वादहीन । लिक्विड भोजन । प्रातःकाल आडम्बर रहित पूजा करैत छी–कुलदेवताक... अन्य देवी-देवताक जप-ध्यान । ओना लेखन हमर सबसँ पैघ पूजा रहल अछि ।'

रामदेवबाबू आराम-विश्रामक हेतु चल जाइत रहलाह । शंकरजी बैसल रहथि । हमरा पान निघटि गेल रहय । एहन-एहन चर्चामे पान संजीवनी बूटी । कहलियनि–शंकरजी कनेक कालमे अबैत छी ।'

(2)

दुपहरिया । अतिकाल । माथपर नचैत अग्निकण । पैरे आगाँ गुमती दिस बढ़ल जा रहल छी । एक-आध मोटर साइकिल तेजीसँ भागल जाइत । कबिलपुर गाम । 1955मे रामदेवबाबू मैट्रिक पास कयने रहथि । नाट्य मंचनक प्रति अभिरुचि । 1956मे 'आल इण्डिया मैथिली राइटर्स कान्फ्रेस'क अवसरपर सर्वश्रेष्ठ अभिनेताक पुरस्कारसँ विभूषित । 1957-59 धरि अखिल भारतीय साहित्य परिषद, दरभंगाक संयुक्त मंत्री । 1959मे बी.ए. .. मैथिलीमे प्रतिष्ठा (आनर्स) प्रथम वर्गमे प्रथम स्थान । बिहार विश्वविद्यालयसँ स्वर्णपदक प्राप्त । 1959मे प्रथम कृतिक प्रकाशन–'शकुन्तला नाटक : एक अध्ययन' । ओही वर्ष कविवर पं.चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क सुपुत्री योगमायाझाक संग शुभविवाह । 1961मे एम.ए. मैथिली. पटना विश्वविद्यालयसँ–स्वर्णपदक प्राप्त । एस.पी.कॉलेज, दुमकामे मैथिलीक प्राध्यापक रूपमे नियुक्ति । पटना विश्वविद्यालय ओ बिहार विश्वविद्यालय (सी.एम्. कालेज)क मैथिली व्याख्याता पद हेतु बिहार पब्लिक सर्विस कमीशनक अनुशंसा । सी.एम.कॉलेज, दरभंगामे मैथिलीक प्राध्यापक रूपमे योगदान । 1970मे पटना विश्वविद्यालयसँ पी-एच.डी.क डिग्री । हाथमे लिखल रहनि डाक्टर बनबाक योग । बाइलॉजी प्रिय विषय । अमरजीक प्रेरणा आ निर्देशपर मैथिली रखलनि । प्रतिभाशाली छात्र । शिक्षक-मित्र-बन्धु सब स्तब्ध आ आतंकित–ई की कयलनि ? कहाँ डॉक्टर, कहाँ मैथिली । मुदा योग रहनि डाक्टर बनबाक–से साहित्यक डाक्टर बनि गेलाह ।

Scanned by CamScanner

हम गुमती पार कऽ गेल छी । लहेरियासराय टीसनक समीप हनुमानजी मन्दिरक सामने पानक दोकानपर ठाढ़ छी । पान खाइत छी । दू खिल्ली पान मोड़ा लैत छी । अयनामे मुँह देखैत छी आ विदा भऽ जाइत छी ।

मोनमे अनेक प्रश्न चक्कर कटैत रहल । मिथिला मिहिरक धारावाही स्तम्भ-अंगरेजीफूलक चिट्ठी.. बहिनाक विरोग, रामजोड़ी कागतक पाँखिपर-विवाद, आरोप-प्रत्यारोप, शेखरजीक देल प्रमाण पत्र-रामदेवझाक लिखल थिकनि । बीच रौदमे चुपचाप जीन्स पैंट आ कुर्त्ता पहिरने कबिलपुर गाममे हम प्रवेश कऽ जाइत छी । ... रामदेवझा-अग्निस्फुलिंग जकाँ मैथिली जगतमे चमकैत .. मंचपर माइक धयने, क्लासमे कोनो गद्यांशक व्याख्या करैत.. साँझमे गुमती लग तरकारी किनैत... दरभंगा टावरक पुस्तक केन्द्र... मोगलाहाक दयानन्दक पुस्तक केन्द्र... ग्रन्थालयमे बैसल किताबकेँ उनटबैत-साइकिलपर दरभंगा दिस चल जाइत... एक दिन पंचानाथ महादेव मन्दिरक प्रांगणमे भेटलाह... मुनहारि साँझ, वागमतीक तट.. शिवलिंगकेँ भजिअबैत । कहलनि-शैव साहित्यपर काज कऽ रहल छी -से, शिवलिंगक अध्ययन कऽ रहल छी ।' मिथिलाक विभिन्न मन्दिरमे स्थापित शिवलिंग-करुणावतारं... सदावसन्तं-करुणाक अवतार... सदा प्रसन्न ।... शिव हो उतरब पार कओन जिधि... मैथिल जनगणक मन-प्राणमे बसल-चाकर राखू औ ! शैव साहित्य-मैथिली अनुसन्धानकेँ नव क्षितिज प्रदान करैत अनुसन्धानकर्मी रामदेवझा... हम पुन: रामदेवबाबूक छोटछीन वासामे प्रवेश कऽ गेल छी । 'सुमन'जीक भव्यचित्र... विद्यापतिक फोटोकैलेण्डर... गुरुदेव टैगोर-आ सामनेमे कोबरक चित्र... मोन मुग्ध भऽ जाइत अछि । प्रोफेसर साहेबक सुपुत्री कविता कुमारीक रंग-तूलिकाक सृजन !

रामदेवबाबू आ शंकरजी सेहो आबि कऽ बैसि रहैत छथि ।

-अहाँ आबि गेलहुँ ...।'

-जी, बड्ड रौद छैक ...।'

सिलिंग फैन नचैत रहैक ।

रामदेवबाबू कहलनि--असली गर्मीक दुपहरिया ...।'

-जी, चलल जाय फेर साहित्यक महासागरमे ।'

रामदेवबाबू कहलनि-तखन उठाउ लहरि, पुछू प्रश्न ...।'

-जी, 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी', 'बहिनाक विरोग' आ 'रामजोड़ी कागतक पाँखिपर'क प्रसंग सोझ-सोझ शब्दमे विवरण देल जाय ...।'

-अंगरेजीफूलक चिट्ठी मैथिलीमे पहिल बेर पत्रक माध्यमसँ लिखल गेल कथाकृति थिक । एहि तीनू रचनाक मूल लेखक हम छी । एहि प्रसंग हम विस्तृत विवरण अंगरेजीफूलक चिट्ठी (2002)क भूमिकामे प्रस्तुत कयने छी । एहि प्रसंग हम किछु महत्त्वपूर्ण बिन्दुक उल्लेख करऽ चाहब ।'

-जी ...।'

-पटनासँ प्रकाशित मिथिला मिहिरक नीति निर्धारित भेल जे एहिमे विविध कोटिक रोचक रचना-सामग्री देबाक संगहि इहो प्रयत्न कयल जाय जे ई महिला वर्गमे विशेष लोकप्रिय भऽ सकय । शेखरजी ओ हमरा मध्य खूब तर्क-वितर्क एवं विचार-मंथन भेल जे स्त्रीगण समाजसँ फराके एकटा कल्पित स्त्रीक द्वारा लिखित पत्रक नियमित रोचक स्तम्भ चलाओल जाय । असली लेखकक नाम गुमनामे रहय जाहिसँ पाठक वर्गमे विश्वास उत्पन्न होइक जे स्तम्भलेखन कोनो महिले द्वारा होइछ । फेर संशोधन भेल जे एके स्त्रीक द्वारा एक दिसाहे पत्र लिखने एकरसता आबि सकैछ तेँ दुइ गोट स्त्रीगणसँ पारस्परिक पत्राचार कराओल जाय ।'

Scanned by CamScanner

–जी, तकर बाद ?'

–एहि दुनूक नाम की राखल जाय ताहूपर विचार भेल । पत्र–लेखिका दुनू सखी रहत आ सामान्य शिक्षिता रहत । हम शेखरजीकेँ कहलियनि–दुनू सखीक पारस्परिक सम्बोधनमे अंगरंजीफूल केहन लागत ? हुनको ई नाम नीक लगलनि । ई नाम रखबाक पाछाँ एकटा कारण इहो जे गीतकार रवीन्द्रनाथठाकुरक पत्नी प्रेमलता आ हमर पत्नीक बीच अंगरेजीफूल लागल । एहि सम्बोधनक संग दुनू गोटाक बीच पत्राचार चलैत छलनि । संगहि प्रेरित कयलक काजी नजरुल इस्लामक एकटा उपन्यास बांधनहारा जकर समीक्षा पत्रिकामे पढ़ने रही ।'

–जी, तकरा बाद ...?'

तकर बाद निश्चय भेल जे शेखरजी आ हम दुनू गोटे एक–एक गोट सखीक पत्र लिखी । एक सखी पटनामे रहैत अछि जकर पत्र लिखबाक भार शेखरजी लेलनि । दोसर सखी गाममे रहैत अछि, तकर पत्र लिखबाक भार हम लेलहुँ । शेखरजी पहिने गामवाली सखीक पत्र हमरा लिखऽ कहलनि । हम गामक सखीक पत्र लीखि कऽ देलियनि...।'

–एहि पत्रपर शेखरजी की कहलनि ?'

–कहलनि अहाँ मौगिआही बात सब नीक लिखैत छी । हमरा फुरसति नहि... एकर पटनोसँ उत्तर लिखू । हम पटनाक सखीक उत्तर लीखि कऽ देलियनि । पुनः गामक सखीक प्रत्युत्तर सेहो लीखि कऽ देलियनि ।'

–जी, अंगरेजीफूलक चिट्ठी स्तम्भ कहियासँ आरम्भ भेल ?'

–कहैत छी (मोन पाड़ैत) 30 अक्टूबर 1960क विद्यापति विशेषांकसँ अंगरेजी फूलक चिट्ठी आरम्भ भेल ।'

–जी, तकर बाद ...?'

तकर बाद पटनाक सखी दिससँ चारिम पत्र शेखरजीकेँ लिखबाक छलनि परन्तु अगिला उत्तर लिखबासँ शेखरजी एकदम मूड़ी छीपि लेलनि । कहलनि–'हमको बहुत लिखना पड़ता है । आपहि दुनू तरफ का चिट्ठी लिखिए । मौगियाही बात सब नीक लिखते हैं ।... हम अंगरेजीफूलक चिट्ठी स्तम्भ लिखऽ लगलहुँ । एहि स्तम्भक हेतु पैंतालिस गोट चिट्ठी लिखलहुँ जाहिमे एकतालिसे गोट चिट्ठी प्रकाशित भेल । शेष चारि गोट चिट्ठी सम्पादकक फाइलमे बन्द रहि गेलनि । जखन ई कथाकृति क्लाइमेक्स दिस बढ़ि रहल छल कि हठात् एकरा बन्द कऽ देल गेल... ।'

–मुदा शेखरजीक पुत्र आ समय–सालक सम्पादक शरदिन्दुजीक कहब छनि जे 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी'... शेखरजीक लिखल छनि ! एहि प्रसंग अपनेक की कहब अछि ?'

रामदेवबाबूक आकृति बदलि गेलनि । ...दंश...पीड़ा...आक्रोश...अभिरोष...

कातमे गिलास । गिलासमे पानि । पानि पीलनि ।

हम पुनः साकांक्ष होइत पुछलियनि–अंगरेजीफूलक चिट्ठी ... आदि अपनेक लिखल थिक ... तकर की प्रमाण अछि ?'

निमिष मात्रक लेल स्तब्ध रहि गेलाह... गहन चुप्पी...दुख–क्रोध आ उत्तेजना–इमानदार लेखकसँ पूछल जा रहल छैक–की प्रमाण ? लेखकककेँ अपन श्रम–स्वेद–रक्तसँ लिखल रचनाक प्रसंग कहऽ पड़तैक जे ई रचना हमर थिक । देबऽ पड़तैक प्रमाण ... अतत्तः भऽ गेल ! अहाँ कहलहुँ प्रमाण ... दैत छी प्रमाण... लिखितं आगाँ वक्तं की ? शंकरजी लाउ शेखरजीक हाथक लिखल ...।'

प्रश्न सूनि कऽ शंकरजी सेहो बेचैन जकाँ बैसल छलाह–तेजीसँ भीतर गेलाह आ एकटा कागत टेबुलपर राखि

Scanned by CamScanner

देलनि ।... कागत सुधांशुशेखरचौधरीक लेटरपैड रहनि । बामाकात ऊपरमे लिखल-'श्री सुधांशु शेखर चौधरी ... बोल्ड अक्षरमे । तकर नीचाँमे लिखल ... सम्पादक, मिथिलामिहिर । दहिना कात लिखल रहैक-मजहरुलहक पथ, पटना-9 । तिथि अंकित रहैक-30/07/1963 ।

हम गम्भीरताक संग लेटरपैडपर लिखल टेस्टीमोनियलकेँ दू खेप पढ़ि गेलहुँ । टेस्टीमोनियलक दोसर पारामे लिखल रहैक-''मिथिलामिहिरक तँ ओ लेखक रहबे कयलाह अछि विशेषतया हुनक लिखल मिथिलामिहिरक स्थायी स्तम्भ 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' 'बहिनाक विरोग' ओ 'रामजोड़ी कागतक पाँखिपर' आदि समाजमे विशेष आदर पौलकनि अछि ।'' अन्तमे हस्ताक्षर रहनि-सुधांशु 'शेखर' चौधरी, तिथि अंकित रहैक 30/07/63.. प्रतीक चिन्ह दूटा बुनका चमकैत ! पंखा बन्द भऽ गेल रहैक । हमर कुर्त्ता पसेनासँ भीजि गेल रहय । अतिकाल । दुर्वह लू- लपट । बाहरमे जेना अग्निवर्षा होइत ..।

हमर हाथसँ टेस्टीमोनियल लैत रामदेवबाबू कहलनि-''हमरा जीवनमे बड़ संघर्ष करऽ पड़ल । एक-एक ईंचक लेल संघर्ष । पैतृक सम्पत्ति फरीक लोकनि दाबि लेने रहथि । पिता रुग्ण-हुनकासँ विशेष अर्थोपार्जन सम्भ्व नहि । हमर मोन अहुरिया काटऽ लागल । परिवारक नाह कोना पार लागत । आठम वर्गमे पढ़ैत रही । छमाही परीक्षा खतम भऽ गेल रहय । आर्थिक अभाव-चिन्ता... परीक्षामे बढ़िया नम्बर आयल रहय । मुदा मोन बेचैन । 1949क जून-जुलाइ । मोनेमे भेल जे तेहन किछु काज करी जे अपनेसँ किछु आर्थिक उपार्जन भऽ सकय । हम घर छोड़ि देलियै । बौआइत रहलियै । मास छबेक.. तकर बाद घर आपस आयल रही ।..अहाँ पुछलहुँ प्रमाण..हमर लिखल थिक तकर प्रमाण.. अंगरेजीफूलक चिट्ठी..तहिया हम एम.ए. फाइनलमे पढ़ैत रही– पटनामे.. पहिने कञ्चनभवन आ तकरा बाद भिखनापहाड़ीक मंडल लाउज.. बगलमे यात्रीजीक वासा.. । दिन-राति अध्ययन । परीक्षाक फार्म..मेसक खर्चा.. शेखरजीक नौकरी जाय लागल रहनि । कतेक हवा-बसात.. सबटा प्रकरण अंगरेजीफूलक चिट्ठीक भूमिकामे हम प्रस्तुत कयने छी !'

हम प्रसंग बदलि देबऽ चाहैत छी-अपने तीर्थयात्रा कयने छी ?'

-कुशेश्वर.. आ कपिलेश्वर.. चमथाघाट विद्यापतिनगरक पैरे-पैरे यात्रा कयने छी-मातामही-मैञाक संग । ओना रामेश्वरम्.. जगन्नाथपुरी.. वैद्यनाथधाम आदि कतोक तीर्थक धूलि माथमे लगौने छी-ओना घरे-आङनकेँ तीर्थ बुझैत रहलहुँ ।'

आ शैशवेसँ मैथिली लेखन, मंचन, सम्पादन आ आन्दोलन आदिसँ जुड़ल डा. रामदवेझाकेँ 1991मे साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गेलनि ।.. 'पसिझैत पाथर' (नाट्य संकलन) पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार । संकल्पलोक लहेरियासरायसँ 1989मे पसिझैत पाथरक प्रकाशन भेल रहैक ।.. 1994मे साहित्य अकादेमीक अनुवाद पुरस्कार प्राप्त भेलनि-उर्दूक 'एक चादर मैली सी'क मैथिली अनुवाद 'सगाइ' पर । 1998सँ 2002 धरि साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीक जेनरल काउन्सिलक सदस्य आ संयोजक, मैथिली परामर्शदातृ मंडलक रूपमे कार्यरत रहलाह ।

-पसिझैत पाथर की थिक ?'

-पसिझैत पाथर थिक नाटक ओ एकांकीक संकलन । हमरा नाटक, अभिनय, मंचकला आदिसँ अभिरुचि रहल अछि । नवका मिथिला मिहिरक पहिले अंकमे हमर 'पिपासा' एकांकी प्रकाशित भेल छल-से, एकटा स्थापित युवा लेखकक कृतिक रूपमे । पसिझैत पाथरमे ऐतिहासिक, मिथकीय आ समकालीन विषय-वस्तुपर आधारित एकांकी सभक संकलन कयल गेल अछि । एहिमे हम अनेक ज्वलन्त सवालकेँ ठाढ़ कयने छी । राष्ट्रिय अस्मिता आ चेतनासँ जुड़ल अनेक मुद्दाकेँ रूपायित कयल गेल अछि । संगहि सामाजिक समस्यासँ सम्बन्धित अनेक बिन्दु आ अनेक प्रश्नकेँ मुखरित कयल गेल अछि । सामाजिक यथार्थ आ व्यवस्था-परिवर्त्तनसँ जुड़ल अनेक एकांकीक सफल मंचन होइत रहल अछि ।'

Scanned by CamScanner

–साहित्य अकादेमी पुरस्कारक सूचना कोना प्राप्त भेल ?'

–जाड़क समय रहैक । हम शैलेन्द्रमोहनबाबूक ओतऽ बैसल रही । टी.बी.न्यूज । हिन्दीमे समाचार । साहित्य अकादेमी पुरस्कारक घोषणा, मुदा हिन्दी न्यूजमे मात्र अंगरेजी, हिन्दी आ बंगलामे पुरस्कारक समाचार कहलकै । मैथिलीक प्रसंग कोनो समाचार नहि । हम .. घर दिस विदा भऽ गेलहुँ । अन्हरिया राति रहैक । घर पहुँचलहुँ तँ दरबज्जा खोलैत हमर बेटी कविता मुस्कियाइत पुछलक–पता अछि, साहित्य अकादेमी पुरस्कार ककरा भेटलैक ? हम कहलियैक –कहाँ कोनो समाचार देलकै मैथिलीक प्रसंग । कविता कहलक–देलकै की ! अंगरेजीक समाचारमे । अहींकेँ भेटल । पसिझैत पाथर पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार ।'

–पुरस्कार पर अपनेक केहन प्रतिक्रिया भेल ?'

–खुसी भेल । आश्चर्य सेहो भेल–कोना भेटल ! सन्तोष भेल ।'

–लोकक केहन प्रतिक्रिया ?'

–सब केओ बधाइ देलनि । स्नेह देलनि । सभक प्रतिक्रिया उत्साहवर्द्धक । (मुस्कियाइत) पटनासँ एकटा पत्रिका निकलल रहैक–भाखा । ओ व्यंग्य कयलक–'सुमन'जीक संग रहि कऽ रामदेवझा रोहु माछक मूड़ा उड़ा लेलनि !'

–कतेक पुरस्कार भेटल ?'

–पचीस हजार... 'फिक्स' कऽ देलियैक ।'

शंकरजी हस्तक्षेप करैत बजलाह–नहि–नहि दस हजार मकानक मरम्मतिमे खर्च भेल रहैक । पन्द्रह हजार फिक्स भेल रहैक ।'

गप्पक क्रम बदलि गेलैक । तखन कविता, समालोचना आदिपर गप्प चलऽ लागल ।

–अपनेक कविता संग्रह ?'

–नहि, कविता संग्रह कहाँ छपि सकल । कवितामे हमर आत्मा बसैत अछि– सब तरहक कविता । नव कवितामे अनेक प्रयोग । मुदा कविता संग्रह नहि अछि ।'

–मैथिलीमे नव कविताक भविष्य ?'

–नव कवि लोकनिक भविष्य उज्ज्वल । दू चारि पाँति लीखि लेलहुँ आ मंचपर ठाढ़, छन्दक ज्ञान नहि, कवितामे कोनो अर्थ नहि, गति–यति–लय नहि, चिन्तन नहि ! तारतम्य नहि–आ भऽ गेलहुँ कवि ! एहन कवि केओ भऽ सकैत अछि–केओ कविता लीखि सकैत अछि । एहन कतहु कविता भेलैए । तेँ कहलहुँ कविक भविष्य उज्ज्वल । मुदा मैथिली कविताक स्थिति चिन्तनीय ।'

–आ समालोचनाक स्थिति ?'

–देखू.. मैथिली समालोचना, अनुसन्धान, इतिहास लेखन क्षेत्रमे डा. जयकान्तमिश्रक योगदान अविस्मरणीय । तहिना आचार्य रमानाथझाक योगदान । एहि क्षेत्रमे हमरहु बहुत काज कयल अछि । मुदा सत्य पूछी तँ हम मैथिलीमे समालोचनाक स्थितिसँ चिन्तित छी । तथाकथित समालोचक लोकनिमे साधनाक अभाव, निष्ठाक अभाव ! साहित्यक विभिन्न धाराक परिज्ञान नहि, तखन जेहन आलोचना होयबाक चाही तेहन भऽ रहल अछि ।'

–'से की ?'

Scanned by CamScanner

–मैथिलीमे समालोचना आ संचिका लेखन बराबर भऽ गेल अछि । संचिकापर जेना टिप्पणी लिखल जाइत अछि.. तहिना समालोचक लोकनि टिप्पणी लिखैत छथि । समालोचककेँ वस्तुनिष्ठ लेखन करऽ पड़ैत छैक । ... पक्षपात रहित । मुदा मैथिलीमे उनटे हाल भऽ रहल छैक ?'

–से की ?'

–गोल-गोलैसी । गुटबाजी । विशेष रूपसँ प्रतिभाशाली लोकक मनोबल तोड़ल जाइत छैक । अहोरूपं महोध्वनि: । हम, हमरेटा, हमरे गोलक लोकटा । हमहीं सब– आन के ?...

हम सुनरी आ पिया सुनरा
आ गामक लोक वनरी-वनरा'

–प्रबोध साहित्य सम्मानक प्रसंग अपनेक प्रतिक्रिया ?'

–व्यक्तिगत मामिला । अपन इच्छा छनि-जकरा देल जाय, नहि देल जाय ! लाइफटाइम-बात तँ बड़का-बड़का कयल गेल छैक । चिन्तनीय प्रश्न अछि जे जयकान्तबाबूकेँ किएक नहि देल गेलनि !'

–मैथिली लोकसाहित्यक प्रसंग अपनेक मन्तव्य ?'

–मैथिली लोकसाहित्यक गहन एवं गम्भीर अध्ययन-अनुशीलनक अपेक्षा अछि । विभिन्न क्षेत्रक अनुसन्धानकर्मीक सहयोगसँ मैथिलीक लोकगाथा, लोकगीत आदिक संकलन-सम्पादन अपेक्षित अछि ।'

शंकरजी तीन गिलास चाह रखलनि ।

हम चाह पिबैत पुछलियनि-साहित्य अकादेमीक प्रतिनिधिक रूपमे अपनेक की उपलब्धि ?'

–सबसँ पैघ उपलब्धि जे साहित्य अकादेमीक क्रियाकलापकेँ सामान्य जनताक बीच लऽ गेलहुँ । हमरासँ पूर्वक प्रतिनिधि एहि दिशामे थोड़-बहुत प्रयास कयने रहथि । मुदा हमर कार्यकालमे एहि प्रयासकेँ नव ऊर्जा आ गतिशीलता प्राप्त भेलैक ।'

–जेना..?'

–हमरा कार्यकालमे चारि गोट संगोष्ठीक आयोजन कयल गेल । एकटा अनुवाद कार्यशालाक आयोजन.. कविगोष्ठीक आयोजन ।... गौरव-ग्रन्थ प्रकाशन योजनाक अन्तर्गत मैथिलीक अनेक दुर्लभ आ महत्त्वपूर्ण पुस्तकक प्रकाशन-सुसम्पादित रूपमे । वर्णरत्नाकर, चन्दाझाक रामायण, लालदासक रामायण, विद्यापतिगीत संचय आ कीर्त्तिपताकाक प्रकाशन भेल । मैथिलीमे साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित पुस्तकक सूची हम विवरणक संग तैयार कयलहुँ ..आ से प्रकाशित भेल । 'मीट द ऑथर'क आयोजन कयलहुँ-'अमर'जी, गोविन्दझा आ जयकान्तमिश्रक मीट द ऑथरक कार्यक्रम सफल रहलनि । सहयोगक अभावक कारणे मायानन्दमिश्रक 'मीट द ऑथर' स्थगित रहलनि । सबसँ पैघ उपलब्धि रहल जे अकादेमीक भाषा सम्मान प्रथम बेर मैथिलीकेँ प्राप्त भेलैक-जयकान्तबाबूकेँ देल गेलनि । देवकान्तझाक लिखल अंगरेजीमे मैथिली साहित्यक इतिहास छपल..।'

साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक प्रतिनिधिक रूपमे मायानन्दमिश्रक नामपर अपने तीव्र विरोध कयने रहियनि । से किएक ?'

प्रश्न सूनि कऽ रामदेवबाबू पल एक स्तब्ध रहि गेलाह । उग्र होइत कहलनि-हम तँ कहब जे भीमनाथझा 'अमर' जीक नामक विरोध कयने रहथिन ! कहाँ अमरजी कहाँ मायानन्दमिश्र ! अमरजीक शिष्य मायानन्द । लॉबी कयने रहथि । नामवरसिंह अनधिकार हस्तक्षेप कयने रहथि । हम मुँहतोड़ जबाब देलियनि-मैथिलीक क्षेत्रमे अहाँकेँ की परिज्ञान

Scanned by CamScanner

अछि ? मायानन्दकेँ मैथिलीक प्रति निष्ठा नहि छनि । साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत मायानन्दक मन्त्रपुत्र जखन हिन्दीमे प्रकाशित भेलैक तँ ओहिमे कतहु उल्लेख नहि रहैक जे ई मैथिलीसँ अनूदित अछि ।'

–आत्मकथा लेखनक प्रति अपनेकेँ अभिरुचि अछि ?'

–आत्मकथा-कतेकसँ झगड़ा भऽ जायत ! लिखब तँ सत्य ! नहि लिखब । सत्य कटु होइत छैक । सत्य वेधक होइत छैक-तेँ आत्मकथा कोना लिखू ?'

भलो ने बाजी मोनो ने बाजी जेठ जनक भगवा उघार सेहो ने बाजी ।'

–जीवनमे अपनेक गलती ?'

–गलती तँ जीवनमे बहुत भेल अछि । गल्तीये गलती । हमरा लोककेँ चिन्हऽ नहि अबैत अछि । छल-छद्म नहि अछि । दाँव-पेंच नहि अछि । गोल-गोलैसी नहि अछि । अधिक भस्मासुरे बहरयलाह । जाहि पातपर खयलनि ताहीमे छेद कयलनि । चोर चिन्हऽ लागी तँ भरि गाम देखार भऽ जाय ।'

–देशक भविष्य ?'

–देशमे 'इण्डिया' फराकसँ बनि रहल छैक, भारत फराक भऽ रहल छैक । अमीरी-गरीबीक अन्तर बढ़ल जा रहल छैक । हमर मिडिल स्कूलक एक जन शिक्षक रहथि-सत्यनारायणझा-मझौलियाक । इतिहास पढ़बैत छलाह । हुनक अध्यापन शैली आकर्षित करय । ओ कहल करथि- एक-एक दाना, आठ-आठ आना ! से आब चरितार्थ भऽ रहल अछि । संविधानक आरम्भेमे गल्ती भऽ गेलैक-कहल गेलैक 'इण्डिया दैट इज भारत'-कहल जयबाक चाहैत छलैक-भारत दैट इज इण्डिया !'

–अपनेपर आरोप अछि जे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघक लाइनपर रचना करैत छी !'

–ई सब आरोप मनगढ़न्त अछि । हम कोनो पार्टीलाइनपर लेखन नहि करैत छी । विशुद्ध लेखन करैत छी । हँ, तखन हम आस्थावादी परिवारसँ जुड़ल छी । राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघक बाल्यकालेसँ स्वयंसेवक रहलहुँ-मातृभूमि सदावत्सले ! सहोड़ामे संघक शाखा लगैत छलैक । जँ कोनो स्वयंसेवक दू चारि दिन शाखापर नहि आबथि तँ घर जा कऽ खोज-पुछारी कयल जाइक-दु:खित तँ नहि भऽ गेल छथि । विपत्ति अथवा कोनो संकटमे तँ नहि पड़ल छथि। महात्मागान्धी अस्पृश्यता आन्दोलनमे सफल नहि भऽ सकलाह । मुदा आर.एस.एस.मे कतहु छूआछूत नहि । सब समान । सब एक पाँतिमे बैसल । सब एक संग भोजन करैत । जँ पूर्ववत संघ काज करैत रहल तँ देशमे एहि संगठनक जोड़ा नहि ।'

–अपने गुरुदक्षिणा दैत छियैक ?'

–प्रति वर्ष । निश्चित रूपसँ । आर.एस.एस.क प्रति हमरा अनन्य निष्ठा अछि ।'

रामदेवबाबू स्थिर चित्त होइत कहलनि-हमर जीवनमे एकटा रहस्य अछि, से कही अथवा नहि कही !'

हम व्यग्र होइत बजलहुँ-अवस्स ! अवस्से कहल जाय !'

रामदेवबाबूक आकृतिपर आध्यात्मिक ऊर्जा ज्वलित भऽ उठलनि, बजलाह-हमरा लग एकटा अति प्राचीन बाँसुरी अछि । पित्तरिक बाँसुरी । मुदा हम सब ओहि बाँसुरीकेँ बजबैत नहि छी । पित्तरिक बाँसुरी-स्वर्णाभा । पूजाक पीढ़ीपर राखल रहैत अछि । नित्यप्रति गंगाजलसँ बाँसुरीकेँ स्पर्श करैत छी । आध्यात्मिक प्रतीकक रूपमे बाँसुरीक अभ्यर्थना करैत छी । सब संकट, सब दुख-दर्द बिसरि जाइत छी । बाँसुरीसँ नव ऊर्जा भेटैत अछि ।'

हमर मोन बाँसुरीक चर्चा सुनि कऽ गुलाबी भऽ गेल । आकुल राधा । कदमक गाछ तऽर नन्दक नन्दन बाँसुरी

Scanned by CamScanner

बजा रहल छथि । .. बाँसुरी बाजल नहि कि राधा अनुरागसँ उच्छ्वसित भऽ उठलीह । बाँसुरीक मधुर कम्पन । .. सारेगमपधनिसा... राधा अपन अस्तित्वकेँ बिसरि गेलीह । पीत वस्त्र । श्याम वर्ण । सम्मोहक छवि । अधरपर बाँसुरी-सुनु-सुनु रसिया आब ने बजाउ विपिन वसिया ।..'

हमर तन्द्रा जेना टूटल-जी बाँसुरी..

-हम आस्थावादी परिवारसँ अबैत छी । दुद्धा वैष्णव-हमर मातामह भ्राता रहथि-महा बालब्रह्मचारी-नागा । जाहि दिन गान्धीजीक हत्या भेलनि ओही दिन 87-88 वर्षक अवस्थामे हुनक महाप्रयाण भेलनि-30जनवरी 1948 । हुनक सेवा करबाक हमरा अवसर भेटल अछि ।... सान्निध्य आ आशीर्वाद प्राप्त करबाक अवसर भेटल अछि । ओ चालीस वर्ष धरि दूध आ पानि पीबि कऽ रहलाह । धुनी मिझाइत नहि छलनि । दू बजे रातियेसँ रामायणक पाठ करैत छलाह । पाँच हाथक जवान । स्वर्ण-दीप्त आभा ! ओ नित्य नियमित बाँसुरी बजबैत छलाह-पित्तरिक बाँसुरी ! दूध लेल जाइत छलैक । आधा दूध धुनीमे ढारि देल जाइत छलैक । शेष आधा दूधमे आधा जल ढारि दैत छलथिन । आधा चरणामृतमे बाँटि देल जाइत छलैक । शेष आधा जल फेँटल दूध पिबैत छलाह-दू-तीन बजे दिनमे.. मात्र एक खेप ! महान् साधक छलाह । महाप्रयाणसँ पूर्व आशीर्वादक रूपमे बाँसुरी हमर हाथमे थमा गेलाह । पहिने किछु दिन हम बाँसुरी बजबैत रहलहुँ । बादमे हमरा अन्तश्चेतना जागल-ई तँ आध्यात्मिक बाँसुरी थिक । साधनाक प्रतीक । बाँसुरीक अभ्यर्थना कयल जयबाक चाही-आब गंगाजलसँ स्पर्श करैत छी । पूजाक पीढ़ीपर राखल रहैत अछि-पूजा करैत छी ।'

हमर मोन आकुल भऽ उठल । बाँसुरीकेँ देखबाक मोन भेल । बाँसुरीकेँ छूबाक मोन भेल । आकुल राधा... बाँसुरीक मृदुल कम्पन.. बाँसुरी । मुदा से बाजल नहि भेल । कहल नहि भेल.. रामदेवबाबूकेँ मुदा प्रतिभास भऽ गेलनि जे हम बाँसुरी देखऽ चाहैत छी !

शंकरजी दिस तकैत बजलाह-हिनका देखा दिऔन..बाँसुरी ।'

पल दुइ एकमे शंकरजी बाँसुरी लऽ कऽ हमरा समक्ष ठाढ़ रहथि ।... बाँसुरी.. नागाबाबा.. नाम रहनि बिहारीमिश्र । महाबालब्रह्मचारी नागाबाबाक बाँसुरी-पित्तरिक बाँसुरी-स्वर्णकान्ति । सोना जकाँ चमकैत-हम जलपात्रमे राखल जलसँ हाथ धोइत बजलहुँ- हम बाँसुरीकेँ छूअऽ चाहैत छी ।'

आब हमर हाथमे अछि बाँसुरी-पुरान.. आध्यात्मिक प्रतीक-धीरे समीरे यमुना तीरे वसति वने वनमाली । बाँसुरी-अनादि कालसँ चल अबैत वाद्ययन्त्र ! मोनक उर्वशी जागऽ लागल-आकुल राधा । कृष्णक अधरपर बाँसुरी-कृष्णात परम तत्त्वमहं न जानामि ।

शंकरदेव हमर हाथसँ बाँसुरी लऽ कऽ राखिं अबैत छथि । नाटकक पर्दा खसैत अछि । हम विदा होइत छी ।

रिक्सापर घरमुँहा जा रहल छी । हमरा किछु नहि देखाय पड़ैत अछि । वाह्य चेतनाक लोप भेल जा रहल अछि । लगैत अछि हाथमे बाँसुरी अछि-बाँसुरीमे कम्पन भऽ रहल छैक । हम भीड़ भरल रस्तामे गाबऽ चाहैत छी -सुनु-सुनु रसिया.. मुदा हम चाहैत छी बाँसुरी बजैत रहय-मैथिली जगतमे बाँसुरी-सुर-ताल आ लयमे-सारेगमपधनिसा !

●

Scanned by CamScanner

Lyric in Prose :

Aspects of Ramdeo Jha's short stories

Dr. Shree Arun Kumar Jha

I

Dr. Ramdeo Jha is almost a complete man of letters. With the lone exception of the novel, he has tried his hands on all the major genres of literature— poetry, drama, short story, criticism- and hopefully he is still active enough to sum up his literary career with an autobiography. To me his forte is his research-oriented critical work, but he seems to contradict the general notion that it is generally a failed creative artist who makes a critic. In him creative and critical activites go hand in hand, and stand in perfect unison. In the preface to Dr. Jha's third volume of short stories **Dharti Mata** (Mother Earth), Pt. Surendra Jha 'Suman' expressed his apprehension that the dominant critic in Dr. Jha might suppress his creative talent. Dr. Jha, however, does not allow his critical acumen to plug his creative fountain-head. Incidentally, it was his creative work, a drama, that won him the coveted Sahitya Akademi award.

Dr. Jha's short stories collected in four volumes, namely, **EK Khira: Teen Phank** (A cucumber sliced thrice), **Manuk Santan** (The Progeny of Manu), **Dharti Mata** (Mother Earth) and Aaji Ma (The Matriarch) represent the most exquisite blossom of his creative art. But before we take up his stories for an in-depth study, it would be worthwhile to discuss, in brief, the elements that constitute a modern short story and make it great. The short story is the fruit of a single moment of time, a single incident and a single perception. The success of a short story depends on how and to what extent it deals with and dramatizes a single incident and in doing so utterly transforms it. A successful story is "a glimpse through" a moment that unfolds before us a history of The miliennium, an individual who gives us a feel of the entire humankind, an incident that makes us aware of the vastness of life itself. It is the accomplishment in words of a single emotional or dramatic effect which leaves us with the feeling of having participated in the life and movement of the world.

In a great short story we experience what James Jaycacalls "moments of epiphany", a sudden, evanescent spiritual manifestation of life's truth. These moments of epiphany are akin to Ezra pound's notion of the image or the moments of insight in the best of wordsworth's poetry. These qualities bring the modern short story very close to lyric poetry. Just as some of the best Romantic lyrics can be construed as short stories in verse, some of the best specimens of modern short story assume the essential characteristics of lyric poetry. A great story becomes an image of a particular emotion, and every word of it, everything that is not overtly stated but suggestively implied, contributes to its effect. It stands before us as a harmonious whole, a "well-wroughturn", and to retell it is to mangle it, to destroy its essential beauty. A good short story, like a good poem,

Scanned by CamScanner

is scarcely capable of paraphrase. To a modern short story writer any significant fragment of life provides sufficient material to work upon. He observes it minutely, describes it simply and objectively, and at the end the point is made without apparent effort, leaving the reader thrilled, emotionally disturbed or spiritually enlightened. The success of a story can be determined in terms of how efficiently it conveys the truth of life through symbols or archetypes.

Besides this creative vision which helps a short story writer flash the truth of life, another important thing required of him is a total elimination of the personal element. The epiphany or flash or vision of an image, whatever we call it, must stand in itself, in complete objectivity, like painting, sculpture or music, without any attempt at interpretation. An artist is just a medium through which the white, celestial light passes,and in its passage from the divine to the human it must not be corrupted by any personal hue. A great artist is required to have " an almost christ-like quality of self-abnegation" or Shakespeare's "negative capability" to enter truly into the joys and sorrows of other people. A great story is an objective and honest representation of the verisimilitude of life. As has been so beautifully said, one can lie in love and politics, one can deceive his bretheren, even God, but deception in art is something unpardonable, inexcusable and intolerable.

II

The short stories of Dr. Ramdeo Jha share most of the characteristics enumerated above. Unlike the humorous stories of Prof. Harimohan Jha who was the first Maithili writer to popularise this form,his stories are not the literary narrated type to be shared by people gathered by a village fireside or at the dinner table of the elite. His stories are closer to those of Prof. Umanath Jha, meant to be read and enjoyed in privacy. The similarity can be further stretched to thinness or sometimes a total absence of plot and psychological penetration into the inner recesses of the character's mind. Instead of 'dramatizing' life, they 'transcribe' it.They evoke a mood, create an atmosphere or record a passing thought, and in doing so take recourse to such poetic devices as imagery and symbolism, interior monologue, suggestions and atmospheric effects. These qualities bring Dr. Jha's stories very close to lyric poetry. They are a record of the fleeting moments of life. Without any attempt at chronological sequence of events, they present life as a haphazard, disorganized bundle of experiences. There is no solid outline of narrative, and the drama is enacted mostly in the subconscious mind. Everything lies in the fluid state of the protagonist's mind, and hence it eludes our grasp. When we try to narrate. Dr.Jha's stories are like a waft of vernal breeze, flow of the river, ebb and tide of the seas. He is essentially a poet at heart who feels in terms of similes and metaphors, and expresses his feelings in the cascading flow of rhythmical prose.

In most of Dr. Jha's stories the theme is symbolized in the title itself. His usual method is to begin with an idea, find a corresponding image for it, and then work it up with appropriate characters and incidents. Ideas provide him the skeleton which he covers with what Khushwant singh calls 'flesh', 'blood' and 'seminal fluid'. 'Flesh' is the outer covering of plot which is very thin in Dr. Jha's case, and 'blood' and 'seminal fluid' are the various artistic devices-imagery, symbolism, diction, rhythm etc.- which knit the parts together to give us a well- organized story. Dr. Jha weaves a moving human drama round an idea and presents it under an imaginative colouring. His much

Scanned by CamScanner

acclaimed titte story of his first collection **EK Khira : Teen Phank** (A cucumber sliced Thrice) beautifully dramatizes a woman's compulsions of simultaneously living three divided lives. Woven with the thread of love and hatred it is a story about how hoplessness often forces one to compromise with life and live in fragments. The cucumber stands as an apt image of life that wears the facade of wholeness but is broken from within. Dr. Jha does not pose to be an emancipator of woman as Raj Kamal choudhary does in many of his stories. Nor does he stand as a champion of the 'new woman' urging her to rebel against the society and find her way out. He simply presents, in total objectivity, the picture of suffering womanhood, and lets it stand and speak for itself.

In Bhasiait Deeyari (The Eroding Landmass), silent conjugal bliss, crossed occasionally by little tiffs, has been presented in terms of the smooth sailing of a boat steering clear of the landmasses that threaten to obstruct it midstream. The story ends with an assertions of love getting even deeper with the couple's resolve to take infinite dips in the Ganges to enjoy eternal companionship. The story expresses itself through the imagery of stream, boat and land-mass, and the rhythmical prose dramatizes the very ebb and flow of human relationship. The basic idea in **Vat Gaachak chhahri** (Shade of a Banyan Tree) is allruism which finds an adequate symbol in a shady banyan tree bearing the scorch of the sun and yet providing respite to weary travellers. Round this basic idea is woven the story of a benevolent midwife who sacrifices her familial obligations at the altar of larger humanity. **Dohri Deep** (Dual Lamp) is an experimental story in which an Amla tree, which has been witness to the various phases of her life, narrates the tragic saga of a girl who is forced to end her life in terror of the dowry-devil. So much different from the numerous stories on the theme of this social curse, and closely resembling wordsworth's **Three Years She Grew** in style and sentiment, if reads like a poem. **Piyasal Thod** (Thirsty Lips) dramatizes the compulsions of a patient of consumption who is deprived of the intimacy of his dear ones in a highly suggestive language. The next story **Dutia Chan : Tulsidal** also works up through suggestion rather than statement, and presents the author as an adept in revealing the feminine heart. **Sheetal Bati** (cold Pack) glorifies, in the language of poetry, a child-widow alleged to be an evil spirit. **Nariker** (coconut) centres on the tenderness of mother's heart and finds an apt symbol in a coconut with a hard, rough exterior and a soft kernel inside soaked in the milk of filial affection.

III

The title story of the second collection **Manuk Santan** (The progeny of Manu) which comprises seven stories, is a glorious reminder of the organic community of old Mithila which believed in shared life, mutual trust and cooperation, brotherhood and cultural ties. This organic community is fast disintegrating under the spread of mass civilization leaving man isolated, and engendering jealousy, cunning, selfishness and intolerance in our society. It is sad to note how the term 'communal' has acquired a sinister, disruptive connotation in modern times. The next story, **Parti** (Arid Land), is not only a sad reminder of the glory and magnificence of a decadent aristocracy. It is also about Radha Mohan's conjugal disharmony which has turned his life into a veritable wasteland never visited by the spring symbolized by Rosie and Rajdulari. In its movement from reality to dream in search of the ideal, and a disillusioned return with greater wisdom and tirmer acceptance of life, it reads very much like an English romantic poem. **Nakli Aadmi** (A Fake

Scanned by CamScanner

Person) is a subtle depiction of how adversity can push one down to the subhuman level to be accepted or discarded according to the convenience of the affluent. **Parmilia,** on the other hand, is a beautiful study in the workings of a feminine heart, the hopes and aspirations of a marriagable girl whose lack of physical charm is more than compensated by her deftness in household chores. The portrayal would have been more objective but for the presence of the author in the personal comments he makes towards the end of the story. The authorial reflection at the end of **Ekta Rahai Uttami** is also unwanted and it does not enhance the appeal of the story in any way. Is it not like destroying the beauty of a rainbow by scientifically explaining it in terms of raindrops and sunlight ? Yet the story is a beautiful glorification of a self- respecting, woman. It successfully dramatizes the inner conflict of the protagonist at war with herself, and also offers a dispassionate picture of modern-day elections. **Bhitaria Dhadhara** (The Inner Flame) is more about the inner flame of a burning heart than about fireworks illuminating the skyline on a Diwali night. A minute study in child psychology, the story depicts how want compounded by social disparity lets the seeds of revolution take firm roots. The last story in the collection, **Pahuna** (The Guest), is a touching fale of a forsaken wife who is too full of forgiveness to nourish any grievance against her husband. She takes pride in being his lawfully wedded wife and resolves to spend the rest of life with the token of love given to her as a daughter.

IV

The third collection, **Dharti Mata** (Mother Earth), marks a definite falling off from the heights attained in some of the best stories of the earlier two volumes. A period of about two decades intervenes the publication of second and third volumes. In the mean while Mithila was visited by drastic socio-economic changes, the organic community of old Mithila was crumbling, the process of urbanisation was on, English education was making headway to far-off villages. It is the picture of this changed scenario that we get in the new collection. The change is also visible in the inclusion of realistic, down-to-earth themes and the matter-of- factness of style. Poetical titles make room for plain, prosaic ones such as **Manukhha, Hatthajori, Basaatak Daam, Udghatan, Chor, Bottle** etc. In the earlier collections one would invariably come across descriptive passages, but far from being just decorative pieces that generally hinder the flow of the narrative, they helped in creating an appropriate mood or atmosphere or reflected a character. In the new collection such descriptive passages are few and far between. The earlier collections abound in similes and metaphors. A few randomly chosen examples will suffice to make the point—

(i) हुनका दुनू बेकतीक आँखि एकदम सादा कागत सन छलनि, हरियर-कचोर पानि सन छलनि, शरद्क निर्मल-नील आकाश सन छलनि ।

(ii) कोमल-कोमल हाथक पिउर सन-सन आङुर तूरक फाहा सन गाल ।

(iii) सोमा ओकरा हृदयमे गड़ि गेलैक, जेना भरल छाँछ दहीमे ऊपरसँ मिसरीक ढेप खसि पड़ल होइक ।

(iv) गहूमक पाकल सीस सन सोनहुल केश आ उजरी खिज्जा खीरा सन मुँह ।

(v) दीपक धारी लगैत छल जेना कारी पाथरक पहाड़मे अजस्र रत्न.........घिरनी जकाँ नचैत आगिक गोला सभ बूझि पड़ैत छलैक जेना शून्यमे अनेको नक्षत्र अदृश्य सूर्यक चारू कात घूमि रहल हो ।

Scanned by CamScanner

(vi) दाँत बूझि पड़ैत छलैक जेना बिहाड़िसँ फूटल आमक फाटसँ झलकैत गुद्दा ओ कोइली होइक ने तँ सद्यः कनेक चनकल बाङक ढेढ़ी होइक ।

In the later stories Dr. Jha shuns rhetoric and makes his expressions more functional. Words are simple, bare and naked, and are chosen more for their aptness than appeal, more for their meaning than melody. He appears to have learnt from experience that "there is more enterprise in walking naked".

In the title story **Dharti Mata** a taxtile mill worker comes home to see his ailing mother and is so shocked to see the crumbling house and ruined fields and orchards that he makes an instant decision. He would resign from service and settle in his native village to serve mother earth. The sentiments are doubtless noble but as the story stands, it is a depiction of the ideal rather than the real. **Jalak Tal Par Likhal Naam** (Name written on the Surface of water), self-admittedly the first ever and perhaps the only love-story attempted by the author, is about mute, silent love that finds no consummation. It fails to take any definite shape and vanishes like a name written on water. The story takes up, in course of the narrative, some burning social issues like gender discrimination, female education and dowry system, but they have been artistically embedded in the plot. The spread of English education in remote rural areas is well-marked when the hero congratulates his friend in English. But he exposes his weak grammar when he congratulates her for her success.

Most of the stories in the collection are just average stories woven round the triflest of incidents. **Hatthajori** (Hand in Hand) is dramatization of an ordinary road-side scene. Based on the strong bond of camaraderic among lower class people, **Manukkha** portrays a rickshaw-puller who has the heart of sterling. **Chor** (The Thief) is a simple story of guilt and penitence highlighting the protagonist's inner conflict between good and evil. **Basaatak Daam** (Price of wind) is a reminiscence wherein the writer has not quite succeeded in transmuting his personal emotion into artistic emotion. **Udghatan** (Inauguration), **Parajayak Mudra** (Gesture of defeat) and **Botal** (Bottle) are well-made stories with contrived crises and trick-endings to elicit a gasp of surprise from the readers. But an alert reader is aware of the drift ot the story, and he knows the end much before he comes to it. These are stories about life's little ironies, but idealism does not often have the kind of cake-wald victory as it has in **Udghatan** or de-addiction is not that simple an affair as it has been made in **Botal**. The last story in the collection, **Manglimayak Bakri** (The Goat of Mangli's Mother) is a moving depiction of a rare sentimental bond between the human and the animal, a theme exploited more successfully in a later story entitled **Kahan Chhain Re Nunua** (where Art Thou child.)

V

A new volume of Dr. Jha's stories, Aaji Ma (The Matriarch) has recently published. In spite of pancity of space, it is tempting to add brief critical notes on some of them. By far the largest, the new volume has as many as twenty stories presenting quite an assortment in respect of theme and style. In stories like **Shaheed chowk** (Martyr's Square) and **Thamkel Ghadi** (The Transfixed clock) There is a nostalgic evocation of two important landmarks of the town the author has had intimate association with. **Shaheed chowk** is as much the story of a non descript

Scanned by CamScanner

square as of the Bengali refugee who gave it a name. **Thamkal Ghadi** unfolds before us how the strategically located Tower chowk stood witness to the various phases of history from the Mughal and British regimes to Independent India. The clock at the top of this memorial of freedom stands fixed in a posture of soldiers' mark time, unable to record the flow of life around. These two pieces have none of the conventional elements required for a story. Yet the writer has quite succeeded in giving us a moving human drama around these places by collecting shards of life from the rubble of the past and piecing them together to recreate an absorbing imaginative history. One must not overlook the ironical implication at the end of these stories, acting as sting in the tail.

Based on the contemporary issue of cultural degeneration, **Dhahait Puran Ghar** (The Crumbling House) presents a depressin picture of traditional devotional music losing its essential flavour under the impact of modern cinema. The story is about the way wardness and perversious of singers of the younger generation who have no respect for their glorious musical heritage. The story is symptomatic suggesting there by that like music, other arts and literature through which culture largely expresses itself are also under the threat of this malaise. Another such story **Jethansh** (Elder's share) concerus itself with evosion of traditional values in the family. Being a sensitive writer Dr. Jha expresses in these stories his sense of apprehension when he feels the cultural past to be in the danger of being lost. These stories come to us as a warning against the cultural crisis we are likely to face in near future. In **Aaji Ma** (The Matriarch), however, we have a picture of an ideal family in which the old generation hands down the socio-cultural tradition which the new preciously preserves and continues. The story is remarkable from yet another point of view. Dr. Jha's stories are, by and large, women oriented. His numerous stories with women at the centre, and especially his three serials in epistolary form published in **Mithila Mihir**, present him as a past master in revealing the female heart and giving expression to feminine sensibility. But his women characters are generally frail, submissive and domesticated. In **Aaji Ma**, however he has created a matriarch who is an architect of her destiny, whose words have the restraining force of law and the sanctity of holy texts, who is held in extreme awe and reverence, and who stands as a centre powerful enough to hold the parts together.

The collection includes three engrossing stories on the theme of oldhood. **Paraspar** (Reciprocity) beautifully dramatizes an old couple's concern for each other, while it also touches tangentially upon such social issues as nuclear family, generation gap and children's utter neglect of their aging parents. The story exudes a lot of hope in the determined steps of the couple at the end of the story. **Makua chhadi** (a walking stick) is a powerful story which expresses, through symbols, the sentiments of an old man the death of whose wife makes him too forlorn to do without the walking stick. She had once hidden inside a trunk in their younger days when she was around to move with him step by step like a shadow. Fresh in theme and treatment, **EK Nimoodhan ak Atmakatha** (The Mute one) is essentially a fable in the garb of an autobiography. Like a fable it also leaves a message that an old man is not a patty thing to be discarded simply because he is part utility. But this message has been artistically ingrained in the narrative. As a representative of the old generation Dr. Jha seems to believe that in spite of children's callous neglect, parents still nourish their hopes on them. This is manifest in two stories, namely, **Okar sehanta** (His wish) and

Scanned by CamScanner

Putramoh. The first is about a Don's homecoming, his disillusionment with life that has given him everything but social prestige. Dissatisfied with his power, pelf and position, he wishes his son to be cast in any image other than his own He wants him to be a respectable human being. Much weaker in theme and execution, The second story appears to have been written rather in haste on demand from some magazine. The element of conflict as well as its treatment is too feeble to be convincing, and the strict vegetarian is seemingly more conscious of his social image than himself.

The collection has two stories on a rare emotional bond between the human and the animal. Written in the vein of children's story, **Upkarak Badla** (Gratitude) is about a grateful monkey who repays his peddler friend's debt by helping him out in crisis. **Kahan Chhain Re Nunua** (Where Art Thou child) is a powerful story of a woman who saves the life of a kid by suckling it much at the expense of her own newly-born baby. This rare act of animal love makes her a national figure. But right on the day she is to be felicitated, she finds the kid missing, runs frantically looking for it only to discover in utter shock that it is now the special item on the menu the high-ups of the society are feasting on. It is a highly moving table of a foster mother with overtones of a political satire exposing the insensitivity of men in power. The heart- vending bewailings of the dazed mother keep resounding in the ears of the readers for a long time.

Some stories are just average. **Halumana Horan** is a new version of the hackneyed tale of lost and found off-repeated in so many films. As usual it is the chain, the bracelet and the tatoo on the arm that make the reunion possible. **Mutthi Mein Bund** (Inside the Fist) is a trick story that keeps you glued to it till the very end. The suspense that ultimately leads to an anti-climax has been so well maintained that it keeps you on tenterhooks and makes you jump ahead to the conclusion. The new collection **Aaji Ma** has such a wide variety of theme and character that it will definitely attract the readers.

VI

Dr. Jha picks up his stories mostly from the disorganized, disgruntled lives of the common people, the Dalits, the underdog, the marginalized men and women living on the fringe of life. It is so because he finds a lot of human drama in their life. And this drama emanates from the conflict born out of the ironies and inconsistencies, aberrations and anomalies, incongruities and imperfections of their life. His characters constitute the deprived, the oppressed, the have-nois gasping for a breath of life. Such characters are often glorified as in the case of **Uttami, Harhi** or **Nannudai**; or smouldering with the fire of rebellion as in **Muchkunma**, or **Basanti**, the estraged wife who accepts her lot for the sake of her daughter. His characters are mostly farmers and farm-labours, Mill workers, rickshaw pullers, hawkers, masons, grass-cutters, midwives, school teachers and old people. **Mukho, Parmilia, Rodhamohan, Halumana** are all the progeny of **Manu**, and part of the teeming humanity, indispensable colours in the spectrum of life. Dr. Jha does not view them separately but as an essential part of the organic community of old Mithila. The recent clamour for a separate **Dalit Literature**, I would like to add in parenthesis, is likely to prove disastrous for the wholenesss and continuity of literature.

A remarkable aspect of Dr. Jha's stories is his exploratory-creative use of language. At a

Scanned by CamScanner

time when most of the contemporary Maithili writers allow foreign influences, especially English, Hindi and Urdu, to override Maithili and spoil its essential linguistic flavour, Dr. Jha exploits the native strength of Maithili language to its full. He explores the immense possibilities of this old language, nummages through its vast vocabulary and picks up words that suit his purpose. A part from the standard and dialect forms of language, he also uses archaic words, obsolete words, words which are almost on the verge of extinction-on account of non-use, and reimvigorates them thus giving them a new lease of life. We have umpteen examples of such words as– कनठेक्करि, भरदुलाहि, बोलबाहरि, फदका, उकसोबास, हकरोस, नितुआन, अड़ुआर, झपक्का, झबहा, गोदउस, गोनउड़ा, गुङरौट, घुरमुड़िया, दतखिस्टी, अपराहु, अगरजितपन, फनकी,चिक्कस, पनही, हुड़बा, खटरास, हहार, भकरार, लुहकाहि scattered through his stories. There is a pradilection for compound words perhaps for their musical effect– उढ़ि-बड़ेरा, तूम-कलाम, घाड़ा-जोड़ी, कैंचा-कौड़ी, दवाइ-वीरो, खाढ़ो-डाढ़ो, ऊड़ी-बिड़ी, गाही-गंडा, रेका-तोकी, अंघस-मंघस, छपर-छैत्रा, आङ-समाङ, आँटी-मुट्ठी, राइ-दोहाइ, बाङो-बथुआ, लिधुरे-लिधुरान, उचिला-चाल, ठुक्कू-मुक्कू etc. Besides, there are also specialist words associated with differnt trades and occupations, such as masonry (**Farichcha Bha Gel chhalai**), music (**Dhahait Puran Ghar**), midwifery (**Vatgaachhak chhahari**) and animal husbandry (**Ek Nimoodhanak Atmakatha**).

The most important aspect of Dr. Jha's stories is their roof tedness in Mithila's socio-cultural tradition which is a sum total of its actions, habits, customs, rituals and beliefs. It is true that a work of fiction has its natural source in subjectivity, but it is not just an aesthetic act but also social. Great writers have always shown a concern with interpreting ordinary life, most prominently in its socio-cultural perspective. A good story, thus, appeals to us not only on the levels of theme, character and event but also on soical and cultural levels. The stories of Dr. Jha are stories of Mithila-its fields and orchards, its people, actions, habits and customs, rites and rituals, dress and food-habits, dogmas and beliefs. They offer us the smell of its soil in the description of places and events, delineation of characters, their interaction and the colloquial idiom they use. They keep alive the memory of certain practices that were prevalent in the organic community of Mithila and continued till late in the second half of the 20th century. Our younger generations know little about झिझिया or जट-जटिन or हुक्कालोली . They have no concept of such social practices as borrowing embers to kindle one's hearth or the entire neighbourhood using a common grinding wheel owned by some affluent family or the belief that a couple enjoyed conjugal togetherness in as many lives to come as the number of dips they took together in the Ganges. These practices might appear backward-looking today, they might tell of the acute poverty of Mithila but it was a poverty that revealed the richness and warmth of human relationship. In the process of mechanization and urbanisation much of Mithila's cultural excellence, her districtive flavour has been lost. Material richness has rendered people poorer in terms of emotional kinship. The organic community of the past is in shreds. Dr. Jha's stories cherish the memory of those socio-cultural ties which made life a shared experience.

●

Scanned by CamScanner

पीड़ितक प्रवक्ता कथाकार

श्रीउदयचन्द्रझा 'विनोद'

कोनो कृती व्यकित्वपर कलम उठयबासँ पूर्व आवश्यक जे हुनक कृति आ व्यक्तिक सम्यक् ज्ञान प्राप्त हो, संगहि तकरा अभिव्यक्त करबाक हेतु अपना अवगति हो । एतबा स्वीकार करबामे हमरा कोनो असौकर्य नहि जे हिनक रचना-जगत ततबा विविध एवं व्यापक छनि जे तकर सांगोपांग ज्ञान हमरा नहि अछि, आ ने वर्णने कौशल भगवान देने छथि । हिनक व्यक्तित्वक सम्पर्कमे सेहो बहुत अधिक रहबाक अवसर नहि भेटल । तैयो जखन लिखबाक आह्वान अछि तँ लिखब अवश्य । जतबे पूजी अछि ताहिपरमे अपन अभिमतक महल ठाढ़ करब !

सबसँ पहिने एतबा कहि दी सर्जनात्मक काज छोड़ि उत्खनननुमा काज हिनका द्वारा अधिक कयल गेल अछि आ हम तकर मात्र एक गोट पाठक रहल छी किन्तु ताहिपर व्यवस्थित रूपसँ किछु कहबाक पात्रता हमरामे नहि अछि । अपन लोकक दर्दनाक तथा रोमान्टिक जीवनस्थितिक यदाकदा जे झलकी सभ हिनक कथा सभमे भेटैत छल तथा तकरा जाहि अर्थपूर्ण संकेतक संग निरैठ भाषामे ई प्रस्तुत करैत रहलाह से हमरा बरोबरि आकृष्ट करैत रहल । ताहिसँ हिनक विमुख भऽ जायब हमरा कहियो नीक नहि लागल ।

सिरजल संसारक ताकहेर द्वारा अपन अथ-इतिक परिचय भेटैछ, अपन भित्ति मजगूत होइछ, अपन परिचिति प्रगाढ़ एवं स्वीकार योग्य होइछ से यथार्थ, किन्तु नव संसार रचव अवस्से ताहिसँ विशिष्ट काज । तकरे प्रसादात् हमरा कोनो पुश्किन आ प्रेमचन्द भेटैत छथि । वाल्मीकि आ कालिदासक अभावमे हम भारतीय कतबा विपन्न रहितहुँ से कहबाक प्रयोजन नहि । एक गोट शेक्सपियर आ इलियट अंग्रेजी भाषा- साहित्ये नहि, अंग्रेज जातिकेँ संसारक माथ पर चढ़ा देलक । रामायण एवं महाभारतक अभावमे भारतक महानताक गप्प कयले नहि जा सकैत छल । सारांशत: हमर कहब एतबे जे रचनात्मक क्षेत्रसँ हिनक विमुखता हमरा कहियो नीक नहि लागल । ओना शोध-अनुसन्धानक महत्त्वक अवमूल्यन कोनो अवोधहिक बुते सम्भव ।

डा. रामदेवझा नाटककार सेहो छथि आ ताहिपर हम अपनो 'शिखरिणी'क निमित्त कहियो समधानि कऽ लिखने रही, हमर बौद्धिक निर्णायक मंडल सेहो तकरा सहर्ष स्वीकार करैत हिनका 'पसिझैत पाथर' नामक नाट्य संग्रहपर साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रदान कयलक । श्यामवर्णी मृदुभाषी एहि प्राध्यापकक अवदानक चर्चा हेतु वस्तुत: बहुत 'स्पेस' चाही ।

देशक स्वतन्त्रताक संग भारतीय युवा जनमानसमे मोहभंगक प्रक्रिया जे प्रारम्भ भेल तकर फलाफल आइ देखि रहल छी । ताहि काल नवागत पीढ़ी द्वारा सेहो मोटामोटी छठम दशकसँ 'रुसल जमाय'क खिस्सा लिखब छोड़ि जीवन-जगतकेँ नव आँखिसँ देखब- परेखब प्रारम्भ भेल । मैथिलीक दू विधा कविता- कथा (उपन्यास समेत) अपन जातिमे बदलाव आनऽ लागल । ताहि युवा रचनाकारक पाँतीमे रामदेवझा अग्रगण्य छलाह । स्वाभाविके जे पुरानसँ नव बाट पकड़बामे पुरनका स्मृति वा चालि कहू सहजे जान नहि छोड़ैत छैक । आ इहो यथार्थ जे प्रेम तँ जा धरि मनुख धरतीपर रहत, करिते रहत । प्रेमक तुलना तँ गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ईश्वरसँ कयलनि अछि । 'जलक तलपर लिखल नाम' नामक कथा जखन पहिले-पहिल पत्रिकामे प्रकाशित भेल छल तँ तकरा पढ़ि कऽ लागल रहय जेना हमरे गामक मालतीक कथा हो । धनीक-गरीबक ओझराहटिमे पड़ल मालती पोखरिक पानिपर अपन प्रेमी रतनक नाम लिखि-लिखि डुब्बी मारैत रहलि । समस्यासँ जूझैत प्रेमक अखंड दीप प्रज्ज्वलित रखबाक सन्देश दैत ई कथा एहि युवा रचनाकार दिस लोकक ध्यान आकृष्ट करबामे सर्वथा समर्थ रहल छल ।

Scanned by CamScanner

ऊपर-झापरसँ देखला सन्ताँ 'एक खीरा : तीन फाँक', 'मनुक सन्तान' एवं 'धरती माता'क कथा सभ सोझ-साझ पिहानी जकाँ लागत किन्तु कनेक ठमकि कऽ विचारने पता लागत जे मिथिलाक ग्रामीण जीवनक गन्धित 'कल्चर' एवं सुषमा तथा आवेशक ई कथा सभ अपनामे संयोगि कऽ रखने अछि । अधिकांश कथामे दबल- पछुआयल लोकक जीवनक त्रासदीक मुखर अभिव्यक्ति भेटत, विरोधक पृष्ठभूमि तैयार करैत लागत ।

हिनक कथा सभमे अभावी संस्कृति एवं मायावी प्रभु वर्गक उद्दण्डता भेटत, प्रारब्धक नामपर घुटि-घुटि कऽ मरैत लोक, मुक्तिक बाट तकैत भेटत । ठीक बड़ निर्धिन समयमे हम सभ जीबाक लेल अभिशप्त छी ।

रामदेवक जन्म दरभंगासँ सटले कबिलपुर गाममे 1936 इ.मे एक गोट मध्यवित्त परिवारमे भेलनि । अपन आसपासमे निम्न मध्यवर्ग एवं निम्न वर्गक जीवनक संकटकेँ ई बड़ लऽगसँ देखलनि । आ तेँ हिनक सर्जनामे ताही जगतक जीवनक चित्र खीचल गेल । जेना कि ऊपर कहि आयल छी जे हिनक शोधपरक रचनाक संख्या अधिक छनि, मैथिली शैव साहित्यक तँ ई आलोचनात्मक अध्ययने प्रस्तुत कयने छथि । लेखनसँ सांस्कृतिक गतिविधिक क्षेत्रमे सक्रिय रहि मैथिली भाषाक स्थापनाक संघर्षमे हिनक योगदान उल्लेखनीय रहल अछि । ओना सर्जनात्मक क्षेत्रमे लिखबाक लेल कवितो लिखलनि, मुदा प्रधानतः कथाकारे भेलाह ।

जेना कहलहुँ अछि जे हम सभ 'निर्धिन समय'मे जीवाक हेतु अभिशप्त छी । एहन विकट समयमे कोनो रचनाकारक दायित्व यैह होइछ जे एहि समयसँ लड़बाक जोगार धराबय आ सैह मानव मुक्तिक अभियान थिकै, जे सदासँ साहित्यक काज रहलैक अछि । सैह लु शन कयलनि, सैह अखिल विश्वक रचनाकारलोकनि करैत अयलाह अछि। अन्ततः मानवीय गरिमाक चिन्ता सर्जक यदि नहि करय तखन सर्जनाक तात्पर्य की ? 'यस्यां जागर्ति संयमी' कोन बातक ? विस्तारमे नहि जा हम हिनक लेखकीय व्यक्तित्वकेँ फड़ीछ करबाक निमित्त एहि ठाम मात्र हिनक, एक कथा 'मङली मायक बकरी'पर अपन बात सीमित राखब ।

सर्वप्रथम हिनक भाषापर विचार करी । भाषाक शक्तिक प्रमाण बेर-बेर हमरा सभक समक्ष अबैत रहल अछि । जनैत छी जे ओ धर्मोसँ जोरगर होइछ । हेमनियोमे बांग्ला देशक निर्माण धर्मक बन्धनकेँ काटिये कऽ सम्भव भेल । पूरा यूरोपमे इसाइ बसैत अछि किन्तु ओकर सभ देशक भाषा फराक-फराक छैक । अंग्रेजीक वर्चस्व ओ देश सभ नहि मानैत अछि । ईहो स्पष्टे जे भाषाक शक्ति ओकर मौलिकतामे छैक । दुर्भाग्यवश एखन मैथिलीमे मौलिकताक आग्रहकेँ तथाकथित किछु नवतावादी (जे सर्वथा अयोग्य छथि) कट्टरता रूपमे अभिहित करैत छथि । भाषाक भित्तिकेँ ढाहि कऽ कोन महल ठाढ़ करताह से वैह लोकनि जानथि । हमरा जनतबे से कऽ कऽ ई लोकनि अज्ञानतावश दुश्मनक दावपर खेला रहल छथि, मैथिलीकेँ बोली बनयबाक काज कऽ रहल छथि । रामदेवजीक भाषाक मौलिकता प्रशंसनीय छनि । आचार्य सुमन एवं कविवर अमरक सान्निध्यमे निरन्तर रहबाक सौविध्य हिनका नहि मात्र मौलिकतापर डटल रहबामे बल प्रदान कयलकनि, अपितु अन्यो क्षेत्रक काजमे सदा-सर्वदा सहायक भेलनि । एहि प्रसंगमे 'मङली मायक बकरी' मे प्रयुक्त मात्र किछु शब्द सभकेँ देखल जा सकैत अछि– **निछायब, लदबद, अड़ुआर, लुहकाहि, छेहर, जजाति, अपराहु, बसबाड़ि, ठकमूड़ी, झलफल, गाभिन, हाकरोस, सुमिरन, कंबुला-पाती, डिबिया, छिछिआयब, सिनेह, इजोत, पाँजर, थाकनि, बेसम्हार, पजेबा, पहिलौठ, कन्नारोहटि, लुलुआयब, जनमौटी, पठरू, नितुआन, भेम्हिआयब, मेमिआयब, दोदरा, चिकरब** आदि । एहि बातकेँ पुष्ट करबाक निमित्त एहि कथाक कनेकटा अंश देखल जाय– **'ओहि बेर बकरीकेँ पहिलौठे दूटा पठरू भेल छलैक, एकटा छागर, एकटा पाठी । छागर उज्जर वर्णक आ पाठी कारी वर्ण । खूब नमहर-नमहर टाङ, बड़का-बड़का लटकैत कान । दुनू पठरू लगैत जेना सद्यः फुलायल श्वेत ओ नील कमल होइक । मङली मायक हुलास भकरार भेल कचनार जकाँ लगैत रहैक ।''**

कथ्यक स्तरपर मङली मायक गरीबी आ महिन्दरक अमानवीय व्यवहारकेँ एक तुलापर राखि कऽ देखल जा सकैत अछि । वस्तुतः कोनो रचनामे लेखकीय सहानुभूति सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होइछ । परिस्थितिसँ त्रस्त,

Scanned by CamScanner

वंचित-पीड़ित व्यक्तिक वेदनाकेँ स्वर देब आधुनिक लेखनक सार्थकता थिक । स्थिति एहन बनैछ जे बकरीक मुइल देह देखिते महिन्दर अकबका जाइत अछि । कथाकारक चिन्ता कथ्यक विश्लेषणक संग परिवेशक चिन्हानक चतुर्दिक घुमैत अछि ।

बकरी यदि महिन्दरक जजातिक छति कइये देलक तँ से कोन अस्वाभाविक बात भेलैक! कथाकार कतेक ठीक कहैत छथि– **कोनो माल-जालकेँ ओहि हरियरी दिस जा कऽ दू-चारि कऽर खा लेबऽ लेल आतुरता भऽ जा सकैत छलैक । मनुक्खो जखन एहन परिस्थितिमे अपनाकेँ रोकि नहि पबैत अछि, जकरा विवेकशील प्राणी कहल जाइत छैक तखन माल-जाल तँ साक्षात पशुए थिक । पशुसँ विवेकक अपेक्षा कयनिहार व्यक्ति की ओकरासँ कम मानल जायत ?''** निश्चयत: विवेकहीने व्यक्ति पशुसँ विवेकक अपेक्षा राखत ? एहि कथाक कथ्य की कोनो लाल झंडाधारीक कथ्यसँ कमजोर अछि ? मनुक्ख आ ओकर समाजक व्यापक सन्दर्भमे एहन रचनाक मूल्यांकन द्वारा तकर महत्त्वकेँ रेखांकित करब, हिनक भाषा-शिल्पपर विमर्श करब हमरा जनतबे सार्थक । निजताक अजस्र धाराकेँ रेखांकित करब आलोचकक दायित्व होयबाक चाही । एहि बातक ध्यान रखबाक थीक जे सत्ता आ चरित्रक शक्ति निश्चित होइछ किन्तु भाषाक शक्ति सेहो कम नहि । क्रान्ति सदा जनसाधारणक मध्येसँ जन्म लैत अछि ।

रामदेवजीक ई कथा एहू कारणे हमरा विशिष्ट लगैछ जेँ एहिमे बिना कोनो तामझाम वा नायककेँ एकर बीचसँ प्रतिरोधक स्वर बहराइत अछि । जनाक्रोश स्वत: स्थितिक पेट फाड़ि कऽ बहराइत अछि, आ तकरे कोनो गान्धी वा चे ग्वेवारा किंवा नेल्सन मंडेला पकड़ि कऽ निष्पत्ति धरि लऽ जाइत छथि । शासित वर्गक ध्रुवीकरण सत्ताक विरोधमे कोनो नेतासँ अधिक नारकीय स्थितिक कारणे सम्भव होइत अछि ।

एहि कथामे ईहो बात उल्लेखनीय जे पीड़ित प्राणी सेहो स्त्री थिक जकर जीवन समृद्ध परिवारमे दोयम दर्जाक देखल जाइत अछि । निराश्रिता मङली मायक जीवन-संघर्ष, सामाजिक सहानुभूति एवं सहयोगक अपेक्षा रखैछ मुदा ताहि स्थानपर सम्पन्न वर्ग द्वारा ओकरापर जुलुमे कयल जाइत अछि । पठरू आ बकरीक मृत्यु सनक छोट घटनासँ बड़ीटा बात कहबाक कारणे ई कथा विशिष्ट भऽ गेल अछि । सम्पन्न वर्गक अहम्मन्यता एवं अमानवीयता समाजमे आइयो थोड़-बहुत अछिहे । बिना कोनो नारा आ नायकक, प्रतिरोधमे बिना एको शब्द खर्चा कयने, एहन मजबूत कथ्यकेँ एतेक प्रभावी ढंगसँ सम्प्रेषित करब एकर विशेषता थिक । आर्थिक स्वावलम्बनक आवश्यकताकेँ सेहो ई कथा 'बाइ प्रोडक्ट' जकाँ रेखांकित करैत अछि ।

मङली मायक जीवन संघर्ष स्वत: पाठकक मनमे ओकरा प्रति सहानुभूतिक सृजन करैछ, ताहिपर सम्पन्न वर्गक प्रतिनिधि द्वारा धन-मे-धन बकरीकेँ ओधबाध कऽ मारि देबाक घटना, निछा कऽ मारि देबाक घटनाक प्रभाव गैघ होइछ । ठीके केओ कहने छथि जे धैर्यशीला धरती दीर्घ अवधि धरि अनाचार सहन नहि करैत छथि । एहि घटनासँ उपजल आक्रोशकेँ बहुत काल धरि अनठायब सत्ता हेतु कठिन होइछ आ यैह तथा एहने घटना सभ परिवर्त्तनक वातावरण बनबैत अछि ।

रामदेव बाबू ठीके कहैत छथि जे– **पशुओ केँ हर्ष आ विषाद होइत छैक, सुख आ वेदना होइत छैक ।** तखन विवेकी मनुक्ख कतहु आन्दोलित नहि हो । रामदेवजी अपन निरन्तर साधनाक बलपर अपना हेतु स्थान सुरक्षित कयलनि अछि ।

●

Scanned by CamScanner

तन्नुक नारी-मनक चित्रकार

डा. श्रीमतीनीताझा

धीर-गम्भीर, प्रकाण्ड विद्वान, यशस्वी प्राध्यापक, सूक्ष्म-गहन दृष्टिसम्पन्न अनुसन्धानी एवं भावप्रवण कथाकार-सभक सम्मिश्रणसँ एक छवि उभरि कऽ जे समक्ष अबैत अछि, ओ थिकाह बहुगुणी ओ बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न रचनाकार डा. रामदेवझा। हिनक आत्मीय व्यवहारसँ एहन प्रतीत होयत जे ई आत्मीयता मात्र हमरे लेल अछि। ओ आत्मीयता भेटत अवश्य, किन्तु ताहि लेल मेहनती, इमानदार, जिज्ञासु एवं समर्पित विद्यार्थी बनऽ पड़त एवं तदनुरूप अपनाकेँ सिद्ध करऽ पड़त।

एम.ए.मे पढ़ैत रही। किछु लीखि कऽ देखओने रहिअनि। देखलाक बाद लिखलाहा दिस देखैत प्रसन्न भावेँ कहने रहथि- मगध इनभरसिटीक छात्रक प्रति नीक धारणा नहि छल, किन्तु अहाँ...!' आ जाहि स्नेह भावसँ हमरा देखने रहथि, ओ भावपूर्ण पल हमर मुँहपर विलमल छल, हमरा आशीर्वादसँ सिक्त कयने छल, रामदेवबाबूक ओ चेहरा हमरा आइओ ओहिना मोन अछि आ आजीवन मोन रहत। स्वयंकेँ हमरा साबित करबाक छल... ।

रामदेवबाबूक निर्देशनमे शोधकार्य करबाक गौरव-बोध अछि। कार्य सम्पन्न कऽ सन्तुष्टि भेटल एवं डिग्री सेहो प्राप्त भेल। सन्तोषक यैह भाव हमरा अनुभूति करबैत अछि जे हम स्वयंकेँ साबित कऽ सकलहुँ। 'साटीपीटी' हम स्वयं लऽ लेलहुँ अछि, प्रमाण पत्र रामदेवबाबूक हाथमे छनि।

सी.एम.कालेजक मैथिली विभागसँ प्राध्यापिकी प्रारम्भ कयलहुँ। तावत् धरि यू.जी....पी.जी.क बटबारा भऽ गेल छलैक, रामदेवबाबू पी.जी.क यशस्वी प्राध्यापक रहथि। जे पोथी सभ हमरा पढ़यबाक लेल कहल गेल, ताहिमे **मनुक सन्तान** सेहो रहैक। एहि कथा संग्रहक तीन गोट कथा- **मनुक सन्तान, एकटा रहय उतमी** आ **भितरिया धधरा** हमरा बड़ नीक लागल छल! ई तीनू कथा विशेष रूपसँ आकृष्ट ओ प्रभावित कयने छल। नीक लगबाक कारण तहिआ नहि तकने रही, बस नीक लागल छल। एखन ताकब पार लागत की? **एक खीरा : तीन फाँक** शोध-कार्यक क्रममे पढ़लहुँ आ **धरतीमाता** बादमे ...... ।

एहि तीनू कथा संग्रहक किछु कथाक नारी चरित्र धरि हम अपन दृष्टिकेँ सीमित राखल अछि।

नारी विमर्श साहित्यक हाल-सालक अवधारणा थिक। नारी संग 'विमर्श' शब्द जोड़ि देलासँ मनमे अनेरे नाना प्रकारक तानी-भरनीक सृजन होअऽ लगैत अछि। विचार नाना प्रकारक होइत छैक, किन्तु तकर केन्द्र-विन्दुमे एकमात्र शारीरिक प्रेम, सेहो अवैध सम्बन्ध रहैत छैक। नारी जीवनक बाह्य ओ अन्तर्जगतकेँ विश्लेषित ओ उजागर करैत मैथिलीमे कथा प्रारम्भिके अवस्थासँ लिखल जाइत रहल अछि। अगिलही तकर दृष्टान्त थिक। पहिने नारीक जीवन, ओकर दुनिञा सीमित रहैक। ओ अपन विषयमे ने सोचैत छलि, ने बजैत छलि आ ने तँ प्रतिरोधे करैत छलि। जखन पढ़ि-लीखि कऽ ओ बाहरी दुनिञाक सम्पर्कमे आयलि - अखबार, साहित्य, रेडियो, टी.भी., सिनेमा आदिक माध्यमसँ अपना विषयमे अपन ढंगसँ सोचऽ लागलि। स्त्रीक विषयमे स्त्री सोचय, बाजय, लिखय आ स्त्रीक विषयमे पुरुष सोचय, बाजय आ लिखय- ताहिमे निश्चित रूपसँ अन्तर होयतैक। स्त्रीक विषयमे, स्त्री द्वारा, स्त्री लेल चिन्तन-मनन ओ क्रियान्वयन निःसन्देह अधिक प्रामाणिक होयत। एकर अर्थ ई नहि जे एक पुरुष स्त्रीक अन्तर्मनकेँ चीन्हि नहि सकत, तकरा गमि नहि सकत आ तदनुरूप ओकर मोनक सुख-दुःखक कोमल भाव, संवेदनशीलता, क्षोभ-प्रतिरोधकेँ अभिव्यक्त नहि कऽ सकत। निश्चित रूपसँ कयल जा सकत आ से मैथिली कथामे खूब कयल गेल अछि। नारीक

Scanned by CamScanner

बाल रूप, युवा रूप, वृद्ध रूप, शिक्षिता-अशिक्षिता, ग्राम्या-नागरी आदि भिन्न-भिन्न स्थितिमे कोमल मन ओ दृढ़ निश्चयक जेहन तन्नुक अभिव्यक्ति रामदेवझाक कलमसँ भेलनि अछि से अन्यत्र भेटब दुर्लभ । अपन मानस पात्र सभकेँ अतिरिक्त ममत्व ओ स्नेहसँ ई कथाकार ने तँ बहसऽ देलनि अछि आ ने कठोर अनुशासनमे बान्हि कऽ रखलनि अछि। रामदेवबाबूक नारी पात्रक चरित्रक दुनू पक्ष-सकारात्मक ओ नकारात्मक स्वाभाविकताक संग विकसित भेल अछि। सापेक्ष ओ निरपेक्ष दुनूमे अद्भुत सन्तुलनक अनुभव हमरा भेल अछि । आब हम कहि सकैत छी जे **मनुक सन्तान** आ **एकटा रहय उतमी** हमरा किएक नीक लागल छल, विशेष रूपेँ किएक एतेक आकृष्ट ओ प्रभावित कयने छल ।

मनुक सन्तान कथाक थीम छैक- **ने ककरो टूट, ने ककरो नफ्फा..... जतेक लोक ततेक कूड़ी..... ककरोमे कोनो अन्तर नहि ...... सभ एके मनुक सन्तान** । (मनुक सन्तान, पृ.- 16)

हम कनेक विषयान्तर होइत नारीक बाल ओ युवावस्थाक मनोभावक जे चित्रण एहिमे अछि, तकर अवलोकन करबैत छी- **ओ बेसी काल डेराइत छलि मारिसँ** (बालरूप) **मुदा सुगिया डेराइ छलि नजरिक मारिसँ** (युवा रूप) ।

(तत्रैव, पृ.-4)

बेकछयबाक प्रयोजन नहि जे नजरिक मारिक भय कोन अवस्थामे होइत छैक । सुगियाक युवावस्था खेतबलाकेँ मोहित करैत छैक । ओ सुगियाकेँ अपन खेतमे डोका बिछबाक स्वस्ति दऽ दैत छैक । अन्तर्मनमे सुगियाक देहक सुगन्धिक लोभ छैक - बोझ उठयबा काल देहक समीपसँ सुगियाक देहक सुगन्धि । सुगियाक अस्वीकृति आ ओकर खोंइछ महक डोका मोनिमे ...... । सुगियाक घरबलाक अबैया रहैक । ओ अपन घरबलाक नेहक डोरिमे बन्हायलि डोका बीछऽ आयलि छलि । ओ अपन सखी बिन्दाक पहुनाक दिलदारीक गप्प चलओने छलि आ की बिन्दा सुगिया वरक गप्प चला देलकै - सुगियाक आन्तरिक इच्छो यैह छलैक जे कोनहुना ओकर वरक गप्प चलैक....... । (तत्रैव, पृ.- 2-3)

रामदेवबाबू केवल नारिये मनक पारखी नहि छथि, बल्कि समस्त मानव जातिक मनक थाह लेबाक पूर्ण क्षमता हुनका छनि- **मानव हृदयक सूक्ष्मतम मनोभाव, ओकर कार्यकलाप आदिक अत्यन्त सहृदयतापूर्ण ओ सहानुभूतिपूर्ण अंकन कयने छथि** (तत्रैव, द्वितीय संस्करणक भूमिका) ।

एही कथामे मुनेसरा, फुलिया आ जिरियाक बालमनक स्नेह भाव आ रुस्सा-फुल्लीक अंकन अति मनोरम अछि, बाल मनोविज्ञानक सुन्दर चित्र अछि ।

एकटा रहय उतमीक उतमी प्रतिदिन घास बेचि कऽ अपन परिवार चलबैत अछि । बेटा सोनमा आ साङरही रोगग्रस्त सोनमाक बाप । भिनसरुका उखराहामे भानस-भात कऽ कऽ दुपहरियामे घास करऽ जाइत अछि । सन्ध्याकाल घास बेचि कऽ घर अबैत अछि । चौबट्टीपर घास किननिहारक बाट तकैत काल, ट्राफिक पुलिसक नजरिक तीरसँ अपन रक्षा करैत अछि । ओ पड़ा जाय चाहैत अछि- **मुदा आगाँमे छिट्टा भरि घास छैक जाहिमे ओकर सौंसे परिवारक खर्ची छैक** । जाहि पुरुष जातिक पालन-पोषणार्थ ओ एतेक मेहनति करैत अछि, शारीरिक, मानसिक ओ भावनात्मक - तीनू स्तरपर जुझैत रहैत अछि, ओही पुरुष जातिसँ ओकरा अपन रक्षा सेहो करबाक छैक । पुरुषक जन्मदातृ स्त्री, ओकर पालन-पोषणकर्त्तृ स्त्री, आ ताहि स्त्रीक वैह पुरुष-पति !!

टाकाक बलपर भोट किननिहार आ जीत सुनिश्चित कयनिहार वर्गक एक लफन्दराहाक धमकीक डरेँ जुमरतनी, दहौड़ी, सितिया, कमली, उतमी, सभ घास बेचऽवालीक देह सिरसिरा गेलै ।

ओकरे इसारापर एकटा रिक्सावला ओकरा धक्का दऽ देने छलैक... घुरमुड़िया खा कऽ खसि पड़लि छलि... सभ हँसि देने छलैक । एकटा छौंड़ा आबि कऽ भरि पाँज कऽ उठा देने छलैक आ सभ गोटे फेर हहारो दऽ देने छलैक ।" (तत्रैव, पृ. 64-65)

एहि अभिव्यक्तिमे नारीक वेदना, विवशता, अपमानक ओ ग्लानि अनुभव करबाक मार्मिक भाव छैक- **द्रौपदी जकाँ ठुक्कू... मुक्कू... । केशव केओ नहि, दुर्योधने...** ।

Scanned by CamScanner

बोकस भोट खसयबाक लेल दूटा टाका भेटलैक आ मनझनिञा मसोमातक नामक परची । घरबला दुखित आ मसोमातक नामक पुरजी... । हृदय एवं मस्तिष्कक द्वन्द्व, टाकाक प्रति मोह-घृणा, अपना प्रति घृणा-क्षोभ, घरबला लेल प्रेम, सोनमा बापक प्रति ममत्व- सभकेँ रामदेवबाबू एक नारी-हृदयसँ देखलनि एवं चित्रित कयलनि अछि । ओकर मनक दुविधा ओ अन्तर्विरोध-अहिबातक चेन्ह बोनबाली उतमी- मनझनिञा मसोमात, पतिक नीकेँ भऽ जयबाक मंगलकामना आ कबुलापाती करऽबाली उतमी आ मनझनिञा मसोमात... । की सत्य ? उतमीक बोन, सोनमाक बापक पलड़ा लऽत होइत छैक आ दुटकही खसि पड़ैत छैक- खसा दैत छैक... ।

नारी विमर्श करबाकाल आर्थिक दुरवस्थाजन्य विवशताक कारणेँ देहसँ अर्थोपार्जन एवं अन्य अनीतिपूर्ण क्रियाकलापकेँ समाज एवं साहित्यमे किछु सीमा धरि उचित मानल गेल अछि । किन्तु रामदेवबाबूक संस्कार ओ सामाजिक सरोकार एहि व्यवस्थाकेँ स्वीकार नहि करैत अछि... बिन्दा, सुगिया, उतमी, सितिया, दहौड़ी, जुमरतनी केओ नहि ।

एक खीरा : तीन फाँक कथा संग्रहक पहिल कथाक शीर्षको यैह थिक । एहिमे नाङर फेकूक परिवारमे सेहन्तगर देहवाली ओकर घरबाली सुरजी ओ तीनटा बेटा छैक - घुटरा, मङला आ असरफीया । **गौनाक पाँच-छओ मासक बादे ओकरा पहरा देबाक नोकरी भेटि गेलैक आ ओ सरकारी चौकीदार भऽ गेल । रातिमे पहरा करय आ दिनमे हरदेवसिंहक कोइला डीपोमे मजूरी मातृमुखी जेठका घृटराक जन्मक बाद डिपटीपर जयबामे कौखन अलसा जाय - वस्तुतः घरबाली आ बेटाकेँ एसकर छोड़बाक इच्छा नहि होइक । एके दिन तऽ डिपटी पर नहि गेल आ, सेहो पकड़ाइये गेल - हाकिम सब देवता होइ छै । अगरजानी, जनै छै** (एक खीरा : तीन फाँक, पृ.- 3)।

दोसर बेटाक जन्मपर दरोगा ओकरा सोनक हलुमानी देने छलैक । फेकू हलसल छल- देवता छै दरोगाजी । मुदा फेकूक हुलास सुरजीकेँ नहि छुलकै- ओ हलुमानीकेँ कोठी-कान्हपर राखि देलकै । मङला बापक लेल भागवन्त भेल.... 'जँ सुरजी सौंसे कोइलाक ढेरी लुटा देतैक तँ कोइलाक ठिकेदार मालिक हरदेवसिंह किछु नहि बजतैक (तत्रैव, पृ.- 7) ।'

जतरा आ फगुआमे हरदेवसिंह सौंसे घर-घरैनकेँ नव कपड़ा दै- सुरजीक साड़ी-आङी लाजवाब ! मालिकक खास पसिन्न । असरफीयाक पैंट-कमीज, घुटरा-मङलासँ बेसी नीक... ।

फेकू पहरा दऽ कऽ घर अबैत छल तँ - "सुरजीक आलसायल-झमारल देह, छिड़िआयल केश, उतरल मुँह, कड़ुआयल आँखि, करुण विकल आ विवश आँखि, बिसबिसाइत अंग, विरुझल मन देखैक (तत्रैव, पृ. - 19)।"

आ, **की ने की सोचि कऽ एकटा झिल्ली असरफीयाक हाथमे, एकटा मङलाक हाथमे दऽ कऽ चारिटा घुटराक हाथमे दऽ देलकैक... फेकू झिल्लीकेँ बराबर बटबामे जेना असमर्थ छल । घुटराकेँ बखरामे बेसी देबाक ओकरा अभ्यास भऽ गेल छलै किन्तु मङला आ असरफीयाकेँ किछु नहि देब ओकरा लेल असम्भव भऽ जाइत छलैक ।"**

फेकू आ सुरजी दुनू बुझैत अछि, किन्तु दुनू विवश अछि ...... । रागी फेकू, भोगी दरोगा आ चंठ ठिकेदार हरदेवसिंहक बीचमे सुरजी-**हरदेव सिंहक साँसक बसात सुरजीक मुँहपर, छातीपर पड़ैत छलैक..... छिलकलहा लट कँपैत छलैक** (तत्रैव-पृ.-13) ।

फेकू अपन माथ घुमा लेलक । फेकू हरदेवसिंहक पाइसँ कीनल साबुन नहि लगओलक, ओकर देल नव वस्त्र नहि पहिरलक, ओकर देल पाइसँ रिक्शो चढ़ब नाङर फेकूकेँ स्वीकार नहि । ओ तँ बस सुरजीक रागमे भीजल-तीतल रहय...... । मोदिआइनक बेटी बुचियाक नव वयसो ओकरा विलमा नहि सकलै - भरमा नहि सकलै- ओकरा सुरजीक स्थानमे नहि बैसा सकल (तत्रैव, पृष्ठ-19) ।"

रामदेवबाबूक मानससँ सृजित ओ लेखनीसँ चित्रित सुरजीक व्यक्तित्वक मानसिकता, ओकर मनक विकलता, फेकूक प्रति रागात्मक भाव नारी हृदयक एकनिष्ठ छविक प्रतीक थिक- **सुरजी ममतासँ देखऽ लागल अपन घरबलाक नाङर पैरकेँ । मोन पड़लैक अपन गमकौआ साबुन... किछु नहि लेलकै फेकू... भेलैक जे फेकू आबैक आ गत्तर-गत्तरकेँ**

Scanned by CamScanner

गीजि दैक... मचोड़ि दैक... आङी-साया सभकें रित्ती-रित्ती कऽ फाड़ि-चीरि कऽ फेकि दी आ... घरवलाक मिरचैयापर पसरल मैलका-फटलाहा धोती पहीरि ली... । सुरजीकें मोन पड़लैक मोछवला दरोगा आ खोदर-बोदर मुँहवला हरदेवसिंह । ...मङला आ थुलथुलहा असरफीया...। दुनू बेटाक मुँहपर थूक धऽ दी आ घुटराकें अपन छातीमे समेटि ली... घरबलासँ सटि कऽ ठाढ़ि भऽ जाइ, एकदम सटि कऽ जे लोक देखिते मातर बूझि जाय जे ई दुनू बेकती... फेकू आ सुरजी... सुरजी आ फेकू...बीचमे घुटरा... फेकू-घुटरा-सुरजी... सुरजी-घुटरा-फेकू...(तत्रैव, पृ.-16) ।

खीराक यैह तीनू फाँक थिक । सुरजीक परिचिति-अस्तित्व सभ किछु फेकूसँ छैक । सुरजीक मनक निर्मलता उपर्युक्त अंशमे स्पष्टत: देखल जा सकैत अछि ।

सामाजिक दुरवस्थाक कारणें निर्बलक बोहु सभक भौजाइ भऽ सकैत छैक, सुरजी विवश भऽ सकैत अछि, किन्तु नारी जातिक मान-सम्मान, ओकर गौरव अखण्डिते रहतैक । नारी मनक कोमल नाल-सूतक तह धरि अत्यन्त मार्मिकताक संग रामदेवबाबू पहुँचल छथि आ पाठक सेहो हुनका संग पहुँचैत अछि आ मानस पटलपर सुरजीक निर्मलता मात्र अंकित रहि जाइत छैक ।

एक गोट और कथाक चर्चा हम करब जे **धरतीमाता**मे संग्रहित अछि- **हत्थाजोड़ी** । एहि कथामे पति-पत्नी मध्य भेल झगड़ा, उपराग-उलहन, नैहर चल जयबाक धमकी, दोसर घर कऽ लेबाक धमकी, मान-मनौअलि आ अन्तत: हत्थाजोड़ी कऽ कऽ स्वस्थानं गच्छ अछि । कनगुरिआ धरा कऽ प्रारम्भ करा देल गेल रागात्मक सम्बन्धकें हत्थाजोड़ीक अटूट बन्धनमे आबद्ध देखाओल गेल अछि । हीन भावसँ ग्रस्त छीतन क्षणिक भावावेशमे मनतोड़ियाक प्रति शंका व्यक्त करैत अछि । मनतोड़ियाक मन टूटि जाइत छैक । क्षणिक आवेशमे लेल गेल निर्णयक अपेक्षाकृत पारिवारिक, सामाजिक ओ सांस्कृतिक व्यवस्थाक मजगूती एहि कथामे देखाओल गेल अछि ।

कथाक प्रारम्भ होइत छैक झगड़ा-झंझटिसँ एवं अन्त मधुर मिलनसँ । ई मनतोड़ियासँ मानवतीक कथा थिक । मध्यक घटनाक्रमकें अत्यन्त जीवन्त, रोचक ओ मनोरम ढंगसँ प्रस्तुत कयल गेल अछि । पाठक तकर सहभागी निरन्तर बनल रहैछ । मनतोड़ियासँ मानवतीक ई कथा **सैं-बहुक झगड़ा पंच भाइ लबरा** उक्तिकें चरितार्थ करैत अछि एवं **मधुरमनि** कथाक स्मरण करबैत अछि । मनतोड़ियाक टूटल मन जुड़ि जाइत छैक- छीतनेक तार सङ ओकर मान अखण्ड रहि जाइत छैक– **की गय मानबती ! आबो नै चलबही ? ......की गय ? आब हमरा तोहर पयर पकरहि पड़त । केहन निष्ठुर छें ? चल गामपर, कहबें तँ पयरो जाँति देबौ** (हत्थाजोड़ी; पृ.-36) ।"

रामदेवबाबूक कथामे नारी-पात्रक मनक सुकुमारता जाहि यथार्थ ओ सजीवताक संग चित्रित भेल अछि, तकर परख ओ मूल्यांकन कोनो नारी हृदये कऽ सकैत अछि, यथार्थता ओ जीवन्तताक प्रामाणिकता सिद्ध कऽ सकैत अछि । एतऽ हम किछुए कथा-प्रतिनिधि कथा सभक चर्चा कयलहुँ अछि । उपर्युक्त चर्चित तीनू कथा संग्रहक अनेक कथा एहि श्रेणीक अछि- **जलक तलपर लिखल नाम, मङली मायक बकरी, भसियाइत दीयर, बट-गाछक छाहरि, परमिलिया** आदि-आदि । रामदेवबाबूक कथाक नारी चरित्रक तन्नुक भावक अत्यन्त तन्मयता एवं रागात्मक एकात्मताक संग अभिव्यक्तिक प्रसंग कुलानन्दमिश्रक निम्न उक्ति हमरा स्मरण भऽ रहल अछि– **मोनक सुकुमारता, मनोवैज्ञानिक नजरि आ सामाजिक प्रश्नक प्रति अनुरक्ति रामदेवझाक कथा संसारकें फराक आ नितान्त अपन रंग-रूप प्रदान कयलक अछि ।"**

रामदेवबाबूक एहि निजताक वैशिष्ट्यकें डा. जयकान्तमिश्रक शब्दमे देखल जा सकैछ–

Dr. Ramdeo Jha has attempted to paint similar aspects of life, particularly among the lower classes in the new manner taking up the little, insignificant things that matter for a happy and successful life."

कथाक भावभूमि, उपस्थापन एवं नारी चरित्रक उदात्त स्थिति जे अत्यन्त भावप्रवणताक संग चित्रित भेल अछि, से रामदेवबाबूकें एकटा विशिष्ट श्रेणी प्रदान करैत छनि ।

●

Scanned by CamScanner

रामदेवझाक कथामे नारी-विमर्श

डा. श्रीमतीइन्दिराझा (दरभंगा)

नारी एवं पुरुषक सम्बन्धकेँ परिभाषित करबाक अधिकार आइ धरि पुरुषेकेँ रहलनि अछि। नारीक गुण-दोषक विचेचना सेहो पुरुषे करैत छथि तथा हुनक निर्णय कतिपय सामाजिक एवं शारीरिक दुर्बलताक कारणे नारीकेँ मानबाक बाध्यता रहलनि अछि। आइ समाजमे देखल जा रहल अछि जे नारी अपन शक्तिक उपयोग करऽ लगलीह अछि तथा पूर्वमे जे हुनक आचरण एवं व्यवहार होइत छलनि ताहिसँ भिन्न आचरण आजुक नारी, समाजमे कऽ रहलि छथि। आजुक नारी-लेखनमे जे नारी ओ पुरुषक सम्बन्धक वर्णन हम सभ पबैत छी ताहिमे नारी आब 'बजैत' छथि 'समानताक' गप्प करैत छथि आब ओ प्रेमी, पति, पिता, भाइ, पुत्र, समाजक हाथसँ प्रताड़ित नहि होअऽ चाहैत छथि। अपन अस्तित्वक बोध समाजकेँ करबैत छथि। आजुक साहित्यमे नारी एक गृहणीक रूपमे मात्र वर्णित नहि छथि जनिक कार्य-सीमा घर चलायब तथा मातृत्व सुख भोगब मात्र रहि गेल होइनि अपितु ओ प्रत्येक कार्य क्षेत्रमे समान भागीदारीक गप्प करैत छथि।

पूर्वमे नारीकेँ सामाजिक-धार्मिक छहरदेवालीमे बान्हि कऽ राखल जाइत रहनि आ कहल जाइत रहनि जे-ओ पतिकेँ परमेश्वर बूझि वटसावित्रीक व्रत करैत बाहरी दुनियाँसँ कोनो सरोकार नहि राखथु। आइ धरि प्रेमसँ बान्हि ओ घरमे कतेक राखल गेलीह से नहि जानि परन्तु प्रताड़नाक भय, पापक भयसँ निश्चित रूपेँ सिसकैत ओ घरक छहरदेवालीमे दम तोड़लनि अछि। कमलादास सदृश लेखिका पारम्परिक विवाह संस्थाक विरुद्ध स्वर उठौलनि अछि जे आबक नारी सुखी पत्नीक 'अभिनय' नहि करतीह।

एकटा दीर्घ संघर्षक पश्चात् नारीक सन्दर्भमे फेमिनिज्मक चर्चा आब समाज करैत अछि परन्तु एखनहुँ समाजमे बहुसंख्यक नारी जँ अर्थोपार्जन करितो छथि तँ ओकरा खर्च करबाक अधिकार पुरुषेकेँ छनि। नारी यदि दावा करितो छथि तँ बहुत विरोधक सामना हुनका करऽ पड़ैत छनि। श्री रामदेवझाक कथा चालीस-पचास दशकक ग्रामीण परिवेशक, विभिन्न वर्गक नारीक कथा थीक। ओहि कालक परिस्थिति एवं मनोदशाक वर्णन रहितहुँ अनेक दृष्टिसँ सार्वभौमिक धरातलपर नारी चरित्र सभकेँ उतारल जा सकैत अछि। नारी मनोविज्ञानसँ पूर्ण भिज्ञ लेखक अपन सशक्त लेखनीसँ नारीक अशिक्षा, असमर्थता, विपन्नता, अर्न्तव्यथा, एकाकीपनक संग हुनक क्षमाशीलता, विवेकपूर्णता, समदर्शिता आदिक सटीक चित्रण कयने छथि। नारी प्रधान कथा सभक माध्यमसँ समाजक विभिन्न आकृति-विकृतिसँ कथाकार अपन पाठककेँ भिज्ञ करौने छथि। वर्त्तमान कालमे लिखल कथामे वर्णित नारी सभ आजुक कसौटीपर बहुत पुरातन छथि। आजीमाँ, सुरजी, रामवती, हरही, सुगिया, नन्नूदाइ, रोजी, तारा, राजदुलारी, उतमी, सोनमतिया आदि विभिन्न वर्ग, संस्कृति, कालक प्रतिनिधित्व करैत छथि तथा ई सन्देश दैत छथि जे आबऽवला समय परिवर्त्तनक माँग कऽ रहल अछि। कथा सभमे वर्णित नारी चरित्र काल्पनिक नहि छथि कतहु ने कतहु बीज रूपमे उभरल, वास्तविकताक धरातलपर विद्यमान छथि। निम्न वर्गक नारी सभ शोषित होइतो अन्तमे अपन शक्तिक प्रदर्शन कयने छथि।

सुरजी, निम्न वर्गक नारी, विपन्नताक मारि सहैत नारी, जकरा अपन परिवार-रूपी गाड़ीकेँ खीचऽ लेल अपन स्त्रीत्वक बलिदान देबऽ पड़ैत छैक। सुरजी, फिल्म मदर इंडियाक नर्गिस जकाँ अपन अस्तित्वकेँ चौकीदार तथा दरोगाकेँ सोंपि सूदिमे असरफीया तथा मंगलाकेँ पोसि रहल अछि। सुरजी सन नारीक रूप, **एक खीरा : तीन फाँक** कथामे वर्णित अछि जे पुरुष जातिक मानू सम्पत्ति हो जे ककरो उपभोगे लेल जेना बनलि हो। पुरुषक दोहरा चरित्रकेँ दरसयबामे सक्षम अछि। पत्नीक अतिरिक्त आँखि सेकऽ लेल बनलि अछि सुरजी। **भसियाइत दीयर**मे रामवती दाम्पत्य

Scanned by CamScanner

जीवनक कसौटीपर पतिव्रता नारी मानल जा सकैत अछि जे अपन पतिक प्रति पूर्ण समर्पित अछि । लड़ैत-झगड़ैत, जीवनक संग सामन्जस्य बनबैत जन्म-जन्मातर धरि वैवाहिक जीवनक निर्वाह करबाक व्रत लैत अछि रामवती ।

विशुद्ध नारी पात्रसँ सृजित कथा **बटगाछक छाहड़ि**मे मरनीकेँ हरही रूपी बटवृक्षक छाहड़िक सौभाग्य नहि भेटलैक जखन कि हरही नि:स्वार्थ स्नेह, दया ओ सेवाक प्रतिमूर्त्तिक रूपमे चित्रित भेल अछि । **दोहरी दीप** कथामे माधुरी याचिका आ धात्री दात्रीक रूपमे वर्णित छथि मुदा व्यथा ओतऽ देखल जा सकैत अछि जतऽ ई धात्री सतयुगक नहि कलियुगक छथि जे कोनोटा वरदान देबामे सक्षम नहि छथि । कलियुगमे देवत्वक ह्रासक ई मार्मिक कथा अछि संगहि परित्यक्ताक रूपमे नारीक यातनाक कथा थीक **दोहरी दीप** ।

पियासल ठोर अपन नामक अनुसार एक एहन नारीक मनोव्यथा अछि जे दैवी प्रकोपसँ अतृप्तताकेँ भोगि रहलि अछि । अतृप्त पत्नीक माथपर सिन्दूरक रेखा खूब गाढ़ छैक । गाढ़ सिन्दूर श्रीरामदेवझाक अनेको कथामे, एहि बातक परिचय दैत अछि जे विवाह रूपी संस्थाकेँ बचाबऽ लेल, नारी सतत् तत्पर छथि । अनेक झंझावातकेँ सहितो, सिन्दूरक मर्यादाक निर्वाह करब एकोटा नारी कखनहुँ नहि बिसरैत छथि ।

दुतियाचानः तुलसीदलमे एक एहेन नारीक वर्णन अछि जकर अव्यक्त व्यथाकेँ बूझऽ लेल संसारमे केओ नहि तैयार छैक । कन्याक विवाह एकटा सामाजिक समस्या ओ ओकर जीवन कोना एकटा अभिशाप बनैत अछि तकर सटीक चित्रण सोमाक मनोकथा ओ मनोव्यथामे भेटैत अछि । **शीतल बाती**क नन्नूदाइ नारीक एकटा दुर्भाग्यपूर्ण स्थितिक रूपमे वर्णित भेलीह अछि । बाल-विधवा नन्नूदाइकेँ अपन वैधव्य जीवनकेँ बचयबाक क्रममे अनेक तरहक लांक्षणा सहऽ पड़ैत छनि, जेना डाइनक अपवाद इत्यादि । अपन स्त्रीत्वक रक्षा करऽमे कतेक तरहक परिश्रम ओ त्याग करऽ पड़ैत छनि तकर मार्मिक कथा अछि— **शीतल बाती** ।

नारिकेरमे नारीक वात्सल्यमयी मातृरूपक वर्णन अछि जाहिमे जुआनि बेटीक रक्षा हेतु ऊपरसँ विरूप, कठोर खपलोइया आ भीतरमे ढकर-ढकर सुस्वदु-मधुर पानि सन बनऽ पड़ैत छैक । एहि कठोरताक पाछू कारण अछि ओ कटु सत्य- **बिनु माय-बापक जुआनि बेटी बतासा होइत छैक, जे देखत सैह फोड़ि देबऽ लेल वृत्त ।'** लेखक एहि कथामे जतऽ एक दिस जुआनि बेटीकेँ पौतीमे नुका कऽ रखबाक प्रयोजनपर बल देलनि अछि ओतहि नारी-शिक्षा कतहु संस्कारकेँ नष्ट नहि कऽ दिअय तकर भय सेहो व्यक्त कयलनि अछि- **आइ भगवतीकेँ साँझो पड़तनि की ओहिना रहतीह ? बेटी-डाँटीकेँ पढ़ौने-लिखौने यैह सभ होइत छैक की ? अपन आचार-व्यवहार सभकेँ बिसरि जायब ।'**

मनुक सन्तानमे, गरीबी ओ नजरिक मारि सहैत निम्नवर्गक, नारीक वर्णन अछि जकरा उच्च वर्गक पुरुष दिनुका इजोतमे भने हाथसँ तँ स्पर्श नहि करैत छैक परन्तु नजरिसँ स्पर्श करबामे कनेको संकोच नहि होइत छैक । एहि कथामे कथाकार नारी शोषणक विरुद्ध स्वर सेहो उठौने छथि । **परती**क रोजी, तारा ओ राजदुलारी एहने तीन नारी चरित्र अछि जे राधामोहनकेँ अन्तमे ई विश्वास दिया कऽ छोड़ैत छैक जे विवाह एक एहेन सामाजिक संस्था अछि जे कोनो पुरुषकेँ एखनहुँ एकर आदेश नहि दैत छैक जे ओ मनमानी कऽ सकय । राजदुलारी बहिकिरनी अछि राधामोहनक घरमे । ओकर हाथ जखन राधामोहन पकड़लकैक तँ राजदुलारी ने छटपटायलि आ ने किछु बाजलि आ ने हल्ले कयलक मात्र हँसि कऽ कहलक— **बहुआसिन अबैत छथिन । आ राधामोहन बक दऽ छोड़ि देलकैक राजदुलारीक हाथ ।** ई घटना उपर्युक्त कथनकेँ पुष्ट करैत अछि— **धरती तँ बाँझ नहि होइत छैक...... ओ तँ आवेश मङैत छैक । जे जतेक आवेश देतैक तकरा ततेक ओकर मात्सर्य भेटतैक ।'** एकर अनुभव भेलाक बाद राधामोहनकेँ बुझा गेलैक जे रोजी आ राजदुलारी छलना ओ मृगमरीचिका छैक ।

नकली आदमी कथामे वर्णित नारी पात्र सभ लघु चरित्रक अछि । राजदुलारी, सुदामा मिथिलाक विवाह-दुरागमन परम्पराक विधि-व्यवहारसँ भिन्न करबैत अछि ।

लेखक नारी मनोविज्ञान ओ ओकर स्वभावसँ पूर्ण परिचित छथि-**...कुमारि कन्याक विवाहक प्रसंग उठाओल**

Scanned by CamScanner

जाय, ओकर नारी गुणक प्रशंसा कयल जाय तँ अनायासे ओकर मुखमंडल लज्जा ओ संकोचसँ रक्ताभ भऽ जाइत छैक। **परमिलिया** एक आदर्श पुत्रीक रूपमे वर्णित अछि जकरा अपन पुतोहु बना केओ धन्य भऽ सकैत अछि। **परमिलिया** कथामे लेखक नारीक पुत्री रूपक चित्रण कयने छथि जे अपन सदाचरणसँ सभक हृदयमे स्थान बना लैत अछि।

उतमीक कबुला-पाती मिथिलाक नारी समाजमे व्याप्त अन्धविश्वास ओ अज्ञानताकेँ देखबैत अछि। मुख्य रूपसँ निम्नवर्गीय नारी-जे रोजी रोटी लेल, कमाय लेल नित्य दिन निकलैत अछि जेना कुजड़नी, दूधवाली, गोइठावाली, घासवाली आदि जकरा नित्य बजार-हाटक लफन्दर-उचक्का सभ कोना प्रताड़ित करैत छैक तकर जीवन्त वर्णन **एकटा रहय उतमी**मे भेटैत अछि। जीवनमे कतहु पढ़ल नैतिकताक पाठ उतमीकेँ अनीतिसँ प्राप्त दु टकही आ परिश्रमसँ प्राप्त घासवला पाइकेँ एकट्ठा नहि करऽ देलकैक। उहापोहमे, सत्य-असत्यक द्वन्द्वमे 'सधवा उतमी' हाथमे लाहक बोन पहिरनहुँ मनझनिया मसोमात बनि कऽ भोट तँ दऽ आयलि मुदा एहि पापक बोझकेँ ओ उठा नहि पाबि रहल छलि, अनायास खूटसँ दूटकही खसि पड़लैक तँ ओ आश्वस्त भऽ गेलि जे ओकर पति जीबैत रहतैक आ ओ टाका लऽ कऽ मसोमात बनि भोट खसयबाक पापसँ मुक्त भऽ गेलि।

कहाँ छेँ रे नुनुआँक सोनमतिया एकटा एहन नारी पात्र अछि जे अपन समस्त ममता एकटा नवजात टुगर पठरूक प्रति उझीलि दैत अछि आ अपन छातीक दूध पिया ओकरा पोसैत अछि। सोनमतियाक मातृत्त्व असामान्य ओ असाधारण छैक।

अन्ततः दृष्टिपात करी हम सभ कथाकारक **आजीमाँ**क चरित्रपर जे सर्वोत्कृष्ट नारीक रूपमे हुनक लेखनीसँ सृजित भेल छथि। जाहि देशमे नारी पूजिता छथि ततहि देवता रमैत छथि ई शास्त्रोक्ति चरितार्थ होइत अछि **आजीमाँ** कथाक आजीमाँक चरित्रमे। चतुर्थीक रातिमे अतुल अपन नवविवाहिता पत्नी सरस्वतीकेँ अपन आजीमाँक विराट चरित्रक वर्णनक माध्यमसँ आदर्शक प्रस्तुतिक संग अपन पत्नीकेँ ओही रूपमे त्याग, दया ओ स्नेहक प्रतिमूर्त्तिक रूपमे देखबाक कल्पना कऽ रहल अछि।

वर्त्तमान पीढ़ीक सरस्वतीकेँ हुनकासँ उपरका चतुर्थ पीढ़ीक नब्बे-पन्चानबे वर्षक सरस्वती उठबैत छथिन अर्थात् हुनक विवाहक समस्यासँ हुनका उबारैत छथिन। बिना दहेजक विवाहक प्रति अविश्वसनीयता तथा भ्रान्ति समाजमे एक विकट समस्याकेँ जन्म देलक अछि। दहेज नहि लेनिहारक मोनमे हीन-भावनाक उत्पत्ति कयल जाइत छैक। एहेन परिस्थितिमे आजीमाँक ई कथन-**वरकेँ एक जोड़ धोती आ कनियाँकेँ एक खण्ड साड़ी आ दूबि-धान दऽ विदा कऽ देबैक,** लोककेँ अचम्भित कऽ सकैत छैक।

संयुक्त परिवारकेँ बान्हि कऽ रखबामे नारिये सक्षम छथि तकर उदाहरण छथि आजीमाँ। आजीमाँ विश्वासपूर्वक अपन पौत्रकेँ अपन निर्णय सुनबैत कहैत छथिन- **हिनका हम अतुलक संग वाक दऽ देलियनि अहाँक की विचार होइए?'** पोताक सहज उत्तर-**अहाँ वचन दऽ देलियनि तँ भऽ गेलै।'** घरक सर्वश्रेष्ठ महिलाक वचनक ई सम्मान एहि बातक द्योतक अछि जे संयुक्त परिवार अपन समाजक अमूल्य धरोहर छल।

आजीमाँक अतीतपर प्रकाश दैत अतुल अपन पत्नी (सरस्वती)केँ कहैत अछि- **हमर आजीमाँ सरस्वतीक संग लक्ष्मीयो छथि।'** आजीमाँक विवाहमे गरीबी व्यवधान रहनि, ओहि समयमे कन्याक पन्द्रह-सोलह वर्षक भऽ जायब स्वयंहिमे विलम्बसँ विवाहक उदाहरण छल। 'आजीमाँ ओहि समयमे बोधगरि छलीह- **टुगर बच्चाकेँ अपन स्थितिक बोध अपन तुरिया सबसँ पहिनहि भऽ जाइत छैक।' राता-राती चलू अपन गाम**-ई क्रान्तिकारी निर्णय आजीमाँ लेने छलीह आ अपन पतिक संग विदा भऽ गेल रहथि बिना ककरो कहने-सुनने। सासुर अयलाक बाद सुनऽ लेल भेटनि- **एकटा मौगीकेँ कतऽसँ उठा अनलक अछि।'** ई व्यंग्य, लांछना सहितो सरस्वती (आजीमाँ) संघर्ष कयलनि- **आजीमाँक आँचरक शीतल छाया हमर बाबा-बाबी, माय-बाप, काका-काकी, आ हमरा सभ भाइ-बहिनकेँ भेटि रहल अछि।'**

आजीमाँक परिवारमे बेटीक बियाहमे तिलक देल जाइत छलनि मुदा बेटा बियाहमे तिलक कहियो ने लेल गेलनि। तेँ हेतु अतुल लेल ई नव बात नहि रहनि।

Scanned by CamScanner

कन्याक नाम (अतुलक होअऽवाली पत्नीक) सरस्वती सुनितहि आजीमाँकेँ एक युगक बाद हुनका अपन नाम मोन पड़ि गेलनि । आर ओही संगे मोन पड़लनि– **ई कन्या ओही गामक थीक जतऽ हमरो जन्म भेल छल आ जकरा हम बिसरि गेल छलहुँ । ई कन्या हमरा नैहर मोन पाड़ि देलक ।** तेसर इहो मन पड़लनि जे– **ई कन्या ओही जोतखीजीक सन्तान थिकनि जे आजीमाँक विवाह करौने छलथिन ।** जोतखीजी आशीर्वाद देने रहथिन आजीमाँकेँ एकसँ एकैस होयबाक । हुनकहि आशीर्वादक फल छलनि एहेन परिवार आ एतेकटा राज–पाट ।

अतुलकेँ आजीमाँ कहलथिन– **तोहर परबाबा विवाह आ चतुर्थीकर्मक दक्षिणा जोतखीजीकेँ नहि दऽ सकल छलथिन । जोतखीजीक प्रपौत्र जयनाथकेँ तोहर बियाहक वाक् दऽ हुनक दक्षिणा चुका रहल छियनि । बौआ, हमरासँ गलती भेल होउ तँ बुढ़िया जानि माफ कऽ दिहैँ ।'**

सरस्वतीक सौंसे देह भुलुकि गेलैक । ओ सहटि कऽ अतुलसँ सटि गेलि । अपन दूनू हाथक बीचमे आँचर राखि माथमे सटबैत बाजलि-हम ओहि महादेवीकेँ प्रणाम करैत छियनि ।'

आजीमाँ अपन परिवारक सुप्रीमकोर्ट छलीह ओ महादेवी छलीह तेँ हुनका हृदयमे ई विश्वास भऽ गेलनि जेना जोतखीजीक आशीर्वाद हुनका प्रतिफलित भेलनि तहिना जोतखीजीक परिवारक सरस्वतीकेँ सेहो आशीर्वाद भेटतनि आ अतुलक संग इहो एकसँ एकैस होयतीह ।

आजीमाँ प्रारम्भमे गरीब रहितहु, नैतिकताक कसौटीपर सभसँ प्रखर नारीक रूपमे सर्वगुण सम्पन्ना दृष्टिगोचर होइत छथि । उतमी गरीबीक मारिकेँ सहैत यदि पथसँ च्युत् होइतहु अछि तँ तुरत सम्हरि जाइत अछि । सुरजी परिस्थितिक समक्ष हारि जाइत अछि तथा अपन अस्मिताकेँ सम्हारि कऽ नहि राखि पबैत अछि । कथाकार साहित्यक दर्पणमे आजीमाँ, सुरजी तथा उतमी रूपी नारीक छवि समाजकेँ देखा कऽ ई निर्णय नारी समाजक ऊपर छोड़ि देलनि अछि जे एकर विमर्श ओ स्वयं करथि जे हुनका की बनबाक छनि । पहाड़पर चढ़ब कठिन कार्य होइत छैक, सुरजीसँ उतमी आ उतमीसँ आजीमाँ बनब एक कठिन तपस्या ओ साधना थीक । स्वस्थ समाज ओ राष्ट्र निर्माण लेल परमावश्यक अछि जे अधिकसँ अधिक आजीमाँ समाजकेँ अपन नेतृत्व देथि ।

लेखक–साहित्यकारक ई पुनीत कर्त्तव्य होइत छनि जे ओ एक नीक डाक्टर जकाँ समाजकेँ रोगमुक्त करथि । आजीमाँ, उतमी तथा सुरजीक अनुपात जखन बिगड़ि जाइत छैक तँ समाजक पतन होअऽ लगैत छैक । कथाकार नारी–चरित्रक संग पूर्ण न्याय कयने छथि तथा बिना पुरुष वर्गक संग पक्षपात कयने अपन सभ नारी पात्रकेँ ई अवसर देने छथि जे अपन भूमिकाक ओ निर्वाह करथि । यैह कारण अछि जे सभ नारी चरित्र एक स्थायी प्रभाव पाठकक मानस पटलपर छोड़ैत छथि ।

वर्त्तमान समयमे भारतीय महिला उपन्यासकार लोकनि जेना गीता हरिहरन, शशि देशपांडे, अरुन्धती राय, मीना एलेक्जेन्डर, मंजू कपूर आदि पूर्ण निष्ठा एवं इमानदारीक संग नारीक शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक तनावक विवेचना कयलनि अछि । एहि परिप्रेक्ष्यमे श्रीरामदेवझा द्वारा अपन कथामे चित्रित नारी आब समाजसँ लुप्त भऽ रहल छथि । यदा–कदा यदि हुनक दर्शन होइतहु अछि तँ आचार–व्यवहारमे भने ओ ओहि कालखंडक प्रतिनिधित्व करैत होथि जाहि समयक ओ छथि परन्तु हुनक भाषामे 'मनसा'क बदला 'जेन्ट्स' 'घुरती'क बदला 'रिटरनिंग' 'टिकस'क स्थान पर 'टिकिट' आदि शब्दक प्रयोगसँ ओ अपनाकेँ आधुनिका बना रहल छथि ।

नारी शिक्षाक प्रचार–प्रसारसँ नारीक दिशा ओ दशामे अपेक्षित सुधार होयत । एखन यात्रा बहुत लम्बा करऽ पड़तनि मिथिलाक–नारीकेँ, अपन अधिकार ओ स्थान प्राप्ति हेतु ।

●

Scanned by CamScanner

छोटका लोकक पैघ कथाकार

डा. श्रीतारानन्द वियोगी

मैथिलीक आधुनिक कथा-साहित्यक इतिहासमे रामदेवझाक बड़ पैघ स्थान छनि । मैथिलीक कथा-यात्राक विकासमे हुनकर योगदान तँ अविस्मरणीय छनिहे, कथा-प्रासादक ओ एक एहन स्तम्भ छथि, जनिका नहि भेने निश्चिते एकर सर्वांगता खंडित होइत । मुदा, हुनक कथा-साहित्यक मूल्यांकन ढंगसँ नहि कयल जा सकल अछि । तकर दू गोट कारण भेल । पहिल तँ ई जे एक मर्मस्पर्शी कथाकारक अतिरिक्त ई मैथिली शोध-आलोचनाक एकटा आचार्य सेहो रहलाह आ मैथिलीसम्बन्धी गतिविधिक एकटा एक्टिविस्ट सेहो । दुर्योग भेल जे हुनकर आचार्यत्व आ एक्टिविज्म हुनक एहि सुन्दर कथाकारकेँ सभ दिन जँतने रहल आ सामान्यतः एही आलोकमे हुनक रचनाशीलता समीक्षित होइत रहलनि । दोसर कारण भेल जे आधुनिकताक जाहि मुखर कालखण्डमे रामदेवझा कथा-सृजन कयने छलाह, से पाश्चात्य प्रभावक धकापेलक युग छलैक ओ तैखन अपन माटिपानिसँ कतहु बहुत बेसी, आयातित नवता-बोधक मूल्य आँकल जा रहल छलैक । आ, एम्हर ओ लिखि रहल छलाह- ठेठ मिथिलाक अन्तिम तलपर ठाढ़ वंचित मनुक्खक कथा, जतऽ आधुनिकताक कोनो प्रवेश नहि छलैक आ जतऽ 'मैथिल' होयबाक दीप्त अस्मिता-बोध सेहो नहि छलैक । मुदा, जतऽ अपन परिपूर्ण ऊष्माक संग जीवन आ जीवन्तता लहराइत छल आ जतऽ मिथिलाक सर्वहारा संस्कृति अपन पर्याप्त प्रस्फुटन प्राप्त कयने विद्यमान छल । ई मुदा तहियाक चलनक विरुद्ध छल । आइ जखन भूमण्डलीकरण, नवसामन्तवाद, बाजारबाद आदि नाना रूपधारी दानवक प्रवाहमे गाम उजड़ि रहल अछि, सांस्कृतिक निजता मटियामेट भऽ रहल अछि आ समकालीन साहित्य अपन सक्क भरि मिथिलाक अस्मिता आ निजताक विमर्शकेँ अभिव्यक्ति देबामे लागल अछि आ एहि प्रकारक बोध-संग पूर्वमे काज कऽ चुकल अपन पूर्वज-अग्रजक पुनःमूल्यांकनक प्रयासमे लागल अछि, रामदेवझा, हुनक कथा-दृष्टि आ हुनक कथा-संसार अपन पर्याप्त महत्त्वक संग दृष्टिपटलपर आबि रहल अछि ।

एहि ठाम ईहो बात मोन रखबाक चाही जे अपन समकालीन कथाकार लोकनिमे रामदेवझा एसकर कथाकर नहि छथि जे ताहि दिनुक मिथिलाक ठेठ संस्कृतिक, वंचित समुदायक आ तकरा भीतर चलैत घात-प्रतिघातक कथा लिखलनि । मुदा, एहन अनेको कथाकार लोकनिमेसँ रामदेवझा, आइ सर्वाधिक प्रासंगिक आ पठनीय बनल छथि तँ तकर मूल कारण थिक हुनकर कथा-कला । हमरा लोकनि अवगत छी जे कथा अपन मूल स्वभावमे जीवनक उपस्थापन नहि थिक । ओ थिक वस्तुतः जीवनक पुनःसृजन । कोनो कथाकार एक संवेदनशील व्यक्तिक रूपमे समाजमे आ जीवनमे जे किछु देखैत अछि, से ओकर अनुभव भऽ सकैत छैक मुदा ओकरा एकटा कथा-कृति बनबाक लेल ठीक ओहिना रचऽ पड़ैत छैक, जेना कोनो चित्रकार दुनियामे देखल कोनो दृश्यकेँ कैनवासपर पुनःसृजित करैत अछि । एकटा सृजन तँ ओकरा मोनमे चलैत छैक, जतऽ ओ दुनियामे देखल-भोगल वस्तुमेसँ किछुकेँ छाँटैत अछि, किछुकेँ चुनैत अछि । एहि ठाम ओकर माध्यम भने भावना आ बुद्धि होइक, मुदा पुनःसृजन तँ ओकरा शब्देसँ करऽ पड़ैत छैक । यैह कथाकारक निजता होइत छैक । कहबाक चाही जे रामदेवझा अपन एहि कलामे ततेक माहिर छथि जे हुनका द्वारा पुनःसृजित मिथिला एक विमर्श बनबाक हद धरि सम्बद्ध भऽ जाइत अछि । यैक कारण थिक जे अपना युगमे अपना विषयक प्रतिनिधि रचनाकार होयबाक यश वैह प्राप्त करैत छथि ।

देखबाक चाही जे ओ अपन कथाकेँ कोना कऽ रचैत छथि !

कथाकार रामदेवझाक सभसँ पैघ विशेषता तँ ई थिकनि जे चूड़ान्त ओ एक खिसक्कड़ व्यक्तित्व पौने छथि ।

Scanned by CamScanner

एहि अर्थमे ओ भारतीय परम्पराक ओहि विरल वर्गमेसँ अबैत छथि जे अपन सम्पूर्ण अनुभवकेँ मनोरम आख्यानमे रूपान्तरित कऽ कऽ नवका पीढ़ी धरि पहुँचा देबाक सिद्ध कला जनैत छल। तथ्यकेँ खिस्सामे रूपान्तरित कऽ देबाक यैह कला परम्पराक संचरण आ ओकर अद्यतनीकरण करैत रहल अछि। हुनक कोनो गोट कथाकेँ अहाँ देखी, सगरे ई गुण देखाइ पड़त। जाहि लोकक कथा ओ कहलनि अछि, तकर सांस्कृतिक परम्पराक संचरण आ अद्यतनीकरण, दुनू करैत ओ पाओल गेलाह अछि। **धरतीमाता**क कथा-नायक आयोध्या जँ शहरक ठीक-ठाक नोकरीकेँ छोड़ि कऽ गाममे किसानी करबाक निर्णय लैत अछि तँ से ओकर छुच्छ भावुकता नहि छिऐक। कथाकार जाहि तरहेँ घटना आ तथ्यकेँ प्रस्तुत कयलनि अछि, ताहिसँ क्यो पाठक अयोध्याक निर्णयक प्रति असहमत भने भऽ जाओ, ओकर औचित्यकेँ नकारि नहि सकैत अछि। एना कोना भऽ पबैत अछि ? रामदेवझा अपन एहि कथामे तथ्यक रूपान्तरण एहि मर्मस्पर्शिता आ कलाकारीक संग कयलनि अछि जे परम्पराक संचरण अयोध्यामे तँ होइतहि छैक (जाहि कारणेँ ओ ई निर्णय करैत अछि), ताहिसँ आगू बढ़ि कऽ पाठक धरिमे ई प्रवाहित होअऽ लगैत छैक। ओम्हर पृष्ठभूमिमे छैक शहरक सुविधासम्पन्नता आ गामक पिछड़ापन। एहि पृष्ठभूमिमे आबि कऽ ई तथ्य आरो प्रासंगिक भऽ उठैत छैक, कारण जे ओ परम्पराकेँ अद्यतनीकृत करैत अछि।

अपन कथाशिल्यमे रामदेवझा बेस पारम्परिक देखाइ पड़ैत छथि। अपन कथा सभमे नव-नव शैल्पिक प्रयोग ओ नहिञेक बरोबरि कयलनि अछि। मुदा देखबाक थिक जे हुनकर ई परम्पराशीलता स्वयंमे एक आधुनिकता थिक। कोना ? जाहि तरहक आ जाहि तरहेँ ओ कथा सभ लिखलनि अछि, हम सभ देखि सकैत छी जे तकर कोनो परम्परा ने तँ प्राचीन मिथिलामे छैक आ ने मध्यकालीन सामन्ती मिथिलामे। बारल आ कतिआयल लोकक कथा, ओकरे पारम्परिक शैलीमे कहबाक ई प्रयोग ठीक ओहिना एक आधुनिकता थिक जेना मुख्यधाराक लोकक कथा फ्रायड आ मार्क्सक निष्पत्तिक परिप्रेक्ष्यमे कहब एक आधुनिकता थिक। की अहाँ सोचि सकैत छी जे समकालीन भाषामे **मनुकसन्तान** सन कथा लिखब एक सामान्य बात भऽ सकैत अछि ? आधुनिकताक प्रश्न एतऽ एहि दुआरे उठा रहल छी जे रामदेवझाक पीढ़ीमे मैथिली कथाक क्षेत्रमे जते तुमुल कोलाहल व्याप्त रहैक आ नित नवीन प्रयोगकेँ आधुनिकताक नामपर चलयबाक तर्क आ औचित्य राखल जाइत रहैक, से इतिहासक एक अविस्मरणीय प्रसंग थिक। हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे छठम दशकक कथाकार लोकनिमे सँ सभक, आधुनिकताक सम्बन्धमे अपन-अपन अवधारणा छलनि आ से एक दोसरासँ भिन्न रहनि। ललितक जे आधुनिकता रहनि, से जँ राजकमलचौधरीक आधुनिकतासँ भिन्न रहनि, तँ मायानन्दमिश्र वा सोमदेव वा बलरामक आधुनिकता हुनको सभसँ फराक रहनि। समयक निहितार्थकेँ बुझि सकबाक अपन फराक-फराक अवगतिक कारणे ई सम्भव होइत छल होयत आ निश्चिते एकरा पाछू हुनका लोकनिक अपन खासमखास जीवनानुभव छल होयतनि। एहनामे रामदेवझाक अपन जे अवधारणा छनि, तकरा चाहे अहाँ हुनकर आधुनिकता कहियौन अथवा केन्द्रिय दृष्टिकोण- तकरा एहि तीन बिन्दुमे आँकल जा सकैत अछि-

1. मिथिलाक अन्तिम मनुक्खकेँ ठीक-ठीक ओही रूपमे कथामे उतारब, जेना कि ओ अपन धरतीपर जीबि रहल अछि। एक तँ यैह बात स्वयंमे खास रेखांकित करबा योग्य अछि जे ओ मिथिलाक अन्तिम व्यक्ति-शोषित-पीड़ित अबडेरल-कतिआयल व्यक्तिकेँ कथामे उतारलनि। मुदा मुख्य विशेषता हुनक ओहि कला-कौशलक छनि जे ओही रूपमे उतारलनि जेना कि ओ अपन धरतीपर जीबि रहल अछि। एहि ठाम ओहि थल्लाक दृष्टान्त देल जा सकैत अछि जकरा जखन अहाँ उखाड़ैत छी तँ ओकरा जड़िक संग लागल माटिकेँ सेहो उखाड़ैत छी। कहिये चुकल छी जे एहि माटिक सृजन कथाकार रामदेवझा अपन शब्द द्वारा, कला-कौशलक द्वारा कयलनि अछि जे कि हुनक गहन जीवनानुभवक प्रसादेँ सम्भव भऽ सकल अछि।

ई एक भिन्न प्रसंग थिक जे कोनो लेखककेँ अपन कथामे वस्तुकेँ ठीक-ठीक ओही रूपमे उतारबाक चाही नहि कि ओहिमे अपन सेहन्ता, अपन अभीप्साकेँ शामिल कऽ देबाक चाही। परवर्त्ती कथा-यात्रामे हमरा लोकनि देखैत छी जे ई अन्तिम मनुक्ख लोकनि हथियार उठा लैत छथि। एहि बातकेँ स्वीकारबामे कोनो बेसी भाङठ नहि छैक जे

Scanned by CamScanner

हिनका लोकनिक ई हथियार उठायब वस्तुस्थिति आ वास्तविकतासँ बेसी, लेखक लोकनिक अपन सेहन्ता आ अभीप्सा थिकनि । आइ भारतीय साहित्यमे चहुँदिस दलित-लेखनक चर्चा छैक । दलित साहित्यक प्राथमिक शर्त्त ई छैक जे वस्तुकेँ ठीक-ठीक ओही रूपमे साहित्यमे उतारल जाय, जेना कि ओ अपन धरतीपर विद्यमान अछि । हम बेर-बेर अनेक ठाम कहने छी जे आब दलित साहित्यकेँ अपन एहि सीमाबद्धताकेँ तोड़बाक चाही जे खाली दलितेक लिखल जीवनानुभव दलित-साहित्य भऽ सकैत छैक । अन्तर बस एतबे छैक जे, जे त्वरा दलित लेखककेँ अपन सहज जीवनानुभवसँ सिद्ध रहैत छैक, तकरा आन लेखककेँ अपन अचूक कला-कौशलसँ साधऽ पड़ैत छैक । प्राथमिक शर्त्त मुदा ई अछि जे ओहि लेखनमे, लेखक अपन सेहन्ताकेँ शामिल नहि कऽ सकैत अछि ।

रामदेवझाक कथा सभकेँ ध्यानसँ पढ़ी तँ देखब जे ओहि ठाम एक खलनायकक उपस्थिति निरन्तर बनल रहैत छैक । के थिक ई खलनायक? के थिक ई, जे एहि अन्तिम मनुक्ख सहज जीवनकेँ निरन्तर दुरूह आ दुर्वह बनबैत रहल अछि ? बहुत झाँपल-तोपल रूपमे जखन ओ देखबैत छथि तँ ई खलनायक देखाइ पड़ैए- समाज । कनेक खोलि कऽ कहैत छथि तँ- बाबू । आ पूरापूरी देखार कऽ कऽ कहैत छथि तँ कहै छथि- बाभन, जकरा लेल ओ कतोक ठाम बभना शब्दक प्रयोग कयलनि अछि । किएक थिकाह ई खलनायक? जातीय आ लिंगगत असमानताक आधारपर विभाजित समाज कहियो न्यायपूर्ण भइये नहि सकैत अछि । आ एहि विभाजित समाजक सभसँ पैघ लाभुक रहलाह अछि बाभन, जनिका रामदेवझाक कथा सभमे निरन्तर एहि अन्तिम मनुक्खक पैर तर दाबि कऽ आतंककारी वर्चस्व बनौने रखबाकक लेल अपस्यांत देखल जा सकैत अछि । **मंगलीमायक बकरी**मे बिना कोनो आक्रोश वा प्रतिरोधक ओ परिणाम प्राप्त करैत देखाइत छथि, **भितरिया धधरा**मे हुनका ठोरपर सिहकल मुसकानकेँ देखार कऽ कथाकार हुनका कनेक उघार करैत छथिन, तँ **मनुक सन्तान**मे हुनक विद्रूपा शाब्दिक प्रतिक्रिया प्राप्त कऽ लैत अछि, जतऽ रामदेवझाक पात्र अपनामे कहैत छैक- **बभना सभक खेतमे रहै छै भाङो-बथुआ नै आ अनेरे भेँ-भेँ करैत रहत ....बड़ी चंठा छै बभना ! बेतुकारे गारि पढ़ि दै छै .....।'** आदि-आदि । मुदा, ओ चाहे आक्रोशक निःशब्दता होइक वा प्रतिक्रियाक शाब्दिक अभिव्यंजना- रामदेवझा सदति अपन कथामे एक एहन मार्मिक वातावरण सृजित करैत छथि जाहिमे समाजक हृदयहीनता झकझक देखार पड़ऽ लगैत छैक । ओ चाहे **जलक तलपर लिखल नाम** सन विशुद्ध प्रेमकथा होउक, **पराजयक मुद्रा** सनक विशुद्ध दाम्पत्यकथा आ कि **बट गाछक छाहरि** सनक दलित विमर्शक कथा । समाजक हृदयहीनताकेँ नांगट-उघार करब जेना कथाकारक मुख्य चेष्टा होइनि से प्रतीत होइत अछि । ई देखार कऽ कऽ आखिर ओ कहऽ की चाहैत छथि ? हम बुझैत छी जेना हुनकर आशय होइनि- एहि जाति लिंगक असमानताक आधारपर विभाजित समाजमे सुख आ शान्ति असम्भव थिक । दोसर दिस हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे दलित-साहित्यक घोषित लक्ष्य थिक एक एहन समाजक स्थापना जाहिमे जाति आ लिंगक असमानताक आधारपर कोनो विभाजन नहि हो । तथापि, हम ई नहि कहैत छी जे रामदेवझाक कथा-साहित्य दलित-साहित्य थिक, तखन ई जरूर जे ई दलित-विमर्शक मुखर पक्षकार थिकाह ।

2. रामदेवझाक कथाक दोसर प्रमुख विशेषता थिकनि जे ओ घोषित रूपसँ ठेठ मिथिलाक जीवन-शैली, चिन्तन-शैली आ अभिव्यक्ति-शैलीकेँ एक विमर्शक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि । ई ठेठ मिथिला, की भेल? मुदा ताहूसँ पहिने प्रश्न अछि जे ई मिथिला की थिक ? की थिक एकर परिचिति? आधुनिक समाजशास्त्री यथा डा. हेतुकरझा लोकनिक कहब छनि जे मिथिलाक अस्मिता (identity) थिक- विद्या आ व्यक्तित्व । हम प्रश्न करऽ चाहब जे ई विद्या आ व्यक्तित्व कोन मिथिलाक अस्मिता थिक ? जकरा लगमे ने विद्या छैक आ ने व्यक्तित्व, आ एखनहुँ मिथिलाक बहुसंख्यक आबादी एहने छैक, तँ तकर कोनो मिथिला छैक कि नहि? आ तकर कोनो अस्मिता छैक कि नहि ? आ तकर सभक अस्मितासँ मिथिलाक कोनो अस्मिता बनैत छैक कि नहि ? से कि समाजशास्त्री लोकनिक दृष्टिसँ एखनहुँ ओझल छनि ! यैह थिक ठेठ मिथिला ? एहि मिथिलामे किसान बसैत छथि, मजूर-बोनिहार बसैत छथि, श्रमशील स्त्रीसमुदाय बसैत अछि । यैह मिथिला भरण-पोषण करैत रहलनि अछि ओहि पण्डित-वर्गक जनिकर अस्मिता थिकनि-विद्या आ व्यक्तित्व !

Scanned by CamScanner

रामदेवझाक कथा सभकेँ देखि जाउ। हुनकर कथानायक सभ, पात्र सभ वा तँ किसान छथि, मजूर छथि वा जँ स्त्री छथि तँ श्रमशील स्त्री छथि। कहबे कयलहुँ जे हिनका लोकनिक एकदम जीवन्त आ मुखर चित्रण कयलनि अछि ओ, जाहिमे सांस्कृतिक तत्त्व पूरमपूर भरल छैक। स्वाभाविक थिक जे एहन गहमागह चित्रांकनमे एहि वर्गक अस्मिता उभरि कऽ सामने आबि जाइक। से निश्चिते आबि गेलनि अछि। आ से भकरार भऽ कऽ अयलनि अछि। हम प्रस्ताव करैत छी जे रामदेवझाक कथा-साहित्यक आधारपर पद्धतिबद्ध ढंगसँ ठेठ मिथिलाक समाजशास्त्र लिखल जाय आ एकर अस्मिता जोखि-सहियारि कऽ आ तकरा शामिल कऽ कऽ अखण्ड मिथिलाक अस्मिता निर्धारित कयल जाय। अन्यान्य अनेक क्षेत्रमे साहित्यक आधारपर समाजशास्त्रीय अध्ययन आ निर्धारण भेबे कयलैक अछि, से मात्र मैथिलीएटामे एखन धरि नहि भेल अछि।

एहि अस्मिता-विमर्शकेँ लऽ कऽ कथाकार रामदेवझा पूर्ण प्रतिबद्ध देखाइत छथि। हुनक प्रायः सम्पूर्ण कथा-लेखन तँ एहि वंचित समुदायक ठेठ मिथिलाकेँ लऽ कऽ कयले गेल अछि, हुनकर कथा सभमे जतऽ कतहु सम्भ्रान्त वर्ग आयल अछि, ओकरा चरित्रमे एकटा स्फुट खलनायकत्व आरोपित कयल गेल अछि। **एक खीराःतीन फाँक**क हरदेवसिंहक ई खलनायकत्व जतऽ एक दिस मुखर रूपमे पाठकक सोझा उपस्थित होइत छैक तँ दोसर दिस **बसातक दाम**मे प्रोफेसर साहेबक, दलितवर्गक नैतिक अवधारणाक प्रति हुनक अज्ञानता सांकेतिक व्यंग्यक रूपमे आयल अछि।

कोनो साहित्यिक रचना एकटा पाठ स्तरसँ आगू बढ़ि कऽ एकटा विमर्शक रूपमे परिणत भऽ जाय, एकरा लेल जरूरी छैक जे कलात्मक स्तरपर ओ एक परिपूर्ण कृति हो। आ हमरा बुझने कोनो कलाकृतिक पूर्णता एहि बातपर निर्भर छैक जे लेखक जे किछु मानैत अछि, तकरा अपन रचना-कौशल, वातावरण-निर्माण आ वस्तु-विवरण द्वारा तेहन परिस्थिति उत्पन्न कऽ दिअय जकरा मानबाक लेल पाठक सेहो बाध्य भऽ जाय। ई बात हमरा लोकनि रामदेवझामे प्रचुरताक संग देखैत छियनि। **बसातक दाम** कथामे ओ दलित वर्गक नैतिकता-समबन्धी चिन्तन-पद्धतिक प्रश्न उठौलनि अछि। जखन एकदिन अकलबेरियामे सरबन, प्रोफेसर साहेबकेँ भरि मोन जाँति दैत छनि तँ ओ आन दिनसँ बेसी मजूरी ओकरा देबाक लेल प्रस्तुत होइत छथि, मुदा सरबनक नैतिक स्तर ई अछि जे उचितसँ बेसी मजूरी पाबियो कऽ ओ लेबासँ अस्वीकार करैत अछि, एहि आधारपर जे एहि भयाओन गरमीमे ओ तँ समय कटबाक लेल आ पंखाक बसात खयबाक लेल प्रोफेसरक कोठलीमे आयल छल। एहि सूरतिमे ओ मजूरी कोना लऽ सकैत अछि ? **हत्याजोड़ी** कथामे ओ स्त्रीक हकक प्रश्न उठौलनि अछि, जतऽ हमरा लोकनि देखैत छी जे पत्नीक हकसँ किछु आगाँक वस्तु, स्त्रीक हक थिकैक जे लिंगगत समानताक सिद्धान्तपर अवलम्बित छैक आ जकरा पयबाक लेल कोनो निष्ठावती पत्नी अपन पतिकेँ आनसँ पिटबा सकैत छैक। एहि तरहक विशेषता रामदेवझाक कथा सभमे अधिकांश ठाम भेटत। कहबे कयलहुँ जे काल परिस्थितिवश हुनका कथा सभकेँ ठीकसँ देखल नहि जा सकल अछि। तेँ एहि दिस आलोचकक ध्यान नहि गेल होइनि, से सम्भव।

रामदेवझाक कथा-कलाक खास विशेषता थिकनि जे ओ बहुत आरामसँ 'पाठ'केँ 'विमर्श'मे रूपान्तरित कऽ दैत छथि। हुनक प्रत्येक कथाक कथ्य किछु कहैत (Telling), किछु प्रस्तावित करैत प्रतीत होइत अछि। पाठक ई रूपान्तरण ठेठ मिथिलाक अस्मिताकेँ चिन्हार करैत देखाइ दैत अछि। हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे एहि बात सभक एकटा ऐतिहासिक महत्त्व छैक। हमरा लोकनि अवगत छी जे स्वतन्त्रताक बादो, जखन देस-दुनिआक परिस्थिति बदलि गेल छल आ दरभंगा-राज समापन दिस अग्रसर छल तखनहु, मैथिल महासभाक 1954क सहरसा अधिवेशनमे जखन ब्राह्मण आ कर्णकायस्थसँ इतरो जातिकेँ मैथिल मानि लेबाक प्रस्ताव राखल गेल छल तँ एकर बहुत विरोध भेल छलैक आ ई प्रस्ताव अमान्य कऽ देल गेल छल। यैह कालखण्ड छल जखन कथाकार रामदेवझाक मनोनिर्माण आ पक्षनिर्धारण भऽ रहल छलनि आ ओ कथा लिखब आरम्भ कऽ रहल छलाह। एहना स्थितिमे ठेठ मिथिलाक दशाकेँ एक विमर्शक रूपमे कथामे उठायब आ ताहिमे स्वायत्त अस्मिताक खोज करब आ एहि प्रयासमे निरन्तरता सेहो बनौने राखि सकब- एक मौन आन्दोलनसँ कम नहि थिक। ई एक एहन बात- सन हमरा देखाइत अछि जे जेना-जेना समय आगू बढ़ैत जेतैक, रामदेवझाक कथाकारक कद उत्तरोत्तर पैघ होइत जयतनि।

Scanned by CamScanner

3. रामदेवझाक कथाकलाक एक आर विशेषता ई थिकनि जे ओ जीवन-राग आ पीड़ाकेँ संग-संग उपस्थापित करैत छथि, एतेक साहचर्यपूर्वक जे ओकर अनुपात आ व्याप्ति ठीक-ठीक आँकल जा सकय आ साफ भऽ जाय जे एतेक पीड़ाक अछैत आखिर मनुक्ख जीबि कोना रहल अछि आ अपन स्वकेँ बचबऽ किएक चाहैत अछि ! कहब आवश्यक नहि जे ई दुख आ सुखक सहकार थिक जे रामदेवझाक कथा सभमे क्लाइमैक्सक रूपमे प्रकट भेल अछि। स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथाक परिप्रेक्ष्यमे देखी तँ ई बात चलनसँ फराक हटि कऽ अछि । स्वातन्त्र्योत्तर कथाक सामान्य चलन थिक जीवनमे बहुत दुख, मोहभंग, कुण्ठा, सन्त्रास आदि-आदि । मुदा कथालेखकक सदिच्छा वा सेहन्ता एहिसँ हारब नहि गछैत अछि आ से कथाक अन्तमे एक सकारात्मक संकेतक रूपमे अभिव्यक्त होइत अछि । एकर उदाहरण हमरा लोकनि ललितक कथा **रमजानी**मे देखि सकैत छी । स्वातन्त्र्योत्तर कथाक ई सामान्य प्रवृत्ति हमरा लोकनिक थिक ।

रामदेवझाक कथाक प्रवृत्ति एहिसँ भिन्न छनि । जीवनकेँ ओ सामान्यत: जीवन जकाँ देखैत छथि, जाहिमे जँ दुख आ सन्त्रास अछि तँ उल्लास सेहो अछि । खास बात ई जे ई सभ फराक-फराक नहि अछि । हुनक कोनो कथा एकान्तिक रूपेँ दुख वा सन्त्रासक कथा नहि भऽ सकैत छनि । जेना कोनो मनुक्खक जीवनमे निछच्छ पीड़ा मात्र नहि होइत छैक । ओ जँ कोनो रिक्साबलाक **पराजयक मुद्रा**पर कथा लिखताह तँ ओहिमे दाम्पत्य-सुखक कोमल आ स्पृहणीय चित्र सेहो खचित करताह । **मनुक सन्तान**क दलित-उत्पीड़ित परिदृश्यक जँ अंकन करऽ बैसताह तँ ओकर जीवनक भव्य सुन्दरताकेँ सेहो जगजगार कऽ देताह जे बरबस पाठकक भीतर सहयोगसँ सृजित सुन्दर दुनिञाक स्पृहा जगा देतैक । हुनक एक मार्मिक कथा छनि- **पहुना** । एहि कथाक नायिका बसन्तीक उत्तर-जीवन, दुख आ संघर्षसँ गछारल छैक । कथाक पृष्ठभूमि ओ तेना रचने छथि जे बसन्ती एक व्यक्तित्ववती स्त्रीक रूपमे सामने अबैत अछि- मने एक श्रमिक स्त्री होइतो ओ जीवन-धाराक विश्लेषण कऽ सकैत अछि, स्नेहक मूल्य बूझि सकैत अछि, अपन हक आ दायित्वक लेल साकांक्षता राखि सकैत अछि, आब ओकर जे हालति भेल छैक तकरा मादे रामदेवझा अपन पारदर्शी कथा-भाषामे एकटा वाक्य लिखैत छथि- **जेना औन्हा अल्हुआ अपने भाफसँ सीझि जाइत छैक तहिना ओकर यौवन अपने आगिमे झरकि गेल छलैक ।** हमरा लोकनि देखैत छी जे जखन बसन्ती छोट उमेरक रहय, तखने ओकर माय दोसर पुरुखक-संग समन्ध कऽ लेने छलैक आ आगू जखन ओ एक बेटीक माय भेलि तँ ओकर परमप्रिय पहुना दोसर मौगीक-संग सगाइ कऽ लेलकैक । मुदा ओकर यौवन अपने आगिमे झरकि कऽ किएक खतम भऽ गेलैक ? हम सभ देखैत छी जे जखन नेना अवस्थामे ओकर माय ओकरा छोड़ि कऽ चलि गेल छलैक तँ बसन्तीकेँ बहुत दुख, बहुत पीड़ा भेल छलैक, ओ ओकरा मोन छैक । ओ पीड़ा ओकर धरोहर छिऐक । ओ अपने कोनो दोसर पुरुखक- संग सगाइ नहि कऽ सकैत अछि, कारण ओकर ई धरोहर, ई पीड़ा, ओकरा अपना बेटीकेँ होअऽ-बला पीड़ा संग जोड़ैत छैक । पीड़ाक तलपर पाओल जाइबला जुड़ावक कथा थिक **पहुना** । बहुत प्रसिद्ध कथन अछि आ एहिपर हिन्दी-कवि अज्ञेय एक कविता सेहो लिखने छथि जे दुख सभकेँ मँजैत छैक, ई दुख भने अपन सभ भोक्ताकेँ मुक्ति नहि प्रदान कऽ पाबौ, मुदा जकरा-जकरो ई मँजै छैक, तकरा भीतर ई बोध दैत छैक जे ओ अनका एहिसँ मुक्त राखय ! एही बोधक कथा थिक **पहुना** । बहुत उद्दाम लालसा जगैत छैक एहन जीवनक प्रति, जतऽ दोसराक दु:खक मर्मकेँ बुझबाक बोध पाओल जाइत हो । हमरा तँ लगैत अछि जे यैह सत्साहित्य थिक, जकर पैरबी आचार्य रमानाथझा जीवन भरि करैत रहलाह । राजा राम आ धर्मनिष्ठ युधिष्ठिर महाराजक कथा सत्साहित्य नहिञो भऽ सकैछ मुदा छोटसँ छोटो लोकक ओ कथा जे हमरा भीतर एहि मर्मकेँ, एहि बोधकेँ अनुभव करबाक स्पृहा जगबैत हो, ओ निश्चिते सत्साहित्य थिक । बसन्तीक जीवनमे बहुत पीड़ा छैक मुदा एकटा मिशनकेँ पूरा करबाक उत्साह ओ उल्लास सेहो छैक । पीड़ा आ उल्लासक यैह सन्तुलित सम्मिश्रण कथाकेँ जीवनक लग अनैत छैक ।

पीड़ा आ उत्साहक ठीक-ठीक अनुपात कथामे उतरि पबैक, ई बहुत कठिन बात छैक मुदा रामदेवझा बहुत जतनसँ एकरा सम्भव करैत रहलाह अछि । एकरा लेल दूटा वस्तु आवश्यक होइत अछि- एक तँ ई जे लेखककेँ अपन कथ्यक ठीक-ठीक पता रहबाक चाही आ निर्मोह भऽ कऽ अपन कथ्यरूपी लक्ष्यकेँ प्राप्त करबाक दिशामे ओकरा

Scanned by CamScanner

गमन करबाक चाही । कथा लिखैत काल कतेको बेर लेखक कोनो पात्रक प्रति, दृश्य आ कथनोपकथनक प्रति मोहासक्त भऽ जा सकैत अछि आ तकरा आवश्यकतासँ बेसी जगह भेटि जा सकैत छैक । तहिना, लेखक अपन अभिव्यक्ति-आकुलताक आन्तरिक दबाववश किछु बिन्दुकेँ स्पष्ट करबासँ चुकियो जा सकैत अछि वा ओकरा, आवश्यकतासँ कम जगह दऽ कऽ अनबूझ बनल रहबाक लेल बाध्य कऽ दऽ सकैत अछि । एहि दुनू स्थितिमे मुदा कथाक सन्तुलन आ ओकर ई अनुपात टुटि जयतैक आ एहि परिस्थितिमे लेखकक कथा एक नीक कथा होयबासँ वंचित रहि जा सकैत छैक । हम कहऽ चाहैत छी जे निर्मोह आ निर्भ्रान्ति भऽ कऽ लेखन करब, एक नीक कथाक रचना लेल, परम आवश्यक अछि आ से रामदेवझा निश्चिते कऽ सकलाह अछि । रामदेवझाकेँ ठीक-ठीक पता रहैत छनि जे अपन कथामे हुनका की कहबाक छनि आ ताहि लेल कोन बातपर कतेक जोर आ तकरा कतेक स्थान देबाक छनि । हुनक कथा-लेखनमे एहि तरहक त्रुटि नहि भेटैत अछि आ ई बात हुनका एक पैघ कथाकार साबित करैत छनि । कहबाक तँ ई चाही जे ई वस्तु हुनका ततेक साधल छनि जे हुनक कथा-रचना क्लासिक्स-कोटिक दाबीदार बनैत छनि । एहि सन्तुलन लेल दोसर जे गुण चाही से थिक- वातावरण-निर्माण । रामदेवझा एहू वस्तुक मास्टर छथि । सभ गोटे जनैत छी जे छोट, सोझ, एकहरा आ कथानकमुखी होयब मैथिली कथाक खास परिचिति भऽ गेल अछि । दोसर तरहेँ देखी तँ वातावरण-निर्माणक दुर्बल होयब सेहो मैथिली कथाक एक चिन्हान बनल अछि । कथा छोट आ कथानकमुखी होइते अछि एहि दुआरे जे कथाकार वातावरण-निर्माणपर कि तँ अपेक्षित श्रम नहि कऽ पबैत छथि आ कि से करब हुनका सम्हारेमे नहि रहैत छनि । आइ धरिक इतिहासमे थोड़बे एहन कथाकार भेल छथि जे एहि गुणक आगर छथि आ जनिकर कथा सभ मैथिली कथासाहित्यकेँ धनधान्यपूर्ण बनबैत अछि । एहन ग्रैण्ड स्टोरी मास्टर्समेसँ एक कथाकार रामदेवझा छथि ।

हमरा लगैत अछि जे रामदेवझाक कथामे पाओल जायबला सभसँ पैघ वैशिष्ट्य कदाचित् ओकर वातावरण थिक, जकर निर्माणमे प्रतिभा आ श्रम दुनू हुनकर सहायक होइत रहलनि अछि । अपन निर्माण-दक्षतासँ कथामे ओ एहन वातावरण बना दैत छथि, जाहिमे हुनकर कथ्य कारी-कारी आकाशमे उगल पूर्णचन्द्र जकाँ भासमान भऽ उठैत छनि । हुनक रचना-प्रक्रियाक अवलोकन करी तँ पबैत छी जे एहि लेल दू-तीनटा कलाकारी ओ करैत छथि । हुनकर कथा सभकेँ देखी तँ लगैत अछि जे दूर-दूर धरि पसरल जीवनमेसँ कोनो एकटा खण्डकेँ ओ अपना कथाक लेल बेरा लैत छथि जेना केओ एक किलोमीटरक अंश अपन अवलोकन लेल चूनि लिअय । जीवनक जे खण्ड ओ अपन कथा लेल चुनैत छथि, तकर क्रमानुक्रमिक विवरण देब सुरू करैत छथि । ओहिमे जीवनक स्वरूप अपन परिपूर्ण विस्तारमे विवेचित होइत छैक । छोट-छोट घटना रहैत छैक, मुदा तकर पृष्ठभूमि आ तकर संगति पूरे डिटेलमे सामने अबैत अछि । ओहि ठामक माटिपानि आ पर्यावरण टनटन बजैत रहैत अछि । कथामे थोड़बे दूर आगू बढ़लापर लागऽ लगैत छैक जे भने ओ जीवनक एक छोटे खण्डकेँ अपन कथा लेल चुनने होथि, मुदा जे चुनलनि सैह खण्ड ओहि पात्रक जीवनक निहितार्थ थिकैक । ओ कथाकेँ अपन सामान्य गतिमे चलऽ दैत छथि, एक-एक घटना, एक-एक आयामकेँ देखबैत- विश्लेषित करैत । ई सभ किछु एक एहन सहजता आ निर्दोषिताक संग होइत छैक जे पाठक पूरापूरी अपनाकेँ हुनक कथामे इन्वॉल्व कऽ लैत अछि । केवल रामदेवझा जनैत रहैत छथि जे हुनका जयबाक कतऽ छनि, आ पाठककेँ अपना संग लेने जतऽ ओ पहुँचैत छथि से बहुत सुन्दरताक संग जीवनक मर्मकेँ उद्घाटित कऽ दैत छैक । **मनुक सन्तान** कथा, सन्तान लोकनिक द्वारा दू-अढ़ाइ घंटाक भीतर खेतमे डोका बिछबाक कथा थिक । **मंगलीमायक बकरी**, बकरीक निछा जयबाक दिनक कथा थिक । **परमिलिया** किछु घंटाक भीतरमे परमिला दाइक, जाँतपर पिसिया करबाक कथा थिक आदि-आदि । मुदा लगैत छैक जे यैह किछु काल ओकर जीवनक अर्थ आ व्याप्तिकेँ उद्घाटित कऽ दैत छैक आ से सम्पूर्ण परिवेश, अखण्ड पर्यावरणक संग । ई भइये एहि दुआरे पबैत छैक जे कथा-समयक वातावरण जबर्दस्त बनल रहैत छैक ।

लक्षित वर्गक दैनंन्दिन जीवनक निरीक्षण रामदेवझा बहुत सूक्ष्मताक संग कयने रहैत छथि । एक-एक वस्तु

Scanned by CamScanner

आ प्रक्रियाक डिटेल हुनका बूझल रहैत छनि । ओ वर्ग, अपन खास वर्गीय शैलीमे, कोन स्थितिमे कोना प्रतिक्रिया करत, तकर हुनका ठीक-ठीक कल्पना रहैत छनि । ओकर बौद्धिक आ नैतिक स्तरक ओ समझ रखैत छथि । ओकर अभिव्यक्ति-शैली सेहो हुनका बूझल छनि । ई सभ मिलि कऽ हुनक कथा-सृजनकेँ आसान करैत छनि । एहि सभ वस्तुपर रामदेवझाक ततेक सशक्त पकड़ छनि जे हुनकर कथावाचक बहुत आत्मविश्वासक संग कथा सुनबैत देखल जाइत अछि । यैह कारण थिक जे हुनकर कथा सभ अधिकतर पूर्वदीप्ति (फ्लेशबैक) मे कि तँ जाइते नहि अछि आ जँ जायब जरूरियो भेल तँ बहुत कम क्षणक लेल जाइत अछि । पूर्वदीप्तिमे कथाकेँ लऽ जायब कथाकारक काजकेँ हल्लुक बनबैत छैक, वातावरणक जँ ओकरा बहुत निरीक्षण नहिओ कयल हो तँ से पूर्वदीप्तिक चमकमे नुका जाइत छैक आ ओ कम श्रममे बेसी यश प्राप्त करबाक लाभ लऽ सकैत अछि । रामदेवझा मुदा, एना करैत नहि देखल जाइत छथि । ईहो हुनका पैघ कथाकार बनबैत छनि । हुनकर पात्र सभ बहुत-बहुत दिन धरि अहाँकेँ मोन पड़ैत रहत- ओकर जीवनक पीड़ा, ओकर परिस्थितिक विडम्बना, ओकर कहल कोनो बात, ओकरा द्वारा लेल गेल कोनो निर्णय ! विश्लेषण कऽ कऽ देखी तँ एहि स्मृतिमे कथानकक ओते भूमिका नहि होइत छैक जतेक वातावरणक । हम **परमिलिया**केँ नहि बिसरि पबैत छी– ओकर ठोस व्यक्तित्व, श्रमशील स्वभाव आ ताहि सभसँ निर्मित उद्दाम लालसा । स्त्रीक एही लालसाक कथा थिक ओ, जे बिसरने नहि बिसरल जाइछ । कहबे कयलहुँ जे तकर कारण कथानक ओते नहि अछि जते वातावरण ।

मंगलीमायक बकरी कथामे ओ कनेक कालक लेल फ्लैशबैकमे जाइत देखल जाइत छथि । कथाक एहन अंश मोश्किलसँ पूर्णकथाक दशमांश होयत । मुदा एतबेमे दूटा भिन्न-भिन्न वर्गक सामाजिक सोच आ प्रच्छन्न अस्मिता अपन ठोस पृष्ठभूमि रचि लैत अछि आ फेर जखन ओ अपन मूल कथा-समयमे घुरैत छथि तँ कथाक मर्म उद्घाटित भऽ उठैत अछि । किछु आनो कथा सभमे जाहिमे ओ फ्लैशबैकमे गेलाह अछि तँ प्रायः एही तरहेँ गेलाह अछि । मुदा किछु ठाम तँ ओ आरो संक्षिप्त भऽ कऽ कमाल कऽ गेल छथि । एही तरहक हुनक एक कथा छनि- **एकटा रहय उतमी** । कथानायिका उतमी घास काटि कऽ बजारमे बेचऽबाली एकटा श्रमशील स्त्री थिक, जकरा ज़ीवनमे बहुत विडम्बना, बहुत संघर्ष भरल छैक । वोट पड़बाक दिन थिक, जखन बजारमे कोनो राजनीतिक पार्टीक दलाल उतमी आ ओकर संगतुरियाक संग ई सौदा करैत अछि जे बोगस वोट खसयबाक एबजमे ओकरा सभकेँ दू-दू टाका भेटतैक । दू टाका ओकरा लेल बहुत छैक मुदा ओकर मानस-निर्माण एहि तरहेँ भेल छैक जे एना कऽ कऽ दू टाका कमायबकेँ ओ बड़ भारी अपकर्म बुझैत अछि । दोसर दिस, ओ भारी अभावमे जीबि रहल अछि । घरमे अन्न-पानिक कोनो असरा नहि छैक, पति बिमार छैक, बेटाकेँ सेहो इलाजक बेगरता छैक, आदि-आदि । उतमी सन, सामाजिक-आर्थिक परिस्थितिमे जीवैत स्त्रीक आत्मसंघर्षक ई कथा थिक । एहि कथामे रामदेवझा करैत की छथि जे समुच्चा कथा अपन सामान्य गतिमे चलैत रहैत अछि जतऽ बज़ार छैक, घास आ ओकर गँहिकी छैक, वोट छैक, लफन्दर आ दलाल छैक । मुदा, जतऽ-जतऽ अपन पूरा रौनकक संग ई सभ छैक ओतहि कथाकार एक वाक्यमे उतमीक परिस्थितिकेँ मोन पाड़ि दैत छथि, पूरा कथामे अनेको बेर, आ से प्रायः समान शब्दावलीकेँ दोहरबैत- **मोन दौड़ि गेलैक गामपर- सांगरहीवला सांय, चाली भरल पेटवला बेटा, अन्न पानिसँ खाली ओ घर ।**

कहबे कयलहुँ जे वातावरण-निर्माणलेल रामदेवझा बहुत जतन करैत छथि । से हुनकर कथाकेँ मार्मिक आ अविस्मरणीय बनयबाक लेल सभसँ महत्त्वपूर्ण कारक बनैत अछि ।

दोसर दिस हमरा लोकनि देखैत छी जे परवर्त्ती फेजक हुनक कथा-लेखनमे फ्लैश बैकक प्रयोग बढ़ि गेलनि अछि । एम्हर जे हुनकर कथा सभ आयल अछि, ताहिमेसँ किछुमे तँ पचास प्रतिशतसँ बेसी कथा पूर्वदीप्तिमे अबैत अछि । एना किएक भेल अछि ? एकटा सामान्य-सन बात हमरा ई देखाइत अछि जे जाहि वर्गक ओ कथा लिखैत रहलाह अछि, तकरासँ एम्हर काल परिस्थितिवश दूर भऽ गेलाह अछि । एतेक दूर तँ नहिञे जे ओकर कोनो हाले-सूरति नहि बूझल होइनि नहि तँ फेर कथे कोना लिखितथि ! मुदा एतेक लगो नहि जे एहि तीस-चालीस बर्खमे ओकर समाजिक-आर्थिक परिस्थिति कोन तरहेँ ओकर मानसिक संरचना आ सांस्कारिक ग्रन्थनकेँ प्रभावित कयलकैक अछि

Scanned by CamScanner

तकर विस्तारमे जाथि। तें जखन कथा लिखैत छथि तँ अपन साख ओ प्रतिष्ठाक रक्षा करैत अधलाह कथा लिखबाक बदलां फ्लैशबैकमे जायब स्वीकार करैत छथि। ओना देखी तँ ई आजुक कथा- लेखनक युगधर्म बनि कऽ सामने आयल अछि। उत्तर-आधुनिक कथा प्रारूपमे पूर्वदीप्ति एक दिस जँ पोपुलर फैशन अछि तँ दोसर दिस नचारक लाठी सेहो, कारण एकर आश्रय लऽ कऽ कथाकार अपन कतेको कमजोरीकें झाँपि लऽ सकैत अछि।

मुदा एहि शैलीक प्रयोग रामदेवझा बहुत सकारात्मक तरीकासँ करैत छथि। सुरूएसँ हम सभ देखैत आयल छी जे हुनका जखन कोनो विषयमे, कोनो वस्तुपर कथा लिखबाक रहैत छनि तँ बहुत धैर्यपूर्वक ओ, ओहि विषय-वस्तुक सम्बन्धमे सूचना एकत्रित करैत छथि। सूचना माने ओकर रहन-सहनसँ जुड़ल समस्त वस्तुजात, शब्दावली, ओकर विश्वास, ओकर तकनीक, ओकर गुणावगुण आदि-आदि। सम्भव थिक जे एहि सभ कथूक जानकारी हुनका पहिनहिसँ रहैत होउनु, मुदा तकरा संयोजित करबाक काज धरि अवश्य ओ बहुत धैर्यपूर्वक करैत छथि। एहिसँ कथा झमटगर बनैत छनि आ ओकर विश्वसनीयता असन्दिग्ध बनैत छैक। एहिसँ हुनक कथामे ग्राह्यताक गुण अबैत छनि। से हमरा लोकनि देखैत छी जे जखन ओ पूर्वदीप्तिमे जाइत छथि, तखनहुँ ई सभ किछु यथावश्यक मात्रामे विद्यमान रहैत छनि जे कि हुनक समकालीन आन कथाकारक संग प्राय: कम भऽ पबैत छनि। विगत केर घटनाबहुलताक सारांशीकरणमे लेखक तेना कऽ व्यस्त भऽ जाइत अछि जे एहि सभ परसँ ओकर पकड़ छूटि जाइत छैक। रामदेवझाक एक प्रसिद्ध कथा छनि- **फड़िच्छ भऽ गेल छलै**। किसुन नामक एक राजमिस्त्रीक जीवन-संघर्ष आ दाम्पत्य-लालसाक ई कथा थिक। एकर एक पैघ भाग पूर्वदीप्तिमे चलैत छैक। मुदा ई देखब रोचक थिक जे राजमिस्त्रीक कार्यप्रक्रियाक मेही-सँ-मेही सूचना, ओकर औजार-पातीक ठीक-ठीक परिचय, ओकर तकनीक आ तकनीकी शब्दावलीकें ततेक जीवन्त रूपमे आ कथाक अंग बना कऽ प्रस्तुत कययलनि अछि जे सैह एहि कथाकें मोन रखबा योग्य बना दैत छैक, जखन कि असली बात तँ थिक- कथा-संवेदना, जकर ओतबे ओस्ताद रामदेवझा छथि, जतबा अपन धन्धाक ओस्ताद किसुन मिस्त्री अछि।

कथा-संवेदनाक बहुत ठीक-ठीक आकलन रामदेवझाकें छनि। एकरा पकड़बाक प्रति अत्यन्त सुरूएसँ ओ सजग रहल छथि। हुनक अभ्यासकालीन कथा सभकें देखी, जे कि हुनक पहिल संग्रह **एक खीरा : तीन फांक**मे संकलित छनि। कथा-कलाक दृष्टिसँ एहिमेसँ कतेको कथा कमजोर कथा अछि। मुदा, एकटा बात धरि निर्विवाद अछि जे अपन तरुणावस्थोमे, जखन कि ओ कथा-कलाक मर्मज्ञ नहि भेल रहथि, तखनहु, कथा-संवेदनाकें पकड़बाक हुनक दृष्टि अचूक रहनि। से संवेदना एहू कथासभमे जगजियार देखाइत छैक। तहिना किछु कथामे हमरा लोकनि देखब जे ओ बेस एडिटोरियल मूडमे देखाइत छथि। कथा कहैत-कहैत अपन वक्तव्य, अपन विश्लेषण प्रस्तुत करऽ लगैत छथि, सदुक्ति आ सुभाषितक झड़ी लगा दैत छथि। सभ बूझि सकैत छी जे एना ओ अपन कमजोरीकें झँपबाक लेल कऽ रहल छथि। कमजोरी एहि बातक जे वातावरण-निर्माण लेल ओ अपेक्षित श्रम नहि कऽ सकलाह अछि। तकर कारण प्राय: ई भऽ सकैत अछि जे एहन कथा सभ कि तँ ओ कोनो दबाबमे लिखने होयताह अथवा हड़बड़ीमे। मुदा, ध्यान देबाक थिक जे हुनकर एहनो कथा सभ जँ पठनीय बनल रहि सकल अछि तँ तकर असली कारण थिक- कथा संवेदना। रामदेवझाक लेल यैह ओ वरदान सन थिक जे सामान्य पाठकक नजरिमे हुनक कोनहु कथाकें अधलाह कथाक कोटिमे रखबासँ बचा लैत अछि।

मैथिली कथा-साहित्यमे रामदेवझा सन कथाकारक होयब बहुत आश्वस्तिदायक थिक। अपना समयमे वा तकर बादो भने ओ नहि चिन्हल गेल होथु, आगू हुनकर बहुत सम्मान होयतनि। आइ मैथिलीक समकालीन कथा-साहित्य ओही लाइनपर आगू बढ़ि रहल अछि, जकर परिकल्पना ओ, अपना लेल अपना युगमे कयने रहथि। कोनो कथाकारक जीवनक साफल्य एहिसँ बेसी आर की भऽ सकैत छनि ?

●

Scanned by CamScanner

रामदेवझाक कथामे मानवेतर पात्र

डा. श्रीमतीउषाचौधरी

मैथिलीमे कथा साहित्य एक महत्त्वपूर्ण सशक्त, साहित्यिक विधा अछि । साहित्य समाजक गतिशील प्रतिबिम्बक संग-संग एकटा सामाजिक-सांस्कृतिक आन्दोलनो होइत अछि । कोनो रचनाकार बहुत रास पैघ-पैघ बात कहैत छथि ई बहुत महत्त्वपूर्ण नहि अछि । महत्त्वपूर्ण ई होइत अछि जे ओ जतबे बात कहैत छथि से कतेक प्रामाणिक छनि आ ताहीमे हुनक सफलतो निहित छनि । अपन साहित्यमे मानव पात्रकेँ ठाढ़ करब तँ सामान्य बात थीक मुदा मानवेतर पात्रकेँ अपन रचनाक आधार बनाय ओकरामे मानवे जकाँ प्राण ओ बोधकेँ प्रतिष्ठापित कयनिहार रचनाकार शाश्वत मानल जाइत छथि ।

एतऽ विवेच्य विषय थीक– रामदेवझाककथा साहित्यमे मानवेतर पात्र । कथाक अलौकिक शक्तिक प्रदर्शन करबाक हेतु सामान्य पुरुष ओ नारी पात्रक अतिरिक्त जाहि मानवेतर पात्र सभकेँ कथामे मानवीकृत कयल जाइत रहल अछि तकरा तीन कोटिमे विभाजित कयल जा सकैछ – (1) देव कोटि (2) जीव-जन्तु कोटि (3) निर्जीव कोटि।

हम सभसँ पहिने, कथादिशा (1997 इ.)मे छपल हिनक कथा **शहीद चौकक** उल्लेख करऽ चाहब । जेना कि कथाक शीर्षकसँ लगैत छैक जे एहिमे कोनो चौकक वर्णन कयल गेल अछि । कोनो मनुख सभ दिन जीवित नहि रहैत अछि मुदा ओकरा द्वारा कयल गेल कीर्त्ति सैह जीवित रहैत छैक । एहि कथामे लेखक कहैत छथि जे चिन्तू दादा द्वारा साजल-समारल, नामकरण कयल, एखनो जीवैत अछि 'शहीद चौक', माने कामर्सियल चौक । एहि चौकक सांगोपांग वर्णन करैत लेखक कहैत छथि जे– **आब तँ ई चौक बड़ प्रसिद्ध भऽ गेल अछि, मुदा एकर पहिल नाम शहीद चौक तऽर पड़ि गेलैक आ 'कामर्सियल चौक' नाम बेसी प्रसिद्ध भऽ गेल छैक । अवश्ये चिन्तू दादा द्वारा चलाओल परम्पराक अनुसार पन्द्रह अगस्त आ छब्बीस जनवरीकेँ बड़े समारोहसँ भारतक राष्ट्रिय तिरंगा झंडा फहराओल जाइत छैक आ तखन एकटा कूटक तख्तीपर चौकक नाम 'शहीद चौक' लीखि कऽ टाँगि देल जाइत छैक ।**

एहि कथामे कथाकार शहीद चौककेँ साक्षी बनाय भारत विभाजनक ओहि दारुण गाथाक कथा कहैत छथि जे चिन्तू दादाकेँ अपनहि घरमे रिफ्यूजी बना देने छलनि । चिन्तूदादा शहीद चौककेँ आबाद करैत छथि । एकटा अनाम चौककेँ नाम दऽ ओकरा स्वतन्त्रता संग्रामसँ जोड़ैत छथि मुदा स्वतन्त्र भारतक सरकार देशमे आपातकाल लगाय पुनः चिन्तू दादाकेँ अपन घरसँ बेघर कऽ दैत छनि । ई चौक मूक दर्शक बनल एहि अन्यायकेँ देखैत रहि जाइत अछि । आपातकालक बलिवेदीपर चढ़ि जेना चिन्तूदादा विस्मृत भऽ जाइत छथि तहिना एहिना चौकक नाम सेहो लोककेँ विस्मरण भऽ जाइत छैक ।

हिनक कथा **कहाँ छेँ रे नुनुआँ** (भारती मंडन-10)मे बकरीक बच्चा सन पशु पात्रक अदभुत ढंगसँ मानवीकरण कयल गेल अछि । ममताकेँ पराकाष्ठापर पहुँचौल गेल छैक एहि कथामे । नुनुआँ नामक एकटा मातृहीन छागर सोनमतियाक छातीक दूध पीबि कऽ पालित होइत अछि ई स्वयंमे एकटा आश्चर्यक सृष्टि करैत अछि । मनुक्खक दूधपर पोसल पठरू चर्चाक विषय बनि जेना एहि कथाक केन्द्रिय पात्र बनि जाइत अछि तँ सहजहिँ एकरा पोसनिहार सोनमतिया सेहो एकटा विशिष्ट नारीक गरिमा प्राप्त करैत अछि । एहि कथामे ममताक अनुभूतिकेँ पराकाष्ठापर लेखक पहुँचा देने छथि । ओना ममता मात्र मनुष्येमे नहि पशु-पक्षी आ जीव मात्रेमे होइत अछि मुदा एहि कथाक नायिका सोनमतिया जे कि निम्न स्तरक जीवन-यापन करितहुँ ममतासँ भरलि अछि । अपन बच्चाक संग-संग एकटा बकरीक बच्चाकेँ अपन दूध पीआय मृत्युक मुँहसँ बहार कऽ दैत छैक मुदा दोसर दिस स्वयंकेँ सभ्य कहऽवला लोकसभ जे स्वयंकेँ देश आ समाजक रक्षक घोषित कयने छथि तनिके जखन अपन कुर्सी छिनयबाक डर भेलनि तँ एहि शह-मातक

Scanned by CamScanner

खेलमे नुनुआँ नामक ओ पठरू स्वार्थक बलि चढ़ि जाइछ । अपन ब़ि। दऽ कऽ नुनुआँ एकटा अविस्मरणीय पात्र बनि जाइछ ।

हिनक **मंगलीमायक बकरी** कथामे सेहो बकरी सन एकटा प्राणीकेँ केन्द्रमे राखि कथाक तानी-भानी बूनल गेल अछि । पशुओ स्नेहक भाषा बुझैत अछि, स्नेहक कोना भूखल होइत अछि तकर अवगाहन एहि उद्धरणसँ कयल जा सकैछ– **...बकरी जेना ओकर सिनेहक भाषा बूझि गेल छलैक । ओ मूड़ी उठा कऽ मंगलीमाय दिस तकलकैक । डिबियाक इजोतमे बकरीक दूनू आँखि चमकि उठलैक । ओहि आँखिमे जेना कोनो अव्यक्त वेदना उमड़ि गेल छलैक । पशुओकेँ हर्ष ओ विषाद होइत छैक, सुख ओ वेदना होइत छैक । ई बात ओकर पालक आँखि देखलेसँ अनुभव कऽ लैत छैक ।...**

मुदा महिन्दर सन लोकमे एहि पशु प्रेमक भावना कतऽ पाबी ? जे बकरी कहियो महिन्दरक पोताक जान बचौने छलैक वैह बकरी ओकर मारिसँ निछा कऽ अन्तिम साँस लेबऽ लगैत छैक । कथाक अन्त बड़ कारुणिक भेल अछि से द्रष्टव्य– **...भिनसर भऽ गेलैक । बकरीक मुइलापर जनमल दूनू पठरू ओहिना पड़ल छलैक, ठीक ओही रंगक, ओही आकारक, जेहन पहिल बेर भेल रहैक ।...महिन्दर अकबका गेल । मंगलीमायक हाथमे पठरूक मुइल देह छलैक आ ओकर मूड़ी लटकल झूलैत छलैक । झूलैत रहलैक...।**

मंगली मायक बकरी ओ ओकर मृत पठरू मानवीय क्रूरता ओ कृतघ्नताक शिकार भऽ पाठककेँ उद्वेलित कऽ सोचबाक हेतु विवश कऽ दैत अछि । जानि नहि एतेक संवेदनापूर्ण मार्मिक कथाक अनुभूति ललित सन कथाकारकेँ किएक नहि भऽ सकलनि जे ओ अपन एकटा साक्षात्कारमे मैथिलीक एहि 'मास्टर पीस' कथाकेँ मुँह दूसि बैसलथिन ।

रामदेवझाक कथा-संग्रह **एक खीरा : तीन फाँक**मे एकटा कथा अछि **दोहरी दीप** । एहि कथामे कथा नायिकाक व्यथा धातरीक मुहेँ कहबाओल गेल अछि । आब वैज्ञानिको सभ ई कहैत छथि जे मनुक्खे जकाँ गाछ-बृक्षकेँ सेहो सुख-दुःखक अनुभूति होइत छैक, मुदा ओकर स्वर सुनबाक लेल हमरा सभकेँ विशिष्ट बोध शक्तिक आवश्यकता अछि ।

धातरीक गाछ कहैत अछि जे.....**जखन बसातपर हमर पत्ता सभ, ठहुरी सभ काँपि उठैत अछि तँ हमरा सन्देह भऽ उठैत अछि जे माधुरीक आँचर तँ ने फहरा रहल छैक । ओहि बसात आ हमर पात सभक संयोगसँ जे एकटा स्वर बहार होइत छैक, से मोन पड़ैत अछि जेना माधुरीक साँस चलि रहल हो । हम कतेक बेर ने ओहि साँसक स्वर सुनने छी ओकर साँसक गरम-गरम भाफ हमरा देहकेँ स्पर्श कयने अछि ।**

कथा नायिकाक पतिकेँ ओकर लोभ ओकरा ग्रस्त कयने छलैक । माधुरीक पिता ओकर मोन भरबाक लेल अपन सभ किछु झोंकि देने छलाह मुदा तैयो ओकर वर, ससुर, आ सासु सन्तुष्ट नहि भेलैक । सम्पत्तिएकेँ सभ किछु मानि माधुरी सन अनमोल रत्नकेँ फेकि देलक छाउड़क ढेरीपर ।

एकटा मैथिलानी कन्याक लेल अपन पतिक घर छोड़ि आर कोनो जगह नहि होइत छैक । ओहि परित्यक्ताकेँ जखन कोनो बाट नहि सूझलैक तखन जाहि धातरीकक गाछकेँ ओ बच्चेसँ पूजा करैत आयल छलि आ अपन बाबी-नानीक मुँहेँ सूनि आयल छलि जे एहि गाछसँ जे मँगबीही से देतौ किएक तँ कार्तिक मासमे साक्षात विष्णुक निवास एहि गाछ तर रहैत छनि । एहि बातक विश्वास कऽ माधुरी ओहि गाछक शरण गहैत अछि । माधुरीक जीवन ओ जीवनक उतार-चढ़ावक साक्षी बनल एहि गाछमे मानवीय आरोपण कऽ कऽ कथाकार एकटा सुन्दर प्रयोग कयलनि अछि ।

हिनक कथा **ठमकल घड़ी**मे मानवेतर पात्र अछि टावर चौक आ ओकर बन्द घड़ी । कथाक प्रारम्भेमे लेखक कहैत छथि जे– **ई टावर आ टावरक घड़ीकेँ बाजि होइतैक तँ बहुत किछु कहि जैतय । कहि जैतय एहि चौबट्टीक इतिहास आ अपन इतिहास, अपन अनुभव । अपन तीत-मिठ्ठ स्वाद ।**

टावर चौक एकटा निर्जीव पात्र थिक । मुदा लेखकक कलमसँ सजीव भऽ गेल । एहि कथामे लेखक कहैत छथि जे– **ई चौबट्टी बड़ महत्त्वक तहियो छल जहिया तुरूक वा मोगलक राज रहैक । ...यैह ओ चौबट्टी थिक जाहि ठाम हजारक हजार लोक जमा होयबाक कोसिस कयने रहय आ अंग्रेजी सरकार अपन समस्त शक्ति ओकरा रोकबाक लेल लगा देने रहय ।**

Scanned by CamScanner

स्वतन्त्रता आन्दोलनक सभ क्रिया कलापक ई लहेरियासराय टावर चौक साक्षी अछि । ई चौराहा एकर गवाह अछि । आ गवाह अछि स्वतन्त्रताक तिथिसँ एखन धरिक समयक । स्वतन्त्रताक, बाद एहि चौराहापर पाँच महलक ऊँच टावर बनल ।

टावर चौकक पीड़ाक वर्णन करैत लेखक कहैत छथि जे- **अवश्ये एहि जन-संकुल स्थानमे ...छगुन्ताक मुद्रामे पूर्व दिस तकैत गान्धीजीक मूर्ति दिस ककरो दृष्टि नहि जाइत छैक । ... ई टावर जौंडिसक रोगी जकाँ ठाढ़ अछि निश्चल, तहिना ठाढ़ छैक एकर घड़ीक सुइ निश्चल स्थिर, जेना तराटक लागि गेल होइक । आँखिक डिम्हा अविचल भऽ गेल होइक । ...मार्क आफ टाइम्स वा मार्च आफ टाइम भऽ रहल छैक । आ टावरक ई विशाल घड़ी आइ तीस-पैंतिस बरखसँ रूकल अछि । ठमकल अछि । लगैत अछि जेना ई ठमकल घड़ी स्वतन्त्रताक स्मारक-टावरक पथरायल आँखि होइक-दृष्टिहीन, भावहीन ।**

वस्तुत: टावर चौकक बहाने कथाकार स्वतन्त्रता प्राप्तिक बाद देशक जे स्थिति बनल, लोकककेँ जे मोहभंग भेलैक । विकासक सुइ टावरक घड़ीक सुइ जकाँ ठमकि गेल । लोकक सपना टावरक रंगे जकाँ पिड़ा गेलैक । लोकक अकांक्षा टावर जकाँ अचल-निश्चल रहि गेलैक । कथाकार टावर सन निर्जीव वस्तुकेँ प्रतीक बनाय स्वतन्त्र भारतक दशा-दिशाक मार्मिक चित्र खिचलनि अछि ।

हिनक कथा **एक निमूधनक आत्मकथा**मे बड नीक ढंगसँ एकटा बड़दक अनुभूतिकेँ व्यक्त कयल गेल अछि । मनुष्ये जकाँ माल-जालकेँ सेहो हर्ष-विषाद होइत छैक से सभ जनैत अछि । मुदा जाहि संवेदनाक संग लेखक ओकरा अभिव्यक्त कयलनि अछि से अद्‌भुत अछि ।

कहल जाइछ जे मनुष्यसँ बेशी पोसल जानवर आज्ञाकारी आ विश्वासी होइछ तेँ सहृदय व्यक्तिकेँ अपन सन्ताने जकाँ अपन पोसल पशुओसँ तेहने लगाव रहैत छनि । एहि कथामे एकटा मूक बड़दक कथा कहल गेल अछि । ओ जखन अपन पहिल पोसिन्दा लगसँ दोसर मालिक लग अबैत अछि तँ ओकर स्नेह-भावसँ अपन पहिल पोलिन्दाकेँ बिसरि जाइछ । पहिल पोसिन्दा मात्र ओकरा खोराकिए दैत रहैक मुदा दोसर मालिक ओकरा अपन भाग्य विधाता मानि कऽ अपन पुत्रवत स्नेह दैत रहलैक । जखन ओ पहिले दिन ओकर दरबज्जापर पहुँचल तँ मलिकिनी काठक तामामे दूभि, अच्छत आ जल लऽ कऽ खुर पुजलकैक । फेर कलजोड़ि कहलकैक-**हे महादेव ! अहाँ सगुनिआँ भऽ कऽ हमरा खुट्टापर रहब ।'**

एकटा बड़दक मोनक विभिन्न भावकेँ ओकर दु:ख-सुख, हर्ष-विषादकेँ कथाकार कोना अपन लेखनीसँ साकार कयलनि अछि से निम्न किछु अंशमे देखल जा सकैछ– **एहि बेर हरबाह हँकलक आ हम हर बहऽ लगलहुँ आ बहैत रहलहुँ । हरबाह एक बेर 'हे हे कहय तँ हम चारि धाप बढ़ि जाइ आ बड़े भाइ पाछुए रहि जाय ।**

...ओ अपन जीहसँ हमर देह चाटऽ लागल । हमरा ओकर चाटब बड़ नीक लागल । संगक सुख एतेक नीक होइ छै पहिने कहाँ बूझने छलिऐ ।

आस्ते-आस्ते बड़ भाइ आ हमर जोड़ी तेहन बैसि गेल जे गामक लोको सब प्रशंसा करऽ लागल । लऽ दऽ कऽ तीनटा काज छल-हर जोतब, दाउनि बहब आ गाड़ी घीचब ।

मुदा जखन ओ बड़द अनुपयोगी भऽ जाइछ तँ मालिककेँ अपन बेटा सभक दबाबक कारणेँ ओकरा बेचि देबऽ पड़ैत छैक । मुदा बड़द छान-पगहा तोड़ि पुन: अपन मालिकक खुट्टापर चल अबैछ । अपना ओ अपन खुट्टाक प्रति बड़दक असीम स्नेह जानि मालिक सभक विरोधोक उपरान्त बड़दकेँ अपनहि खुट्टापर रखबाक निर्णय लैत अछि । एहि प्रकारेँ कथाकार एकटा बड़दकेँ अपन कथाक मुख्य पात्र बना मानवक कृतघ्न चरित्र ओ उपभोक्तावादी संस्कृतिपर समधानि कऽ प्रहार कयलनि अछि । रामदेवझा जहिना मानव मनक सूक्ष्म विश्लेषण करबामे सिद्धहस्त छथि तहिना मानवेतर पात्रक सूक्ष्म विश्लेषण करबामे सेहो ओतबे सिद्धता प्राप्त कयने छथि । हुनक भाव आ भाषा दूनू जीवन्त होइत छनि जे पाठककेँ चिन्तन करबा लेल विवश करैत अछि ।

●

Scanned by CamScanner

मैथिली कथाक वर्द्धमान स्वरूपक प्रतीक : एक खीरा तीन फाँक

डा. शैलेन्द्रमोहनझा

कहानी आजुक साहित्यक विधामे सर्वाधिक सशक्त सिद्ध भऽ चुकल अछि । आधुनिक एवं नवीन संवेदनाकेँ व्यक्त करबाक क्षमता अन्य समस्त साहित्यिक विधाक अपेक्षा एहिमे अधिक अछि ।

मैथिली साहित्यक बहुमुखी विकासमे कहानीयो पछुआयल नहि अछि । ई गद्यक बहुविध सम्पन्नताक प्रतीक बनि गेल अछि । अपन विकास यात्रामे रुचि, संस्कार ओ रूपक परिष्कार कऽ ई अतिशय आकर्षक बनि गेल अछि। फलत: एकरा दिशसँ उदासीन रहब कठिन अछि ।

साम्प्रतिक मैथिली-कहानीक महत्त्व ओकर नवीन रूपकेँ लऽ कऽ बढ़ि गेल अछि । बाह्यजीवनक स्थूल चित्रणसँ विमुख कहानीकारक अन्त:वृत्ति-निरूपिणी प्रतिभा, कहानी साहित्यकेँ नव दिशा प्रदान कयलक अछि । सम्प्रति कहानी व्यक्तिप्रधान भऽ गेल अछि । ओकर आभ्यन्तरीण जीवन-कहानीक घटाटोप नहि भेटत अपितु पात्रक उन्मुक्त हृदयाकाशक झलकी भेटत । यैह कारण थीक जे नव कहानीमे, कहानीकार पाछाँ छूटि जाइत छथि और हुनक पात्र स्वयं अपन पाठकसँ स्नेहसम्बन्ध जोड़ि लैत छनि । एहि रूप-विकासक बहुत रास श्रेय मनोविज्ञानकेँ छैक जे हृदय एवं मस्तिष्कक महत्त्वकेँ स्वीकारवाक लेल प्रेरित कयलक अछि ।

व्यक्ति-केन्द्रित कथासँ ई तात्पर्य नहि जे ओकर समाजपक्ष तिरोहित भऽ गेलैक । हँ, एतेक अवश्य जे समाज ओतऽ ततबहि दूर धरि छैक जतऽ धरि व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी अछि । तथापि व्यक्तिक आशा-आकांक्षा, दुख-दर्द, अभाव-अभियोगक पाछाँ ततेक संवेदना वर्त्तमान रहैछ जे सम्पूर्ण चित्रण व्यक्तिक नहि रहि सार्वजनीन भऽ जाइत अछि।

एक खीरा : तीन फाँकमे संगृहीत कहानी सभ, मैथिली कहानीक एही नवीन वर्द्धमान स्वरूपक परिचय दैत अछि । श्रीरामदेवझाजी, सुरुचि सम्पन्न कलाकार छथि, जे मैथिली कहानीक नवयुवक कहानीकारक पंक्तिमे अपन विशिष्ट स्थान बना लेने छथि । एहि कहानी सभमे वैयक्तिक जीवनक जे निरूपण भेल अछि से निश्चित रूपेँ सामाजिक ओ जातीय-जीवनक आधारपर । एहि सभमे लेखकक कल्पनाशीलताक संगहि यथार्थ जीवनक सन्तुलन वर्त्तमान भेटत ।

फलत: सभ कहानीमे जीवनक प्रति गहन अनुभूतिक दर्शन होइछ । चेतन मनक तहमे उतरि, कहानीकार तथ्यक अन्वेषण कयलनि अछि तथा उपयुक्त वातावरणक निर्माण कऽ, व्यक्ति-समाजसँ सम्बद्ध अनेक समस्यापर सहानुभूतिपूर्वक विचार कयलनि अछि ।

अपन कथामे ई व्यक्ति-पात्रकेँ समाजक ठोस धरातलपर देखबाक प्रयास करैत छथि, यैह कारण थीक जे सामाजिक रूढ़ि-परम्परा, आस्था-विश्वास एवं ग्रामीण वातावरण हिनक कहानी-साहित्यक अनिवार्य उपादान बनि गेल अछि । लोक संस्कृतिक आकर्षण हिनकालेल सर्वदा प्रबल रहलनि अछि तथा अपन अनेक कथामे एकरा लेल उपयुक्त अवसर ई ताकि लेलनि अछि ।

सभसँ उल्लेखनीय विषय, जे हिनक कथाकेँ प्रभावशाली बनबैछ से थीक पूर्णताक प्रभाव । निश्चय ई प्रत्येक कहानीक लेल स्थायी महत्त्वक वस्तु होइछ । आखिर कोनो कथाकेँ पढ़ला उत्तर की प्रभाव पड़ल ? फेर जाहि व्यापक अनुभूतिक ओ मानवीय संवेदनासँ ई कथा सभ समन्वित अछि ओ एहिमे प्राणशक्तिक स्पन्दन भरि देने अछि ।

Scanned by CamScanner

हम एहि संग्रहक प्रत्येक कथापर विचार कऽ सहृदय पाठकक रसबोधमे बाधक नहि बनऽ चाहैत छी। संक्षेपमे यैह कहब जे सुन्दर उपस्थापन शैली, वस्तु-पात्रक वैविध्य, मर्मस्पर्शी भावना, मनोवैज्ञानिक चित्रण, कोनो स्थिति वा भावकेँ प्रतीकक माध्यमे प्रस्तुतीकरण, कविताक सरसता एवं मनोरम ग्रामीण शब्दावली आदिक अनेक विशेषतासँ समृद्ध एहि कहानी सभकेँ संग्रह ग्रन्थक रूपमे प्रकाशित देखि हार्दिक प्रसन्नता भऽ रहल अछि ।

लेखकक एहि कृतिक रसास्वादन, जे एखन धरि शुभेच्छु, मित्र एवं गोष्ठी धरि सीमित छल, से आब सर्वसाधारणक लेल सुलभ भऽ जायत । मैथिली कथा साहित्यक रसिक पाठक निश्चय एहिसँ सन्तुष्ट होयताह एहि अवसरपर हम कथाकारकेँ हार्दिक साधुवाद करैत छिऐन एवं शुभकामना व्यक्त करैत छिऐन जे हिनक प्रतिभासुमनसँ शृंगारित होयबाक सम्भावना मातृभाषाकेँ निरन्तर बनल रहौक ।

(एक खीरा : तीन फाँकक आमुख, 1965)

●

Scanned by CamScanner

मानवीय अन्तर्द्वन्द्वक सूक्ष्म विश्लेषण : एक खीरा : तीन फाँक

श्रीशैलेन्द्र आनन्द

श्रीरामदेवझाक 'एक खीरा : तीन फाँक'क आमुख लिखैत डा.शैलेन्द्रमोहनझा कहने छथि- अपन कथामे ई व्यक्ति-मात्रकेँ समाजक ठोस धरातलपर देखयबाक प्रयास करैत छथि, यैह कारण थीक जे सामाजिक रूढ़ि-परम्परा, आस्था, विश्वास एवं ग्रामीण वातावरण हिनक कहानी-साहित्यक अनिवार्य अवदान बनि गेल अछि । लोक संस्कृतिक आकर्षण हिनकालेल सर्वदा प्रवल रहलनि अछि तथा अपन अनेक कथामे एकरालेल उपयुक्त अवसर ई ताकि लेलनि अछि । सभसँ उल्लेखनीय विषय जे हिनक कथाकेँ प्रभावशाली बनबैछ से थीक पूर्णताक प्रभाव ।"

वस्तुतः ई उक्ति सभ दृष्टिएँ परिपूर्ण अछि । श्रीझाक कथा ग्रामीण परिवेशक सहजताकेँ ताहि रूपमे अङ्गीकार कऽ लैत अछि जे मेहदी सदृश पाठकक मर्मकेँ स्पर्श करैछ । परिणामस्वरूप ओहि मेहदीकेँ कतबो काछि फेकि देल जाय, ओ अपन रंग-जमौने बिना नहि छोड़त । आ यैह कारण अछि जे हिनक अधिकांश कथा कालजयी होइछ । ई मात्र मनुक्खेकलेल नहि अपितु जानवरोकलेल जे कथा लिखलनि अछि, ओकर सहज-स्वाभाविक वर्णन, बहुतो-बहुतो दिन धरि लेल, पाठकक मनो-मस्तिष्कमे हलचल मचौने रहैछ । हिनक कलमक यैह जादूगरी, समकालीन आ परवर्त्ती कथाक मध्य बेछप भऽ उभरैछ । कथाक उपस्थापन, पात्रक विविधता, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, प्रतीकक अद्भुत खेल, कथा संसारमे विचरण करयबाक अनुपम संकल्प हिनक कथाक विशेषता थिकनि । विवेच्य कथा संग्रह- **एक खीरा : तीन फाँक** एही फाँकक एकटा कड़ी थिक । जाहिमे आठ गोट कथाक माध्यमे भिन्न-भिन्न स्वादक रसास्वादन कथाकार करबैत छथि ।

एहि संग्रहक पहिल कथा **एक खीरा : तीन फाँक**, प्रतीकात्मक मनोवैज्ञानिक कथा थिक । एकर नायक फेकू अत्यन्त सहज एवं सुधवा प्रकृतिक मजूर अछि जे चौकीदारीक संग, कोइला डीपोमे एक संग कार्यरत अछि । ओकर पत्नीक नाम सुरजी थिकै जे सुन्दर देहयष्टिक स्वामिनी अछि । फेकू एकटा खीरा थीक, जकर मोन तीन फाँकमे बँटायल छैक । पहिल फाँक थीक घुटरा, जे ओकर बेटा थिकै । दोसर फाँक थीक, मङला, जे कहऽ लेल तँ ओकर माँझिल पुत्र थिकैक मुदा सद्यःमे ओ दरोगाक सन्तति थिक । एहिना अन्तिम पुत्र असरफीया, कोइला डीपोक मालिक हरदेवसिंहक रक्तक फूल थीक । फेकू मोनहि मोन एहि बातकेँ गमि रहल अछि, मुदा कोनो प्रकारक विद्रोह नहि कऽ रहल अछि । ओ अन्तर्द्वन्द्वमे ओझरायल एकटा लाचार मजूरक व्यथा-कथाकेँ जन्म दैत अछि । प्रतीकात्मक शैलीमे लिखल गेल, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणकेँ, दृष्टिपथपर राखि, सांवेदनिक धरातलपर ठाढ़ ई कथा अपन भीतरमे गंगा, यमुना आ सरस्वतीक त्रिधाराकेँ प्रवाहित कऽ रहल अछि ।

गंगा सदृश फेकूक मोन, यमुनाक जल सन ओकर बगाय-बानिमे मानवीय संवेदनाक अन्तःसलिला सरस्वती बनि प्रवहमान अछि । अविराम, निश्छल आ निस्पन्द । ओहि त्रिधाराक दू-तट बनल अछि ओ आ ओकर पत्नी सुरजी । फेकूकेँ सुरजीसँ अत्यधिक लगाव छैक । ओ ओकर सान्निध्य पयबाक लेल, सदतिकाल औनाइत रहैछ, छटपटाइत रहैछ, मुदा आर्थिक संकट दुनूक मध्य बाधक तत्त्व छैक । सुरजीकेँ ओकरा प्रति दयाभाव छैक । मुदा, लाचारी छैक पारिवारिक दायित्व आ एहि दायित्व बोधमे ओ कसायलि औनाइत रहैछ । ओकर औनाहटि नरसरियाक तीरमे भेंसायल ओहि पाखीक सदृश छैक जे अहरालेल निकलल आखेटक शिकार भेल अछि । द्रष्टव्य अछि - चौकीदारी करैत फेकू जखन ओकर स्नेहमे ड्यूटीपर नहि जाय चाहैछ तँ ओकरा चेतबैत ओ कहैत छैक- **डिपटीपरसँ गरहाजिर होइ छै तँ से जानौ अपन ।** (पृष्ठ सं-3)

Scanned by CamScanner

पत्नीक ई उक्ति पतिक लाचारीकेँ ध्यान दियबैत, परिस्थितिजन्य लाचारीक द्योतक थीक । अन्तर्मनमे नुकायल दैन्यभावक पीड़ा थीक, जाहिमे अपन सभ सऽख-मनोरथकेँ पेटक आगिम झोँकि दिअऽ पड़ैत छैक । सुरजीक इच्छा-अनिच्छाकेँ, फेकूक इच्छा-अनिच्छाक संग एहि स्थलपर झिल्हेड़ि खेलाइत देखाओल गेल अछि । संवेदनाक एहेन ऊहा-पोह देखयबाक कुशल जादूगरी एकहि स्थलपर नहि अपितु अन्य कतेको स्थलपर देखाओल गेल अछि । एहि कलाबाजीक दोसर बानगी देखबा योग्य अछि- **दरोगाजी दोसर बेटाकेँ सोनक हलुमानी देने रहैक । फेकू हलसैत आबि कऽ सुरजीकेँ दैत कहने छलैक - देवता छै दरोगा जी ! देवता !'**

सुरजी ओकरा हाथमे लऽ कऽ एक नजरि दऽ कऽ कोठीक कान्हपर राखि देने छलैक आ फेकुए सन आह्लाद नहि देखौने छलैक तेँ फेकूकेँ सुरजीपर बड़ तामस उठल छलैक ।" (पृष्ठ सं. - 4)

एहि स्थलपर फेकूक अपन सन्तानक लेल जे उत्साह छैक ओ सुरजीकेँ नहि । जकर कारण फेकूक सुधवा हृदयपर सुरजीक आकर्षण थिकै । जाहि आकर्षणमे सोनक हलुमानीक प्राप्ति अपराधबोधकेँ जन्म दैत छैक । एहि अपराध बोधक प्रस्तुति मात्र सुरजीक हलुमानीपर एक नजरि दऽ, कोठीक कान्हपर राखि देबामे छैक । एहि चित्रक उपस्थापनमे दुनू दम्पतीक इच्छा-अनिच्छाकेँ जेना दरसाओल गेल अछि, से अति सहज आ संवेदनशील स्थल बनि गेल अछि । फेकूक सुधवापन आ सुरजीक लाचारीक द्वन्द्व उपस्थित कऽ कथाकार अपन नैतिक दायित्वसँ मुक्त भऽ जाइत छथि । कथाकार मात्र समाजक फोटोग्राफर नहि थिकाह । हुनक दायित्व छल दुनू दम्पतीक मध्य इमानदारीकेँ दरसायब, आ से पूर्ण रूपसँ एहि चित्रमे उभरि कऽ आयल अछि । सुरजीक ईमानदारीमे कतहु बट्टा नहि छैक । ओ पतिसँ अत्यधिक प्रेम करैत अछि । दरोगाक संग सम्बन्ध, पतिक नोकरीक रक्षार्थ आत्मबलिदान थिक, व्याभिचार नहि । ई लाचार श्रमिक-पत्नीक विवशता थिक, काम वेगक प्राबल्य नहि । ओना सुरजीक चरित्रक जे उपस्थापन भेल अछि, ओ स्वच्छन्द कामचारिणीक चरित्र थिक । मुदा, पतिक प्रति आकर्षणकेँ देखा, कथाकार कामक स्वच्छन्दताकेँ दाबि, ओकर आर्थिक विपन्नताक मध्य पलैत विवशताकेँ उभारलनि अछि । एहि तरहेँ सुरजीक मोन सेहो खीराक तीन फाँक थीक । फेकू, दरोगा आ हरदेवसिंह, तीनूकेँ पाबि ओकर जीवन सम्पूर्ण भेल छैक, मुदा ऊपरसँ सौंस देखाइत खीरा भीतरसँ तीन फाँकमे विभक्त होयबाक लेल विवश अछि । ओकर आन्तरिक प्रेम फेकूक प्रति छैक, मुदा ओ सम्पूर्ण रूपसँ ओकरेटा भऽ कऽ नहि रहि पबैछ । एक टाँङक नाङर फेकू, वस्तुतः दाम्पत्य जीवनोमे विकलांग भऽ जीबि रहल अछि । ओ हरदेवसिंह आ सुरजीक देह सम्बन्धपर आक्रोशित होइतो, आक्रोशकेँ प्रकट नहि करैछ, अपितु अपमानकेँ सहि, चुप्प रहि जाइछ । प्रश्न उठैत अछि ई चुप्पी किएक ? की ओ क्लीव अछि ? नहि, एहि सबहक जड़िमे छैक, आर्थिक विवशता, सुरजीक प्रति आकर्षण, जे ओकरा विद्रोह नहि करऽ दैत छैक आ ओ पुत्तीक आगि सन सुनगैत रहि जाइत अछि । सुरजीकेँ हरदेवसिंहक ओ घृणा जे फेकूक कपड़ा देखि कऽ भेलैक आ जकरा ओ हाथसँ नहि छूबि, कोनो लकड़ीसँ ठेलि कऽ नीचाँमे खसा दैत छैक, नीक नहि लगैत छैक, मुदा ओ किछु बजैत नहि अछि । फेकूकेँ हरदेवसिंहक देल पाइसँ घृणा छैक जे सनेशक रूपमे तीनू छौंड़ाकेँ देल गेलैक । ओ पाँव-पैदल चलि लैत अछि, मुदा सुरजीक खूटमे बन्हायल ओ कैंचा नहि लैत अछि । ओ ओकर गमकौआ साबुनसँ नहाइतो नहि अछि । एहि तरहक द्वन्द्वमे फँसल फेकूक चरित्र निर्धारण करब बहुत कठिन बात अछि । मुदा सर्वाङ्गीण रूपसँ जँ सूक्ष्मतामे ओकर चरित्रकेँ देखल जाय तँ ओकर झुकाव श्रमक प्रति निष्ठाकेँ समर्पित छैक, जकरा कचरी लैत मोदियाइनिक बेटीक घाम देखि, आकर्षित होयबामे देखल जा सकैछ । आत्मजक प्रति झुकाव मानवीय कमजोरी थीक जकर प्रतिपादन दरोगा, मङलाकेँ सोनक हलुमानी दऽ कयलक, हरदेवसिंह असरफीयाक पेन्टक कपड़ामे पार्थक्य कऽ एवं घुटरा तथा मङलाकेँ चारि-चारि आना आ असरफीयाकेँ आठ आना दऽ करैत अछि । ओही ठाम फेकू घुटराकेँ छओटा एवं मङला आ असरफीयाकेँ आठ आ चारि-चारिटा झिल्ली दऽ कऽ करैत अछि । ओ सुरजीक प्रेमक डोरीमे बन्हायल, सुरजीक तुलना जखन बुचियासँ करऽ लगैछ तँ बुचिया श्रेष्ठ होइतो, सुरजीसँ झूस पड़ि जाइत छैक । ओ जहिना घुटराकेँ बेसी हिस्सा देबाक लेल लाचार अछि- ठीक ओहिना लाचारी भऽ जाइत छैक सुरजीकेँ विस्मृत करबामे । मानव मोनक लगावक खींचा-तानीक अद्भुत कथा अछि ई ।

Scanned by CamScanner

संग्रहक दोसरक कथा **भसियाइत दीयर** गार्हस्थ्य जीवनक प्रगाढ़ता, पति-पत्नीक बीच नोँक-झोँक एवं दाम्पत्य प्रेमक नमूना थीक । कथानायक हरिनाथकेँ अपन पत्नी रामवतीसँ अत्यधिक स्नेह छनि आ रामवतीकेँ अपन पतिसँ । जीवनक उतार-चढ़ाव बेर-बेर दुनूक आँखिपर नाचि उठैत छनि, मुदा जीवनक क्रम बदलैत नहि अछि । ओ ओहिना धारक पानि जकाँ बहल जा रहल अछि । अनवधान, अविरल अश्रुधार सन । समुद्रमे जेना कतहु-कतहु दीयरि उगि अबैत छैक, ठीक तहिना हरिनाथक संघर्षशील जीवनमे दीयरि सभ देखाय पड़ैछ- हँसी-चौल, आशंका-आतंक, दु:ख-क्षोभ, राग-विराग आदिक आ जाहिमे हुनक दाम्पत्य जीवनक नाव भासल जा रहल छनि । दीयरिसँ टकराइत, उनटबासँ बचैत पुनः दीयरिपर विश्राम लैत, आगू बढ़बाक क्रममे, दुनू दुनूक स्वभावसँ परिचित छथि । मुदा झगड़ा भैए जाइत छनि । रुसा-फुल्लीक क्रम चलिते रहैत छनि । मुहाँ बज्जी बन्द भऽ जयबाक स्थिति तक आबि जाइत छनि, मुदा पुनः दुनू अपन जीवन क्रममे चल अबैत छथि । ओना तुलसीदास रामचरितमानसमे दोसर स्थितिक लेल निम्न पंक्ति कहलनि अछि, मुदा हरिनाथ आ रामवतीक दाम्पत्य प्रेमक लेल ई कहब अत्युक्ति नहि होयत- 'तों सम पुरुष, मों सम नारि, रचेऊ विधाता, प्रपञ्च बिचारि ।'

अथच, कथाक मध्य जे विभिन्न चित्र अंकित अछि, सहृदय पाठकक मस्तिष्कमे अपन छाप छोड़ि जाइत अछि । विगत जीवनक पृष्ठपर अंकित, उन्मुक्त हँसीमे यौवनकेँ ताकब, तमसा कऽ चल जायब आ पुनः घूमि कऽ एकर असरि देखब, चुभकैत छौंड़ाक पतियानीमे अपन जीवनकेँ तकबाक चित्र, सहजहिँ बिसराओल नहि जा सकैछ ।

तेसर कथा दलित चेतना कथा थीक, जकर नाम प्रतीकात्मक अछि- **बट गाछक छाहरि** । बरक गाछ सामान्यलोकक क्लान्त मोनकेँ अपन छाहरि दऽ सुव्यवस्थित बनयबाक श्रेणीमे परिगणित होइत अछि । एकर छाह ई भेद नहि करैछ जे के अपन आ के परार थीक । के दुष्ट आ के नीक लोक अछि । ओ सभकलेल आत्मदान करैछ । स्वयं रौदक ऊष्ण ज्वालाकेँ सहि कऽ शरणागतकेँ सुशीतल छाह बिलहैछ । बटवृक्षक प्रतीक थिक हरही दगरिन जे दोसराक उपकार करबाक लेल दिन-राति अपसियाँत रहैत अछि । घरमे ओकर बेटी मरनी पूर्णमासकेँ पाबि चुकल छैक आ ओकरा ओ भगवानक भरोसपर छोड़ि रामपुर चल जाइत अछि । जखन कि ओकरा प्रसव वेदना आरम्भ छैक । ओकरा पर सभक जानक रक्षा करबाक दायित्व छैक । ओ रामपुरसँ घुमैत अछि तावत मरनीक बच्चाक जन्म भऽ गेल रहैत छैक । ओ बकरीक दूध अनैत अछि तावत ओकर फरकी लग चन्नूबाबूक माय ठाढ़ छलथिन । चन्नूबाबूक एक मात्र सन्तानक कल्ला बैसि गेल छलैक । भादव मासक अन्हरिया रातिमे जखन टिपिर-टिपिर पानि पड़ि रहल छलैक ओ अपन जुगुताओल जँउआँकेँ खूटमे बान्हि चलि पड़ैछ सूप ओढ़ि । चन्नूबाबूक एक मात्र आशाक दीपकेँ सँजोगवाक लेल । ओकर प्रयाससँ बच्चा बचि जाइत छैक आ जखन ओ घर घूमि अबैत अछि तँ ओकर एक मात्र दीप अर्थात् मरनीक नवजात, ओही रोगक चपेटमे चल गेल रहैत छैक । मुदा ओ अपन रामवाणक प्रयोग कऽ चुकल छल । ओकर हाथ रिक्त छलैक । दोसराक लेल बटवृक्ष बनलि हरही अपन स्वभावक कारण अर्थात् उदारताक कारणेँ उत्तापकेँ भोगैत अछि । सहज ढंगे कहल गेल कथा, मानवीय संवेदनाक गिरह-गिरहकेँ फोलि कऽ राखि दैत अछि ।

दोहरी दीप कथा दहेजक जाँतसँ दबल एकटा नारीक कथा थिक । एहिमे गाछ आ मनुक्ख लगावकेँ दरसाओल गेल अछि । गाछक प्रति श्रद्धाभाव अदौसँ रहल अछि । नायिका माधुरी धातरीक प्रति समर्पित अछि । मुदा ओकर समर्पणक परिणाम, मात्र आस्थाक संग चल गेलैक । धातरी किछु नहि दऽ सकलैक ओकरा ।

वस्तुतः 'धात्री'क अर्थ होइछ धारण करऽबाली, अर्थात् धाय । कथामे नारीकेँ व्यथा धारण करैत, युगक विसंगतिकेँ सहैत विषादसँ भरल हृदयकेँ उघैत देखाओल गेल अछि ।

हिनक **पियासल ठोर** 'इमोशनल' कथा थिक । जाहिमे एकटा दुखिताह पिताक आत्म पीड़ाक अभिव्यक्ति भेल अछि । एहि कथामे डा. झाक अन्य कथामे जाहि मानवीय संवेदनाक अनुगुंज अछि ओ एहि कथामे कने कमजोर पड़ैत अछि ।

Scanned by CamScanner

दुतियाचान : तुलसीदल दू सखीक अन्तर्सम्बन्धकेँ रेखांकित करैत असमानताक भीषण उत्तापकेँ सहैत नारी संवेदनाक अतल गहराइकेँ छूबैत, मर्मस्पर्शी कथा अछि । सोमा आ नीराक एक-दोसराक प्रति आकर्षणमे किशोर मोनक सहज आकर्षणक संग, नारी संवेदनाक विभिन्न सारकेँ छूबाक प्रयास कयल गेल अछि । नीरा धनिक बापक बेटी अछि, जखन कि सोमा गरीब पिताक । नीराक देहपरक कीमती साड़ी, सोमाक आकर्षणकेँ विकर्षणमे परिवर्त्तित करबाक लेल विवश करैत छैक । मुदा ओ ओकर मोह-पाशमे बन्हायलि सम्बन्ध विच्छेद नहि कऽ पबैत अछि । ओकरा गमबाक प्रयास करैत अछि । पूर्व सखीक द्वारा भेटल उपालम्भसँ छगायलि-डेरायलि सोमा नीराक सखी लगयबाक आमन्त्रणपर विचार करैत अछि । यैह थिक नारी मोनक सहज भाव जे नीरासँ बहिनपा लगयबाक लेल मोनकेँ उसकबैत छैक, मुदा ओकर ई कहलापर जे- **बहिनपा की ओहिना लागि जाइत छै ?'** सोमा भविष्यक आतंकसँ आतंकित भऽ उठैत अछि । कारण स्पष्ट अछि - पूर्व सखी कुमुदक अपमान । जाहि अपमानमे ओ आइ धरि जरि रहल अछि । मुदा शरद ऋतुक चान अपन सम्पूर्ण आकर्षणमे छल आ तेँ दुनू सखी ओहि आकर्षणमे बन्हायलि एक दोसरासँ फराक नहि भऽ रहल छलि । नीराक वियाह भऽ गेल छलैक आ सोमा कुमारि छलि । मुदा वैवाहिक जीवनक उत्साह ओकरोमे छलैक । आ तेँ ओ नीरासँ निकट भऽ रहल छलि । ई मनोवैज्ञानिक तथ्य थिकैक जे दू किशोर मोन जखन एकठाम होइत अछि, तँ ओकर अन्तर्मनक जिज्ञासा प्रस्फुटित होइत छैक, आ ओ एक-दोसराक सहायतासँ ओहि जिज्ञासाकेँ दूर करैत अछि । सखी बनयबाक पाछू, यैह कारण रहलैक अछि । सोमा पूर्व सखी कुमुदक व्यवहारसँ क्षुब्ध अछि आ नीराक सखी लगयबाक आमन्त्रण ओकरामे क्षोभकेँ जन्म दैत छैक । कुमुदक सख्यभाव अर्थपर आधारित छैक । जखन कि सोमा हृदयक लगाव चाहैत अछि । आ से ओ नीरामे ओहि कालमे देखैत अछि, जखन नीरा चुटकी बजा तुलसी पात तोड़ैत अछि । सोमा, ओकर एहि सोचपर अनुरक्त भऽ उठैत छैक । ओकर मोनकेँ एक गोट आशा आ विश्वास भेटैत छैक जे 'तुलसीपात जेहने छोट, तेहने पैघ' । मित्रताक बीच छोट-पैघ, ऊँच-नीच, गरीब-धनीक आदि देवाल नहि होइत छैक । मैत्री, हृदयक मिलन थिकैक । भावना मिनार थिकैक । जकर ऊँचाइ जतेक नमहर, मैत्री ओतबे प्रगाढ़ ।

कथाकार तुलसीदलकेँ प्रतिबिम्बित करबामे अत्यधिक सफल भेल छथि ।

शीतल बाती मिथिलाक नारीक ओहि विवशताकेँ जगजियार करैत अछि जे पूर्ण प्रगतिक उपरान्तो, सम्प्रतिमे समस्यासँ ग्रसित अछि आ नारीक ई समस्या कोनो ने कोनो रूपमे समक्ष अबैत रहैत अछि । नारी-विमर्शक ई कथा छोट परिधिमे नमहर दायित्वकेँ लऽ कऽ उपस्थित अछि । ई एकटा नन्नू दाइक कथा नहि, अपितु ओहि समस्त अभागलि मैथिलानीक कथा थिक, जे बाल विधवा भऽ, सामाजिक उपालम्भकेँ सहैत, अपन टुटैत मोनक व्यथाक संग, समाजक मध्य जीबैत अछि । ओकर इच्छाक समुद्रकेँ वाड़वानल सुखा दैत छैक । अपन वयसकेँ गाड़ि, जँ ओ जीबाक इच्छा करितो अछि तँ समाजकेँ इहो स्वीकार नहि होइत छैक । विभिन्न तरहक लांछणा ओकरापर लगाओल जाइत छैक । लांछणाकेँ सहैत जँ ओ शेष जीवनक निर्वाह कओ लैछ आ प्रौढ़ावस्थाकेँ गुदस्त कऽ वृद्धावस्था धरि पहुँचैत अछि तँ 'डाइन'क अलंकारसँ अलंकृत होइत अछि ।

प्रश्न उठैत अछि - एहिमे ओकर कोन दोष ? जकर उत्तर नहि भेटैत अछि । एहना परिस्थितिमे जिबैत 'शीतलबाती'क नन्नूदाइक समाजक समक्ष एकमात्र अपराध छनि, हुनक तेरह वर्षक अवस्थामे वैधव्यकेँ प्राप्त करब । नारीक हृदयशीलताकेँ धारण करब, आ एही अपराधक कारण ओ तिल-तिल जरबाक लेल विवश होइत छथि । दुखिताह जगदेवाक खोँखी हुनकासँ बर्दास्त नहि होइत छनि । ओ छटपटा उठैत छथि । जखन कि हुनक विरोधमे ओही महिला सभक द्वारा झिझिया खेलायल जा रहल अछि, जाहि गुटक एक महिलाक बेटा थिक जगदेवा । एहि कथामे सामाजिक विभिन्न रूढ़ि सबपर प्रहार कयल गेल अछि आ मानवीय संवेदनाक स्थापना कयल गेल अछि ।

जगदेवाक खोंखी नन्नू दाइक आँखिक निन्न चोरा लैत छनि । ओ भगवतीक साँझ-बातीक लेल गायक घी रखने छथि । मुदा जगदेवाक असह्य वेदनाकेँ अनुभव कऽ ओ घीक शीशी लऽ कऽ ओ ओहि टोल दिस चलि पड़ैत

Scanned by CamScanner

छथि, जतऽ जगदेवा खोंखीसँ बेदम भेल जा रहल छल । नन्नू दाइकेँ तत्काल ओ सभटा बात बिसरा जाइत छनि, जे बात ओ अपन कानसँ सूनि चुकल रहथि । असहनीय हृदयक वेदनाकेँ सहि चुकल रहथि । मुदा नारीक मातृत्व भाव ओहि शब्द-वाणक घाओकेँ मोन नहि रखैत अछि । ओं मर्माहत भऽ उठैत अछि दोसरोक पीड़ासँ आ साँझबातीक लेल राखल घी, भने भगवतीक पीड़ीपर नहि जरओ, जगदेवा मायक घरकेँ अन्हार नहि होअऽ देतै, ओकर मातृत्व जीवनमे अन्हार नहि आबऽ देतैक । यैह सोचि ओ घीक उपयोग कोनो दुखी मानवक रक्षार्थ करैत छथि । मानवीय संवेदनाक ई कथा वर्त्तमानमे औरो बेसी प्रासङ्गिक अछि ओ ओहिना गमकि रहल अछि, जेना भालसरीक फूल ।

एहि संग्रहक अन्तिम कथा **नारिकेर** नारीक विराट हृदयक प्रतीक अछि । ऊपर-ऊपर कठोर बनलि आ भीतर मे अजस्र ममत्व धारण करऽवाली माय, सन्तानक हितक लेल कतेक व्याकुल रहैत अछि, तकर उदाहरण अछि चनियाक माय । कथानायक ओहि दुनू माय-धीक आपसी बतकुटौअलिसँ अकच्छ भऽ गेल छथि । मुदा जे ओहि परिवारक कतहुसँ कतहु ने ऋणी छथि, तेँ अपनाकेँ मुक्त नहि कऽ पाबि रहल छथि । चनियाँक मायपर बहुत कसि कऽ तामस उठैत छनि जे ओ केहेन राक्षसी अछि जे अपन सन्तानकेँ सदतिकाल नङो-चङो कयने रहैत अछि । तामसमे ओ बिनु किछु खयने पीने पोस्ट ऑफिस चल गेल रहैत छथि । जखन कि चिट्ठी सॉर्ट करबाक क्रममे एकटा बिनु साटल लिफाफ हुनक सोचकेँ नव दिशा प्रदान करैत अछि । ई पत्र, एक सखी, दोसर सखीकेँ लिखने रहैत अछि । जाहिमे ओकरा अपनापर बीतल घटना सभक वर्णन छलैक । घटनाक क्रममे माय-बेटीक बीच चलैत अन्तर्द्वन्द्वक कथा अंकित छल । 'जेनरेशन गैप' एकटा एहेन सत्य थिकैक, जकरा अनठाओल नहि जा सकैछ ।

दू पीढ़ीक ई अन्तर्द्वन्द्व **नारिकेर** कथामे उभरि कऽ आयल अछि । आओर ओकर परिणति जे- **सभ माय नारिकेर होइत अछि - ऊपरमे विरूप, कठोर खपलोइया आ भीतरमे ढकर-ढकर पानि ।"** (पृ. सं.-104)

सभ माय अपन सन्तानक संरक्षिका होइत अछि । ओकरा अपन सन्तानसँ ततेक स्नेह रहैत छैक जे ओ ओकर जीवनमे अन्हर-बिहाड़ि नहि उठौक ताहि लेल सदतिकाल व्याकुल रहैत अछि आ समयक मारिसँ बचाओल जाइत ओहि सन्तानकेँ अपन संरक्षिका माय, कसैनी सन बुझाइत छैक । आ यैह थिक दू-पीढ़ीक अन्तर्द्वन्द्व । जाहि अन्तर्द्वन्द्वमे फँसल चनियाँ आ चनियाँक मायक माध्यमसँ कथाकार पत्र लेखिकाक तुलना करैत, जाहि निष्कर्षपर अबैत छथि, ओ मायक अन्तर्वेदनाक चित्र थिक । माय जाहि बतासाकेँ फुटि जयबाक आशंकामे डरायलि-छगायलि रहैत अछि, वैह थिक अस्मिता आ जाहि अस्मितापर नारीक सम्पूर्ण जीवन आधारित छैक आ एहि तरहेँ ओ अपन चिन्हासकेँ अक्षुण्ण राखऽ चाहैछ । एहि अन्तर्द्वन्द्व भरल मानसिकताकेँ कथामे नीक जकाँ उभार भेटलैक अछि । कथा ट्रिटमेंटक जतऽ धरि प्रश्न उठैत अछि, ओहिमे श्रीरामदेवझा सिद्धहस्त छथि, तेँ केहनो कथानक हुनक जोर-तोरमे एकटा नीक स्वरूप ग्रहण कऽ लैत अछि । आ असली कथाकारक यैह परिचिति श्रीरामदेवझाकेँ कथाकारक शीर्षमे स्थान दियऽबैत छनि । सम्पूर्ण रूपसँ यैह कहल जा सकैछ जे विवेच्य कथा-संग्रह मानवीय अन्तर्वेदना, नारी अन्तर्द्वन्द्व एवं मानवीय मूल्यक स्थापनाक अनुपम कथा संग्रह अछि ।

●

Scanned by CamScanner

मैथिली कथा-शिल्पक नवीन मापदण्ड 'मनुक सन्तान'

- डा. श्रीनवीनचन्द्रमिश्र

श्रीरामदेवझाक कथा-संग्रह 'मनुक सन्तान'क द्वितीय संस्करणक भूमिका लिखैत हमरा अतीव प्रसन्नता भऽ रहल अछि । एहिसँ पूर्व, 'एक खीरा : तीन फाँक' कथा संग्रहक लेखकक रूपमे रामदेवजी मैथिलीक कथाकार लोकनिमे अपन विशिष्ट स्थान बना लेने छथि । 'एक खीरा : तीन फाँक' शीर्षक कथा तँ हिनका मैथिलीक क्षेत्रकेँ टपि अन्तर प्रान्तीय ख्याति दिऔने अछि ।

मनुक सन्तान कथा संग्रह हिनक सफल कथा शिल्पक परिचायक थीक- ठेठ मैथिल जीवन, ठेठ पात्र, परिस्थिति ओ भाषाक विलक्षण उपन्यास एहिमे भेटैत अछि । बहुतो गल्पकार एहन भेटताह जनिका मिथिलाक माटि-पानिक अपेक्षा कृत्रिम कथावस्तु, परिस्थिति, पात्र आदिक सपना देखब विशेष रुचिकर लगैत छनि, मुदा रामदेवजी जाहि माटि-पानिपर छथि तकर अन्तस्मे प्रवेश कऽ, एतहुका लोक-जीवनसँ अनुभूति ग्रहण कऽ कथाक माध्यमे अभिव्यक्त कयने छथि । कथावस्तु, पात्र ओ परिस्थितिक चयनमे ई अत्यन्त सफल भेलाह अछि । 'मनुक सन्तान'सँ लऽ अन्तिम कथा 'पहुना' धरि लेखक अपन दायित्वक प्रति अत्यन्त सजग छथि । मानव हृदयक सूक्ष्मतम मनोभाव, ओकर कार्य-कलाप आदिक अत्यन्त सहृदयतापूर्ण ओ सहानुभूतिपूर्ण अंकन कयने छथि, एक-एक गोट पात्र ओ परिस्थिति जेना वर्त्तमान मिथिलाक जनजीवनक प्रतिनिधित्व करैत अछि । निम्नवर्गीय समाज, आर्थिक विषमतासँ अनवरत संघर्ष करितहुँ प्रसन्नभावेँ जीवन-पथपर अग्रसर भऽ रहल अछि तकर सूक्ष्म पर्यवेक्षण कऽ अपन कथाक भित्तिपर अंकित कऽ गल्पकार तकरा अमर बना देने छथि । चाहे ओ **मनुक सन्तान**क मुनेसरा हो, किंवा **भितरिया धधरा**क मुचकुनमा; **एकटा रहय उतमी**क उतमी हो किंवा परमिलिया - सबकेँ लेखक अपन कथाक द्वारा एकटा 'प्रतीक' बना देने छथि । **परती** शीर्षक कथाक राधामोहन आ तारा तँ ततेक सबल पात्र अछि जे अनायासे प्रत्येक सहृदय, संवेदनशील पाठकक सहानुभूति प्राप्त कऽ लैछ ।

ठेठ परिस्थितिक चित्रणक संग ठेठ भाषाक प्रयोग - जाहिमे कथित भाषाक सौन्दर्य ओ महत्त्वकेँ साहित्यमे प्रतिष्ठित करबाक प्रयास अछि; से तँ एहि कथा-संग्रहकेँ अओरो बेसी रोचक बना देने अछि । एक वाक्यमे यदि ई कही जे- कथा-संग्रहक माध्यमे लेखक कथा-शिल्पक **एक नवीन** मापदण्ड उपस्थित कयने छथि तँ अत्युक्ति नहि होयत ।

प्रथम संस्करणक सफलता ओ लोकप्रियताक कारणे एकर द्वितीय संस्करण भऽ रहल अछि । अस्तु, एहि अवसरपर हम एहि गल्पकारक संवर्द्धना करैत कामना करैत छी जे ओ एही रूपेँ मैथिली साहित्यक भण्डारकेँ अपन कृतिसँ समृद्ध करैत रहथि ।

(मनुक सन्तान, द्वितीय संस्करण-1968क भूमिका)

●

Scanned by CamScanner

मिथिलाक खण्डित समाजक उपेक्षित वर्गक कथा : मनुक सन्तान

-श्रीशम्भुनाथमिश्र

श्रीरामदेवझा आधुनिक मैथिली साहित्यक बहुमुखी प्रतिभाक साहित्यकारक रूपमे प्रतिष्ठित छथि । ई 1953मे 'मिथिला मिहिर'मे पहिल बेर **मुदा आब की** ओ **दू ठोप नोरसँ** कथा लेखन क्षेत्रमे प्रवेश कयलनि। तकर बादसँ अनेकानेक कथा सब प्रकाशित होइत रहलनि । जाहिमे किछु कथा ततेक चर्चित रहलनि जे कथा लेखनक क्षेत्रमे बहुत ख्याति दियौलकनि जाहिमे **मनुक सन्तान** एवं **एक खीरा : तीन फाँक** उल्लेखनीय कहल जा सकैछ । छठम दशकक कथा साहित्यक मंचपर अवतीर्ण उल्लेखनीय कथाकार लोकनि यथा ललित, राजकमल, मायानन्द, सोमदेव, बलराम, प्रभास, धीरेन्द्र प्रभृति अनेक कथाकारमेसँ किछु गोटे संसार छोड़ि चुकल छथि तँ बहुत गोटे कथा लेखन छोड़ि चुकल छथि । छठम दशकमे 1960सँ पहिने दरभंगाक मिथिला मिहिरक माध्यमे कथा साहित्यक मंचपर अवतीर्ण कथाकार लोकनिमे श्रीरामदेवझा एकमात्र एहन कथाकार छथि जनिकर कथा क्षेत्रमे रचनाक निरन्तरता एखनहुँ तक बनल छनि । जकर सद्यः प्रमाण थीक 2009मे प्रकाशित हिनक नवीन कथा संग्रह **आजी माँ** ।

मनुक सन्तान सातम दशक (1966) मे प्रकाशित हिनक दोसर कथा संग्रह थिकनि जाहिमे कुल सात गोट कथा संकलित अछि । एहिमे संकलित समस्त कथा 1955सँ 1965क बीच लीखल कथा थीक जाहिमे निम्न एवं मध्यवर्गीय दूनूक जीवन-दर्शनक चित्रण कयल गेल अछि जे पाठकक ध्यान ओ रुचिकेँ गम्भीरतापूर्वक पकड़ने रहबामे समर्थ भेल अछि । एहि संग्रहक कथा पढ़लासँ एहन सन बूझि पड़ैत अछि जे लेखकमे ई बुझबाक गम्भीर दृष्टि छनि जे जीवनमे कोन-कोन छोट तत्त्व सर्वाधिक आकर्षक होइत अछि जे पाठकक ध्यानकेँ सहजहिँ अपना दिस आकृष्ट कऽ सकैत अछि ।

एहि कथा संग्रह पहिल कथा थीक **मनुक सन्तान** जे हिनक बहुत प्रसिद्ध कथा थिकनि । एकर हिन्दी ओ पंजाबीमे सेहो अनुवाद भऽ चुकल अछि । एहि कथामे जीवनक छोट-छोट चित्र उपस्थित कयल गेल अछि । आसिन मासक प्राकृतिक चित्र, आर्थिक विषमताक कारणेँ निम्नवर्गीय जीवनक विवशताक चित्र, सुगियाकेँ अपन पहुनाक आगमनक उल्लासमे डोका-काँकोड़ बिछबाक चित्र, खेतबला द्वारा कहल गेल बेगारी नहि करबाक कारणेँ गरीब लोकक भरल पथिया डोका, मोनिमे फेकि देबाक चित्र आदि । किन्तु किछु कम वा बेसी, सभक द्वारा बीछल गेल डोका-काँकोड़केँ एक ठाम राखि समान रूपसँ बँटबाक चित्र सर्वोदयी वा समाजवादी विचारधाराक सम्पुष्टि करैत अछि । एहि कथामे विनोवा भावेक सर्वोदय आन्दोलनक एक झलक भेटैत अछि । लेखक एहि कथाक माध्यमसँ एक सन्देश देबऽ चाहैत छथि जे सब गोटे जँ सहयोग करत तँ कोनो एक गोटे अपन अधिकारसँ वंचित नहि रहि सकत, केओ एक गोटे भूखल नहि रहि सकत । मिलि-जुलि कऽ अपनामे बाँटि लेलापर ककरो आत्मसम्मानपर सेहो नहि पड़तैक । कथामे उपेक्षित वर्गक सामाजिक सहयोगमे सामाजिक समरसताक झलक भेटैत अछि ।

संग्रहक दोसर कथा थीक **परती** । एहि कथामे एक पुरुष पात्र राधामोहनक मनोविज्ञानक सूक्ष्म विश्लेषण कयल गेल अछि । एकर ठीक विपरीत हिनक **एक खीरा : तीन फाँक** शीर्षक कथामे सुरजी सन नारी पात्रक मनोविज्ञानक कलात्मक चित्र उरेहल गेल अछि । दूनू कथामे बहुत साम्य कहल जा सकैछ । जतऽ एक खीरा: तीन फाँकमे सुरजीक प्रेम तीन फाँकमे कोना बँटल छैक तकर चित्रण भेल अछि ततऽ **परती** कथामे राधामोहनक प्रेम तीन फाँकमे कोना बँटल छैक तकर कलात्मक चित्रण भेल अछि । **एक खीरा:तीन फाँक**क कथा पात्री सुरजी तथा **परती**क कथा-नायक

Scanned by CamScanner

राधामोहन बाहरसँ एक होइतो भीतरसँ तीन फाँकमे बँटल अछि । सुरजी जकाँ राधामोहन सेहो अन्तर्द्वन्द्वमे जीबैत अछि । रोजी, राजदुलारी और ताराक त्रिकोणमे फँसल राधामोहन अपन अतीत ओ वर्त्तमानक बीच त्रिशंकु जकाँ झूलि रहल अछि । **परती** कथामे अतीतक सामन्ती प्रथाक चित्रणमे बदलैत सामाजिक स्वरूपक दर्शन होइत अछि । कहियो जाहि परतीपर ककरो पैर रखबाक साहस नहि होइत छलैक ततऽ ओ परती शहरगंजा एकपेड़िया बनि गेल छैक । एहि कथामे बदलैत सामाजिक परिवेशमे कथानायक राधामोहनक अन्तर्द्वन्द्वक सजीव चित्रण देखबामे अबैत अछि । एक दिस अतीतक चित्रमे बीतल जीवनक स्वरूपक चित्रण भेल भेल अछि तँ दोसर दिस वर्त्तमानमे अपन जीवनसँ कोना संघर्ष करऽ पड़ैत छैक तकरहु चित्र भेटैत अछि । हर जोतब ओकर सपना थिकैक किन्तु ओ हर नहि जोति सकैछ से ओकर विवशता थिकैक ।

राधामोहनक अन्तर्द्वन्द्वक चित्रण एहि रूपमे देखल जा सकैछ– **रोजी ओकर सीमासँ बाहर चल गेल छलैक । तारा ओकर सीमाक अन्तस्तलमे आबि कऽ अस्तित्वहीन भऽ गेल छलैक आ एहि दूनूक बीच ठाढ़ि रहैत छलैक– राजदुलारी, जकरा ने अपना परिधिमे समेटि सकैत छल आ ने जकरा परिधिमे जा सकैत छल ।**

वस्तुतः कथानायकक मनोदशाक मार्मिक चित्रणक माध्यमे बदलैत सामाजिक परिवेशक दिग्दर्शन करायब कथाक मुख्य लक्ष्य थीक, मुख्य सन्देश थीक ।

संग्रहक तेसर कथा थीक **नकली आदमी** । एहि कथाक चरित नायक मुखो हाड़–माँसक मनुक्खक रूपमे अछि । कथामे गति देबाक हेतु प्रकारान्तरसँ कथाकार बहुत एहन वस्तुक वर्णन कऽ दैत छथि जाहि माध्यमे बहुत किछु कहब अभिष्ट रहैत छनि । एहि कथाक माध्यमे सामाजिक विधि–व्यवहार यथा चुमाओन काल कनियाँ बनबाक विधि, नकली कनियाँक गाल सेदि कऽ मुँहकेँ मधुर करबाक विधि, पोखरिक घाटपर स्त्रीगण द्वारा गीत गबैत गूड़–चाउर बँटबाक विधि, नगहर भरबाक, पानि कटबाक विधि आदिक रोचक वर्णनक संग सामाजिक विकृतिकेँ सेहो उजागर कयल गेल अछि । 'मुखो'क माध्यमे समाजक–आर्थिक विषमताक संग–संग आभिजात्य वर्गक सामाजिक दबदबाक सेहो वर्णन भेल अछि । **नकली आदमी** कथाक माध्यमे लेखक अपन सन्देशकेँ एहि रूपमे व्यक्त कयने छथि– **सत्ते जँ मुखो मनुक्खक बदलामे कोनो जन्तु–जानवर रहैत तँ नितान्त सुखी रहैत, स्वतन्त्र रहैत । मुदा से नहि मुखो आदमी अछि आदमी– नकली आदमी ।**

संग्रहक चारिम कथा थिक **परमिलिया** । एहि कथामे युवावस्थाक देहरिपर बढ़ैत अमलेश एवं परमिलियाक अव्यक्त रोमांसक झलक भेटैत अछि । अमलेश अविवाहित युवक अछि एवं परमिलिया विवाहक देहरिपर ठाढ़ि अविवाहिता युवती । अमलेश एवं परमिलिया दूनूक हृदयमे एक दोसराक प्रति सहज आकर्षणक भाव छैक । अव्यक्त रूपसँ एक दोसराक प्रति आकर्षणक भाव रहितहुँ कतहु सीमाक उल्लंघन नहि भेल अछि । कथामे आदिसँ अन्त धरि रस–सृष्टिक वृष्टि अछि । कथाकार युवा हृदयक मानसिकताक मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक संग प्रतीक रूपमे परमिलियाक माध्यमे युवावस्थाक स्फूर्त्ति, कोनो कार्यक प्रति लगनशीलताक संग ग्राम्य जीवनक परिवेशमे जाँत चलयबाक दृश्यक सहज वर्णन कयने छथि । ग्राम्य परिवेशमे विधवा सहजो पीसीकेँ कोना सब उपेक्षित दृष्टिसँ देखैत छनि, किन्तु परमिलिया ओहू उपेक्षिताकेँ कतेक सम्मान दैत छैक तकर वर्णन ग्राम्य जीवनक जीवन्त दृष्यकेँ उपस्थित कऽ दैत अछि ।

संग्रहक पाँचम कथा थीक **एकटा रहय उतमी** । एहि कथामे एक घसवाहिनी उतमी जे घास बेचि कऽ अपन जीवनक निर्वाह करैत अछि किन्तु तकरहुमे कतेक नारीत्व ओ नैतिकता छैक तकर झलक देखायब कथाकारक उद्देश्य छनि । एक–एक पाइ लय खगल उतमी सामाजिक विषमताक क्रूरतासँ दबलि अनुभव करितो साड़ीक खूँटमेसँ मनझनियाँ मसोमातक नामपर खसाओल बोगस भोटसँ अर्जित टाका फूजि कऽ खसि पड़बामे कतहु ने कतहु ओ दुखसँ बेसी सुखक अनुभव करैत अछि । एहि कथामे लेखक एक दिस लोकतन्त्रक नामपर बोगस भोट खसयबाक सामाजिक विकृतिपर दृष्टिपात करबैत छथि तँ दोसर दिस ओहि निम्नवर्गीय समाजक नारी पात्र उतमी, जकरा संस्कृतिमे दोसर–तेसर विवाह

Scanned by CamScanner

करब सामान्य बात मानल जाइत छैक तकरहुमे रुग्ण स्वामीक प्रति आत्मत्याग करबाक प्रवृत्ति छैक से दरसाय समाजक समक्ष आदर्श नारीक स्वरूप उपस्थित कयने छथि। एही ठाम ललित ओ राजकमलक कथासँ फराक श्रीरामदेवझाक कथा बूझि पड़ैत छनि। ललितक कथा **मुक्ति**क मुख्य पात्री शेफाली सम्पन्न घरक महिला रहितो चिर रोगी घरबलाकेँ छोड़ि दरबानक संग पड़ा जाइत छैक। अस्वस्थ बीसोबाबू अपन अस्वस्थताकेँ स्वीकार करैत स्त्रीक प्रथम आवश्यकता स्वस्थ पुरुष मानैत छथि। जतऽ ललित **मुक्ति**क माध्यमे देहक भूखकेँ बेसी आवश्यक बुझने छथि ततऽ रामदेवझा **'उतमी'** क माध्यमे मोनक भूखकेँ बेसी आवश्यक बुझने छथि। नारीक गरिमा समाजक निम्नो वर्गमे छैक से कहब कथाकारक अभिष्ट छनि। एहि दृष्टिएँ जतऽ हिनक कथा श्रेष्ठ साहित्यक श्रेणीमे परिगणित होयबाक अहर्ता रखैत अछि ततऽ ओहि प्रकारक सेक्स प्रधान कथाकेँ आहित्यक श्रेणीमे गनल जयबाक चाही।

एहि कथाक माध्यमे लेखक अपन दृष्टिकेँ रखैत कथाक समापन एहि रूपमे कयने छथि जे– **छोटसँ छोटो अनीतिक छाया पड़ला उत्तर निर्मलो मनुष्यक चरित्र मलिन भऽ जाइत छैक आ तेँ मोनमे भारक अनुभव होइत छैक किन्तु ओहि छायाक हटिते एकटा आश्वासनक बोध होइत छैक। ताही आश्वासनक अनुभूति जेना उतमीकेँ भेलैक। आ पहिने जकाँ मन्हुआइलि नहि रहि हेँजक सभसँ आगाँ भऽ कऽ चलऽ लागलि।**

संग्रहक छठम कथा थीक **भितरिया-धधरा** जाहिमे बाल मनोविज्ञानक सूक्ष्म चित्रण भेल अछि। एहि गल्पमे कथा वस्तु अल्प अछि परंच मिथिलाक ग्राम्य जीवनक सांस्कृतिक रेखाचित्रमे जाहि तरहेँ रंग भरि विस्तारित कयने छथि से कोनहुँ कुशल शिल्पीये द्वारा सम्भव। यथा दीपावलीक अवसरपर बाँसक कोपड़सँ सुपती छोड़ाय हुक्का-लोली बनायब, सुपती गाँथब, हुक्का-लोली भाँजब आदिक चित्र ग्राम्य जीवनसँ विलुप्त भेल जा रहल अछि किन्तु कथामे ओकर वर्णन ग्राम्य जीवनक चित्र उपस्थित कऽ दैत अछि। एहि कथामे मिथिलाक लोक जीवनक सांस्कृतिक एवं सामाजिक चित्रक झलकक संग प्रतिशोध जीव मात्रक नैसर्गिक गुण छैक तकरहु नीक जकाँ उपस्थित कयल गेल अछि। कथाकारेक शब्दमे– **प्रतिशोधक भावना मनुष्य मात्रक प्रकृति थिकैक। अपन सामर्थ्यक अनुपातमे प्रतिशोध लऽ कऽ लोकक आहत अहं सन्तुष्ट भऽ जाइत छैक। मुचकुनमा सेहो दीपकेँ मिझा कऽ वैह प्रतिशोध लऽ रहल छल।**

एहि कथामे ग्राम्य जीवनक उच्चवर्गीय एवं निम्नवर्गीय जीवनक किशोर मनोविज्ञानक समुचित विश्लेषण, दूनू वर्गक बच्चाक रुचि-संस्कारक वर्णन आदिकेँ पढ़लासँ एहन सन बूझि पड़ैछ जेना ओहि घटनाकेँ, ओहि चित्रकेँ, ओहि अवस्थाकेँ बहुत निकटसँ कथाकार देखने होथि। मुचकुनमाक हृदयमे जागल प्रतिशोधक भावक तेहन प्रस्तुति भेल अछि जेना बूझि पड़ैछ जे आनक कष्टसँ कथाकार स्वयं अभिभूत भऽ गेल होथि।

एहि संग्रहक अन्तिम कथा थीक **पहुना**। पहुना सेहो एक निम्नवर्गीय जीवनक कथा-चित्र थीक। छठम दशकक चर्चित कथाकारमे ललित एवं राजकमल नारीकेँ विकृत रूपमे बेसी देखैत छथि। नारीकेँ देखबाक दृष्टि ओ चश्मा फराक-फराक होइत छैक। ललित नारीक 'मुक्ति' अपन चिर रोगी पतिकेँ छोड़ि दोसराक संग सम्बन्ध स्थापित करबामे देखौने छथि। तहिना 'कंचनिया' मे ललित चौदह वर्षक कंचनियाँकेँ धनबानक हाथेँ बिकाइत देखौने छथि। राजकमल सेहो 'अपराजिता' 'सहस्रमेनका', 'फुलपरासबाली' आदि कथामे नारीक विकृत रूपक चित्रण कयने छथि जे साहित्यक हेतु कथमपि ग्राह्य नहि जखन कि 'पहुना'मे नारीक गरिमा निम्नोवर्गमे छैक तकरा स्थापित कऽ श्रीरामदेवझा समाजक हेतु आदर्श उपस्थित कयने छथि। वसन्ती निम्नवर्गीय समाजक महिला थीक जाहि समाजमे दोसर विवाह अर्थात् सगाइ करब कोनो अनर्गल, असहज नहि मानल जाइत छैक, किन्तु बेटीक ममत्व एवं बियहुआक प्रति समर्पणक भाव ओकरा सगाइ करबासँ रोकैत छैक। वसन्तीक घरबला दोसर विवाह कऽ चुकल छलैक। वसन्तीक माय सेहो दोसर गोटेक संग सम्बन्ध कऽ चुकल छलैक। तेँ ओहि संस्कारमे पालित वसन्तीकेँ सेहो परित्यक्ता भऽ जीवन व्यतीत करब विवशता नहि छलैक, किन्तु ओ अपन पहुनेक प्रति एकनिष्ठ बनलि बिना अबलम्बहुकेँ एकांगी जीवन व्यतीत करब बेसी उचित मानैत अछि। कथाकारेक शब्दमे– **नारीक जीवनक सबसँ पैघ विशेषता वा विवशता यैह होइत छैक जे जकरा एक बेर सर्वात्म भावेँ समर्पण कऽ दैछ तकरा प्रति जीवन भरि एकनिष्ठ बनलि रहि जाइछ।**

Scanned by CamScanner

समग्रत: कहल जा सकैछ जे मनुक सन्तानक प्रत्येक कथा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण सँ जुड़ल मानवीय संवेदनापर आधारित कथा थिक जाहिमे संवेदनात्मक स्पर्शक सहज अनुभूति भेटैत अछि । नारीक गरिमा निम्नो वर्गमे छैक ताहि हेतु विशेष रूपसँ प्रशंसनीय कथा **एकटा रहय उतमी** एवं **पहुना** मानल जायत । **एकटा रहय उतमी**मे ओकर किंचित नैतिकताक झलकक संग मसोमातक नामपर खसौल भोटसँ अर्जित राशिकेँ अनैतिक मानि खूँटसँ खसि पड़बाक घटनाकेँ शुभ बूझि अपनाकेँ सधवा प्रतीत करैत अछि ततऽ **पहुना**मे एक पुरुषक प्रति एकनिष्ठ समर्पणक भावकेँ प्रमुखता देल गेल अछि । **भितरिया धधरा**मे बाल मनोविज्ञान, **परमिलिया**मे युवा मनोविज्ञान तँ **परती**मे प्रौढ़ मनोविज्ञानक सहज चित्रण भेल अछि ।

एहि संग्रहक कथा निम्नवर्गीय एवं आभिजात्य दूनू वर्गक जीवन-दर्शनसँ परिचय करबैत अछि किन्तु एकर अधिकांश कथा विश्लेषणात्मक शैलीमे रचित निम्नवर्गीय जीवनक कथा-व्यथा थीक जाहिमे विभिन्न प्रकारक सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेशक दर्शन-निदर्शन भेल अछि । जतऽ धरि संग्रहक कथासभक नामकरणक प्रश्न अछि तँ प्राय: प्रत्येक कथाक नामकरणे पाठकमे आकर्षण ओ औत्सुक्य जगबैत अछि । विविध भाव-भूमिमे रचित कथा सभक चरित्र, घटनाक्रम, कथोपकथन, ओकर भाषा ओ शब्दावली, स्वर-भंगिमा, नव-नव शिल्प एवं उपमा आदिक प्रयोग पाठकक चित्तकेँ तृप्त करबामे सफल भेल अछि । कथाक सबसँ पैघ गुण थिक 'औत्सुक्य' एवं समाजक हेतु 'सन्देश' । एकर प्रत्येक कथा अन्त धरि 'औत्सुक्य' एवं अधिकांश कथा समाजकेँ किछु सोचबाक हेतु विवश कऽ दैत अछि ।

कथामे भाषा दू रूपमे भेटैत अछि । एकटा कथाकारक भाषा आ दोसर कथोपकथनक भाषा । एकर समस्त कथामे कथाकारक भाषा एवं पात्र द्वारा कहल गेल भाषाक यथोचित समावेश भेल अछि । स्थान, काल, पात्रक भेदसँ बजबाक भाषामे भिन्नता अबैत जाइत छैक । एकर समस्त कथामे परिवेशक अनुरूपे भाषाक प्रयोग कयल गेल अछि । तेँ कथाकार जतऽ स्वयं बजैत छथि ताहि भाषामे एवं जतऽ पात्रसँ बजबबैत छथि ताहि भाषामे अन्तर आयब स्वाभाविके । जेना मनुक सन्तानमे मलकीयतवला लोक ओहि निम्नवर्गीय जीवन व्यतीत कयनिहारि सुगियाक डोका छीनि पानिमे फेकि दैत छथिन तखन ओकर क्रोध एहि भाषामे व्यक्त होइत छैक– **जनपिट्टेके आङ-समाङ ढहि जेतनि । जाहि हाथसँ डोका पानिमे फेकलनि से हाथ गलि जेतनि । ओहिमे डिठौरी भऽ जेतनि ।**

कथा सभक भाषामे पात्रानुरूपे संवादक समावेश, तद्भव एवं देशज शब्दक प्रचुर प्रयोग, चमत्कारिक उपमानक प्रयोग कथाकेँ आकर्षक बनयबामे सहायक भेल अछि । पात्रानुरूप संवादक संग स्वर-भंगिमाक एक उदाहरणक रूपमे **मनुक सन्तान**क ओहि अंशकेँ देखल जा सकैछ जखन विन्दा पुरुष समाजपर आरोप लगबैत कहैत अछि जे– **मरदक जातिये बड्ड इत्तर । लगमे रहतौ तऽ मिट्ठी-मिट्ठी बातमे मोन मोहने रहतौ आ .....** । तद्भव एवं देशज शब्दक रूपमे दुलरैतिन बेटी, छिट्टा, चपै, बुनछेक, गिरहत, सगाइ, पूरूब, निम्मन, एकबाली, नौड़िन, नितुआन, चिक्कस, फदका, छम्मर-छैञा, चौबट्टी, अनगरजू, गहिकी, खटरास, बँसबिट्टी, खुटखुट्टी आदिक सहज प्रयोग भेल अछि । गुडवाइ एवं पोस्टर छोड़ि प्राय: अन्य कोनहुँ विदेशज शब्दक प्रयोग नहि भेल अछि । किन्तु युग्म शब्द जेना अन्न-तीमन, पौनी-पसारी, सौदा-बाड़ी, ठाँओ-पीढ़ी, जन-बोनिहार, जमीन-जथा, चोर-चुहार, ठुक्कू-मुक्कू आदिक प्रचुर प्रयोग भेल अछि । मोहावरा ओ लोकोक्तिक सेहो प्रयोग भेल अछि, जेना कि दाँत निपोरब, माँछ भात पाँच हाथ, खाइ तेताढ़ तँ खीरय पताल आदि तहिना उपमानक वैविध्य प्रयोग जेना कि धतिङ सन गाछी, पीयर-पीयर रौद, कारी-झामड़ छौंड़ा-छौंड़ी, दुखिताह बोल, 'डालिया' फूल सन परिधान, नवकी कनियाँक पसाहनि जकाँ धरतीक सजब, गहूमक पाकल शीश सन सोनहुल केश, उजरी खिज्जा खीरा सन मुँह, गरदनि आ हड्डीक बीच कारी-कारी रोटी सन मैल आदि कथा-तरंगकेँ तरंगित करैत चित्तकेँ दीप्त करबामे समर्थ भेल अछि ।

निष्कर्षत: कहल जा सकैछ जे अनेकानेक दृष्टिएँ सातम दशकमे प्रकाशित **मनुक सन्तान'** मैथिली साहित्यक प्रमुख कथा संग्रह थीक जाहिमे खण्ड-पखण्ड भेल मिथिलाक समाजक उपेक्षिक वर्गक जीवन्त चित्र उरेहि ओकर मूक स्वरकेँ अभिव्यक्ति देल गेल अछि ।

●

Scanned by CamScanner

सव्यसाची साहित्यकार श्रीरामदेवझा ओ हुनक धरतीमाता

–आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'

कथा कहबाक प्रथा मनुष्यमे तहियेसँ चललैक जहियासँ ओकरामे सामाजिकताक भावना जगलैक, दोसराक सुख-दु:खक बिम्ब ओकर हृदय-दर्पणमे प्रतिबिम्बित होअऽ लगलैक । जा धरि ओ 'अहम्' केर घेरामे घेरल-बेढ़ल रहल, ओ अपनाकेँ कविताक तुक-तुकान्तमे एकान्त संगीत गबैत रहल । कथोपकथनक क्रममे 'त्वम्' धरि जँ पहुँचिओ सकल तँ रूपकक मञ्चे धरि सीमित रहल । किन्तु जखन 'त्वञ्चाहञ्च'क चकार ओकरा तत्सत्क चमत्कार दिस संस्कारित कयलकै-कविताक श्रव्य ओ रूपकक दृश्यसँ जी उमठि गेलै, तखन ओ जाहि माध्यमक खोज कयलक, सैह कथा-कहानी, आख्यान-उपन्यास कहौलक ।

आइ कविता पत्रिकाक कोनमे, आलोचनाक उद्धरणमे सकुचा रहलि अछि । नाट्यरूपकक दृश्य रेडियो-टेलीविजनक सेटपर थकुचा रहल अछि । रचनात्मक साहित्यमे कथा-उपन्यासेटा एहन अछि जे ज्ञान-विज्ञानक टोह लगयबामे, भूगोल-खगोल धरि घुमयबामे, समाजनीति-राजनीति पढ़यबामे, नीति-अनीति बुझयबामे सुकुमार पद्धतिक प्रमुख विधा बनि गेल अछि । मांसल रूप, मानस-अतिमानस रस, सांस्कृतिक गन्ध-सौरभ ओ विचार-प्रकारक स्पर्श जेना 'सर्वेन्द्रियगुणग्राहि' चेतनाक स्तूप बनि गेल हो ! कोनो भाषाक लोकप्रियताक तौल जेना कथाक तुलापर सम्भावित हो ! मानवीय रुचि-चिन्तनक हेतु जेना कथा विधा सर्वसंग्राही कम्प्यूटर बनि गेल हो ।

कथा पैघ हो तँ भने उपन्यास-नवलिका-कादम्बरी कहबओ, छोट हो तँ कथा-कहानी-खण्डकथा-गल्प अल्पिका नाम भने गनबओ, किन्तु 'कथायां सरसं वस्तु गद्यैरेव विनिर्मितम्' एही लक्षणवृत्तमे समाहित अछि । स्पष्ट अभिव्यक्तिक हेतु ई गद्यात्मक हो-मानवीय भावना, राग-विराग, हर्ष-विषाद कोनो स्थायी-संचारी भावक इर्द-गिर्द घुमैत चरितात्मक सरस कथानक हो-बस! ओकर अतिरिक्त रंगटीप जे भरि सकियैक से सब सजतैक; जे किछु वसन-भूषण पहिरबियैक, सब छजतैक ।

सुतरां भारतीय कथा साहित्यक आयाम वैदिक साहित्यसँ लऽ कऽ पौराणिकी वार्त्ता धरि, नीतिकथासँ लऽ कऽ रस-प्रथा धरि व्यापक रहल । जे किछु उपदेश-सन्देश अछि से कथा-सूत्रमे गँथाइत रहल । अथापि शैली ओकर पुरना गेलैक-आधुनिक युगक रसना जे पाश्चात्य शैलीक चटपटीक स्वाद लऽ चुकल छल, तकरा हेतु जेना बसिया गेलैक।

मैथिली जेना-कविता-काव्यमे, रूपक-उपरूपकमे, क्वचित् गद्यबन्धमे भारतीय भाषामे अग्रजाक आसनपर बैसबाक अधिकारिणी अछि; स्वीकार करऽ पड़त जे कथा-साहित्यमे, खास कऽ नवशैलीक उपन्यास-गल्पमे बड़ पछुआ कऽ आयलि एवं अपन पड़ोसक भाषा-पाँतीमे अनुजा बनलि कातमे ठाढ़ि अछि; रंगीन एलबममे रेखाचित्र जकाँ कतहु रेखांकित अछि ।

परञ्च हर्ष अछि जे गत तीन-चारि दशकमे एहन अनेक कुशल-शिल्पी मैथिलीक रंगशालामे निविष्टतासँ प्रविष्ट भेल छथि जे निश्चय अपन कलातूलिकासँ मैथिली-कथाक रेखाचित्रकेँ तेना निखारबामे लागल छथि जे विश्वास भऽ रहल अछि जे काव्य-विधा जकाँ कथा-क्षेत्रहुमे मैथिली उल्लेखनीय स्थान ग्रहण करत ।

प्रस्तुत पुस्तक ओही प्रगति-यात्राक एक निदर्शन थिक ।

धरती माताक चरित्रनायक अयोध्या देहाती जीव, गृहस्थक बेटा, बनि जाइछ शहरी, कपड़ा मिलक मजदूर ।

Scanned by CamScanner

कहिओ गाम अबैछ तँ देहाती असुविधासँ मन उजबुजा जाइछ ओ छुट्टी पुरबासँ पहिने बिदा भऽ जाइछ । मुदा एहि बेर मायक दुःखितावस्थामे आयल तँ बेसी दिन रहऽ पड़लैक । खसैत-पड़ैत घर, उजड़ैत कलम-बाग ओ बटाइमे परती-पराँत पड़ल अपन खेतक दुर्दशा देखि ओकर मन घूमि गेलैक । ओही स्थितिमे गामक मद्धूकाकासँ सुनलक जे 'चास आ चाकरी तँ संग-संग नहि चलि सकै छै ।' तँ लगले अपन निश्चय सुना देलकनि जे 'जी' आब नहि जेबै, इस्तीफाक तार दऽ दै छिऐ ।' मद्धूकाका भावविभोर भऽ चुटकी भरि माटिसँ अयोध्याक माथपर ठोप कऽ देलथिन ।

एहि गल्पमे कथावस्तु अल्पे अछि, परञ्च स्थापनक प्रकल्प तेहन अछि जाहिसँ पात्रक संकल्प शिल्पगत कलाक प्रभावी प्रशस्ति बनि जाइछ । शहरी ओ ग्राम-जीवनक बाहरी दृश्यक संग कृषक-वंशधरक जे रुचि-संस्कार सहसा सुप्तोत्थित होइछ ओ वर्त्तमान समस्याक समाधानक जेना उपहार दऽ जाइत हो ! धरती माता जेना अपन मातृपदक सार्थकता पाबि गेल हो !

जलक तलपर लिखल नाम एक नवे शीर्षक अछि । मालती ओ रतन एकबद्धू दू गामक । किन्तु दूहू गामक जेना एक बाध तहिना दूहू किशोर-किशोरीक स्नान-ध्यानक हेतु एक पोखरि, एक शिव-मन्दिर । दूहूक नोंक-झोंक एक-दोसराक आलम्बन-आश्रय, उद्दीपन-विभावन । किन्तु रतन धनिक बापक बेटा, मालती गरीबक कन्या-दूहू अन्योन्या नहि बनि सकल, अन्य-अन्या रहि गेल । तेँ मालती रतनकेँ पोखरिक ओहि पार देखैत जलक तलपर 'रतन' नाम लिखैत डुबकी दैत रहि गेल । पाठकक जिज्ञासा रहि गेलैक जे जलक तलपर लिखल नाम मेटा गेलैक वा ककरो जीवनमे अमिट बनल रहि गेलैक । कथामे आदिसँ अन्त धरि रस-सृष्टि अछि, मुदा शृंगारक कहबितहुँ करुणक, करुणक होइतहुँ चिरविप्रलम्भक, विप्रलम्भ मानितहुँ आधुनिक सामाजिक समस्यामूलक बनि गेल अछि ।

मनुक्ख नामक कथामे गमैया लोक कोना शहरमे रिक्साचालक बनैत अछि, रिक्सावलाक कठोर बोलक भितरो कोनो मनुक्ख विद्यमान रहै छै, सेहो रिक्साचालक गनेसीकेँ सहसा अपन गोत्रक लोकमे भेटैछ । कथानकक परिधि छोट रहितहुँ मनुष्यताक अमृत-घोंट पिआ जाइछ ।

हत्थाजोड़ीक मञ्च स्टेशनक प्लेटफार्म अछि, जतऽ दू देहाती दम्पतीक सनक-झनक, हत्था-बाहीक झगड़क बिड़रो उठैछ तँ, परञ्च गप्पे-सप्पेमे हत्था-जोड़ीक पटान्तरविक्षेप भऽ जाइछ । दोषक आरोपसँ पर्दा उठैछ, मान-अभिमानमे पसरैछ ओ अन्तमे मेल-मिलानक हत्थाजोड़ीमे पटावसान होइछ । कथामे स्वाभाविकता अछि । संगहि लोक-जीवनक पर्त-पर्तमे विषमताक बीचो समता प्रदर्शित होइछ ।

बसातक दाममे कथाकार जेना अपन संस्मरणात्मक विवरण दैत होथि । स्थान-वातावरणक सजीव चित्रण अछि । सरबनक बाजब-जाँतब सब स्थान परिस्थितिक सहजताकेँ अङेजने अछि । परञ्च बसातक दाम चुकयबामे, गर्मीक मर्मी सरबनक जे चित्र उभरल अछि, ओ जेना कोनो गड़ल प्रतिमा उखड़ल हो! मन होइछ जे ओहि प्रतिमापर फूल झहरा दी !

उद्घाटन उदयाचल उच्च विद्यालयक । चिन्हार गामक चिन्हार लोकक बीच एक अनचिन्हार जकाँ, मुदा आचार-विचार ओ शिक्षा-संचारमे चीन्हल लोक जेना सहसा नवयुगक उदयक चिह्न दऽ जाथि ! कथाक पृष्ठभूमि नगर-पार्श्ववर्त्ती गामहिक नहि-सुदूर देहात परिसरमे सबतरि जेना पसरल मानस-विकारक चित्र-चरित्र हो । कथानक स्वाभाविकताक बीच आदर्शक एक उदाहरण उपस्थित करैछ । श्रीचन्द्रबाबू, परमानन्दबाबू ओ शिवनाथबाबूक आदर्शक एखनहुँ अभाव नहि भेल अछि । नेताजी, मुखियाजी ओ हुनक आलोचक-प्रत्यालोचकक हेड़ि गाम-टोल सबतरि भेट दैत छथि । चीन्हि लिऔन जे के ध्वंसमे ओ के निर्माणमे सहायक होइ छथि । लेखक परिचय करयबामे कोनो कसरि नहि रहऽ देने छथि ।

पराजयक मुद्रा-से कोनो शस्त्रधारीक नहि, शास्त्रार्थीक नहि, ने खेलाड़ी वा जुंआड़ीक । ई तँ रिक्शाजीवी 'मनोहरा' मजदूरक शौक-सनकक थिक जे भद्र दम्पती जकाँ अपन कनेआक संग 'मैटनी शो'मे फिल्म देखऽ जाइछ ओ

Scanned by CamScanner

अपन वर्गीय लोकक पहिचानकेँ किछु कालक हेतु बिसरऽ चाहैछ । ओकर रहन-सहन, श्रम-कर्म ओ मानसिकता सबमे सामञ्जस्य अछि । कने असमञ्जस बुझा पड़ैत अछि जखन जाड़मे ठिठुरि ओ जड़ भऽ गेल, तखन रिक्शा कोना ठेकानपर पहुँचि आगाँ गुड़कैत गेल । अथापि प्रसंग ओकर सहृदयता तथा दयनीयताकेँ रंग दैछ ओ स्वाभाविकताक संग नहि छोड़ैछ ।

चोर बनबाक वातावरण-कारण-प्रक्रियाक अन्तर्दर्शन करबैत ई कथा छात्र शोभाकान्तक मन-मन्थनकेँ सप्रसंग उपस्थित करैत अछि । आगाँक घटनाक अन्त-सीमा कतऽ पहुँचैछ से बुझब अप्रयोजनीय रहि जाइछ । जतबेपर समाप्ति अछि ततबेसँ कथाक व्याप्ति पूर होइछ । एहिमे कला कलेक लेल नहि, सोद्देश्य गतिशील होइछ ।

बोतल पाछाँ बताह एक शराबी पिताकेँ अपन बेटा सभक स्थिति देखि कोना सदाक हेतु बोतल फोड़बाक नौबति अबैछ, शराबीक स्त्रीकेँ की दुर्गति भोगऽ पड़ैछ, तकर सजीव उदाहरण एहिमे प्रस्तुत अछि । चित्रणक आरम्भ ओ अन्त नाटकीय चमत्कारपूर्ण अछि ।

समाजक निम्नस्तरीय जीवनमे 'बकरी' पोसब कोनो आजुक बीस-सूत्रीक गृह-व्यवसाय नहि । ई तँ जीवन-यापनक, पशुगत पारिवारिक भावनाक मानसिकता रहल अछि । लेखक एहि प्रकारक जीवनभोगिनीक गतिविधिसँ पूर्ण आत्मीयताक बोध करबैत सामाजिक विषमताक क्रूरतासँ सेहो परिचय करबैत छथि जे अन्तमे मङ्लीमायक कथा-व्यथा महिन्दरो सन व्यक्तिकेँ अकबका दैछ ।

एहि कथा दशकक लेखक छठम दशकसँ तँ साहित्य-मञ्चपर अवतीर्ण भेल छथि परञ्च उत्तीर्ण भेल छथि जीवनक नेपथ्यहिमे । जेना ई अनवरत साधन करैत रहला, स्कूल-वर्गमे एको दिन अनुपस्थित नहि भेला, कॉलेज-क्लासमे कखनहु दोसर पंक्तिमे नहि गेला, अध्यापक-जीवनमे कहिओ अप्रस्तुत भऽ कऽ नहि अयला, साहित्यिक क्षेत्रमे सव्यसाची जकाँ बाम-दहिन दूनू सन्धान करैत रहला, निबन्ध-कथा-कविता-एकांकी सभ विधामे कलमक कमाल देखबैत रहला- ताहि सबसँ बहुत पूर्वहिसँ चिन्हारे नहि, मैथिली-क्षेत्रमे एक चमत्कारे सिद्ध छथि । रुचि-संस्कार ओ लेखन-भाषण, शोध-अनुसन्धान सब दिशामे भाषा-साहित्यक अनुपम उपहारे प्रसिद्ध छथि ।

1953मे 'मिथिला मिहिर'मे पहिले बेर श्रीरामदेवझाक कथा **मुदा आब की** ओ **दू ठोप नोर** प्रकाशित भेल ओ क्रमशः विभिन्न पत्र-पत्रिकामे कथा सब प्रकाशिते होइत रहल । सातम दशकमे **एक खीरा : तीन फाँक** तथा **मनुक सन्तान** नामक हिनक दुइ गोट कथासंग्रह लोकानुरंजन कयलक । आब ई **धरती माता** कथाकारक कथाक तेसर संग्रह थिक । उल्लेख्य थिक जे एहि मध्य लेखकक कतिपय कथा भाषान्तरहुमे अनूदित-प्रशंसित भेल अछि।

एहि अभिराम-श्याम, कर्मठ कला-कुशल व्यक्ति-शक्तिसँ छात्रावस्थहिसँ पूर्ण प्रभावित रहलहुँ । आशानुसार हिनक वर्धमान युवत्व एवं सम्मानित प्रौढ़त्वसँ सर्वथा सद्भावित छी ।

पुस्तकक परिचयक किछु पाँती लिखबाक छल किन्तु पुस्तक-प्रणेताक प्रसंग सेहो बिनु कहने नहि रहल गेल। मुदा ओतबे धरि जतबासँ नैषधकारक एहि उपालम्भक दोषभागी नहि बनी '...असह्य शल्यं गुणाद्भूते वस्तुनि मौनिता चेत् ।'

अन्तमे रामदेवबाबूसँ एक आग्रह बिनु कयने नहि रहब जे ओ भावयित्री प्रतिभासँ अनुसन्धान दिस जते डेग बढ़बथि, रोकबनि नहि; किन्तु कारयित्री प्रतिभाक रचनात्मक दिशामे कनेको अग्रपश्चात् करता तँ से क्षम्य नहि होयत।

विद्यापति-चन्दाझाक पूजा हुनक गीत-छन्दक आलोड़नसँ अधिक, हुनक रचना-पथक निर्माणमे अछि । मैथिलीक कथा-साहित्य, औपन्यासिक लालित्य एखन क्षीणकलेवर अछि, म्लान-प्राण अछि- तकरा सम्भृत करबाक दायित्व उपयुक्त प्रतिभेपर निर्भर अछि, तेँ कने आग्रह-दुराग्रह ।

(धरतीमातामे 'पुरोवचन' शीर्षकसँ लिखित भूमिका)

●

Scanned by CamScanner

माटि-पानिक कथाकार रामदेवझा

डा. श्रीभीमनाथझा

छठम दशकमे मैथिली कथा एक नव युगमे प्रवेश कयलक । ई युग ललित-राजकमल-मायानन्दक नामपर प्रसिद्ध भेल । एहि त्रिमूर्त्तिक अतिरिक्त ओहि युगमे आओर नक्षत्रक उदय भेल- सोमदेव, धीरेन्द्र, रामदेवझा, हंसराज, उग्रानन्द प्रभृति । ई लोकनि मिथिलाक माटिसँ कथाक भव्य ओ सप्राण मूर्त्ति गढ़लनि, जकर पैर तँ धरतीपर अड़ल छलैक, मुदा आँखि सुदूर चारू भागक दृश्यकेँ देखि रहल छलैक । कान एक दिस कारखानामे मशीनक गड़गड़ाहटि सुनि रहल छलैक तँ दोसर दिस कदुआयल खेतक धनरोपनीक छपछप लय-तानकेँ अकानि रहल छलैक । मायानन्द मिश्र ओ रामदेवझाक कथा, कथ्य आ शिल्प, दुनू दृष्टिएँ मैथिलीक मानक कथा सिद्ध होइछ । रामदेवझाक कथा निम्न आ मध्यमवर्गीय मैथिल परिवेशक, ओकर व्यक्तिगत आ पारिवारिक स्थिति आ सोचबाक रोचक 'फोटो-स्टेट-कापी' थिक ।

'एक खीरा : तीन फाँक' तथा 'मनुक सन्तान'क बाद रामदेवझाक तेसर कथासंग्रह थिक 'धरती माता' । हिनक ई संग्रह पाठककेँ बीस वर्षक बाद 1985मे भेटलैक । एहि बीस वर्षमे मैथिली कथा विकासक आओर दूरीकेँ पार कयलक । ओ माटिकेँ आओर गसिया कऽ धयलक आ दृष्टिकेँ आओर अधिक व्यापक बनौलक । आलोच्य संग्रहक कथा सभ ई सिद्ध करैछ जे छठम दशकक प्रतिनिधि कथाकार रामदेवझा नवमो दशकमे प्रतिनिधि कथाक रचना, उत्तरोत्तर अधिक परिपक्वताक संग, करबाक सामर्थ्य रखैत छथि ।

विश्वसनीयता कथाक पहिल शर्त्त थिक । विवेच्य संग्रहक सभ कथा एहि शर्त्तकेँ शत-प्रतिशत पूरा करैत अछि । कथाकेँ सभसँ अधिक खतरा कवितासँ छैक । राजकमल आ मायानन्दक कथाक कमजोर तन्तु अछि तँ यैह जे ठाम-ठाम ओ कवित्वमय भऽ जाइत छैक । पढ़बामे तँ ओ नीक अवश्य लगैत छैक, मुदा कथाकेँ पटरीसँ उतारि दैत छैक । रामदेवझाक कथा कविता होयबासँ सभ ठाम परहेज करैत अछि ।

आठम दशक अबैत-अबैत कथामे एकटा आर भारी परिवर्त्तन भेलैक । कथ्य क्रमशः सूक्ष्म होअऽ लगलैक, घटना सिकुड़ऽ लगलैक, सौंसे कथामे पात्रक खाली मनोवैज्ञानिक उथल-पुथलटा चित्रित होअऽ लगलैक, ऊपरी दृष्टिएँ कथातत्त्व 'जाम' भऽ गेलैक । किछु आलोचक एकरा कथाक अद्यतन विकासक स्वाभाविक परिणतिक शुभ सूचना मानलनि तँ आलोचकक दोसर वर्ग एहिसँ घोर असन्तोष प्रकट कयलनि । रामदेवझाक कथा कतहु जाम भेल नहि लगैत अछि । हिनक सभ कथामे वाह्यो घटना रहिते अछि आ ओकर गाड़ी अपन निर्धारित सीमा धरि गुड़किते अछि ।

मैथिली कथा एमहर नगरोन्मुख भऽ गेलैक अछि । होयबेक छलैक आ होयबेक चाही । मुदा, खतरा ई भऽ गेलैक जे नगरमे आबि कऽ कथा मिथिलाक रहिए ने गेलैक । ओ नगरक कथा तँ भऽ गेलैक, मुदा मैथिल कथा नहि रहलैक । कारणो एकर साफ छैक । नगरमे आबि कऽ लोक नागरिक तँ भऽ जाइत अछि, मैथिल नहि रहि पबैत अछि । कलकत्ता, दिल्ली, मुम्बइ, मद्रासक मैथिल केवल 'नागरिक' होइछ । कलकत्ताक बंगाली जेना कलकत्ताक नागरिक होइतो 'बंगाली' रहैछ, तेना कलकत्ताक मैथिल कलकत्ताक नागरिक भऽ गेलापर 'मैथिल' नहि रहैछ । तहिना, कलकत्ता-जीवनक कथा मैथिली भाषामे रहितो कलकत्ताक कथा तँ रहैछ, मुदा मैथिल कथा नहि रहि पबैछ । मैथिली कथापर ई खतरा मामूली नहि छैक । आ, ई खतरा तावत काल धरि रहतैक जा धरि मिथिलाकेँ अपन बड़का नगर

Scanned by CamScanner

नहि होयतैक । मिथिलाक निवासीकेँ महानगर संस्कृति, बिना एहि धरतीपर महानगरक विकास भेने, विकसित भैए नहि सकैछ । मैथिली कथा ततबे नगरोन्मुख भऽ कऽ मैथिल-कथा रहि सकैत अछि, जतबाटा नगर मिथिलामे छैक । रामदेवझाक कथा नगरोन्मुख भैयो कऽ मैथिल-कथा रहि गेल छनि तँ तकर कारण अछि जे ई ओतबे नगरजीवी अछि जतबाटा नगर मिथिलाक धरतीपर छैक— मधुबनी, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, बरौनी-सन ।

मुदा, 'धरती माता'क पहिले कथा 'धरती माता' नगर आ गामक द्वन्द्वसँ शुरू होइत अछि । नायक अयोध्या अछि तँ देहातक वासी, मुदा चाकरी करैत अछि नगरमे । विधवा मायक रुग्ण भऽ गेलापर एकरा निश्चय करबाक छैक जे ई शहरक भऽ कऽ रहत की देहातक ? दुनूक अपन-अपन आकर्षण छैक । मुदा, अयोध्या अपन माटियेकेँ धऽ कऽ रहबाक निश्चय करैत अछि । अपन श्रमक स्वेदसँ कपड़ाक मिलकेँ नहि, अपन गामक माँटिकेँ पटयबाक संकल्प लैत अछि ।

मिथिलाक देहात आइ खाली भऽ रहल अछि । गामसँ शहर दिस धर्रोहि लागल छैक । फल की होइछ तँ गाम उजड़ि रहल छैक, श्रीहीन भऽ रहल छैक । धरतीमाता हकन्न कनैत छथि— हुनक सन्तान हुनक अंकसँ भागि रहल छनि । मिथिलाक अधोगतिक एकटा इहो पैघ कारण अछि । एकर समाधान यैह अछि जे एहि ठामक भूमिपुत्र अपने धरतीमाताक सेवामे जुटि जाथि । आइ-काल्हुक लोकक मनोवृत्ति नोकरी दिस भऽ गेलैक अछि, खेतीकेँ एहि ठामक लोक लाचारीक रूपमे लैत अछि, 'बेकारसँ बेगार भला' बुझैत अछि । ई मनोवृत्ति घातक थिक । 'उत्तम खेती'क फार्मूला सैह श्रेयस्कर थिक । माटिक ठोप कऽ कऽ उन्नतशिर धरती-सुत किसानक श्रम-घामेसँ एहि ठामक लोकक व्यक्तित्व महान भऽ सकैत छैक । ओकर क्षमता असलमे तखनहिँ उजागर होयतैक ।

रामदेवझाक कथाकारक व्यक्तित्वकेँ विवेच्य संग्रहक दसो कथा, वास्तवमे, महान बनबैत अछि, हिनक परिपक्व कथालेखनक क्षमताकेँ, उत्तरोत्तर प्रखरतर रूपमे, उजागर करैत अछि । सभ कथामे कोनो-ने-कोनो प्रेरणा, कोनो-ने-कोनो सन्देश अछि, मुदा से उपदेशक मुद्रामे नहि, साहित्यकारक 'कान्तासम्मित' शैलीमे ।

संग्रहक एक महत्वपूर्ण कथा अछि— 'उद्घाटन' । गामक प्रबुद्ध वर्गमे नवचेतनाक स्फुरण, गामकेँ सभ्य-सुरक्षित बनयबाक हेतु विद्यालयक निर्माण, असामाजिक तत्त्वक दुष्प्रचार, कूटनीति-राजनीतिक घृणित खेल, निन्दा-आलोचना, मुदा सहयोग-सहायता सेहो । उद्घाटन करबा लेल नेता-मन्त्रीक इच्छा-आकर्षण । नवयुवकक फरिच्छ दृष्टि । आदर्श-स्थापन-हेतु उद्घाटन लेल गामक प्रतिष्ठित शिक्षकक आह्वान । विघटनकारी उपद्रवी तत्त्व द्वारा उद्घाटन-मंचकेँ आगि लगा देब । किन्तु, संकल्प-शक्तिक विजय । गामक नवतुरिया द्वारा आगिपर काबू । ई आगि ध्वंसात्मक आगि थिक, जकर चिनगी गाम-गाममे रहैछ आ जे क्षुद्रता-स्वार्थपरताक बसातक सहपर सौंसे गामकेँ सुड्डाह कऽ दैछ । नवीन युग एहि चिनगीक करामातसँ नीक जकाँ परिचित अछि । समाजक यथार्थ निर्माता लोकनि बेर-बेर ओकरा लहकलापर पानि ढारि दैत छथि । यैह पानि आगुओ मिथिलाक 'पानि' राखत, आगुओ मिथिलाक नवनिर्माणक समारोहक शुभ उद्घाटनक मार्गकेँ शीतल करत । रामदेवझाक अन्यो कथा, यथा— जलक तलपर लिखल नाम, बसातक दाम, मनुक्ख, बोतल आ मङली मायक बकरी— कथाक पानिसँ जलजल करैत अछि । हिनक कथाक वर्णन आत्मीय, घटना सहज, विश्लेषण सूक्ष्म ओ परिणति स्वाभाविक अछि । कथाक समेकित प्रभाव बड़ मार्मिक ओ हृदयस्पर्शी होइछ, तेँ स्थायी सेहो । हिनक कथामे मिथिलाक माटिक सुगन्धि अछि, मिथिलाक पानिक स्वाद अछि । विवेच्य कृति 'धरती माता' हिनक अपन संग्रहमे तँ उत्कृष्ट अछिए, मैथिलीक आधुनिक प्रतिनिधि कथा-संग्रह-समूहमे सेहो अग्रगण्य अछि ।

●

Scanned by CamScanner

राष्ट्रवादी कथा-संग्रह 'धरतीमाता'

डा. श्रीकमलकान्तझा

कथासंग्रह 'धरतीमाता' राष्ट्रवादी साहित्यकार डा. रामदेवझाक दस गोट उच्चकोटिक कथाक संग्रह थिकनि। एहिमे पहिल कथा **धरतीमाता**मे गामक धरतीक मोह माया त्यागि जे कतहु अन्यत्र नोकरी करैत अछि, किन्तु गाम अयलापर जे अपन माटि-पानि, घर-समाजक प्रति मोह जगैत अछि, ओहने नोकरिहाराक मनोदशाक वर्णन कयल गेल अछि। कथाक चरित्रनायक अयोध्या बाहर रहि नोकरी करैत छथि। माय जखन मरकमान भऽ गेलथिन तँ सपरिवार गाम आबऽ पड़लनि; धरतीक दुर्दशा देखि स्वर्णिम अतीतक स्मरण होअऽ लगलनि। अन्तमे निश्चय करऽ पड़लनि गाम छोड़ि आब ओ नोकरीपर नहि जयताह। ओहन दृढ़ निश्चयपर गामक मद्धूकाकाकेँ ओहि निर्णयसँ ततेक प्रसन्नता भेलनि जे ओ एक आँजुर माटि उठा अयोध्याकेँ कहलथिन- **बाउ, ई धरतीमाता थिकीह। जे हिनक माता जकाँ सेवा करैत छनि से अजस्र वात्सल्य पबैत अछि आ जे सतमाय जकाँ देखैत छनि तकरालेल ई रुच्छ माटि मात्र रहैत छथि।**

दोसर कथा **जलक तलपर लिखल नाम**मे पुरुष एवं नारीक विवशतापूर्ण मनोदशाक वर्णन कयल गेल अछि। मालती आ रतन दुनू एकहि उच्च विद्यालयमे पढ़ैत छल। पढ़बामे मालती आ रतन दुनू तेज छल, मुदा पुरुष प्रधान समाज आ सुविधाक कारणे रतन मेडिकल कालेज धरि चलि गेल, किन्तु मालतीकेँ सुविधाक अभावक कारण मैट्रिकसँ आगाँ नहि जयबाक जोगाड़ भऽ सकलैक। कथा पोखरिक घाटसँ प्रारम्भ होइत अछि आ घाटहिपर समाप्तो भऽ जाइत अछि। मालती अपन हाथक आँगुरसँ जलक ऊपरमे रतनक नाम बारम्बार लिखैत रहि गेलि। प्रस्तुत कथामे कथाकार नारीक विवशताक मार्मिक चित्र प्रस्तुत कयलनि अछि। मैथिलीमे ई अपना तरहक एकमात्र प्रेमकथा थिक।

मनुक्ख शीर्षक कथामे एक रिक्शा-चालकक मनोदशाक चित्रण कयल गेल अछि।

हत्थाजोड़ी शीर्षक कथामे गामक निम्न वर्गक महिलाक पतिसँ झगड़ा कऽ रूसि कऽ पड़ा आयब आ ओकरा पति द्वारा रेलवेस्टेशन धरि खेहाड़ करबाक रोचक चित्रण भेल अछि। कथाक नायक अछि देहाती युवक छीतन आ नायिका अछि मानवती वा मनतोड़िया। कथा रेलवे स्टेशनक बाहर पकड़ा-धकड़ीसँ प्रारम्भ होइत अछि आ ओतहि जखन बड़ी कालक बाद परिस्थिति बदलैत छैक, मानवती घमैत छैक तँ दुनू एकटा रिक्शापर चलबाक हेतु हत्थाजोड़ी कयने बैसि जाइत अछि आ कथा समाप्तो भऽ जाइत छैक। ओहि तमाशासँ लोकक वेश मनोरंजन होइत छैक। देहाती रहलाक कारणेँ दुनूमेसँ ककरो ओहन तमाशाक कल्पना नहि छलैक। तेँ ओ लोकनि एकटा तमाशा बनि कऽ रहि जाइत अछि।

बसातक दाम शीर्षक कथामे कथाकार अपन दुमका-प्रवासक एकटा नव अनुभवक चित्रण कयने छथि। वनवासी क्षेत्रक एकटा मजदूर, जे आब शरीरसँ दुर्बल भऽ गेल छल, मजदूरीमे नहि सकैत छल, होटलक आस-पास मड़राइत रहैत छल आ टहल कऽ कऽ गुजर करैत छल। होटलमे ठहरल यात्री लोकनिक टहल कऽ देल करैत छल। कथानायक ओही होटलमे ठहरल छलाह। होटलक मालिक जखन ओकर इमानदारीक प्रमाणपत्र दऽ देलकनि तँ आश्वस्त भेलाह आ ओकरासँ प्रतिदिन जँताबऽ लगलाह। एक दिन अकाल बेरामे आबि गेलनि, जे जँतबाक समय नहि छलैक। कालेजसँ आबि भोजन कऽ सुतले छलाह कि आबि कऽ जाँतऽ लगलनि। जेठ मासक गर्मी चरमपर छलैक, तेँ कथानायक पंखाकेँ फुलस्पीडमे चला लेने रहथि। दू तीन घण्टाक बाद जखन निन्न टुटलनि तँ देखलनि ओ जाँतिए रहल छलनि। किंचित मात्सर्य भेलनि - मना कऽ देलथिन आ कहलथिन जे ओतेक काल धरि जतबाक कोना प्रयोजन

Scanned by CamScanner

छलैक ? कुर्त्ताक जेबीसँ अठन्नी निकालि कऽ देबऽ लगलथिन । किन्तु सरबन पाइ नहि छुलकनि आ कहलकनि- ओ तँ गर्मीसँ त्राण पयबाक हेतु हिनका कोठलीमे पंखा तर आयल छलनि । भरि दुपहरिया उनटे हवाखोरी कयलक तखन पाइ कोना लेतनि ? लेखक आश्चर्यचकित रहि गेलाह – तँ की ई बसातक दाम तरे भरि दुपहरिया देह जँतैत-रहलनि ?

उद्घाटन शीर्षक कथामे देखौल गेल अछि जे कोनो दसगर्दा कार्य करबामे, कोनो संस्था खोलब ओ चलयबामे कतेक विघ्न बाधा सब ठाढ़ भऽ जाइत छैक, कतेक खुराफाती ओ अहंकारी लोक सब रोड़ा अँटकाबऽ चाहैत छैक, षड्यन्त्र करऽ लगैत छैक तथापि जँ ईमानदारी आ कर्मठतासँ कार्य प्रारम्भ कयल जाय तँ अनेक सहयोगी सेहो ठाढ़ भऽ जाइत छैक आ पाछाँ सफलतो भेटबे करैत छैक । किछु ओहने सन घटना सभक चित्रण कयल गेल अछि उद्घाटनमे ।

पराजयक मुद्रा कथामे एकटा रिक्शाबला आ ओकर स्त्रीक मनोदशाक चित्रण वेश मार्मिक ढंगसँ कयल गेल अछि । रिक्शाचालक मनोहरा गामसँ आबि शहरमे रिक्शा चलबैत छल । एक दिन ओकर पत्नी बुधिया सिनेमा चलबाक लेल बेर-बेर जिद्द करैक । मनोहरा बहुत टारलक मुदा जखन रूसा-फुल्ली प्रारम्भ भेलैक तँ फिल्म देखबाक लेल तैयार भेल । जयन्ती टॉकीजमे नीक फिल्म लागल छलैक । ओ सपरिवार मेटनी-शोमे जयबाक निश्चय कयलक । रिक्शाबला बनि कऽ नहि, कोनो हाकिम जकाँ, पैघलोक जकाँ जयबाक प्रयास कयलक । तेँ अपन रिक्शासँ नहि, कोनो अपरिचित रिक्शासँ बनि-ठनि कऽ दुनू निकलल । समय अधिक लागि गेलाक कारणेँ हॉलक बाहर 'हाउस फुल' लागि गेलैक । झंझ-मंझक कारणेँ एकटा परिचित रिक्शाचालक सोनमा आबिए गेलैक आ एकर असली परिचय कराइये देलकैक । आब ने ओकर हाकिमबला रूप रहि गेलैक आ ने फिल्मे पकड़ा सकलैक । पराजयक मुद्रामे ओ सिनेमा भवनक बाहर देबालक कातमे बुधियाक संग हतप्रभ ठाढ़ रहि गेल ।

चोर शीर्षक कथामे एकटा सज्जन, मेधावी छात्र शोभाकान्तक मनोदशाक चित्रण कयल गेल अछि, जे निर्धनता कारण परिस्थितिवश चोरि करबाक चेष्टा करैत अछि । मायक प्रोत्साहन सेहो भेटैत छैक, मुदा फेर ओ सोचैत अछि- काल्हिसँ ओकरा लोक चोर कहतैक, कारण पकड़ा जेबे करत । जे किछु प्रतिष्ठा-प्रशंसा प्राप्त कयने छल, सब समाप्त भऽ जयतैक । काल्हिसँ शिक्षक लोकनि की कहथिन ? कथाकार बहुत सहृदयतासँ एकटा होनहार छात्रकेँ चोर बनऽसँ बचा लैत छथि । निष्कर्ष ई बहराइत अछि जे कखनो नीको लोक परिस्थितिवश चोरि करबा दिस प्रवृत्त भऽ जाइत अछि, किन्तु जकरामे बुद्धि विवेक ओ प्रतिभा छैक से सम्हरि जाइत अछि ।

बोतल शीर्षक कथामे एकटा शराबीक चित्र प्रस्तुत कयल गेल अछि । एहि कथाक सन्देश अछि जे मदिरापान कदापि नहि करी – ओ अनेक अनर्थक कारण बनि जायत ।

मङली मायक बकरी शीर्षक कथामे श्रीझा बकरी सन पशु एवं ओकरा पोसऽबाली गरीबनी मङलीमायक मनोदशाक वर्णन तेना कयने छथि जेना ओ स्वयं एकर प्रत्यक्षदर्शी होथि । कथाकार वस्तुतः ततेक मार्मिक ओ यथार्थ चित्र उपस्थित करैत छथि जेना ओ स्वयं ओहि पात्रमे जीबैत होथि । जाहि बकरीक दूधसँ महेन्द्रझाक मरकमान जनमौटी नातिकेँ जिया देल गेलनि, जाहि कारणेँ ओकर दुनू पठरू भूखसँ मरि गेलैक, ताही बकरीक दोसर बियानमे महेन्द्रझा लदबदायल बकरीक निछा कऽ मरि जयबामे सहयोगी भऽ गेलथिन, महेन्द्रकेँ जखन सही जानकारी भेलनि तँ हतप्रभ रहि गेल रहथि । श्रीरामदेवझा सफल कथाकार छथि, गरीबक वेदनाकेँ मार्मिक ढंगसँ' सटीक चित्रित करबामे ओ सिद्धहस्त छथि, ताहिमे कनेको सन्देह नहि रहि जाइत अछि ।

सम्पूर्ण कथासंग्रह 'धरतीमाता'मे कथाकार डा.झा एकटा राष्ट्रवादी कथाकारक रूपमे प्रकट होइत छथि । अधिकांश कथामे समाजक कमजोर ओ उपेक्षित लोकक पक्ष लऽ ओकर मार्गदर्शन राष्ट्र ओ समाजहितमे कयलनि अछि । अर्थात् प्रत्येक कथामे समाजोपयोगी ओहन तत्त्व विद्यमान अछि, जे एहि संग्रहकेँ स्तरीयता प्रदान करैत अछि ।

●

Scanned by CamScanner

उपेक्षित वर्गक कथाकार

डा. श्रीशिवशंकर 'श्रीनिवास'

मैथिली कथा साहित्यमे 1950 इ.क समय अर्थात् गत शताब्दीक छठम दशक बहुत महत्त्वपूर्ण अछि। किन्तु प्रश्न उठैत अछि जे जखन कि एहि दशकसँ पहिनहुँ कयटा संस्मरणीय कथा लिखायल आ बादोक दशकमे एक-सँ-एक कथा लिखायल अछि। तखन एहन कोन कारण अछि जे छठम दशक विशेष रूपसँ स्मरणीय अछि ?

छठम दशक भारतीय स्वतन्त्रता प्राप्तिक बादक काल थिक। स्वतन्त्र भारतक आदिकाल। एहि कालमे देशक राजनीतिक संरचना बदललाक कारणे आर्थिक ओ सामाजिक संरचना बदलऽ लगलैक आ लोक चिन्तनमे नव धारा फुटलैक। एहन स्थितिमे कथा धारामे परिवर्त्तन आयब स्वाभाविक छलैक। विशेष बात जे एहि दशकसँ कथाकारक पीढ़ी जेना स्थापित भेलैक तेना पूर्वमे नहि छल। एक समयक लेखकक रूपमे विभिन्न कथाकारक उदय भेल आ ओ लोकनि अपन-अपन खास विशेषताक संग कथा लिखब आरम्भ कयलनि। जिनका सभमे अपन-अपन खास वैशिष्ट्य ओ दृष्टिक कारणेँ भिन्नता रहितो समकालीनता छनि जे अपूर्व अछि। हमरा जनैत मैथिली साहित्यमे एक समयक लेखकमे समकालीनता होअक चाही से उक्त दशकसँ प्रारम्भ भेल, से स्पष्ट भेल कथा साहित्यमे, आ तेँ विशेष रूपेँ उक्त दशक हमरा बहुत महत्त्वपूर्ण लगैत अछि।

एहि महत्त्वपूर्ण दशकक महत्त्वपूर्ण कथाकार छथि श्री रामदेवझा। 'धरतीमाता' हिनक एकटा कथा संग्रह छनि, सम्प्रति हमरा एही संग्रहक कथापर गप्प करबाक अछि।

रामदेवझाक कथा मैथिलीमे लिखल मिथिलाक कथा थिक। मिथिलामे रहैत जन जीवनक कथा। मैथिलीक सभ कथा मिथिलाक कथा नहि थिक। एहन कथामे कएकटा विशिष्ट कथा रहितो मिथिला भूमि वा ओकर लोकक कथा नहि थिक, कारण स्पष्ट अछि जे ओहेन कथामे मिथिलाक भूमि नहि अछि आ ने ओकर लोक अछि। एहन कथाकेँ हम मैथिली कथा मानितो मिथिलाक कथा नहि मानैत छी। किन्तु रामदेवझाक कथा मैथिलीमे लिखल मिथिलाक लोकक कथा थिक। ई गाम-घरसँ बाहर जखन मिथिलासँ दूर कोनो नगरमे रहैत लोकक कथा कहैत छथि तँ ओ लोक मिथिलेक थिक से स्पष्ट बुझायत। जे हिनक खास वैशिष्ट्य थिकनि। सभसँ अधिक महत्त्वपूर्ण अछि जे ई अपनाके कोनो खास वर्गक घेरामे नहि घेरलनि। ई सामान्य लोकक बीच चारूकात तकैत बुझाइत छथि आ जकर कथा कहब आवश्यक बुझैत छथि, कहैत छथि। जाहिमे श्रमिकसँ लऽकऽ मालिक आ ठिकेदार धरि अछि। किन्तु स्पष्ट अछि जे ई छथि शोषितक दिश, मानवताक दिश आ जेम्हर ई छथि ओतऽसँ समाजकेँ सचेत करैत छथि, आह्वान करैत छथि।

हमरा जनैत रामदेवझा मानवीय संवेदनाक कथा कहैत छथि, किन्तु संवेदनाक कथा कहि ई ओहिसँ मात्र करुणा उपजाबऽ नहि चाहैत छथि। ई चाहैत छथि समुन्नत समाज आ विसंगतिक भंजन। हिनक कथा कहैत अछि जे समाजक प्रत्येक व्यक्तिक लेल विकासक बाट होइक, ककरो बाटकेँ केओ रोकैक नहि। हिनक कथा मानैत अछि जे समाजमे विपन्नता छैक आ विपन्नताक स्थिति समाजेक एकटा वर्ग बनौने अछि जे वर्ग शोषक अछि, ओ समाजक पछुआयल लोककेँ सीदित करैत अछि। हिनक कथामे पछुआयल लोक अपन आपसी सहयोगक बलेँ जीवन आ विकासक रस्ता पकड़ैत अछि। रामदेवझाक कथामे ई हुनक अन्य समकालीन कथाकारसँ फूट आ विशिष्ट बात थिकनि जे हिनका विशिष्ट बनबैत छनि।

उक्त चिन्तन हिनक कतिपय कथामे देखल जा सकैत अछि आ एहि संग हिनक कथासँ बुझायत जे हिनक

Scanned by CamScanner

कथाकार प्रत्येक व्यक्ति हेतु एहन चरित्र चाहैत अछि जे चरित्र पूर्ण रूपसँ मानवीय हो, सामाजिक हो जाहिसँ सुन्दर विकासगामी समाजक संरचना भऽ सकय। एही कोटिक हिनक एकगोट विशिष्ट कथा संग्रह अछि **धरतीमाता**।

धरतीमाता कथा प्रथम बेर 15 सितम्बर 1968 केँ मिथिलामिहिरमे प्रकाशित भेल छल। एहि कथाक जन्म खेतीक चिन्तासँ भेल अछि। भारत जखन स्वतन्त्र भेल तँ आधुनिक शिक्षा लोक लेल सुलभ भेलैक। आधुनिक शिक्षामे रोजीक आकर्षण छलैक। लोक मिथिलासँ दूर रोजगार लेल भागऽ लागल, जाहिमे पढ़ल आ बिनु पढ़ल सभ तरहक लोक छल। आधुनिक शिक्षा ओहिमे तेजी अनलक। लोकमे एहन धारणा बनलैक जे पढ़ल-लिखल लोक गाममे किएक रहत? खेतीक स्थिति अधलाह होअऽ लगलैक, से केहन अधलाह ओ आइ प्रत्यक्ष अछि। आइ मिथिलाक लोक खेती छेड़ि रहल अछि। कारण बहुत अछि मुदा एखन हमर उद्देश्य ओतऽ पहुँचब नहि अछि। हमरा कहबाक अछि जे 1947क बादेसँ क्रमिक रूपेँ मिथिलाक लोक खेतीसँ भागऽ लागल। पंडित नेहरूक बाद लाल बहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री भेलाह ओ 'जय जवान, जय किसान'क नारा देलनि। ओकर बाद हरित-क्रान्तिक बात उठल तथापि मिथिलाक किसान-मजदूरक पलायन नहि रुकल। बोधक अभावमे भूमिक चिन्ताक बदला लोक अपन चिन्ता करऽ लागल जाहिसँ पलायन बढ़लैक।

'धरतीमाता' कथामे एकटा बहुत पैघ विशेषता अछि जे अयोध्या स्वयं ई बोध करैत अछि जे खेतक संग ओकर रहब आवश्यक छैक। ई बोध ओकरा अपन घर, खेत आ कलम-गाछी देखि कऽ होइत छैक। हमरा जनैत कथाकार अपन कथासँ एही स्वयं-बोधक आह्वान करैत छथि जे बहुत पैघ बात थिक। कथामे एकटा बातपर विशेष ध्यान देब आवश्यक ओ ई जे 'मद्धू काका भाव-विभोर भऽ चुटकी भरि माटिसँ अयोध्याक माथपर ठोप कऽ देलथिन'- ई अयोध्याकेँ प्रेरित करब भेल किन्तु से मद्धूकाका पहिनो कऽ सकैत छलाह? मुदा एहि बहाने कथाकार समष्टिक चिन्ता करैत एकटा सन्देश देबामे सफल भेलाह अछि।

मैथिलीमे कृषि श्रमिक आधारित बहुतो कथा आ उपन्यास अछि किन्तु खेतीक चिन्ताक बहुत कम रचनामे आयल अछि। 'धरती माता' उक्त चिन्ताक पूर्त्ति करैत अछि से बहुत महत्त्वपूर्ण बुझाइत अछि।

प्रेम जीवनक एहन बोध थिक जे जीवनसँ कात भऽ नहि रहि सकैत अछि। मुदा मैथिलीमे नर-नारी प्रेमक कथा संघर्षक कथा लिखबाक क्रममे विला गेल। कथाकार रामदेवझा अद्भुत रूपमे एहन कथा लिखलनि जाहिमे अन्तः-सलिला जकाँ बहैत प्रेमक व्याख्या अछि संगहि समाजमे नारीक स्थितिक विश्लेषण जे कथाकेँ विशिष्ट बनबैत अछि। हुनक ई कथा थिक- **जलक तलपर लिखन नाम**।

कथाकार अपन एहि कथामे जाहि तरहेँ एक गरीबक बेटीक प्रेमकेँ जलक तलपर लिखल नाम जकाँ कहि व्याख्या कयलनि अछि ओ सुन्दर अछि। संगहि एहिमे मिथिलामे गरीब बापक बेटीमे प्रतिभा रहितो नहि पढ़ि पबैत अछि तकर कचोट अछि, जे कथाकेँ बहुत मार्मिक बनबैत अछि।

मनुक्ख जकाँ तँ देखऽमे सभ लगैत अछि, किन्तु सभ मनुक्खे नहि थिक। वस्तुतः मनुक्ख ओ थिक जकरामे मनुक्खता छैक। जे मनुक्खलेल बेर-विपतिमे तैयार रहैत अछि। एहि भावकेँ बल दैत हिनक एकटा कथा अछि- **मनुक्ख**। कथा गाममे रहैत गनेसीक अछि। ओ मंगलाक गप्पपर शहरक आकर्षणमे शहर चल अबैत अछि। मंगला ओकरा रिक्सा चलायब सिखौलकैक। डरेबरीक लाइसेंस दिया देलकै आ गनेसी रिक्शा चलबऽ लागल। कालक्रमे घरवाली आ बाल-बच्चाकेँ सेहो अनलक किन्तु सुखी नहि रहल। एहि कथामे गामसँ आयल श्रमिक कोन तरहेँ शहरमे कष्ट कटैत अछि जकर बहुत यथार्थ वर्णन अछि। रामदेव झाक कथामे वर्णन-विन्यास अत्यन्त स्वाभाविक होइत छनि जाहि कारणे कथा रोचक ओ मार्मिक बनैत अछि। **मनुक्ख**मे कथाकार फूटसँ किछु नहि कहैत छथि सबटा हिनक कथे कहैत छनि। हमरा जनैत हिनक कथाक यैह विशेषता हिनक कथाक संग हिनक कथाकारकेँ महत्त्वपूर्ण बनबैत अछि।

दाम्पत्य जीवनक राग-अनुरागमे माधुर्य अछि तँ तीत आ अम्मतक स्वाद सेहो अछि। ओ स्वाद मात्र पति-पत्नियेँ नहि अनको लगैत छैक। ओ अनका कोना लगैत छैक? एकर व्याख्या हमरा जनैत हिनक एकटा

Scanned by CamScanner

कथा –**हत्थाजोड़ी** मे भेल अछि । मनतोड़िया जाहि तरहेँ रूसि कऽ स्टेशन चल आयलि आ अपन पति छीतनकेँ भरल लोकक बीच देखार करैत अछि तथापि मनतोड़ियाकेँ छीतनक प्रति प्रेम अद्भुत प्रेम छैक जे कथा कहैत छैक, जकर चरम स्थितिकेँ लोक दुनूकेँ हत्थाजोड़ी कऽ कऽ जाइत देखैत अछि । उक्त कथा ऊपरसँ बहुत मनोरंजक बुझाइत छैक किन्तु भीतरमे स्त्रीक करुणा छैक, स्वाभिमान छैक जे मनकेँ छुबैत स्त्री जीवनक विमर्श लेल एकटा स्थिति दैत छैक जे कथाकेँ महत्त्वपूर्ण बनबैत अछि ।

बसातक दाम कथामे एकटा एहन चरित्र अछि जे खास अछि, जेहन सामान्यत: नहि होइत अछि । बूढ़ शक्तिहीन सरबनक उदात्त चरित्र प्रोफेसर साहेबक अहंकारकेँ हड़बड़ा कऽ ढाहि दैत छनि । वस्तुत: एहन चरित्रक जीवन सोचऽ लेल मनुष्यकेँ बिलमबैत अछि तकरे कथा थिक 'बसातक दाम' ।

हिनक एकटा एहने उच्च चिन्तनक कथा थिक **उद्घाटन** । कथा अपन कथानक ओ कथ्यसँ समाजकेँ सचेत करैत अछि जे कोनो निर्माणकेँ कोना आगू बढ़ाओल जाय आ ओहिमे बाधा अबैत अछि तँ कोना धैर्यक संग लड़ल जाय ।

पराजयक मुद्रामे कथाकार एकटा रिक्शावलाक जीवनक विहिया-विहिया कऽ वर्णन करैत श्रमिक जीवनक संघर्षकेँ देखयबामे बहुत सफल भेलाह अछि । व्यक्ति संघर्ष करैत अछि किन्तु ओहि संघर्षशील जीवनमे जे मनोरथ होइत छैक ओहि मनोरथकेँ पुरेबामे ओकर की दशा होइत छैक एहि सभ बातकेँ ई कथा कहैत अछि। मनोहरा रिक्सावला छल किन्तु ओ ओहि दिन ई ककरो नहि बूझऽ देबऽ चाहैत छल जे ओ रिक्सावला थिक । कथाकार ईहो कहऽ चाहैत छथि जे अहाँ जे छी ताहि रूपमे आगू बढ़ू । अपनाके झाँपब तँ मनोहरे जकाँ पराजय भोगऽ पड़त । आइ समाजक परिस्थितिकेँ जँ ठीकसँ निरीक्षण करब तँ उक्त कथा बहुत महत्त्वपूर्ण बुझायत । समाजमे देखल जाइछ जे दलित वर्गक कोनो व्यक्ति जखन संघर्ष कऽ ऊपर उठैत अछि तँ ओहि व्यक्तिक चालि-ढालि आभिजात्यक भऽ जाइत छैक । प्रश्न उठैत अछि जे की ओकर अभिजात्यपरक चालिये ओकर विकास थिकैक ? वस्तुत: सामाजिक दिशामे दलितकलेल ओकर जीवन संस्कृतिसँ कात होयब पराजय थिक । उक्त संकेत कोनो-ने-कोनो रूपमे एहि कथामे भेटैत अछि । मनोहरा जे छल ताहि रूपमे पत्नीक संग सिनेमा देखऽ अबैत तँ प्राय: ओकर मुद्रा पराजयक नहि होइतैक ।

हिनक एकटा कथा अछि **चोर** । मनोवैज्ञानिक गीरहकेँ सोझरबैत ई कथा मानव जीवनक सत-असतसँ परिचय करबैत अछि । शोभाकान्तक ईमान विजय प्राप्त कऽ लैत अछि जे सत्तक विजय थिक । आ उक्त कथा एहि रूपमे मानवताक रस्तापर अयबाक लेल जीवन-पथिककेँ आह्वान करैत अछि ।

'बोतल' कथामे नशेंड़ीक स्त्री ओ ओकर धिया-पुताक दुर्गतिक कथा अछि ।

शराबी वसन्तकेँ जखन सत्यसँ सामना होइत छैक तँ ओ सप्पत खाइत अछि जे आब ओ भविष्यमे एहन काज नहि करत । ओ अपन पत्नीसँ कहैत अछि – "नहि, नहि श्यामा ! आब नहि । ने दीनू-बीनूकेँ अपना पापेँ मरऽ देबै, ने समाजमे शराबी बेटा होयबाक लांछन आबऽ देबैक ।' कथामे श्यामाक धैर्य ओ बुद्धि केँ जाहि रूपेँ देखाओल गेल अछि ओ मिथिलाक नारीक चरित्र थिक जे भयानक-सँ-भयानक स्थितिमे धैर्यकेँ अपनासँ हटऽ नहि दैत अछि । संगहि एहि पुरुषवादी समाजमे नारीक करुणा ओ धैर्य कोना एक दोसरसँ मिलल रहैत अछि ओकर उदाहरण श्यामाक चरित्र थिक ।

एहि संग्रहक अन्तिम कथा थिक **मङली मायक बकरी** । 'बकरी' पशु धन थिक किन्तु मनुष्य ओहिसँ कोना जुड़ल रहैत अछि, तकरे कथा थिक मङली मायक बकरी ।

वस्तुत: कथाकार रामदेवझा अपन कथामे समाजक उपेक्षित-अवहेलित वर्गक समस्या, जीवन-शैली ओकर चिन्तनकेँ जाहि सूक्ष्मताक संग उपस्थापित करैत छथि से अद्भुत अछि । एक खीरा : तीन फाँक सँ लऽ कऽ धरतीमाता धरिक हिनक कथा यात्राक मूल स्वर यैह कात-करौटमे पड़ल मनु सन्तानकेँ उठा कऽ साहित्यक मुख्य धारामे आनि कऽ प्रतिष्ठापित करब रहलनि अछि ।

●

Scanned by CamScanner

समकालीन मैथिली कथाक प्रतिमान धरतीमाता

श्रीफूलचन्द्रझा 'प्रवीण'

रामदेवझा मैथिली साहित्य मध्य एकटा एहेन नाम थिक जे साहित्यक प्राय: सभ विधामे खूब नीक जकाँ धुरझार लिखैत रहलाह अछि आ एखनो लिखि रहलाह अछि, मुदा हम हिनक कथापर केन्द्रित भऽ रहल छी ताहूमे 'धरती माता' कथा संग्रहपर ।

एहि संग्रहक पहिल कथा **धरती माता**मे कथाकार एकटा गृहस्थक सन्तान अयोध्याकेँ चरित नायक बना कथा लिखलनि अछि, जनिक पूर्वज सभ दिनसँ एहि धरतीकेँ कोरि अपन परिवारक गुजर-बसर करैत आबि रहल छलाह। समयक झंझावातक संग समझौता करैत अयोध्या परदेश खटब आरम्भ कऽ दैत छथि आ आब हुनका गाममे बेसी काल रहब पसिन्न नहि छनि । पत्नी सेहो संगे रहैत छथिन । पिताक मृत्युक बाद जखन मायक मरणासन्न स्थिति सुनि अयोध्या गाम अबैत छथि तखन अपन घर-आँगन खेत-पथारक दुर्गति देखि ओ विचलित भऽ जाइत छथि । मायक मन नीक भेलाक बाद अयोध्याकेँ अपन माटि-पानि, अपन मातृभूमिक ई कष्ट देखल नहि जाइत छनि आ ओ संकल्प लैत छथि जे आब हम परदेश खटबाक लेल नहि जायब । अपन माय आ मातृभूमिक सेवा आ रक्षा करब । ई कथा वर्त्तमानक भौतिकवादी सुख-सुविधाक चमक-दमककेँ ध्यानमे रखैत भने उपयुक्त नहि बुझाउ, मुदा एहि कथाक माध्यमेँ जे राष्ट्रवादी विचारधाराक सन्देश देल गेल अछि से वर्त्तमानो लेल ओतबे प्रासंगिक अछि ।

जलक तलपर लिखल नाम ई एकटा अद्भुत कथा अछि जाहिमे नायिका मालतीक रतनक प्रति आत्मिक स्नेहकेँ दर्शाओल गेल अछि । मालती रतनक लेल व्याकुल, मुदा रतनक लेल धन सन । ओ एकटा गरीबक बेटी आ ई एकटा पैघ लोकक बेटा । पढ़बामे दुनू नीक, मुदा आर्थिक शिकस्ती आ नारी शिक्षाक प्रति उदासीनताक शिकार बनलि मालती आगाँ नहि पढ़ि पबैत अछि । मालतीक ओतबे पढ़ब ओकर पिताक लेल समस्या भऽ गेल छनि । मालती रतनकेँ अपना हृदयमे बसौने रहलि आ प्रेम जखन पराकाष्ठापर पहुँचि जाइत अछि जखन मालती जलक तलपर अपन तर्जनीसँ रतन लीखि फेर ओहि लिखलाहा स्थानक तरंगक बीचमे डूब दऽ देलक । रतनक नामसँ जेना ओकर सौंसे देह नहा गेलैक, समग्र देह आवृत्त भऽ गेलैक । मैथिली साहित्यमे एहि कोटिक प्रेम कथा प्राय: नहि देखबामे अछि । ने कतहु अश्लीलता, ने नग्नता आ ने कतहु वासना किंवा भूख... एक मात्र निश्छल प्रेम... । एक समयमे प्रभास कुमार चौधरी बाजल छलाह जे मैथिलीमे एखन धरि सुदुक एकटा प्रेम कथा देखबामे अबैत अछि ओ थिक रामदेवझाक 'जलक तल पर लिखल नाम' । वास्तवमे नव शीर्षक आ नव शिल्पक संग लिखल ई कथा स्वयंमे एकसरे अछि ।

मनुक्ख कथामे कथाकार गनेसी नामक एकटा रिक्सा-चालककेँ केन्द्रमे राखि कथा लिखलनि अछि । कोना गरीबीक डाङसँ मारल गमैया लोक शहरमे आबि रिक्सा चलायब आरम्भ करैत अछि । गामपर परिवारकेँ रहबाक लेल कोनो उपाय नहि रहला उत्तर पत्नी आ बच्चासभकेँ सेहो लऽ अनैत अछि । कोना रिक्सा मालिक रामप्रसाद ओकरासँ रिक्सा छीनि लैत छैक आ कान्हपरसँ गमछा पर्यन्त उतारि लैत छैक । एहन विपरीत परिस्थितिमे जखन गनेसीक आङनसँ अस्पतालमे भर्त्ती रहैत छैक तखनो लाख कहलापर रामप्रसाद ओकरा रिक्सा चलयबाक लेल नहिएँ दैत छैक । एहन विकालमे जखन गनेसी घरवालीक खायक लऽ कऽ अस्पताल जयबाक लेल सिनेमा हॉल लग ठाढ़ भेल रहैत अछि तँ एकोटा रिक्सावला चलबाक लेल तैयार नहि होइत छैक । अन्तमे एकरा अपन परिचय देबऽ पड़ैत छैक जे हमहूँ रिक्से चालक छी तखन एकटा रिक्साबला कहैत छैक- जँ अपने चला कऽ जयबऽ तँ चलऽ ।' ओ निसबद्ध रातिमे

Scanned by CamScanner

आङनबालीक पथ्य पहुँचा पुन: रिक्सासँ सिनेमा हॉल लग अबैत अछि आ रिक्साबलाकेँ पाइ निकालि कऽ देबऽ लगैत अछि तखन ओ कहैत छैक -रे मर्दे ! केहन लोक छेँ ? सौंसे संसारमे अन्याय कयनिहारक कमी छै जे हमरा अन्याय करऽ कहैत छेँ ? हम तँ रिक्सापर कतहु सुतले रहितहुँ । तोँ अपना पैरेँ चला कऽ गेलेँ आ अयलेँहेँ तकर हम की लियौ ? रे ! हमहूँ मनुक्खे छी आ मनुक्खेक काज मनुक्खकेँ होइ छै, से किएक ने बुझै छिही ?' आकारेँ लघु रहितो ई कथा पैघ बात कहि, सोचबाक लेल पाठककेँ बाध्य कऽ दैत अछि ।

हत्थाजोड़ी कथामे एकटा दम्पतिक मध्य रोचक झगड़ा-झंझटिक वर्णन भेल अछि । टीसनपर दुनू प्राणीक मध्य उकटा-पैंची, नोँक-झोँक आ अन्तमे एक दोसरक प्रति हृदयमे असीम स्नेहक प्रतीक थिक- हत्थाजोड़ी ।

बसातक दाम एकटा संस्मरणात्मक कथा थिक । जाहिमे कथाकार दुमका कालेजक अपन कार्यकालक एकटा घटनाक वर्णन कयलनि अछि । जखन असमयमे सरबन कथानायकक डेरामे आबि हिनक पैर जाँतऽ लगैत छनि तखन हिनका ओकरा प्रति कैक प्रकारक बात मनमे आबऽ लगैत छनि, मुदा जखन ओ जाय लगैत अछि आ कथाकार ओकरा पाइ देबऽ लगैत छथिन तखन सरबनक उत्तर कतेक सहज आ निर्लोभ अछि से देखल जा सकैछ- ''मालिक, आज गरमी कइसन छै ? दुपहरमे कहीं छाँहमे बैसइ खातिर जगह नय भेटै छलै । गाछ-बिरिछमे पातो ने डोलै छै । मोन बड़ा व्याकुल हो गेलै, तबे मोन पड़लै जे मालिकके कोठली खुललऽ रहै छै, से हम्मे तोरऽ कोठलीमे आबी पंखाक बसातमे भरि दुपहरिया आराम करैत रहलियौं । हम्मे पैसा कइसन लेभौं ?' आ ई वक्तव्य कथाकारकेँ क्षणभरि सोचबाकलेल बाध्य कऽ दैत छनि जे- दीन-हीन आ परिस्थितिक मारल व्यक्तिमे सेहो कतेक नैतिकता होइत छैक । पात्रोचित भाषाक प्रयोग कथामे आओर लालित्य आनि देलक अछि ।

उद्‌घाटन कथामे कथाकार देखौलनि अछि जे कोना कोनो नीक काज कयनिहारलोककेँ, कुटीचाली लोकसभ विघ्न उत्पन्न करबाक लेल व्याकुल रहैत छैक आ सभ विषयकेँ राजनीतिसँ जोड़ि स्वार्थक लेल घृणितसँ घृणित काज कऽ बैसैत अछि ।

पराजयक मुद्रा कथा सेहो मनुक्ख कथा जकाँ रिक्साचालकक जीवनपर आधारित कथा थिक । एहिमे कथाकार अपन निम्नवर्गीय कथानायक मनोहराक सहृदयता आ दयनीयताक स्वाभाविक रूपमे चित्रण कयलनि अछि ।

चोर कथामे कथाकार शोभाकान्तक किशोर मनोविज्ञानकेँ उपस्थित कयलनि अछि । ई एकटा अति दीन-हीनक बेटा जे जिनगीमे कहियो जूता नहि पहिरने छल । ओकर पूर्ण इच्छा छलैक जे कुलानन्दक जुत्ता हम पचा ली, माय सेहो संग पुरबाक लेल तैयार छलथिन । मुदा जखन कुलानन्दक एकटा संगी चिड़ियारिक चाउर खोअयबाक आ मुर्गीक अण्डा कटयबाक बात कहैत अछि तखन शोभाकान्त विचलित भऽ जाइत अछि ओकरा लोक घृणाक दृष्टिसँ देखतैक । एहि अर्न्तद्वन्द्वक बीच शोभाकान्त सत्पथ स्वीकार करबाक लेल बाध्य भऽ जाइत अछि । **बोतल** कथामे कथाकार एकटा शराबीक घरवाली केँ कोन-कोन प्रकारक आ कतेक प्रकारक दुर्दशा भोगऽ पड़ैत छैक तकर नीक वर्णन कयलनि अछि । **मङली मायक बकरी**मे कथाकार मङली मायक रूपमे ओहने लोकक एकटा सजीव आ सहज चित्र उपस्थित कयलनि अछि । मङली मायकेँ अपना सन्तानसँ कनिओ कम स्नेह ओहि बकरीसँ नहि छैक । एहि कथामे एक दिस पूर्ण आत्मीयताक बोध होइत अछि तँ दोसर दिस सामाजिक विद्रूपताक सेहो । करुणासँ भरल ई कथा शिल्पक दृष्टिएँ अपूर्व अछि ।

एहि प्रकारेँ उक्त संग्रहक सभ कथामे कथा स्वयं बजैत अछि, सभ किछु स्वयं कहैत अछि आ अन्त होइत-होइत सुधी पाठककेँ सोचबाक लेल विवश करैत अछि । प्रस्तुत कथा संग्रहक सभ कथामे जेहने कथानक, तेहने शिल्प, पात्रोचित भाषाक संग-संग गमैया ठेठ मैथिली शब्दक, सरल, सहज, सर्वबोधगम्य प्रयोग, आ समुचित वातावरणक निर्माण देखबामे अबैत अछि । रामदेवझा पुरानसँ पुरान आ नवसँ नव शिल्पमे कथा लिखैत रहलाह अछि आ मैथिलीक शीर्षस्थ कथाकार लोकनिक मध्य स्थान पबैत रहलाह अछि ।

●

Scanned by CamScanner

मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक उत्कृष्ट प्रस्तुति

डा. श्रीअशोक 'अविचल'

'एक खीरा : तीन फाँक' आ 'मनुक सन्तान'क बाद जखन श्रीरामदेवझाक 'धरतीमाता' कथा-संग्रह प्रकाशित भेल तँ एहिमे एक गोट नव कथाकारक दर्शन छल । पहिनेसँ बेसी माँजल, बेसी व्यावहारिक, यथार्थवादी स्वर आ मन:व्यथाक मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक संग । सभ कथाक विषय वस्तु फराक मुदा कथाकारक मूल ध्येय वैह अपन यथार्थवादी सामाजिक आर्थिक, मानवीय चिन्तन । किछु कथा तँ बेस उत्कृष्ट भऽ गेलैक अछि । समकालीन मैथिली कथाक प्रतिनिधि कथाक श्रेणीमे ठाढ़ ।

पहिल कथा **धरतीमाता** अपन माटि-पानिक प्रति अन्त:करणक संवेदनशीलताक उत्कृष्ट उदाहरण अछि । आइ एहि कथाक विषय वस्तु आरो बेसी प्रासंगिक भऽ गेल अछि जखन वैश्वीकरणक प्रवाहमे भसियाइत लोक अपन गाम-घर छोड़ि शहरक चकचकीमे बहल जा रहल अछि । अपन उदास खेत-पथार, परती पड़ल चभच्चाक महार, छिन्न-भिन्न भेल गाछी सभकेँ देखि अयोध्याक अन्त:हृदयमे जे संवेदनाक उत्पत्ति होइत अछि, विचारक जे विरड़ो ओकरा हृदयकेँ झकझोरैत अछि तकर सहज आ प्रभावपूर्ण वर्णन पाठककेँ द्रवित तँ करिते अछि संगहि गाम-घर आ खेत-खरिहानक प्रति मोह सेहो उत्पन्न करैत अछि । एतहि कथाकार अपन साहित्यिक उद्देश्यमे सफल भऽ जाइत छथि आ अनायासे राष्ट्रिय-विकासक जड़ि गामक केन्द्रविन्दुमे आनि ठाढ़ करैत छथि ।

शहरक वातावरण सँ गामे नीक । उपरमे फीट-फाट भीतरमे सिमरियाघाटवला शहरी वातावरणक चकचकीक वास्तविक सत्यकेँ ई आर बेसी यथार्थवादी रूपेँ देखार कयलनि अछि **मनुक्ख** आ **पराजयक मुद्रा** कथामे ।

अपन गाम-घरसँ शहरीक अनेरुआ प्रदर्शनसँ प्रभावित भऽ रिक्सा चलओनिहारक संघर्षक स्थिति, दुर्दशा यैह एहि दुनू कथाक पृष्ठभूमि अछि । मनुक्खमे मनुष्यता एखनो बाँचल अछि एकर उद्घोष अछि आ लेखकक उद्देश्यो एतहि धरि बुझाइत छनि ।

पराजयक मुद्रा सेहो रिक्शावला मनोहराक शहरमे संघर्ष, किछु बनबाक, करबाक विचार आ समय आ सामर्थ्यक प्रतिकूलताक मध्य द्वन्द्वकेँ नीक जकाँ स्पष्ट करैत अछि । हँ, अपन कार्यक प्रति गौरवबोध आ सन्तुष्टि नहि रहने हीनतासँ उत्पन्न पराजयक मुद्रा विशेष संकेत दैत बुझाइत अछि ।

आजुक ई सत्य अछि जे सभ अपना ठामपर असन्तुष्ट अछि । जे हम छी ताहिसँ बेसी प्रदर्शनक प्रवृत्ति भौतिक विकासक तँ संवाहक होइत अछि मुदा आत्मिक ह्रासक कारण सेहो ।

धरतीमाता कथा संग्रहक एकटा आर कथा जे बेस स्पन्दित करैत अछि ओ थिक **मंगलीमायक बकरी** । शिल्प, कथावस्तुक यथार्थता, सहज प्रवाह, ठेठ-शब्दक समुचित प्रयोगक दृष्टिएँ संग्रहक ई उत्कृष्ट कथा मानल जा सकैत अछि । पोसल जीवक प्रति सहज स्नेहक प्रतीक मंगलीमाय मिथिलाक गाम-गमाइतमे पसरल पैघ मूक समूहक प्रतिनिधि बनि जाइत अछि । गाभिन बकरीक प्रति स्नेह, तकबाक बेकलता आ गामघरमे सर्वत्र पसरल पैघत्वक मिथ्या अहंकारसँ ग्रस्त, स्वार्थ सन्धानमे निपुण, अपन बच्चाक जीवनक कीमतपर ओकर बच्चाक प्राण बचौनिहारिक प्राण-हरण कयनिहार अकबकायल ठाढ़ महिन्दर ! एकहि संग गरीब मुदा स्नेहिल मंगलीमायक प्रति करुणा, सामाजिक परिवेश आ महिन्दरक कृतघ्नताक प्रति आक्रोश उत्पन्न करैत अछि । अजुका बदलल परिवेशमे सेहो असंख्य मंगली माय आ महिन्दर सन चरित्र

Scanned by CamScanner

जतऽ-ततऽ भेटि जा सकैछ । कथाकार एहि कथामे आश्चर्यजनक रूपेँ तटस्थ रहि द्रष्टा भावे कथाक प्रवाहकेँ प्रवाहित करबामे सफल रहलाह अछि ।

संग्रहमे **चोर** कथा सेहो उत्कृष्टताक संग प्रभावित करैत अछि । अभावमे स्वभाव कोना बिगड़ैत छैक, मोन कोना नव-नव तर्क गलतो काजकलेल गढ़ि लैत छैक आ लोक-लाज, नीक कहयबाक लालसा कोन रूपेँ सूतल आत्माकेँ जगा नीक बाट धरबैत छैक एहि सभ बातक चिक्कन आ प्रभावी मनोविश्लेषण एहि कथामे भेल अछि । कथाक प्रवाह पाठकक औत्सुक्य बनौने रहि नैतिकताक विजयक सन्देश दैत अछि ।

एहिना कथा **बोतल** शराब सेवनक दुष्परिणाम, लोकवेद, बाल-बच्चापर एकर दुष्प्रभावक वास्तविक वर्णनक संग बसन्तक हृदय-परिवर्त्तन आ यथार्थबोधपर समाप्त भऽ स्पष्ट सन्देश देबामे सफल होइत अछि ।

पछुआयल समाज आ मरुआ-बीआ जकाँ गजगज करैत गमैया नेता सबहक बुद्धिक स्तर, विचारक दिशा, नीको काजमे रहस्य तकबाक आ हम नहि तँ केओ नहि आ किछु नहि केर नकारात्मक प्रवृत्ति आ संकल्पक बलपर नीकक परिणाम नीक, सात्विकताक विजय एहि सबहक यथार्थवादी चिन्तन आ प्रगतिशीलताक स्पष्ट उद्घोषक संग चित्रित भेल अछि कथा **उद्घाटन**मे । विपरीतो परिस्थितिमे साहस नहि छोड़बाक चाही-एहि भावकेँ स्पष्ट करबामे कथा सफल अछि । ई कथा चरित्र-चित्रणसँ बेसी वैचारिक परिस्थितिक नीक व्याख्या करैत अछि ।

बसातक दाममे कथाकार अपनहि पात्र बुझाइत छथि । स्थान आ घटनाक्रम सेहो हुनकहि जिनगीसँ जुड़ल छनि । ई कथा गरीब आ असहाय सरवनक सन्तोषी स्वभावकेँ स्पष्ट करैत अछि । वास्तविकतो अछि । जतेक असन्तोष, भ्रष्टाचारी प्रवृत्ति, बेइमानी आदि पढ़ल-लिखल लोकमे छैक तकर सतांशो अनपढ़ आ गरीबमे नहि ।

हत्याजोड़ी कथा स्टेशनपरक घटनाक माध्यमे लोकक स्वार्थी प्रवृत्ति, संकुचित दृष्टिकोण, अपनहिटाक चिन्ता, आदिकेँ देखार कयलक अछि । छीतनकेँ मानवती द्वारा घरवला नहि मानब, मुदा ओकरा मारियौक नहि, केर बात कहब । संगहि 'सगाइ कऽ ले' शब्दपर लोहछब, गाम-घरमे अभाव झगड़ाक बीच अक्षुण्ण प्रेमक प्रतीक थिक । पैर पकड़बाक गप्पपर 'घरमे बरु पैरो जाँति देबौक' छीतनक खुशामदी गप्प आ हाथ जोरि कऽ जाइत मानवती, कथाक उत्कर्षक दृश्य उपस्थित करैत अछि । संगहि स्पष्ट चरित्र आ आकर्षक कथावस्तुक संग, कथाकेँ उपयोगी आ रोचक बना दैत अछि ।

प्रवाहमयता आ रोचकताक संग कथा-संग्रहक कथा **जलक तलपर लिखल नाम** अपन उद्देश्य स्थापित करबामे बेस सफल रहल अछि । पोखरिक, मन्दिरक आ गामक सहज वर्णन एकर विशेषता अछि । हँ एक पक्षीय प्रेम, अप्रकट लगाव, महिला शिक्षाक स्थितिक मध्य कथाकार एहि कथाकेँ कोनो परिणति धरि तँ नहि पहुँचा सकलाह मुदा 'मालतीक' माध्यमे सामान्य मैथिल बालाक मनःस्थितिक प्रभावी आ हृदयस्पर्शी मनोविश्लेषण करबामे पूर्ण रूपेँ सफल रहलाह अछि ।

'धरतीमाता' संग्रहक सभ कथा 1968 सँ 1980क बारह वर्षक मिथिलाक समाज, आ चिन्तनक कथा थिक । ई सभ कथा आलोचक आ पाठक दुनूकेँ आकृष्ट करबामे सफल रहल अछि । सहचर शब्दक सहज प्रयोग, प्रवाह, उत्सुकता आ सत् विचार निर्देश ई प्रायः सभ कथाक विशेषता अछि । गाम आ शहरक जीवनक सहज आ स्वाभाविक चिन्तनक संग तुलनात्मक चित्रण एहि संग्रहकेँ विशिष्टता प्रदान करैछ ।

पाठककेँ एहि संग्रहमे मनक इतस्ततः, किन्तु -परन्तुक रूपमे अपन आ अपन समाजक स्थिति, समस्या आदिक विश्लेषणक स्वतः अवसर उपलब्ध होइत छैक । वस्तुतः 'धरतीमाता' सत्तरिक दशकक प्रतिनिधि कथा-संग्रह तँ अछिये, संगहि मनःव्यथाक मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक उत्कृष्ट मापदण्ड मैथिली कथा साहित्यमे ठाढ़ करबाक दृष्टिएँ बेस सफल कथा-संग्रह अछि ।

●

Scanned by CamScanner

आजी माँ : एक विश्लेषण

प्रो. श्रीरमाकान्तमिश्र

श्रीरामदेवजी मैथिलीक विशिष्ट कोटिक शोधकर्त्ता, भाषाविद्, पंडित, प्राध्यापक आ सर्जनात्मक प्रतिभासँ सम्पन्न साहित्यकार छथि । रमानाथबाबू शोधकार्य कयलनि, आलोचना, समीक्षा आ सम्पादनक कार्य कयलनि मुदा, सर्जनात्मक साहित्यक रचना नहि कयलनि । श्रीरामदेवजी रमानाथबाबूक, उपर्युक्त सब प्रकारक कार्य करबाक अतिरिक्त, साहित्यमे मौलिक सर्जनक कार्य सेहो कयलनि अछि ।

प्रस्तुत पोथी हुनक कथाक चारिम संग्रह थिकनि । ओ नाटक सेहो लिखने छथि आओर ओहिपर साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृतो भेल छथि । किछु कवितो कयने छथि मुदा, जाहि एक विधामे मौलिक रचना अपना रुचिसँ कयलनि ओ कथे अछि ।

श्रीरामदेवजी विगत शताब्दीक छठम दशकसँ अर्थात् 1950क बाद लिखऽ लागल रहथि, ओही समयसँ जहिया ललित, राजकमल आ मायानन्द लिखलनि । कालक दृष्टिसँ ई, मैथिलीक ओहि दिग्गज कथाकार लोकनिक समकालीन छथि । छठम दशकमे ललितक कथाक सुवास मैथिलक छोट-छीन फुलवारीक (मिथिलामिहिर, वैदेही) कोन-कोनमे पसरि गेल रहैक । श्रीरामदेवजी ओही कालावधिमे कथा लिखऽ लगलाह । एतऽ एकटा बात स्पष्ट कऽ दी जे ओहि कालमे मैथिलीक सर्जनात्मक साहित्यक फुलवारी बड़ छोट छलैक । जे एक-दूटा कथाकार, पाठकक रुचिक खुट्टीपर लटकि गेलाह तनिके नोटिस लेल जाइत रहलनि । ओही अवधिमे कथाक मंचपर सहसा कल्पनाशरणक **रंगीन परदा**क विस्फोट भेल । लगलैक जेना लिलीरेक ओहि कथासँ कथाक परिदृश्ये बदलि गेल होइक । मैथिली कथाक पाठक मध्य **रगीन परदो**क धूम मचि गेलैक आ लोक (पाठक) ओही कथाक सामिष सामग्रीक सन कथाक पुनः परिवेशनकलेल लालायित भऽ गेल । पश्चात् जखन राजकमल ओहि प्रकारक सामिष कथा परसऽ लगलाह तँ ओहिसँ धर्म-कर्म आ शालीनतामे आस्था रखनिहार वयसगर पाठकक भावना आहत भेलैक । ललित सेहो **मुक्ति** लिखलनि आ ताहूपर टीका-टिप्पणी होअऽ लगलैक । ललित आ राजकमलक बीच प्रछन्नरूपक प्रतिद्वन्द्विता चलैत छलनि, ओना दुनू गोटे एक-दोसरक प्रतिभाक कायल छलाह जकर साक्षी हम स्वयं छी । ललितक **मुक्ति**क उत्तरमे राजकमल **फुलपरासवाली** लिखलनि । कोनो कथाक लोकप्रियताक एकटा 'पोख्ता' कारण अवस्से रहैत छैक । ललितक कथा सब (**रमजानी, कंचनियाँ,** ओ **ओभरलोड**) किएक हिट भेलनि ? तँ तकर कारण तँ ठेकनाबहिँ पड़त । 'रंगीन परदा'केँ ख्याति, सामन्ती समाज मध्य पसरल भ्रष्ट यौनाचार (सासु-जमायक बीच 'सेक्स') विषयकेँ मंच मध्य (Centre stage) करबासँ भेटलैक । अन्यथा एहि कथामे, ओहि निषिद्ध विषयक अतिरिक्त संरचनाक ओ सब गुण कहाँ छैक जाहि कारणेँ **रमजानी, ओभरलोड** आ **कंचनियाँ** पाठककेँ ओतेक नीक लगलैक ? गम्भीर भऽ कऽ पढ़बैक तँ ओतऽ एकटा सपाट आख्यान छोड़ि किछु नहि भेटत । ई कथा किछु वर्गक पाठकक नैसर्गिक पशुत्व भावकेँ गुदगुदबैत छैक । अर्थात् लोक सेक्से-केन्द्रित कथाकेँ चीखि-चीखि कऽ पढ़ैत अछि ।

ललितक कथा संसारमे सामन्त आ यौन नहि छनि । हुनक कथाक पात्र सब सर्वहारा वर्गक अछि, दलित-वंचित वर्गक अछि; जतऽ पसेनाक गन्ध छैक, संडासक गन्ध छैक, इत्र-फुलेलक नहि । हुनक कथामे आधुनिक कथाशैलीक ओ सब गुण अछि जाहि लऽ कऽ रूसी कथाकार चेखव आ फ्रांसीसी कथाकार मोपासाँ ओतेक प्रसिद्धि पौलनि । उपर्युक्त

Scanned by CamScanner

ई दुनू विदेशी कथाकार आख्यायिका किसिमक कथा नहि लिखलनि जाहि मध्य पात्रक परिचयक अतिरिक्त आदि, मध्य आ अन्त रहैत छैक । चेखव अपन कथाकेँ "Slice of Life" - **जीवनक एकटा कतरा** कहैत छलाह । हुनक कथामे भूमिका नहि रहैत छनि । ओ, सोझे-सोझ अपन कथा-संभार (Story's burden) अर्थात् कथ्यकेँ पाठकक समक्ष रखबामे विश्वास रखैत छलाह । हुनक कथामे अनावश्यक वर्णन-विवरण नहि भेटत । कथा विधापर विचारक कोनो अवसरपर चेखब कहने छथि जे कथामे वर्णन मध्य लेखक जँ बन्दूकक उल्लेख कयने छथि तँ ओहिसँ कखनहुँ गोली छूटब आवश्यक छैक । मोपासाँक विधि सेहो चेखवे सन छलनि, फरक एतबहि जे मोपासाँक कथामे अहाँकेँ चौकाबऽवला अन्त (Surprise ending) भेटत । जे पाठक बी.ए.मे मोपासाँक **दि नेकलेस** कथा पढ़ने होयताह से एहि तथ्यक जाँच करथु । ललितक कथामे सेहो बात चेखबेवला सोझे विषयपर आबि जायवला (directness) विधि भेटत । हुनकहुँ कथामे चेखबे जकाँ भूमिका बान्हब नहिएँ-ना छनि । हुनकहि जकाँ ललितक कथा सेहो आख्यायिका (Pure narrative) नहि अछि । बस, जीवनक एकटा कतरा (slice) अछि । चेखवे जकाँ ललितोक कथामे दलित-वंचित वर्गक सुख-दुखक कथा अछि । चेखव, अपन कथाकेँ प्रयत्नपूर्वक रोचक नहि बनबैत छथि । हुनक कथा कतहुसँ उपदेशमूलक (Parable like) नहि अछि । ललितोक कथा उपर्युक्त दुनू विदेशी कथाकार जकाँ संक्षिप्त (brief) अछि ।

कथा विधा, आधुनिक स्वरूपमे - आकार, संरचना आ उपस्थापन शैलीक दृष्टिसँ मूलरूपमे पाश्चात्य अछि । प्राच्य आ पाश्चात्य दुनू ठामक लोककथा (folklore), नीतिकथा (parable), मानव-मानवेतर पात्रवला उपदेश मूलक कथा (Fable) समाने रूपक छैक ।

मायानन्दमिश्रक कथाक संरचना ललितसँ भिन्न छनि से नहि, मुदा, ललित जतऽ, कथास्थिति आ पात्र, सर्वहारा समाजसँ बिछने छथि (**रमजानी, कंचनियाँ, ओभरलोड**) ओतहि, मायानन्दमिश्र निष्ठा आ यथार्थक अनुभूतिक आधारपर अपन कथाक पात्र आ परिवेश, गृहस्थक परिवार आ दाम्पत्य जीवनक तीत-मीठ अनुभवसँ तकने छथि । विडम्बना आ करुणा (Irony & Pathos) जहिना ललितक कथामे भेटत (कंचनियाँ) तहिना मायानन्दोक कथामे । मायानन्द भाषाक प्रति सचेत छथि । कवि भावेँ हिनक भाषा कने-मने अलंकार युक्त अछि । ललितक भाषामे अहाँकेँ कविताक लेसो नहि भेटत ।

विषयक दृष्टिसँ ललित आ मायानन्दक कथा जतऽ सर्वथा संयत आ शालीन छनि ओतहि राजकमलक कथामे एहन कोनो कथा नहि छनि जतऽ 'सेक्स' माँझेठाम नहि होइनि । राजकमलक कथामे, संरचनाक दृष्टिसँ, हमरा चेखब आ मोपासाँ नहि भेटैत छथि । हुनक कथाक विषय आ शैली अपनहिँ ढंगक आ बेछप छनि । पात्रक दृष्टिसँ हिनक कथामे स्त्रीपात्रक प्रधानता अछि । भाषाक स्वरमे, गम्भीरताक स्थानपर उपहास आ हास्य अछि । हिनक विषय 'सेक्स' निर्भीक तँ अछिए । राजकमल जानि-बूझि कऽ अपन कथाकेँ सनसनीखेज (Sensational) बनौने छथि । हुनक कथाक उद्देश्य पाठककेँ क्षुब्ध (shocked) आ चकित (surprise) करब रहलनि । 'सेक्स'क बर्जित क्षेत्रक विषयकेँ छोड़ि, हुनक कथामे, मानव मनक कोमल भाव आ सामाजिक आन कोनो समस्या आ सरोकारक भाव नहि अछि । हुनक **साँझक गाछ** कथा अछिओ वा नहि ताहिमे हमरा सन्देह अछि । ओ, विषयक दृष्टिसँ उत्तेजक कथा लिखबामे रुचि रखैत छलाह । ओ मानव मनक निषिद्ध क्षेत्रमे विचरण करऽवला, इतर ब्याजेँ पाखण्डकेँ देखार करऽवला, देहगाथा गावऽवला मूर्तिभंजक (iconoclastic) कथाकार छलाह । मुदा उपर्युक्त सब आपत्तिक अछैत, लोकप्रियताक ग्राफमे जतेक ऊपर राजकमल गेलाह ततेक मैथिलीक आन कोनो कथाकार नहि ।

समयक दृष्टिसँ श्रीरामदेवजी विगत शताब्दीक पचाससँ साठिक दशकक कथाकार छथि जाहि समयमे ललित, मायानन्द आओर राजकमल लिखब सुरू कयने रहथि । यद्यपि 1953-54मे लिखल हिनक किछु आरम्भिक कथा **मुदा आब की ?, दू ठोप नोर, माय भूख लागल** अछि जे एहि संग्रहमे संकलित अछि से कथा संरचनाक दृष्टिसँ खिच्चा आ भावुक अछि । तथापि एकर अपन महत्त्व छैक । मुदा एही दशकमे श्रीरामदेवजीक बहुतो कथा सब अयलनि जे

Scanned by CamScanner

हिनका चर्चित बनौलकनि जेना **भैया** (वैदेही, मइ 1956), **पथ-पाँतर** (मिथिला दर्शन, अगस्त 1956), **पहुना** (वैदेही, अगस्त 1957), **नकली कनिञाँ : नकलीआदमी** (वैदेही, सितम्बर 1959), **एक खीरा : तीन फाँक** (मिथिला दर्शन, 1960), **दुतिया चान : तुलसी दल** (मिथिला दर्शन 1960), **दोहरी दीप** (इजोत, 1960), **बट गाछक छाहरि** (अभिव्यंजना-1, 1960) इत्यादि । अवश्ये **एक खीरा : तीन फाँक** सन कथा जे मैथिलीक किछु उत्कृष्टतम कथा सबमे परिगणित कयल जाइछ ताहिसँ हिनक परिचिति एकटा परिपक्व कथाकारक रूपमे स्थापित भेलनि । एहि दशकक बाद श्रीरामदेवजी औरो जमि कऽ कथा सब लिखलनि जे **मनुक सन्तान, एक खीरा : तीन फाँक** आ **धरतीमाता** नामक संग्रह सबमे संकलित छनि ।

एहि संग्रहक कथासब-बेसी आठम आ नवम दशकक अछि आ तेँ औरो बेसी परिपक्व अछि ।

संग्रहक पहिल कथा **आजीमाँ** चरित्रप्रधान कथा अछि । कथामे घटना सब छैक, आजीमाँक उदारताक रहस्योद्‌घाटन छैक, प्रारम्भ, मध्य आ अन्त छैक । संरचनाक दृष्टिसँ कथामे जीवनक एकटा कतरा मात्र नहि छैक, एकटा सम्पूर्ण जीवने छैक जकरा कथाक छोट जमीनमे कलात्मकताक संग विन्यस्त कयल गेलैक अछि । कथा एकटा उपन्यासक 'सिनोप्सिस' जकाँ छैक । प्रसिद्ध अंग्रेज कथाकार समरसेट मॉम एहने झमटगर कथा लिखैत छलाह- चरित्र केन्द्रित, नाम, गाम, ठाम आ घटना बहुल कथा लिखबाक प्रसंग ओ चेखवसँ ठीक उनटा बात कहने छथि । ओ कहैत छथि, "A short story should be a finished work of art" (कथामे आदि, मध्य आ अन्त रहबाक चाही जाहिसँ कलाकृतिमे पूर्णताक बोध हो) । श्रीरामदेवजीक अनेक कथा मॉमक कथाकारितासँ मिलैत छनि, कम-सँ-कम **आजीमाँ** तँ अवश्य ।

संग्रहक दोसर कथा **शहीद चौक** अछि जाहि मध्य दूटा पात्र छैक बंगाली रिफ्यूजी चिन्तूदा आ शहीद चौक । कथामे चिन्तूदाक लहेरियासराय आगमन, सड़कक कातमे पत्नीक संग विश्राम, दूध बेचऽवला सब द्वारा चूड़ा-दहीसँ सत्कार, खोपड़ी बना कऽ निवास, झिल्ली-कचरी बेचब आ पश्चात् ओही ठाम 'स्वदेशी जलपान गृह' खोलि लेबाक विवरण छैक । चिन्तूदा अपन अतीतक कथाक प्रसङ्ग चुप्पे रहैत छथि, मुदा कखनहु काल काजी नजरुल इस्लामक क्रान्तिकारी गीत उच्च स्वरेँ गाबऽ लगैत छथि । घुरती साल, 15 अगस्त कऽ ओ चौकक बीचमे बाँस गाड़ि गान्धी, नेहरू आ सुभाषचन्द्रबोसक फोटो लटका दैत छथि आ ओकर नाम 'शहीद चौक' रखैत छथि । किछु दिन बाद जखन चिन्तूदा, अपनाकेँ आश्वस्त अनुभव करऽ लगैत छथि तखनहिँ आपात्‌कालक समयमे एक दिन मुनिसपल अधिकारी हुनक खोपड़ी आ जलपानगृह उजाड़ि दैत छनि । एकबेर फेर चिन्तूदा रिफ्यूजी भऽ कतऽ विलीन भऽ जाइत छथि से ककरहुँ पता नहि चलैत छैक । कथाक अन्तमे लेखकक व्यंग्यभावक प्रश्न छनि जे 'शहीद चौक' नामक पाछाँ तात्पर्य की ? एहि चौकपर चिन्तूदाक कोनो स्वजन वा बन्धु तँ नहि शहीद भेल छलनि ? निर्जीव खोपड़ी तँ शहीद नहि होइत छैक ? तखन 'शहीद चौक' कोना ? असलमे चिन्तूदा एहि चौकक नाम 'शहीद चौक' बंगालक क्रान्तिकारी सभक स्मृतिमे वा अपन ओहि स्वजन सभक स्मृतिमे रखने छलाह जकरा सबकेँ मुसलमान दंगाइ सब मारि देने छलनि । तकरो जाय दियौक, की, एकटा विपन्न आ असहाय शरणार्थी-दम्पतीक आवास आ जीविकाकेँ निर्ममतापूर्वक नष्ट कऽ देब ओहि व्यक्तिक जीवनेकेँ नष्ट कऽ, ओकर शहीद बना देब नहि भेलैक ?

एहि ठाम कथाकारक इंगिति शहादतक तात्विक अर्थ दिस छनि । ई, चिन्तूदाक शहादतक कथा अछि नहि कि शहीद चौक वा कामर्सियल चौकक । कथामे जँ अन्तिम तीन चारि पाँती नहि रहितैक तँ वहुलांशमे विवरणात्मक ई कथा सत्यनारायणक कथा भऽ कऽ रहि जैतैक ।

पाश्चात्य आलोचक लोकनि कहैत छथि आ हमरो लोकनि बूझैत छिऐक जे कोनो कथा लिखबाक पाछाँ एकटा अवाध आतुरता (compelling orge /motive) रहब आवश्यक छैक । Elizabeth Bowen नामक एकटा कथा लेखिका एकरा कथाक Necessariness कहलनि अछि । ओ कहैत छथि- The first necessity of a short story is its necessariness.

Scanned by CamScanner

सियावरमिश्र जमीन्दार छलाह । ओहि समयक सब जमीन्दार अंग्रेजक खैरखाह होइत छल । स्वतन्त्रताक आन्दोलन चलैत छलैक । अंग्रेज एस.पी. हिनको आन्दोलनकारी बूझि लठिया देलकनि । सियावरमिश्रक स्वाभिमान एहि रूपेँ आहत भेलनि जे ओ लहेरियासरायक एही टावर लग अंग्रेजसँ भीड़ि गेलाह । ई स्वतन्त्रता आन्दोलनक पीठिकामे रचल देशप्रेमक कथा अछि । जाहि स्थलपर सियावरमिश्र विद्रोहक झण्डा बुलन्द कयने रहथि, पछाति ओहि ठाम ई टावर बनलैक । ई ओना एकटा सोझ साझ घटना प्रधान कथा अछि मुदा एकर रोचकता एकर विवरणे धरि सीमित नहि छैक ।

संग्रहक चारिम कथा **परस्पर** 1998 केर अछि, छोट मुदा मनोग्राही । इहो कथा अपन टुरनीपर मानवीय स्नेह-संवेदनाक एकटा बहुमूल्य हीरा जड़ने अछि । एकटा वयसाहु दम्पती, बससँ बेटाक ओतऽ राँची जा रहल छथि । बूढ़ीकेँ बूढ़ाक चिन्ता आ बूढ़केँ बूढ़ीक । पारस्परिक चिन्ता ई जे 'हिनका' सर्दी ने लगनि । रस्ता भरि एक-दोसरकेँ साल ओढ़बैत अबैत छथि । बहुलांश विवरणात्मक रहनहुँ कथा मनकेँ स्नेहक भावसँ तुष्ट करैत छैक ।

आधुनिक कथाक स्वरूप नित-नूतन होइत गेलैक अछि । कथा, सोझ-साझ आख्यानसँ लऽकऽ **साँझक गाछ** सन गद्यालाप भऽ गेलैक अछि । कथामे कतहु वाचक स्वयं रहैत छैक तँ कतहुँ ओकर कैमरा (हम जे देखलियै से अहूँ देखू) कथाक विषय किछु भऽ सकैत छैक । कहि सकैत छी जे कथाक विषय अनन्त छैक- कूड़ेदानीसँ लऽ कऽ तारा धरि (from a dustbin to the stars) आ कथा कहबाक ढंग सेहो विविध । कथाक सफलताक कसौटी मात्र ओकर रोचकता आ ओकर पठनीयता (readability) छैक । जे कथा मानव मनकेँ भीतर धरि छूबय नहि से कथा कथा नहि । कथामे आब इहो आवश्यक नहि जे ओहिमे घटना वा दुर्घटना रहले ताकय । **परस्पर** मे कोनो घटना नहि, किछु विवरण मात्र छैक ।

मुदा, एहि संग्रहक सबसँ चममत्कारिक कथा हमरा **मकुआ छड़ी** लागल अछि । जीवनकालमे पत्नी अपन पतिसँ छड़ी छीनि लैत छथिन । पति कहैत छथिन जे– छड़ी रहैछ तँ सहारा रहैछ ।' एहिपर पत्नीक उत्तर होइत छनि जे– आब तँ हम अहाँक सहारा छी, तखन छड़ीक कोन काज ?' आ से कहि पत्नी सन्दूकमे छड़ीकेँ बन्द कऽ दैत छथिन । समय बीतैत छैक, धीयापूता बालिग होइत छनि आ बूढ़ी रोगग्रस्त भऽ मरि जाइत छथिन । बेटासब पिताकेँ श्मशान नहि जाय दैत छनि । प्रयत्नो करैत छथि तँ बोध होइत छनि जे रस्तामे कहूँ तलमला कऽ खसि ने पड़ी । छड़ीक स्मरण भऽ अबैत छनि आ बूढ़ा छड़ी तकबाक लेल सन्दूक खोलैत छथि । पुतोहु सब अनुमान करैत छथिन जे बूढ़ी गहना-गुड़िया आ कैंचाक कोनो मोटरी तँ ने नुका कऽ रखने छलीह ? तावत बूढ़ाकेँ बुढ़ारीक सहारा, अपन छड़ी भेटि जाइत छनि आ ओ श्मशान दिस थाहि-थाहि विदा भऽ जाइत छथि ।

कथामे एकटा चमत्कारिक क्लाइमेक्स छैक । करुणाक लेल मकुआ छड़ी छैक । वाचकक अपन 'कमेन्ट्री' कतहु नहि छैक । एहन वस्तुनिष्ठ आ भावप्रवण कथा एहि संग्रहमे कोनो आन नहि अछि ।

चिन्हार गाम : अनचिन्हार लोक, पूर्ण परिचित स्थिति आ चरित्रपर लिखल एकटा प्रभावशाली मनोग्राही कथा अछि । भैयनि दीदी, बीसो वर्षक बाद नैहर अबैत छथि तँ गाम वैह रहनहुँ लोक आ परिवेश अनचिन्हार बुझाइत छनि । भातिजक धीया-पूताक संग गाम बूलऽ जाइत छथि तँ कुभेलिया धोबिन मन पड़ि जाइत छनि आ ओ अपन किशोरावस्थाक स्मृतिलोकमे चल जाइत छथि । अपन संगी सभक संग बेँग कूटि कऽ आ ओकरा कोहामे राखि कऽ कोना कुभेलियाक आँगनमे फेँकि आयलि रहथिन आ कुभेलिया कोना विखिन-बिखिनक गारिये नहि पढ़ने रहनि आँगन आबि कऽ उलहनो दऽ गेल रहनि से मन पड़लनि । दुरागमनक समय जखन कतका घरमे अनमनायल बैसल रहथि, कुभेलिया आयलि रहैक आ दुनू गोटे कोना गर्दनि पकड़ि कऽ कानल रहथि सेहो भैयनि दीदीकेँ मन पड़लनि ।

हमरहु एकटा पीउसि एहिना काज-करतेबतामे दस वर्षपर गाम अबैत छलीह आ कोनो टेल्हक हाथ पकड़ि आँगने-आँगन बूलि अबैत छलीह ।

पूर्वदीप्तिक उपयोगवला ई कथा हमरा बड़ रोचक, प्रतीति आ प्रीतिपरक लागल अछि ।

Scanned by CamScanner

ढहैत पुरान घर सन कथा लिखबाकलेल एहि विषय कोटिक वस्तुक प्रचुर अनुभवक आवश्यकता छैक । एहन कथा वैह रचि सकत जकरा मठ, महन्थ, नव-पुरान कीर्त्तनक पद, ओकर गायन शैली आ संगीतसँ आत्मिक सम्बन्ध आ सम्पर्क रहल हो । एहि कथाक वर्णन-विवरणमे यथार्थक अनुकरण कलात्मक रूपेँ विन्यस्त छैक । जहिना बूढ़ भेलाक संग लोकक रुचि, प्रतिक्रिया आ आग्रह सेहो समय गुने ठमकि जाइत छैक तहिना ओ नव रुचिक प्रचलनकेँ अपन आचार-विचार ओ संस्कारपर प्रहार बूझऽ लगैत अछि । नव लोक बूढ़ भऽ जाइत छैक तहिना नव लोकक रुचिओ बदलैत छैक । एकरे कहैत छैक- generation gap अर्थात् नव आ पुरान पीढ़ीक बीचक अन्तर । पुरान पीढ़ीक लोककेँ अपन जुआनी कालक गीत, संगीत आ रागभास नीक लगैत छैक, लगनी, बटगवनी, पराती आ नचारीक रागभास नीक लगैत छैक मुदा नव लोककेँ फिल्मी गीत । कथा, मूलरूपमे विवरणात्मक रहितहु एहिमे गीत, संगीत आ एकटा मनोग्राही रूपक चल-चित्रात्मकता छैक । महनजीकेँ, जाहि प्रकारक कीर्त्तनक बोल आ लय-भाससँ रसोद्रेक होइत छलनि से, नवयुवक लोकनि द्वारा फिल्मी गीतक तर्जपर गाओल गीतसँ नहि होइत छनि । महनजीक मन जतऽ भगवत भक्तिसँ विह्वल होइत छलनि ओतहि आजुक युवक अपन मनकेँ भाँग-गाँजासँ आकुल-व्याकुल कऽ लैत अछि । तेँ महनजी उदास भऽ जाइत छथि । एहि कथाक संसार एकटा विरल आ विशिष्ट कोटिक अनुभवक संसार अछि, रोचक आ सर्वथा प्रभावपूर्ण ।

विद्यार्थी तेज अछि, भोँथ अछि वा भुसकौल अछि तकरा पाछाँ अनेक कारण भऽ सकैछ- शारीरिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, गलत संगति इत्यादि । ई अनुभव प्रत्येक शिक्षककेँ भेल होयतनि जे, उपर्युक्त कोनो कारणे, किछु विद्यार्थी स्कूल छोरुआ (school dropouts) भऽ जाइत अछि । एहिमे किछु गुण्डा, सीटी बॉस वा डौन (Don) बनि कऽ प्रचुर रूपेँ धनोपार्जन करबामे सेहो सक्षम भऽ जाइत अछि । एकटा एहने 'सिटी बॉस'केँ जीवनमे पछाति ग्लानि होइत छैक । शिक्षक सब डरेँ ओकर बेटाकेँ अहगर कऽ नम्बर दैत छैक । मुदा ओ बेटा, आगाँ जखन इन्जीनियर-डॉक्टर नहि बनि पबैत छैक तखन सिटी बॉस, प्रायश्चित्तमे स्कूलक ओहि शिक्षककेँ पुरस्कृत करैत अछि जे ओकर छोट बेटाक नम्बर ओकर डरेँ नहि बढ़बैत छैक । **ओकर सेहन्ता** कथाक यथार्थ आ वर्णन प्रतीतिपरक आ रोचक छैक ।

जेठाँस इतिवृत्तात्मक अछि । चारू भाइमे राम 'रामे' जकाँ, पिताक उपदेशकेँ आदेश मानि, लोकहितक लेल त्याग करैत छथि । अन्तमे उत्सुकता छैक जे राम की निर्णय लेताह आ जे निर्णय ओ लैत छथि से आजुक युगक लेल आदर्श छैक । एहन निर्णय साधारण कोटिक लोक नहि लैछ तेँ रामक निर्णय कने चौंकाबऽवला छैक । कथामे चौंकाबऽवला अन्तक प्रयत्न भेलैक अछि मुदा से कनियेँ-मनिएँ ।

पुत्रमोह कने पुरान विषयपर लिखल कथा छैक जाहिमे पूर्वक आचार-विचारवला गुणेश्वरकेँ पुत्र-मोहक कारणे मुर्गी अण्डा छूबऽ पड़ैत छनि । आजुक लोक मुर्गी अण्डाकेँ पौष्टिक आहार बूझैत अछि मुदा, पचास वर्ष पूर्व धर्मभीरु हिन्दू, मुर्गी अण्डाकेँ अवश्य अखाद्य बूझैत छल । एखनहुँ आचार-विचारवला पंडित लोकनि एकरा अखाद्य बुझितहिँ छथि ।

फड़िच्छ भऽ गेल छलै सर्वहारा वर्गक कथापात्रकेँ लऽ कऽ लिखल साँङ्गोपाङ्ग रूपक एकटा आख्यान अछि जाहिमे बियाहलि बेटी चनरमा एसगर असहाय आ रुग्ण बापक सेवा-सुस्रुषा करैत अछि आ से पतिक घरसँ चल आबि कऽ । बहुत अन्तरालक बाद जखन चनरमाक घरवलाक मिजाज शान्त होइत छैक आ ओकरा इहो स्मरण होइत छैक जे ससूरे ओकर 'ओस्तादो' छलैक तखन ओ अपन घरवाली चनरमा लग चल अबैत अछि । यैह छैक **फड़िच्छ भऽ गेल छलैक** हैप्पी एन्डिङ्गवला कथा जाहिमे पिताक प्रति चनरमाक दायित्वबोध भाव आ ओकर पतिक अहंकारक क्षय आ मनमे कृतज्ञताक मानवीय भावक उदय पाठकक ध्यान आकृष्ट करैत छैक ।

हलुमाना हौरन जन्मेसँ बौक एकटा एहन बालकक कथा अछि जे बस स्टैन्डपर छूटि जाइत छैक । बस स्टैन्डक एकटा पान-बीड़ीक कठघरावला ओकरा राखि लैत छैक । पछाति ओकरा माय-बापसँ कोना भेट होइत छैक तकरा मात्र दैवी घटना कहि सकैत छी ।

Scanned by CamScanner

कथामे अलौकिकता आ आविष्कारक प्रधानता छैक । एहि दुनू तत्त्वसँ रचल कथा प्रतीतिपरक नहि कहल जाइछ ।

संग्रहमे तीनटा कथा एहनो अछि जाहि मध्य पात्र पशु छैक- **कहाँ छें रे नुनुआँ** पढ़ि हमरा अपन जीवनक एकटा अनुभव मन पड़ि आयल । खरहा पोसलहुँ जकरा चारि-पाँचटा बच्चा भेलैक । ओहि शावक सबमेसँ किछु बड़ दुर्बल रहैक । मायक दूधो ने धयल होइक । हमर पत्नी दूटाकेँ ड्रॉपरसँ दूध पिया कऽ पोसि देलथिन आ ओ दुनू खरहाक बच्चा कूदऽ-फानऽ लगलैक । एहनेमे एक दिन एकटा बिज्जी, ओहि दुनू बच्चाकेँ मारि देलकैक । हमर पत्नीक आँखि नोरा गेल रहनि ।

एहि कथामे मातृविहीन एकटा पठरूकेँ एकटा स्त्रीगण अपन दूध पिया कऽ पोसैत छैक । मात्सर्यक भावकेँ आ सेहो एकटा बकरीक बच्चाक लेल, जाहि बिन्दु धरि घीचि कऽ लऽ गेल गेलैक अछि से सम्भव रहनहुँ बड़ प्रतीतिपरक नहि बुझाइत छैक । विरल सम्भावनावला घटनाकेँ केन्द्रमे राखि कथा लिखब, नट सब जकाँ आकाशमे डोरी बान्हि ओहिपर चलब जकाँ भेल । कथा जँ स्पष्टतया Fable (मित्रलाभ कथा)रहितैक तँ विश्वसनीयताकेँ कोनो खतरा नहि छलैक । एतऽ कथाकेँ बड़ यत्ने 'प्राणी मित्र'सँ जोड़ल गेलैक अछि आ ओहि बकरीक बच्चाकेँ मारि आ ओकरा ओही सरकारी मुलाजिम सबकेँ खुआय जे बकरीकेँ दूध पिआबऽवालीकेँ प्राणी मित्र घोषित करबाकलेल आयल छलैक, कथाकेँ विडम्बनापूर्ण (ironically) बनबैत छैक । अन्यथा कथामे रोचकताक सब गुण छैक ।

एकटा निमूधनक आत्मकथाकेँ हम एकटा सफलकथा मानैत छी । एहिमे यथार्थक बहाना छैके नहि । ई एकटा बड़दक मनोभावक काल्पनिक कथा अछि आ से बड़दक मुहेँ स्वयं । मानि लिअऽ जे अहाँ बड़द छी आ, 'निमूधन नहि छी । मानि लिअऽ जे अहाँकेँ बाक अछि । बरद जे तखन बाजत आ अपन मनोभाव प्रकट करत से एतऽ मार्मिकतासँ वर्णित छैक । एकटा बड़द बेचि देल जाइत छैक मुदा, ओ अपन बथान आ पूर्वक मालिकलेल स्नेहसँ ततेक ने व्याकुल भऽ जाइत अछि जे रस्सी तोड़ा कऽ पुनः अपन पुरना बथानपर घूमि अबैत छैक । अनेक जानवरमे अपन पूर्वक ठाम आ मालिककलेल अवाध स्नेहक भाव देखल गेलैक अछि, कुकुरमे सबसँ बेसी । स्वानक स्वामीभक्तिक भावक अनुभव तँ हमरा अपनहुँ अछि ।

आइ-कालि्ह विद्यार्थी सबसँ प्रश्न पूछल जाइत छैक "कल्पना करो कि तुम मेलामे माँ-बापसे बिछुड़ गये हो". .... इत्यादि ।

ई कथा हमरा बड़ मार्मिक लागल ।

उपकारक बदला कथाक मुख्य पात्र एकटा बानर अछि । एकटा हथपंखा बेचऽवला, ओहि बानरकेँ प्रतिदिन किछु ने किछु खाय लेल दैत छैक । मुदा एक दिन जखन ओहि पंखावलाक पंखा नहि बिकाइत छैक, ओ भूखले रहि जाइत अछि तखन ओ बानर पंखावलाक मनोभाव बुझैत एकटा पाकल अड़रनेवा तोड़ि कऽ खयबा लेल आनि दैत छैक । पशुक भीतर उत्पन्न मानवीय भाव ओ संवेदनाकेँ व्यक्त करैत ई कथा रोचक होयबाक संग-संग उपदेशमूलक अछि ।

गुलंजर दृष्टान्तमूलक- पैरेबुल जकाँ अछि जाहिमे विश्वसनीयताक कोनो आग्रह नहि छैक । बच्चा-बुदरुककेँ ई कथा अवश्य रोचक लगतैक ।

आइ धरि हमरा प्राच्य वा पाश्चात्य एहन कोनो आलोचक-समीक्षक नहि भेटलाह अछि जे कथाक स्वरूपकेँ सम्पूर्ण रूपेँ आ सन्तोषप्रद ढंगसँ परिभाषित कयने होथि । एहू ठाम 'मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिना, तुण्डे-तुण्डे सरस्वती' वला बात छैक । कथा, 'साँझक गाछ' सन गद्यक काव्य भऽ सकैछ, 'मुट्ठीमे बन्द' आ 'गुलंजर' सन रोचक चाणक्य कथा भऽ सकैछ, 'उपकारक बदला', 'कहाँ छें रे नुनुआँ' सन प्राणी मित्रवला फेवुल (Fable) भऽ सकैछ वा बड़दक आत्मकथा भऽ सकैछ । जहिना पहिनहि कहि चुकल छी कथाक विषय किछु भऽ सकैछ, कथामे दूटा गुण रहब

Scanned by CamScanner

अत्यावश्यक छैक, 'रोचकता' आ 'प्रतीतिपरकता' । जँ कथामे से नहि अछि तँ ओ किछु 'आर' वस्तु अछि जेना भूत-प्रेतवला कथा, दन्तकथा वा 'जादूइ यथार्थ' (Magic realism) वला कथा । आजीमाँ शीर्षकवला संग्रहक एहि अन्तिम ग्रूपक कथाक प्रचलन, आधुनिक काल, विशेष कऽ पाश्चात्य देशक साहित्यमे जोर पकड़ि रहलैक अछि ।

एहि प्रकारक कथाकेँ जादूइ यथार्थक कथा कहल गेलैक अछि । एकर बड़का उदाहरण विश्व ख्यातिप्राप्त सलमान रुशदीक उपन्यास सब अछि । नोवेल पुरस्कार प्राप्त जर्मनीक उपन्यासकार गुंथर ग्रास छथि ।

श्रीरामदेवजीक एहि कथा संग्रहमे विषयक विविधता अछि जे रोमांचित करैत अछि, पाठकक मर्मकेँ छुबैत अछि । हिनक कथाक दृष्टि स्थूलसँ लऽ कऽ सूक्ष्मतम विषय धरि दौड़लनि अछि, एहिमे कतहु उपन्यास जकाँ जीवनक व्यापकता भेटैत अछि तँ कतहु जीवनक किछु पल ओ क्षण मात्रक कलात्मक चित्रण भेल अछि जे मानस पटलपर जा कऽ अंकित भऽ जाइत अछि ।

श्रीरामदेवजीक कथा हमरा कोनो आयातित रूप-रेखा (model)क आधारपर रचित नहि लगैत अछि । कथा सबमे गाम घरक परिवेशमे अहाँकेँ निम्न, मध्य वर्ग आ सर्वहारावर्गक पात्र भेटत । नगरीय संस्कृति आ परिवेशसँ ई पात्र आ कथा-स्थिति कम चुनैत छथि । सर्वहारा वर्गक पात्र आ परिवेशसँ हिनका ओहने लगाव छनि जेना ललितकेँ रहनि । हिनक कथा- विषय आ वर्णनक दृष्टिसँ सर्वथा सुरुचिपूर्ण अछि । संग्रहमे एहन कोनो कथा नहि जकरा पढ़ि मनमे जुगुप्साक भाव उत्पन्न हो ।

हिनक कथाक भाषा, पात्र आ परिवेशक उपर्युक्त अछि । जाहिमे कतहुसँ 'साहित्यिकता'क गन्ध नहि छैक । भाषा एतेक सहज लगैत छैक जेना केओ कथा सुना रहल हो, लिखल कथा नहि पढ़ि रहल होइक । एहि प्रकारक कथाकेँ अंग्रेजीमे, "strong human yarn of the old faishoned type" कहल गेल छैक ।



Scanned by CamScanner

प्रयोगधर्मी उपन्यासकार श्रीरामदेवझा

श्रीविनोदकुमार

I

श्री रामदेवझाकेँ नामसँ हम कहियासँ जनैत छियनि से हमरा अपनो मोन नहि अछि । जहिया हिनकर कथासंग्रह एक खीरा : **तीन फाँक** ओ **मनुक सन्तान** पढ़ने रहियनि तँ एहि दुनू संग्रहक कतोक कथाक परिवेश ओ पात्र सभ हमरा जेना चिन्हार लागल रहय । लागल छल जेना ई आनन्दपुर परिसरसँ सम्बद्ध होअय । तहिये हमरा कथाकारक परिचय जनबाक जिज्ञासा भेल आ जखन हिनक परिचय जनलियनि तँ हमरा ई जानि सुखद आश्चर्य भेल जे हिनकर मातृक एही आनन्दपुर परिसरक सहोड़ा गाम छनि । हमरा इलाकाक प्रख्यात रंगकर्मी पं. रामजतनमिश्रक ई भागिन छथिन आ एहूसँ बढ़ि कऽ हमरा संग निकटता ई जे हमर गाम माखनपुरमे हिनक मौसी बसैत छथिन, हमर ग्रामीण रामकुमारचौधरीक ई मसियौत भाय छथिन । डा. रामदेवझाक प्रत्यक्ष दर्शन ओ हिनकासँ परिचय प्राय: 1972-73 मे हिनक ग्रामीण जनसंघी नेता स्व. रमाकान्तझाक लहेरियासराय चट्टी स्थित लॉजपर भेल । हिनक कथाक निम्नवर्गीय पात्र ओ परिवेश देखि हम जे हिनक स्वरूपक कल्पना कयने रही तदनुरूपेँ देखलियनि- धोती-कुर्त्ताक परिधान । एकर बादसँ निरन्तर दरभंगाक सभा-सम्मेलनमे हिनक दर्शन हमरा होइत रहल । मिथिला मिहिरमे बेसी काल हिनक रचना पढ़बाक अवसर भेटल करय । 2005 मे जखन हम मैथिली पत्रकारिताक क्षेत्रमे विद्यापति टाइम्सक संग प्रवेश कयलहुँ तकर बादसँ तँ हिनकर संग हमर घनिष्ठता बढ़िते चल गेल । प्रतिक्षण हिनक आशीर्वाद हमरा भेटैत रहल अछि ।

एही क्रममे हमरा जखन रामदेवबाबूसँ उपहारस्वरूप तीन गोट पोथी **अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग** ओ **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** प्राप्त भेल तँ हम चौंकि उठलहुँ । अपन अतीतक ओ धूमिल चित्र हमरा आँखिक आगाँ साकार भऽ गेल जे साठिक दसकमे जहिया हम इंटरक छात्र रही तहिया मिथिला मिहिरमे ई तीनू स्तम्भ रुचिपूर्वक पढ़ैत रही । तहिया हमरा लोकनि ई थोड़े बुझियैक जे एकर लेखक यैह छथि । बस एतबे बुझियैक जे गामघरक सखी-बहिनपा सब जे अपनामे चिट्ठी पत्री करैत छैक तकरे पत्रिकामे छापि देल जाइत छैक । मुदा ई चिट्ठी सब ततेक रोचक रहैत छल जे पत्रिकाक अगिला अंकक बाट हमरा लोकनि तहिना ताकी जेना आइ-काल्हि लोक टेलीविजन सीरियल लय उत्सुक भेल रहैत अछि जे आब आगू की होयतैक ? जखन हम बुझलहुँ जे ई तीनू हिनके लिखल थिकनि तँ हमरा घोर आश्चर्य भेल जे एहेन गम्भीर स्त्रीगणाही गप्प सब ओकरहि भाषामे हिनका कोना लिखल भेलनि ? ई काज तँ कोनो कलमक जादूगरेसँ सम्भव भऽ सकैत अछि । रामदेवबाबूक ई तीनू पोथी पढ़ि गेलहुँ । रोचक एते जे एक बेरमे सन्तोष नहि भेल तँ कय बेर पढ़लहुँ । तकर बादसँ हमर अपन परिवारक लोक ओ सऽर-कुटुम्ब पर्यन्त एकरा आनन्दपूर्वक पढ़ि रहल छथि । मैथिलीमे एखन धरि हमरा एहन दुर्लभ प्रयोग देखबामे नहि आयल छल । पत्रक माध्यमसँ एतेक रासे कथा-उपकथा कहैत स्त्रीगणक मानसिकता ओ ओकर अन्तर्मनक गप्पकेँ एतेक सूक्ष्मताक संग जेना एहि तीनू पोथीमे अभिव्यक्त कयल गेल अछि ताहि कृतिकेँ मैथिलीक विद्वान ओ समालोचक लोकनि जे कहथुन एकटा पाठकक रूपमे तँ हम एकरा प्रयोगधर्मी उपन्यासे कहबैक, आ अपन एही मान्यताक अनुरूप हम एहि तीनू उपन्यासक विश्लेषण करऽ चाहब । संगहि हिनक चारिम उपन्यास इजोतीरानी सेहो अतिविशिष्ट अछि जाहिपर संक्षेपमे कहब ।

II

श्रीरामदेवझाक **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** मैथिली जगतमे पूर्वहुमे अपन प्रयोगधर्मिताक कारणे चर्चामे रहल अछि जहिया 1960-61 इ.मे मिथिला मिहिरमे ई धारावाहिक प्रकाशित भेल छल ।

Scanned by CamScanner

मिथिलामे दू टा बालिका द्वारा अपन मित्रताकेँ एकटा विशेष नाम दऽ कऽ जीवनपर्यन्त ओकर निर्वाह करबाक प्रचलन रहल अछि । एहने दुइटा सखी अपन मित्रताकेँ एकटा मॉडर्न नाम अंगरेजीफूल देने अछि । निम्न-मध्यमवर्गीय परिवारक दुनू कन्या विवाहक बाद फराक-फराक रहबा लय विवश होइत अछि । एकटा सखीक घरवला कमौआ छथिन तेँ ओ अपन पतिक संग पटना रहऽ चल जाइत अछि तँ दोसर सखीक वर बेरोजगार छथिन ओ अपन सासुरमे रहैत अछि । बचपनसँ एक संग रहनिहारि, एक-दोसराक सुख-दुखमे संग देनिहार, दुनू सखीकेँ जखन विलग होअऽ पड़ैत छैक तखन दुनू परस्पर पत्राचारक माध्यमसँ अपनामे बतियाइत अछि आ ताही लागल कथानकक ओ घटनाक्रमक क्रमशः विकास होइत चल गेलैक अछि । उपन्यासक मान्य परिभाषा ओ लक्षणक विपरीत एहिमे एकटा नव ढंगे कथाक उपस्थापन कयल गेल अछि जे अनेक खंडचित्र सभ उपस्थित करैत अछि जकरा एक सूत्रमे गाँथि देने अवश्ये एकटा भिन्न तरहक औपन्यासिक आनन्द पाठककेँ प्राप्त होइत छैक ।

दू सखीक पत्राचारक माध्यमसँ एहिमे तत्कालीन मिथिलाक सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक, परिवेश तँ अभरिते अछि, संगहि नारीक विविध रूपक दर्शन सेहो होइत अछि । एकटा बेटी, एकटा सखी, एकटा पत्नी ओ एकटा मायक रूपमे नारीकेँ कोना क्रमशः जीबऽ पड़ैत छैक तकर सजीव चित्रण एहि पोथीमे भेल अछि । नारी अन्तर्मनक सूक्ष्म अभिव्यक्तिक दृष्टिसँ अंगरेजीफूलक चिट्ठीक तुलना बंगलाक शरतचन्द्रक कृति सबसँ कयल जा सकैत अछि । शरते जकाँ एहू पोथीक रचनाकार नारीक अन्तर्मनमे पैसि कऽ जेना ओकरा परत-दर-परत उघाड़ने चलि गेलाह अछि से प्रायः मैथिलीमे एखन धरि अलभ्ये रहल अछि । अपितु किछु अर्थमे एकर रचनाकार श्रीरामदेवझा शरतचन्द्रसँ किछु डेग आगाँ बढ़ल बुझाइत छथि । शरतकेँ अपन उपन्यास ओ कथामे अपनहुँ उपस्थित रहबाक अवसर रहलनि अछि, ओ द्रष्टा छथि । मुदा रामदेवझाकेँ से अवसर नहि भेटलनि अछि । पत्रात्मक शैली रहबाक कारणे हुनका संग विवशता रहलनि जे जे किछु कहबाक छलनि से पत्र लेखिकाक मुँहेसँ कहबाओल जा सकैत छल । द्रष्टा नहि अपितु भोक्ता बनि कऽ नारी अन्तर्मनकेँ कागजपर साकार करबाक चैलेंज छलनि । एहि चैलेंजमे रचनाकार सय नहि दू सय प्रतिशत खड़ा उतरलाह अछि । एक नहि दू-दू टा दू परिवेशक नारी पात्रकेँ जेना अपनामे अवतरण कऽ रचनाकार स्वयंकेँ अंगरेजीफूल बूझि एकर लेखन कयलमि अछि से अद्वितीय अछि । हृदयक स्तरसँ कयल गेल ई लेखन पाठककेँ वास्तविके पत्राचारक आभास करबैत छैक । पत्रक प्रस्तुतिमे नारी वर्गक बोलचालक भाषा, ग्रामीण शब्दावली ओ मोहाबराक प्रचुर प्रयोगक कारणे वस्तुतः एहि कृतिकेँ समग्रमे पुरुष नजरियासँ कयल गेल 'नारी विमर्श' सेहो कहल जा सकैछ । वस्तुतः भारतीय भाषामे जे नारी विमर्श बीसम शताब्दीक अन्तमे चर्चामे आयल मैथिलीमे ओ एहिसँ पूर्वे प्रारम्भ भऽ चुकल छल जकर प्रत्यक्ष प्रमाण अछि ई आलोच्य कृति ।

बेरोजगारक पत्नी बनि जीवि रहल गामवाली अंगरेजीफूलकेँ कोना उलहन ओ उपहास सहऽ पड़ैत छैक तँ कमौआक पत्नी बनि पटनामे रहितो पटनावाली सखी प्रसन्न नहि अछि । ओकरा पटनाक शहरी संस्कृति, मौगी सभक उच्छृंखलता बरदास्त नहि होइत रहैत छैक । एही क्रममे ओकरा अपन पतिक चरित्रपर सेहो सन्देह होअऽ लगैत छैक । सन्देहक ई भूत ओकर दाम्पत्य जीवनकेँ कष्टमय बना दैत छैक । मुदा जखन ओकरा वास्तविकताक परिचय भेटैत छैक तँ ओकरा स्वयंपर ग्लानिओ होइत छैक । पटनावाली सखीक मोनक अन्तर्द्वन्द्वकेँ चरमपर पहुँचबैत लेखक एकटा रहस्योद्घाटन कऽ बैसैत छथि । एहि बहाने ओहि समयमे उत्साहपूर्वक मनाओल जाइत विद्यापति स्मृति पर्व ओ ओहिमे पटना निवासी मैथिलक उत्साहपूर्ण सहभागिताक चित्रण कयलनि अछि । पटनावाली सखी माय बनैत अछि तँ ओकरा एकटा नव अनुभव होइत छैक । एसगरुआ बनलि ओ अपन नवजात शिशुक पालन-पोषण करैत अछि । एहना समयमे ओकरा लोकक बेगरताक अनुभव होइत छैक । एमहर गामवाली सखी सन्तान सुखसँ वंचित रहैत अछि तेँ समाजमे चर्चाक विषय बनल रहैछ । ओकरा बाँझिनक उपाधिसँ लऽ कऽ ओकर पतिक दोसर विवाहक चर्च धरि होअऽ लगैत छैक । मुदा अन्ततः भगवान ओकरो मनोरथ पूर करैत छथिन । ओहो गर्भवती होइछ । वस्तुतः एहि कृतिकेँ समग्र रूपमे चारि दशक बाद पढ़लाक पश्चात् लगैछ जेना अतीतक दर्शन भऽ रहल हो । ओहि समयमे पटना अवश्ये दिल्ली दूर

Scanned by CamScanner

छल । तत्कालीन मिथिलाक परिवेश, रहन-सहन, खान-पान, आचार-व्यवहारक दर्पण सन प्रतीत होइछ अंगरेजीफूलक चिट्ठी ।

III

मैथिलीक आधुनिक लेखनपर तथाकथित किछु प्रगतिशील समालोचक लोकनिक आरोप रहलनि अछि जे समकालीन लेखनमे मिथिलाक वृहत् समाजक चित्र नहि आयल अछि । समाजक एकटा वर्ग विशेष अर्थात ब्राह्मण वर्गहिक चित्र साहित्यमे उरेहल जाइत रहल अछि । किछु सीमा धरि आलोचक लोकनिक ई आरोप सत्यो छनि । मुदा इहो सत्य अछि जे जाहि साहित्यकेँ सवर्णवादी कहल जा रहल अछि सेहो साहित्य मिथिलाक सम्पूर्ण सवर्ण समाजक चित्र नहि थिक । ओ थिक मिथिलाक तथाकथित पंचकोसीक सवर्ण लोकनिक चित्र । कुलीनता ओ जातीय श्रेष्ठताक अहंकारसँ मातल आँगुरपर गनल जायबला किछु गामक संस्कृति ओ संस्कारकेँ सम्पूर्ण मिथिलाक सवर्णक संस्कार मानि लेब कथमपि उचित नहि होयत । एहि अर्थमे पंचकोसीकेँ ध्यानमे राखि कऽ रचल गेल साहित्यकेँ मैथिलीक आंचलिक साहित्य कहल जा सकैछ । बहुत दिन धरि मैथिली साहित्यमे पंचकोसीक लोक सभक वर्चस्व बनल रहलनि जे पुबारि पार ओ पछबारि पारक युद्धमे लागल रहलाह । मिथिलाक अन्यान्य अंचलक जीवन ओ संस्कृतिक चित्र साहित्यमे चित्रित होयबासँ वंचित रहल ।

मिथिलाक एकटा एहने अंचल किंवा परिसर अछि दरभंगा जिला मुख्यालय लहेरियासरायक दक्षिणी भूभाग । कमला-करेह ओ बागमती नदीक मध्य अवस्थित ई वैह भूभाग थिक जतऽ प्राचीन नगरी देकुली-गजरथपुर अवस्थित अछि, जतऽ कहियो महाकवि विद्यापति कोमलकान्त पदावलीक रचना कयने छलह । कमला-बागमती-कोसीक दृष्टिमे अवश्ये ई अंचल **'छोटहा'** किंवा 'दछिनाहा' होऔ, मुदा ई अंचल मिथिलाक उत्तर ओ दक्षिणकेँ जोड़ैत अछि । एहि अंचलक रहन-सहन, खान-पान, चालि-चलन, वेश-भूषा, विधि-व्यवहार, रीति-रेवाज, गीत-नाद आदिकेँ सूक्ष्मताक संग चित्रित करैत अछि विशिष्ट प्रयोगधर्मी उपन्यास **बहिनाक विरोग** । 1961-62 क अवधिमे मिथिला मिहिरमे धारावाहिक रूपसँ प्रकाशित इहो उपन्यास पत्रात्मक शैलीमे रचित अछि । लेखनक चारि दशकक बाद पुस्तकाकार प्रकाशित भेल ई उपन्यास एतेक रोचक अछि जे पाठक जँ एक बेर हाथमे लेथि तँ बिना समाप्त कयने छोड़ल नहि जैतनि । **बहिनाक विरोग** सेहो पत्रात्मके अछि, मुदा अंगरेजीफूलक चिट्ठीक तुलनामे एहिमे तात्विक अन्तर छैक । लेखक एकटा नव टेकनिकक संग एकरा प्रस्तुत कयलनि अछि । एहि उपन्यासक परिवेश पूर्णतया ग्रामीण अछि । कमला-बागमती-करेहक मध्य अवस्थित एहि अंचलक अपन विशिष्ट संस्कृतिक चित्रण भेल अछि । सेहो संस्कृति एहि अंचलक 'अन्दर हवेली'क थिक जाहिसँ एहि अंचलक सामाजिक ओ पारिवारिक जीवन शैली ओ व्यवहारकेँ निकटसँ बुझबा-गमबाक अवसर भेटैत अछि ।

दूटा नवविवाहिता सखी केँ अपनामे **बहिना** लागल छैक । दुनू परस्पर एक दोसरकेँ एही नामसँ संबोधित करैत अछि । एकटा बहिना सासुरसँ बसि कऽ आयल अछि तँ दोसर बहिनाक दुरागमन होइत छैक । नव स्थानक नव अनुभव सँ संबलित, अपन मोनक गप्प कहबा लय बेकल दुरगमनिया बहिना सासुरसँ अपन नैहरवाली बहिनाकेँ पत्र लिखैत अछि । एहि पत्रमे ओ अपन दुरागमनक सम्पूर्ण विधि-व्यवहार, अरिपन-कोबर, हँसी-चौल, राग-अभिरोष, नव परिवेशमे स्वयंकेँ एडजस्ट करबामे होइत कठिनता ओ अन्ततः कतोक समस्याक सम्बन्धमे अपना अनुभव सम्पन्न बहिनासँ परामर्शक अपेक्षा करैत सूक्ष्मताक संग रोचक वर्णन सब करैत अछि । दुरगमनिया बहिना लगातार अपन सासुरसँ पन्द्रहटा पत्र लिखैत अछि । मुदा नैहरवाली बहिना एकोटाक उत्तर नहि दैत छैक । पाठकक मोनमे जिज्ञासा उठैत छैक जे आखिर नैहरवाली बहिना एतेक रासे मार्मिक पत्रमेसँ एकोटाक उत्तर किएक ने दैत छैक ? सत्ते ओ गौरवाहि तँ ने भऽ गेलि अछि ? ई रहस्य आगाँ जा कऽ उद्घाटित होइत छैक जे ओ सबटा पत्र नैहरवाली बहिनाक बिसरभोर भाउज अपन ओछाओनक तरमे रखने चल गेल छलैक । वस्तुतः एहि उपन्यासमे एहि तरहक एकटा स्थिति ठाढ़ कऽ कऽ उपन्यासकार

Scanned by CamScanner

बिना कोनो व्यतिक्रमकेँ क्रमबद्धतासँ कमला-बागमती अंचलक दुरगमनियाँ विधिक वर्णन सम्पन्न कऽ देने छथि । एतेक धरिकेँ एहि उपन्यासक मध्यान्तर कहल जा सकैत अछि । मध्यान्तरक बाद कने-मने व्यतिक्रमक संग पुनः दुनू बहिनाक बीच पत्राचारक लड़ी प्रारम्भ होइत छैक तँ एहि संगे एकटा मोड़क संग कथाक अग्रिम विकास सेहो होइत छैक । सासुरवाली बहिना आब कोबरसँ निकलि कऽ दाम्पत्य जीवनमे प्रवेश करैत अछि । सासुक स्नेह, ननदिक आह्लाद ओ अड़ोसिन-पड़ोसिनक मीठ-मधुर व्यंग्य-उपालम्भक बीच रहितो सासुरवाली बहिनाकेँ निरन्तर अपन नैहरक सुरता अबैत रहैत छैक तँ नैहरवाली बहिना अपन पत्रमे नैहरक सब कुशलक्षेमक संग-संग बोल-भरोस ओ सासुरमे रहबाक व्यवहार-आचार सिखबैत रहैत छैक । मुदा एही बीचमे सासुरवाली बहिनाक पतिकेँ नहि जानि की होइत छनि जे ओ अपन पत्नीसँ विरुझि जाइत छथि । केओ कतबो अल्लो-मल्लो करओ जँ नारीक पतिये रूसि रहय, टोका-चाली पर्यन्त बंद कऽ देअय तँ ओकर मनोदशा की होयतैक से स्वतः बूझल जा सकैछ । पाठकमे उत्सुकता उत्पन्न होइत छैक जे आखिर दुरगमनियाँ बहिनाक वर एना किए रूसि रहलथिन, बहिनाक जेठ ननदि उग्रतारादाइक मोनमे कोन एहन व्यथा छनि जे ओ भितरे-भितर घुलैत छथि, मुदा ककरो लग व्यक्त नहि करैत छथि ? छोटि ननदि उमादाइक विवाहक की होइत छनि ? नैहरक नवविवाहिता सखी प्रीतमक दाम्पत्यक गाड़ी कोन दिशामे घुमैत छनि ? इत्यादि अनेकानेक शाखा-प्रशाखा एहि उपन्यासमे बहराइत चल गेलैक अछि । एहि सब रहस्यक तट धरि पहुचबालेल पाठक अधीर होइत रहैत अछि । मुदा मिथिला मिहिर एकर प्रकाशन जेँ बीचमे रोकि देलक तेँ ई उपन्यासो एतहि समाप्त भऽ जाइत अछि । पाठकक मोन लुलुआयले रहि जाइत छैक । प्रायः यैह लुलुअइनी एहि उपन्यासक चरमोत्कर्ष किंवा सफलता थिक ।

एहि उपन्यासक शिल्प पक्ष जेना नवीन ओ स्वयंमे मौलिक अछि, तहिना एकर भाषा पक्ष सेहो ततबे विलक्षण अछि । एहिमे पत्राचारक स्वाभाविकता तँ अछिहे ताहिपरसँ एकटा अंचल विशेषक नारी भाषा, विशिष्ट शब्दावली, लोकोक्ति ओ वाग्धाराक प्रयोग मैथिली उपन्यासकेँ एकटा बेछप परिचिति प्रदान करैत अछि । सूत्र रूपमे जँ कहल जाय तँ बहिनाक विरोग मिथिलाक आंचलिक संस्कृतिकेँ निरूपित करऽबला एकटा तेहन विशिष्ट अलबम थिक जकरा पढ़बाक ओ सहेजि कऽ रखबाक सेहन्ता कोनो सजग पाठककेँ होयतैक ।

IV

अंगरेजीफूलक चिट्ठी ओ बहिनाक विरोगक नायिका लोकनि साक्षरा छथि । हुनक परिवेश पूरा ग्रामीण छनि । मुदा **रामजोड़ी कागतक पाँखिपरक** नायिका ओ पात्री लोकनि शिक्षिता छथि आ हुनका लोकनिक परिवेश सेहो अर्द्धशहरी अथवा कस्बाइ छनि । एकर अतिरिक्तो अवस्थाक अन्तर छनि । अंगरेजीफूल लोकनि विवाहिता युवती आ बहिना नवविवाहिता नवयुवती । जाहि पुरुषक संगे हिनका लोकनिक भाग्य जुड़बाक छलनि से जुड़ि गेलनि । मुदा रामजोड़ीक दुनू मुख्य नायिका रेवा आ सोना तथा सहनायिका शारदा आ परमीला चारू इसकुलिया किशोरी अछि । मिथिलाक सामाजिक व्यवस्थाक अनुरूप चारू बियाहऽ जोगरक भऽ गेल अछि, तेँ स्वाभाविक रूपसँ चारू अपन भावी जीवनक सपना देखैत अछि । स्कूली शिक्षा ओकरा सभमे एतेक बोल्डनेस तँ देबे कयलकैक अछि जे ओ सब अपनामे अपन विवाहक सम्बन्धमे निःसंकोच गप्प करैत अछि, सूतल-जागल अपन भावी पतिक स्वरूपक कल्पना करैत अछि, ताहूसँ कने आगू बढ़ि कऽ ओकरा सबमे प्रेमक अदृश्य बिजलौका सेहो छिटकऽ लगैत छैक ।

ओना रामजोड़ी कागतक पाँखिपरक परिस्थिति सेहो कने-मने अंगरेजीफूलक समान छैक । रेवा आ सोनाक बीच रामजोड़ी लागल रहैत छैक । रेवा आ सोनाक दूटा सखी आरो छैक शारदा आ परमीला । चारू एक संग अपन अर्द्धशहरी गामक हाइ स्कूलमे पढ़ैत अछि । मुदा सोनाकेँ अपन पिताक संगे पटना चल जाय पड़ैत छैक आ यैह विछोह सोना आ रेवाक बीच पत्राचारकेँ जन्म दैत अछि । दुनू सखी पत्रक माध्यमे अपन व्यथा-कथाक आदान-प्रदान करैत अछि । सोना अपन पत्रमे शारदा आ परमीलाक हालचाल पुछैत अछि, अड़ोस-पड़ोसक कुशल-समाचार जनबाक व्यग्रता देखबैत अछि । मोखतार साहेबक बेटी परमीला मुँहफट अछि तँ शारदा संकोची अछि । शारदा सोनासँ कसीदाक डिजाइन उतारऽ लय रुमाल लेने छलि जे ओकरासँ ओकर भाय लऽ लेलथिन । शारदाक भाय सदिखन सोनाक हालचाल पुछैत

Scanned by CamScanner

रहैत छथिन । एहिसँ सोनाक मोनमे हुनका प्रति आकर्षण उपजैत छैक । मुदा बादमे स्थिति बदलि जाइत छैक । रेवाक प्रति शारदाक भायसँ कथा लागऽ लगैत छैक । एहि कारणे रेवाकेँ स्कूल जयबामे असौकर्य होअऽ लगैत छैक । एक दिन एहन होइत छैक जे शारदा स्वयं अपना भायक संग रेवा ओतऽ पहुँचि जाइत छैक । रेवाक हेतु ई बड़ विचित्र स्थिति उत्पन्न भऽ जाइत छैक । मुदा परिस्थिति फेर बदलि जाइत छैक । बादमे शारदाक पिता अपन बेटाक विवाहक प्रसंग फेका-फेकीअलिवला गप्प करऽ लगैत छथिन । रेवा अवसादग्रस्त भऽ जाइत अछि । अपन बापकेँ विवाहक चिन्तासँ त्रस्त देखि ओ अपरतिभ बनल रहैत अछि । एमहर सोनाक मोनमे शारदाक भायक प्रति जे अव्यक्त प्रेम जागल छलैक तकरा ओ ओतहि दबा दैत अछि । ओहो अपन भावी जीवनकेँ लऽ कऽ सशंकित रहैत अछि । पटनामे तँ ओकर माय बाप दिन-राति ओकर विवाहक चिन्तासँ झखैत रहैत छथिन । बेटावलाक छिड़ियैनी आ बड़ीटा मुँह हुनका लोकनिक आँखिक निन्नकेँ हरने रहैत छनि । सोना यैह सब देखि-देखि झूर-झमान होइत रहैत अछि । परमीलोक एहने गति रहैत छैक, मुदा ओ सोना आ रेवा जकाँ अपन सम्बन्धमे एतेक नहि सोचैत अछि, ओकर स्थिति तेहने छैक जे-जे हेतैक से देखल जेतैक ।

पटनाक शहरी वातावरणकेँ पचा नहि पबैत सोनाकेँ ओतऽ सभ किछु अनभोआर लगैत छैक । गामक गाछी-बिरछी, पोखरि-झाँखड़ि, नाटक-तमासा, पाबनि-तिहार ओकरा सब किछु मोन पड़ैत छैक । सोनाक माय आ भाय पटनिआँ रंगमे रङि जाइत छथिन मुदा ओकरा मोनसँ गामक संस्कृति हटिते नहि छैक । मुदा हठाते ओकर भायक स्वभावमे परिवर्त्तन आबि जाइत छनि । पटनाक विद्यापति पर्व हुनक मोनमे अपन मैथिल संस्कृतिक प्रति असीम स्नेह ओ श्रद्धा उत्पन्न कऽ देने छलनि । ओमहर गाममे मन्नीदाइक सुन्दरतापर ढुलि कऽ बिना कोनो एको पाइ लेने श्रीनाथक आदर्श विवाह एकटा चर्चाक विषय रहैत अछि । एहिमे मुख्य भूमिका कयनिहारि श्रीनाथक भौजीक हँसमुख ओ चौल करऽवला स्वभाव सबकेँ बेस गुदगुदबैत छैक । एहि तरहक छोट-छोट कथा सभ पत्रक माध्यमे एक-दोसरकेँ कहैत सोना आ रेवा अपन-अपन मोनक व्यथा कागतपर उतारैत अछि ।

पढ़ल-लिखल लोकक जे एकटा फराके संस्कार होइत छैक, बजबा-भुकबामे जे एकटा छवि-छटा आबि जाइत छैक से रामजोड़ीक पत्र सबमे जतऽ-ततऽ आयल अछि । दुनू सखी एक दोसरकेँ **जय मैथिली** कहि कऽ अभिवादन करैत अछि तँ पत्रमे दार्शनिक जकाँ बड़का-बड़का गप्प सब करैत अछि जे मिथिलाक शिक्षिता नारी समुदायक विकसित मानसिकता ओ ओकर बौद्धिक स्तरकेँ दरसबैत अछि । सोनाकेँ सदिखन भय लागल रहैत छैक जे जाहि मनुक्खक संग ओकर जुटबन्धन होयतैक ओ केहन होयत ? ओकर जीवन कोन पाट जा कऽ लगतैक की बीच मँझधारमे जा कऽ डूबि जेतैक । एहि सभ चिन्तासँ ओ त्रस्त रहैत अछि । अपन मोनक एहि आशंकाकेँ ओ काव्यमय भाषामे लिखैत अछि, तँ रेवा ओकरा बोल-भरोस दैत लिखैत छैक- **ककरो मुँहे सुनने छलिऐक जे विवाह, जन्म आ मरणाक स्थान सभक लेल निश्चित रहैत छैक । जकरा जतऽ कपारमे लिखल रहतैक ओतहि जा कऽ होयतैक । मुदा ताहि कारणेँ मोनमे निराशाकेँ स्थान दी से उचित नहि । समाजक जे गति छैक, जे रंग-ढंग छैक तकरा देखैत मोनमे निराशा होयब स्वाभाविक छैक, मुदा तोँ तँ पढ़लि-लिखलि छेँ , तोरा तँ अपना मोनमे भरसाहा बान्हि कऽ रखबाक चाहियौक, नहि तँ अनपढ़मे आ हमरा-तोरामे कोन अन्तर ?** (पृ.-58) ।

सोना आ रेवा मिथिलाक ओहि कालखंडक किशोरी अछि जे केवल घरैया लूरि-भास आ कुटिया-पिसिया धरि सीमित नहि अछि । ई सखी सब मिथिलामे नारी शिक्षाक प्रचारक संग नारी सशक्तीकरणक शुभारम्भ कालक इसकुलिया छौंड़ी अछि जे अंग्रेजी, विज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्र, गणित, बायलोजी, पढ़ैत अछि । दुनियाँक रंग-ढंगसँ परिचित होइत अछि । स्वाभाविक रूपसँ ओकर चिन्तनक संग-संग भाषा सेहो परिष्कृत होइत जाइत छैक । ओकर बोल-चालमे परिष्कृत संस्कृतक संग-संग अंग्रेजीक शब्दक प्रयोग सेहो होअऽ लगैत छैक ।

गामक तुलनामे पटनाक संस्कृतिकेँ तुच्छ कहैत सोना लिखैत अछि- **हय रामजोड़ी आब जँ हमरा गाम आ शहरपर निबन्ध लिखऽ लेल कहैत तँ यैह सभ बात लिखितिऐक । हमरा एहन सन बुझि पड़ैत अछि, एहिठाम जेना सभ वस्तुमे औपचारिकता भरल छैक । लोक सभ जे भेट-घाँट करत, गप्प-सप्प करत ओहिमे 'फार्मलिटी' बेसी रहैत छैक**

Scanned by CamScanner

आ सौहार्द्र कम । अपना लोकनि एकटा निबन्धमे पढ़ने रहिऐक ने आर्ट फार आर्ट सेक मने कला कलाक हेतु से एहू ठाम बूझह तँ गप्पक हेतु गप्प, भेटक हेतु भेट (पृ.-22) ।'

तेजीसँ भऽ रहल सामाजिक परिवर्त्तनपर चिन्ता व्यक्त करैत एकटा पत्रमे सोना लिखैत अछि- **लोक आत्मवादी, व्यक्तिवादी भेल जा रहल अछि । मुदा एनामे तँ समाजक अन्त:स्थ एकात्मकताक सूत्र टूटि जयतैक, समाजक अंग-प्रत्यंग छिन्न-भिन्न भऽ जयतैक । मुदा हमरा-तोरा एहि सम्बन्धमे की विचारबाक अछि ? हम सभ जें स्कूलमे पढ़ैत छी तें एतबो बुझैत छिऐक आ जे कहियो 'सी' अच्छर नहि पढ़लक अछि से की बुझतैक ? यदि किछु बुझितो होयतैक तँ कें मोजर देतैक ?** (पृ.-25) ।

गाममे रहैत रेवा सम्पन्न भेल सामा-चकेवा पावनिक वर्णन जाहि काव्यमय भाषामे करैत अछि से मनमोहक अछि- **गय, कतेक भावुक छैक ई पावनि ! निर्मल शरद ऋतुक ओस आ नवीन धानक मंजरीसँ सामाक पूजा करबामे जेना कोनो कविता नुकायल होइक** (पृ.-28) ।'

निष्कर्षत: कहल जा सकैत अछि जे **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** उपन्यास अपूर्ण रहितो जतबे अछि से अद्भुत अछि । कैशौर्यसँ युवावस्था दिस बढ़ि रहल नारी मनोविज्ञानक सूक्ष्म चित्रण करैत ई कृति वस्तुत: मिथिलामे नारी सशक्तीकरणक उपन्यास करैत अछि । अंगरेजीफूल आ बहिनासँ भिन्न एकर नायिका सब अपन भावी जीवन आ कैरियरक सम्बन्धमे तँ मुक्त भावसँ सोचिते अछि, ओ देश-दुनियाँ, समाज ओ समकालीन परिस्थितिपर सेहो अपन दृष्टि रखने अछि आ ओहिपर बहश सेहो करैत अछि । बौद्धिक विमर्शपर पुरुषक एकाधिकारकेँ तोड़ैत ओ एकरा अपन दायित्वमे सम्मिलित करैत स्वतन्त्र भारतमे नारी वर्गक नवीन भूमिकाक शंखनाद करैत अछि ।

V

इजोतीरानीकेँ सेहो हम प्रयोगधर्मी उपन्यास कहब । एकर पाछाँ हमर पहिल तर्क ई अछि जे रामदेवबाबू मैथिलीमे एहि तरहक प्रथम उपन्यास लिखलनि जे विशुद्ध रूपसँ बाल पाठकक लेल अछि, दोसर ई जे बाल पाठकक उच्चारण क्षमताकेँ ध्यानमे रखैत एहि उपन्यासकेँ लेखक संयुक्ताक्षर रहित बनौने छथि । इहो लघु उपन्यास पढ़बामे बड़ रोचक अछि । एहिमे जादू-मन्त्रक संग-संग रहस्य-रोमांच अछि जे बाल पाठकक लेल मनलग्गू अछि ।

उपन्यासक नायिका अछि एकटा राजाक बेटी इजोतीरानी, जकर देहसँ इजोत बहराइत रहैत छैक जाहिसँ बारह योजन धरिक लोककेँ इजोत लेसबाक जरूरति नहि पड़ैत छैक । एकटा राजकुमार अपन भाउजक बातपर रूसि कऽ इजोतीरानीसँ विवाह करऽ विदा होइत अछि तँ कोना ओकरा तीनटा विचित्र गुणवला लोकसँ भेट होइत छैक, ओ कोना इजोतीरानी धरि पहुँचि, राजाक शर्त्त पूरा कऽ कऽ ओकरासँ बियाह करैत अछि । इजोतीरानीक देहसँ इजोत बिला जाइत छैक । इजोतीरानीकेँ लऽ कऽ राजकुमार विदा होइत अछि तँ कोना इजोतीरानी ओकरासँ बिछुड़ि जाइत छैक, कोना इजोतीरानी सोनार, चोर, हजामक चाङुरसँ बहार होइत अछि, कोना इजोतीरानीक वियोगमे राजकुमार सहित सात गोटा बताह भऽ कऽ बौआय लगैत अछि, कोना इजोतीरानी पुरुषक वेश बना कऽ एकटा राजाक बीमार बेटीक इलाज करैत अछि आ अन्तत: कोना ओकरा अपन राजकुमार पतिसँ फेर भेट होइत छैक आ तकर बाद कोना ओ ओहि राजकुमारीक विवाह अपन पतिसँ करा कऽ सब सुखपूर्वक रहऽ लगैत अछि । ई समस्त वृत्तान्त बड़ रोचक ढंगसँ एहि छोट उपन्यासमे विन्यस्त कयल गेल अछि । एक बेर ई पोथी उठौलापर एकरा छोड़बाक मोन नहि करैत छैक । बाल पाठककेँ कतहु बोझ सन नहि बुझाइत छैक जे एकर सबसँ पैघ विशेषता छै ।

एहि प्रकारेँ देखैत छी जे रामदेवबाबूक चारू उपन्यास मैथिलीमे अपना तरहक नवे प्रयोग छनि । तीनटाक शिल्प पत्रात्मक अछि । विशुद्ध रूपसँ नारीपर केन्द्रित । चारिम उपन्यास इजोतीरानी बच्चा सबकेँ ध्यानमे राखि कऽ लिखल गेल अछि । कहल जा सकैछ जे मैथिली साहित्यकेँ महिला वर्ग ओ बच्चाक बीच लोकप्रिय बनयबाक हेतु रामदेवबाबू उपर्युक्त चारू उपन्यासक रूपमे सर्वथा मौलिक प्रयोग कयलनि अछि ।

●

Scanned by CamScanner

मैथिलानीक यथार्थ स्थितिक चित्र उरेहैत अंगरेजीफूलक चिट्ठी

श्रीसुरेन्द्रझा

अंगरेजीफूलक चिट्ठी श्रीरामदेवझाक चर्चित कथाकृति थिकनि जकर रचनाक पृष्ठभूमि मिथिला मिहिर साप्ताहिकक पुनरुत्थानसँ जुड़ल अछि । छओ बरख धरि बन्द रहलाक बाद सितम्बर 1960 इ. सँ एहि पत्रिकाक प्रकाशन पुन: आरम्भ भेल छल । श्रीझा ओहि समयमे पटना विश्वविद्यालयमे एम.ए (मैथिली)क छात्र रहथि आ मैथिलीक कवि कथाकारक रूपमे ख्यात भऽ चुकल रहथि । अपन गुरुजन आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन', पं.चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' आ श्रीकान्तठाकुर 'विद्यालंकारक' आदेशक अनुपालनमे मिथिला मिहिरक खसल घरमे सोङर लगौनिहार लोकनिक अग्रिम पंक्तिमे कटिबद्ध भऽ ठाढ़ अनाम वा छद्मनामसँ एहि पत्रिकाकेँ अपन रचना **अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग** आ **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** आदि दैत छलथिन जे पत्रिकामे धारावाहिक छपैत छल । 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी'क एकतालिस गोट किस्त पत्रिकाक श्रीवृद्धि कयने छल । अन्तिम किछु किस्त अप्रकाशित रहि गेल छल जकरा 2002 इ. मे आबि कऽ पुस्तकाकार छपल पोथीमे सम्मिलित कयल गेल अछि । 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' पाठक आ समालोचक लोकनिक बीच बेस समादृत भेल अछि । एकर रचनाकार के छथि ? ई प्रश्न ओहि समयमे मैथिलीक पाठक समुदायक बीच कौतूहलक विषय बनल रहल छल । मुदा साहित्यक पारखी लोकनि एहि धारावाहीक शैली, भाषा, शब्द प्रयोग, उक्ति भंगिमा आदिकेँ देखैत कहि देलनि जे एहन लेखन रामदेवहिजीटा कऽ सकैत छथि । एकरा संगहि एकर लेखक गुप्त नहि रहि सकलाह ।

अंगरेजीफूलक चिट्ठीक पुस्तकाकार प्रकाशित भेने समस्त संशय वा भ्रान्ति स्वत: समाप्त भऽ गेल अछि ।

अंगरेजीफूलक चिट्ठी सोद्देश्य लिखत गेल छल । उद्देश्य छल मिथिल मिहिर दिसि पाठककेँ आकृष्ट करब, एहि पत्रिकामे पाठकक चहटि बैसायब, पाठकक संख्या बढ़ायब आ सब मिला कऽ पत्रिकाकेँ सुदृढ़ करब । एहिलेल रोचक, चहटगर सामग्री पाठकक आगाँ परसब आवश्यक छल । एहि उद्देश्यक पूर्त्तिमे रचनाकार पूर्णरूपेण सफल भेलाह अछि ।

ई कथाकृति मिथिलाक मध्यमवर्गीय परिवारक दू गोट नवविवाहिताक परस्पर पत्राचार थिक । दुनूक नैहर एके ठाम छैक । दूनू समवयस्का आ बाल-सखी अछि आ दूनूमे 'अंगरेजीफूल' लागल छैक । विवाहोत्तर ओहिमेसँ एकटा अपन नोकरिहारा पतिक संगे पटनामे रहऽ लगैत अछि आ दोसर गामेमे रहैत अछि । दूनूमे पत्राचार होइत छैक जाहिमे दूनू अपन-अपन दाम्पत्य जीवनक मिट्ठ-तीत अनुभवक आदान-प्रदान करैछ । वस्तुत: कोनो नवकनियाँक दाम्पत्यक अन्तरंग, गोपन विषय, जकर अभिव्यक्ति, ओ अपन सबसँ आप्त सखीटा लग कऽ सकैछ, एहिसँ बढ़ि कऽ ललितगर वस्तु आर की भऽ सकैछ? तेँ अंगरेजीफूलक चिट्ठी सब वयसक, पाठक-पाठिकाक सबसँ प्रिय स्तम्भ छल । अविवाहिता एकरा पढ़ि भावी जीवनक कल्पना लोकमे विचरण करैत छलीह आ विवाहिता अपन विगत जीवनक मधुरिमामे हेरा जाइत छलीह । संयोग एहन जे कथाकार अपनहु एकर रचनाकालमे नवविवाहित रहथि । तेँ नवविवाहिताक मन:स्थिति, नारी मनोविज्ञान, पति, परिवार आ समाजक प्रति ओकर अटल श्रद्धा आदिक सूक्ष्म अध्ययन आ ओकर सहज, सुस्पष्ट अभिव्यक्ति ओ जाहि कुशलतासँ कयलनि अछि ओ आन कथाकारमे बहुत तकनहि भेटि सकैछ ।

अंगरेजीफूलक चिट्ठी मैथिल समाजमे नारीक स्थितिक यथार्थ चित्रण करैछ । सिनुर पड़ितहिँ कन्याक प्रति माय, भाय, भाउजक नजरिमे दुराभाव आयब, कने-कनेटा बातपर ननदि-भाउजमे उतराचौरी होयब, कन्याकेँ भारस्वरूप बूझल जायब आदि मिथिलामे सामान्य बात रहल अछि । भाउजक नजरिमे ओ 'कलिजुगाहि' आ 'जरनियाहि' बनि

Scanned by CamScanner

जाइछ । ताहूमे जँ ननदि 'कनौआक बहु' नहि अछि, तखन तँ ओकरा डेग-डेगपर उपेक्षा भेटैत छैक । दुरागमन होइतहिँ जँ ओ पुत्रवती नहि भेलि तँ सासु खिन्न, टोल पड़ोसक बूढ़-पुरनियामे एहि विषयकँ लऽ कऽ कनफुसकी । जँ दू-एक बरख धरि सन्तान नहि भेलैक तँ 'बँझिनियाक' उपाधि, बेटाक दोसर विवाह करयबाक सूरसार आ ओहि उपेक्षिताक छातीपर सौतिनकँ बैसयबाक उपक्रम । अर्द्धशती पूर्व लिखल अंगरेजीफूलक चिट्ठीमे कयल गेल मैथिल मानसिकताक ई चित्रण एखनो धरि 'आउटडेटेड' नहि भेल अछि ।

सासुर हो कि नैहर, मैथिलानीपर सतत् दाब-चाप बनले रहैछ । 'एना चल', 'एना बाज', 'ओतऽ नहि जो', 'एना नहि कर' सर्वत्र आ सदिखन ओकरापर वर्जनाक चाबुक बरसिते रहैछ । ओकर स्थिति खुट्टामे बान्हलि गाय वा पिंजरामे बन्द सूगा सदृश होइछ । ओ मूक रहि पति, परिवार आ समाजक उपेक्षा सहैत रहैछ– **स्त्रीगणकें तँ विधाता जाहि गाछक आश्रय लगा दैत छथिन, ओही गाछक छाहरिमे सब सुख भेटैत छैक, सागे भात, कऽने खुद्दी जुड़ौक आ कि पानिये पीबि कऽ दिन खेपि लेअओ, अपना लोकक संगमे रहने सब दुख बिला जाइत छैक ।**

आ पुनः **दू चुटकी सिनूर आ स्वामीक सिनेह भेटैत रहय । भगवानकँ सब दिन एतबे कहैत छियनि जे जा जीबी ता ई दुनूटा कायम रहय ।** उपेक्षा कयनिहार पतियोकलेल ओ सदैव मंगलकामने करैछ– **उसी को देखकर जीते हैं जिस काफिर पे दम निकले,** महाकवि गालिबक ई उक्ति मैथिलानीपर पूर्णतः चारितार्थ होइछ । पतिकँ ओ अपना नजरिसँ फराक नहि होअऽ देबऽ चाहैछ । आजीविकार्थ पतिक असम जयबाक सम्भावनासँ गामवाली 'फूल' चिन्ताकुल भऽ जाइछ। पतिक आँग-समाँगक ओकरा चिन्ता होइत छैक– **हुनका कहुन जे गाम चल आबथि । नोकरी-चाकरी करबाक कोनो काज नहि छैक । गामपर हुनका कथीक कमी छनि । गुजर जोग जमीन-जथा छनिहे......... अनमानाकलेल इसकूलमे नोकरी करिते छथि । आरो बेसी लऽ कऽ की करताह ।**

ओना तँ नारीमे हीनभावना विश्वजनीन अछि, मुदा परम्परावादी मैथिल समाजमे ई भावना ततेक बद्धमूल रहल अछि जे नारी स्वातन्त्र्यक वर्त्तमान लहरियो एकरा प्रभावित नहि कऽ सकल अछि– **एकटा बिख महादेव पीलनि, दोसर सब किछु धो धा कऽ स्त्रीगणे पीबऽ जनैत अछि** (पत्र सं. 37) । **मौगी दिनराति गोँहरि करौक, अपन देह दौक, अपन सब इच्छा-आकांक्षाकेँ थूड़ि-थकुचि ओकरेमे लगा दौक, मुदा तैयो पुरुखकेँ मौगीपर विश्वास नहि** (पत्र सं. 36) । **पुरुख तँ भेल बहरुआ लोक । दस ठाम जाइत अछि, दस लोकसँ गप्प करैत अछि, ओकर मोन बहटरि जाइत छैक । मुदा मौगी तँ दिनराति घरेमे रहैत अछि । गप्प करओ तँ घरेवलासँ आ काज करओ तँ ओकरे आ जहाँ पुरुख घरसँ बाहर भेल कि ओकरेपर टकध्यान लागल रहैत छैक** (पत्र सं. 14) ।

निरन्तर बढ़ि रहल बजारवाद, भूमण्डलीकरण आ ओकर पछिलग्गू मीडियाक द्वारा कयल जाइत दुष्प्रचारक लेखक घोर विरोधी छथि– **तोरा ओ मेमिन बनाबऽ चाहैत छथुन, से बात हमरा पसिन्न नहि अछि । हय, बाहर घूमब, बाहरक लोकसँ बाजब-भूकब ततेक अधलाह नहि, मुदा अपन चालि-व्यवहार छोड़ब, अपन परिवार ओ जातिक मर्यादा तोड़ब नीक लोकक काज नहि । ....खन्जन चलली बगड़ाक चालि तँ अपनो चालि बिसरि गेलीह** (पत्र सं. 5) ।

अंगरेजीफूलक चिट्ठी जाहि युगक रचना थिक, ताहि युगमे मैथिल समाजमे बालिकाकेँ पढ़ायब 'टेबू' मानल जाइत छल । तेँ मिथिलामे नारी-शिक्षाक प्रतिशत बड़ न्यून छल । एखनहुँ न्यूने अछि । लेखक एहि नकारात्मक मानसिकताक प्रबल विरोधी छथि । पुस्तकमे यत्र-तत्र नारी-शिक्षाक प्रति लेखकक आग्रह स्पष्टतः परिलक्षित होइछ– **इसकूलसँ मारते रास पोथी उठा कऽ लेने अबैत छथि आ हमरा कहैत छथि जे -बैसलि-बैसलि पढ़ैत रहू । पढ़ने ज्ञान बढ़त आ संसारकेँ नीक जकाँ चिन्हबैक** (पत्र सं. 37) । **चिलकाकेँ कोना राखी, कोना पोसी - से सभ हम दिन-रातिमे जखन पलखति भेटैत अछि, पढ़ैत रहैत छी** (पत्र सं. 34) । **तिरहुतनी सब एखन एकदमसँ सूतलि अछि । ओकरा सबकेँ जगायब आवश्यक अछि ।**

मैथिल समाजमे व्याप्त रूढ़ि आ अन्धविश्वास अशिक्षेक परिणाम थिक जकरा हटायब लेखकक अभिप्रेत छनि– **हमर तिरहुतनी जनी लोकनि अनेरे बहुत रास बात उघैत आबि रहलि छथि । जाहिसँ ककरो कोनो लाभ नहि होइत छैक -से अपना समाजमे किएक रहय ?** (पत्र सं. 40) **बिनु बुझने-सुझने पाथर घसैत रहब-सैह अन्धविश्वास**

Scanned by CamScanner

थिकैक । हमरा लोकनिकेँ चाही जे एहन व्यर्थक पाथर घसऽसँ फराके रही (पत्र सं. 39) । **अपना देश-कोसमे जेँ लोक खोम्ह मानैत अछि आ जोग-टोनपर विश्वास करैत अछि तेँ सातघर सत्तरि मुँह रहैत छैक । अपना ओहि ठामक स्त्रीगणकेँ आओर अबिते की छैक ? जहाँ कोनो माउगिकेँ देखलक कि अपन चिलकाकेँ सात कोन् नुकौलक । नान्हियेटासँ ततेक 'ई बुड़' 'ई बुड़' होअऽ लगैत छैक जे नेनेसँ बुड़्या धरबैत-धरबैत धियापुता कमजोर भऽ जाइत अछि आ डेरबुक, हिबघट्टू बनल जिनगी खेपैत अछि** (पत्र सं. 34) ।

शहरी जीवनसँ वितृष्णा आ अपन संस्कृतिक परिरक्षणक प्रति उत्साह अंगरेजीफूलक चिट्ठीमे अन्तर्धाराक रूपमे सतत् प्रवहमान देखल जाइछ अछि । कृत्रिम, देखौआ आ आत्मकेन्द्रित जीवन शैली केहनो आकर्षक, लोभाओन किएक ने हो, ओहिसँ शाश्वत मानव-मूल्यक अपेक्षा करब अरण्य रोदन मात्र होयत– **केहनो पैघ शहर किएक ने होउक, सभक एके रङ हाल छैक । पैघ शहरमे ने अहाँकेँ कतहु चरित्र भेटत, ने कतहु संस्कृति भेटत, ने कतहु हृदय भेटत । ओहि सभ ठाम अहाँ सुख आ सिङारक तऽरमे नीक चालि-चलनिकेँ ठोहि पाड़ि कऽ कनैत देखबैक, नीक घरक बहु-बेटीकेँ संस्कृतिक नामपर रंडी-पतुरिया जकाँ नचैत देखबैक, आ हृदय तँ तेहन भेटत जे अहाँ एक घोँट पानिकलेल काटल छागर जकाँ छटपटाइत रहब, मुदा केओ एको चुड़ू आनि कऽ नहि देत** (पत्र सं. 39) ।

अपन संस्कृतिक प्रति लेखकक प्रबल आग्रहक बानगी सर्वत्र परिलक्षित होइछ । समयक प्रवाहमे संस्कृतिक जे अपक्षय भेल अछि, ताहि दिसि लेखक पाठक वर्गक ध्यान आकृष्ट करैत छथि । गुर्विणी द्वारा वंशदान करबाक परम्परा पूर्वमे मिथिलामे प्रचलित छल जे आब कत्तहु देखबामे नहि अबैछ । लेखक तैंतालिसम् पत्रमे एहि परम्पराक उल्लेख कयने छथि । मिथिलामे बाँस (वंश) वंशवृद्धिक प्रतीक मानल जाइछ । तेँ गुर्विणीसँ छिट्टा-पथिया आदि दान कराओल जाइत छल जे ओ पुत्रवती होथि । कोबरमे बाँस लिखबाक पाछाँ सेहो यैह हेतु रहल अछि । श्रद्धा आ विश्वासपर आधृत मैथिल संस्कृतिपर आधुनिक समाजशास्त्री लोकनि जे आक्षेप करथु, एकरा बुर्जुआ मानसिकता कहि कतबो नकारथु किन्तु ई अकाट्य सत्य थिक जे जनक, याज्ञवल्क्यक युगसँ अक्षुण्ण रूपेँ चलि अबैत मैथिल संस्कृतिक उद्यानकेँ केहनो पछबा सुखा नहि सकैछ– **गंगामे हड़बड़ा कऽ पैसि नहि जाइ, किनारमे बैसि गंगाकेँ दू हाथ जाँति दियनि । चुड़ूमे गंगाजल लऽ कऽ माथपर छीटि ली, तखन जलमे पैर दी । गंगा तँ माता छथिन । हुनका लात नहि मारी** (पत्र सं. 44) । **गंगाकेँ दू हाथ जाँतब** आजुक तर्कवादी नवशिक्षिताकेँ अनसोहाँत मुदा गंगाकेँ माता बुझनिहार एहि उक्तिक मर्म बूझि सकैत छथि । **लातकेँ माथपर राखि ली** श्रद्धा आ बुद्धिक शाश्वत द्वन्द्व दिसि संकेत करैछ ।

अंगरेजीफूलक चिट्ठीक कथाकेँ रससँ सराबोर करबाक सङहि जतऽ एक दिसि मैथिल समाजमे व्याप्त नारी अशिक्षा, रूढ़ि, अन्धविश्वास आदिक उच्छेद करबाक दिशामे उत्प्रेरित करैछ, ततहि दोसर दिसि अपन गौरवमय सांस्कृतिक परम्परा, आचार-व्यवहार आ रीति-रेवाजक परिरक्षण करबाक प्रेरणा सेहो दैछ । परिवारमे नारीक दयनीय स्थितिक यथार्थ चित्रण करबाक संगहि स्त्रीक स्वभावगत दौर्बल्यक चित्रण सेहो करैछ । मिथिलाक बुद्धिजीवी वर्गमे जे वैचारिक प्रदूषण आबि रहल अछि, जाहिसँ कौलिक मर्यादाक हनन होइछ ताहि दिशामे सचेत करैछ । साहित्यकार समाजक सृष्टि होइछ, सङहि सर्जक सेहो । लेखक विगत शतीक मध्यक मैथिल समाजक अन्तरंग चित्रण करबाक संगहि पाठककेँ मूल्यबोध सेहो करबैत छथि । तेँ अंगरेजीफूलक चिट्ठीकेँ मिथिलाक सामाजिक, सांस्कृतिक आ साहित्यिक परिदृश्यक दस्तावेज कहि सकैत छी ।

भाषा आ शिल्पक दृष्टिएँ सेहो अंगरेजीफूलक चिट्ठी आधुनिक मैथिली साहित्यक विशिष्ट उपलब्धि थिक । मध्यमवर्गीय मैथिल परिवारक पारिवारिक आ सामाजिक सरोकारक सहज, सरल, सर्वथा अकृत्रिम अभिव्यक्ति जाहि विशिष्ट वाचिक भंगिमामे भेल अछि ओ अन्यत्र नहि भेटैछ । बुझना जाइछ जेना मिथिलाक हृदय अपन सम्पूर्ण संवेदनाक संग पत्र सभमे साकार भऽ उठल हो । भाव आ भाषामे कतहु कोनो फेँटफाँट नहि । विचारक आ भाषा शिल्पीक रूपमे लेखककेँ 'प्यूरिस्ट' कहल जा सकैत छनि ।

आब, प्रश्न अछि जे अंगरेजीफूलक चिट्ठीकेँ साहित्यक कोन विधामे परिगणित कयल जाय ? एहि विन्दुपर मैथिली साहित्यक इतिहासकार आ समीक्षक लोकनिमे मतभिन्नता छनि । डा.भूपेन्द्रकुमार चौधरी आ डा.बालगोविन्दझा

Scanned by CamScanner

'व्यथित' एकरा उपन्यास मानैत छथि किन्तु श्रीराजमोहनझाजीकेँ एहि रचनाकेँ उपन्यास मानबामे आपत्ति छनि। वस्तुतः कोनो रचनाकारक कृतिकेँ विधाक परिधिमे बान्हब दुष्कर कार्य होइछ। रचना तँ रचनाकारक मोन, बुद्धि आ अहंकारक सहज अभिव्यक्ति होइछ। रचनाकारकेँ एहिसँ कोनो विशेष मतलब नहि रहैत छैक जे ओकर कृतिकेँ कोन विधामे राखल जयतैक। यैह कारण अछि जे अंगरेजी साहित्यसँ आयल एहि विधामे आइ धरि जतेक रचना भेल अछि, विशेष कऽ विगत शतीमे जतेक उपन्यास लिखल गेल अछि, सब एक दोसरसँ रूप आ कथ्य (Form and content) मे भिन्न अछि। जँ सत्य पूछल जाय तँ नियम, नौर्म वा मापदण्डक फर्मामे रचनाकेँ रखने ओकर मौलिकता समाप्त भऽ जाइत छैक आ सम्पूर्ण कृति सायास आ यान्त्रिक भऽ कऽ रहि जाइत छैक।

परम्परावादी आलोचक लोकनिक मतेँ कथानक वा 'प्लौट' उपन्यासक आधारभूत तत्त्व थिक जाहि लेल कथाकार पात्रक सृजन करैत छथि। कथानकक विकास यात्रामे एकटा केन्द्रिय चरित्र स्थापित होइछ। कथानकक विकास, पात्र सबहिक परस्पर सरोकार, क्रिया-प्रतिक्रिया, अन्तर्द्वन्द्व आदिसँ होइत 'क्लाइमेक्स'पर पहुँचि पाठककेँ चरम परिणति धरि लऽ जाइछ। अंगरेजीफूलक चिट्ठीमे कोनो एहन कथा सूत्रक अभाव अछि जे वस्त्रक तानी जकाँ एक छोरसँ दोसर छोर धरि अनवरत चलैत गेल हो। तेँ एहिमे कोनो केन्द्रिय चरित्र स्थापित नहि भऽ सकल अछि। पाठक सुनिश्चित नहि कऽ पबैत छथि जे केन्द्रिय चरित्र ककरा मानल जाय, गामवाली अंगरेजीफूलकेँ आ कि पटनावालीकेँ?

परम्परावादी आलोचकक मतेँ उपन्यासमे जीवन अपन समग्रतामे चित्रित होइछ। आलोच्य पुस्तकमे दू गोट सखीक दाम्पत्य जीवनक किछु मास मात्रक चित्रण अछि। दुनूक जीवनमे एहन कोनो वैशिष्ट्य नहि छैक जे ओकरा सामान्य वधूसँ हटा कऽ उपन्यासक नायिका होयबाक गौरव प्रदान करैक।

मुदा, विगत शतीमे आबि कऽ उपन्यासक सबटा घोषित प्रतिमान ध्वस्त भऽ गेलैक। 742 पृष्ठक, जेम्स ज्वायसक चर्चित उपन्यास **यूलीसेस** एक्के दिनुक कथा कहैछ। तहिना, वर्जीनिया वूल्फक **मिसेज डैल्लोवे** सेहो। डैल्लोवे लगातार साठि पृष्ठमे अपन विगत आ वर्त्तमानक कथा कहैछ। उपन्यासक कथानक यान्त्रिक समय (घड़ीक समय) सङे नहि चलि कऽ पात्रक चेतन मोनक गतिएँ चलैछ जे 'मोनोलोग' द्वारा व्यक्त होइछ आ, जाहिमे ओकर सम्पूर्ण व्यक्तित्त्व प्रकट भऽ जाइछ। जखन उपन्यास पत्रक रूपमे कहल जाइछ, तखन प्रत्येक ओ पत्र लिखनिहार वा लिखनिहारिक 'मोनोलोग' होइछ जाहिमे ओ समयक विस्तारमे अपना इच्छासँ आगाँ-पाछाँ चलैछ, खन वर्त्तमानमे रहैछ, खन विगतमे विचरण करऽ लगैछ। अंगरेजीफूलक पहिल बेर रेलपर चढ़ब, गंगामे डूब दऽ कऽ अंगरेजीफूल लगायब, पोखरिमे समवयस्क बालक सबहिक सङ चुभकब आ माता-पिता द्वारा प्रताड़ित होयब आदि ओकर अपन विगत समयमे विचरण करब थिक।

इहो आवश्यक नहि जे उपन्यासमे कोनो केन्द्रिय चरित्र होयबे करैक। भऽ सकैछ आ नहियो भऽ सकैछ। अंगरेजीफूलक चिट्ठीक लेखकक उद्देश्य पात्रक चरित्र चित्रण करब वा कोनो केन्द्रिय चरित्र स्थापित करब नहि छनि। ओ कथाक माध्यमसँ मिथिलाक सामान्य नव कनिआक कुण्ठा, ओकर सोच आ स्वप्नक यथार्थ चित्र उपस्थित करऽ चाहैत छथि, जाहिमे ओ पूर्णतः सफल भेलाह अछि। दुनू अंगरेजीफूल एक्के परिवेशमे पललि-बढ़लि अछि, दुनूक सोच एक्के रङक छैक तेँ दुनूकेँ एक्के 'कैरेक्टर' मानि कऽ चलबाक चाही। लेखक समग्र मैथिल समाजक चित्रण करबाकलेल एककेँ शहरमे आ दोसरकेँ गाममे राखि देलथिन अछि। पटनावाली अंगरेजीफूल 'इलाइट' वर्गमे सन्हियाइत सांस्कृतिक विद्रूपकेँ देखि खिन्न अछि तँ गामवाली 'फूल' ग्रामीण जीवनमे व्याप्त अशिक्षा, रूढ़ि-ग्रस्तता आ मालिन्यसँ कुण्ठित। जँ दुनूमेसँ कोनो एक्के अंगरेजीफूल ग्रामीण आ शहरी दुनू समाजपर अपन प्रतिक्रिया व्यक्त करैत तँ उपन्यासक कथ्यमे कोनो अन्तर नहि पड़ैत आ से कयने केन्द्रिय चरित्रकेँ लऽकऽ जे असमंजस छैक सेहो नहि रहितैक। मुदा तखन लेखककेँ पत्रात्मकताक स्थानपर कोनो आन 'फौर्मेटक' आश्रय लेबऽ पड़ितनि जे एतेक रोचक नहि होइतैक।

अस्तु, अंगरेजीफूलक चिट्ठी आधुनिक मैथिली साहित्यक विशिष्ट औपन्यासिक कृति थिक, एहिमे किनको कोनो सन्देह नहि होयबाक चाहियनि।

●

Scanned by CamScanner

नारी मनोविज्ञानक उपन्यास अंगरेजीफूलक चिट्ठी

डा. श्रीअमरनाथचौधरी

प्रत्येक व्यक्तिक जीवनक प्रारम्भ, ज्ञान अर्जित करबाक प्रयाससँ होइत अछि । ज्ञान अर्जनक दोसर नाम थिक 'शिक्षा-साधना' । प्रत्येक शिक्षा-साधक छात्रक रूपमे होइछ । छात्र-जीवनक साधना सबसँ कठिन होइछ । सफलता कर्त्तव्यक आधारपर निर्भर करैछ और तखनहि साधककेँ लक्ष्यक प्राप्ति होइछ । श्रीरामदेवजीक साधना ओ कर्त्तव्य हम स्वयं देखने छियनि । आइ हुनक साधना ओहि शिखर बिन्दुपर पहुँचि गेलनि अछि जकरे प्रतिफल स्वरूप मिथिलाक विद्वत्-समाज हिनक अभिनन्दनक आयोजन कऽ रहल छथिन ।

हम 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' ओही समयमे पढ़ने रही जाहि समयमे ई' मिथिला मिहिर'मे धारावाही छपल रहय। ई आश्चर्य लागल जे जाहि रूपमे ओहि समयमे पढ़ने रही ओ आइ पढ़लापर बहुत अन्तर लागल । जाहि रूपमे विद्यार्थी जीवनमे पढ़ने रही ओ पूर्णतः भिन्न बुझना गेल । श्रीरामदेवजी जाहि समयमे ई लिखलनि ओ जीवन हुनक वियोगमे बितैत रहनि, सम्भवतः ओही वियोगके कल्पनाक माध्यमसँ स्वयं पटनियाँ अंगरेजीफूल बनि संयोगमे परिवर्त्तित करैत कयलनि । साहित्यमे वियोगक स्थान मिलनसँ बेसी होइछ ।

अंगरेजीफूलक चिट्ठी सामान्य पत्र व्यवहार नहि, अपितु दुइ नारी-हृदयक विशाल भावनाक संयोगक सागर थीक । यद्यपि अंगरेजीफूलमे सुगन्धि नहि होइछ परन्तु एकर लेखक मनोवैज्ञानिक सुगन्धिक अनुसन्धान कऽ एहिमे ओकरा भरलनि अछि ।

नारी जातिक जीवनमे दुइ पक्षपर विचार करऽ पड़ैत अछि । विवाहसँ पूर्व एवं ओकर उपरान्त । यद्यपि प्रत्येक नारीके जीवनमे ओकरा अपन जन्मस्थान छोड़ि पतिक घर जाय पड़ैत छैक । नव वातावरणमे अपनाकेँ पाबि ओ अत्यन्त कठिन परीक्षाक परीक्षार्थिनी बनि सफलताक सोपानपर चढ़बाक प्रयास करैछ । वर्त्तमान युगमे प्रत्येक समाजक व्यक्तिमे देखल जाइछ जे व्यक्ति अपन जीवनके सेवा हेतु नहि, अर्थोपार्जनक हेतु लगाबऽ चाहैत अछि । परिवार ओ समाजक आधारशिला नारी वा दोसर शब्दमे कही तँ गृहिणी होइछ । जाहि परिवारक स्त्रीगण व्यवस्थासँ युक्त नहि ओ परिवार वा वंश, केहनो पैघ वा नामी-गामी किएक ने हो, निश्चित रूप सँ पतनोन्मुख भऽ जाइछ । अंगरेजीफूलक चिट्ठी पत्रव्यवहार द्वारा दुइ परिवारक परिवेशक जीवन्त चित्र बनबैत अछि । दुनूक पत्र-व्यवहार एकटा कलात्मक पत्रात्मक उपन्यासक रूप लऽ लेलक अछि ।

मनुष्यके चीन्हब एकटा कला थीक । प्रत्येक पुरुष भिन्न-भिन्न नारीके देखैत अछि । उर्दूमे एकटा शायरी छैक- "चाँद को देखो चकोरी की नजर से" । श्रीरामदेवजी जाहि नजरिसँ नारीके' अंगरेजीफूलक चिट्ठीमे प्रस्तुत कयलनि अछि ओ विलक्षण अनुभूति कहल जायत । ग्रामीण वातावरणसँ प्रभावित गामवाली अंगरेजीफूल अपन भावनाकेँ कोन रूपमे प्रस्तुत करैत अछि से द्रष्टव्य थीक- **बेटी जँ सासुरमे रहैत अछि तँ नैहरपर मोन लागल रहैत छैक । होइत रहैत छैक कोन बाट भेटय जे नैहर कऽ पड़ाइ, मुदा नैहरक मान तँ चारि दिना होइत छैक । जहाँ बेटी चारियो मास रहल कि सभके बलाय लागऽ लगैत छैक ।** एहि उक्ति मात्रमे ग्राम्य वातावरणमे पालित नारी हृदयक सहिष्णुता, आत्म-निरीक्षण एवं वाक्पटुताक सम्मिश्रण भेटैत अछि ।

श्रीरामदेवजीक बहुतो कृति पढ़ल अछि जेना **एक खीरा : तीन फाँक, मनुक सन्तान, इजोतीरानी, धरती माता,**

Scanned by CamScanner

बहिनाक विरोग एवं रामजोड़ी कागतक पाँखिपर आदि । अंगरेजीफूलक चिट्ठीमे नारी जीवनक विभिन्न समस्याकेँ कथाक स्वरूप प्रदान कऽ ओकरा रोचक सृजनात्मक दृष्टिकोणसँ लिखल गेल अछि । एहि पोथीमे पैंतालिस गोट चिट्ठी अछि । प्राय: प्रत्येक चिट्ठी अपन निजी समस्याक समाधानमे गामसँ पटना ओ पटनासँ गाम अवैछ । समाधान करबाक क्षमता भौतिक 'श्रीराम' मे नहि, आध्यात्मिक 'देव' मे छनि । तेँ दुनूक संयुक्त आशीर्वादसँ दुनू अंगरेजीफूलक सेहन्ता पूर होइत छनि । यैह थीक लेखकक सफलता ।

कतेको मैथिलीक विशिष्ट साहित्यकार ओ आलोचक लोकनि अंगरेजीफूलक चिट्ठीकेँ उपन्यास कहलनि अछि । उपन्यास कोनो भारतीय साहित्यक देन नहि अपितु पाश्चात्य देशक प्रभाव थिक । विभिन्न विद्वान, सभ एकरा भिन्न-भिन्न रूपमे परिभाषित कयलनि अछि । हमरा मतेँ उपन्यास, साहित्यक ओ विधा थीक जाहिमे घटनाक प्रधानता हो, पात्रक जीवन-चित्रमे स्वाभाविकता हो । जाहि परिप्रेक्ष्यमे समाजक भावना प्रदर्शित हो, ओही वाताकरणक अनुकूल कथानक होयबाक चाही । यदि एहि तुलादण्डपर सुसंगठित चित्र उपस्थित होइछ तँ ओकरे नाम उपन्यास होयबाक चाही । प्रस्तुत अंगरेजीफूलक चिट्ठी घटना प्रधान अछि, पात्रमे सहजता छैक एवं ई ग्रामीण ओ शहरी वातावरणसँ संयुक्त अछि । तेँ ई विशुद्ध प्रयोगधर्मी उपन्यासक कोटिमे आबि जाइछ । अंगरेजीफूलक चिट्ठी पत्रक शैलीमे भने प्रस्तुत अछि परंच चिट्ठीक अन्त:करणमे जे भावना निहित छैक ओ पूर्णतया उपन्यासक लक्षणपर आधारित अछि ।

ई बात निश्चित अछि जे श्रीरामदेवजी एकरा उपन्यास बूझि नहि लिखने रहथि । ई हिनक साहित्यकारक परिपक्कता छनि जे ओ उपन्यासक मान्य परिभाषासँ हटि साहित्यमे एकटा नवीन ढंगक प्रयोग कयलनि । समीक्षककेँ एहि रूपमे एकटा अभिनव वस्तु भेटलैक आ ओ एकरा उपन्यासक कोटिमे राखि, मान्यता प्रदान कयलक । 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' घटना प्रधान उपन्यासक कोटिमे अबैत अछि । प्रत्येक चिट्ठी 'आगूक' प्रतीक्षा करबैछ । कथा अथवा उपन्यासक सार्थकता तखने छैक जखन कि पाठककेँ ई बुझना जाइक जे ओ कथा-वस्तु ओकरे जीवनक चित्र थिकैक । लेखक ओकरे हृदयक भाव प्रस्तुत कयने छथिन । उपन्यासक भाषा पक्ष, गद्य साहित्यक कसौटी होइछ । पात्रक भाव उपन्यासमे दुइ रूपसँ प्रस्तुत होइछ । प्रथम शौर्य अथवा शक्ति, द्वितीय प्रेम रूपमे । अंगरेजीफूलक चिट्ठी दुइ सखीक प्रेम कथाक सर्वोत्कृष्ट उदाहरण अछि । तत्त्वक दृष्टिकोणसँ उपन्यासक दुइ तरहक वर्गीकरण भेल अछि– घटना प्रधान एवं चरित्र प्रधान । अंगरेजीफूलक चिट्ठीकेँ घटना प्रधान उपन्यासक रूप पत्रात्मक शैलीमे देल गेल अछि । कारण अग्रिम घटना की होयत वा की भेल ? ई प्रश्न अनुत्तरित रहैछ, तेँ पाठकक समक्ष जिज्ञासा रहि जाइछ । **तोरा हमरे सप्पत जल्दी सूचित करिहे**ँ पत्र लेखिकाक ई उक्ति केवल ओकरे व्याकुलताकेँ नहि अपितु पाठकक उत्सुकताकेँ सेहो बढ़बैत अछि जे आब आगू की होयतैक ? ई भाषा प्रयोग नारी जीवनक सहज भावकेँ दिग्दर्शित करैछ ।

पत्र तीनमे ग्रामीण नारीक हृदयक सहज भाव कतेक सुन्दर रूपसँ अभिव्यक्त भेल अछि से द्रष्टत्व- **एतबे भरोस अछि अंगरेजीफूल, गहना-गुड़िया कि पैसा-कौड़ी लेखेँ हम कतबो अभागलि रही, मुदा हुनकर आवेश देखि कऽ करेज जुड़ा जाइत अछि । हमरा सन अभागलिकेँ आर की चाही ? दू चुटकी सिन्नुर आ स्वामीक सिनेह भेटैत रहय । भगवानकेँ सभ दिन एतबे कहैत छियनि जे जा जीवी ता ई दुनू टा कायम रहय ।**

पत्र सातमे अपन हृदयक निर्द्वन्द्व भावक प्रकाश एकटा ग्रामीण नारी द्वारा एहि रूपेँ भेल अछि- **मौगी अपन पुरुखक आगाँमे अपन कोंढ़ो-करेज बाहर कऽ कऽ राखि दौक मुदा पुरुखकेँ ओकरासँ सन्तोष नहि होइत छैक । हय ! बड़ अभागलि होइत अछि मौगीक जाति । नेना रहओ तँ माय-बापक आश्रयमे रहऽ पड़ैत छैक, जुआन भऽ जाओ तँ स्वामीक खुट्टामे खुटेसल रहओ आ बूढ़ भेलापर बेटा-पुतोहुक मुँह धयने रहओ ।**

पत्र संख्या चौदहमे उपन्यासकार पुरुषक प्रति अंगरेजीफूलक ब्याजेँ अपन भावनाकेँ कोन रूपेँ प्रदर्शित कयलनि अछि से अनुभवजन्य विषय अछि- **ओ पुरुख स्वार्थी अछि जे नीकमे घरवालीक प्रेममे डूबल रहैत अछि आ असक्क भेलापर ओकरो कात कऽ दैत अछि ।**

Scanned by CamScanner

उपर्युक्त उद्धरण सबसँ प्रमाणित होइछ जे श्रीरामदेवजी पुरुष ओ नारीकेँ अपन एहि कृतिमे सम-भावक स्थान दैत ओकर वास्तविक स्वरूपकेँ चित्रित कयलनि अछि । अंगरेजीफूलक चिट्ठीमे कतहुँ विकृत प्रेम-वासनाक पुट पति-पत्नीक सम्बन्धक बीच नहि अबैत दृष्टिगत होइछ ।

अंगरेजीफूलक चिट्ठीमे भाषापर सेहो विचार करब आवश्यक । लेखक जाहि रूपेँ मिथिलाक दुइ नारीकेँ अपन मुख्य पात्री बनौलनि अछि तदनुरूपे ओकर भाषापर सेहो विलक्षण संयमक प्रयास रखलनि अछि । कतहु साहित्यिक कल्पना अथवा कोनो एहन दुरूह शब्दक व्यवहार नहि भेल अछि जे पाठककेँ पोथी पढ़बाक क्रममे मानसिक तनाव देनि वा भ्रान्ति उपस्थित होइनि ।

गाम-घरक सखी-बहिनपावला भाषाक प्रयोग भेलासँ प्रत्येक चिट्ठीमे रोचकता आबि गेल अछि । पटनामे रहऽवाली अंगरेजीफूल, अपन भाषामे कतहु शहरी शब्दक प्रयोग नहि कयलनि अछि । तेँ भाषाक दृष्टिकोणसँ लेखक मर्यादित रहल छथि जे एहि पोथीक विशेषता कहल जा सकैछ ।

उपर्युक्त रूपेँ विवेचन कयला उत्तर श्रीरामदेवजीक प्रति हम कोन शब्दमे अपन उद्‌गार व्यक्त करियनि तकर व्याख्या करब असम्भव बुझना जाइछ कारण हिनक सभ कृतिसँ बुझना जाइछ जे ई मैथिली साहित्यक 'इनसाइक्लोपिडिया' छथि, जाहि व्यक्तिक कृतित्वमे साहित्यक सभ विधा विद्यमान छनि ।



Scanned by CamScanner

स्त्री जागरणक पत्र अंगरेजीफूलक चिट्ठी

डा. श्रीकमलानन्दझा 'विभूति'

I

ओ समय बहुत दूर नहि जखन पत्र अजायबघरक वस्तु भऽ जायत । कारण टेलीफोन आ मोबाइलक विस्तार लोककेँ पत्र लिखबासँ वंचित कऽ देलक अछि । टेलीफोनक महत्त्व असन्दिग्ध अछि, ओकर चमत्कारी लाभसँ प्रतिपल-प्रतिक्षण हमरा लोकनि लाभान्वित होइत रहैत छी । मुदा इहो गप्प सत्य जे एकर बढ़ैत लोकप्रियता चिट्ठी-पत्री-संस्कृतिकेँ समाप्त कऽ रहल अछि । एहिमे टेलीफोनक दोष कम लोकक आलस्य भाव बेसी कार्य करैत अछि । आब औपचारिक पत्रेटा बेसी लिखल जाइत अछि । कार्यालयक गतिविधि आ आवेदन आदि पत्र रूपमे लिखल जाइछ । मुदा व्यक्तिगत पत्राचार क्रमशः समाप्त होयबापर अछि । पत्रमे जे आत्मीयता होइत छैक ओ फोनमे सम्भव नहि । पत्र सम्बन्धक डोरकेँ आओर अधिक मजगूत करैत छल । आपसी समझ, प्रेम, आओर स्नेहकेँ विस्तृत आयाम दैत छल, मुदा मोबाइल आ फोनपर गप्पसँ बेसी ध्यान तँ बिलपर टाङल रहैत छैक । हमरा जनैत पत्रसँ मोबाइलक यात्रा स्नेहसँ सूचना धरिक यात्रा अछि ।

पत्र कतेको अशिक्षित स्त्री-पुरुषकेँ शिक्षित बनयबाक माध्यम बनल । कहबियो छल जे– चिट्ठी-पतरी लिखऽ जोगर पढ़ि-लिखि ले ।' चिट्ठी-पतरीक संस्कृति भाषा-संस्कारकेँ निर्मित ओ परिष्कृत करबाक सशक्त माध्यम छल । लिखबाक अभ्याससँ भाषामे सौष्ठव अबैत अछि । बरोबरि बच्चेसँ पत्र लिखबाक कारणे पहिलुका विद्यार्थीक भाषा नीक रहैत छलैक । मुदा आइ-काल्हिक विद्यार्थीक भाषा अत्यन्त सोचनीय भऽ गेल अछि । कारण ओ लिखितहि नहि अछि । एहि सन्दर्भमे आजुक समयमे पत्र-साहित्य विशेष महत्त्वपूर्ण भऽ गेल अछि ।

मैथिली साहित्यक सुप्रसिद्ध रचनाकार श्रीरामदेवझाक अंगरेजीफूलक चिट्ठी (2002) सर्वप्रथम सन् 1960-61 मे मिथिला मिहिरमे धारावाहिक प्रकाशित भेल छलनि । आब ई प्रसंग नितान्त अप्रासंगिक जे वस्तुतः ई रचना रामदेवझाक छनि वा अन्यक । कारण पुस्तकाकार प्रकाशित अंगरेजीफूलक चिट्ठीमे मिथिला मिहिरक तत्कालीन सम्पादकक हस्तलिखित प्रमाण-पत्र प्रकाशित छनि जाहिमे ओ स्पष्ट रूपेँ लिखने छथि जे– अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग आ रामजोड़ी कागतक पाँखिपर श्रीरामदेवझाक लिखल थिकनि ।' एहि घोषणाक बाद कोनो तरहक सन्देहक अवकाश नहि रहि जाइछ । तथापि जँ केओ ई बात मानबाक लेल तैयार नहि होइत छथि तँ ई हुनक मथबाहि भऽ सकैत छनि, पाठकक नहि ।

ध्यान देबाक बात ई जे सन् 1960 मे श्रीरामदेवझा एहि पत्रकेँ कॉलम रूपमे लिखैत छलाह । रामदेवबाबू ओहि समयमे पटना विश्वविद्यालयमे स्नातकोत्तरक छात्र छलाह । एहि रचनाक पाछू निश्चित रूपेँ हुनक उद्देश्य मैथिली साहित्यमे अन्यान्य विधाक विकास आओर परिष्कार छल होयतनि कारण ओहि समयमे ओ आइयो कविता, कथा, उपन्यास आ निबन्धे बेसी लिखल जाइछ । अन्य विधा उपेक्षित रहि जाइछ । अंगरेजीफूलक चिट्ठीक महत्त्व एक दिस पत्र साहित्य रूपमे विधाक विविधता कारणेँ अछि तँ दोसर दिन पत्रात्मक उपन्यास रूपमे शैलीक वैविध्यक कारणेँ सेहो ।

श्रीरामदेवझासँ पूर्व मैथिलीमे पत्रात्मक शैलीमे कथाक रचना भऽ चुकल छल । हरिमोहनझाक 'पाँच-पत्र' मैथिलीएटा नहि सम्पूर्ण भारतीय भाषाक गौरव-कथा अछि । मुदा 'पाँच-पत्र' अत्यन्त संक्षिप्त पत्रात्मक कथा अछि ।

Scanned by CamScanner

वस्तुत: संक्षिप्ततेमे ओकर कलात्मकता निहित छैक । मुदा रामदेवझाक 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' वृहत आ विस्तृत रचना अछि । एहि रचनामे लेखक जाहि कुशलतासँ सामन्जस्य स्थापित कयलनि अछि ओ प्रशंसनीय अछि । छोट पत्रमे सामंजस्यक निर्वहन सरल होइछ, मुदा अधिकाधिक पत्रमे एकर निर्वहन कठिन भऽ जाइछ । दोसर, 'पाँच-पत्र' एकहि गोटा द्वारा एकहि दिससँ लिखल गेल रचना अछि । एहि तरहक पत्रमे भाव-विचलनक भय नहि रहैत अछि, मुदा एक लेखक द्वारा दू वा दूसँ बेसी लोक दिससँ पत्र लिखबामे भाव विचलनक सम्भावना अधिक रहैत अछि । 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' दू सखीक आपसी पत्र अछि । रचनाक महत्त्व एहि बातमे जे कतहु भावक स्खलन नहि होइत अछि । ई बूझब अत्यन्त दुरूह जे कोना एकहि गोटा द्वारा दुनू दिसका पत्र लिखल गेल अछि ? एहि कलामे वैह पारंगत भऽ सकैत अछि जे नाटककार हो । ई मात्र संयोग नहि जे श्रीरामदेवझा बादमे 'पसिझैत पाथर' सदृश नाटक लिखलनि । 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी'क नेपथ्यमे 'पसिझैत पाथरक' बीजारोपण भऽ चुकल छल ।

अन्य भारतीय भाषामे सेहो पत्रात्मक उपन्यास लिखल गेल अछि । बंगला साहित्यमे निमाईभट्टाचार्यक 'मेमसाहब' आ विभूतिभूषण मुखोपाध्यायक 'कुशी प्राङ्गेणेर चिठि' विशेष लोकप्रिय अछि । सम्पूर्ण 'मेमसाहेब' एक-हिटा पत्रमे समाप्त भऽ जाइछ । आत्मकथात्मक शैलीमे बच्चू अपन भाउज 'दोलाभाभी'केँ पत्र लिखैत अछि । एहिमे दू मत नहि जे 'मेमसाहब' सफल उपन्यास अछि । अपना समयमे ई उपन्यासक युवा वर्गमे धूम मचौने छल । एकर रोमंटिक भाव-बोध आ प्रेमक नव-नव व्याख्या उपन्यासक लोकप्रियतामे सहायक भेल । मुदा एकहि पत्रमे उपन्यासक अन्त, उपन्यास कम प्रलाप बेसी बूझि पड़ैछ । पत्रक आनन्द उत्तर-प्रत्युत्तरमे होइछ । 'मेमसाहब' एहिसँ वंचित रहि जाइछ । तेँ 'मेमसाहेब'केँ सफल पत्रात्मक उपन्यास नहि कहल जा सकैछ ।

विभूतिबाबूक 'कुशी प्राङ्गेणेर चिठि' निश्चित रूपेँ कालजयी रचना थिक । एहिमे सम्पूर्ण कोशी क्षेत्र अपन सम्पूर्ण सामर्थ्य आ सीमाक संग जगजियार भऽ गेल अछि । मिथिलाक नीक आ अधलाहक मूल्यांकन निरपेक्ष भावेँ मुदा अद्‌भुत कलात्मकताक संग कयल गेल अछि । कोशीक चारुकात पसरल मिथिलाक सूक्ष्म रेखांकन देखबाक हो तँ ई रचना अवश्य पढ़बाक चाही । मुदा ई रचना उपन्याससँ बेसी यात्रा-साहित्यक निकट बुझि पड़ैछ । रचना पढ़लासँ स्पष्ट बुझाइछ जे वाहन चलि रहल अछि आ बाइसकोपसँ लेखक मिथिलाकेँ निहारि रहल छथि ।

II

'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' मिथिलाक नारीक दीन दशाक करुण महागाथा रचैत अछि । सन् 1960मे ने तँ नारीवादी लेखन प्रकाशमे आयल छल आ ने नारी विमर्श । कथा रचना आदिमे यद्यपि नारी पीड़ाक वर्णन होइत छल, मुदा सिद्धान्त रूपेँ एहि विषयक स्थापना नहि भेल छल ।

रामदेवझाक अंगरेजीफूलक चिट्ठीक अर्थवत्ता एहि बातमे निहित अछि जे ओ 1960मे स्त्री पीड़ाकेँ अत्यन्त लऽगसँ अनुभव कयलनि आ ओकरा अत्यन्त रोचक आ सरल बना पाठकक समक्ष प्रस्तुत कयलनि । एहि रचनामे सामान्य साक्षरा दू गोट मैथिल स्त्रीक बहाने सामान्य मैथिल स्त्री जातिक दशा उजागर भेल अछि । गाममे रहनिहारि एकटा स्त्री जखन अपन सखीकेँ लिखैत अछि जे– **मिथिलाक मौगी तँ चिड़ै जकाँ अपन मोनक विषादकेँ घरक देबालमे ढाहियो मारि कऽ तँ नहि बहार कऽ पबैत अछि** तँ ओकर अथाह कष्टकेँ बुझल जा सकैत अछि । वास्तवमे मिथिले नहि सम्पूर्ण संसारमे स्त्री जातिक कष्टक अन्त नहि । पटनामे येन-केन प्रकारेँ बास करऽबाली सखी जखन लिखैत अछि जे– **विधाता मौगी बना कऽ जनम किएक देलनि** तँ तुलसीदासक एहि पंक्तिक स्मरण स्वाभाविक जे 'पराधीन सपनेहुँ सुख नाही' । स्त्रीक पराधीनताक शृंखला कतहु टुटैत नहि अछि । स्त्री गाममे रहय वा पटनामे, दिल्लीमे रहय वा इंगलैंडमे सभतरि ओ पराधीन अछि । अंगरेजीफूलक चिट्ठी एहि तथ्यकेँ स्थापित करबामे पूर्ण सफल भेल अछि ।

एहि पुरुष निर्मित संसारमे स्त्रीकेँ सपनो देखबाक स्वतन्त्रता नहि । सपना देखबाक वयस सुरू भेल नहि कि उचित-अनुचितक फिरिस्त टाँगि देल जाइत छैक । सरिपहुँ सबसँ पीड़ादायक स्थिति होइछ सपनाकेँ मारि देब ।

Scanned by CamScanner

आकांक्षाक गरदनि घोंटि देब । आइयो मिथिलाक हजारो-हजार बालिकाक सपनाकेँ थौआ कऽ देल जाइत अछि । पढ़बाक सपनाकेँ, आगू बढ़बाक सपनाकेँ, खेलाड़ी बनबाक सपनाकेँ । सपना देखबासँ पहिनहि वियाह रूपमे ओकरा कोनो-ने-कोनो खुट्टासँ बान्हि देल जाइत छैक । सम्पूर्ण जिनगी ओ मेहक बड़द जकाँ अपनहि पैरसँ अपन सपनाकेँ खूने-खूनाम करैत रहि जाइत अछि । अंगरेजीफूलक चिट्ठीमे एहि वेदनाकेँ लेखक अत्यन्त यथार्थ रूपेँ प्रस्तुत कयलनि अछि– **हमरा लोकनि तँ जहाँ दस-बरखक भेलहुँ कि हुड़पेट्टा भेटऽ लगैत अछि - एना चल तँ एना बाज, एना नूआ पहिर तँ एना आँचर राख । एना-ओनाक छौंकी खा कऽ हमरा लोकनि नेनहिमे बूढ़ि बनाओल जाइत छी । नेनेमे बियाह होइत अछि आ नेनेमे धिया-पुताक परिचर्या करऽ पड़ैत अछि । ने घर-आश्रमक ब्योंत बुझैत छी आ ने दुनियाँक कोनो अनुभव कऽ पबैत छी कि आश्रमक हऽरमे जोति देल जाइत छी आ सासु-ससुर, देओर-भैंसुर आ घरबलाक तोख राखऽ लेल अधियाय पड़ैत अछि ।**

बाँझपन स्त्री जातिक सभसँ पैघ दंश होइत अछि । कोनो स्त्री मरि जायब स्वीकार कऽ सकैत अछि मुदा बाँझ भऽ जिनगी कटनाइ स्वीकार नहि कऽ सकैत अछि । विज्ञान एहि तथ्यकेँ प्रमाणित कऽ चुकल अछि जे कोनो स्त्रीकेँ बच्चा नहि होयबामे बेसी दोष पुरुषेक होइत छैक । दोषी पुरुष होइत अछि मुदा एकर दण्ड स्त्रीकेँ भेटैत छैक । सामाजिक घृणा पारिवारिक उपेक्षाक संग पति द्वारा सन्तान हेतु दोसर बियाह कऽ सौतिन आनब, स्त्रीक सभसँ पैघ अपमान होइछ। सुखद तथ्य ई जे आब ई प्रवृत्ति समाजमे कम भऽ रहल अछि । मुदा पूर्वमे थोकक थोक भावमे पुरुष सन्तानक हेतु दोसर बियाह कऽ लैत छलाह । एकटा तँ सामान्य स्त्रीक जीवन दूभर आ ऊपरसँ एहि तरहक अपमान, कोनो स्त्रीक लेल असह्य होअऽवला । 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' मे एहि वेदनाक अत्यन्त सजीव आ भावप्रवण अंकन भेल अछि । रामदेवबाबूकेँ मार्मिक स्थलसबकेँ चिन्हबाक अद्‌भुत दृष्टि छनि । सखी अपन दुखक गाथा लिखैत कहैत अछि– **आब भरि जनम तोहर मीसर (घरबला) सेहन्ते बनि कऽ रहि जयताह । ...जँ यैह करबाक छलनि तँ सुरूमे एतेक दुलारे किएक कयलनि। ओरेसँ झरकौने किएक ने रहलाह । ओरक झरकाओल नीक, परिकाओल नहि नीक ...हय, जखन घरमे नवकी कनियाँ आबि जयतैक तँ सभ रहत ओकरे अल-दलमे । हम अछोप जकाँ एक कात, कोनो कोनमे बैसलि रहब । छुतहर बासन जकाँ फेकलि रहब । टुटलाही छितनी जकाँ ओंघरायल रहब । बहारनि-सोहरनि जकाँ कोनो कोनमे पड़लि रहब ।** बाँझ स्त्रीक हेतु लेखक जे-जे उपमा देलनि अछि ओ मैथिली स्त्रीक दारुण आ हीन दशाक स्पष्ट परिचायक अछि ।

लेखक रामदेवझाकेँ स्त्री मनोदशाक गहींर बोध छनि । सन्देह स्त्री जातिक अनिवार्य धर्म होइत अछि । विशेष कऽ अपन घरबलाकेँ लऽ कऽ ओ सदिखन सन्देहक स्थितिमे रहैत अछि । सन्देह पुरुष स्वभाव सेहो होइछ । मुदा स्त्रीक सन्देही स्वभावमे असुरक्षा-भावनाक प्राधान्य रहैछ । ओ नीक जकाँ बुझैत अछि जे जँ ओकर घरबला ओकरा छोड़ि देथिन तऽ ओ कतहुक भऽ कऽ नहि रहि सकैत अछि ।

स्त्रीकेँ सायास स्वावलम्बनसँ दूर राखल जाइत अछि । ओकरा एहन स्थितिमे राखल जाइछ जे घरबलाकेँ अतिरिक्त किछु सोचिए नहि सकय । फलस्वरूप ओ सदिखन भयभीत आ सन्देहमे पड़ल रहैत अछि । यैह कारण थिक जे दुनू सखी अपन घरबलाक प्रति सन्देहक स्थितिमे पड़ि जाइछ । घरबलाक बैसाखीक सहारा लऽ जीवन गुदस्त कयनिहारि सभ स्त्रीगणक ई स्वभाव होइत अछि । लेखक स्त्री जातिक एहि स्वभावकेँ विलक्षण ढंगे सामने रखलनि अछि–**हय, अंगरेजीफूल ! हमरा तँ एमहर पता लागल अछि जखन हमरा डेराक दछिनवारी कातबला घरमे लोकक जुटान होअऽ लगलैक । एतेक दिन तोहर ओझा कतहु अन्तऽ एहि नाचवालीक सभक सुँघानी लेबऽ जाइत छलथुन । आब आफिससँ सोझे अबैत छथुन आ जल्दीसँ पानि पीबि पिठिया ठोक दौड़ैत छथुन ओही घरमे हय । कतेक बेर सुरफुरयलहुँ, कतेक हुलकी-बुलकी देलहुँ जे कनेक ओहि धोंछिया सभक मुँह देखतियेक मुदा से कहियो भऽ नहि सकल. .... हमरा करेजपर जे ई सभ भऽ रहल अछि तकरा हम कोना सहू ? हुनका मतिकेँ ई पटनियाँ मौगी सभ मारने जा रहल छनि, तकर कोनो उपाय एहि ठाम हमरा नहि भेटि रहल अछि ।**

एहि भावमे रामदेवझा एकहि संग स्त्री जातिक सामाजिक आ मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कऽ देलनि अछि । स्त्री

Scanned by CamScanner

जातिक असुरक्षा ग्रन्थिसँ उपजल सन्देही स्वभावक वास्तविकतासँ साक्षात्कार करबामे लेखक पूर्ण सफल रहलाह अछि । एहि उपन्यासक सार्थकता एहू बातमे अछि जे स्त्री लोकनिक सन्देही स्वभावक पाछू अन्तनिर्हित असुरक्षा-बोधकेँ हमरा लोकनि ठीकसँ बूझी आ तदनुकूल व्यवहार करी । कोनो जाति विशेषपर कोनो तरहक अवगुंणक ठप्पा लगयबासँ पहिने ओकर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण आवश्यक ।

मिथिलाक प्रगति आ विकासमे सबसँ बेसी बाधक अछि अन्धविश्वास । अन्धविश्वासक कोखिसँ प्रगति आ चेतनाक प्रस्फुटन सम्भव नहि । एतुक्का स्त्रीगण अन्धविश्वासमे आकण्ठ डूबलि छथि । स्त्री अपन बच्चाक प्रथम शिक्षक होइछ । फलस्वरूप ई अन्धविश्वासक बीज बच्चो सभमे चलि जाइत अछि । एही कारणे अन्धविश्वासक खेती खूब लहलहाइत रहैत अछि । रामदेवझा एहि वास्तविकतासँ खूब परिचित छथि । ओ ई खूब नीक जकाँ बुझैत छथि जे जँ मिथिलासँ अन्धविश्वासक जड़ि कटबाक अछि तँ स्त्रीगणक मोनसँ एहि कीड़ाकेँ हटायब-आवश्यक । ताहि कारणेँ दुनू सखीक पत्रव्यवहारमे बरोबरि अन्धविश्वासक आलोचना कयल जाइत अछि । दुनू सखी अन्धविश्वासकेँ प्रगतिक अवरोधक तत्त्व मानैत अछि । पटनाबाली सखी अन्धविश्वासक प्रसंग लिखैत अछि जे– **हमरा मोनमे होअऽ लागल अछि जे कतेको अन्धविश्वासकेँ लोक अनेरे उघने आबि रहल अछि । कतेको अन्धविश्वासक कारणेँ लोक अनेरे तबाह होइत रहैत अछि ।** गामबाली सखी सेहो ओहि अर्थमे देहाती नहि अछि । ओ अन्धविश्वासक जे व्याख्या करैत अछि से अद्भुत अछि । ओ लिखैत अछि जे– **भगवान मनुक्खकेँ बुद्धि एहि दुआरे देने छथिन जे लोक कोनो काज करबासँ पहिने सोचि लिअय आ तकरा बाद काज करय । जाफर रगड़ि कऽ नेनाकेँ चटौने जँ सर्दी छुटैत छैक तँ तकरा जाफरक गुण कहल जयतैक । मुदा पाथर रगड़ि कऽ जँ केओ एक बेर कोनो नेनाकेँ चटा देने होइक आ संयोगसँ ओहि नेनाक सर्दी छुटि गेल होइक तकर ई माने नहि जे सभ नेनाकेँ पाथर घसि कऽ चटाओल जाय । बिनु बुझने-सुझने पाथर घसब-सैह अन्धविश्वास थिकैक । हमरा लोकनिकेँ चाही जे एहन व्यर्थक पाथर घसऽसँ फराके रही ।** ई थिक एक सामान्य साक्षरा मैथिलानीक वैज्ञानिक दृष्टि । लेखक रामदेवबाबू मैथिल स्त्री समाजकेँ जगयबाक उद्देश्यसँ ई पत्र लिखलनि । अंगरेजीफूलक चिट्ठी अपन किछु सीमाक संग स्त्री जागरणक आख्यान थिक । ताहि कारणे सखी लिखैत अछि जे– **सत्त कहैत छियह अंगरेजीफूल, तिरहुतनी सब एखन एकदम्मसँ सूतलि अछि । ओकरा सभकेँ जगायब आवश्यक । ककरो तँ ई काज करहि पड़तैक, तोहर की विचार, से फड़िछा कऽ लिखिहह ।**

अंगरेजीफूलक चिट्ठीमे रामदेवबाबू पुरुष समाजकेँ खूब हुथाड़लनि अछि । एहि बातमे दू मत नहि जे स्त्रीक दुर्दशाक मुख्य कर्त्ता पुरुष समाज थिक । सम्पूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक संरचना पुरुष निर्मित अछि । पुरुष वर्चस्व आ पुरुष सत्तासँ आक्रान्त एहि दुनियाँमे स्त्रीकलेल कोनोटा स्थल नहि । एहि वास्तविकताक अत्यन्त यथार्थ कपड़छान लेखक एहि पोथीमे कयलनि अछि । पुरुषक छल-छद्मसँ लेखक पूर्ण परिचित छथि तेँ अंगरेजीफूल स्पष्ट रूपेँ कहैत अछि– **पुरुष अपनाकेँ कमौआ आ मालिक बुझैत अछि । अपन घरबालीकेँ नौड़िन ।... हय, पुरुष जँ घरमे काज करैत अछि कि खटैत अछि तँ स्त्रीगणे कोन पलंग पर सूतलि रहैत अछि ? स्त्रीगण जेना दिन-राति आश्रमक काज-धन्धाक पाछाँ बेहाल रहैत अछि आ कि अपस्याँत रहैत अछि तेना जँ पुरुषकेँ करऽ पड़ौक तँ दुइये दिनमे सभ दशा भऽ जयतैक ।"** दुनू सखी पुरुषक नख-दन्तसँ खूब परिचित छथि, पुरुष अपने की होइत अछि से कोनो स्त्रीगणक बुतेँ चीन्हब-जानब कठिन होइत छैक ।

मैथिलानीक विदग्धता, वाक्चातुर्य आ बुद्धिमत्ता प्रसिद्ध अछि । सभ गाममे कतेको एहन अनपढ़ स्त्री भेटि जयतीह जनिक वाक्चार्तुयक आगू कतेको आइ.ए, बी.ए. फेल भऽ जयताह । तहिना जेना गमार गोपी सभक आगू विद्वान आ ज्ञान-गरिमासँ मंडित उद्धव निरस्त्र भऽ गेल छलाह । सम्पूर्ण पत्रमे मैथिल ललनाक ई स्वभाव विन्यस्त अछि । दुनू सखी अपन-अपन घरबलासँ जल्दी हारि नहि मानैत छथि । एक आध बेर तँ दुनू पुरुष अपन-अपन घरबालीक आगू नतमस्तक भऽ जाइत छथि । पत्रक माध्यमसँ लेखक इहो बुझयबाक प्रयास कयलनि अछि जे मैथिल महिला जतेक विनीत आ आज्ञाकारिणी होइत अछि ओतबे स्वाभिमानियो– **हय, हम कहि दैत छियह जे हम पहिने चिट्ठी किन्नहु ने लिखबनि । किन्नहु ने ।**

Scanned by CamScanner

मैथिलीमे कहबी छैक जे दू बहीन वा दू सखीमे प्रेमभाव आ ईर्ष्याभाव संगे-संगे चलैत रहैत छैक । रामदेव बाबू एहि मिथकें तोड़बाक सफल प्रयास 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी'मे कयलनि अछि । पत्र लेखिका दुनू सखीमे जाहिमे एकटा पटनामे शहरमे रहैत अछि, दोसर निट्ठाह गाममे । पटनाबालीक घरबला नोकरी करैत छथिन गामबालीक पति बेरोजगार छथि । पटनाबाली सखीकें पुत्र रत्नक प्राप्ति होइत छैक, गामबाली सखीकें एहि लेल बहुत प्रतीक्षा करऽ पड़ैत छैक । कहबाक आशय ई जे दुनूक स्थितिमे जमीन-आसमानक अन्तर अछि, मुदा दुनूक सम्बन्धमे ईर्ष्याक कोनो स्थान नहि । दुनू एक दोसरा लेल जान दैत अछि । सबसँ महत्त्वपूर्ण बात ई जे दुनू एक-दोसराक पर्याप्त सम्मान करैत अछि । अवसर पड़लापर सोझरायल सुझाव दैत अछि । पति-पत्नीक बीच पड़ि गेल भ्रम वा दराड़िकें पाटबाक अथक प्रयास करैत अछि । एक बेर जखन गामबाली सखीकें अपन पतिक संग मिसअंडरस्टैंडिंग भऽ जाइत छनि तँ पटनाबाली सखी बुझबैत लिखैत छथि– **तों धैरज धयने रहह । मिसरक लेल अपन मोनसँ एकोरत्ती सिनेह कम नहि करिहह । हुनका विषयमे कोनो अन्यथा नहि सोचिहह । हय, मौगीक सिनेहक डोरी बड़ सक्कत होइत छैक । मिसरक दिन थिकनि जे ओ एहि सिनेहक डोरीकें तोड़ि कऽ पड़ा जयताह ? हमरा तँ से विश्वास नहि अछि ?**

एहने स्थितिमे जखन एक बेर पटनोबाली पड़ि जाइत अछि तँ गामबालीक सोझरायल सुझावसँ पति-पत्नीक बीच पड़ि गेल भ्रमक निवारण भऽ जाइत अछि । एकटा असली सखी वा मित्रक यैह कर्त्तव्य होयबाक चाही । लेखक रामदेवबाबू पत्रक माध्यमसँ मिथिलाक स्त्रीगण समाजकें यैह सन्देश देबाक हेतु पत्र लिखैत छलाह । आब ई कहब कठिन जे ई पत्र पढ़ि कतेक स्त्रीगण अपन गुण-स्वभावकें बदलनि ।

III

रामदेवबाबू सन् 1960क स्त्री समाजमे जागरण लाबऽ चाहैत छलाह । ओकरा ओकर हीन दशासँ मुक्ति दियाबऽ चाहैत छलाह । मुदा ई मुक्ति भेटत कोना ? ई मुक्ति निश्चित रूपें स्त्री समाजमे शिक्षाक प्रसारसँ भेटि सकत । आश्चर्यक विषय ई जे पत्रमे स्त्री शिक्षाक प्रचार-प्रसारपर बात नहि कयल गेल अछि । दुनू सखी निपट मूर्खा नहि अछि । समाजक दशा और दिशापर साकांक्ष नागरिक जकाँ चर्या-परिचर्या करैत अछि । स्त्रीक दीन दशापर दुनू घोर चिन्तित अछि । पुरुष समाजक नख-दन्तसँ नीक जकाँ परिचित अछि, तखन ओ अपनामे स्त्री-शिक्षापर विचार-विमर्श किएक नहि करैत अछि ? मैथिलानीक दीन दशाक उत्तरदायित्व मैथिल समाज अशिक्षाकें किएक नहि मानैत अछि ? एकर विपरीत घोर पारम्परिक स्त्री जकाँ पटनामे पढ़ैत स्त्रीक प्रति उपेक्षाक भाव किएक रखैत अछि ? पढ़त तँ बियाह बिलम्बसँ करबे करत, पढ़त तँ साइकिल चलयबे करत । लड़की द्वारा साइकिल चलायब कोनो समाजक लेल क्रान्ति मानल जा सकैछ । कारण साइकिल चलायब मात्र दूरिये कम नहि करैत अछि, मात्र समये नहि बचबैत अछि । साइकिल चालन स्त्रीमे आत्मविश्वास उत्पन्न करैत अछि । पिता वा भायक सुरक्षा कवचमे स्कूल-कॉलेज जायब ओकरा पराश्रित बनबैत छल । रिक्शा खर्चक भयसँ कतेको अभिभावक अपन बेटीकें स्कूल-कॉलेजमे नामे नहि लिखबैत छलाह । सन् 1960मे स्त्री शिक्षाक प्रचार आवश्यक छल, स्त्री समाजमे आत्मविश्वास भरब आवश्यक छल ।

पटनाबाली सखी पटनाक स्त्री समाजक सम्बन्धमे गामबाली सखीकें पत्र लिखैत अछि– **हय, हमरा लोकनिक वयसक मौगी सभ नेने बुझल जाइत छैक एहि ठाम । बीस-बीस बरखक छौंड़ी सभ उतान भेल दलकल फिरैत अछि । ने सिउंथिमे सिनुर आ ने माथपर नूआ । कतेक तँ केशो पुरुषे जकाँ छटबौने रहैत छैक । से एहन जगरजाठि सन-सन छौंड़ी सभ हेँज बान्हि इसकुल-कॉलेज जाइत अछि । कथी लेल ककरो बियाह भेल रहतैक आ कथी लेल केओ कोनो पुरुषकें पुरुष बुझतैक ।** पत्र लिखनाहरि सखीकें एक क्षणक लेल ई जिनगी नीक लगैत छैक आ सेहन्ता होइत छैक एहन तरहक जिनगीक, जाहि जिनगीमे कम बयसमे स्त्रीक विवाह नहि होइत छैक, स्त्रियोकें अपन जिनगी अपन मोनसँ जीबाक स्वतन्त्रता छैक । मुदा गामबाली सखी वैचारिक आधार दैत निर्णायक ढंगसँ लिखैत अछि– **दुखो भेल ई जानि कऽ जे एमहर आबि कऽ तोरा पटनियाँ मौगीक जिनगी नीक लागऽ लागल छह । तोँही पहिने ओकरा सभक खेरहा लिखने छलह, आब कोन बात भऽ गेलैक जे ओकरे सन जिनगी पयबाक सेहन्ता भऽ गेल छह । ओ बेसी बयस धरि**

Scanned by CamScanner

कुमारि रहैत अछि, जगरजठि जकाँ सौंसे दुनिया दलकैत फिरैत अछि, से की नीक लोकक काज भेलैक ? **ओ सुनलनि जे तोरा मोनमे एहन-एहन बात उठैत छह तँ पहिने हँसलाह, फेर बादमे कहलनि जे – हमरा लोकनि नीक छी आ हमरा लोकनिक रेवाज नीक अछि ।** जँ एहि सम्पूर्ण प्रसंगक ई आशय निकालल जाय तँ की गलत होयत जे 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' मैथिल समाजमे कम बयसमे स्त्रीक बियाहक सन्देश दैत अछि । सामान्य साक्षरा भऽ पतिकेँ परमेश्वर मानि ओकर अधीनता स्वीकार करबाक उपदेश दैत अछि । 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' मैथिल स्त्रीक लेल घोर पारम्परिक आचार संहिता सेहो निर्मित करैत अछि– **एक बात मोन राखह, आब जखन बाजा-भुकी होअह तँ हुनकासँ नीक-बेजाय पुछैत रहियहुन । हय, गोड़ लगने क्यो नमहर छोट नहि भऽ जाइत छैक । ....हुनका देह-तेह नहि जँतैत छहुन, गोड़ नहि लगैत छहुन, से बुझि कऽ बड़ छोह भेल ।** कहबाक तात्पर्य ई जे नारी वर्गक चिड़ै-चुनमुन्नीसँ खराप जिनगीक कारण अशिक्षा अछि, मुदा अंगरेजीफूलक चिट्ठीक' दूनू सखीकेँ कतहुसँ कचोट नहि होइत छैक जे कदाचित ओहो शिक्षिता होइत । इसकूल-कॉलेज जाइत, नोकरी करैत, पुरुषक कन्हासँ कन्हा मिला समाज आओर देशकेँ प्रगति आ विकासक पथपर लऽ जाइत । सन् 1940 इ.मे लिखल हरिमोहनझाक उपन्यास 'द्विरागमन'मे मिस बिजलीक बहाने हरिमोहनबाबू मैथिल स्त्रीकेँ एही रूपमे देखऽ चाहैत छलाह । यद्यपि हरिमोहनबाबू ने तँ मार्क्सवादी छलाह आ ने वामपंथी । तथापि हुनक प्रगतिशील दृष्टि अद्भुत छलनि । आजुक मैथिल ललना मिस बिजलीक पथपर आगू बढ़ि रहलीह अछि । हरिमोहनबाबू आ रामदेवबाबूक मुख्य अन्तर यैह छनि जे रामदेवबाबू पत्नीकेँ अनुगामिनी मानैत छथि आ हरिमोहनबाबू सहगामिनी ।

रामदेवबाबू अत्यन्त कुशलतापूर्वक स्त्री समाजक हीन दशाक हेतु प्रमुख दोषी पुरुष समाजकेँ एकर दायित्वसँ साफ बचा लैत छथि । एक दिश ओ पुरुष समाजक छल-कपटकेँ सेहो रेखांकित करैत छथि मुदा दोसर दिश ओकरा साफ 'क्लिन चिट' सेहो दऽ दैत छथि । वास्तवमे एहिसँ साँपो मरि जाइत अछि आ लाठियो नहि टुटैत अछि । सम्पूर्ण रचनामे दुइयेटा पुरुष-पात्र अछि आ दुनू सर्वथा निर्दोष आ महान बनल रहैत अछि । भ्रमक शिकार दुनू स्त्रिये होइत अछि । सभ बेर स्त्रिये मनबैत अछि– **तोरा तँ एहि दुआरे लिखलियह जे तोँ हमरा मीसरकेँ मना लेबह । से तोँ कयलह नहि आ हमरेपर तमसा गेलह । हय, पुरुषसँ रूसि कऽ मौगीकेँ कोन फल ? मौगीकेँ भगवान बनौलथिन अछि तेना जे ओकरा पुरुषक नजरिक नीचाँ रहऽ पड़ैत छैक । हमरापर तँ बीतल अछि सभ बात । तोँही तँ बोल-भरोस देने छलीह जे हम कोना की करी आ आब तोँ अपने हमरा मीसरसँ बाजब -भूकब छोड़ि देने छह । ओ नहि बजैत छथुन तँ तोँ अपनो, बलसँ किएक ने टोकैत छहुन ?**

IV

अंगरेजीफूलक चिट्ठीकेँ विधाक सीमामे आबद्ध नहि कयल जा सकैत अछि । कतेको बेर श्रेष्ठ रचना विधाक सीमाकेँ अतिक्रमण कऽ जाइत अछि । महादेवीवर्माक गद्य रचना संस्मरण थिकनि वा रेखाचित्र वा कथा, आइ धरि अनिर्णित अछि । आलोचक अपना हिसाबे विधाक निर्धारण करैत रहलाह अछि । मैथिलीक कतेको विद्वान 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी'केँ उपन्यास मानैत छथि । उपन्यास मानबामे कतहु-नहि-कतहु उपन्यास विधाकेँ सर्वश्रेष्ठ विधा स्वीकार करबाक बोध निहित अछि । हमरा जनैत सभ विधाक महत्त्व एके रंग होइत छैक । महत्त्वपूर्ण होइछ रचनाक कलात्मकता आओर गुणवत्ता । बालमुकुन्द गुप्त 'शिवशम्भु का चिट्ठा' लिखि हिन्दी साहित्यमे अमर भऽ गेलाह आ चन्द्रधरशर्मा गुलेरी **'उसने कहा था'** कथा लिखि । हमरा जनैत 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी'केँ पत्र साहित्यमे नहि राखि उपन्यास विधामे राखब पत्र साहित्यक अपमान थिक । 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी'केँ उत्कृष्ट कलात्मक पत्र साहित्य मानल जयबाक चाही ।

उपन्यास हेतु जाहि तरहक कथा आ उपकथाक प्रयोजन होइत रहल अछि, अंगरेजीफूलक चिट्ठीमे तकर अभाव बुझना जाइछ । नायक तँ पृष्ठभूमिमे रहैत अछि, जँ ओकरा नारी प्रधान उपन्यास मानी तँ नायिकाक कोनो खास विशेषता दुनू सखीमेसँ ककरो नहि छैक । नायक वा नायिकामे सामान्यतामे असमान्यता होयबाक चाही । जाहि तरहेँ गोदानक होरी सामान्य किसान अछि मुदा ओकरामे किछु असामान्यता सेहो रहैछ जे ओकरामे नायकत्व प्रदान करैत अछि ताहि

Scanned by CamScanner

तरहक वैशिष्ट्य सखी लोकनिमे नहि अछि । विविध रसक अभाव एवं विविध चरित्रक अभाव (चारित्रिक विविधता)सेहो एकरा उपन्यास विधासँ दूर लऽ जाइत अछि । पत्र-साहित्य मानबामे कठिनाइ यैह अछि जे वास्तविक पत्रेटाकेँ पत्र साहित्यमे राखल जाइछ । मुदा हमरा जनैत ई अनुचित । जखन साहित्यक सभ विधामे कल्पनाशीलताक पूर्ण गुंजाइश रहैछ तँ पत्र साहित्यमे कल्पनाशीलतासँ परहेज किएक ? 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी'केँ विलक्षण, कल्पनाशीलता आ कलात्मकतासँ भरल पत्र साहित्यमे राखल जयबाक चाही । मुदा ई विमर्शक विषय थिक आ एहि विषयपर विमर्श आमन्त्रित होयबाक चाही । सम्भव अछि एहि विमर्शसँ कोनो नब बात बहरा जाय ।

अंगरेजीफूलक चिट्ठीक भाषा अद्भुत आ विलक्षण अछि । भाषाक सामर्थ्यसँ लेखक नारी अन्तर्मनक कतेको तहकेँ खोलैत चल गेलाह अछि । सरल, सहज आ गोली जकाँ चलैत चिट्ठीक भाषाक अन्य विधाक भाषासँ भिन्न होइत अछि । रामदेवबाबू चिट्ठीक भाषाक असली नाड़ी पकड़लनि अछि । चिट्ठी लिखऽमे छोट-छोट बातकेँ स्मरण राखऽ पड़ैत छैक । लेखक एक-एकटा बातपर सधल दृष्टि रखलनि अछि । स्त्रीक शब्दावलियो पुरुषसँ भिन्न होइत अछि । रामदेव बाबूकेँ स्त्री शब्दावलीपर महारत हासिल छनि । जँ लेखककेँ एहि शब्दावलीक एतेक व्यापक ज्ञान नहि रहितनि तँ पत्र एतेक रोचक नहि भऽ पबैत । शब्दावलीक कमाल अछि जे ओहि समयमे लोक ई अनुमान नहि लगा सकल जे ई पत्र कोनो पुरुष लिखि रहल अछि । एहि शब्दावलीमे खाँटी मैथिली मोहावरा आओर लोकोक्तिक झाँसि, भाषा सौन्दर्यकेँ चारि गुना बढ़ा दैत अछि । कुल मिला कऽ कोनो रचनाक श्रेष्ठता ओकर लोकप्रियतामे निहित अछि । एहि अर्थमे 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' सन् 1960-61 मे अपन श्रेष्ठता सिद्ध कऽ चुकल अछि । आइयो स्त्री समाजमे 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' खूब लोकप्रिय भऽ सकैत अछि, मुदा तखन, जखन पोथी स्त्री समाज धरि पहुँचि पाबय । एहिमे पुस्तकक विज्ञापन आ प्रचार-प्रसारे सहायक भऽ सकैत अछि । 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' उत्कृष्ट कलात्मक रचना अछि, एहिमे दू मत नहि । ई पठनीयेटा नहि संग्रहणीय सेहो अछि ।

●

Scanned by CamScanner

उपन्यासक विकास-यात्रामे अभिनव प्रयोग

श्रीशशिबोधमिश्र 'शशि'

प्रो. रामदेवझा एकटा अप्रतिम प्रतिभाक नाम थिक जे अपन सम्पूर्ण ओज एवं तेजक संग विगत् छठम दशकसँ मैथिली साहित्याकाशमे अविराम चमकैत रहलाह अछि। कथाकृति, काव्य, नाट्यकृति, अनुवाद, पोथी एवं पत्र-पत्रिका-सम्पादनमे अग्रणी ई विद्वान साहित्कार अत्यन्त धैर्य एवं गाम्भीर्यक संग अपन सारस्वत साधनाक सुस्वादु ओ सुरभित प्रसाद, समस्त साहित्यानुरागी सुधी पाठकक बीच वितरित करैत रहलाह अछि। साहित्यमे चिन्तनक गहनता, विचारक प्रवणता ओ तेजोमय संस्कारक अभिव्यक्तिक एकटा पर्याय थिकाह प्रो. रामदेवझा जे पूर्वमे मिथिला मिहिरमे धारावाहिक रूपमे प्रकाशित पत्रात्मक शैलीक उपन्यास ओ आब पुस्तकाकार प्रकाशित **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** ओ **बहिनाक विरोग**मे प्रतिबिम्बित भऽ रहलाह अछि।

'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' तत्कालीन 'मिथिला मिहिर', मैथिली साप्ताहिकक अभूतपूर्व लोकप्रिय धारावाहिक स्तम्भ छल जकर प्रतीक्षामे पाठकक आँखि पथरायल रहैत छलैक, मोनमे प्रबल उत्कण्ठा जागल रहैत छलैक जे आब एकर बाद की ? एहन जिज्ञासा मोनकेँ उताहुल बनौने रहैत छलैक अर्थात् (Illusion and suspense) माया ओ अनिश्चितताक स्थितिमे पाठकक मनोमस्तिष्क बाझल रहैत छलैक। देश, काल, पात्र ओ परिस्थितिक आधार, कल्पनाक उड़ान ओ स्वत: प्रवर्त्तित भावक सिहकीमे हुनक सृजनशीलता अपन अद्भुत कमाल देखा रहल छल। 30 अक्टूबर 1960 सँ 20 अगस्त 1961 धरि हुनक ई धारावाहिक, मिथिला मिहिरक प्रमुख आकर्षण बनल रहल। कुल 45 गोट लिखल गेल कड़ीमे मात्र 41 टा ओहि साप्ताहिकमे प्रकाशित भऽ सकल छल, शेष चारि किस्त कोनो कारणवश प्रेसमे दबले रहि गेल। किछु अन्तरकालक पश्चात् पाठक लोकनिक धैर्यक बान्ह जखन टूटऽ लागल तँ सम्पादकक विशेष अनुरोधपर रामदेवबाबू दोसर शीर्षक 'बहिनाक विरोग' नामसँ स्तम्भ लिखि कऽ पठौनाइ आरम्भ कयलनि तँ ओकरो वैह लोकप्रियता ओ ख्याति भेटलैक। मुदा एहू स्तम्भक नियति वैह भेलैक जे 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी'क भेल रहय, अर्थात् लिखल गेल 32 किस्तमेसँ केवल 30 टा छपि सकल ओ बीचक 25म ओ 26म किस्त डाकक गड़बड़ीसँ छपि नहि सकल, मुदा वर्त्तमान पुस्तकाकार संस्करणमे सभ किस्तक सम्यक समावेश कऽ देल गेल अछि।

'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' दुइ गोट ससुरवासि, बाल संगिनीक कथा कहैत अछि जे विवाहोपरान्त एक दोसरासँ दूर एकटा ग्रामीण ओ दोसर शहरी परिवेशमे पत्राचारक माध्यमसँ एक दोसराक हर्ष-विषाद, आशा-निराशा, करुणा ओ प्रेमकेँ अति निकटसँ अकानि रहल अछि। एक दोसराक हृदयक स्पन्दनक अनुभव ओ विचार-विनिमय दुनूक वैवाहिक जीवनक पाथेय बनल छैक। एक सखी द्विरागमनक पश्चात् सासुरसँ घूरि नैहर आबि चुकल अछि तँ दोसर नवदुरगमनिञा। प्रथम जे एक बेर सासुरसँ घूरि आयलि अछि ओ अपन सखीसँ अनुभव बटैत अछि। एकटा दृष्टान्त उल्लेखनीय अछि। नवकनिञासँ सासुक अपेक्षा छनि जे हुनक पुतोहु शीघ्र पुत्रवती होथुन, हुनक कोर भरि जाउन। ओ एहि बातक संकेत बात-बातमे अपन पुतोहुकेँ दैत रहैत छथिन। एमहर हुनक पुतोहु अपन सासुक एहि अपेक्षाकेँ एतेक जल्दी पूर करबामे असमर्थ बूझि चिन्तामे अपन बहिनपाकेँ पत्र लिखैत छथिन- ..... **एहिमे हमर कोन दोख अछि ? हम आ तोँ दुनू गोटा तँ एक्के बतारी छी किने हय ? तोँहू तँ एखन धरि ओहिना छह ? तोहर की बोहायल जाइत छह ? हमरा सभक वयसे की भेल अछि ? मुदा हमरा मायकेँ तँ होइत छनि जे कहिया ओ दिन आओत ? जे काल्हि आबय**

Scanned by CamScanner

से आइये आबि जाय । तोँही कहह अंगरेजीफूल ! की ई बात सभ अपना सकमे छैक ? एतऽ मायक (सासुक) पुतोहुक प्रति कोनो कटु उलहन नहि भेटैत अछि केवल हुनक अपन पुतोहुसँ अपेक्षाक उल्लेख अछि जे प्रो. रामदेवझाक कथा-शिल्पक बड़का वैशिष्ट्य छनि । सासु-पुतोहुक बीच क्रमशः पुत्र ओ पतिक उपर अपन-अपन वर्चस्व स्थापनक स्पर्धाभाव किंवा सासु-पुतोहुक बीच कोनो मनोवैज्ञानिक शीत युद्धक विचार हुनक कथाकृतिमे अभरैत नहि प्रतीत होइत अछि । प्रो. झा केवल भारतीय आदर्शकेँ ध्यानमे राखि कथाक सृजन कयने छथि । वस्तुस्थिति एहिसँ भिन्नो भऽ सकैत छल । ओहि युगमे कतेको एहन परिवार छल होयत, जतऽ भारतीय परम्परागत आदर्शक उल्लंघनो होइत होयतैक, किंवा दुनू अंगरेजीफूलक परिवारमे कहियो सासु-पुतोहुक बीच कोनो बातपर वाक्-युद्ध सेहो भेले होयतैक, मुदा तकर कोनो प्रमाण एहि पत्रात्मक कथाकृतिमे नहि भेटैत अछि । प्रो. झाक ई कथाकृति निश्चित रूपेँ नारीलोकनिक चारित्रिक निर्माणमे सहायक अछि । प्रायः यैह ध्येय राखि कऽ कथाक रचना भेल अछि तकर प्रमाण गामक सखी द्वारा शहरी सखीकेँ लिखल गेल एकटा पत्रमे द्रष्टव्य अछि– **हमरा दुनू सासु-पुतोहुक सिनेह भावकेँ देखि कौखन-कौखन ओ चौलो कऽ बैसैत छथि । ओ मायकेँ कहैत छथिन - माय, हमरा सदिखन होइत अछि जे ई घर सासु-पुतोहुक सम्बन्ध जनिते नहि अछि । जँ झोँटा-झोँटौअलि आ कहा-सुनी नहि भेल तँ फेर सासु-पुतोहुक सम्बन्धे की भेल ? बूझि पड़ैत अछि, तोँ पुतोहुकेँ नोन पढ़ा कऽ तँ ने खोआ देलही अछि ?**

माय उतारा दैत छथिन– **हओ बौआ ! हमर पुतोहु गाय थिकीह, साक्षात् लक्ष्मी थिकीह । झोँटा-झोँटौअलि, उतरा-चौरी होइत छैक ओहि आङनमे जतऽ स्वार्थी लोकक अमार लागल रहैत छैक । हमर पुतोहु सन त्यागी के होयत ?** कथा-लेखक द्वारा प्रतिपादित एहन आदर्श जँ सगरे घर-घरमे पसरि जाइक तँ ई पृथ्वी स्वर्गहुसँ सुन्दर बनि जाय । लेखककेँ सैह काम्य छनि ।

प्रो.रामदेवझाक दोसर पत्रात्मक शैलीक कथाकृति छनि 'बहिनाक विरोग' जे 'मिथिला मिहिर'क तत्कालीन सम्पादक स्व. सुधांशुशेखरचौधरीक विशेष अनुरोधपर लिखल गेल छल आ अन्तरालपर पूर्वक सदृश एहू कृतिक सुस्वादु व्यंजनक स्वागत, पाठकवृन्दक दिसिसँ भेल छल । दुन पोथीक कथानकक परिवेशमे अन्तर अछि । 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी'मे एकटा सखी शहरी परिवेशमे रहि, देहाती परिवेशक अपन सखीसँ शहरक चकचकी भरल जिनगी, ओ मिथिलाक माटिक मह-मह करैत सुगन्धसँ विपरीत, अपसंस्कृतिक तांडवक बात करैत अछि तँ दोसर सखी, ग्रामीण परिवेशक अपन वैयक्तिक जीवनक अनुभूति, आशा-आकांक्षा ओ सुख-दुःखमे आयल आरोह-अवरोहक चर्च अपन पत्रादिमे करैत अछि । परन्तु 'बहिनाक विरोग'क दुनू नायिका सुच्चा ग्रामीण जीवन जीबि रहल अछि । एक गामसँ दोसर गाम पत्र पहुँचैत अछि एवं तकर उतारा सेहो दुनू ग्राम्य बालाक बीचहि तक सीमित अछि । उपर्युक्त दुनू पोथीमे मिथिलाक लोकवृत्तक सूक्ष्मसँ सूक्ष्मतम स्वरूपक दिग्दर्शन एकसमाने भेटैत अछि । पूर्वसँ आबि रहल मिथिलाक ग्राम्य जीवनक अन्धविश्वास किंवा परम्परा, टोना-टापर एवं ग्राम्यजीवनक यथेष्ट अभिज्ञता दुनू पोथीमे भेटैत अछि । स्त्रीयोचित वाक्-भंगिमा कथा लेखनक वैशिष्ट्य अछि । यैह कारण अछि जे कहियो सम्पादकजी अर्थात् स्व. सुधांशुशेखरचौधरी कथाकार श्रीरामदेवबाबूसँ कहने रहथिन– **... अहाँ मौगियाही बात सब नीक लिखते हैं ।'**

रामदेवबाबूक मौगियाही बात सभक किछु दृष्टान्त उल्लिखित अछि– **हय, बड़ सुन्दर तँ बुढ़ियाकाकी एकटा कहबी कहैत छथिन- देखैत-सुनैत महकारी आ तऽरमे बीया कारी, तँ सैह अछि ई पटना । उपरसँ देखैत बड़ दीब, बड़ सोहनगर, मुदा भीतरमे अगबे फूसि-फटक आ छल-प्रपंच भरल...** । -अंगरेजीफूलक चिट्ठी

हय, पुरुखकेँ चीन्हब बड़ कठिन काज छैक..... । भौगी दिन राति गोँहरि करौक, अपन देह दौक..... मुदा तैयो पुरुखाकेँ मौगीपर विश्वास नहि । -अंगरेजीफूलक चिट्ठी

हय बहिना ! तोँ एहन कठोर भऽ जयबह से हम बिसरभोरोमे ने सोचैत रही । हय, गामपर रहैत छलहुँ तँ दिनमे सतरह बेर पुछारी कऽ जाइत छलीह । ....लोको सभ कहैत रहैत छल जे जँ बहिना लागल छैक तँ फल्लीकेँ, से आब

Scanned by CamScanner

तोँ एहन निदरदी भऽ गेलीह जे अपना बहिनाक खोजो-खबरि ने लैत छह । होयबे करैत छैक जे आँखिक लेखेँ पीठ पछुआर । -बहिनाक विरोग

दुनू पत्रात्मक कथा कृतिमे मिथिलाक लोकोक्तिक अमार लागल अछि, ठेठ शब्दक सचार परसल अछि आ बहि रहल अछि वियोगक व्यथामे संवेदनाक पमार । सासुरक सुख, पतिक सान्निध्य आ बढ़ि गेल पारिवारिक बोझक दायित्वक बीचहु कखनो पितृधामक बाल्यावस्थाक मधुरिम क्षणक संस्मरण हृदयसँ दूर भगैत नहि भेटैत अछि । द्विरागमनक पश्चात् पहिले पहिल जखन कोनो कनिञा अपन सासुर दिस प्रस्थान करैत अछि तँ सखी-बहिनपा, नैहरक स्वजन-परिजन, अपन बाड़ी-झाड़ी, पोखरि-इनार, देवस्थान-मन्दिर, गाछी-बिरछी, बाध-बोन सभटा पाछाँ छूटल चलि जाइत छैक आ अनभोआर बाध-बोन सभ भेटैत जाइत छैक । ओकरा नैहरसँ सम्बन्ध छूटि जाइत छैक आ ओ एकटा अपरिचित स्थानसँ अपन परिचिति स्थापित कऽ लैत अछि । सैह ओकर अन्तिम नियति होइत छैक । परन्तु बाल्यावस्थाक बिताओल क्षणकेँ बुढ़ारी धरि किंवा मृत्युपर्यन्त ओ अपन हृदयमे समेटने रहि जाइत अछि, ओकरा उघितहि रहि जाइत अछि, ओ बुझैत अछि जे सभक संग ई घटना एक ने एक दिन अवश्यम्भावी छैक तथापि नियतिक एहेन बाध्यता अपन जन्मभूमिक परित्यागक टीससँ ओकरा मुक्ति नहि दऽ पबैत छैक । कथाकृतिक संवादादि, हृदयग्राही तँ अछिहे संगहि अत्यन्त सूचनाप्रद सेहो । मैथिली मे पत्रात्मक शैलीक ई दुनू संग्रह प्रथम औपन्यासिक कथाकृति थिक संगहि उपन्यासक विकासक यात्रामे एकटा प्रेरणास्तम्भ सेहो ।

●

Scanned by CamScanner

स्त्री-विमर्शक अँकुराइत बीया 'बहिनाक विरोग'

श्रीमतीज्योत्स्ना चन्द्रम्

सत्तरिम दशकमे मिथिलाक ग्रामीण क्षेत्रमे आधुनिकताक प्रवेश स्पष्ट नहि भेल छल । ताहि कालविशेषमे गाम अपन शुद्ध-सहज परिवेशमे जीबि रहल छल । आइ-काल्हि सन शहरुआ हवा-बसातसँ प्रदूषित नहि भेल छल । शुद्ध-सहज परिवेशमे साँस लैत मैथिल ललनाक लालित्यमे सेहो एकटा फराक छवि रहैत छल, जे ओकर परिचिति छल । निश्छलता, सहजता ओ वाक्पटुता ओकर स्वभावमे रचल-बसल छल । ताही दशकक मिथिलाक झलक प्रस्तुत करैत अछि- **बहिनाक विरोग** । पत्रशैलीमे रचित ई कथाकृति 1962मे साप्ताहिक 'मिथिला मिहिर'मे धारावाहिक रूपमे छपल छल । एहिमे कुल 32 गोट पत्र अछि । नवविवाहिता बच्चीदाइ गाममे अपन अभिन्न सखी संग 'बहिना' लगौने छलीह । दुरागमन भऽ सासुर अयलोपर बहिनाक प्रति आबेसमे रंचमात्र कमी नहि भेलनि । बच्चीदाइ बहिनाक नामे जे पत्र लिखलनि आ उतारामे जे बहिना लिखलथिन, ओ पत्र सभ, पत्र मात्र नहि, एकटा सम्पूर्ण दस्तावेज थिक । एकटा एहन दस्तावेज, जाहिमे मिथिलाक रीति-रेवाज, आचार-विचार, सांस्कृतिक-सामाजिक वैशिष्ट्य सम्पूर्णताक संग उद्घाटित भेल अछि । एकटा सात्विक मैथिल परिवेशक जीवन्त चित्र झलकैत अछि ।

बहिनाक विरोगक लघु कायामे विस्तृत फलक नुकायल अछि । कथाक सूत्रपात बच्चीदाइ द्वारा सासुरसँ लिखल पहिल पत्रसँ होइत अछि, जाहिमे सासुरक अपरिचित परिवेशक संग धखायलि बच्चीक नैहर-मोह आ बहिनाक प्रति आकुलता व्यक्त भेल अछि । जाहि बहिनापर एतेक विश्वास आ स्नेह छलनि, तनिकासँ उतारा नहि पाबि मान, छोह आ रोषक भाव उत्पन्न होयब, सेहो अनर्गल वा असंगत नहि । ई रोष तँ रागक प्रतिरूप थिक जे अपने लोकक प्रति जागि सकैत अछि । एकक बाद एक, कुल बारह गोट पत्र जखन लिखि चुकलीह बच्चीदाइ, तखन जा कऽ उतारा भेटलनि । आ फेर तँ पत्रक आदान-प्रदान चलऽ लागल । प्रत्येक पत्रक आखर-आखर मैथिल संस्कारमे बोरल, रोचकतासँ परिपूर्ण । भाषा तेहन, जेना अपनामे गप-सप करैत होइ । कतहु बनावटीपन वा नेयारि कऽ लिखल सनक आभास नहि । ई तँ स्वतः प्रवाहित कोनो पहाड़ी नदी सन निर्मल, मनकेँ स्पर्श करैत, गुदगुदबैत अपना संग बहबाक लेल विवश कऽ दैत अछि ।

एक झोँकमे पढ़ि गेलहुँ । सन्तोष नहि भेल । पुनः पढ़लहुँ । आ जखन पोथी रखलहुँ तँ बहुत रास प्रश्न मनमे उधिआय लागल छल । एकटा पुरुष लेखक द्वारा नारी मनोविज्ञानक, नारी-मनक सूक्ष्म जटिल दुरूहताक एहन स्पष्ट चित्रण कोना सम्भव भऽ सकल ? नारी-विमर्श आइ-काल्हि ज्वलन्त मुद्दाक रूपमे देखल-बूझल जा रहल अछि । की एहि पोथीमे नारी-विमर्शक झलक नहि अछि ? झलक अछि । हमरा आश्चर्य लगैत अछि जे ओहि कालमे लेखक कोना नारी-अस्मिता ओ स्वातन्त्र्यक लेल जागरूक छलाह, जकर उद्घोष बच्चीक संयत-शान्त स्वरूपक माध्यमे पोथीमे कयलनि ! सासुरमे बच्चीदाइक नामकरणक प्रसंगे बच्चीदाइक मनोभावमे ग्रामीण निश्छलताक संग नारी-अस्मिताक भाव कतेक सहज रूपेँ प्रकट भेल अछि से देखल जा सकैत अछि- **हे हय, जेना परिवारमे नव बच्चा जनमैत छैक, तँ ओकर नाम राखल जाइत छै । तहिना एतऽ हमरो बूझह । एहन सन जेना हमहूँ नबे जनमल होइ ।....**

'हे हय, ई कोन रीति भेलै जे लोक जन्म लेलक कतहु आ जिंनगी बितौलक कतहु ? माय-बाप, भाय-बहीन, बाबा-बाबी सन अपन लोक आन भऽ जाइत छैक आ आन ठामक लोक बलहुँ अपन बनि जाइत छैक । आन लोकसँ सम्बन्ध भेलापर कतहु सहजहिँ सिनेह अँकुरि कऽ लतरि-पसरि जाइत छैक आ कतहु करमक लिखलाहा बूझि सिनेह-सम्बन्धकेँ उपरका मनसँ जीवन भरि निमाहऽ पड़ैत छैक ।.....

Scanned by CamScanner

'विधाताक ई कोन विधान थिकनि ? ओ स्त्रिगणेक संग एना किएक करैत छथिन ? पुरुष-पातकेँ तँ एना नहि होइत छैक ?.... सभ किछु बदलि गेल । लोक-वेद बदलि गेल । धरती बदलि गेल । गाम बदलि गेल । एतेक धरि जे नाम सेहो बदलि गेल ।...'

नारी-स्वातन्त्र्य वा नारी-अस्मिताक नारा लगौनिहार लोकनि जे तर्क वा अवधारणा होउन, ई धरि सार्वभौम सत्य थिक जे नर आ नारी दुनू सृष्टिक संरचनामे समान रूपेँ सहभागी अछि । एकक अभावमे दोसरक कल्पना असम्भाव्य अछि । आ भारतीय संस्कृति एवं परम्परामे तँ आरम्भहिसँ नारीकेँ सर्वोच्च स्थान प्रदान कयल गेलैक अछि । नारी परिवारक केन्द्रबिन्दु-धुरी ओ संचालन-शक्ति थिकीह । जँ कतहु कोनो नारी शोषणक शिकार होइत छथि, तँ ओकरा पाछाँ अनेक सामाजिक कारण होइत अछि । शोषणकेँ मुद्दा बना हम कोनोटा पूर्वाग्रह पोसबाक पक्षधर नहि छी ।

नारीक मादे सोचब, ओकर मनोदशा बूझब, ओकर मर्यादा ओ प्रतिष्ठाक लेल विचारब-ई सभटा प्रसंग एहि पोथीमे बेर-बेर उठाओल गेल अछि । बच्चीदाइक बहिना, एकटा अशिक्षिता ग्रामीण बाला द्वारा परिवारक धुरी बनबा लेल स्त्री-शक्तिक आह्वान द्रष्टव्य अछि-

'नैहरक रटना रटब छोड़ि सासुरसँ सिनेह जोड़ह, सिनेह । सिनेह अपनेसँ नहि होइत छैक, ओ बनाबऽ पड़ैत छैक । से जाबत नैहरपर आसक्ति रहतह ताबत सासुरसँ मोह नहि होयतह, ई मानल बात ।... जाहि स्त्रीक सासुरमे मान-दान होइत छै, तकरे नैहरोमे होइत छै । जे सासुरमे गिरथाइन बनि कऽ रहैत अछि, तकरे नैहर, नैहर जकाँ होइत छैक ।'

आधुनिकताक प्रवाहमे उधियाइत भारतीय समाज आइ अपन सांस्कृतिक वैशिष्ट्यकेँ बिसरऽ लागल अछि । पाश्चात्य संस्कारक प्रभाव आ वैचारिक उच्छृंखलताक कारण विवाह-संस्थाक औचित्यपर प्रश्न उठाओल जा रहल अछि। तमाम समाजशास्त्री एहि मुद्दापर जुटल छथि । मुदा समस्या आर ओझरायले जा रहल अछि । नित्यप्रति दाम्पत्य-विच्छेदक संख्यामे वृद्धि भऽ रहल अछि । मुदा एकर पक्षधर प्रायः टुटैत विवाहक परिणाम अकारण टूअर-अनाथ बनैत धियापुताक मनोदशा आ स्थिति दिस नहि सोचि पाबि रहल छथि । ओहन धियापुता की स्वस्थ परिवेश पाबि रहल अछि ? की ओकर सही दिशामे व्यक्तित्व-विकास भऽ रहल छैक ? नहि । एकांगी परिवारमे से सम्भव नहि । परिवार तँ पति-पत्नीसँ होइत छैक । दुनूक समर्पण आ दायित्व बोध ओकर 'आधार' होइत अछि । विश्वाससँ सिन्चित भऽ ओ आभामंडित होइत अछि । रामदेवबाबू आइसँ कतोक वर्ष पूर्व एहि समस्याकेँ अकानलनि आ एकर रक्षाक लेल तत्पर भेलाह । देखल जा सकैछ एक उद्धरण-

'एखन जँ तोँ पाहुनक मोनमे नहि बसबहुन तँ फेर जिनगी भरि उपेखलिए रहि जयबह ।.... पाहुनकेँ हम खूब नीक जकाँ चिन्हैत छियनि । ओ बड़ गम्भीर लोक छथि । हुनका मोनमे अबस्से कोनो बातक दुख भेल होयतनि । तोँ अनधैर्य नहि होइहह । जँ एक बेर ओ जी खोलि कऽ बाजि देथुन तँ सभ मनोमालिन्य समाप्त भऽ जयतनि । जँ कोनो गलती भेल होअह तँ ओकरा सुधारह आ ओहि लेल पाहुनसँ मिनती कऽ कऽ छमा माँगि लैह । अपन लोकक लऽगमे लऽत होयबामे कोनो हानि-गरानि नहि होइत छैक ।'

बहिनाक विरोगमे लेखक विधि-व्यवहार, अरिपन-कोहबर, रीति-रेबाजक तेहन सूक्ष्म आ ग्राह्य चित्र वर्णित कयलनि अछि जे आबऽबला समय लेल धरोहरिक काज करत । मुदा एहि पोथीमे जाहि चरित्र सभकेँ केन्द्रित कऽ घटनाक्रमक कथा-तन्तु बूनल गेल अछि, ओ एकटा वर्गविशेषक रूप मानल जाइछ । मिथिलाक अर्थ ब्राह्मण-वर्गटा नहि । एहि कथा-रचनाक सभ रेशा एकटा वर्गविशेषक संस्कारसँ बन्हायल अछि, तेँ एकरा सम्पूर्ण मिथिलाक नारी-मनक चित्रण नहि मानल जा सकैए । मुदा हमरा जनैत ई लेखकक बाध्यता छलनि । जाहि परिवेश ओ संस्कारक लेखक प्रतिनिधित्व करैत छथि, ओहि वर्गक नारी-मनकेँ चिन्हबामे सफल भेल होयताह । तेँ प्रायः अपनाकेँ ओही वर्गक नारी-मनक चित्रण करबामे पटु बुझने होयताह ।

Scanned by CamScanner

छिद्रान्वेषी आलोचनाक हम पक्षधर नहि छी, तेँ एहि बिन्दुपर एकर आलोचना करब उचित नहि । हँ, एतबा जरूर कहब जे हरिमोहनबाबूक बुच्चीदाइ, रामदेवबाबूक बच्चीदाइ आ लिलीरेक हीरादाइ ई तीनू तीन युगक मैथिलानीक प्रतिनिधि चरित्र छथि । बुच्चीदाइ आ हीरादाइक बीचक 'गैप'केँ **बहिनाक विरोग**क **बच्चीदाइ** पूरा करैत छथि । तेँ बच्चीदाइक चर्चक बिना ई चित्र पूर्ण नहि भऽ सकैछ आ ने मिथिलामे नारी-चेतनाक विकास-रेखाकेँ देखल-परेखल जा सकैत अछि । ई तँ बुच्चीदाइ आ हीरादाइक बीचक महत्त्वपूर्ण कड़ी छथि ।

मुदा एतऽ एकटा प्रश्न उठैत अछि जे बुच्चीदाइ आ हीरादाइक जतेक चर्च मैथिली साहित्य ओ साहित्यकारक मध्य भेल ततेक बच्चीदाइक नहि । हमरा जनैत प्राय: एकर मुख्य कारण स्तम्भ-रूपमे एकर प्रकाशन छल होयत । जँ ओही समकालमे ई पुस्तकाकार प्रकाशित भेल रहितय तँ **बहिनाक विरोग**क बच्चीदाइ निश्चित रूपसँ **कन्यादान**क बुच्चीदाइ अथवा **मरीचिका**क हीरा जकाँ लोकक मानसमे प्रतिष्ठित रहितथि, हुनक चर्च भेल रहैत । ई ओहि दुनूसँ कनेको कम चर्चाक पात्री नहि रहितथि । अस्तु, जँ एक पाँतीमे एहि पोथीक मादे पूछी तँ हमर उत्तर होयत जे **बहिनाक विरोग** मिथिलाक माटिपानिमे रोपल संस्कारसँ सुवासित स्त्री-विमर्शक अँकुराइत बीया अछि ।

Scanned by CamScanner

नारी जागरणक दस्तावेज : रामजोड़ी कागतक पाँखिपर

-डा. श्रीमतीकमलाचौधरी

मैथिली साहित्यक प्रसिद्ध विद्वान ओ रचनाकार श्रीरामदेवझा 'मिथिला मिहिर'मे तीन-तीनटा पत्रात्मक धारावाहिक उपन्यासक लेखन कयने छथि । ई तीनू उपन्यास क्रमशः 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी', 'बहिनाक विरोग' आ 'रामजोड़ी कागतक पाँखिपर' अछि, जे स्त्रीगण समाजक बीच बेस लोकप्रिय भेल रहय । एकर प्रकाशन 'मिथिला मिहिर'क 1960 सँ 1963 धरिक अवधिमे भेल छल । एहि स्तम्भक लोकप्रियता एहीसँ बूझल जा सकैछ, जे एकर देखा-देखी कतेको पत्रात्मक धारावाहिक प्रकाशित होअऽ लागल छल, जेना 'कनकजोड़ीक चिट्ठी, गुलाबक चिट्ठी, सोनदाइक सोहाग, बहिनाक चिट्ठी इत्यादि, जाहिमे एहि तीनू धारावाहिक स्तम्भक शब्दावली, वाक्य विन्यास, शैली ओ परिवेशक पूर्ण प्रभाव देखना जाइछ ।

श्रीरामदेवझा रचित उक्त तीनू धारावाहिक स्तम्भ वस्तुतः पत्रात्मक शैलीक तीनटा उपन्यास अछि जे तीन वयक नारी-मानसिकताक कथा कहैत अछि । लेखकक द्वारा एहि धारावाहिक सभमे परस्पर सम्बद्ध घटनाक विलक्षण शृंखला बूनल गेल अछि, जाहिसँ एकटा सुनिश्चित कथानकक सृष्टि स्वतः होइत गेलैक अछि आ पाठकक हृदयमे अगिला पत्र पढ़बाक उत्कण्ठा बनल रहैत छैक ।

रामजोड़ी कागतक पाँखिपर उपन्यासमे वर्णित समय बीसम शताब्दीक छठम दशक थिक । ओहि समय धरि मिथिला क्षेत्रक बहुतो लोक अपन-अपन कन्याकेँ हाइस्कूलमे पढ़बाक हेतु पठबऽ लागल छलाह मुदा किशोरवयमे विवाह कऽ देलासँ हुनक शिक्षा बाधित भऽ जाइत छलनि । अतः नारी उत्थानक उद्देश्यसँ लेखक समाजकेँ एहि धारावाहिक द्वारा प्रेरित करबाक प्रयास कयलनि । एहि उपन्यासमे चारि गोट किशोर वयसक सहपाठिनी अछि जे कुमारि कन्या अछि आ हाइस्कूलक छात्रा सेहो । ओहि चारू बहिनपाक नाम क्रमशः रेवा (रेवती), सोना(स्वर्णप्रभा), शारदा ओ परमिला (प्रमिला) छैक । सोना गामक स्कूल छोड़ि पटना चलि जाइत अछि । ओकर पिता ओतहि सरकारी नोकरीमे छलथिन । ओकर माय आ जेठ भाय सेहो ओतहि रहैत छलथिन । रेवा अर्थात् रेवती ओ सोनाक बीच पत्रक आदान-प्रदान होइत रहैत छैक संगहि कथानकक विकास सेहो एही क्रममे भेल अछि । एहि पत्रात्मक उपन्यासमे कुल छत्तीसटा पत्र अछि जाहिमे सत्रहटा रेवती द्वारा आ अठारहटा सोना द्वारा लिखल गेल अछि । एकटा पत्र (सं. - 30) फराक तरहक अछि जे शारदा द्वारा रेवतीकेँ एकटा विशेष प्रयोजनसँ लिखल गेल छल । रेवती ओ पत्र पढ़बाक लेल अपन सखी सोनाकेँ डाकसँ पठबैत अछि । एहि सभ पत्रक माध्यमसँ पाठककेँ किशोरवय नारी-मानसिकताक विविध रूपक अनुभूति होइत रहैत छनि । नारी मनक आकांक्षा, विवशता, आन्तरिक ऊहापोह, उपराग, कचोट आदिक संग-एकटा मौन मर्यादित त्रिकोणात्मक प्रेमक आभास पाठकक मनोरंजन करबामे पूर्ण सफल भेल अछि ।

पहिल पत्र रेवतीक लिखल अछि, जाहिमे सोनासँ विलग होयवाक दुःखक अभिव्यक्ति भेल अछि । दुनूक परस्पर सिनेह एतेक प्रगाढ़ रहैक जे स्कूलमे सदिखन संगहि रहय । तेँ रेवतीकेँ एसगर देखि अन्य छात्रा सभ सोनाक जिज्ञासा करैत छैक । एहि बातपर ओकरा बुकौर लागि जाइत छैक । सोनाक पटना चलि जयबाक खबरिसँ परमीला सेहो दुःखी भेलि । एहि बातक ओकरा बेसी दुःख भेलैक जे जयबाकाल सोना ओकरासँ भेटो नहि कयलकैक । रेवा आ सोनामे 'रामजोड़ी' लागल रहैक । तेँ पत्रमे दुहू परस्पर एक दोसरकेँ 'रामजोड़ी'क सम्बोधन करैत अछि । ओहि समयक एहन प्रचलन छल जे सिनेहसँ दूटा सखी अपनामे कोनो नाम जोड़ि लैत छल, जेना- गुलाब, सिनेह, फूल, अंगरेजी, प्राण इत्यादि ।

Scanned by CamScanner

दोसर पत्र सोना पटनासँ लिखैत अछि, जाहिमे ओ शहरक गन्दगी आ घरक सिकस्तीक चर्चा करैत अछि। ओ लिखैत अछि जे पटना शहर जयबालेल ओकरा बड़ मोन लागल छलैक मुदा एतऽ आबि ओकर सभ हिलस समाप्त भऽ गेलैक। ओकरा अपन गाम मोन पड़ैत छैक आ बाबी सेहो। अयबाकाल परमिलासँ भेट नहि कऽ सकलि ताहि लेल ओ माफी मँगैत अछि शारदासँ दस आना पैंच लेने छलि, से बाबीसँ माँगि शारदाकेँ दऽ देबाक हेतु कहैत अछि। सोनाक एकटा रुमाल शारदा लग छूटल छलैक सेहो माँगि लेबाक हेतु लिखैत अछि।

रेवा अगिला पत्रमे लिखैत अछि जे पटनामे तँ बड़का-बड़का हाकिम सभ रहैत छथि, ओ शहर कतहु गन्दा रहय! ओकरा लगैत छैक जे सोना ओकरा फूसि लिखैत छैक। गामक दुर्गापूजामे मैथिलीएमे नाटक खेलायल जायत से जानकारी ओ अपन रामजोड़ीकेँ दैत अछि। शारदासँ ओकर भाइजी सोनाक रूमाल लऽ लेने छलथिन आ मँगला पर नहि देलथिन से सूचना रेवती अपन बहिनपा सोनाकेँ दैत अछि।

सोना पटनाक फुर्त्तिगरि लड़की सभ दऽ लिखैत अछि। ओकर भाइजी ओकरापर तमसाइत रहैत छथिन जे - तोँ देहाती जकाँ तीतल बिलाड़ि बनल रहैत छेँ।' सोना, शहरक सम्बन्धमे लिखैत अछि जे एतऽ सभ वस्तुमे कृत्रिमता रहैत छैक। ओकरा गाम परक पातड़ि पड़ब मोन पड़ैत छैक, दशमी दिनक जयन्ती काटब ओ नहि देखि सकलि, तकर कचोट ओकरा होइत छैक। ओ लिखैत अछि जे गामक एक कटोरी तनुकाक आगाँ एतुक्का छप्पन भोग फिक्का छैक। ओकरा अपन गामक दीआ-बाती मोन पड़ैत छैक। पटनामे ने तँ अरिपने पड़लैक आ ने ऊके फेरल गेलैक। की पखेब आ की भरदुतिया? सामा-चकेबा नहि खेलयबाक कचोट सेहो होइत छैक। सोनाक एहि सभ कथनसँ स्पष्ट होइत अछि जे ओकरा हृदयमे अपन संस्कृति आ परम्पराक लेल अपार सिनेह संचित छैक। ओहि सभसँ विलग भऽ ओकरा सतत अपना जीवनमे अपूर्णताक बोध होइत रहैत छैक।

साठिक दशक ओ समय छल जखन चौदह-पन्द्रह वर्षक कन्याक विवाह आवश्यक भऽ जाइत छलैक। अत: रेवती ओ सोनाक विवाहक प्रसंग घरमे गप्प-सप्प होयब आरम्भ भऽ जाइत छैक। एहि प्रसंग-रेवती अपन मनोभाव एहि तरहेँ व्यक्त करैत अछि- **हम सभ जेना माय-बापकेँ, सऽर-समाजकेँ सभकलेल जेना जानक कबाहटि भऽ गेलिऐक।** पुन: अपन भविष्यक प्रति चिन्ता व्यक्त करैत लिखैत अछि- **कोनो एहन यात्री, जे नाओपर बैसल बसातक झोंकपर बहल जाइत रहैत अछि, ओकर जे स्थिति रहैत छैक, सैह स्थिति हमरो सभक अछि ने! जानि नहि, कोन किनार, कोन घाट लागब हमरा लोकनि। मोनमे बड़ गरानि होइत रहैत अछि जे हमरा सभक जन्म बेटी भऽ कऽ किएक भेल।** शरीर आ मोनसँ अपरिपक्व कन्याक अन्तर्द्वन्द्व ओ ऊहापोहक मार्मिक वर्णनसँ पाठकक हृदयमे करुणाक भाव जगैत छैक।

रामजोड़ीक पत्र सभसँ स्पष्ट होइत अछि वर पक्षक भाव सब दिनसँ बेसी रहैत अयलैक अछि, जाहि कारणेँ बेटीक विवाह एकटा पैघ समस्या बनल अछि। सोनाक विवाहक कथा एकठाम आगाँ बढ़ि पुन: टूटि जाइत छैक कारण पटनियाँ कनियाँ वरवला सबकेँ नहि चाहियनि संगहि दान-दहेजक जे हुनक माँग छलनि, ओहिमे ओ लोकनि किंचितो कमी नहि चाहैत छलाह। एहि प्रसंग दु:खी भऽ सोना अपन रामजोड़ीकेँ लिखैत अछि- **ओ सभ हमर कथा नकारि देलनि जे अपन माँगसँ एको पाइ कम नहि लेताह, संगहि हुनका पटनियाँ कनियाँ नहि चाही। पटनामे रहऽवाली गाम-घरमे कोना रहतीह, तँ नहि करब। पढ़लि-लिखलि कनियाँ हुनका नहि चाही।** एहिपर रेवती अपन रामजोड़ीकेँ बुझबैत पत्र लिखैत अछि- **ई दुनियाँ विभिन्नता आ विचित्रतासँ भरल छैक। एक गोटाकेँ जे वस्तु नीक लगतैक, वैह वस्तु दोसराकेँ अधलाह लगैत अछि। ककरो पढ़लिए कनियाँ चाहिऐक आ ककरो पढ़लि कनियाँ देखि सात आँखि होइत छैक। एहिमे हमर-तोहर कोन सक?** आगाँ पुन: बुझबैत लिखैत अछि - **जखन कखनो अपन कथाक गप्प-सप्प सूनी तँ पैर बारि कऽ सहटि जाइ। जे माय-बाप जन्म देलकैक से माय-बाप कर्मो देबे करतैक।** रेवतीक कथनसँ स्पष्ट होइत अछि जे अल्पवय होइतो ओहि समयमे मिथिलाक कन्या सभमे एकटा जागरण आबऽ लागल छलैक। आधुनिक शिक्षाक प्रभावक कारणेँ कुमारि कन्या वर्ग सेहो अपन वर्त्तमान ओ भविष्यक प्रति सांकाक्ष भऽ अपनामे गप्प करऽ लागलि छलि।

Scanned by CamScanner

एहि तरहेँ दुनू बहिनपा अपन मोनक बात पत्र द्वारा कहैत एक दोसरकेँ तोष-परितोष करैत रहैत अछि । अल्पवयसक रहितहुँ दुनूक मोनमे अपन माटि-पानि, अपन भाषा ओ लोक व्यवहार प्रति बहुत आकर्षण ओ आस्था छैक । रेवती लिखैत अछि- **पाबनियो तिहारमे तँ गामकेँ देखि गेल कर । कहुना थिकौक तँ ई अपन जन्मभूमि थिकौक, जन्म धरती ।** एहिपर पटनावासिनी सोना उतारामे लिखैत अछि – **जाहि धरतीपर जनम भेल, जाहि ठामक बोलीमे अपना मोनक भाव प्रगट करब सिखलहुँ, जाहिठामक संस्कृतिमे रहि कऽ आचार-व्यवहार सिखलहुँ, से धरती की बिसरल जायत ?** दुनू बहिनपाक एहि अभिव्यक्तिसँ विश्वास जगैत अछि जे मैथिल कन्या कतहु रहथि अपन माटि-पानि, अपन भाषा ओ लोक संस्कृतिकेँ नहि बिसरैत छथि । एतऽ रचनाकार सोना ओ रेवतीक भीतर व्याप्त स्वभाषा ओ स्वसंस्कृति प्रेमक वर्णन कऽ ई सन्देश देलनि अछि जे आधुनिक शिक्षा पयबाक ई अर्थ कथमपि नहि होइछ जे लोक अपन जड़िसँ कटि जाय । पुन: भाषा ओ संस्कृतिक रक्षाक मुख्य भार नारियेपर रहैत अयलैक अछि । स्त्री अपन माय-पितिआइनि, सासुसँ जे प्राप्त करैत अछि तकर रक्षा करैत ओकरा अपन अगिला पीढ़ीकेँ सोंपि दैत अछि । तेँ इसकुलिया लड़की होइतो सोना आ रेवामे अपन संस्कृतिक रक्षाक प्रति जागरूकता छैक ।

सोना-पटनामे देखैत अछि जे ओकरासँ कतेको बेसी वयसक लड़की सभ कुमरि रहैत छैक । स्कूलक कतेको 'बहिनजी' सभकेँ सेहो अविवाहिता देखैत अछि । एकटा प्रतिमा दीदीक चर्चा पत्रमे करैत कहैत अछि जे ओकर विवाहक गप्प सुनि ओ हँसैत बजलीह- **हाय राम ! नन्हीं सी-गुड़िया शादी करेगी ।** ई बात ओकर बड़ कोनादन लगलैक । ओ ओतऽसँ भागि कऽ चलि आयलि । ई सभ बात संकेत करैत अछि जे किशोरवय कन्या सभ ओहि समयमे केहन मानसिक आघात सभकेँ सहैत छलीह ।

एहि दुनू बहिनपाक संगी शारदा गामहिमे रहैत छैक । शारदाक भाइजी पढ़ल-लिखल भविष्णु युवक छलथिन । सोना जखन गाममे रहैत छलि तँ रेवती संग-कहियो कऽ शारदा ओतऽ जाइत छलि । एकदिन परमिला-शारदाक भाइक लिखल एकटा पत्र रेवतीकेँ स्कूलमे दैत कहलक – 'पत्रकेँ पढ़ि एकर उतारा दैह ।' रेवती डेराय गेलि । ओहिपर परमिला जोरसँ हँसि देलक । रेवतीक भयसँ ई स्थिति भऽ गेलैक जे ओ अचेत भऽ गेलि । सोनाक जिज्ञासापर ओ पत्र रेवती अपन रामजोड़ीकेँ पढ़बालेल पठा दैत छैक । पत्र शारदाक लिखल छलैक जाहिमे रेवतीक प्रति ओकर आकर्षण ओ अपन भायसँ ओकर विवाह करयबाक इच्छाक स्पष्ट झलक भेटैत छैक । पत्र पढ़लाक बाद सोना-रेवतीकेँ लिखैत अछि- **तोहर चिट्ठी पढ़ि कऽ पहिल झोंकमे इरखा आ डाह भऽ गेल छल । हमरा भेल जेना हमर कोनो धराउर चीज तोँ लुटने जा रहल छह ।** एहि ठाम स्पष्ट बुझना जाइछ जे सोना सेहो शारदाक भाइजीक प्रति आकर्षित छलि । सोनाक द्वारा देल गेल एकटा रुमाल शारदासँ ओकर भाइजी लऽ कऽ अपना लग राखि लेने रहथिन । सम्भवत: सोनाक हृदयमे ई ओही घटनासँ उत्पन्न भेल आकर्षण छल । एहिठाम रेवती, सोना आ शारदाक भाइजी एहि तीनूक बीच त्रिकोणात्मक प्रेमक आभास भेटैत अछि जे पूर्ण मर्यादित ओ संयमित अछि । किशोरवयक निर्दोष आकर्षणक स्वाभाविक चित्रण एहि उपन्यासकेँ रोमांटिक बनयबामे पूर्ण सफल भेल अछि ।

अन्तमे रेवती ओ शारदाक भाइजीक बीच विवाहक गप्प आगू बढ़ि जाइत छैक । मुदा ओकर बाद रेवतीक स्कूल जायब बन्द कऽ देल जाइत छैक । एहि बातसँ रेवती दु:खी होइत रामजोड़ीकेँ लिखैत अछि- **अपना सभक समाजक बेटी तँ गाय होइत अछि, जाहि खुट्टामे बान्हि दौक, बान्हल रहति । आगाँमे जे घास-भुस्सा ओआरि दौक से खाय वा सूँघि कऽ छोड़ि दिअय । बाजत की, बाजत कोना ? ओकरा तँ बाजऽ नहि अबैत छैक । ओ खाली हुँकरऽ जनैत अछि ।** एहि मार्मिक कथनमे मिथिलाक बेटीक विवशताक स्पष्ट झलक भेटैत अछि जे मोन मारि अविवेकपूर्ण निर्णयोकेँ ओ स्वीकार करैत रहलि अछि । तेँ स्त्री समाजक कल्याणार्थ समाजकेँ प्रेरित करबाक उद्देश्यसँ विद्वान लेखक रेवतीक कथनकेँ विशेष कारुणिक बनओलनि अछि ।

पुन: शारदाक पिता लेन-देनक बातपर अड़ि जाइत छथिन । एहिसँ किछु विषम परिस्थिति उत्पन्न भऽ जाइत अछि । मुदा शारदा अपन मायसँ एहि बातलेल झगड़ा करैत अछि । शारदाक भाइजी सेहो अपन मायसँ कहैत छथिन-

Scanned by CamScanner

अनकर बेटी कुजड़नीक भाँटा-मूड़ नहि थिकैक जे मोला-तौला कऽ उझीलि दिऐक। प्रस्तुत कथन मिथिलाक बेटीकेँ सम्मानित आ प्रतिष्ठित करबाक दिशामे अहम भूमिका तैयार करैत अछि। शारदाक भाइजीक वक्तव्यसँ स्पष्ट होइत अछि जे ओ पूर्ण शिक्षित आ प्रगतिशील विचारधाराक युवक छथि, जे पिताक अविवेकपूर्ण निर्णयसँ असहमत छथि। अन्यायक विरोध करबाक साहस हुनकामे छनि। नवपीढ़ीक नेतृत्व करबाक क्षमता ओ रखैत छथि, जे 'नव घर उठय आ पुरान घर-खसय'केँ चरितार्थ करैत अछि। एतबे नहि जखन ओ सुनैत छथि जे रेवतीक स्कूल जायब बन्द कऽ देल गेलैक अछि तँ ओ विचलित भऽ जाइत छथि। परमिला द्वारा रेवतीकेँ सन्देश पठबैत कहैत छथि- **सुनै छी अहाँक सखी स्कूल जायब छोड़ि देने छथि। से सब नहि करऽ कहबनि। कहबनि जे पढ़ाइ नहि छोड़थि। मैट्रिक परीक्षामे अवश्ये बैसथि। हवा-बिहाड़ि तँ एहिना अबैत-जाइत रहतैक।**

एहि तरहेँ शारदा एवं ओकर भाइजीक रूपमे श्रीरामदेवझा नवपीढ़ीक जागरूक चरित्रकेँ पाठकक समक्ष ठाढ़ कऽ नवयुगक सन्देश देलनि अछि। ग्रामीण ओ शहरी वातावरणक चित्रणसँ स्पष्ट कयलनि अछि जे गामक लोक उन्मुक्त जीवन जीबाक आदी होइछ जे शहरक दमघोंटू वातावरणमे अपनाकेँ असहज पबैत अछि। ई हुनक अपन माटि-पानिक प्रति असीम सिनेहक द्योतक अछि। मिथिलाक विभिन्न पाबनि-तिहार एवं अपन माटि-पानिक सोन्हगर गन्ध प्रवासीकेँ कोना अपना दिस आकृष्ट कयने रहैछ से सोनाक पत्रसँ सहजहि अनुभव कयल जा सकैछ। कन्याक विवाहमे लेन-देनक समस्यासँ बेटीक स्थिति सभदिनसँ दारुण रहल अछि। एहि सभ विसंगति दिस पाठकक ध्यान आकृष्ट कऽ एकरा दूर करबाक स्पष्ट संकेत परिलक्षित होइछ।

वस्तुतः दूरदर्शी लेखक अपन समाजकेँ प्रगतिशील आ युगक अनुरूप बनबऽ चाहैत छथि आ से बिना स्त्रीकेँ जागरूक बनौने सम्भव नहि छल, कारण घरक नींव तँ स्त्रीए होइत छथि। तेँ ओ अपन पत्रात्मक उपन्यासमे एहन चरित्र सभहक निर्माण कयलनि, एहन रोचक कथानकक तानी-भरनी बुनलनि जे स्त्री-समाजकेँ आकृष्ट कऽ समयक संग चलबाक दिशामे प्रेरित कऽ सकय। से एहि दिशामे ई उपन्यास मशालक काज कयलक। ई उपन्यास बेटीक शिक्षा-दीक्षाक प्रति माता-पिता लोकनिकेँ जागरूक बनबाक सन्देश दैत अछि। बेटीक विवाहक वयसक सम्बन्धमे सेहो सोच-बदलबाक हेतु प्रेरित करैत अछि तेँ नारी समाजकेँ ओकर समुचित अधिकार दिअयबाक दिशामे ठोस प्रयास करैत अछि।

एहि तरहेँ 'रामजोड़ी कागतक पाँखिपर' मैथिलीक किछु कलात्मक, उत्कृष्ट उपन्यासमेसँ एक अछि। मिथिलाक अल्पवय कन्याक मानसिकता आ मनोविज्ञानक सूक्ष्म चित्रण एहि उपन्यासक विशेषता थिक। स्त्रीगण समाजक दैनिक बोल-चाल, हाव-भाव, हास-परिहास, अनुभूति आ मानसिकताक वर्णन एतेक सहजताक आ कुशलतासँ भेल अछि जे पाठकमे अगिला पत्र पढ़बाक उत्सुकता बनौने रहैछ। एहि धारावाहिक उपन्यासक सरल आ रोचक भाषाक आकर्षण ओहि समयमे मैथिल ललनामे एतेक बेसी भेल जे रामजोड़ीक पत्रक उतारा पढ़बा लेल ओ लोकनि 'मिथिला मिहिर'क अगिला अंकक व्याकुलतासँ प्रतीक्षा कयल करथि। उपन्यासकार जाहि सूझ-बूझ, कल्पना आ दूरदर्शिताक संग एहि धारावाहिक उपन्यासक रचना कयलनि से हिनक लेखनीक चमत्कारे कहल जा सकैछ।

●

Scanned by CamScanner

कागतक पाँखिपर किशोर-मनक उड़ान

डा. श्रीचन्द्रमणिझा

'रामजोड़ी कागतक पाँखिपर' पत्रात्मक शैलीमे लिखल श्रीरामदेवझाक - उपन्यास थिकनि । वर्ष 1962-63इ. मे 'मिथिला मिहिर'मे एकर क्रमिक प्रकाशन भेल जकरा एकठाम संग्रहित कऽ मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा द्वारा वर्ष 2002 इ.मे पुस्तक रूपमे प्रकाशित कयल गेल । एहि चालीस वर्षमे गंगामे बहुत पानि बहि गेल । पोथीकेँ बहुत पहिनहि प्रकाशित होयबाक चाही छल । ओहि समयमे मिथिला समाजक नारी-चेतनाकेँ जाग्रत करबामे ई उपन्यास उत्प्रेरक (Catalyst) केर काज करितय । ओहुना, मिथिला मिहिरमे एकर प्रकाशन भेने शिक्षित परिवारक मध्य तँ एकर प्रभाव पड़ले होयत- से निश्चित ।

श्रीझा लोकजीवनसँ सम्बद्ध-साहित्य आ नारी मनोभावनाक अध्ययन-विश्लेषण आ विवेचन करबामे सिद्धहस्त छथि । किशोरवय सखी-बहिनपाक बीचक हिनका द्वारा लिखल पत्रात्मक संवादमे मिथिलाक गामघरमे व्यवहृत-मैथिलीक बपौती शब्दक चमत्कारिक प्रयोग देखल जाइत अछि । हिनक रचना पढ़ैत काल पाठकक मोन शहरमे रहितहु ग्रामीण परिवेशमे विहार करऽ लगैछ । ई रचनाकारक विलक्षणता मानल जाइछ जे अपना कलमक नोंकसँ शब्दचित्र तैयार कऽ ओहि वातावरणक सृष्टि कऽ दैत छथि जकरा सम्बन्धमे ओ लिखऽ चाहैत छथि । श्रीरामदेवझा मैथिली साहित्यक प्रखर विद्वान आ शब्दशिल्पी छथि । ई एहि तरहक साहित्यक निर्माण जाहि सहजताक संग करैत छथि से दोसर रचनाकारक लेल ईर्ष्या ओ कौतूहलक विषय बनैछ ।

पत्रात्मक शैलीमे लिखल आ पुस्तकाकार रूपमे प्रकाशित हिनक तीन गोट उपन्यास 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी', 'बहिनाक विरोग' आ 'रामजोड़ी कागतक पाँखिपर' चर्चित भेल अछि । एहि मध्य 'रामजोड़ी कागतक पाँखिपर' कोमल किशोर हृदयक संवेदनाकेँ कागतपर उड़ेहैत ई उपन्यास अत्यन्त मर्मस्पर्शी अछि ।

उपन्यासक कथा ओहि समयक अछि जखन गामघरमे दूरभाष, कम्प्यूटर, तीव्रगामी सवारी इत्यादि उपलब्ध नहि छल । गामघरक लोककेँ पटनाक यात्रा करब एक जटिल प्रक्रिया सन लगैत छलैक । पहिने गामसँ दरभंगा आबऽमे भरि-भरि दिन लगैत छलैक । पुनः दरभंगासँ पहलेजा जयबामे भरि राति आ पहलेजासँ जलजहाज द्वारा महेन्द्रूघाट पटना जयबामे दू-अढ़ाइ घंटा लगैत छलैक । ओहुना मिथिला समाजमे कुमारि बेटीकेँ लोक बहुत सैंति-सम्हारि कऽ रखैत आयल अछि ताहूपर छठम दशकमे तँ एहि वर्गपर अभिभावकक बन्दिश बहुत जटिल आ कठोर छल । विचार-विमर्शक आदान-प्रदानक माध्यम पत्राचार मात्र छल । दरभंगासँ पटना सात दिनमे पत्र पहुँचैत छल । दुनू पक्षक समाचारक आदान-प्रदानमे एक पखक समयसँ कम नहि लगैत छल । लोक पत्रोत्तरक प्रतीक्षामे आँखि ओछओने रहैत छल । एहन सन परिस्थितिमे दूटा किशोरवय सखीक बिछुड़न, एकटाकेँ पटना चलि जायब दुनूक हृदयमे कतेक व्याकुलता उत्पन्न करैत रहल होयत से सहजहि अनुमान्य अछि ।

रेवती जे रेवाक नामसँ तथा स्वर्णप्रभा जे सोनाक नामसँ अपन संगी सभक बीच जानल जाइत अछि दुनूमे रामजोड़ी लागल छैक । पहिने, मिथिलासमाजक नारीवर्गक मध्य एक दोसरासँ अभिन्न मित्रता स्थापित करबाक हेतु एहि मित्रताकेँ एकटा नाम यथा अंग्रेजीफूल, रामजोड़ी, भैया, कदमजोड़ी इत्यादि देल जाइत छल । एहि मित्रतामे एक-दोसराक प्रति समर्पण देखयबाक निमित्त एक-दोसर द्वारा अपन मुँहसँ मूल नामक उच्चारण करब अपराध मानल जाइत छल ।

Scanned by CamScanner

एहने सन मित्रताक सूत्रमे बान्हलि रेवा ओ सोना जे सहपाठिनी अछि, सोनाक पटना चलि जयबाक कारणेँ विछोहक वेदनासँ त्राण पयबाक निमित्त पत्राचारक सहारा लैछ जाहिमे एक-दोसराक परिस्थितिक प्रति जिज्ञासा-उत्कंठाक पराकाष्ठा परिलक्षित होइछ ।

प्रथम पत्र ग्रामनिवासिनी रेवती द्वारा पटनाप्रवासिनी सोनाकेँ परम आत्मीयताक संग लिखि हाल-समाचार, पटना पहुँचबाक विवरण, पटनाक हाट-बाजार, लोकवेद, आचार-विचार, आहार-व्यवहारक सम्बन्धमे जिज्ञासा कयल जाइछ। एहि पत्रमे ईहो प्रथम जिज्ञासा अछि जे ओकर रामजोड़ी (सोना) स्कूलमे नाम लिखओलक वा नहि । एहिसँ तत्कालिक मिथिला समाजमे नारी मानसिकताक शिक्षोन्मुख होयबाक सुखद चित्र भेटैत अछि ।

ओहि पत्रक उतारा दैत सोना पटनाक जिनगीसँ गामहिक जिनगीकेँ बेसी नीक मानबाक गप्प कहैत अछि । पटनामे सड़कपर लोकक भीड़-भार, मोटर-रिक्शाक ठेलम-ठेल देखि कऽ सोनाक मोन जेना अकछा जाइत छैक । ओकरा मोन पड़ैत छैक अपन प्रिय बाबीक मृदुल स्नेह-सिक्त सान्निध्य जे पटनामे दुर्लभ छैक ।

वस्तुतः प्रथम दुनू पत्र एहि उपन्यासक न्यों ठाढ़ करैत अछि ।

मिथिलामे पाँचम-छठम दशकमे 13-14 वर्षक होइत-होइत बेटीक विवाह करा देल जाइत छलैक । एहि वयसमे पहुँचिते बेटीक पिता कन्यादानक हेतु बेचैन भऽ जाइत छलाह । कने देरी भेलापर कन्याकेँ अजगिग होयबाक विशेषण थोपि देल जाइत छलैक । शत-प्रतिशत विवाह वयःसन्धिक समयमे सम्पन्न भऽ जाइत छल । कन्याक शिक्षा-दीक्षा चिट्ठी-पतरी लिखबाक योग्यता धरि सीमित छल । एहि अर्थमे ओ काल नारी समाजक हेतु तमसकाल छल ।

रेवा आ सोना दुनू अपन समाजक मानसिकतासँ भिज्ञ छलि । अपना-अपना विवाहक प्रति दुनू अपन माता-पिताक व्याकुलताक अनुभूतिसँ अबंच नहि छलि । दुनूक पत्राचारमे एहि बातक विस्तारसँ उल्लेख भेल अछि।

मिथिला समाज तिलक-दहेजक वीभत्स प्रथासँ आक्रान्त रहल अछि । ई कुलक्षण एखनहुँ ओहिना जीवन्त अछि । सोना आ रेवतीक पत्रमे एहि बातक बेरि-बेरि जिज्ञासा कयल गेल अछि जे कोमल-हृदयपर कुठाराघात सन प्रतीत होइत अछि ।

सोना आ रेवतीक पत्राचारमे अनुरोध-विरोध, हास-परिहास, इच्छा-आकांक्षा इत्यादिक मनोयोगपूर्वक वर्णन भेल अछि ।

जाहि कालखण्डक ई उपन्यास थिक ताहू समयमे नीक, सुशिक्षिता कन्याकेँ घर अनबाक उत्कंठा समाजमे जाग्रत भऽ गेल छल । रेवतीक संगी शारदाक भाइक विवाह ठीक होइत छैक एहिमे रेवतीक सज्जनता, सदाचरण, व्यवहार कुशलता एवं स्पष्टवादिता प्रमुख कारण छल । निश्चित रूपेँ शारदा द्वारा अपन भाय आ माता-पिताकेँ रेवतीक गुणक बखान कयल गेल छल जाहि कारणेँ शारदाक पूरा परिवारकेँ रेवती नीक लगलैक । यद्यपि कि शारदाक पिता पुष्ट दहेज प्राप्त करबाक लोभ रखने छलाह । मुदा, शारदा दुनू भाइ-बहिन रेवतीसँ प्रभावित छल तेँ ई सम्बन्ध स्थापित होयबाक सम्भावना प्रबल भऽ गेल ।

श्रीरामदेवझाजी दूटा किशोरी बहिनपाक मनोभावनाकेँ पत्रात्मक शैलीमे कागतक पाँखिपर उतारबामे अत्यधिक सफल भेल छथि । ई उपन्यास नारी-विमर्शक दस्तावेज थिक ।

●

Scanned by CamScanner

रामजोड़ी कागतक पाँखिपर : एकटा अद्भुत प्रयोग

श्रीहीरेन्द्रकुमारझा

'रामजोड़ी कागतक पाँखिपर' सामान्य पाठक लेल भनहि एकटा सामान्य धारावाही रहल होउक, परन्तु जँ ईमानदारीसँ मैथिली साहित्यक विकास-धाराक समग्रता आओर ओकर विविधताकेँ ध्यानमे रखैत मूल्यांकनक प्रयास कयल जाय तँ एहि धारावाहीकेँ नमन कयने बिना आगाँ बढ़ब खाहे तँ दुष्टता होयत वा अज्ञानता। श्रीरामदेवबाबू अपन आरम्भिक लेखनकालेसँ एकटा सहज सामाजिक प्रवृत्तिमूलक विषय सबकेँ अपन साहित्य लेखनक आधारक रूपमे चयनित कयलनि से उपयुक्त पत्रात्मक उपन्यासक लेखनक समय ई प्राध्यापकक वृत्ति करैत दुमकामे प्रवास करैत रहथि। दुमका सन एकान्त स्थल जे आइयो मैथिली भाषाक लेल द्वीपक स्थितिमे अछि से हिंनक रचना कर्मकेँ कनेको प्रभावित नहि कयलक। उनटे एहि कालमे ई पत्रात्मक शैलीमे लिखित **बहिनाक विरोग** ओ **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** सन रचना कऽ मैथिली भाषाकलेल धरोहरक निर्माण कऽ देलनि।

हिनक प्रथम दुनू धारावाही अंगरेजीफूलक चिट्ठी ओ बहिनाक विरोगमे दू गोट बियाहलि नवयुवतीक बीच विचार ओ अनुभवक आदान-प्रदान होइत छैक। यद्यपि एहू दुनूक प्रस्तुतिमे सामाजिक उथल-पुथल एवं आर्थिक विकासक क्रमिक प्रभाव स्पष्ट लक्षित होइत अछि, मुदा तेसर धारावाही 'रामजोड़ी कागतक पाँखिपर' तँ एकटा अद्भुत रचनाक रूपमे उभरि कऽ आयल अछि। मैथिलीमे नारीक जीवनपर अपन कलम यात्रीजी 'पारो'क माध्यमसँ उठौलनि तँ 'मरीचिका' (लीलीरे), 'हमरा लग रहब' (प्रभाष कुमार चौधरी) सन-सन कतेको प्रशंसनीय एवं स्मरणीय रचना होइत गेल। मुदा एहि सब रचनामे नारीकेँ ओकर शालीनता, सच्चरित्रता, सदाचारक प्रतिमूर्त्ति, त्याग एवं आत्म उत्सर्गक ओढ़ना तर पसिझैत देखाओल गेल अछि। जँ कतहु विद्रोह वा तकर प्रयासक छाप लक्षितो होइत अछि तँ लगैछ जेना केओ पाछाँसँ प्रौम्ट कऽ रहल हो। प्रकट भऽ नारीक समग्रता कतहु नहि भेटत। सबतरि माटि-पानि जकाँ परिस्थितिक संग मौन आत्मसमर्पणसँ आगाँ किछु नहि।

एहना वातावरणमे 'पारो' आ 'मरीचिका'क बीचक अवधिमे रामदेवबाबूक 'रामजोड़ी कागतक पाँखिपर' धारावाही रूपेँ जखन छपल तँ निश्चित रूपसँ साहित्येटा नहि अपितु सम्पूर्ण समाजक बीच एकटा नव विचारक प्रस्ताव कयलक। हमरा आइ पुस्तकाकारमे ई धारावाही प्राप्त भेल अछि तँ लेखकक रचनाशैलीपर आश्चर्य नहि अपितु ईर्ष्या भऽ रहल अछि जे कने हमरो जँ ईश्वर एहि प्रकारक सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक क्षमता दीतथि। ई धारावाही भनहि पत्रात्मक शैलीमे लिखल गेल छल मुदा सम्पूर्ण पत्रकेँ लगातार पढ़लापर जे एकटा विलक्षण उपन्यासकेँ पढ़ि लेबाक सन्तुष्टि भेटैत छैक से अद्भुत अछि। पत्रक आरम्भिक पाँती सब यद्यपि प्रत्येक पत्रमे किछु व्यतिक्रम उत्पन्न करैत अछि मुदा दू गोट सखीक बीच भेल अपन मनोभावक आदान-प्रदान एकटा अनुशासित कथाक्रमक सृजन करैत अछि जकर विश्लेषण कयने बिना आगाँ बढ़ब कठिन।

एहि पोथीकेँ समग्रतामे पढ़लापर सबसँ बेसी जे बात प्रभावित करैत अछि ओ थीक उपन्यास तत्त्वक निर्वाहक अद्भुत प्रयोग। साहित्यक तकनीकी दृष्टिकोणसँ एहि रचनाकेँ नहि पढ़ि एकटा सामान्य पाठकक रूपमे वा सोझे कहू जे उपभोक्ताक दृष्टिएँ एहि उपन्यासकेँ पढ़लापर जे किछु विशेषता भेटैत छैक तकर जँ विचार कयल जाय तँ एकटा पूर्ण एवं विशिष्ट रचनाक सभटा गुण एहिमे भेटैत छैक। कविता लेखन भनहि छन्द, दोहा ओ मात्राक बन्धनसँ मुक्त भऽ शब्दक ढेरवला स्वरूपमे आबि गेल हो मुदा एहि एकैसमो शताब्दीमे पाठककेँ उपन्यास वा कथामे कोनो परिवर्त्तन

Scanned by CamScanner

करब सहाज नहि छैक । जँ ओकर किछुओ मूल तत्त्वक निर्वाह उपन्यास वा कथामे नहि भेल तँ सामान्य ओ इमानदार पाठक ओकर जड़िसँ नकारि दैत छैक । एक उपन्यासमे सबसँ पहिल आवश्यकता होइत छैक वातावरणक वर्णन । कारण कथानक ओ चरित्रक संयोजन वातावरणहिक आधारपर सम्भव छैक । पात्रक परिचय सोझे-सोझ देब सम्भव नहि अपितु ओहि लेल सन्दर्भ चाही । सही उपन्यास वैह अछि जाहिमे वर्णित देश, समाज ओ परिवारक वर्णन, ओकर कालखंडक अनरूपे होअय । स्वयं रामदेवबाबू एकठाम अपन उद्बोधनमे कहने छथि जे- **कथामे पात्रक नाम फूसि किन्तु देशकालक वर्णन, घटनाक वर्णन सत्य रहैत छैक । जखन कि इतिहासमे मात्र पात्रक नामटा असली शेष सब वर्णन ओहि नाम ओहि किंवा पात्रक महिमामंडन हेतु गढ़ल गेल रहैत छैक ।** 'रामजोड़ी कागतक पाँखिपर' लिखऽ काल लेखक एहि तथ्यकेँ ततेक नीक जकाँ निर्वाहने छथि जे सम्पूर्ण पोथीकेँ पढ़लापर चलचित्र जकाँ दृश्य उभरि कऽ सामने आबि जाइत अछि। किछु उदाहरण देखल जा सकैछ -

पत्र-2 - **एहिठाम लोक एकदम गल्ली-कुच्चीमे रहैत छैक । नाली सभमे सड़ल गलीज भरल रहैत छैक । दुर्गन्धिसँ मोन सदिखन हौंड़ैत रहैत छैक । तोँ अपना आँखिए देखबहक तँ आश्चर्य लगतह जे लोककेँ कोना एहि सभमे रहल जाइत छैक । मकानक एहिठाम बड़ सिकस्ती छैक । कय-कय बरख धरि लोककेँ मकान मोन जोग नहि भेटैत छैक ।**

पत्र-3 - **एहूबेर नाटक ई सभ होयतैक । स्टेज गाड़ल गेलैक अछि । एकटा खुसीक बात ई जे एहि बेर चारू दिन मैथिलीए नाटक होयतैक । बड़ नीक लगतैक देखबामे । आ कि नहि ? अपना सभक बीच तँ अपने बोलीमे ने ई नाटक होयबाक चाही ?**

पत्र-4 - **हाँ नई-नई देहात से आई मालूम होती है । सुनि कऽ हमरा तँ सौंसे देहक लिधुर सर्द भऽ गेल । हम भाइजी लग सहटि कऽ चल गेलहुँ ।**

पत्र-8 - **पखेव दिन रहि-रहि कऽ अपन बथान मोन पड़ैत छल । केहन लागल होयतैक रङ्गल ढङ्गल गाय-बड़द सभ । भरदुतिया दिन सेहो मोन बड़ उचटल रहल ।**

वस्तुत: प्रत्येक पत्रमे ताहि कालक सामाजिक व्यवस्था, शहर ओ गाममे भऽ रहल परिवर्त्तन, गामक शान्ति ओ सौहार्दक शहरमे सर्वथा अभाव, मध्यमवर्गीय नोकरीपेशासँ जुड़ल प्रवासी लोकक कचोट, ओकर शहरी वातावरणसँ होइत संघर्ष आइ पचास वर्षक बादो एकदम वर्त्तमान सन लगैत अछि । वास्तवमे उपन्यासक सबसँ महत्त्वपूर्ण पक्ष वातावरण एहि उपन्यासमे अपन सम्पूर्णताक संग मुखर स्वरूपमे भेटैत अछि । उपन्यास वा कथामे तत्पश्चात अबैत छैक - कथाक विषय । कतेको उपन्यासमे ई दोष पाओल जाइत छैक जे कथा अपन आरम्भिक विषयसँ बारम्बार बदलाव करैत समाप्त होइत-होइत कोनो तेसर विषयपर जा कऽ समाप्त भऽ जाइछ । मानल जे रोचकताक लेल थोड़ेक परिवर्त्तन करब आवश्यक, मुदा तकर अर्थ ई नहि जे मूल विषयकेँ बिसरि जाइ । मुदा मुक्तकंठसँ कहऽ पड़त एहि रामजोड़ीक कथा-सूत्रकेँ जाहिमे पहिल पत्रसँ आरम्भ भेल मूल विषयक लगातातार अन्त धरि पालन कयल गेल छैक ।

सम्पूर्ण उपन्यासमे दू किशोरी अपना हिसाबे समाज, परिवार एवं बदलैत वातावरणमे अपन महत्त्वकेँ अँकैत विचारक आदान-प्रदान करैत अछि । प्रत्येक पत्रमे दुनूक बीच प्रश्नोत्तरी ततेक सामान्य ढंगसँ भेल छैक जे कखनहुँ कऽ ई संशय होअऽ लगैत छैक जे कि सत्ते कोनो पुरुष लेखक द्वारा ई पत्र सब लिखल गेल छैक ? मैथिल समाजमे तहिया वा आइयो किशोरी लोकनि स्वयंकेँ वास्तवमे एकटा उपहासक पात्री सन पबैत रहलि अछि । किशोरवय मन स्वयंकेँ एहि विरोधाभासक परिस्थितिमे पाबि कोन मानसिकतामे जीबैत अछि तकर किछु उदाहरण देखल जा सकैछ-

पत्र 3 - **आन बेर अपने कहैत छलि नाटक देखऽ जायलेल आ एहि बेर की भेलैक से नहि बुझैत छिऐक । जेना कोनो पहाड़ टुटि जयतैक । एहि बेर नहुएँसँ कहि देलिएक - मैथिली नाटक होयतैक । माय तामसे आन्हर भऽ गेलि- गय, आब नाटक-फाटक देखऽवाली छेँ ।' आर की कहाँ । दम सधने रहलहुँ ।**

पत्र - 9 - **यैह दुनियाँ थिकैक, माटियोक मुरुत चारि दिन संग-संग रहि जाइत छैक तँ ओकरासँ एतेक सिनेह भऽ जाइत छैक ।**

Scanned by CamScanner

पत्र – 10 – **होइत अछि जे मायो आब हमरा बिरान बूझि रहल अछि । लोकक वियाह नहिएँ होयतैक तँ की हेतैक । हमरा भाइजी बरु हमरासँ पहिनहि जकाँ व्यवहार करथु आ हम पहिनहि जकाँ रही । आँय हय, हम सब आब बच्चा नहि छी तँ की बुढ़िया भऽ गेलहुँ ? एहिठाम देखैत छिऐक अपनासँ डयौढ़ा-दुन्ना छौंड़ी सभ ओहिना छैक ।**

पत्र-15 – **मोनमे बड़ गरानि होइत रहैत अछि जे हमरा सबहक जन्म बेटी भऽ किएक भेल । ककरो अपन मोनक गप्प नहि कहैत छिऐक । परमीलोकेँ नहि । मायक ठोरपर सदिखन फुफड़ी पड़ैत रहैत छैक । कखनो-कखनो एकसरमे हमरा अपन कोरमे समेटि लैत अछि आ कहैत अछि – हमर सोनक टुकड़ी ।**

पत्र 20 – **ओ तँ आन्हर छथि भगवान कहौ के ? नहि तँ मौगी जातिकेँ एहन सम्मानहीन जीवने किएक दितथिन । जँ एतेक सस्त अछि मौगी जाति तँ कोन काज छलनि भगवानकेँ ओकर रचना करबाक ? कोन ओकरा बिना सृष्टि अन्हार भेल जा रहल छलनि ? जखन अपने सभ कर्त्ता छथि तँ मौगी बिनु हुनका कथीक खगता होइतनि ?**

पत्र 22 – **बाबूजीकेँ एखन अन्न-पानि नीक नहि लगैत छनि । मायकेँ सदिखन झखिते देखैत छिऐक । भाइजीकेँ सेहो मनहूस भेल देखैत छियनि । एहन बूझि पड़ैत अछि जेना हमरा चारू कात कुहेस लागि गेल होइक ।**

पत्र 23 – **जाहि घर आहे बाबा कन्या हे कुमारि से कोना सुतय निश्चिन्त हे ।**

पत्र- 36 – **बाबूजी आ माय दुनूकेँ सदिखन गुमसुम देखैत छियनि । सदिखन होइत रहैत छनि जे हम हुनका सोझाँ ने पड़ि जैयनि ।**

ई तँ मात्र किछु उदाहरण भेल । सत पूछू तँ सम्पूर्ण पोथीक एक-एक पत्रमे एकटा मैथिल कन्याक मनोदशाक एकसँ एक मार्मिक उदाहरण भेटत । प्रसंग सब ततेक जीवन्त और उद्वेलक अछि जे पढ़ैत-पढ़ैत हठात गुम्म भऽ जयबाक लेल विवश कऽ दैत अछि । मैथिल ललना परिवारमे एकटा अभिशाप जकाँ, एकटा पैघ बीमारी जकाँ जकर उपचार अत्यधिक कठिन होउक तेहन सन स्थितिमे अपनाकेँ पबैत छथि । वस्तुतः आइयो मैथिल ललनाक स्थितिमे कोनो परिवर्त्तन नहि भेलैक अछि । सत्य तँ ई जे स्थिति आओरो विकराले भेल जा रहल अछि । उपन्यासक तेसर महत्त्वपूर्ण बिन्दु होइत छैक- चरित्र चित्रण । कथाक संग चरित्रक विकास । यद्यपि कथाक विकास बहुत बेसी काल धरि नहि छैक तकर कारण एकर धारावाही स्वरूप आओर पत्रात्मक शैली छैक । तथापि मात्र किछु मास धरि जे पत्रोत्तर चलैत छैक ताहिमे स्वर्णप्रभा, रेवती ओ परमीला तीनू सखीक तीन विचारधारा, तीन तेवर ओ तीनूक परिवारक तीन परिवेशमे फराक-फराक चरित्रक विकास बहुत विचारणीय अछि । कथाक्रममे स्वर्णप्रभाक भाइ ओ तीनू सखीक माता पिताक चर्च अबैत अछि । एहि सभ सहयोगी पात्रक चरित्र वर्णनक प्रति उपन्यासकार जाहि सहजता ओ सजगताक परिचय दैत छथि से नमनीय अछि । मुदा सबसँ महत्त्वपूर्ण छैक तीनू सखीक व्यवस्थाक प्रति उद्दीपनक वर्णन ।

शारदाक भाइ कथाक्रममे बहुत कम कालक लेल अबैत छथि । मुदा अन्तिम भागमे आबि कऽ जे ओ प्रगतिवादी युवकक उदाहरण प्रस्तुत करैत छथि तकर उदाहरण थिक ई अंश – पत्र-36 – **सुनै छी अहाँक सखी स्कूल जायब छोड़ि देने छथि । से सब नहि करऽ कहबनि । कहबनि जे पढ़ाइ नहि छोड़थि । मैट्रिक परीक्षामे अवश्ये बैसथि । हवा-बिहाड़ि एहिना अबैत-जाइत रहतैक ।**

मिथिला मिहिर एहि धारावाहीकेँ जाहि कारणे एतहि समाप्त कऽ देने हो मुदा एहि पाँतीपर आबि कथानक एक उत्कृष्ट चरमपर पहुँचि एकटा बहुत सकारात्मक आशा भरल सम्भावनापर समाप्त होइत अछि, जे उपन्यासक सम्पूर्ण पाठकेँ सफल बनबैत अछि । नीक साहित्य एहिना पाठककेँ समस्याक प्रति सुझाव दैत छैक । सत कही तँ भारतीय संस्कृतिक ई विशेषता थिक जे हमरा लोकनि समस्याकेँ नहि अपितु ओकर समाधानकेँ तकैत छी । कथानकमे यद्यपि औरो बहुत चरित्रक छोट-मोट वर्णन भेटैत अछि जे प्रत्यक्ष तँ नहि अप्रत्यक्ष रूपसँ कथाकेँ आगाँ ससारबामे सहयोग तँ करिते अछि संगहि टिपिकल मैथिल संस्कारक द्योतक बनि कऽ भेटैत अछि । बाबी ओ सखी लोकनिक माय-बाप, उपन्यासक कथा सूत्रकेँ आगाँ बढ़बैत छथि । यद्यपि एहि चरित्र सबहक व्यापक मूल्यांकन उचित नहि तथापि सखीक

Scanned by CamScanner

माता-पिता लोकनि सर्वदा एक चिन्तित अभिभावक एवं 'पुत्रीक पिताक' होयबाक अभिशापसँ शापित रहबाक स्थितिमे जीबैत छथि ।

चारिम महत्त्वपूर्ण बिन्दु अछि - रोचकता । कोनो उपन्यासमे एकटा वातावरणमे विषयगत चरित्र सबहक प्रवाह होइत छैक ताहि बीच छोट-छोट चित्र सब भेटैत छैक जे मूल विषयसँ फराक रहितो कथानकक प्रवाहकेँ रोचक बनयबामे महत्त्वपूर्ण होइत छैक । पत्रात्मक शैली रहितो प्रत्येक पत्रमे अनेकानेक चित्र भेटैछ । प्रत्येक चित्र एकटा सूचना दैत अछि । पटनाक दुर्गापूजाक तुलना गामघरक दुर्गापूजासँ । बलिदान प्रथापर दू विचारधाराक विश्लेषण । गंगास्नान हेतु सिमरियाक यात्राक प्रति मैथिल समाजक मोह । मोकामा पुल निर्माण भेलासँ तत्कालीन मिथिलाक लोकक प्रसन्नता । सामा-चकेवा, पखेव, सुकराती सन पावनि-तिहारक प्रति किशोरी वर्गक उत्साह । भरदुतियाक प्रति नवयुवक वर्गमे उत्साह । कनियाँकेँ अप्रत्यक्ष रूपसँ देखबाक लेल बाट-घाटमे नाम पूछब, परमीलाक घरपर मोकिल बनि आयब सन-सन अनेको एहन चित्र एहि उपन्यासमे भेटैत अछि जाहिसँ तत्कालीन सामाजिक दृश्य सब साकार भऽ उठैत अछि ।

ततबे नहि अनेकशः मनोवैज्ञानिक चित्र सभ सेहो– 'सामाक प्रसादवला चूड़ा लिफाफमे पठायब ।'

कॉलेजिया छौंड़ा सभक द्वारा कहल गेल – 'धुत अभी बच्ची है ।'

वा मायक उपराग– 'अँय गे ! बाबीये तोहर सभ किछु छथुन ? हम तोहर माय नहि छियौक ।'

एहि प्रकारक विचार-बिन्दु सभ ततेक सटीक एवं मार्मिक अछि जेना सद्यः आँखिक आगाँ प्रकट भऽ रहल हो । एहि सभ विन्दुपर सहृदय पाठककेँ कतहु गुदगुदी लागब तँ कतहु आँखि नोरयबासँ बाँचब कठिन अछि ।

विद्वतगण लेल पहिल मुदा सामान्य पाठकलेल ई अन्तिम दृष्टिकोण होइत छैक– भाषा, वर्त्तनी आओर व्याकरण । कारण सामान्य उपभोक्ता प्रकारक पाठककेँ तँ पहिने कथा, चरित्र ओ परिवेश चाही ताहि संग नीक भाषा, शुद्ध वर्त्तनी, आओर सुघड़ व्याकरणक प्रयोग भेटल तँ सोनमे सुगन्धि । हमरा हिसाबे, एहि विषयपर एहि उपन्यासक सन्दर्भमे चर्चा करबाक कोनो सम्भावना बनिते नहि छैक । मूल पत्र जहिया मिथिला मिहिरमे छपल रहैक तहिया हमरा अक्षर बोधो नहि भेल छल, परन्तु पुस्तकाकार प्रकाशित एहि पोथीक प्रसंगे तँ एतबे कहल जाय जे- वास्तवमे एकटा प्रोफेसरक लिखल गेल भाषा, वर्त्तनी ओ व्याकरण जकरा कहल जाइत छैक से तकर ई नमूना थिक ।

एतऽ हम लेखकक अतिरिक्त प्रकाशकीय दायित्वपर सेहो चर्चा करब उचित मानैत छी । लेखक अपन दायित्व लिखबा धरि रखैत छथि । मुदा प्रकाशनक क्रममे भाषाक व्याकरण एवं वर्त्तनीक शुद्धता तथा प्रूफकेँ खूब नीक जकाँ जाँचि छपबाक महत्ता बहुत बेसी छैक । वस्तुतः लेखक तँ भनसिया थिक, प्रकाशक भेल परसनिहार से एहि बिन्दु पर आओर प्रसन्नता होइत अछि एहि पोथीकेँ पढ़ि कऽ जे एतेक शुद्ध छपाइ, एतेक समरूप वर्त्तनीक प्रयोग 'मिथिला रिसर्च सोसायटी' सन सन प्रकाशनेसँ सम्भव अछि । सम्पूर्ण उपन्यासक उपर्युक्त विशेषताक अतिरिक्त एहि पोथीमे एकटा और बहुत महत्त्वपूर्ण उपलब्धि छैक एकर परिचय हेतु, लिखल गेल 'शेष विशेष ।'

एहि प्रस्तावनामे रामदेवबाबू जे एकटा लेख प्रस्तुत कयने छथि से एकटा शोध ग्रन्थक सारांश सन सुखद अछि । पत्रात्मक शैलीमे मैथिली भाषामे लिखल गेल समस्त साहित्यक एतेक विस्तृत वर्णन । प्रत्येक लेखकेँ ओकर लेखक, काल तथा विषय सम्बन्धी यथासम्भव सूचनाक संग वर्णन एकरा एहि विषयपर 'विश्वकोष' (इनसाइक्लोपिडिया)क स्तरक बना दैत अछि । हम स्वयं एहि लेखकेँ पढ़ि अचम्भित रहि गेलहुँ जे मैथिलीमे एतेक पत्रात्मक शैलीमे साहित्य लिखल गेल छैक ।

अन्तमे सम्पूर्ण पोथीक प्रति यैह विचार अबैत अछि जे एहि औपन्यासिक धारावाहीकेँ एकत्रित कऽ मैथिली साहित्यक एहि धरोहरकेँ कमला-कोशीक बाढ़िमे भसि जयबाक खतरासँ उबारि एकरा लाल किला सन मूर्त्तरूप प्रदान कऽ देल गेल अछि, ताहिलेल लेखक ओ प्रकाशक दुनूकेँ अशेष धन्यवाद ।

●

Scanned by CamScanner

अहाँ मौगियाही बात सब नीक लिखते हैं

प्रो. श्रीरमाकान्तमिश्र

श्रीरामदेवजीक **अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग**, आ **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** भाषाक दृष्टिसँ विस्मित कयलक । सोचऽ लगलहुँ जे कोन मैथिली असली ? उपर्युक्त पुस्तक सबमे प्रयुक्त 'स्त्रैण' मैथिली असली किंवा ओ पुरुखाही मैथिली जे हम अहाँ आइ-काल्हि प्रयोगमे अनैत छी । **खोभाटव, ठरड़, परभाच्छय, अनकट्ठल, सँसने, महिरम** असली मैथिली वा तकर स्थान पर जे कोनो तत्सम वा तद्भव शब्द हमरा लोकनि प्रयोगमे अनैत छी से असली ? **खोभाटव** आइकाल्हि कहाँ केओ प्रयोगमे अनैत छथि ? जाहि प्रकारक अर्थक ध्वनि आ नाट्य-भंगिमा एहि शब्दक अन्तर्गत छैक से की एकर स्थानापन्न आन कोनो शब्दमे अहाँकेँ भेटत ? अंगरेजीमे एकरा लेल शब्द छैक Poke अर्थात् प्रच्छन्नतासँ देहमे आँगुर गड़ा-गड़ा कोनो बातक स्मरण करायब । पत्राचार विधिक माध्यमे लिखल उपर्युक्त तीनू पोथीक गल्प सबमे, श्रीरामदेवझा मैथिलीक एहन अनेक शब्दकेँ, विस्मृतिक पौती-पेटारसँ निकालि आ ओकर प्रयोगसँ, पाठककेँ विस्मित-चकित कयलनि अछि ।

शब्द, संवादक विकल्पहीन माध्यम अछि, मुदा समयक अनन्त प्रवाहक संग ओहिमेसँ अनेकक अवसान आ, ओकर स्थानपर नव-नव शब्दक उत्थान होइत रहलैक अछि । भाषा-विज्ञानक दृष्टिसँ ई भाषाक एकटा स्वाभाविक प्रक्रिया छैक । युग परिवर्त्तनक संग, मैथिलीमे सेहो एहन अनेक शब्द हेरा-भोतिया गेलैक अछि जाहिमे एहि ठामक जनजीवनक सांस्कृतिक सुगन्धि छलैक । आजुक कालक कतेक 'बौआ-बुच्ची', **परभाच्छय, भारखम्भी, ताजन, उपेखल, कंछा, पोत, अकिद्दा, मदोदरि, उछाही, तिसना आ कियौरी** सन-सन शब्दक अर्थ बुझताह ? आइ काल्हि **छगुन्ता**क क्रिया रूप **छगुनैत** केँ कय गोटा व्यवहारमे अनैत छथि ? उपर्युक्त शब्द सभक सम्बन्ध पाँच-छओ दशक पूर्वक मिथिलाक मुख्यत: ब्राह्मण समाजक-घर-आँगनसँ, मिथिलाक पंडितक पत्नी, हुनक देयादिनी, हुनका बालबच्चा आ खर-खबासनीक भाषासँ छैक । उपर्युक्त अनेक शब्दक उत्पत्ति आ व्युत्पत्तिकेँ जँ बिटिआयब पार लागय तँ सम्भव जे ओकर सभक बीजी पुरुष अहाँकेँ कोनो-ने-कोनो संस्कृतेक शब्दमे भेटय । ओकर सभक **उपेक्षा** (पंडिताइनक भाषामे **उपेखा**) आ अन्तत:, निष्कासनक प्रसङ्ग सोचला उत्तर, उत्तर यैह भेटल जे, बीसम शताब्दीक प्रारम्भहिसँ संस्कृत शिक्षाक त्वरित ह्रासक कारणेँ एना भेलैक । संस्कृत शिक्षाक अवनतिक मुख्य कारण अंगरेजी आ हिन्दीक माध्यमसँ कॉलेज सबमे शिक्षाक प्रसार छलैक । गाम-घरमे संस्कृत शिक्षाक महत्त्व पुरहिताइ आ पावनि-तिहारक तिथिक खोज-पुछारि मात्र धरि संकुचित भऽ कऽ रहि गेलैक । हिन्दी-अंगरेजीक गिटिर-पिटिरक झिस्सीमे आङनक बूढ़ि-सूढ़ि, धी-बेटी आ बहुआसिन लोकनिक भाषा सेहो सिमसऽ लगलनि । नव-नौतारिकेँ तँ नव-प्रकारक भाषा सिखबाक आ सुनबाक सेहन्ता होअहिँ लगलैक । आ, एहि क्रममे **भारखम्भी, मदोदरि** आ **परभाच्छय** सन-सन शब्द सब नीक जकाँ 'उपेखल' जाय लगलैक । **परधानक** रूपमे **अंगरेजीफूल, अड़हुल** आ **गुलाबसँ** आगाँ निकलि गेलैक ।

श्रीरामदेवझाक तीनू पोथीक भाषा, स्मृतिक गवाक्ष खोलि मनकेँ फ्लैस बैक (Flash back)मे लऽ गेल । बोरसि लग बैसलि आ अपन पुतोहुक हाथेँ अपन दुनू सुखायल छावामे कड़ूतेल औँसबवैत अपन बाबी मन पड़लीह आ ताही संग मन पड़ल हुनक टीका-टिप्पणीक भाषा **ग्लनिसँ गरानि**, चर्यासँ **चरजा**, प्रताड़नासँ **ताजन**, प्रचारितसँ **परचारल**, लिप्तसँ **लिपित**, प्रवोधनसँ **परवोधन**, रुधिरसँ **लिधुर** आदि तँ, स्पष्टत: संस्कृते शब्द सभक अपभ्रंश थिकैक । ओहिसँ पूर्व उर्दू-फारसी भाषासँ सेहो मैथिली प्रभावित भेल छलैक । लोक कोशिशसँ **कोरसिस** कऽ लेलक । **तकिया**

Scanned by CamScanner

गेरुआके ठेलि कऽ खसा देलकैक । चौकीक स्थानपर **तख्तपोश** आबि गेलैक । मुसलमानी सल्तनत कालक अनेको शब्दके बीछि कऽ जँ एकट्ठा करी तँ तकर पथार लागि जायत । **अकिद्दा** आ **पोत** (मालगुजारी) तँ उर्दूए अछि । **लवेजान** (मार्फत श्रीरामदेवजी) अपन शुद्ध रूपमे मैथिलीमे रहि गेलैक । **भरसाहा** (चिट्ठी पाबि भरसाहा होयतऽ) – भरोसक अर्थ मे आजुक कालक मैथिलीक लेल अपरिचिते अछि । भ्रमक अर्थमे **भटमाह**, गम्भीरताक अर्थमे **भारखम्भी** (भारखम्भी होअह), बुधियारक अर्थमे **बौध** (बड़ बौध छथि), प्राय: कबुलाक अर्थमे **उछाही** (तोहर उछाहीमे जे हम पातरि देलियनि'), छोट घघरीक अर्थमे **पुतली** (...... पुतली पहिरि धाप-धुप खेलायत'), शोणितक अर्थ मे संस्कृतक **रुधिर** शब्दसँ बनल **लिधुर** ('बड़ लिधुर बहल') तँ आब लुप्ते अछि । मैथिलीक पाठकके आइ-कालिह **बहिकिरनीसँ** सेहो साक्षात्कार होयब कठिन कारण ओकर स्थानपर आब **दाइ** काज करैत छैक । अधलाहक अर्थमे **हिछैत** अछि, **आने-मानेसँ** (घुमा फिरा कऽ), **भरकछ लाधव** (जानि कऽ अनठयबाक अर्थमे), **बहिनौत** (बहिनीक बेटा), **मन हदिआयव** (व्यक्त करबाक लेल मनक छटपटायब), हृदयक लेल **ही** (ही लटकि गेल अछि), साहसीक अर्थमे **दिदगरि** (देयादनी दिदगरि छथिन), **अंग निधुनैत छैक अस्पताल**मे, बच्चाके पातर दस्त होयबाक अर्थमे **चुरकी**, रसदार तरकारीक लेल **तीमन**, जिज्ञासाक लेल **जिगेसा** आ व्यवहारक लेल **बेबहार** तँ सब बूझैत होयताह, मुदा स्वीकारक अर्थमे **सुहकार** शब्द आजुक कालमे प्रचलित नहि छैक । देखभालक अर्थमे **तकमीना** सेहो आजुक कालमे **उपेखले** जकाँ भऽ गेल छैक । आजुक मैथिली गद्यक पाठकके **खिधांस, फेदरति, सधोरि, सुठौरा, आपट** सेहो नवे जकाँ लगतनि । 'एकरे जकाँ'क वा एही तर्ज परक अर्थमे **एही भासितपर** सेहो आब अपरिचित बुझाइछ । सोआदि-सोआदि कऽ खयबाक अर्थमे **पघड़ा-पघड़ा कऽ खायब** सेहो अनभोआर लगैछ । **लोक कहतऽ जे कनियाँ नेपियाहि छैक** केर **नेपिआहि** सेहो कतेकहुँ के अर्थक बेगरताक अनुभूति करौतनि । प्राय: **नीर सँ नोर** आ ताहीसँ **नेप** भेलैक अछि की ? शब्दक गोत्र-गाम ताकब एकटा व्यसन छैक ओहिना जेना पजियारसँ वंशवृक्ष बनबायब । शब्द, अपन स्वरूप आ अर्थक दृष्टिसँ जले जकाँ तरल होइछ । जाहि ठाम आ जाहि बासनमे ओकरा रखबैक ओ ओहने आकार धऽ लेत । पंडितक **चतुर्थीचन्द्र** गिरहतक कण्ठमे **चौठचन्द** आ कनियाँकाकी आ हुनक बहिकिरनीक कण्ठमे अबैत-अबैत **चौरचन** भऽ जाइत छैक । यैह थिकैक अपभ्रंश । **आप** माने जल । पंडितक 'सप्रतिभ' पंडिताइनक **सपरतीव** । एही रूपेँ **अपवित्रसँ अपैत, महानससँ भानस** आ **उत्कीर्णसँ** विशेष अर्थमे **उतकिरना** । तेँ जखन पता चलल जे **मदोदरि** शब्द रावणक उदारहृदया पत्नी मन्दोदरिक अपभ्रंश थिक तँ सुखद आश्चर्य भेल ।

मनमे प्रश्न उठल जे उपुर्यक्त शब्द सब समयक प्रवाहमे कोना भासि गेलैक ? **मदोदरिके** पुन: मैथिलीमे घुरि अयबाक सम्भावना नहि छैक की ? उत्तर नकारात्मके छल जाहिसँ मनमे कचोट भेल । भाषा विशेषज्ञ लोकनि कहलनि जे सब भाषामे एना होइतैक अयलैक अछि । अखियासलहुँ तँ बात सत्य प्रतीत भेल । अंगरेजीक आदिकवि चौसरक अंगरेजी ओहि भाषाक आधुनिक रूपक नहि नहि छैक । अर्थ बुझबाक लेल टीकाक प्रयोजन होइत छैक । शब्दक निष्प्रयोजनीय भऽ जायबके अंगरेजीमे Obsolite भऽ जायब कहैत छैक । ज्योतिरीश्वरक 'वर्णरत्नाकर' पढ़ब तँ बेसी शब्द अनभोआरे लागत । सन्देह हैत जे ई, मैथिली थिकैको वा नहि ।

उपर्युक्त तीनू पुस्तकमे जाहि कालखण्ड आ परिवेशक वर्णन-विवरण छैक, ओहि सब ठाम, उपर्युक्त विवेचित शब्द सब अपन सांस्कृतिक सुवास आ निजताक संग उपस्थित छैक । मुदा, आखिर छैक की पत्राचार रूपक एहि गद्य ग्रन्थ सबमे ? तँ उत्तर यैह जे निम्नमध्यवर्गीय ब्राह्मण परिवारक बिआहलि आ विवाहयोग्य कन्यासभक जीवनक परिचित आ विश्वसनीय छवि-छटाक वर्णन-विवरण अहाँके एहिमे भेटत । सखी सभ एक-दोसरके अपन मनक गुप्तसँ गुप्त बात सबसँ अवगत करबैत छैक । **अंगरेजीफूलक चिट्ठी**मे एक सखी नैहरसँ विदागरी भऽ अपन सासुरमे छैक आ दोसर अपन बरक संग पटनामे । एहिमे 1960-61 केर मध्य लिखल पैंतालिसटा चिट्ठी छैक । **बहिनाक विरोग**मे बत्तीसटा चिट्ठी छैक । एहूमे एकटा बिआहलि सखी नैहरसँ द्विरागमन भऽ कऽ सासुर गेल दोसर सखीसँ पत्राचार करैत छैक । जेना अपन भूमिकामे रामदेवजी स्वयं कहैत छथि जे एहि ठामक परिवेश पूर्णत: ग्राम्यजीवनक अन्त:पुर अछि । **रामजोड़ी**

Scanned by CamScanner

कागतक पाँखिपरमे दू गोट कुमारि इसकूलिया सखी अपनामे पत्राचार करैत अछि जाहिमेसँ एकटा गामक स्कूलमे आ दोसर पटनाक स्कूलमे पढ़ैत अछि । एहिमे छत्तीसटा चिट्ठी छैक । तीनू पुस्तकक तीनू सेटक सखी एक दोसरसँ अपन-अपन जीवनक नेह-छोह आ आशा-आकांक्षा दऽ लिखैत छैक । तीनू 'सेट'क छवो सखी सभक जीवन दऽ पाठकके जे किछु सूचना पत्र सभ द्वारा प्राप्त होइत छनि सैह एहि तीनू पोथीक कथा-तत्त्व छैक । प्लौट (Plot)क रूपमे एहि तीनू पुस्तकमे, कोनो 'षडयन्त्र' नहि छैक । ताहि रूपमे एहिमेसँ दूटामे जे किछु छैक से ओकर सासुर आ बरक सम्बन्धमे शुष्क सूचना मात्र । तथापि हम कहब जे ई पोथी सब उपन्यास थिक । सखी सभक जे छवि, पत्राचारक माध्यमे पाठकक समक्ष उभरि कऽ अबैत छैक से यथार्थ आ जीवन्त छैक जे हमरा जनैत उपन्यासक पहिल शर्त्त छैक । ई आवश्यक नहि जे उपन्यासमे बहुत पात्र आ बहुत घटना रहैक । अंगरेजीफूलक चिट्ठीमे नैहरवाली सखीक बरकेँ कोनो वृत्ति नहि छैक आ मुख्यतया तेँ ई सखी सुरूमे किछु दिन नैहर ओगरने रहलि । आगाँ, कथामे विकास होइत छैक । ओ सासुर बसऽ लगैत अछि, ओकर बरकेँ मास्टरीक नोकरी भेटि जाइत छैक आ सखीक ठमकल जीवनमे आशाक संचार होइत छैक । पटनावाली सखी गर्भधारण करैत छैक आ ओकरा बेटा जन्म लैत छैक । एतहु नवजीवनक स्फुरण विकास आ आशाक सृजन करैत छैक । तँ, कहबाक छल जे कथाक रूपमे जे किछु छैक ताहिमे परिवर्त्तन आ प्रगति तँ छैके खाहेँ तकर मात्रा न्यूने किएक ने रहौक । कथामे प्रतीतिक अभाव नहि छैक आ स्थिति-परिस्थिति सब जीवनक यथार्थक नकल सन छैक । अरस्तू कहने छथि जे कला (एतऽ कथा-कला) जीवनक नकल थिक - (Art is an imitation of Life.) घटना, कथाक Sine qua-non अर्थात् आवश्यक तत्व नहि । जेनऑस्टेन आ वर्जीनिया वुल्फ सभक उपन्यासमे विचारक प्रवाहे घटनाक काज करैत छैक । जे पाठक श्रीरामदेवझाक तीनू पुस्तककेँ पढ़ने होयताह से लक्ष्य करताह जे एहि पत्र-कथा सबमे घटनाक घात-प्रतिघात नहियो रहने छवो सखी सभक जीवन-चित्र पूर्ण मांसलताक संग उभरल छैक । पत्राचारक माध्यमे कथा कहबाक परिपाटी पूर्वहुमे छलैक । अठारहम शताब्दीक अंगरेजी साहित्यक उपन्यासकार Richardson अपन दूटा उपन्यास **पेमेला** (Pamela) आ **क्लैरिसा हार्लो** (Clarissa Harlow) लिखि प्रसिद्धि पौने छथि । मैथिलीमे हरिमोहनझाक **पाँच पत्र** सन अप्रतिम कथा आ उपेन्द्रनाथझा 'व्यास'क साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत **दू-पत्र** उपन्यास सब केओ पढ़ने होयब ।

तथापि ई नहि बिसरवाक छैक जे उपर्युक्त तीनू पुस्तक 'मिथिला मिहिर' पत्रिकामे स्तम्भ लेखनक प्रतिफल थीक । हँ, एतेक धरि अवश्य जे विज्ञप्तित: तीनू पोथीक पत्र सब उपन्यासक रूपमे नहि लिखल गेल छलैक । स्तम्भ सबकेँ समेटि कऽ प्रकाशित कयने, पश्चात ई सब उपन्यास सन बूझऽमे आबऽ लगलैक । उपर्युक्त सब बात, श्री रामदेवजी, पुस्तक सभक अपन-अपन भूमिका सभमे खोँइचा छोड़ा कऽ लिखने छथि ।

आब एकटा ई बात जे एहि पोथी सभक भाषा स्त्रैण छैक वा नहि । तँ, ताहू प्रसङ्ग श्रीरामदेवजी अपन भूमिकामे स्पष्टतासँ संकेत कयलनि अछि । वस्तुत: कोनो लेखिकेकेँ एहि स्तम्भक लेल पत्र सब लिखबाक छलैक जे परिस्थितिवश उपलब्ध नहि भऽ सकलैक तेँ श्रीरामदेवजीकेँ एहि 'नाटक'मे स्त्री पात्रक पार्ट अदा करऽ पड़लनि श्रीरामदेवजी लिखैत छथि जे- **पुरुषे लेखककेँ स्त्रीलेखनक भार वहन करबाक विवशता छलैक** । आ 'लेखिका'क से पार्ट, श्रीरामदेवझा स्त्रीक काया बाटेँ ओकर सभक मोनमे पैसि आ ओकरे सभक भाषा बजैत अत्यन्त विश्वसनीयताक संग अदा कयलनि अछि । ओहि कालखण्डक 'अन्त:पुर'क (श्रीरामदेवजीक शब्दमे) कम पढ़लि-लिखलि स्त्रीगण सभक भाषा थिकैक ई । पात्र जँ माउगि भेलि तँ ओकर भाषा आ बजबाक भंगिमा तँ सेहो मौगिआहिए ने हेतैक ? पुरुष 'गे माय, गे दाय' वला भाषा-भंगिमामे नहि ने बाजत ? ओना कहब तँ कहब जे शब्दक 'जाति' (स्त्री-पुरुष) तँ नहि होइत छैक । श्रीरामदेवजी जँ अपन नाम प्रच्छन्न राखि एहि पोथी सबकेँ कोनो काल्पनिक स्त्रीगणक छद्म नामे छपबितथि तँ केओ थोड़बहिँ लक्ष्य कऽ सकैत छल जे वास्तवमे ई कृतिसब पुरुष प्रणीत छैक । हम तँ कहब जे पुरुष भऽ कऽ एतेक प्रतीतिपरकता सँ स्त्रीक भाषामे लिखि श्रीरामदेवजी अपन लेखकीय क्षमताक एकटा अद्भुत प्रमाण उपस्थित कयलनि अछि ।

Scanned by CamScanner

मिथिला मिहिरक सम्पादक शेखरजी रामदेवजीसँ कहलथिन (जेना श्रीरामदेवजी लिखैत छथि) **अहाँ मौगिआही बात सब नीक लिखते हैं ।** एहि टिप्पणीकेँ हम श्रीरामदेवजीक लेखकीय क्षमताक प्रशंसा मानैत छी । शेखरजी रामदेवजीकेँ देल गेल अपन **टेस्टीमोनियल**मे बड़ मर्मज्ञतासँ श्रीरामदेवजीक लेखकीय प्रतिभाक प्रशंसा कयने छथि ।

ओहि समयक ललना लोकनि बड़ पढ़लि-लिखलि जँ नहिओँ तँ मूढ़मतिक अवश्य नहि छलीह । हुनका लोकनिकेँ अपन-अपन स्थिति-परिस्थितिक सटीक आकलन छलनि । कृति सभमे अनेक स्थलपर सखी सब द्वारा, ओहि कालक स्त्रीक जीवनपर कयल गेल तिक्ख-सटीक टिप्पणी सब छैक । **अंगरेजीफूलक चिट्ठी**मे एक ठाम एक सखी अपन पतिसँ कहैत छथि– **हमरा जे एतऽ पिजड़ामे आनि कऽ राखि देने छी, से कि हम सुग्गा छी जे तिलकोड़क फड़ टोड़ैत रहब ?** एही पोथीमे एकठाम एकटा सखीक टिप्पणी छनि– **मिथिलाक मौगी तँ चिड़ै जकाँ अपन मनक विखादकेँ घरक देवालमे ढाहिओ मारि कऽ तँ नहि निकालि पबैत अछि ।** उपर्युक्त पाँती सब ओहिकालमे मैथिल समाजक स्त्रीगणक ठहरल-ठमकल जिनगीपर एकटा तिक्ख आ तिक्त रूपक टिप्पणी अछि ।

बाल-विवाह सन सामाजिक कुरीति आ तकर परिणामपर कयल गेल निम्न टिप्पणीपर ध्यान दिऔक– **हुनका अपन देहपर नीक जकाँ नूओ राखऽ नहि अबैत छलनि कि बेटाक माय बनि गेलीह ।** दोसर दिस मात्र विवाह आ सुखद दाम्पत्य जीवनकेँ चरम उपलब्धि मानऽवाली एकटा ग्रामीण ललनाक दृष्टिसँ नगरक अपन वयसवाली छौंड़ी सभक चित्र देखिऔक– **जगरजाठि सन-सन छौँड़ी सब हेँज बान्हि-बान्हि स्कूल कौलेज जाइत अछि ।**

मिथिलाक अशिक्षित स्त्रीगण समाज, संस्कारेँ अभिजात आ सम्पन्न रहितहुँ पुरुष प्रधान समाजमे कोना पिँजराक सुग्गा जकाँ जीबैत छलीह तकर अभिव्यक्ति अहाँकेँ निम्न पाँतीमे भेटत– **पुरुषक इच्छाक आगाँ मौगी किएक किछु बाजओ । अंगरेजीफूलक चिट्ठीक** पृष्ठ संख्या 102 मे एकटा सखी दोसराकेँ लिखैत छथि– **जँ सत्त पूछऽ अंगरेजीफूल, तँ अपना देश-कोसमे जँ स्त्रीगणक एहन हाल छैक, तकर कारण यैह जे हमरा लोकनिक पुरुष बेस सोखमे जकाँ पढ़ि-लिखि बुधियार भऽ जाइत अछि आ हमरा लोकनि पढ़ि-लिखि नहि पबैत छी । तेँ बकलेल बनलि जिनगी भरि चूल्हि फूकैत रहैत छी आ डेग-डेगपर पुरुष द्वारा ठकलि-परतारलि जाइत छी ।** तेँ एकटा सखीक घरवलाक ई टिप्पणी जे– **मौगिआही चिट्ठीमे खाली बुढ़ियाक फूसि रहैत छैक** – सर्वथा सत्य नहि ।

बहिनाक विरोगमे द्विरागमन आ नव घर-आश्रममे कनियाँक निमहता (Adjustment)क कथा छैक । द्विरागमनक विधि-व्यवहार आ सासुरमे कनियाँक आगमनक वर्णन-विवरण विस्तारसँ छैक । नैहरवाली सासुर बसि चुकल छैक तेँ सासुरमे कोना रही ताहि प्रसङ्ग अपन दुरगमनियाँ सखीकेँ पत्र लिखैत छैक । ओकर उपदेश भोगल यथार्थपर आधारित छैक । दुरगमनियाँ कनियाँ सासुरक नव परिवेशमे ककरासँ कोना व्यवहार करय आ कोन ठाम, कोन स्थितिमे करय ताहि प्रसंग नैहरवाली सखी अपन दुरगमनियाँ सखीकेँ पत्रक मार्फतेँ सासुरमे रहबा-सहबाक एटीकेट (Etiquete) सिखबैत छैक आ से केहन दार्शनिक आ दिव्य छैक से देखियौ– **जाहि स्त्रीगणकेँ अपन सासुरसँ स्नेह नहि होयतैक से की सासुर डेबि सकत कहियो ? .... सासुर स्त्रीगणक मर्यादा थिकैक, झाँपन थिकैक .... थितमति राखि कऽ सासुरमे मोन लगाबऽ । ओहिठामक वस्तुकेँ अपन वस्तु बुझहक; ओहिठामक लोककेँ अपन लोक बुझहक .... पहिल बेरक सुजनता तोरा जिनगी भरिक सतोजनी बना देतह .... माय कहने रहय जे दाइ अहाँ अपन जीह-ठोर समेटि कऽ राखब .... कतेक बदलि गेल माय जे हमरा 'तोँ' सँ अहाँ कहऽ लागल ।**

लक्ष्य करियौक जे उपर्युक्त उद्धरणक अन्तिम पाँती कन्याक गोत्रान्तरक परिप्रेक्ष्यमे कतेक कारुणिक छैक ।

रामजोड़ी कागतक पाँखिपरक भूमिकामे श्रीरामदेवजी एहि पत्रात्मक गल्प स्तम्भक उद्भव, विकास आ अपूर्णता दऽ सब बात खोलि कऽ कहलनि अछि । पत्रकथामे आगाँ की होइतैक ताहू दऽ भूमिकामे स्पष्ट संकेत छैक । जँ नियोजित रूपेँ स्तम्भक समाप्ति होइतैक तँ एहि आख्यानत्रयीक अन्तिम खण्ड एकटा रोचक आ रोमान्टिक उपन्यासक रूपमे विन्यस्त होइतैक । कचोट जे से भेलैक नहि । एहि उपन्यासमे, पार्श्वक छायापात्र सभक अतिरिक्त चारिटा पात्र

Scanned by CamScanner

छैक जे कथामे विविधता अनने छैक, भनहिँ दुइए गोट पात्र एक दोसरकेँ पत्र लिखैत होइक । 'उत्सुकता' कथाक आवश्यक द्रव्यगुण होइछ जे एहि पत्राख्यानमे प्रचुरतासँ छैक । बस, एकहिटा बात जे हमरा खटकल से ई जे अनेक पत्रक भाषा पात्रोचित आ स्वाभाविक नहि छैक । नौमी–दसमीक छौँड़ी सब– **देवीक प्रति समर्पणक भाव,..... एक प्रकारक शान्ति आ उत्फुल्लता.....सब वस्तुमे औपचारिकता .... एहू ठामक लोक आत्मवादी भेल जा रहल अछि . ... पढ़ल–लिखल लोक अपन स्थिति आ अस्तित्वककेँ बिसरि जाय ...... एना जँ समाजक अन्तःस्थ एकात्मकताक सूत्र टूटि जयतैक ....** एहन सन भाषा लिखति से प्रतीतिपरक नहि लगैछ । ओना सब स्थलपर उपर्युक्त प्रकारक गढ़ल–गूथल प्राध्यापकीय भाषा नहि छैक । तथापि एकर समर्थनमे इहो कहल जा सकैत अछि जे नव उमंगवाली इसकुलिया छौँड़ी सब जँ छवि–छटा दऽ कऽ चमत्कारी भाषा नहि बाजति तँ की निछच्छ देहातवाली बहिना लोकनि बजितथि । श्रीरामदेवजी वयस ओ परिवेशकेँ ध्यानमे रखैत **रामजोड़ी कागतक पाँखिपरक** पत्रक भाषाकेँ प्रयत्नपूर्वक शहरुआ बनौलनि अछि ।

मन पुनः पुनः पहिल आ दोसर पोथी सभक बिसरल–हेरायल शब्द सब दिस चले जाइत अछि । एहि सबमे प्रयुक्त मैथिली कहबी आ उपमा सब कम कटगर नहि छैक जेना– **रैँची देल ओलक साना जकाँ झँसिगर; जा धरि लाल नूआ तावते धरि कनियाँ; ठोरपर मुस्की, कोँढ़मे दलकी; देखैत–सुनैत मँहकारी, तरमे बीया कारी; बहुआसिनो अपने, बहिकिरनिओँ अपने; सधोरिसँ सुठौरा धरि; उपसँ चुप भला ।**

हमरा श्रीरामदेवजीक उपर्युक्त कृति सबमे असली मैथिलीक **अतमाक** दर्शन भेल आ भाषाक दृष्टिसँ ई रचना सब अनमोल लागल । एकर भाषामे जमाइन सँ छौँकल पटुआ सागक झोर, जमीरी नेबो गारल खेरहीक सन्ना आ उलबा राहड़िक दालिक स्वाद भेटल ।

●

Scanned by CamScanner

पसिझैत पाथरक प्रति दृष्टिनिक्षेप

श्रीउदयचन्द्रझा 'विनोद'

पसिझैत पाथरपर साहित्य अकादेमी पुरस्कारक घोषणा सुनि कऽ चौंकल रही से मोन अछि । फेर विचारने रही जे पुरस्कार आ वृत्तिक प्रसंग एहिना होइत आयल छैक । मैथिलीक साधारणो अध्येता जनैत छथि जे रामदेवझा **एक खीरा : तीन फाँक** सनक प्रसिद्ध कृतिक रचयिता छथि । कथा-साहित्यमे हिनक सार्थक योगदानक चर्च बरमहल होइत रहलनि अछि तथा **मनुक सन्तान, धरती माता, इजोती रानी** आदि कथा-संग्रह द्वारा मिथिलाक ग्रामीण समाजमे होइत परिवर्त्तनक कलात्मक निक्षेप ओ बरोबरि करैत रहलाह अछि । वस्तुतः कोनो सजग अध्येताकेँ तँ हिनक **धरती माता**केँ एहि पुरस्कारसँ सम्मानित होयबाक अपेक्षा छलैक । अनुसन्धान-आलोचनाक क्षेत्रमे हिनक निरन्तर अवदानसँ मैथिली भाषा-साहित्यक एक दिस जँ जड़ि मजगूत भेल अछि तँ दोसर दिस एकर शाखा-प्रशाखाक पल्लवित होयबाक पुरकस सूचना भेटल अछि । **मैथिली शैव साहित्य** तथा **उमापति**पर हिनक काज एवं **हरगौरी विवाह नाटक, रामविजय नाट, नन्दीपति-गीतिमाला, नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत, दशावतार नृत्यम् ओ षोड़स गीतम्** आदि सम्पादित ग्रन्थ द्वारा मैथिली साहित्यक अपरिमेय उपकार भेल अछि । एकर अतिरिक्त **कविवर जीवनझा-रचनावली** तथा मैथिली **प्राचीन गीतावली**क सम्पादन-प्रकाशन द्वारा मैथिलीक भंडारकेँ समृद्ध आ आकर्षक बनायब हिनक अप्रतिम कार्य थिक ।

रामदेवजी लिखैत छथि, लिखैत रहताह । हिनक जिज्ञासु प्रवृत्ति तथा रचनात्मक ऊर्जा हिनका चुप नहि बैसऽ देतनि । हिनका अपन भाषा छनि, गहन प्रेक्षणशक्ति छनि, अभिव्यक्ति-कौशल छनि जे समय-समयपर हिनकासँ कविता, कथा, निबन्ध, संस्मरण, शोध-पत्र सब लिखा लैत छनि । मैथिलीक एहने किछु एकान्त साधकक प्रतापे एतेक रास अन्हर-बिहाड़िमे मैथिलीक पाया हिलि नहि पबैत अछि । आ तेँ एहन कृति रचनाकारक सम्मान निश्चतः स्वागतेय थिक ।

कविवर आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन' द्वारा **धरती माता**क भूमिकामे देल हिनक परिचयक एकटा छोट अंश ध्यातव्य अछि-

लेखक छठम दशकसँ तँ साहित्यमंचपर अवतीर्ण भेल छथि, परंच उत्तीर्ण भेल छथि जीवनक नेपथ्यहिमे । जेना ई अनवरत साधना करैत रहला, स्कूल वर्गमे एकोदिन अनुपस्थित नहि भेला, कालेज-क्लासमे कखनहुँ दोसर पंक्तिमे नहि गेला, अध्यापक-जीवनमे कहियो अप्रस्तुत भऽ कऽ नहि अयला, साहित्यिक क्षेत्रमे सव्यसाची जकाँ वाम-दहिन दुनू सन्धान करैत रहला, निबन्ध-कथा-कविता-एकांकी सभ विधामे कलमक कमाल देखबैत रहला-ताहि सबसँ बहुत पूर्वहिसँ चिन्हारे नहि, मैथिली क्षेत्रमे एक चमत्कारे सिद्ध छथि । रुचि-संस्कार ओ लेखन-भाषण, शोध-अनुसन्धान सब दिशामे भाषा-साहित्यक अनुपम उपहारे प्रसिद्ध छथि ।

वृत्तिसँ अध्यापक, प्रवृत्तिएँ अनुसन्धानी, प्रकृत्तिएँ रचनाशील एहि महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षरक अवदान निश्चयतः अत्यधिक मूल्यवान अछि । अपन लेखन जगतक आत्मीय परिचिति तथा अन्तरसँ उद्विग्न मनस्थिति हिनक कलमपर उतरि बैसैत छनि । लोक-जीवनक राग-तानकेँ चीन्हब आ तकरा तानी-भरनीक संग अपन कृतिमे उतारब हिनकालेल प्रायः अबूह नहि होइत होयतनि । बड़ सहज ढंगे, गाम-घरक परिनिष्ठित भाषामे ई गामक लोकक आशा-आकांक्षा, प्रलाप आ पराक्रमक चित्रण करैत रहलाह अछि ।

पसिझैत पाथरमे सात गोट नाटक संकलित अछि- **पसिझैत पाथर, लोचन धाए फेधायल, रहऽ दियौ**

Scanned by CamScanner

गंगाकें निर्मल, दुलारक भूख, मनुष्यक देवता, पिपासा, तथा **चाननक बसात** । एहिमे **लोचन धाए फेधाएल** ऐतिहासिक तथा **पिपासा** पौराणिक उपाख्यानक आधारपर रचित अछि तँ शेष पाँचमे कोनो ने कोनो सामाजिक-मानवीय समस्याँ जुझबाक प्रयास भेल अछि । समस्यामे सबसँ अधिक हिनका क्षरित होइत भारतीय जीवन परम्परा व्यथित कऽ रहल छनि । मानव-मनक अन्हारकें अभिव्यक्ति देब हिनक काम्य छनि, अपन परम्पराक श्रेष्ठत्व हिनका वरेण्य छनि आ ई चाहैत छथि जे शान्ति-प्रीतिक संग लोक अपन जीवन-यापन करय । सामाजिक विसंगतिपर उठल हिनक लेखनी कोनो विद्रोह वा रणकें नोतबासँ कतिया अन्ततः सन्धि आ समन्वयेपर आबि कऽ विराम लैत छनि । निपट दर्शक बनल रहब सम्भवो नहि ओ ताहि लेल कोनो रणमे लागब हिनका अभीष्ट नहि ।

केओ ठीक कहने छथि जे जीवनमे कोनो व्यक्ति मात्र दर्शक नहि होइत अछि । घरमे आगि लागल अछि तकरा तटस्थ भावसँ देखब सम्भव नहि । जे केओ ओकरा देखैछ तकरापर प्रभाव पड़ितहि अछि । केओ छाती पीटऽ लगैत अछि, केओ हल्ला कऽ लोककें जमा कऽ लैत अछि, केओ घरमे फँसल माल-जाल, लोक-वेदकें बहार करबाक ब्योंत धरबैत अछि, केओ घैल लऽ आगिकें मिझयबाक लेल दौड़ि पड़ैत अछि, केओ दुखी होइत अछि, ककरो 'फिट' आबि जाइत छैक, केओ ओहिमे स्वयं अपनाकें झोंकि दैत अछि । कहबाक तात्पर्य ई जे कोनो सामाजिक घटना-दुर्घटनाक तटस्थ दर्शक बनल रहब सम्भव नहि । समाज जाहि सब समस्याक ओझरौटमे पड़ल अछि तकरासँ निरपेक्ष रहब सम्भव नहि । सांख्यक पुरुष जकाँ तटस्थ भावसँ प्रकृति-नटीक नृत्यक आनन्द उठबैत रहब मानवक कपारमे नहि । आ लेखक, संवेदनाक धनी लेखक, तँ किन्नहु नहि । तटस्थता रचनाक कारण वा प्रेरणा भइए नहि सकैछ । लेखकक काज होइछ ओहि अगिलग्गीक कारण आ ताहि पाछू लागल हाथ आ माथक पता लगायब, ओहि तत्त्वक अन्वेषण-विश्लेषण करब जे आगि लगबैत अछि । समाजक विरोधी शक्तिक गर्दमिसानकें झूरझमान करब लेखनक काज थिक । सदा-सर्वदासँ लेखन पीड़ितक पक्षमे पीड़कक विरुद्ध ठाढ़ रहल अछि । 'क्रौंच वध'सँ आइ धरिक साहित्यक इतिहास सैह कहैत अछि ।

पोथीक नामकरण एहिमे संकलित पहिल नाटक **पसिझैत पाथर** राखब ठीके लगैछ । ई नाटक नहि मात्र अपन आकारमे पैघ अछि, अपितु मानव-सम्बन्धक विभिन्न धाराक सम्यक पड़ताल करैत दहेज समस्यापर मार्मिक चोट करैत अछि । कन्यादानक समस्याक समाधान हेतु पिता गणेशक आत्मदान बड़ मार्मिक, प्रतिमा आ विमलक चरित्र बेश आकर्षक । प्रतिमाक एहि संवादकें देखल जा सकैत अछि–

प्रतिमा (सिसकैत) : ओ बीमाक पालिसी हमरा दऽ कऽ जे रातिमे सुतलाह तँ सुतले रहलाह । एकर साक्षी हम छी आ सुरेन्द्र काका छथि । मृत्युक सन्ध्यामे ओ जतेक गप्प सुरेन्द्र काका आ हमरा कहलनि से सभ आयरोनिकल छल । दोसर दिन ओकर सभक अर्थ लागल । जँ पहिने बुझितिऐक तँ हम अपने आत्महत्या कऽ लितहुँ, मुदा हुनका बचा लितियनि ! बाबूजी जीवनमे जे नहि कीनि सकलाह से हुनक मृत्यु किनलक । हुनके जीवन बीमाक टाकासँ कीनल गेल अछि ई सिन्दूर ।

लिधुर सन लाल एहि सिन्दूरक दाम पाठक-दर्शककें निश्चयतः आन्दोलित कऽ छोड़ैत अछि । मोन कोनादन भऽ जाइत छैक आ एहि स्थितिकें बदलबाक बेगरताक जन्म होइत छैक । विमलक छोट भायक संग नीलिमाक विवाहक सहमति एहने सन घटना थिक । धनेश्वरबाबू (वरक बाप) पाथरसँ पानि भऽ जाइत छथि आ प्रतिमा-विमलक दाम्पत्य बहुरि अबैत छैक ।

एतबे नहि, एहि नाटकमे चम्पा आ प्रतिमा दुनू नारी पात्र समाजक दू विपरीत वर्गक महिलाक महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधित्व करैत अछि । चम्पा अपन जीविकाक कारणे शहरक महिला-होस्टलमे दाइ अछि तँ प्रतिमा एक प्राध्यापिका । दुनू भिन्न-भिन्न कारणे विरह-दग्धा आ तें दुनू एक-दोसराक दुखमे सहभागी । नारी मनोविज्ञानक विलक्षण चित्रण भेल अछि । चम्पा पतिकलेल नोकरी छोड़ि देत आ प्रतिमा नोकरी करैत अपन पतिक आश्रममे रहती ।

बस एतहि आबि कऽ हमरा सनक लोककें ई समाधान नहि पसिन्न पड़ैछ । आइ जखन कि पेटक कारणे

Scanned by CamScanner

झुण्डक झुण्ड युवा गाम छोड़ि शहरक नर्क दिस पलायन कऽ रहल अछि, एहनामे गरीब चम्पाकेँ आपरेशनक डरे सन्तान लेल नोकरी छोड़ि गाम जयबाक निर्णय की सोहाँत लगैछ ? की ठीके कर्जा सभक कानूनी माफी, अपन घराड़ी भऽ गेने गामक बोनिहारक दीन दुनिया बदलि गेलैक ? आ फेर प्रतिमा कोना विमलक संग रहती ? की ओहो नोकरी छोड़ि देती ? एकहि समस्याक फूट-फूट समाधान सम्भवे नहि । पियास पानिसँ मेटायल जा सकैछ आ से लेखकक हिसाबे कोनो विकल्पपर विराम नहि लेत । तहिना धनेश्वरबाबूक ह्रदय परिवर्त्तन सेहो समस्याक वायवीय समाधान थिक । एना नहि होइत छैक । एना होयबाक चाही से भिन्न बात भेल । मुदा, मात्र से चाहने सम्भव नहि ।

रामदेवजी स्वयं प्राध्यापक छथि आ शिक्षा जगतमे, खास कऽ बिहारमे, शिक्षाकेँ मखौल बनैत जयबाक साक्षी आ कदाचित सहयोगी होयबाक पीड़ा भोगि रहलाह अछि ।

रहऽ दियौ गंगाकेँ निर्मल नामक नाटकमे ओ पैरवी-प्रकरणकेँ बड़ बढ़ियाँ पकड़लनि अछि । आदर्शवादी प्राध्यापक रघुराजपर चतुर बड़ाबाबू सदानन्दक पैरवीक दबाबक नीक कथा कहैत अछि ई नाटक । जखन आन सब अस्त्र बेकार साबित भेल सन लगैत छनि तँ सदानन्द प्रो. रघुराजक एकमात्र ससुरवासि सुकन्या अर्चनाकेँ अस्त्र बना प्रयोग करैत छथि आ ओ सासुरसँ नैहर आबि पितापर दबाब दैत अछि नम्बर बढ़यबाक लेल । तंग भऽ प्रो. रघुराज भ्रष्टाचार निरोध विभागक सहयोगसँ अपराधी सदानन्दक गिरफ्तारीक व्यवस्था धरबैत छथि ।

दुलारक भूख मानवीय संस्पर्शसँ लबालब भरल एक गोट नाटक थिक । एक दिस पार्वती-जगदीश दम्पतिक वाटिका उजड़ल छनि एकटा सन्तान लेल तँ दोसर दिस सूरति-पोखरामवालीक घर सालेसाल नव सन्तानसँ भरैत रहल अछि । सन्ततिक आकांक्षा आ जनसंख्याक समस्याकेँ एक संग विश्वसनीय धरातलपर बरतैत फेर एकटा 'मदर टेरेसा समाधान' प्रस्तुत कयल गेल अछि । नाटकक अन्त जगदीशक संवादसँ होइत अछि । पार्वतीसँ कहैत छथि जगदीश-

जगदीश- काल्हिसँ सूरतिबाबूक सब धीया-पुता अपने ओहिठाम दिनमे खायल करत आ भरि दिन अहाँकेँ ओकरा सबकेँ पढ़बऽ पड़त । ओकरा सुढंग बनायब अहाँक कर्त्तव्य थीक ।

मनुष्यक देवता नामक नाटक आदर्शवादक काल-कोठरीमे किकिहारि कटैत एकटा छोट सनक कथा थिक । बेरोजगारीक समस्याकेँ छूबि तकर रोग दिस इंगित कऽ लेखक एक गोट अनावश्यक हताशाक इरोतमे धैरज वैद्यकेँ देवता बनयबा लेल व्यग्र बुझाइत छथि । अपन बेरोजगार मरणासन्न बेटाकेँ छोड़ि वैद्यराज धैरजचौधरीजीक पूतक इलाज हेतु जाय अपन वैद्यधर्मक निर्वाह करैत छथि । **चानन्क बसात**मे शहरसँ अध्ययन सम्पन्न भऽ गाम आयल चेतनासम्पन्न युवक धीरेन्द्र गामकेँ बदलबाक बीड़ा उठबैत अछि । गाम- जाहिपर परम्परावादी सामन्त भोलाझा जे पंचू सनक अपन फरेबी मित्रक सहयोगसँ राज करैत अछि आ कोनो तरहक सुधार आ परिवर्त्तनक सम्भावनाक पेंपकेँ मचोड़ि दैत अछि । किन्तु, हाय रे कपार, एहू ठाम रामदेवजी अन्तमे भोलाझाक ह्रदय परिवर्त्तन तथा पुलिसक मानवीय होयबाक कथा कहि आदर्शवादकेँ पुन: मंडित कऽ बैसैत छथि ।

शेष दू गोट नाटक अछि **लोचन धाए फेधाएल** तथा **पिपासा** । एकटाक आधार इतिहास, दोसरक पुराण । राजा शिवसिंहकेँ युद्धरत छोड़ि कविकोकिल विद्यापति महारानी लखिमाक संग रजा बनौलीमे राजा पुरादित्यक आतिथ्य स्वीकारने छलाह । एहिमे मुख्यतया महाकविक कीर्त्तिगान भेल अछि, अतीतक गाथा बड़ मनोहर ढंगे कहल गेल अछि । एकर भाषाक बानगी लेल निम्न अंशकेँ देखल जा सकैत अछि–

विद्यापति– क्षमा करब, महाराज ! अभिनव जयदेवक प्रेरणा-स्रोत छलथिन महाराज शिवसिंह ओ महादेवी लखिमाक युगलमूर्त्ति । हुनकहिमे ओ राधा-माधवक भुवनमोहिनी छविक दर्शन करैत छलाह । शिवसिंहक तिरोधानक संगहि अभिनव जयदेवक मुक्त गगनमे विचरण कयनिहार कल्पना-विहगक पाँखि भग्न भऽ गेलनि । राधाकृष्णक उदात्त ओ उल्लासमय रस-रास ओ केलि-क्रीड़ाक उच्छलित श्रोतस्विनी शुष्क भऽ गेलनि । कृष्णक मथुरागमनक पश्चात् वृन्दावनक कदम्ब-काननक कोनो गाछक छोहमे बैसलि एकाकिनी राधाक उदास आँखिमे उल्लास कहाँ ।

Scanned by CamScanner

पिपासामे पौराणिक आख्यानक आधारपर छूआछूतक समस्यापर चोट करबाक प्रयास भेल अछि । महर्षि उत्तंक चांडालक हाथक जल अस्वीकारि अमृतसँ वंचित भऽ जाइत छथि आ अन्तमे गछैत छथि जे– **ऊँच-नीच, अवर्ण-सवर्ण, निज-अन्यसँ ऊपर उठनहि केओ ज्ञानी आ महात्माक आसन प्राप्त कऽ सकैत अछि ।**

दृश्यनाट्य आ श्रव्यनाट्यक एहि सातो रचनाक पारायणसँ ज्ञात होइछ जे लेखक समाजकेँ बदलऽ चाहैत छथि । हिनका परम्परामे पालित श्रेष्ठ जीवन-मूल्यक प्रति मोह छनि आ ओ समाजकेँ मानवीय बना कऽ रखबामे रुचि रखैत छथि । किन्तु, ताहिलेल कोनो तरहक संघर्ष नोतबाक बेगरता हिनका नहि छनि । जे भऽ रहल अछि से नहि होयबाक चाही, मुदा जेना चाहैत छी से कोना हो तकर किछु निश्चित चिन्तन हिनका लग नहि छनि आ सैह कारण थिक जे अपन सगर समस्याक समाधानलेल हिनका गौतम आ गान्धीक शरण लेबऽ पड़ैत छनि । आइ जखन कि सत्ताक जनविरोधी आ पुलिसक दानवी रूप जगजियार अछि हिनक दरोगा धीरेन्द्र लग मानवीय भऽ जाइत छनि आ हिनक धनेश्वर आ भोलाझाक हृदय परिवर्त्तित भऽ जाइत छनि ।

कारण अछि जे रामदेवजी बड़ सुकुमार मनोभावक कविहृदय प्राध्यापक छथि । हिनकामे मस्तिष्कसँ अधिक हृदय काज करैछ । आइ जखन कि लेखन दुनूक सम्मुचय बिना सम्भव नहि, ई मानवक हृदय-परिवर्त्तनक आयासमे लागल छथि । असहमतिसँ अस्वीकार धरिक हिनक यात्रा विद्रोह आ संघर्षसँ पलायन कऽ एकटा सुविधाजन्य समाधान ताकि लैत छनि ।

हिनक जे परिवेश आ दिनचर्या छनि से कतहुसँ हिनका विद्रोह करबासँ बरजैत छनि । अपन दैनिक जीवनमे प्रयुक्त वस्तु आ देखल घटनापर ध्यान केन्द्रित कऽ अपन स्मृति, कल्पना आ अनुभूतिक कच्चा मालकेँ धो-माँजि ई अविकल प्रस्तुत कऽ दैत छथि । कहबाक प्रयोजन नहि जे रचनाकारक जीवने रचनाक कथ्य, विषय-वस्तु आ ओकर स्वरूप निश्चित करैछ । बात तँ कतहुसँ सुरू कयल जा सकैछ । महत्त्वक बात ई होइछ जे अहाँ ओकरा समाप्त कोना आ कतऽ करैत छी आ तकर प्रतिफल की बहराइछ । आ तेँ कृतिपर चर्चा करबाक तात्पर्य कृतिकारक ओहि जीवने पर टिप्पणी करब होइछ जे ओहि कृतिक माध्यमे सोझाँ अबैछ । कोनो रचना जेँ कि रचनाकारक जीवन-चर्याक परिणाम होइछ तेँ ओ समय आ समाज-सापेक्ष होइछ । ओ जेना जीबैछ सैह सब तत्त्व रचनाक होयबामे निर्णायक होइछ । लिखब अपन शक्तिक संग जीबाक नाम थिक ।

कहऽ पड़ैत अछि जे लेखन अनुभवक मात्र निवेदन नहि, अनुभवक विकास होइछ । सफलता आ महत्त्व एहि पर निर्भर करैछ जे अहाँ तकरा कोन तरहेँ विकसित कऽ पबैत छी। मानव-मुक्तिक यज्ञमे समिधा आ साकल्य जुटायबे लेखनक काज । लोककेँ शिक्षित-रंजित करैत ईप्सित कामना धरि प्रेषित करबाक काज साहित्यक थिक आ एतहि आबि कऽ चिन्तनक प्रयोजन । हमरा जनतबे रामदेवजीक संगे कठिनता ई छनि जे ओ परम्परा-मोह आ अपन सुविधाभोगी परिवेशसँ मुक्त नहि भऽ पबैत छथि आ सैह कारण थिक जे जतऽ कतहु संघर्षक सम्भावना बनितो छैक ओ ताहि ठाम फार्मूलाबद्ध समाधान ताकि तकरा समाप्त कऽ दैत छथि ।

मैथिलीमे नाटक विधा पछुआयल अछि । तैयो एहन नहि जे नाटक नहि लिखल जा रहल अछि । राजधानी पटनाक रंगकर्मी आन्दोलनक प्रसादात नित नवीन नाटक सब आबि रहल अछि आ ताहिमे नीको नाटक सब बीछल-बेरायल जा रहल अछि । एहि सन्दर्भमे रामदेवजीक अवदानक मूल्यांकन करब भविष्यक काज थिक ।

(शिखरिणी, चेतना समितिसँ साभार)

●

Scanned by CamScanner

पसिझैत पाथरक नाट्य-विवेचन

डा. श्रीरवीन्द्र 'राकेश'

आधुनिक साहित्य मध्य मैथिलीक नाटकक विकासक रेखा बड़ क्षीण अछि। नाटकक शास्त्रीय सिद्धान्त आ आधुनिक शिल्प व्यवहारसँ पूर्ण परिचित नाटककारक श्रेणीमे नाटककार श्रीरामदेवझा आ हुनक नाट्य संग्रह **पसिझैत पाथर** अपन विशिष्ट स्थान रखैत अछि। भाव-पक्ष आ शिल्प विधानक दृष्टिएँ ई मूलतः प्रयोगधर्मी नाटक थिक। नाट्य तत्त्वक दृष्टिसँ कथावस्तु बुनबामे चरित्र संयोजनमे, संवादक संप्रेषणीयतामे, सोद्देश्यपूर्ण सन्देशक निरूपणमे, अभिनेयताक शैली-सिद्ध नवीनतामे, चरम द्वन्द्वक संग नाट्यरसक परिपाकमे **पसिझैत पाथर** सफल ओ समर्थ सिद्ध होइत अछि। 1989 इ.मे प्रकाशनसँ पूर्वहिसँ लऽकऽ एकर बाद धरि कतेको ठाम मंचित भऽ ई नाटक लोक विश्रुत भेल अछि।

पसिझैत पाथर नाट्य संग्रहमे क्रमसँ सात गोट नाटक **पसिझैत पाथर, लोचन धाए फेधाएल, रहऽ दियौ गंगाकेँ निर्मल, दुलारक भूख, मनुष्यक देवता, पिपासा** आ **चाननक बसात** संकलित अछि। स्वयं नाटककार एकरा दृश्य नाट्य ओ श्रव्य नाट्य दुहू कोटिक मानैत छथि।

पसिझैत पाथर अपन नामक संग्रहक पहिल, केन्द्रिय आ सशक्त अभिनेय नाटक थिक। एकर कथानकक विन्यासक मूलमे कन्या विवाहमे यथेष्ट दहेज लेबाक परिपाटीक त्रासद स्थिति अछि। अनेक विध रंगमंचीय प्रयोगक परिकल्पनाक संग एहि समस्यामूलक नाटकक तानी-भरनी बूनल गेल अछि। सुकन्या प्रतिमाक लेल ओकर पिता गणेश जाहि सुयोग्य इंजीनियर वर विमलक सन्धान करैत छथि, ओहि वरक पिता धनेश्वरबाबू यथा नाम तथा गुण जकाँ बेश काटरक माँग करैत छथिन। व्यवस्था आ दहेज प्रथाक मारल पिताक विवशताक पराकाष्ठा एहि कथनसँ व्यंजित होइत अछि- **हमरा चारू दिस अनहारे अनहार लगैत अछि। हमरा अपन अस्तित्त्वेपरसँ विश्वास हटि गेल अछि। अस्तित्वहीनताक बोध मृत्युक दोसर नाम थिकैक।**

सरिपहुँ संवेदनशील पिता अपन इहलीला समाप्त कऽ बीमाक रुपैयासँ बेटीक लेल वर प्राप्त करबामे सफल होइत छथि। नायिका प्रतिमा प्रोफेसर बनि महिला कॉलेजक छात्रावासमे रहैत छथि। पिताक प्राणोत्सर्गक प्रतिदान ओ अपन दाम्पत्य सुखक बलिदान कऽ छोट भाइ-बहिनक भविष्य निर्माणक दायित्व उठा कऽ करैत छथि। एमहर नायक सेहो अपन पिताक धन लिप्सासँ पीड़ित भऽ पत्नीसँ फराक रहितो ओकर पारिवारिक कर्त्तव्यभार अपना हिसाबेँ पासबुकमे रुपैया जमा करैत अपन कान्हपर उठौने अछि। ससुरक आत्मघातक बात ओकरा बूझल नहि छैक। छुट्टी भेलोपर प्रतिमा अपन गाम वा सासुर नहि जाइत अछि। एहि स्थितिमे नायक विमलकेँ पत्नी लग अयलापर क्रमशः सभटा बात फड़िछा कऽ बूझल होइत छैक। सोहागिन रहितो प्रतिमाक पतिसँ फराक रहबाक पाषाणी निर्णय पघिलैत अछि। वरक पिताक हृदय परिवर्त्तनक सूचना सेहो भेटैत अछि।

पसिझैत पाथरक मूल कथामे चानन आ चम्पा दम्पतिक प्रासंगिक कथाक बड़ सुन्दर संयोग भेल अछि। एहि माध्यमे मेहनति-मजूरी कऽ जीवन यापन कयनिहार लोकनिक बीच नवचेतनाक सूत्रपातक संकेत भेटैत अछि। भूमिपतिसँ फाजिल जमीन लऽ भूमिहीनक बीच वितरण, बासगीतक पर्चा, सुदिखोरसँ ऋणमाफी आ श्रमक समादरक परिचय एहिसँ भेटैत अछि। जतऽ चानन निम्न सर्वहारावर्गक प्रतिनिधि बनल धनेश्वरबाबू सन धनिक वर्गक लेल नवयुगीन चेतनाक चुनौती बनि उभरैत अछि, ओतहि चम्पा कॉलेजक छात्रावासक परिचारिका बनि उपार्जन करऽवाली आत्म सम्मानी जनिजातिक दृष्टान्त बनैत अछि।

Scanned by CamScanner

पसिझैत पाथर सामयिक, प्रासंगिक आ समाज सापेक्ष विशिष्टतासँ युक्त नाटक अछि। एकर विशिष्टताक उद्घोषणा प्रारम्भेमे करैत नाट्य आयोजनक मन्त्री कहैत अछि – **हमर सभक नाटकक कथा कोनो एक व्यक्तिक कथा नहि सौंसे समाजक कथा थिक। समाजक व्यथा थिक। हमर सभक नाटक, नाटक नहि, धधकैत जिनगीक धाह थिक। ओहि धाहसँ पसिझैत पाथरक अन्तःसँ फूटल अमृतक धार थिक।** एहि कथनसँ नाटकक उद्देश्य, सन्देश आ नामकरणक सार्थकता उद्घाटित भऽ जाइछ। असलमे नाटककारक एहन संवाद नव मैथिली नाटक मात्रक उद्घोष वाक्य बनि जाइछ।

नारी सम्मानक दृष्टिएँ प्रतिमाक चरित्रांकन आदर्श आ यथार्थक सन्धिपर ठाढ़ अछि। नारी स्वाभिमानक व्यथा-कथा कहबामे नाटककारकेँ बेश महारत प्राप्त छनि। नर-नारी समानताकलेल आत्मनिर्भर नारी पात्रक अपेक्षाक पूर्त्ति एहि नाटकमे भेल अछि। एक दिस जतऽ निम्न मध्य वित्तीय वर्गक सुशिक्षिता प्रतिमा नोकरी कऽ बद्धमूल सामन्ती विचार धाराकेँ तोड़ैत अछि। दोसर दिश गरीब नारीक प्रतीक चम्पा कमा कऽ खाइत अछि आ चाननक संगे नवयुगक विकासधारामे सम्मान आ आनन्दपूर्वक विचरण लेल तत्पर रहैत अछि।

नाटककार श्रीझाक पसिझैत पाथरक नायक सहृदय इन्जीनियर सन प्रतिभाशाली कमौआ युवक विमल अछि। परम्पराक पालन करैत पिताक आदेशानुसार ओकर विवाह दहेज लऽ कऽ होइत छैक। आरम्भमे ओ पिताक आज्ञाकारी पुत्र बुझाइछ। मुदा पत्नी प्रतिमाक प्रति ओकर अगाध प्रेम निर्बाध पत्र लेखनसँ अभिव्यंजित होइत अछि। ससुरक मृत्युक यथार्थसँ परिचित भेने ओकर प्रखर पुरुषोचित कर्त्तव्यबोध जगजियार होइत छैक। पिताक पापक प्रायश्चित्त ओ करिते अछि आब ससुरक मृत्युक कारणसँ पथरायल पत्नीकेँ पसिझयबा लेल ओ तत्पर होइत अछि। आज्ञाकारी पुत्रसँ आरम्भ कऽ क्रान्तिकारी आधुनिक विचारधाराक नेतृत्व करऽबला नायकक चरित्रक गठनमे नाटककारकेँ नीक सफलता भेटलनि अछि।

संवाद कोनो नाटकक आधार वस्तु थिक। पसिझैत पाथरक कथोपकथन अत्यन्त सटीक, संक्षिप्त, धरगर आ मर्म धरि उतरि जयबामे सहजेँ निपुण अछि। दृष्टान्तस्वरूप द्रष्टव्य थीक चम्पासँ प्रतिमाक कथन– **सम्मानपूर्ण जीवनक आधार तकबाकलेल हम पढ़लहुँ आ एहि नोकरीमे अयलहुँ। रबिया भुस्साक भुम्हुर आगि जकाँ जे ज्वाला हमरा मोनमे दाबल अछि तकर धाह तोरा नहि लगलहु अछि।'** प्रतिमा अन्यत्र एकठाम नायकसँ कहैत अछि– **भारतीय नारीक तँ एकेटा सम्पत्ति होइत छैक सिन्दूर तकरा कोनो मोलपर केओ छोड़ि नहि सकैत अछि। हमरा लेल ई सिन्दूरदानी, एकर लाल-लाल सिन्दूर हमर जीवनक अमूल्य सम्पत्ति थिक, हमर पिताक स्मारक थिक। हमर पिताक जीवनक मूल्य थिक ई। ... सिन्दूरक ई लाली देखैत छियैक ? ई एकर अपन लाली नहि थिकै। कन्याक बापक लिधुरसँ एकर रंग लाल भेल छैक।'** एहिना नायकक संवाद सेहो गागरमे सागर भरैत सन लगैत अछि। प्रभावी संवादक एकटा बानगी द्रष्टव्य अछि– **एक दिन एक कप पियाइए देब ताहिसँ की हमर जीवनक पिआस तृप्त हैत ?'** आगाँ नायिकासँ नायक कहैत अछि– **लगैत अछि जेना पाथरकेँ पसिझा कऽ भगीरथ जकाँ गंगाक धार बहा देब हमरा लेल सम्भव अछि किन्तु जीवन्त पाथरकेँ, पाषाण प्रतिमाकेँ पसिझा देब असम्भव अछि।'** अन्तमे चरम बिन्दुपर आबि नायिका प्रतिमा नायकसँ कहैत अछि– **भीजल आँचरसँ झाँपल पाषाण प्रतिमा की क्षमाक पात्री नहि अछि ?'** विमलक उत्तर होइत छैक– **एक प्राण, एक शरीर, के ककरा क्षमा करतैक ? ...तँ चलू। दुनू गोट मीलि कऽ समाजक एहि पद्धतिएकेँ ध्वस्त कऽ दी जाहिसँ आगाँ अनका एहन भोग नहि भोगऽ पड़ैक।'** प्रश्नात्मक, व्यंग्यात्मक आ प्रभावक एहने एहन पात्रोचित संवादसँ नाटक आपूरित अछि। अर्थ गाम्भीर्यसँ भरल भावपूर्ण आ आयरोनिकल संवाद सतति नाटककारक निपुणताकेँ प्रतिपादित करैत अछि।

पसिझैत पाथरक सम्बन्धमे नाटककारक कथन चरितार्थ होइत अछि जे एकर कोनहु एकहु अंकक अभिनय स्वतन्त्र रूपसँ कयल जा सकैछ अथवा कोनहु अंकसँ आरम्भ कऽ अन्तिम अंक धरिक अभिनय कयल जा सकैछ। नाट्य प्रभावमे एहिसँ कोनो व्याघात नहि पड़तैक। मैथिलीटा नहि अपितु कोनो भाषाक नाटक मध्य एहन लोच दुर्लभ। पसिझैत पाथरक ई अद्भुत विशेषता अछि।

Scanned by CamScanner

नाटकक भाषा सर्वथा पात्रोचित अछि । पात्रक नाम, नाटकक नाम प्रासंगिक अछि । एकर सार्थकता सिद्ध करबा लेल नाटककार लोककथाक दृष्टान्त प्रस्तुत कयने छथि । नाटकक व्यंजकता पाथरक प्रतिमा, विमल रसधार, चानन चम्पाक ग्राम्य सुगन्धि, वातावरणक संगत चयन, पात्र सभक वाक्पटुता, सहज स्वाभाविक अभिनय, शिल्पगत प्रयोगशीलता, आरम्भसँ अन्त धरि जिज्ञासा सभसँ नाटक जीवन्त बनि जाइत अछि । नाटकक स्पष्ट सन्देश अछि समरस सामाजिक जीवनमे नर-नारी कान्हसँ कान्ह भिड़ा कऽ नव-आधुनिक जीवनक अगुआ बनि काटर सन कल्मषता, धनक लोलुपता, अहंकारी विचारधारा आ छद्म दम्भक नाश कऽ विज्ञानसम्मत तर्काधारित आन्तरिक प्रेम, आनन्दमय परिवार आ समाजक रचना करथु । आ से 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' केँ चरितार्थ करैत पसिझैत पाथर, पथरायल सोचवला कठजीव बाप आ आत्म सम्मान संग कर्त्तव्यबोधक पहाड़ मुदा, नेनुसन कोमल हृदयवाली नायिकाकेँ एक्के संग पसिझा देबामे समर्थ भेल अछि ।

तीन दृश्यमे सजाओल **लोचन धाए फेधाएल** नाट्यमे स्थान, काल पात्र आ प्रभावक अन्विति बड़ नीक दृष्टिगत होइत अछि । जगत विख्यात मैथिल कवि कोकिल विद्यापतिक बाल सखा राजा शिवसिंह सुल्तानक आक्रमणसँ पराभूत होइत छथि । अतीतवृत्तक माध्यमे नाटककार देखौलनि अछि जे ओ राजधर्मक पालन करैत युद्ध भूमिमे लड़ैत अन्तर्धान भऽ जाइत छथि । मुदा ओहिसँ पूर्व राजा राजकविकेँ राजलक्ष्मी लखिमारानीकेँ मित्र राजा पुरादित्यक ओतऽ सुरक्षित लऽ जयबाक दायित्व सोंपैत छथि । राजा पुरादित्यक आश्रयमे विरहिणी रानी लखिमा बारह वर्ष पतिक प्रतीक्षा करैत छथि । महाकविक वाणी रानीक मनोव्यथाक अक्षरशः उत्कीर्ण करबामे समर्थ होइत अछि । नाटकक चरम सीमा कवि विद्यापतिक दारुण द्वन्द्वसँ उत्पन्न होइत अछि । रानी लखिमा बारह वर्ष धरि पतिक अलोपित रहलासँ अपन कर्त्तव्य निर्धारणक भार विद्यापतिपर छोड़ैत छथि । रानीक सेविका ललितासँ ई प्रश्न सुनि विद्यापति व्याकुल भऽ उठैत छथि । निर्णय देबाक सहमतिसँ नाटकक चरमोत्कर्ष आधुनिक नाटकक भव्य परिणतिक दृष्टान्त बनि जाइछ । **लोचन धाए फेधाएलक** काव्य ऐतिहासिक अछि । महाकविक पदलालित्य ओ भाव प्रवणताक जीवन्त उदाहरण हुनक रचित गीतक प्रस्तुति अभिव्यंजित करैत अछि । नाटककारक तर्कसंगत कल्पनाशीलता कथानकक अन्तरालकेँ भरि एकरा आओर विश्वासयोग्य बना दैत अछि । दोसर दिस आधुनिक शिल्पक प्रयोग करैत मौन, पूर्व-दीप्ति आ ध्वनि संयोजनसँ प्रभाव आर गढ़गर भऽ जाइत अछि ।

छोट-छोट पाँच दृश्यमे विभक्त नाट्य **रहऽ दियौ गंगाकेँ निर्मल**मे कदाचारक जोर केहन व्यापक भऽ गेल अछि एहि बातकेँ जगजियार करैत अछि । एकटा सिद्धान्तप्रिय आदर्शवादी प्रोफेसर रघुराजकेँ ऑफिसक बड़ा बाबू सदानन्द अपन भुसकौल बेटाक परीक्षाक कापीमे अंक बढ़ाबऽ लेल अपन सभ साधन झोंकि दैत अछि । आन ठाम पैरबी बलेँ अपन काज सुतारि लेबामे पारंगत सदानन्दकेँ भ्रम होइत छैक जे इहो काज होयबे करत । एहिसँ प्रो. रघुराजक आदर्श शिष्य उदयक गुरुक प्रति आस्थाक स्थापित प्रतिमा खण्डित होअऽ लगैत छैक । मुदा जखन भ्रष्टाचार निरोधी ऑफिसरक हाथेँ प्रोफेसर साहेब पैरबीकार सदानन्दकेँ घूस दैत काल रंगल हाथ पकड़ा दैत छथि तखन ई शीर्षक सार्थक होइछ जे ओ भ्रष्टाचारक प्रतिरोधमे सत्य-निष्ठाक पवित्र गंगाधार बहबैत छथि, हुनक ओ धारा अविरल प्रबहमान रहओ । दृश्यबन्धमे चाहक दोकान आ प्रोफेसर साहेबक निवासक यथार्थ चित्रण करबामे नाटककार सक्षम भेलाह अछि । छोट-छोट कटगर कथोपकथन आ आब की होयत केर जिज्ञासा नाटकमे अन्त धरि बनले रहैत अछि । कुल मिला कऽ वर्त्तमान भ्रष्ट समाज-व्यवस्थापर ई कसि कऽ चोट करऽवला नाट्य रचना थिक ।

मात्र दुइ गोट दृश्यमे घटित **दुलारक भूख** एकांकी जकाँ अछि । एहिमे जगदीश आ पार्वती निसन्तान दम्पति छथि । बाँझपनक बेधक पीड़ासँ पीड़ित पत्नीकेँ पति एकटा महात्माक स्वप्न सन्देशसँ प्रभावित भऽ अपन सन्तानक अभावक पूर्त्ति, ओकरा प्रति दुलारक स्वाभाविक भूखक पूर्त्ति सूरति सन कतेको धीयापूतावला भूखल, अशिक्षित आ ढहनाइत परिवारक प्रति ममत्व उझीलि देबाक प्रेरणा दैत अछि । जनाधिक्यसँ समाज-राष्ट्र परेशान अछि । तेँ किएक ने व्यष्टि चेतनाकेँ समष्टिसँ जोड़ि अपन दुखकेँ दोसराक हँसीपर निछाओर करी । यैह प्रेरणा एहि नाट्यमे अछि । शिल्पक दृष्टिएँ एकरा ध्वनि वा रेडियो रूपक सेहो कहल जा सकैछ । ग्रामीण जनक जीवनक यथार्थ वर्णन, छोट, मुदा चोटगर संवादसँ नीक जकाँ प्रदर्शित भेल अछि ।

Scanned by CamScanner

मनुष्यक देवता दुइ दृश्यक नाटक अछि । एहिमे सहृदय वैद्य धैरजक कर्त्तव्यबोध देखना जाइछ । एक दिश हुनक बेरोजगार पुत्र सुधीर आत्मग्लानिसँ त्रस्त भऽ पड़ाइत अछि । ओ जीवनसँ निराश भऽ मृत्यु दिश बढ़ऽ चाहैछ । दोसर दिश चौधरीजी सन सम्भ्रान्त लोकक मुमुर्षु जमाइक प्राण रक्षा लेल झंझावाती रातिमे वैद्यजीसँ अपना ओतऽ चलऽ लेल कहैत छथिन । एक दिश पुत्रक प्राण रक्षाक प्रश्न तँ दोसर दिश गामक जमाइक प्राण संकटमे । पुत्र स्नेह आ कर्त्तव्यक द्वन्द्व चलैत अछि । अन्तत: वैद्यजी अपन पुत्रकेँ परिवार ओ मित्रक परिचर्यामे छोड़ि चौधरीजी ओतऽ भयाओन रातिमे जयबा लेल तत्पर होइत छथि । यैह तँ भेल मनुष्यक अभ्यन्तरमे निवास करैत देवत्व । एहि भावकेँ स्पष्ट करबामे ई ध्वनि रूपक किंवा एकांकी पूर्ण सफल सिद्ध होइत अछि ।

नाट्यकर्त्ता **पिपासा** शीर्षक एकांकीक एकहि दृश्यमे महाभारतकालीन ऋषि उतंककेँ मरुभूमिमे अत्यन्त पियासल देखबैत छथि । पूर्व वरदानसँ अभिप्रेरित इन्द्र चाण्डाल वेशमे मुनिक प्राण रक्षार्थ चमड़ाक मसकसँ जल देबऽ चाहैत छथि । उत्तंक, **'युग युगक सामाजिक आ शास्त्रीय परम्पराक विरुद्ध हम चलिये कोना सकैत छी,'** कहैत.. चाण्डाल हाथक जल पीबासँ मना करैत छथि । चाण्डाल चल जाइत अछि आ कृष्ण अबैत छथि । तखन मुनि वस्तुस्थितिसँ परिचित होइत छथि । एहि प्रकारेँ मानव मानवमे वर्ण भेद, अस्पृश्यता, ऊँच-नीचक भेद भाव सभ कोनो तरहेँ मान्य नहि, तार्किक नहि, एकर उद्घोष **पिपासा** शीर्षकसँ होइत अछि । एहन भावनाकेँ अत्यन्त लघु कलेवरमे प्रस्तुत करबामे, समतामूलक समाजक नव निर्माण हेतु पीठिका तैयार करबामे, आधुनिक विचारधाराक स्थापनामे नाट्यकार सफल भेलाह अछि ।

चाननक बसात परम्परावादी आ रूढ़िग्रस्त ग्रामीण समाज मध्य नवयुगक टटका चेतनाक सुवासित बसात बहयबाक प्रतीक अछि । चारि दृश्यमे बाँटल संग्रहक एहि अन्तिम नाट्यमे गामक कतेको कुरीति-कुविचारक विरुद्ध नव भाव बोध, शिक्षित आ सुरुचि सम्पन्न सुधारवादी युवावर्गक नेतृत्व करऽवला धीरेन्द्रक त्याग आ धैर्यपूर्ण समाजसेवीक कथानक वर्णित अछि । नाटककार गान्धीवादी विचारधारासँ परिचालित खलपात्रहुकेँ अन्त धरि हृदय परिवर्त्तित होइत देखयबामे कुशल छथि । भोलाझा सन रूढ़िवादी अन्तमे वृक्षारोपण करैत छथि, पंचू सन लण्ठ आकण्ठ बदलि जाइछ । बदनाम पुलिस-दरोगा समाज सुधारक काजमे हाथ बँटबऽ लगैछ । एहि सभसँ गन्हाइत गामक परिदृश्य बदलि कऽ चानन छिलकैत स्वच्छ सुन्दर परिदृश्य उत्पन्न करैत अछि ।

संग्रहक पहिल नाटक **पसिझैत पाथरक** आरम्भ नाटकक आरम्भसँ भेल अछि तँ अन्तिम नाटक **चाननक बसातमे** सेहो नाट्य आरम्भक सूत्रपात देखाओल गेल अछि । अर्थमूलक एहि योजनासँ नाटककार निश्चित रूपेँ जनमाध्यमक सशक्त साधन भेने नाटकक उपादेयता आ रमणीयता दिश सभक ध्यान आकृष्ट करबामे अग्रगण्य छथि । पुरातनपन्थी, शोषक आ स्वार्थी लोक नवयुगक प्रगतिकामी चेतनाक बाटमे बाधा उत्पन्न करिते रहल अछि । मुदा व्यक्ति, समाज, देश आ मानव मात्रक उत्थान चाहनिहारक सत संघर्षक आगाँ पाथरो पसिझैत अछि आ चाननक बसातो सिहकैत अछि ।

श्रीरामदेवझाजी भारतीय नाट्य शास्त्रीय परम्परासँ पाश्चात्य नाट्यक अत्याधुनिक शिल्प-कौशल धरिक समन्वित रूप 'पसिझैत पाथर' मे प्रस्तुत कयने छथि । वस्तुत: असलमे कामदीक सुखान्त हुनको प्रिय छनि, भने कथा विन्यासमे पात्रकेँ कठोर संघर्ष किएक ने करऽ पड़ल हो किंवा घनघोर द्वन्द्व किएक ने भोगऽ पड़ल हो । रंगमंचीय विधानसँ आवेष्टित सभ नाट्य पाठ्य आ दृश्य, अभिनेय आ श्रव्य दुहु अछि । स्थान, काल आ प्रभावक अन्विति त्रयक निर्वहण भेल अछि । रेडियो नाटक जकाँ ध्वनि संयोजनक तकनीक, पूर्व दीप्ति, सूच्य संवाद, अन्तर आ अन्तराल एवं परिवर्त्तनक लेल लघु आ दीर्घ मौन (पॉज) इत्यादिक प्रयोगशील व्यवहार नाटककार कयने छथि । अपन अभिनव विशिष्टताक कारणेँ मैथिली नाटक साहित्य मध्य **पसिझैत पाथरक** स्थान उत्कृष्ट आ अक्षुण्ण बनल रहत, ई निश्चित अछि ।

●

Scanned by CamScanner

समकालीन मैथिली नाटक का महिमामंडन

डा. श्रीनरनारायणराय

पसिझैत पाथर श्रीरामदेवझा द्वारा लिखी गयी सात छोटी-बड़ी नाट्य रचनाओं का संग्रह है। संग्रह की सबसे बड़ी रचना **पसिझैत पाथर** (42 पृ.)नाटक है जो चार अंकों का है। मध्यम आकार की समतूल रचनाएँ हैं; **लोचन धाए फेधाएल, चाननक बसात**, एवं **रहऽदियौ गंगाकेँ निर्मल**, (क्रमशः 24, 25 एवं 22 पृष्ठ) जिन्हें आज के नवनाट्य रचना शिल्प के अनुसार लघु नाटक कहा जा सकता है। **दुलारक भूख, मनुष्यक देवता, पिपासा** तीन एकांकी भी इसी संग्रह में लिये गये हैं।

संग्रह की प्रतिनिधि रचना है पसिझैत पाथर। यह नाटक चार अंकों का है पर आरम्भ के तीन अंक वस्तुतः दृश्य के आकार लिये हुए हैं। यदि नाटक को अंक और दृश्यों में बाँटा जाता है तो अंक और दृश्य की शास्त्रीय मर्यादा निभायी जानी जाहिये। यदि प्रयोग अभीष्ट था तो आज के प्रचलित प्रयोगात्मक शिल्प का आश्रय लिया जा सकता था और अंक-दृश्य की योजना से बचाया सकता था। वस्तुतः नाटककार इस चक्कर में रहे कि अलग-अलग अंक इस प्रकार गढ़े जायें कि एक स्वतंत्र इकाई के रूप में प्रत्येक अंक की अलग पहचान भी बनी रहे और चारों अंकों को जोड़कर एक पूरे नाटक का कथानक भी तैयार हो जाये। यह भी एक प्रयोगात्मक शिल्प है और हिंदी में कुछ नाटक ऐसे आ चुके हैं जिनके किसी खंड विशेष का स्वतंत्र मंचन किया जा सकता है, और सभी खंड मिलाकर एक पूर्णांगी नाटक के रूप में भी। रामदेवझा ने अपनी भूमिका में लिखा है कि इस नाटक का अलग-अलग खंडों में, स्वतंत्र इकाई के रूप में भी, और संपूर्ण नाटक का एक साथ भी, कई बार मंचन हो चुका है। इसमें दो मत नहीं कि चारों अंकों के वस्तु-विधान स्वतंत्र और निरपेक्ष हैं और एक साथ पूर्ण कथानक भी। परन्तु साढ़े चार पृष्ठों का प्रथम अंक और लगभग सात पृष्ठों का तृतीय अंक- एकांकी की जगह झलकी अधिक लगते हैं।

पसिझैत पाथर चार कथा खंडों का मिश्रण है। प्रथम अंक में एक नाटक का आयोजन है जिसमें धनेश्वरजी की लिप्सा और क्षुद्ध मानसिकता का अनावरण किया गया है। धनेश्वरजी को यह जगहँसाई सहन नहीं होती। बात हाथापाई तक पहुँचती है। मंत्रीजी के हस्तक्षेप से किसी प्रकार मामला शांत होता है पर चानन (शोषित) और धनेश्वर (शोषक) का वैर भाव स्पष्ट हो जाता है। दूसरे अंक में पिता गणेशजी अपनी पुत्री के विवाह की चिन्ता में व्याकुल हैं। एक सत्पात्र उपलब्ध है पर पिता धनेश्वर नामधारी जीव दहेज-लोभी हैं और दहेज की कुप्रथा विवाह स्थिर करने में एक बड़ी बाधा है। अपने मित्र सुरेन्द्र को प्रतिमा के विवाह का भार देकर गणेशजी आत्महत्या कर लेते है, उनकी मृत्यु को स्वाभाविक मानकर बीमा कंपनी जो रुपये देती है प्रतिमा का विवाह उस धनराशि से हो जाता है। इस अंक की मुख्य चिन्ता है दहेज और उससे उत्पन्न होनेवाली विभीषिकाएँ। प्रथम अंक का विद्रोही चानन नयी सरकारी नीतियों के चलते अब अपनी जमीन पाकर अपनी खेती करने लगता है। धनेश्वरजी का ऋण सरकारी घोषणा के अनुसार माफ हो चुका है। अब वह अपनी पत्नी चंपा को लिवाने आया है जो धनेश्वरजी का ऋण चुकाने के लिए उस कॉलेज के हॉस्टल में नौकरी करती है जिसमें प्रतिमा प्रोफेसर है। पति-पत्नी की सुख-दुःख की बातों और नौकरी छोड़कर चंपा द्वारा अपने पति के पास रहने के निर्णय के साथ तीसरा अंक पूरा होता है। इस अंक के कथ्य का दबाव चंपा (नारी) द्वारा नौकरी (आर्थिक स्वावलंबन) करने अथवा पारिवारिक जिम्मेदारियाँ स्वीकार कर उसे छोड़ने के द्वंद्व पर आधारित है। चौथा अंक बड़ा है इसमें तीन दृश्य हैं। प्रथम दृश्य में चंपा और प्रतिमा की बातचीत है। स्पष्ट होता

Scanned by CamScanner

है कि चंपा नौकरी छोड़कर जा रही है पर वह प्रमिमा के अकेलेपन से दुःखी है । प्रतिमा उसके नवजीवन के लिए शुभकामनाएँ और उपहार देती है किसी आगंतुक की सूचना में दृश्य पूरा होता है । दूसरे दृश्य में स्पष्ट होता है कि आगंतुक विमल नाम का व्यक्ति प्रतिमा का परिचित और आत्मीय है और प्रतिमा से मिलना चाहता है । तृतीय दृश्म में स्पष्ट होता है कि प्रतिमा विमल की पत्नी है । उसे आभास है कि उसके विवाह के लिए उसके पिता ने दहेज की रकम बीमा कंपनी से उपलब्ध कराने के लिए आत्महत्या की थी और स्वाभाविक मृत्यु का रूप दिया था । इसलिए धनेश्वरजी के पुत्र विमल से विवाह होने के बाद उसने शिक्षा–दीक्षा प्राप्त की और कॉलेज में शिक्षण कार्य शुरू कर दिया । अपनी आय से अपने भाई–बहनों का पोषण करती रही और ससुराल का त्यागकर हॉस्टल में रहने लगी । विमल एक समझदार और उदार प्रकृति का व्यक्ति है और प्रतिमा के पाषाण हो गये हृदय को पिघलाने की कोशिश करता है जिससे वह जीवन को उसकी स्वाभाविकता में जी सके । पर दहेज के लिए धनेश्वरजी का दबाव और पिता की चुप्पी उसे सामाजिक व्यवस्था की जिस क्रूरता का बोध कराती है, उसने उसके हृदय को भावशून्य एवं पत्थर बना दिया है । पति के सारे मनुहार विफल हो गये । उसने बताया कि किस प्रकार कष्ट सहकर उसने इतने पैसे जमा किये कि प्रतिमा के आश्रितों का पालन–पोषण हो सके । पर प्रतिमा इस पर भी नहीं पिघली और विमल के साथ पत्नी की भांति रहने के लिए उसने ससुराल जाना स्वीकार नहीं किया । विवाह के समय दी गयी सिन्दूर की डिब्बी वापस माँगकर विमल ने अपना अन्तिम शस्त्र चलाया जिसके चलते प्रतिमा विचलित हो उठी । जयशंकर प्रसाद के पात्रों की तरह 'सहसा प्रवेश' करते हुए प्रतिमा के पिता के चिरमित्र सुरेन्द्रबाबू ने प्रतिमा को जब यह बताया कि प्रतिमा को उचित सम्मान दिलाने के लिए विमल ने क्या कुछ नहीं किया और विमल के पिता ने भी अपने किये के प्रायश्चित्त स्वरूप प्रतिमा की छोटी बहन के साथ अपने दूसरे पुत्र का दहेज रहित विवाह भी स्वीकार कर लिया है । इसलिए इतने सारे बदलावों के संदर्भ मे प्रतिमा को भी अपना निश्चय बदल देना चाहिये । पितातुल्य और पिता के मित्र से ये सारी बातें सुनकर और जानकर प्रतिमा अविश्वास नहीं कर सकी और उसका पाषाण हो गया हृदय भावों की आँच में तपकर अश्रु–बूंदों के रूप में पिघलकर बहने लगा । इस प्रकार नाटक का शीर्षक **पसिझैत पाथर** चरितार्थ हुआ । मैथिली भाषा में पिघलने के अर्थ में **पसिझैत** शब्द व्यवहार में आता है ।

लघुनाट्य आधुनिक नाट्य रचना शिल्प की एक नवीन उपलब्धि है । यह एकांकी से बड़ा और पारम्परिक त्रयअंकी शास्त्रीय नाटक से आकार में छोटा होता है । मंचीयता और क्षिप्रता इसकी अन्यतम विशिष्टता होती है । हिन्दी के अधिकांश लोकप्रिय हुए नाटक मूलतः इसी शिल्प से अनुप्राणित हैं । यह प्रभाव अन्यत्र भी देखा जा सकता है । बंगला में बादल सरकार के कुछ नाटक इसके उदाहरण हैं । मैथिली के अरविन्द अक्कू, लल्लनप्रसादठाकुर, गंगेश गुंजन, रामचन्द्रचौधरी और रोहिणीरमणझा, आदि नवोदित नाटककारों ने एक या एकाधिक ऐसे ही नाटक लिखे हैं । समीक्ष्य संग्रह में तीन रचनाएँ ऐसी हैं जिन्हें लघुनाटकों की श्रेणी में रखा जाना चाहिये । **लोचन धाए फेधाएल, चाननक बसात** और **रहऽ दियौ गंगाकेँ निर्मल** । इनमें से प्रथम रचना **लोचन धाए फेधाएल** कवि विद्यापति के जीवन से जुड़ी घटना पर आधारित है यद्यपि कथा राजा शिवसिंह एवं रानी लखिमा की है । तीरभुक्ति के राजा शिवसिंह पर मुसलमान आक्रांता सुलतान ने आक्रमण किया । संकट की इस घड़ी में राजा शिवसिंह ने विद्यापति से अनुरोध किया कि वे रानी लखिमा को सुरक्षित लेकर उनके मित्र द्रोणवार राजा पुरादित्य के यहाँ चले जायें । वे शीघ्र ही यवनों को पराजित कर उनसे मिलेंगे । नाटक का प्रथम दृश्य गुप्तचर द्वारा पुरादित्य को इनकी संभावित उपस्थिति का संकेत देता है क्योंकि वे अपरिचित हैं । दृश्य के अन्त में पुरादित्य द्वारा भेंट किये आभूषण भिजवाकर रानी लखिमा अपनी उपस्थिति संकेतित करती है– और पुरादित्य उन्हें पहचान जाते हैं । दूसरे दृश्य में पुरादित्य द्वारा छिपकर विद्यापति के पद सुनने का प्रसंग है और विद्यापति अपनी उस आंतरिक पीड़ा से उन्हें अवगत कराते हैं जो पति–वियोग में और किसी समाचार के अभाव में रानी लखिमा झेल रही हैं । पीड़ा की यही अनुभूति विद्यापति की कविता में प्राणरूप ध्वनित हैं, पुरादित्य इसे समझ जाते हैं । इसी लिए राजसभा में विद्यापति का काव्य पाठ सुनने का अपना आग्रह छोड़ देते हैं । ऐसा करना राज्यसभा

Scanned by CamScanner

में रानी लखिमा को नंगा करना होता । तृतीय दृश्य अधिक मर्मस्पर्शी है । शिवसिंह को बिछुड़े बारह वर्ष व्यतीत होने को हैं । अंतिम रात बीत रही है । अगली सुबह विद्यापति को निर्णय देना है कि रानी लखिमा विधवा हो गयी या नहीं । क्योंकि हिन्दू धर्म की मान्यताओं के अनुसार बारह वर्ष की सूचनारहित अनुपस्थिति के बाद उस व्यक्ति को मृत मानकर उसका अन्तिम संस्कार कर दिया जाता है । विद्यापति चिन्ता में हैं । अतीतावलोकन प्रणाली से उनकी और शिवसिंह की अंतिम भेंट का दृश्य आता है । विरहाकुल और अनिश्चय के द्वन्द्व में बारह वर्षों से रोती रानी लखिमा उनके सामने हैं और दूसरी ओर मित्र राजा शिवसिंह का दिया हुआ वचन कि वे अवश्य मिलेंगे । अब कल उन्हें निर्णय देना है कि रानी लखिमा का कर्त्तव्य क्या है । रचना मर्मस्पर्शी है, इसमें दो मत नहीं, लेकिन एक ही छोटे दृश्य में अतीत और वर्त्तमान दोनों दृश्यों का समायोजन सुकर नहीं । प्रदर्शित कर लिया जाये यह बात दूसरी है पर प्रभाव के खण्डित होने में संदेह नहीं रह जाता ।

दूसरी लघु नाट्य रचना **चाननक वसात** मिथिला के ग्रामीण परिवेश में नवशिक्षित उदारवादी युवकों द्वारा लाये जानेवाले सुधारों, रूढ़िवादी महारथियोंके विरोध तथा अंततः उन युवकों के सत्प्रयास के अभिनन्दन का नाटक है । **'चानन'** चंदन के लिए मैथिली शब्द है । नवयुवकों के प्रयास से गांव की गन्दगी दूर होती है और लगता है जैसे मलय पर्वत से आनेवाली स्वच्छ निर्मल वायु उस गाँव से होकर बहने लगी है । इसे ही नाटककार ने **चाननक बसात** कहा है । प्रथम दृश्य सार्वजनिक स्थान का, दूसरा दृश्य नायक धीरेन्द्र के निवास की कोठली का, तृतीय दृश्य गाँव के एक अन्य भाग का, चतुर्थ दृश्य गाँव के एक और अन्य भाग का है । ये दृश्य दिखाये तो जा सकते हैं परन्तु स्वल्प काल में इतने अधिक दृश्यों का बदलना नाटक के पक्ष में नहीं जाता ।

तीसरा लघु नाट्य **रहऽदियौ गंगाकेँ निर्मल** शिक्षा जगत् में फैले भ्रष्टाचार की ओर भी संकेत करता है और इस बात की ओर भी कि ऐसी स्थिति में जो पवित्रता और आदर्शों के साथ जीना चाहते हैं उन्हें भ्रष्ट करने के लिए लोग किस प्रकार तुल जाते हैं । दृढ़ चरित्र के आदर्शवादी प्रोफेसर रघुराज अंक बढ़ाने के लिए उत्कोच देते हुए सदानन्दजी को भ्रष्टाचार निरोध विभाग के अधिकारी के हाथों रंगे हाथ पकड़वाकर इस अग्नि परीक्षा में खरे उतरते हैं ।

संगृहीत अन्य तीन रचनाएं एकांकी हैं । **दुलारक भूख** में जगदीशबाबू का लोकोपकारी स्वभाव एक अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करता है । एकांकी में दो अतीतावलोकन दृश्य भी हैं जिन्हें वर्त्तमान में जोड़ा गया है । **मनुष्यक देवता** एक ऐसे ग्रामीण चिकित्सक (वैद्य) का चरित्र प्रस्तुत करता है जो मनुष्य के रूप में देवता का आदर्श लिये हुए है । अपने मुमूर्षु पुत्र को छोड़कर भी अन्य रोगी को देखने लिए मूसलाधार वर्षा के बीच अंधेरी रात में उतने ही उद्यत भाव से चल पड़ते हैं, जैसे वह भी उनका ही स्वजन हो ।

पिपासा पौराणिक कथापर आश्रित एकांकी है । प्यास से व्याकुल उत्तंक मुनि को चाण्डाल वेश में इन्द्र विष्णु के अनुरोध पर अमृत पिलाने आते हैं, पर चांडाल के हाथ से जल पीने की अपेक्षा उत्तंक मृत्यु की प्रतीक्षा करना अधिक अच्छा समझते हैं । जब भगवान कृष्ण उत्तंक को चांडाल का वास्तविक परिचय देते हैं तो उत्तंक की आँख खुलती है और अपनी वर्णभेद दृष्टि पर वे लज्जित होते हैं । कृष्ण अन्तर्धान हो जाते हैं । प्यास से विकल उत्तंक अचेत हो जाते हैं । जल लेकर वापस आया शिष्य भद्रमुख जब उन्हें जगाता है तो चांडाल और कृष्ण-प्रसंग उन्हें स्वप्न-सा प्रतीत होता है, पर वे इससे मिली शिक्षा को अवश्य अंगीकार करते हैं । पारसी रंगमंच की चमत्कारपूर्ण प्रस्तुति-शैली में कृष्ण का आगमन और अन्तर्धान होना इस कारण खटकने लगता है कि कुशल रंगकर्मियों द्वारा प्रकाश व्यवस्था के सहारे इस चमत्कारिक रंग-निर्देश को मंच पर प्रस्तुत किया जा सकता है पर इस प्रक्रिया में प्रदर्शन की अधिकांश ऊर्जा केवल आविर्भाव-तिरोभाव दिखाने में ही नष्ट हो जायेगी और कथ्य उपेक्षित-प्रभावहीन रह जायेगा ।

संग्रह की समस्त रचनाओं को एक साथ सामने रखते हुए कई बातें तत्काल स्पष्ट हो जाती हैं । नाटककार

Scanned by CamScanner

ने पारम्परिकता को निभाते हुए भी आधुनिकता के प्रभाव, विषयवस्तु के चयन और शिल्पविधान, दोनों ही धरातलों पर स्वीकार किया है । अतीतावलोकन की नयी रंग-तकनीक, वस्तुविन्यास में रूढ़ि का त्याग, बदलते युग के अनुसार नयी सोच और समझ को गति देनेवाले विषय की उपस्थिति को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है । अधिकांश रचनाएँ यथार्थवादी शैली की हैं । पुराकथा को लेकर चलनेवाली दो रचनाएँ हैं जो उत्तंक मुनि की कथा और विद्यापति की कथा पर आधारित हैं- अत: इनकी काल्पनिकता की स्थिति स्पष्ट है । मोटे रूप में शैली, शिल्प और कथ्य तीनों ही दृष्टि से रामदेवझा की रचनाएं समयोचित और समय के प्रभाव समेटे हुए हैं । जहाँ प्रयोग है, वहाँ वे कोई नयी जमीन तोड़ते दिखायी नहीं देते । जहाँ पारम्परिकता है वहाँ भी वे गतानुगतिकता से परिचालित होकर रूढ़िबद्धता का नहीं, अपनी स्वतंत्रचेता शक्ति का परिचय देते हैं । प्रभाव की दृष्टि से **पसिझैत पाथर** और **लोचन धाए फेधाएल** संभवत: सर्वाधिक प्रभावशाली रचनाएँ हैं । **पसिझैत पाथर** शिल्पगत नवीन प्रयोग के कारण भी उल्लेखनीय है अत: इसे संग्रह का प्रतिनिधित्व करने का गौरव मिलना ही चाहिये था । पूरे संग्रह में बस एक ही बात बहुत अधिक खटकनेवाली है कि यह एकसाथ नाटक, लघुनाटक और एकांकी तीन भिन्न प्रकृतियों की रचनाएँ सामने रखता है । यदि यह उनकी समस्त नाट्य रचनाओं का संकलन है तो **रचनावली** या **रामदेवझा समग्र** जैसे शीर्षक के साथ आना चाहिये था, या फिर नाटक, लघुनाट्य एवं एकांकियों के अलग-अलग संकलन बनाये जाने थे । इनके प्रत्युत्तर लेखक के पास होंगे, पर शायद समाधान नहीं । वैसे अपने वर्त्तमान रूप में यह संकलन एक नाटककार के रूप में रामदेवझा को स्थापित करने में सक्षम है । मैथिली में प्रकाशन व्यवस्था की चिन्ताजनक स्थिति होते हुए भी रामदेवझा के कथा साहित्य (चार), समीक्षा ग्रंथ (तीन), संपादित ग्रन्थ (पाँच) का प्रकाशन यह स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं कि श्रीझा समर्पित साहित्यकार हैं ।

आधुनिक मैथिली नाटक का प्रारंभ जीवनझा द्वारा 1904 ई. के आसपास लिखे गये नाटकों से होता है । जीवनझा एक समर्थ नाटककार के रूप में उभरे और एक संभावनापूर्ण नाटककार के रूप में अपनी पहचान बनायी । यह खेद का विषय है कि ऐसा प्रतिभाशाली नाटककार केवल तीन नाटक लिखकर रह गया । जीवनझा और रामदेवझा (पसिझैत पाथर) के बीच लगभग 85 वर्षों का अंतराल है । इन नौ दशकों में मैथिली नाटक को कहाँ से कहाँ चला जाना चाहिये था । मैथिली नाटकों के विकास की गति अवरूद्ध रहने के यों तो कई महत्त्वपूर्ण कारण बताये जा सकते हैं, जिनमें से एक है प्रकाशन और विक्रय व्यवस्था का अभाव जिसके चलते अधिकतर मैथिली साहित्यकारों को किसी प्रकाशन के छद्म नाम से अपनी रचनाएँ स्वयं छपवानी पड़ती रही हैं । छपने के बाद उनका बिकना भी एक गम्भीर समस्या रही है । जीवनझा और रामदेवझा के बीच ईशनाथझा, सुधांशु शेखर चौधरी और गोविन्दझा के नाम आते हैं । यह संख्या चिन्ताजनक रूप से कम है । नयी पीढ़ी के कतिपय चर्चित नाटककारों का नामोल्लेख किया जा चुका है । नाटक और नाटककारों की लम्बी सूची के बीच सार्थक रचनाओं की खोज में कम ही नाटक और नाटककार उल्लेखनीय प्रतीत होते हैं । वह प्रसन्नता का विषय है कि मैथिली नाट्य लेखन अब उस स्तर को स्पर्श करने लगा है जहाँ साहित्य अकादेमी जैसी केन्द्रीय संस्था के पुरस्कार दिये जाते हैं । मैथिली साहित्य की अन्य विधाएँ पहले पुरस्कृत हो चुकी हैं । मैथिली नाटक को महिमामंडित करने के लिए श्रीरामदेवझा बधाई के पात्र हैं ।

('प्रकर' हिन्दी मासिक, अगस्त 1992सँ साभार)

●

Scanned by CamScanner

The Melting Stone : From Criticism to Creativity

Dr. Shree Udaya Narayana Singh

Ramdev Jha has rendered invaluable service to literature by bringing out edited works like **Haragaurii Vivah Naatak, Raam Vijay Naat, Nandipati Gitimaalaa** as well as a book of songs found in the inscriptions in Nepal. He is equally well known for his longish critical studies such as **Maithili Shaiva Saahityak Bhumikaa, Maithili Shaiva Sahitya** and **Umapati**, besides other edited collections : **Maithili Prachin Gitavali** and **Kavivar Jivan Jha Rachanavali.** But that he has been also a fiction writer with at least four collections (**Ek Khira : Tin Phank, Manuk Santan, Dharati Mata**, and **Ijoti Ranii**) has not gone unnoticed. **Pasijhait Pathar** (The melting stone) is a collection of seven plays of different types, topics, treatments and of varying length. Besides the lead play **Pashijhait pathar**, after which the collection has been christened, the collection has the following plays :

Lochan Dhaay Phedhaayal, (Eyes are tired waiting forbearingly) a one-act stage play with three scenes, based on the life and times of Vidyapati, where we find him taking shelter in a friendly kingdom, without revealing his own or Queen Lakhima's identity, but where they find their wait for twelve long years becoming unbearable in the absence of any news of her husband, king Shivasimha; **Rahay diyau Ganga Ken nirmal,** (Let the Ganges remain pure) a one-act play with five scenes revolving around the problem of corruption in public examination and how a teacher puts up a brave fight resisting all pressures on him to increase some body's marks in return for some consideration, **Dulaarak bhuukh,** (The hunger of love), a short play of two scenes on the problem of a childless couple and how they get over their personal tragedy by choosing to meet a bigger tragedy of the acute poverty of a neighbour whose uncared for children are adopted by them without any self interest, only to give them better education, food and clothing; **Manushyak devata,** (The God among men) another play in two scenes depicting how a village doctor is dedicated to his patients, even when his own married but unemployed son falls a victim to circumstances; **Pipassa,** (The thirst) a neo-mythical short play of only one scene, which shows how important it is for all learned people to realize the futility of the man made division of 'castes', where the story revolves around the test Lord Krishna and the God-King Indra wanted to perform on the thirsty sage Uttank who is ready to die in thirst but who still would not accept howsoever pure water there may be, from a 'lowly' person; **Cananak Basat,** (The breeze of the sandalwood) a longish one-act with four scenes, the main theme being how a group of young men who want to improve the living conditions and employment opportunities of the poor and hapless villagers face stiff resistanc from their village elders who have vested interest in the status quo but who finally give up and agree that the new wind - the breeze of the sandal wood tree - cannot be, and should not be, stopped.

Scanned by CamScanner

It is not difficult to guess that there is not thematic or structural unity among these plays. Some are full-length plays while others are one-acts, or even skits. Some are historical or mythological in reference and context, while others refer to Ramdev's concern for social malaise such as the system of dowry. A number of these plays were written as radio plays. The lead play was first broadcast long back under a different title : **Sindurak Mol** (The price of the nuptial knot) from the All India Radio, Darbhanga. The modified version of it, under the name of **Pasijhait pathar**, was also put up on stage by the studends of Mithila university in the same year. To return to their variety, while some of these are recently written plays, other are quite old, and have been staged many times. For instance, the lead play was written and performed first in 1976, and many a time subsequently, although it remained unpublished until 1989. To that extent, the award has once again established the creative faculty of an otherwise well-known critic.

The author claims that **Pasijhait pathar** has a special feature in that one could either perform any one of its acts independently (or, I would say, put it up as an episode in a serialized broadcast) or start from any act to go up to the end at the desired point without creating any problem for the spectators or listeners in comprehending the story line or enjoying the performance. The first act (which has been included in this write-up under the 'excerpts') surely makes the play quite attractive. It has the additional advantage of introducing the topic, characters and tenor of the play, too. Besides two characters (Dhaneshwar and Chanan) of the principal story, the act involves the spectators through other subsidiary persons: Secretary and two spectators. One group is shown as trying to stop the performance because it allegedly paints one of the living persons in the village (Dhaneshwar) black. The other argue that the play is not written to portray a specific person or his atrocious ways of doing things but that it is a picture of the greater malaise that has plagued the whole society, and particularly the rural areas. The act ends in the triumph of the group that wants to put up the performance.

The author quite rightly describes the intention of the young men and women depicted in the play (both as actors and cast in social roles) as well as his own intentions aptly through a simile: Just as the river water gushes out of a melting stone from top of hill, so also age-old customs, traditions and socioeconomic behavior of a class of people would eventually be shattered to make way for what is a guileless, harmonious and empathetic way of living, where a father does not have to kill himself to let his family claim insurance money to pay for his marriageable daughter's dowry, or where a miserly money-lender and a vile person does not have to wait for his daughter-in-law to come and reform him leading to a complete change of heart, or where the poor and the hapeless do not have to await the official declaration on land reforms and bonded labourers to claim the piece of land they have been traditionally tilling.

Excerpt

First Act

[Place : The stage, decorated. There are spectators sitting in front. The opening music could be heard. The music stops all of a sudden. The secretary of the drama troupe appears on the stage, dressed in khadi dhoti and Kurta, and a shawl on his shoulders.]

Scanned by CamScanner

Secretary : *[Greets all the spectators who have assembled.]* Friends and lovers of theatre. It gives me immense pleasure to see you all who have kindly come here to watch this performance being put up by a group of young people without much resources.

Spectator 1 : That is enough. Why don't you start the play now ? We are all tired of sitting here waiting.

Secretary : Please be quiet. It wouldn't take much time for the play to begin. The play which we are going to put up today.....

Spectator 2 : See, everybody is getting bored.

Secretary : Gentleman, please have patience. A few enthusiastic young men are going to demonstrate their artistic credentials. Even if it becomes necessary to take some trouble for that, you must bear with them and encourage them. How can a performance begin if there is so much disturbance ?

Chanan : *[Rising from among the spectators]* Mr. Secretary, Sir !I want to see who has guts to block the play ?

Secretary : I have difinite news that some people have not taken kindly to this performance of youngesters. I would, therefore, pray to you kindly remain seated in peace. It is possible that some people will become violent, pelt stones, or even attempt to tear off curtains or set fire to the stage. But for that you must not be scared or worried. Especially, the women present here should not feel afraid.

Chanan : You are unduly worried, Sir. We are not weak. Anyone who tries to create problems for our performance will learn a lesson today.

Spectator 1 : Why don't you begin the play, boy ?

Chanan : Shut up ! The play WILL begin. Let me see who dares to stop it. Let him come forward !

Spectator 2 : Hey ! You think too much of yourself, kid ? I'll slash your tongue.

Spectator 1 : Hey you ! Stop the play, I say... *[shouts]* ! Lift the curtains !

[Both these spectators move towards the stage menacingly.]

Chanan : *[Runs and stops the two.]* Where are you going ? Better talk to me first ! *[These three people get involved in brawl and eventually shift on the stage. This creates a flutter among the spectators.]*

Secretary : *[Tries to separate the three.]* Hey ! Why are you doing all this ?

Spectator 1 : In a village of Brahmins, who is this lowly priest making pedigrees ? This will end your vanity, you swine !

Scanned by CamScanner

[Spectator 2 tries shaking a pillar violently to remove the support for the stage. Chanan lifts him up and throws him overboard, and finally sits on this man.]

Chanan : Now let's see how you stop the play. Stop the performance. *[holds both by their hair and presses their head downwards as his jaws harden]* You small creatures... trying to stop the fire of our time..... you would arrest the storm and torrent, would you ? Now why don't you try stopping this play ? Come on, try your tricks !

Secretary : *[Tries to lift Chanan to bring order but fails.]* Chanan ! What are you doing ? Leave them ! Be done with !

Dhaneshwar : *[appears on the stage from among the spectators in an agitated manner with a hunter in hand.]* I have had too much of your boasting. I will beat the hell out of you. I will clip your wings...if not, uproot them. *[Pushes Chanan hard so that he rolls on the ground, and then lifts him by his collar and drags him up to some distance to give him a taste of hunter. The Secretary stops Dhaneshwar even before he lashes out at Chanan.]*

Secretary : Dhaneshwar Babu ! Please calm down ! Cool down, please !

Dhaneshwar : *[pushing him hard.]* You too, get out of my sight ! Or else. I will see the end of your barristry.

Secretary : An established person of your statue should not be so taken in !

Dhaneshwar : Don't take me to be an impotent fool who will stand all the insults, abuses and character assassination silently. I am strong enough to burn each of your boys who participates in this play.

Secretary : Who says you are to be painted black in this play ?

Spectators 1 : We know ! The play is meant to be a parody of Dhaneshwar-Babu's life. It says he demands a lot of money to fix his son's marriage.... says he lends money to make the farm workers work as bonded labourers on his field only because of his high interst rates. It says he forcibly occupies defaulters houses... he doesn't even spare his relatives. It shows him inciting everybody in the village to fight against everybody else.

Secretary : Today the whole society has many such people. Our story is not about a particular person. It is a picture of the whole society. It depicts the pain we all bear. It unfolds the drama of our life....no, it is not merely a play. It is a mirror of our lives inferno. It is also the stream of nectar born out of the heart of the stone which has melted in this inferno.

Chanan : Is there only one Dhaneshwar Babu that he feels so hurt ?

Scanned by CamScanner

Dhaneshwar : Shut up ! *[Moving towards Chanan menacingly]* Hey ! Do you think you have become Gama, the Great Wrestler ? *[catches him by the neck and gives him a few quick slaps. The Secretary tries to separate them.]*

Secretary : Dhaneshwar-Babu ! You are now committing an impropriety. This is sheer atrocity. You should take a look at the blowing wind of our time. You can't stop this wind.

Dhaneshwar : It is because of you that I am swallowing all these. If anybody else had done this, or said all these, I would have by now poured kerosene on him and set him aflame.

Secretary : There was a time when you could do it. The people were scared of you then. They used to flee for fear of life. Now the fear is gone, gone are your special charms ! The vessel of vice lies smashed. Now you would surely find a few people who are ready to die.

Dhaneshwar : Let me see who is ready to die !

Secretary : You are still in your world of make-believe. If you so wish, you can get your tin of kerosene. Here I am... waiting for you.

Chanan : Secretary-Saheb, I am standing here too. Let him first pour kerosene on me.

Secretary : Dhaneshwar-Babu ! It will be kind of you if you now get off the stage and let the play begin ! Let the spectators think this too was a scene from the play.

Dhaneshwar : There will NOT BE any play ! Lift the curtains and stop the play.

Secretary : *[smiles sarcastically]* There WILL BE a play ! It will be performed and will depict your misdeeds. Let me make it very clear to you. By bringing in a dozen miscreants and ruffians you should not imagine that you would be able to drive away this large crowd of humanity ! *[shows all the spectators.]*

Dhaneshwar : I am telling you, there will be a blood bath... *[raises his voice and calls]* Where is everybody gone ? Call all my men !

[A few people try to get up from among the spectators but others around them force them to sit down.]

Secretary : It's no use calling them. Each one of your men is surrounded by three of our men. *[Scolds the two spectators who were by then standing in a corner of the stage.]* Hey, you guys ! What are you doing here on the stage ? Get off the stage ! I say, get out of here ! *[Both the spectators are taken aback. The Secretary looks at Chanan. Chanan holds them both by their neck and pushes them down the stage.]*

Dhaneshwar : Chananma You.... swine, death is hanging on your head !

Scanned by CamScanner

Secretary : Let the God of Death dance on.... you needn't worry about it.

Chanan : You should better be gone.

Dhaneshwar : Chananma ? If I do not recover all debts from your father by tomorrow, I am not worth my salt.

Chanan : Yes, yes.... recover them.

Dhaneshwar : And you have to vacate my land by tomorrow !

[While going away] And I shall see which son of the bitch comes in to your rescue then ! *[exits]*.

Chanan : All right ! We too shall see !

Secretary : *[turning towards the spectators]* What do you all say ? Shall we begin the play ?

Spectators : Yes, yes ! Let the play start !

Chanan : *[in excitement]* Inquilab, zindabad ! Our drama... has to happen ! Inquilab, zindabad ! zindabad, zindabad.

Secretary : Let the 'zindabad' stop ! And,.... let the play begin !

[Chanan and Secretary go away in opposite directions.]

(From– Indian Literature, S.A., Nov.-Dec. 1992)

●

Scanned by CamScanner

Pasijhaita Pathara : At a glance

Dr. Shree Devakant Jha

Pasijhaita Pathara (1989) is a collection of seven stage-plays by Ramdeva Jha, a man of genius, presenting harsh realities with idealized solutions. Most of them are problem plays. **Pasijhaita Pathara** is his masterpiece. It hits out at the dowry system which ruins Ganesha, the poor father of the marriageable Pratima. This evil spoils the conjugal life of Vimal and Pratima. At long last, the villain goes through a change of heart and solemnizes the marriage of his younger son with Neelima, the bride's younger sister. The change of the villain into a virtuous man has been Projected in a dramatic manner, but the contrasted picture of Dhaneshwara Babu looks a forgone conclusion. Chanana and champa are delightful figures, but they cut a sorry figure. The role of friendship played by Surendra is fame in effect.

A play in four acts, Pasijhaita Pathara excels in technical skill and presentation. The opening scene meets the ends of Prastavana and is engineered in a most artistic style. Like a streak of lightining, it catches our eye and reveals the plane and purpose of the play, focussing on a revolt against age-old orthodoxy. It is as good as a radio-play and can be played out together or independently. The second act has a dull note, but the third is relieving and delightful. The fourth act is the masterpiece. In fine, it is a master-produce of a mature artist and serves as the turning-point where broken chords are united. The reunion of hearts is brought about in a most dramatic style, sounding a happy note. The work is full of punch and piercingly ironic in style.

The playwright is a reformist to the care and adheres to classical poise and dignity. His progressivism is aimed at a true renaissance. The title of the play has a human appeal and a deep note of compassion where even a stone would melt.

Lochana Dhaya Phedhayala, in three moving scenes, presents the pathetic tale of Lakhima, who waited for twelve years in the hope of meeting Shiva Singh and then embraced 'Sati' at the funeral pyre. It is a tragic play and gives a touching account of Vidyapati with the chaste heroine and his bosom friend Shiva singh.

Rahaya Diyau Ganga ken Nirmala is satire on our examination system which has lost its sanctity and is ruled by money, muscle and power. In an amusing style, the playwright has presented the evaluation problem, seeking its remedy in the raids of the anticorruption department.

Dularak Bhukha is a one-act play in two scenes presenting the contrast between two families, one childless and the other neighbouring one whith an army of children. The playwright has sought to devise a compromise formula preparing the childless couple to treat the children of their neighbour fondly as their own. The use of flashback and psychoanalysis are used for this change. Thus the play brings a message of togetherness.

Scanned by CamScanner

Manushyak Devata is a one-act play showing the high place of human life. The sense of benevolence and nobility is the measureing rod for the inherent godliness of man. The Ayurvedic doctor Dhairaj, though besieged with problems, keep up his nobility by attending to Chaudhary's son Sudhira, hanging between life and death. His own only son is unemployed and suffers from suicidal tendencies, his financial burden is pressing but he continues to serve, deserving the godliness in him.

Chananaka Basata is a one act play comprising four scenes, representing radical change of different planes of village life. Dhirendra is determined to change the complexion of his village but the villainy of Bhola Jha and Panchu is in the way. The energetic hero struggles, organises a team of young men to fight it.

The natural colloquial style and the reformist spirit that informs the play heightens the total effect of the play.

Pasijhait Pathar was awarded by Sahitya Akademi in 1991. Ramdeva Jha stands as a living force in modern Maithili drama.

(ए हिस्ट्री आफ माडर्न मैथिली लिटरेचरसँ अंश गृहित)

Scanned by CamScanner

पसिझैत पाथर नाट्य संग्रहमे चरित्र-दृष्टि

डा. श्रीमतीइन्दिराझा (पटना)

मैथिलीक चतुर्दिक विकासमे उल्लेखनीय योगदान देनिहार, श्रीरामदेवझाक नाट्य संग्रह **पसिझैत पाथर** मैथिली नाट्य साहित्यमे नव प्रयोग थिक। कथानक, चरित्र, संवाद, भाषा प्रयोग, युगीन विचारधारा इत्यादिक दृष्टिएँ प्रस्तुत नाट्य-संग्रह दृश्य ओ श्रव्य, उभय कोटिक कार्य सम्पादित करैत अछि। एकर सफलता एहिसँ सूचित होइत अछि जे एकरा 'साहित्य अकादेमी' पुरस्कारसँ समादृत कयल गेल छैक।

'पसिझैत पाथर' नाट्य-संग्रहमे सात गोट नाटक संकलित अछि– **पसिझैत पाथर, लोचन धाए फेधाएल, रहऽ दिऔ गंगाकेँ निर्मल, दुलारक भूख, मनुष्यक देवता, पिपासा** एवं **चाननक बसात**।

एहिमे **लोचन धाए फेधाएल** नाटक ऐतिहासिक पृष्ठभूमिपर लिखल अछि शेष सभ नाटक सामाजिक समस्याकेँ केन्द्रीभूत कऽ लिखल गेल अछि। **पिपासा** पुराणाश्रित नाटक अछि।

मैथिल समाजमे कन्याक वैवाहिक समस्या, दहेजक कारणेँ, अत्यन्त जटिल भऽ गेल अछि। एतऽ वर-कन्याक विवाहकलेल कन्याक रूप-गुण नहि कन्याक पिताक यथेष्ट धन निर्णायक भूमिकाक निर्वाह करैत छैक। 'पसिझैत पाथर' नाटकमे कन्याक विवाह करयबामे असमर्थ पिता विषपान कऽ कऽ मृत्युकेँ प्राप्त करैत छथि तथा हुनके बीमाक राशि सँ वरक पिताक झोड़ी भरल जाइत छनि। वरक पिता धनेश्वर अर्थ लोलुप तँ छथिहे, कर्ज दऽ कऽ सूदिमे जिनगी भरि जन बोनिहारकेँ खटबैत छथि तथा असामीक घर उजाड़ि दखल कऽ लैत छथि। नाटकक सूत्रधार रूपमे एतऽ मंत्री छथि जे पाठक वा दर्शकक शंकाक निवारण करैत कहैत छथि जे– **ई नाटक कोनो एक व्यक्तिक कथा नहि अछि, सम्पूर्ण समाजक व्यथा अछि, धधकैत जिनगीक धाह अछि। ओहि धाहसँ पसिझैत पाथरक अन्तःसँ फूटल अमृतक धार अछि।** एक धनेश्वरक कुकृत्यसँ अनेक परिवार नष्ट-भ्रष्ट भऽ जाइत अछि। समाजमे गणेशबाबूक मित्र सुरेन्द्र सदृश पात्रक चरित्र सराहनीय अछि जे स्वर्गीय मित्रक परिवारक मंगलकलेल कृतसंकल्प छथि। धनेश्वरबाबूक पुत्र विमल एक आदर्शवादी युवक छथि जे पत्नी प्रतिमाक कोपभाजन होइत छथि। प्रतिमा निर्दोष विमलकेँ पत्नी सुखसँ वंचित रखैत छथि। क्रुद्ध, क्षुब्ध प्रतिमा अध्ययन समाप्त कऽ व्याख्याताक नोकरी पकड़ैत छथि। अपन पिताक मृत्युक आघातसँ नहि उबरि ओ कठोर हृदया भऽ जाइत छथि। प्रतिमा अपन शिक्षामे आयल खर्च सेहो विमलकेँ घुरबऽ चाहैत छथि। विमल अपन छोट भायसँ प्रतिमाक छोट बहिनिक विवाह कऽ प्रायश्चित्त करैत छथि। एतऽ प्रतिमाक विमलक प्रति कठोर व्यवहार अवांछनीय अछि अवश्य, मुदा क्रूर पिताक सभ बात आँखि मुनि कऽ मानि लेब विमलक चारित्रिक दोष देखबैत अछि। विमल जँ काटर प्रथाक कठोर विरोध करितथि तँ धनेश्वरक विचार परिवर्त्तित भऽ सकैत छलनि। प्रतिमा विमलक हाथमे अपन सिन्दुरदानी देखि कहैत छथि– **सिन्दुरक ई लाली देखैत छिएक ? ई एकर अपन लाली नहि थिकैक। कन्याक बापक लिधुरसँ एकर रंग लाल भेल छैक।**

लोचन धाए फेधाएल नाटकक केन्द्रमे छथि विद्यापति। ई ओइनवार वंशक ऐतिहासिक घटनापर आधारित अछि। शिवसिंहक रणक्षेत्रसँ तिरोधानक उपरान्त विद्यापति शिवसिंहक पत्नी लखिमाक संग रजा बनौलीक द्रोणवार राजा पुरादित्यक आश्रयमे निवास कयलनि। महारानी लखिमा बारह वर्ष धरि पतिक घुरबाक प्रतीक्षा कऽ, सती भेलीह। विरहिणी लखिमा स्वयं पार्श्वमे रहि अपन मार्मिक व्यथाक सूचना दैत छथि। पुरादित्य महत्तक द्वारा पठाओल रत्न दर्पण

Scanned by CamScanner

देखि राजपरिवारकेँ चीन्हि कऽ आतिथ्य सत्कारक लेल उद्यत होइत छथि । उदार हृदय पुरादित्य महारानीक हेतु विशिष्ट परिचारिका पठबैत छथि । नाटकमे संवाद-योजना द्वारा चरित्रपर प्रकाश देल गेल अछि । एतऽ पुरादित्य महाकविक चारित्रिक उत्कर्ष देखबैत कहैत छथि जे ओ लिखनावलीक रचना कयल, लखिमाक आत्मसन्तोषार्थ श्रीमद्भागवतक व्याख्या कयल । गीत रचनाक आग्रह देखि महाकवि क्षमा याचनाक संग कहैत छथि जे हुनक प्रेरणा स्रोत महाराज शिवसिंह ओ लखिमाक युगल मूर्त्ति छनि जनिकामे ओ राधा-माधवक भुवनमोहिनी छविक दर्शन करैत छलाह । शिवसिंहक तिरोधानक संगहि अभिनव जयदेवक मुक्त गगनमे विचरण कयनिहार कल्पना विहगक पाँखि भग्न भऽ गेलनि । राधा-कृष्णक उदात्त ओ उल्लासमय रस-रास ओ केलि-क्रीड़ाक उच्छलित स्रोतस्विनी शुष्क भऽ गेलनि । कृष्णक मथुरा गमनक पश्चात् वृन्दावनक कदम्ब काननक कोनो छाँहमे बैसलि एकाकिनी राधाक उदास आँखिमे उल्लास कहाँ ? विद्यापतिक स्वामीभक्ति युग-युग धरि प्रेरणाक स्रोत बनल रहत । लघुकाय नाटकमे नाटककार चरित्रक उज्ज्वल पक्षकेँ उद्घाटित करबाक प्रयास कयलनि अछि । कहलो गेल छैक- 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' । - शिवसिंह युद्ध क्षेत्रमे योद्धा बनल छथि मुदा ओतहु अपन पत्नीक कुशलताकलेल निर्देश दैत छथि- **'देखू ! भीषण युद्ध चलि रहल अछि । योद्धा सब लड़ि - कटि रहल अछि । तर्कक समय नहि अछि । हम राजलक्ष्मीक रक्षा करैत छी, अहाँ कुललक्ष्मीक रक्षा करू ।'** शिवसिंहक महान चरित्रक प्रशंसा हुनक शत्रु पर्यन्त करैत छनि । द्रष्टव्य थिक निम्न पाँती- **'जखन शेरे दिल शिवाइ राजा चमचमाइत भाला लेने हमर छातीकेँ निशाना बनौने एक-व-एक हमरा सामने आयल कि हम आतंकित भऽ गेलहुँ । हाथ काँपि गेल आ हाथक तनल तरुआरि खसि पड़ल । मुदा वाह रे शिवाइ राजा ! निहत्थापर हथियार नहि चलाबी, शायद सैह सोचि हमर छाती वा माथापर वार नहि कऽ कऽ बिजलीक तेजीसँ अपन भालाक नोककेँ उपर उठा देलक आ हमर माथाक ताज अपन भालामे टँगने चल गेल ।"**

रहऽ दियौ गंगाकेँ निर्मल नाटकमे आदर्शवादी प्रोफेसर साहेब स्वयंपर लगायल सदानन्दक मिथ्या अभियोगक पर्दाफास करैत छथि । उचितसँ विशेष अंक नहि देबाक सिद्धान्तपर अडिग रघुराजजी सदानन्दक दुराग्रहसँ बचबाक लेल भ्रष्टाचार निरोध विभागक अधिकारीसँ सम्पर्क कऽ हुनका दंडित करबैत छथि । असत्यपर सत्यक विजय, विविध पात्रक योजना द्वारा देखयबाक प्रयासमे श्रीरामदेवझा सफल भेलाह अछि । रघुराजक शिष्य उदय अपन गुरुक प्रति विशेष श्रद्धा-भक्ति रखैत छथि । सदानन्द हुनका रघुराजक विरुद्ध असत्य वचन कहि दिग्भ्रमित करैत छथि । द्रष्टव्य थिक उदयक विचार- **जाहि ठामक धूरा-माँटि चानन जकाँ कपारमे लगबैत छलहुँ, से दुर्गन्धसँ भरि गेल । सरस्वतीक वीणाक झंकारकेँ मुद्राक खनखनी मन्द कऽ देलक ।'** नाटकक अन्तमे सेहो सदानन्दक अधम चरित्रकेँ अनावृत्त करैत रघुराजजी कहैत छथि- **सदानन्दजी ! अपने अधःपतित छी तँ रहू । मुदा जे बचऽ चाहैत अछि ओकरा पतनक गर्त्तमे नहि घिचियौक ।'**

दुलारक भूख नाटक एकटा निःसन्तान दम्पतीक करुण रससँ परिपूर्ण मनोभावक दर्शन करबैत अछि । बाँझ पत्नीक भावनाक आदर करब केओ जगदीशसँ सीखय । पार्वतीकेँ निराश देखि ओ विविध प्रकारेँ हुनका सान्त्वना दैत छथिन । सामाजिक जीवनमे एहन घटना यत्र-तत्र देखल जाइत अछि । जगदीश सूरति बाबूक सन्तानकेँ पर्याप्त सुख देबऽ चाहैत छथि जे स्वयं अधिक सन्तान रहलाक कारणेँ आर्थिक अभावमे उचित ढंगसँ पालन-पोषण करबामे असमर्थ छथि । पत्नी लोकक उलहनसँ क्षुब्ध भऽ पतिसँ शिकाइत करैत छथि । जगदीश परिपक्व बुद्धिक पुरुष छथि । पत्नीकेँ उपदेश दैत द्रष्टव्य थिक हुनक उक्ति- **लोकके कहबाक लेल मुँह रोकि देबै ? आ ई किएक ने बुझै छिऐ जे एहि तरहक सोचनिहारो तँ ओही अशिक्षाक अभाव अभियोगमे जिबै अछि । ई तँ ओकर संस्कारक दोष थिकैक ।**

सन्तानक अभावमे दुलारक भूख दम्पतीमे रहि जाइत छैक । अपन नाटकक माध्यमसँ, पात्रक परस्पर वाद-विवादसँ जीवनक एकटा पैघ अभाव-सन्तान सुखसँ वंचित होयबाक समस्याक सरल समाधान देखाओल गेल अछि ।

मनुष्यक देवता नाटकमे धैरजबाबूक चारित्रिक महानता देखाओल गेल अछि । धैरजबाबू वैद्य अपन बीमार पुत्रक

Scanned by CamScanner

सेवा छोड़ि चौधरीजीक बीमार जमायक परिचर्याक हेतु उद्यत होइत छथि । बेरोजगारीक समस्यासँ जुझैत धैरज बाबूक पुत्र स्वयंकेँ परिवारक भार बूझि पलायन करऽ चाहैत छथि, मुदा बाहर आबि अचेत भऽ भूलुण्ठित भऽ जाइत छथि। देवनबाबू हुनका कान्हपर उठा अनैत छथि । यथोचित उपचार प्रारम्भ होइत अछि । मुदा चौधरीजीक जमायकेँ दुःखित जानि रिमझिम वर्षाक रातिमे हुनक घर जाइत छथि । धैरजबाबू मनुष्य नहि देवता छथि । परोपकारिता हुनक जीवनक उद्देश्य छनि ।

पिपासा नाटकक कथावस्तु पुराणसँ निःसृत अछि । महाभारतकालीन ऋषि उत्तंक भद्रमुख नामक शिष्यक संग वनमे विचरण करैत पिपासाकुल भऽ उठलाह । ग्रीष्म ऋतुमे मृगमरीचिकाक भान भद्रमुखकेँ भेलनि । उत्तंक शंका व्यक्त कयलनि मुदा अत्यन्त व्यग्र भऽ ओहि दिश भद्रमुखकेँ पठा देलनि । उत्तंक श्रीकृष्णसँ जलक हेतु प्रार्थना कयलनि । चाण्डाल वेशमे कृष्ण जल अनलनि तँ उत्तंक अहंकारपूर्ण वचन कहलथिन- **तोँ अस्पृश्य भऽ कऽ एक ब्राह्मणसँ आग्रह कऽ रहल छह । साधारण शिष्टाचारक सीमाक उल्लंघन कऽ कऽ धृष्टताक परिधिमे प्रविष्ट भऽ रहल छह । शास्त्रमे जकरा स्पर्शो करबाक निषेध छैक तकर छुइल जल कोना ग्रहण करू ?'**

ओही क्षण श्रीकृष्ण सद्यः उपस्थित भऽ उत्तंककेँ अपन विचार बदलबाक परामर्श दैत छथि । अश्पृश्यता समाजक लेल कलंक अछि । श्रीकृष्ण कहैत छथि- **युग युगक कठोर साधना ओ तपस्या कोन कार्यक, यदि मनुष्य मनुष्य नहि बनि सकत ? यदि अपन अन्तरमे सहानुभूतिक भागिरथी नहि बहा सकल ।** श्रीकृष्ण उत्तंकक भर्त्सना करैत कहैत छथि जे- **एक मानव सन्तानक दोसर मानव सन्तान द्वारा अनादर एकटा अक्षम्य अपराध अछि** । उत्तंक श्रीकृष्णक चरणपर नतमस्तक भऽ क्षमा याचना करैत छथि । उत्तंकमे उच्च वर्णक मिथ्या अहंकार छनि, ओ तदनुकूल आचरण कऽ निम्न वर्गक अपमान करैत छथि । हुनका ई नहि ज्ञात छनि जे प्रत्येक जाति-धर्मक अन्तसमे एकहि प्रकारक रक्त मज्जा छैक, सभ एकहि ऋषिक सन्तान अछि । मुदा कृष्णक प्रेरणासँ ओ अपन व्यवहारपर स्वयं लज्जित होइत छथि ।

चाननक बसात नाटक सामाजिक जीवनक चित्र प्रस्तुत करैत अछि । शिक्षित युवक धीरेन्द्र ग्रामीण समाजक स्वरूप बदलऽ चाहैत अछि । एकर घोर विरोध होइत छैक मुदा धीरेन्द्रक विचारसँ किछु युवक सहमत सेहो होइत छैक। शुभकार्यक विरोध कयनिहार मे प्रमुख छथि भोलाझा । द्रष्टव्य थिक हुनक विचार- **गामक जे सामाजिक परम्परा सनातनसँ चल अबैत अछि तकरा बदलबाक ने ककरो अधिकार छैक ने सामर्थ्य ।'**

धीरेन्द्र ग्रामक जलाशयक जीर्णोद्धारक भार लैत अछि, रिलीफक गहूम निर्धन परिवारक बीचमे बटयबाक निर्णय लैत अछि । धीरेन्द्रक आदर्श चरित्र, ग्रामीण समाजक विकासक लेल उठाओल गेल डेग श्लाघनीय अछि ।

श्रीरामदेवझाक पसिझैत पाथर नाटकक मुख्य पात्र सब आदर्शवादी छनि तथा अपन आदर्शक रक्षाक लेल कटिबद्ध छनि । नाटककार श्री झा आदर्शवाद, सांस्कृतिक चेतना, नैतिक मूल्यकेँ ध्यानमे राखि अपन नाटकक रचना कयलनि अछि तथा तदनुकूल पात्रक सृजन कयने छथि । मैथिली साहित्यक ई विधा प्रगतिक पथपर अग्रसर अछि तथा रामदेवझाक प्रस्तुत संग्रह ओहि विकासक गतिकेँ बल देलक अछि । वर्त्तमान जीवनमे व्याप्त अनास्था, उद्देश्यहीनता ओ विसंगतिक अभिव्यक्ति चरित्रक माध्यमे भेल अछि । समस्यामूलक नाटकमे जीवनक कटुताक चित्रण विविध पात्रक द्वारा भेल अछि तथा नवीन ढंगसँ नाटककार द्वारा समाधान तकबाक प्रयास कयल गेल अछि ।

●

Scanned by CamScanner

जखन पाथरे पसीझि गेल...

श्रीसुरेन्द्रनाथ

प्रत्येक युगक रचनाकार अपन युगीन समाजक आकलन करैत, देखैत, भोगैत अपन परिष्कृत विचार आ नव दृष्टिसँ समाजिक परिवर्त्तनक शंखनाद करैत छथि। ई बात फराक अछि जे आगन्तुक पीढ़ी, पुरान पीढ़ीक दृष्टि आ विचारकेँ पुरान मानैत अपन नव हितकारी दृष्टिक सूत्रपात करैत छथि। मुदा पुरान पीढ़ीक किछु रचनाकार एहन भऽ जाइत छथि जनिका हम चाहियो कऽ बिसरि नहि सकैत छियनि। हुनक विस्तृत फलकपर पसरल दृष्टि किछु आग्रही विचारकक कुदृष्टि पड़लाक उपरान्तो ओ मान्य चिन्तक भऽ जाइत छथि। कबीर, सूरदास प्रभृति बहुतो साहित्यकार एहन भेल छथि जनिका अपनो समयमे कम आलोचना नहि भेलनि मुदा आइ ओ हमरालोकनिक आदर्श छथि। हम चाहियो कऽ कबीरकेँ अपन दृष्टिसँ फराक नहि कऽ सकैत छियनि आ ने सूरदासेकेँ बारि सकैत छियनि। तात्पर्य ई जे जनिक जीवन आ दृष्टिमे कबीर आ सूरदास नहि छथि, ओ कोनो तरहेँ चिन्तक भइये नहि सकैत छथि। प्रश्न ई उठि जाइत अछि जे एहि निकतीपर श्रीरामदेवझा कतऽ धरि झूस छथि आ कतऽ धरि अपन रचना मे भारी (लऽत) भऽ जाइत छथि। एहि लेल हुनक **पसिझैत पाथर** संग्रहक शीर्ष नाटक ''पसिझैत पाथर''केँ आधार बनबैत दृष्टिकेँ फड़िछायब आवश्यक बुझैत छी।

उपर्युक्त संग्रहक विशेषता अछि जे सभ नाटक सामाजिक भावनासँ ओतप्रोत अछि आ एहि तथ्यकेँ स्पष्ट करैत अछि जे श्रीझाकेँ समाजक कुरीतिसँ विक्षोभ भेलनि आ जाहि समाजमे ओ रहि रहल छथि ओहि समाजमे अपन आँखिएँ सामाजिक कटुता, बैर भाव, आर्थिक असमानता, दहेजक लोभ, हत्या आ बेटीक बियाह लेल अपन प्राण धरि उत्सर्ग करऽवला भावनाकेँ प्रेरित भऽ कऽ देखलनि, सुनलनि आ भोगलनि आ ताही यथार्थकेँ रचनाक माध्यमे परसि देलनि।

संग्रहमे सात गोट नाटक संकलित अछि जे दृश्य नाट्य आ श्रव्य नाट्य उभय कोटिक अछि। शीर्ष नाटक पसिझैत पाथर स्वतन्त्र रूपसँ एक अंकक नाटक कहल जा सकैछ आ ओकरा कोनहुँ अंकसँ खेलब आरम्भ कयल जा सकैत अछि। ताहिसँ नाटकक प्रभावमे कोनो व्यतिक्रम नहि होइछ।

श्रीझाक उपर्युक्त संग्रह अपन कथानक, कथोपकथन, भाषा-प्रयोग आ युगीन दृष्टिक कारणे अभिनय आ श्रव्य नाटकक विशिष्ट कृति भऽ गेल अछि। संग्रहक भूमिकामे श्रीझा स्वयं स्वीकारैत छथि– **श्रव्य नाट्यमे यद्यपि देखल नहि सुनल जाइत अछि; तथापि एहिमे श्रोताकेँ ओहने रसानुभूति प्राप्त होइछ जेहन अनुभूति प्रेक्षागृहमे अभिनीत नाटकक प्रत्यक्ष दर्शनसँ होइछ। अवस्से दृश्य नाट्यमे आंगिक, सात्विक ओ आहार्य अभिनयक कारणेँ प्रेक्षक नाट्य वस्तुक अभिनय कलात्मताक आनन्द लेवामे सक्षम होइत अछि। श्रव्य नाट्यमे ई सुविधा नहि रहैछ। परन्तु संवादक द्वारा तथा विभिन्न प्रकारक ध्वनि संयोजनक प्रभाव द्वारा आंगिक, सात्विक ओ आहार्य अभिनयक प्रतीति प्रेक्षककेँ करा देल जाइत अछि।**

संग्रहक पहिल नाटक **पसिझैत पाथर**मे बेटाक विवाहमे पुरदाहा टाका माँगब, कर्ज दऽ कऽ सूदिक पाइसँ जिनगी भरि जोन-बोनिहारिसँ काज लेब, निर्बलक घर उजाड़ि देब आ जमीन दखल कऽ लेब; देयादवादकेँ अपनामे लड़बिते रहबाक दुष्चक्रक विरोध कयल गेल अछि। ई नाटक मैथिल समाजक कथा थीक। रचनाकार एहि बहन्ने पूरा समाजेक खोइँचा सोहि देने छथि।

Scanned by CamScanner

व्यवस्था आ तिलक-दहेज प्रथा अपन समाजक असाध्य रोग भऽ गेल अछि । बेटीक बिआह एतेक कठिन रोग भऽ गेल अछि जे लोक बेटीक बिआहक खातिर अपन जान पर्यन्त उत्सर्ग कऽ दैत अछि । नाटकमे गणेश अपन बेटीक बिआहक दहेज राशि जुटयबाक हेतु आत्महत्या करबाक निर्णय लैत छथि जे हुनक मृत्युक पश्चात् बीमा पॉलिसीसँ प्राप्त टाकासँ बेटीक बिआह भऽ जाइनि ।

नाटकक निष्पत्तिपर किनको कोंढ उनटि सकैत छनि । प्रसंगवश जखन नाटकक प्रमुख पात्र-पात्री विमल आ प्रतिमाक बीच वार्त्तालाप होइत अछि आ विमल अपन सोहागक देल सिन्दूरदानी लऽ जाय चाहैत छथि तँ हुनक पत्नी प्रतिमा प्रतिकारपूर्वक रोकैत कहैत छथिन जे ई कोनो स्थितिमे नहि लऽ जा सकैत छी । नाटककारेक शब्दमे देखल जाय सकैछ–

प्रतिमा– बड़ पैघ मूल्य दऽ कऽ एकरा कीनल गेल छल । ककरो जीवनक दाम दऽ कऽ एकरा कीनल गेल छल । हमरे लय कीनल गेल छल । तेँ ई टा नहि दऽ सकै छी । भारतीय नारीक तँ एकेटा सम्पत्ति होइत छैक सिन्दूर । तकरा कोनो मोलपर केओ छोड़ि नहि सकैत अछि । हमरा लेल ई सिन्दुरदानी, एकर लाल सिन्दूर, हमर जीवनक सम्पत्ति थीक । हमर पिताक जीवनक मूल्य थीक ई ।

विमल- एहि मूल्यक व्याख्या सुनबाक अधिकार हमरा अछि ?

प्रतिमा- सिन्दूरक ई लाली देखै छिऐक ? ई एकर अपन लाली नहि थिकैक । कन्याक बापक लिधुर सँ एकर रंग लाल भेल छैक । एही लेल हमर पिता आत्महत्या कयने छलाह ।''

समाजमे बेटीक बिआहक समस्या दिनोदिन बढ़ले जा रहल अछि । निम्नवर्गक लेल तँ ई आओरो कठिन अछि। ओहिपरसँ गाम-समाजसँ जमीन्दारी प्रथाक उन्मूलन सरकारी रेकॉर्डमे अवस्से भऽ गेल अछि मुदा जमीन्दारी रोब एखनहुँ कायम छैके । नवपरक धनिकाहा जमीन्दार बनि जाइत अछि आ कमजोर वर्गपर नाना प्रकारक अत्याचार आ शोषण करैत रहैत अछि । मुदा धनिकाहे सब तिलक-दहेजसँ फिरीशान अछि । बिआहक बादो पति-पत्नी, जीवन-सुखसँ वंचित रहैत अछि । दोसर दिस निम्न वर्गक समाज आर्थिक विपन्नतामे जीवन-वसर करितहुँ जीवन-सुखसँ वंचित नहि होइत अछि । ओकरा मात्र पेट भरबाक कोनो जोगाड़ भेटबाक चाही । समाजक एहि दुरंगी स्थितिपर नाटककारक कसगर चोट छनि से हुनके शब्दमे देखल जा सकैछ–

चम्पा- ओ कहलकै, कर्जा सभक कानूनी माफी भऽ गेलै । घराड़ी अपन भऽ गेलै आ आब सरकार दिससँ जमीनो भेटतै । हम तँ कर्जे सधबऽ लय खास कऽ नौकरी करै छलहुँ, से सधिए गेलै । तखन ओ कहलकै जे गामे चल । ओतऽ दुनू गोटे परिश्रम करब आ सुखसँ रहब । हमरो ओकर गप्प नीक लगलै दीदी । खूब नीक लगलै ।''

नाटकमे चम्पा आ चाननक वार्त्तालापक वर्णन एहन अद्भुत भेल अछि जेना लगैत अछि मिथिलाक कोनो गाम-घरमे बैसि कऽ घर-परिवारक बीच होइत वार्त्तालाप सुनि रहल होइ । कोनो रचनाक सफलताक एक महत्त्वपूर्ण कड़ी इहो अछि जे ओ अपन माटि-पानिसँ जुड़ल रहय । मैथिलक एक-एक संस्कारसँ ई नाटक भरल अछि । मिथिलामे कोनो मैथिलानी अपन पतिक नाम जीहपर नहि अनैत छथि तकर रोचक वर्णन नाटकमे भेटैत अछि ।

रचना करब सहज कार्य नहि थीक । नाटक लिखब आओर दुरूह । दृश्य नाटक लिखब ओहूसँ बेसी दुरूह । ताहूमे दृश्य आ श्रव्य नाटकक सम्मिलित स्वरूपक रचना करब तँ विरले नाटककारसँ सम्भव भऽ सकैत अछि । नाटकमे सामान्य साहित्यिक गतिविधिसँ किछु बेसिये उत्तरदायित्वक निर्वाह करऽ पड़ैत छैक । श्रीझा अपन नाटक मे पूर्णत: सफल छथि ।

कोनो रचनाकारक रचना हुनक आत्माक संग-संग एक एहन दर्पण होइत अछि जाहिसँ रचनाकारक व्यक्तित्व प्रकाशक परावर्त्तन नियम जकाँ परावर्त्तित भऽ कऽ किनकहु (पाठक) मानसपटलपर एक आदर्श प्रतिबिम्ब पसारि दैत छैक । एहि कृतिक समीक्षा करी, ताहि लेल हमर मोन हौंड़ैत रहल, मुदा आन कोनो समीक्षकक मोन एखन धरि किअए ने पसिझलनि ? पाथरकेँ पसीझऽमे देरी तँ होइतहि छैक मुदा पसिझैत छैक पाथरो ।

Scanned by CamScanner

हम सभ कोनो रचनाकारक व्यक्तित्व आ कृतित्व दुनू स्तरपर समीक्षा करैत छी । ई नीक परम्परा अछि आ येह साहित्यक विधानो अछि मुदा हम सभ अधिकत: कृतित्वकेँ छोड़ि व्यक्तित्त्वेकेँ बेसी चोंगरबैत रहैत छी । कृतित्वक समीक्षाक क्रममे जेना कोनो नागक मरला सन्ताँ नागिनक आँखिमे नागकेँ मारऽवलाक फोटो अंकित भऽ जाइछ तहिना हमरा सभक आँखिमे व्यक्तित्व अभरऽ लगैछ । हम सभ बिसरि जाइत छी जे कृतित्व कोन तरहक समीक्षाक माँग करैत अछि । व्यक्तित्व आ कृतित्व दुनू दुइ मुद्दा अछि आ दुनूकेँ फराक-फराक बेकछयबाक परम्परा स्थापित कयल जयबाक चाही आ देखल जयबाक चाही जे ओ अपन व्यक्तित्वमे की छथि आ कृतित्व मे की ? जँ दुनूमे खराब छथि तइयो स्पष्ट बेकछायल जयबाक चाही नहि कि परम्परागत घोषित विचारधारासँ प्रभावित होइत व्यक्तित्वेकेँ ध्यानमे राखि पूरा कृतित्वेकेँ नकारि देल जयबाक चाही ।

ओहुना आङुरपर गनबा योग्य एकाध साहित्यकार छोड़ि कैकटा साहित्यकार छथि जनिक व्यक्तित्व आ कृतित्व मे सामंजस्य छनि ? हम तँ तकरहि तकतानमे एक युगसँ साधनारत छी मुदा कहाँ केओ एखन धरि भेटलाह ? सभ केओ अपनाकेँ मार्क्सवादिये कहैत छथि । मुँह नमराबऽ तँ हमरो अबैत अछि मुदा ओहिसँ की ? मैथिल समीक्षाक जे प्रवृत्ति रहल अछि से व्यक्तित्वक स्तरपर घृणित प्रचार करैत कृतित्वक आकलन धरि नहि कऽ ओकरा समाजोपयोगी नहि बूझि एक पन्ना धरि उनटायब मोनासिब नहि बुझैत अछि । आलोचक एहि रोगसँ ग्रसित कुंठित रहैत छथि जे फल्लाँ बाबू लिखलनि अछि । मैथिली समीक्षकक एहि प्रवृत्तिकेँ महान घातक प्रवृत्ति कहल जा सकैछ । हमरा सभकेँ इहो विचार करबाक चाही जे हम सभ लिखैत छी किनका लेल ? जँ पाठककेँ ओ सुपाच्य छैक तँ ओ कृति सहजहि समाजक मुख्यधारामे बुझना जायत । पाठक ओकरा हाथे-हाथ लेत । एक-एक सजग पाठक तेहन होइत छथि जे कोनो विद्वान, प्राध्यापक, विचारक आ समीक्षकपर भारी पड़ि जा सकैत छथि ।

कोनो रचनाकारक सफलता एहि बातपर निर्भर करैत अछि जे ओ की लिखने छथि, किएक लिखने छथि, समाजक लेल ओ कतेक उपयोगी आ प्रासंगिक अछि ? ओ समाजकेँ कोन धारामे मोड़ऽ चाहैत छथि ? हुनक बिम्बक प्रयोग कोन तरहेँ छनि ? समाजक विद्रूपतापर कोन तरहेँ चोट कयने छथि ? ओ कोन पक्षमे ठाढ़ छथि ? आदि ।

एहि दृष्टिऍ विवेच्य संग्रहक आधारपर श्रीझाक रचना कौशल एहन छनि जाहिसँ किनको मोन जीतल जा सकैछ, केओ आत्ममुग्ध भऽ सकैत अछि आ किनको हृदय छहोछित्त भऽ सकैत छनि ।

श्रीझाक जे सामाजिक चिन्तनक छनि से की एखन हमर समाजसँ पूर्णरूपेण उठि सकत ? कृति तँ वैह सफल होइत छैक जे प्रासंगिक होइक, समाजक संग-संग चलैक, प्रामाणिक आ यथार्थ होइक । की हुनक 'पसिझैत पाथर'क एक -एक नाटक प्रामाणिक, प्रासंगिक आ यथार्थ नहि अछि ? की हमर समाजमे एखनहुँ नारीकेँ दोयम दर्जाक नहि बुझल जाइत अछि ? की हमर समानमे एखनहुँ बेटीक बापकेँ बेभरम आ घुटि-घुटि कऽ मरऽ लेल बाध्य नहि होअऽ पड़ैत छनि ? की हमर समाजमे एखनहुँ चाननकेँ घराड़ीसँ बेदखल करैत सूदिक अमलमे पुश्त-दर-पुश्त बोनिहारी नहि करऽ पड़ैत छैक ? की हमर समाजमे एखनहुँ जमीन्दारी प्रथा वर्त्तमान नहि अछि ?

श्रीझाक रचनाकर्ममे अपन गाम, अपन घर, अपन देस, अपन कोस, अपन माटि, अपन पानि, अपन लोक, अपन वेद, अपन संस्कृति, अपन कला, अपन सभ्यताक धड़कन छनि । जँ एहि सभ दृष्टिबोधसँ हुनक रचना अनुप्रेरित नहि करैत अछि तखन तँ कहबे बेकार अछि । मुदा से कुंठाग्रस्त सोचक परिचायक थीक, उदारवादी साहित्यकारक दृष्टिकोण तँ एकदम्मे नहि ।

●

Scanned by CamScanner

रामदेवझाक काव्य-यात्रा

डा. श्रीनबोनाथझा

वैदिक वाङ्मयमे कवि ईश्वरक पर्याय कहल गेल छथि – 'कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः' (ईशावास्योपनिषद्-8)। एतऽ कविक अर्थ रचनात्मक शक्ति आ प्रतिभासँ युक्त मानल गेल अछि। साहित्यदर्पणकार तँ कवित्व शक्तिकेँ दुर्लभ माननलनि अछि–

नरत्वं दुर्लभंलोके, विद्या तत्र सुदुर्लभा।
कवित्वं दुर्लभं तत्र, शक्तिस्त्र सुदुर्लभा॥

कवि सार्वभौम होइछ, हुनका देशकालक प्रतिबन्ध नहि रहैछ। कवि स्वच्छन्द होइत छथि, ओ कोनो बन्धनकेँ अंगीकार नहि करैत छथि। कहलो गेल अछि– निरंकुशा कवयः।

एहने महान् साहित्यकार छथि आधुनिक मैथिली साहित्य मध्य श्रीरामदेवझा। आधुनिक मैथिली साहित्यमे किछु स्तम्भ सभ भेलाह अछि जाहिमे रामदेवझा अग्रगण्य छथि। ई बहुआयामी व्यक्तित्वक सारस्वत प्रतिभासम्पन्न मूर्धन्य साहित्यकार छथि। मूलतः ई कथाकार छथि। ओना हिनक मधुवर्षी लेखनी कविता, एकांकी, शोध-समीक्षा, ललित निबन्ध, शास्त्रीय समीक्षा सबमे बेस रमलनि अछि। हिनक दृष्टि स्फीत ओ हाथ माँजल छनि।

आचार्य प्रो. सुरेन्द्रझा 'सुमन'क पश्चात् मैथिली साहित्यक गम्भीर लेखकमे श्रीरामदेवझाक नाम अग्रगण्य छनि।

श्रीरामदेवझा ललित-राजकमल-मायानन्द पीढ़ीक वरिष्ठ एवं स्थापित कथाकार छथि। हिनक काव्य-यात्रा 1955 इ.सँ आरम्भ होइछ एवं अद्यपर्यन्त द्रुतगतिएँ गतिशील छनि। श्री झा वेदवाणी 'चरैवेति-चरैवेति'मे आस्था रखनिहार थिकाह एवं कर्मयोगी जकाँ अनुखनो विशिष्ट ग्रन्थक प्रणयनमे दत्तचित्त रहैत छथि। ई जाहि विधाकेँ संस्पर्श करैत छथि से पारसमणि बनि जाइछ, ओकरा चमका-दमका दैत छथि। रामदेवझा यद्यपि कविता कम लिखने छथि मुदा जे प्रकाशित छनि तकर महत्त्व अक्षुण्ण अछि। ई छन्दोबद्ध आ मुक्तछन्द (नव कविता) दुहू लिखने छथि। देवकान्तझा अपन ग्रन्थ 'A History of Modern Maithili Literature' मे कहने छथि– Ramdeva Jha is a modern lyricist of distination, a pillar of Kisun's new school of Poetry which published seven of his selected poems. While his songs tend towards modern progressivism, under 'Yatri's influence." (Page -102)

हिनक किछु गीत प्रो. रमानाथझाक **मैथिली नवीन गीत**मे संगृहीत अछि। जाहिमे भाव-गाम्भीर्य, गेयधर्मिता अनुवर्त्तमान अछि, हृदयावर्जक अछि। द्रष्टव्य थीक –

आकुल प्राण पियासल तकइछ नीलम नयन-कटोरमे
सुधा-सिन्धु संचित राखल छल हँसित सम्पुटित ठोरमे।

भारत-जननी मे हिनक देशप्रेमक स्वर मुखरित भेलनि अछि जे हिनका आपादमस्तक राष्ट्रवादीक श्रेणीमे परिगणित करबैत अछि। द्रष्टव्य थीक–

चरण-रज लऽ ठाढ़ि अछि कन्या-कुमारी
अहँक चरणोदक जोगौने सागरक शुचि पात्र भरि कऽ।

Scanned by CamScanner

सतत लालायित परस हित आकुलित गति
संयमित नहि रहि सकल तेँ तरंगित अछि
नीरधिक छिलकैत छन-छन ढेह ।

कवि प्रकृति प्रेमी छथि ओ नारी सौन्दर्यक अनुभूतिपूर्ण वर्णन-चित्रांकन कयने छथि जे रचना प्रौढ़ताकेँ सम्प्राप्त कयने अछि–

नव धरतीपर नव दूर्वादल, उपजय नव-नव धान रे
सरित बान्हि दी अरिपन रेखा नव सर्जन केर ठोप
दीन हीन धरणिक आँचर ई बनल न रहय अछोप ।

नवीन युगक नवीन उद्बोधनात्मक काव्य-रचना दिशि हिनक उन्मुखता देखल जा सकैछ, जाहिमे ग्राम्य-परिवेश, ठेठ भाषाक प्रयोग, मार्मिकता हिनक वैशिष्ट्य थिकनि । द्रष्टव्य थीक –

पौरुषक उद्गार दीपित हैत दैन्यक वर्जनामे
हरितमय ई हैत धरती
रहत आङ्कुर भरि न परती
इन्द्र केर नहि रोब चलतनि
कऽ न सकता आब जरती ।

डा. रामदेवझा आशावादी कवि छथि, जे हिनका समकालीन मैथिली कवितामे उच्चासनपर आसीन करबैत अछि । हिनक श्रृंगारिक ओ प्रेममय चित्रांकनमे आशाक किरण, एक फाँक इजोत **फेर हेतइ भोर** मे द्रष्टव्य थीक–

सोचि रहल भ्रमर साँझ भेल कमल बन्द
होइत प्रात फुजत कमल छूटत ई फन्द
नवल सुमन सुरस पीबि गायब नव प्रीति
उषा होइत हस्ति देल कमल बन्द उजाड़ि,
किन्तु कोष-बद्ध भ्रमर रहल छल विचारि
बीति गेल सगर राति बाँचल अछि थोड़
पूब क्षितिज लाल हैत 'फेर हेतइ भोर' ।   (मिथिला सुरभि-2004)

हिनक **बहिन-वन्या**मे कल्पनाक कमनीयता ओ संगहि भावक विशदता, उक्ति-वक्रता, नव-नव चिन्तन-मन्थनमे नवोन्मेषशालिनी प्रतिभाक संसूचना सम्प्राप्त होइछ । द्रष्टव्य थीक–

पढ़इ छी पुराणमे -
कतोक कल्प पहिने
आयल छल
भीषण
अकल्पित
इतिहासमे
एक जल प्लावन
डूबल छल धरती ।"

Scanned by CamScanner

आयल छल एक बेर
बहि्न केर वन्या जे
धधकल छल
मनुष्यक
मन ज्वालामुखीसँ । (भाखा-सितम्बर-89)

रामदेवझाक **कोपड़** मे कोनो 'नवाङ्कुर'क दिशाहीनता ओ इत्यलम् भऽ जयबाक इतिहास कतेक विलक्षण रीतिएँ उपन्यस्त कयल गेल अछि जाहिमे सहजता-सौम्यता, ग्राम्य-परिवेशक विलक्षण चित्र अनुवर्त्तमान अछि । हिनक नव-कवितोमे भावक विशदता, अतियथार्थवादी चित्रांकन, भोगल-यथार्थक अंकन-प्रत्यंकन द्रष्टव्य थीक -

अपन सींघक
सहज कुड़िऐनीक सब सब्बी
मेटयबा लेल-
तोड़ि देलक मारि ढाही
इत्यलम् भऽ गेल
बाँस केर कोपड़ नवाङ्कुर
धाराशायी भेल
पलमे -
पड़ल अछि ओंघराय भू'पर
सुभग सोझ सुरूंग कोपड़ । (भाखा-नवम्बर'88)

डूबल पैघ जहाजमे कविवर रामदेवबाबू कोनो विशिष्ट व्यक्तित्वक स्वार्थक कारणेँ संस्मरणात्मक चित्र अंकित-प्रत्यंकित कयलनि अछि -

जनिक स्वर्ण-गिरि सन व्यक्तित्वक जग भरि करय लेहाज
सिद्ध भेला से स्वार्थ-सिन्धुमे डूबल पैघ जहाज ।

ले बलैया मे बाढ़िक विभीषिका एवं आगत विपत्तिपर कविवर विलक्षण चित्र अंकित प्रत्यंकित कयलनि अछि जाहिमे भोगल यथार्थक दृश्य द्रष्टव्य थीक–

ले बलैया !
उमड़ि गेलै बागमती कमला बलान
तोड़ि देलक ढाहीसँ छहोछित बान्ह
बङौर साती लय !

ले बलैया
नेता झिलहेरि केर लऽ रहल मजा
जनता सब भोगय निज करनीक सजा
बङ्गौर साती लय । (अर्पण-2004)

एतऽ कवि राजनेता लोकनिपर बड़ तीक्ष्ण ओ मर्मस्पर्शी व्यंग्य कयलनि अछि, जकर काव्य-साहित्यमे विशिष्ट महत्व अछि । हिनक मैथिली नव कविता मध्य महत्त्वपूर्ण ओ विशिष्ट अवदान रहलनि अछि । किसुनजी द्वारा सम्पादित

Scanned by CamScanner

मैथिली नव कवितामे हिनक सात गोट नव कविता संगृहीत अछि– **कालतुला, प्रथम-सन्तान, फोटोक निगेटिव, निर्जल मेघ, माघक रौदा, मौन** एवं **भविष्य** ।

रामदेवझा भाषा ओ छन्दक क्षेत्रमे विभिन्न प्रयोग कयलनि अछि । ई अभिव्यक्ति ओ ग्राम्य जनजीवनक ऐश्वर्यमय लोकोक्ति अथच अनुभूतिक चित्र रेखांकित कयलनि अछि–

भविष्य
ओ नहि थीक अयना
भेटय नहि ओहिमे
अतीत केर बिम्ब ।

युगबोध ओ कटु यथार्थक चित्रांकन कवि सादृश्य योजनाक संग बड़ विलक्षण रीतिएँ अभिव्यक्त कयलनि अछि–

पछिलका पलड़ा जकाँ
भूत केर आयाम
जाहिपर
लादल अनेको बटखारा सभ
भाँति-भाँतिक छोट मध्यम और बड़का
जीवनक भोगल क्षणक आ
अतीतक घटनावली केर ।

श्रीरामदेवझा आस्थावादी कवि छथि जाहिमे समकालीनताक स्वर गुंजित-अनुगूंजित होइछ । कविवरकेँ प्रकृतिक नैसर्गिक गुण अनभ्यासेँ विमोहित करैछ एवं ओ प्रकृतिक कोमल रूपराशिक चित्रांकन भव्य ओ आकर्षक ढंगसँ करैत छथि । कवि प्रकृति प्रेमी छथि । तेँ प्रकृति ओ ग्राम्य परिवेश कविकेँ अनायास अपना दिशि आकृष्ट करैत छनि ।

श्रीरामदेव बाबू महान् कवि छथि, जे एक दिशि यथार्थ कठोर धरती पर भ्रमण करैत छथि तँ दोसर दिशि कल्पनाक नव-नव पाँखि लगाय विचरण करैत रहैत छथि ।"

हिनक कविता वात-पीड़ितक प्रलाप आ मात्र आकाश-कुसुम नहि अपितु एहि धरतीसँ सम्पृक्त मानव जीवनक कथा-व्यथा कहैत अछि । आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन' सदृश हिनको कविता संयमित-मर्यादित रहैत छनि । कवि साहित्यक कोनो 'वाद'मे आवेष्टित-सम्पृक्त नहि रहलाह अछि अपितु अपन मर्यादाक अतिक्रमण कहियो नहि कयलनि । वास्तविकता तँ ई अछि जे हिनक समस्त साहित्ये चाहे ओ कविता, कथा, उपन्यास, नाटक, एकांकी जे कोनो हो सब सर्वत्र मर्यादित अछि, संयमित अछि । हिनक यैह गुण हिनका मर्यादावादी कवि-साहित्यकार बनबैत अछि एवं जे स्थान बंगला साहित्यमे शरतचन्द, ओ हिन्दीमे प्रेमचन्दक अछि सैह मर्यादा-प्रतिष्ठा हिनका आधुनिक मैथिली साहित्य मध्य सम्प्राप्त छनि ।

●

Scanned by CamScanner

डा. रामदेवझा का दुर्लभ अनुसन्धान : हरगौरी विवाह नाटक

बाबूभोलालाल दास

हरगौरी विवाह नाटक – के सम्पादक या यों कहिये कि इसके उद्धारक हैं प्रो. डा. रामदेव झा, एम.ए., पीएच.डी., मैथिली विभाग, चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगा और प्रकाशक हैं 'मिथिला रिसर्च सोसाइटी' लहेरियासराय दरभंगा । डॉक्टर साहेब प्रत्येक साहित्य मर्मज्ञ विशेषत: मैथिली प्रेमी के धन्यवादार्ह हैं क्योंकि इन्होंने इस पुस्तक को बहुत परिश्रम से उद्धारकर अपनी विद्वत्तापूर्ण विशद प्रस्तावनाके साथ प्रकाशित कराया है । भारतवर्षमें भाषाका प्रश्न जैसा जटिल और अवरुद्ध हो रहा है, संसारके और किसी देश में शायद नहीं देखा जाता है । रूसमें यद्यपि भाषा का प्रश्न कहीं अधिक जटिल था क्योंकि वहाँ 200 भाषाओं का प्रश्न उपस्थित था और चीनमे भी 24–25 भाषाओं का प्रश्न था किन्तु इन दोनों ने भी इस समस्या का हल निकाल कर अपने-अपने राष्ट्रकी अभ्युन्नति का मार्ग प्रशस्त कर लिया है तो भी भारतमे जहाँ केवल 15–20 भाषायें हैं, अब तक न तो सात समुद्र पारकी विदेशी भाषा अंगरेजी को ही हटाया जा सका और न कोई देशी भाषा राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकृत हो सकी । जिस हिन्दी को संविधानके निर्माताओं ने आरम्भमें ही सर्वसम्मति से 1965 तक भारतीय संघ की राष्ट्रभाषा घोषित करने की तिथि निश्चित की थी, उसी संविधान को उसके पहले ही बार-बार अनुचित संशोधन करके हिन्दी का मार्ग अवरुद्ध कर दिया गया । हम मैथिली भाषियों को राष्ट्रभाषा हिन्दी की इस उपेक्षा पर क्षोभ और आश्चर्य हो रहा है, साथ ही दु:ख के साथ कहना पड़ता है कि हिन्दी के समर्थकों को मैथिली के प्रति सद्भावना के बदले दुर्भावनायें ही रही हैं । ऐसी स्थितिमें मैथिली साहित्यकी किसी भूली हुई कड़ी को जोड़ने वालों के लिये दाद देने का प्रयास भी कौन करेगा ? हम बहुत पहले से म.म.हरप्रसाद शास्त्री आदि बंगाली गवेषकों के द्वारा नेपाल, उड़ीसा, बंगाल और असम आदि प्रान्तों में पाई जाने वाली अनेक मैथिली सामग्रियों के बारे में जानते हैं और यह भी जानते हैं कि इनमें से कितनी सामग्रियों को भूल से उन्होंने बंगीय साहित्य की चीजें समझ कर अपना भी लिया है । ऐसी ही नेपाल दरबार की लाइब्रेरीमें प्राप्त कितने मैथिली नाटक हैं । प्रस्तुत नाटक की बात उससे भी भिन्न है । इसका पता डा.रामदेवझा को श्रीडेनियल राइट महाशय के 'हिस्ट्री आफ नेपाल' नामक ग्रंथ के परिशिष्ट से चला कि इसकी एक प्रति कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी में है । फिर तो डा. झा के अथक प्रयाससे चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय की ओर से उसकी प्रतिच्छवि करबाकर मंगबाई गई और इन्होंने बहुत परिश्रमसे उसका पाठ एवं प्रतिलिपि ठीक करके अपनी विशद विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावना के साथ प्रकाशित करबाया है । इन्होंने नेपालके अलावे असम के एक ऐसे ही नाटक **राम विजय** का भी सम्पादन और प्रकाशन किया है जिसके विषयमें फिर कभी लिखूँगा ।

प्रस्तुत नाटक **हरगौरी विवाह** नेपाल के तत्कालीन महाराज जगज्ज्योतिर्म्मल्ल (1613 ई. से 1637 ई.) के द्वारा लिखा गया है । यों तो उक्त महाराज ने और भी कितने मैथिली ग्रंथों का प्रणयन तथा संकलन किया है किन्तु नाटकों में भी इनके और दो नाटक हैं, **कुंज विहार** और **मुदित कुवलयाश्व** । केवल यही नाटक **हरगौरी विवाह** अब तक अज्ञात पड़ा था क्योंकि इसकी कोई पांडुलिपि नेपाल या भारतमें नहीं है । इसलिये हम तो पहले डेनियल राइट महाशय को ही धन्यवाद देंगे कि उन्होंने अपने ग्रंथमें इसका पता नोट कर दिया । विशेष बातें डा.रामदेवझा की प्रस्तावना से ही विदित होती है ।

हम यहाँ इसके विषयमें एकाध ध्यान देने की बातें कहकर ही संतोष करेंगे । कैम्ब्रिज या लन्दन के अलावा वर्लिन, पेरिस आदि के पुस्तकालयों में भी ऐसी कितनी निधियाँ मैथिली की अब तक पड़ी हैं जिनका अन्वेषण और

Scanned by CamScanner

प्रकाशन मैथिली चेयर, ट्रस्ट, प्रकाशन आदि संस्थाओं को अब करना चाहिए । साथ ही मैथिली के विद्वानों को कम से कम भारत के विभिन्न भागों में पायी जाने वाली सामग्रियों की खोज तो उससे भी पहले खतम कर लेनी चाहिये । सौभाग्य की बात है कि डा. जयकान्तमिश्र, डा. शैलेन्द्रमोहनझा, प्रो. रमानाथझा आदि विद्वानों का भी ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ है ।

नेपाल इस गवेषणा का अनुपम क्षेत्र है । क्यों नहीं होगा । तराई भागमे नेपाल के वीरगंज, जनकपुर, सप्तरी, राज-विराज, मोरंग आदि प्रान्तोंमें जाइये, मालुम होगा कि असली मिथिला यही है । भाषा-भाव, संस्कृति-प्रकृति, खेतीवारी, जीविका यहाँ तक कि जीव-जन्तु और पेड़-पौधे भी एक हैं । राजकीय विभाजन मिथिलाके इन उत्तरी और दक्षिणी भागोंको एक दूसरेसे भिन्न नहीं कर सका है, इसलिये नेपाल राज्यमें सदासे संस्कृत, मैथिली और नेपाली भाषाका समान आदर रहा है । आज भी नेपाल सरकारसे नेपालीके साथ-साथ मैथिली स्वीकृत है । नेपाल राज्यमें मैथिली साहित्यकी सबसे अधिक उन्नति वहाँके मल्लवंशीय राजाओं के राज्यकाल में हुई जिसका समय तेरहवीं सदी के आरम्भसे अठारहवीं सदीके तीसरे चरण तक है । इसमें भी चौदहवीं सदी से जबसे मिथिलाके कर्णाटवंशी राजाओं से मल्ल नरेशों का रक्त सम्बन्ध स्थापित हुआ तथा मैथिल पंडितों, साहित्यकारों और कलाकारों को अधिक संरक्षण मिलने लगा तो और भी अधिक प्रगति हुई । पीछे यह राज तीन शाखाओं में बँट गया और इनकी तीन राजधानियाँ क्रमशः भक्तपुर (भात गांव), कान्तिपुर (काठमांडू) और ललितपुर (पाटन) में स्थापित हुईं तथा नेवारी मिश्रित मैथिली साहित्य की अभिवृद्धि तीनों स्थानों एवं प्रान्तोंमें होने लगी । इसलिये इन तीनों स्थानोंके राजकीय पुस्तकालयों, अभिलेखागारों एवं उन साहित्यकारों तथा कलाविदोंके वंशधरोंके घरोंमें ये सामग्रियां अब तक भी बहुत-कुछ बिखरी हुई पड़ी हैं, यद्यपि उनमें से बहुत सी विदेश चली गईं । स्वभावतः ऐसी किसी सामग्रीके (खासकर विदेश से) प्रकाशमें आने पर हमें अपार हर्ष हो रहा है । हम डा. रामदेवझाजीको हृदय से धन्यवाद देते हैं ।

जैसा नाम से ही स्पष्ट है, इस नाटक में देवाधिदेव श्रीमहादेवजी का हिमवान तथा मयनाकी पुत्री पार्वतीसे विवाह कराया गया है । काव्यकी दृष्टिमें इसमें कुमारसंभव या गुसाईं तुलसीदासजीके हरगौरी परिणय जैसा कोई चमत्कार नहीं है, जन-साधारणमें प्रचलित कथाको ही ज्यों का त्यों रख दिया गया है बल्कि महादेवजीके अटपटे रूप, वाहन, संगी-सामग्री एवं कल्याणकारी अद्भुत माहात्म्य सम्बन्धी 50-55 लोकप्रिय गीतोंको ही नाटकके रूपमें सजा दिया गया है । किन्तु भाषाकी दृष्टि से इसका महत्त्व बहुत अधिक है । नेपाल, असम और मिथिलाके इन नाटकों से भली-भाँति सिद्ध हो जाता है कि मैथिली साहित्यका रंगमंच भी इसके गद्य और पद्य अंशोंके समान ही प्रायः सभी भारतीय आधुनिक भाषाओंके इन साहित्योंमें सबसे प्राचीन और परिपुष्ट हैं । इन गीतों की परिपक्वता, मधुरता और कलात्मकता विद्यापति, उमापति, गोविन्ददास आदिके ही समान भाव एवं सौन्दर्यपूर्ण हैं । सम्पादक डा. रामदेवझाजी महाशयने ठीक लिखा है कि महाराज जगज्ज्योतिर्म्मल्ल ने मैथिली गीतों की इतनी अधिक रचना की है कि इनका स्थान विद्यापति के बाद ही रखना उचित है । उक्त महाराज ने वस्तुतः इसके अतिरिक्त गीतों के और भी कई संग्रह-ग्रंथ संकलित किये हैं । जिनसे इनकी गीत-प्रियता का अच्छा परिचय मिलता है ।

इस नाटकके गीतोंके सम्बन्धमें एक बात और भी ध्यान देने योग्य है कि इसके कुल 55 गीतोंमें केवल 17 गीत महाराज (ग्रंथकार) की अपनी रचनायें हैं तथा 21 गीत अन्यान्य कवियों की रचनायें हैं जिनमें विद्यापतिके 7, विष्णुपुरीके 3, सदानन्द और वंशमणिके दो-दो तथा गोविन्द, करण महेश, कृष्णराय, रतनाईं, चतुर चतुरभुज, जगदीश और शशिशेखरके एक-एक गीत हैं । शेष 17 विना भनिताके अन्य कवियोंके हैं । यह चाहे एक नया प्रयोग हो या उनकी शिवभक्तिकी उदारता हो । इससे कुछ समालोचकों की यह धारणा कि मैथिली साहित्यकी गीत-काव्य-परम्परामें अकेले विद्यापति ही तालवृक्ष की नाईं खड़े हैं, सर्वथा निराधार हो जाती है । जगज्ज्योतिर्म्मल्ल महाराज के संग्रहोंकी तो बात ही नहीं; मिथिलाके संग्रहों तथा बंगलाके 'ब्रजवुली' गीतोंके भंडारमें खोजने से दस बीस नहीं, कई सौ मैथिली कवियोंकी विशाल परम्परा है । इस प्रकार महाराज जगज्ज्योतिर्म्मल्लने हमलोगोंपर बड़ा उपकार किया है ।

Scanned by CamScanner

अब हम महाराज की निजी रचनाओंमें केवल एक दो गद्य-पद्य की बानगी देकर ही विशेष जानकारी के लिये इस नाटक और उसकी प्रस्तावनाको ही पढ़ने का आग्रह करेंगे जो सम्पादक ने प्रकाशित किया है । हरगौरी विवाह की भाषा, यद्यपि कुछ पहाड़ी मिश्रित है तथापि वह स्थानीय भेद (Local variation) के अतिरिक्त और कुछ नहीं है । मयनाके मुँहसे महादेवकी विरूपता सुनकर ऋषि उन्हें समझाते हैं–

गज वाघ चरम सोभए कत अङ्ग । भसम धवल कएल जारि अनङ्ग ॥
नाङ्ग्ट उमत के जानत भेद । जन्हिक सरुप नहि बूझए वेद ॥
हुनि भल चिन्ह गिरिराज कुमारि । जन्हि लाइ भेलि जुगे जुगे तप धारि ॥
नृप जगजोति वुझावए भाव । सबहिं काल शिवचरण सोहाव ॥

इस नाटकके गद्य की वानगी भी कहींसे ली जा सकती है । सूत्रधार प्रस्तावना क्रममें नटीको कह रहा है– **हे प्रिये, श्रीश्रीजगज्ज्योतिर्म्मल्ल महाराज शिवभक्ति परायण तन्हिका, शिवाश्रित जे कथा तथीहि उल्लास, तें हमराहु हरगौरी विवाह नामे जे नाटक महाराजहिक कएल, से नाचू ।** इस 'नाचू' शब्द से स्पष्ट विदित होता है कि उन दिनों का अभिनय नाचा ही जाता था, आजकल जैसा उसमें परदों अथवा दृश्यों का विन्यास नहीं था । नाटकका अर्थ ही नाच था । सन् 1891 ई. में वर्लिनसे प्रकाशित मैथिली नाटकका नाम ही **हरिश्चन्द्र नृत्यम्** है । प्राय: इसी कारण मिथिलामें नाचकर गानेवाले कलाकारको नटुआ कहा जाता है जिसके साथ नाटकों जैसा एक विदूषक भी अवश्य रहता है जिसे विपटा कहा जाता है । अंतमें इस नाटक की देशभक्ति की भावना भी देखने योग्य है । इससे मिथिला और नेपाल की एकता मानो दूध-मिश्रीकी माधुरीका आस्वाद प्राप्त होता है । विवाहके बाद महादेवजी पार्वतीको लेकर घर लौटते हैं । साथमें ऋषि भी हैं । वे पूछते हैं, क्या यही आपका निवास स्थान है ? शिवजी उत्तर देते हैं– **हे ऋषीश्वर, ई हिमालयक प्रत्यन्त पर्वत, ई नेपाल मंडल अति पवित्र, ततहु ई वागमती नदी, ई पशुपति स्थान, ई गुह्येश्वरी पीठ, ई पृथ्विहिक सार थिक ।"**

विशेष जानकारी के लिये पुस्तक ही दर्शनीय है । मैथिली जगत को डा.झा से बड़ी आशायें हैं कि वे उक्त महाराज के अन्य ग्रंथों को भी खोजकर प्रकाशमें लायेंगे एवं नेपाल एवं विश्व के विभिन्न देशों की पुस्तकालयों में छुपी पड़ी मैथिली की निधियों को खोज-खोजकर हरगौरीविवाह नाटक की तरह उसका उद्धार और प्रकाशन करेंगे । यद्यपि एकमात्र **हरगौरीविवाह** का ही उद्धार करने के कारण मैथिली संसार इनका ऋणी हो गया है ।

(27 अगस्त 1971 केँ बाबू भोलालालदास द्वारा लिखित उक्त समीक्षात्मक आलेख आर्यावर्त्तमे प्रकाशनार्थ लिखल गेल छल। मुदा पूर्वक किछु विवादक कारणे आर्यावर्त, इण्डियन नेशन ओ मिथिला मिहिर पर्यन्तमे हुनक कोनो रचनाक प्रकाशनपर प्रतिबन्ध लागल छल । अतः हुनक ई आलेख अप्रकाशिते रहि गेल । –स.)

●

Scanned by CamScanner

भक्तिभावना ओ साहित्य-साधनाक समन्वित रूप 'मैथिली शैव साहित्य'

–श्रीकान्तठाकुर 'विद्यालंकार'

मैथिली शैव साहित्य नामक एहि ग्रन्थकेँ प्रकाशित करैत अत्यन्त प्रसन्नताक अनुभव भऽ रहल अछि। मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगामे स्नातकोत्तर मैथिली विभागक प्राध्यापक डा. रामदेवझा रचित एहि ग्रन्थक आधार अछि पी-एच. डी.क लेल लिखित हुनक शोध-प्रबन्ध जे ओ आइसँ दस वर्ष पूर्व समाप्त कयने छलाह। शोध-प्रबन्धक सम्बन्धमे एहन सन धारणा भऽ गेल अछि जे एकर लेखनक मुख्य उद्देश्य जीविका वा आर्थिक लाभ प्राप्त करब थिक, तथ्यक उद्घाटन तथा कथ्यक प्रतिपादन नहि। 'मैथिली शैव साहित्य' एहि धारणाकेँ खंडित करैत अछि। शोध-कार्य ककरा कहैत छैक, भाषा आ शैलीक अकृत्रिम विलक्षणता गम्भीरो विषयपर लिखल गेल प्रबन्धकेँ कोना सभक हेतु बोधगम्य बना दैत छैक से एहि ग्रन्थकेँ पढ़लासँ नीक जकाँ जानल जा सकैत अछि।

डा. रामदेवझा मैथिलीक प्रसिद्ध साहित्यकार छथि। सर्जनात्मक साहित्यक क्षेत्रमे हिनक अवदान महत्त्वपूर्ण अछिए, एहि ग्रन्थक माध्यमसँ ओ आलोचना-साहित्यमे सेहो अपन अन्यतम स्थान बना लेलनि अछि। कम्मे शब्दक खर्चसँ अपन अभीष्ट प्रकट कऽ देब निश्चित रूपसँ एकटा महत्त्वपूर्ण विशेषता थिक, मुदा विश्लेषणात्मक शैलीक सेहो अपन खूबी छैक; आ से एहि पोथीमे अछि। ओना, एहि पुस्तकक आकार-वृद्धिक प्रमुख कारण ई थिक जे जाहि लक्ष्य-ग्रन्थक आधारपर विषयवस्तुक प्रतिपादन प्रस्तुत ग्रन्थमे कयल गेल अछि ओ अधिकांशतः अप्रकाशित अछि। अतएव पुस्तकमे वर्णित विषय एवं मान्यताकेँ अधिकाधिक बोधगम्य तथा प्रामाणिक बनयबाक हेतु लक्ष्यग्रन्थक उद्धरण देब अनिवार्य छल। शैव-साहित्यक संकलन स्वयमेव महत्त्वपूर्ण कार्य थिक। डा. रामदेवझा जाहि धैर्यक संग एहि श्रमसाध्य कार्यकेँ पूर्ण कयलनि अछि, जाहि विद्वत्ताक संग ओकर विवेचन-विश्लेषण कऽ नहि केवल साहित्यक पाठक-आलोचकक 'रैक' धरि, अपितु असंख्य शिवभक्तक चिनवार धरि ओकरा पहुँचओलनि अछि से ओहिना नहि भऽ सकैछ। 'मैथिली शैव साहित्य' वस्तुतः भक्तिभावना एवं साहित्य-साधनाक समन्वित रूप थिक।

अपना ओहिठाम मान्यता आ प्रचलन अछि जे भक्तक आदर भगवाने जकाँ होअऽ लगैत अछि। विश्वास अछि, प्रस्तुत ग्रन्थ शैव-साहित्यक प्रत्येक अध्येता-अनुसन्धाताक हेतु अत्याज्य होयत।

(मैथिली अकादमी, पटनाक अध्यक्षक रूपमे लिखित प्रकाशकीय वक्तव्य, 17 मार्च 1979।)

●

Scanned by CamScanner

मैथिल शैव-भावनाक विवेचनात्मक ग्रन्थ 'मैथिली शैव साहित्यक भूमिका'

—डा. मदनेश्वरमिश्र

पूर्वमे मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित डा. रामदेवझाक ग्रन्थ 'मैथिली शैवसाहित्य' सुधीजन द्वारा प्रशंसित भऽ चुकल अछि । शैव-साहित्यमे अभिरुचि रखनिहार मिथिला क्षेत्रसँ बाहरोक विद्वान लोकनि एहि पुस्तककेँ मङा कऽ अवलोकन कयलनि अछि । प्रस्तुत पुस्तक ओहि पुस्तकक भूमिका स्वरूप लिखल गेल छल परन्तु दुनू एक संगे छपने शैव साहित्य ग्रन्थ बहुत वृहदाकार ने भऽ जाय तेँ एहि वृहत् एवं विषद् भूमिकाकेँ पृथकसँ प्रकाशित करबाक निर्णय लेल गेल ।

डा. रामदेवझा मैथिली साहित्यक निविष्ट विद्वान् एवं साहित्यकारक रूपमे प्रख्यात छथि । एखन धरि कथा, नाटक, निबन्ध तथा शोधग्रन्थ सभ मिला कऽ हिनक करीब एक दर्जन पुस्तक प्रकाशित छनि । **एक खीरा : तीन फाँक, मनुक सन्तान** हिनक कथा संग्रह छनि एवं **इजोती रानी** बालकथा । **रामविजय** (अंकिया नाट) **हरगौरी विवाह नाटक, नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत**क सम्पादन एवं **उमापति, मैथिली शैव साहित्य** आदि मौलिक शोधग्रन्थक प्रकाशनसँ ई ख्याति अर्जित कयने छथि । एकरा अतिरिक्त जगज्ज्योतिर्मल्लक **कुंज बिहार**क ई सम्पादन कयने छथि तथा **कविवर जीवनझा रचनावली**क सम्पादन श्रीअमरजीक संग एवं **मैथिली प्राचीन गीतावली**क सम्पादन श्रीसुमनजीक संग कयने छथि ।

एहि पुस्तकमे डा. रामदेवझा भारतीय वाङ्मयमे शिव सम्बन्धी साहित्यक प्राग्वैदिक कालसँ ऐतिहासिक काल धरिक समीक्षा कयलनि अछि । मिथिलामे शैव-भावना कतेक व्यापक अछि तकरो एहि पुस्तकमे पूर्ण विवेचना कयल गेल अछि । संगहि मैथिलीमे शैव साहित्यक विविधता तथा शिव भक्तिक विभिन्न स्वरूपक स्पष्ट निरूपण एहिमे कयल गेल अछि । मैथिली साहित्यक प्रादुर्भाव कालमे शैवसाहित्यक की रूप छल तकरो विद्वान लेखक स्वरूप निर्धारित कयलनि अछि ।

मैथिलीमे प्रचुर मात्रामे आरम्भकालेसँ शैवसाहित्यक रचना होइत रहल अछि । लेखकक पूर्व प्रकाशित ग्रन्थमे मैथिली शैवसाहित्यपर विस्तारसँ विचार कयल गेल अछि एवं एकरा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यमे देखबाक चेष्टा कयल गेल अछि । परन्तु मैथिली शैव-साहित्य ताबत धरि पूर्ण नहि मानल जा सकैत अछि जाबत धरि ओकर पृष्ठभूमि एवं प्रेरक तत्त्वक विश्लेषण नहि कयल जाय । प्रस्तुत ग्रन्थ एहि उद्देश्यक पूर्त्ति करैत अछि ।

आशा अछि, **मैथिली शैव साहित्यक भूमिकाक** पाठकगण द्वारा स्वागत होयत ।

(मैथिली अकादमी, पटनाक अध्यक्षक रूपमे लिखित प्रकाशकीय वक्तव्य, 27 सितम्बर 1983)

●

Scanned by CamScanner

नवीन धाराक प्रतिष्ठापक इतिहास ग्रन्थ 'मैथिली शैव साहित्य'

डा. श्रीखुशीलालझा

मैथिली शैव साहित्य साहित्यिक अनुसन्धान ग्रन्थक संग-संग इतिहासक ग्रन्थ सेहो थिक । यद्यपि मैथिली साहित्यक इतिहास विभिन्न विद्वान लोकनिक द्वारा लिखल गेल अछि परंच कोनो इतिहासमे मैथिली शैव साहित्यपर स्वतन्त्र रूपैँ पृथक शीर्षकक अन्तर्गत संक्षेपहुमे विवेचन प्रस्तुत नहि कयल गेल अछि । कोनो साहित्यक इतिहास-लेखनमे काल-विभाजन, नामकरण, पूर्वप्राप्त सामग्रीक यथार्थ उपयोग ओ ओकर मूल्यांकन, साहित्यक अजस्र धाराक विभिन्न स्रोतक अन्वेषण ओ प्राप्त सामग्रीक संकलन, साहित्य-धाराक प्रवाह, ओकर दिशा-प्रवृत्ति, परम्परासँ चलैत आबि रहल घात-प्रतिघातसँ उत्पन्न स्थिति, इतिहास-अर्थ ओ इतिहास-दर्शनक निर्धारणमे आवश्यक तत्त्व मानल जा सकैछ । प्रस्तुत ग्रन्थमे एहि सब पक्षक विवेचन-विश्लेषण यथासाध्य कयल गेल अछि । संगहि वैचारिकता एवं कृति, कृतिकार एवं युगक संवेदना-भूमिकेँ पकड़बामे ग्रन्थकर्त्ता सक्षम भेल छथि ।

यद्यपि इतिहास-लेखन एक प्रकारक शव-साधना सदृश कठिन कार्य अछि, कारण ई अतीतक वर्त्तमानता देखबैत अछि । एहिलेल दिव्य दृष्टिक अपेक्षा कयल जाइछ । इतिहासकारक काज अनुसन्धान, संकलन ओ सम्पादने मात्र नहि, सम्यक आलोचना अपितु तटस्थ दृष्टिकोण राखब सेहो अपेक्षित अछि ।

आलोच्य ग्रन्थकेँ चारि कालखंडमे विभक्त कऽ तत्कालीन पूर्वप्राप्त सामग्रीक यथासम्भव उपयोग कऽ उद्धरण द्वारा प्रसंग निर्देशपूर्वक कयल गेल व्याख्या ग्रन्थकेँ ऐतिहासिक महत्ता प्रदान करैत अछि । संगहि ओहि कालावधिक शैव साहित्य धाराक विभिन्न स्रोतक अन्वेषण ओ प्रवाह-प्रवृत्तिक विस्तृत विवेचन द्वारा नामक अनुकूल इतिहास ग्रन्थक स्वरूप प्रदान कऽ शैव साहित्ये नहि, मैथिली साहित्यक इतिहासोमे एकटा नव अध्याय जोड़ि अभिनव दृष्टिकोणक रूपरेखा प्रस्तुत कयल गेल अछि ।

मिथिला अदौकालसँ भारतीय दर्शन ओ अध्यात्म चिन्तनक मुख्य केन्द्र-बिन्दु रहल अछि । भारतीय धर्मसाधनामे ज्ञान, कर्म ओ भक्तिकेँ प्रमुख स्थान देल गेल अछि । मिथिलोमे कतोक विभूति ओ मनीषीक आविर्भाव होइत रहलनि अछि । ई लोकनि अध्यात्म-चिन्तनक संग साहित्यश्रष्टा सेहो रहलाह । एहि क्रममे वैदिक कालसँ शिवोपासनाक उल्लेख भेटैत अछि । समाज ओ साहित्योमे शिवार्चन ओ साहित्य-सर्जनक निरन्तरता बनल रहल । आदिकालेसँ मैथिलीमे जाहि शैव साहित्यक रचना आरम्भ भेल ओहिमे पद्य ओ नाट्य साहित्यक प्रधानता रहल ।

एहि क्रममे आदिकालक मैथिली शैव साहित्यक विवेचनक आलोकमे तत्कालीन मिथिलाक राजनीतिक, सांस्कृतिक ओ सामाजिक परिवेशक विवरण शैव साहित्यकेँ ऐतिहासिक स्वरूप प्रदान कऽ दैत अछि । मिथिलापर कर्णाट राजत्व स्थापना कालहिसँ कोना एहि ठामक धर्म, संस्कृति, साहित्य ओ संगीतक परिवेश चरमोत्कर्षपर छल, ओहि समयमे एक दिस बौद्ध धर्म ओ दोसर दिस मुस्लिम आक्रमणसँ भारतक अन्यान्य क्षेत्र जकाँ मिथिलोक जनमानसक आचार ओ धर्मपर जे प्रतिकूल प्रभाव पड़ल ओकर प्रतिक्रियास्वरूप एहू ठामक पंडित समाज द्वारा अपन धर्म रक्षार्थ भक्ति भावक उद्रेकमे विभिन्न देवी-देवताक प्रति जे साहित्य-सर्जना आरम्भ भेल ओहिमे वैष्णव ओ शाक्त साहित्यक संगहि शैव साहित्यक रचना सेहो होअऽ लागल । मिथिलाक परम्परापर बाह्य आक्रमणक प्रहार ओ प्रभावसँ उत्पन्न स्थितिक घात-प्रतिघातसँ बँचबाकलेल भक्तिक आश्रय ग्रहण करब आवश्यक भऽ गेल । आलोच्य ग्रन्थमे वर्णित विवरण ओ विवेचनसँ ग्रन्थक ऐतिहासिक अर्थ ओ इतिहास-दर्शन स्वतः स्पष्ट भऽ जाइत अछि । लेखक तत्कालीन वैचारिकता, कृति, कृतिकार एवं युगक संवेदना-भूमिकेँ पकड़बामे पूर्ण सफल भेलाह अछि ।

Scanned by CamScanner

कर्णाटवंशक पश्चात् ओइनवार वंशक शासनकालमे मिथिलाक साहित्यिक क्षितिजपर जाहि देदीप्यमान नक्षत्रक उदय भेल से थिकाह महाकवि विद्यापति। हिनक काव्यप्रतिभासँ नि:सृत लिखनावली, पुरुषपरीक्षा, भू-परिक्रमण, शैव सर्वस्वसार ओ गोरक्षविजय नाटक आदिसँ उद्धृत उदाहरण द्वारा ग्रन्थकार मैथिली शैव साहित्यकेँ ऐतिहासिक आधार प्रदान कऽ देलनि अछि। महाकविक रचनामालाक सुमेरु थिक हिनक पदावली। महाकविक रचना संसार ओ विशेष रूपसँ हिनक पदावलीपर विभिन्न विद्वानलोकनिक मतक उद्धरणसँ हिनक विचारधारा ओ सम्प्रदायक विशद विवेचन द्वारा प्रस्तुत ग्रन्थक ऐतिहासिक स्वरूप व्यापक बनि पड़ल अछि। एहि क्रममे जार्ज ग्रियर्सन, नगेन्द्रनाथगुप्त, मित्र-मजुमदार, शिवनन्दनठाकुर, म.म. उमेशमिश्र, डा. सुभद्रझा ओ प्रो. रमानाथझा द्वारा सम्पादित विद्यापति पदावली ओ अन्यान्यो रचनाक आधारपर उपस्थापित मन्तव्यसँ शैव साहित्यपर विद्वान लेखक उद्धरण प्रस्तुत कऽ ग्रन्थक ऐतिहासिक स्वरूपकेँ महत्त्वपूर्ण बना देलनि अछि। विशेष रूपमे विद्यापतिक विभिन्न पदावलीसँ शिवविषयक गीत सबकेँ बीछि-बेरा कऽ शिवक विविध स्वरूपक गम्भीर विश्लेषण-विवेचन कयल गेल अछि। संगहि ग्रन्थकार महाकवि विद्यापतिकेँ कोनो विशेष सम्प्रदायवादी मानव सेहो उचित नहि बुझलनि अछि।

ओइनवार वंशक अवसान ओ दिल्लीमे मुगल साम्राज्यक स्थापनाक फलस्वरूप उत्पन्न राजनीतिक परिवर्त्तनक प्रभाव भारतक संग मिथिलोपर कोना पड़ल एवं एतुक्को धार्मिक-सांस्कृतिक भावनाकेँ केहन ठेस लागल, ताहू स्थितिक विवेचन आलोच्य ग्रन्थमे कयल गेल अछि। एहि प्रतिकूल परिस्थितिक फलस्वरूप भक्ति भावक उद्रेकमे मिथिलाक कतोक कवि-नाटककार साहित्य-सर्जनमे प्रवृत्त भऽ गेलाह। एहि क्रममे अनेक कवि-नाटककार द्वारा रचित अनभिज्ञात दुर्लभ सामग्रीक अन्वेषण कऽ कऽ ओकरा एहि ग्रन्थमे सम्यक विवेचन करैत ऐतिहासिक सूत्रकेँ क्रमबद्ध रूपमे जोड़ल गेल अछि।

मैथिली शैव साहित्यक क्षेत्र मिथिलाक सीमा टपि नेपाल उपत्यका धरि पसरल छल। नेपालक मल्ल शासन कालमे मिथिलासँ नेपालक केहन मधुर सम्बन्ध छल, कोना मिथिलाक विद्वान पंडित, कवि ओ संगीतज्ञ लोकनि ओतऽ सम्मानित होइत छलाह, कोना नेपालमे मैथिली भाषा ओ तिरहुता लिपिक प्रचार भेल, राजदरबारमे संस्कृत, मैथिली ओ नेवारी भाषाकेँ कोना समान रूपेँ महत्त्वपूर्ण स्थान देल गेल, ई सब विषय विशेष ऐतिहासिक महत्त्व रखैत अछि। आलोच्य ग्रन्थमे एहि सब विषयपर क्रमबद्ध रूपेँ विचार कयल गेल अछि। मैथिली भाषा-साहित्यकेँ भक्तपुर, कान्तिपुर ओ ललितपुर तीनू ठाम राज्याश्रय भेटलैक। नेपालक एहि तीनू शाखामे गीत ओ नाटकक खूब रचना भेल। ओ रचना सब नेपालक राष्ट्रिय अभिलेखागार एवं काठमांडूक कतोक निजी संग्रहालय ओ विदेशक पुस्तकालय एवं संग्रहालयमे छिड़िआयल पड़ल अछि। आलोच्य ग्रन्थमे एहि अनभिज्ञात नेपालीय मैथिली शैव साहित्यक परिश्रमपूर्वक अन्वेषण कऽ ओकर उद्धरण दैत सूक्ष्म विश्लेषण कयल गेल अछि। मैथिली साहित्यक एहि अस्पृष्ट भंडारक उद्घाटन-विवेचनक कारणे एहि ग्रन्थक उपादेयता बहुत अधिक बढ़ि गेल अछि। एहि सभक अध्ययन-अनुसन्धान मे कोनहुँ अनुसन्धाताकेँ आलोच्य मैथिली शैव साहित्यसँ प्रचुर मदति भेटि सकैछ। संगहि मैथिली साहित्यक इतिहासमे एकटा नव कीर्त्तिमान स्थापित भऽ सकैछ।

नेपालक शैव साहित्यक विकासमे पशुपतिनाथ महादेवक महत्त्वपूर्ण स्थान रहलनि अछि। ओतुक्का शिवलिंग, शिवमूर्त्ति कोना देवरूपमे प्रतिष्ठित भेल, जनमानसमे सम्पूर्ण देश ओ समाजक लेल शिव कोना आराध्यदेव बनलाह, एहिलेल नेपालक शैव साहित्य दर्पणक काज कयलक। मुख्यरूपमे ओतऽ गीत ओ नाटक लिखल गेल। भाषापर यद्यपि विद्यापति ओ हुनक समकालीन कविक प्रभाव पड़ल परंच नाटकमे गद्यक प्रयोग नेपालेक अवदान कहल जा सकैछ। प्रस्तुत ग्रन्थमे नेपालक शैव साहित्यक अन्तर्गत शिव-विषयक गीत ओ नाटकक वर्गीकरणक क्रममे बारह गोट कवि ओ पन्द्रह-सोलह गोट नाटककारक रचनाक वर्गीकरणसँ प्रस्तुत ग्रन्थमे नेपालीय मैथिली शैव साहित्यक संक्षिप्त इतिहासे प्रस्तुत भऽ गेल अछि। एहि आधारपर जँ 'नेपालीय मैथिली शैव साहित्य' शीर्षकपर स्वतन्त्र रूपसँ अनुसन्धान कयल जाय तँ एहि ग्रन्थसँ सामग्रीक संग दिशा-निर्देश सेहो भेटि सकैछ।

Scanned by CamScanner

ग्रन्थक अन्तिम अध्याय 'आधुनिक मैथिली शैव साहित्य'क अन्तर्गत आधुनिक कालक मैथिली शैव साहित्यक वृहत् इतिहासे प्रस्तुत कऽ देल अछि । आधुनिक मैथिली साहित्यक जनक कवीश्वर चन्दाझाकेँ मानल जाइत छनि । कवीश्वरक समयमे भारतीय समाज संक्रमणकालसँ गुजरि रहल छल । कवीश्वर तीन गोट राजनीतिक ओ सामाजिक आन्दोलन ओ परिवर्त्तन देखने छलाह-1857 सिपाही विद्रोह, 1885क काँग्रेसमे स्थापना ओ 1905-06 इ. क बंग-भंग आन्दोलन । संगहि भारतमे ईस्ट इंडिया कम्पनी सरकारक अन्त ओ ब्रिटिश क्राउन द्वारा भारतकेँ अपन नियन्त्रणमे लेल जयबाक संगहि मेकालेक शिक्षा-योजना ओ इसाइ धर्मक-प्रचार सेहो तीव्र गतिसँ भऽ रहल छल ।

एहि पृष्ठभूमिक आधारपर आधुनिक मैथिली शैव साहित्यक पेनी छानल गेल अछि । आशंकित हिन्दू समाज देशक बदलैत राजनीतिक परिदृश्यमे कोन रूपेँ कमान सम्हारलक, ओकर संक्षिप्त इतिहास एहि अध्यायमे उपस्थापित कयल गेल अछि । ओहि समयमे बंगालमे राममोहनराय, रामकृष्ण, विवेकानन्द ओ पश्चिममे गोविन्द राणा डे, तिलक, गोखले ओ दयानन्द सरस्वतीक आविर्भावसँ हिन्दू समाजमे आत्मसम्मानक भाव जागल आओर ओही राष्ट्रिय भावनाक परिप्रेक्ष्यमे मिथिला ओ मैथिलीयोमे धार्मिक जागरणमूलक साहित्य-सर्जन आरम्भ भेल । मिथिलामे शैव साहित्य ओही चिन्तन ओ भावधाराक अभिव्यक्ति स्वरूप रचित होअऽ लागल । लोकभाषाक आश्रय लऽ भाव, भाषा ओ भासमे सेहो कवीश्वर आधुकिताक प्रयोग कयलनि । कवीश्वरक शिव-विषयक गीतक वर्गीकरण ओ उद्धरण-विवेचन द्वारा हुनक शैव साहित्यक अध्ययनकेँ प्रस्तुत ग्रन्थमे सुलभ बना देल गेल अछि ।

कवीश्वरक एहि आधुनिकताक प्रयोग हुनक समकालीन कविकलेल प्रेरणाक स्रोत बनल आओर एहि अनुकरणमे बहुतो कवि शैव साहित्यक रचनामे प्रवृत्त भेलाह, एहू विषयपर प्रस्तुत ग्रन्थमे विस्तारसँ विवेचन कयल गेल अछि । कवीश्वरक पश्चातक रचनाकार लोकनिक शैव साहित्यक रचनाकेँ छओ कोटिमे विभक्त कऽ ज्ञात-अज्ञात, प्रकाशित-अप्रकाशित सभ कोटिक रचनाक उद्धरण सहित मूल्यांकन कयल गेल अछि । एहि क्रममे प्रथम उत्थान, द्वितीय उत्थान, नवचिन्तनवादी कवि, नव उत्थानक कवि-कवयित्री ओ लोककविक रचनाक विवरणसँ ग्रन्थक ऐतिहासिकता प्रमाणित होयबामे कोनो भाड.ठ नहि रहि गेल अछि ।

आलोच्य ग्रन्थमे मैथिली शैव साहित्यक कृति ओ कृतिकारमे कविक संग नाटककारलोकनिक सेहो महत्त्वपूर्ण योगदान रहलनि अछि । महाकवि विद्यापतिक गोरक्षविजयसँ लऽ मध्यकालक कीर्त्तनियाँ नाटककार ओ आधुनिको कालक नाटककारक कृति सबपर जे विवेचन प्रस्तुत कयल गेल अछि ओहिमे शैव साहित्यपर आधारित जतेक नाटकक कथ्य ओ तथ्यपरक सामग्री आलोच्य गन्थमे उपलब्ध कराओल गेल अछि ओहि सँ शैव साहित्यक अन्तर्गत आनो शीर्षक चयनित कऽ शोधकार्य कयल जा सकैछ-यथा मैथिली शैव साहित्यक सामाजिक सन्दर्भ, विद्यापतिक शैवकाव्यक वर्गीकरण, मैथिली शैव साहित्यक पौराणिक स्रोत, मैथिली शैवसाहित्यपर संस्कृत शैव साहित्यक प्रभाव, आधुनिक सन्दर्भमे मैथिली शैवसाहित्य आदि । प्रस्तुत 'मैथिली शैव साहित्य'क इतिहास ग्रन्थक साँचा ओ मानदण्डक आधारपर मैथिली शाक्त साहित्य एवं मैथिली वैष्णव साहित्यपर सेहो जँ स्वतन्त्र रूपसँ शोधकार्य कयल जाय तँ मैथिली साहित्यक इतिहास आओर भेहगर होयत ।

एहि रूपेँ 'मैथिली शैव साहित्य'केँ एकटा मानक इतिहास ग्रन्थक रूपमे स्वीकार करबामे कोनो संकोच वा अत्युक्ति नहि बुझाइत अछि । अन्तमे निचोड़ रूपमे आचार्य सुमनजीक शब्दमे 'साहित्यिक क्षेत्रमे सव्यसाची जकाँ बाम-दहिन दुनू सन्धान' कयनिहार विद्वान ग्रन्थकार डा. रामदेवझाक संग ई उक्ति प्रस्तुत शैवसाहित्यक इतिहासक सन्दर्भमे सद्यः चरितार्थ भेल प्रतीत होइत अछि ।

●

Scanned by CamScanner

भारतीय साहित्यक गौरव ग्रन्थ 'मैथिली शैव साहित्यक भूमिका'

डा. श्रीमुरलीधरझा

भारतीय भक्ति-दर्शनक क्षेत्रमे वैष्णव, शाक्त ओ शैव दर्शनक त्रिवेणीक प्राधान्य रहल अछि। जनदेवताक रूपमे व्याप्त रुद्रकेँ भारतीय वाङ्मयक रुद्राध्यायमे वैदिक देवताक प्रतिष्ठा प्रदान कयल गेलनि। क्रमशः यैह रुद्रदेवता सर्वाधिक लोकप्रिय देवक रूपमे जनमानसमे देवाधिदेव महादेवक नामे पूजित-प्रतिष्ठित भेलाह।

'अनकालेल दानी अपनालेल भिखारि' ई उक्ति महादेवकलेल कहल जाइत रहलनि अछि। ई स्रष्टा तथा संहारकर्त्ता दुनू मानल जाइत छथि। तनिका सन्दर्भमे डा. रामदेवझाक अन्वेषण 'मैथिली शैव साहित्यक भूमिका' अभूतपूर्व अछि तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमिमे एकर विशेष महत्त्व छैक। ई ग्रन्थ पाँच अध्यायमे विभक्त अछि (1) रुद्र-शिवक उद्भव ओ विकास (2) मिथिलामे रुद्र-शिव (3) शिव भक्तिक स्वरूप (4) मैथिली शैवसाहित्यक स्वरूप तथा (5) प्राक्-मैथिली शैवसाहित्य।

वैदिक वाङ्मय ओ सिन्धुघाटीक सभ्यतासँ रुद्र-शिवक उद्भव भेल अछि। एहि प्रथम अध्यायमे वैदिक कालमे रुद्र कोन रूपक देवता छलाह ताहि विषयमे विभिन्न विद्वानक सिद्धान्त आ विचारकेँ सूत्र रूपमे प्रस्तुत कयल गेल अछि। डा. रामदेवझाक कथन छनि- "विद्वान लोकनि ऋग्वैदिक रुद्रक वा परवर्त्ती वैदिक रुद्रक ध्वंसात्मके रूप ओ क्रिया-कलाप दिस विशेष ध्यान देने रहलाह। किन्तु से समीचीन नहि। कतोक स्थलपर हुनक शुभङ्कर ओ सौम्य रूपक सेहो दर्शन होइछ। ऋग्वेदक द्वितीय मण्डलक तैंतीसम सूक्तक देवता थिकाह रुद्र। सूक्तमे हुनक जाहि गुण ओ कार्य सभक उल्लेख कयल गेल अछि से हमर मन्तव्यक पुष्टि करैत अछि।"

एहि अध्यायमे ऋग्वेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ-उपनिषद् इत्यादिमे रुद्र शिवक स्थितिक विवेचन भेल अछि।

शैवोपासनामे लिंगपूजाक महत्त्वक निरूपण करैत कहल गेल अछि- वैदिक वाङ्मय तथा उपनिषदमे कतहु शिवलिंग -पूजाक उल्लेख नहि अछि। श्वेताश्वतर उपनिषदक एकटा श्लोकमे लिंग-योनि-पूजाक संकेत मात्र भेटैत अछि (5-12)। सूत्रो ग्रन्थमे एकहि ठाम बोधायन गुह्यसूत्रमे (3/2/16/14) रुद्र मूर्त्तिक संग शिवलिंगक उल्लेख अछि। किन्तु परवर्त्ती साहित्य ओ धर्मोपासनामे एकाएक शिवलिंगक पूजाकेँ अत्युच्च स्थान प्राप्त कऽ लेने देखैत छी।

'सिन्धुघाटी देवता ओ लिंगोपासना' शीर्षकक अन्तर्गत लिंगोपासनापर विचार करैत कहल गेल अछि जे वैदिक युगक पूर्व वा समकालमे भारतक सिन्धु-घाटीमे एकटा पूर्ण विकसित सभ्यता छल जे प्रायः वैदिक सभ्यतासँ भिन्न छल। सिन्धु-घाटी जनक सम्बन्ध पश्चिम एशियासँ छलैक। ओहि ठाम उत्खननसँ प्राप्त सामग्रीक आधारपर अनुमान कयल गेल अछि जे सिन्धु-घाटी-जनमे रुद्र शिवसँ साम्य रखनिहार कोनो देवताक उपासना होइत छल जाहिमे ओहि देवताक लिंगोपासना सेहो होइत छल।

दोसर अध्यायमे मिथिलामे रुद्र-शिवक वर्णन भेल अछि। एहिमे शिव-धनुषक सन्दर्भमे कहल गेल अछि- विश्वकर्मा द्वारा दुइ गोट धनुषक निर्माण भेल। देवगण एकटा धनुष शिवकेँ देलथिन जखन ओ त्रिपुरासुरकेँ मारबाक लेल विदा भेलाह, दोसर धनुष विष्णुकेँ देलथिन। त्रिपुरासुर-वधक पश्चात् देवगण द्वारा दुहूक बलक जिज्ञासा भेलनि। तकर पूर्त्ति हेतु ब्रह्मा, शिव ओ विष्णुमे युद्ध करा देलथिन। किन्तु विष्णुक हुंकारेसँ शिवक धनुषक जृम्भन भऽ गेलनि।

Scanned by CamScanner

अतः शिव अति क्रुद्ध भऽ कऽ ओ धनुष-वाण देवरातकेँ दऽ देलथिन तथा विष्णुवला धनुष परशुरामक पितामह ऋचीक मुनिकेँ भेटलनि। देवरात द्वारा न्यास रूपमे गृहीत ओही शिव-धनुषकेँ राम भंग कयने छलाह।

महारामायणकेँ उद्धृत करैत लेखक करैत छथि जे रावणेक भाँति सीरध्वज जनक सेहो प्रतिदिन शंकरक पूजा करऽ कैलास जाइत छलाह। वेद विषयक विवादमे रावण जनकसँ पराजित भऽ गेल। शंकर रावणकेँ चेता देलथिन जे अहाँ हिनकासँ युद्धोमे पराजित भऽ जायब। गुरुक बातपर विश्वास कऽ रावण जनकक सामर्थ्यकेँ स्वीकार कयलक आ सर्वत्र विजयी भेलोपर कहियो विदेहपर आक्रमण नहि कयलक।

पोथीमे बृहद्‌विष्णु पुराणक अन्तर्गत मिथिला महात्म्यक एक कथाक विवरण देल गेल अछि- एक बेर ब्रह्मा द्वारा निज-पुत्रीगमनक चेष्टापर क्रुद्ध भऽ शिव त्रिशूलसँ हुनक माथ काटि देलथिन। किन्तु शिवकेँ ब्रह्महत्या लागि गेलनि आ ब्रह्माक माथ हुनका हाथमे सटि गेलनि। पार्वती अपन पतिकेँ ब्रह्महत्यासँ पीड़ित देखि विष्णुक ओतऽ निवेदन कयलनि। ओतऽ उपस्थित नारदक उपदेशक अनुसार शिव मिथिलाक नगरस्थ महाराज सरमे स्नान कऽ ब्रह्महत्याक पापसँ मुक्त भेलाह।

डा. झाक अनुसार- एहिमे जनकक राजधानी मिथिलापुरक विस्तारसँ परिचय दैत ओकर चतुर्दिक स्थित विशिष्ट शिवलिंग यथा, शिलानाथ, कपिलेश्वर, जलेश्वर, जलाधिनाथ, क्षीरेश्वर, मिथिलेश्वर एवं भैरवक वर्णन अछि। एहूठाम देवरात द्वारा शिवकेँ तुष्ट कऽ धनुष प्राप्त करबाक उल्लेख कयल गेल अछि।

मिथिलाक ऐतिहासिक पृष्ठभूमिमे रुद्र-शिव-भावनाक अस्तित्वक प्रमाण प्रस्तुत करैत पोथीमे कहल गेल अछि-

'लिच्छवि विदेह लोकनिक वज्जि गणतन्त्र ईसा-पूर्व 600 वर्षसँ 326 वर्ष धरि पूर्ण शक्तिशाली रहल, किन्तु ओहूसँ अधिक शक्तिशाली मगध सम्राट अजातशत्रु द्वारा ओ छिन्न-भिन्न कऽ देल गेल। तत्पश्चात् मगधक ओ अन्य प्रान्तक शक्तिशाली राजवंश सभ, यथा- शिशुनाग, नन्द, मौर्य, शुंग, कण्व, आन्ध्र, प्रतिहार, कुषाण वंशक अधिकारक स्थापना ओ च्युति होइत रहल। कुषाण वंशक राजधर्म छल शैव से विख्यात अछि। कुषाणवंशीय राजा लोकनिक शिव, वृषभ, त्रिशूल अंकित अजस्त्र मुद्रा सभ उत्तर भारतक विभिन्न भागमे उपलब्ध भेल अछि। बिहारक विभिन्न भागमे तथा मिथिलाक वैशाली क्षेत्रमे सेहो ई मुद्रा सभ भेटैत अछि।'

कुषाण ओ गुप्त वंशक अन्तरालमे उत्तर भारतमे नागवंश वा भारशिव तथा वकाटक राजवंशक अभ्युदय भेल छल। नागवंशीय लोकनि शैव छलाह। भारशिव शासक सभ-बघेलखण्ड होइत गंगा किनार धरि पहुँचल छल। मिथिलामे सेहो भर जातिक अस्तित्वक प्रमाण भेटैत अछि। 'भर' नामपर भरवाड़ा, भरवाड़ी, भौर, भौरा, भराम आदि अनेको गाम अछि। वर्णरत्नाकरक नगरवर्णनामे 'भरहर' नामक भिखारिक उल्लेख अछि।

एहि अध्यायमे मिथिलामे प्राप्त शैवमूर्त्ति सभक सूचना प्रदत्त अछि। गुप्त एवं पालयुगक अनेकशः शिव, पार्वती, गणेश, एकमुखी लिंग एवं चतुर्मुख लिंग आदि मिथिलाक शिवमठ, डीह, पोखरि आदिसँ प्राप्त होइत रहल अछि। बहेड़ा, वीरपुर, हावीडीह, कोर्थु, भीठभगवानपुर ओ अन्य शैवतीर्थ सभमे एहि प्रकारक मूर्त्ति सभ भेटैत अछि। द्विभुज, चतुर्भुज ओ षड्भुज प्रतिमा सभ सेहो मिथिलामे प्रचुर संख्यामे पाओल जाइछ। वनगाँव-महिसीक उग्रतारा मन्दिरमे भैरव, गणेश ओ पार्वतीक प्राचीन मूर्त्ति रक्षित अछि। जयमंगलागढ़मे शिवपार्वतीक एक विशिष्ट मूर्त्ति अछि जाहिमे पार्वती दहिना हाथ शिवक दहिना कान्हपर दऽ हुनक बाम जांघपर सुखासनमे बैसल छथि तथा शिव बाम हाथसँ धऽ पार्वतीक आलिंगन कयने छथि। एहि प्रकारक उमामहेश्वरक मूर्त्ति मिथिलामे बहुतो ठाम देखल जाइछ। एकमुख लिंग तथा चतुर्मुख लिंग वैशाली क्षेत्र, बेहट (बरौनी), पुरसौलिया (मधुबनी), जमथरि (लोहना रोड) आदि स्थानमे वर्त्तमान अछि।

एकर अतिरिक्त मैथिल दार्शनिकक शैवत्व, मिथिलाक संस्कृत शैव साहित्य, मंगल ओ स्फुट श्लोक, काव्य, स्तुति, टीकाग्रन्थ, पूजापटल वा पूजा पद्धति, मिथिलाक शैव व्रत ओ पर्व, शिव-वास-विचार, जंगम ओ स्थावर लिंग,

Scanned by CamScanner

स्थावर शिवलिंगक स्वरूप, शिव-विग्रह, मिथिलाक शिवालयक स्वरूप, मिथिलाक शैव तीर्थ, मिथिलामे रुद्र-शिव सम्बन्धी जनविश्वास ओ व्यवहार आदिक विस्तृत विवरण देल गेल अछि ।

मिथिलाक धार्मिक, सांस्कृतिक ओ सामाजिक इतिहासक दृष्टिएँ पहिल बेर एतेक बहुमूल्य सूचना-सामग्री एकत्र भेल अछि, जे डा. रामदेवझाक गहन अध्ययन ओ अथक परिश्रमक परिचायक थिक ।

तेसर अध्यायमे शिव-भक्तिक स्वरूपपर विचार कयल गेल अछि। मैथिली शैव साहित्यक आराध्यदेव थिकाह शिव ओ हुनक परिवारमे, परिगणित देव-देवी गण । शिव परिवारमे पार्वती, गणेश, कार्तिकेय, वीरभद्र, भैरव एवं अन्य गण ओ योगिनी सभ गण्य छथि ।

शिवपुराणमे शिवक विविध अवतारक वर्णन भेल अछि जाहिमे पञ्चावतार, दशावतार एवं एकादश रुद्रावतार अत्यन्त प्रसिद्ध अछि ।

एकर अतिरिक्त अष्टमूर्त्तिक व्यापक स्वरूप, शिवक जगत् सम्बन्धी पंच नित्य सिद्ध कृत्य, षडैश्वर्य, जीव आ मोक्ष, शिवाराधन एवं ओकर विविध प्रकार, शिवभक्ति ओ शिवधर्म, भक्तक प्रकार, भक्तिक प्रकार, भक्तिक श्रेष्ठता, शिवभक्त-लक्षण, एकादश आसक्ति, नवधा भक्ति, प्रेमोक्ष्यक-क्रम ओ पंचस्वभाव, मैथिली शैव साहित्यमे मधुरा भक्तिक अभाव, दास्यक व्यापकता, शैवसर्वस्वसारमे शिवभक्तिक क्रियात्मक स्वरूप, शिवाभिनय ओ तकर दर्शन तथा मैथिली शैव साहित्यक उद्देश्य आदिक विशद रूपें वर्णन-विवेचन भेल अछि ।

चतुर्थ अध्यायमे मैथिली शैव साहित्यक स्वरूप निर्धारण क्रममे रसपक्ष ओ भक्तिपक्षपर विचार कयल गेल अछि। जखन कवि सामान्य मानवीय भावनाकें लौकिक उद्देश्यसँ अभिव्यक्त करैत छथि तँ ताहि काव्यकें लोकायत्त, लोकपक्षक वा रसपक्षक काव्य कहल जाइछ । जखन पारलौकिक दृष्टिएँ धर्म ओ मोक्षक उद्देश्यें कवि मानव हृदयक श्रद्धा, आत्मसमर्पण ओ भक्तिक भावनाकें अभिव्यक्ति दैत छथि तथा ओ कोनो देव-देवीकें समर्पित रहैत अछि तँ ओहि काव्यकें देवायत्त, देवपक्षक वा भक्तिपक्षक कहल जाइछ ।

लोकभक्ति-साहित्यक सन्दर्भमे हुनक कथन छनि- देवादि विषयक रतिभाव युक्त काव्य भक्ति काव्य थिक। मैथिलीमे दुइ कोटिक भक्ति काव्य अछि, लोकभक्ति काव्य ओ शिष्टभक्ति काव्य । एहि दुनूमे विविध प्रकारक गद्य, पद्य, व्रत कथा आदि समाविष्ट भऽ सकैत अछि । तें भक्ति-काव्यक अपेक्षा एकरा भक्ति-साहित्य कहब अधिक समीचीन होयत ।

मैथिली शैव साहित्यक विकासक्रमक विभिन्न काल-खण्डक सन्दर्भमे हुनक अपन दृष्टिकोण छनि ।

विद्वान लेखक समस्त तथ्य समूहकें ध्यानमे राखि मैथिली शैव साहित्यकें निम्नलिखित काल-खण्डमे विभक्त कयलनि अछि- 1. प्राक् मैथिली शैवसाहित्य 2. आदिकालीन मैथिली शैव साहित्य 3. मध्यकालीन मैथिली शैव साहित्य 4. नेपालीय मैथिली शैव साहित्य 5. आधुनिक मैथिली शैव साहित्य ।

तत्पश्चात् एहि पाँचो काल-खण्डक विस्तृत विवेचन कयलनि अछि । कहबाक चाही जे डा. रामदेवझाक एहि काल विभाजनकें सम्पूर्ण मैथिली साहित्यक काल विभाजन मानल जा सकैछ जाहि दिस इतिहाकार लोकनिक ध्यान जयबाक चाहियनि ।

काव्य-रूप :

काव्य रूपक दृष्टिसँ एकर तीन वर्ग मानल गेल अछि- गद्य, नाटक एवं पद्य ।

Scanned by CamScanner

गद्यक माध्यमसँ विशेष परिमाणमे शैव साहित्य नहि लिखल गेल । प्राचीनकालमे, वर्णरत्नाकरमे शिव सम्बन्धी उल्लेख सभ भेटैत अछि । नेपालीय शैवसाहित्यमे हरगौरी विवाह नाटकमे गद्यक प्रचुर-प्रयोग भेल अछि ।

मैथिली शैव साहित्यमे गद्यक अपेक्षा शिव सम्बन्धी नाटक अधिक संख्यामे रचल गेल । मध्यकालमे मिथिलामे रचित कविलाल, कान्हाराम ओ शिवदत्तक एक-एक गोट नाटक छनि । मुदा नेपालमे शिव विषयक नाटकक संख्या अधिक अछि । जगज्ज्योतिर्म्मल्ल, वंशमणि, भूपतीन्द्रमल्ल आदि नाटककार एहि क्षेत्रमे प्रमुख स्थान रखैत छथि ।

मैथिली शैव साहित्यक विशाल ओ प्रमुख भाग पद्यमे रचल जाइत रहल अछि । आरम्भिक कालसँ लऽ अद्यपर्यन्त पद्येक विस्तार रहल अछि । एकरो तीन गोट उपवर्ग अछि – प्रबन्धात्मक पद्य साहित्य, पाठ्य पद्य साहित्य एवं गेय पद्य साहित्य । प्रबन्धात्मक पद्य साहित्य आधुनिके कालमे रचल गेल अछि । शिव विषयक विस्तृत कथावस्तुकेँ क्रमबद्ध पद्यमे अभिव्यक्त करबाक परिपाटीक आरम्भकर्त्ता थिकाह कविवर लालदास । ओ अनेकशः शिवविषयक लघु आ-दीर्घ प्रबन्ध काव्यक रचना कयने छलाह । हिनका अतिरिक्त गुणवन्त लालदास, रुद्रानन्द आदि सेहो शिव-विषयक प्रबन्धक रचना कयलनि अछि । पाठ्यपद्य ओहन शिव-विषयक पद्य थिक जकर पाठ कयल जाय । गोपीनाथ, जीवनझा, गिरिजानाथ, मुंशी रघुनन्दनदास, सुरेन्द्रझा'सुमन' आदिक रंचित एहन पाठ्यपद्य सभ अछि ।

शिव-विषयक स्वतन्त्र गीतक अतिरिक्त जतेक शिव-विषयक नाटक लिखल गेल से सभ की तँ गीतमय अछि अथवा ओहिमे गीतक बाहुल्य अछि । नेपालमे तँ ई अनिवार्य परिपाटी रहल अछि । अतः ओतऽ नाटकमे प्रयुक्त नान्दी पुष्पांजलि गीतक एक स्वतन्त्रे वर्ग स्थापित भऽ गेल । एहि गीत सभमे विभिन्न राग-रागिणीक उल्लेख ओकर स्रोत ग्रन्थ सभमे भेटैत अछि तथापि मैथिलीक लोकप्रिय भास ओ गीत-प्रकार, यथा- मान, बटगमनी, सम्मर, सोहर, समदाउनि, उचिती, लगनी, चैतावर, मलार, परिछनि, कोबर आदिक प्रचुर प्रयोग भेल अछि । गौरी गीतमे पार्वतीक वन्दना रहैत अछि । हुनक कुमारी जीवनमे तपस्या ओ आराधना द्वारा अनुरूप वरप्राप्तिक वर्णन रहैत अछि । ई गीत महिला वर्ग द्वारा गाओल जाइछ ।

महेशवाणी ओ नचारीक सन्दर्भमे डा. झाक अपन अभिमत अत्यन्त महत्त्वपूर्ण छनि । हुनक मतेँ महेशवाणी ओ नचारीक विषयवस्तु ओ स्वरूपक सम्बन्धमे ने कोनो स्पष्ट धारणा बनि सकल, ने मतैक्य भऽ सकल अछि । विभिन्न विद्वानक विचारमे परस्पर विरोध देखल जाइत अछि । ग्रन्थमे नचारीक ऐतिहासिक महत्त्वक परीक्षण कयल गेल अछि । नचारीक सभसँ प्राचीन उल्लेख पन्द्रहम शताब्दीक जौनपुरक कवि लक्खन सेनि द्वारा 1424 इ मे कयल गेल, सेहो विद्यापतिक प्रसंगमे-

जै देव चले सर्ग की बाटा । औ गए घाघ सुरपति भाटा ।।
नगर नरिंद्र जे गए उनारी । विद्यापति कह गए लाचारी ।।

एहिमे अन्तिम चरणक अर्थ होइछ- विद्यापति नचारी रचि गेलाह । एहिसँ एतबे सिद्ध होइत अछि जे विद्यापतिक कवि कर्मसँ नचारी विशिष्ट रूपसँ सम्बद्ध छल । किन्तु नचारी छल की, तकर कोनो संकेत नही अछि । सोड़हम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे अबुल फजल **आइना-ए-अकबरी**मे विद्यापतिक कृतिक रूपमे नचारीक उल्लेख अछि जाहिमे ओकर विषय-वस्तुक सेहो संकेत अछि । अबुल फजलक उक्ति अछि – तिरहुतक बोलीमे **'लहचारी'** गीत कहल जाइछ जे विद्यापति द्वारा रचित एवं अत्यन्त शृंगारिक अछि । यद्यपि विद्वान लोकनि अबुल फजलक नचारी- सम्बन्धी ज्ञानपर शंका करैत रहलाह अछि । किन्तु डा. रामदेवझाक कहब छनि – अबुलफजलक उक्ति सत्यसँ दूर नहि अछि । एकर विषय वस्तु भक्ति वा शृंगार किछु भऽ सकैत छलैक । शिव-विषयक कोनो प्रतिबद्धता नहि छलैक । विद्यापति शृंगाररसक गीत सभ पूर्वमे नचारी भास पर विशेष गाओल जाइत छल होयत जे सूनि कऽ आइना-ए-अकबरीमे एकरा अत्यन्त शृंगारिक कहल गेल अछि ।

Scanned by CamScanner

महेशवाणी नामेसँ द्योतित होइत अछि जे एकर शिव-विषयक वर्ण्यवस्तुसँ सम्बद्धता छैक । 'महेशवाणी' नामक सभसँ प्राचीन उल्लेख रत्नपाणिक उषाहरण नाटिकामे भेटैत अछि । युग्म शब्द जकाँ 'नचारी-महेशवाणी' शिवविषयक गीतक अर्थमे रूढ़ भऽ कऽ स्वच्छन्दतासँ प्रयुक्त होइत रहल अछि ।

ग्रन्थक पंचम अध्याय अछि - प्राक् मैथिली शैव साहित्य । एहिमे पहिने मैथिली भाषाक आविर्भावक सन्दर्भमे विचार कयल गेल अछि । मैथिली भाषाक आदि स्वरूप ओ भावाभिव्यंजना शक्तिक यथार्थ परिचय बौद्धगान ओ दोहामे भेटैत अछि । आठमसँ बारहम शताब्दी धरि पूर्वी प्रदेशमे पसरल बौद्ध सिद्ध लोकनि अपन दार्शनिक चिन्तन ओ उपदेशक अभिव्यक्ति तत्कालीन प्रचलित भाषामे दोहा ओ चर्यागीत लीखि कऽ कयने छलाह । डाकक नामसँ अनेको ज्योतिष विषयक प्राचीन पद्य सभ उपलब्ध भेल अछि जकर भाषा तत्कालीन लोकभाषा थिक । आठम-नवम शताब्दीमे जाहि मैथिली भाषाक अभ्युदय भेल छल से विकासक विभिन्न चरणकेँ पार करैत, सहवर्त्तिनी भाषा बंगला, उड़िया ओ असमी आदिसँ अपन स्वतन्त्र रूप बनबैत चौदहम शताब्दीक आदि भागमे कविशेखर ज्योतिरीश्वर द्वारा रचित वर्णरत्नाकरमे पूर्णता प्राप्त कयलक ।

एहि क्रममे राजनीतिक स्थितिपर विचार करैत ओहि कालक धार्मिक स्थिति ओ शैव मतक अस्तित्व विषयसँ सन्दर्भित महत्त्वपूर्ण तथ्यक उद्घाटन कयल गेल अछि ।

पालवंशक पतनक पश्चात् मिथिलाकेँ स्थिर राजनीतिक सत्ता प्रदान करबाक श्रेय कर्णाट वंशक राजा नान्यदेवकेँ भेटलनि । 1097 इ.मे नान्यदेव मिथिलापर अधिकार कयलनि ।

पालवंश धर्म, संस्कृत ओ कलाक क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण योगदान कयलक । पालवंशक राजा लोकनि बौद्धमतावलम्बी छलाह । जेना गुप्तवंशक राजा लोकनि अपना हेतु 'परम भागवत' विरुदक प्रयोग करैत छलाह तहिना पाल राजागण अपनाकेँ 'परमसौगत' घोषित करैत छलाह । किन्तु ओ लोकनि अन्यो धर्म ओ सम्प्रदायक प्रति ओतबे रुचि एवं श्रद्धा रखैत छलाह जतबा बौद्धधर्मक प्रति । ई तथ्य पालवंशीय राजा लोकनिक अनेको शिलालेख ओ अन्य कृतिसँ प्रमाणित होइत अछि । मिथिलामे कर्णाटवंशक स्थापनाक पश्चात् क्रमहि बौद्धधर्म सर्वथा निर्मूल होइत गेल । बारहम शतकक अन्तमे विनयश्री नामक बौद्ध आचार्य मैथिलीमे दार्शनिक गीत सभक रचना कयने छलाह, किन्तु लगैत अछि जेना ओहि गीतक श्रोता, गायक ओ बौद्ध मिथिलामे केओ रहि नहि गेल छल । 1224 इ.मे जखन तिब्बती बौद्ध संन्यासी धर्मस्वामी तिरहुत आयल छलाह तँ एतऽ वैशालियोमे बौद्धधर्मानुयायीक अभावे देखने छलाह । यद्यपि मगधमे ओहू समयमे बौद्ध धर्म माननिहारक किछु संख्या विद्यमान छल । किन्तु मिथिलामे बौद्धधर्म नहि, ओकर स्मृति मात्र शेष रहि गेल छल। बौद्ध ओ शैवधर्ममे संघर्षक स्थिति छलैक तकर अनेक प्रमाण अछि ।

समीकरणक प्रक्रियामे पैघ-पैघ बौद्धमठ सभ शैवमठक रूप धारण कऽ लेलक । मन्त्रयान ओ बज्रयान जे बौद्धधर्मक अन्तिम प्रतिनिधि छल से क्रमहि शैवादि मतमे समाहित भऽ गेल । नेपाल-महात्म्यमे कहल गेल अछि जे, जे बुद्धक पूजा करैत अछि से शिवेक पूजा करैत अछि तथा नेपाली बौद्धक स्वयम्भू पुराणमे पशुपतिक पूजाकेँ बुद्धक पूजा मानल गेल अछि ।

मिथिलामे नाथपन्थक की स्थान छल ताहि सम्बन्धमे कोनो निश्चित ओ विस्तृत प्रमाण नहि भेटैत अछि । जेना बंगाल वा पश्चिमी प्रदेशक लोकभाषामे नाथ-सम्प्रदायक साहित्य भेटैत अछि तेना मिथिलामे नहि । एकर अर्थ ई नहि मानल जा सकैछ जे नाथसम्प्रदायक कोनो प्रभाव मिथिला वा मिथिलाक लोकभाषापर नहि पड़ल होयतैक ।

मिथिलामे गुदड़िया बाबाजी द्वारा सारंगीपर गाओल जायवला 'भरथरीक गीत' नाथ-सम्प्रदायेक लोकसाहित्य थिक । कबिराहा सम्प्रदाय ओ निम्नवर्गमे गुरुप्रधान धार्मिक पन्थसभमे गोरखनाथक विशेष आदर अछि । कतोक निर्गुनियाँ गीत सभमे गोरखनाथक चर्चा वा उल्लेख भेटैत अछि ।

Scanned by CamScanner

आलोच्यकालमे मिथिलामे शिवक पौराणिक रूपक पूर्ण प्रतिष्ठा छल । मीमांसक ओ नैयायिक द्वारा स्तुत शिव पुराण-वर्णित परमब्रह्म परमेश्वर शिव छलाह । शिवक मूर्त्ति ओ लिंगक उभय रूपमे पूजन होइत छल । किन्तु प्रधानता छल लिंगार्चनक । नारायणपालक एकटा अभिलेखसँ ज्ञात होइछ जे राजा द्वारा तीरभुक्तिमे सहस्त्र शिवायतनक निर्माण ओ लिंग स्थापन कऽ ओकर व्यवस्था हेतु 'पाशुपत आचार्य परिषद'केँ शिवोत्तर रूपमे 'मुकुतिका' नामक ग्राम देल गेल छल । एहिसँ एतबा संकेतित होइछ जे मिथिलामे पालयुगमे पाशुपत सम्प्रदाय प्रचलिते नहि छल, अपितु ओकर प्रतिष्ठो छलैक ।

कर्णाट कालमे चण्डेश्वर नेपाल विजय कऽ अपनहि हाथेँ स्पर्श कऽ भगवान् पशुपतिनाथक पूजन कयने छलाह, जकर उल्लेख ओ 'कृत्यरत्नाकर'मे गौरवपूर्वक कयने छथि । हुनक स्थापित दुइ गोट शिवलिंग सेहो लोकमे निर्दिष्ट कयल जाइत अछि जनिक नामे चण्डेश्वर छनि । हुनक पिता वीरेश्वरक संस्थापित दुइ गोट शिवलिंग कहल जाइछ । वीरेश्वरक समकालिक कविशेखर ज्योतिरीश्वर सेहो शिवार्चनमे तत्पर देखल जाइत छथि । ओहो अपन प्रसिद्ध रचना 'धूर्त्तसमागम्'क मंगल श्लोकमे भगवान् शिवेक वन्दना कयने छथि ।

एतावता विद्वान लेखक एहि निष्कर्षपर पहुँचलाह अछि जे सातम-आठम शताब्दीसँ लऽ चौदहम शताब्दीक मध्यभाग धरिक अन्तरालमे मिथिलामे शैव भावनाक पूर्ण प्रसार छल ।

बौद्ध सिद्ध लोकनि ब्राह्मण धर्म ओ पौराणिक देवी देवताक विरोधी छलाह । शैवमतहुक खूब आलोचना करैत छलाह । तथापि ग्रन्थमे बौद्ध सिद्ध लोकनिक रचनामे शैवमतक प्रभावकेँ ग्रन्थमे सप्रमाण रेखांकित कयल गेल अछि ।

प्राकृतपैङ्गलम् अवहट्ठ काव्यकेँ प्राचीन मैथिलीक सम्पत्ति मानि ओहूमे ग्रन्थकार द्वारा शैव तत्त्वक अनुसन्धान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि ।

मैथिलीक आद्य ग्रन्थ वर्णरत्नाकर काव्योपयोगी विविध वर्णनक संग्रह थिक । प्रसंगात् एहिमे अष्टमूर्त्ति, एकादश रुद्र, अष्ट भैरव, बारह वेताल, चौंसठि योगिनी ओ अनेकानेक गण सभक वर्णन ओ उल्लेख अछि । काव्य क्षेत्रमे एकर सभक वर्णन होइत छल होयत तेँ ज्योतिरीश्वर एकर सभक वर्णनक संग्रह करब अपेक्षित बुझने होयताह । लेखकक स्पष्ट स्थापना छनि जे ई सभ प्राक् मैथिली शैव साहित्यक प्रेरक सामग्री थिक ।

एहि तरहेँ डा. रामदेवझा द्वारा लिखित 'मैथिली शैवसाहित्यक भूमिका' मैथिली शैव साहित्यानुसन्धानक पृष्ठभूमिक शोध-सन्धानक दिशामे सर्वथा पूर्ण दिशा-निर्देशक अमूल्य कृति अछि । एहि तरहक पुस्तकक रचना साधारण विद्वानसँ कथमपि सम्भव नहि अछि । एकर जे प्रचार-प्रसार होयबाक चाहैत छल से नहि भऽ सकल । तकर कारण ईहो भऽ सकैत अछि जे एकर प्रकाशनसँ बहुत पूर्व हिनक मैथिली शैव साहित्य पुस्तक प्रकाशित भऽ गेल छलनि ।

एहि पोथीमे शैव साहित्यक पृष्ठभूमि एवं प्रेरक तत्वक सूक्ष्म विश्लेषण कयल गेल अछि । अत्यन्त श्रमसाध्य सामग्रीक संकलन ओ विवेचन-विश्लेषणक हिनक अपूर्व प्रतिभा ओ व्युत्पत्तिक निदर्शन ई ग्रन्थ कहल जा सकैछ ।

डा. रामदेवझाक ई ग्रन्थ क्लासिक तथा गहन अध्ययनक परिचायक थिक । निस्संकोच भावसँ कहल जा सकैत अछि जे 'मैथिली शैव साहित्यक भूमिका' मैथिलीये नहि भारतीय साहित्यक गौरव ग्रन्थ थिक । ई ग्रन्थ ओहि कोटिक थिक जाहिमे आर.जी. भण्डारकरक 'वैष्णविज्म-शैविज्म एण्ड माइनर रेलिजस सिस्टम्स', शशिभूषण दास गुप्ताक 'ऑब्स्क्योर रेलिजस कल्ट्स', एस्.के. डेकेर अलीक 'हिस्ट्री आफ वैष्णव फेथ एण्ड मुवमेंट इन बेंगाल', हजारीप्रसाद द्विवेदीक 'नाथ सम्प्रदाय', यदुवंशीक 'शैवमत' सन विशिष्ट ग्रन्थ सभ परिगणित अछि ।

●

Scanned by CamScanner

मैथिली प्राचीन गीतावली आ डा. श्रीरामदेवझाक सम्पादन दृष्टि

डा. श्रीअमरनाथ

उन्नैसम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे मैथिली साहित्यक क्रमबद्ध सुनियोजित इतिहासक निर्माण सम्बन्धमे चिन्तन प्रारम्भ भेल । तकर कवीश्वर चन्दाझा रचित मिथिलाभाषा रामायणक परिशिष्टमे संलग्न किछु प्रसिद्ध गीतकार नाटककार सूची एवं हुनक पोथासँ दृष्टिगत होइत अछि । कवीश्वरक समकालीन बहुभाषाविद् आंग्ल विद्वान ग्रियर्सनक द्वारा विद्यापतिक अठासी गोट गीत एवं 'ट्वेंटी टू हाइम्स' नामसँ किछु अन्य कविक गीतक प्रकाशन भेल छल । एतद्‌रिक्त अनेको विद्वानलोकनि गीतक संग्रह कयलनि आ से प्रकाशितो भेल यथा 'मैथिल भक्त प्रकाश' आ 'मिथिला गीत संग्रह' आदि । 1905 मे मैथिल हित साधनक प्रकाशनक संग मैथिलीमे पत्र-पत्रकादिक युग प्रारम्भ भेल आ शनैः-शनैः अनुसन्धान एवं अन्वेषण द्वारा प्राप्त गीत तथा गीतक सम्बन्धमे लेख, टिप्पणी आदि प्रकाशित होअऽ लागल । अध्ययनक दिशाकेँ निर्धारित करबामे विद्यापतिक उपलब्ध विभिन्न पदावली तथा नेपालमे सुरक्षित दुर्लभ पाण्डुलिपि सभ अत्यन्त सहायक सिद्ध भेल । अनेक विद्वान एहि कार्यमे संलग्न भेलाह, नव-नव तथ्यक उद्‌घाटन कयलनि तथा काव्य मर्मज्ञक लेल अध्ययनक विस्तृत सामग्री प्रस्तुत करबामे समर्थ भेलाह, मुदा से कार्य सभ भेल कीर्ण-विकीर्ण रूपमे आ यैह कारण भेल जे अनुसन्धान तथा सिद्धान्त निरूपणमे जेहन स्फीत दृष्टि आ अथक साधनक प्रयोजन होइत छैक तकर सर्वथा अभाव एहि रीतिक कार्यमे परिलक्षित होइत अछि मुदा तथापि एकर महत्त्व अछि । विशेषतः व्यापक शोध कार्यमे सहायक स्रोतक रूपमे ई सब उपयोगी अछि । एहि महत्त्वपूर्ण एवं व्यापक कार्यकेँ सुव्यवस्थित एवं सुसम्पादित करबाक उत्तरदायित्व मैथिली अकादमी, पटना द्वारा डा. रामदेवझाकेँ देल गेलनि । मार्च 1977 मे **मैथिली प्राचीन गीतावली** नामसँ ई प्रकाशित भेल । एहि पुस्तकक प्रयोजनक सम्बन्धमे मैथिली अकादमीक तत्कालीन अध्यक्ष श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' लिखैत छथि- मैथिलीक प्राचीन पांडुलिपि सभ, जे अद्यावधि, अलक्षित, अप्रचारित वा अलभ्य अछि, तकरा सभकेँ ताकि-ताकि ओकर सम्पादन कऽ प्रकाशमे आनब अकादमीक एक प्रमुख कर्त्तव्य अछि, जाहिसँ हमरालोकनि अपन गौरवमय बौद्धिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अतीतकेँ चीन्हि, ओहिपर गर्व कऽ सकी । प्रस्तुत प्रकाशन एही दिशामे एक प्रयास थिक ।''

निःसन्देह एहन सार्थक प्रयासक लेल कठोर साधना ओ तीक्ष्ण मेधाक प्रयोजन होइत छैक आ से प्रयास मैथिली साहित्यमे '**सव्यसाची**' नामसँ विख्यात डा. रामदेवझा द्वारा कयल गेल ओ अन्ततः **मैथिली प्राचीन गीतावली**क नामसँ प्रकाशित ई पुस्तक ऐतिहासिक महत्त्वक सिद्ध भेल । कुल सतासी पृष्ठक प्राक्कथनसँ समन्वित एहि गीतावलीमे तीन खण्ड अछि । प्रथम खण्डमे, **कंसनारायण पदावली** नामसँ अभिहित किंवा **भाषागीत संग्रह**क गीत सभ अछि । दोसर खण्डमे प्रथम खण्डक जतेक कवि सभ छथि तनिक अन्यहु रचना जे विभिन्न ज्ञात-अनभिज्ञात स्रोतसँ प्राप्त भेल तकरो एकत्र कयल गेल अछि । एहि सम्बन्धमे डा.रामदेवझाक कहब छनि जे- कोनो कविक समस्त गीत दुहू खण्डकेँ मिला कऽ देखने भेटि सकैछ ।" मैथिलीक नवासी गोट एहेन गीत सभ जे भणिताहीन अछि ओ जकर कोनहुँ साधनसँ कर्त्तृत्व निर्धारण नहि भऽ सकल तकरा तेसर खण्डमे संग्रहित कयल गेल अछि । एकर अतिरिक्त पुस्तकक अन्तमे भाषागीत संग्रह ओ प्राचीन मैथिली गीतावलीक तुलनात्मक गीत क्रमांक देल गेल अछि । एहि तरहक क्रमिक भेद स्पष्ट करब आवश्यक छल कारण भाषागीत संग्रहमे गीतक योजना राग-क्रमसँ अछि । मुदा मैथिली प्राचीन गीतावलीमे कवि क्रम राखल गेल अछि ।

मैथिली प्राचीन गीतावलीक सम्बन्धमे ई निश्चित कहल जा सकैत अछि जे ई परम्परागत लोकोपयोगी संग्रह अथवा **संकलनसँ फराक** प्रकारक वस्तु अछि । ई कहबाक प्रचुर कारण सेहो अछि आ एहि कारण सभक उल्लेख

Scanned by CamScanner

विवेचनक क्रममे स्वत: भेल अछि । वस्तुत: ई ठोस अनुसन्धानमूलक संकलन थिक जकर उद्देश्य मैथिली प्राचीन गीत आ गीतकार लोकनिक प्रसंग पसरल अनेक प्रकारक भ्रान्तिक निवारण करब थिक ।

मैथिली प्राचीन गीतावलीक आधार स्रोतक रूपमे जाहि संग्रह सभक उपयोग भेल अछि ताहिमे नेपालमे सुरक्षित भाषागीत संग्रह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि । एहि संग्रहपर पूर्वहुमे कार्य भेल छल । सम्पादक डा. झा सूचित करैत छथि जे भाषागीत संग्रहक विषयमे जयकान्त बाबू (कंसनारायण पदावली नामसँ)जे विचार कयलनि ताहिसँ इतर अन्यो विद्वान लोकनि कार्य कयलनि अछि । स्व. रमानाथबाबू एकर सम्पादन कयने छलाह । ज्ञात भेल जे ओ पटना विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित भेल । किन्तु एखन धरि अनुपलब्ध अछि । भाषागीत संग्रहक सम्बन्धमे डा. रामदेवझाक कहब छनि जे गीत संग्रहक उपर्युक्त नाम फराकसँ अंकित अछि जे पछाति दऽ देल गेल होयत । भाषागीत संग्रहक प्रसंग सूचना उपलब्ध होइत अछि जे नेपालक राजगुरु हेमराजशर्माक निजी पुस्तकालयमे ई सुरक्षित छल । नेपाल सरकार तकरा क्रय कऽ एकरा राष्ट्रिय पुस्तकालयक संज्ञा देलक मुदा पाछाँ 1967 मे एहि पुस्तकालयक हस्तलिखित ग्रन्थसभ राष्ट्रिय अभिलेखालयमे स्थानान्तरित कऽ देल गेल । ई पोथी ओतहि अछि तथा आब ओहि पोथीक क्रमाङ्क देल गेल छैक– 696 । मैथिली प्राचीन गीतावलीमे भाषा गीत संग्रहक प्रसंग दू गोट अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथ्यक उद्घाटन भेल अछि । पहिल तँ ई जे 'भाषागीत संग्रह' वैह पोथी थिक जकरा डा. जयकान्त मिश्र 'कंसनारायण पदावली' नामसँ अभिहित कयने छलाह । एहि प्रसंगमे डा. रामदेवझा लिखैत छथि– जयकान्तबाबू कंसनारायण पदावलीक जे कवि–सूची, गीतक संख्या ओ गीतक क्रमांक देने छथि से सभ भाषा गीत संग्रहमे तद्वते अछि । भाषागीत संग्रह वैह पोथी थिक जकरा ओ देखने छलाह तथा 'कंसनारायण पदावली'क नाम देने छलाह । अत: एहि सम्भावनाक निराकरण भऽ जाइत अछि जे ओ 'भाषा गीत संग्रह'सँ भिन्न पोथी देखने होथि ।

दोसर महत्त्वपूर्ण तथ्य ई जे भाषा गीत संग्रहक काल–निर्धारणक प्रयास भेल अछि । भाषा गीत संग्रहक छब्बीसम गीतमे भणिताक चरण नहि अछि किन्तु संकलनकर्त्ताक टिप्पणी छनि, "श्री सिद्धि नर सिंह मल्ल देवानाम् ।" 'श्री' शब्दकेँ आधार मानि एकर प्रयोगक विश्लेषण करैत डा. रामदेवझा कहैत छथि जे– मिथिलामे जीविते व्यक्तिक नाममे 'श्री' लगयबाक परिपाटी रहल अछि । एकर लिपि मिथिलाक्षरक रहने, लिपिकार, मैथिल छलाह से स्वत: सिद्ध अछि । अपन देशक परिपाटीक अनुसार ग्रन्थ निर्माण कालमे जीवित सिद्ध नरसिंहमल्लक नाममे 'श्री'क प्रयोग कयलनि । यदि आदरेँ 'श्री'क प्रयोग रहैत तँ 'विद्यापते:', 'भिषारी मिश्र', 'कविराजस्य' दशावधान ठक्कुराणाम' वा 'दशावधान ठक्कुरस्य द्वे आदि टिप्पणी' मे सेहो 'श्री' शब्दक प्रयोग अवश्य करितथि । एतावता एहि ग्रन्थक पद सभक संकलन सिद्धिनरसिंहमल्लक राजत्वकाल 1630 सँ 1661क मध्यमे भेल होयत ।

मैथिली प्राचीन गीतावलीमे भाषा गीत संग्रहमेसँ गीत लेल गेल अछि मुदा अनेक अन्य स्रोतक आधारपर पाठान्तर चरणान्तर एवं चरणक्रमक विस्तृत सूचना देल गेल अछि जाहिसँ सहजहिँ पाठोद्धारक पथ प्रशस्त होइत अछि आ पाठोद्धार एहि रीतिक संग्रहक एक प्रमुख उद्देश्य रहैत अछि । आधार स्रोतक रूपमे भाषागीत संग्रहक अतिरिक्त मैथिली प्राचीन गीतावलीमे जाहि प्रमुख संग्रह सभसँ गीत लेल गेल अछि किंवा उपयोग कयल गेल अछि ताहिमे **नाना राग गीतम्, राग भजन संग्रह, नानाराग, नानागीत राग पञ्जिका**क उल्लेख भेटैत अछि । एहि संग्रह सभमे नानारागगीतम्क चर्चा एतऽ अपेक्षित अछि । नानाराग गीतम् नेवारी लिपिमे अछि तथा एकर किछु गीत बंगला भाषामे सेहो अछि, किछु वैरागी भाषामे ओ शेष मैथिलीमे अछि । एहि सन्दर्भमे डा. रामदेव झाक कहब छनि जे नाना राग गीतम्मे संकलित गीत सभमे मैथिली अथवा बंगला दुहूमेसँ ककरो आदर्श रूप सुरक्षित नहि अछि । एहि सन्दर्भमे अनुमान कयल गेल अछि जे नेपालक मोरंग जिलामे बंगालसँ आगत राजवंशी जनसमुदायक संख्या बेश अछि । अत: सम्भव अछि जे बंगाली गायकसँ ओकर नेवारी शिष्य अथवा नेवारी गायकसँ ओकर बंगाली शिष्य अपन संगीत गुरुसँ सूनि कऽ ई गीत सभ लिखने हो । परन्तु मैथिली प्राचीन गीतावलीक सम्पादकक मत छनि जे नाना राग गीतम् बड़ मूल्यवान सामग्री प्रस्तुत करैत अछि तेँ ओकर अध्ययन व्यवस्थित रूपमे होयब अपेक्षित अछि ।

Scanned by CamScanner

मैथिली प्राचीन गीतावलीमे आधार स्रोतक रूपमे नेपालमे रचित किछु नाटककेँ सेहो लेल गेल अछि जाहिमे दू गोट अत्यन्त चर्चित नाटक अछि – हरगौरीविवाह नाटक ओ कृष्णचरित्र नाटक । हरगौरी विवाह नाटक जगज्ज्योतिर्म्मल्ल द्वारा रचित अछि आ ई नाटक पूर्वहिमे डा. रामदेवझा द्वारा सम्पादित प्रकाशित अछि । कृष्णचरित्र नाटक हरगौरी विवाहक पद्धतिपर लिखल गेल अछि, परन्तु एहि नाटकक नाटककार विषयमे स्पष्ट सूचना उपलब्ध नहि होइत अछि । केवल एकटामे टिप्पणी अछि 'श्री नरसिंह मल्लदेवनाम्' । मिथिलामे जीवित व्यक्तिक नामक प्रारम्भमे 'श्री' लगयबाक परम्परा अछि ताहि आधारपर तथा एहि नाटकक भाषा ओ शैलीक आधार पर डा. रामदेवझा चतुर्भुजक सम्बन्धमे अनुमान करैत छथि जे सिद्धि नरसिंहमल्लक आदेशक पूर्त्यर्थ वा रुच्यर्थ ओ नाटकक रचना कयने होयताह । एहि आधारपर नाटकक रचना काल 1629 सँ 1661क मध्यमे स्थिर होइछ ।

नल दमयन्ती नाटकक सम्बन्धमे यथेष्ट सूचनाक अभावमे मात्र एक विन्दुकेँ चिन्हित कयल गेल अछि ओ थिक एकर मंगलाचरण । गोविन्द कविक नाटक नलचरित्रमे जे मंगलाचरण भेटैत अछि सैह एहू नाटकमे यथावत अछि तथा नाटकक विषय-वस्तुमे सेहो साम्य अछि । एहि साम्य सभक आधारपर डा. रामदेवझा पूर्णतः आश्वस्त नहि छथि जे एहू नाटकक रचयिता कवि गोविन्देकेँ मानल जाइनि तथापि अनुसन्धानक लेल प्रश्नक रूपमे एकरा रखैत लिखैत छथि, –तँ की ई अनुमान कयल जाय जे गोविन्द कविहिक 'नल चरित्र नाटक'क रूपान्तर 'नलदमयन्ती नाटक' थिक ?''

मैथिली प्राचीन गीतावलीक प्राक्कथनमे कतिपय कारणसँ मैथिली गीतक बंगाल यात्राक सम्बन्धमे विश्लेषण कयल गेल अछि । सामान्यतः ई धारणा व्यक्त कयल जाइत रहल अछि जे विद्यापतिक गीतक लोकप्रियता ततेक छल जे ई गीत सभ बंगवासीक कंठमे बसि गेलनि । विद्यापतिक व्यापकताक कारणेँ अन्य कविक चर्चा गौण भऽ जाइत अछि । अतएव श्रीरामदेवझा जोर दैत लिखैत छथि– विद्यापतिक अतिरिक्त अन्य बहुतो मैथिल कविक गीत बंगालक विभिन्न प्रसिद्ध वैष्णव पद संग्रह सभमे भेटल अछि । ओ कवि सभ थिकाह, गोविन्द, दशावधान ठक्कुर, अमृतकर, कविशेखर, कंसनारायण, पतिसिंह, सिंह भूपति, गोपीनाथ । मैथिली गीतक बंगाल भ्रमणक सम्बन्धमे अपन मतक स्थापना करैत डा. झा लिखैत छथि जे– बंगालमे जतेक मैथिली कविक गीत भविष्योमे उपलब्ध होयत वा एखन धरि भेल अछि से सभ सोलहम शताब्दीक मध्य धरिक थिकाह ।'' एहि विचारक समर्थनमे तर्क दैत डा. झा लिखैत छथि– सोलहम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे मिथिला मुगल शासनक नियन्त्रणमे चल गेल ओ मिथिलाक सम्बन्ध पूर्वक अपेक्षा पश्चिम दिस बढ़ि गेल । बंगाली छात्रक आगमन बन्द भऽ गेल । मैथिली गीतक बंगाल यात्रा अवरुद्ध भऽ गेल । तेँ ओइनवार शासनक परवर्त्तीकालक कोनो मैथिल कविक गीत बंगालक संग्रहमे नहि भेटैत अछि ।''

मैथिली भाषामे गीत परम्पराक विकास आ निरन्तरतामे मैथिलीक पोषक किछु राजवंशक महत्त्वपूर्ण योगदान अछि । 'मैथिली प्राचीन गीतावली'क प्राक्कथनमे ताहि अवदानक विशेष रूपसँ उल्लेख कयल गेल अछि । एहि प्रसंग ध्यातव्य अछि जे किछु राजा लोकनि गीत सेहो लिखैत छलाह आ से गीत सभ लोकप्रिय भऽ प्रचलितो भेल अछि । नेपालक मल्ल राजवंशक राजालोकनिक द्वारा तँ काव्य रचनाक एकटा परम्परे बनि गेल छल । तहिना मध्यकालमे अनेक राजवंश द्वारा मैथिलीक पोषण कयल गेल । एहि राजालोकनिमे हिन्दू ओ मुसलमान दुनू द्रष्टव्य होइत छथि । मुसलमान आश्रयदाता लोकनिमे शाह हुसैन, नासिरसाह नरेश, आलमसाहक आदिक नाम उल्लेखनीय अछि ।

मैथिली प्राचीन गीतावलीमे दुनू खण्ड मिला कऽ एकतालिस गोट गीत सर्वथा नूतन अछि । अर्थात् वर्त्तमान स्रोतसँ भिन्न आन कोनहुँ स्रोतसँ, पूर्वमे ई प्राप्त नहि भेल छल । कवि लोकनिक परिचयक सम्बन्धमे सेहो अनुसन्धान कयल गेल अछि, अनेक नवीन तथ्यक उद्घाटनक भेल अछि तँ कतहु-कतहु अनुमान द्वारा यथासम्भव मत निरूपण करबाक प्रयास भेल अछि । अमृतकर, भवेश, राजसिंह, कविराज, कविराज भिखारीमिश्र तथा नव कविराज आदिमे नाम साम्य रहलासँ भ्रम उत्पन्न होइत अछि तेँ सम्पादक फरिछबैत लिखैत छथि– पहिल दुनूसँ 'नवकविराज' भिन्न थिकाह से 'नव' विशेषणे सूचित करैत अछि ।" परन्तु कविराज ओ भिखारीमिश्रक सम्बन्धमे जे संकेत कयल गेल अछि ताहि

Scanned by CamScanner

सन्दर्भमे अनुसन्धान अपेक्षित अछि। डा. रामदेवझा स्पष्ट शब्देँ कहैत छथि— मैथिली गीतकार कविराज ओ भिखारीमिश्र कविराज सम्भव जे एके होथि मुदा से फेर के ? कहब कठिन अछि। कविशेखर तथा नवकविशेखर यशोधरमे उपाधि साम्यक कारण भ्रम उत्पन्न होइत छैक। लोचनकेँ भ्रम छलनि जे कविशेखर उपाधि विद्यापतिक थिकनि आ यैह कारण भेल जे कविशेखरक गीतकेँ विद्यापतिक गीत मानि लेल गेलनि। एहने भ्रम प्राय: बंगालोमे छलैक। तहिना कविशेखर आ नवकविशेखरक सम्बन्धमे उत्पन्न भ्रमक निराकरण करैत डा. रामदेवझा लिखैत छथि— नव्य विशेषण सूचित करैत अछि जे हिनका सँ पूर्वो केओ 'यशोधर' साहित्य क्षेत्रमे प्रतिष्ठित भऽ गेल छलाह। ओ प्राचीन यशोधर प्राय: वैह छल होयताह जे काव्य प्रकाशक टीका लिखने छल होयताह एवं जनिक चर्चा नरसिंह मनीषामे कयल गेल अछि। अत: पूर्ण सम्भावना अछि जे 'विद्याकर साहस्रकम्' केर नव्य यशोधरे 'जसोधर नव कविशेखर होथि। एहिठाम 'नव' विशेषण 'कविशेखर'क लेल नहि, 'जसोधर'क लेल आयल अछि।"

गोविन्द कविक प्रसंग अनेक महत्त्वपूर्ण विन्दु सभपर विवेचन भेल अछि। ओइनवार वंशक अन्तिम राजा कंसनारायणक आश्रित गोविन्द ओ नलचरितक रचयिता गोविन्दक अभिन्नताक सम्बन्धमे विचार कयल गेल अछि आ तर्कसंगत अनुमान कयल गेल अछि जे गोविन्ददास जँ मैथिल छलाह तँ वैह गोविन्द रहल होयताह जे कंसनारायणक समकालिक छलाह। वस्तुत: सम्पादक डा. झा जाहि प्रमाणक संग एहि प्रसंगपर विचार कयलनि अछि से गोविन्द ओ गोविन्ददासक गीरहकेँ नीक जकाँ सोझरबैत अछि। नृप, नृपति, भूपतिक सम्बन्धमे कहल गेल अछि जे नृपसिंह, नृपति सिंह, सिंह नृपति, सिंह भूपति लोकनि ओ राजा भऽ सकैत छथि जनिक नामक मुख्यांश 'सिंह' रहल होनि। डा. जयकान्तमिश्र अनिश्चयपूर्वक सब विशेषण सिद्धि नरसिंहमल्लक अपर नाम मानलनि अछि। डा. शैलेन्द्रमोहनझा मानलनि अछि जे 'नृपति सिंह, सिद्धिनरसिंहेक नामान्तर थिक— भाषा गीत संग्रहक सिद्धि नरसिंह, नृपसिंह ओ नृपतिसिंह वस्तुत: एकहि व्यक्ति रहथि। एहि प्रसंगमे निश्चित निष्कर्ष धरि पहुँचबा लेल तथ्यक अन्वेषण अपेक्षित अछि। दशावधान, भगीरथ, शङ्कर, सदानन्द भरतकवि, गोपीनाथ, वीरनारायण आदिक सामान्य परिचय देल गेल अछि। हिनकालोकनिक विषयमे कोनो तेहन विवादास्पद तथ्य दृष्टिगोचर नहि होइत अछि आ ने तेहन कोनो उल्लेखनीय प्रसंग अछि जकर चर्चा कयल जाय। हिनकालोकनिक गीत अत्यन्त मार्मिक अछि ओ गीत परम्पराक दृष्टिञे विलक्षण अछि। कवि कुमुदीक नाम ओ हिनक गीतमे कोनो आश्रयदाताक उल्लेख नहि रहबाक कारणे डा. रामदेवझा अनुमान कयलनि अछि जे प्राय: कवि कुमुदी कवयित्री रहल होयतीह।

मैथिली प्राचीन गीतावलीक अवगाहनसँ स्पष्ट होइत अछि जे विद्यापति, कंसनारायण तथा चतुरचतुर्भुजक योगदानक विवेचन ओ विश्लेषण विशेष रूपसँ कयल गेल अछि आ तकर पर्याप्त कारणो अछि। विद्यापतिक वैशिष्ट्य सर्वविदित अछि। कंसनारायणक अवदानक सम्बन्धमे डा. रामदेवझा लिखैत छथि— इतिहासमे कंसनारायणक विषयमे भने केहनो दन्तकथा लिखल हो मुदा मैथिली साहित्यमे ई विकासक चरमविन्दु बनि गेल छलाह।" चतुर चतुर्भुजक प्रसंगमे पूर्वहि विवेचन भेल अछि। हिनक प्रसंगमे जे डा. रामदेव झाक मान्यताक छनि जे— भाषा गीत संग्रहक संग्रहकर्त्ता चतुर चतुर्भुज छथि।' हिनक प्रतिभा, वैदुष्य ओ भाषापर आसाधारण अधिकारक उल्लेख करैत डा. झा लिखैत छथि— भाषागीत संग्रहक परिनिष्ठित ओ प्राञ्जल भाषा, सुरुचिपूर्ण उत्कृष्ट गीत, गीतक चयनक्रम, गीतक सार्थक सुललित पाठ आदि सिद्ध करैत अछि जे ई कोनो श्रेष्ठ विद्वानक दीर्घकालिक गम्भीर सुचिन्तनक परिणाम थिक। चतुर चतुर्भुज ओहि कोटिक विद्वान् ओ रसमर्मज्ञ छलाह।"

मैथिली प्राचीन गीतावलीक सम्पादक नि:संकोच भावसँ स्वीकार करैत छथि जे मैथिली भाषागीत संग्रह भाषाक परिशुद्धता, पाठक प्रामाणिकता ओ गीतक भावश्रेष्ठताक कारण उच्चकोटिक संग्रह थिक। परन्तु, एतऽ ध्यान देबा योग्य विषय अछि जे भाषा गीत संग्रहक सम्पादक आ मैथिली प्राचीन गीतावलीक सम्पादक दुहूक सम्पादनक दृष्टिमे मौलिक अन्तर अछि आ तकर कारण अछि जे दुहू संग्रहक उद्देश्य आ प्रयोजन नितान्त भिन्न अछि। भाषागीत संग्रहक सम्पादन गायन-वादन उद्देश्यक निमित्त विभिन्न रागानुसारी गीतक संकलन करब अछि आ तेँ भाषागीत संग्रहमे गीत योजना

Scanned by CamScanner

रागक्रमसँ अछि । एकहि निर्दिष्ट रागक अन्तर्गत अनेक गीत सब अछि । परन्तु मैथिली प्राचीन गीतावलीक प्रसंग डा. श्री रामदेवझा लिखैत छथि– वर्तमान संग्रहमे राग-क्रमसँ गीतकेँ राखब अनुपयोगी ओ अनपेक्षित होइत । कोनहुँ कविक काव्यक समग्र चित्र भेटब कठिन भऽ जाइत । तेँ कविक अनुक्रमसँ गीत सभकेँ राखल गेल अछि अर्थात् एक कविक समस्त गीत एकहि ठाम कऽ देल गेल अछि । कवियो सभकेँ ऐतिहासिक क्रमसँ यथासम्भव रखबाक प्रयास भेल अछि ।"

वस्तुतः मैथिली प्राचीन गीतावलीक उद्देश्य मैथिली साहित्यक तद्युगीन इतिहासकेँ सुनियोजित करब अछि, कविक काव्य-प्रतिभाक मूल्यांकन ओ योगदानक निरूपण हेतु प्रामाणिक आधारभूमि प्रस्तुत करब अछि आ से ओहन इतिहासक जाहि सम्बन्धमे अनेक प्रकारक भ्रान्ति पूर्वहिसँ पसरल हो । तेँ एतऽ ई कहब असंगत नहि होयत जे ई सम्पादन साधारण काज नहि छल ।

मैथिलीमे प्रकाशित सम्पादित ग्रन्थ सभक तटस्थ भावसँ अनुशीलन कयल जाय तँ बहुलांश मात्र संकलन सिद्ध होइत अछि आ से एहन संग्रह जाहिमे संकलित रचनाक सम्बन्धमे औचित्य अथवा तर्कपूर्ण आधारक विवेचनामूलक दृष्टिक सर्वथा अभाव परिलक्षित होइत अछि आ तेँ एहन-एहन सम्पादित ग्रन्थ मैथिलीमे मात्र पुस्तकक संख्याक वृद्धि करबा मात्र धरि सीमित रहल अछि, गुणात्मक वृद्धिक अपेक्षा करब व्यर्थ थिक । एहि सम्बन्धमे दू गोट सम्पादक निश्चित रूपसँ अपवाद छथि– प्रो. रमानाथझा आ डा. रामदेवझा आ तकर कारण अछि सम्पादनक व्यापक दृष्टि आ प्रखर पांडित्य। डा. रामदेवझा अपन सम्पादनसँ सिद्ध कयलनि अछि जे ई एहन विरल आचार्य छथि जे मात्र प्रयोगक लेल प्रयोग तथा अनुकरणक लेल अनुकरण नहि करैत छथि । यैह कारण थिक जे हिनक वैज्ञानिक अनुसन्धानक प्रवृत्ति कतेको भ्रान्तिपूर्ण अवधारणाकेँ निरस्त करबामे सफल भेल अछि, तर्कपूर्ण तथ्यक जन्म देलक अछि, कतिपय मतक स्थापना कयलक अछि ओ अनेक अनुद्घाटित सन्दर्भक सम्बन्धमे संकेत कयलक अछि । एकहि संग एतेक संश्लिष्ट तथा सरल, गम्भीर एवं तरल, गद्यात्मक तथा लयात्मक, शास्त्रीयता तथा सुगम संप्रेषणीयता मैथिलीमे विरल अछि ।

मैथिली प्राचीन गीतावलीक सम्पादनक क्रममे गीतक भाषाकेँ यथासम्भव परिशुद्ध कयल गेल अछि, पाठ सभक प्रामाणिकताक निरूपण भेल अछि, काव्यालोचनक मार्ग प्रशस्त भेल अछि ओ तेँ एहि रीतिक इतिहासकेँ सुनियोजित करबामे डा. रामदेवझाक अवदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानल जायत ।

●

Scanned by CamScanner

डा. रामदेवझाक अनुसन्धान कार्य : 'नन्दीपति गीतिमाला' एवं 'उमापति'

डा. श्रीशशिनाथझा

मैथिली साहित्यमे महाकवि नन्दीपतिक आविर्भाव एक नवीन युगचेतना लय भेल, से भाषागत, शैलीगत, भावगत आ काव्यप्रभेदगत सभ तरहेँ । तेँ हमर मान्यता अछि जे चन्दाझासँ पूर्व नन्दीपतिक युग छल । एहि धारणाक पुष्टि होइत अछि डा. रामदेवझाक एहि पाँतीसँ– **काव्यजगत्मे मनबोध नवीनताक श्रीगणेश कयलनि, किन्तु नन्दीपति प्राचीनताक अनेक अंशमे रक्षा करैत नाटक-क्षेत्रमे विषय, भाषा, छन्द ओ लयमे नवीनता अनलनि ।**[1]

मैथिली साहित्यक गतिविधिकेँ छओ कालखण्डमे विभाजित करब अधिक उपयुक्त थिक[2]– (1) आदियुग, (2) ज्योतिरीश्वर युग, (3) विद्यापति युग, (4) नन्दीपति युग, (5) चन्दाझा युग ओ (6) आधुनिक युग ।

प्रस्तुत विवेच्य दुइ पोथीमे प्रकाशन वर्षक क्रमेँ **नन्दीपतिगीतिमाला** वरीय अछि, जकर प्रकाशन 1965 इ. मे मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरियासरायसँ भेल छल । ई महाकवि नन्दीपतिक विषयमे शोधपूर्ण विवेचनाक पहिल पोथी थिक, जाहिमे कविक प्रामाणिक परिचय, समय, रचना आदिपर निष्पक्ष विवेचनाक संग नन्दीपतिक लोक प्रचलित छब्बीस गोट गीतक संकलन पाठभेद ओ टिप्पणीक संग प्रस्तुत कयल गेल अछि ।

एहि पोथीक बाद नन्दीपतिक विषयमे दुइ गोट महत्त्वपूर्ण कार्यक उल्लेख प्रसंगवश कयल जा रहल अछि – (1) 1982 इ.क 'मिथिला मिहिर'क दू अंकमे डा. वेदनाथझाक विस्तृत निबन्ध **गीतकार बादरि : श्रीकृष्णकेलिमाला**, (2) डा. शशिनाथझाक सम्पादित **कृष्णकेलिमाला नाटिका** जे **मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह**क चारिम खण्डमे भूमिका सहित 1986 इ.मे दरभंगासँ प्रकाशित भेल, जाहिमे नन्दीपति गीतिमालाक सकल गीत पाठपरिशोधनपूर्वक संकलित अछि ।

नन्दीपतिक परिचयक दू गोट स्रोत उपलब्ध अछि – (1) स्वयं कवि द्वारा कृष्णकेलिमालामे प्रस्तुत वंशावली एवं (2) मैथिल वंशपञ्जी । डा. रामदेवझा उपर्युक्त दुनू स्रोतक सपरिश्रम उपयोग कयने छथि । तदनुसार पगौली बढ़ियाम मूलक सिद्ध शिवदत्त–भानुदत्त-सुधापति – रघुपति (माङू) – म. म. हरिपति (हरपति)– कविकृष्णपति – बादरि प्रसिद्ध कवि नन्दीपति–गिरिपति (गृहपति) । नन्दीपतिक कन्याक विवाह सकरिवार परहटमूलक कवि नकटू (विष्णुदत्त) सँ भेल छलनि जे उजान गामक छलाह । पंजीक अनुसार नन्दीपतिक एहि कन्याक बालक वैदिक चन्द्रदत्त छलथिन, तनिक पुत्र मार्कण्डेय आ तनिक पुत्र भजनामृततरङ्गिणीक (मैथिली) रचयिता महात्मा सत्यनारायण झा (1920 इ.)छलथिन ।[3] परन्तु हमरा भ्रमसँ कृष्णकेलिमालाक भूमिकामे नन्दीपतिक जामाताक नीचाँ वंशबोधक चिह्नक बाद कवि नकटूक नाम देल अछि, उचित थिक जे ओहि चिह्नकेँ हटाय कवि नकटूकेँ जामाता बुझल जाय ।

पूर्वमे प्रचलित दुइ भ्रमकेँ डा. रामदेवझा दूर कयलनि- एक तँ शिवदत्तक पौत्र सुधापतिकेँ हुनक पुत्रक रूपमे राखल जाइत छल, आब बीचक नाम भानुदत्त प्राप्त भेलापर से सन्देह दूर भेल । दोसर हरिपतिक पुत्र कृष्णपतिकेँ हुनक भाय बुझि लेल गेल छल । एकरो निराकरण स्पष्ट व्याख्या कऽ बुझा देल गेल अछि जे नन्दीपतिक पाँती कहि रहल छनि–

रघुपति झाकाँ चारि सुत, 'गंगाधर', 'जयराम' ।
सुरगुरु सम 'हरिपति' सुधी, अति सुबुद्धि सदु 'स्याम' ॥

Scanned by CamScanner

एहिठाम 'सदु' शब्दक अर्थ भेल सदुपाध्याय, जे हस्तलेखक आधारपर पाठोद्धार भेल अछि ।[4] पूर्व संस्करण मे 'सदु'कें 'सह' पढ़िलेल गेल छल । तकर बादक दोहा हरिपतिक विशेषता कहैत अछि -

हरिपति हरि-अवतार तसु, गुरु ठाकुर गुणवृद्ध ।
पण्डित गोकुलनाथझा, शिष्य जनिक परसिद्ध ॥

एहि दोहाक जे अर्थ डा. रामदेवझा कयने छथि, ताहिसँ हम सहमत नहि छी, हमर अर्थयोजना भिन्न अछि ।

डा. रामदेवझाक अनुसार एकर अर्थ भेल जे हरिपति हरिक अवतार छलाह, तनिक (=तसु=तस्य) गुरु गुणवृद्ध ठाकुर भेलथिन, जनिक शिष्य गोकुलनाथझा प्रसिद्ध भेलाह ।' हमर अर्थ थिक जे तसु = तेषु = ताहि चारू भाइमे हरिपति विष्णुक अवतार, ठाकुर (धनवान्) ओ गुणसँ वृद्ध छलाह, जनिक (हरिपतिक) शिष्य गोकुलनाथझा प्रसिद्ध छलाह ।' एतऽ नन्दीपति अपन पितामहकें गोकुलनाथक गुरु होयबाक गौरव प्रदान कयने छथि ।

कृष्णकेलिमालामे नन्दीपति अपनाकें 'द्वादशनामान्वित महाकवि' कहने छथि । नन्दीपति गीतिमालामे हुनक बारहगोट नाममेसँ किछु सूचित कयल गेल अछि - (1) नन्दीपति, (2) बादरि (पञ्जी, गीत ओ नाटकमे प्राप्त), (3) कोविद (नाटक ओ गीतमे), (4) कलानिधि (नाटकमे), (5) निधि (कलानिधिक संक्षिप्त रूप, गीतमे), (6) बुद्धिनाथ/बुद्धिलाल (गीतमे), (7) गौरीपति (गीतमे) ।

कृष्णकेलिमालाक चारिम अंकक पहिल गीतक भनितामे प्रयुक्त 'सुबुद्धि' नामपर प्रथमतः डा. वेदनाथझाक दृष्टि पड़लनि । एकरा बुद्धिनाथेक संक्षिप्त रूप मानल जाय सकैछ-

नितान्त कान्त विश्वरूप, इष्ट भाव भावई ।
'सुबुद्धि' कामिनी हृदएक, हाव रास गावई ॥

नन्दीपतिक गुणसूचक कतिपय उपाधिक गणना एहि प्रसंग कयल जाय सकैछ - (1) कवि, (2) महाकवि, (3) भाषाकवि, (4) कविकोविद, (5) रसमय ।

बुद्धिनाथ, गौरीपति आदि नामक बदला नन्दीपति पाठान्तर देखल जाइछ, जाहिसँ ई नन्दीपतिक नाम प्रमाणित होइछ ।

'नन्दीपति गीतिमाला'क सूक्ष्म विवेचनसँ नन्दीपतिक समय-सीमा निर्धारित भऽ सर्वमान्य अछि- 1705-1790 इ. । एतऽ नन्दीपतिक कृष्णकेलिमाला ओ स्फुटगीतक अतिरिक्त (1) कदम्ब-केलिमाला ओ (2) रुक्मिणीस्वयंवर दुइ नाटिकाक साधारण संकेत देल गेल, जाहिपर आइ धरि विचार आगू नहि बढ़ल अछि ।

'नन्दीपति गीतिमाला'मे संगृहीत छब्बीस गोट गीत मिथिलाक अनेक गाममे स्थित गीतक कापी (आठ व्यक्तिक) सँ तथा अनेक मुद्रित एवं अमुद्रित गीत संग्रहसँ प्राप्त कऽ पाठभेदप्रदर्शनपूर्वक प्रस्तुत अछि । एहिमे पाँच गोट गीत (गीत सं. - 17 सँ 21) कृष्णकेलिमालाक थिक । एहि पाठभेदसँ पाठपरिशोधनमे हम पर्याप्त सहायता प्राप्त कऽ चुकल छी । एहि प्रकारें 'नन्दीपति गीतिमाला' मैथिलीक अनुसन्धानक क्षेत्रमे एक महत्त्वपूर्ण पोथी थिक जाहिमे विविध स्रोतक उपयोग कऽ विषयसमीक्षा ओ ग्रन्थसम्पादनक आदर्श प्रस्तुत कयल गेल अछि ।

एहि लेख लिखबाक क्रममे दिनांक 5 मार्च 2007 बड़ महत्त्वपूर्ण तिथि सिद्ध भेल । गंगौली, राजे (मधुबनी)क स्व. बुद्धिनाथझाक पुत्र पं.अचीतनाथझाक घरमे नन्दीपतिक एक नाटक **संसारसुन्दरी** (बंगला भाषा) प्राप्त भेल । ओहिमे सँ किछु अंश एतऽ उद्धृत अछि -

Scanned by CamScanner

"धर्मवती - (कन्यामुखमवलोक्य गीतेन) -

बारहेँ बरीश अँमी आज हैलोँ धन्या ।
ई जानीलो जानीलो अमार घरेँ कन्या ॥
बन्ध्या-बन्ध्या बोलेँ मो कोँ जातर ननन्दा ।
कहीते न नरए तार ताँदि नेवो निन्दा ॥
शे ई अँमी अभागिनि शशन्तति हैलोँ ।
वशिलो हसीलो घर कन्यारत्न पैलोँ ॥
मुनि महाशय तार चरण वन्दिञा ।
जार परशाद पाए अँमी आनन्दिञा ॥
कवि नन्दीपति राजा मङ्गल करिञा ।
शंशारसुन्दरि नाम दुहिता धरिञा ॥

द्वादश नामानन्वित महाकवि नन्दीपति विरचित कामरूपदेशोद्‌भवभाषाप्रबन्ध-संसारसुन्दरीषु जन्मरहस्यनाम प्रथमोऽङ्कः ।" (पत्र सातम 'ख')

एहि ग्रन्थक उपलब्धिसँ नन्दीपतिक एक स्वतन्त्र अनालोचित व्यक्तित्त्व प्रकाशमे आयल अछि । ई कामरूप (कोचबिहार) प्रदेशमे रहल छलाह ओ ओतहुक कविमण्डलीसँ गहन सम्पर्क रखने छलाह । मिथिलासँ असम धरि हिनक साहित्यिक सन्दर्भ जुटल छल । प्राचीन कालमे असमी कवि द्वारा मैथिलीमे नाटक-रचना प्रसिद्ध अछि, मुदा कोनो मैथिल कवि द्वारा बंगला भाषामे नाटक रचनाक सूचना देबाक हेतु ई पहिले पोथी प्राप्त भेल अछि । ई एहि प्रबन्धक भाषाकेँ स्वयं 'बंगाली' कहैत छथि–

द्वादश अमार नाम अँमी नन्दीपति ।
बँगाली प्रबन्ध आछे शीधरशकति ॥ (पत्र-3, क-2)

पोथी मिथिलाक्षरमे पन्द्रह पत्रक अछि । चारिम अंक प्रारम्भ भऽ आगूक अंश अप्राप्त अछि । एकर सम्पादनमे हम लागल छी ।

'नन्दीपतिगीतिमाला' क पहिल गीत ('गिरिजा पूजए चलु')क भाव ओ शब्दावलीमे ब्रह्मदासकृत रुक्मिणीहरण[5] (1625 इ.) गीत सं. 25 सँ बड़ समता अछि । नन्दीपतिक कतिपय गीत आइयो-काल्हि मिथिलामे पूर्ण प्रचलित अछि– (1) माला गाँथू हे गौरी, (2) हमे अबला अज्ञानि आदि । विद्यापतिक नामपर प्रचलित दुइ गीतकेँ सप्रमाण नन्दीपतिक सिद्ध कयल गेल अछि– (1) ई नहि उचित विचार, (2) आब उचित नहि मान । एहिमे दोसर गीत कृष्णकेलिमालानाटिका (3-22) मे प्राप्त अछि ।

'उमापति'

डा. रामदेवझाक रचित **उमापति** (1980 इ.) नामक पोथी अनुसन्धानपूर्ण अछि । उपापतिक विषयमे अनेक समस्यामूलक सन्देहक एतऽ समाधान भेल अछि आ हुनक यथार्थ परिचय सप्रमाण प्रस्तुत कयल गेल अछि । एहिमे कतिपय बिन्दुपर एतऽ विचार उपस्थापित अछि –

(1) **वंश**- उमापति दरिहरए अमरावती मूलक म.म. रत्नपतिक पुत्र छलाह । पाँजिक पोथीमे लिखल अछि- **महामहोपाध्याय पण्डित उमानाथ प्रसिद्ध उमापति** । पञ्जीक आधारपर हिनका विषयमे पूर्ण विषय विदित भेल अछि । तदनुसार वंशक्रम एहि प्रकारक छनि- **कीर्त्तिशर्मा - केशवशर्मा - सोने - मौरि - रुचि - विष्णुपति - म.म. रत्नपति**[6]- **कवि पण्डित उमानाथ प्रसिद्ध उमापति** । हिनक पत्नीक नाम मनोरमा, मातामहीक नाम चिलकी, पुत्रीक नाम दैया ओ

Scanned by CamScanner

मैञा, मातामहक नाम कवीन्द्र यदुनन्दन (कटैया पाली कुलपतिक पुत्र), माम ओ गुरुक नाम भवदेव[7] इत्यादि । मनोरमा पण्डित राय रघुनन्दनक दौहित्री पुत्री छलीह, तेँ पण्डित रायक पुत्र कवि चतुर चतुर्भुजक भगिनीक पुत्री छलाह । पञ्जीमे चतुर्भुजक विशेषण भेटैत अछि – 'मकमानीपात्साह'[8] । तदनुसार ओ मकमानीक राजदरबारमे जमल छलाह आ किछु भूभागक शासनसूत्र सम्हारने छलाह । एही लागिसँ उमापतिक प्रवेश मकमानीक राजसभामे भेल । ओतऽ कवि देवनाथ आदि सेहो विद्यमान छलाह ।

(2) **आश्रय** – म.म. परमेश्वरझा ओ पं. चेतनाथझा लिखि गेल छथि जे उमापति दरिहरए अमरावती मूलक छलाह, हिनक वास कोइलख गाममे छलनि आ ई हिमालय तराइक मोरङ प्रदेशक मकमानीक राजा हिन्दूपति हरिहरदेवक आश्रित छलाह । एहि कथनक विरुद्ध मत उपस्थापित कयनिहार लोकनि 'उटकरी पञ्चए डेढ़ सय' कहबीकेँ चरितार्थ करैत गेलाह । ओ लोकनि मकमानी जयबाक तँ कथे कोन, ओकर पतो नहि लगौलनि आ कुतर्कक जाल ओछाबऽ लगलाह, कि तँ मकमानी सन तुच्छ राज्यक राजा यवनविजयी नहि भऽ सकैत छथि । तँ केओ हरिहरदेवकेँ हरसिंहदेव मानि उमापतिकेँ विद्यापतियोसँ पूर्वक घोषित कऽ देलनि आ केओ बुन्देलखण्डक राजा हिन्दूपतिसाहक आश्रयमे उमापतिकेँ घीचि कऽ लऽ गेलाह । परन्तु डा. रामदेवझाक अनुसन्धानसँ सत्यता प्रकाशमे आबि गेल । ई पहिने 'मिथिलामिहिर' मे अपन निबन्ध द्वारा आ पछाति 'उमापति' पोथी द्वारा सिद्ध कऽ देल जे उमापति मकमानीक हिन्दूपति हरिहरदेवक सभासद् छलाह । नेपालक वीर पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित 'सेनवंशावली' आ नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखागारक हस्तलेख सूची भाग-1, ग्रन्थांक- 1140 सँ **मकवान्पुरीय नृपवंशावली**क उद्धरण दैत डा. रामदेवझा सिद्ध कऽ देलनि जे चन्दाझाक कथन सत्य छनि । उमापतिक पारिजातहरणमे राजाक नाम हरिहरदेव ओ उपाधिनाम हिन्दूपति आयल अछि तथा हुनक रानी सभक माहेसरि, पटमहिषी, महारानी, जगमाता आदि नामक उल्लेख भेल अछि आ उपर्युक्त वंशावलीमे ई सभ नाम भेटैत अछि । नेपालक इतिहासग्रन्थमे हरिहरदेव द्वारा यवनविजयक उल्लेख अछि । हरिहरदेवक राज्यकाल 1624–1660 इ. छल जे कोइलखवासी उमापतिक समयसँ मिलि जाइछ ।

'परिजातहरण' मे **पातु वो मैथिलेशः** पाठ प्रक्षिप्त थिक जे बादमे मिथिलामे अभिनयक कालमे जोड़ल गेल । ई बात पारिजातहरणक दुइ गोट हस्तलेखमे **पातु हिन्दूपतिर्वः** एहि पाठकेँ देखि स्पष्ट भेल अछि । एहिमेसँ एक टा हस्तलेख डा. रामदेवझा लग छनि आर दोसर मिथिला संस्कृत शोध संस्थान, दरभंगामे अछि ।

(3) **रचना** – उमापतिक प्रसिद्धि हुनक नाटक पारिजातहरण द्वारा भेल अछि । एहिमे प्राचीन हस्तलेखक आधारपर दुइ गोट एहन गीत ताकल गेल जे पूर्व संस्करणमे नहि छल । ताहिमे एक गीतक भनितामे **उमानाथ** नाम भेटि गेल जाहिसँ सिद्ध भऽ गेल जे ई कोइलखवासी उमापतिक रचना थिकनि, हुनक नाम उमानाथ प्रसिद्ध उमापति छलनि । आ तखन **पदार्थीयदिव्यचक्षुः** जे मिथिला संस्कृत शोध संस्थानसँ पं. धीरानन्दमिश्रक सम्पादनमे प्रकाशित भेल, ओहिमे पिताक नाम रत्नपति एवं मामक नाम भवदेव लिखल अछि, से पारिजातहरणकर्त्तेक रचना सिद्ध भेल ।

उमापतिक छिटपुट पन्द्रह गोट गीतकेँ विविध स्रोतसँ संकलित कऽ **उमापति** पोथीमे देल गेल अछि । एहिमे गीत सं. 10 जे लेखक चन्दाझाक संग्रहसँ प्राप्त कयने छथि- **इन्दु विनिन्दक ओ रे हरिमुख** – से वस्तुतः उमापतिक नहि, रमापतिक थिकनि जे रुक्मिणीपरिणयक छठम अंकमे रमापतिक भनितामे उपलब्ध अछि । शेष गीतकेँ हम अपन सम्पादित **मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह**मे पारिजातहरणक परिशिष्ट रूपमे पाठपरिशोधनपूर्वक प्रकाशित कऽ देने छी ।

(4) **उमापति नामक अन्य विद्वान्-**

1. कर्महए अनलपुर मूलक उमापतिक 'शुद्धिनिर्णय' ग्रन्थ अछि जकर एक हस्तलेखमे एहि मूल ग्रामक उल्लेख भेल अछि आ लिपिकाल 1761 इ. थिक ।
2. पवौली बढ़िआम मूलक उमापतिक तीन गोट ग्रन्थ उपलब्ध होइछ जाहिमे सभक मंगलाचरण समान अछि

Scanned by CamScanner

आ मूलग्राम लिखल अछि– स्मृतिदीपिका, सारसंग्रह, प्रायश्चित्त निर्णय। ई छलाह गोकुलनाथ उपाध्यायक पुत्र सर्वस्वदाता रघुनाथक दौहित्र। एहि उमापतिक पुत्र म.म. कन्हाइझा महाराज लक्ष्मीश्वरसिंहक दरबारमे रहैत छलाह। उमापतिक पिता सर्वजान गरीबझा सर्वस्वदान प्राप्त कऽ मङरौनीमे बसि गेलाह। ई कृष्णकेलिमाला नाटिकाकार नन्दीपतिक वैमात्रेय भ्राता छलाह। राजा नरेन्द्रसिंहक दरबारमे प्रधान ज्यौतिषीक पद हिनका प्राप्त छलनि।

(5) **उमापतिक काव्यवैशिष्ट्य** – एहि विषयमे अतिस्वल्प विवेचन **उमापति** पोथीमे भेल अछि, मुदा जतबे भेल अछि से उमापतिक हृदयकेँ खोलि कऽ प्रस्तुत कऽ देने अछि। वस्तुतः एतऽ डा. रामदेवझा अपन अनुसन्धानपूर्ण नवीन तथ्यकेँ उपस्थापित करबाक लक्ष्यमे सफल भेल छथि। आ आन केओ एहिसँ जे लाभ उठओने होथि, हम पूर्ण उपयोग कयने छी। इत्यलम्।

सन्दर्भ निर्देश :

1. नन्दीपतिगीतिमाला, पृष्ठ- 1
2. मैथिली साहित्यक इतिहास, डा. दुर्गानाथझा 'श्रीश', पटना, 2007
3. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह (कृष्णकेलिमालाक भूमिका), डा. शशिनाथझा
4. उपर्युक्त, कृष्णकेलिमालाक दोहा सं. – 1-7
5. कर्णगोष्ठी, कोलकाता, सम्पादक-डा. शशिनाथझा
6. उमापतिक न्यायदर्शनक ग्रन्थ 'पदार्थीयदिव्यचक्षुः' मे ओं अपन पिताक नाम रत्नपति कहने छथि।
7. 'मतुल-भवदेवादीन अत्मगुरुन् आदराद् वन्दे' – पदार्थीयदिव्यचक्षुः
8. 'पात्साहो नृपे प्रोक्तः' – पारसीकप्रकाशः

Scanned by CamScanner

मैथिली साहित्यक इतिहासक एकटा नवीन अध्याय 'जगज्ज्योतिर्मल्ल'

डॉ. श्रीराजानन्दझा

नारमन लेविस नामक अंग्रेज वैयाकरण अपन एकटा पोथीक प्रथम पंक्तिमे कहैत छथि– ई पोथी पढ़बालेल नहि अछि... ई पोथी जुनि पढ़ू । सुदुक पढ़बासँ नीक जे अहाँ एकरा सङे खटी, एकरा सङे लीखी, एकरासँ जोरसँ बाजी, एकरा उतारा दियैक । अहाँ अपन स्वरक सेहो उपयोग करी, मात्र अपन नेत्र आ मोनक नहि ।'' ई उक्ति एहि आलोच्य 'जगज्ज्योतिर्मल्ल' विनिबन्धक प्रसंगमे बहुलांशतः सटीक बैसैत अछि ।

जगज्ज्योतिर्म्मल्ल मल्लराजवंशक तीनमेसँ एकटा प्रमुख शाखा–राज्य भक्तपुरक राजा त्रैलोक्यमल्लक पुत्र छलाह । ई एके संग शारदा आ लक्ष्मी दुनूक दुलारू छलाह । नेपालक सारस्वत साधनाक क्षेत्रमे ई अपन कीर्त्तिमान स्थापित कयलनि । बहुमुखी प्रतिभा–सम्पन्न जगज्ज्योति संगीत, ज्योतिष, वैद्यक, नीति ओ कामशास्त्रक सम्बन्धमे अनेक ग्रन्थक रचना कयलनि आ करौलनि, परन्तु ई यशस्वी आ चिरस्मरणीय छथि साहित्यिक सर्जनशीलता हेतु । प्रस्तुत विनिबन्धमे एकर लेखक जगज्ज्योतिर्मल्लक साहित्यिक व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्वकेँ समग्रतामे अवलोकन करबाक सफल प्रयास कयलनि अछि ।

एकर पूर्व पीठिकामे मध्यकालीन राजनीतिक परम्परा आ परिवेशक एकटा झाँकी उपस्थित करैत मिथिला–नेपालक सामाजिक, सांस्कृतिक ओ साहित्यिक सम्बन्धक पथ प्रशस्त करबामे मल्लराजवंशक महत्त्वपूर्ण भूमिकापर लेखक प्रकाश देलनि अछि । जगज्ज्योतिर्मल्लक राजनीतिक परिपक्वताक दिग्दर्शन करबैत हुनक राजत्वकालमे प्रतिवेशी राज्यक संग शान्तिपूर्ण सहअस्तित्वक जे निर्वाह होइत रहल, तकरा रेखांकित कयलनि अछि ।

जगज्ज्योतिर्मल्लक जीवन–शैली, परिवार ओ परिजन, हुनक कृति, हुनक नाटक, गीति काव्य, हुनक भक्ति भावना एहि छओ अध्यायमे साहित्यिक विविध विधामे जे हुनक उत्कृष्ट अवदान छनि तकर एहि पोथीमे विशद उल्लेख भेटैत अछि आ जे अन्यत्र अप्राप्त अछि । जगज्ज्योतिर्मल्लक लाथेँ नेपालक समस्त मध्यकालीन मैथिली काव्य–परम्पराक विहंगावलोकन विनिबन्धकारक अथक लेखनी द्वारा एहि ग्रन्थमे भेल अछि ।

एकटा पृथक पुस्तक जाहिमे कोनो सुस्थापित साहित्यकारक समस्त कृतिक संक्षेपमे शब्द–चित्र उपस्थापित कयल जाइछ, तकरा विनिबन्धक अभिधान देल जाइछ । एतावता विनिबन्धकारकेँ एकटा सिद्धहस्त लेखकक सङ–सङ प्रतिपाद्य विषयक सम्बन्धमे आ ओकर आनुषंगिक उपादानक सम्बन्धमे गहन आ व्यापक अध्ययन होयब अत्यावश्यक होइछ । प्रस्तुत विनिबन्धकार साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत, विश्वविद्यालय प्राचार्य मैथिली विभागक, अध्यापन लेल प्रतिष्ठित, प्रखर आलोचक, नाटककार, प्रयोगधर्मी कथाकार, कवि ओ अनुवादक रूपमे सेहो समादृत छथि । अङरेजीक एकटा महान निबन्धकार फ्रान्सिस बेकनक उक्ति छनि– Reading makes a perfect man, writing an exact man and conference a ready man- हमरा बुझने एहि तीनू गुणक समुच्चय एहि बिनिबन्धकारमे छनि । एहि ग्रन्थकेँ गम्भीरतासँ अध्ययन कयला सन्ताँ ई सुस्पष्ट भऽ जाइछ जे ई उच्च कोटिक विनिबन्ध अछि ।

प्राकृत मध्यकालक आर्य भाषा छल । जगज्ज्योतिर्मल्ल तकरे अनुसरण करैत 'मुदित कुवलयाश्व' नाटकमे तीन स्थलपर प्राकृत पद्यक समावेश कयने छथि । 'नेवारी' मध्यकालमे नेपाल उपत्यकाक जनभाषा छल । एहि भाषाक लिपि मुख्यतः मिथिलाक्षरे थिक जाहिमे कतिपय स्थानीय विशेषताक अतिरिक्त देवनागरीक मिश्रण अछि । किन्तु

Scanned by CamScanner

जगज्ज्योतिर्मल्ल अपन पूर्ववर्त्ती नाटककार जकाँ नेवारी भाषामे नाट्य-निर्देश नहि दऽ संस्कृत वा मैथिली मिश्रित संस्कृतमे देलनि अछि । तेँ ई नहि कहल जा सकैछ जे ओ मैथिलीक उपेक्षा कयलनि । विनिबन्धकार सोदाहरण एकर सम्पुष्टि करैत छथि । 'अश्ववैद्यक' जे मूलतः संस्कृतमे छल, तकर रचना नेवारी भाषामे कयलनि । से एहिलेल जे अश्व चिकित्साक ज्ञानक उपयोगिता अश्वपालक लेल छल जे स्थानीय निम्नवर्गक निरक्षर लोक होइत छल आ जकर दैनिक व्यवहारक भाषा नेवारी छलैक ।

'मुदित कुवलयाश्व' नाटकक शीर्षकक औचित्यकेँ देखबैत विनिबन्धकारक अभ्युक्ति छनि– **नाट्य वस्तुमे देखल जाइछ जे नायक कुवलयाश्व अत्यन्त दारुण वेदना सहैत अन्ततः अपन मृतपत्नीकेँ पुनर्जीवित रूपमे प्राप्त कऽ अशेष मोद लाभ करैत छथि । अतः 'मुदित कुवलयाश्व' नाम सार्थक अछि ।"**

जगज्ज्योतिक 'हरगौरी विवाह' नाटक एक विशिष्ट साहित्यिक कृतिक संगहि प्राचीन मैथिली साहित्यक दृष्टिएँ ऐतिहासिक महत्त्वक अछि । एकर एकमात्र हस्तलेख कैम्ब्रीज विश्वविद्यालय, लंदनमे रक्षित अछि । 'हिस्ट्री ऑफ नेपाल'क लेखक डेनियल राइट महोदय नेपालमे बहुत रास पाण्डुलिपिक संकलन कयने छलाह, जाहिमे 'हरगौरी विवाह' नाटकक पाण्डुलिपि सेहो छैक । ओही प्रतिक आधारपर 'जगज्ज्योतिर्मल्लकृत हरगौरी विवाह' नाटकक जे सम्पादन एवं प्रकाशन भेल तकर समस्त श्रेय प्रस्तुत विनिबन्धकारेकेँ छनि ।

जगज्ज्योतिक कृतिमे 'कुञ्जविहार' नाटक एहन कृति अछि जे सर्वप्रथम प्रकाशित रूपमे सुधीसमाजक समक्ष आयल । 1976 इ.मे कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक पत्रिका, 'मनीषा' मे ई कृति डा. रामदेवझा द्वारा सम्पादित भऽ प्रकाशित भेल । विनिबन्धकारक अनुसार मूल प्रतिक आरम्भ आ अन्तमे स्पष्टतः एकर नाम 'कुञ्जविहार नाटक' देल गेल अछि तेँ एकरा 'कुञ्ज विहारी' नाटक कहब भ्रान्ति मात्र थिक ।

विनिबन्धकार स्थल-स्थलपर भ्रान्ति-निराकरण सेहो कयलनि अछि । कतेको विद्वान मुदित कुवलयाश्व नाटककेँ वंशमणि कृत निस्संकोच कहि दैत छथि जे हिनका दृष्टिएँ भ्रान्तिमूलक थिक । एहि प्रसंगमे हिनक तर्क छनि जे जगज्ज्योतिर्मल्ल अपन नाटकमे आत्मप्रशंसा दोषसँ बचबाक उद्देश्यसँ वंशमणि-रचित राजप्रशस्ति मूलक राजवर्णनागीत ओ नगरवर्णनागीतक समावेश भेल अछि । एहि आधारपर जगज्ज्योतिक नाट्य-कर्त्तृत्वपर सन्देह करब असंगत होयत ।

विनिबन्धकार एकसँ एक गवेषणा करैत छथि । सूत्रधार कहैछ– **'जे मोञे कहि अएलाहु' ..... एहि सम्वाद मे वंशमणि ओझाञे कयल' वाक्यपर ध्यान देल गेल किन्तु आगाँ कहल गेल वाक्य 'जे मोञे कहि अएलाहु' तथा बहुवचन बोधक सार्वनामिक विशेषण 'तन्हिहि'क प्रयोगक आशय बुझबाक प्रयत्न नहि कयल गेल...** एहि उक्तिसँ यैह निष्कर्ष बहराइछ जे अभिनेय नाटकक कथानक वंशमणिक एतद् विषयक कृतिपर आधृत अछि ।

विनिबन्धकार जगज्ज्योतिर्मल्लक गीतिकाव्यक पर्यालोचन समग्र रूपमे प्रस्तुत करैत छथि श‍ृङ्गार रसक एकसँ एक गीतमे जे मान ओ विरहक मार्मिक व्यञ्जना भेल अछि, युगक अधर्म-अनीतिक जे शब्द-चित्र उपस्थित कयल गेल अछि तकर चयनमे विनिबन्धकार विचक्षणता देखौलनि अछि ।

एहि विनिबन्धकेँ बेर बेर पढ़बाक इच्छा होइत रहैत छैक । विनिबन्धकारक मोनक पाछाँ सतत ई रहलनि अछि जे प्रतिपाद्य विषय-वस्तुकेँ तेना कऽ सैंती-साँठी जे सरसता ओ समरसता अक्षुण्ण रूपेँ सुलभ होइक, से अछिन्नरे भेटैत अछि । जहिना छप्पन प्रकारक भोग्य पदार्थ आगाँमे परसल रहने कोन कोणसँ श्रीगणेश कयल जाय से चट दऽ ओरिआइत नहि छैक तहिना एहि विनिबन्धमे मोनकलेल एकसँ एक सुस्वादु सामग्री सम्प्राप्त अछि ।

जँ भक्ति पक्षमे जाउ तँ हर गौरीक कौतुकमय विलासपूर्ण वागद्वन्द्वकेँ उद्धृत कऽ विनिबन्धकार गीतमे निहित नाट्य-धर्मिताक रसबोध करबैत छथि संगहि आनन्दाम्बुधिमे चुभकी लगयबाक सङोर कऽ दैत छथि ।

जगज्ज्योतिर्मल्लक नाटकक संवादमे मैथिली गद्यक पुष्कल प्रयोगक उल्लेख करैत विनिबन्धकार एहि तथ्यकेँ

Scanned by CamScanner

उजागर कऽ देलनि अछि जे हुनक प्राकृत पद्यक अर्थ वा टीका संस्कृत गद्यमे उपलब्ध अछि । मुदा संस्कृत गद्य-संवादक सन्निवेश नहि भेल अछि । अवश्ये नाटकक नाट्य-निर्देशमे संस्कृत गद्यक प्रयोग भेल अछि । विनिबन्धकार एक स्थलपर संस्कृत गद्य-वाक्यकेँ उद्धृत करैत स्पष्ट करऽ चाहैत छथि ई सब मैथिली गद्यक वाक्य-विन्यासक अनुसरण करैछ ।

नीकसँ नीक अभिव्यक्तिलेल जतऽ जेहन भाषा-शैलीक आवश्यकता भेलनि अछि लेखक ततऽ तेहने वाक्यक प्रयोग कयलनि अछि यथा– **गम्भीर विचार ओ भाव सूक्ष्म अनुभूति ओ कल्पनाक नव नवोन्मेष, जीवनक यथार्थताक विशद अनुभव, अलंकार-विच्छित्ति, छन्द ओ राग-तालक समन्विति, भाषाक प्राञ्जलता इत्यादिसँ समृद्ध हुनकर काव्य-संसार यशस्विताक एक एहन शिखरपर स्थापित कऽ देने छनि जे प्राचीन साहित्य-परम्परामे अतुलनीय अछि ।**

'कुञ्जविहार नाटक'क रचनाक निश्चित काल अप्राप्त रहने विनिबन्धकार अपन ठोस तर्कसँ ओकरा ठमबैत छथि, यथा– **ख्यातं चारु मदालसा परिणयं कुञ्जे विहारं हरे; एतावता षोडस गीतकेर रचना श्रावण शुक्ल पंचमी 1628 इ.मे सम्पन्न भेल छल अतः कुञ्जविहारक रचना 1628 इ.मे वा ओहिसँ किछु पूर्वे भेल होयत ।'**

कतेको एहनो स्थल द्रष्टव्य होइछ जाहिमे विनिबन्धकार अनुसन्धेय वस्तुक उल्लेख करैत छथि यथा– **अतः हमरा अनुमान अछि जे कुञ्ज विहार नाटकक ई प्रति नाटकक प्रथम वा द्वितीय प्रारूप थिक अथवा अभिनेता सभक उपयोगक प्रति थिक । एकर पूर्ण पल्लवित नाट्य-रूप सेहो अवश्य छल हैत जे सम्प्रति अनुसन्धेय अछि ।'**

जगज्ज्योतिक नाट्य-कृति 'षोडस गीतम्'केँ 'जगज्ज्योतिर्मल्लकृत दशावतार नृत्यम् ओ षोडस गीतम्' नामसँ प्रस्तुत विनिबन्धकार डा.रामदेवझा 1988 मे सम्पादित एवं प्रकाशित कयने छथि ।

विनिबन्धकारकेँ नाट्यशास्त्रक सेहो गहन आ गम्भीर अध्ययन छनि । हुनक मन्तव्य छनि जे– **मुदित कुवलयाश्वक 'अंक' नाट्यशास्त्रमे विहित अंकसँ भिन्न रूपक अछि । नेपालमे अधिकांश नाटक एहन अछि जकर अभिनय अनेक दिनमे सम्पन्न होइत छल, एक दिनमे नाट्यवस्तुक जतबा अंश सम्पन्न होइत छल, ओतबा अंशकेँ 'अंक' कहल जाइत छल........ इति प्रथम दिवसे, इति द्वितीय दिवसे....... इत्यादि ।**

जगज्ज्योतिर्मल्लक एहन बहुतो उक्ति छनि जे सार्वकालिक, सार्वभौम ओ सार्वजनीन छनि । विनिबन्धकार एहि बहुमूल्य पोथीक अन्तमे एहन कतिपय उक्तिकेँ संकलित कऽ राखि देलनि अछि जे जीवनोपयोगी सिद्ध होयत, संगहि कविक व्यक्तित्त्वकेँ परखवामे सेहो सहायक होयत, यथा– **अर्थक के नहि दासे, उतिमक एह सुभावे**

कनक संगे काचाओ तेज पाबे"
गुरुक कृपा बिन ज्ञान पाइअ से जन जनमक अन्ध"
"सुरसरि महिमा मीन न जान
देव सदन बस विहंग न ज्ञान"

नेपालक मल्ल राजवंशोद्भूत जगज्ज्योतिर्मल्ल महानतम मध्यकालीन मैथिली साहित्यकारमेसँ एक छलाह जिनका सम्बन्धमे मैथिली संसार अनभिज्ञे जकाँ छल । एहि अनभिज्ञताक निवारणमे ई विनिबन्ध सहयोगीक भूमिकाक नीक जकाँ निर्वाह कऽ रहल अछि । एतावता ई उत्कृष्ट विनिबन्ध मैथिली साहित्यकेँ एकटा प्रखर साहित्यिक स्तम्भसँ परिचित करबैत इतिहासमे एकटा नवीन अध्याय जोड़लक अछि ।

●

Scanned by CamScanner

जनार्दनझा 'जनसीदन' विनिबन्ध : एक विवेचन

श्रीरमाकान्तराय 'रमा'

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 'भारतीय साहित्यक निर्माता' शृंखला अन्तर्गत भारतक मान्य सभ भाषामे पुस्तक प्रकाशित होइत रहल अछि । मैथिली भाषामे सेहो एहि शृंखलाक अन्तर्गत अनेक साहित्य मनीषी, भाषा-साहित्यक उद्धारक, युग चेतनाक संवाहक शलाका पुरुष, सुप्रतिष्ठित लेखकलोकनिक जीवन गाथा अनुस्यूस भेल अछि । जनार्दन झा 'जनसीदन' एकटा एहने पुस्तक अछि जकर लेखक छथि डा.रामदेवझा ।

विवेच्य पुस्तक नओ शीर्षकमे फाँटि कऽ प्रस्तुत कयल गेल अछि- अवतरणिका, जीवनिका, साहित्य साधना, मैथिली साहित्यमे अवदान, उपन्यास, कथा, निबन्ध काव्य आ उपसंहार । जँ पुरोवचन आ परिशिष्टकेँ सेहो समेटि लेल जाय तँ एगारहटा शीर्षक होयत । एहि एगारहटा पद्म-पुष्पसँ जे माला बनाओल गेल छनि ताहिमे जनसीदनजीक सम्पूर्ण जीवनवृत्त, वृत्ति, कृति-स्मृति पूर्णतः जगजियार भऽ गेलनि अछि । डा. झाक लेखनक अनेक विशेषतामे एकटा इहो विरल गुण अछि जे हिनक लिखल एक्कोटा शब्द, वाक्य वा पाँती एहन नहि अछि जे वर्ण्य विषयसँ इतर होअय ।

पुरोवचनमे हुनक प्रारम्भिक जीवन, शिक्षा, वृत्ति आ साहित्य-सेवा, हुनक रुचि-अभिरुचि इत्यादिक अत्यन्त संक्षेपमे उल्लेखक संग अकादेमी द्वारा एहन महत्त्वपूर्ण व्यक्तिपर विनिबन्ध लिखबामे जाहि ग्रन्थ, पत्र-पत्रिका, लेखक-सम्पादकक कृतिक अध्ययन-अवलोकन कऽ उपयोग कयल गेल अछि, हुनका सभक प्रति आभार सेहो प्रकट कयल गेल अछि । मात्र अढ़ाइ पृष्टमे एतेक अधिक वस्तुक बीज रूपमे समावेशसँ ई स्पष्ट होइछ जे एहिमे लेखक अपन वर्ण्य विषयवस्तुकेँ स्पर्श करैत कृतज्ञता ज्ञापनक औपचारिकताकेँ पुस्तकक आरम्भमे रखलनि अछि ।

अवतरणिका शीर्षक दोसर पद्मपुष्पमे जनसीदनजीक जन्मकालक समयक, साहित्यिक-राजनैतिक स्थितिक नीक जकाँ आकलन करैत ओहि परिस्थितिमे अपन कृतिसँ समाजकेँ उपकृत कयनिहार महानुभावलोकनिक चर्च-वर्च करैत ओही क्रममे जनसीदनजीक आविर्भावक उल्लेख बड़ थोड़ शब्दमे कयलनि अछि ।

तेसर पुष्पक रूपमे **जीवनिका** शीर्षक अछि । एहि अध्यायमे हुनक जीवनवृत्तकेँ सोझ शब्दमे आरम्भ कऽ सामान्य जीवनसँ संघर्षशील एवं कर्ममय जीवनक नीक जकाँ दिग्दर्शन भेल अछि । जनसीदनजीक जीवनमे आजीविका आ कार्यक्षेत्र (अध्यापन-लेखन)मे नीक संयोग रहलनि अछि, ई एहि सम्पूर्ण अध्यायमे नीक जकाँ विवेचन कयल गेल अछि । ई अध्याय अपेक्षाकृत किछु पैघ अछि । कारण, एहिमे हुनक जीवनक अनेक महत्त्वपूर्ण आयाम सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक आ साहित्यिक तथ्य सभक नीक वर्णन-विश्लेषण कयल गेल अछि । एहि अध्यायमे हुनक आश्रयदाता, आजीविकाक साधन, साहित्यिक व्यक्तित्वक विकास आदि सम्पूर्ण घटना-उपघटनाक रोचक वृत्तान्त समाहित अछि, जे पढ़बाकाल कोनो उपन्यासक कथानक जकाँ पाठककेँ अपनामे आबद्ध कयने रहैत अछि ।

यद्यपि विवेच्य नायकक मैथिली भाषाक रचनासँ हिन्दी भाषाक रचना कम महत्त्वपूर्ण नहि बुझाइत अछि, मुदा अपन मातृभाषाकेँ ध्यानमे रखैत रामदेवबाबू हुनक राष्ट्रभाषा सेवाक समग्र चर्च करितो कनेक झूस करैत मातृभाषा सेवाकेँ अति महत्त्वपूर्ण बनौलनि अछि । ई काज हिनके सन लेखकसँ सम्भव छल ।

एहि ठाम एकटा आर गप्प विशेष ध्यान देबा योग्य अछि । जहिना प्रथम पुष्पक शीर्षक 'कृतज्ञता-ज्ञापन'क स्थानपर 'पुरोवचन' सन नीक, बोधगम्य मुदा अर्थ गाम्भीर्यवला शब्दक प्रयोग लेखक कयलनि अछि तहिना जन्मकाल,

Scanned by CamScanner

कुल-वंश वा अवतार नहि लिखि कऽ 'अवतरणिका' शब्दक प्रयोग दोसर शीर्षकक रूपमे कयने छथि । अवतार कोनो देवी-देवता की महापुरुषक होइत छनि आ जन्म जन-साधारणक । मुदा 'अनुक्रमिका' शब्दक अनुसरण करैत 'अवतरणिका' शब्दसँ ओहि दुनू शब्दक मध्यक अर्थ नीक जकाँ ध्वनित होइत अछि । तहिना जीवनी एवं तत्सम्बन्धी विशिष्टताक उल्लेख जाहि अध्यायमे भेल अछि 'जीवनिका' भेल । उपर्युक्त दुनू शब्दक प्रयोग एहि प्रकारेँ शीर्षकक रूपमे मैथिली साहित्यमे प्रथमे बेर भेल बुझाइत अछि ।

चारिम पुष्पक रूपमे अछि **साहित्य-साधना** । सर्जनात्मक वा अनुवाद साहित्यक निरन्तर लेखन जनार्दन झा 'जनसीदन'क व्यसन ओ व्यवसाय दुनू छलनि ।' एहि भावभूमिपर आधारित एहि अध्यायमे हुनक गद्य, पद्य, कथा, उपन्यास, निबन्ध जे मैथिली-हिन्दी दुनू भाषामे छनि, आदिक नीक जकाँ साहित्यिक मूल्यांकन कयल गेल अछि । हुनक साहित्य साधनाकेँ रामदेवबाबू तीन काल खण्डमे फाँटि कऽ ओकरा नीक जकाँ व्याख्यात कयलनि अछि ।

आरम्भसँ 1909 इ. धरि जनसीदनजीक साहित्य साधनाक प्रवृत्ति कालकेँ प्रथम कालखण्ड कहल गेल अछि । दोसर कालखण्ड 1910 सँ 1931 इ.केँ हिनक कृतिकाल वा उत्कर्षकाल मानल गेल अछि आ एहि उत्कर्षकालमे हुनक प्रवेश हिन्दीसँ मैथिली साहित्यमे भेल छलनि । 1933 इ.सँ 1951 इ. धरि हुनक जीवनक तेसर कालखण्ड अछि जाहिमे जनसीदनजी स्वान्तः सुखाय साहित्य सृजन करैत छलाह ।

एही अध्यायमे हुनक समग्र हिन्दीक प्रकाशित कृतिक (मूल एवं अनुवाद) संख्या 60-65 सँ अधिकक सूचना लेखक द्वारा देल गेल अछि जखन कि मातृभाषा मैथिलीमे मात्र आधा दर्जन पुस्तकाकार प्रकाशित रचनाक अतिरिक्त प्रभूत स्फूट प्रकाशित गद्य-पद्य रचनाक विवेचन एहि अध्यायमे विस्तारसँ भेल अछि ।

पाँचम पद्यपुष्पक रूपमे **मैथिली साहित्यमे अवदान** अछि । एहिमे हुनक मैथिली साहित्यमे प्रवेशक कारण, मैथिल समाजमे व्याप्त सामाजिक कुरीतिक विरोध, एकर तत्कालीन समाजपर प्रभाव आ महत्त्व आदिकेँ रेखांकित कयल गेल अछि । ई मैथिली साहित्यक अध्येताक लेल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि । एही अध्यायमे सुधारवादी विचारधारासँ जन-जनमे सुधारक महत्त्वाकांक्षी कामना लऽ सभ विधामे रचना करबाक विस्तारसँ चर्च अछि । तथापि एतेक तँ अवश्ये कहल जा सकैछ जे रामदेवबाबू एहि अध्यायमे हुनक अवदानपर एक विहंगम दृष्टि मात्र देलनि अछि जाहिसँ अगिला अध्याय सभक अध्ययन हेतु पाठक समुत्सुक होथि ।

सुधारवादी विचारधाराक पहिल आधुनिक मैथिली कथा लेखक जनार्दनझा 'जनसीदन'क मैथिली साहित्य सेवाक सांगोपांग अध्ययन हेतु एहि विनिबन्धक छठम पुष्प **उपन्यास**, सातमपुष्प **कथा**, आठम पुष्प **निबन्ध** आ नवम पुष्प **काव्य**मे ओहि सभ शीर्षकस्थ विधाक विस्तृत विवेचन कयल गेल अछि ।

उपन्यास शीर्षक अन्तर्गत हिनक पाँच गोट प्रकाशित उपन्यास **सती सर्वस्व, निर्दयी सासु, शशिकला, पुनर्विवाह** आ **द्विरागम रहस्य**पर गहन विवेचन-विश्लेषण कयल गेल अछि । हुनक उपन्यास रचनापर समग्रतामे विचार करैत पाँचो उपन्यासपर फराक-फराक वृहत् विवेचन भेल अछि । एहि अध्यायमे लेखक पाँचो उपन्यासक सार-संक्षेप सेहो तेहन रोचक शैलीमे लिखने छथि जे मूल उपन्यासक अध्ययन जकाँ मनलग्गूक संग-संग बुझबामे सहज बूझि पड़ैत अछि ।

जनसीदन जीक एकमात्र कथा **ताराक वैधव्य** प्रकाशित अछि । सन् 1917 इ. मे प्रकाशित ई कथा आधुनिक मैथिली कथा साहित्यक प्रथम कथा होयबाक गौरव प्राप्त कयने छल । एहि अध्यायमे एही कथापर गहन विवेचन-विश्लेषण खूब नीक जकाँ भेल अछि मुदा आब से तथ्यपूर्ण नहि रहल ।

निबन्ध शीर्षकमे ई दर्शाओल गेल अछि जे यद्यपि हिनक निबन्धक कोनो पुस्तक प्रकाशित नहि अछि मुदा पत्र-पत्रिकामे ओ प्रभूत निबन्ध लिखलनि आ विद्वत् समाजमे ओकर क्रिया-प्रतिक्रिया सेहो यदा-कदा होइत रहल छलैक ।

Scanned by CamScanner

काव्य विधामे सेहो जनसीदनजीक अधिकांश रचना पत्र-पत्रिकेमे छपल अछि मुदा **मैथिली नीति पद्यावली** एक मात्र हिनक प्रकाशित काव्य कृति अछि जे लोकमे नीति, सदाचार विषयक शिक्षा देवाक उद्देश्यसँ लिखल गेल छल आ प्रसिद्धि पौने छल ।

एहि सभक अध्ययनसँ जनसीदनजीक मैथिली सेवा आ सामाजिक पुन:निर्माण दिस लोकके आकृष्ट करयबा सन महान उद्देश्य दृष्टिगोचर होइछ ।

दशम पुष्प **उपसंहारमे** अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यक आधारपर रामदेवबाबू ई सिद्ध कयने छथि जे जनसीदनजीक कथा **ताराक वैधव्य** आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रथम मौलिक कथा थिक । एहि अध्यायमे एहि कथाक वृहत् समालोचना कयल गेल अछि, जाहिसँ बिनु कथा पढ़नहुँ एहि समालोचनाक अध्ययनसँ ओहि कथाक नीक जकाँ आस्वादन भऽ जाइछ । लेखक अपन विवेच्य लेखकक एहन अनमोल सुधारवादी, ऐतिहासिक आ रोचक कथाके सेहो एहि विनिबन्धक एगारहम पुष्प परिशिष्टमे दऽ कऽ बड़ उपकार कयलथिन अछि ।

सम्पूर्ण विनिबन्धक भाषा अत्यन्त सरल, सरस, सहज आलंकारिक आ जनसामान्यक हेतु नीक जकाँ बुझबा योग्य अछि ।

एतावता डा. रामदेवझाक विनिबन्ध 'जनार्दनझा 'जनसीदन' पढ़लासँ मात्र विवेच्य लेखकक जीवनवृत्त आ हुनक रचने दिस पाठकक ध्यान आकृष्ट नहि होइत अछि प्रत्युत् एकर अध्ययनसँ तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक एवं साहित्यिक गतिविधिक संग-संग आनन्द सेहो प्राप्त होइत अछि जे हुनक मूल रचना सभ पढ़ने भेटैत- किं बहुना !



Scanned by CamScanner

मैथिली लोकसाहित्यक आचार्य डा. रामदेवझा

प्रो. श्रीप्रफुल्लकुमारसिंह 'मौन'

मिथिला ओ मैथिलीक प्रतिष्ठित शोधप्रज्ञ डा. रामदेवझाक सृजित आ अनुशीलित साहित्य हुनक बहुआयामी व्यक्तित्त्वक दिशाबोधक अछि । ओना तँ हुनक लेखकीय व्यक्तित्त्व कविता, कथा, नाटक, आलोचना, सम्पादन आदि धरि विस्तृत छनि मुदा ओ जानल जाइत छथि प्रयोजनमूलक आलोचना, प्राचीन मैथिली साहित्यक अन्वेषी, परवर्त्ती नाटककार ओ लोकसाहित्यक प्रखर चिन्तकक रूपमे । जँ डा. झाक समस्त सारस्वत उपलब्धिक आकलन कयल जाय तँ हुनक मूल व्यक्तित्त्व आलोचना ओ लोकसाहित्यमे केन्द्रित छनि । हुनक लोकसाहित्यक शास्त्रीय अनुशीलनक आरम्भ सन् 1960 इ. मे भेल ।

एहि दृष्टिसँ डा. झाक लोकसाहित्य विषयक चिन्तनक आलेखित रूप अछि **मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य** (लहेरियासराय, दरभंगा, 2002 इ.) । आलोच्य पुस्तकक पूर्वार्द्धमे 'मैथिली लोकसाहित्यक स्वरूप' ओ उत्तरार्द्धमे 'मैथिली लोक साहित्यक सौन्दर्य' विवेचित अछि । परम्पराक प्रवाहमे सृजित मैथिली लोकसाहित्य अत्यन्त समृद्ध ओ वैविध्यपूर्ण अछि । भारतीय क्षेत्रमे सर्वप्रथम पाश्चात्य विद्वान लोकनि 'फोकलोर' क अध्ययनक क्रममे रायल एसियाटिक सोसाइटीक स्थापना 1784 इ.मे कयलनि । एकर पश्चात कर्नल टॉड (1829 इ.), जे. एवट (1854 इ.), सर रिचर्ड टेम्पुल (1866 इ.), चार्ल्स ई.ग्रोवर (1871 इ.), जार्ज ग्रियर्सन (1885 इ.), आदि एहि विषयक अध्ययनकेँ आगाँ बढ़ौलनि । हिन्दी जगतमे डा. सत्येन्द्र, डा. कृष्णदेव उपाध्याय, डा. श्याम परमार आदि एवं मैथिली जगतमे डा. जयकान्तमिश्र, डा. पूर्णानन्ददास, डा. ब्रजकिशोरवर्मा मणिपद्म, डा. अणिमासिंह, रामइकबालसिंह राकेश, डा. प्रफुल्लकुमारसिंह मौन, डा. रामदेवझा, डा. ताराकान्तमिश्र आदि अग्रणी बनि प्रतिष्ठित भेलाह ।

अंग्रेजी 'फोकलोर'क पर्याय लोकवृत्त, लोकवार्त्ता, लोकवाङमय, ओ लोकसाहित्यकेँ परिभाषित करैत डा. झा फोकलोरक मैथिली पर्यायक रूपमे लोकवृत्तकेँ अंगीकार कयलनि अछि । तदनुसार ओ लोकवृत्तक साहित्य पक्ष मैथिली लोकसाहित्यकेँ पाँच भागमे वर्गीकृत कऽ विवेचित कयने छथि- **लयात्मक, वाचनात्मक, कथनात्मक, अभिनयात्मक** ओ **अनुष्ठानात्मक**, जाहिमे मैथिली लोकसाहित्यक प्रायः सभटा विधा समटा जाइछ । **लयात्मक** लोकसाहित्यमे गाथा एवं संस्कार ओ ऋतुजनित लोकगीत अबैत अछि । **वाचनात्मक**मे लोकवचन (सूक्ति), लोकोक्ति ओ पिहानी परिगणित अछि । **कथनात्मक**मे लोककथा, **अभिनयात्मक**मे लोकनाट्य एवं **अनुष्ठानात्मक**मे लौकिक मन्त्र अबैत अछि । डा. झा द्वारा प्रतिपादित वाचनात्मक साहित्यमे लोकोक्तिक अन्तर्गत लौकिकन्यायक अवधारणा विशिष्ट अछि ।

स्वाधीनता प्राप्तिक बाद लोकसाहित्य दिस अनेक विद्वान ओ विदुषी, लोकनि प्रवृत्त भेलाह जाहिमे सर्वाधिक काज मैथिली लोकगीतक संकलन, वर्गीकृत अनुशीलनक संग प्रकाशनक जेना पथार लागि गेल । राम इकबालसिंह राकेश (मैथिली लोकगीत), डा. अणिमासिंह (मैथिली लोकगीत), प्रो. प्रफुल्लकुमारसिंह मौन (थारू लोकगीत, मैथिलीक नेनागीत), ब्रजेश्वर मल्लिक (कोशीगीत), कामेश्वरी देवी, विभूति आनन्द (संस्कारगीत) आदिक अलावा डा. तेजनारायण लाल (मैथिली लोकगीतों का अध्ययन 1962 इ.), डा ताराकान्तमिश्र (मैथिली लोकसाहित्य का अध्ययन 1985 इ.) आदिक अनुशीलन उल्लेखनीय अछि । डा. झा आलोच्य ग्रन्थमे मैथिली लोकगीतक वैदिक उत्स, बौद्धकालीन पद्चिह्न, इतिहासक पृष्ठमे मैथिली लोकगीत, ओकर वर्गीकरण, वैशिष्ट्य, गानपद्धति, प्रयुक्त लोकवाद्य, राग ओ भास, लोकसंगीत आदिकेँ परिभाषित कऽ मैथिली लोकगीतक शास्त्रीय स्वरूप एकटा कुशल आचार्य जकाँ ठाढ़

Scanned by CamScanner

करबामे समर्थ भेल छथि । एखन धरि मैथिली लोकगीतक भावभूमिए विवेचित होइत छल, डा. झा एकरा विशद् शास्त्रीय रूप देलनि अछि । डा. तेजनारायण लाल अन्यान्य जनपदीय लोकगीतक संगे 'मैथिली लोकगीतक तुलनात्मक विवेचन' (1962इ.) कयने छथि । डा. कविता कुमारी 'मिथिलाक परम्परित भासक विश्लेषणात्मक अध्ययन' (2002इ.) एवं डा. अंजना गांगुली 'पूर्णिया अंचलक लोकगीतक शास्त्रीय अध्ययन (1991इ.) प्रस्तुत कयने छथि जाहिसँ डा. झाक शास्त्रीय चिन्तनक सम्पुष्टि होइछ ।

मैथिलीक संस्कारगीत सबसँ बेसी समृद्ध अछि । जन्मसँ मृत्यु पर्यन्त सभटा संस्कार लोकगीतहिसँ आवेष्ठित अछि । विवाहमे तँ डेगे डेगे विध, आ डेगे डेगे गीतक विधान अछि । ज्योतिरीश्वर (वर्णरत्नाकर, चौदहम शताब्दी), विद्यापति, लोचन (रागतरंगिणी), आदि मैथिलीक परम्परित गीत-विधामे रचना कऽ ओकरा गौरवान्वित कयलनि । चाँचर (चाञ्चलि), लगनी (नगनी), वटगमनी, झूमरि, तिरहुत, नचारी, कमला-कोशी-गंगा आदिक लोकगीत अन्यान्य जनपदमे प्राय: दुर्लभ अछि । डा. झा सामगानसँ ग्रामराग (देशी) धरिक तारतम्यक विवेचन कयने छथि । एहिसँ मैथिली लोकगीतक गौरव ओ गरिमा बढ़ल अछि ।

डा. झा आलोच्य ग्रन्थमे मैथिली लोकगाथाक स्वरूप ठाढ़ करैत ओकर पारम्परिक अभिधान, विस्तारक परिगणन, वर्गीकरण, अन्त:भूमिक विवेचन, गाथाक नायक-नायिका आदिकेँ विस्तारसँ रेखांकित कयने छथि ।

डा. झाक अनुसार मैथिली लोकगाथा समृद्ध ओ विविधतापूर्ण अछि । 'वैलेड' शब्दक पर्यायवाची शब्दक रूपमे लोकगाथाक प्रयोग कयल जाइछ । लोकगाथा अपेक्षाकृत अधिक अर्थगर्भित अछि । मैथिली लोकगाथाक सन्दर्भमे सर्वप्रथम जार्ज ग्रियर्सन सलहेस, दीनाभद्री ओ गोपीचन गाथाकेँ प्रकाशमे अनलनि । मिथिलामे नायक-नायिका संगे गीत (लोरिककगीत, विहुलाकगीत आदि), लगनी (उतिमाक लगनी, जिरबाक लगनी आदि), सम्मर (सीता सम्मर, रुक्मिणी सम्मर आदि), पमारा (वीररसात्मक वृहत् कथानकवला गाथा- आल्हा-उदल, विजयमल, रइयारणपाल, आदि) एवं महराइ (लोरिकाइन), अभिधानसँ यद्यपि गेय गाथाक भान तँ होइछ, मुदा ओ लोकगाथाक समग्रता बोधक अभिधान नहि बनैत अछि ।

डा. जयकान्तमिश्र (इन्ट्रोडक्शन टू दी फोक लिटरेचर ऑफ मिथिला, प्रयाग, 1951 इ.), डा. पूर्णानन्ददास (मैथिली लोककाव्य, 1962 इ., अप्रकाशित शोध-प्रबन्ध), डा. योगानन्दझा (लोकजीवन ओ लोक साहित्य, लहेरियासराय), प्रो. प्रफुल्लकुमारसिंह मौन (राजा सलहेस : साहित्य और संस्कृति, मुजफ्फरपुर, 2003 इ.) डा. मणिपद्म (मैथिली लोकगाथाक इतिहास, कोलकाता, 2006 इ.), राजेश्वरझा (लोकगाथा विवेचन, पटना, 1974 इ.), डा. लक्ष्मीप्रसाद श्रीवास्तव (यदुवंशी लोकदेव लोरिक, दरभंगा 1989 इ.) आदिक अलावा अनेक अनुसन्धाता लोकनिक शोधानुशीलन अप्रकाशित छनि । डा. झा मैथिली लोकगाथाक संख्या-बहत्तरि कहने छथि । एहि सन्दर्भमे हिनक स्पष्ट मत छनि जे कैकटा मूलगाथा अलग-अलग खण्ड नामसँ परिगणित भेल अछि । उदाहरणार्थ मीरा, मीरायण, मीराबालापीर, नूजागढ़ एवं सतीमाँजरि एकहि लोकगाथा थीक । छेछनमल, मनसाराम ओ लुकेसरी एकहि गाथाक नाम थिक । वंशीधरवाभन ओ श्यामसिंह, रइयारणपाल ओ घुघली घटमा, फेकूराम ओ दयाराम, केवलसिंह ओ अमरसिंहक गाथा आदि जनसमाजमे भिन्न-भिन्न नामे लोकप्रचलित रहितो मूलत: एकहि गाथाक खण्डित नाम थिक । डा. झाक मंथनसँ निकालल गेल निष्कर्षसँ मैथिली लोकगाथाक अध्येता लोकनिक भ्रम निवारण होइत छनि ।

डा. झा सेहो लोकगाथाक प्रामाणिक ओ सम्पादित पाठक आवश्यकता जनौलनि अछि । हुनका अनुसारेँ जा धरि मूलगाथाक प्रकाशन नहि होइत अछि ता धरि समस्त विवेचनकेँ विश्वसनीय नहि कहल जा सकैछ । मैथिली लोकगाथाक क्षेत्र घटना बहुल ओ नायक प्रधान भेने एहिमे वीर, शृंगार, करुणाक संग चमत्कार देखना जाइछ । चमत्कारसँ तात्पर्य दैवी कृत्यसँ अछि किएक तँ नायक-नायिका देवत्व मंडित भऽ ग्राम्य गह्वरमे पुजाइत छथि । मैथिली लोकगाथाक सुमिरन, भगैत ओ बन्हाओन (दिक्पति वन्दना) महत्त्वपूर्ण अछि । ई लोकगाथा मिथिलाक भाषा, साहित्यक सामर्थ्य,

Scanned by CamScanner

समाजक अतीतकालीन स्वरूप, जीवन-दर्शन, आचार-विचार, माटि-पानि, वाद्यवादन, राग-भास, लोकानुरंजन, नाटकीय तत्त्वक सम्भावना आदिक परम्परित स्वरूपक अक्षयकोश बनल अछि ।

कथा कहबाक उत्साह ओ सुनबाक औत्सुक्य मनुष्यक सहज प्रवृत्ति मानल जाइछ । आदिये कालसँ लोककथाक परम्परा जन-जीवनकेँ अनुप्राणित करैत अछि । सांस्कृतिक मिथिलामे विपुल संकलनक उपरान्तो असंख्य लोककथाक वन-उपवन पल्लवित-पुष्पित अछि । विशेष अध्ययन-अनुशीलनक दृष्टिसँ डा. जयकान्तमिश्र आठ ओ डा. अणिमासिंह एकरा चारि भागमे वर्गीकृत कयने छथि, मुदा डा. झा लोककथाकेँ दस खण्डमे विभाजित कयने छथि- **रम्यकथा, धार्मिक कथा, उपदेशात्मक, हास्यव्यंग्य, भूत-डाइनिक कथा, बालकथा, ऐतिह्य, लोकश्रुति, गाथा-कथा** ओ **पिहानी कथा** । हुनक **इजोतीरानी** (1967 इ.) रम्यकथामे अबैत अछि । धार्मिक कथामे व्रतकथा अबैत अछि तँ लोकदेवी-देवता, पौराणिकी ओ मिथक सेहो अबैत अछि । उपदेशात्मक कथाक रचना सोद्येश्य भेल अछि । हास्य-व्यंग्य कथामे गोनूझा आदिक कथा अबैछ । भूत कथामे रहस्य-रोमांच रहैछ । बालकथाक रचना बालमनोविज्ञानक अनुरूपेँ सहज भेल अछि। ऐतिह्य कथामे जनपदीय इतिहासक कथा एवं लोकश्रुतिमे दुहवी-सुहवी, हराही आदि पोखरिक, गाथाक गद्यात्मक रूप गाथाकथामे एवं पिहानीमे औत्सुक्य देखना जाइछ । ई वर्गीकरण डा. झा लोककथाक सामान्य प्रकृति, प्रवृत्ति ओ लक्षणकेँ देखि कयलनि अछि । डा. झाक उद्देश्य लोककथाक शास्त्रीय स्वरूप ठाढ़ करबाक छल, जाहिमे ओ सफल भेलाह अछि ।

डा. झा लोकोक्ति ओ लोकवचनकेँ भिन्न मानि लोकवचनकेँ लोकसूक्ति कहने छथि । लोकवचनमे नीति, अनुभूति, उपदेश-निदेश, विधि-निषेध, वर्जना-तर्जना एवं कर्त्तव्याकर्त्तव्यक भाव व्यंजित रहैत अछि । मैथिलीक लोकवचनमे डाक, घाघ, भड्डरी, खानिखाना, व्यास आदिक वचन शास्त्रीय निदेश जकाँ बनि गेल अछि । 'मैथिल डाक' (पं. जीवानन्दठाकुर, 1950 इ.), जिज्ञासा (राँटी, मधुबनी, 1995 इ.) आदिमे संकलित ओ विवेचित कृषि, ऋतु, ज्योतिष, गुहस्थी, लोकाचारादि विषयक लोकवचनक अनुशीलसँ प्रतिभासित होइत अछि जे डाकवचन ग्राम्यजीवनकेँ अनुशासित करऽवला लोकशास्त्र थिक । डा. झा चर्चित स्रोते धरि बान्हल नहि रहि **बुद्धिप्रदीपम्** सन पाण्डुलिपिक अन्तः साक्ष्यकेँ सेहो उद्धृत कऽ पोथीकेँ प्रामाणिक ओ उपादेय बना देने छथि । हुनक दृष्टि सतत अनुसन्धानमूलक ओ लेखनक विषय विस्तार दिस छनि । ओ मैथिली लोकवचनक समाजशास्त्रीय, काव्यशास्त्रीय ओ भाषाशास्त्रीय अध्ययनक दिशामे अनुसन्धित्सु लोकनिकेँ अग्रसर होयबाक निदेश देने छथि ।

एहिसँ किंचित भिन्न लोकानुभवजन्य ज्ञानक सूत्रात्मक अभिव्यक्तिकेँ लोकोक्ति कहल जाइछ । कहबी, फकड़ा ओ लौकिक न्याय लोकोक्तिक वृत्तमे परिगणित अछि । लोकोक्ति प्रायः छन्दबद्ध वा गद्यात्मक सेहो होइछ । ओ अपन लघु आकारोमे बहुत किछु कहि देबाक सामर्थ्य रखैत अछि । किछु कहबी व्यक्तिवाची (विद्यापति, गोनूझा आदि) होइछ । फकड़ामे व्यंग्य, कटाक्ष, उपहासादिक अभिव्यक्ति भेल रहैत अछि । तहिना लौकिक न्याय प्रायः संज्ञा, विशेषण, उपमान आदिक रूपमे देखना जाइछ । यथा अगिया वैताल, इनारक बेंग, कुकुरा कटाउझि आदि । मैथिली कहबीक आरम्भिक संकलन डा. जार्ज ग्रियर्सन (1880-81इ.) कयने छलाह । मैथिली लोकसाहित्यक विभिन्न विधाक प्रथम प्रस्तुतिक श्रेय ग्रियर्सनकेँ छनि । डा. जयकान्तमिश्रक अध्ययनक आधार ग्रियर्सनहि छथिन ।

एवं प्रकारेँ डा. रामदेवझाक शोधदृष्टि अद्‌भुत छनि । मैथिली लोकसाहित्यक शास्त्रीय स्वरूप गढ़बाक हेतु एकटा गम्भीर आचार्यक गरिमाक निर्वाह कयलनि अछि, जे अन्यान्य लोकसाहित्यक अध्येतामे दुर्लभ छनि ।

जँ हिमालयक प्राकृतिक सुषमा, पादप्रदेशक मिथिलामे सतत प्रवाहित कमला-कोशी ओ गंगा-गंडकी आदिक किलोल, हरिअर वन-प्रान्तर, गामघर ओ खेत-खरिहानक सुख-समृद्धि, शील-शक्ति ओ सौन्दर्यसँ सम्पन्न नायक-नायिका, शौर्य-पराक्रमक भावभूमिमे वीर, श्रृंगार ओ करुणाक अन्तःसलिला सरस्वती, मुक्ताकाशमे उधियाइत तरुण मेघक पावसी

Scanned by CamScanner

मलार, उत्तरक हिमहवा ओ दक्षिणक गहूम-गुलाबक सुगन्धिकेँ समेटि कऽ लोककण्ठकेँ समर्पित कऽ देल जाय तँ ओहिसँ स्पन्दित स्वर होइतैक मैथिली लोककाव्यक ।

डा. रामदेवझा विरचित **मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य** (2002 इ.)क उत्तरार्द्धमे संग्रहीत पन्द्रहटा आलेख सभमे यद्यपि किछु केँ छोड़ि अधिकांशमे प्रकृतिक संग मानवीय गतिविधिकेँ सूत्रवद्ध कयल गेल अछि । नैसर्गिक प्रकृति ओ मानवीय प्रकृतिक तालमेल मैथिली लोकसाहित्यमे नीक जकाँ भेल अछि । लोकसाहित्यक 'स्वरूप'पक्षमे डा. झाक पाण्डित्य प्रबल छनि, एवं 'सौन्दर्य'मे लेखकक सौन्दर्य दृष्टि अभिव्यंजित भेलनि अछि । एहि सामयिक निबन्ध सभकेँ ललित निबन्ध कहब अधिक उपयुक्त होयत । अधिकांश ललित निबन्ध 'मिथिला मिहिर' (पटना) ओ 'स्वदेश (दरभंगा) मे 1960-1962 इ.क बीच प्रकाशित अछि ।

बरिसू हे मेघराजा ! मे ग्रीष्मातपसँ जरैत धरतीक पियास मेटयबाक हेतु मेघकेँ आमन्त्रित कयल जाइछ 'जट-जटिन' सन नृत्यनाट्य गीतहिसँ नहि, अपितु वर्षाजलसँ पुलकित 'हर-कोदारि चलबैत हरवाह, बीहनि उखारैत खेतिहर, बीया रोपैत कृषक, गाय-महीँस चरबैत चरवाह, सब जेना एहि जीवन रसमे सरावोर भऽ जाइत अछि ।' ओ वर्षामे भिजैत राम-जानकीक प्रति अपन करुणा निवेदित करैत अछि-'कहुँ भीजैत होयताह भगवान, प्रेमरस बुनियामे । ...बारहमासाक- प्रथम मास अषाढ़ हे सखि साजि चलल जलधार यो' मे गत्यात्मक सौन्दर्यक अभिव्यक्ति भेल अछि ।

नैया लगा दे झिनमापुरके घाटमे सात बहिन कमलाक दुलरुआ मलाहक प्रतिनिधित्व करैत अछि कोइलावीर । कोइला सन कारी आ पहाड़ा सन विशाल देह । एहि भौतिक सौन्दर्यक प्रति (कोइलावीर) कमला आश्वस्त छलीह । मिथिला नदी बहुल जनपद अछि जकर गर्भमे सन्तरित नावक माँङि सोना ओ करुआरि चानीसँ मढ़यबाक परिकल्पना सौन्दर्य बोधक थिक ।

आयल शरद् सोहाओन मासेमे नील निर्मल आकाशमे नितराइत इजोरियाक आंगनमे शारदीया लक्ष्मीक स्वागत, शरद सुन्दरीक श्रृंगार, दीपोत्सव, सामाचकेवाक लोकक्रीड़ा, आदिक संग आसिन-कातिकक असीम शोभा ओ अशेष ऐश्वर्य सभ ठाम इजोरियाक धवलताकेँ प्रतीकित करैत अछि- श्वेतवस्त्रा शरदसुन्दरी, कास, भेंट ओ सिंगरहारक श्वेत पुष्प, ओकर सौन्दर्यकेँ द्विगुणित कऽ दैत अछि ।

विहुँसलि बसुधा फागुन मासेमे वासन्ती सिहकी पाबि तन-मन तरंगित भऽ जाइछ । गामक गली-गली ओ चौपालमे कखनो जोगिनीक संग जगदम्बा, कखनो राजमहलमे होरी खेलाइत राम-जानकी, कखनो ब्रजमंडलक रसिया कृष्णक संग होरी खेलाइत गोपी सभ ओ कखनो आक-धतुरक निशाँमे बौराइत शिव अपन गणक संगे । वासन्ती रसवृष्टिमे वयसक सीमा टुटि जाइछ । **रंगरस मातल फगुआ** एहि क्रमक एकटा पूरक रचना थिक । ई दुनू निबन्ध रिपोर्ताजक श्रेणीमे आबि जाइत अछि ।

फूल कचनार भकरार भेलइ हे, तुइल महु डारि ओ **नील तीसी फूल**मे डा. झाक सूक्ष्म सौन्दर्य दृष्टि देखना जाइछ । ग्राम वाला जँ अपन जूड़ामे कचनारक फूल खोंसि लैत अछि अथवा तीसीक नील फूलसँ खोपाकेँ सजा लैत अछि तँ मिथिलाक स्वप्नसुन्दरीक अवतरण सौन्दर्य द्रष्टाक नजरिमे प्रतिविम्बित भऽ जाइछ । मैथिली लोकगीतक आंगनमे जखन चैत मासक आगमन होइछ तँ मजरल आम फुलायल कचनारक चहुँदिस दर्शन होइछ । कचनारक फूल जेना सौन्दर्यप्रिय मनुष्यकेँ अपना दिस अनेरो आकर्षित कऽ लैत अछि । आम-महुआ वृक्ष युगलक विवाह वस्तुतः विवाह विधिक पूर्वाभास थिक । चैत मासक रोमांटिक परिवेशमे महुआक मादक सुवास लैत चैतावर गबैत रहु- 'अमुआ फुलायल महुआ फुलायल, फुलायल मलियाक बगिया हो रामा !

प्रकृतिक दुलरैतिन : नागवल्ली अर्थात मिथिलाक जीवन पान, माँछ ओ मखानमय बनल अछि । नागवल्लीक रसिक मिथिलाक लोक कतेक स्नेह ओ विन्याससँ ओकरा अंगीकार करैत अछि । पान तँ थिक मुखक शोभा । मैथिली

Scanned by CamScanner

लोकगीतमे तन्वंगी नायिकाक लेल 'पानहुसँ पातरि मोर धनी' पान पतैलीक, मुख शोभय पान ओ पाकल बीड़ा पानक अपन-अपन महात्म्य छैक । डा. झा पानकेँ नागवंशी चौरसिया लोकनिक अवदान मानैत छथि । सिद्धि-साधना हो, प्रेम व्यापार हो, कोनो काजक बीड़ा उठयबाक हो, पानक अनिवार्यता बनल रहैछ ।

काँचहि बाँसक एहो नव कोबर- कोहबरक परिवेश कलामण्डित होइछ । एक संगे वर-वधूक एकान्त मिलन कक्षकेँ कामोत्फुरनक कलामय संसार कहल गेल अछि । वंश वृक्ष, पुरइन, नैनायोगिन, पुरहर-पातिल, शिव-पार्वती आदिक प्रतीकात्मक परिवेश, मालिन बेटीक क्रिया-कलाप आदिक सुन्दर अभिव्यक्ति भेल रहैत अछि । भेल विवाह राम चलु कोबर, धिया लेल अँगुरी लगाय 'मिथिला लोकचित्रकलामे ई प्रसंग अभिव्यंजित भऽ सौन्दर्यक एकटा प्रतिमानक सृजन कयलक अछि ।

अँचरा सितल बसात एकटा लगनीक भावगर्भित गीतिकथामे शील जनित सौन्दर्यक आगाँ भैंसुरक कामोत्तेजना दहि जाइत अछि । **उतिमा खिरलि पताल**क भावभूमि मिथिलाक अलावा, अन्यहु जनपदमे नाम भिन्नताक संग समान भावभूमिपर चित्रित देखल जाइत अछि । एहू निबन्धमे शीलक रक्षा हेतु आत्म बलिदानक प्रेरणा भेटैत अछि । मिथिलाक पश्चिममे यैह गीत भगवतीक ओ मिरजाक नामे अनुगूंजित अछि । पंजाबमे 'मानो गुजरी'क नामे ई लोकप्रचलित अछि ।

आलोच्य प्रस्तकक उत्तरार्द्धमे **मिथिलाक लोकगाथा : दीना-भद्री, मिथिलाक लोकगाथा : लोरिक** एवं **मैथिली लोककथाक नायक : धूर्तराज गोनूझा**मे डा. झाक सौन्दर्य दृष्टिक अपेक्षा शोधपरक दृष्टिक प्रभाव अधिक अछि । 'दह सए करुणा करैए हंस चकेबा, दीना-भद्री लए करुणा करैए निरसी माय' । दीना-भद्री मुसहर जातिक पराक्रमी व्यक्तित्व छल । मैथिली गाथा लोरिकाइन सम्पूर्ण उत्तरभारतमे लोकप्रिय बनल अछि । सातकाण्ड रामायण तँ सोड़ह काण्ड लोरिकाइन' । लोरिक गाथामे गंगा सन पवित्र माँजरि ओ यमुना सन परकीया नायिका चनैनक चरितांकनमे जे सौन्दर्य दृष्टिक अभिव्यंजना भेल अछि, ओकरा मणिपद्म अपेक्षाकृत अधिक ग्लोरिफाइ कयने छथि । धूर्तराज गोनूझा जनजीवनमे एकटा मिथक बनि गेल छथि, अपन प्रत्युत्पन्नमतित्व एवं हास्य-व्यंग्यक कारणे । जेहने लोकप्रसिद्धि तेहने लोकानुरंजन ।

डा. रामदेवझा कथा, नाटक, अनुसन्धान-आलोचना, अनुवाद ओ सम्पादनक अतिरिक्त लोकसाहित्य विषयक शास्त्रीय विवेचन एवं लोकसाहित्यमे निहित सौन्दर्य दृष्टिक आवलन कऽ मैथिली लोकसाहित्यमे एकटा सारस्वत शास्त्रीय अवदान देलनि अछि, जाहिसँ साहित्य जगत उपकृत रहत ।

●

Scanned by CamScanner

मैथिली लोकवृत्तक पाणिनि डा. रामदेवझा

डा. श्रीशोभाकान्तझा

भारतीय लोकसाहित्य जकाँ मैथिलीमे सेहो लोकसाहित्यक समृद्ध परम्परा पाओल जाइछ । आन कोनो भारतीय भाषाक अपेक्षा मैथिली लोकसाहित्यक भंडार अपेक्षाकृत अधिके अछि, न्यून नहि । प्रो. रामदेवझाजी एहि समृद्ध लोक साहित्यक समीक्षक छथि आ रुचि – रससम्पन्न साहित्यकार सेहो । ई बात हम भावुकतावश नहि कहल अछि । हिनक विवेच्य पुस्तक 'मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौदर्न्य'क अवलोकन कयलाक बाद अपन मन्तव्य प्रकट कयल अछि । ई आग्रहो नहि अछि जे हमर मन्तव्यसँ आनो पाठक सहमते होथि । सहमति ओ असहमति पाठकक दृष्टि, रुचि ओ संस्कारपर निर्भर करैत अछि ।

पुस्तकमे संग्रहित आलेखमेसँ कोनो आलेख 1960–62क अछि तँ कोनो 1978–82क, अर्थात् लेखकक अदौसँ एहन रुचि–रस रहलनि अछि जे ओ लोकवृत्तमे रमैत रहलाह अछि । दाइ–माइसँ लोकगीत, लोककथा आ लोकवचन आदिकेँ लिपिबद्ध करैत रहलाह अछि, तेँ 'तब अति रहेऊँ अचेत' अवस्थाकेँ पार कऽ ओ मैथिली लोकसाहित्यक अधिकृत सन्दर्भ बनि गेलाह अछि । बहुत गम्भीर अध्ययन आ चिन्तन–मननक संग हुनक ई पुस्तक लिखल गेल अछि । सोझरायल दृष्टिक संग लोकसाहित्यक विवेचन कयल गेल अछि । मैथिली लोकसाहित्यक परम्परा बहुत पुरान अछि । कारण लोकसाहित्य वाचिक अथवा श्रुति–स्मृति परम्पराक धरोहर होइछ आ कोनो भाषाक मौखिक रूप ओकर लिखित रूपक अपेक्षा बहुत प्राचीन होइछ, खाँटी होइछ, नदी–प्रवाही होइछ । हजारो वर्षक लोकजीवनक भोगल–सोचल, नीक–बेजाय, संस्कृति–संस्कार, लोक–व्यवहार, आशा–निराशा आदि–अनादि सबहक अकृत्रिम एवं अलिखित रूपकेँ समेटि कऽ लोकवृत्त लोक जकाँ सबूझ–अबूझ होइत अछि । ओकर विवेचन विशिष्ट मेधा, अथोड़ परिश्रम आ विशिष्ट भाषा क्षमताक माँग करैत छैक । डा. झा एहि अर्थमे अगुआयल लोक छथि । आउ हुनक लोक साहित्यक सौन्दर्यक थोड़–बहुत आस्वाद लेल जाय ।

पुस्तकक भूमिका **सुभे हे सुभे !** शीर्षकसँ आरम्भ होइत अछि जे मिथिला लोक संस्कृतिक प्रथम परिचिति अछि–श्रुति जकाँ पवित्र, मांगलिक आराधनाक आरम्भिकी । ई आरम्भिकी कहैत अछि जे– **अधिकांश व्यक्ति विशेषतः एम्हरे–ओम्हरसँ सूचना सामग्री लोढ़ि–बटोरि कऽ अपन विद्वत्तापूर्ण आलेख तैयार कऽ लैत छथि... एहनमे प्रतिपादित विचार, निष्पन्न सिद्धान्त ओ निष्कर्ष केहन वायवीय होयत से सहजे अनुमेय ।** (पृ.–3) डा. रामदेवबाबू एहि वायवीयतासँ बचबाकलेल ओ लोकरसमे मगन होयबाकलेल लोकसाहित्यक खेत–खरिहान, परती–पराँतक जमीनी समीक्षक छथि । सड़क–पाँतर, चौर–चाँचर, खुरपेरिया सभहक पथिक, अन्वेषी राही छथि । तेँ हुनक विवेचन लोकसाहित्य समीक्षामे किछु ने किछु नव बातकेँ रेखांकित करैत अछि । गओले गीतकेँ नहि गबैत अछि । लोकसाहित्यक लेल 'लोकवृत्त' शब्दक सटीकता एहने रेखांकन अछि । डा. विद्यानिवासमिश्रक मन्तव्य छनि जे– **लोकसाहित्यक सम्बन्धमे निर्भ्रान्त ओ तटस्थ विवेचनक दिशि बहुत कम लोकक ध्यान छनि ।** ई बात मैथिलियोक सन्दर्भमे कहल जा सकैछ परन्तु एहि पुस्तकक सम्बन्धमे नहि । तकर कारण ई जे विद्वान समीक्षक आ रसिक साहित्यकार डा. रामदेवझा बहुतो भाषाक लोकसाहित्य विषयक विवेचन अध्ययन–मनन कयलाक बादे एहिपर कलम उठौलनि अछि । मैथिली लोकजीवनमे रसि–बसि कऽ निर्भ्रान्त समीक्षाक प्रयास कयलनि अछि । तखन कोनो प्रयासकेँ अन्तिमो नहि मानल जा सकैछ ।

लेखक भूमिकामे लिखैत छथि– **अन्यान्य भारतीय भाषामे भेल लोकसाहित्य सम्बन्धी अनुसन्धान विषयक ग्रन्थ सबसँ मैथिलीयो लोकवृत्त, लोकसाहित्य ओ लोकगीतक सम्बन्धमे चिन्तन करबाक प्रेरणा भेटल ।'** (पृ.–4)

Scanned by CamScanner

पुस्तकक प्रथम खंडमे मैथिली लोकसाहित्यक स्वरूपक विवेचन कयल गेल अछि। एहि विश्लेषणमे कतिपय तथ्य उल्लेखनीय अछि यथा- **पुराणक बहुतो व्रत, व्रत महात्म्य ओ व्रतकथा सब वास्तवमे लोकवाङ्मयेक सुसंस्कृत रूप थीक।'** (पृ.-9)

दोसर तथ्य 'फोकलोरक' पर्याय 'लोकवृत्त' विशेष सटीक थीक। एहि शब्दक व्युत्पत्ति ओ अर्थव्यापकताक निर्धारण संस्कृतक आधारपर कयल गेल अछि- 'लोके-वेदे च' तथा 'लोकवृत्तानुकरणं नाटकम्' 'लोकवृत्त अयं लोक:' आदि-आदि। लेखकक निष्कर्ष छनि- **शिष्ट जनसमुदायक आचार-विचारसँ असम्पृक्त समान्य जनक परम्परा, मानसिकता, अनुश्रुति, रूढ़ि, विश्वास, आचार-व्यवहार, पाबनि-तिहार, क्रीड़ा-मनोरंजन, गीत-नृत्यक अलेखबद्ध पारम्परिक उपादान समुच्चयकेँ 'लोकवृत्त' कहब सर्वथा उपयुक्त अछि।** (पृ. 13)

एहि सन्दर्भमे ई बात सेहो ध्यान रखबा योग्य थीक जे लोकवृत्त अथवा लोकसाहित्य भने अनेक रूढ़ि, ग्राम्यजनक सामान्य विश्वास, सोच आदिसँ जुड़ल अपरिष्कृत साहित्य किएक ने होअय, परन्तु ओकर महत्ता वा मान वेदे सदृश रहल अछि। बहुत ठाम तँ जनश्रुतिकेँ प्रमाण जकाँ मानल जाइत अछि। डा. नरेन्द्रझा विवेचन करैत कहैत छथि जे- **भारतीय वाङ्मयक अन्तर्गत ऋग्वेदमे जतऽ शिष्ट संस्कृतिक आकलन भेल अछि ओतहि अथर्वेदमे लोकसंस्कृतिक विविध पक्षक प्रकाशन सम्भव भेल अछि। लोकानुभवहिसँ मनुष्य सब किछु जानि पबैत अछि। वेद व्यास महाभारतक आदिपर्वमे कहने छथि- प्रत्यक्षदर्शी लोकानां समदर्शी भवेन्नरः।** (लोकसाहित्य, पृष्ठभूमि, परम्परा, परिभाषा एवं प्रभेद)।

मैथिली लोकसाहित्यक भेद-प्रभेद करैत प्रो. रामदेवझा प्रौढ़वर्गक तथा बालवर्गक लोकसाहित्यक दू मुख्य भेल कयलनि अछि। प्रौढ़ वर्गक लोकसाहित्यकेँ पुनः लयात्मक, वाचनात्मक, कथात्मक, अभिनयात्मक ओ अनुष्ठानात्मक भेद करैत, अनेक प्रभेद कयलनि अछि। यथा- लयात्मकक दू भेद -लोकगाथा आ लोकगीत। वाचनात्मकक तीन प्रभेद- लोकवचन, लोकोक्ति तथा पिहानी। कथात्मकक-लोककथा। अभिनयात्मकक-लोकनाट्य ओ लोकनृत्य, अनुष्ठानात्मकक लोकमन्त्र। लोकमन्त्रमे आचार, उपचार आ अभिचार मन्त्र परिगणित भेल अछि। पुनः एक-एक भेद-प्रभेदक स्वरूपकेँ बहुत फरिछा-फरिछा कऽ विवेचन कयल गेल अछि। एहि विवेचन सभमे सेहो लोकसाहित्यक सौन्दर्य पक्ष उजागर भेल अछि।

लोकसाहित्क सौन्दर्यपक्ष

डा. रामदेवझा ललित वा व्यक्ति व्यंजक निबन्धक रससिद्ध साहित्यकार छथि। ई बात निःसंकोच स्वीकार कयल जयबाक चाही। ललित निबन्धकारक हेतु जे स्वभाव-संस्कार चाही, जे भाव प्रवणता आ नियन्त्रण चाही से सभ आधारभूत अर्हता हुनक साहित्यकारक लग उपलब्ध छनि। एहि अर्हता सभमे मिथिलाक रसमयी आंचलिकताक अभिव्यक्ति हुनक निबन्धमे स्पष्ट रूपेँ देखल जा सकैछ। हुनक सोचबाक तथा अनुभव करबाक अपन स्वाधीन ढंग छनि। जाहि उन्मुक्त संवेदना आ सहज भाव प्रवणतासँ ओ साहित्यकेँ पढ़ैत छथि ताही तरहक उन्मुक्तताक संग ओ अपन जीवनानुभवकेँ सेहो व्यक्त करैत। एहि सब तत्त्वक सन्निवेश हुनक निबन्धमे भेल अछि।

पहिल तँ एहि संग्रहमे संग्रहित **बरिसू हे मेघ राजा, बिहुँसलि वसुधा फागुन मासे, रंग-रस मातल फगुआ, अँचरा सितल बसात, काँचहि बाँसक एहो नव कोबर'** आदि-आदि निबन्ध अपन शीर्षकेसँ लालित्यक बोध करबैछ। एहि आलेखक भीतर लोकसंस्कृतिक विराट झाँकी लोकसाहित्यक प्रकृतिक अनुरूपेँ देल गेल अछि। कृषकक हर्ष, उमड़ल घटाक संग उमड़ल नदी-धार, बरहमासाक बहार, वर्षा विषयक कहबी आदिकेँ एक संग खीरमे किसमिस जकाँ तेना ने प्रस्तुत कयल गेल अछि जे मोनकेँ मुग्ध कऽ दैत अछि।

नैया लगा दे झिनमापुरके घाट निबन्धमे मलाह जातिक जीवनक आ नदी मातृक सभ्यताक छूबऽवला चित्रण सहज शैलीमे भे अछि- **जाहि देशमे नदीक प्राचुर्य रहैछ, जतऽकेर माटि नदीक पानिसँ सदिखन शीतल बनल रहैछ,**

Scanned by CamScanner

जतऽकेर खेतमे नदीक पानि सालेसाल जीवन रस ढारल करैछ, ओतऽकेर भाषामे, लोक विश्वासमे ओ लोक-काव्यमे नदी आ नदीक पुत्रकेँ महत्त्वपूर्ण स्थान भेटब स्वभाविके अछि ।

एहि तरहेँ **आयल शरद सोहाओन मासे**मे शरद ऋतुक सौन्दर्य, पावनि-तिहार आ जनजीवनक अनेको राग-मनुहारकेँ रचनाकार समेकित रूपमे प्रस्तुत कऽ 'साहित्य' शब्दक व्याख्या मानू रचनाधर्मिताक चातुर्यसँ कयलनि अछि, अर्थात् साहित्यमे शब्द ओ अर्थ परस्पर प्रतियोगी होइछ, जकर निदर्शन एतऽ भेल अछि- **ई ऋतु श्वेत वस्त्र धारण कयने अबैछ ।** मैथिलीक शिष्टसाहित्य आ लोकसाहित्य दुनूमे शरद वर्णनक प्रचुरता दिशि ध्यान आकृष्ट करैत **बिहुँसलि वसुधा फागुन मासे** रचनामे मस्तीक मास फागुनक संग पावनि-तिहारक वर्णन कयल गेल अछि आ कीर्त्तनियाँ फागक मनोरम बानगी सब देल गेल अछि ।

करीब-करीब सब निबन्धमे कोनो ने कोनो रूपमे मिथिलाक लोकजीवन आ लोकसंस्कृतिक मधुमय सन्निवेश भेल अछि- सीरियलक बीच विज्ञापन जकाँ नहि अपितु पुष्पक मध्य पराग जकाँ । सबमे लालित्यपूर्ण वर्णन अछि । एहन वर्णन जाहिमे दर्शन समाहित अछि । गीत कथा **अँचरा सितल बसात**मे वर्णन दर्शनक समाहार देखि कऽ उपर्युक्त तथ्यकेँ स्वीकारऽ पड़त- **सागर सन गम्भीरता आ विस्तार, आकाश सन उच्चता ओ निर्मलता, गंगा सन पवित्रता, क्षीर सन मधुरता, नेनु सन द्रवणशीलता, माय-बहीन सन आत्मीयता आ कमलक पात सन कोमलता एहि गीत कथामे लोककेँ भेटैत रहैत छैक । नारी, नारीक मोनक भावनाकेँ चीन्हैत छैक, नीक जकाँ ।** (पृ.-146)

एहि सब प्रस्तुतिकेँ देखि कऽ यैह कहल जा सकैछ जे रचनाकारक लेखनी माँजल ओ लोकरसमे डूबल छनि । जकरा लग भाषाक अपूर्व समाहार शक्ति छैक । उपमा, रूपक, प्रतीक आदिक शैली-शिल्पक विधान छैक । सबमे लालित्यक मधु मिश्रण छैक, जे पाठकक मोनकेँ मधुरा दैत छैक । रचनाकारक विद्वत्ता, प्रस्तुति क्षमता, साहित्यिक छवि-छटा आ धार्मिकताक प्रसंग जतेक कहल जाय से थोड़े होयत । एकाध उद्धरण हुनक भाषाक उदाहरण स्वरूप द्रष्टव्य अछि- **नवयौवनाक झुण्ड जकाँ आकाशमे नवल-नूतन मेघक टुकड़ी सभ जमा भऽ कऽ जेना रसक भारसँ झूकऽ लगैत अछि- जेठ वारिद नवल नवि-नवि, मदन रस बरिसाय यो ।** (पृ. 105) **दूरसँ अबैत बंशीक स्वर आ मन्द-मन्द बहैत पवनपर छिहलैत गीतक स्वर सुनि के भाव-मग्न नहि भऽ जायत ?** (पृ. 114)

अन्तमे यैह कहब जे शब्दब्रह्मक व्याख्या इदमित्थं नहि कयल जा सकैछ । हुनक अथोर सौन्दर्यक आस्वाद बौक जकाँ लेल तँ जा सकैछ, किन्तु कहल नहि जा सकैछ । 'हरि अनन्त, हरि कथा अनन्ता ।' **हमर अशेष शुभकामना जे रचनाकार रामदेवबाबू युग-युग जीबथु आ हुनक लेखनी मैथिली भारतीक भण्डार भरैत रहय-नव-नव दुर्लभ रत्नसँ, शृंगार करैत रहय-नूतन विधानसँ, सुभे-सुभे गबैत रहय पान-मखानक संग ।**

●

Scanned by CamScanner

प्राचीन मैथिली भाषा साहित्यक मर्मज्ञ अनुसन्धाता

- श्रीअशोककुमारठाकुर

डा. रामदेवझाकेँ हमरालोकनि एकटा सफल कथाकार, लेखक, सम्पादक, कवि, नाटककार एकांकी, समालोचक, निबन्धकार, विनिबन्ध लेखक, सम्पादक, अनुवादक तथा यशस्वी प्राध्यापकक रूपमे देखैत अयलियनि अछि । मैथिलीक हित-साधन हेतु सतत-सतर्क सेनानीक रूपमे सेहो सभतरि ठाढ़ देखैत रहलियनि अछि । मुदा हुनक जे अवदान मैथिली साहित्यक इतिहासमे अतुलनीय छनि से थिक भूतकालक अन्हारमे पड़ल एकर प्राचीन साहित्यकेँ ताकि-ताकि प्रकाशमे आनब । मैथिली भाषा-साहित्यक ई जिज्ञासु आ मेधावी छात्र आरम्भहिसँ एकर इतिहासमे रुचि लेबऽ लगलाह, ई कतऽ अछि, कतबा अछि तकर ताकहेरमे लागि जाथि । हिनक जिज्ञासाक अन्त नहि रहनि । जिज्ञासु छात्र शिक्षकक प्रिय होइत छथिन, आ से ई प्रिय रहथिन, आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'जीक, पं. चन्द्रनाथमिश्र 'अमर', डा. सुधाकरझाशास्त्रीक, प्रो. रमानाथझाक, डा. जयकान्तमिश्रक, डा. शैलेन्द्रमोहनझा आदिक ।

शोध प्रबन्ध तँ विधिवत एम. ए. पास कयलाक उपरान्ते लोक सुरू करैत अछि मुदा ई अपना ढंगे अपन अभिरुचिक अनुकूल शोध-यात्रा छात्रावस्थहिमे सुरू कयने रहथि । आइयो जखन की ई सेवासँ अवकाश प्राप्त कऽ लेने छथि आ स्वाध्याय मात्र करैत रहैत छथि ताहूमे हिनक लेखनीसँ कते रासे नव-नवबात उद्घाटित भेलनि अछि । जा कोनो तथ्यक प्रामाणिकता सिद्ध नहि भऽ जाइत छैक ता धरि ओ प्रमाण जुटबैत रहैत छथि । हिनक मनक प्रयोगशालामे ओ प्रयोग चलैत रहैत छनि जा धरि असन्दिग्ध फलाफल नहि भेटि जाइनि । अनुसन्धान सन महत्वपूर्ण काज कयनिहार कते गोटे छथि ? ई काज सभसँ सम्भवो नहि छैक । अनुसन्धाताक हेतु जाहि मानसिकताक आवश्यकता होइत छैक, जते विशद अध्ययन, सामग्रीक अन्वेषण, समय आ सभसँ बढ़ि धैर्य तकर सर्वथा अभावे आजुक युगमे भेटैत अछि । गवेषणात्मक दृष्टिकोण रखनिहारमे धैर्य स्वतः आबि जाइत छनि आ ओ सत्य धरि पहुँचऽमे सफल होइत छथि ।

रामदेवबाबू जाहि नामसँ ख्यात छथि साहित्यक सृष्टिक संगहि अनुसन्धान काजकेँ सेहो जीवनक अंग बना लेने छथि । कोन-कोन शोध हुनक मनमे चलि रहल छनि से वैहटा बुझैत छथि, मुदा जखन ओ आकार लैत अछि, निबन्धक रूपमे कोनो पत्रिकामे अथवा कोनो पोथीमे अबैत अछि तँ लोक चकित होइत अछि आ उपलब्धिपर गौरव बोध होइत छैक । आचार्य सुरेन्द्रझासुमन हिनका 'मैथिलीक पंडित' कहथिन, आ से ई छथि । मैथिलीक प्राचीन पाण्डुलिपि-पोथी ताकि ओकर पाठोद्धार करैत छथि, पुरान गीत सबहक अर्थ फरिछबैत छथि, भाषा विज्ञान आ कि मैथिलक जीवन दर्शनक कसौटीपर ओकर परीक्षण करैत छथि आ सैह तँ थिक पंडितक-विद्वानक काज ।

हिनक शोध-प्रबन्ध **मैथिली शैव साहित्य** वस्तुतः भक्ति भावना एवं साहित्य-साधनाक समन्वित रूप थिक । जाहि ग्रन्थ सभक आधारपर विषय वस्तुक प्रतिपादन ओहि प्रबन्धमे भेल छल ताहिमे कते आइयो अप्रकाशिते अछि । ओहि अप्रकाशित गीत-नाटक सभक जे अंश अथवा सम्पूर्ण रूपमे एहि पोथीमे आबि गेल ताहिसँ ई परम मूल्यवान वस्तु बनि गेल अछि ।

मैथिली भाषाक आविर्भावकाल आठम-नवम शताब्दीसँ मानल जाइत अछि, मुदा एकर आदि स्वरूप आ अभिव्यक्तिक आभास बौद्धगान एवं दोहामे सेहो भेटैत अछि । बौद्ध-सिद्ध लोकनि 'भाषा'मे चर्यागीत लिखने रहथि । डाकक नामसँ ज्योतिष विषयक प्राचीन पद्य सभ उपलब्ध अछि । एकटा नव नाम प्रकाशमे आयल अछि विनयश्रीक । ई बौद्धआचार्य विक्रमशिलामे रहैत छलाह तथा गीतक रचना प्राचीन मैथिलीमे करैत छलाह । हिनक गीत सभमे मैथिलीक

Scanned by CamScanner

रूप पूर्णत: स्पष्ट भऽ गेल छल । एहि गीत सभकेँ डा. रामदेवझा हरप्रसाद शास्त्रीक 'बौद्ध गान ओ दोहा'मे तकलनि अछि । विनयश्री बारहम शताब्दीमे भेल छलाह । चौदहम शताब्दीमे रचित **प्राकृत पैङ्गलमक**मे कतेक पद्यमे प्राचीन मैथिली भाषाक स्वरूपक दर्शन होइछ ओ समय छल बौद्धधर्मक प्रचार-प्रसारक, मुदा मिथिलामे कर्णाटवंशक राज्य स्थापनाक पश्चात क्रमहि बौद्धधर्म क्षीण होअऽ लागल । बौद्ध आ शैव धर्मभे संघर्षक स्थिति छलैक । एहने स्थितिमे नाथ सम्प्रदाय बनल । एकर आराध्यदेव योगेश्वर शिव छलाह । नाथ सम्प्रदायक मिथिलामे अस्तित्व प्रमाणित होइत अछि विद्यापतिक गोरक्ष विजय नाटकसँ । अत: ई कहि सकैत छी जे बौद्ध गानसँ प्राकृत पैङ्गलम आदि कतेक पड़ाव पार करैत मैथिली अपन स्वरूप स्थिर करैत गेल ।

ज्योतिरीश्वरसँ विद्यापति आ हुनक समकालीन एवं परवर्त्ती कवि लोकनिक एकटा नमहर परम्परा बनि गेल जाहिमे भवेश, विष्णुपुरी, गोविन्द, कवि रतन, सुकवि सदानन्द आदि कविक परिचय हुनकालोकनि गीतक आधारपर विद्वान अनुसन्धानी रामदेवबाबू करबैत छथि । मैथिलीक प्राचीन पाण्डुलिपि सभ जे अद्यावधि अलक्षित, अप्रचारित तथा अलभ्य अछि ताहि सभकेँ ताकि-ताकि ओकर सम्पादन प्रकाशन करा प्रकाशमे आनब मैथिली अकादमीक उद्देश्य छैक । एहि गुरुतर काजक भार आचार्य सुमनजीक संग रामदेवबाबू उठौलनि आ वर्ष 1977 मे **मैथिली प्राचीन गीतावली** प्रकाशित भेल । एकर 87 पृष्ठक दीर्घ गम्भीर भूमिका, जे हिनकहि लिखल थिकनि, ओहिमे गीत सभक पृष्ठभूमि, ओकरा सभक सम्बन्धमे पसरल भ्रान्तिकेँ दूर कयलनि आ ओ सभ सर्वसुलभ भऽ सकल । ई गीत सभ **भाषागीत संग्रह, राग तरंगिणी, नानाराग गीतम्, राग भजन संग्रह, नानागीत राग पंजिका, हरगौरी विवाह नाटक, कृष्ण चरित्र नाटक, नल दमयन्ती नाटक** आदि सभसँ लेल गेल अछि । मैथिली गीतक बंगाल यात्रा, जाहिमे बंगालक प्रसिद्ध गीत संग्रह सभमे मैथिली गीत भेटल अछि, मैथिलीक पोषक राजवंश सभक विस्तारसँ चर्च भेल अछि । **मैथिली प्राचीन गीत मंजरी** सेहो हिनक महत्त्वपूर्ण प्रकाशित कृति छनि ।

रामदेवबाबू जँ एक्केटा काज- **जगज्ज्योतिर्मल्ल कृत हरगौरीविवाह नाटकक** सम्पादन कऽ देने रहितथि तँ ओ अपन उच्च स्थान मैथिली साहित्यक इतिहासमे सुरक्षित कऽ लितथि । एहि नाटकक प्रकाशन होइते मैथिलीक - हिडेन ट्रेजर-खुजि गेल आ मध्यकालीन मैथिली साहित्य अपन गौरवमय अतीत विश्वसाहित्यक सोझाँ आनि सकल । एकरो पांडुलिपि कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयमे चल गेल छल । डेनियल राइट महोदय **हिस्ट्री ऑफ नेपाल** लिखबाक क्रममे एहि नाटक सभक उपयोग कयने रहथि । हुनकेँ लिखल इतिहासक परिशिष्टमे एकर नामोल्लेख छल । ओही आधारपर कैम्ब्रिजसँ पत्राचार कऽ ओकर पांडुलिपिक माइक्रोफिल्म मँगबौलनि । ओहि माइक्रोफिल्मक आधारपर रामदेवबाबू ओकर सम्पादन कयलनि । **हरगौरी विवाह नाटक** सर्वांगपूर्ण 1970 इ.मे प्रकाशित भेल । प्रकाशित होइते ई नाटक इतिहासकार, अनुसन्धाता एवं आलोचक लोकनिक ध्यान आकृष्ट कयलक । नेपालीय मैथिली दिस गवेषकगणकेँ उन्मुख होयबाक प्रेरणा देलक ।

नेपालमे मल्ल राजवंशक राजा लोकनिकेँ मिथिलाक पंडित, कवि, गबैया, गुणी लोकनिक प्रति सम्मान भाव रहलनि । नेपालमे मैथिली सभ्य, प्रभाव सम्पन्न, सम्भ्रान्त जनसमुदायक भाषाक रूपमे प्रतिष्ठित छल । ओतऽ मैथिली शिलालेखक भाषा बनि गेल छल । ओतऽ दू कोटिक मैथिली रचना भेल - गीतावली एवं नाटक । मल्ल राजा लोकनिकेँ संगीतशास्त्र आ काव्यशास्त्रमे अपनो रुचि छलनि आ तेँ एते गीत-नाटकक रचना भेल । इहो तथ्य सुविदिते अछि जे नाटक सभक रचना रंगमंचक हेतु आ विशेष अवसरपर मंचन हेतु होइत छल ।

डा.रामदेवझा अपन शोध कार्यक हेतु नेपालक यात्रा 1967 मे कयलनि । ओतऽसँ कतेको प्राचीन सामग्री अनलनि । **नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत** नामक एकटा लघु पुस्तिका 1972मे प्रकाशित करौलनि । सातटा शिलालेखमेसँ अठारहटा गीतक उद्धार कऽ ओकर सम्पादन ओ एहिमे कयने छथि । ई सभ थिक अभिलेख गीत सभ जाहिमे नेपाल आ मैथिलीक व्यवस्थित विवरण भेटैत अछि, गीत सभक गीतकार मल्लवंशक राजा लोकनि छथि ।

Scanned by CamScanner

डा. झाक नेपालक मैथिलीक दूगोट साहित्यकारपर महत्वपूर्ण विनिबन्ध साहित्य अकादेमी, दिल्लीसँ प्रकाशित भेल छनि । ई थिक **जगत्प्रकाशमल्ल** आ **जगज्ज्योतिर्मल्ल** । मिथिला आ नेपाल अटूट सम्बन्ध मल्लराजवंशक स्थापना, पुन: ओकर विभाजन, आन्तरिक संघर्ष, पृथ्वीनारायणशाहक उदय एवं नेपाल उपत्यकासँ मल्ल राजवंशक समाप्तिक सम्पूर्ण विवरण, ताहि मध्य मैथिली साहित्यक अभिवृद्धि आदि सभ किछु एहि दूटा पोथीमे अछि । जगत्प्रकाशमल्ल एहि विकास क्रमक मध्यवर्त्ती बिन्दु थिकाह, हुनकासँ पूर्व जगज्ज्योतिर्मल्ल आ बादमे जय जितामित्रमल्ल, भूपतीन्द्रमल्ल, रणजितमल्ल भेलाह । ओहो लोकनि कौलिक परम्परा आ मर्यादाक निर्वाह कयलनि आ साहित्य-संगीतक सम्पोषण करैत रहलाह । भक्तपुर, कान्तिपुर तथा पाटन तीनू शाखामे अशान्ति रहल । जतऽ शान्ति ओत्तहि साहित्य ओ कलाक विकास सम्भव होइत छैक । लेखन आ प्रकाशनमे **जगत्प्रकाशमल्ल** अगुआयल मुदा पाँच वर्षक बादो प्रकाशित **जगज्ज्योतिर्मल्ल** मैथिलीक प्रकाश स्तम्भ थिक ।

मैथिली शैव साहित्यक भूमिका जे मैथिली शैव साहित्यक अंश थिक एहिमे रामदेवबाबू मिथिलामे शिवार्चनपर खूब जमि कऽ लिखलनि अछि । अपन अध्ययनमे प्राक् मैथिलीसँ आरम्भ कऽ अधुनातन काल धरिक विवेचन-विश्लेषण कयलनि अछि । प्राचीन पाण्डुलिपिसँ लऽ कऽ अठपेजिया गीतक पोथी पर्यन्त सभकेँ स्थान देलनि अछि आ तेँ कतेक अज्ञान कवि लोकनिक परिचय प्राप्त भेल अछि ।

नेपालक मैथिली नाटक आ गीति काव्यक सम्बन्धमे जे विशाल सूचना डा. झा एकत्र कयलनि अछि ओ हमरा दृष्टिमे कंकरिंग माउंट एवरेस्ट जकाँ बुझि पड़ैत अछि । नेपालमे नाटक-गीत रचना आ रंगमंचक एकटा सुदीर्घ परम्परा छलैक आ लोकप्रियता चरमपर छलैक । नेपाले नहि असममे रचित अंकियानाट सेहो मैथिली गीतक बहिरंग प्रभावक उदाहरण थिक । हिनका द्वारा शंकरदेव कृत अंकिया नाट- **रामविजय नाट ओ वर गीतम्** (1967 इ.)क सम्पादन-प्रकाशनसँ असममे मैथिली नाटकक विकासपर प्रकाश पड़ल अछि ।

महाकवि विद्यापति शैव सर्वस्वसारमे जेना प्राचीन स्मृति, पुराण, आगम, तन्त्र, रामायण, महाभारत, आदि जते ग्रन्थ ता धरि उपलब्ध छलैक सभक मन्थन कऽ शिवार्चन विषयक जतऽ जे सामग्री भेटलनि तकर संकलन ओहिमे कयने छथिन, तहिना रामदेवबाबू मैथिलीक प्राचीन साहित्यसँ अधुनातन साहित्यमे जतऽ जाहि रूपमे शिव विषयक गीत-पद-नाटक भेटलनि सभक सम्यक अध्ययन-विश्लेषण कऽ नव रूपमे अपन **मैथिली शैव साहित्य** ओ **मैथिली शैव साहित्यक भूमिका**मे रखलनि अछि । विद्यापतिक गीत साहित्यमे शिव अत्यधिक चर्चित-अर्चित छथि । हुनक समकालीन आ परवर्त्ती ज्ञात-अज्ञात कवि लोकनिक गीत सभमे जतऽ महादेवक प्रसंग अयलनि अछि सभक उल्लेख हिनका द्वारा भेल अछि । कहि सकैत छी जे किछु ओ हिनका दृष्टिसँ वंचित नहि रहलनि अछि ।

मध्यकालक सर्वश्रेष्ठ किरतनियाँ नाटककार थिकाह उमापति उपाध्याय । हिनक प्रसिद्ध कृति थिकनि पारिजात हरण । हुनक परिचय, काल, आदि अनिर्णीत जकाँ छल । डा. झा व्यापक अन्वेषण, अनुसन्धान कऽ ओहि विवादक अन्त कऽ देलनि अछि । हिनक निष्कर्ष प्राय: सर्वमान्य भऽ गेलनि अछि । **मिथिला विभूति** नामक ग्रन्थमालामे **उमापति** 1980 इ.मे मैथिली अकादमी पटनासँ प्रकाशित भेल आ ओहि मालाक ई पहिले पुष्प थीक । उमापतिक 'मैथिलेशक' अप्रामाणिकता -लेख दिसम्बर 1975 मे प्रकाशित होइते ई विद्वान इतिहासकार लोकनिक ध्यान आकृष्ट कयलकनि । मकवानी राजसभामे मैथिली साहित्य, उमापतिक आश्रयदाता एहि बात सभपर विचार कयला उत्तर भ्रमजाल अपने हटि गेल । डा. झाक कृति उमापति मैथिली साहित्यक इतिहासक आधार सुदृढ कयलक अछि । डा. जयकान्त मिश्र अपन इतिहासमे लिखैत छथि जे- **डा. रामदेवझा नव तथ्य सभ प्राप्त कयलनि अछि से आब हमरा अन्तिम निष्कर्ष मानए पड़त ।**

दोसर महत्वपूर्ण रचनाकार नन्दीपति छथि । ई कृष्णकेलिमाला नाटकक रचयिता एवं मधुर गीतकारक रूपमे ख्यात छथि । डा. झा **नन्दीपति गीतिमाला** 1965 इ. मे सम्पादित ओ प्रकाशित करौलनि । ओकर प्रस्तावनामे नन्दीपतिक विशेष विवरण देल गेल अछि । शैव साहित्यमे सेहो हिनक चर्चा नीक जकाँ भेल अछि ।

Scanned by CamScanner

कवीश्वर चन्दाझा, म.म.परमेश्वरझा एवं कविवर जीवनझा, ई महत्रयी आधुनिक मैथिली साहित्यक स्तम्भ थिकाह । तीनू महानुभावक सम्बन्धमे बहुत लिखल गेल अछि, कहल गेल अछि । म.म.परमेश्वरझाक मात्र हुनक दूटा कृतिक विवरण–विवेचन होइत रहल अछि– **मिथिला तत्त्व विमर्श** आ **सीमन्तिनी आख्यायिका** । मुदा हुनका महत्वपूर्ण साहित्यिक अवदान **दुर्गाचरित नाटक**क(1996) कत्तहु चर्च नहि भेटैत अछि । 1914 इ.मे लिखित ई नाटक भारतक दुरावस्थाक झलक आ ओहिसँ मुक्तिक कामना, महिषासुर एवं इन्द्रक राजसभामे सुरा–सुन्दरी आ विलासिताक वर्णन जेना भेल अछि से तत्कालीन भारतक सामर्थ्यवान सामन्त वर्गक मनोवृत्तिक संकेत दैत अछि । डा. झा एहि दुर्गाचरित नाटक अन्वेषण कऽ 1991मे एकरा प्रकाशमे अनलनि ।

कविवर जीवनझाक नाटक सभक संग्रह **कविवर जीवनझा रचनावली**क सम्पादन ई पं. चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क संग कयने छथि जाहिमे हिनक वृहत भूमिका छनि । साहित्य अकादेमी, दिल्लीसँ प्रकाशित **विद्यापति गीत संचय**, चन्दाझा कृत **मिथिलाभाषा रामायण**, लालदास कृत **रमेश्वर चरित मिथिला रामायण**क पुनर्मुद्रण जे भेल अछि ताहि सभमे हिनक लिखल भूमिका अत्यन्त उपादेय अछि । विस्तारसँ सभ प्रसंगकेँ एक ठाम राखि देब हिनक भूमिका लेखनक वैशिष्ट्य थिकनि ।

मध्यकालीन मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे एकटा औरो महत्तम अनुसन्धान जे सम्प्रति प्रकाशनाधीन अछि ओ थीक– **जगज्ज्योतिर्मल्ल कृत मुदित कुवलयाश्व नाटक** । साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित भऽ रहल जगज्ज्योतिर्मल्लक एहू नाटकसँ मैथिली संसार एखन धरि अपरिचिते रहल अछि । एहि नाटकक पांडुलिपि जर्मनीक प्राच्य विद्या केन्द्रमे राखल अछि, एकर दोसर गीतमय पांडुलिपि काठमाण्डूक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि । रामदेवबाबू 1979मे काठमाण्डूक अपन दोसर बेरक यात्रामे अभिलेखालयसँ मुदित कुवलयाश्वक गीतमय पांडुलिपिक हस्तलेख अनलनि संगहि अभिलेखालयक प्रतिलिपिकर्त्ता विद्वान प. घनश्याम पोड्यैलसँ हिनका एहि नाटकक गद्यसंवाद युक्त जर्मनीवला पांडुलिपिक प्रतिलिपि सेहो प्राप्त भेलनि । काठमांडू ओ जर्मनीवला पांडुलिपि दुनू अपूर्ण, मुदा दुनूक तुलना कयने एहि महत्त्वपूर्ण कृतिक एकटा समग्र–सुसंगत स्वरूप तैयार करब सम्भव छल । मुदा ई काज अत्यन्त दुरूह ओ श्रमसाध्य छल । रामदेवबाबू एहि कठिन काजकेँ चुनौतीक रूपमे लेलनि आ ओकर सम्पादन कार्यमे लागि गेलाह । यद्यपि 1980मे वर्धमान विश्वविद्यालयसँ विजितकुमार दत्तक सम्पादनमे 'प्राचीन बाङला–मैथिली नाटक' नामक एकटा पोथी प्रकाशित भेल जाहिमे जर्मनीवला फोटो प्रतिक आधारपर मुदित कुवलयाश्व नाटकक बंगला लिप्यन्तरणक संग प्रकाशन कयल गेल । मुदा एक तँ स्वयंमे ई पांडुलिपि अपूर्ण ताहिपरसँ श्री दत्तकेँ नेवारी लिपि पढ़बामे भेल बहुत ठाम भ्रमक कारणे एहि नाटकमे अशुद्धिक भरमार भऽ गेल । तथापि मैथिलीक एहि अलभ्य कृतिकेँ सर्वप्रथम प्रकाशनमे अनबाक श्रेय तँ श्री दत्तकेँ देले जयतनि मुदा दुर्भाग्य ई जे प्रकाशित होइतो ई कृति मैथिलीक अध्येता लोकनिक दृष्टिपथपर नहि पहुँचि सकलनि । रामदेवबाबू श्री दत्तक प्रकाशित नाटकक सेहो उपयोग कयलनि संगहि हुनका द्वारा उत्पन्न कयल गेल भ्रमक निवारण कयलनि अछि । जर्मनीवला प्रतिमे प्रयुक्त गीतक पाठक निर्धारण काठमाण्डूवला प्रतिमेसँ कयलनि अछि । जाहि गीतक सम्पूर्ण पाठ एहूमे नहि भेटलनि तकर अन्वेषण जगज्ज्योतिर्मल्लक अन्यान्य गीत संग्रहमेसँ कऽ कऽ पचीस वर्षक दीर्घ तपस्याक बाद एहि महान कृतिक सम्पादन कार्य पूर्ण कयलनि अछि । एकटा वृहत् भूमिका संग सम्पादित जगज्ज्योतिक ई अलभ्य कृति साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित कयल जा रहल अछि । प्रकाशनक बाद ई पोथी मैथिली साहित्यक इतिहासमे एकटा नव अध्याय जोड़त आ तखन जानल जा सकत जे अनुसन्धान ओ सम्पादन कार्य ककरा कहल जाइत छैक ।

भावयित्री एवं कारयित्री प्रतिभाक एहन संगम दुर्लभ अछि । अपन विद्वत्तापूर्ण निरन्तर श्रमपूर्वक लेखनसँ मातृभाषाक साहित्यकेँ जे ई गौरवान्वित कयलनि अछि से हिनका हेतु इतिहासमे स्थान बना देलकनि अछि । अपन विशाल रचना संसारक बलपर ई सभ दिन अभिनन्दनीय बनल रहताह ।

●

Scanned by CamScanner

सजीवनी समालोचना : डा रामदेवझा

डा. श्रीयोगानन्दझा

अनुसन्धान ओ आलोचना डा. रामदेवझाक अत्यन्त प्रिय विषय रहलनि अछि । गुण, परिमाण ओ लेखनक निरन्तरताक दृष्टिजे एहि विधामे हिनक रचनाशीलता हिनक कारयित्री प्रतिभासँ निष्पन्न कविता-कथा-उपन्यास-नाटक आदि विधाक अपेक्षा कनेको न्यून नहि रहलनि अछि । कल्पनापरक मौलिक लेखन ओ चिन्तनपरक अनुषंगी लेखनक दुहू क्षेत्रमे हिनक लेखनीक सम्यक् ओ सन्तुलित गतिक प्रति अभिभूत भइये कऽ मैथिली दधीचि आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन' हिनका सव्यसाची साहित्यकारक रूपमे आख्यात कयने छथि ।

डा. झाक अनुसन्धान क्षेत्र अतिशय व्यापक रहलनि अछि । हिनक अनुसन्धान कलासँ मैथिलीक इतिहासलेखनकेँ प्रचुर दिशाबोध भेटलैक अछि । एहि क्षेत्रमे हिनक सर्वाधिक प्रशस्त कार्य छनि हिनका द्वारा रचित **मैथिली शैव साहित्य** ओ **मैथिली शैव साहित्यक भूमिका** । ई दुनू ग्रन्थ एक दोसराक परिपूरक थिक । 'मैथिली शैव साहित्य'मे मैथिली साहित्यक एक गोट विशिष्ट काव्यधाराकेँ समेकित रूपेँ व्याख्यात कऽ ई स्थापित कयल गेल अछि जे आदिकालसँ लऽ कऽ अधुनातन काल धरि शैव भक्ति साहित्यक अक्षुण्ण परम्परा रहल अछि आ एहि परम्पराक निरन्तरता ओ पुष्कलता ई सिद्ध करैछ जे मैथिली साहित्यक वैष्णव काव्यधारासँ ई कनेको कम महत्त्वक नहि अछि । प्रसिद्ध समालोचक आचार्य रमानाथझाक मैथिली कालविभाजनक क्रममे केवल दुइ गोट काव्यधारा क्रमशः कृष्ण काव्यधारा ओ राम काव्यधाराक मिथक एहि अनुसन्धानसँ सर्वथा निरस्त भेल अछि आ मैथिली इतिहास लेखनमे एक गोट नव अवधारणा ओ अध्याय जुटल अछि ।

एहि दुनू गुरु ग्रन्थक अतिरिक्त मैथिली इतिहासलेखनक विभिन्न निगूढ़ तत्त्व सभक अनुशीलन ओ प्रकाशन द्वारा मैथिलीक प्राचीन ओ मध्यकालीन साहित्यक अनुसन्धानक क्षेत्रमे डा. झा जाहि अमूल्य, अनभिज्ञात किंवा अल्पज्ञात सामग्री सभकेँ प्रकाशमे आनि मैथिली इतिहासलेखनमे योगदान दैत रहल छथि से सभ थिक- **नन्दीपति गीतिमाला, रामविजय नाट ओ वरगीत, हरगौरी विवाह नाटक, नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत, मैथिली प्राचीन गीतावली, कुञ्जविहार नाटक, दशावतार नृत्यम् ओ षोडस गीतम्, मैथिली प्राचीन गीत मञ्जरी, दुर्गाविजय नाटक, मुदित कुवलयाश्व नाटक** इत्यादि ।

मिथिलाक लोकसाहित्य सेहो डा. झाक अनुसन्धानपरक दृष्टि रहलनि अछि । एहि क्षेत्रमे हिनका द्वारा कृत कार्य थिक - **मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य ।** मैथिली लोकसाहित्यक व्यापक क्षेत्रमे हिनक ई ग्रन्थ मौलिक अनुसन्धान थिकनि ।

प्रारम्भमे मैथिली समालोचनामे सामान्यतः शास्त्रीय पद्धतिक उपयोग होइत छल आ कोनो कृतिक मूल्यांकनक आधार रहैत छल पौर्वात्य शास्त्रीय सिद्धान्त । मुदा क्रमशः पाश्चात्य आलोचना पद्धतिक प्रभावेँ समालोचकलोकनि अन्यान्य अनेक आधारपर विवेचन-विश्लेषणक प्रक्रियाकेँ आगू बढ़ौलनि अछि जाहिमे कृतिक संगहि कृतिकारक परिवेशकेँ सन्तुलित स्थान प्रदान कयल जाइत रहलैक अछि । एहने समालोचनाकेँ व्यापक, समुन्नत, व्यावहारिक, उपादेय, सन्तुलित ओ वस्तुनिष्ठ मानल गेलैक अछि । समालोचनाक एहि पद्धतिमे कृतिकारक समसामयिक राजनीतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक ओ सांस्कृतिक परिवेश तथा पूर्ववर्त्ती, समकालीन ओ परवर्त्ती काव्यधाराक संग ओकर कृतिक तुलनात्मक विश्लेषणकेँ अन्तर्भुक्त करैत रचनाक आदर्श ओ उद्देश्यक परिशीलन कऽ मन्तव्य प्रदान कयल जाइत रहलैक अछि ।

Scanned by CamScanner

सजीवनी समालोचना :

वस्तुतः कोनो रचनाकारक कृतिपर ओकर जन्मकाल, जन्मस्थानक भौगोलिक परिस्थिति, परिवार, शिक्षा-दीक्षा, आचार-विचार, सभ्यता-संस्कृति, तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थिति एवं पूर्ववर्त्ती काव्यधाराक प्रभाव पड़ितहिँ छैक आ यैह परिवेश ओ परिस्थिति सभ बहुत दूर धरि ओकर रचनाप्रक्रिया ओ रचनाधर्मिताक नियामक सेहो होइत छैक । तेँ समालोचना क्रममे आलोच्य लेखकक जीवनवृत्तक विवेचन-विश्लेषण ओ तकरे परिप्रेक्ष्यमे ओकर रचनाक मूल्यांकन करबाक विशिष्ट परिपाटीक प्रादुर्भाव भेल अछि जकरा 'स-जीवनी समालोचना' कहल जयबाक चाही । समालोचनाक एहि पद्धतिमे लेखकक जीवन वृत्तक विवेचन-विश्लेषण ओतबे महत्त्वपूर्ण भऽ जाइत छैक जतेक ओकर कृतिक विवेचन-विश्लेषण आ एहि दुनूक बीच पारस्परिक समन्वयक सेहो विश्लेषण कऽ समालोचक एक गोट अन्वेषकक रूपमे पाठकक समक्ष प्रचुर सामग्री उपलब्ध करा दैत छथि जे सहजहिँ कृतिक मूल्यवत्ताकेँ उद्घाटित कऽ दैत छैक ।

डा. रामदेवझाक समालोचनात्मक साहित्यमे अनेक पुस्तकाकार प्रकाशित छनि, मुदा अधिकांश विभिन्न संकलन ग्रन्थ ओ पत्र-पत्रिकामे विकीर्ण छनि । हिनक समस्त समालोचनात्मक कृतिकेँ स्थूल रूपेँ दुइ कोटिमे विभाजित कयल जा सकैछ – विधापरक समालोचना ओ सजीवनी समालोचना । हिनक विधापरक समालोचना कतहु विषय केन्द्रित अछि तँ कतहु कृति केन्द्रित । अवश्ये हिनक सजीवनी समालोचनात्मक कृति सभमे रचनाकारक जीवन ओ परिवेशक परिप्रेक्ष्यमे ओकर समस्त कृतिक मूल्यांकन कयल गेल अछि । हिनक एहि कोटिक रचनावलीमे जाहि स्फुट ओ ग्रन्थाकार कृति सभकेँ समेटल जा सकैत अछि, तकरा सभकेँ ओकर विवेच्य कृतीक कालक आधारपर दुइ गोट वर्ग कयल जा सकैछ – मध्यकालीन रचनाकारपर आधारित ओ आधुनिक कालक रचनाकारपर आधारित । हिनका द्वारा जाहि मध्यकालीन रचनाकार सभपर आधारित प्रमुख सजीवनी समालोचना रचित भेल अछि से सभ थिकाह क्रमशः शंकरदेव, जगज्ज्योतिर्मल्ल, जगत्प्रकाशमल्ल, उमापति ओ नन्दीपति । हिनक आधुनिक कालक मैथिली रचनाकार सभपर केन्द्रित सजीवनी समालोचना मध्य प्रमुख विवेच्य रचनाकार थिकाह जीवनझा, जनार्दनझा 'जनसीदन', कविवर सीतारामझा एवं सुभद्रझा ।

शंकरदेव :

पन्द्रहम शताब्दीमे प्रादुर्भूत शंकरदेव असममे विकसित मैथिली नाट्यपरम्पराक शलाका पुरुषक रूपमे प्रख्यात छथि । हिनका द्वारा रचित कालियदमन, पत्नी प्रसाद, रसक्रीड़ा वा केलिगोपाल, रुक्मिणीहरण, पारिजातहरण एवं रामविजय नाट मैथिली नाट्य साहित्यक विकास-प्रकाशमे असमक अमूल्य देन थिक । यद्यपि एहि नाटक सभक भाषा बहुधा असमी मिश्रित मैथिली थिक तथापि मैथिली साहित्येतिहासमे एकरा सभकेँ प्रमुख स्थान प्राप्त छैक ।

डा. रामदेवझा स्वसम्पादित 'रामविजय' नाटकक (1967) भूमिकामे शंकरदेवक सजीवनी समालोचना प्रस्तुत कयने छथि । एहिमे प्रारम्भमे कहल गेल अछि जे विजातीय आक्रमणसँ निरस्त होइत भारतीय समाजकेँ अपन अस्तित्व रक्षाक साधनक रूपमे एक गोट आन्दोलनक रूपमे वैष्णव धर्मक अभ्युदय भेल छल आ एही धर्मक एक गोट महान सन्तक रूपमे असममे शंकरदेव अवतरित भेल छलाह जे असमक परवर्त्ती साहित्य-समाज, धर्म-दर्शन, आचार-विचार, सभ्यता-संस्कृतिकेँ सर्वाधिक प्रभावित कयलनि ।

ततःपर शंकरदेवक जन्म, पालन, अध्ययन ओ काव्य प्रतिभाक चर्च करैत हिनक वैराग्य धारणक कारणक विवेचन भेल अछि । ततःपर लेखक ई सूचना देलनि अछि जे वैराग्य धारणक बाद शंकरदेव बारह वर्ष धरि तीर्थाटन करैत रहलाह आ विभिन्न साधु, सन्त, वैष्णव भक्त ओ दार्शनिक-विद्वानलोकनिक सम्पर्कमे अयलाह आ वैष्णव मतमे दीक्षित भऽ असमक शाक्त प्रदेशमे प्रत्यावर्त्तित भेलाक बाद वैष्णव धर्मक प्रचार-प्रसारमे लागि गेलाह । ई पुनः विवाह कयलनि आ अपना गामेक निकट एक गोट मठक स्थापना कऽ ओहिमे सामूहिक उपासना स्थलक निर्माण करौलनि एवं नाम संकीर्त्तनक प्रचारमे दत्तचित्त भेलाह । हिनके द्वारा एकशरणिया वैष्णव मतक प्रवर्त्तन भेल जाहिमे 'कृष्णमेव

Scanned by CamScanner

शरणम्' केर उपदेश देल जाइत छल । परवर्त्ती कालमे श्रीमद्‌भागवतक दार्शनिक विचारधाराक आत्मसातीकरणपूर्वक शंकरदेव अनेक आत्मनिवेदनपरक वरगीत ओ अंकियानाटक रचना कयलनि आ असममे विकसित मैथिली नाट्य परम्पराक प्रवर्त्तकक रूपमे अपन स्थान बनौलनि । लेखकक अभिमत छनि जे दृश्यावली युक्त परदाक प्रयोग शंकरदेवक महत्त्वपूर्ण अवदान थिक आ ओ जाहि अंकीया नाटकेँ शास्त्रीय स्वरूप प्रदान कयलनि तकर प्रेरक तत्त्वक दर्शन हुनका तीर्थाटन क्रममे विभिन्न जनपदमे प्रचलित अभिनय प्रकार यथा किरतनिञा नाटक, रामलीला, रासलीला, यात्रा, कथक, यक्षगान, भवाइ आदिसँ भेल होयतनि, जे सर्वथा समीचीन बुझना जाइछ ।

तत:पर लेखक शंकरदेवक परवर्त्ती नाट्यपरम्पराक किछु विशिष्ट नाटककार माधवदेव, गोपालदेव, रामचरण ठाकुर, दैत्यारिठाकुर आदिक सूचना प्रदान कयलनि अछि । एही क्रममे अंकीया नाटक शिल्पक विश्लेषण करैत ओहिमे प्रयुक्त नान्दी, सूत्रधार, भटिमा, मुक्तिमंगल भटिमा आदिक स्वरूपक उल्लेख भेल अछि । लेखक असममे विकसित मैथिली नाट्य साहित्यक भाषा ओ गद्यपर सेहो सविशेष चर्चा कयलनि अछि तथा ओहि नाट्य साहित्यक संग कीर्तनिञा नाटकक तुलना कऽ ई सिद्ध करबामे सफल भेल छथि जे असमहुमे विकसित मैथिली नाट्यपरम्परापर गीतक प्रयोगबाहुल्य ओ प्रवेश गीतक दृष्टिञे कीर्तनिञाक प्रभाव अत्यन्त सहज देखि पड़ैत अछि ।

एहि तरहेँ एहि सजीवनी समालोचनाक माध्यमे लेखक नहि केवल शंकरदेवक जीवन चर्या ओ परिवेश किंवा हुनक कृति रामविजय मात्रक मूल्यांकनेटा कयलनि अपितु अंकीया नाटक क्षेत्रमे परवर्त्ती अनुसन्धानक हेतु मार्गो प्रशस्त कयलनि अछि । संगहि लेखक मैथिली साहित्येतिहास लेखनमे एकटा अध्यायकेँ पल्लवित-पुष्पित सेहो कयलनि अछि जे मध्यकालीन मैथिली साहित्यक अनुसन्धानक प्रति हिनक गहन रुचिकेँ विज्ञापित करैत अछि ।

जगज्ज्योतिर्मल्ल :

सजीवनी समालोचनाक क्षेत्रमे डा. रामदेवझाक दोसर अवदान थिकनि जगज्ज्योतिर्मल्ल । जगज्ज्योतिर्मल्ल मध्यकालीन नेपालीय मैथिली साहित्यक एक गोट विशिष्ट कवि ओ नाटककार भऽ गेल छथि । हिनक व्यक्तित्त्व ओ कृतित्वक सम्यक् विवेचनपर आधारित डा. झाक विनिबन्ध थिकनि 'जगज्ज्योतिर्मल्ल' जे साहित्य अकादेमीक 'भारतीय साहित्यक निर्माता' शृंखला मध्य 1995 मे प्रकाशित भेल । एहि अनुसन्धानपरक बिनिबन्धक माध्यमे मध्यकालीन मैथिली साहित्यक अनेक अभिज्ञात तथ्यक विश्लेषण ओ अज्ञात तथ्यक प्रकाशनक संगहि मैथिली साहित्येतिहासक अनेक भ्रान्तिपूर्ण तथ्यक परिमार्जन भेल अछि ।

एहि विनिबन्धक पूर्वपीठिकामे दुइ गोट शीर्ष क्रमश: 'राजनीतिक परम्परा ओ परिवेश' तथा 'साहित्यिक परम्परा ओ परिवेश'क माध्यमे तत्कालीन नेपालक राजनीतिक ओ साहित्यिक परिवेशक सविशेष मूल्यांकन करैत ओहि समस्त विन्दुपर प्रकाश देल गेल अछि जे जगज्ज्योतिर्मल्ल सदृश मार्गदर्शक कवि ओ नाटककारक प्रादुर्भावक कारण बनल छल ।

ग्रन्थकार नेपालीय मैथिली साहित्यक कारणभूत तत्त्व सभक विश्लेषण करैत कहलनि अछि जे– **मिथिलासँ विद्वान्, पण्डित, कवि, संगीतज्ञ, गुणी, नर्त्तक एवं अन्य शास्त्र ओ विषयक ज्ञातालोकनिकेँ आमन्त्रित कऽ नेपालक राज्यसभामे स्थान देल जाइत रहलनि । मिथिलाक सारस्वत धारा नेपालोन्मुख भऽ कऽ अनवरत प्रवहमान होमऽ लागल आ ओही संग आयल मैथिली भाषा, मैथिलीक गीतिकाव्य ओ नाटक । मिथिलाक साहित्य ओ संगीतसँ मल्लराजवंशीय नेपाल उपत्यका जेना गुञ्जायमान भऽ उठल । मैथिलीक विद्यापति, विष्णुपुरी, अमृतकर, गोविन्द, कंसनारायण इत्यादि कविगणक कोमलकान्त पदावलीक गाने मात्र नहि होइत रहल, मिथिलामे रचित नाटकक अभिनये नहि होइत रहल, अपितु गीत ओ नाटकक रूपमे मैथिलीक अजस्त्र साहित्यक सर्जना सेहो अठारहम शताब्दीक तृतीय चरण धरि अविराम गतिसँ होइत रहल । ओहि अन्तरालमे नेपालमे मैथिली सभ्य, सुसंस्कृत ओ सम्भ्रान्त जनसमुदायक भाषाक रूपमे प्रतिष्ठित रहल । मैथिली भाषाक ज्ञान ओ मैथिली भाषामे काव्य-सर्जनक क्षमता विकसित ओ परिमार्जित रुचिक मानदण्ड बनि गेल ।**

Scanned by CamScanner

एही क्रममे ग्रन्थकार जगज्ज्योतिर्मल्लक पूर्ववर्त्ती ओ परवर्त्ती नेपालीय मैथिली साहित्यक संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करैत एहि निष्कर्षकेँ सुस्थापित कयलनि अछि जे **'जगज्ज्योतिर्मल्लकेँ मैथिली भाषामे गीत ओ नाट्य रचनाक प्रेरक पृष्ठभूमिक रूपमे मैथिली ओ नेपालीय संस्कृत ओ भाषा काव्यनाटकक समृद्ध परम्परा ओ परिवेश प्राप्त छलनि ।**

मुख्य ग्रन्थ छओ गोट अध्यायमे विभक्त अछि । एहिमे पहिल अछि जगज्ज्योतिर्मल्लक जीवन : परिवार ओ परिजन । एहि अध्यायमे सर्वप्रथम ग्रन्थकार अनेक अन्त:साक्ष्यक आधार प्रस्तुत करैत इतिहासकारलोकनिक एहि भ्रान्त धारणाकेँ निर्मूल करबाक प्रमाण देलनि अछि जे त्रैलोक्यमल्ल आ त्रिभुवनमल्ल एके व्यक्तिक अभिधान थिक । वस्तुत: दुनू गोटे परस्पर भाइ छलाह आ जगज्ज्योतिर्मल्ल त्रैलोक्यमल्लक पुत्र छलाह । ग्रन्थकार **मुदित कुवलयाश्व** नाटकक प्रस्तावनाक आधारपर नेपालक राजनीतिक इतिहासक एहि भ्रान्तिक सेहो निराकरण कयलनि अछि जकर अनुसार भक्तपुरक राजसत्ताक हस्तान्तरण सहज रूपेँ जगज्ज्योतिर्मल्लकेँ भऽ जयबाक संकेत भेटैत अछि । ग्रन्थकार ई साबित कयलनि अछि जे दुइ गोट दुष्ट मन्त्री ओ ओकर किछु सहायकलोकनिक द्वारा जगज्ज्योतिर्मल्लक पिताक मृत्यूपरान्त राजसत्ता हथिआय लेल गेल, मुदा अपन बुद्धिबल, राजनीतिक कौशल ओ संघर्षक बलेँ जगज्ज्योतिर्मल्ल अपन पिताक राज्यकेँ प्राप्त करबामे सफल भेल छलाह । ग्रन्थकार इतिहासकार **पर्सिविल लन्दन**क एहू मतक खण्डन कयलनि अछि जकर अनुसार जगज्ज्योतिर्मल्लकेँ निरन्तर काठमाण्डूपर आक्रमण करैत रहऽवला राजाक रूपमे उद्धृत कयल गेलनि अछि ।

एही अध्यायमे जगज्ज्योतिर्मल्लक जन्म वर्ष 1568 इ. सँ लऽ कऽ 1590 इ. क बीच निर्धारित करैत ग्रन्थकार हुनक जीवनक अनेक कार्य ओ घटना सबहिक उल्लेख कयलनि अछि, संगहि हुनका दानवीर, दयावीर, सत्यवीर ओ युद्धवीर शासकक रूपेँ प्रतिष्ठापित कयलनि अछि । अन्तत: ग्रन्थकारक ई निष्कर्ष छनि जे **जगज्ज्योतिर्मल्लक तन-मन-जीवन, धार्मिक आस्था, आस्तिकता ओ भक्तिभावनासँ पूर्ण छलनि ।** ग्रन्थकारक ई निष्कर्ष जगज्ज्योतिर्मल्लक कृतिमे अभिव्यक्त भावनापर आधारित रहबाक कारणेँ सर्वथा समीचीन अछि ।

एहि ग्रन्थक दोसर अध्याय थिक जगज्ज्योतिर्मल्लक कृति । एहि अध्यायमे हिनक रचनाक आधारपर हिनका बहुभाषाविज्ञ कहल गेलनि अछि । हिनक रचनामे संस्कृत, प्राकृत, मैथिली, नेवारी, बंगला ओ ब्रज-अवधीक प्रयोग भेटैत अछि । नेवारीमे हिनक ग्रन्थ अछि **'अश्वशास्त्र टीका'** तथा संस्कृतमे सेहो ई ज्यौतिष, कामशास्त्र, संगीतशास्त्रक, ग्रन्थक अतिरिक्त अनेक पद्यक रचना कयने छथि, जकर उल्लेख ग्रन्थकार कयने छथि । तत:पर ग्रन्थकार हिनक मैथिली कृति सभक परिचयात्मक टिप्पणी प्रस्तुत कयने छथि । ग्रन्थकार जगज्ज्योतिर्मल्ल रचित **मुदित कुवलयाश्व, हरगौरी विवाह, कुञ्जविहार, षोडशगीतम्, दण्डपाणि उत्पत्ति नाच** एवं **दशावतार नृत्यम्** नाटकक संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करैत एकगोट ऐतिहासिक भ्रान्तिकेँ निर्मूल करबाक आयोजन कयलनि अछि । ई ऐतिहासिक भ्रान्ति रहल अछि मुदित कुवलयाश्व नाटककेँ वंशमणिक कृति मानब । एहि भ्रान्तिक कारण रहल अछि एहि नाटकमे प्रस्तावनामे नाट्यवस्तु निर्देशक क्रममे वंशमणिक परिचय सहित उल्लेख । मुदा ग्रन्थकार सूत्रधारक कथन **श्रीवंशमणि उझाञे कएल, जे मोञे कहि अएलहु तन्हिहि** एहि वाक्यांशक आधारपर ई सिद्ध कयलनि अछि जे सूत्रधारक उक्तिक तात्पर्य बहराइछ जे अभिनेय नाटकक कथानक वंशमणिक तद्विषयक कृतिपर आधारित अछि । एतावता ई कृति जगज्ज्योतिर्मल्लक थिकनि से निर्विवाद भऽ गेल अछि ।

तत:पर ग्रन्थकार जगज्ज्योतिर्मल्लक गीत संग्रह सभक संक्षिप्त परिचयक क्रममे **गीतपञ्चाशिका, गीतसंग्रह, नानारागगीत संग्रह, नवरस संगीत, नादोत्पत्तित्यादि भाषा संगीतम्, राग भजन संग्रह** एवं **नाना राग** आदि संकलनक स्वरूपक वर्णन कयने छथि जाहिसँ जगज्ज्योतिर्मल्लक गेय पदावलीक परिचय भेटि जाइत अछि । अन्तमे ग्रन्थकार जगज्ज्योतिर्मल्लक सर्वथा अनधीत कृति **कीचक वध : वर्णनात्मक काव्य**क उल्लेख ओ परिचय दऽ एहि अध्यायक समापन कयलनि अछि । एहि अध्यायमे ग्रन्थकारक बहुश्रुति ओ सूक्ष्म पर्यवेक्षणक प्रवृत्ति उद्घाटित भेल अछि जे मैथिली साहित्येतिहासक अनुसन्धान-आलोचनाक क्षेत्रमे मार्गदर्शक ओ नियामक कहल जा सकैत अछि ।

Scanned by CamScanner

परवर्त्ती अध्यायमे शास्त्रीय आलोचना पद्धतिक आधारपर जगज्ज्योतिर्मल्लक नाटक सभक प्रस्तावना, समापन, अंक विभाजन, अभिनय शैली, जमनिका, अर्थोपक्षेपक, कथोपकथन आदिक विश्लेषणपूर्वक समस्त नाट्यकृतिक वस्तुक उल्लेख करैत वैशिष्ट्यक विवेचन भेल अछि । एहि अध्यायमे लेखकक रुझान शास्त्रीय आलोचना पद्धति दिस छनि ।

ग्रन्थक चारिम अध्याय जगज्ज्योतिर्मल्लक गीतकाव्यक विवेचन-विश्लेषणपर आधारित अछि । एहिमे गीत सभकेँ राग-भास, भाषा-अलंकार, भावपक्ष, रसपक्ष, युगव्यवहार आदिक सन्दर्भमे परेखल गेल अछि जाहिसँ जगज्ज्योतिर्मल्लक गेय काव्यक वैशिष्ट्य उद्घाटित भेलनि अछि ।

एहि ग्रन्थक पाँचम ओ अन्तिम अध्यायमे जगज्ज्योतिर्मल्लक भक्तिभावनापर विस्तारपूर्वक चर्चा करैत ग्रन्थकार हिनका एक गोट विशिष्ट शैव कविक रूपमे प्रतिष्ठापित कयलनि अछि । ग्रन्थकारक उक्ति छनि जे– **ओ केवल नेपालीय शैव साहित्येमे नहि प्रत्युत समस्त मैथिली शैव साहित्यमे अत्युच्च स्थान रखैत छथि ।**

ग्रन्थक अन्तमे परिशिष्ट रूपमे जगज्ज्योतिर्मल्लक अनुभूत सत्य ओ सूक्ति सभ संकलित अछि । सार्वकालिक ओ सार्वजनीन एहि उक्ति सभक संकलनसँ ग्रन्थक उपादेयता आर बढ़ि गेल अछि ।

एतावता डा. रामदेवझा कृत जगज्ज्योतिर्मल्ल विनिबन्ध हिनका द्वारा रचित सजीवनी समालोचनाक क्षेत्रमे एक गोट नियामक ग्रन्थ सिद्ध भेल अछि जकरा माध्यमे मध्यकालीन नेपालीय मैथिली साहित्यक एक गोट ज्योति स्तम्भक नहि केवल समुचित परिचयेटा भेटैत अछि अपितु हिनक कृति सभक वैशिष्ट्यक निरूपणक संगहि साहित्येतिहासक विभिन्न भ्रान्तिक सेहो निराकरण भेल अछि । एहि ग्रन्थमे नहि केवल आलोचकक बहुज्ञता अपितु रचना सभक तहमे जाय ओकर सुवासकेँ उद्घाटित करबाक विवेचनात्मक गुणक निदर्शन भेटैत अछि । एहि ग्रन्थक रचनासँ बहुत पूर्वहि लेखक द्वारा अनुसन्धित ओ प्रकाशित **हरगौरीविवाह नाटकक** (1970) प्रस्तावनामे सेहो जगज्ज्योतिर्मल्लक संक्षिप्त सजीवनी समालोचना प्रस्तुत भेल छल । मुदा स्वतन्त्र ग्रन्थक अवतरणसँ जगज्ज्योतिर्मल्लसँ सम्बन्धित ओ प्रस्तावना आब गौण भऽ गेल अछि ।

जगत्प्रकाशमल्ल :

सजीवनी समालोचनाक क्षेत्रमे डा. रामदेवझाक तेसर अवदान थिकनि 'जगत्प्रकाशमल्ल' । एकर प्रकाशन भारतीय साहित्यक निर्माता, शृंखलाक विनिबन्धक रूपमे साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 1990 मे भेल । इहो ग्रन्थ मध्यकालीन नेपालीय मैथिली साहित्यक अन्य विशिष्ट स्तम्भक व्यक्तित्व ओ कृति पक्षकेँ समग्रतामे उजागर कयने अछि । एहिमे व्याख्यात्मक आलोचना पद्धतिक माध्यमे मैथिली साहित्येतिहासक अनेक अनभिज्ञात ओ अल्पज्ञात तथ्य सभकेँ प्रकाशमे आनल गेल अछि ।

ग्रन्थक प्रथम अध्याय 'जगत्प्रकाशमल्लक पूर्ववर्त्ती मैथिली साहित्यधारा' मे मध्यकालीन मैथिली साहित्यधाराक दुइ गोट प्रभेदक उल्लेख भेल अछि – अन्तरंग ओ बहिरंग । मिथिलावासी ओ मैथिलीभाषी साहित्यकारलोकनिक मैथिली रचनाकेँ अन्तरंग ओ मिथिलेतर प्रान्तमे विकसित मैथिली रचनाकेँ बहिरंग साहित्य कहल गेल अछि । बहिरंगो साहित्यकेँ पुनश्च दू भागमे विभाजित कयल गेल अछि –बंगाल, असम ओ उड़ीसामे विकसित मैथिल साहित्य किंवा ब्रजबूलि साहित्य तथा नेपालमे विकसित नेपालीय मैथिली साहित्य । ततःपर प्राक्विद्यापति साहित्यक चर्चा करैत ग्रन्थकार कहलनि अछि जे– **विद्यापतिक तिरोधानक पश्चात् मिथिला, बंगाल, उड़ीसा, असम एवं नेपालक कविगणक लेल विद्यापतिक काव्य प्रेरणादर्श बनल रहल तथा ओ लोकनि विद्यापतिक भाव, भाषा, भास, छन्द ओ उक्ति भंगिमाक एकात्म भावेँ अनुकरण-अनुसरण करैत रहलाह । एहिमे मिथिलेतर प्रदेशक मैथिली गीतकाव्य ओ नाट्य साहित्य-सम्पदा भेल : बहिरंग मध्य मैथिली साहित्य । बहिरंग मध्यकालिक मैथिली साहित्यक नेपालीय परम्परामे एकटा प्रमुख नाटककार ओ गीतकारक रूपमे जगत्प्रकाशमल्लक नाम अबैत छनि ।**

Scanned by CamScanner

दोसर अध्यायमे नेपालीय मैथिली साहित्यमे जगत्प्रकाशमल्लक स्थानक निरूपण भेल अछि । एहि अध्यायमे मिथिला ओ नेपालक साहित्यिक-सांस्कृतिक सम्बन्धक विवेचन करैत ग्रन्थकार नेपालक राजनीतिक इतिहासक आधारपर जगत्प्रकाशमल्लक वंश परम्पराक उल्लेख कऽ ई स्थापना देलनि अछि जे– **जगत्प्रकाशमल्ल नेपालक मैथिली साहित्यक विकासक्रमक मध्यवर्त्ती विन्दु थिकाह जे अपन पूर्ववर्त्ती काव्यपरम्पराकेँ आत्मसात कयल तथा परवर्त्ती साहित्य प्रवाहकेँ सशक्त ओ विस्तृत कयल ।**

तेसर अध्यायमे जगत्प्रकाशमल्लक परिवार ओ परिजनक उल्लेख भेल अछि । ग्रन्थकार अन्त:साक्ष्यक आधारपर जगत्प्रकाशक तीनगोट पत्नी ओ दुइ गोट पुत्र होयबाक उल्लेख कयलनि अछि । तथापि एहि अध्यायमे जगच्चन्द्रक भणिताक व्याख्या द्वारा जाहि तरहेँ ग्रन्थकार जगत्प्रकाशमल्ल ओ चान्दशेखरसिंहक अभिन्न मैत्रीभावकेँ प्रतिपादित कयलनि अछि, से हुनक सूक्ष्म दृष्टि ओ अनुसन्धान प्रज्ञाक परिचायक अछि ।

ग्रन्थक चारिम अध्याय थिक 'साहित्य-संगीत-कलाक क्षेत्रमे जगत्प्रकाशमल्लक योगदान' । एहि अध्यायमे विवरणात्मक शैलीमे जगत्प्रकाशमल्ल द्वारा निर्मित वास्तुशिल्प सभक उल्लेख कयल गेल अछि । संगहि हिनका गानविद्या ओ साहित्यविद्यामे निष्णात मानल जयबाक अन्त:साक्ष्य सभक विवेचन प्रस्तुत भेल अछि ।

पाँचम अध्याय थिक जगत्प्रकाशमल्लक 'जीवनिका' । एहिमे चारि वर्षक अल्पायुमे जगत्प्रकाशक राज्यारोहण, महामात्यक अभिभावकत्वमे शासन-संचालन, शिक्षा-दीक्षा आदिक संगहि चौंतीसे वर्षक अल्पायुमे हिनक मृत्युक उल्लेख भेल अछि । ग्रन्थकार हिनक व्यक्तित्व पक्षकेँ उजागर करैत कहने छथि जे– **अल्पहु जीवनकालमे सर्वथा विपरीत राजनीतिक परिस्थितिमे संघर्ष करैत, भक्तपुरक मर्यादाकेँ सुरक्षित कयल, राज्यक ऊपर होइत आक्रमणक प्रतिरोध कयल, शासनकेँ सुव्यवस्थित कयल, अपन मेधावितासँ विविध विषयक ज्ञानार्जन कयल, अपन प्रतिभाक अवदानसँ साहित्यकेँ समृद्ध कयल, कला ओ संगीत क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण योगदान कयल तथा आरम्भिक अवस्थासँ अपन ज्येष्ठ पुत्र ओ भावी उत्तराधिकारी जयजितामित्रमल्लकेँ समुचित शिक्षा-दीक्षा ओ राज्यशासनक प्रशिक्षण दऽ ततबा योग्य बना देल जे ओ भविष्यमे नेपाल उपत्यकाक प्रौढ़ शासकक रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह ।** एही क्रममे युद्धग्रस्त जगत्प्रकाश ओ श्रीनिवासमल्लक पारस्परिक सन्धि ओ श्रीनिवासमल्लक सम्मानमे जगत्प्रकाशक नाट्यरचना ओ तकर अभिनय करयबाक उल्लेख भेल अछि ।

छठम अध्याय थिक 'जगत्प्रकाशमल्लक कृति ओ भाषा' । एहि अध्यायमे जगत्प्रकाशमल्लकृत बारह गोट नाटकक उल्लेख भेल अछि आ हुनक गीतावलीपर आधारित दुइ गोट आर नाटकक प्रणयनक सम्भावना व्यक्त कयल गेल अछि । एही अध्यायमे जगत्प्रकाशक एकल किंवा जगत्प्रकाशक गीतक संग अन्यान्यो कविक गीतसँ सम्बन्धित आठ गोट संग्रहक उल्लेख भेल अछि । एहिसँ ई स्फुट होइछ जे जगत्प्रकाशमल्लक साहित्य संसार विराट छलनि । अध्यायक अन्तमे ग्रन्थकार जगत्प्रकाशक भाषा प्रयोगपर विचार कयलनि अछि आ हुनका संस्कृत, नेवारी, मैथिली ओ ब्रजभाषामे निपुण साबित कयलनि अछि ।

सातम अध्यायमे जगत्प्रकाशमल्लक नाटक सभक वस्तुविन्यास उल्लिखित भेल अछि तथा ओकरा सभक रचना शैलीपर विमर्श कयल गेल अछि । ग्रन्थकार एहि नाटक सभक आधार स्रोतपर विशद् विवेचन कयलनि अछि तथा रसविन्यासक दृष्टिजे सेहो एकरा सभक विश्लेषण कयलनि अछि । ग्रन्थकारक सप्रमाण निष्कर्ष छनि जे **शृंगार, वीर, रसान्वित होइतहुँ जगत्प्रकाशक नाटकसभक रस परिपाक अन्ततः शान्त रसहिमे देखि पड़ैत अछि ।**

आठम अध्यायमे जगत्प्रकाशक गीतविधाक शास्त्रीय आलोचना कयल गेलनि अछि । हिनक गीतकेँ दुइ प्रभेदमे बाँटल गेलनि अछि – नाट्य गीत ओ मुक्तक गीत । नाट्यगीतमे नान्दी गीत, पुष्पांजलि गीत, राजवर्णना गीत, नगर वर्णना गीत, स्तुति गीत, वैराग्य भावक गीत, प्रवेश गीत, निस्सार गीत, संवाद गीत, वर्णनात्मक गीत आदि प्रकार भेद अछि जे पुनश्च लघु गीत, पूर्ण गीत ओ उत्तर-प्रत्युत्तरपरक दण्डक गीतमे विभक्त कयल गेल अछि । पुनश्च

Scanned by CamScanner

रसाभिव्यंजनाक दृष्टिञे हिनक गीतक दुइ कोटि कहल गेल अछि- शृंगार गीत ओ भक्ति गीत । शृंगारो गीतक पुनश्च अनेक भेदोपभेदक उल्लेख ओकर आलम्बन ओ आश्रयक आधारपर कयल गेल अछि । तथापि ग्रन्थकार जाहि विशिष्ट गीत संग्रहक प्रति विशेष अभिभूत देखि पड़ैत छथि से थिक **गीत पंचक** जकरा शोककाव्य कहल जा सकैछ । मध्यकालीन मैथिली साहित्यक दृष्टिञे ई गीतसंग्रह सर्वथा अनुपम अन्वेषण थिक ।

अन्तमे उपसंहारमे जगत्प्रकाशमल्लक नाटक ओ गीतक कतोक विशेषताक वर्णन कऽ ग्रन्थकार हुनक रचनामे उपलब्ध सूक्तिक संकलनक संग ग्रन्थक समापन कऽ देलनि अछि ।

एहि तरहेँ एहि सजीवनी समालोचनात्मक ग्रन्थक माध्यमे मध्यकालीन नेपालीय मैथिली साहित्यक एक गोट अन्यतम नाटककार ओ गीतकारक सम्बन्धमे समग्रतामे विवेचन-विश्लेषण उपस्थित कऽ ग्रन्थकार मैथिली साहित्येतिहासक कतोक अस्पृष्ट तथ्यकेँ उजागर करबामे सक्षम सिद्ध भेल छथि ।

उमापति :

सजीवनी समालोचनाक क्षेत्रमे डा. रामदेवझाक चारिम अवदान थिकनि **उमापति** शीर्षक शोधग्रन्थ । ई ग्रन्थ मध्यकालीन नाटककार उमापतिक व्यक्तित्व ओ कृतिपक्षक विश्लेषण प्रस्तुत करैत अछि । एकर ग्रन्थाकार संस्करण मैथिली अकादमी, पटना द्वारा 1980 मे प्रकाशित भेल ।

एहि ग्रन्थक प्रस्तावनामे उद्धृत विचारक आधारपर ग्रन्थक उद्देश्य उमापतिक आश्रयदाता, स्थितिकाल ओ परिचयक सम्बन्धमे एकवाक्यता स्थापित करब छल । मुदा वस्तुतः ई ग्रन्थ मध्यकालीन कीर्त्तनिञा नाटकमे सर्वप्रमुख ओ सर्वाधिक लोकप्रिय नाटक **पारिजातहरण**क प्रणेता उमापतिक समग्रतामे विवेचन-विश्लेषणसँ सम्बन्धित अछि । एकर माध्यमे ग्रन्थकार मैथिली साहित्यक इतिहासलेखनक कतिपय भ्रान्तिकेँ दूर कऽ विवेचित नाटककारक सम्बन्धमे वृहत्तर परिप्रेक्ष्यमे विचार समुपस्थित कयलनि अछि ।

उमापतिक आश्रयदाताक रूपमे पारिजातहरणक प्रस्तावनामे हिन्दूपति हरिहरदेवक उल्लेखक आधारपर ग्रियर्सन हुनक आश्रयदाता कर्णाटवंशीय हरसिंहदेवकेँ मानने छलाह जनिक समय चौदहम शताब्दी छनि । पं. चेतनाथझा हुनका भपटियाहीक निकट नेपालमे स्थित मकमानी राजाक आश्रित मानने छलाह जनिक समय अठारहम शताब्दी छलनि आ प्रसिद्ध इतिहासकार डा. जयकान्तमिश्र हुनका बुन्देलखंडक राजा हिन्दूपतिसिंहक आश्रित मानने छलाह जनिको समय अठारहम शताब्दी छनि । डा. रामदेवझा एहि अवधारणा सभपर प्रमाण-पुरस्सर विचार करैत ओ उमापतिक गीतेक अन्तःसाक्ष्यक आधारपर पं. चेतनाथझाक मतक समर्थन कऽ एहि विषयमे प्रचलित समस्त भ्रान्तिकेँ दूर करैत एकरा सर्वमान्य बनौलनि । लेखक परिजातहरण नाटकक दोसर नान्दी श्लोकमे प्राप्त **'मैथिलेश'** पदकेँ प्रक्षेप सिद्ध कयलनि अछि । मैथिली साहित्यक इतिहासलेखनक दृष्टिञे हिनक ई अन्वेषणात्मक कार्य मैथिली साहित्यकेँ हिनक अनुपम देन थिक । साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीसँ प्रकाशित मैथिली साहित्यक इतिहास ग्रन्थमे डा.जयकान्तमिश्र, डा.झाक एहि स्थापनाक अनुमोदन कयने छथि ।

एही क्रममे ग्रन्थकार उमापतिक समय निर्धारण नेपालक राजनीतिक इतिहासक आधारपर सोलहम शताब्दीक अन्तिम चरणसँ लऽ कऽ सत्रहम शताब्दीक तेसर चरण धरि कयलनि अछि । संगहि ओ उमापतिक वासस्थानक सम्बन्धमे प्रचलित द्वैध जे ओ मंगरौनीक निवासी छलाह कि कोइलखक, तकरो निदान विभिन्न अन्तःसाक्ष्यक आधारपर कऽ देलनि अछि । उमापतिक पितृकुल ओ मातृकुलक परिचय सेहो अन्तःसाक्ष्य सभक आधारपर व्याख्यात भेल अछि ।

ततःपर ग्रन्थकार मकमानी राजसभामे मैथिली भाषा-साहित्यक स्थितिक अन्वेषणपूर्वक कतोक एहन गीत सभक दृष्टान्त प्रस्तुत कयलनि अछि जे मकमानी राजा किंवा हुनक आश्रित कविलोकनिक भनितामे उपलब्ध अछि तथा प्रमाणित करैत अछि जे वस्तुतः एहि राजमे मैथिलीक गतिविधि वर्त्तमान छलैक । उमापतिक कृतिक विश्लेषणक क्रममे

Scanned by CamScanner

ग्रन्थकार नहि केवल हिनका **पदार्थीयदिव्यचक्षु** नामक न्याय ग्रन्थक प्रणेता सिद्ध कयलनि अछि अपितु हिनक कतोक स्फुट गीत सभक सेहो अन्वेषण कऽ मध्यकालीन मैथिली साहित्यक ज्ञानक अभिवृद्धि करौलनि अछि । ग्रन्थकार उमापतिक कतोक गीतक आधारपर हिनकामे अनेक मैथिली नाटकक प्रणयनकर्त्ताक सम्भावनाकेँ अभिव्यक्त कयलनि अछि । हुनक स्पष्ट मान्यता छनि जे– **परन्तु आब जहिना-जहिना उमापतिक सम्बन्धमे गम्भीर अध्ययन करैत गेलहुँ अछि, तहिना-तहिना हुनक आरो नाट्यकृति होयबाक सम्भावना गाढ़ होइत जा रहल अछि ।** ग्रन्थकार उमापतिक पन्द्रहगोट स्फुट गीत ओ अपना लग प्राप्त पारिजातहरणक हस्तलेखमे ग्रथित दुइ गोट नव गीतकेँ संकलित कऽ एहि ग्रन्थकेँ अत्यन्त उपयोगी बना देलनि अछि । पारिजातहरणक मुद्रित ओ हस्तलिखित प्रति सभक सूचना प्रदान कऽ लेखक परवर्त्ती अन्वेषकलोकनिक मार्गकेँ प्रशस्त कऽ देलनि अछि । ग्रन्थान्तमे उमापतिक काव्यवैशिष्ट्यपर सेहो ग्रन्थकार अतिसंक्षिप्त विवरण दऽ देलनि अछि जाहिमे एहि नाटककारक भाव, भाषा, अभिव्यक्ति-पद्धति, अलंकारयोजना, माधुर्य गुण, आदिक उल्लेख मात्र भेल अछि ।

ग्रन्थकार एहि ग्रन्थक उद्देश्य उमापतिक परिचय प्रस्तुत करब कहने छथि आ तकरा समग्रतामे निर्वाह कयने छथि । तथापि उमापतिक काव्य प्रतिभा, हुनक काव्यक शास्त्रीय विश्लेषण-मूल्यांकन, पारिजातहरणक ऐतिहासिक महत्त्वक प्रतिपादन ओ नाट्यशास्त्रीय समीक्षा जकरा एहि गन्थमे समेटल नहि जा सकल तकरा हेतु अपन बाध्यताक उल्लेख कयने छथि । यद्यपि एहि विषय-वस्तु सभक विश्लेषणसँ उमापति सम्बन्धी ई ग्रन्थ आर बेसी उपादेय भऽ सकैत छल मुदा एहिमे जतबे विषयक प्रस्तुति भऽ सकल से साहित्यान्वेषीकेँ निरन्तर अनुप्रेरित करबाक हेतु मार्गदर्शक बनल रहल अछि ।

नन्दीपति :

डा. रामदेवझा द्वारा अनुसन्धित ओ सम्पादित-प्रकाशित **नन्दीपति गीतिमाला** (1965) ग्रन्थक भूमिका भागमे नन्दीपति शीर्षसँ एक गोट निबन्ध अनुगुम्फित अछि जकरा सजीवनी समालोचना कहल जा सकैछ । एहि निबन्धक आरम्भहिमे मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे नन्दीपतिक स्थान निरूपण करैत हुनका उमापति, रमापति ओ मनबोधक समकक्ष कहल गेलनि अछि ।

तत:पर नन्दीपतिक रचनावलीपर विचार कयल गेल छनि तथा हुनक उपलब्ध कीर्त्तनिञा नाटक **कृष्ण केलिमाला**क अतिरिक्त एक गोट दोसर नाटक **कदम्ब केलिमाला**क सेहो उल्लेख भेल अछि । हुनक गीतावलीक आधार पर लेखकीय संकल्पना अभिव्यक्त भेल अछि जे नन्दीपतिक एक गोट नाटक **रुक्मिणीपरिणय** अभिधानसँ सेहो प्राप्त होयबाक चाही । एही ठाम लोकजीवनमे हिनक गीतावलीक प्रसारक सेहो उल्लेख भेल अछि ।

सजीवनी समालोचना पद्धतिक अनुसरण करैत लेखक नन्दीपतिक परिचयक क्रममे हुनक वंशावली प्रस्तुत कयने छथि । नन्दीपतिक वंशावलीक स्थिरीकरण हेतु ओ हुनक नाटकमे प्रदत्त प्रस्तावनामे सूत्रधारक मुँहसँ वर्णित कवि-वंशावली तथा आचार्य रमानाथझा द्वारा उपलब्ध कराओल गेल पञ्जी प्रबन्धक आधार लऽ कऽ इतिहासकार डा. जयकान्तमिश्रक एहि अवधारणाकेँ निरस्त कयलनि अछि जे नन्दीपतिक पिता कवि कृष्णपति, हरिपतिक (नन्दीपतिक पितामह) भ्राता छलाह । एहिसँ नन्दीपतिक कालनिर्धारणक त्रुटिक मार्जन भऽ सकल । लेखक नन्दीपतिक वंशक विद्वत्परम्परा ओ कवि प्रवृत्तिक उद्घाटन करैत ई सिद्ध करबाक प्रयास कयने छथि जे नन्दीपतिक कवि प्रवृत्ति हुनका आनुवंशिक अवदान छलनि ।

तत:पर लेखक नन्दीपतिक कालनिर्धारणक हेतु अनेक तथ्यक उल्लेख करैत हुनक आविर्भाव काल अठारहम शताब्दीक पहिल दशक निर्धारित कयने छथि । एही क्रममे पुत्रत्व प्राप्तिक अभावमे नन्दीपतिक विरक्तिक उल्लेख करैत लेखक ई मान्यता स्थापित करबाक सामग्री प्रस्तुत कयने छथि जे नन्दीपति राज्याश्रयकेँ बेसी महत्त्व प्रदान नहि कयलनि जकर कारणेँ हुनक गीत सभमे बहुधा राज्याश्रयक उल्लेखक अभाव अछि ।

Scanned by CamScanner

समालोचनाक क्रममे लेखक नन्दीपतिक अनेकानेक उपनाम होयबाक उल्लेख कयने छथि यथा कवि कोविद, कलानिधि, निधि, बादरि आदि भणितासँ युक्त रचनाकेँ हिनके मानने छथि । एहिसँ निधि, बादरि आदि नामधारी पृथक् कविक सत्तापरक ऐतिहासिक त्रुटिक मार्जन भऽ गेल अछि । अनन्तर लेखक गीतिमालामे संकलित गीतक औचित्यक विवेचन कऽ एहि समालोचनात्मक निबन्धक समापन कयलनि अछि । तथापि एहि निबन्धमे जतेक लेखकक जीवन-वृत्त पर प्रकाश देल गेल अछि ततेक हुनक कृतिपर नहि । स्वभावत: ई सजीवनी समालोचना एकभगाह ओ अनुसन्धान कोटि मात्रक कहल जा सकैछ ।

जीवनझा :

डा. रामदेवझाक सजीवनी समालोचनाक क्षेत्रमे छठम अवदान थिकनि **कविवर जीवनझा रचनावली**क पूर्वरंग । एहिमे आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रथम नाटककार पं. जीवनझाक जीवन ओ कृतिकेँ समग्रतामे परखबाक प्रयास भेल अछि । ग्रन्थ मैथिली अकादमी, पटना द्वारा 1980 मे प्रकाशित भेल ।

एहि वृहत्तर निबन्धमे डा. झा व्याख्याताक आलोचना पद्धतिक अनुसरण कयने छथि । ग्रन्थकार आलोच्य नाटककारक अन्तरात्मामे प्रविष्ट भऽ अत्यन्त सहृदयतापूर्वक हुनक आदर्श, उद्देश्य ओ विशेषता सभक उत्खनन कयने छथि । हिनक ई आलोचना वस्तुनिष्ठ अछि । आरम्भमे आलोचकक कहब उचिते छनि जे– **हम मानैत छी जे आधुनिक मैथिली साहित्यक शीर्षस्थ निर्मातृगणमे कविवर जीवनझाक स्थान अक्षुण्ण छनि । कवीश्वर चन्दाझा आधुनिक मैथिली साहित्यक जनक थिकाह । परन्तु हुनका पश्चात् मैथिली साहित्यकेँ सर्जनात्मक दिशा प्रदान कयनिहार कविवर जीवने झा भेलाह ।**

एहि निबन्धक माध्यमे कविवर जीवनझाक स्थितिकालक विवाद शमित भेल अछि । एहिसँ पूर्व आचार्य रमानाथझा जीवनझाक जीवनकाल 1856–1920 कहने छलाह ओ प्रसिद्ध इतिहासकार डा.जयकान्तमिश्र हुनक जीवनकाल 1848–1912 मानैत छलाह । निबन्धकार **मिथिलामोद**क समाचार एवं **सुन्दर संयोग**क भूमिकामे उल्लिखित अन्त:साक्ष्यक आधारपर डा. जयकान्त मिश्रेक अवधारणासँ प्रमाण पुरस्सर सहमति जतौने छथि जाहिसँ एहि क्षेत्रमे पसरल भ्रान्तिक निराकरण भऽ गेल अछि ।

एहि निबन्धसँ पूर्व कविवर जीवनझाक सम्बन्धमे तथ्यात्मक विवरणक सर्वथा अभाव छल । डा. रामदेवझा प्रथमत: हुनक मूल नाम, वासस्थान, शिक्षा, वृत्ति आदिक सम्बन्धमे एकत्रैव सूचना प्रदान करैत हुनक आनुर्वंशिकीक स्थितिकेँ सेहो स्पष्ट कयलनि । संगहि निबन्धकार कविवर जीवनझाकेँ चारि गोट नाटक ओ किछु स्फुट गीतक रचनाकारक रूपमे प्रतिष्ठापित कयलनि एवं ओकरा सभक प्राप्त अंशकेँ सम्पादित कऽ प्रकाशित करौलनि ।

निबन्धकार **मैथिल हितसाधन**क आधारपर **मैथिली सट्टक**क प्रकाशित अंशकेँ एहि निबन्धमे संरक्षित कऽ ई निर्विवाद निष्कर्ष प्रदान कयलनि अछि जे– **'मैथिली सट्टक'क एहि अंशसँ अनुमान होइत अछि जे एकर विषयवस्तु प्राय: जनकक प्रतिज्ञासँ आरम्भ कऽ सीताक विवाह धरि रहल होयत । एहिठाम जे गीत उद्धृत अछि ताहिसँ एतबा तँ स्पष्ट होइत अछि जे कविवर जीवनझा, चन्दाझाक वैषयिक अनुसरण कयने छलाह ।**

निबन्धकार मैथिली सट्टकक आधारपर एहि अवधारणाकेँ सम्पुष्ट कयने छथि जे एहिसँ सीताविषयक नाट्यरचनाक एकटा परम्पराक निर्माण भेल जाहिमे सूर्यनारायणमिश्र कृत **जानकी नाटक**, आनन्दझा कृत **सीता-स्वयंवर नाटक** एवं ठाकुरप्रसादझा कृत **सीता परिणय** नाटक अबैत अछि । तथ्यक सम्पुष्टिक हेतु निबन्धकार तत्कालीन परिवेशमे कीर्त्तनिञा नाटकक ह्रासक बाद ओकर मंडली सभक रामलीलाकेँ व्यवसाय रूपमे अंगीकार कऽ समस्त उत्तर भारतक यात्रा करबाक बाध्यताक उल्लेख कयने छथि । निबन्धकारक उक्ति छनि जे– **एहि रामलीला सभमे जनकपुरलीला विशेषत: सीता स्वयंवर अत्यन्त मधुर ओ मनोहर प्रसंग मानल जाइत छल । मिथिलावासी मैथिलीभाषी रामलीला मंडली**

Scanned by CamScanner

सभ रामलीला अभिनयमे जनकपुर लीलाक प्रकरणमे पात्रक कथ्य भाषाक रूपमे मैथिली भाषाक प्रयोग करैत छल। विशेषतः सीताक मुखसँ उच्चरित मैथिलीक माधुर्यसँ अमैथिली भाषी दर्शकगण विभोर भऽ जाइत छलाह। अनेक ठाम समस्त लीलामे सेहो सीताक कथ्य भाषा मैथिली रहैत छल, सर्वथा प्रासंगिक छनि।

निबन्धकारक सुविचारित मत छनि जे– **कविवरक कार्यक्षेत्र बनारसक रामनगर स्टेट छलनि जे रामलीलाक विशिष्ट ओ स्थायी केन्द छल। ओहि रामलीलामे मैथिली स्वादयुक्त जनकपुरलीला देखबाक बेर-बेर अवसर भेटैत रहलनि। ओहिसँ प्रेरित भऽ कऽ सीताचरित्रकेँ विशेषतः सीतापरिणयक कथाकेँ अपन नाट्य वस्तु बनौलनि।**

ततःपर निबन्धकार जीवनझाक दोसर नाटक **सामवती-पुनर्जन्म**क मौलिक होयबाक स्थापना कयने छथि आ एहि सम्बन्धमे पं. जीवछमिश्रक ओहि उक्तिक खण्डन कयने छथि जाहिमे ओ जीवनझाक एहि नाटककेँ अम्बिकादत्त व्यास कृत संस्कृत नाटक **सामवतम्**क अनुवाद कहने छलाह। एहि हेतु निबन्धकार सामवतम् नाटकक पौराणिक मूल स्रोत आ व्यासजीक नाटकक संक्षिप्त कथावस्तुक उल्लेख करैत जीवनझाक रचनाकेँ सर्वथा मौलिक कृति साबित कयने छथि। अंकविभाजन, पात्रयोजना, चरित्र चित्रण आदिक आधारपर अकाट्य तर्क सबहिक द्वारा तुलनात्मक विवेचन करैत डा. झा अपन स्थापनाकेँ आधार प्रदान कयलनि जे सर्वथा समीचीन अछि ओ सर्वमान्य भेल अछि।

ततःपर निबन्धकार सुन्दर संयोगक रचनाकाल ओ विविध संस्करणपर अन्वेषणात्मक टिप्पणी दैत **नर्मदासागर सट्टक**क मोदसँ प्राप्त अंशहिकेँ पूर्ण कहने छथि जकरा युक्तियुक्त मानल गेल अछि।

एहि निबन्धमे निबन्धकारक ऐतिहासिक समालोचनापरक दृष्टिकोण अत्यन्त सूक्ष्म ओ सारगर्भित छनि। निबन्धकार तत्कालीन सामाजिक, साहित्यिक ओ सांस्कृतिक परिस्थितिक परिप्रेक्ष्यमे कविवर जीवनझाक समयमे प्रचलित विभिन्न आदर्श ओ उद्देश्यक परीक्षण अत्यन्त सूक्ष्म रीतिएँ कयने छथि। निबन्धकारक ई निष्कर्ष अत्यन्त समीचीन छनि जे– **मैथिल समाजमे काटर प्रथा, जाति-पाँजिक नामपर कन्याक ऊपर होइत अन्याय एवं अन्य सामाजिक कुप्रथा सभपर प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपेँ नाटककार जे आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखलनि अछि तकरा की सर्वथा अस्वीकार कऽ देल जाय?'** ग्रन्थकारक चिन्तनपरक ओ सुविचारित धारणा छनि जे– **नाटककार समाजक ओहि मानसिक स्थितिक चित्रण कयलनि अछि जे जाति-पाँजि, कुलीनता, बिकौआ प्रथा इत्यादिक आधारपर प्रचलित बहुविवाह ओ पत्नी-परित्याग सन विकृतिसँ उत्पन्न होइत छल। जीवनझा एहि परिस्थितिकेँ नीक जकाँ देखने छलाह। एकर दुष्प्रभावक अनुभव कयने छलाह। समाजक ओही परिवेशमे कन्या पक्षक विशेषतः परिणीता कन्याक मानसिक अन्तर्द्वन्द्वकेँ सुंदर संयोगमे अभिव्यक्त कयलनि। समाजक सोझा सुन्दरमिश्र सन आदर्श पुरुषकेँ प्रस्तुत कयलनि।'**

डा. रामदेवझाक एहि निबन्धमे कविवर जीवनझाक रंगमंचक सम्बन्धमे अवधारणा ओ ओकर नवनिर्माणक सम्बन्धमे परिकल्पनाक सेहो सविशेष विश्लेषण भेल अछि। एहि सम्बन्धमे हुनक उक्ति छनि जे– **ई कहब उपयुक्त नहि जे ओ केवल मैथिलीक प्राचीन नाटकक गीतक महत्त्वकेँ स्वीकार कयलनि, नवीनताक नामपर मैथिली संवाद ओ सामाजिक नाट्य वस्तुक समावेश कऽ सन्तुष्ट भऽ गेलाह। मिथिला मोद ओ मैथिल महासभाक देशोन्नति आन्दोलनसँ प्रेरित नहि भेलाह। कोनो नवीन रंगमंचक सर्जन नहि कऽ सकलाह।'** अनन्तर हुनक निष्कर्ष छनि जे– **कविवर जीवनझा कीर्त्तनिञा रंगमंचक क्षयिष्णु स्वरूप, पारसी थियेटरक लोकप्रियता, रामलीलाक रंगस्थली ओ अभिनय शैली आदिक आधारपर अभिनव रंगमंच निर्माणक दिशामे प्रयत्न आरम्भ कयलनि। तदनुरूप ओ अपन चारू नाटकक प्रणयन कयलनि।'** एहि हेतु निबन्धकार नाटकक शास्त्रीय पद्धति, कीर्त्तनिञा अभिनय शैली ओ पारसी रंगमंचक नाट्यशैली आदिकेँ दृष्टिपथपर रखैत जीवनझाक नाट्यशैलीक विवेचन कयलनि, जे सर्वथा अभिनव चिन्तन थिक। निबन्धकारक सूक्ष्म दृष्टि जीवनझाक नाटकक भाषा प्रयोगक विश्लेषणमे सेहो देखि पड़ैत अछि। खास कऽ कविवरक भाषामे संक्षिप्त क्रियापद, संश्लिष्ट क्रियापद, विकारीक प्रयोग आदि लोकधर्मिताकेँ इंगित कऽ निबन्धकार जीवनझाक शिल्प-शैलीक कतोक विशिष्ट तत्त्व सभकेँ उद्घाटित कऽ देलनि अछि।

ई निबन्ध मैथिलीक सजीवनी समालोचनाक क्षेत्रमे नियामक एवं जीवनझाक उत्खननक प्रथम सफल प्रयास

Scanned by CamScanner

रहत । डा. प्रेमशंकरसिंह प्रणीत ओ मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित विनिबन्ध **जीवनझाक** हेतु ई ग्रन्थ आधारभूत सिद्ध भेल छल ।

जनार्दनझा जनसीदन' :

सजीवनी समालोचनाक क्षेत्रमे डा. रामदेवझाक सातम अवदान थिकनि **जनार्दन झा जनसीदन** । ई ग्रन्थ भारतीय साहित्यक निर्माता श्रृंखलामे साहित्य अकादेमी द्वारा 1998 मे प्रकाशित भेल । ई विनिबन्धक शैलीमे लिखल गेल अछि । विनिबन्धक विषय 'जनसीदन'जीकेँ आधुनिक मैथिली कथासाहित्यक प्रवर्त्तक, उपन्यास विधाक पुरोधाक रूपमे मानल जाइत रहलनि अछि ।

ग्रन्थक आरम्भमे **अवतरणिका**मे उनैसम शताब्दीक उत्तरार्द्धकेँ भारतीय साहित्यमे पुनर्जागरणक कालक रूपमे व्याख्यात करैत कहल गेल अछि जे एही कालकेँ मैथिलीओमे पुनर्जागरण अनबाक श्रेय छैक । एही कालमे कवीश्वर चन्दाझा, जीवनझा ओ परमेश्वरझा सदृश रचनाकारलोकनि मैथिली क्षेत्रमे अवतीर्ण भऽ एकर साहित्यमे आधुनिकताक सूत्रपात् करौलनि । हिनकेलोकनिक कड़ीक एकगोट विशिष्ट रचनाकारक रूपमे जनसीदनजीक चर्च करैत ग्रन्थकार हुनका उपन्यास ओ कथाक अभिनव विधाक प्रवर्त्तकक रूपमे प्रस्तावित कयलनि अछि ।

ग्रन्थक दोसर अध्याय **जीवनिका**मे एकर नामक अनुरूप एहिमे जनसीदनजीक जीवनचर्यापर प्रकाश देल गेल अछि । ग्रन्थकार जनसीदनजीक जीवनचर्याकेँ प्रामाणिक रूपेँ प्रस्तुत कयलनि अछि । एहि हेतु ओ कुशेश्वरकुमर रचित प्रशस्ति वाक्य, जनसीदनजीक स्वरचित आत्म परिचय तथा हुनक पुत्र हरिमोहनझा एवं पौत्र मनमोहनझा द्वारा प्रदत्त सूचना सभकेँ प्रामाणिक माननलनि अछि । तदनुसार जनार्दनझाक पूर्वज कोइलख ग्रामक मूलवासी छलाह । पछाति हिनक पितामह बेचनझा अपन मातृक वीरसायरमे बसि गेल छलाह । हुनक पुत्र नाथझाक दोसर विवाह भेलनि कुमर वाजितपुरक श्रीसम्पन्न चन्द्रमणिकुमरक कन्या लालवतीसँ जनिक एक पुत्र ओ तीन कन्याक पछाति दोसर पुत्र भेलथिन जनार्दनझा । परवर्त्तीकालमे नाथझाक मृत्यु भेला उत्तर सौतिनक उत्पीड़नसँ हारि लालवती अपन नेनाक संग अपन नैहर कुमर वाजितपुर चल अयलीह आ परवर्त्तीकालमे यैह जनसीदनक वासस्थल बनल ।

ग्रन्थकार लिखलनि अछि जे जनसीदनजी स्कूली शिक्षाक परिवेशक अभावमे ज्ञानप्राप्तिक उत्साहक बलेँ संस्कृत शिक्षा दिस अभिमुख भेलाह, हाजीपुर जाय ज्योतिषशास्त्रक अध्ययन कयलनि, व्याकरण ओ साहित्यक अध्ययन सेहो ओतहि विभिन्न शिक्षकलोकनिसँ कयलनि आ स्वाध्यायक बलपर ब्रजभाषा, हिन्दी ओ अँग्रेजीमे निष्णात भऽ गेलाह । क्रमशः आयुर्वेद ओ बंग भाषाक ज्ञान सेहो प्राप्त कयलनि । सर्जनात्मक प्रतिभाक विकास भेला उत्तर ई काव्य रचना सेहो करऽ लगलाह ।

तत:पर जनार्दनझा बैरगिनिञा, सुरसंड, धुबौली आदिक प्राइमरी स्कूलमे शिक्षकक वृत्ति धारण कयलनि आ मुजफ्फरपुर स्थित जैतपुरमे संस्कृत शिक्षकक रूपमे नियमित नियुक्ति प्राप्त कयलनि । परवर्त्तीकालमे अपन कवि प्रवृत्तिक कारणेँ श्रीनगर स्टेटक राजा कमलानन्दसिंहक सान्निध्यमे साहित्य विषयक आप्त सचिवक रूपमे नियुक्त भेलाह । एही क्रममे जनसीदनजीक महावीरप्रसादद्विवेदी संग परिचय ओ **सरस्वती**मे हुनक रचना निरन्तर छपबाक उल्लेख भेल अछि जाहिसँ जनसीदनजीक परिचिति हिन्दी जगतमे बनि सकल छलनि । ग्रन्थकार **रजत जयन्ती स्मारक ग्रन्थ**मे संकलित पत्रक आधारपर ई सिद्ध कयने छथि जे द्विवेदीजीक पत्रावलीसँ जनसीदनजीक प्रतिभा आ परिचयक शोषण होयबाक आरोप सर्वथा असत्य अछि । परवर्त्तीकालमे जनसीदनजी इण्डियन प्रेस, प्रयागमे जीविकापन्न भेलाह मुदा रुग्ण भऽ गाम चलि अयलाह आ कतोक बंगला ग्रन्थक अनुवाद कयलनि । पछाति किछु दिन हाइस्कूलक शिक्षकक वृत्ति कयलाक उपरान्त **मिथिला मिहिर**मे संयुक्त सम्पादकक रूपमे नियुक्त भेलाह । तीन वर्षक बाद मिथिला मिहिर छोड़ि कलकत्ता चल गेलाह आ ओतऽ अनेक बंगला ओ संस्कृत ग्रन्थक अनुवाद कयलनि । पाँच वर्षक कलकत्ता प्रवासक बाद जनसीदनजी पटना ओ दरभंगाक विभिन्न प्रेससँ जुड़ि ओकरा सभकलेल अनेक ग्रन्थक प्रणयन कयलनि । एही क्रममे गिद्धौर राज्यक

Scanned by CamScanner

सम्पर्कमे आबि **राज्यवंशावली** शीर्षक संस्कृत ग्रन्थ ओ ओकर हिन्दी टीका लिखलनि । तत:पर दु:खित भेलाक बाद गामेपर रहि साहित्य साधना करऽ लगलाह । एहि तरहेँ जनसीदनजीक सम्पूर्ण जीवन एकटा साहित्यजीवीक जीवन रहल जकरा ग्रन्थकार साङ्गोपाङ्ग रुपायित करैत, हुनक पत्र-लेखन कलाक व्याख्या करैत, रुचि आदिक सेहो वर्णन कयलनि अछि जे सभटा विवरणात्मक शैलीमे प्रस्तुत भेल अछि ।

एहि ग्रन्थक दोसर अध्याय अछि **साहित्य साधना** । एहि अध्यायमे जनसीदनजीक साहित्य लेखनकेँ तीन कालखण्डमे बाँटल गेल अछि- प्रवृत्ति काल, कृति काल ओ निवृत्ति काल । हिनक प्रवृत्ति काल 1903सँ 1909 इसवी धरि रहल जाहिमे ई समस्या पूर्त्ति, मुक्तक काव्य ओ दीर्घ काव्य सभक रचना कयलनि तथा विद्यापतिक **पुरुष परीक्षा**क हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत कयलनि । 1910 सँ 1933 इ.क मध्य जनसीदनजीक साहित्यरचना हिनक साहित्यिक उत्कर्षक काल छल जाहिमे ई पचीस गोट बंगला कृतिक हिन्दी अनुवाद एवं साहित्येत्तर विषयक पोथीक अनुवाद कयलनि तथा मैथिलीमे रचना करबाक हेतु प्रविष्ट भेलाह । 1933 क बाद मृत्यु पर्यन्त ई स्वान्त:सुखाय विविध विषयक पोथीक रचना करैत रहलाह । ग्रन्थकार एहि अध्यायमे हिनक मैथिलेत्तर पोथी सभक यथोपलब्ध ओ सूचित पोथीक नाम प्रस्तुत कयने छथि जाहिसँ जनसीदनजीक प्रौढ़ साहित्यिक स्वरूप ठाढ़ होइत छनि ।

तेसर अध्याय थिक **मैथिली साहित्यमे अवदान** । एहिमे एहि तथ्यक उल्लेख भेल अछि जे 1910 इसवी धरि मैथिली लेखनसँ जनसीदनजीकेँ जुड़ल नहि पाओल जाइछ, मुदा तत:पर ओ एहि दिशामे निरन्तर गतिशील देखि पड़ैत छथि । ग्रन्थकार साहित्यिक जगतमे प्रगणित एहि मान्यताकेँ सप्रमाण खण्डित कयलनि अछि जे जनसीदनजीकेँ हिन्दी जगतमे पर्याप्त सम्मान नहि भेटलनि तेँ ओ मैथिली दिश अभिमुख भेल होयताह । ग्रन्थकार जनसीदनजीक मैथिली रचनासभक आधार पर ई सम्पुष्ट कयलनि अछि जे- **उपन्यास, कथा, निबन्ध ओ कविता सन सर्जनात्मक विधामे अपन अमूल्य योगदानसँ ओ मैथिली साहित्यकेँ समृद्ध कयलनि । ततबहि नहि, मैथिली पत्रकारितामे सेहो हिनक योगदान महत्त्वपूर्ण अछि ।**

ग्रन्थकार **सरस्वती**मे प्रकाशित हिनक निबन्ध **मैथिल समाज की वैवाहिक परिपाटी** ओ ताहिपर उत्पन्न विवादक उल्लेख कऽ हिनक सुधारवादी प्रवृत्तिकेँ उजागर कयलनि अछि । **मोद**मे प्रकाशित हिनक निबन्ध **मैथिल समाजसँ निवेदन**क प्रकाशित भागक सविशेष उल्लेख करैत ग्रन्थकारक ई प्रमाण पुष्ट निष्कर्ष छनि जे- **विभिन्न सामाजिक विषयक निबन्ध सभमे अभिव्यक्त विचारधाराक निदर्शन रूपमे जनार्दनझा अनेकश: उपन्यासक रचना कऽ मैथिली साहित्यमे अभिनव विधाक प्रतिष्ठापक भेलाह जकर रूप, विषय ओ भाषाक अनुसरण कतोक दशक धरि होइत रहल ।**

एही अध्यायमे मैथिली पत्रकारितामे जनसीदनजीक योगदानक चर्चा भेल अछि आ ग्रन्थकार ई सूचित कयलनि अछि जे **मिहिर**मे मैथिली भाषाकेँ विशेष स्थान प्रदान करबामे ओ ओकर स्तरक सुधारबाक संगहि लोकप्रिय मैथिली रचनावलीक प्रकाशनमे हिनक योगदान विशिष्ट छलनि ।

एही अध्यायमे जनसीदनजीक वंशपरम्पराक द्वारा तीन पीढ़ी धरि लगातार मैथिली साहित्य लेखनमे अत्युच्च स्थान रखबाक चर्च करैत हरिमोहनझा, राजमोहनझा ओ मनमोहनझाक उल्लेख भेलनि अछि ।

चारिम अध्याय **उपन्यास**मे जनसीदनजीसँ पूर्वक मैथिली गद्य साहित्यक विहंगालोकन करबैत **मोहिनी मोहन**केँ मैथिलीक प्रथम उपन्यासक रूपमे प्रतिष्ठापित कयल गेल अछि । तत:पर ग्रन्थकार जनार्दनझाक मैथिली उपन्यास रचनाक कौशलक प्राप्ति हुनका द्वारा अनूदित उपन्यास सभक माध्यमे होयबाक चर्चा कयलनि अछि । ग्रन्थकारक स्पष्ट आ सुचिन्तित निष्कर्ष छनि जे- **अपन मातृभाषा मैथिलीकेँ समृद्ध करबाक हेतु ओ साहित्य सर्जनक माध्यमसँ अपन समाजकेँ मध्यकालीन रूढ़ि, कुप्रथा, कुत्सित परम्परा, अज्ञानता ओ अशिक्षासँ मुक्तिक दिशामे अग्रसर होयबाक सन्देश देबाक उद्देश्यसँ जनसीदनजी उपन्यास लेखन आरम्भ कयलनि ।**

एहि अध्यायमे जनार्दनझा द्वारा रचित **सती सर्वस्व, निर्दयी सासु, शशिकला, पुनर्विवाह** ओ **द्विरागम रहस्य**क

Scanned by CamScanner

संक्षिप्त कथावस्तु देल गेल अछि तथा हिनक **कलियुगी संन्यासी** वा **ढकोसलानन्द** उपन्यासक सम्बन्धमे डा.जयकान्त मिश्रक उक्तिक अनुसार ओकर प्रहसन होयबाक वस्तुस्थितिक ने तँ खंडने कयल गेल अछि आ ने मंडने । एहिसँ ग्रन्थकारक ई प्रवृत्ति द्योतित होइत छनि जे अपन आलोचकक धर्मक निर्वाह करैत ओ कोनो निर्णय बिना वस्तुक अवलोकन कयने नहि करैत छथि । ग्रन्थकार जनसीदनजीक समस्त उपन्यासक वस्तुविन्यास, वर्णन, संवाद, भाषा चरित्र-चित्रण ओ उद्देश्य आदिक विवेचन कऽ अपन स्फीत दृष्टिक परिचय देलनि अछि ।

पाँचम अध्यायमे जनसीदनजीक कथा विधाक विवेचन भेल अछि । हिनक एकमात्र कथा **ताराक वैधव्यकेँ** ग्रन्थकार मैथिलीक प्रथम कथाक रूपमे आख्यात कयलनि अछि तथा ओकर संक्षिप्त कथावस्तु दैत ई निष्कर्ष प्रदान कयलनि अछि जे- **जनार्दनझाक ताराक वैधव्य कथामे आधुनिक कथाक लक्षण सभ सम्यक् रूपमे विद्यमान अछि । सुगठित कथानक, चरित्रचित्रणमे वैशिष्ट्य, सन्तुलित संवाद, वातावरण ओ परिवेशक रोचकता, चरम परिणतिक अभिज्ञानक औत्सुक्य, प्राञ्जल ओ स्वाभाविक भाषा शैलीसँ ई कथा संबलित अछि जे कथामे स्थित कतिपय दुर्बल विन्दुकेँ आवृत कऽ दैत अछि । आधुनिक मैथिलीक एहि प्रथम कथामे जनार्दनझा सामाजिक यथार्थक प्रस्तुति द्वारा पाठकमे करुणा जगाय सामाजिक मनोवृत्तिमे परिवर्त्तन अनबाक हेतु प्रेरित करबाक सफल प्रयास कयलनि अछि ।'** अपन निरन्तर अनुसन्धानी प्रवृत्तिक कारणेँ ग्रन्थकार मैथिलीक प्रथम कथाक सम्बन्धमे स्थापित अपन एहि मान्यताकेँ **मंडन निकेत**, दिसम्बर 2005 मे प्रकाशित जलधरझाक **विलक्षण दाम्पत्यक** प्रकाशनपूर्वक खण्डित कऽ आलोचकक हंसवृत्तिक परिचय देलनि अछि आ **ताराक वैधव्यक** प्रथम कथा होयबाक मान्यताकेँ निरस्त कऽ देलनि अछि ।

छठम अध्यायमे जनार्दनझा रचित निबन्ध सभक विवेचन भेल अछि । मैथिलीक पुरान पत्रिकाक फाइल सभसँ ग्रन्थकार कतोक अल्पज्ञात-अज्ञात निबन्ध सभक अन्वेषणपूर्वक ई निष्कर्ष निकाललनि अछि जे- **वास्तवमे नारी समस्या जनार्दनझाक चिन्तनक प्रमुख विषय छलनि । लेखक समाजक बहुतो समस्याक कारण समाजमे व्याप्त नारीवर्गक उपेक्षा, प्रताड़ना, अशिक्षा, बालविवाह, अनमेल विवाह, बहुविवाह इत्यादिकेँ मानैत तकर निराकरणक दिशामे प्रबुद्ध वर्गकेँ उद्बोधित करबाक प्रयत्न कयलनि अछि ।** अन्यान्य निबन्ध **मिथिलाक महत्त्व, सामयिक वसन्तवर्णन, प्रेम** अथवा **प्रेमविवेचन** आदिक उल्लेख करैत ग्रन्थकार ई सिद्ध कयलनि अछि जे आलोचनात्मक दृष्टिकोणक संगहि प्रमाणपुरस्सर तार्किक प्रतिपादन जनार्दनझाक निबन्धक वैशिष्ट्य छलनि ।

सातम अध्यायमे जनसीदनजीक **काव्य विधापर** विमर्श भेल अछि । ग्रन्थकार हिनक काव्य सभकेँ पाँच वर्गमे विभक्त कयलनि अछि- भक्तिभाव, नीति-उपदेश, भूमि-भाषा, समाजसुधार तथा सामाजिक व्यंग्य ओ देशदशा विषयक तथा एहि पाँचो प्रकार भेदक सोदाहरण प्रस्तुतिक संग समीक्षापूर्वक ई निरुपित कयलनि अछि जे- **समग्रतामे देखला उत्तर निष्कर्ष रूपमे कहि सकैत छी जे जनार्दनझा 'जनसीदन'क कविता वस्तुनिष्ठ ओ वर्णनात्मक होइत छनि । हिनक कवितामे समसामयिकताक रंग विशेष गाढ़ रहैत छनि । समसामयिक परिवेश ओ परिस्थिति, जाहिमे संवेदनाक तत्त्व रहैत अछि से हिनक काव्यक मुख्य उपादान रहैत छनि । एहिसँ कविताक दीर्घजीविताक क्षति होइत छैक अवश्य, किन्तु ओकर रचनाकालक परिप्रेक्ष्यमे देखला उत्तर ओकर जीवन्तता ओ महत्त्वकेँ स्वीकार करऽ पड़ैछ ।'**

अन्तमे उपसंहारमे ग्रन्थकार जनसीदनजीक अभ्यर्थना करैत लिखलनि अछि जे- **जनसीदनजी मिथिलाक रत्न तँ छलाहे, मैथिलीक विभूति तँ छलाहे, किंतु प्रान्त भरिक ओ साहित्यिक मर्यादाक रक्षक छलाह । एहन आजीवन मसिजीविता व्रतानुष्ठानी अक्षरपुरुष जनार्दनझा 'जनसीदन'क जीवन ओ कृति भावी पीढ़ीक साहित्य सर्जनक पक्षमे प्रेरणादर्श ओ मार्गदर्शक रहत ।**

ग्रन्थक परिशिष्टमे **ताराक वैधव्य** कथाकेँ अविकल रूपेँ समाहित कऽ देल गेल अछि ।

एहि तरहेँ आलोचक विवरणात्मक शैलीमे जनसीदनक व्यक्तित्व ओ कृतित्व पक्षकेँ समग्रतामे सप्रमाण समुपस्थित करबामे सफल भेलाह अछि ।

Scanned by CamScanner

सीतारामझा :

डा. रामदेवझाक सजीवनी समालोचनाक क्षेत्रमे हिनक आठम अवदान थिकनि **कविवर सीतारामझा** । ई एक गोट आलेख थिक जे 1977 मे मैथिली अकादमी द्वारा आयोजित एक गोट गोष्ठीमे पढ़ल गेल छल आ पश्चात कालमे **स्मृति सन्ध्या** नामक सम्पादित ग्रन्थमे संकलित कयल गेल ।

एहि आलेखमे आलोचनाक व्याख्यात्मक सरणिक उपयोग कयल गेल अछि । आलेखकार वर्ण्य कविक आदर्श, उद्देश्य ओ विशेषता सभक व्याख्या ओ विश्लेषण-विवेचन कयलनि अछि । एहिमे कविक प्रेरणाक मूल स्रोत, जीवन ओ काव्य आदिक वर्णन कऽ ओकरे सभक आलोकमे हुनक कृति सभक परीक्षण ओ मूल्यांकन कयल गेल अछि ।

आलेखक आरम्भमे सर्वप्रथम लेखक आधुनिक युगक मैथिली साहित्यकारलोकनिक दायित्वक चर्च करैत ओहि दायित्वक निर्वहणक दृष्टिएँ आधुनिक मैथिलीक वरेण्य कवि सीतारामझाक प्रशस्तिक वर्णन कयलनि अछि । तत:पर हुनक जीवन-वृत्तिपर विचार कयल गेल अछि । जीवनवृत्तिक वर्णनक क्रममे सीतारामझाक मातृक सहोड़ा होयबाक तथ्यक विज्ञापन आलेखकारक सूक्ष्म अनुसन्धित्सु प्रवृत्ति एवं स्वमातृकक प्रति स्नेहक प्रतीक छनि । एही क्रममे ई दर्शाओल गेल अछि जे प्रथम श्रेणीमे अपर परीक्षा उत्तीर्ण भेलाक उपरान्त आर्थिक विपन्नताक कारणेँ सीतारामझाकेँ अध्यापन वृत्ति आरम्भ करऽ पड़लनि, मुदा से खानगी शिक्षकक रूपमे, कारण अल्पवयसक कारणेँ हुनका सरकारी नोकरी प्राप्त नहि भऽ सकलनि । परिणामत: ओ संस्कृत शिक्षा दिस उन्मुख भेलाह आ अपन प्रतिभा ओ आशुकवित्वक बलेँ नेहरा गामक उदितनारायणचौधरीसँ व्यय पाबि काशीमे उच्च शिक्षा प्राप्त करबाक अवसर पौलनि । क्रमश: ई ज्योतिषाचार्य ओ धौतपरीक्षोत्तीर्ण भऽ पण्डितक रूपमे गण्य भऽ गेलाह । अखिल भारतीय प्रतिष्ठा प्राप्त एहि पण्डितक चतुर्दिक सम्मान होअऽ लगलनि । यद्यपि संस्कृत शिक्षा सैह हिनक वृत्तिक साधन रहलनि मुदा स्वभाषा उन्नतिक प्रति दत्तचित्त सीतारामझा निरन्तर मैथिलीमे रचनाशील रहलाह । ऐतिहासिक आलोचना पद्धतिक अनुसरण कऽ आलेखकार सीतारामझाक मैथिली गतिविधिक कारणभूत तत्त्वक अनुशीलन करैत ई निष्कर्ष निकाललनि अछि जे तत्कालीन परिवेशमे बंगालीलोकनिक स्वभाषा प्रेमसँ अनुप्राणित भऽ कविवर सीतारामझा मैथिलीक प्रति प्रतिबद्ध भेल छलाह । आलेखकारक स्पष्ट आ उचिते मान्यता छनि जे– **कविवरक रचनाक माध्यम भाषा मैथिलीक अतिरिक्त संस्कृत ओ खड़ी बोली हिन्दी सेहो छलनि । परन्तु ओ हुनक शास्त्रे धरि सीमित छल । ज्योतिषशास्त्र विषयक रचना, सम्पादन, टीका इत्यादि उक्त दुहू भाषाक माध्यमसँ भेल । ओ हुनक व्यवसायक भाषा छलनि, ज्ञानचर्चाक भाषा छलनि, अर्थोपार्जनक भाषा छलनि । परन्तु कवि-कर्मक भाषा, भावाभिव्यक्तिक भाषा, समाजक हृदयक तारमे झंकार उत्पन्न करऽवला भाषा छलनि मातृभाषा मैथिलीये ।**

सीतारामझाक रचना तत्त्वक विवेचन करैत लेखक कहने छथि जे– **हास्य-व्यंग्य शैली, सरल ओ प्रसादगुण युक्त ठेठ ओ देशज शब्द बहुल भाषा, सामाजिक विरूपताक उद्घाटन, नवीनताक आग्रहक संग संस्कृति ओ आचारक रक्षाक प्रवृत्ति, देश-दशा ओ सामाजिक स्थितिक आलोचनात्मक वर्णन, उद्बोधन ओ नैतिकताक प्रतिपादन जे कविवरक कविताक सहज धर्म मानल जाइछ से 'पढ़ुआ चरित्र तथा पूर्वापर व्यवहार'मे बीजरूपमे भेटैत अछि । परवर्त्ती रचना सभमे कविवर ओही बीज रूप गुण सभकेँ पल्लवित-पुष्पित कयलनि । एकर तात्पर्य ई नहि जे हिनक रचनामे अन्य प्रवृत्ति सभक समावेश नहि भेल । नव-नव गुण ओ भावराशि सेहो समाविष्ट होइत गेल परन्तु प्रधानता ओही तत्त्वक रहल जकर प्रथम दर्शन प्रथम प्रकाशित रचनामे भेल छल ।**

तत:पर लेखक सीतारामझाक पद्य रचनाकेँ दुइ कोटिमे विभाजित कयने छथि -शास्त्रात्मक ओ पद्यात्मक । **पर्व निर्णय, अतीचार निर्णय, गीता तत्त्व सुधा** तथा शास्त्रात्मक पद्यक अन्तर्गत **व्यवहार विवेक** वा **यात्रा सगुन विचार**, **पर्व निर्णय**, **अतीचार निर्णय**, **गीता तत्त्व सुधा** तथा **याज्ञवल्क्य स्मृति**केँ राखल गेल अछि एवं ओकर सभक वैशिष्ट्यक वर्णन कयल गेल अछि । काव्यात्मक पद्य मध्य **सूक्ति सुधा**क शृंखलामे प्रकाशित **रत्न संग्रह**, **लोकलक्षण**, **उपदेशमाला**; **पढ़ुआ चरित्र तथा पूर्वापर व्यवहार**क संगहि **सूक्ति सुधा**क शृंखलामे प्रकाशित **रत्न संग्रह, लोकलक्षण, उपदेशमाला; पढ़ुआ चरित्र तथा पूर्वापर व्यवहार**क संगहि **उनटा बसात**, **मैथिली काव्य षट्रस** ओ **मैथिली काव्योपवन**केँ **भूकम्प वर्णन, शिक्षा-सुधा, मैथिली परिचय दर्पण, उनटा बसात, मैथिली काव्य षट्रस** ओ **मैथिली काव्योपवन**केँ

Scanned by CamScanner

राखल गेल अछि । लेखक हिनक दुइ गोट काव्य ग्रन्थ **विदुरोक्त उपदेशामृत** ओ **समयोचित पदावली** तथा तीन गोट काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ **अलंकार दर्पण** (शब्दालंकार), **अलंकार दर्पण** (अर्थालंकार) एवं मैथिली **छन्दोऽलंकार मंजूषाक** उल्लेख करैत सीतारामझा रचित **अम्बचरित** महाकाव्योक चर्च कयने छथि । तत:पर कविक रचनावली सभक परिचयपूर्वक वैशिष्ट्य सभक उद्घाटन कयल गेल अछि । एही क्रममे लेखक सीतारामझाक कतोक विकीर्ण कविता सम्बन्धी सूचना प्रदान कऽ अपन अनुसन्धानी प्रवृत्तिक परिचय देलनि अछि तथा कतोक अल्पज्ञात ओ अज्ञात तथ्यकेँ प्रकाशमे आनि सीतारामझाक कवि-व्यक्तित्वकेँ सम्पूर्णतामे प्रकट करबाक दिस उन्मुख भेल छथि ।

एहि आलेखमे लेखकक विवेचनात्मक प्रतिभा हिनका द्वारा सीतारामझाक रचनावलीक वैज्ञानिक विभाजनमे सेहो प्रकट भेलनि अछि । एहि विभाजनक अनुसार सीतारामझाक समस्त रचनाकेँ तीनखण्डमे राखल गेल अछि- मुक्तक काव्य, विवरणात्मक वा इतिवृत्तात्मक काव्य तथा प्रबन्धात्मक काव्य । अन्तमे लेखक शास्त्रीय आलोचना पद्धतिसँ सीतारामझाक अम्बचरित महाकाव्यक विवेचन कयलनि अछि तथा ओकर रचनाक उद्देश्यपर गहन चिन्तनपरक निष्कर्ष प्रदान कयलनि अछि जे– **कविवरक समस्त रचनाकेँ देखला उत्तर ई तथ्य स्फीत होइत अछि जे ओ मातृपदक प्रति अत्यधिक श्रद्धालु छलाह । स्वजननीसँ लय मातृभूमि, मातृभाषा, ओ जगज्जननी धरि सब मातृपदमे अन्तर्भुक्त अछि । मैथिली भाषामे मिथिलाक महान कन्या जगज्जननी जानकीक चरितगान कऽ एकहि संग मातृपद बोधित जानकी, मातृभूमि मिथिला, मातृभाषा मैथिली ओ माताक प्रति श्रद्धार्पणक अवसर पाबि गेलाह । एही समानान्तरमे एकटा सार्वभौम नारी चरित्रक रूप प्रतिष्ठित करब कविक उद्देश्य छलनि । से मिथिलेमे किएक, समस्त भारतमे, समस्त हिन्दू इतिहासमे सीतासँ बढ़ि आदर्श नारी पात्र दोसर कोन भऽ सकैत छल ? एहन विश्वविश्रुत नारी जकर उद्भव मिथिलामे भेल छल हो तकर चरित कीर्त्तन मिथिला भाषामे, मिथिलाक समाजक लेल एक मैथिल कवि द्वारा होयब नितान्त अपेक्षित छल जकरा कविवर पूर्ण कयलनि ।**

एहि तरहेँ लेखकक सजीवनी समालोचनापरक आलेख 'कविवर सीतारामझा' हिनक व्यक्तिवादी आलोचना प्रणालीक दृष्टान्त अछि जाहिमे कविवरक व्यक्तित्व ओ कृतित्व समग्रतामे परीक्षण ओ मूल्यांकन कविक भावनाक संग तादात्म्यपूर्वक कयल गेल अछि । परवर्त्तीकालमे एहि आलेखक परिणति डा. भीमनाथझा द्वारा रचित **सीतारामझा** विनिबन्धमे भेटैत अछि जे भारतीय साहित्यक निर्माता श्रृंखलामे साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित भेल । एहि विनिबन्धक रचनाक्रममे डा. भीमनाथझाकेँ उपरिचर्चित समालोचनात्मक आलेखसँ पूर्ण सहायता भेटल छलनि । एकर उल्लेख हुनक विनिबन्धमे भेल अछि । स्वभावत: डा. रामदेवझाक ई आलेख सीतारामझापर परवर्त्ती अनुष्ठानक मार्गदर्शक बनल रहत, से स्वयंसिद्ध भऽ जाइत अछि ।

सुभद्रझा :

सजीवनी समालोचनाक क्षेत्रमे डा. रामदेवझाक सद्य: प्रकाशित विनिबन्ध थिकनि सुभद्रझा । इहो ग्रन्थ साहित्य अकादेमीक भारतीय साहित्यक निर्माता श्रृंखलामे रचित भेल अछि । एहि ग्रन्थमे विश्वप्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. सुभद्रझाक व्यक्तित्व ओ कर्त्तत्वकेँ समग्रतामे विवेचित-विश्लेषित कयल गेल अछि ।

ग्रन्थारम्भमे डा. सुभद्रझाकेँ मैथिली व्याकरणक महत्त्रयीक रूपमे प्रतिष्ठापित कयल गेलनि अछि आ एहि क्षेत्रमे प्रथम स्थान **जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन** तथा दोसर स्थान **दीनबन्धुझाकेँ** प्रदान कयल गेलनि अछि जे सर्वथा समीचीन अछि । एही क्रममे हिनका मातृभाषा मैथिलीक सम्मान ओ गौरवक रक्षार्थ बद्धपरिकर तथा गद्य साहित्यक निविष्ट रचनाकर्त्ताक रूपमे प्रतिष्ठापित कयल गेलनि अछि ।

मुख्य ग्रन्थ सात अध्यायमे विभक्त अछि । प्रथम अध्यायमे डा. सुभद्रझाक जीवन-वृत्तक प्रस्तुतीकरण भेल अछि । तदनुसार डा. सुभद्रझाक आरम्भिक जीवन अत्यन्त दयनीय परिस्थितिमे बीतल छलनि मुदा परिवारमे शिक्षाक प्रति घोर रुचि छलनि जकर फलस्वरूप ओ क्रमश: औपचारिक शिक्षा प्राप्त करैत अन्तत: कलकत्ता विश्वविद्यालयसँ

Scanned by CamScanner

हिन्दीमे एम.ए. कयलनि । पूर्वहुमे अपन प्रतिभाक प्रसादात् अनेकानेक पुरस्कार प्राप्त करैत हिनका पटना विश्वविद्यालयक रिसर्च स्कॉलरशिप प्राप्त भेलनि आ ई **मैथिली भाषाक उद्भव ओ विकास**पर अनुसन्धान कार्य आरम्भ कयलनि । डा. सुनीति कुमार चटर्जीक सान्निध्यमे सम्पन्न हिनक शोधप्रबन्धपर हिनका डी.लिट्क डिग्री प्रदान कयल गेलनि । पछाति ई पटना विश्वविद्यालयसँ **रिसर्च फेलोशिप** प्राप्त कऽ पेरिस विश्वविद्यालयमे उच्च शिक्षाक हेतु प्रस्थान कयलनि । क्रमशः ई अनेकानेक शैक्षणिक उपाधि ओ वृत्ति ग्रहण करैत अन्ततः वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालयक पुस्तकालयाध्यक्षक पदसँ सेवानिवृत्त भेलाह । सेवानिवृत्तिक बादो ई अनेक शैक्षणिक संस्थान सभसँ जुड़ल रहलाह तथा विविध पुरस्कार प्राप्त करैत रहलाह । **साहित्य अकादेमी**मे मैथिलीकेँ प्रविष्ट करयबामे हिनक अनुपम योगदान रहलनि । तथापि मैथिली क्षेत्रमे सुभद्रझाकेँ अड़ियल, अखड़ियल, लड़क्का, जिद्दी, सुराह, एकभगाह आदि विरुदसँ आवृत रहऽ पड़लनि । समालोचक हिनक व्यक्तित्वक समेकित आकलन करैत अन्ततः ई निष्कर्ष प्रस्तुत कयने छथि जे– **आडम्बरहीन आचार-विचार, आहार-विहार, बगय-बानि, सामान्य खद्धरक धोती-कुर्त्ता, क्वचित् छड़ी-छत्ता धारण कयनिहार सुभद्र बाबूक व्यक्तित्व अन्तःसलिला फल्गू सदृश छलनि, ऊपरसँ नीरस, रुच्छ, कचकच बालु भरल परन्तु बहुत भीतरमे रसत्व, तृप्तिदायकता, आह्लादकता भरल** । एतावता लेखक सुभद्रझाक व्यक्तित्वक ओहि तत्त्व सभकेँ समक्ष रखबाक प्रयास कयलनि अछि जे हुनक कारयित्री प्रतिभाक बाधक बनल रहल ।

ग्रन्थक दोसर अध्याय थिक **ग्रन्थ परिचय** । एहिमे सुभद्रझा द्वारा रचित ग्रन्थावलीक नामक परिगणन वैदिक, संस्कृत एवं प्राकृत वाङ्मयसँ सम्बद्ध ग्रन्थ, अँगरेजी भाषामे अनूदित ग्रन्थ, अंगरेजी रूपान्तर, अंगरेजीमे मैथिली भाषा-साहित्य विषयक ग्रन्थ ओ मैथिलीमे रचित चारि गोट मौलिक ओ दुइ गोट सम्पादित ग्रन्थक क्रममे कराओल गेल अछि । तदतिरिक्त हिनका द्वारा जाहि कृत कार्य सभक उल्लेख मात्र कऽ देल गेल अछि, से सभ थिक – **कादम्बरी**क मैथिली अनुवाद, फ्रेंच ग्रन्थ **वर्ड्स**क अनुवाद, **कबीरदासक मैथिली पदावली, लक्ष्मीनाथ गोसाँइक पदावली, धातुकोष** ओ **निरंजना शब्दकोष** इत्यादि ।

एहि ग्रन्थक तेसर अध्याय थिक **साहित्ययात्रा** । एहि अध्यायमे सुभद्रझाक लेखन यात्राक संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कयल गेल अछि ।

चारिम अध्यायमे सुभद्रझाक मैथिली कृति सभक व्याख्यात्मक परिचय प्रस्तुत भेल अछि । एहि अध्यायमे विवेचित कृति सभ थिक **प्रवास जीवन, यात्रा-प्रकरण-शतक, नातिक पत्रक उत्तर, मैथिली व्याकरण मीमांसा** एवं **विद्यापति गीत संग्रह** । एहिमे प्रथम तीनकेँ समालोचक सप्रमाण कवित्वमय गद्यकाव्यक अभिधान देलनि अछि, 'मैथिली व्याकरण मीमांसा'केँ मैथिली भाषा विषयक अनेक अभिनव तथ्यक भंडार कहलनि अछि मुदा 'विद्यापति गीत संग्रह'केँ सर्वथा निरुद्देश्य विज्ञापित कयलनि अछि । लेखकक सम्यक् तर्क छनि जे विद्यापति गीत संग्रहमे ने तँ सुभद्रझाक सम्पादनकलेक निदर्शन भेटैछ ने विद्यापति विषयक विशेषता आ ने भाषा तत्त्वज्ञतेक अवक्षेपण भेल अछि ।

पाँचम अध्यायमे निबन्धकार सुभद्रझाक गद्य शैलीक विश्लेषण कयने छथि । एहिमे हिनका मैथिलीक ठेठ शब्दक प्रयोगक प्रति आग्रही, वाग्धारा ओ चतकारक प्रयोगमे निपुण एवं विदेशज शब्दक मैथिलीकरणमे पटु कहल गेलनि अछि । अनेक ठाम ई हिन्दुस्तानी भाषाक शब्दग्रहण सहज रूपेँ कऽ लैत छलाह । हिनक वाक्य विन्यास कतहु अत्यन्त सरल तँ कतहु अत्यन्त संश्लिष्ट देखि पड़ैत छनि । अलंकृति हिनक भाविक सौन्दर्यक विशिष्ट अंग छलनि । अन्ततः समालोचक हिनक गद्यक आधारपर हिनका **गद्यक गीत कवि**क रूपमे प्रतिष्ठापित कयलनि अछि जकरा निबन्धकारक नीर-क्षीर-विवेकी समालोचकक प्रवृत्तिपरक अनुसन्धान बूझल जा सकैछ ।

एहि ग्रन्थक छठम अध्याय थिक **मैथिली विषयक अंगरेजी ग्रन्थ** । एहि अध्यायमे डा. सुभद्रझाक दुइ गोट ग्रन्थ क्रमशः **दि फॉर्मेशन ऑफ दि मैथिली लैंग्वेज** तथा **साँग्स ऑफ विद्यापति**क विवेचन-विश्लेषण भेल अछि । समालोचक 'दि फॉर्मेशन ऑफ दि मैथिली लैंग्वेज'क प्रत्येक अध्यायक वैशिष्ट्य ओ अभाव-अभियोगकेँ अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक निरूपित कयलनि अछि । एहिसँ नहि केवल एहि ग्रन्थक उपादेयता प्रमाणित भेल अछि अपितु मैथिली भाषाक अध्ययन

Scanned by CamScanner

क्षेत्रक आयामक विस्तार भेल अछि । समालोचक, तुलनात्मक अध्ययन पद्धतिक अनुसरण करैत नहि केवल सुभद्रझाक कतोक कथ्यक परीक्षण कयने छथि अपितु अनेक नव अवधारणा सभ सेहो प्रस्तुत कयने छथि जे समीचीनताक कारणेँ मैथिली भाषाविज्ञानक क्षेत्रमे हिनक योगदान मानल जा सकैछ । खास कऽ समालोचक मैथिली उपसर्ग ओ प्रत्ययपर सविशेष विमर्श प्रस्तुत कयलनि अछि । धातु गुच्छ, सुनिश्चित वर्ण गुच्छ, शब्द युग्म, सहचर शब्द आदिक विवेचनमे समालोचकक वस्तुनिष्ठता, विद्वत्ता ओ बहुश्रुति स्फुट भेलनि अछि ।

एही अध्यायमे विवेचित **साँग्स ऑफ विद्यापति**क आधारपर समालोचकक अनुसन्धानपरक निष्कर्ष छनि जे– **नेपाल पदावलीक बहुशः अपपाठक संशोधन ओ भ्रान्त पदच्छेद सभक परिहार डा. सुभद्रझाक एहि संस्करणमे सम्भव भऽ सकल अछि जाहिसँ विद्यापतिक दुर्बोध भऽ गेल उक्ति सभ सुबोध भऽ गेल अछि ।** समालोचक एहि ग्रन्थक भूमिकाकेँ मूल्यवान ओ ऐतिहासिक महत्त्वक कहने छथि आ ताही क्रममे ग्रन्थक वृहदाकार भूमिकाक विषयक सेहो परिचय प्रस्तुत कयने छथि जाहिसँ हिनक निविष्ट पाठकीयता एवं गम्भीर अध्ययनशीलताक परिचय भेटैत अछि ।

अन्तिम **कतिपय सम्पादित-अनूदित ग्रन्थ** शीर्षक अध्यायमे सुभद्रझाक **सर्वदेशवृत्तान्त संग्रह, धर्मशास्त्रीय व्यवस्थासंग्रह, प्राकृत चन्द्रिका, ए ग्रामर ऑफ द प्राकृत लैंग्वेज- रिचार्ज पिशेल, ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर-वॉल्यूम III** पर परिचयात्मक टिप्पणी प्रस्तुत भेल अछि । एहि ग्रन्थ सभक आधारपर सुभद्रझा अँगरेजीक अधीत विद्वानक रूपमे प्रस्तुत भेल छथि । ग्रन्थान्तमे सुभद्रझाक **नातिक पत्रक उत्तर** ओ **प्रवास जीवन**मे ग्रथित कतिपय सदुक्तिक संग्रह परिशिष्ट रूपमे कयल गेल अछि आ उपसंहारक संग ग्रन्थक समापन भेल अछि ।

एहि ग्रन्थमे आदिसँ अन्त धरि समालोचनाक निर्णयात्मक ओ मनोवैज्ञानिक पद्धतिक अनुसरण भेल अछि तथा समालोचक एक मोट उदात्त व्याख्याताक रूपमे आलोच्य व्यक्तित्व ओ हुनक कृतिकेँ पाठकक समक्ष प्रस्तुत करबामे सफल भेल छथि ।

निष्कर्ष :

एहि समस्त सजीवनी समालोचनामे डा. झा एकहि संग विशिष्ट अन्वेषक ओ समालोचकक रूपमे प्रस्तुत भेल छथि । ई हुनक व्यापक अध्ययनशीलतेक परिणाम थिक जे ई समस्त सजीवनी समालोचनामे विषयसँ सम्बद्ध अभिज्ञात सामग्रीक संकलन, व्यवस्थापन ओ तर्कसम्मत व्याख्या तँ करिते छथि अनभिज्ञात सामग्री ओ सूचनाक आधारपर अपन मतकेँ सुस्थिर कऽ ओकरा सर्वग्राह्य बनयबाक योग्यता प्रदान करैत छथि । हिनक ई समालोचना पद्धति नहि केवल कृति विशेषक समुचित अध्ययनपूर्वक ओकर गुण-दोषक विवेचनटा प्रस्तुत कयने अछि अपितु रचनाकारक व्यक्तित्व, ओकर सृजन-प्रक्रिया ओ तत्कालीन परिवेशक संगहि ओकर प्रभावक सेहो वर्णन कयने अछि । डा. झा सजीवनी समालोचनाक क्रममे बहुधा व्याख्यात्मक प्रणालीक अवलम्बन कयने छथि आ अत्यन्त सहृदयतापूर्वक लेखकीय आदर्श, उद्देश्य ओ विशेषताक व्याख्या ओ विवेचन कयने छथि । स्वभावतः हिनक आलोचना सर्वत्र न्यायसंगत देखि पड़ैत अछि । लेखक सदिखन आलोच्य विषयक प्रेरणाक मूल स्रोत तथा ऐतिहासिक ओ सामाजिक परिस्थितिक आकलनमे संलग्न देखि पड़ैत छथि । कखनो-कखनो ई तुलनात्मक पद्धतिसँ पूर्ववर्त्ती, समकालीन ओ परवर्त्ती काव्यधाराक संग आलोच्य कृतिक आकलन कयने छथि तँ कखनो शास्त्रीय सिद्धान्तक आधारपर कृतिक मूल्यांकन कयने छथि । हिनक सजीवनी समालोचनामे आलोच्य अवधिक राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक ओ सांस्कृतिक परिस्थितिक विश्लेषणक संगहि लेखकक जीवन ओ पारिवारिक परिस्थितिक आयाम सभक सेहो विश्लेषण भेल अछि । मुदा हिनक एहि प्रकृतिक समालोचनाक जे सर्वाधिक विशिष्ट गुण अछि से अछि सामान्यतः अनधीत-अस्पृष्ट विषयक चयन तथा ओकर समग्रता ओ प्रामाणिकताक संग वैज्ञानिक विवेचन जे हिनका एहि क्षेत्रक मार्गद्रष्टाक रूपमे प्रतिष्ठापित कयने रहलनि अछि । मैथिली साहित्यक इतिहासलेखन हिनक एहि प्रकारक कृति सभसँ रसग्रहण कऽ अनुप्राणित होइत रहल अछि ।

●

Scanned by CamScanner

डा. रामदेवझाक भूमिका लेखन

डा. श्रीभाग्यनारायणझा

कोनो ग्रन्थक विषयक परिचय करयबाक हेतु ग्रन्थक प्रारम्भमे प्रस्तुत कयल गेल वक्तव्य जाहिमे आगामी विषय-विवेचनक सामान्य रूपरेखा रहैत अछि, भूमिका नामे जानल जाइत अछि ।

साहित्य जगतमे भूमिका-लेखन एक विशिष्ट विधाक रूपमे प्रतिष्ठित भऽ गेल अछि । ओना भूमिका-लेखनक कोनो साहित्यशास्त्रीय सिद्धान्त नहि बनल अछि । जे किछु भूमिका-लेखनक परम्परा उपलब्ध अछि ओकरा ओहि भूमिका लेखकक स्वतन्त्र शैली कहल जा सकैत छनि । कोनो पोथीक वर्ण्य विषयक विवेचन अथवा एहि ब्याजेँ किछु नव तथ्यक अन्वेषण, किछु नवीन सिद्धान्तक प्रतिपादन, प्रचलित सिद्धान्तक खंडन-मंडन, प्रायः भूमिकामे एही तरहक प्रवृत्ति देखल जाइत अछि । कखनो अपन प्रभावी भूमिकेकेँ लऽ कऽ कोनो पोथी विशेष प्रसिद्धि प्राप्त कऽ लैत अछि । लेखक द्वारा कोनो प्रतिष्ठित विद्वानसँ अपन पोथीक भूमिका लिखयबाक परम्परा रहल अछि ।

भूमिका लिखब सहज बात नहि अछि । कोनो पोथीक भूमिका लिखबाक लेल पुस्तकक विषय वस्तुक मंथन, तटस्थता ओ समालोचकक दृष्टि राखऽ पड़ैत छैक । जनिकामे एहि सभ गुणक कमी रहैत छनि हुनक भूमिका ओतेक प्रभावी नहि भऽ पबैत अछि ।

डा. रामदेवझा मैथिलीमे विभिन्न विधाक पोथीक भूमिकाक लेखन अत्यन्त दक्षतापूर्वक करैत रहलाह अछि । हिनका द्वारा लिखिल विभिन्न पोथीक मात्र भूमिकाक अध्ययनसँ पता लगैत अछि जे ई कतेक निर्भीक, गम्भीर ओ अन्वेषी समालोचक छथि । हिनक भूमिका कोनो सामान्यो पोथीक महत्ताकेँ कतोक गुणा बढ़ा दैत अछि ।

हिनक भूमिका लेखनक शैलीक जँ विश्लेषण कयल जाय तँ किछु खास बात सभ दृष्टिगोचर होइत अछि । जेना, जाहि विधाक पोथीक ई भूमिका लिखैत छथि ओहि विधाकेँ मैथिलीक प्रकृति ओ प्रवृत्तिक अनुरूप एकटा सुनिश्चित परिभाषामे बन्हैत संक्षेपमे ओकर इतिहास कहि दैत छथि । एहि इतिहास प्रस्तुतिक क्रममे अनेक अभिज्ञात अभिनव तथ्यक समावेश करैत छथि, जाहिसँ हिनका द्वारा लिखल भूमिका स्वयंमे एकटा अनुसन्धानिक लेख भऽ जाइत अछि । हिनका द्वारा रचित भूमिकाक दोसर भाग सामान्यतः लेखकपर केन्द्रित रहैत अछि । तेसर भागमे पोथीक वर्ण्य विषय-वस्तुक संग-संग ओकर गुण-अवगुणपर विचार करैत छथि । एखन धरिक हिनक भूमिकाक लेखन शैलीक आधारपर ई कहब समीचीन प्रतीत होइत अछि जे हिनक भूमिकाक शैली साहित्यशास्त्रीय सिद्धान्त सदृश मानक भऽ गेल अछि । ई कहबामे कनेको तारतम्य नहि जे एकटा भूमिका लेखकक रूपमे ई साहित्यशास्त्रक आचार्य, इतिहासकार ओ समालोचक एहि तीनूक भूमिकाक निर्वहन एकहि संग करैत छथि । हिनक भूमिका पाठककेँ एकेठाम पोथी ओ लेखकक सम्पूर्ण कथ्य-तथ्यसँ परिचित करा दैत अछि । वस्तुतः हिनक भूमिका लेखनक पद्धति एक सुनिश्चित सिद्धान्तक रूपमे साहित्य जगतमे परिचिति बना लेलक अछि । ओना मैथिली साहित्य संसारमे बहुतो वरिष्ठ, कनिष्ठ साहित्यकार लोकनि साहित्य क्षेत्रमे अपन भूमिका लेखनक लेल चर्चित भेल छथि । किन्तु डा. रामदेवझा द्वारा लिखित भूमिकाक प्रतिपादन शैली ओ गद्य सर्वथा सभसँ भिन्न, विशिष्ट छापक रहैत अछि । जँ विभिन्न विद्वान द्वारा लिखित भूमिका सबकेँ अनामी कऽ कोनो साहित्य पारखीक समक्ष उपस्थित कयल जाइनि तँ ओ ओहि भूमिका सभक भीड़मेसँ हिनका द्वारा लिखित भूमिका शीघ्रहि फराक कऽ कहि देताह जे ई भूमिका डा. रामदेवबाबूक लिखल थिकनि ।

Scanned by CamScanner

डा. रामदेवझाक भूमिकाक भाषा सशक्त, कसौटीपर कसल, वैचारिकता ओ नवीन तथ्यसँ परिपूर्ण रहैत छनि। एहन विशेषता हिनक अधिकांश भूमिकामे देखल जाइत अछि। सोझ-सोझ, सरल भाषामे छोट-छोट वाक्यक संग गूढ़तम कथ्यकेँ बड़ सहजताक संग रखैत छथि जे अध्येताक मानस पटलमे जाऽ कऽ स्थायी रूपसँ बैसि जाइत अछि।

ई महाकाव्य, मुक्तक, गीत, कथा, उपन्यास, नाटक, शोध-समीक्षा, निबन्ध, आलोचना आदि विभिन्न विधाक पचाससँ अधिके पोथीक भूमिका लिखने छथि। एकर अतिरिक्त हिनक स्वरचित किंवा सम्पादित पोथी सभक सेहो भूमिका लिखल छनि, मुदा एहि आलेखमे हिनका द्वारा आनक पोथीपर लिखित भूमिका मात्रपर विचार कयल जायत।

रामदेवबाबूक भूमिका लेखनक अध्ययनक लेल एकर निम्न विन्दु सभपर विचार कयल जा सकैत अछि। यथा- (क) विधाक प्रसंग (ख) विधाक इतिहासक प्रसंग (ग) लेखकक प्रसंग (घ) पोथीक प्रसंग

(क) विधाक प्रसंग-

महाकाव्यक सम्बन्धमे अपन विचार दैत डा. रामदेवझा लिखैत छथि जे- **'महाकाव्य' समस्त काव्य प्रभेदमे श्रेष्ठ ओ प्रतिष्ठित विधा मानल जाइत रहल अछि। ई कोनहु कविक समग्र जीवनक अनुभव, ज्ञान, कविकर्म, पाटवक पुंजीभूत प्रतिफल होइत अछि। कोनहुँ भाषाक श्रेष्ठताक मापदण्ड होइत अछि, जे ओहि भाषामे कतबा परिमाणमे ओ कोन कोटिक महाकाव्यक रचना होइत रहल अछि।** (पाञ्चाली परिणय, दयाकान्तझा, पृ.-1)

मैथिली साहित्य मध्य रामकथापर आधारित दू गोट प्रबन्धकाव्य यथा-कविचन्द्र कृत **मिथिलाभाषा रामायण** आओर कविवर लालदासकृत **रमेश्वरचरित मिथिला रामायण** उपलब्ध अछि। रामकथाक प्रसंग रामदेव बाबूक कथन छनि जे- **फेरि गबै छी गओले गीत' साहित्यक क्षेत्रमे श्रेयस्कर प्रवृत्ति नहि मानल जाइत अछि, किन्तु यैह उक्ति रामकथाक सन्दर्भमे अर्थहीन भऽ जाइत अछि। रामकथा रामायण, होइत तँ अछि गओले गीत तथापि रामायणकर्त्ता कोनहु कवि तदर्थ आलोच्य नहि, स्तुत्य बनि जाइत छथि, अर्हणीय बनि जाइत छथि, रामक कथाक ई वैशिष्ट्य थीक आ भविष्यहुमे ई वैशिष्ट्य अक्षुण्णे रहत से सहज अनुमेय अछि।** (मिथिलाभाषा रामायण- भूमिका)

मिथिलामे भगवत भजनक रूपमे कीर्त्तनक प्राचीन परम्परा रहल अछि। डा. झा मिथिलामे प्रचलित कीर्त्तनक आधारपर ओकर वर्गीकरण ओ विश्लेषण निम्न रूपेँ कयने छथि- **मिथिलामे कीर्तनक दू प्रकारक प्रचलन अछि- विषय कीर्त्तन ओ प्रसंग कीर्त्तन। विषयकीर्त्तन ओकरा कहब जाहिमे विभिन्न देव-देवीक यथा- राम, कृष्ण, शिव, शक्ति, गणेश, हुनमान इत्यादिक स्तुति माहात्म्य प्रतिपादक पद सभक गान होइत अछि। पूर्वापर सम्बन्ध नहि रहैछ। समपद अपन विषय ओ छन्दादिमे स्वतन्त्र रहैत अछि। अवश्ये कीर्त्तनक आराम्भमे गणेशक वन्दना ओ अन्तमे हुनमान ओ नचारी-महेशवाणीक गान कयल जाइत अछि। प्रसंग कीर्त्तनमे कीर्त्तनाचार्य कोनो प्रसिद्ध धार्मिक कथाक वर्णन करैत छथि।** (अनमोल भजनावली, रमाकान्तशरण शास्त्री, भूमिका, पृ.-2)

भक्ति साहित्यक एही कड़ी मे डा. रामदेव बाबू **गंगाजल** नामक पोथीमे रास-भास शीर्षकक अन्तर्गत नचारीकेँ परिभाषित करैत कहलनि अछि जे- **डमरू बजा-बजा कऽ, नाचि-नाचि कऽ, गाबि-गाबि कऽ भक्तजन महादेवकेँ प्रसन्न करैत रहलाह, यैह थीक नचारी जे मिथिलाक ग्राम ग्राममे प्रचलित अछि।** (गंगाजल-रागभास)।

साहित्य जगतमे कथा ओ उपन्यासक बीचमे विभाजनकेँ लऽ कऽ जे भ्रामकता आलोचक लोकनि उत्पन्न करैत रहलाह अछि। तकर निवारण करैत डा. झाक सुस्पष्ट विचारकेँ देखल जा सकैछ अछि- **कथा ओ उपन्यासक तुलना करैत आलोचक लोकनि सहज भावसँ कथाकेँ उपन्यासक लघु रूप घोषित कऽ दैत छथि। परन्तु हमरा तँ लगैत अछि जे कथाहिक विकसित वृहत् रूप उपन्यास थिक। वास्तवमे उपन्यास थिक अत्यन्त सुविचारित, कलात्मक रीतिसँ एक सूत्रमे गाँथल गेल बहुशः कथाक सु शृंखल रूप। अतः उपन्यासक आधार थिक कथा। आलोचक लोकनि उपन्यासोक प्रमुख तत्त्व सभ वैह मानैत छथि जे सभ कथाक तत्त्व थिक। अन्तर एतबे जे उपन्यास मे जीवन-जगतक वृहत् आयामकेँ समटेल जाइछ, ओकर चित्र-फलक अतयन्त विस्तृत रहैत अछि। किन्तु कथामे जीवनक एकटा छोट अंशकेँ छोट**

Scanned by CamScanner

चित्रफलकपर उरेहल जाइत अछि । **केबाड़क दोगसँ वा खिड़कीसँ बाह्य जगतक जेना आंशिक भागकेँ देखब सम्भव होइत अछि । ठीक तहिना कथामे जीवनक एकटा लघु अंशमात्रकेँ कलात्मकता ओ प्रभावोत्पादकताक संग प्रस्तुत कयल जाइत अछि । स्वभावतः उपन्यासकारकेँ जतेक विस्तार-सौविध्य रहैत छैक ततेक कथाकारकेँ नहि । उपन्यास लेखनमे जतबा धैर्यक अपेक्षा होइत छैक से कथाकारमे नहि ओ तँ अत्यल्प अवधिमे अपन रचना-कोश लऽकऽ प्रयोग करऽ चाहैत अछि । कथाकार तँ अपन अत्यन्त छोट सन परिधिमे जीवनक एहन सत्यकेँ उद्घाटित करैत अछि जे पाठकक मर्मकेँ स्पर्श कऽ जाइछ । सफल कथा वैह मानल जाइछ जे लघु होइतो पाठकक चित्तकेँ तृप्त तथा मानस-चिन्तनकेँ दीप्त कऽ दैत अछि ।** (अग्नि परीक्षा, धीरेन्द्रनाथमिश्र, कथा प्रसंगे, पृ.-VII)

मैथिली लोकगाथाक वैशिष्ट्यपर डा. झाक कहब छनि जे- **लोकगाथामे मैथिली लोक संस्कृति, भाषा-वेश, आचार-व्यवहार, माटि-पानि, जीवन-दर्शन अपन मूल रूपमे संरक्षित देखि पड़ैछ । कमला, तिलयुगा, गंगा आदि मिथिलाक भूगोल सेहो लोकगाथामे समेटल देखि पड़ैछ । तेँ मैथिली लोकसाहित्यक ई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सम्पत्ति थिक ।** (लोकजीवन ओ लोक साहित्य, योगानन्दझा, भूमिका, पृ. V)

आधुनिक भारतीय आर्यभाषा मध्य निबन्ध साहित्यक सम्बन्धमे डा. रामदेवबाबूक चिन्तन छनि जे– **संसारक ओ ज्ञानक जतेक कोनो विभागक अभिव्यक्ति, वर्णन, विवरण, विवेचन लघु आकारक गद्य रचनामे कयल जाइत अछि, तकरा सभकेँ निबन्धहिक संज्ञा देल जाइत अछि । अतः विचारणीय प्रश्न ई भऽ जाइत अछि जे साहित्य क्षेत्रमे ग्राह्य निबन्धक सीमा की हो ? ...साहित्यिक निबन्धमे प्रत्यक्ष रूपमे नहियो तँ परोक्षरूपमे लेखकक वैयक्तिकता, ओकर 'स्व', ओकर 'अहम्' केर सन्निवेश रहितहि छैक जे निबन्धक रूपमे आकार ग्रहण करैत छैक ।** (ललिताञ्जलि, देवकान्तझा, प्रस्तावकीय, पृ. 3) ।

अनुसन्धानक प्रसंग डा. झा कहैत छथि जे– **अनुसन्धान आधुनिक कालमे कोनहु भाषाक परिनिष्ठित गद्य-साहित्यक महत्त्वपूर्ण अंग मानल जाइत अछि; अनुसन्धान भाषा साहित्यक अनभिज्ञात तथ्यक उद्घाटन, अभिज्ञात तथ्य सभक पारस्परिक समन्वयन व्यवस्थापन ओ तर्क सम्मत व्याख्या करैत अछि ।** (आलेख संचयन, योगानन्दझा, पुरोवचन, पृ. 4)

(ख) विधाक इतिहास प्रसंग

महाकाव्यक इतिहास प्रसंग डा. रामदेवझाक अभिमत छनि जे- **भारतीय वाङ्मयमे दुइ गोट महान् युगजीवी कृति आदिकवि वाल्मीकिकृत रामायण यदि आदिकाव्य कहल जाइत रहल अछि तँ महाभारत 'जयकाव्य' । रामायणक सम्बन्धमे स्वयं मर्यादा पुरुषोत्तम राम लव-कुशसँ जिज्ञासा कयने छलथिन जे एकर कर्त्ता के- कर्त्ताकाव्यस्य महतः क्व चासौ मुनि पुंगवः । दोसर महाभारतक ताहि व्यापक रूपक परिकल्पना महर्षि व्यास कयने छलाह तकरा लिपिवद्ध करबाक सामर्थ्य गणेशेमे छलनि** (पाञ्चाली परिणय, दयाकान्तझा, पुरस्सर्ग, पृ.-5)

मैथिली साहित्यमे महाकाव्यक रचनाक कालक सम्बन्धमे डा. लिखैत छथि जे- **उनैसम शताब्दीक अन्तमे कवीश्वर चन्दाझा मिथिलाभाषा रामायण सन वृहत् प्रबन्धक रचना कऽ मैथिली काव्य प्रवाहकेँ अनेक अभिनवत्वक संग नव दिशा देलनि । हुनक अनुसरणमे कविवर लालदास बीसम शताब्दीक आरम्भिक चरणमे रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक रचना कयलनि । ई दुहू कृति वृहत् प्रबन्ध काव्य रहबाक कारणे रामायण-महाभारतहि कोटिमे मानल जाय लागल** (पाञ्चाली परिणय, पृ. 2)

मैथिली साहित्यमे महाकाव्यक एतेक पैघ शृंखला रहितो राष्ट्र स्तरपर एकर चर्चा नहि देखल जाइत अछि । एहि सम्बन्धमे डा. झाक विचार छनि– **राष्ट्रिय स्तरपर मैथिलीक कोनो महाकाव्य चर्चित होयबाक अवसर नहि पाबि सकल अछि । एहि दृष्टिसँ हम चारि गोट महाकाव्यकेँ राष्ट्रीय स्तरपर चर्चित होयबाक अधिकारी मानैत छी । ओ चारू महाकाव्य थिक दीनानाथ पाठक बन्धु रचित 'चाणक्य', आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन' रचित 'दत्तवती' बबुआजीझा 'अज्ञात'क 'प्रतिज्ञा पाण्डव' तथा मार्कण्डेय प्रवासी रचित 'अगस्त्यायनी' महाकाव्य ।** (पाञ्चाली परिणय, पृ.-3)

Scanned by CamScanner

मैथिली-साहित्यक महाकाव्यकेँ लोकप्रियता राष्ट्रिय स्तर पर किएक नहि भेटि रहल अछि । एकर की कारण भऽ सकैत अछि । एहि सम्बन्धमे रामदेवबाबूक अभिमत देखल जा सकैछ– **सम्प्रति मैथिलीमे भऽ की रहल अछि? महाकाव्यकेँ प्रतिगामी, अप्रासंगिक, अनुपयोगी, पुरातनपंथी, पोङापथी कहि कऽ तिरस्कृत कयल जाइत अछि । महाकाव्य रचयिताकेँ बहुतो तथाकथित प्रगतिवादी आलोचक अपमानितो करबामे संकोच नहि करैत छथि । शल्यसारथ्यक मनोवृत्तिसँ कयल गेल आलोचनासँ जीवित वा दिवंगत रचनाकारकेँ कतेक आत्मिक क्लेश होइत हेतनि, से सहजे अनुमेय । समस्त जीवनक साधनाकेँ मातृभाषाक अर्चनामे अर्पित करबाक एहने कटु तिक्त कषाय प्रसाद प्राप्ति होइत हो तँ कोन प्रतिभाशाली यशः कामी-कविकेँ महाकाव्य रचना करबाक उत्साह भऽ सकत? तथापि बहुतो मैथिलीक महामना कवि लोकनि महाकाव्यक रचना करैत रहलाह, अपन कठिन श्रमसँ उपार्जित अर्थकेँ ओकर प्रकाशनमे लगबैत रहलाह अछि ।** (पाञ्चाली परिणय, पृ.-6)

मैथिली साहित्यमे राष्ट्रीय भावनाक कविताक सम्बन्धमे डा. झाक कथन छनि जे- **मैथिलीमे राष्ट्रीय भावना सम्पन्न काव्यक रचना होइत रहल अछि अवश्य । ओकर परम्परा तथापि खूब मुखर नहि भऽ सकल । मैथिलीक क्षेत्रमे एकहु गोट सुब्रह्मण्यम भारती, काजी नजरूल इसलाम, मैथिलीशरणगुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी अथवा दिनकर उत्पन्न नहि भऽ सकलाह ।** (ध्वंस पर्व, शिवाकान्तपाठक, राष्ट्रियताक रसावेश, पृ.- 3)

मैथिली हास्य-व्यंग्यक परम्पराक सम्बन्धमे डा. झाक कहब छनि जे- **मैथिली साहित्यमे हास्य-व्यंग्यक समृद्ध परम्परा रहल अछि । अनेक महान् साहित्यकार अपन प्रतिभाक अवदानसँ मैथिलीक हास्य-व्यंग्यक गरिमाकेँ शिखरस्थ बनयबाक श्रेय प्राप्त कयने छथि । किन्तु एमहर तीन-चारि दशकमे हास्य-व्यंग्यक काव्यधारा क्षीण जकाँ भऽ गेल अछि । किछु नवीन प्रतिभा सब प्रखरताक संग एहि क्षेत्रमे अवश्य प्रवेश कयलनि किन्तु ओ सब पगारक धधरा जकाँ किछु कालधरि धधकि कऽ शान्त भऽ गेलाह । हास्य-व्यंग्यक रचनाक नैरन्तर्य बना कऽ रखने रहबाक ऊर्जा जेना क्षीण भऽ गेलनि हुनका लोकनिक ।** (मोलायम पाथर, विद्याधरमिश्र, व्यंग्य वक्रोक्ति सन्धान, पृ.-3)

मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली नामक शोध ग्रन्थमे **अथातो शब्द जिज्ञासा** शीर्षक सँ लिखल अपन भूमिकामे डा. झा मैथिली शब्दकोषक सम्बन्धमे विस्तृत विवेचन प्रस्तुत कयलनि अछि । वस्तुतः एहि सम्बन्धमे एकेठाम एहन प्रस्तुति भेटब समालोचक आ अध्येताक लेल अत्यन्त उपयोगिताक वस्तु अछि । मैथिली शब्द कोषक सम्बन्धमे डा. झा लिखैत छथि जे- **अठारहम शताब्दीक अन्तिम दशकमे सिरामपुर मिशनक एकटा पादरी विलियम कैरी मैथिली शब्दावलीकेँ कोषबद्ध करबाक पहिल प्रयास कयने छलाह । एकटा नमहर अन्तरालक पश्चात् उनैसम शताब्दी आठम दशकमे एस. डब्लू. फैलोन एहि दिशामे अपन रुचि देखौने छलाह । ओ 1879 इ.मे एकटा शब्दकोष प्रकाशित करौने छलाह जकर नाम छल 'ए न्यू हिन्दुस्तानी लिटरेचर एण्ड फॉकलोर' । ओहि कोषमे तिरहुती शब्द कहि कऽ मैथिली शब्दावलीकेँ सेहो प्रचुर संख्यामे स्थान देल गेल । एहि महत्त्वपूर्ण तथ्यकेँ सर्वप्रथम प्रकाशमे अनबाक श्रेय पं. श्रीगोविन्दझाकेँ छनि । अटकन-मटकन सन मिथिलाक बाल मनोविनोदक क्रीड़ाक नामवाची शब्द सेहो सम्मिलित कयल गेल छल ।** (पृ.- 36)

(ग) लेखकक प्रसंग :

मिथिलाभाषा रामायणक रचयिता कवीश्वर चन्दाझाक प्रसंगमे रामदेव बाबूक विचार छनि जे- **कवीश्वर चन्दाझाक व्यक्तित्व अत्यन्त व्यापक ओ बहुआयामी छलनि से सर्वमान्य सत्य अछि परन्तु हुनक सर्जनात्मक शक्तिक परिचायक ओ महाकविक रूपमे सुयशक आधार थिकनि हुनका द्वारा रचित अजस्र गीत, पाठ्य मुक्तक ओ वृहत् प्रबन्धकाव्य मिथिलाभाषा रामायण । हुनक गीत ओ मुक्तकक वर्ण्य विषय ओ भाव-भूमि छनि भक्ति, वैराग्य, योग, शृंगार, मिथिला-महिमा, देश-दशा, समसामयिक घटना प्रसंग इत्यादि । कवीश्वर छलाह मूलतः शिवक भक्त । हुनक बहुसंख्यक गीत सब शिवभक्तिअहि विषयक छनि । एहि गीत सबमे आत्मानुभूति, आत्मवेदना ओ आत्म संवेदनक सर्वत्र व्याप्ति देखल जाइत अछि । शिव-पार्वतीक लीला-विषय गीतमे कवि चित्तक आन्दोल्लास, माधुर्य ओ मसृणता अछि, तँ स्तुति-आत्मनिवेदन परक गीत सबमे असीम विषाद, गहन नैराश्य, दुर्निवार मनश्चिन्ता, प्रतिक्षण उद्भूत आत्मग्लानि,**

Scanned by CamScanner

वर्धिष्णु विरक्तिक भाव भरल अछि । परन्तु कविक भक्ति, सीता, राम, कृष्ण, सूर्य, इन्द्र, गणेश, गंगा इत्यादि देवी-देवताक प्रति अपन भक्तिभाव प्रकट कयने छथि । हुनका सीता ओ रामक प्रति भक्तिक प्रगाढ़ताक दर्शन मिथिलाभाषा रामायणमे होइत अछि जाहिमे श्रीरामकेँ परमब्रह्म परमेश्वर रूपमे स्थापित कऽ आराधना कयल गेल अछि तथा भक्ति तत्वक सर्वश्रेष्ठत्व सिद्ध कयल गेल अछि । (मिथिलाभाषा रामायण, भूमिका, पृ.-11)

कविवर लालदासक सम्बन्धमे डा. झाक अभिमत छनि- **कविवर लालदास बहुभाषा विज्ञ छलाह । संस्कृत, फारसी ओ हिन्दीक निष्णात विद्वान छलाह । अरबी ओ अंगरेजी भाषाक अभिज्ञ छलाह । मैथिली तँ हुनक मातृभाषे छलनि । ओकर विपुल शब्द-सम्पदा, गम्भीर अभिव्यंजना-शक्ति ओ समृद्ध साहित्यक अभिज्ञान सहज रूपमे प्राप्त छलनि । विभिन्न भाषाक ज्ञाता रहितो अपन मातृभाषाक प्रति असीम अनुराग श्रद्धा ओ भक्ति छलनि, तहिना अजस्त्र भक्ति भावना छलनि मातृभूमि मिथिलाक प्रति ।** (रमेश्वर चरित मिथिला रामायण, भूमिका, पृ.- 8-9)

जीवनकान्तकेँ डा. झा मूलत: उपन्यासकार मानैत कहलनि अछि- **कवि ओ कथाकारक रूपमे यशस्वी भेलोपर जीवकान्तजीकेँ हम यथार्थमे उपन्यासकार मानैत छियनि । से केवल परिमाणहिक दृष्टिसँ नहि, अपितु प्रकारहुमे हिनक उपन्यास-लेखन अधिक समर्थ, अधिक सशक्त ओ अधिक प्रभावी सिद्ध भेलनि अछि ।** (अगिनवान, जीवकान्त, आमुख, पृ.-3)

उपन्यासकार योगानन्दझाक सम्बन्धमे डा. झाक विचार छनि जे- **योगानन्दझा बीसम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पूर्वहि मिथिलामे साहित्यक माध्यमसँ जे करबाक साहस देखौलनि । ई एकटा असाधारण घटना छल । हमरा लगैत अछि जे योगानन्दझा महात्मागान्धीक सुधारवादी विचारधारासँ नीक जकाँ प्रभावित छलाह । ओही प्रभावक कारणे नग्न सत्य कहबाक साहस देखौलनि ।** (योगानन्दझाक रचना संसार, शचीन्द्रनाथमिश्र, शुभकामना, पृ.-11)

आचार्य सुरेन्द्रझा सुमनक गद्य-गरिमा नामक पोथीक भूमिका **तस्यै स्वधामे** एकर लेखिका डा. सावित्रीझाक सम्बन्धमे डा. रामदेवबाबू अत्यन्त करुण रससँ आप्लावित संस्मरणात्मक चित्र उपस्थापित कयलनि अछि- **सावित्री छलीह स्वभावसँ चंचल, प्रखर मुखर परन्तु पूर्ण वाक्पटु, हुनकामे प्रबल इच्छाशक्ति, दृढ़संकल्प ओ अक्षुण्ण आत्मविश्वास छलनि जाहि बलपर ओ अनेकानेक कठिन कार्य सबकेँ सम्पादित करैत रहलीह आ कठिनसँ कठिन घड़ीमे अपन पतिक संग पूरि सहधर्मिणी पदकेँ पूर्णरूपेँ सार्थकता प्रदान करैत रहलीह ।** (पृ.-8)

(घ) पोथीक प्रसंग :

कवीश्वर चन्दाझाकृत **मिथिलाभाषा रामायणकेँ** मैथिलीक राम भक्तिक प्रथम प्रबन्ध काव्य होयबाक सौभाग्य प्राप्त अछि । एहि सम्बन्धमे डा. झाक उक्ति छनि- **छन्द प्रयोगमे भाषाक दृष्टिएँ मिथिला भाषा-रामायण अद्वितीय ओ अभिनव अछि । एकर मुख्य छन्द अछि चौपाई जे कृतिकेँ पुष्ट आ मांसल बनबैत अछि । एकरहि संग दोहा ओ सोरठाक सेहो पुष्कल प्रयोग भेल अछि । ई तँ रामायण-रचनाक सामान्य रीति भेल । कवीश्वरक वैशिष्टय छनि चौपाइ, दोहा आ सोरठासँ इतर संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश ओ देशी भाषाक विविध कोटिक वर्णवृत, मात्रावृत्त ओ मिथिला-संगीत परम्पराक प्राचीन राग-रागिणीक तन्नामक छन्दक बहुल प्रयोग । सब मिलाय शतावधि प्रकारक छन्दक प्रयोग भेल अछि । बहुविध छन्दक प्रयोगक दृष्टिएँ ब्रजभाषाक रीतिकालीन कवि केशवदासक रामचन्द्रिकाक नाम लेल जाइत अछि परन्तु कवीश्वरक रामायण ओहि तुलनामे कत गुण गरिष्ठ अछि । मिथिला भाषा रामायणमे राग ओ भासक निर्देशपूर्वक गीतक समावेश प्रबन्ध काव्यक क्षेत्रमे पहिल प्रयोग मानल जायत । एहि रूपक गीतक समावेशसँ कवीश्वरक रामायण पाठ्य धर्मिताक संगहि गेय धर्मिताक गुणसँ सेहो समृद्ध भऽ गेल अछि ।**

मिथिलाभाषा रामायणक भाषामे तत्सम शब्दावलीक संग तद्भव ओ देशज शब्दक सहज संगम भेल अछि । मैथिलीक उपलक्षण ओ लोकोक्तिक समन्वय चमत्कारक अछि । कवीश्वरक रामायणकेँ मैथिली लोकोक्तिक खानि कहल जा सकैत अछि । (मिथिलाभाषा रामायण, भूमिका, पृ.-14)

Scanned by CamScanner

मधुगंधी बसात काव्य संग्रहक प्रसंग डा. झाक चिन्तन छनि- **जे भावुक नहि होयत, जकरामे सहज हार्दिक द्रवणशीलता नहि होयतैक से कवि भैए ने सकैत अछि । आ से, शेफालिकावर्मामे किछु अधिके छनि । भावनाक कोमलता ओ कल्पनाक माधुर्य हिनक कविताक विशेषता छनि । एही विशेषता सबसँ संकलित हिनक दोसर काव्यकृति 'मधुगंधी बसात' प्रस्तुत भऽ रहल अछि ।** (मधुगंधी बसात, शुभाशंसा, पृ.-6)

नीरजा रेणुक **आगत क्षण ले** काव्य संग्रहमे संकलित कविताक वर्ण्य विषयक सम्बन्धमे डा. झाक उक्ति छनि- **कविता सभक वर्ण्य विषयक रूपमे कतोक कवितामे विषय परम्परित अछि, विशेषतः वन्दना, अर्चना आदिमे । एहिमे मिथिला देवी, सरस्वती, गंगा आ महादेवक स्तुति कयल गेल अछि । परन्तु ई कविता सब परम्परित बूझि उपेक्षणीय नहि बूझल जाय ।** (आगत क्षण ले, पुरोवचन, पृ.-4)

मैथिली साहित्यमे कथा विधा सशक्त ओ प्राचीन मानल जाइत अछि, एहि विधाक पोथी **आगि मोम आ पाथर**क प्रसंग रामदेवबाबूक कथन छनि- **प्रस्तुत संग्रहक कथा सभमे अपूर्व गीतात्मकताक छाप, गद्यमे छन्दक गति....यति....लय.... तरलभाषा आ भावुक शैली....ठोस अभिव्यक्ति अछि । शिल्प, वस्तु विन्यास, पात्र-निर्माण, चरित्र विश्लेषण, सहानुभूति ओ संवेदनाक उद्वेग सजग-असजग दुहू पाठककेँ सन्तोष देबामे पूर्ण समर्थ अछि । सरिपहुँ मायानन्दक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पाठककेँ पहिलुक बेर भेटि रहल छैन्ह ।** (आगि मोम आ पाथर, मायानन्दमिश्र, पृ.-ध)

नीताझाक शोध-ग्रन्थ **सामाजिक असन्तोष ओ मैथिली साहित्य** नामक पोथीक सम्बन्धमे डा. रामदेवबाबूक अभिमत छनि- **जे पोथीमे भारतमे सामाजिक असन्तोष तथा मिथिलामे सामाजिक असन्तोषक अत्यन्त तार्किक आ प्रमाण पुष्ट विवेचन कयल गेल अछि । सामाजिक आर्थिक, सामाजिक ओ सांस्कृतिक-धार्मिक आधारपर मिथिलाक सामाजिक असन्तोषकेँ वर्गीकृत कऽ ओकर सभक प्रतिफलन प्रतिविम्बन कोन रूपेँ आधुनिक मैथिली साहित्यक विभिन्न सर्जनात्मक विधा-काव्य, कथा, उपन्यास, नाटक इत्यादिमे होइत रहल अछि तकर व्यवस्थित विवेचन कयल गेल अछि ।** (भूमिकासँ, पृ.-5)

निश्चित रूपसँ डा.झाक भूमिका लेखन मैथिली शोध-समालोचनाक एकटा विशिष्ट धाराक प्रतिष्ठापन करैत अछि। भूमिका कोनो विधि पुरौअलि नहि अपितु उच्च साहित्यिक विमर्श थिक से डा. रामदेवझाक 'भूमिका साहित्यक' अवलोकनसँ जानल जा सकैत अछि । हिनक भूमिका कोनहु पोथीक पठनीयता, उपादेयता आ ओकर महत्ताकेँ बढ़ा दैत अछि । अपन भूमिका लेखन ई जाहि सुनियोजित पद्धतिसँ करैत छथि ताहिसँ साहित्यक एहि धाराक एकटा सुनिश्चित स्वरूप ओ स्वतन्त्र परिचिति तँ बनले अछि अपितु डा.झा आधुनिक मैथिली भाषा साहित्यक 'आचार्य' छथि सेहो निरूपित होइत अछि । हिनक भूमिका सभक जँ एकटा पृथक संकलन प्रकाशित कयल जाय तँ ताहिसँ अध्येता लोकनिकेँ हिनक भूमिका लेखनक शैली ओ ओहिमे प्रतिपादित विचारकेँ समग्रतासँ जानि सकबाक सौविध्य प्राप्त भऽ सकतनि ।

●

Scanned by CamScanner

जीवनी ओ संस्मरणक लेखक डा. रामदेवझा

डा. श्रीअरुणकुमारकर्ण

डा. रामदेवझा मैथिली साहित्य मध्य बहुमुखी प्रतिभाक साहित्यकार आ प्रख्यात विद्वान् छथि । अन्वेषण दिसि हिनक चिन्तन-मनन विशेष प्रखर रहलनि अछि । हिनका द्वारा कृत शोधकर्म अत्यन्त अविस्मरणीय अछि । शोधनिर्देशकक रूपमे सेहो हिनकासँ मैथिली साहित्यक जे अनमोल रत्न बहार होइत रहलैक से आनसँ नहि भऽ सकल अछि । गहन चिन्तन-मनन ओ अन्वेषणक एक रूप जीवनी-लेखन सेहो थिक । अतएव जीवनीकारक रूपमे हिनक स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण छनि । हिनक रचित साहित्यकारक जीवनी कतिपय स्वतन्त्र पोथीक रूपमे छनि, कतिपय पुस्तकमे संकलित अछि तथा कतिपय पत्र-पत्रिकामे विकीर्ण छनि । जहिना जीवनीकारक रूपमे ई सशक्त हस्ताक्षर मानल जाइत छथि तहिना हिनका द्वारा विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रस्तुत संस्मरण-साहित्य सभ सेहो विशेष महत्त्वक अछि । मैथिली साहित्य तथा ओहिसँ सम्बन्धित अतीतसँ लऽ वर्त्तमान धरिक गतिविधि ओ आन्दोलन एवं मिथिलाक माटि-पानि ओ जमीनसँ जुड़ल हिनक व्यक्तित्व एहिमे दिग्दर्शित होइत अछि । हिनक रचित जीवनीक कतोक स्वतन्त्र पोथी छनि तँ कतोक पोथीक सम्पादनक क्रममे ओहि साहित्यकारक जीवनी लिखने छथि । मुदा एहि ठाम मात्र हुनका द्वारा आलेखक रूपमे लिखित विभिन्न पत्र-पत्रिका ओ ग्रन्थ आदिमे प्रकाशित जीवनी ओ संस्मरण साहित्यक विश्लेषण कयल जायत ।

2001 इ.मे प्रकाशित 'श्रीअमर-अर्चना' (श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर' अभिनन्दन ग्रन्थ)मे **'शनैः पर्वतलंघनम्'** शीर्षकसँ पं. चन्द्रनाथमिश्र अमर'क जीवन-वृत्त प्रकाशित अछि । एहिमे विस्तारसँ बतहूसँ श्रीअमर धरिक यात्राक वर्णन अत्यन्त कुशलतासँ भेल अछि । विस्तारक तात्पर्य थिक जे जँ एकर प्रकाशन स्वतन्त्र रूपसँ हो तँ निःसन्देह ओ एकटा पोथीक स्वरूप गढ़त । ओना डा. राजानन्दझा द्वारा कयल गेल एकर अंगरेजी अनुवाद **ए पैरागोन आफ परसेवरेन्स** (A paragon of Perseverance) स्वतन्त्र पोथीक रूपमे प्रकाशित भेल अछि । एहिमे श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क जीवन-परिचयक उनसठि प्रमुख विन्दुपर विचार कयल गेल अछि । प्रत्येक विन्दु सुन्दर, सार्थक ओ सशक्त शीर्षकसँ युक्त अछि जाहिसँ आलोच्य कृतिक महत्त्व आओरो बढ़ि जाइत अछि । यथा प्रोचना, पितृकुल, पिता मुक्तिनाथमिश्र, माता...... इत्यादि । अमरजीक प्रति कहल गेल एक वाक्य-खण्ड **'मैथिली भाषा, साहित्य ओ मिथिला सांस्कृतिक चर्याक इतिहासे'**मे हुनक सम्पूर्ण व्यक्तित्व ओ कृतित्व समटा गेल अछि । अतएव जीवनी-लेखनक क्षेत्रमे डा. रामदेवझाक ई एक महत्वपूर्ण अवदान थिकनि ।

एहि जीवनीसँ अमरजीक जीवनक बहुतो अभिनव तथ्य सभक अभिज्ञान होइत अछि । प.चन्द्रनाथमिश्र'अमर'क पिता छलथिन पं. मुक्तिनाथमिश्र । विशिष्ट हस्ताक्षरक निर्माणमे पारिवारिक ओ सामाजिक परिवेशक प्रभाव पड़ब स्वाभाविक थिक । ताहूमे अपन माता-पितासँ लोककेँ प्रत्यक्ष सम्पर्क रहैत छैक । एहि क्रममे अमरजीक माता-पिताक छविकेँ पृथक-पृथक कऽ देखबाक प्रयास एहि ग्रन्थमे भेल अछि । यथा पिता मुक्तिनाथमिश्र, अध्यापक मुक्तिनाथमिश्र, बूढ़ा गुरुजी तथा राजप्रतिनिधि मुक्तिनाथमिश्र । एहि तरहक वर्णन-विन्यास जीवन-वृत्तकेँ जीवन्त बनबैत अछि । जकरा वास्तविकताक कसौटीपर कसल जा सकैत अछि । एहिमे जीवनक प्रत्येक पक्षपर अत्यन्त गम्भीरतासँ विचार भेल अछि । कतिपय महत्त्वपूर्ण, अज्ञात तथ्यक उद्घाटन सेहो नीक जकाँ एहिमे भेल अछि । जेना बुझि पड़ैत अछि जे जीवनीकार अमरजीकेँ अत्यन्त निकटसँ देखने ओ पर्यवेक्षण कयने होथि । भने ओ अमरजीक अत्यन्त निकट होथि तइयो एहि तरहक कार्यक सम्पादन, विषय-सामग्रीक संकलन-संरक्षण, चिन्तन-मनन तथा गम्भीर अध्ययनेक प्रतिफलनसँ सम्भव थिक ।

Scanned by CamScanner

अमरजीक सन्दर्भमे मिथिला ओ मैथिलीसँ जुड़ल छोट-छोट घटना सभ अत्यन्त कलात्मक ढंगसँ एहिमे प्रस्तुत भेल अछि जे भावी पीढ़ीक हेतु मार्गदर्शनक कार्य करत से निश्चित । जेना मैथिलीक प्रथम अभिनेता, मैथिलीक प्रथम शिक्षक, फिल्म ओ राजनीतिमे प्रवेश हेतु बाधक सरकारी सेवा, उपनाम अमल ओ अमरक प्रसंग, अर्थोपार्जनमे सहायक 'गुदगुदी', काव्यक क्षतिसँ भेल मैथिलीक नोकसान, काव्यात्मक आवेगक प्रामाणिकता आदि ।

अमरजी अपनामे स्वयं एकटा संस्था छथि । प्रस्तुत जीवनी सेहो एहि तथ्यकेँ प्रमाणित करैत अछि । जँ साहित्यकेँ समाजक दर्पण कहल गेल अछि तँ अमरजीक समसामयिक मैथिलीसँ जुड़ल तथ्य, घटना ओ गतिविधि आदिक अवलोकनार्थ ई दर्पणे थिक । नवरत्न गोष्ठी, मैथिल महासभा, मैथिली साहित्य परिषद्, विद्यापति-गोष्ठी, यात्री-पत्रावलीक एक पत्र, दैनिक स्वदेश, स्वदेश गोष्ठी, तन्मेमन: शिव संकल्पमस्तु, यथा सुमन तथा मधुप, अज्ञातक कृति, चाणक्यक उद्धार, किछु देखल : किछु सुनल, शेखरकेँ सहयोग, कवि विन्देश्वर आदि वर्णित विषयवस्तु उपर्युक्त तथ्यकेँ प्रमाणित करैत अछि । अज्ञातजीक (बबुआजीझा 'अज्ञात) मैथिली क्षेत्रमे कोना प्रवेश भेलनि; हुनकासँ दूटा महाकाव्य मैथिलीकेँ गौरव-ग्रन्थक रूपमे प्राप्त भेलैक, मुंगेर (आब बेगुसराय) जिलाक दुनही ग्राम निवासी दीनानाथपाठक 'बन्धु'क **चाणक्य** महाकाव्यक उद्धार कोना भेलैक, पं. गिरीन्द्रमोहनमिश्र कृत **किछु देखल; किछु सुनल**क निर्माण-प्रक्रिया आदि तथ्यकेँ उजागर करबाक दृष्टिएँ एकर उपादेयता अत्यन्त महत्त्वक अछि । एहि ठाम कतिपय स्थलपर अमरजीक जीवनक ओ साहित्यक व्याख्या प्रस्तुत करब सेहो लेखकक ध्येय छनि से देखबामे अबैत अछि । यथार्थ कटुकेँ कहबामे सेहो संकोच नहि करैत छथि । जेना चाणक्य महाकाव्यकेँ साहित्य अकादेमी सम्मान नहि प्राप्त भऽ सकलैक ओहि प्रसंग हिनक कहब छनि जे सर्वगुण सम्पन्न **चाणक्य** महाकाव्यकेँ एकटा दछिनाहा जयबारक कृति बुझि साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ वंचित कऽ देल गेल । पुन: अमरजीक जीवनसँ जुड़ल कतिपय घटना विशेष सेहो मैथिली साहित्यक इतिहासक दिशा-निर्देश करैत अछि । जेना मिथिला-मिहिरक संभावित सम्पादक, कन्यादान फिल्ममे, अदम्य काव्य-सिसृक्षा, अमलसँ अमर, साहित्य मंचपर, काव्य-क्षति, सम्पादन-प्रवृत्ति, साहित्यिक संस्थाक संघटन-संचालन, शिक्षक संघ, विभिन्न संस्थासँ सम्बन्ध, डायरी-लेखन, पठित पुस्तकपर पाठकीय टिप्पणी, मान-सम्मान, उपाधि, पद ओ पुरस्कार आदि । एतावता श्रीअमरजीक जीवन-वृत्त स्वयं एकटा इतिहास थिक; जकरा पल्लवित-पुष्पित करबाक श्रेय डा. झाकेँ देल जयतनि ।

मैथिली पत्र-पत्रिकामे डा. रामदेवझा द्वारा रचित अनेक महान विभूतिक जीवनी प्राप्त होइत अछि ।

मध्यकालीन सन्तकवि बलिरामदासक अन्वेषणात्मक परिचय मिथिला मिहिर, 18 जुलाइ, 1965क अंकमे प्रकाशित भेल । एहिमे हुनक सन्त-जीवन-दर्शन पक्षक वर्णन भेल अछि । कवीश्वर चन्दाझा साहेबरामदासक गीतावलीक भूमिकामे हुनक परिचयक उल्लेख कयने छथि । बलिरामदास, साहेबरामदासक गुरु छलथिन । एहि बातक प्रमाण हुनक रचनासँ प्राप्त होइत अछि । एक मैथिल कविक रूपमे बलिरामदासक काव्यात्मक उपलब्धिक संकेत कतहु नहि भेटैत अछि । मुदा लेखककेँ कर्णकायस्थ लोकनिक पंजीकार नन्दकिशोर मल्लिक द्वारा उद्धृत बलिरामदासक दू गोट समस्या पूर्त्ति ढंगक पद प्राप्त भेलनि । जे हुनक परिचयक आधार बनल । ई लेखकक एक नव उपलब्धि थिकनि ।

यदुनाथझा 'यदुवर' आन्दोलनी कवि ओ साहित्यकार छलाह । हुनक कविताक विषय-वस्तु राष्ट्रप्रेम, मातृभाषा प्रेम ओ समाज-सुधार रहैत छल । मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे हुनक समुचित मूल्यांकन नहि भेल छल । तदनुरूप **दधीचि साहित्यकार : यदुनाथझा 'यदुवर'** (स्मारिका-1978, मिथिला सांस्कृतिक परिषद बोकारो-इस्पातनगर) शीर्षक निबन्धक महत्त्व विशेष अछि । एहि निबन्धक उद्देश्य मुख्यत: हुनक साहित्यिक अवदानक विवेचन करब थिक । ई सहरसा जिलान्तर्गत मुरहो गामक वासी छलाह । डा. जयकान्तमिश्रक अनुसार हुनक जन्म 1888 इ.मे भेल छल । किन्तु लेखक एहि तिथिसँ सहमत नहि छथि । हिनक मृत्यु 1935 इ.मे भऽ गेलनि । सरकारी सेवकक रूपमे ब्राञ्चपोस्टमास्टरक पदपर कार्यरत छलाह । हिनक साहित्यिक साधना गद्यक अपेक्षा पद्य दिशि विशेष उन्मुख देखल जाइत अछि । गद्यात्मक रचनाक

Scanned by CamScanner

रूपमे किछु सुधारात्मक ओ उद्‌बोधनात्मक निबन्ध ओ गल्प प्राप्त होइत अछि । 'मैथिलीमे परीक्षा' शीर्षक निबन्ध एहि तथ्यकें प्रमाणित करैत अछि जे मैथिली भाषाक विकासक प्रति ओ कतेक सचेष्ट रहथि । मैथिल-हित-साधन, मिथिला-मोद, मिथिला-मिहिर, मिथिला-मित्र, श्रीमैथिली, मैथिली प्रभाकर, मिथिला आदि पत्र-पत्रिकाक नियमित रचनाकार छलाह । हुनका अनुसारें आब शृंगार, ज्ञान ओ भक्तिक बदला अन्य प्रान्त जकाँ देश-दशा उद्‌बोधनात्मक कविता दिस उन्मुख होयबाक चाही । हुनका द्वारा सम्पादित 'मिथिला गीतांजलि' बाइस गोट कविक कविताक संग्रह थिक जाहिमे सर्वाधिक कविता यदुवरजीक छनि । भारतवर्षक समस्त क्षेत्रमे उठल नवीन धाराक लहरिकें मिथिला ओ मैथिलीमे उतारबाक प्रयासमे ओ अहर्निश लागल रहैत छलाह । लेखक ओहि दधीचि कवि-मनीषीक प्रति यथार्थ श्रद्धांजलि ओ कृतज्ञतापन करैत कहैत छथि जे 'मिथिला गीतांजलि' एवं यदुनाथझा'यदुवर'क ऐतिहासिक महत्त्व अछि ।

मातृभाषाक उन्नति-व्रती किरणजी (अर्पण-6, 1989, विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा) शीर्षक निबन्ध मैथिली-सेवी डा. कांचीनाथझा 'किरण'क अवदानकें रेखांकित करैत अछि । विद्यालय स्तरपर मातृभाषाक अध्ययन-अध्यापनक व्यवस्था ओहि भाषाक विकासक ठोस आधार बनैत अछि । आरम्भमे मैथिलीकें विद्यालय सभमे अध्यापन हेतु प्रयत्नशील रहनिहार मैथिलीसेवी लोकनिमे किरणजी अन्यतम छलाह । किरणजी मैथिली-साहित्यकारसँ अधिक मैथिली-आन्दोलनकर्त्ता छलाह । ओ जतऽ-जतऽ जाइत छलाह ओतऽ मैथिली जागऽ-पसरऽ लगैत छलैक । संघर्षक विगुल बजौनिहारक रूपमे हुनक ख्याति विशेष छलनि । हुनक साहित्यिक योगदान कविता, कथा, नाटक, एकांकी तथा आलोचनाक क्षेत्रमे छनि ।

म.म.हरप्रसाद शास्त्री (कोशी कमला, जनवरी-1991) शीर्षक निबन्ध भारतीय वाङ्मयमे हुनक स्थानकें निर्धारित करैत अछि । मैथिली साहित्यक ओ बड़ उपकार कयने छलाह । मैथिली प्रेमीकें हुनका विषयमे जनबाक चाही । हिनक पारिवारिक ओ सामाजिक परिवेश विद्वत्तासँ भरल-पुरल छल । एहि पृष्ठभूमिमे हुनक जीवनक भूमिका तैयार भेल । एकटा संस्कृतिनिष्ठ अध्यापकक परिवारमे 1853 इ.मे बंगालक नैहाटी ग्राममे भेलनि । अल्पवयसहिमे हुनका पितृवियोग ओ भातृवियोगक सामना करऽ पड़लनि । तइयो ओ अपन प्रतिभा ओ लगनसँ विद्या-वैभवक क्षेत्रमे पूर्ण निष्णात भेलाह तथा तत्कालीन महापुरुष-लोकनिक सान्निध्य हिनका विराट व्यक्तित्व पुरुष बनौलकनि । हुनकामे कारयित्री ओ भावयित्री दुनू प्रतिभाक अद्‌भुत संयोग छल । मैथिली साहित्यक जे अनमोल रत्न हुनकासँ प्राप्त भेलैक ताहि हेतु मैथिली जगत सदैव नतमस्तक रहत । प्राचीन साहित्यक देशव्यापी अन्वेषण, ओकर विवरण-प्रकाशन तथा नवीन महत्त्वपूर्ण पोथीक सम्पादन ओ प्रकाशन हुनक महत्त्वपूर्ण कार्य छल । हुनका द्वारा कयल अनुसन्धान कार्य मैथिली साहित्यक इतिहासक प्रथम ओ महत्त्वपूर्ण अध्यायमे स्थान रखैत अछि । मैथिलीक आद्य गद्य-ग्रन्थ 'वर्णरत्नाकर'क आविष्कारक, चर्यागीत, दोहाकोष ओ डाकार्णव ग्रन्थक उद्धार, नेपाल पदावली, कीर्त्तिलता ओ कीर्त्तिपताकाक परिचय तथा कीर्त्तिलताक प्रथम संस्करण प्रकाशन करयबाक श्रेय हुनकहि छनि । कीर्त्तिलतामे हुनका द्वारा प्रस्तुत विस्तृत भूमिकाकें अद्‌भुत मानल गेल अछि जाहिमे महाकवि विद्यापतिक व्यक्तित्वक अभिनव स्वरूपक स्थापना भेल अछि । ई सब तथ्य डा. रामदेवझाक एहि निबन्धमे एकत्रे भेटि जाइछ ।

कविशेखर ज्योतिरीश्वर (कोशी-कमला, 1993) शीर्षक निबन्ध मैथिलीक ऐतिहासिक पृष्ठभूमिपर आधारित अछि । हुनक रचित गद्य-ग्रन्थ 'वर्णरत्नाकर'क विवेचन-विश्लेषण एहि निबन्धमे भेल अछि । एहि आलोच्य निबन्धमे वर्णरत्नाकरक अन्य प्रकाशन, नामकरण, विषयवस्तु, महत्त्व, उपादेयता, उद्देश्य आदिपर विशद् प्रकाश देल गेल अछि ।

बाबू भोलालालदास (प्रवासी, दिसम्बर 1996)क जीवनी विषयक निबन्धमे हुनक जीवन आ मैथिलीसँ जुड़ल कतिपय घटनाक वर्णन औपन्यासिक रोचकतासँ कम नहि अछि । महाकवि विद्यापतिक प्रथम जयन्ती मनौनिहार, मिथिला ओ भारतीक सम्पादक, मैथिली साहित्य परिषद्क स्थापना ओ हुनक प्रधानमंत्रीत्व, पटना विश्वविद्यालय ओ बिहारक

Scanned by CamScanner

शिक्षा विभागमे मैथिली भाषाक स्वीकृति हेतु हुनक संघर्षात्मक योगदान । अपन ओकालति पेशाकेँ छोड़ि मात्र मैथिलीक ओकालति करबाक ध्येय, चाँद पत्रिकाक लेखक ओ सम्पादक, हिन्दू समाजक रूढ़ि-भंजक, स्त्री-उद्धारक, 'भारतवर्षक इतिहास'क समस्त बिहारक हेतु पाठ्य ग्रन्थक रूपमे स्वीकृति आदि हुनक जीवनक कतेक महत्त्वपूर्ण घटनाक वर्णन एहि निबन्धमे भेल अछि ।

व्यंग्य-सम्राट हरिमोहनझा (प्रवासी, दिसम्बर 1997) शीर्षक निबन्धमे हास्य-व्यंग्य सम्राट प्रोफेसर हरिमोहनझा (1908-1984)जनिका अपर विद्यापति कहल जाइत अछि तनिक संक्षिप्त जीवनी ओ कृतिक परिचय प्राप्त होइत अछि। ई जानब जरूरी थिक जे कतेको अन्य भाषा-भाषी हरिमोहनझाकेँ पढ़बाक लेल मैथिली सिखलनि । मैथिली भाषा साहित्यक लेल ई सामान्य बात नहि । प्रो. हरिमोहनझाक महत्त्व-प्रतिपादनक क्रममे निबन्धकारक ई उक्ति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि जे जेना हास्यमे ई गोनूझाक प्रतीक छलाह तहिना वाणीमे राजाराममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक आ महात्मागान्धी बाजि रहल छलाह ।

वैदिक युगक क्रान्ति पुरुष : याज्ञवल्क्य (प्रवासी-6, 1997-98, मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, हैदराबाद) शीर्षक निबन्ध भारतीय संस्कृतिक उन्नायक ओ महान मैथिल दार्शनिक याज्ञवल्क्यक महत्ताकेँ प्रतिपादित करैत अछि। एहिमे हुनक व्यक्तित्व समग्र रूपसँ उद्‌भासित भेल अछि । ओ वैदिक युगक क्रान्ति पुरुष रहथि । मिथिलाक क्रान्तिदर्शीलोकनिक परम्परामे वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न कयनिहारमे याज्ञवल्क्यकेँ आदि पुरुष कहल जयतनि । वैदिक वाङ्‌मय एवं पौराणिक साहित्यक अध्ययनसँ ई सिद्ध होइछ जे ओ मिथिलाक वासी छलाह । किन्तु, हुनक व्यक्तित्व मिथिलासँ बाहर समस्त पूर्वांचलमे प्रसृत छल । भारतीयताक निर्माणमे हुनक अवदान अद्वितीय ओ अविस्मरणीय अछि। तथाकथित आर्य ओ अनार्यकेँ सम्मिलित कराय समरस समाजक निर्माणमे हुनक योगदान अतुलनीय अछि । एहि निबन्ध मे वैदिक वाङ्‌मयक संक्षिप्त परिचयक संग याज्ञवल्क्यक कृति यथा शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, वृहदारण्यक, याज्ञवल्क्य स्मृति आदिक विश्लेषण भेल अछि ।

भारतक विख्यात भाषाशास्त्री डा. सुभद्रझाक जीवनपर आधारित श्रद्धांजलिपरक रचना **मैथिलीक गौरव स्तम्भ : डा. सुभद्रझा** (मैथिलजन, जुलाइ 2000) थिक । एहिमे हुनक शिक्षा-दीक्षा, आजीविका, विद्वत्ता ओ व्यवहारिकता आदिक प्रसंग जे कहल गेल अछि से वस्तुतः हुनक अद्‌भुत व्यक्तित्वक परिचायक थिक । एकर अन्तमे स्वरचित पद्य माध्यमसँ जे हार्दिक संवेदना व्यक्त भेल अछि, से हुनक समस्त सारस्वत-साधना तथा साहित्यात्मक वैशिष्ट्यकेँ उजागर करैत अछि ।

स्वामी विवेकानन्दक जीवनपर आधारित निबन्ध **भारतीय ऋषि परम्पराक अद्यतन कड़ी स्वामी विवेकानन्द** (स्मारिका, सरस्वती शिशु मन्दिर पनिचोभ, दरभंगा 2006-07)मे हुनक जीवन-चरित्र तथा अमेरिकाक शिकागो शहरमे देल 'भारतीय दर्शन आ हिन्दू धर्म'पर केन्द्रित अभिभाषण आदि वर्णित अछि । विश्वधर्म सम्मेलनमे हिन्दू धर्मक प्रतिनिधित्व विवेकानन्द कयलनि । ओहि मंचसँ अपन भाषणक पहिल सम्बोधन वाक्य 'अमेरिकावासी बहिनि ओ भाइलोकनि'मे अमेरिकावासीकेँ अद्‌भुत, अभिनव ओ सकल धर्मक सारतत्व बुझि पड़लनि । 'लेडिज एण्ड जेंटिलमेन' सुनैत-सुनैत सभक कान पाकि गेल छल । सत्प्रेरणाक दृष्टिएँ डा. झाक ई लेख बड़ महत्त्वक ओ अवश्य पठनीय अछि। हुनक महत्वकेँ प्रतिपादित करैत लेखकक कथन छनि जे हुनक (विवेकानन्दक) गुरु-गम्भीर ओजस्वी वाणी अतीत कालमे प्रासंगिक छले, वर्त्तमान ओ भविष्यत् कालमे वैश्वीकरणक प्रवाहक द्वारा नित्य पसारल जाइत अपसंस्कृतिक निवारण ओ भारतीयताक संरक्षणक दृष्टिएँ सर्वथा प्रासंगिक एवं अनुकरणीय-अनुसरणीय अछि ।

संस्मरणमे लेखक अपन समयक इतिहास तथा अपन भोगल यथार्थकेँ व्यक्त करैत छथि । तेँ ओहिमे हुनक उपस्थिति अनिवार्य भऽ जाइत अछि । जखन लेखक अपना विषयमे लिखैत छथि तँ ओ आत्मकथाक निकट प्रतीत होइत अछि आ जखन ओ अन्यक विषयमे लिखैत छथि तँ ओ जीवनीक समीप बुझना जाइत अछि । एहि दृष्टिएँ डा. रामदेवझाक

Scanned by CamScanner

संस्मरण साहित्यक अध्ययन-विवेचन महत्त्वपूर्ण भऽ जाइत अछि। ओ अनेको संस्मरणक रचनाकार छथि जकर सभक विशेष महत्व अछि।

अठपेजीमे मैथिली गीतक रचना कऽ रेलगाड़ीक यात्री लोकनिक बीच गायनपूर्वक बेचनिहार कविक रचनात्मक प्रतिभाक चित्रण **लोककवि अब्दुल रहमान** (मिथिला मिहिर, 1 जनवरी, 1961) शीर्षक संस्मरणमे भेल अछि। ई लेखकक अद्भुत दृष्टिक परिचायक थिक जे यात्राक क्रममे सेहो हुनका साहित्यिक छटाक दर्शन होइछ ओ ओकरा ओ सरलतासँ व्यक्त करैत छथि। हुनक गीतक आस्वादन निबन्धमे देल कतिपय उदाहरणसँ होइत अछि। कहल जाइत अछि जे सरकार हुनकापर प्रतिबन्ध लगा देलक। तदर्थ लेखककेँ कचोट छनि जे यदि हुनका उचित आश्रय ओ प्रोत्साहन भेटैत तँ निःसन्देह अब्दुल रहमान समाज ओ मैथिली साहित्यकेँ किछु अनमोल वस्तु दऽ सकितथि।

मैथिली साहित्यमे राजेश्वरझाक अवदान ओ हुनक साहित्यिकताक मूल्यांकन **स्वर्गीय राजेश्वरझा : एक श्रद्धा-संस्मरण** (मिथिला मिहिर, 29 अप्रैल 1979) शीर्षक रचनामे भेल अछि। रचनात्मक कार्यक प्रति हुनक झुकाव विशेष रहनि। सर्जन तथा अनुसन्धान दुनूक क्षेत्रमे हुनक अबाध गति रहनि एवं दुनूकेँ प्रमुखता दैत छलाह। नाटक, कथा, लोकसाहित्य, गप्प साहित्य, आलोचना आदिक क्षेत्रमे हुनक प्रतिभाक प्रदर्शन भेल अछि। हुनका प्रति लेखककेँ अपार आदर ओ सम्मान भाव छलनि। सहज स्वभाव, मैथिलीक प्रति अनुरक्ति, गम्भीर रचना-धर्मिता तथा नवीन पीढ़ीक प्रति अनुराग ओ प्रोत्साहन आदि कतिपय एहन विशेषता रहनि जाहिसँ ओ लेखकक आकर्षणक केन्द्र बनल रहथि। एहि संस्मरणक अन्तमे हुनक संक्षिप्त परिचय वर्णित अछि जकरा संस्मरणात्मक जीवनी कहल जा सकैत अछि।

संस्मरण **ललितेश बाबू** (मिथिला मिहिर, 29 मइ 1983)मे लेखकक कथाकार ललितसँ गुरु-शिष्य ओ अभिभावकक सम्बन्ध, व्यक्तिगत सम्बन्ध तथा सार-बहिनोइक सम्बन्धक बाद साहित्यिक सम्बन्ध, मुख्यतः मैथिली कथाक सम्बन्धमे कहल गेल अछि। कथाकार ललितक जाहि स्वरूपकेँ निकटसँ देखने ओ अनुभव कयने छलाह से सहजताक संग एहिमे व्यक्त भेल अछि। ललितजी जे किछु छलाह मुदा पूर्णतः ओ साहित्यिक लोक छलाह। हुनक साहित्यिक सोच सतत मैथिली कथापर केन्द्रित रहैत छलनि। लेखक अपन छात्र जीवनक अनुभव कहैत छथि जे अध्यापनक विषय भने हुनक साइंस रहल हो, किन्तु जखन ओ विज्ञान पढ़ाबथि तँ तकरा तेहने रोचक बना देथि जेहन हुनक कथा होइत छल। हुनका नजरिमे कथाक प्रधानतत्त्व ओकर टेकनीक होइत छैक। ओ लेखकक कथाक सजग पाठक ओ आलोचक छलाह। लेखकसँ 'हाट स्टोरी'क अपेक्षा हुनका विशेष रहैत छलनि। जखन 'बिजली'क प्रसंग लेखकक धारणा छलनि जे ओ अन्ततः बिजलीकेँ सती सावित्री बनाइए देलनि। ताहि प्रसंग ललितक कथनकेँ लेखक उद्धृत कयने छथि से द्रष्टव्य थिक - 'हे औ ओझाजी ! संस्कार सभसँ पैघ वस्तु होइत छै। उपन्यासक अन्त होइत-होइत मोनक मैथिल संस्कार नहि मानलक। वयस बढ़ने बहुतो प्रगतिशील विचार विलीन भऽ जाइत छै। तेँ पृथ्वीपुत्रमे सेहो मूल योजनासँ हटऽ पड़ल।' एहन अभिभावकक प्रति लेखकक हार्दिक श्रद्धांजलि निःसन्देह हुनका प्रति हुनक स्नेहभाव ओ सम्बन्ध-सूत्रकेँ उजागर करैत अछि।

ओ महत्त्वपूर्ण पल एवं घटना जे प्रो. हरिमोहन झाक संग लेखककेँ व्यतीत भेलनि; तकर सजीव ओ सांगोपांग चित्रण **स्मृति शेष हरिमोहनबाबू** (रचना, सितम्बर-अक्टूबर, 1984) शीर्षक संस्मरणमे भेल अछि। हरिमोहनबाबू ओ हुनक साहित्यक अनुरूप एहिमे वर्णित घटना सभक उल्लेख अत्यन्त रोचक भेल अछि। हुनका प्रति लेखकक आत्मीयता भाव, दार्शनिक होइतहुँ मैथिलीक क्षेत्रमे हुनक अवदान, नवीन पीढ़ीक युवा लेखक, साहित्यकार ओ कलाकारकेँ अपन साहित्य-पुत्र बनाय हुनक प्रति व्यक्त स्नेह ओ प्रोत्साहनक भाव आदि एहिमे वर्णित भेल अछि। बिसरबाक प्रवृत्ति हुनक जीवन-सहज प्रकृत्ति छलनि, तकर रोचक प्रसंगक वर्णन एहिमे प्रस्तुत अछि। लेखक द्वारा अभिनीत 'बौका'क भूमिका तथा हुनक कृति 'आदर्श कुटुम्ब'क पात्र 'ससुर'क भूमिकासँ ओ अत्यन्त प्रभावित भेल रहथि। तदर्थ ओ लेखककेँ मुक्तकंठसँ प्रशंसा कयलथिन। प्रोत्साहन ओ आभार सेहो प्रकट कयलथिन।

Scanned by CamScanner

शैलेन्द्राय नमोनमः (देसकोस, मइ 1994) मे डा. शैलेन्द्रमोहनझाक प्रति जे आत्मीयताक भाव प्रदर्शित भेल अछि से वस्तुतः हुनक नोरक टघार बनि उभरल प्रतीत होइत अछि । गुरुसँ लऽ सहयोगी धरिक हुनक अठतीस वर्षक सम्बन्ध छलनि । ई सौभाग्य आनकेँ नहि प्राप्त भेलैक । लेखकक शब्दमे – 'आत्मज नहि छलियनि मुदा आत्मीय अवश्य बना लेलनि, हमरा हुनकासँ अजस्र पितृ-स्नेह प्राप्त भेल, हम तँ हुनक पारिवारिक अभिन्न जकाँ बनि गेलहुँ आदि ।' वस्तुतः दुनू एक-दोसराक पूरक रहथि । डा. झाक प्रत्येक रचनामे कोनो-ने-कोनो रूपमे हिनक सहभागिता अवश्य रहनि । जकरा ओ विशेष महत्त्व दैत छलाह तथा लेखक एहि हेतु अपनाकेँ सौभाग्यशाली बुझैत छथि । किन्तु, कचोट एहि बातक छनि जे हुनक आकस्मिक निधनसँ हुनका द्वारा प्रायोजित योजना सब पूरा नहि भऽ सकल ।

आरम्भ, नवम्बर, 1994क अंकमे प्रकाशित **शेखरजी : एकटा अन्तरंग संस्मरण**मे मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे सुधांशु शेखर चौधरीक परिचयकेँ रेखांकित करबाक प्रयास भेल अछि । प्रारम्भमे ओ मुख्य रूपसँ हिन्दीक लेखक छलाह । ओहि क्षेत्रमे कलमे हुनक पूँजी आ हथियार छलनि जकर अपेक्षित वर्णन एहिमे भेल अछि । जखन शेखरजी मिथिला-मिहिरक सम्पादक भऽ गेलाह तखन ओ पूर्ण मैथिलीक लेखक भऽ गेलाह । मिथिला-मिहिरक प्रकाशन, लेखन, सामग्री-संचयन आदिमे लेखकक सहयोग अविस्मरणीय थिक । कारण ओहि समय लेखक पटनामे रहि एम. ए.क अध्ययन करैत छलाह । कतिपय समस्याक समाधान लेखक द्वारा होइत छलैक तकर सभक सम्यक विवेचन एहिमे भेल अछि । अंग्रेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग तथा रामजोड़ी : कागतक पांखिपर'क प्रामाणिक विवेचन-विश्लेषणक दृष्टिएँ एहि संस्मरणक महत्त्व विशेष कहल जा सकैत अछि ।

महान शिक्षाविद् डा. अमरनाथझाक शताब्दीक पुनीत अवसरपर हुनक संस्मरणात्मक निबन्ध **मैथिलीक अभिभावक : डा. अमरनाथ झा** (स्मारिका, 1997, मिथिला सांस्कृतिक संगम, इलाहाबाद) थिक । ओ भारतीय शिक्षा जगतक महान स्तम्भ, मिथिलाक गौरव तथा जीवन पर्यन्त मैथिलीक लेल समर्पित लोक छलाह । 'यदुनन्दन सिंह व्याख्यानमाला'क पहिल भाषण जे हिनका द्वारा भेल ताहिमे लेखककेँ हुनक दर्शन ओ विचार श्रवणक सौभाग्य भेटलनि ताहिसँ ओ अपनाकेँ हुनक कनिष्ठ समकालिक होयबाक गौरवसँ अभिभूत होइत छथि । ई हुनक पहिल ओ अन्तिम दर्शन छल । यैह एहि संस्मरणक आयाम थिक; जे अत्यन्त प्रभावोत्पादक भेल अछि । किन्तु संस्मरणमे अमरनाथझाक व्यक्तित्वक महत्त्वपूर्ण बिन्दु सभकेँ अवश्य स्पर्श कयल गेल अछि ।

पं. देवनारायणझा अपन मातृभाषाक अधिकार ओ उन्नतिक हेतु निरन्तर संघर्षरत रहलाह । आन्दोलनी पुरुष रहथि । उपर्युक्त तथ्यक लेखाजोखा **पं. देवनारायणझा : आन्दोलनी पुरुष** (हालचाल अखन धरि, अक्टूबर 2000) मे प्रकाशित भेल अछि । ओ जतऽ रहथि मैथिलीक हेतु सतत संघर्षरत रहथि । कर्मठ कार्यकर्त्ता ओ ओजपूर्ण वक्ता छलाह । प्रत्येक क्षण हुनक मानसिक सोच मैथिली भाषा ओ साहित्यक प्रति समर्पित रहैत छलनि । लेखकसँ सेहो हुनका पुरान ओ घनिष्ठ सम्बन्ध छलनि । सर्जनात्मक प्रतिभा सेहो हुनकामे छलनि । लेखक हुनका प्रति श्रद्धाभाव व्यक्त करैत कहैत छथि जे- हुनक मैथिली सेवाक स्मृत्यर्थ कोनो सार्वजनिक संस्थानमे हुनक भव्य तैल चित्र लगयबाक सम्बन्धमे नहि सोचल जा सकैछ ?

डा. सुभद्रझा : बहुत दूर-बहुत लऽग (मैथिली अकादमी पत्रिका, जुलाइ-दिसम्बर, 2000) शीर्षक संस्मरणमे मैथिली साहित्यमे हुनक महत्त्वपर प्रकाश देल गेल अछि । लेखककेँ हुनकासँ जे समीपता छलनि; तकर विश्लेषण एहिमे भेल अछि । किन्तु, लेखकक उद्देश्य मैथिली भाषा ओ साहित्यकेँ केन्द्रमे राखि हुनक व्यक्तित्व ओ पाण्डित्यक निदर्शन करब थिक । हुनक दू गोट महत्वपूर्ण कृति नातिक पत्रक उत्तर ओ मैथिली-व्याकरण मीमांसाक रचना ओ प्रकाशन प्रक्रियामे लेखकक जे उल्लेखनीय सहभागिता रहलनि तकरा ओ अपनालेल गौरवक बात बुझैत छथि । हुनकामे सर्जनशीलताक अभाव नहि छल किन्तु से भऽ नहि सकल । लेखकक नजरिमे मैथिली भाषा आ साहित्यकेँ हुनक प्रयोजन सब दिन रहबे करत ।

Scanned by CamScanner

उपेन्द्र दोषी लेखककेँ मोन पड़ैत छथिन । तकर विवेचन **ओ मोन रहताह** (आरम्भ, दिसम्बर 2002) मे भेल अछि । ओ जेना रहथि आ जेना-जेना मोन पड़ैत गेलनि तकर सभक हू-ब-हू चित्र एहिमे उतारल गेल अछि । हुनकामे निहित सकारात्मक ओ नकारात्मक, दुनू पक्षक हुनक व्यक्तित्व एहिमे उजागर भेल अछि ।

भारतीमंडनमे प्रकाशनार्थ लिखित संस्मरणात्मक शैलीमे राजकमलक संग लेखकक भोगल यथार्थक चित्रण अत्यन्त रोचक ढंगसँ **प्रसंग राजकमल : एकटा कथा रामकुमारी** मे भेल अछि । ई हुनक साहित्यिक सोच तथा मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे हुनक गतिविधिकेँ उजागर करैत अछि । लेखक तथा राजकमलक परिचय-पात ओ सम्बन्धकेँ प्रकट करैत अछि । साहित्यिक सोचमे भने किछु भिन्नता प्रदर्शित होइत हो किन्तु लेखक आ राजकमलक बीच साहित्यिक सम्बन्ध छलनि । लेखकक अनुसारेँ तेँ हुनक 'भितरिया-धधरा' शीर्षक कथा राजकमल द्वारा प्रकाशित कथा-संग्रह 'कथा-पराग'मे नहि आयल हो । एहि संस्मरणक अन्तमे राजकमलक अप्रकाशित कथा 'रामदुलारी'क विवरण वर्णित भेल अछि जे पल्लव पत्रिकामे प्रकाशनार्थ रामदेवझाकेँ प्रेषित भेल छलनि । 'पल्लव' पत्रिकाक प्रकाशन, वितरण, सामग्री-संचयन आदिक क्षेत्रमे रामदेवझाक सहयोग रहैत छलनि । राजकमल एहि पत्रिकाक महत्त्वपूर्ण लेखक छलाह ।

मायानन्दमिश्रक अभिनन्दन ग्रन्थक हेतु लिखित **स च मे प्रियः** नामक दीर्घ संस्मरण मायानन्दमिश्रसँ लेखक अपन पचास वर्षक सम्बन्धक लेखाजोखा प्रस्तुत करैत छथि । से बुझि पड़ैत अछि जे ओ हुनका संग व्यतीत एक-एक क्षणक हिसाब करैत होथि । एहिमे दरभंगा ओ पटना प्रवासावधिक अध्ययन, जीविका, लेखकक साहचर्य तथा हुनक साहित्यिक स्वरूपक विशद् परिचय प्राप्त होइत अछि । पूर्णरूपसँ साहित्यिक वातावरणमे वर्त्तमानसँ अतीत दिस जयबाक एहिमे सफल प्रयास भेल अछि । ई दुनूक मध्य अन्योन्याश्रय सम्बन्धकेँ उजागर करैत अछि । लेखककेँ मायानन्दमिश्रसँ सम्पर्क मूलतः दरभंगा ओ पटनामे रहलनि । तदनुरूप एहि संस्मरणक आधार दरभंगा ओ पटनाक परिसर-परिवेश थिक ।

अतएव डा. रामदेवझाक जीवनी ओ संस्मरण मैथिली साहित्यक अनमोल निधि थिक ।

●

Scanned by CamScanner

दशावतारनृत्यम् ओ षोडशगीतम् : अनुसंधान की त्वरा

श्रीअश्विनीकुमार आलोक

कई बार एक-दो रचनाएँ ही रचनाकार के संपूर्ण प्रतिभा परिदर्शन को आकार दे देती हैं । इससे यह स्पष्ट होता है कि विशिष्ट प्रतिभा के रहते हुए उस रचनाकार को या तो अपनी संपूर्ण लेखकीय प्रवृत्ति को विस्तार देने की आवश्यकता महसूस नहीं होती, अन्यथा वह इसे आवश्यक नहीं मानता । स्वान्तः सुखाय रचनाकर्म का अंतर्मुखी स्वभाव भी लेखक को विपुल मात्रा में सृजन करने से रोकता है, मात्रिक दृष्टि से अल्प लेखन के कारण कई बार ऐसे रचनाकार अचर्चित रह जाते हैं । यह इसलिए भी होता है कि ऐसे रचनाकार को चर्चा की चिंता नहीं होती । परंतु अगली पीढ़ी यदि पूरी निष्ठा एवं कर्त्तव्यपरायणता के साथ अपने पूर्वजों के आदर-सम्मान के लिए प्रवृत्त हो, तो ऐसे रचनाकारों के भी जीवन, रचनाकर्म एवं रचनात्मक प्रतिभा को प्रतिष्ठाजनक माना जा सकता है ।

मैथिली के निष्ठावान आलोचक एवं वरिष्ठ लेखक डा.रामदेवझा ने जगज्ज्योतिर्मल्ल की ऐसी ही उपेक्षित एवं अदृश्यप्राय रचनाओं का न सिर्फ संकलन-प्रकाशन किया, बल्कि उनकी उपादेयता, प्रतिष्ठा एवं उत्कृष्टता के भी पक्ष रखे । यह उनकी तत्त्वानवेशी प्रतिभा का उदाहरण है । अनुसंधान, प्रकाशन एवं चर्चा के गत्यारोही ऐसे समर्थ लेखकों से ही भारतीय भाषाओं के ऐसे ही प्राचीन रचनाकारों को पर्याप्त आदर मिल पाया है । डा. रामदेवझा ने मैथिली में अपने लेखकीय संस्कार का जो परिचय रखा है, अन्य रचनाकारों को असामान्य कसौटी पर कसकर पूरी निष्पक्षता के साथ उसके महत्त्व अथवा सामर्थ्य के जो पक्ष रखे हैं, उनसे उनकी विद्या, प्रतिभा एवं प्रवीणता असंदिग्ध प्रतीत होती है ।

मैथिली के आज के मानक स्वरूप के परे मध्यकाल में जिस स्वरूप में रचनाएँ होती रहीं, उसके एक रचनाकार के रूप में जगज्ज्योतिर्मल्ल का भी नाम आता है । ठीक वैसे ही, जैसे हिन्दी के कवि मंझन का नाम उनकी एकमात्र रचना 'मधुमालती' के लिए लिया जाता है । मंझन ने जिस लोकायत की प्रचलित मानसिकता एवं कथाग्रही उद्दीपनों को ध्यान में रखकर 'मधुमालती' की रचना की, जगज्ज्योतिर्मल्ल की रचनाओं में भी वैसी ही आध्यात्मिक साधना एवं भक्ति का समन्वय है । नेपाल के मल्ल राजवंश की भक्तपुर शाखा के शासक जगज्ज्योतिर्मल्ल की सिर्फ तीन नाट्य रचनाओं को लोग जानते रहे । परंतु उनकी अन्य रचनाओं की लिखित पांडुलिपियों की विशिष्टता जानने एवं उसके प्रकाशन का दायित्व निभाने का प्रयास किसी ने भी नहीं किया । डा. रामदेवझा ने जिन दिनों मैथिली शैव साहित्य के अनुसंधान में स्वयं को लगा रखा था, उन्हीं दिनों काठमांडू के राष्ट्रीय अभिलेखागार में जगज्ज्योतिर्मल्ल की दो अन्य रचनाएँ भी देखीं । जगज्ज्योतिर्मल्ल की इन रचनाओं में भाव, भाषा एवं छंद का जो सतत् प्रवाह है, वह तो अभूतपूर्व है ही, संगीत एवं नाटक में भी लेखक की निपुणता का प्रमाण इन रचनाओं की गत्यात्मक सांगीतिकता से अनायास ही प्राप्त हो जाता है ।

जगज्ज्योतिर्मल्ल की रचनाओं में विषय, रस और भाव का वैविध्य है । एक राजा में सामान्य मनुष्य, कवि और रसिक किस प्रकार अलग-अलग समय, श्रेणियों एवं स्वभावों में रहते हैं, उनकी कविताओं में इसका प्रमाण लोक-व्यवहार के मुहावरों, अति सामान्य दिनचर्या एवं सामाजिक अनुरंजन उनकी कविताओं में संपूर्ण भाव-सघनता के साथ विद्यमान हैं । उनकी कविताओं में बुढ़ापे का शृंगार, पति-पत्नी प्रेम और आयु वार्द्धक्य के बीच स्त्री-पुरुष संसर्ग-रति-प्रणय-उपक्रम का हल्का-फुल्का हास्य भी है और शरीर एवं संसार की नश्वरता का वर्णन भी, संसार के माया एवं छलावा होने का भी उन्हें शाश्वत ज्ञान है और देश के प्रति उत्सर्ग की भावना का भी वह सम्मान करते हैं।

Scanned by CamScanner

डा. रामदेवझा ने जगज्ज्योतिर्मल्ल की मुख्यत: दो रचनाओं की समीक्षा करते हुए उनके संपूर्ण रचनाकार व्यक्तित्व की पड़ताल की है । यह मनोवैज्ञानिक सत्य है कि रचनाकार अपनी सभी रचनाओं में- एकाधिक रचनाओं में- अपने लेखकीय स्वभाव को नहीं चाहकर भी एकात्म होने से नहीं बचा पाता । शृंगार एवं दूसरे रसों के प्राञ्जल कवि के रूप में रेखांकित होने के बावजूद जगज्ज्योतिर्मल्ल एक आध्यात्मिक चेतना के कवि अधिक प्रतीत होते हैं । उनमें कृष्ण के प्रति आस्था एवं श्रद्धा है । जयदेव की तरह दशावतार की भाव-संकुल संक्षिप्ति उनकी रचना में संपूर्णता के साथ व्याख्यायित है और यह व्याख्या ठीक उसी प्रकार है, जिस प्रकार भजनोपदेशक-कथावाचक सामान्य मनुष्य को सामान्य या उसी की भाषा में अध्यात्म एवं ईश्वर के प्रति समस्त समर्पण का ज्ञान देता है, ईश्वर की विराट शक्ति तथा सत्ता का गुण गान कर उसके प्रति नत होने का भाव भरता है । जगज्ज्योतिर्मल्ल अपने 'दशावतारनृत्यम्' में दशावतार लीला की वैसी ही व्याख्या करते हैं, यह अन्यत्र अलभ्य है । 'दशावतारनृत्यम्' को जयदेवकृत दशावतार स्तुति का ही काव्य-पल्लवन कहा जाये, तो अत्युक्ति नहीं होगी । इसका तात्पर्य यह कि जगज्ज्योतिर्मल्ल जयदेव से अत्यधिक प्रभावित हुए । दशावतार स्तुति और दशावतार नृत्यम् में भेद गीत-संगीत और नृत्य को लेकर है । विभिन्न उपयुक्त रागों-तालों में विष्णु के दशावतार स्वरूप का व्यापक वर्णन है । इससे प्रतीत होता है कि कवि में संगीत और नृत्य की भी वैसी असीम प्रतिभा रही होगी, जैसी कृष्ण के प्रति आसक्त अन्य कवियों में नहीं दिखती है । अभिप्राय यह कि एक साथ इतनी सारी कलाओं की समाविष्टि का ऐसा प्रतिरूप मैथिली के इतिहासकारों को मध्यकाल के किसी अन्य मैथिली कवियों में नहीं दिखा होगा ।

कृष्ण की कलाओं का सरस वर्णन जगज्ज्योतिर्मल्ल ने 'षोडशगीतम्' में किया है । कृष्ण-गोपी के बीच कृष्ण का आंतरिक संसर्ग, संवाद एवं निष्ठा का दृश्य-वर्णन है । इसे रास की संज्ञा दी जा सकती है । इसमें नृत्य के साथ ही संवाद एवं अभिनय का भी अद्भुत सम्मिश्रण हुआ है । 'नचारी' में शिव-विषयों की प्रधानता नहीं होने के बावजूद शृंगार रस का उत्तम परिपाक हुआ है । लोकवृत्त का साहित्यानुसरण या साहित्य का लोकवृत्तानुसरण जगज्ज्योतिर्मल्ल की रचनाओं में स्पष्ट है ।

डा.रामदेवझा ने स्वीकार किया है कि जगज्ज्योतिर्मल्ल की रचनाओं के प्रेरणास्रोत जयदेव रहे हैं, परंतु, जगज्ज्योतिर्मल्ल में मौलिक लेखकीय तेजस्विता को कम नहीं समझनी चाहिए । उनके गीत-गीतगोविंद के गीतों से कम छंद-सीमा-अनुशासित नहीं हैं और भाव-व्यंजना-सीमा से संकुचित आबद्ध भी नहीं । डा.रामदेवझा ने प्रमाणित किया है कि एक राजा का कविशील व्यक्तित्त्व और काव्य-संस्कार इतना उदात्त और उदार सदैव नहीं मिलता । यदि मैथिली साहित्य में इनके प्राचीन अवदानों को प्रक्षालित किया जाये, तो यह कवि महत्त्वपूर्ण प्रमाणित होगा । यदि भारतीय मैथिली साहित्य में जगज्ज्योतिर्मल्ल को पढ़ा-समझा जाये, तो वे शीर्ष कवि विद्यापति के बराबर पड़ते दिखेंगे । डा.रामदेवझा ने निस्संदेह मैथिली के प्राचीन गीति-कवियों में जगज्ज्योतिर्मल्ल को श्रेष्ठ माना है । उनकी रचनाओं पर गंभीर आलोचनात्मक टिप्पणी करने के बाद वे रचनाएँ पूरी-की-पूरी यहाँ प्रकाशित हुई हैं । इस तरह, भारतीय साहित्य में भारत-नेपाल की मैथिली साहित्य संपदा का आदर-सत्कार भी किया जाना सात्विकधर्म एवं परंपरानिर्वाह है । जगज्ज्योतिर्मल्ल के बहाने मैथिली साहित्य और मैथिली साहित्य के बहाने जगज्ज्योतिर्मल्ल के अवदानों की विद्वत्तापूर्ण निष्पक्ष विवेचना से डा.रामदेवझा की संपन्न अनुसंधाननिष्ठा प्रमाणित हुई है और उनके अनुसंधान में लेखकीय त्वरा के साथ आलोचनात्मक प्रतिबद्धता भी साफ दिखी है ।

●

Scanned by CamScanner

पत्रात्मक समीक्षाक दर्पणमे रामदेवझाक साहित्य-संसार

डा.श्रीशंकरदेवझा

समीक्षावृत्ति अपनामे एकटा सम्पूर्ण शास्त्र थिक । समीक्षाक कतेक प्रकार अछि से हमर विचारक विषय नहि । अपिच हमर विचारणीय वस्तु अछि समीक्षाक प्रस्तुति विधान । सामान्यत: कोनो साहित्यिक कृतिक समीक्षाक प्रस्तुति दू प्रकारेँ कयल जाइत अछि - वाचन आ लेखन द्वारा । वाचनसँ तात्पर्य अछि जे कोनो गोष्ठी इत्यादिमे कोनो कृतिक समीक्षाक वाचन समीक्षक द्वारा सार्वजनिक रूपसँ कयल जाइत अछि, जाहिपर मुक्त विचार-विमर्श होइछ । समीक्षा प्रस्तुतिक दोसर प्रकार अछि प्रकाशनक द्वारा एकरा पाठक समुदाय धरि पहुँचायब । चाहे ओ प्रकाशन पत्रिकाक माध्यमे हो किंवा कोनो पोथीक रूपमे । समीक्षा प्रस्तुतिक इहो पद्धति सार्वजनीने होइछ जाहिमे साहित्य-रसिक ओ पाठक वर्ग एकर रसास्वादन लैत एहिमे सहभागी सेहो बनैत अछि । समीक्षा प्रस्तुतिक ई दुनू प्रचलित पद्धति जेँ कि सार्वजनिक अछि तेँ एहिमे कतोक गुण आ दोष होयब स्वाभाविक अछि । समीक्षाक रूपमे अपन विचार ओ दृष्टिकोणकेँ सार्वजनिक करबाक क्रममे कतोक प्रकारक राग-द्वेष ओ आग्रह-पूर्वाग्रहसँ ग्रस्त भऽ जायब सहज मानवीय स्वभाव अछि। एहि कारणेँ बहुधा देखल जाइछ जे बहुत कमे समीक्षा नीरक्षीर विवेचनक कसौटीपर उतरि पबैत अछि अन्यथा वा तँ ओ समीक्षा काकवृत्ति किंवा कोकिलवृत्तिक पाटि धऽ लैत अछि । ताहिपरसँ जँ क्रिया-प्रतिक्रिया, टीका-टिप्पणी आदि सुरू भेल तँ समीक्षा अपन उद्देश्यकेँ बिसरा एकटा तेसरे स्वरूप ग्रहण कऽ लैछ आ बहुधा संवादक स्थानपर विवाद ठाढ़ भऽ जाइछ । एहि कारणे साहित्यिक विचार-विमर्श अपन निष्कर्ष धरि नहि पहुँचि पबैछ ।

समीक्षा प्रस्तुतिक उपर्युक्त दुनू पद्धतिसँ इतर एकगोट एकर औरो प्रकार अछि जाहिमे एहि तरहक विवादक कोनो खतरा प्राय: नहि रहैत छैक, ओ थिक - पत्रात्मक समीक्षा । पत्रात्मक समीक्षासँ हमर तात्पर्य अछि जे पत्रक माध्यमसँ कोनो विद्वान् किंवा पाठक लेखकक कोनो कृतिपर अपन विचार ओ प्रतिक्रिया प्रेषित करैत छथि । ओ एकान्तिक विचार सेहो साहित्यिक समीक्षा प्रस्तुतिक एकटा प्रकार थिक ताहि दिस एखनो साहित्य विशेषज्ञ लोकनिक ध्यान नहि गेलनि अछि । साहित्यकार लोकनिक एहिसँ सन्दर्भित निजी पत्राचार किंवा पत्रक रूपमे प्राप्त बोधगर पाठक लोकनिक प्रतिक्रिया वस्तुत: कागतक भीड़मे दबले रहि जाइछ आ नष्ट भऽ जाइछ । हमरा जनतबेँ तँ ई पत्रात्मक समीक्षा समीक्षाशास्त्रक विशुद्धतम रूप थिक । जेँ कि ई समीक्षा निजी पत्राचारक द्वारा कयल जाइछ तेँ एकरा सार्वजनिक होयबाक कोनो प्रश्न नहि रहैत अछि । एहिमे ककरो तेसरक हस्तक्षेपक सम्भावना नहि रहैत छैक । तेँ एहि तरहक पत्रमे कोनो कृतिक सन्दर्भमे व्यक्त विचार कोनो प्रकारक आग्रह-पूर्वाग्रहसँ मुक्त रहैत अछि से मानल जयबाक चाही । अपितु 'पत्रात्मक समीक्षा'क सम्बन्धमे इहो कहब अनुचित नहि होयत जे जेँ कि एहिमे पत्र लेखकमे आत्मप्रचार किंवा प्रेषिती साहित्यकारपर सुनियोजित प्रहारजन्य कोनो दुर्भावना नहि रहैछ आ जकर गुंजाइस एहि पद्धतिमे छैके नहि, तेँ समीक्षाक एहि प्रकारमे अभिव्यक्त विचार कोनो वाह्य प्रभावसँ सुरक्षित रहैछ । कहल जयबाक चाही जे पत्रात्मक समीक्षाक रूपमे व्यक्त विचार ओकर लेखकक आन्तरिकता, ओकर साहित्य दृष्टि ओ साहित्य बोधकेँ विशुद्ध रूपसँ प्रदर्शित करैत अछि । जाहि तथ्यकेँ कोनो विद्वानकेँ सार्वजनिक रूपसँ व्यक्त करबामे संकोच होयतनि, किंवा कोनो दबाबक कारणेँ ओ व्यक्त नहि कऽ पबैत होथि से विचार पत्रक माध्यमसँ इमानदारीपूर्वक ओ व्यक्त कऽ पबैत छथि । अवश्ये ई विचार कखनो कटु, कखनो मधुर, कखनो उपदेशप्रद, कखनो कोनो आने तरहक भऽ सकैछ । परन्तु ई कोनो तरहक हो, प्रत्येक रूपमे ई विशुद्ध होइत अछि । एहि रूपमे अवश्ये ई विमर्श अपन निष्कर्ष धरि पहुँचैत अछि जे प्राय: समीक्षाक पारम्परिक पद्धतिक द्वारा सम्भव नहि भऽ पबैछ ।

Scanned by CamScanner

मैथिली भाषा-साहित्यमे श्रीरामदेवझा 'सव्यसाची' साहित्यकारक रूपमे ख्यात छथि । हिनक लेखनी जतबे रचनात्मक साहित्यिक विधाक क्षेत्रमे प्रखर रहलनि अछि, ततबे अनुसन्धान-आलोचनामे मुखर रहलनि अछि । श्रीरामदेवझाक विभिन्न रचना ओ कृति सभपर निरन्तर कोनो अज्ञात-अपरिचित पाठक किंवा मैथिलीक मान्य विद्वान् ओ साहित्यकार, किंवा साहित्यसँ इतर क्षेत्रक साहित्यप्रेमी विशिष्ट जन लोकनिक विचारात्मक-समीक्षात्मक-प्रशंसात्मक पत्र सब अबैत रहलनि अछि । एहि पत्रावलीमेसँ अनेक पत्र निस्सन्देह महत्त्वपूर्ण अछि जकर समीक्षात्मक मूल्य छैक ।

रामदेवझा, ललित-मायानन्द पीढ़ीक निविष्ट कथाकार छथि । हिनक प्रायः अधिकांश कथा सभ पाठक द्वारा समादृत होइत रहलनि अछि । 11 जनवरी 1976 क मिथिला मिहिरमे हिनक **हत्थाजोड़ी** कथा प्रकाशित भेल छलनि । समाजक निम्नवर्गीय एकटा दम्पतीक आपसी नोंक-झोंक ओ राग-विराग, पति द्वारा अपन पत्नी मानवतीक नारीत्वक अपमान ओ पुनः पतिपर भेल चतुर्दिक प्रहारसँ पत्नीक हृदयमे उपजल अजस्र मात्सर्यक कारणेँ एकटा रोचक दृश्य उपस्थित करैत ई कथा अपन प्रकाशनक बाद बेस चर्चित भेल छल । साहित्य सेहो कखनो कऽ रोग निवारक औषधिक काज करैत अछि तकर प्रत्यक्ष प्रमाण अछि एहि कथापर जमशेदपुरसँ पठाओल एकटा पाठक दम्पतीक पत्र । एतऽ इहो बात ध्यातव्य जे हत्थाजोड़ीपर उक्त पाठकक प्रतिक्रिया कथाकारकेँ नहि पठाओल गेल छलनि अपितु पाठकक स्तम्भमे प्रकाशनार्थ मिहिरकेँ पठाओल गेल छलैक । मिहिर एहि रोचक पत्रकेँ प्रकाशित नहि कयलक तकर जे कारण रहल हो, मुदा मिहिरक सम्पादन कार्यसँ ओहि समयमे सम्बद्ध रहल श्रीभीमनाथझा उक्त पत्र सोझे कथाकारकेँ निम्न टिप्पणीक संग पठौलथिन -

मिथिलामिहिर, पटना / 18 मार्च 76

स्वस्ति, डाक्टरसाहेब,

एहि पाठक-पाठिकाक सम्मिलित प्रतिक्रियासँ मिहिरक अन्य पाठक लोकनिकेँ नहि अवगत करा सकबाक खेदक संग प्रेषित अछि ई पत्र । जँ दसो दिन पूर्व हमरा ई भेटि गेल रहैत तँ (फगुआ अंकक माध्यमे) एना नहि पठबऽ पड़ैत !

–भीमनाथझा

पैरमे मेच पड़लाक पीड़ासँ त्रस्त जमशेदपुरक श्री एवं श्रीमती गंगेशझाकेँ **हत्थाजोड़ी** कथा कोना अपन पीड़ाकेँ बिसरबाक हेतु विवश कऽ देलकनि, कोना झा-दम्पती एहि कथाकेँ पढ़ि हँसि कऽ लोट-पोट होइत रहलाह से हुनकहि एहि पत्रसँ जानल जा सकैछ -

जमशेदपुर /6 मार्च 1976

अभिन्न हृदय स्नेही सम्पादक महोदय, जय मैथिली ।

आगाँ 11 जनवरी 76क मिहिरक अंकक 'हत्थाजोड़ी' कथाक प्रणेता डा. श्रीरामदेवझाजीकेँ अपनेक पत्रिकाक माध्यमसँ हुनका धरि, हमरा लोकनिक शुभकामना व्यक्त करबाक हेतुएँ अपनेसँ आग्रह ।

संयोगवश हुनक ई कथा पढ़बाक मौका किछु विलम्बसँ तखन भेल जखन हम रातिमे पैर मुका मोचक दर्दक कारणेँ दवा-दारू आ घरैया उपचारक बादो पीड़ित छलहुँ । हमरा कष्टमे देखि ध्यान मोड़बाक ख्यालसँ मिहिरक यैह कथा हमर गृहिणी हमरा सुनाबय लगलनि । कथाक रोचकता तद्वते हमर ध्यान आकृष्ट करैत गेल आ दर्द हमर भुलाय लागल । श्रद्धेय हरिमोहनबाबूक अलभ्य कृतिकेँ बहुत पूर्वे पढ़लाक बाद मैथिलीमे पुनः दोसर बेर यैह कथा पढ़लाक बाद हम सपरिवार ओतेक हँसलहुँ अछि । ओतवे नहि, गृहिणीसँ पोथी लऽ हम स्वयं कथाक अगिला अंश पढ़बामे दत्तचित्त भेलहुँ । पढ़ैत काल हँसी ततेक ने लागय जे पेटमे बघापर बघा पड़य लागल । तइयो तोड़ नहि थम्हय । विद्यार्थी सब द्वारा कुब्बी आ ठुनका मारिक आगाँ हँसीक बाढ़ि नहि रुकि सकल । फलतः आगाँ पढ़बक क्षमता हमरा नहि रहल ।

Scanned by CamScanner

कहुना कथाक शेष अंशकेँ पढ़ि सुनयबामे हमर गृहिणीकेँ कमसँ कम पाँच मिनट प्रति पाँती जरूर लगनि आ कहबाक बात नहि हमर दर्द राति भरुक हेतु भागि गेल छल ।

डा. साहेब मनतोरियाक मान तोड़यबाक जाहि ताना–बानासँ कथा–जाल बुनलनि अछि सम्भवत: ओ समाजक हजारो–हजार मानवतीक यथार्थ मान–चित्रणक समस्या थीक । समाजक एक एहेन मनतोरियाक प्रत्यक्ष अनुभूति हमरा लोकनिकेँ अछि जे डा. साहेबक सीमा–रेखाकेँ लाँघि एहि मोह–मायासँ उबि सरिपों दोसर संसारक बाट सदाक हेतु धऽ लेलक । हमरा लोकनि डाक्टरसाहेबक हास्यरसयुक्त यथार्थ चारित्रिक चित्रण क्षमता आ हुनक कलम चातुर्यक सतत् कायल छी । भगवतीसँ प्रार्थना हुनक सुदीर्घ लेखन कलाक प्रसादेँ माँ मैथिलीक श्रीवृद्धि अभिनव होइत रहय आ पाठकवर्ग हमरे जकाँ पीड़ारहित भय तकर रसास्वादनमे अनन्त काल धरि लीन रहथु । अपनेक नायकत्वमे 'मिहिर' लोकचित्तक संस्कार करैछ आओर करैत रहत, ताहि विश्वासक संग –

श्री/श्रीमती गंगेशझा 'रश्मि'
अध्यक्ष– मिथिला नवयुवक संघ
189/2/8, छोटा गोविन्दपुर, जमशेदपुर – 4

रामदेवझाक कथा संग्रह **मनुक सन्तान** बेस चर्चित रहलनि । मानव मात्रकेँ एक बूझि समस्त प्राकृतिक संसाधनपर सभक समान अधिकारक पैरवी करैत ई संग्रह विभिन्न विचारधाराक लोककेँ प्रभावित कयलक । 1966 मे प्रकाशित हिनक एहि कथा संग्रहक कतोक कथाक अनुवाद भाषान्तरहुमे भेल तँ एहि संग्रहपर एकटा खास विचारधाराक अवक्षेपण जानि ई संग्रह कम्युनिस्ट शासन पद्धतिवला देश रूसमे सेहो पहुँचल आ ओतहु पढ़ल गेल । एहने एकटा नेपालीय मैथिलीभाषी आ मास्को प्रवासी पाठक देवनारायणठाकुर **मनुक सन्तान**पर अपन प्रतिक्रिया पठौलनि । कम्युनिस्ट शासनक ओहि यौवन कालमे ओहि विचारधारासँ विशेष प्रभावित देवनारायणजी रामदेवझाक कथाक प्रशंसा तँ करैत छथि, मुदा हुनक मानसपटलमे जे वर्ग–संघर्षक स्वरूप छलनि ताहि धरि रामदेवझाक कथाकेँ नहि पहुँचि पयबाक कारणे ओ आलोचनो करैत छथिन –

मास्को / 26 मइ 1976

परमादरणीय रामदेवबाबू, नमस्कार ।

हमरासँ अहाँ परिचित नहिए होयब । हम नेपाल तराइक कठाल गाँवक वासी छी । मास्कोमे अध्ययन कऽ रहल छी । तीन वर्ष बीत गेल, चारि वर्ष सोवियत संघमे रहब । अपन विषयक अध्ययनक अलावा मातृभाषा मैथिलीक सेहो उन्नति करबाक संकल्प लेने छी । 12 अक्टूबर 1973 केँ सोवियत संघमे अध्ययनरत मैथिलीभाषी बन्धु लोकनि द्वारा– अखिल मैथिल समाज, सोवियत संघक स्थापना कयल गेल । संस्थाक पूर्व अध्यक्ष अजीतकुमार दास (प्राय: अपनेक ग्रामीण) हमरा लोकनिकेँ अपनेक मातृभाषा सेवासँ परिचय करौलनि, अपनेक किताब सब पढ़य लय देलनि । मैथिली भाषाक विकासमे अहाँ जुझल छी, बहुत खुशीक गप्प । अहाँ सन–सन विद्वान् मिथिलाक लेल एक–दू गोट नहि बल्कि अनेको चाही । एखन हम 'समाज'क प्रधान सचिवक पदपर काज कऽ रहल छी । एहि विदेशमे मातृभाषाक उन्नति आ पहचान बनयबा लय डेग–डेगपर अहाँक मार्गदर्शनक जरूरत अछि ।

अहाँक लिखित 'मनुक सन्तान' पढ़ऽ के मौका भेटल । ओना तऽ 1966 के लिखल पोथी हम 1976 मे पढ़लहुँ । मुदा साहित्य कहियो पुरान नहि होइत छैक । एहि किताबक सातो कथा एक–एक कऽ पढ़लहुँ अछि । एहि सम्बन्धमे हम अहाँ के किछु कहऽ चाहैत छी । जहाँ धरि 'मनुक सन्तान' पोथीक सम्बन्ध छैक हमरा बहुत नीक लागल । कारण ई नहि छैक जे एकरा डा रामदेवझा लिखने छथि, बल्कि मिथिलाक भाषामे मिथिला ओ मैथिल लोकनिक अवस्थाक आँखि देखल वर्णन ऐना जकाँ झलकैत अछि । एहि पोथीकेँ पढ़लासँ हम अहाँकेँ एक नीक सामाजिक

Scanned by CamScanner

लेखकके रूपमे राखि सकैत छी । अहाँक सभ कथामे जे वर्णन अछि से वास्तवमे एखन मिथिलामे घटि रहल छैक । मास्कोमे रहितो हमरा आँखिक सामने आबि गेल अछि । उदाहरण स्वरूप –

'मनुक सन्तान' (कथा)सँ – जिरिया मुनेसराक गप्पपर बड़ी जोरसँ बाजि उठलि – हे मुनेसरे ! बेसी लब-लब नै करऽ, अपनाकेँ काबिल बुझै छथि ।'

– जनपिट्टेकेँ आङ-समाङ ढहि जयतनि । जाहि हाथे डोका पानिमे फेकलनि से हाथ गलि जयतनि, ओहिमे डिठौरी भऽ जयतनि ।'

'नकली आदमी'सँ– तावत क्यौ बाजल-ए कमल माय! गुड़ दियउ ने मुँहमे । आइ कनिञाक मुँह मधुर कऽ दिअउ तँ पुतोहु होयत, पियरगरि.... ।'

'परमिलिया'सँ– ई चकत्ता सन देह कथी लेल छै ?'

–परमिलियाकेँ होइत छलैक जे जाँतमे गड़ि जाय । ओ अपन मूड़ीकेँ झुकबैत-झुकबैत जाँतमे सटा लेने छलि । ओ अन्न-धुन्न पिसने जाइत छलि । ओकर कपार परक केशक लट चिक्कसकेँ छूबि-छूबि लैत छलैक ।'

'भितरिया धधरा'सँ– मुचकुनमा ठाढ़ भेल देखैत रहल । सड़कपर, खेतमे, इनारक लहरापर, मन्दिरक पछुआड़मे, बढ़मथानक अङनइमे, पीपर तर..... सभ ठाम छौंड़ा सभ उक्का-बाती लेने सोहरल छल ।'

उपर्युक्त पाँती सभकेँ पढ़ि कोनो मिथिलावासीक दिमागमे अपन मिथिलाक अवस्था आबि जेतैक चाहे ओ सात समुन्दर पार किएक ने हो । अहाँक कथाक यैह विशेषता हमर हृदयकेँ छूबि लेलक । मुदा कोनो मनुक्ख आदर्श नहि होइत छैक । सभमे कोनो ने कोनो प्रकारक अवगुण अथवा कमी रहिते छैक । हमरा विचारेँ अहाँमे सेहो हम कमी निम्न रूपमे देखि रहल छी । कथा, सभ क्यौ नहि लिखि सकैत अछि, मुदा मात्र समाजक अवस्था हू-ब-हू ऐनाक प्रतिविम्ब जकाँ उतारि देनाइ हमरा विचारमे बहुत मुश्किलो नहि । कहबाक तात्पर्य ई जे अहाँ समाजक जेहन अवस्था देखा रहल छी, ओहि के पाछू अहाँक की उद्देश्य अछि ? अहाँ समाज सुधारक अथवा प्रगतिशील लेखकके रूपमे आबऽ चाहैत छी त अहाँके चाही जे समाजक अवस्थाके वर्णन करैत नीक बाट सेहो देखाबी । जेना कि जाहि ठाम अखन डोका बिछैत, जाँतमे अखन धरि पिसैत लोकसभ अछि । पुरुष-स्त्रीक अवस्थामे आकाश-पातालक फर्क छैक । एहि सम्बन्धमे हमरा विचारसँ अहाँक लेखनी नहि पहुँचि सकल अछि, मतलब समाज सुधारक पक्षमे । माफ करब भऽ सकैत अछि अहाँके हम नीक जकाँ नहि बूझि सकलहुँ अछि । सभ किछु होइतो हम अहाँके हृदयसँ धन्यवाद दैत छी खास कऽ ओहि लेल जे अहाँ हमरा सन नवयुवककेँ नया रास्ता (बाट) देखा रहल छी । अहींके शब्दमे-बाल्यकालमे पजरल भितरिया धधरा भविष्यक भीषण क्रान्तिकारीक निर्माण करैत छैक ।' आशा अछि धधराकेँ बुझाय नहि देबैक । अपनेक-

देवनारायण ठाकुर

प्रधान सचिव

अखिल मैथिल समाज, सोवियत संघ, मास्को

रामदेवझाक कथाक तेसर संग्रह **धरतीमाताक** प्रकाशन 1985मे भेलनि । पूर्वक कथा संग्रह जकाँ धरतीमाताकेँ सेहो पाठकीय सुख ओ समीक्षा-समालोचनाक प्रचुर अवसर प्राप्त भेलैक । तद्वते कतोक साहित्यिक बन्धु लोकनि सेहो पत्र लिखि एहि पोथीपर अपन प्रतिक्रिया व्यक्त कयलथिन । धरतीमातापर प्राप्त एहि पत्रात्मक समीक्षामे एकटा महत्त्वपूर्ण पत्र अछि मैथिलीक स्वनामधन्य साहित्यकार कीर्त्तिनारायणमिश्रक पत्र जकरा एतऽ अविकल प्रस्तुत कयल जाइछ–

चित्तावालसा जुट मिल्स

विशाखापत्तनम

14 जून 1989

Scanned by CamScanner

प्रिय भाइ,

अहाँक 20/05क पत्र गामसँ घुरलाक बाद प्राप्त भेल । पछिला सप्ताह पोथी सब सेहो प्राप्त भऽ गेल । अहाँक दू गोट कथा-संकलन 'एक खीरा : तीन फाँक' आ 'मनुक सन्तान' हम पहिनहि पढ़ि चुकल छलहु । 'इजोती रानी' देखबाक अवसर नहि भेटल । 1985मे प्रकाशित अपन कथा-संकलन 'धरतीमाता' द्वारा अहाँ सिद्ध कयलहुँ अछि जे मैथिली केर प्रसिद्ध कथाकार श्रीरामदेवझा कथाकारक रूपमे एखनहुँ जीवित छथि– सम्पूर्ण मौलिकता-स्वाभाविकताक सङ । संकलनक प्रत्येक कथामे सामान्य जनजीवनसँ एकात्म भए सामाजिक वैषम्य आ समाज-विमुख व्यक्ति-चिन्तनपर प्रहार कैल गेल अछि । आशा अछि, लेखनमे अहाँ नैरन्तर्य बनौने रहब आ अपन नव रचनासँ एहिना प्रभावित-अनुप्राणित करैत रहब ।

मैथिलीमे नाटकक रचना अपेक्षाकृत कम होइत रहल अछि । अहाँक नाट्य संकलन 'पसिझैत पाथर' एहि विधाकेँ समृद्ध कैलक अछि । हम चाहब जे एकर सभक कहियो कतहु मंचनो देखि सकी । कतेक वर्षसँ अहाँसँ भेट नहि भऽ सकल अछि । आशा अछि, अहाँ सपरिवार स्वस्थ-प्रसन्न हैब । धिया-पुता सब की कऽ रहल छथि ? श्रद्धेय श्रीसुमनजी एवं श्रीअमरजीकेँ हमर चरण-स्पर्श कहबनि । पुनश्च– हमरा तीन गोट संकलन बहार करबाक अछि–

1. दश गोट मैथिली कथाक संकलन 2. 'हम स्तवन नहि लिखब'क बादक लिखल प्राय: 60 गोट कविताक संकलन 3. अपन समकालीन साहित्यकारपर लिखल संस्मरणक संकलन । की 'संकल्पलोक'केँ छापऽ लेल तैयार कऽ सकैत छी ? पत्राचारक क्रम नहि टूटय-एहि आग्रहक सङ । अहाँक अभिन्न **–कीर्त्तिनारायण**

मैथिली पत्रिका भाखामे मइ-जून 1989मे रामदेवझाक एकगोट शब्दचित्रात्मक कथा **ठमकल घड़ीः पथरायल आँखि** प्रकाशित भेल छलनि । 1942क अगस्त क्रान्तिक परिप्रेक्ष्यमे लिखित एहि कथामे लहेरियासराय टावर चौक ओ ओकर आसपासक तत्कालीन दृश्य उरेहल गेल अछि । कोना एकटा राजभक्त जमीन्दारक पीठपर जखन गोरा पलटनक लाठी पड़लनि तँ तकर पीड़ाक अनुभव करैत ओ राजभक्तसँ राष्ट्रभक्त बनैत स्वतन्त्रता आन्दोलनमे कूदि पड़लाह । एहि कथापर पंडौलक पूर्व विधायक, प्रखर समाजवादी चिन्तक, राजनीतिशास्त्रक विद्वान ओ सी.एम.कालेजक पूर्व प्राचार्य प्रो. रमाकान्तझा पत्रक रूपमे अपन प्रतिक्रिया प्रेषित कयलथिन । पत्रमे एहि कथाक भूरिशः प्रशंसा करैत टावर चौकक वर्णन क्रममे किछु छूटल महत्त्वपूर्ण विषय ओ स्थलक दिस कथाकारक ध्यान आकृष्ट करौलथिन–

सोहराय / 12 अगस्त 1989

प्रिय रामदेवजी,

शुभाशीष । मइ-जून 89क भाषा'मे अहाँक 'ठमकल घड़ी: पथरायल आँखि' पढ़ल बड़ नीक लागल । एकदम सजीव चित्रण अछि- भाषाक तँ कोनो गप्पे नहि हो-प्राञ्जल ओ प्रवाहयुक्त । भाव-शैली इत्यादि अनुपम ।

ओहि लेखसँ बहुत नव ज्ञान भेल आ टावर चौकक महत्त्व हमरा हेतु अत्यधिक बढ़ि गेल । टावरक दोसर महलपर गान्धीजी छथि से अहींक लेखसँ बूझल, वा यदि कहियो बुझनहुँ छल हैब तँ बिसरा गेल छल । यद्यपि हमहूँ स्वतन्त्रता सेनानी छी, पंडौल सेन्ट्रल बैंकसँ पेन्शनो पबैत छी- 1942मे दू वर्ष, चारि मास, चारि दिन बिहारक विभिन्न जहलमे छलहुँ तथापि हमरहु इएह हाल जे अहाँ चित्रित कयल अछि ।

अहाँक लेखमे वर्णित हमरा एकेटा बात बूझल छल जे ई टावर चौक राजनीतिक अखाड़ा थीक । भरि दिन राजनीतिज्ञ लोकनि एतऽ गप्प लड़बैत रहैत छथि । अहाँ खाली एकटा बात छोड़ि देल जे एहि टावर चौकपर गुजिया पानवलाक पानक दोकान सबसँ पुरान अछि आ ओ स्थल वामपन्थी राजनीतिज्ञ लोकनिक अखाड़ा थीक । भरिसक अहाँकेँ ई बात नहि बूझल छल वा जानि-बूझि कऽ छोड़ि देल ? परञ्च ई बात ओहि लेखमे रहब आवश्यक छल । कखनहुँ ई गुजियाक पानक दोकान कर्पूरीठाकुरजीक सेहो अखाड़ा छल । सूरजबाबू कहियो-कहियो एतऽ हुलकी दऽ

Scanned by CamScanner

दैत छलाह । आब ने हम दोसर जिलाक भऽ गेलहुँ परञ्च कहियो तँ हमरहु घर दरभंगे जिला छल आ हमहूँ गुजियाक दोकानपर गप्प लड़ाबी ।

कृपया ओहि लेखक हेतु हमर हार्दिक बधाइ स्वीकार करू, आ हे एहेन-एहेन लेख जल्दी-जल्दी बहार करैत रहू आ हमरा लोकनिक ज्ञानवर्द्धन करैत रहू । मोन होइत अछि भेट कऽ कऽ बधाइ दी परञ्च से बादमे । सम्प्रति पत्रहिसँ सन्तोष कऽ लैत छी । शेष कुशल । अहाँक परमशुभेच्छु **-श्रीरमाकान्त झा**

कथाकार रामदेवझाक लेखनी जतबे मानवीय संवेदनाकेँ चरम धरि पहुँचयबामे सफल रहलनि अछि ताही अनुपातमे ओ पशु संवेदनाकेँ सेहो अपन विभिन्न कथामे मुखरित करैत रहलाह अछि । भारती-मंडन-10 मे हिनक प्रकाशित कथा **कहाँ छेँ रे नुनुआँ** वर्त्तमान सामाजिक विद्रूपताक अपन यथार्थ चित्रणक कारणे मैथिलीक किछु उत्कृष्टतम कथामे स्थान पयबाक अधिकारी अछि । एहि कथाक भाषा सौष्ठव ओ शब्द चयन सेहो ततबे अद्‌भुत अछि। एहि कथापर मैथिलीक जानल-मानल साहित्यकार ओ घराड़ी उपन्यासक लेखक सुशील अपन पाठकीय प्रतिक्रिया निम्न शब्दमे व्यक्त कयलनि-

बजबज / 24 मार्च 04

प्रिय महोदय,

नमस्कार । एम्हर 'भारती मंडन'क अंक-10 पढ़बाक अवसर भेटल अछि । एहिमे अपनेक कथा 'कहाँ छेँ रे नुनुआँ' बहुत आकर्षित कयलक अछि । कथा अपन सब धर्म-गुणक संग उत्कृष्ट बनि पड़ल अछि । एहि कथाकेँ पढ़लासँ हमरा एकटा बड़का लाभ भेल अछि । किछु ठेठ मैथिली शब्द सभ जे हम बिसरि गेल छलहुँ, पुनः मानस पटलपर उभरि आयल अछि ।

'भारती मंडन'क ई अंक प्रायः दू वर्षपर अयलैक अछि । पत्रिकामे चिट्ठी कहिया ने कहिया छपतैक तकर ठीक नहि । तेँ सबेर सकाल अपनेकेँ दू आखर लिखब अपन धर्म बूझल । वस्तुतः पूछी तँ नहि रहि भेल । पुनः अपनेसँ एकटा आर एहेन सशक्त कथाक आशाक संग- **सुशील**

मैथिलीक सुप्रसिद्ध समालोचक ओ अन्वेषी डा. रमानन्दझा रमण सेहो एहि कथाक थीम ओ शिल्पक सम्बन्धमे पत्रक माध्यमे निम्न विचार प्रेषित कयलनि-

पटना / 14 अप्रैल 2004

मान्यवर,

जानवर/पशुक संवेदनाकेँ मानवीय संवेदनाक रूपमे अभिव्यंजित करबाक कुशलता हमरा जनतवेँ विरल होइछ। मानवीय ममताकेँ पशुक हेतु उझिलि देव आओरो विरल । डा. धीरेन्द्रक 'सुगरक बाप' आ विभूति आनन्दक 'जानवर' मे ई संवेदना मुखर भेल भेल छल, किन्तु 'कहाँ छेँ रे नुनुआँ'- विशिष्ट अछि । संगहि वर्त्तमान समाजमे व्याप्त मूल्यहीनताक अभिव्यक्ति प्रभावक अछि । पाठककेँ दक्क सन लगैत छैक । धन्यवाद ! **–रमानन्दझा 'रमण'**

रामदेवझा मैथिलीक एक निविष्ट नाटककार छथि । हिनक नाट्यसंग्रह **पसिझैत पाथर**पर 1991मे साहित्य अकादेमी द्वारा हिनका पुरस्कार प्रदान कयल गेल छलनि । एहि संग्रहक प्रत्येक नाटक प्रकाशनसँ पूर्वहि अनेक बेर मंचित भऽ कऽ चर्चित-अर्चित होइत रहल । कोनो ने कोनो सामाजिक समस्याकेँ स्वर दैत मानवीय संस्पर्शसँ परिपूरित एहि संग्रहक शीर्षक नाटक **पसिझैत पाथर**क प्रथम मंचन 1976मे चेतना समितिक मंचपर भेल छल जे कतोक दृष्टिएँ ऐतिहासिक रहल । एहि प्रथम मंचनक दर्शकमेसँ एकटा रहथि पूर्व विधायक, समाजवादी चिन्तक ओ सी.एम. कालेज, दरभंगाक पूर्व प्रिन्सिपल प्रो.रमाकान्तझा । से जखन अपना आँखिसँ देखल नाटक पोथीक रूपमे जखन हुनक हाथमे

Scanned by CamScanner

पड़लनि तँ ई पोथी गुजरात-राजस्थानक हुनक एकटा यात्रामे पाथेय साबित भेलनि । एहि संग्रहकेँ पढ़लाक बाद हुनक पाठकीय प्रतिक्रिया कोन तरहक भेलनि से हुनका द्वारा पठाओल गेल दू गोट पत्रसँ जानल जा सकैछ । साहित्यसँ इतरहु क्षेत्रक बोद्धा पाठकक समीक्षा दृष्टि कतेक स्फीत भऽ सकैछ तकर अवगाहन हुनक पत्रकेँ पढ़ि कऽ कयल जा सकैछ । विलक्षण पत्रात्मक समीक्षाक आस्वादन प्राप्त करबाक हेतु **पसिझैत पाथर**पर लिखल गेल हुनक ओ दुनू गोट पत्र एतऽ क्रमशः प्रस्तुत कयल जा रहल अछि-

वारमेड़ (राजस्थान)/ 16 सितम्बर 1990

प्रिय रामदेवबाबू

सस्नेह नमस्कार । कुशल-कुशलापेक्षित । अहाँकेँ विश्वास नहि हैत जे हम अहाँक पोथी 'पसिझैत पाथर' गामपर नहि पढ़ि सकलहुँ । अम्बाला कैन्टसँ लालगढ़क यात्रामे 'पसिझैत पाथर' पढ़ल आ' जोधपुरसँ वारमेड़क यात्रामे 'लोचन धाए फेधाएल' । दुहू नाटक बेस नीक लागल । परञ्च पहिल आओरो नीक । पहिने 'पसिझैत पाथर'क मादे । अहाँक भूमिका बिसरल बात मोन पाड़ि देलक । चेतना परिषद (समिति)मे जे अहाँक 'पसिझैत पाथर'क मंचन भेल छल ताहिमे एकटा दर्शक हमहूँ रही । तखनहुँ नाटकक अन्तमे हमर आँखिसँ नोर खसल छल आ पढ़बा काल सेहो तहिना भेल । अहाँक नाटकक बाद पटना विश्वविद्यालयक एक नाटकक मंचन सेहो भेल छल । एही दुहू नाटकमे एक प्रथम आ दोसर द्वितीय भेल छल । परञ्च मोन नहि पड़ैत अछि जे कोन प्रथम आ कोन द्वितीय । बिसराह तँ हम छीहे । हमरालेल आत्मीयताक बात ई छल जे अहाँक नाटकमे हमर बालसखा किसुनजीक कन्या कमला मुख्य पात्रीक रोल केने छलि आ दोसर नाटकमे हमर सहपाठी श्रीसूर्यकान्तचौधरीक (लोहाक) कन्या मुख्य पात्रीक पार्ट केने छलि आ ओही दुनूमे एक प्रथम भेल छल आ दोसर द्वितीय । फेर मोन नहि पड़ि रहल अछि जे के की भेल छल ।

'पसिझैत पाथर' बेस नीक लगबाक एक कारण इहो भऽ सकैछ जे कमला (अभागलि कमला) ओहिमे पार्ट केने छलि तेँ हम ओकरा अप्पन नाटक बुझैत छी । परञ्च से की हैत-ओहि नाटकमे कला अपन चरमबिन्दुपर पहुँचि गेल अछि । हम तँ राजनीतिशास्त्र सन नीरस विषयक छात्र छी । परञ्च अहीं लोकनिक मुँहसँ जे किछु साहित्यक बात सूनल अछि वा किछु पढ़लो अछि तकरे आधारपर ने किछु कहब । पढ़ल छल जे काव्य (साहित्ये भेल)मे नाटक अति रमणीय । से अहाँ 'पसिझैत पाथर'केँ अति रमणीय बनाइए कऽ छोड़ल । पढ़ब प्रारम्भ कयल आ पढ़िते जाय पड़ल । छोड़ल कहाँ! नाटकमे ई धाराप्रवाह अहींक नाटकमे बुझना गेल । हिन्दीक किछु नाटक पढ़ल अछि, परञ्च ताहू सबमे ई धाराप्रवाह कहाँ बूझि पड़ल छल ।

अहाँ नाटकक आरम्भमे नाटकक मंचनमे परस्पर विरोधकेँ उतारि देल-इहो कमाल ! आ' ओहिसँ नाटकक उपादेयता आ अभिनेयता आओरो बढ़िए गेल । सतक विजय असतपर हो से अहाँ नाटकक प्रारम्भहिमे देखा देल । सबसँ नीक चानन-चम्पाक संवाद लागल । बिल्कुल स्वाभाविक लागल जेना गामक सम्पूर्ण वातावरण आँखिक सोझाँ नाचि रहल हो । कालक प्रभाव नाटककेँ आओर फड़िछा कऽ मंचपर उतारि देलक अछि । खास कऽ हमरा सन प्रगतिवादी प्रगतिवादिए नहि समाजवादी व्यक्तिक तँ ई सम्पूर्ण हृदयकेँ विलोड़ित कऽ देलक, आत्मानुभूतिमे रमि गेलहुँ । आ कमला (प्रतिमा) क व्यथाक अन्तसँ अति आनन्द भेल, नोर ताहीपर खसल । एकटा तँ भइए गेलैक जे नाटकमे ओ प्रोफेसरक पार्ट केलक तँ प्रोफेसर भऽ कऽ रहल । आ ओकर जीवन निराशाक मध्य आशाजनक भऽ गेलैक । भगवान ओकर बालककेँ महान बनाबथि । ओझरैल धनेश्वर सन व्यक्तिकेँ अहाँ सोझरा देल आ से सहज भावसँ, कष्टसाध्य रूपमे नहि जे कि आन नाटकमे भेल अछि- सेहो कमाले अछि । 'नाटकक टेकनिक' आ मूल तत्व सभक निर्वाह अत्यन्त कौशलपूर्वक कोना-कोना भेल अछि तकर मादे एखन नहि कहब । गाड़ीक समय भऽ गेल अछि आ स्नान-ध्यान बाँकिए अछि ।

सुमनजीक प्रथम उपन्यास 'उगनाक दयादवाद' हमरा नीक लागल । जटिलजीसँ पोथी कीनि पढ़ने छलहुँ ।

Scanned by CamScanner

परञ्च सुमनजी से प्रयास जारी राखथि से निवेदन । जटिलजी कहने छलाह जे नौटा नाटक (उपन्यास) ओ आओर लिखताह से दोसर बहरैल छन्हि की नहि ? पत्रोत्तर एना दी जे 16/10/1990कें दीयाबातीसँ प्राय: दू दिन पूर्व पहुँचलापर तुरन्त भेटि जाय, पहिने नहि । हमरा प्रति आत्मीयता एहिना रखने रही से निवेदन । गलती तँ हमरासँ होइते हैत, परञ्च तकर खेयाल नहि राखी शेष कुशल । अहाँक परम शुभेच्छु- **श्रीरमाकान्तझा**

जेरलसर (गुजरात) / 23 सितम्बर 1990

प्रिय रामदेवबाबू

सस्नेह नमस्कार । मरुधर मध्य 'मरुधर एक्सप्रेस' मे (जोधपुर-मेरता रोडक बीच) अहाँक मरुधरजन्य नाटक 'पिपासा' पढ़ल नीक लागल । ई प्रसंग हमरा बुझलो नहि छल सेहो बुझा गेल । आब अहाँक सातो नाटक हम पढ़ि लेल । 'रहऽ दियौ गंगाकें निर्मल' आत्मीयतासँ सराबोर बूझि पड़ल । सदानन्द पात्र तँ अहाँ महाबीहड़ आ यथार्थ (वास्तविक) गढ़ि लेल । एहेन-एहेन धुरन्धर पैरवीकार एहि धरतीपर जन्म लेने छथि सी.एम. साइन्स कॉलेजमे आ अन्यहु । रघुराजमे एकठाम गंगाक निर्मलता से बहऽ लागल सन बुझैल, यथा- ... रघुराज- बॉस अरे दू-चारि नम्बर बढ़ा देब कोन तेहन बात भेलैक ! ई तँ समादो पठा दितथि तँ भऽ जैतनि ।'

'रघुराज- तैयो जखन समधि समाद पठौलनि अछि तँ हुनक सम्मान होएबेक चाहियनि ।'

हम निश्चित कहब जे ई उक्ति सब हमर सिद्धान्तक खिलाफ अछि । अहाँ ई नहि बूझि लेब जे हम आत्मप्रशंसा कऽ रहल छी । हमर जीवनक ई निरपेक्ष सिद्धान्त (Absolute Principle) रहल आ भगवान से निवाहि देल तें उपकृत छी हुनक ।

'लोचन धाए फेधाएल'क बनौली राज कतऽ छैक? बनैली तँ ने? इहो नाटक बड़ दीव लागल ।

'चाननक बसात' तँ हमर अपन जीवनक किछु घटना सबकें मोन पाड़ि देलक । बुझाइ पड़ल जे धीरेन्द्र हम अपनहि तँ ने छी ? भोलाझाओ सन व्यक्तिकें अहाँ रस्तापर लऽ अयलहुँ-ई नाटकक विशेष खूबी । ओना नाटकक ई धर्म थीकहिए । चमत्कार तँ ई जे भोलाझासँ घूस पाबिओ कऽ आइ-काल्हुक दरोगा रस्तापर आबि गेल से ई सामान्य जीवनमे नहि होइछ ।

'दुलारक भूख' बेस नीक अछि । 'मनुष्यक देवता' बढ़िएँ लागल ।

हमरा होइत छल जे अहाँ प्रथम कोटिक समालोचक आ शोधकर्त्ते छी-Creative writer नहि । परञ्च से भ्रम ई पोथी दऽ अहाँ दूर कऽ देल । हमरा विचारें अहाँक शोध-लेखन आ सर्जनात्मक साहित्यक निर्माण दुहू संगहि समानान्तर रूपें चलैत रहै से बड़ नीक । जटिलजीक माध्यमे सुमनजी आ अहाँक गतिविधिसँ परिचित होइत रहैत छी । सुमनजीक हम भक्त छी, हालांकि हुनक राजनीतिक जीवनक सख्त खिलाफ । परञ्च हम भक्तक कर्त्तव्यक निर्वाह करिते आयल छी । राजनीति ताहिमे बाधा नहि करैछ आ ओ सतत् हमरा आशीर्वाद दैत आयल छथि आ तकर हम सतत् आकांक्षो करैत रहैत छी । रेलक बेर भऽ गेल । विदा । अहाँक परम शुभेच्छु- **श्रीरमाकान्त झा**

1960सँ 1963क बीच मिथिलामिहिरमे रामदेवझाक क्रमश: तीन गोट पत्रात्मक धारावाहिक **अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग,** ओ **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** प्रकाशित भेल छलनि । अपना समयमे ई तीनू धारावाहिक पाठक वर्गक बीच बेस लोकप्रिय भेल रहय आ एहि धारावाहिक सभक तानी-भरनी ओ प्रयोगधर्मी शिल्पकें देखैत समालोचक लोकनि एकरा उपन्यासक संज्ञासँ अभिहित कयलनि । अपन प्रकाशनक चारि दशक बाद ई तीनू धारावाही 2002 मे जखन पुस्तकाकार प्रकाशित भेल तँ एक बेर फेर ई तीनू कृति चर्चाक केन्द्रबिन्दुमे आयल । आइसँ चारि दशक पूर्व लेखक द्वारा स्वयंमे नारीक अवतरण कऽ कऽ मैथिलीमे स्त्री विमर्शक बीजारोपण कयल गेल छल । मुदा मैथिलीक मान्य विद्वान ओ साहित्यकार

Scanned by CamScanner

श्रीगोविन्दझा अंगरेजीफूलक चिट्ठीकेँ उपन्यास नहि उपन्यास सनक वस्तु मानैत छथि, तथापि एहि कृतिमे प्रयुक्त 'नारी भाषा' हुनका अत्यन्त प्रभावित कयलकनि से ओ अपन एकटा पत्रमे निर्द्वन्द्व भावसँ स्वीकार करैत लिखलनि-

पटना, पटेलनगर (पश्चिम)सँ / 15 मार्च 05

स्वस्ति, नमस्कार ।

'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' पहुँचल । भूमिका भाग पढ़ल । छद्म नामसँ लिखल वस्तु कखनो काल विवादास्पद भए जाइत अछि एतेक सफाइ देबाक आवयकता नहि छल । हँ, एकरा उपन्यास मानबामे हम सहमत नहि छी । उपन्यासक आभास अवश्य अछि । एक बेर फेर पढ़ब तखन .... । एखन एतबे । भाषा विज्ञानमे पुरुष-भाषा आ नारी-भाषा एक अध्याय लिखल अछि । ताहिमे अहाँक ई पोथी प्रचुर सामग्री देलक अछि । नारी-भाषाक वैशिष्ट्य अहाँक अनेक कथा सभमे भेटल अछि । 'टीस' पढ़ल । नीक से कते कही- **गोविन्दझा**

एहि उपन्यासक प्रसंग गोविन्दझा एकटा दोसरहु पत्रमे अपन विचार मुक्त रूपसँ व्यक्त कयलनि । हुनक दृष्टिमे अंगरेजीफूलक चिट्ठी ओ बहिनाक विरोग ने तँ रामदेवझाक साहित्यिक प्रतिष्ठाक अनुरूपे थिकनि आ ने वर्त्तमान समयमे ओ एकर प्रकाशनक औचित्ये बुझैत छथि । मुदा एहि दुहू कृतिकेँ शब्द प्रयोग ओ भाषा प्रयोगक दृष्टिएँ ओ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कहलनि अछि । गोविन्दझा अपन पत्रमे ई स्वीकार कयने छथि जे एहि कृतिमे कतोक एहन शब्द सभक प्रयोग भेल अछि जे हुनक कल्याणी कोश ओ व्याकरणमे स्थान नहि पाबि सकलनि । कोश निर्माणसँ पूर्व जँ ई कृति सभ पुस्तकाकार भेल रहितय तँ कदाचित् एहिमे प्रयुक्त कतोक रासे ठेठ ग्रामीण शब्दावली सभ कोशमे स्थान प्राप्त कऽ सकितय । तहिना पत्र लेखककेँ एहू बातक खेद छनि जे जँ हुनका 'मैथिली भाषा परिचय' नामक अपन पोथी लिखबा कालमे ई पोथी भेटल रहितनि तँ महिला भाषाक वैशिष्ट्य नामक अध्यायक लेखनमे एहिसँ बड़ बेसी सहायता भेटल रहितनि । गोविन्दझाक समीक्षात्मक टिप्पणीकेँ देखबाक लेल प्रस्तुत अछि हुनक ई दोसरो पत्र-

पटना / 19 अप्रैल 05

स्वस्ति श्रीरामदेवजी, नमस्कार ।

'अङरेजीफूलक चिट्ठी'क पहुँचनामा लिखि चुकल छी । पहुँचल होएत । लगले 'बहिनाक विरोग' सेहो पहुँचल पहिल अंशतः पढ़ल, दोसर सम्पूर्ण । जाहि डा. रामदेवझाक कृतिक हम प्रशंसक रहलहुँ अछि ई दूनू ताहि प्रकारक वस्तु नहि थिक । नीक होइत जे दूनू छद्मनामहिसँ छपबितहुँ । केहन लागल ताहि प्रसंग एतबे कहब जे जँ हम 1940इ. मे नव-साक्षरा नवागता कुलवधू रहितहुँ तँ निश्चय बड़ दिब लगैत आ बहुत रास जीवनोपयोगी उपदेशसँ लाभान्वितो होइतहुँ । तथापि दू अंशमे ई पढ़ब सार्थक भेल । पहिल ई जे बहुत-रास एहन पद, पदबन्ध आ वाक्यबन्ध भेटल जे हमर कोश आ व्याकरणमे छूटल अछि । यथा, विरोग (पृष्ठ 1), हमरा ताइञे (5), तिरेजन (5), गुड़ोँत (15), महजरो (15), परधान (23), अरमज (26), सिरखार (27) आओर कतेक गनाउ । दोसर ई जे महिलामुखी (मौगिआही) भाषाक नीक उदाहरण भेटल । भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरक हेतु जे मैथिली भाषा परिचय लिखल अछि ताहिमे एक अध्याय छैक महिलाभाषाक वैशिष्ट्य । से लिखबाक काल जँ ई ध्यानपर रहैत तँ एहिसँ बड़ उपकार होइत । एक प्रसंग बड़ रोचक लागल- रुसा-फूलीक अन्त (पृष्ठ 61) । अन्तिम पत्रमे वर किएक रुसलाह से प्रश्न अनुत्तरित रहि गेल ।

पत्र लिखबाक काल किछु उलहन-उपराग फुरल, मुदा कलम रुकि गेल । कलम कहलक, ''कतबो हमरा फेरबह, ताहिसँ केओ नाम नहि लेतहु । विद्वांसो वसुधातले परवचः श्लाघासु वाचंयमाः । सभ मण्डलीमे तोँ 'पर' बनल रहलह । 'स्व' बनबाक चेष्टा करह ।''

बहुत बनओलहुँ दिबड़ाक भीड़ । आब कलम केँ विश्राम देअए चाहैत छी। आब सभ दार-मदार अहाँ सभपर छोड़ए चाहैत छी । हमर अन्तिम कृति 'आत्मालाप' मैथिली जगत्मे अचर्चित रहि गेल । सैह हाल भेल 'कल्याणीकोश'क । प्रसन्नता एहि बातक अछि जे दुनू बजारमे खपि गेल । गोदाम खाली । स्वस्थ आ सक्रिय रहू जे सुनि-सुनि हमहू आनन्दित

Scanned by CamScanner

होइत रही । पुनश्च नब फ्लैट लेल अछि आ ताहिमे स्थायी रूपेँ आबि गेल छी । नब पता आ नब फोन नम्बर नोट कए लिअ । अहाँक **गोविन्दझा**

गोविन्दझा भने अंगरेजीफूलक चिट्ठी ओ बहिनाक विरोगकेँ सम्पूर्ण उपन्यास मानबाक पक्षमे नहि रहथु, मुदा मध्यकालीन मैथिली साहित्यक अन्वेषी विद्वान डा. शशिनाथझा एहि दुनू कृतिकेँ स्वतन्त्र विधाक उपन्यास कहैत एकर वर्णन विन्यास ओ शिल्पकेँ अद्वितीय कहैत छथि । ओना शशिनाथझा अंगरेजीफूलक चिट्ठीमे लेखकक भूमिकापर स्पष्ट शब्दमे अतिरंजनाक आरोप लगबैत छथि तँ दोसर दिस एकर कर्त्तृत्वपर विवाद ठाढ़ कयनिहारोकेँ थेथरक संज्ञासँ विभूषित करैत छथि । द्रष्टव्य अछि हुनक ई पत्र–

दरभंगा / 22 अप्रैल 05

श्रद्धेय श्रीरामदेवबाबू,

अपनेक 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' ओ 'बहिनाक विरोग' एक स्वतन्त्र विधाक उपन्यास थिक । कथा एहि हेतु नहि जे ई आदिसँ अन्त धरि एकसूत्रबद्ध अछि । एतेक रास परिस्थिति ओ समस्याक यथार्थ धरातलकेँ एकत्र समेटल हम आन कोनो पोथीमे नहि देखने छी । जा धरि ई पोथी बेनामी छल ता धरि पाठक बुझैत छल जे ई कोनो नारीक कृति थिक । एहि रूपक चित्रण लेखकक एकान्त-विषयनिष्ठता सूचित करैछ ।

पहिल पोथीक भूमिका– 'सत्यस्यापिहितं मुखम'–सत्यक उद्घाटन करैत–करैत अतिरञ्जित भए गेल अछि । यद्यपि एकर जानकारी आवश्यक छलैक, तथापि किछु अंश खटकैवला अछि । अपनेक ई कृति थिक से तँ पत्रक छायाचित्र रूप दस्ताबेजे सँ प्रमाणित भए गेल । आब क्यो एहि विषयमे थेथरपनी नहि करताह । आवश्यकता अछि जे ई पोथी महिला समाजक हाथमे पहुँचए । हमरा विश्वास अछि जे जनिक हाथ ई पोथी जएतनि से विनु समाप्त कएने नहि रहतीह । अपनेक **–शशिनाथ**

मैथिलीक प्रख्यात कवि तारानदझा तरुण, श्रीरामदेवझाक तीनू पत्रात्मक उपन्यास पढ़लाक उपरान्त एहिमे चित्रित नारी मनोविज्ञानक मुक्तकंठसँ प्रशंसा करैत लिखलनि–

मलाढ़ / 30 अप्रैल 07

आदरणीय ओझाजी, सादर नमस्कार ।

अपनेक रचित रामजोड़ी कागतक पाँखिपर, बहिनाक विरोग पढ़ि अंगरेजीफूलक चिट्ठी पढ़बाक लेल उद्यत भेलहुँ, मुदा ताहिसँपूर्व आमुखमे प्रकाशित 'सत्यस्यापिहितं मुखम्' पढ़बाक जिज्ञासाकेँ नहि टारि सकलहुँ आ पृष्ठ 3सँ पृष्ठ 25 धरि आद्यन्त पढ़ि गेलहुँ । हमरा जनैत अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग आ रामजोड़ी कागतक पाँखिपर केर पुनर्प्रकाशनक संग ई जनतब देब निश्चित रूपेँ आवश्यक छल जे सामान्य पाठकक भ्रम निवारणमे सहायक सिद्ध होयत । सोनाकेँ जतबा आगिमे तबाओल जाइत अछि ततबा ओहिमे निखार अबैत अछि । हमरा जनैत अपने सभकेँ बदनाम करबाक षड्यन्त्र सभक पर्दाफास एहि आलेखसँ भऽ सकत से आशा करैत छी । ओना जे हेहर अछि ओ अपन हेहरपनीसँ बाज आओत तकर आशा करब तँ व्यर्थे । ओना रामजोड़ी कागतक पाँखिपर आ बहिनाक विरोगमे नारी मनोविज्ञानक चित्रण पत्रक माध्यमे जाहि रूपेँ प्रस्तुत भेल अछि संगहि मिथिलामे तात्कालिक नारी समाजक स्थिति जे चित्रण कयल गेल अछि से रोचक तँ अछिहे संगहि सत्यपरक सेहो । ओना हम पुनः एकरा पढ़ब अपनेक– **तारानन्दझा 'तरुण'**

रामदेवझा जेहने निविष्ट साहित्यकार छथि तेहने विशिष्ट अनुवादको छथि । राजिन्दरसिंह बेदीक उर्दू उपन्यास **एक चादर मैली सी**क उत्कृष्ट मैथिली अनुवादक हेतु 1993 मे हिनका साहित्य अकादेमी द्वारा अनुवाद पुरस्कार प्रदान कयल गेलनि । **सगाइ** नामसँ मैथिलीमे अनूदित ई उपन्यास पाठककेँ कोनो मौलिक मैथिली कृति जकाँ आस्वाद प्रदान

Scanned by CamScanner

करैत अछि । मैथिलीक प्रख्यात कवि ओ मार्क्सवादी समालोचक कुलानन्दमिश्र भने वैचारिक स्तरपर रामदेवझाक विचारधाराक विपरीत दोसर ध्रुवपर रहथु, मुदा एकटा साहित्यकारक रूपमे जाहि निष्पक्षताक संग ओ अपन पत्रमे **सगाइ**क अनुवादक विशिष्टताकेँ रेखांकित करैत एकर प्रशंसा कयलनि अछि से अवश्ये चौंकबैत अछि । कदाचित् एकटा समीक्षकक रूपमे एहि कृतिक समीक्षा जँ पारम्परिक पद्धतिसँ हुनका करऽ पड़ितनि तँ ई आशंका छल जे ओ अपन वैचारिकताक कारणे किंवा कतिपय वाह्य दबाबक कारणे पूर्ण निष्पक्षता नहि देखा सकितथि आ पासङ मारि दितथि एहि आशंकाकेँ निर्मूल नहि कहल जा सकैछ, किएक तँ कुलानन्दमिश्र 1993मे साहित्य अकादेमीक मैथिलीमे अनुवाद पुरस्कारक निर्णायक मंडलीक एकटा सदस्य रहथि । ओहि वर्ष ई **सगाइ** सेहो पुरस्कारक लेल चयनित पोथीक सूचीमे छल । मुदा कुलानन्दमिश्रक हाथें ओहि वर्ष रचनात्मक साहित्यसँ इतर साहित्यिक इतिहास विषयक एकगोट अनूदित पोथीकेँ पुरस्कारक लेल चयनित कयल गेल । एकटा औपन्यासिक कृतिकेँ अवहेलित कऽ कऽ ओकरा बदला इतिहास विषयक पोथीकेँ पुरस्कार देबाक पाछाँ हुनक की विवशता रहल होयतनि से नहि कहल जा सकैछ । मुदा हुनक आत्मा प्राय: हुनक अपनहि निर्णयकेँ स्वीकार नहि कयलक आ तेँ अन्तत: कुलानन्दमिश्र कोनो प्रकारक वाह्य दबाबसँ ऊपर उठि अन्तरआत्माक स्वरकेँ अकानैत तत्काल **सगाइ**पर अपन प्रतिक्रिया पत्रक माध्यमे व्यक्त कयलनि जाहिमे निश्चित रूपसँ विशुद्ध समालोचनाक दर्शन होइत अछि । हुनक ई लघु पत्रात्मक समीक्षा निम्न रूपक अछि-

शास्त्रीनगर, पटना/ 25 दिसम्बर 93

माननीय बन्धु, सादर प्रणाम ।

भाइ मोहन भारद्वाजक कृपासँ 'सगाइ'क प्रति पढ़बालेल प्राप्त भेल । पोथी से मनलग्गू जे विनु समाप्त कयने छोड़ल नहि गेल । एतेक प्राणवन्त कथा-वस्तुकेँ मैथिलीक पाठकलेल सुलभ बना अपने निश्चित रूपसँ अत्यधिक यशक काज कयल अछि ।

हमरा राजिन्दरसिंह बेदीक 'एक चादर मैली सी' मूल रूपमे पढ़बाक सुअवसर बहुत पहिने भेटल छल । ओहि मूल पोथीक किछु बात आ रंग-ढंग आब बिसरि जकाँ गेल छी, तथापि ओकर मूल आत्मा आ भंगिमा अखनो स्मृति-पटलमे बनल अछि-प्राय: कहियो बिसरियो नहि सकब । हमरा लगैत अछि जे एहि उपन्यासक मुख्य पात्रीक 'तेवर' आ आत्मिक दृढ़ताक सङ्ग लागल आन्तरिक लालित्यकेँ मैथिलीमे ओही रूपमे प्रस्तुत करब ककरो लेल सम्भव नहि रहैक । जाहि रूप आ मज्जा सङ्ग 'सगाइ'क रानो हमरा सबकेँ उपलब्ध भेलीह अछि, कम प्रिय नहि लगलीह अछि ।

हमर अभिनन्दन कृपया स्वीकार कयल जाय । आशा अछि, अपने सर्वथा स्वस्थ आ प्रसन्न छी आ अपन अटूट लेखन-क्रमकेँ जारी रखने छी । कृपा-दृष्टि चाही, कृपाभाजन- **कुलानन्द**

मैथिली अनुसन्धान-समालोचनाक क्षेत्रमे डा.रामदेवझाक नाम प्रमुखतासँ लेल जाइत छनि । मध्यकालीन किर्त्तनिया नाटककार उमापतिक स्थितिकाल, परिचय ओ आश्रयदाता तीनू ग्रियर्सनहिक समयसँ विवादास्पद रहल अछि । मैथिली साहित्यक इतिहासक आद्य लेखक डा. जयकान्तमिश्रक मत सेहो उमापतिकेँ लऽ कऽ भिन्ने तरहक रहलनि जकर विस्तृत विवरण ओ अपन इतिहासमे देने छथि । मुदा डा. रामदेवझा उमापतिक वास्तविकताक दिशामे गम्भीर अन्वेषण कयलाक पश्चात एक गोट शोध-निबन्ध 'उमापतिक मैथिलेशक अप्रामाणिकता' लिखलनि जे मिथिला मिहिर (28.12.75)मे प्रकाशित भेल । पुन: एहि कड़ीक दोसर निबन्ध 'उमापतिक आश्रयदाता एवं स्थितिकाल' लिखलनि जे मिथिला मिहिर 16 अक्टूबर 1977क अंकमे प्रकाशित भेल । ई दुनू निबन्ध मैथिली अनुसन्धानक क्षेत्रमे एकटा हलचल उठा देलक, ग्रियर्सनसँ लऽ कऽ जयकान्तमिश्र धरिक मान्यताकेँ खण्डित कऽ देलक । उमापतिपर लिखित उपर्युक्त प्रथम निबन्धक प्रतिक्रियामे डा. जयकान्तमिश्र एकटा दीर्घ पत्र एकर लेखककेँ लिखि पठौलथिन जकरा उत्कृष्ट

Scanned by CamScanner

विमर्शक श्रेणीमे राखल जा सकैछ । उमापतिपर हुनक ओ ऐतिहासिक विमर्शात्मक पत्र निम्न रूपक अछि–

1 सर पी.सी. बनर्जी रोड

इलाहाबाद

15/01/1976

स्वस्ति श्रीमत्सु नतयः । उमापतिक आश्रयदाताक सम्बन्ध अहाँक सुविचारित निबन्ध ताहिमे हुनक प्रसङ्गात् ई कथ्य जे उमापति 'मैथिलेश' ओ हरिहरदेव हिन्दूपति दुनूक चर्चा करैत छथि । से किएक ? पहिल आर दोसर दुनू एके व्यक्ति होएब अहाँ उचित बुझलहुँ– से नीक जकाँ प्रमाणितो कएलहुँ अछि ताहि हेतु धन्यवाद ।

मुदा ई अवश्य चिन्तनीय थिक जे आन कोनो कवि वा नाटककार दू-दूटा पोषक नहि मानैत नान्दी लिखने छथि । किन्तु ध्यान देबाक थिक जे पारिजातहरणक नान्दीएटा मात्रमे 'मैथिलेश'क चर्चा अछि । समस्त गीतमे हिन्दूपति मात्रक नाम अछि । तेँ ई द्वैध कोनो विशेष बात नहि, मात्र अपन स्वदेशीय मैथिलेशकेँ अन्य राजा हिन्दूपतिक आश्रयदाता रूपमे चर्चा करब बुझबाक थिक, दुहू दू व्यक्ति छलथिन्ह, एके व्यक्ति नहि, सएह सिद्ध होइछ । नाटकक आर दूटा हस्तलिखित प्रतिमे एवं विद्याकर साहस्रकम्मे मैथिलेश शब्द भेटितो नहि अछि सेहो एतबे सन्देह उत्पन्न करैछ जे भए सकैछ प्रथम संस्करणमे जे किछु कहल गेल हो पछाति संस्करणमे मैथिलेश नामवला श्लोक जोड़ल गेल अछि–इहो भए सकैछ देशवासी नटुआ सभ जखन अभिनय करए लागल तँ ई जोड़ि देने हो । अहाँक ई समस्त तर्कशैली बड़ सुन्दर ओ संगत अछि ।

अहाँकेँ ई मानबामे आपत्ति अछि– हिन्दूपति हरिहरदेव जे बुन्देलखण्डक राजा छलाह तनिक नामे हिन्दूपतिसिंह छलन्हि ।' प्रायः एहि विषयक हमर दू गोट निबन्ध 'मिथिला और बुन्देलखण्ड' एवं 'A new light on the Date of Umapati Upadhyaya' अहाँ आद्योपान्त नहि पढ़ि सकलहुँ अछि । हिन्दूपतिक नाम कतहु हिन्दूपतिसिंह कए प्रसिद्ध नहि छन्हि– मात्र 'हिन्दूपति'सँ प्रसिद्ध छन्हि । दोसर ई जे गाढ़ा राज्यमे महेशठाकुर ओ हुनक आश्रित मैथिल कतेक छलाह से छोट ऐतिहासिक तथ्य नहि थिक । महाराज महेशठाकुरक भाए हेमाङ्गदठाकुर हेतु उमापति 577 ल.स.मे एकटा हस्तलिखित ग्रन्थ लिखलन्हि से प्रमाण भेटैत अछि । तखन हमरा तँ एखन धरि कोनो प्रकारक सन्देह नहि भेटि रहल अछि जे उमापति उपाध्यायक नाटक गाढ़ा राज्यक हिन्दूपतिक अधीन एही राजगुरु उमापति द्वारा प्रथम रचल गेल ?

गाढ़ा राज्य छत्रसालेक समयसँ हिन्दू जातिक केहन गढ़ छल, मुसलमानक आक्रमण रोकनिहार छल से जनिका नहि बूझल छन्हि से उमापतिक 'यवनवनच्छेदकराल करवालेन विच्छेदगत चतुर्वेदपथप्रकाशप्रतापेन भगवतः श्रीविष्णोर्दशमावतारेण' विशेषणक अक्षरशः सार्थकता नहि बूझि सकताह, किन्तु अहाँ सन अध्येताकेँ एहि विशेषणक पुनः पुनः परीक्षण करब आवश्यक । कतहु उमापति हिन्दूपतिसिंह नाम नहि कहैत छथि आर जे कवि वा मैथिल विद्वान आदि जे चर्चा कएने छथि से हिन्दूपतिसिंह नाम कतहु लैत नहि छथि; समस्त इतिहासमे छत्रसाल, हिन्दूपति विना 'सिंह' पदवीक प्रसिद्ध छथि, तेँ ई कोनो आवश्यक नहि छल जे उमापति हुनका हिन्दूपतिसिंह कहितथिन । प्रत्युत हिन्दूपतिक पूर्वज 'राय' वा 'शाह' बेसी कहबैत छलाह ।

बुन्देलखण्डक राजा लोकनिक आश्रित पण्डित ओ कवि रहैत छलाह तकर प्रचुर प्रमाण अछि । सबसँ पूर्व चर्चा अछि जे ओरछा नरेशक ओहि ठाम श्रीसदानन्द मैथिल 'वीर मित्रोदय' नामक याज्ञवल्क्य स्मृति टीका लिखलन्हि । ओ अपनाकेँ 'तीरभुक्तेरखिलबुधगुरु' कहैत छथि । एकरा पश्चात हृदयनारायण महाराज अपन 'हृदयप्रकाश' एवं 'हृदयकौतुक' नामक संगीत ग्रन्थमे लोचनक 'रागतरंगिणी'क स्पष्ट उपयोग करैत भेटैत छथि । एहिसँ मैथिल संगीतक आदर एवं मैथिली गीतक प्रचार हुनका ओहि ठाम छलन्हि से अनुभव होइछ । एहिसँ इतरहु स्पष्ट प्रमाण भेटैत अछि जे मैथिल दुर्गादत्त 'वृत्तमुक्तावली' नामक छन्दक ग्रन्थ हुनकहि सन्तान हिन्दूपतिक आश्रयमे लिखलन्हि तेँ उमापतिक आश्रयदाता हुनका मानब हमरा सम्भव बुझाएल । छन्द ग्रन्थकर्त्ता ई मैथिल दुर्गादत्त कोना हिन्दूपतिक वर्णन करैत छथि से द्रष्टव्य अछि–

Scanned by CamScanner

राजन्यवंशाब्जनिदायुधामा भूपोऽभवच्चम्पतिरायनामा ।
तदात्मजो विश्वयिसारिकीर्त्तिः श्रीछत्रसाल सुविशालपूर्तिः ।।
हृदयसाह नृपोऽजाने तत्सुतः सकलभूपगुणेन समन्वितः ।
विपक्षभूपृत्कणिः सभायां सिंहोपमस्तस्य सुतः सभायाम् ।।
अतः क्षमासिंह इति प्रसिद्धिं जगाम गन्ताखिलकार्य सिद्धिम् ।
भूपाल्लब्धजनेरनेक वसुधा सामन्त चूड़ामणेः ।।
श्रीहिन्दूपति भूपते तव शुभं शौरिः सशैलात्मजा ।
नित्यं निर्मलपङ्कजाननमुदा कुर्वन्तु संवर्धितम् ।।
दुर्गादत्तसुधीर्विधाय रुचिरां श्रीवृत्तमुक्तावलीं ।
श्रीहिन्दूपति भूमिपाल हृदये हर्षेण विन्यस्तवान् ।।

'गुरु उमापति' 'नृपतिपति हिन्दूपति'कें अपन आश्रयदाता कहैत छथि– कतहु हिन्दूपतिसिंहकें नहि । तहिना दुर्गादत्त कतहु हिन्दूपतिसिंहकें नहि, मात्र श्रीहिन्दूपतिकें बारम्बार अपन आश्रयदाता कहैत छथि । दू-चारि मैथिलकें आश्रय देनिहार ओ छलाह तें हिन्दूपति 'मैथिलेश' कहल जाथि से हम कतहु नहि कहने छी । मैथिलेशहुकें नान्दीएमे जोड़ल गेल छै से मात्र विचारणीय-हिन्दूपति मैथिलेशो छथि से सन्देह वृथा थिक– ओ भिन्न, ई भिन्न । दुहूक नाम देलाक अर्थ अहाँक कथानुसार इएह सिद्ध करैछ जे पछाति मैथिलेश जोड़ल गेल छल, से सर्वथा संगत बुझाइछ– स्वयं पारिजातहरणकर्त्ता द्वारा वा अभिनयकर्त्ताक द्वारा । मूलतः गुरु शब्द ध्यान देबाक थिक– आन कोनो कवि वा लेखक अपनाकें गुरु नहि कहैत छथि ।

हँ, एकटा 'मेओं' एखनो शेष अछि– ओ थिक जे हिन्दूपतिकें 'हरिहरदेव' नाम सेहो छलन्हि वा नहि ? एहि हेतु हमर अहाँसँ विनम्र आग्रह जे एकर अन्वेषण करी तखनहि कोनहु निष्कर्ष पर जाइ से उचित । हमरा विश्वास अछि जे बुन्देलखण्डक इतिहासमे वा अन्य ग्रन्थ सभमे ई नाम अवश्य भेटत । अहाँ लिखैत छी– भेटल नहि अछि' से ताकल कहाँ गेल अछि । आ यावत नहियों भेटैत अछि आर 'मैथिलेश' आश्रयदाताक अप्रामाणिकता सिद्ध करैत अछि जे उमापतिक आश्रयदाता गाढ़ाक राजा हिन्दूपति छलाह । हँ, 'मैथिलेश' शब्दक अप्रमाणिक भेलें ई कोनो हिन्दूपतिएक अधीन पारिजातहरण लिखलन्हि से सिद्ध होइछ– एहिसँ हमरा मतक पुष्टिए होइछ । हिन्दूपति विरुद नहि थिक नाम थिक, मुख्य नाम, एहि धारणाकें त्यागिएकें उमापति प्रसङ्ग अन्वेषण करी तँ बेसी उत्तम होएत । अहाँक निबन्धक प्रसंग एतेक लिखब आवश्यक बुझलहुँ । अहाँ छोड़ि हमर बात दोसर बुझनिहार आर अछिए के ? अहाँ हमर हार्दिक स्नेह ओ आशीर्वाद स्वीकार करू-मन गदगद अछि– एक बेर पुनः उमापतिकें चर्चाक केन्द्रबिन्दुमे आनल । पत्रोत्तर दी–

श्रीजयकान्तस्य

तदुपरि 1980मे मैथिली अकादमी, पटनासँ उमापतिपर डा. रामदेवझाक एकटा स्वतन्त्र पोथी प्रकाशित भेलनि । पूर्वमे मिहिरमे प्रकाशित निबन्धपर डा. जयकान्तमिश्रक अनुसन्धानी तेवर जेहने विरोधक छल, पोथी प्रकाशनक बाद हुनक स्वर तेहने सकारात्मक बनलनि । उमापतिकें लऽ कऽ मैथिली साहित्यमे चलि आबि रहल भ्रमकें जाहि पुष्ट प्रमाणक संग डा. रामदेवझा अपन पोथीमे दूर कयलनि तकरा जयकान्तमिश्र अन्तिम निष्कर्ष मानबा लय विवश भेलाह से हिनक एहि दोसर पत्रसँ जानल जा सकैछ–

1. सर पी.सी. बनर्जी रोड
इलाहाबाद-211002
14 मइ 1980

स्वस्ति ।। कल्याणालय चिरञ्जीवी श्रीरामदेवबाबू शुभोदयेषु शुभाशिषः सन्तु ।। उमापतिपर अहाँक पोथीकें अनेक बेर

Scanned by CamScanner

पढ़लहुँ । एहिमे जतेक नव तथ्य सभ आएल अछि— से सभ हमरा अपन पूर्व मान्यतापर पुनः विचार करबा हेतु विवश कएलक अछि । उमापति प्रसङ्ग ग्रियर्सनक समयसँ चलैत भ्रान्त धारणाक बहुत अंशमे समाधान करैत अछि अहाँक ई नवीन अन्वेषण । 'उमापति' ग्रन्थमे समस्त विषयकेँ बुझाए प्रामाणिक रूपेँ जेना राखल अछि ताहि हेतु धन्यवादार्ह । मकवानपुरीय नृपवंशावली आर सेनवंशावलीमे विस्तारसँ देल गेल प्रमाणकेँ ताकि जेना प्रमाणित कएलहुँ अछि जे— मकमानीक दोसर नाम मकवानपुर थिक— जतए हिन्दूपति विरुदधारी हरिहरदेव सेनवंशीय राजा छलाह— उमानाथ प्रसिद्ध उमापतिक यथार्थ आश्रयदाता उएह छलाह । पारिजातहरणमे हिनक प्रशंसाक जतेक शब्द कहल गेल अछि आर एकर गीत सभमे जे रानी सभक नाम उद्धृत अछि से सभ ओहि परिचयसँ स्पष्ट भए जाइछ । ई हिन्दूपति विरुदधारी सेनवंशी राजा साहित्य-विधाक संरक्षकहि नहि प्रतापी छलाह आर यवन-सेनापर सेहो विजय कएने छलाह— ई सभ तथ्य जाहि स्पष्टताक संग प्रतिपादित भेल अछि तकरा समक्ष हमर अपन पूर्व मान्यता जे— उमापति बुन्देलखण्डक राजा हिन्दूपतिक आश्रयमे पारिजातहरण नाटक लिखलन्हि ताहिपर पुनर्विचारक अपेक्षा अहाँक एहि पोथीक तथ्य सभकेँ अन्तिम निष्कर्ष मानए पड़त । अहाँक ई नवीन अन्वेषण उमापतिक समय सेहो निर्धारित कएलक अछि— सोड़हम शताब्दीसँ लऽ कऽ सत्रहम शताब्दीक तेसर चरण । एहिसँ एहू प्रश्नक समाधान भए जाइत अछि जे उमापति लोचनक बाद भेलाह तेँ राग-तरंगिणीमे हुनक गीत नहि आएल । अहाँक अन्वेषणसँ इहो प्रमाणित होइछ जे मकमानी राजसभामे मैथिलीक आनो कवि सभकेँ आश्रय छलन्हि— देवनाथ, राय राघव, राय हरिहर आदि । मैथिली साहित्यक इतिहासमे एहि नव अनुसन्धान सभकेँ जोड़ल जाएब आवश्यक भए गेल अछि । अहाँक ग्रन्थपर विस्तारसँ लिखबाक मोन अछि । किछु स्थलपर एखनहुँ हमर सन्देह बनले अछि— ताहिपर कहियो आगाँ चर्च करब-एखन एतबेसँ सन्तोष । अहाँक गम्भीर अन्वेषण दृष्टि आर ई पोथी हमरा एतेक कहबा हेतु विवश कए देलक । हम अहाँकेँ अपन बल बुझैत छी आर अहूँ हमर बल सदति बूझब ।

पत्रोत्तर दी— **श्रीजयकान्तस्य**

साहित्य अकादेमीसँ भारतीय साहित्यक निर्माता शृंखलाक अन्तर्गत हिनक मध्यकालीन नेपालीय नृप नाटककार जगतप्रकाशमल्लपर बिनिबन्ध प्रकाशित छनि । एहि बिनिबन्धमे लेखक जतऽ जगतप्रकाशक साहित्यिक अवदानकेँ विशदताक संग रेखांकित कयने छथि ओतहि एकटा नवीन सिद्धान्तक प्रतिपादन करैत नेपालीय मैथिली साहित्यकेँ 'बहिरंग साहित्य'क नाम देने छथि । प्रख्यात विद्वान पं. गोविन्दझा एहि बिनिबन्धक जतऽ भूरिशः प्रशंसा कयलनि ओतहि एहिमे 'बहिरंग साहित्य' सन शब्दक प्रयोगकेँ ओ उचित नहि मानलनि । 'बहिरंग साहित्य' कहब किएक उचित नहि तकर पक्षमे गोविन्दझा जाहि प्रकारक तर्क सभ देने छथि ओ उत्कृष्ट साहित्यिक विमर्शक वस्तु बनि गेल अछि । पोथीक समीक्षाक संग उद्भूत ई विचार निस्सन्देह पत्रात्मक समीक्षा विधाक विशिष्ट उपलब्धि मानल जायत जे कदाचित् सार्वजनिक समीक्षा पद्धतिसँ सम्भव होइतय की नहि! एतावता एहि प्रसंग गोविन्दझाक उक्त समीक्षात्मक पत्र देखल जा सकैछ-

पटना / 13 फरवरी 1991

स्वस्ति, स्नेहनिलय श्रीरामदेवजी,

मैथिली साहित्यक इतिहासमे एकटा शंका हमरा मनमे बहुत दिनसँ घुरिआइत छल । हालमे अहाँक 'जगत्प्रकाशमल्ल' हमर ओहि शंकाकेँ आओरो जगाए देलनि । ई शंका-समाधान पछाति; पहिने हमर साधुवाद ग्रहण करू-जेहने नयनाभिराम प्रकाशन, तेहने पोछल-पाछल भाषा, तेहने स्पष्ट वर्णन आ तेहने सहज-सुग्राह्य विचार । चन्द्रशेखरपर नव प्रकाश देल अछि । मक्षिका दृष्टिएँ एक-दू बात खटकल । शृङ्गारः शुचिरुज्ज्वलः मे 'शुचि' आ 'उज्ज्वल' शृंगारक पर्याय नहि, किन्तु व्याख्या मात्र थिक, जेना उत्साहवर्धनो वीरःमे उत्साहवर्धन । दोसर प्रवेशगीत केवल नेपालीये नहि, समस्त मध्यकालीन मैथिली नाटकक वैशिष्ट्य थिक । रमापतिक ओ ज्योतिरीश्वरक तनिको नाटकमे अछि, तेँ एकर प्रवर्त्तक जगत्प्रकाश नहि । अस्तु, नातीव खलु कर्त्तव्यं दोष दृष्टि परं मनः ।

आब आउ ओहि शंकापर । अहाँ प्राक्कथनक पहिले वाक्यमे जगत्प्रकाशक रचनाकेँ मैथिलीक बहिरंग साहित्य कहल । एहि बहिरंगताक आधार की? नेपाल मिथिलासँ बाहर अछि तेँ नेपालमे लिखल गेल सभ साहित्य बहिरंग? तखन

Scanned by CamScanner

तँ रामभरोस कापड़ि, श्रीधीरेन्द्र, वंशमणि, उमापति, विद्यापति, ज्योतिरीश्वर-बहुतोक रचनाकेँ बहिरंग मानए पड़त । जँ तराइकेँ मैथिलीक क्षेत्र बूझि ओकर साहित्यकेँ अन्तरंग कही, तँ प्रश्न उठैत अछि जे काठमांडू (अर्थात् मल्लकालीन काठमांडू) मैथिलीक क्षेत्र किएक नहि ? मल्ल शासन कालमे नेपाल उपत्यकामे सम्पर्क भाषा की छलैक ? गोरखाली ? ओ तँ हालमे बाहरसँ ओतए आएल, जेना मिथिलामे हिन्दी । नेवारी दसे प्रतिशत लोक जनैत छल तेँ ई सम्पर्क भाषा (सार्वजनीन भाषा) नहि भए सकैत छल । आन्तरिक सम्पर्क तँ किछु-ने-किछु विभिन्न तिब्बत-बर्मी मूलक स्थानीय भाषा सबसँ कएलो जाए सकैत छल किन्तु बाह्य सम्पर्कक काज एहि भाषा सबसँ नहि चलि सकैत छल । एहि स्थितिमे हम एहि निष्कर्षपर पहुँचलहुँ अछि जे राणा शासनसँ पूर्व सम्पूर्ण नेपाल उपत्यकाक सम्पर्क भाषा मैथिलिए छल । राजपरिवारक भाषा सेहो इएह छल । सांस्कृतिक ओ धार्मिक जन-समारोहमे मुख्य भूमिका मैथिलीक रहैत छलैक । सेन वंशक राजमे मैथिली शासनक भाषा छल आ किरात जातिक विशाल जनसंख्या प्रथम भाषा वा द्वितीय भाषाक रूपमे मैथिली बजैत छल । जखन अमेरिका आ आस्ट्रेलिअन इंगलिश लिटरेचर, आ दार्जिलिंग आदिक नेपाली साहित्य बहिरंग नहि कहल जाइत अछि तखन मल्ललोकनिक रचनाकेँ बहिरंग कहब समीचीन होएत ? भेट होइत तँ एहि प्रसंग अहाँक संग (आन के एहन अछि ?) सविस्तर विवेचन करितहुँ । पत्रमे एतबे । 'सामाक पौती' (अपन कथासंग्रह) अहाँक बखरा रखने छी। भेट कए हाथमे देब । कुशल जानब ओ लिखब । अपन प्रतिक्रिया सेहो लिखब- **गोविन्दझा**

डा. रामदेवझा द्वारा 'जनार्दनझा जनसीदन' पर लिखित एक गोट और बिनिबन्ध साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित अछि । एहि पोथीमे जनसीदनजीक जीवनवृत्त प्रस्तुत करबाक क्रममे लेखकसँ किछु तथ्यात्मक त्रुटि भऽ गेल छनि जाहि दिस गलतीनामाक लेखक ओ प्रख्यात कथाकार राजमोहनझा अपन एकटा पत्रमे दृष्टि निक्षेप कयलनि । पत्र निम्न रूपक अछि-

पटना / 05 मइ 98

प्रिय रामदेवजी,

जनार्दनझा 'जनसीदन'क अपन प्रति-पहिल प्रति जे स्नेहवश अहाँ हमरा पठौलहुँ से भेटल । अहाँ ओहिमे बाबूजीक लेख आ भुवनजीक लेखमे किछु तथ्यात्मक विसंगति द' कहने छिऐ जे अपना जगह सही अछि । मुदा दूटा तथ्यात्मक त्रुटि अहूँक बिनिबन्धमे रहि गेल अछि जे एकटा तेसर चित्र ठाढ़ क' दैत अछि । प्राय: एक त ई जे 1949मे अहाँ जनसीदनजीक पौत्रक मृत्युक वर्ष कहने छिऐन्ह । 1949मे ककाक अर्थात जनसीदनजीक छोट पुत्रक मृत्यु भेलनि । पौत्रक मृत्यु 1947मे भेल छलनि । दोसर गप्प जे अहाँ लिखने छियनि जे बाबूजीक जन्मक बाद बाबाक एक पुत्री तथा एक पुत्रक जन्म भेलनि । वस्तुतः दू पुत्री तथा एक पुत्रक जन्म भेल रहनि । बाबूजीक बाद हुनक दूटा बहिन भेलथिन । सभसँ छोट बहिन जनिक विवाहक गप्प सुनि 'कनेयाँ माइक ओरिआओन' लिखल जयबाक बात ओ कहने छथिन । ई दूटा बात अहाँक ध्यानपर आनब उचित बुझलहुँ । शेष नीक अछि । अहाँक- **राजमोहन**

उपर्युक्त साहित्यिक विमर्श ओ प्रतिक्रियासँ युक्त किछु नितान्त निजी पत्रकेँ सार्वजनिक करबाक पाछाँ हमर मूल उद्देश्य अछि पत्रात्मक समीक्षा पद्धति ओ ओकर वैशिष्ट्य दिस साहित्य बोद्धा लोकनिक ध्यान आकृष्ट करब आ एहि समीक्षा पद्धतिक दर्पणमे डा. रामदेवझाक साहित्यकार रूपक केहन प्रतिविम्ब उभरैत छनि तकर परीक्षण करब । निस्सन्देह ई कहबामे कोनो तारतम्य नहि होइछ जे पारम्परिक समीक्षा पद्धतिक तुलनामे एहि पत्रात्मक समीक्षा पद्धतिमे हिनक रचनात्मक ओ अनुसन्धानात्मक दुहू कोटिक साहित्यक निष्पक्ष मूल्यांकन भेलनि अछि । हिनक कृतिक गुण-अवगुण दुनू पक्षक सूत्रात्मक विवेचन पत्रलेखक लोकनि द्वारा कयल गेलनि अछि । जे हिनक प्रत्यक्ष प्रशंसक छथिन सेहो एहि प्रकारक पत्र लेखनक कालमे स्वयंकेँ व्यक्ति प्रशंसक नहि कृति समीक्षकक रूपमे अपनाकेँ रखलनि अछि तँ जे केओ वैचारिक स्तरपर हिनकासँ मतभेद रखितो रहलाह अछि सेहो पत्रक माध्यमे हिनक कृतिक विवेचना करबा काल स्वयंकेँ एहि संकीर्णतासँ ऊपर राखि अपन लेखनी चलौलनि अछि । हमरा जनतबेँ डा. रामदेवझाक साहित्यकारक वास्तविक स्वरूप पत्रात्मक समीक्षा पद्धतिक एहि दर्पणमे बेसी स्पष्टताक संग प्रतिभासित भेलनि अछि ।

●

Scanned by CamScanner

समालोचकक दृष्टिमे डा. रामदेवझा ओ हुनक साहित्य

श्रीकृष्णदेवझा
श्रीविजयदेवझा

डा. रामदेवझा मैथिली भाषा-साहित्यमे ओहि कोटिक विरल रचनाकार छथि जनिक लेखनी साहित्यक प्राय: समस्त विधामे चललनि अछि । कथा, नाटक, कविता, ललित-निबन्ध, शोध, समालोचना आदि सन समस्त विधा हिनक अनवरत लेखन कार्यसँ समृद्ध भेल अछि । 1953मे एकटा कथाकारक रूपमे मैथिली साहित्यमे हिनक प्रवेश भेलनि आ ताहियासँ ई निरन्तर लेखनमे लागल छथि । स्वाभाविक रूपसँ हिनक लेखन कार्यक निरन्तरता ओ विविधता मैथिली साहित्य जगतकेँ आलोड़ित करैत रहल अछि । हिनक साहित्यकार व्यक्तित्व ओ साहित्यिक कृति सभपर साहित्यकार, इतिहासकार ओ समालोचक लोकनिकेँ अपन प्रतिक्रिया ओ अभिमत व्यक्त करबाक हेतु विवश करैत रहलनि अछि । पुस्तक परिचय, लेखक परिचय किंवा स्वतन्त्र टिप्पणीक रूपमे हिनकापर व्यक्त होइत अभिमतक असीमित कड़ी सभमे रंग-विरंगक आस्वाद भेटत । केओ मुक्तकंठसँ हिनक संवर्द्धना कयलथिन अछि तँ किनको दृष्टि निरपेक्ष छनि, किनको स्वर निन्दात्मक तँ किनको स्वर अम्मत-चुक्क सन केओ बस हिनक नाम लैत छड़पान दैत आगू बढ़ि गेलाह अछि तँ किछु समालोचक ओ इतिहासकार इत्यादियोमे हिनक नामक उल्लेख करब आवश्यक नहि बुझलथिन अछि । मुदा दृष्टि ओ स्वरक विविधता यैह साबित करैत अछि जे विगत पचपन वर्षसँ मैथिलीमे सृजनरत एहि साहित्यकारकेँ बारि कऽ, नकारि कऽ स्वातन्त्रयोत्तर मैथिली साहित्यपर इमन्दारीपूर्वक लिखले नहि जा सकैछ । जँ केओ समालोचक-इतिहासकार एहि तरहक प्रयत्न करबो कयलनि अछि तँ अपन अविश्वसनीयताक कारणे ओ स्वयं मैथिली समालोचनाक मुख्य धारासँ फेका गेलाह अछि ।

एतऽ डा.रामदेवझा ओ हुनक साहित्यक प्रसंग यत्र-तत्र व्यक्त भेल अभिमतमेसँ किछुकेँ नमूनाक रूपमे प्रस्तुत कयल जा रहल अछि ।

व्यक्ति प्रसंग

ज्योतिषाचार्य पं. बलदेवमिश्र

प्राध्यापक श्रीरामदेवजी एक बड़ भविष्णु मैथिली लेखक देखल जाइत छथि । मैथिलीमे लब्धाचार्य लोकमे विद्या विवृद्धिमे हिनक बड़ सरसता छन्हि, जहिया कहियो भेट भेल अछि विद्याक चर्चे हिनक विषय रहैत छन्हि । हिनके कहलापर मिथिलामे शैवधर्मपर हम एक लेख मिहिरमे छपबौने रही । वैदेहीक सम्पादकीयमे इहो कार्य करैत छलाह । हम आशा करैत छी शीघ्र हिनक निर्मित मैथिलीक ठोस कार्य हमरा लोकनिक दृष्टिगत होयत । हम हिनक मङ्गल कामना करैत छी ।

(श्यामनन्दनसहाय व्याख्यानमाला, अ.भा. मैथिली लेखक सम्मेलन, वैदेही समिति, दरभंगा, 1970, पृ. 162)

डा. जयकान्तमिश्र

Literary criticism and critical scholarship of a high order can be seen in the writings of versatile author Ramdeva Jha (b. 1936), who is also a poet, short story writer and dramatist of (high) no mean order.

(Anthology of Modern Indian Languages, Vol-I, S.A.P. 229)

Scanned by CamScanner

कथा प्रसंग

श्रीमायानन्दमिश्र

1950इ.क उपरान्त गल्प साहित्यमे अनेक प्रकारक शक्तिशाली प्रयोग सब भेल...कथाक संगे शब्दचित्र लिखबाक परिपाटीक आरम्भ भेल ...वर्त्तमान दशक गल्प-शिल्प, शब्दचित्र-शिल्प, रेखाचित्र-शिल्पकेँ फराक-फराक कऽ देलक तथा सबकेँ अपन-अपन स्वतन्त्र व्यक्तित्व भऽ सकल ...एहि युगमे जँ रामदेवझाक बटगाछक छाहरि, दोहरी दीप, एक खीरा : तीन फाँक ...आदि प्रौढ़ सशक्त एवं कलात्मक गल्प सब आयल ... तँ शीतल दीप: शीतल छाहरि आदि मार्मिक शब्दचित्र सेहो जन्म लेलक... सामाजिक-मनोवैज्ञानिक गल्पधाराक रचना सब बड़ सशक्त स्वाभाविक, प्रौढ़ आ संवेदनात्मक होइछ । एहि धाराक लेखक लोकनि सबसँ अधिक प्रयोग करैत गेलाह अछि तथा शिल्पकेँ माँजैत गेलाह अछि ... एहि धाराक समर्थ रचनाकार लोकनिमे प्रो. उमानाथझा, ललित, रामदेवझा आदिक नाम मुख्य अछि ।

(मैथिली गल्पः परिस्थिति ओ परिणाम, मिथिला दर्शन, विशेषांक, 1960)

डा. माहेश्वरीसिंह महेश

1. उदीयमान साहित्यकारमे प्राध्यापक रामदेवझाक अग्रगण्य स्थान छनि जनिक प्रतिभाक झलक कवि एवं कथाकारक रूपमे भेटैत अछि । 'पियासल ठोर' हिनक 'एक खीरा : तीन फाँक' संग्रहक एक कथा अछि जाहिमे रामदेवजी काल्पनिकतासँ विशेष वास्तविकताकेँ पाठकक समक्ष राखल अछि । इच्छित रहितहुँ किसुन अपन पत्नी एवं पुत्रक प्रति प्रेम प्रदर्शित नहि करैछ, कारण से नियतिकेँ मंजूर नहि ।

(गद्यवल्लरी, 1966, पृ. 128 च)

2. 'बट गाछक छाहरि' अभिव्यञ्जनामे सर्वप्रथम प्रकाशित भेल छल । एहिमे एक निश्छल हृदयक करुण आलाप अछि, सम्भावनाक सूत्र डगमगा रहल अछि ।

(गद्यवल्लरी, पृ. 97)

डा. अमरेशपाठक एवं श्रीमोहनभारद्वाज

1950क बाद ललित-राजकमल-कालक उल्लेखनीय कथाकार छथि- श्रीरामदेवझा । माटि-पानिक सोन्हाओन गन्ध, जन-जीवन ओ लोक-संस्कृतिसँ सुरुचिपूर्ण सम्पृक्ति आ स्वाभाविक ठेठ भाषाक कारणेँ हिनक कथा अपन विशिष्टता रखैत अछि । मानवीय सुकुमार संवेदना, मनोवैज्ञानिकता आ सामाजिक चेतनाक स्पन्दन हिनक कथामे भेटैत अछि । एक खीरा : तीन फाँक, बटगाछक छाहरि, दोहरी दीप, भितरिया धधरा, एकटा रहय उतमी, परिमिलिया, परती आदि बहुत रास हिनक मोन राखऽ योग्य कथा अछि ।

संगृहित कथा 'मनुक सन्तान' एही शीर्षकक हिनक संग्रहसँ लेल गेल अछि । परिवेशक अन्तरंग परिचिति एवं जन-जीवनक यथार्थक चित्रण जतऽ कथाकेँ अत्यन्त सोहनगर बना दैत अछि, ततहि मनोवैज्ञानिकताक संग सामाजिक चेतना दिस संकेत कऽ कथा बड़ विलक्षण रूपेँ एकटा पैघ बात कहि जाइत अछि ।

(कथा संग्रह, मैथिली अकादमी, पटना, 1977 इ., पृ. 129)

सु.शे.चौ. (सुधांशु शेखर चौधरी)

'एक खीरा : तीन फाँक' क लोकप्रिय कथाकार प्रोफेसर श्रीरामदेवझाक कथा सभक ई दोसर संकलन थिकनि । श्रीरामदेव नव कथाकार लोकनिक श्रेणीमे अग्रगण्य रहलाह अछि । जीवनकेँ त्रिकोण बना कऽ आ किछु निर्धारित फरमुलाक आधारपर हिनक कथाक विकास नहि भेल अछि । वस्तुतः 'मनुक सन्तान'क कथाकार मनुक सन्तान सभकेँ

Scanned by CamScanner

एकदम निकटसँ देखबाक प्रयास कयलनि अछि । एहिमे सन्देह नहि जे हुनक दृष्टि सूक्ष्म छनि । प्राय: हुनक यैह दृष्टि प्रत्येक कथाक पात्र किंवा वातावरणकेँ सजीव बना दैत अछि ।

मनुक सन्तानमे सात गोट कथा अछि । जकर क्रम एना अछि– मनुक सन्तान, परती, नकली आदमी परमिलिया, एकटा रहय उतमी, भितरिया धधरा आ पहुना । मनुक सन्तानमे प्राय: मुसहरक जीवन व्यक्त भेल अछि जकर जीवन डोका-घोँघापर अवलम्बित रहैत छैक । 'परती' एहन पीढ़ीक जीवन व्यक्त करैत अछि जे अभावसँ निरन्तर टुटैत जा रहल अछि । 'नकली आदमी' एक एहन बालककेँ प्रस्तुत करैत अछि जकर जीवन अर्थक मारिसँ जर्जर तँ छैक, किन्तु कौखन समाजमे ओहो उपयोगी बनि जाइत अछि । परमिलियामे अशिक्षिता कुमारि कन्याक जीवन ओ मन:स्थिति बजैत अछि । 'एकटा रहय उतमी' घसवाहिनीक जीवन-कथा कहैत अछि । 'भितरिया धधरा' अभावसँ आर्त्त एहन बालकक मन:स्थिति प्रकट करैत अछि जे अभावक मारि खाइतो यथाशक्ति बदला लेबाक भावनासँ उद्दीप्त भऽ उठैत अछि आ 'पहुना' एहन निम्नवर्गीय नारीक प्रतिनिधित्व करैत अछि जे एक पतित्वक आदर्शक हेतु अपनाकेँ गलयबाक हेतु प्रस्तुत रहैत अछि ।

रामदेवजी अपन कथा सभसँ ई प्रमाणित कऽ देलनि अछि जे मनुष्य केवल फ्रायडेक चाबुकसँ नहि हाँकल जाइत अछि, जीवनमे ततेक विविधता होइत छैक जे कतोक वस्तु कथाक सामग्री भऽ सकैत, अछि । कोनो 'वाद'सँ फराक रहि जँ कथाकार लगसँ जीवनकेँ, मनुष्यक मन:स्थितिकेँ पढ़बाक चेष्टा करैत अछि, वस्तुत: मनुष्यक हेतु ओ 'इमन्दार' व्यक्ति होइत अछि । रामदेवजी कथा-विधामे जीवनक प्रति 'इमन्दार' छथि ताहिमे कनेको सन्देह नहि ।

रामदेवजीक कथाक एक विशेषता ईहो अछि जे ओ मैथिलीयेमे सोचलनि अछि आ मैथिलीयेमे लिखलनि अछि। तेँ ई स्वाभाविक छल जे मैथिली वाग्धारा ओ उपमा-उत्प्रेक्षाक हेतु हुनका मिथिलासँ बाहर नहि जाय पड़लनि अछि । हमर व्यक्तिगत धारणा अछि जे अपने देश-कोसक अभिव्यक्तिक बलेँ मैथिलीक स्वतन्त्र अस्तित्व आर पुष्ट होइत जायत । आवरण पृष्ठक नवीन शिल्प आकर्षक अछि ।

(मिथिला मिहिर, 10 सितम्बर 1967)

डा.जयकान्तमिश्र

1. Dr. Ramdeva Jha Eka Khīrā Tīna Phāk (1964) has attempted to paint similar aspects of life, particularly among the lower classes in the new manner - taking up little, insignificant things that matter for a happy and successful life. But he has not been able to hold the interest and attention of his readers deeply (History of Maithili Literature, S. A., 1976, p. 249)

2. डा. श्रीरामदेवझा सेहो एक खीरा : तीन फाँक (1964), मनुक सन्तान एवं धरती मातामे जीवनक ओहने पक्ष सभकेँ मुदा विशेषत: निम्न वर्गकेँ लए-नवीन रीतिसँ चित्रण कएलन्हि अछि- ओहिना छोट-छोट तुच्छ विषयकेँ लैत छथि जाहिमे जीवनक सुख ओ समृद्धि सन्निहित रहैत छैक ।

(मैथिली साहित्यक इतिहास, साहित्य अकादेमी, 1988, पृ.-241)

कुलानन्दमिश्र

ललित, राजकमल आ मायानन्दमिश्रक पीढ़ीमे रामदेवझा एकटा अत्यन्त सहज आ सुरुचि-सम्पन्न कथाकारक नाम थीक । रामदेवबाबू अपन माटि-पानिक संग किछु अबोध मुदा अत्यन्त गाढ़ परिचय आ सम्बन्ध रखनिहार कथाकार छथि । मिथिला प्रदेशक सामान्य जन-जीवन आ बन्न होइतो मुक्त लगनिहार संस्कार हिनक कथामे खूबे ठेठ भाषामे चित्रित भेल अछि । मोनक सुकुमारता, मनोवैज्ञानिक नजरि आ सामाजिक प्रश्नक प्रति अनुरक्ति- रामदेवझाक कथा-संसारकेँ फराक आ नितान्त अपन रंग-रूप प्रदान कयलक अछि । मनुक सन्तान, एक खीरा : तीन फाँक, एकटा रहय उतमी, भितरिया

Scanned by CamScanner

धधरा आ परती आदि हिनक किछु एहन कथा छनि जे लोककेँ खूब मोन रहैत छैक । मनुक सन्तानक परिवेश रामदेवबाबूक रेहल-खेहल परिवेश छनि ओकर सामाजिक यथार्थसँ हुनक वर्ग प्रभावित छनि आ एहि समस्त यथार्थसँ उत्पन्न रचनाकारक दृष्टि सहज रूपसँ विश्वसनीय छैक ।

(मैथिली अकादमी पत्रिका, मार्च-अगस्त-1989, पृ- 48-49)

डा.भीमनाथझा

(1) 'मनुक सन्तान' कथा हिनक बहुत उत्कृष्ट कथा तँ अछिए, मैथिली साहित्यक दसटा उत्कृष्ट कथामे सेहो ई स्थान पयबाक अधिकारी अछि । एहिमे परिवेशक अन्तरंग परिचिति एवं जनजीवनक यथार्थक चित्रण जतऽ कथाकेँ अत्यन्त सोहनगर बना दैत अछि ततहि मनोवैज्ञानिकताक संग सामाजिक चेतना दिस संकेत कऽ कऽ कथा बड़ विलक्षण रूपेँ एकटा पैघ बात कहि जाइत अछि ।

(परिचायिका, 1985, पृ. 200)

(2) रामदेवझाक कथाक महल तँ मध्यमवर्गीये न्योपर ठाढ़ अछि । हिनक अद्यावधि तीनू कथा संग्रहक प्राय: सभ कथा मध्यमवर्गीय आ निम्नवर्गीय परिवारसँ सम्बद्ध अछि, बेसी निम्न-मध्यवर्गीय । मध्यवर्गीय परिवारक कुंठा, विवशता, अनिश्चय, प्रेम, विछोह, राग, क्षोभ, आदि हिनक कथामे हू-ब-हू उतरि आयल अछि । आजुक मध्यवर्गीय समाजक शहर दिस अन्ध पलायन, औद्योगिक परिसरमे जयबाक आतुरता, गामक प्रति घोर उदासीनता तँ देखल जाइत अछि, किन्तु ओहि ठाम जा कऽ ओकर मनोदशा की भऽ जाइत छैक? की ओहि वातावरणसँ ओ सामंजस्य स्थापित कऽ लैत अछि ? वास्तवमे ओ जीवन ओकरा नीक लागि जाइत छैक? अपन जाहि गामसँ भागि कऽ आयल अछि, तकरा की वास्तवमे ओ बिसरि जाइत अछि ? अपन गाम-धरतीकेँ सभ दिनलेल नमस्कार करबाक मन बना लैत अछि ? युग-युगक संचित संस्कार आ नवयुगक बदलल व्यवहारक बीच सतत संघर्षशील रहब मध्यवर्गक नियति बनि जाइत छैक । रामदेवझाक बेसी कथा एही संघर्षकेँ प्रभावी ढंगसँ उजागर करैत अछि ।

(समकालीन मैथिली कथाक मूल्यांकन, वैदेही समिति, दरभंगा, जनवरी 1987, पृ.80-81)

(3) रामदेवझाक कथामे कसबाइ वातावरणमे पालित पात्रक निश्छलता मोहित करैत अछि ।

(मैथिली कथाक विकास, सा.अ., 2003, पृ. 35)

डा. शिवशंकरझा 'कान्त'

आधुनिक मैथिली साहित्यक सजग आ सचेष्ट प्रहरी रामदेवजी कथा, कविता, निबन्ध, एकांकी आ आलोचना सभ किछु लिखि सकैत छथि, लिखने छथि । बड़ मर्मस्पर्शी होइत अछि हिनक अभिव्यक्ति आ आधिकारिक शब्देँ ई सभ किछु लिखैत छथि । 'मनुक्ख' कथामे आधुनिक प्रयोग जे साहित्यमे स्थान पाबि रहल अछि- तकर विशेषता देखौने छथि कथाकार । एक उपेक्षितक जिनगीक असन्तुलित क्षणक आवेगकेँ कथाकार नीक जकाँ रखलनि अछि । जीवन रक्षाक भारसँ लोक कोना चंचल भऽ जाइत अछि- तकर स्पष्ट ओ ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत कथा अछि ।

(मैथिली ललित गद्य, 1973, पृ. 89)

डा. प्रभावतीझा

डा.रामदेवझाक कथाक विशेषता थिक मानवीय संवेदना एवं चेतना प्रवाहक सहज अभिव्यक्ति । हिनक 'नकली आदमी' (वैदेही, सितम्बर 1959) तथा 'तरुआरि आ लेखनी' (वैदेही, 1954) शीर्षक कथामे सहजताक सफल अभिव्यक्ति भऽ सकल अछि ।

(मैथिली अकादमी पत्रिका, मार्च-अगस्त 1989, पृ. 26)

Scanned by CamScanner

डा. नीरजा रेणु

डा. रामदेवझाक प्रारम्भिक कथा जेना 'दोहरी दीप', 'भसियाइत दीयर', 'पियासल ठोर', 'बट गाछक छाहरि' आदिक संग 'एक खीरा : तीन फाँक' उपस्थित भेल छल । पुनः 'मनुक सन्तान', 'जलक तलपर लिखल नाम', 'पराजयक मुद्रा' आदि कथा अपन-अपन वैशिष्ट्यसँ पाठककेँ आकृष्ट कयलक । हिनक कथाक प्रमुख पात्र निम्नवर्गीय एवं मध्यनिम्नवर्गीय परिवारक सदस्य रहैत अछि । आदर्शक सीमा-रेखामे बद्ध रहबाक पूर्वाग्रह हिनक लेखनीकेँ नहि छनि, तेँ मानवीय संवेदनाक सहज धरातल हिनक कथामे साकार भऽ जाइत अछि । जीवनक यथार्थकेँ सहजतासँ स्वीकार करैत 'एक खीरा : तीन फाँक' हिनक लेखन प्रवृत्तिक उत्कृष्ट उदाहरण थिक ।

'एक खीरा : तीन फाँक'मे जीवनक यथार्थक चित्रण मर्मस्पर्शी अछि । एकटा नारी पत्नीक रूपमे एकटा चौकीदारक गृहिणी अछि आ प्रेमिकाक रूपमे एकटा दोकानदारक प्रेयसी अछि । तकरे दुनू प्रकारक व्यक्तित्व एहि कथामे वर्णित अछि । एकहि नारीक ई दू रूप दू प्रकारक सौन्दर्य अभिव्यंजित करैत अछि । एकटा ओकर तनक सौन्दर्य छैक जे 'मालिक'केँ अर्पित छैक आ दोसर मनक समर्पण छैक जे अपन पतिक हेतु सुरक्षित छैक । ओकर अपनहि एहि दू रूपमे संघर्ष होइत रहैत छैक जकरा ओ स्वयं बुझैत अछि । ई स्थिति कोनो क्रान्तिकारी विचार नहि उपस्थित करैत छैक । एकरा ओ सहजतासँ सहैत अछि । किछुए समयमे ओ तीनटा पुत्रक माता सेहो बनैत अछि । किन्तु ओकर मोनपर ओकर पति मात्रक अधिकार छैक । प्रस्तुत कथामे जीवन मूल्यक नवीन दृष्टिकोणक परिचय प्राप्त होइत अछि ।

प्रणयक त्रिकोणमे नायक आ दुष्टक कथाक युग आब समाप्त भऽ गेल छैक । मानवक भौतिक आवश्यकता आ आध्यात्मिक प्रेम दू तथ्य होइत छैक । कोनो नारी यदि शरीरेँ अन्य पुरुषक अंकशायिनी भऽ जाइत अछि तँ ओकर हृदय कलुषित नहि होइत छैक । हृदयक प्रेम तँ तैयो ओही पुरुषक हेतु समर्पित रहैत छैक जे निश्छल भऽ ओकरासँ अनुरक्त छैक । तेँ ने अपन पतिक हेतु सुरजीक हृदयमे स्नेह छैक- यद्यपि मालिकक देहसँ पतिक देह-दशा, कपड़ा-लत्ता कतेक हीन छैक । किन्तु ओकरा सन निश्छल हृदय मालिककेँ नहि छैक । पति-पत्नीक एहि अनुरागकेँ कथाकार प्रो.रामदेवझा बड़ मार्मिक रूपेँ व्यक्त कयलनि अछि जाहिमे वात्सल्य सूत्रक माधुर्यमे दुनूक मनःस्थिति आओर अधिक स्पष्ट भऽ जाइत अछि ।

(मैथिली कथाधारा, साहित्य अकादेमी, 1982)

प्रो.ललितेशमिश्र

श्रीरामदेवझाक 'मनुक सन्तान' निम्नवर्गीय जीवन ओ संस्कृतिसँ सम्पृक्त, मिथिलाक माटि-पानिक गन्धसँ सुवासित ओ समसामयिक युग-चेतनासँ उद्बुद्ध कथा थिक । एहि कथामे कथाकार खेत-पथारमे डोका, काँकोड़ तथा माछ बीछि जीवनयापन कयनिहार निम्नवर्गसँ अबैत कतोक चरित्रक माध्यमे ओहि वर्गक नितान्त अभावग्रस्त दशा ओ तथापि जीवनक प्रति अविच्छिन्न आस्थाकेँ चित्रित कयल अछि । एहि चरित्र सभहिक एक दिनक शिकार यात्रामे विपन्नताक अछैतो ओकर सभहिक जीवन-उन्मुक्तता, हास-परिहास ओ पारस्परिक सहानुभूति तथा सहयोगक अभिव्यक्ति बड़ मार्मिक रीतिएँ कथाकार कयलनि अछि । बिन्दा, सुगिया, जिरिया, फुलिया, बिनुआँ, झुनियाँ, नुनुआँ ओ मुनेसराक देह-दशा, परिधान ओ वृत्तिक अत्यन्त आकारिक अथवा ग्राफिक अंकन कऽ कथाकार ओहि घिनाओन सामाजिक व्यवस्थाक प्रसंग सोचबालेल बाध्य करैत छथि, जकर परिणामस्वरूप सुगिया, जिरिया, फुलिया ओ मुनेसरा सदृश निम्नवर्गीय लोक दारुण ओ शोषित जीवन जीबालेल अभिशप्त अछि ।

मुदा एहि कथामे सामाजिक चेतनाक जाग्रत स्वरूप देखबामे नहि अबैत अछि । धानक खेतमे डोका आ काँकोड़ बिछबा काल खेतक मालिककेँ अबैत देखि सुगिया, जिरिया, मुनेसरा आदि भयातुर भऽ उठैछ । प्रतिकारक लेल प्रतिबद्धता ककरहुँ नहि बुझना जाइछ । तहिना खेतक मालिक बाँसक पातक बोझ उठा कऽ नहि लऽ जयबाक तथाकथित

Scanned by CamScanner

अपराधमे सुगियाक डोका-काँकोड़वला पोटरी छीनि कऽ फेकि दैत अछि । किन्तु सुगिया सहित ओकर समस्त संगी-तुरिया एहि घटनाकेँ देखैत अछि, गारि सुनैत अछि, असन्तोषसँ भरि जाइत अछि, तथापि प्रतिरोधक स्वर ओकरा समहिक सामर्थ्यमे नहि अछि । शोषक आ शोषित मध्य व्याप्त एतेक पैघ दूरी निश्चय सामाजिक व्यवस्थाक घोर प्रचंडता ओ क्रूरताक संकेत दैत अछि ।

एहि स्थूलताक उपरान्तो कथाक एक गोट विलक्षणता अछि पात्रोचित भाषाक उपयोग । कथाकार निम्नवर्गीय उपर्युक्त चरित्रक संवाद ओकरहि भाषामे उपस्थापित कऽ कथामे जीवन्तता प्रदान कयल अछि, ओहि चरित्र सभकेँ विश्वसनीय बनाओल अछि । ओना, कथाक समग्र प्रभावकेँ विचार कयला उत्तर यैह निष्कर्ष भेटैत अछि जे निम्नवर्गीय सामाजिक परिवेश ओ जीवनक मात्र स्थूल परिचय एहिमे प्राप्त होइछ ।

(प्रस्तावना, 2000इ. पृ., 52-53)

डा. शिवशंकर श्रीनिवास

(1) स्वतन्त्र भारतमे आर्थिक संघर्षक संग सामाजिक संघर्ष प्रारम्भ भेल । अपन शोषणक विरोधमे शोषित वर्ग गोलबन्द होअऽ लागल । शोषणक विरोध होअऽ लागल । एहि विरोधकेँ शान्ति ओ धैर्यपूर्वक निर्वहनकेँ रामदेवझाक कथा अभिव्यक्ति देलक अछि जे बात ओहि कालक कथा प्रवृत्तिकेँ आगू बढ़बैत अछि । हिनक मनुक सन्तान एतेक समर्थ भऽ गेल अछि जे ओ बेगार करब नहि स्वीकारैत अछि । सभसँ नमहर बात ई जे हिनक कथा दलितक ओहि चेतनाक बात करैत अछि जाहि चेतनामे दलित सङ-सङ रहब सीखि लेलक । सुख-दुखकेँ परस्पर बाँटि जीबाक बात बुझि गेल । ई वर्ग सौमनस्यक स्थिति शोषितक सांगठनिक भावकेँ ओहि ठाम लऽ जाइत अछि जाहि ठामसँ जाति विभेद समाप्त भऽ वर्ग संघर्षक बात चलैत अछि । 'मनुक सन्तान' हिनक एही स्थितिक कथा थिक । हिनक कथामे सेहो केन्द्र-बिन्दुमे 'अर्थ' अछि आ अर्थेक कारण 'एक खीरा : तीन फाँक' होइत अछि । फेकू भितरे-भीतर उद्वेलित होइतो दम साधि कऽ रहैत अछि । सुरजी मर्माहत होइत यौन शोषणकेँ सहैत रहैत अछि । रामदेवझाक कथा कहैत अछि जे सामाजिक ओ प्रशासकीय व्यवस्था तेना ने चक्र बनौने अछि जे समाजक पछुआयल लोककेँ प्रताड़ित ओ शोषित कऽ रहल अछि । एहि रूपेँ व्यवस्थाक विद्रूपताकेँ देखार करैत हिनक कथा एकजुटताक भाव दलित वर्गमे उत्पन्न करितो ओही स्थितिसँ बचैत अछि जाहि ठामसँ आर-पारक बाट फुटैत अछि । हिनक कथामे 'एक खीरा : तीन फाँक', 'मनुक सन्तान', 'दोहरी दीप', 'धरती माता' आदि प्रमुख अछि । धरतीमाता हिनक आगू कालक कथा थिक । जखन एहि देशक लोकमे ई चेतना अयलैक जे बिना गामक विकाससँ, कृषि उन्नति बिना एहि देशक उन्नति नहि भऽ सकैत छैक । एहि भावमे वा कहू जे कृषि अवनतिक चिन्ताक समाधानलेल लोक शहरसँ गाम घूरऽ लागल । खेतसँ जुड़ऽ लागल । अयोध्या एही मानसिकताक प्रतिरूप थिकाह । एहि कोटिक हिनक कएकटा कथा छनि जे हिनक कथाकारक छविकेँ अपन पीढ़ीसँ आगूक पीढ़ीक छवि सेहो प्रदान करैत अछि ।

(मैथिली कथाक विकास, सा. अ., 2003, पृ. 119-20)

(2) डा. रामदेवझा 1950 इ.क बादसँ कथा लिखब सुरू कयलनि । हिनक कथा कहबामे जे सहजता पाओल जाइत अछि से दुर्लभ जे अन्य कथाकारमे नहि देखाइत अछि । डा. रामदेवझामे विशेषता रहलनि अछि जे ओ जखन जाहि युगकेँ कथा लिखलनि, ओ ताही युगकेँ अपन कथा विधामे आगू बढ़ाओल अछि । जेना एक दिस ओ छठम दशकमे अपन सबल उपस्थितिक प्रभाव दैत छथि, तँ दोसर दिस आठम दशकक उत्तरार्द्धमे धरतीमाता लिखि अपन युगीन प्रभाव कायम कऽ लैत छथि । छठम दशकक समय आठम दशकक नहि थिक । ओ युग छल जखन औद्योगिक जीविकालेल प्रोत्साहनक काज छलैक, किन्तु आठम दशकमे गामसँ शहर दिस पड़ाइत लोककेँ रोकबाक कार्य छैक । पुनः आवश्यक भऽ गेल छैक समसामयिक बोधमे कृषि जीवनक पुनरुत्थानक । धरतीमाता कथामे यैह बात अछि । एकर अगुआ पात्र

Scanned by CamScanner

अपन श्रम-स्वेदसँ कोनो औद्योगिक गतिकेँ नहि बढ़ा अपन गामेमे रहि अपन माटिकेँ शीतल-सुशीतल करताह । अपन चास-बासकेँ लहरौताह जे एहि दशकक माँग थिक । हिनक विशिष्ट कथामे कतेको कथाक संग-भितरिया धधरा, दोहरी दीप, एक खीरा:तीन फाँक, बट गाछक छाहरि, धरतीमाता आदि महत्त्वपूर्ण अछि ।

(समकालीन मैथिली कथाक मूल्यांकन, वैदेही समिति, दरभंगा, जनवरी 1989, पृ. 100-101)

डा. नीताझा

छठम दशकक 'वैदेही काल'क प्रमुख कथाकार छथि रामदेवझा । ...डा. रामदेवझाक कथा 'दोहरी दीप'क नायिका माधुरीक जीवन तिलक-जैतुकक अभावमे दीपक टेमी सदृश नहुँ-नहुँ जरि रहल छैक...। 'शीतलबाती' कथाक नायिका बाल विधवा नन्नू दाइ परिवार, समाज द्वारा तिरस्कृता छथि ।... 'भितरिया धधरा'क मुचकुनमा समस्त शोषित वर्गक प्रतीक रूपमे उपस्थित अछि आ पढ़ुआ मालिक, हुनक पुत्र शोषक वर्गक प्रतिनिधि थीक । मुचकुनमाक आहत अहं आ नियत साहससँ शारीरिक वेदनाकेँ विस्मृत करैत अछि, मुदा ओकर आत्माक लहरि, हाहाकारक शमन रहि होइत छैक । ओ प्रतिशोध लेबापर कटिबद्ध अछि । अपन सामर्थ्यक अनुरूप प्रतिशोध लैत अछि । मुचकुनमाक भितरिया धधराकेँ रेखांकित करैत लेखकीय प्रतिक्रिया द्रष्टव्य, जाहिमे असन्तोषक प्रतिफलन देखल जा सकैत अछि- बाल्यकालमे पजरल भितरिया धधरा भविष्यक भीषण क्रान्तिकारीक निर्माण करैत छैक ।' ...रामदेवझाक 'मनुक सन्तान' निम्नवर्गीय समाजक जीवन्त चित्रण प्रस्तुत करैत अछि । एहि वर्गक दुख-दैन्यक प्रति सहानुभूति छैको तँ एही वर्गक लोककेँ । एहि समाजक यथार्थता छैक गरीबी, भूख । पेटक ज्वाला असन्तोष बनि बाहर निकलैत छैक । ....'एकटा रहय उतमी'मे मतदान हेतु टाकाक लेन-देनक वृत्तिक प्रासंगिक रूपेँ वर्णन भेल अछि । अशिक्षिता उतमी एहि कृत्यकेँ नैतिक पतन बुझैत अछि । उतमीक मानसिक द्वन्द्व एहि व्यवस्थाक प्रति असन्तुष्टिक भावक द्योतक थिक- कमली आ गुलबिया, सोमनी आ जुगियाक आँचरमे, जे कहियो कऽ टाका बान्हल देखि कऽ हमर मोन घिना जाइछ छल ताहिसँ की कोनो कम घिनाओन छै ई टाका ।''

(सामज़िक असन्तोष ओ मैथिली साहित्य, 1992, पृ. 88-107)

प्रो. विद्यापतिझा

1959मे डा. रामदेवझा लिखित 'नकली आदमी' कथा प्रकाशित भेल । हिनक कथा-विन्यासकेँ देखलासँ बुझना जाइछ जे ललित-राजकमल-मायानन्द पीढ़ीक उल्लेखनीय कथाकारक रूपमे डा. रामदेवझा प्रतिष्ठित छथि । हिनक कथामे जीवनक प्रति गहन अनुभूतिक दर्शन होइछ । कल्पनाशीलता तथा यथार्थ जीवनक सन्तुलनक व्यापकता सर्वत्र लक्षित- व्यंजित भेल अछि ।

(मैथिली कथाक विकास, सा. अ. 2003, पृ. 167)

डा. नबोनाथझा

डा. रामदेवझा ललित-राजकमल-मायानन्द पीढ़ीक वरिष्ठ एवं स्थापित कथाकार छथि । हिनक कथामे ग्राम्य परिवेशक यथार्थ चित्रण मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, उपस्थापन शैली मौलिक एवं ग्राम्य शब्दावलीक प्रयोग रहैछ एवं ताहिसँ हिनक कथामे जीवन्तता ओ मार्मिकता अबैछ जे ओकरा उत्कृष्ट कोटिक कथामे परिगणित कराय दैत छैक । हिनक 'एकटा रहय उतमी', 'एक खीरा: तीन फाँक', 'परती' आदि मैथिलीक माइल-स्टोन थीक ।

(विवेचना, 2002, पृ. 104)

Scanned by CamScanner

सिंह (लक्ष्मीपतिसिंह)

The book (MANU-KA-SANTAN) which derives its title from its first story, contains altogether seven original stories by the writer. Almost all the stories depict the socio-economic conditions of the land, for which and in which they have been written. Treatment is impressive, style is natural and graceful and local colour serves to have put an indelible stamp upon every characterisation throughout. The keen insight of the writer into the burning problems of the land is indeed worth appreciating; and it is hoped that the technique he has adopted, for presenting the stories would, oneday make a landmark in the field of modern Maithilee stories.

(THE INDIAN NATION, PATNA -24/12/1967)

डा.देवकान्तझा

Ramdeo Jha's Eka Khira Tin Phank (1965) is an anthology of eight short stories of new form and technique centred on the lower class, giving a living portrayal of their day-to-day life. Eka Khira Tin Plank Symbolizes the extra-marital relationships of the changing times. Manuka Santana (1966) is a collection of seven interesting stories about rural dalits, a brief sketch of rural India. Dharti Mata (1985) is richer in range and variety, an inspiring story with nine others. It shows the conflict between village and city life and rejects the artificiality of the latter. The hero's return to the village is an eye-opener to those who run away from their native land. With sensitivity, Ramdeo Jha presents fine and delicate shades of life. A man of refined sensibility, he draws life from the soil and excels in his living sketches and the ambience of Mithila in the idiom of common speech. Ijoti Rani of Ramdeo Jha is a fine contribution to children's literature.

(A. History of Modern Maithili Literature, 2004, P-267-268)

Dr. Amarnath Jha

After the second world war ....this era of Maithili short story is regarded as the starting point of modern short story. Ramdeo Jha, Mayanand Mishra, Lalit, Raj Kamal, Dhirendra may be regarded as the pillars of modern Maithili short story.......... RamdeoJha is regarded as another pillar of that age . He has written a number of exquisite short stories. His stories generally offer social criticism as well as psychological insight into a character under stress. In his various stories Ramdeo Jha draws strength from the soil and arouse social awareness against Prejudices and atrocities.

(Journal of Literature & Aesthetics, Jan-Dec-2006, p.- 260-261)

हरिकृष्ण देवसरे

'उपकार का बदला' रामदेवझा की प्रेरक कहानी है । लेखक ने उपदेशात्मक होने से बचने का प्रयत्न किया है, इससे यह एक भावपूर्ण कहानी बन गयी है ।

(भारतीय बाल कहानियाँ, भाग- तीन, सा.अ., 2009, पृ.- 12)

नाट्य प्रसंग

डा. जयकान्तमिश्र

The eminent dramatist of the present age is Ramdeva Jha. Ramdeva Jha's best creation PASIJHAIT PATHAR (The Melting stone 1976) is endeed a modern classic. It is a theatre- in the round type of

Scanned by CamScanner

modern drama with an acute sense of situation, contemporary and lively, self centred round a supreme moment of human experience.

(Anthology of Modern Indian Languages, Vol-I, S.A., P.- 230)

श्रीमायानन्दमिश्र

एहि वर्ष (1960इ.)मे किछु उत्तम एकांकी सब प्रकाशित भेल अछि जाहिमे रामदेवझा कृत 'पिपासा' (मिथिला मिहिर) नामक एकांकी वर्षक सर्वश्रेष्ठ एकांकीक रूपमे मानल गेल अछि ।

(मैथिली साहित्य 1960, मिथिला दर्शन, फरवरी 1961)

डा. शैलेन्द्रमोहनझा

श्री रामदेवझाक प्रस्तुत एकांकी (पिपासा) महाभारत मूलक अछि । परन्तु एहि प्राचीन घटनाक नाटककार युगानुरूप व्याख्या कयने छथि । महाभारतसँ गृहीत एहि कथावस्तुमे वर्त्तमान समाज व्यवस्थामे प्रचलित अस्पृश्यताक निदान बड़ कौशलसँ देखाओल गेल अछि ।

(संकलन, मिथिला प्रकाशन, 1964, पृ. 191)

डा. माहेश्वरीसिंह 'महेश'

वर्त्तमान समाज-व्यवस्थामे मनुष्यक सोझामे अनेक रूपक समस्या अछि जाहि कारणेँ ओकर इच्छा कोनो स्थितिमे परितृप्त नहि भऽ सकैछ । एहि रूपक समस्याकेँ प्रोफेसर श्रीरामदेवझा उपर्युक्त एकांकी (दुलारक भूख)मे प्रस्तुत करैत छथि । एतऽ समस्याक एक भाग अछि आर्थिक कष्टक तँ दोसर भाग धन-धान्यसँ परिपूर्ण रहलोपर नि:सन्तान रहने केओ वास्तविक रूपेँ सुखी भऽ कऽ नहि रहि सकैछ । एही रूपक दुनू घटनाकेँ एकांकीकार एहि रूपेँ विन्यस्त कयलनि अछि जे हिनक कौशलक परिचायक थीक ।

(नव एकांकी, 1967, पृ. 159)

गोपालजीझा गोपेश

प्रो. रामदेवझाक एकांकी सबहिमे 'चाननक बसात', 'मनुक्खक देवता' आओर 'दुलारक भूख' बहुत लोकप्रिय सिद्ध भेल अछि । ...भारती कार्यक्रममे डा.रामदेवझाक 'पियास' शीर्षक एकांकीक प्रसारण अधिकांश रेडियो-श्रोताक ध्यान अपना दिशि आकृष्ट कयलक । श्रोता द्वारा बेरि-बेरि एकर फरमाइस भेल आ तदनुसारेँ एकरा ब्राडकास्ट कयल गेल ।

(मैथिली साहित्यक रूपरेखा द्वितीय खण्ड, पृ.-131 एवं 137, 1974)

डा. वीरेन्द्र मल्लिक

'दुलारक भूख' एकांकीमे डा. रामदेवझा विभिन्न समस्यासँ ग्रस्त समाजक चित्र प्रस्तुत कयलनि अछि जाहिमे कोनो व्यक्तिक इच्छा परितृप्त नहि भऽ पबैछ । एक दिस अर्थ व्यवस्थाक चक्कीमे केओ चिक्कस जकाँ पिसा रहल अछि, तँ दोसर दिस सन्तानहीनताक व्यथासँ क्यो पीड़ित आ मर्माहत अछि । एक दिस अधिक सन्तान उत्पन्न कऽ लोक ने ओकर उचित शिक्षाक व्यवस्थे कऽ पबैत अछि, ने भोजन-वस्त्रक ओरियाने । आर्थिक विपन्नता आ सन्तान-आधिक्य ओकर जीवनकेँ तबाह कऽ कऽ राखि दैत छैक । दोसर दिस आर्थिक दृष्टिसँ सम्पन्न रहलो सन्ता सन्तानहीनताक कारणेँ केओ यथार्थत: सुखानुभूतिक अनुभव नहि कऽ पबैत अछि । एकांकीकार दुनू समस्याक संघर्षपूर्ण चित्रण कऽ अपन नाट्य-कौशलक परिचय देलनि अछि ।

Scanned by CamScanner

'दुलारक भूख'क प्रथम दम्पती जगदीश ओ पार्वती आर्थिक दृष्टिएँ सम्पन्न ओ परोपकारी वृत्तिक छथि किन्तु सन्तानहीनताक कारणेँ दुनू भीतरसँ अत्यन्त दुखी आ कातर छथि । 'सन्तानसँ हीन स्त्रीक हियाक दुख हमहींटा बूझि सकै छिऐ बहीनदाइ' पार्वतीक उक्त कथन हुनक व्यथा-कथाक इतिहास प्रस्तुत कऽ दैछ । द्वितीय दम्पती छथि सूरति ओ पोखरामवाली जनिका कुल सातटा सन्तान छनि । अल्प आयक कारणेँ सन्तानसँ भरल-पुरल रहलो सन्ता हिनका लोकनिक जीवन नर्क बनि गेल छनि । वस्तुतः एकांकीकार 'कान भेल तँ सोन नहि, सोन भेल तँ कान नहि' कहबीकेँ प्रस्तुत एकांकीक माध्यमसँ चरितार्थ कयलनि अछि । प्रस्तुत एकांकीमे दृश्य विधानक सर्वथा अभाव अछि तथा लगले-लागल फ्लैश-बैकक प्रयोग कयल गेल अछि जाहिसँ दृश्य-संरचनामे व्यवधान उपस्थित भऽ सकैछ । संवाद संक्षिप्त, प्रभावोत्पादक एवं वैदग्ध्यपूर्ण अछि । भाषा शुष्टु एवं प्रवहमान अछि । अभिनेयताक दृष्टिसँ एकरा सफल एकांकीक गौरव प्राप्त छैक ।

(रंगमंच ओ एकांकी, चेतना समिति, पटना, 1982, पृ-114-115)

डा. बालगोविन्दझा व्यथित

डा. रामदेवझाक 'दुलारक भूख', 'पिपासा', 'मनुष्यक देवता' ओ 'नव बाट नव बटोही' आदिमे सामाजिक समस्या जेना बेकारीक समस्या, अशिक्षा, अछूतोद्धार आ अन्यान्य कुरीतिक चर्चामे अपन प्रतिभाक सफल निदर्शन कयने छथि ।

(मैथिली साहित्यक इतिहास, 1988, पृ. 185)

डा.नीताझा

डा. रामदेवझा मैथिलीमे कवि, कथाकार तथा गवेषक आलोचक रूपमे बेसी ख्यात रहलाह अछि, मुदा ई एकटा सशक्त नाटककार सेहो छथि । हिनक नाटकक मंचन विभिन्न संस्था सभ करैत रहल अछि । हिनक नाट्य संग्रह 'पसिझैत पाथर' नामसँ प्रकाशित भेल अछि । एहि पुस्तककेँ साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गेल अछि। मैथिलीक ई प्रथम नाट्यकृति थिक जकरा ई सम्मान भेटलैक अछि । एहिमे सातटा रचना अछि । एक-दूटाकेँ छोड़ि सभ सामाजिक स्थितिपरक अछि । समाजक समस्यापर नाटककारक रचनात्मक तथा शक्तिपूर्ण निदान एहि कृतिकेँ महत्त्वपूर्ण बनबैत अछि ।

डा. रामदेवझाक 'पिपासा' नामक एकांकीक कथावस्तु पौराणिक अछि । पौराणिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक कथा वस्तुपर आधारित कृतिमे आधुनिक जीवनक समस्याक उल्लेख नहि रहैछ । तेँ ई प्रयास कयल जाइछ जे जाहि प्रसंगपर रचना कयल जाय ओ वर्त्तमान सामाजिक जीवनक समकक्ष हो आ पिपासा एकांकी एकर अनुकूल अछि ।.. .....पौराणिक कथा ओ परिवेशमे आधुनिक समस्या तथा असन्तोषक अभिव्यक्ति रामदेवझाक 'पिपासा' नाटकमे सफलतापूर्वक कयल गेल अछि । महाभारतक एक घटनाक माध्यमसँ लेखक समाजमे अछोपक प्रति प्रचलित हेय दृष्टिकोणपर बड़ कठोर प्रहार कयलनि अछि ।

'दुलारक भूख'मे डा.रामदेवझा वर्त्तमान सामाजिक व्यवस्थाक कारणेँ मनुष्यक इच्छापूर्त्तिमे बाधक, ओ बाधक तत्त्वसँ उत्पन्न असन्तोष दिस संकेत कयलनि अछि । सूरति गरीब व्यक्ति अछि, मुदा परिवारमे बच्चाक संख्या बड़ बेसी छैक । आर्थिक अभावक कारणे बच्चा सभक पालन-पोषण सम्भव नहि छैक । धन-धान्यपूर्ण जगदीशक जीवनमे बच्चाक अभावसँ पैघ असन्तोष छैक । स्वप्नमे एक संन्यासी हुनका अपन वात्सल्य भावनाकेँ विस्तृति प्रदान करबाक उपदेश दैत छनि । हुनक मानसिक संकीर्णता दूर भऽ जाइछ, ओ सूरतिबाबूक बच्चा सभकेँ जे उपेक्षित, कुपोषित अशिक्षित ओ मानवीय स्नेहक भूखल अछि, अपन स्नेहक अधिकारी बनाय, अपन असन्तोषकेँ मेटयबा हेतु प्रयत्नशील होइत छथि ।

(सामाजिक असन्तोष ओ मैथिली साहित्य, 1992, पृ.- 152, 173, 181, 185)

Scanned by CamScanner

श्रीमहेन्द्र मलंगिया

डा.रामदेवझा एहन भाग्यशाली लोकक नाम अछि जनिका एकांकीपर साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटलनि। हिनक प्रमुख एकांकीमे 'पिपासा', 'चाननक बसात', 'मनुक्खक देवता', 'दुलारक भूख', 'आदर्श कुटुम्ब' आदि प्रमुख अछि।.......डा. रामदेवझाक एकांकी 'पिपासा' पौराणिक घटनापर आधारित अछि। एहि एकांकीमे वर्ण संस्कारक अहंपर चोट कयल गेल अछि। ऋषि उत्तंक पियासे मरि जायब नीक बुझैत छथि, मुदा चाण्डालक हाथसँ जल ग्रहण करब नहि। पुन: कृष्णक बुझौलापर ओ पश्चात्ताप करैत कहैत छथि- 'आइ हमरा जीवनमे महान सत्यक उद्घाटन भेल अछि, युग-युग धरि हम एहि सत्यक रक्षा करैत रहब।' यैह एकांकीक क्लाइमेक्सो अछि। एकांकीकार नाटकीय स्थिति उत्पन्न करबामे पूर्ण सफल भेलाह अछि। पात्रो कम खर्च कयने छथि जे एकांकीक विशेषताक रूपमे देखल जायत। एकर संवादक रूपमे जाहि प्रकारक भाषाक प्रयोग भेल अछि ओ एकांकीकारक विद्वत्ताक परिचय दैत अछि। आइ- काल्हि प्राय: एहन भाषाक प्रयोग एकांकीकार लोकनि नहि करैत छथि।

(मैथिली एकांकी संग्रह, साहित्य अकादेमी, 2003)

डा. प्रेमशंकरसिंह

यद्यपि डा. रामदेवझा एकांकी विधामे प्रवेश कयलनि रेडियो रूपक' नव बाट नव बटोही' लऽ कऽ तथापि नवम दशाब्दक अन्तिम चरणमे हिनक एकांकी एवं रेडियो रूपकक संग्रह 'पसिझैत पाथर' (1989) प्रकाशमे आयल जकर वैशिष्ट्य एहिसँ परिभाषित होइत अछि जे पहिल बेर एहि विधाकेँ 1991 इसवीमे साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत कयल गेल। एहिमे कुल सात एकांकी एवं रेडियो रूपक संग्रहित अछि जकर मंचन मिथिला आ मिथिलेतर क्षेत्रमे अनेक बेर भेल अछि। 'पिपासा' (1960) एवं 'मनुष्यक देवता' (1962) मिथिला मिहिरमे तथा 'दुलारक भूख' (1961) वैदेहीमे पूर्वमे प्रकाशित भेल छल तथा शेष चारि सर्वथा नूतन थिक। ......निस्सन्देह रामदेवझा एक सजग साहित्य-चिन्तक छथि जे समसामयिक सामाजिक परिवेशमे दिन-प्रतिदिन घटित होइत घटनावलीक यथार्थताक चित्रण एकांकी ओ रेडियो रूपकमे कयलनि अछि। एकांकी विधामे विविध साहित्यिक प्रयोगक दृष्टिएँ कथानक, कथोपकथन, भाषा प्रयोग, शिल्प-विधान, युगीन विचारधारा आदिक परिप्रेक्ष्यमे अभिनय ओ श्रव्य-नाटकक ई संग्रह विशिष्ट कोटिक अछि। एहिमे एकांकी, रेडियो रूपकक यथार्थ परिचय भेटैत अछि, एकर विषय-वस्तु अछि व्यक्ति-व्यक्तिक सम्बन्धजन्य ग्रन्थि, अन्तर्द्वन्द्व ओ संवेदना, समसामयिक सामाजिक समस्या ओ विसंगति, पौराणिक ओ ऐतिहासिक चरित्रक औदात्य तथा मानव-मूल्यक प्रति अनुरक्ति ओ आस्था।

(मैथिली नाटकक विकास, साहित्य अकादेमी, 2006)

सम्पादक, मैथिली गद्य मालिका

हिनक एकांकी (दुलारक भूख)मे मध्य आ निम्न वर्गक समस्या उद्घाटित कयल गेल अछि। कथोपकथन पात्रानुकूल अछि, संवाद छोट- छोट अछि, वातावरण सहज अछि। अत: साहित्यक दृष्टिसँ तँ सहजहि, मंचनोक दृष्टिसँ हिनक एकांकी उच्चकोटिक अछि।

(बिहार टेक्स्ट बुक कमिटी, पटना, 1999, पृ. 84)

Scanned by CamScanner

कविता प्रसंग

आचार्य रमानाथझा

श्रीरामदेवझा मैथिलीक उदीयमान साहित्यकार छथि । मुख्य रूपेँ ई कथाकार छथि किन्तु कविता सेहो हिनक परिमार्जित होइत अछि । ई किछु सुन्दर गीतक रचना कएलैन्हि अछि जाहि मध्य प्रकृति एवं नारी सौन्दर्यक अनुभूतिपूर्ण वर्णन भेल अछि । कतहु-कतहु नवयुगेकर चुमान एवं 'गीत' एहि दृष्टिएँ द्रष्टव्य थिक जाहिमे भावुक कवि किशोर-भावनाक शाद्वल भूमिकेँ पार कए यथार्थक ठोस भूमिपर अग्रसर होइत प्रतीत होइत छथि । भाव ओ चिन्तनक क्षेत्रमे हम श्रीरामदेवजीसँ क्रमिक अधिक प्रौढ़ताक आशा करैत छी ।

(मैथिली नवीन गीत, 1965)

राधाकृष्ण बहेड़

जननी सन उत्कृष्ट 'भारत जननी', सचित्र कविता एहि वर्षक मिथिला मिहिर, सितम्बर 1963 सँ अगस्त 1964क अद्यतन प्रकाशित कवितामे सर्वोत्कृष्ट कहल जाय तँ ने मुँह देखौअलि होयत ने अत्युक्ति । एहि रचनाक लेल सुकवि श्रीरामदेवजी ओ सम्पादक वृन्दकेँ हार्दिक साधुवाद ।

(पाठकक प्रतिक्रिया, मिथिला मिहिर, 30 अगस्त 1964)

राजकमल चौधरी

रामदेवझा (अपन कवितामे) प्रकृतिकेँ, जीवनक छोट-पैघ उपाख्यान आ उपदेशकेँ, परम्परित प्रवृत्तिसँ स्वाधीन होइत, नव रूपक, नव विधान, नव परिवेशमे उपस्थित कयलनि ......एहि छठम दशकमे आबि कऽ मैथिली कविताक रूप आ दृष्टि बदलि गेल । उदाहरणक रूपमे रामदेवझाक कविता 'रौद'....।

(हमरा लोकनिक युग ओ आधुनिक मैथिली कविता, मिथिला मिहिर, 29 अगस्त 1965, पृ..12)

डा. शंकरकुमारझा

मिथिला कालेजक मैथिलीक प्राध्यापक 'एक खीरा:तीन फाँक'क सफल कथाकार श्रीरामदेवजी कवितोक क्षेत्रमे बेस प्रसिद्धि प्राप्त कऽ लेने छथि । हिनक गीत बड़ ललित होइछ, जाहिमे कोमल भावना, कमनीय कल्पना, आदर्श प्रेरणाक अतिरिक्त सराबोर रहैछ सहृदयता, आत्मीयता ओ चिन्तन । कविता ई ओजस्वी लिखैत छथि जाहिमे प्रसाद गुण, आधुनिक परिस्थितिक चित्रण आशामय भविष्यक कल्पना आदि वैशिष्ट्य रहितहुँ जँ ओतेक लोकप्रियता नहि प्राप्त करैछ, तँ तकर कारण थिक पाण्डित्यपूर्ण ओ अनुभूति प्रधान वाक्य विन्यास, मूलरूपसँ कथाकार रहितहुँ ई कवि छथि प्रतिभाशील ओ आशावादी, तथा हिनक काव्यसँ प्रबुद्ध रसज्ञकेँ वेश आनन्दानुभूति होइत छनि ।

(कविता कलाप, 1970, पृ. 87-88)

डा. माहेश्वरी सिंह महेश

डा.रामदेवझा मुख्य रूपेँ कथाकार छथि; किन्तु कविता सेहो हिनक परिमार्जित होइत अछि । किछु सुन्दर गीतक रचना ई सेहो कयलनि अछि जाहि मध्य कोमल-भावना, कमनीय कल्पना, आदर्श प्रेरणा एवं प्रकृति एवं नारी सौन्दर्यक अनुभूतिपूर्ण वर्णन भेल अछि; कतहु-कतहु नवयुगक सेहो अभिनन्दन भेल अछि । 'भारत जननी' हिनकर उत्कृष्ट रचना थिक जाहिमे भावुक कवि किशोर-भावनाक शाद्वल भूमिकेँ पार कए यथार्थक ठोस भूमिपर अग्रसर होइत प्रतीत होइत छथि । भाव ओ चिन्तक क्षेत्रमे अधिक प्रौढ़ताक आशा अछि । ई कविता ओजस्वी लिखैत छथि जाहिमे

Scanned by CamScanner

प्रसाद गुण, आधुनिक परिस्थितिक चित्रण, आशामय भविष्यक कल्पना आदि वैशिष्ट्य रहितहुँ जँ ओतेक लोकप्रियता नहि प्राप्त करैछ तँ तकर कारण थीक पाण्डित्यपूर्ण ओ अनुभूतिप्रधान वाक्य विन्यास ।

(पद्य-लतिका, पृ. 174, 1987)

डा. भीमनाथझा

हिनक कविता हृदयग्राही होइत अछि । कोनो वादसँ ई ग्रस्त नहि छथि । छन्द आ स्वच्छन्द दुनू प्रकारक रचना करैत छथि- किन्तु विचार हिनक कतहु विच्छृंखलित नहि होइत अछि । कथे जकाँ हिनक कवितामे मिथिलाक गाम-घर, सामान्य जनक हास-अश्रु, इच्छा-आकांक्षाकेँ अभिव्यक्ति भेटलैक अछि । .....हिनक किछु गीत उत्कृष्ट कोटिक अछि । ई बड़ ललित शब्दक योजना अपन गीतमे करैत छथि, भावक गम्भीरताक संग-संग गेयधर्मिता आ कर्णप्रियता हिनक गीतक मुख्य विशेषता थिकनि ।

(परिचायिका. 1985, पृ. 200)

प्रो. उमेशमिश्र

समकालीन मैथिलीक तरुण साहित्यकारमे श्रीरामदेवजी अपन महत्त्वपूर्ण स्थान बना लेने छथि । बहुमुखी प्रतिभाक कलाकार रामदेवजी समान रूपेँ कथा, कविता आ आलोचना लीखि रहल छथि । स्थानीय रंग, ठेठ भाषाक प्रयोग तथा मार्मिकता हिनक अपन विशेषता थिकनि । नवीन युगक नवीन उद्‌बोधनात्मक काव्य-रचना दिस हिनक सहज अन्मुखता देखल जा सकैछ ।

(मैथिली पद्य संग्रह, भारती मंडन प्रकाशन, सहरसा, 1965, पृ. 81)

डा. नन्दकिशोरमिश्र

डा. रामदेवझाक स्थान आधुनिक मैथिली गीति-काव्यमे प्रमुख अछि । हिनक गीत बड़ ललित होइछ जाहिमे कोमल भावना, कमनीय कल्पना, आदर्श प्रेरणाक अतिरिक्त सराबोर रहैछ सहृदयता आत्मीयता ओ चिन्तना । .....'नव युगकेर चुमान'मे कवि प्रकृतिक कोमल ओ भव्य स्वरूपक चित्रण कयने छथि । .....'गीत' मे नारी सौन्दर्यक बड़ भव्य ओ आकर्षक चित्रांकन भेल अछि ।.......हिनक गीतमे कोमल भाव, सरल भाषा ओ अनुभूतिक गहनता रहैछ । भाषापर हिनका पूर्ण अधिकार छनि ।

(मैथिली गीति काव्यक उद्‌भव ओ विकास, 1990, पृ. 134-35)

डा. नबोनाथझा

रामदेवझा आशावादी कवि मानल जयताह । हिनक काव्यमे बौद्धिक चिन्तना, नव उज्ज्वल भविष्यक कामना रहैछ । हिनक समकालीन कवितामे नव भाव ओ नव विचारालोक सम्प्राप्त होइछ । हिनक महत्त्वपूर्ण कविता सभ अछि कालतुला, प्रथम सन्तान, फोटोक निगेटिव, निर्जल मेघ, माघक रौद, मौन, भविष्य एवं कोपड़ आदि ।

(निबन्ध परिमल, 1999, पृ. 36)

डा. देवकान्तझा

Ramdeo Jha is a modern lyricist of distinction, a piller of Kisun's new school of poetry which published seven of his selected poems. While his songs tend towards modern progressivism, under Yatri's influence, RamdeoJha is primarily a dramatist.

His Songs are serious and sublime as well as tender and melodious.

(A History of Modern Maithili LIterature, S.A., 2004, P-102)

Scanned by CamScanner

शोध-सभालोचना प्रसंग

श्रीकान्तठाकुर विद्यालंकार

मैथिली साहित्यक इतिहासमे ख्यातिक्रमे विद्यापतिक बाद जनिक नाम निर्विवाद रूपेँ लेल जाइत अछि से थिकाह एहि पुस्तक (उमापति)क चरितनायक म.म.उमापति । किन्तु हिनक परिचय आ काल दुनू सर जार्ज ग्रियर्सनक समयहिसँ जटिल विवादक विषय रहल अछि । सौभाग्यवश हालमे प्रस्तुत ग्रन्थक लेखक डा. रामदेवझा व्यापक अन्वेषण-अनुसन्धान कऽ ओहि विवादक अन्त कऽ देलनि अछि आ हिनक निष्कर्ष प्राय: सर्वमान्य भऽ चुकल अछि । हिनक विशिष्ट अध्ययनक फल प्रस्तुत ग्रन्थमे स्पष्टत: परिलक्षित होयत । ई जाहि तत्परता, शीघ्रता ओ विद्वत्तासँ एहि ग्रन्थकेँ सम्पन्न कयलनि अछि, तदर्थ ई धन्यवादार्ह थिकाह । विद्वान लेखक एहि पुस्तकमे उमापतिक सम्बन्धमे अद्यपर्यन्तं ज्ञात यच्चयावच्च तथ्य यथावत् प्रस्तुत करबाक प्रयास कयलनि अछि ।

(उमापतिक प्रकाशकीय, 1980)

डा. जयकान्तमिश्र

एम्हर हालमे डाक्टर श्रीरामदेवझा (उमापतिक प्रसंग) नव तथ्य सभ प्राप्त कएलन्हि ओ से हमरा आब एहि सम्बन्धमे अन्तिम निष्कर्ष मानए पड़त । समस्त विषय ओ आब मैथिली अकादमीसँ प्रकाशित 'उमापति' नामक ग्रन्थमे बुझाए प्रामाणिक रूपेँ रखने छथि ।

(मैथिली साहित्यक इतिहास, सा.अ., 1988, पृ.-171)

डा. वासुकीनाथझा

डा. रामदेवझा 'मैथिलीमे शैव साहित्य' नामक शोध प्रबन्धपर सन 1970 इ.मे पटना विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच.डी. क उपाधि प्राप्त कयलनि । एहिमे मैथिली भाषाक आदिकालसँ लऽ वर्त्तमानकाल धरिक तथा मिथिला एवं बाहरक सम्पूर्ण शैव साहित्यक गम्भीर अध्ययन प्रस्तुत कयल गेल अछि । ......मैथिली शैव साहित्यक व्यवस्थित इतिहास रहबाक कारणेँ एहि शोध-प्रबन्धक प्रत्येक अध्यायमे प्रचुर मात्रामे नवीन सामग्री एवं तथ्य सब समाविष्ट अछि, एहि शोध-प्रबन्धमे कतिपय अज्ञात कविकेँ प्रकाशमे आनल गेल अछि जकरा मैथिली साहित्यक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि कहल जायत । साहित्येतिहासक दृष्टिसँ ई शोध विशेष महत्त्व रखैत अछि ।

(मैथिली साहित्यक रूपरेखा, द्वितीय खण्ड, 1974, पृ-159-160)

डा. भीमनाथझा

हिनक दू गोट शोध ग्रन्थ प्रकाशित अछि, जे वास्तवमे एके ग्रन्थक दू खण्ड थिक । 'मैथिली शैव साहित्यक भूमिका'मे शिवक विभिन्न शास्त्रमे उल्लेख, हुनक शास्त्रीय ओ लौकिक महत्त्व, मैथिल समाजमे शिवक महत्त्व, उपासना पद्धति, मैथिलीक आदिकालीन रचनामे शिवक रूप आदिपर गम्भीर विवेचन प्रस्तुत कयल गेल अछि । 'मैथिली शैव साहित्य'मे शिव विषयक प्रचुर आ सुदीर्घ साहित्यक विस्तुत आयामकेँ समटैत शैव साहित्यक विद्वत्तापूर्ण आ विशद् विश्लेषण प्रस्तुत कयल गेल अछि । ई ग्रन्थ विद्वान लेखकक गहन अध्ययन, सुदीर्घ अनुसन्धान आ सूक्ष्म विवेचन-बुद्धिक सुपरिणाम थिक । किन्तु, आधुनिक कालमे जतऽ अनेक कविक शिव-विषयक रचनापर लेखक दृष्टिपात कयलनि अछि ततऽ कविवर सीतारामझाक शिव-विषयक रचना छुटि गेल अछि । तहिना, चीनी आक्रमणक समयमे अनेक कवि द्वारा कयल गेल प्रलयंकर रुद्रक व्यापक आवाहनकेँ सेहो विद्वान लेखक अपन विचार-कोटिसँ बाहर रखलनि अछि । तथापि ई कृति मैथिली समालोचना ओ अनुसन्धान साहित्यक मानक ग्रन्थ थिक ।

(परिचायिका, 1985, पृ. 201)

Scanned by CamScanner

डा. देवकान्तझा

डा.रामदेवझाक ग्रन्थ द्वय 'मैथिली शैव साहित्य' (1979) ओ 'मैथिली शैव साहित्यक भूमिका' (1982) शोध क्षेत्रक ऐतिहासिक उपलब्धि थिक । वैदिक कालसँ अद्यतन युग धरि शैव साहित्यक मूल्यांकन तथा एहिपर मैथिलत्वक छाप देखार करब एकर विशेषता थिक ।

(मैथिली गद्य साहित्य, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना, 1996, पृ. 30)

डा. शैलेन्द्रमोहनझा

वास्तविक अनुसन्धान ओ थिक जे इतिहासक मान्यताकेँ बदलय, नव मान्यता स्थापित करय अथवा कोनो दुर्बल ओ सन्दिग्ध मान्यताकेँ सप्रमाण सम्पुष्ट करय । डा. रामदेवझा एहि प्रकारक अनुसन्धानमे अपन एकटा विशिष्ट स्थान बना लेने छथि आ जाहि प्रकारक सामग्री सभ निरन्तर प्रकाशमे अनैत रहलाह अछि से इतिहासकार लोकनिकेँ अपन कतोक धारणापर पुनर्विचार करबाक लेल विवश कऽ देलकनि अछि । जगज्ज्योतिर्मल्लकेँ मैथिली साहित्यक इतिहासमे महत्त्वपूर्ण स्थानपर प्रतिष्ठित करबाक श्रेय हिनकहि छनि । ओही प्रयासक एकटा महत्त्वपूर्ण अवदान थिक ई 'दशावतार नृत्यम् ओ षोडश गीतम्' ।

(जगज्ज्योतिर्म्मल्लकृत दशावतार नृत्यम् ओ षोडशगीतम् 1988क भूमिकासँ अंश उद्धृत)

प्रो. प्रफुल्लकुमारसिंह 'मौन'

नेपाल उपत्यकाक मल्लराजा लोकनिक शिलालेखमे मैथिली गीत सेहो उत्कीर्ण कयल गेल, जकर मूल्यांकन साहित्येतिहासक दृष्टिसँ होयबाक चाही । किछु देशी-विदेशी विद्वान सभक सत्प्रयासेँ उपत्यकाक शिलालेख सभसँ जाहि तथ्य सभक उद्घाटन भेल अछि, ओहिसँ मैथिली गीत साहित्यक प्राप्ति विशेष उल्लेखनीय अछि, जकर पाठोद्धार कऽ मैथिली जगतक समक्ष पहिल बेर रखबाक सम्पूर्ण श्रेय डा.रामदेवझाजीकेँ छनि । अपन 'नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत'मे विद्वान अनुसन्धाता जतेक मैथिली पद सभक पाठोद्धार कऽ प्रस्तुत कयलनि अछि तकर अतिरिक्तो बहुत रास मैथिली पद सभ एखनो पाठोद्धारक प्रतीक्षामे छिड़िआयल अछि । जकर पाठोद्धार होयबाक चाही । नेपालक एहि मैथिली-अर्चनाक सांगोपांग रूप सुधी समाजकेँ नहि भेटि सकलनि अछि । ओहि दिशामे मित्र डा.रामदेवझाजी 'हरगौरीविवाह नाटक' ओ वर्त्तमान कृतिक रूपमे जे सामग्री प्रस्तुत कयलनि अछि से अतीव प्रशंसनीय अछिहे, संगहि भावी अनुसन्धानक दिशामे महत्त्वपूर्ण पद-निक्षेप थिक ।

(नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत, 1972क भूमिकासँ)

सत्य

शकुन्तला नाटक : एक अध्ययन 'शकुन्तला' नामक मैथिली नाटकपर लिखल गेल आलोचना विषयक वस्तु थिक । पुस्तकक आरम्भमे मैथिली नाटकक उद्भव ओ विकासपर जे निबन्ध प्रस्तुत कयल गेल अछि से निश्चय उपादेय सिद्ध होयत । संगहि महाकवि कालिदासक सम्बन्धमे जतेक जनतब एहि पोथीमे देल गेल अछि ताहिसँ अध्येता लोकनिकेँ कालिदास सम्बन्धी पर्याप्त विषय-वस्तु उपलब्ध होयतनि ।

(मिथिला मिहिर, 17 दिसम्बर 1961, पृ. 19)

डा. सुरेश्वरझा

मध्यकालीन मैथिलीक कवि नाटककारमे जगत्प्रकाशमल्ल ओ जगज्ज्योतिर्म्मल्लक शीर्षस्थ स्थान छनि । एहि दुहू पोथीक रचना मैथिलीक उच्चकोटिक विद्वान-साहित्यकार डा.रामदेवझाक लेखनीसँ भेल अछि । डा. झा भाषा-साहित्यक गम्भीर विद्वान छथि । कोनो विषयकेँ तेना समग्रतामे उपस्थित करब जे ओहिमे किछु बचबाक सम्भावना नगण्य रहि

Scanned by CamScanner

जायब हिनक विशेषता छनि । ई गुण एहि दुनू पोथीमे देखबामे अबैत अछि । पहिल पोथीमे जतऽ जगत्प्रकाशमल्लसँ पूर्वक मैथिली साहित्य-धारा, नेपालीय मैथिली साहित्यक संग-संग संगीत ओ कलाक क्षेत्रमे हुनक योगदान आदिक वर्णन भेल अछि ओतऽ जगज्ज्योतिर्मल्लपर लिखित पोथीमे हुनक कृतित्वक अतिरिक्त राजनीतिक परम्परा ओ परिवेश एवं साहित्यिक परम्परा ओ परिवेशक सन्निवेशक अतिरिक्त अनुभूत सत्य ओ सुक्तिक निवेश कयल गेल अछि ।

(मैथिली गद्यसाहित्य, मैथिली विभाग, पटना वि. पटना, 1996, पृ. 47)

न. (कुलानन्द नन्दन)

'राम विजय' चौदहवीं शताब्दीके असमी नाटककार शंकरदेवकी कृति है । इसकी भाषा मैथिली मिश्रित असमिया है । शंकरदेवके जो 6 नाटक मिले हैं उनमें एक 'रामविजय' भी है । उन्होंने मैथिली मिश्रित भाषा का क्यों प्रयोग किया, यह भाषाशास्त्रविदों का अनुसंधान-क्षेत्र है । फिर भी ऐसा लगता है कि शंकरदेवने जिस काल में साहित्य-रचना प्रारम्भ की उससे पहले ही मैथिली भाषा साहित्यिक भाषा के रूप में विकसित हो चुकी थी, इसलिए सम्भव है इसका प्रभाव उनपर पड़ा हो । यह भी सम्भव है कि सीमावर्त्ती क्षेत्र रहने के कारण मैथिली भाषा की मिठास ने उन्हें अपनी ओर आकृष्ट कर लिया हो । जो भी हो, यह पुस्तक असमियों के लिए जितना महत्त्वपूर्ण है, मैथिली भाषियों के लिए भी उतना ही महत्त्वपूर्ण हैं । प्रोफेसर रामदेवझा ने इसे प्रकाश में लाकर मैथिलीभाषियों का बहुत बड़ा उपकार किया है । अत: वे बधाई के पात्र हैं । पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है ।

(आर्यावर्त, हिन्दी दैनिक, पटना, 24 दिसम्बर 1967)

मा. प्र. (मार्कण्डेय प्रवासी)

नेपाली मल्लवंशीय राजा जगज्ज्योतिर्मल्लकृत 'हर गौरीविवाह' नामक संस्कृत मिश्रित मैथिली नाटक अब तक पुस्तक रूप में अनुपलब्ध था । इसकी एकमात्र पाण्डुलिपि कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में सुरक्षित थी । उसी पाण्डुलिपिसे प्राप्त माइक्रोफिल्म के आधारपर डाक्टर रामदेवझाने मैथिली साहित्यको यह अनुपम कृति उपलब्ध करायी है ।

'हरगौरी विवाह' को चम्पूकाव्य की श्रेणी में भी रखा जा सकता है । इसमें गद्य-पद्य दोनोके ही माध्यमसे कथा-यात्रा पूरी की गयी है । साहित्यकी विधाकी दृष्टिसे ही नही, भाषाकी दृष्टि से भी इस कृति में 'चम्पू' चरित्रका निर्वाह किया गया है । गीतों में प्राय: सर्वत्र मूल नाटककारने राग-ताल-निर्देश कर दिए है, फलत: गायकों के लिए भी इनका आकर्षण बढ़ गया है । इस मैथिली नाटककी पाण्डुलिपि नेवारी लिपि में उपलब्ध है, जो देवनागरी प्रभावित मिथिलाक्षर ही है । डाक्टर रामदेवझाने मैथिली साहित्यके सामान्य पाठकों एवं अनुसंधित्सुओंको यह अमूल्य रचना उपलब्ध करा साहित्यका बहुत बड़ा उपकार किया है । डाक्टर झाने मूल कृतिकी व्याख्या एवं समालोचना प्रस्तुत करने के अतिरिक्त अन्य सम्बद्ध शोध सन्दर्भों का भी यथासाध्य विश्लेषण इस पुस्तकमें उपलब्ध करा दिया है, जिसमें इसकी उपयोगिता और भी बढ़ गयी है । व्याख्याकी भाषा सरल और शास्त्रीय है ।

(आर्यावर्त, हिन्दी दैनिक, पटना, 23 जनवरी 1972

सिंह (लक्ष्मीपतिसिंह)

1. The book (HARA-GAUREE-VIBAHA) under review is one of the valuable contributions to the Maithili world made in the first half of the seventeenth century; by Jagajjyotirmalla, a king of Nepal. It is really a pleasure to find that the learned editor, who also doesnot need any introduction to the Maithilee world has taken so great pains in preparing and editing the academic edition of the drama so long heard of but never seen here before by many. How the royal playright has so respectfully accomodated the Maithilee song of his predecessors in his work, and what was the form of the Maithilee prose

Scanned by CamScanner

current in Nepal three hundred years before may prove some of the salient specialities to command the attraction of the interested readers of his book. Really, both the learned editor and the interprising publishers command all apprrciation for making such an important book available in the market.

(THE INDIAN NATION, PATNA, JANUARY 30, 1972)

2. The book (NANDIPATI-GEETI-MALA) under review presents some of the select songs of Nandipati. The edition is richly annoted, and the introduction is quite scholarly. Attempts have been made to make the anthology authentically rich in research value; nontheless. the high price would hardly help the mass circulation of this edition.

(THE INDIAN NATION, PATNA, 14/11/1965)

3. The anthology (NEPALAK-SHILOTKIRNA-MAITHILI-GEETA) under review contains a number of Maithilee songs, discovered engraved on stone. and metals during the Malla-Kingship in Nepal dating from the 11th century. The publication has been nicely edited and chronologically handled. For those interested in the Maithilee literature this research oriented contribution by the learned editor and commentator would really prove a welcome present. Such publications are the urgent necessities of the present. Maithilee in its process of revival.

(THE INDIAN NATION, PATNA, 18/01/1976)

अन्यान्य विधा प्रसंग

डा. शैलेन्द्रमोहनझा

डा. रामदेवझा मैथिलीक कवि, कथाकार ओ निबन्धकार छथि तथा प्रत्येक क्षेत्रमे हिनक प्रतिभाक तेजस्विता लक्षित होइछ। प्रस्तुत निबन्ध 'भारत राष्ट्र ओ राष्ट्रधर्म'मे भारतीयताक जे गरिमामय उद्घोष अछि, ओ 'अनेकतामे एकता' नहि अपितु 'एकतामे अनेकता'कें चरितार्थ करैत अछि। एकहि बटवृक्षक शाखा-प्रशाखाक रूपमे ई राष्ट्रिय एकता, भावनात्मक नहि अपितु आध्यात्मिक अछि, एहिमे कृत्रिमता नहि, मौलिकता अछि।

(गद्यश्री, 1969, पृ.-114)

रामकृष्णझा किसुन

...मैथिली साहित्यक आलोचना क्षेत्रमे जाहि सशक्त समालोचक वर्ग काज कऽ रहल अछि ताहिमे ...प्रो. श्री रामदेवझा प्रभृति विशिष्ट स्थान रखैत छथि। ...प्रो. श्रीरामदेवझाक 'मैथिली नाटकक विकास यात्रा' आदि निबन्ध बड़ महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक सामग्री थिक।

(आलोचना आ मैथिली साहित्य, प्रो. हरिमोहन झा अभिनन्दन ग्रन्थ, 1983, पृ.- 85)

डा. सुरेश्वरझा

उर्दूसँ मैथिलीमे अनूदित महत्त्वपूर्ण उपन्यास अछि 'सगाइ'। राजेन्द्रसिंह बेदी लिखित एहि उपन्यासक मूल नाम थिक- 'एक चादर मैलीसी'। मुदा अनुवादक डा. रामदेवझा अनुवाद धर्मक निर्वहनमे ततेक सचेष्ट देखबामे अबैत छथि जे मूल नाम पर्यन्तकें बदलि मैथिली नाम राखि देलनि। अनुवादक विलक्षणताक लेल रामदेवबाबू साहित्य अकादेमीक अनुवाद पुरस्कारसँ एही कृतिक लेल सम्मानित कयल गेलाह।

(मैथिली गद्य साहित्य, मैथिली विभाग, पटना वि. पटना, 1996, पृ. 46)

Scanned by CamScanner

श्रीभूपेन्द्रकुमारचौधरी

श्रीउपेन्द्रनाथझा व्यासक दुइ पत्र (1969) उपन्यास प्रकाशित भेल जे पत्रात्मक शिल्पविधानमे प्रस्तुत कयल गेल छल. ..ओना एहिसँ पूर्व प्रो. रामदेवझाक 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' आदि अनेकानेक पत्रात्मक शैलीमे लिखल उपन्यास सभ प्रकाशित भऽ चुकल छल ।

(मैथिली उपन्यास ओ उपन्यासकार, 1972, पृ. 10, 42)

श्रीराजमोहनझा

श्रीचतुराननक पत्रात्मक निबन्धक संग्रह 'विकास' आ डा.रामदेवझाक धारावाहिक स्तम्भ 'अंग्रेजीफूलक चिट्ठी'केँ सेहो उपन्यास बना देल जाइत अछि, मैथिली उपन्यास आ उपन्यासकारक, पृ. क्रमशः 31 तथा 41मे

(फराक, नवम्बर 1976, पृ. 13 तथा गलतीनामा, 1983, पृ. 50)

डा.बालगोविन्दझा 'व्यथित'

डा.रामदेवझाक 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' सेहो पत्रात्मक शैलीक उपन्यास थीक ।

(मैथिली साहित्यक इतिहास, 1988, पृ. 212-13)

डा. नबोनाथझा

डा. रामदेवझाक पत्रात्मक उपन्यास 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' व्यासजीसँ पूर्वे मिथिला मिहिरमे धारावाहिक रूपेँ प्रकाशित भेल, मुदा ई उपन्यास 2002मे पुस्तकाकार प्रकाशित भेल अछि एवं मैथिली उपन्यास साहित्यमे मीलक पाथर सिद्ध भेल अछि एवं नव प्रयोग कयल अछि ।

(समीक्षालोक, 2007, पृ. -33)

डा. भीमनाथझा

व्याख्यात्मक भाषाक सर्वोत्कृष्ट उदाहरण छथि डा.रामदेवझा । सर्जनात्मक रचनाक उपयुक्त भाषामे जतबा ओ सफल छथि, ताहिसँ कने अधिके सफल भेल छथि आलोचनोपयुक्त भाषामे । जतेक विस्तारसँ ओ कोनो विषयक पेनी छनैत छथि ततबे फैलसँ ओकरा बुनितो छथि, ताहिमे हुनक भाषा सेहो कनेको कतहु अगुतायल-हड़बड़ायल नहि लगैत छनि । हुनक आलोचना जँ पाठककेँ उबिअयबाक स्थितिमे पहुँचबासँ बचबैत अछि तँ तकर श्रेय हुनक भाषाक लयात्मकताकेँ देबऽ पड़त । लयात्मक रहितो हुनक भाषा ओतेक कोमल आ तन्नुक नहि रहैछ आ से आलोचनाक व्याख्यात्मक स्वरूपकेँ लरगुज बनयबाक स्थितिमे पहुँचबासँ रोकैत अछि । अनुसन्धान-विवेचनमे हुनक भाषा, समीक्षाक अपेक्षा, बेसी, बहुत बेसी संग दैछ ।

(साहित्यालाप, 1991, पृ. 88)

●

Scanned by CamScanner

वैदेहीक सम्पादक प्रो. रामदेवझा

डा. श्रीश्रीशंकरझा

पत्रकारक गूढ़तम दायित्वक निर्वहन सामान्यजनसँ सम्भव नहि भऽ सकैछ अर्थात जँ योग्य ओ सफल व्यक्तिक हाथमे ई गूढ़तम भार रहतनि तँ सफलता भेटत अन्यथा असफल होयबाक सम्भावना प्रबल । यैह कारण अछि जे कोनो पत्रिकाक सम्पादककेँ सुयोग्य, ओ भाषा ज्ञान सम्पन्न होयबाक चाही ।

डा. रामदेवबाबू छात्रावस्थहिसँ साहित्यिक ओ मातृभाषानुरागी व्यक्ति रहलाह अछि । हिनका द्वारा पत्रकारिताक क्षेत्रमे कृत कार्यक लाभ दुइ गोट पत्र वैदेही ओ संकल्प केँ भेटलैक अछि । पहिल मासिक ओ दोसर वार्षिक-शोध प्रकृतिक । डा. रामदेवझा वैदेहीक सम्पादन 1964सँ 1967 पर्यन्त आ संकल्पक पाँच गोट अंकक सम्पादन कयलनि । वैदेहीक हिनक सम्पादकीय ओ रचना चयनसँ हिनक प्रखर ओ कुशल पत्रकारक छवि उद्घाटित भेल अछि । वैदेहीमे हिनक सम्पादकीय-विचार मुख्य रूपसँ छओ भागमे विभक्त भेटैत अछि–

(1) मैथिलीक विकास

(2) मिथिलाक विकास

(3) साहित्यकारक मान-सम्मानक रक्षा

(4) नव साहित्यकारकेँ प्रश्रय

(5) शैलीक निर्धारण एवं

(6) समसामयिक विषय-वस्तु

मैथिली विकासक जे बाधक तत्त्व रहल अछि ओ थिक कोनो निश्चित स्थानपर मैथिली पोथी प्राप्त नहि होयब । विद्यापति-स्मृति-पर्व ओ मैथिली सम्मेलनक नामपर लाखो लाखो टाका बूकि देल जाइछ । मुदा रचनात्मक कार्य दिश केओ प्रवृत्त नहि होइत छथि । एहि बातक अनुभव कऽ रामदेवबाबू वैदेहीक जनवरी 1964 क सम्पादकीयमे गम्भीर चिन्ताकक संग उल्लेख करैत कहैत छथि- **ई निश्चित जे मैथिली चेतनाक धाह तीव्र गतिसँ पसरि रहल छैक तेँ एहि बेरक विद्यापति पर्व सप्ताह, पक्ष ओ मासक अतिक्रमण कऽ बहुमासावर्त्ती भऽ गेल अछि । .....जाहि कोनो ठाम मैथिली संस्था कार्यरत अछि ओहिठाम एहन पुस्तकालय ओ वाचनालयक स्थापना हो जतऽ मैथिली पोथी सभक संग्रह कयल जाय । ....मासमे गोटेक दिन समस्त मैथिलीप्रेमी एकठाम बैसि मैथिली भाषा ओ साहित्यक सम्बन्ध मे विचार ओ परिचर्चा करथि ।**

उपर्युक्त दुनू तरहक विचार-सुझावक प्रासंगिकता आइओ अछि । एहने सुझाव फरवरी 1964क सम्पादकीयमे सेहो देखल जाइछ । आइयो एकटा विकट मनोवृत्ति हमरा सबमे अछि जे मिथिलासँ बाहर जाइत देरी मैथिल लोकनि अपन मातृभाषा छोड़ि दैत छथि । एहि सम्बन्धमे वैदेहीक सम्पादक महोदय कहैत छथि- **बंगाल, नेपाल, यू.पी. वा अन्य प्रदेशमे प्रवासी सभ तत्तत स्थानीय भाषाकेँ मातृभाषाक रूपमे ग्रहण कऽ लेलनि अछि ..... । अतः हुनका लोकनिसँ विनम्र निवेदन करबनि, संस्कृति ओ सभ्यताक संवाहिका मैथिली भाषाकेँ ओ लोकनि ग्रहण करथु .... । एहि हेतु मैथिली पत्र-पत्रिका सभक प्रचार ओहि क्षेत्रमे हो, दोसर मैथिली पोथी सभ प्रवासी बन्धु सभ अपन पुस्तकालयमे संग्रह**

Scanned by CamScanner

करथि । प्रत्येक व्यक्ति प्रतिज्ञापूर्वक मासमे एकोटा मैथिली पोथी अवश्य पढ़थि । उपर्युक्त दुनू तरहक सम्पादकीय सुझावसँ स्पष्ट भऽ जाइछ जे हिनकामे मैथिलीक प्रति कतेक गम्भीर चिन्तन ओ दूर दृष्टि छनि ।

कोनो भाषाक समग्र विकास तखनहि सम्भव अछि जखन कि ओहि भाषाक माध्यमसँ लोकके रोजी-रोटीक जोगार होइक । मार्च 1964क सम्पादकीयमे विश्वविद्यालयसँ महाविद्यालय स्तर धरि एवं लोक सेवा आयोगमे मैथिलीक स्थान हो ताहि प्रसंग अपन महत्त्वपूर्ण सुझाव दैत तत्कालीन विधायक एकनारायणचौधरीक प्रयासक सराहना कयल गेल अछि । विधान मंडलमे जे सदस्य मैथिलीक हेतु आवाज नहि उठबैत छथि हुनक कर्त्तव्यज्ञान करबैत तनिको सम्पादक महोदय अपन सुझावक संग एहि दिशामे आगू अयबाक लेल प्रेरित कयने छथि ।

रामदेवबाबू वैदेहीक सम्पादकीयक माध्यमसँ मिथिलाक विकास लेल सेहो सुझाव दैत रहलाह अछि ।

समाज शिक्षित होअय एहि लेल आवश्यक जे विद्यालय-महाविद्यालय-विश्वविद्यालयक स्थापना आ ओहिमे मातृभाषाक माध्यमसँ शिक्षाक व्यवस्था हो । 1964 मे सर्वपल्ली राधाकृष्णनक नेतृत्त्वमे विश्वविद्यालय जाँच कमिटीक गठन भेल छल । ओही समयमे मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापनाक मांगक स्वीकारोक्ति जकाँ भऽ गेल छल एहि विषयपर वैदेहीक सितम्बर 1964क सम्पादकीयमे गम्भीर विचार भेल अछि ।

कोनो साहित्यकारक स्मरण ओ सम्मान करब समाजक कर्त्तव्य होइछ । अक्टूबर 1964 कऽ सम्पादकीयमे चन्दाझाक प्रति कृतज्ञता ओ हुनका पुनः स्मरण कयल गेल अछि ।

1965 इ. क जनवरीमे राजपण्डित बलदेवमिश्रक निधन भऽ गेल तँ दोसर दिस साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक स्थानक प्रस्ताव भेल । ओ समय मैथिली प्रेमी बन्धुलोकनिक लेल हर्ष ओ विषाद दुनूक छल । तत्कालीन 'वैदेही'क सम्पादकीयमे एकर छाप देखना जाइत अछि ।

मार्च 1965 क सम्पादकीयमे सम्पादक मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा देबाक विचार व्यक्त करैत लिखने छथि जे बिहार टेक्स्ट बुक कमीटीकेँ चाहिऐक जे ओ मैथिली मे पाठ्य पुस्तक छापय, वितरण करय आ शिक्षाक माध्यम मैथिली रहय । एहि कार्यमे शिक्षक, अभिभावक ओ अधिकारी सबहक सहयोग रहब आवश्यक अछि ।

पड़ोसी देश पाकिस्तान 1965 मे भारतपर अकारण चढ़ाइ कऽ देलक । एहिमे अमेरिका सनक शक्तिशाली राष्ट्रक सह सेहो छलैक । तत्कालीन प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री एकर मुँहतोड़ जबाब देबऽ लगलथिन । पछड़ैत पाकिस्तानकेँ देखि अमेरिका कछमछाय लागल । भारतपर युद्ध विराम हेतु दबाब देब प्रारम्भ भऽ गेल । ओहि समयमे पी.एल-480 क अन्तर्गत अमेरिकासँ समझौता छल आ अमेरिका भारतकेँ गहूँमक निर्यात करैत छल । परमीटपर गहूँम भेटैत छलैक । पाकिस्तानकेँ जखन भारतीय सेना पछाड़ऽ लगलैक तँ अमेरिका भारतपर दबाब बढ़यलक । जखन तत्कालीन प्रधानमंत्री दबावक सोझाँ झुकबासँ इनकार कयलथिन तँ अमेरिका धमकी देलक जे ओ गहूँम बन्द कऽ देत । मुदा धमकीक आगू भारत नहि झुकल अपितु कहि देलक जे हमर जनता जँ सप्ताहमे एक दिन सहि जायत तँ हमरा ओहि गहूँमक आवश्यकता नहि रहत । ओही समयमे 'जय-जवान जय-किसान'क नारा पड़ल । शास्त्रीजी ई नारा बादमे देलथिन मुदा वैदेहीक सम्पादक ओहिसँ पूर्वहि श्रमजीवी ओ बुद्धिजीवीकेँ एकजुट होयबाक सन्देश अपन एकटा सम्पादकीयक माध्यमसँ व्यक्त कयलनि ।

भारत सरकार एम.सी. छागलाक अध्यक्षतामे एकटा कमीटीक गठन कयलक जाहिमे निर्णय लेल गेल जे संविधानमे तँ स्थान नहि मुदा मैथिली, सिन्धी ओ राजस्थानीकेँ प्रोत्साहन भेटतैक । वैदेहीक सम्पादक अपन एकटा सम्पादकीयमे मैथिली संस्था सबसँ आग्रह कयलनि जे ओ केन्द्र सरकारसँ पत्राचार प्रारम्भ करथि आ दबाब बनावथि जे एहि भाषाकेँ संविधानक आठम अनुसूचीमे स्थान देल जाय ।

Scanned by CamScanner

ई भेलासँ कोना उच्च कोटिक भाषामे अपनाकेँ गणना करायब । एहि आशयक विचार सम्पादकजी मार्च-अप्रीलक वैदेहीक अंकमे व्यक्त कऽ चुकल छलाह ।

साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक स्थानक बात रहल किंवा अष्टम अनुसूचीमे स्थानक आकाशवाणीसँ प्रसारणक गप्प हो, शिक्षाक माध्यम मैथिली होअय से प्रश्न हो एकर सुनियोजित विरोध कयल जाइत छल । वैदेहीक सम्पादक रामदेवबाबू एहिसँ चिन्तित भऽ सुझाव दैत जून 66क अंकक सम्पादकीय मे **मैथिली आ वर्त्तमान** नामक शीर्षकक माध्यमसँ प्रबुद्ध मैथिली भाषीकेँ एहि षड्यन्त्रसँ साकांक्षा रहबाक आग्रह कयलनि ।

वस्तुत: वैदेहीक अपन चारि वर्षक सम्पादन कालमे रामदेवबाबू एहि पत्रकेँ केवल साहित्य प्रस्तुतिक माध्यम नहि अपितु विचार आन्दोलनक मंच बना देलनि । मिथिला-मैथिलीक विभिन्न समस्याकेँ अपन सम्पादकीयक माध्यमसँ स्वर दैत रहलाह तँ ओहू बातक अनुभव कयलनि जे बिना राजनीतिक चेतना जगने मैथिलीकेँ ओकर अधिकार नहि भेटि सकैत छैक । लोकतन्त्रमे मतदाताक एकजुटताक की महत्त्व होइत छैक ताहि बातकेँ ध्यानमे रखैत अपन विभिन्न सम्पादकीयक माध्यमसँ रामदेवबाबू मैथिल जनसमुदायक एकजुटतापर बल दैत रहलाह । अपन सम्पादन कालमे विस्मृत साहित्यकारक स्मरण ओ हुनक अवदानक विश्लेषण-विवेचन करबाकेँ सेहो ई अपन मुख्य दायित्व मानैत आधुनिक मैथिली भाषा साहित्यक पिता कवीश्वर चन्दाझाकेँ ई बेर-बेर स्मरण करैत रहलाह, हुनक स्मृति रक्षाक सुझाव दैत रहलाह आ अन्तत: चन्दाझापर केन्द्रित वैदेहीक एक गोट विशेषांके प्रकाशित कयलनि जकर ऐतिहासिकता आइयो असन्दिग्ध छैक ।

एतावता वैदेहीक सम्पादन द्वारा माध्यमसँ मैथिली साहित्यक सेवा, पत्रिकाक प्रत्येक अंककेँ ऐतिहासिक ओ लोकप्रिय बनयबाक जे क्षमता हिनकामे देखबामे आयल से विरले लोकमे दृष्टिगोचर होइछ । हिनक सम्पादन कलाक निपुणता ओ उच्चता दृष्टिगोचर भेल । हिनक सम्पादनसँ पूर्व वैदेहीक शैली ओ वर्त्तनीमे एकरूपता नहि छलैक । जतेक विद्वान ततेक तरहक शैलीमे लेखन होइत छल । हिनकहि सम्पादन कालमे एकर लेखन शैलीमे एकरूपता आबऽ लागल ।

●

Scanned by CamScanner

संकल्पक सम्पादकक रूपमे

डा. श्रीकुलानन्दझा

मासिक पत्रिका वैदेहीक सम्पादनक आठ-नौ वर्षक बाद डा. रामदेवझाक जे दोसर महत्त्वपूर्ण पत्र-सम्पादन थिकनि से अछि संकल्पक पाँच गोट अंक । एक समयमे लहेरियासरायक प्रमुख संस्था संकल्पलोक आयोजनक संग-संग प्रकाशनक क्षेत्रमे सेहो ततबे सक्रिय रहैत छल । 1975मे स्थापित एहि संस्था द्वारा 1977 सँ प्रतिवर्ष संस्थाक मुखपत्रक रूपमे संकल्पक प्रकाशनक योजना बनल आ एकर सम्पादनक दायित्व डा. रामदेवझाकेँ देल गेलनि । सामान्यत: मैथिली संस्था सभक द्वारा विद्यापति पर्वक अवसरपर एकटा स्मारिका प्रकाशित करबाक परम्परा रहल अछि । अनियोजित ढंगसँ जे से सामग्री दऽ विधि पुरा लेल जाइछ आ ओ स्मारिका कोनो जोगरक नहि रहि जाइछ । डा. रामदेवझा संकल्पकेँ ओहि विधि पुरौअलि स्मारिका श्रेणीमे नहि राखि ओकरा चिरस्मरणीय बनयबाक योजना बनौलनि । मैथिलीमे शोध-पत्रिकाक घोर अभावकेँ देखैत संकल्पकेँ मैथिलीक रिसर्च-जर्नलक रूप देबाक प्रयास करैत 1977मे एकर प्रथम अंकक सम्पादन कार्य पूर्ण कयलनि ।

संकल्पक प्रथम अंकमे दस्तावेजक रूपमे बाबू भोलालालदासक एकटा पुरान संस्मरण, सुरेन्द्रझा सुमनक 'कुटुम्ब कवि विद्यापति', प्रो. उमानाथझाक 'विद्यापति- एक वा अनेक', प्रो. राधाकृष्ण चौधरीक 'कविक रूपमे विद्यापतिक मूल्यांकन', डा. उपेन्द्र ठाकुरक 'दार्शनिक उदयनाचार्य', चन्द्रनाथमिश्र अमरक 'अलंकारक मूल रहस्य', डा. भवनाथमिश्रक 'प. बबुआजीमिश्रक नामे लिखल शिवनन्दनठाकुर ओ कुमार गंगानन्दसिंहक पत्र', प्रो. हरिहरझाक 'मैथिली : उद्भव ओ विकास', डा. रत्नेश्वरमिश्रक 'बल्दियाबाड़ीक लड़ाइ', नरेन्द्रनाथ दास विद्यालंकारक 'लालदासक रामायणमे हास्यरस', डा. भगवतीशरणमिश्रक 'मैथिलीक विकास : किएक आ कोना ?', डा. जयकान्तमिश्रक 'कंसनारायण पदावली', रघुनाथ पहाड़पुरीक 'मिथिलाक हास्यरसावतार : गोनूझा' प्रभृति अनेकश: शोधपरक आलेख प्रकाशित भेल । एहि प्रथमहि अंकसँ डा. रामदेवझाक सम्पादन दृष्टिक परिचय भेटि जाइत अछि जे ओ संकल्पकेँ कोन रूपक पत्र बनबऽ चाहैत रहथि । एहिमे मैथिली ओ मिथिलासँ सम्बद्ध विभिन्न विषयपरक आलेख तँ अछिहे संगहि साहित्येतर विषयक माध्यम सेहो मैथिली बनि सकैत अछि सेहो देखयबाक प्रयास भेल अछि । डा. रत्नेश्वरमिश्र सन इतिहासकारसँ मैथिलीमे इतिहास विषयक शोध लिखबायब किंवा आला पकड़निहार डा. भवनाथमिश्र सन चिकित्सकसँ कलम धरबा लेब, तत्कालीन सांसद सुरेन्द्रझासुमनक व्यस्तताक उपरान्तो हुनकासँ आलेख प्राप्त कऽ लेब, डा. भगवतीशरणमिश्र (तत्कालीन सदर अनुमंडलाधिकारी, दरभंगा) एवं रघुनाथ पहाड़पुरी (तत्कालीन प्रखंड विकास पदाधिकारी, सिंहवाड़ा) आदि सन अमैथिलीभाषी मैथिलीप्रेमीसँ मैथिलीमे अपन मनोनुकूल लेखन करबा लेल हिनक महत्तम सम्पादन योग्यताक परिचायक अछि ।

संकल्पक दोसर अंकक प्रकाशन दुइ वर्ष बाद 1979मे भेल । एहू अंकमे विविध विषयसँ सम्बद्ध शोधपरक आलेख सब अछि । एहि अंकक सम्पादकीयमे संकल्पक प्रकाशनक उद्देश्य निरूपित करैत सम्पादक डा. रामदेवझा लिखैत छथि– **देशक विभिन्न भागमे मैथिलीक बहुतो संस्था सभ कार्यरत अछि । सभ सालमे एकबेर विद्यापति स्मृति-पर्व मनबिते अछि । परन्तु किछु अपवाद संस्थाकेँ छोड़ि अधिकांश संस्थाक कार्यक्रम ओ क्रियाकलाप वायवीय मात्र बनि कऽ रहि जाइछ । साहित्य-निर्माणक दिशामे कोनो स्थायी योगदान नहि कऽ पबैत अछि । संकल्पलोक एकटा नवजात संस्था अछि मुदा मौखिके रूपमे एकर अस्तित्व नहि रहैक तेँ हेतु संकल्पक प्रकाशनक ई आयोजन कयलक अछि । संस्था ई धारणा लऽ कऽ चलि रहल अछि जे कहियो संकल्प केँ अपन 'मुखपत्र'क रूप दऽ सकत ।'**

Scanned by CamScanner

निश्चित रूपसँ उपर्युक्त सम्पादकीय विचारसँ ई प्रतिध्वनित होइछ जे एकर सम्पादक साहित्यक संकुचित अर्थकेँ त्यागि ओहि वृहत् अथकेँ ग्रहण कयलनि अछि जाहिसँ मैथिली विभिन्न शास्त्रक अभिव्यक्तिक माध्यम बनि सकय ।

संकल्पक तेसर अंकक प्रकाशन सात वर्षक बाद 1985मे भेल । निश्चित रूपसँ एकरा संस्थाक मुखपत्र बनयबाक परिकल्पना परिकल्पने रहि गेल । संस्था द्वारा एकर नियमित प्रकाशन किएक नहि कयल गेल तकर जे किछु आन्तरिक कारण रहल होअओ मुदा दीर्घ अन्तरालक बादो एकर सम्पादक विषयक चयनमे कोनो समझौता नहि कयलनि । संकल्पक एहि तेसर अंकमे प्रो. उमानाथझाक 'मैथिलक बदलैत परिधान', चन्द्रनाथमिश्र अमरक 'राष्ट्रिय परिप्रेक्ष्यमे भरोस मात्र भगवानक', प्रो. मायानन्दमिश्रक 'पुस्तकालय आन्दोलन : मैथिली आन्दोलन', डा. रत्नेश्वरमिश्रक 'मिथिलामे किसान आन्दोलनक प्रारम्भ', आदि सन महत्त्वपूर्ण सामग्री अछि तँ दोसर दिस नवतूरक अनुसन्धाता लोकनिकेँ सेहो प्रोत्साहित करैत हुनक आलेखकेँ माँजि-तरासि एहिमे स्थान देल गेल अछि । एहि कोटिमे योगानन्दझाक 'विद्यापतिक राधाक स्वरूप', डा. नीताझाक 'कवय: क्रान्तिदर्शिन:', प्रो. रामनरेशसिंहक 'मिथिलाक धार : जीबछ' प्रेमनारायणझाक 'हरिमोहनझाक कथाक पात्र' आदि सन आलेख प्रकाशित भेल । एहिसँ अतिरिक्त एहि अंकक जे एक गोट प्रमुख वैशिष्ट्य अछि से थीक संस्थाक तावत धरिक समस्त अभिलेखक प्रकाशन ई अभिलेख एहि संस्थाक इतिहासे नहि मैथिली आन्दोलनक इतिहास लेखन हेतु सेहो स्रोत सामग्री उपलब्ध करबैत अछि । एहि अंकक हेतु सामग्रीक चयन ओ ओकर प्रकाशनपर सम्पादककेँ पूर्ण भरोस छलनि आ हुनका एहि बातक आत्मविश्वास छलनि जे पूर्वक दुइ अंकक भाँति संकल्पक ई तेसरो अंक स्मरणीय बनत। अपन सम्पादकीयमे एहि गर्वोक्तिकेँ निम्न रूपेँ सम्पादक व्यक्त कयलनि अछि– **...कतोक संस्था अपन पर्व समारोहक अवसरपर स्मारिका प्रकाशनक आयोजन कऽ अपन रचनात्मक प्रवृत्तिक परिचय देबाक चेष्टा कयलक अछि । परन्तु स्मारिकाक संग एकटा पैघ दोष लागल रहैछ जे ओ स्थायित्व नहि प्राप्त कऽ पबैत अछि । ओ वृहत् मैथिली क्षेत्रमे प्रचारित-प्रसारित नहि भऽ अपन स्थानीय परिधिमे वितरित भऽ कऽ समाप्त भऽ जाइछ । कखनो काल दूरवर्त्ती ओहनो लेखककेँ स्मारिका नहि भेटि पबैत छनि जनिक रचना ओहिमे मुद्रित भेल रहैत छनि । एहन स्थितिमे नीक प्रतिष्ठित रचनाकार कोनो स्मारिकामे अपन रचना देबामे असौकर्यक अनुभव करैत छथि जे सर्वथा स्वाभाविक । एहन स्थितिमे स्मारिकाक आयोजनक बेगरतेँ जेहन-तेहन रचना संकलित कऽ स्मारिकाक पन्ना पुरा लैत छथि और स्मारिका स्वत: विस्मारिका बनि कऽ रहि जाइछ ।'**

संकल्प विस्मारिका नहि बनय, एहिमे जेहन-तेहन रचना छापि मात्र पन्ना नहि पुरा लेल जाय, वृहत् क्षेत्रमे एकर प्रचार-प्रसार होअय एहि सब तथ्यकेँ ध्यानमे रखैत एकर सम्पादक पत्रक स्तरकेँ यथासम्भव बना कऽ रखबाक चेष्टा करैत रहलाह से भने एकर प्रकाशन अनियमित ओ दीर्घकालक बादे किएक ने हो । संकल्पक चारिम अंक 1986मे प्रकाशित भेल । 'तन्मेमन: शिवसंकल्पमस्तु' शीर्षकसँ लिखित सम्पादकीयमे सम्पादक विस्तारसँ मैथिलीक समस्या, मैथिलीविकासक प्रति असहिष्णु पदाधिकारी लोकनिक षड्यन्त्र आदिक दिस मैथिलीक संस्था ओ मैथिलीक शुभेच्छु लोकनक ध्यान आकृष्ट करबैत छथि । सम्पादक डा. रामदेवझाकेँ मैथिलीक विरुद्ध चलि रहल दुरभिसन्धिक आभास 1986मे भऽ गेल छनि तकर संकेत दैत सम्पादकीयमे कहल गेल अछि– **सुनैत छी, बिहार लोकसेवा आयोगहुमे चुपे-चाप मैथिलीकेँ अपदस्थ करबाक कुचक्र चलि रहल अछि । सम्भव जे ई कुचक्र सफलो भऽ जाय मुदा मैथिली संस्था सब सूतल अछि ।'**

1986मे सम्पादक द्वारा कयल गेल उपर्युक्त सन्देह अकारण वा आधारहीन नहि छल । 1992मे बिहारक सत्तामे आयल लालूप्रसादक सरकार एक झटकामे मैथिलीकेँ बिहार लोकसेवा आयोगक परीक्षासँ बहिष्कृत कऽ देलक । निश्चित रूपसँ संकल्पक एहि चारिम अंकक सम्पादकीयमे जाहि प्रकारेँ मैथिलीक यावन्तो समस्याक उल्लेख भेल अछि से एकरा ऐतिहासिक बनबैत अछि । संगहि इहो ध्यान रखबाक थीक जे ओ सब समस्या एखनहुँ मैथिलीक समक्ष विद्यमाने छैक तेँ ओ सम्पादकीय वर्त्तमानहु परिप्रेक्ष्यमे, जखन कि मैथिलीकेँ संवैधानिक मान्यता सेहो प्राप्त भऽ चुकल अछि, ओतबे प्रासंगिक अछि । मैथिली एखनहुँ जड़िसँ कटल हवामे त्रिशंकु जकाँ लटकल अछि ।

Scanned by CamScanner

आब पुनः प्रश्न उठेत अछि जे संकल्पक सम्पादक एक दिस एहि पत्रकेँ शोध-पत्र बनयबाक दिशामे प्रयत्नशील देखल जाइत छथि तँ दोसर दिस उपर्युक्त सम्पादकीयमे मैथिली संस्था सबकेँ हुथैत आन्दोलनक भाषा बजैत देखल जाइत छथि । एहि दू प्रकारक प्रवृत्तिक बीच तालमेल कोना होअय ? एकर उत्तर तँ यैह देल जा सकैत अछि जे सम्पादकक लेल मैथिली भाषा ओ ओकर हित पहिल प्राथमिकता छनि । जखन मैथिली जीवैत रहत, ओ अधिकार सम्पन्न होयत तखनहि एहि भाषामे प्रकाशित कोनहुँ वस्तुक प्रासंगिकता रहि जा सकैत अछि । जँ भाषे नहि तँ ओहिमे प्रकाशित शोध-पत्रक की औचित्य ? पुनः संकल्प लोकक उद्देश्यो तँ मैथिलीक लेल संघर्ष करबे छल । तेहनामे संस्थाक मुखपत्र जँ मैथिलीक गप्प नहि करय तँ सैह अनर्गल होइत । एहनामे मैथिलीक अधिकार दिस लोकक ध्यान कर्षण करबैत सम्पादक मैथिलीकेँ मात्र रचनात्मकेँ साहित्य-लेखनक भाषा नहि अपितु शास्त्रीय लेखनक भाषाक रूपमे ओकर परिचिति स्थापित करबाक बीच सुन्दर समन्वय करैत देखल जाइत छथि ।

संकल्पक एहि चारिम अंकमे सुरेन्द्रझा सुनमक 'वसन्तक आवाहन', डा. सुभद्रझाक 'नातिक पत्रक उत्तर', डा. जयमन्तमिश्रक 'जगज्जननी जानकीक परमोदात्त चरित्र', प्रो. उमानाथझाक 'ताहि दिनक लोकमनोरंजन', चन्द्रनाथमिश्र अमरक 'संकल्पलोकक परिसर ओ विद्यापति गोष्ठी', डा. शैलेन्द्रमोहनझाक 'विद्यापति, ब्रजबुलि ओ रवीन्द्रनाथ', डा. जयकान्तमिश्रक 'मैथिली कोना जीवि सकैत अछि', प्रो. प्रफुल्लकुमारसिंह मौनक 'पलबैयाक गनीनाथ', डा. मनोरंजनझाक 'मैथिली लोकगाथाक अमूल्य निधि : ज्योतिगाथा', डा. दुर्गानाथझा श्रीशक 'ब्रह्मदासक रुक्मिणी स्वंयवर', डा. रत्नेश्वरझाक 'भूपतीन्द्रमल्लक प्रभावतीहरण' सदृश अनेक समकालीन प्रतिष्ठित विद्वान लोकनिक आलेख प्रकाशित अछि । ई विविध विषयक आलेख सब निश्चित रूपसँ एहू अंककेँ संग्रहणीय बना देलक अछि ।

संकल्पक पाँचम अंक पुनः एक साल फोंक गेलाक बाद 1988मे प्रकाशित भेल । एहू अंकक सम्पादकीयमे सम्पादकक वैह चिन्ता आ वैह तेवर छनि– मैथिलीक अधिकार । मैथिलीकेँ संविधानक आठम अनुसूचीमे स्थान पयबाक कोन मार्ग भऽ सकैत अछि तकर निर्देश करैत सम्पादक बिहारक तत्कालीन मुख्यमंत्री भागवतझा आजादक ओहि निर्णयक संवर्द्धना कयलनि अछि जे आजादक मन्त्रिपरिषद सर्वसम्मतिसँ मैथिलीकेँ संविधानक आठम अनुसूचीमे सम्मिलित करबाक हेतु केन्द्र सरकारसँ अनुरोध करबाक संकल्प व्यक्त कयने छल । मुदा सम्पादक एहू दिस सबकेँ साकांक्ष करैत छथि जे सरकारक उपर्युक्त घोषणा मात्र राजनीतिक स्टंट भऽ कऽ नहि रहि जाय ।

निश्चित रूपसँ संकल्प सम्पादकक द्वारा देखाओल गेल उपर्युक्त मार्ग मैथिलीक संविधान प्रवेशमे कारगर साधन बनल आ 2003 इ.मे एहि भाषाक चिर प्रतीक्षित मांगक पूर्त्ति भऽ सकलैक । संकल्पक एहि पाँचम ओ अन्तिम अंककेँ ऐतिहासिक बनयबाक कोनोटा प्रयास शेष नहि राखल गेल अछि । मैथिलीक पुरान पत्र-पत्रिकाक फाइलमेसँ ताकि-ताकि कऽ अनेक विस्मृत रचनाकेँ एहि अंकमे प्रकाशित कऽ ओकरा मैथिलीक अनुसन्धाता लोकनिक हेतु सुलभ बना देल गेल अछि । आनन्दझा न्यायाचार्य ओ काशीकान्तमिश्रक दुर्लभ कविता, 24 दिसम्बर 1937क मिथिला मिहिरमे प्रकाशित बाबू भोलालालदासक एकटा शास्त्रीय चिन्तनपरक निबन्ध 'महाकवि विद्यापतिक मूर्त्ति कोन प्रकारक हो ?' सहित समकालीन अधिकांश विशिष्ट साहित्यकार लोकनिक रचनाक प्रकाशन सम्पादकीय टिप्पणीक संग भेल अछि ।

पाँचम अंकक बाद 'संकल्प' छठम अंकक मुँह नहि देखि सकल पश्चात राजनीतिक कुचक्र ओ संस्थाक कतिपय पदाधिकारीगणक प्रबल आत्म महत्त्वाकांक्षाक कारणे संकल्पलोक स्वयं शिथिल पड़ि गेल । तथापि ई संस्था जँ इतिहासमे जीवन्त अछि तँ अपन मुखपत्र 'संकल्प'क एही पाँच गोट अंककेँ लऽ कऽ । संकल्पक ई पाँच गोट अंक जँ स्मरणीय ओ संग्रहणीय बनि सकल अछि तँ तकर समस्त श्रेय एकर सम्पादक डा. रामदेवझाक भाषिक चिन्तन, अनुसन्धानी प्रवृत्ति ओ व्यापक सम्पादन दृष्टिकेँ छनि । यद्यपि अपन इच्छाक अनुरूप डा. रामदेवझा संकल्पकेँ सम्पूर्ण शोध-पत्र नहि बना सकलाह तथापि जतबहि बना सकलाह तकरा कम नहि कहल जयबाक चाही । अपना समयमे अपन अनियमित प्रकाशनक उपरान्तो ई मैथिलीमे शास्त्रीय लेखनक एकटा मंच जकाँ अपन भूमिकाक निर्वहण करैत एकटा बड़ पैघ अभावक पूर्त्ति करैत रहल ।

●

Scanned by CamScanner

अनुवादक सफलताक दृष्टिएँ 'सगाइ'

श्रीताराकान्तझा

प्रकृतिक विविध उपादान, बहुरंगी संस्कृति एवं अजस्र भाषा-भाषी मानव समूहसँ सम्पन्न ई विश्व स्रष्टाक अनुपम सृजन अछि। सभ्यताक विकास होयबाक संग-संग पृथ्वीक सुदूर आ भिन्न-भिन्न भूभागक निवासी एक-दोसर लग अबैत गेल। यातायात साधनक सुविधासँ अनेक अनजान स्थानसँ लोकक परिचय भेल आ अनजान लोक, ओकर प्रकृति, ओकर संस्कृतिसँ परिचित होयबाकलेल उत्सुक भेल। जखन कोनो नव संस्कृतिसँ लोक परिचित होइत छल आ एखनहुँ होइत अछि तँ मोन अज्ञात आनन्दसँ उत्फुल्ल भऽ उठैछ। मानव मन जिज्ञासु होइत अछि। ओकरामे नव ज्ञान अर्जित करबाक अद्भुत जिजीविषा आ क्षमता होइत छैक। मुदा संवाद कायम करबाक ज्ञात माध्यमक अभावमे उत्कट अभिलाषा रहितो निराशा हाथ लगैत छैक। एहनेमे अनुवाद कला लोकक संग ठाढ़ भऽ स्रष्टाक वैचित्र्यमय सृष्टिसँ लोकमानसकेँ परिचित करयबाक प्रशंसनीय कार्य करैत अछि। दू भाषा आ संस्कृतिक परिक्षेत्रकेँ विस्तृत करबामे अनुवाद महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह करैत अछि।

संस्कृत आ प्राकृत ग्रन्थ सभक अनुवादक परम्परा प्राचीने कालसँ प्रचलित रहल अछि। वैदिक साहित्यक विश्वक लगभग प्रत्येक प्रमुख भाषामे अनुवाद भऽ चुकल अछि। आ तँ ई विश्व, वैदिक युगक विशिष्ट संस्कृतिसँ परिचित भऽ सकल अछि। पाश्चात्य देशीय लोक तँ भारतीय वैदिक वाङ्मयक अध्ययन कऽ आश्चर्यचकित भऽ जाइत छथि आ भारतीय बहुरंगी संस्कृतिमे ओकर झलक तकबालेल एतऽ अबैत रहैत छथि।

जेना कि सर्वविदित अछि, सामान्यत: अनुवाद कार्यमे स्रोतभाषाक सन्देशक पहिने अर्थ आ फेर शैलीक स्तर पर लक्ष्यभाषामे निकटतम, सहज आ तुल्यर्थक भाव प्रस्तुत कयल जाइत अछि। स्रोत सामग्रीक अर्थ एक आ लक्ष्य सामग्रीक अर्थ दोसर भेलासँ पाठक भ्रमित भऽ जाइत छथि। पाठकक मर्मकेँ छूबाक आ नहि छूबाक प्रश्न ओहिमे नहि उठैत अछि। मुदा जखन कोनो सृजनात्मक साहित्यिक रचनाकेँ अन्य भाषामे अनूदित करबाक प्रसंग अबैत अछि, तँ ई प्रश्न उठैत अछि। किएक तँ साहित्यक क्षेत्रमे एक भावकेँ अनेक तरहेँ व्यक्त कयल जा सकैत अछि। अनुवादक अपन मोनमे सोचैत छथि जे कोन शब्द वा पदबन्धक प्रयोग अनुवादमे संगत रहत। ओ एहि विषयमे सतर्क रहैत छथि जे मूलक भाव अनुवादमे सुरक्षित रहय। सृजनात्मक प्रतिभा अथवा कल्पना-समृद्ध अनुवादक पहिने मूल रचनाक सामग्रीकेँ हृदयंगम करैत छथि, फेर ओही बात सभकेँ मोनेमोन कल्पनासँ पुनर्सृजन कऽ लक्ष्यभाषामे प्रस्तुत करैत छथि। सृजन प्रक्रियासँ निकलल रचनाक अनुवाद वास्तवमे चुनौतीपूर्ण काज थिक। साहित्यिक सामग्रीक प्रति पाठक वा स्रोताक दृष्टि यान्त्रिक मात्र नहि होइछ, पाठकक संवेदना आ रागात्मक सम्बन्धो ओहिमे अनिवार्यत: रहिते अछि। साहित्यिक कृतिक अनुवादमे मूलक सौन्दर्यबोध राखब आवश्यक होइछ।

बात 1962-63क अछि। ओहि समयमे मधुबनीमे कॉलेजक छात्र रही। मिथिला मिहिर प्राय: सभक नजरिसँ गुजरय। छात्र समूहमे रामदेवझाक नाम अनेक कारणसँ चर्चाक विषय बनल रहय। ओही समयमे **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** मिथिला मिहिरमे धारावाहिक प्रकाशित होइत छल। नवतुरिया सभक बीच ओ खूब लोकप्रिय रहय। वर्णन शैली, ठेंठ भाषाक प्रयोग आ रामजोड़ी संगे अपनाकेँ personify कऽ लेबाक अद्भुत कला आ रचनाकारक कौशल देखि रोमांचित भऽ उठैत छलहुँ। ओहिसँ पहिने **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** आ **बहिनाक विरोग** मे बालपनक संगीसँ बिछुड़बाक क्लेश आ ग्राम्य बालाक भावनाक आदान-प्रदानक रीति सेहो पाठक वर्गकेँ विमोहित-आह्लादित कऽ चुकल छल। रचनाकार रामदेवझाक प्रतिभाक एकटा छाप युवा मानसपर पड़ि चुकल छल।

Scanned by CamScanner

शान्तिनिकेतनमे पं.हजारीप्रसादद्विवेदी प्राध्यापक रहथि । गुरुदेव रवीन्द्रनाथठाकुर विद्वान सभकेँ मात्र जुटा कऽ रखिते नहि छलाह सभक संगे आत्मीय सम्बन्ध सेहो बना कऽ रखैत छलाह । प्रात:कालीन भ्रमणकालमे गुरुदेव प्राय: पंडितजीकेँ संग लऽ लैत छलाह । एकदिन भिनसरमे टहलैत काल द्विवेदीजीकेँ लगलनि जे गुरुदेव किछु बेसी चिन्तनशील भऽ उठलाह अछि । ओ कारण पुछलथिन– पंडितजी ! आइ एकोटा कौआ नहिं देखि रहल छी । कारण नहि बुझि पाबि रहल छी ।' कौआ नहि देखब, ई कोनो तेहन बात नहि भेल । मुदा जखन गुरुदेव नहि देखि रहल छथि तँ प्रकृतिक बदलैत चरित्र, पर्यावरण आदिसँ संश्लिष्ट कतेको सवाल उठि ठाढ़ भऽ जाइत अछि । कहबाक तात्पर्य जे मनीषीक चिन्तन–परिधिसँ साधारणसँ साधारण घटना, जीवनक हर्ष–विषाद, राग–विराग, संघर्ष, सामाजिक–सांस्कृतिक घटनाक सूक्ष्मसँ सूक्ष्म तथ्यो फराक नहि रहि सकैछ । आ एही तरहेँ मनीषी–चिन्तक डा.रामदेवझाक नजरिसँ खीराक तीन फाँक ओटमे नहि रहि सकल । अदौसँ लोक व्यवहारमे खीरा अछि, मुदा ओकर तीनटा फाँकक बिम्ब लऽ डा.झा जे एकटा विस्तृत सामाजिक कथा–उपन्यासक संसार रचलनि, ई हुनक विदग्धता, सूक्ष्म दृष्टि आ सामाजिक संश्लिष्टताक अपूर्व निदर्शन अछि ।

आलोच्य पोथी **इक चादर मैली सी** सुप्रसिद्ध उपन्यासकार राजेन्दरसिंह बेदीक उर्दूमे एक उत्कृष्ट सामाजिक उपन्यास अछि, जाहिमे एकटा एक्कावलाक जीवन–संघर्ष, ओकर सामाजिक परिवेश आ परिवार–समाजमे नारीक भिन्न–भिन्न भूमिकाक मार्मिक विवरण प्रस्तुत कयल गेल अछि । राजेन्दरसिंह बेदी पंजाबक निवासी छलह । ओ पंजाबक रीति–पद्धति, रहन–सहन, समाज व्यवस्थाक वर्णन कयने छथि, जे स्वाभाविक अछि, परन्तु, ओहिमे समग्र भारते नहि विश्व स्तरपर नारीक व्यथा–कथाक संसार बुना गेल अछि । समाजक एकदम पछुआयल–शोषित वर्गकेँ विषय–वस्तु बना कऽ लिखल गेल नितान्त सामाजिक उपन्यासक अनुवाद सेहो सामाजिक सरोकारसँ जुड़ल मनीषीए द्वारा होयब उचित छल आ सैह भेल । **सगाइमे** भाषाक प्रवाह आ भावक यथासम्भव निर्वाह मूल उपन्यासक स्वाद दैत अछि ।

उपन्यास आ कोनो ग्रन्थमे ओकर नाम सबसँ महत्त्वपूर्ण होइत अछि । किए तँ पहिने ओहीपर नजरि पड़ैत छैक आ ओकरे आकर्षणसँ आकर्षित भऽ पाठक किताबक पन्ना फोलऽ लगैत छथि । पहिने **इक चादर मैली सी** क अनुवाद **सगाइ** देखि सामान्य रूपेँ आश्चर्यचकित होयब स्वाभाविक छल । भारतक अन्य संस्कृतिमे विवाहसँ किछु दिन पहिने सगाइक विधि होइत छैक माने बियाह पक्का । मुदा मिथिलामे ई प्रथा प्रचलित नहि अछि । एम्हर अन्य संस्कृतिक घुसपैठ भेलासँ 'देख–सुन' सुरू भेलैक अछि मुदा ओ सगाइवला संस्कारसँ कतहुँ मेल नहि खाइत अछि । तखन **सगाइ** नाम किएक ? एहि सन्दर्भमे अपन मिथिला समाज आ मिथिलाक विभिन्न वर्गक संस्कृतिपर नजरि दौड़यलापर सगाइ शब्दे नहि सगाइ प्रथा सेहो अनायासे सामने आबि गेल । आलोच्य उपन्यास जाहि वर्गकेँ केन्द्रित कऽ लिखल गेल अछि मिथिलामे ओहि समाजमे विधवा विवाह आ बहुविवाह प्रचलित अछि– जकरा सगाइ कहल जाइत छैक । पंजाबमे वैवाहिक विधि 'चादर डाल देना'सँ पूर्ण होइत छैक । एहि तरहेँ अनुवादक स्रोतभाषाक भावकेँ लक्ष्यभाषामे सम्पूर्ण रूपसँ अनबामे सक्षम भेलाह अछि, से प्रारम्भेमे सिद्ध भऽ गेल अछि ।

उपन्यासमे कतेको स्थान एहन अछि जे मर्मकेँ छूबि लैत अछि, मोनकेँ विचलित कऽ दैत अछि । जकर किछु दृष्टान्त दर्शनीय अछि– **चन्नो गहिंकी नजरिसँ रानोक मुँह दिस देखलक आ बाजलि फूसि बजै छेँ–नहि तँ, तोरा मुँहपर ई नछोड़क चेन्ह किए छौ?' सर्द पसेनाक बुन्न रानोक मुखमंडलपर चुहचुहा गेलै, आ ओ किछु नहि बाजलि । किछु काल एहिना अनेरे लजाइलि सनि ठाढ़ रहलाक बाद, जेना ओ अकस्मात् गोँहछि उठलि, तोँ जे कहै छेँ चन्नो, हमरा ओकर खगता नहि अछि । हम तँ देह झँपबाकलेल दू खंड वस्त्र मडै छलिऐ बहीन, पेटमे देबाकलेल दू टा रोटी । .... पता नै, भगवानक की इच्छा छनि, देवी मैया की चाहैत छथि? ..... ओ फेर चल गेलए कतौ।'**

'हे राम ! ? चन्नो पाछाँ दिस गलीक फड़िच्छ होइत अनहारकेँ देखलक आ कहऽ लागलि, कोमहर गेल सरधुआ धड़फड़िया'' आ फेर एकदमसँ कोनो चुकिकेर अनुभव करैत बाजलि, 'हम मुँहझौसी....तोरा सोझाँ तँ आब हमरा एना नै ने कहना चाही ।' (सगाइ, पृ. 59) ।

(चन्नो ने गौर से रानी के चेहरे की तरफ देखा, और बोली, झूठ बकती है–नहीं तो तेरे मुँह पर ये नाखूनों के निशान

Scanned by CamScanner

कैसे हैं ? ठंडे पसीने की बूँद रानो के चेहरे पर उभर पड़ा और वह कुछ न बोली । कुछ देर यों ही बेकार, शर्मसार सी खड़ी रहने के बाद, जैसे वह अचानक उबल पड़ी, ''तू जो कहती है, चन्नो मुझे उसकी जरूरत नहीं । मैं तो तन ढाँपने के लिए दो कपड़े माँगती थी भैणा, पेट में डालने के लिए दो रोटियाँ ।..... पता नहीं भगवान की क्या इच्छा है देवी माँ क्या चाहती हैं ? वह अब फिर चला गया है कहीं ।

''हाय राम' ! चन्नो ने पीछे गली के साफ होते हुए अँधेरे को देखा और कहने लगी, ''किधर गया मुआ तत्त-पलत्ता ?' और फिर एकदम किसी भूल का अनुभव करते हुए बोली, 'मैं मुँहजली-तेरे सामने तो अब मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए ।'' (इक चादर मैली सी, पृ.-73)

मुदा आइ-ओहि अनभिज्ञ मंगलकें रानो कतोक अभिज्ञान दियऽ चाहैत छलि । ओ ओहि मरोतकें उठा दियऽ चाहैत छलि जे मंगल आ ओकरा बीचमे बाधा बनल छल ।

हे वधू! घोघसँ मुक्त करू मुखमंडलकें,
ओ अन्ध बना दै छै सद्यः दर्शकगणकें,
वारिसशाह कहथि मोती नहि दाबल जाइछ,
कुसुम आगिमे नहि कथमपि डाहल जाइछ ।

आइ रानो ओहि परदा आ लाज-संकोचकें हटा देबाक निश्चय कऽ लेने छलि । जकरा एकात कयने बिना भगवानो नहि भेटैत छथिन । (सगाइ, पृ.-77) ।

(लेकिन आज-उस बेखबर मंगल को रानो कई खबरें देना चाहती थी । वह उस घूँघट को उठा देना चाहती थी जो मंगल और उसके बीच बाधा बना हुआ था ।

घुण्ड अन्हियाँ करे सुजाखियाँ नूँ,
घुण्ड लाह मुँह उत्तो लाड़िए नी
वारिसशाह न दब्बिए मोतियाँ नूँ ।
फुल्ल अग्ग दे विच्च साड़िए नी ।

आज रानो ने उस पर्दे और शर्म को दूर कर देने की ठान रखी थी, जिसे एक तरफ हटाये बिना भगवान भी नहीं मिलते । (इक चादर मैली सी, पृ.-92-93)

लिधुरक पमारा रानोक माथसँ, चलऽ लगलैक आ ओकर टाङ ओकरा सम्हारबाक योग्य नहि रहलैक । ओ धरतीपर खसि पड़लि छलि- आँखि मुनायल आ मुँह खूजल... रानोक मौन विद्रोहक अछैतो स्वर भीतर जिन्दाँ धरि पहुँचि गेलैक आ ओ पुछलकैक- की छै कनिया ?'

एकटा विचित्र प्रकारक आनन्दसँ बेसुध होइत रानो उत्तर देलकैक-किछु नै माय! बिलाड़ि छै ।' (सगाइ, पृ-83)

(खून का एक फव्वारा रानो के सिर से फूटा और उसकी टाँगें उसे सम्हालने के योग्य न रहीं । वह जमीनपर पड़ी थी-आँखे बन्द और मुँह खुला हुआ..... रानो के मौन विद्रोह के बाबजूद आवाज अन्दर जिन्दाँ तक पहुँच गयी और उसने कहा- '' क्या है बहू ?''

एक अजीब प्रकार के आनन्द से बेहोश होते हुए रानो ने जवाब दिया, '' कुछ नहीं माई! बिल्ली है ।'' (इक चादर मैली सी, पृ.-99)

ताबहि बसय सहेली, जाबहि संग-संग मीत

सहेली ओही समय धरि बसत जावत संगी ओकरा संग रहतैक । ओही समय धरि काज करतैक, जाबत प्राण ओकर संग देतैक........(सगाइ, पृ.-27)

Scanned by CamScanner

चिच्चर बसे सहेलड़ी
जिच्चर साथी नाल

(सहेली उसी समय तक बसेगी, जब तक साथी उसके साथ रहेगा। शरीर उस समय तक काम करेगा, जब तक प्राण उसका साथ देगा.... (इक चादर मैली सी, पृ.-35)।

और ओढ़नीकेँ दू उठल हाथमे टेकने, रानो पाँजर दिस मुड़लि.... नारीक तेहरा रूप मंगलक आगाँ छलै, जकरा गहूमक रोटी खयनिहार कोनो मर्द अस्वीकार नहि कऽ सकल.... और बीचमे झल-झल सन आवरण..... फेर ओहि रूपपर एकटा अड़ैठी-मोड़ टूटल। वर्षक बाबन सप्ताह, सप्ताहक सात दिन, दिनक आठ पहर, घण्टा आ पलमे एक एहन क्षण अबैछ जखन चान हपसि कऽ सूर्यकेँ माथसँ पैर धरि गरसि लैछ। (सगाइ, पृ.-86)।

(और दुपट्टे को दो उठे हुए हाथों में थामे, रानो पहलू की तरफ मुड़ी... नारी का तिहरा रूप मंगल के सामने था, जिससे गेहूँ की रोटी खानेवाला कोई भी मर्द इनकार नहीं कर सका... और बीच में झीना सा आवरण... फिर उस रूप पर एक अंगड़ाई टूटी। वर्ष के बावन सप्ताह, सप्ताह के सात दिन, दिन के आठ पहरों, घण्टों और पलों में एक ऐसा क्षण आता है, जब चाँद लपककर सूर्य को सिर से पाँव तक ग्रस लेता है। (इक चादर मैली सी, पृ.-102)

एकर अनुवाद देखलासँ स्पष्ट भऽ जाइछ जे सरल, सोझ भाषामे समग्र भावकेँ कतेक कुशलतासँ राखल गेल अछि। संगहि अनुवादकक अनुवादकार्य प्रति अपूर्व निष्ठा एवं हुनक अजस्र शब्दज्ञानक परिचय सेहो भेटैत अछि।

उपन्यासमे रानीक ऊपर दूबेर 'चादर' देल गेलैक अछि। आ पुत्रीपर 'चादर' देबाक संयोगकलेल उपन्यासक कथानकमे एकटा एहन अभिनव प्रयोग कयल गेल अछि जे विधिक विधानक आगाँ मनुष्यक असहायता आ विवशताक मार्मिक चित्र प्रस्तुत करैत अछि। रानोक पुत्रीक विवाहक विधान ओकरेसँ बनैत छैक जे ओकर प्रथम पतिक खूनी अछि।

तखने रानीकेँ धैर्य धरबैत हुजूरसिंह बाजल-बेटा ई सब की भऽ रहल छह ?.... किए भऽ रहल छह...? ई तँ नहि जनैत छह ने हम जनैत छी, ने ई लोकनि जनैत छथि .... तोँ एकरा बुझबाक जतनो नहि करह... एक चुप एतऽ तँ दम धरबाक स्थान नहि ....''

रानी घूमि कऽ देखलक। बड़कीक ठोरपुर फुफड़ी पड़ि रहल छलैक, जेना ओ कहि रहलि छलि– माय ! ई तोँ की कऽ रहल छेँ ? तोँ 'न' कहलही तँ हम कुमारि धरती जकाँ बाँझ रहि जायब।'... रानी ससुरक कान्हपरसँ माथ उठौलक आ बाजलि-अच्छा बाबू ! 'अच्छा।'' (सगाइ, पृ.-103)

(तभी रानी को दिलासा देते हुए हुजूर सिंह बोला-बेटा यह सब क्या हो रहा है ... क्यों हो रहा है ...... इसे तू नहीं जानती, न मैं जानता हूँ, न ये लोग जानते हैं .... तू इसे समझने की कोशिश भी मत करना....... एक चुप, यहाँ तो दम मारने की जगह नहीं ....''

रानी ने मुड़कर देखा। बड़ी के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। माँ से वह कह रही थी.... 'माँ ! यह तू क्या कर रही है? तू 'न' बोली तो मैं बिन ब्याही धरती की तरह बाँझ रह जाऊँगी।' ...... रानी ने ससुर के कंधे पर से सिर उठाया और बोली- अच्छा बापू ! अच्छा !'' (इक चादर मैली सी, पृ.-123)।

प्रारब्ध, विधिक विधानक समझ मानवक विवशता, आँखिक आगाँ जुआन बेटी आ मायक प्रति युवा मानसक सम्पूर्ण समर्पण भावना एके संगे कतेको रास भाव-समुच्चयकेँ बेदीजी एहि तरहेँ उपस्थित कऽ देने छथि, जे हृततन्त्रीकेँ झंकृत कऽ दैत अछि। आ एहि भाव सभकेँ अनुवादमे सहेजब सामान्य हाथ द्वारा सम्भव नहि छल। डा. रामदेवझा अनुवादक संगे पूर्ण न्याय कयलनि अछि। ई कहैत हमरा अतिशयोक्ति नहि लगैत अछि जे 'मानिक पड़ल सुवानिक हाथ' आ मैथिली वाङ्मयकेँ भेटलैक एकटा अमूल्य ग्रन्थ जे अनूदित रहितो मौलिक ग्रन्थक आभास दैत अछि।

●

Scanned by CamScanner

दोसर पटल

Scanned by CamScanner

विद्यापतिक प्रसंग किछु विचारणीय प्रश्न

श्रीगोविन्दझा

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः ।
अश्रद्धामनृते दद्याच्छ्रद्धां सत्ये प्रजापतिः ॥ (ऋग्वेद 19. 11)

[प्रजापति स्वरूप देखि सत्य आ असत्यक विवेचन कयल ।
असत्यपर अश्रद्धा आ सत्यपर श्रद्धा राखल ॥]

की विद्यापति संगीताचार्य छलाह ?

एम्हर किछु दिनसँ ई धारण पसरल जा रहल अछि जे विद्यापति कविए नहि, संगीताचार्य सेहो छलाह । विचारणीय अछि जे एकर प्रमाण की ? एकर सभसँ प्राचीन प्रमाण मानल जाइत अछि लोचनकृत **रागतरंगिणीक** निम्नलिखित श्लोक–

सुमतिसुतोदयजन्मा जयतः शिवसिंहदेवेन ।
पण्डितवरकविशेखरविद्यापतये तु संन्यस्तः ॥
एतैः संगीतविद्भिः स्वरनिकरसरित्कान्तमन्तर्विगाह्य
प्रोन्मीलत्सुस्वरौघप्रविततगतिकाः कल्पिताः केऽपि रागाः ।
तद्गानार्थन्तु विद्यापतिकविकृतिना कल्पितास्तु ध्रुवा याः
तासामेकाग्रगाताऽभवदिह जयतः संसदि श्रीनृपस्य ॥

एहि उद्धरणक सारार्थ एक विद्वान् लिखैत छथि-''ओ (विद्यापति) महाराज शिवसिंहक भ्राताक आज्ञासँ सुमति नामक गायकक बालक जयतकेँ संगीत सिखाओल तथा स्वयं अनेको रागक कल्पना कयल ।''

भ्रान्ति एतहिसँ आरम्भ भेल । एहि उद्धरणक अर्थ बुझबामे उक्त विद्वान तीन भ्रम कयल । पहिल भ्रम ई जे मूलमे अछि शिवसिंहदेवेन; हुनक भ्राताक कतहु चर्चा नहि अछि । दोसर भ्रम जयतकेँ सुमतिक बालक कहब । मूलमे अछि सुमतिक सुत उदय आ तनिक बालक जयत । अर्थात् जयत सुमतिक पुत्र नहि, पौत्र । तेसर आ सभसँ महत्त्ववला भ्रम थिक ई कथन जे जयतकेँ संगीत विद्यापति सिखाओल । मूलमे सिखयबाक चर्चा कतहु नहि अछि । **विद्यापतये संन्यस्तः** एकर अर्थ एतबे होइछ जे ओ विद्यापतिक जिम्मा लगाओल गेलाह वा ई कहू जे विद्यापतिक ओतऽ पठाओल गेलाह । कथी लेल पठाओल गेलाह से मूलमे आगाँ कहल गेल अछि । ई संगीतज्ञ लोकनि, अर्थात् सुमति, उदय आ जयत, स्वरक समुद्रमे डुबकी लगाय कतोक रागक कल्पना कयलनि । एहि राग सभकेँ गयबाक हेतु हिनकालोकनिकेँ उपयुक्त गीतक प्रयोजन छलनि । ओहि राग सभकेँ गयबाक हेतु कृती कवि जे गीतसभ रचलनि ताहि गीतसभक राजा शिवसिंहक सभामे प्रमुख गायक भेलाह उक्त जयत ।

उपर्युक्त सन्दर्भक ई अर्थ हमहींटा नहि लगाओल अछि । हमरासँ बहुत पहिनहि डा.शशिनाथझा रागतरंगिणीक एहि प्रसंगकेँ खूब स्पष्ट कऽ चुकल छथि-- ''सुमतिक बालक उदय आ तनिक बालक जयत भेलाह । जयतकेँ राजा शिवसिंह विद्यापतिक सम्पर्कमे दऽ देल । विद्यापति गीत रचथि आ तकरा लयबद्ध कऽ जयत राजसभामे गाबथि । ई

Scanned by CamScanner

लोकनि अपन संगीतक गोष्ठीमे अनेक मिथिलादेशीय रागक नवीन उद्‌भावना कयलनि । जयतक बालक महागायक कृष्ण आ तनिक बालक हरिहर मल्लिक भेलाह । तनिका तीन बालक भेलथिन- खड्गराम, घनश्याम आ बल्लीराम । एहिमे केवल घनश्याम गायक भेलाह । तनिका तीन बालक भेलथिन- लच्छिराम, राघवराम आ टीकाराम । ई तीनू कविवर लोचनक प्रायः समकालीन छलाह । एही संगीत-परम्पराक अनुसार रागतरंगिणी बनल ।''

एहि प्रकारेँ हमरालोकनि जे अर्थ बूझल अछि से यदि ठीक तँ उक्त उद्धरणसँ ई कदापि सिद्ध नहि होइत अछि जे विद्यापति संगीताचार्य छलाह । एहि स्पष्ट परम्पराक अछैत जानि नहि कोना इहो मानि लेल गेल अछि जे सम्प्रति विद्यापतिक जे कोनो गीत जाहि कोनो भासमे गाओल जाइत अछि से सभ विद्यापति-संगीत थिक भनहि ओकर स्वरूप आइ ग्राम्य आ अशास्त्रीय भऽ गेल हो । परन्तु प्रश्न उठैत अछि जे यदि मिथिलाक सभ संगीतकेँ विद्यापति तनिके अवदान मानि लेल जाय तँ मिथिलाक संगीत ककरा कहब ? जँ मिथिलाक संगीत विद्यापतिहिक देल थिक तँ **मिथिला संगीत** शब्दक बेरि-बेरि उल्लेख कयनिहार लोचन एहु बेरि विद्यापतिसंगीत शब्दक उल्लेख किएक नहि कयलनि ? सतरहम शताब्दीक लोचन अपनासँ तीन-चारि शतक पूर्वसँ आरम्भ कऽ जयत घरानाक उतेढ़ सम्भवतः अपना काल धरि देखाओल किन्तु तकरा बाद ई परम्परा की भेल ताहि विषयमे किछुओ पता नहि लगैत अछि ।

एहि जयत घरानाक चर्चा आइ धरि हमरा आन ठाम कतहु नहि भेटल अछि । एहिसँ इहो आशंका होइत अछि जे लोचन ई किंवदन्ती ककरो मुहेँ सुनि लिखि लेने होयताह । एहना स्थितिमे एकर प्रामाणिकतापर सन्देह कयल जा सकैत अछि ।

विद्यापति संगीतज्ञ छलाह तकर प्रमाणमे उक्त विद्वान दुइ गीत उद्धृत कयने छथि जे विद्यापतिक रचल कहल जाइत अछि । एहि प्रसंग हुनक उक्ति देखल जाय- ''चतुरंगक रचना जे ओ कयल अछि ताहिसँ हुनक संगीत विषयक ज्ञानक पराकाष्ठा प्रमाणित होइछ । चतुरंग ओकरा कहैछ जकर चारि पदमे क्रमशः शब्द, मृदंगक बोल, सरगम एवं त.रा.ना. वा तिलाना रहैछ एवं कोनो रागमे बद्ध रहैछ । यथा-

बाजत द्रिगि द्रिगि धोद्रिम द्रिमिआ ।
नटति कलावति माति स्याम संग कर करताल प्रबन्धक धनिया ॥
डमडम डंफ डिमिकि डिमि मादल रुनुझुनु मंजिर बोल ।
किंकिनि रनरनि बलया कनकनि निधुबने रास तरल उतरोल ॥
बीन रबाब मुरज स्वरमंडल सारिगमपधनिसा बहुविधि भाव ।
धेटिता धेटिता घन मृदंग धुनि चंचल स्वरमंडल करु राब ॥
स्रमभरे गलित ललित कबरीजुत मालति माल बिथारल मोति ।
समय बसन्त रास रस वर्णन विद्यापति मति छोभित होति ॥

अथवा

चौदिके चारु सम्पदा बेढिया रंगिनी कत गायनि ।
कुत्ताता थैआ थैआ बोलनि ।
माझे बिराजे श्याम सुघड़ शिरोमणि किंकिणि किनिकिनि रोलनी ।
सागरम धोग्गा धेटिता धेटिता घेने नांग तीन्तध तीन्तधनांग ।
गरन घेना तिनिता घिरि तृधं तींगर झांग ।
वर्णित रास विद्यापति सूर, राधामोहन दास रस पूर ।

जाहि समयमे विद्यापति एहि चतुरंगक रचना कयलनि ताहि समयक भाषान्तरमे कोनो चतुरंग नहि पाओल जाइछ ।''

Scanned by CamScanner

एहि दूनू गीतक प्रसंग हमर दृढ़ धारणा अछि जे ई विद्यापतिक रचल नहि भऽ सकैत छनि । हमरे धारणा नहि, नगेन्द्रनाथ गुप्त, विमानविहारी मजुमदार आदि जे केओ विद्वान विद्यापतिक गहन अध्ययन कयने छथि से सभ उक्त दूनू गीतकेँ छाँटि देने छथि । दोसर गीत तँ आओरो अद्भुत अछि । ई गीत केवल **पदकल्पतरु**मे भेटैत अछि, आन कोनहु स्रोतमे कतहु नहि । एक तँ स्रोतहिमे पाठ अटपट अछि, उक्त विद्वानक लेखमे वा छापामे ओ आओरो बिगाड़ि देल गेल अछि । सभसँ अद्भुत अछि एकर भनिता जाहिमे एकहि संग तीन कविक नाम अछि-विद्यापति, सूरदास आ राधामोहनदास । बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्क सम्पादक ठीके लिखलनि अछि- भाषाशैली के अतिरिक्त इस पद की अन्तिम पंक्तियाँ ही प्रमाणित करती हैं कि यह पद विद्यापति का नहीं है ।'

विद्यापति-साहित्यक मर्मज्ञ विद्वानलोकनि एहि दूनू गीतकेँ किएक छँटलनि तकर विस्तारसँ विवेचन हम एहि लेखमालाक दोसर खण्डमे करब । एतऽ सूत्र रूपमे एतबे कहब जे विद्यापतिक जे करीब छओ सय गीत तीन सय सालसँ अधिक प्राचीन स्रोत सभमे भेटैत अछि ताहिमे ने कतहु श्याम शब्द आयल अछि आ ने रासक वर्णन । ततबे नहि, शब्दक चयन, वाक्यक रचना, भावक अस्पष्टता, चमत्कारक अभाव एहू सभसँ लक्षित होइत अछि जे एहन रचना विद्यापतिक कलमसँ नहि बहरा सकैत अछि ।

विद्यापति-संगीत एहि शब्दक एक आओर मूल भेटैत अछि । बंगाल जे-जे काज सय साल पहिने कयलक से काज ओकर अनुकरणमे हम सभ आइ कऽ रहल छी । बंगालमे विद्यापतिक गीत पद कहओलक तँ मिथिलहुमे बहुत गोटे पद कहऽ लगलाह । बंगालमे रवीन्द्रनाथठाकुरक नामपर रवीन्द्र-संगीत चलल तँ मिथिलामे विद्यापति-संगीत कोना नहि चलओ ? जँ रवीन्द्र एक संगीतक जन्मदाता भेलाह तँ हमर विद्यापतिकेँ किएक नहि एक संगीतक प्रवर्त्तक सिद्ध कयल जाय ? जानि नहि, हिन्दीक भक्त लोकनिकेँ ई बुद्धि किएक नहि भेलनि जे सूर-संगीत, कबीर-संगीत चलाओल जाय ? सूरदासक केस तँ कनेक कमजोर होइतनि, मुदा कबीरदासक गीतक तँ एक खास लय अछि । भऽ सकैत अछि, कबीरदास स्वयं एहि लयक प्रवर्त्तक रहल होथि । निष्कर्ष ई जे विद्यापति- संगीत, रवीन्द्र-संगीतसँ प्रेरित एक कल्पना मात्र प्रतीत होइत अछि ।

एहि प्रसंग एक बात इहो विचारणीय अछि जे विद्यापति-संगीत कहब ककरा ? की विद्यापतिक रचल जे कोनो गीत आइ जाहि कोनो भासमे गाओल जाइत अछि से सभ भास विद्यापति-संगीतक मानि लेल जाय ? जँ से तँ मिथिलाक लगभग समस्त पारम्परिक संगीत विद्यापतिक भंडारमे समा जायत । मानल जे सूर्य सभसँ पैघ, मुदा एकसरे सूर्यसँ गगनमंडल नहि बनि सकैत अछि । प्रसंगवश ईहो उल्लेखनीय जे मैथिलीक प्राचीन गीतहुक लगभग यैह हाल अछि, अर्थात् जतेक जे गीत विविध स्रोतमे बिनु भनिताक उपलब्ध अछि से सभटा विद्यापतिक रचल मानि लेल गेल अछि । ततबे नहि, आनो-आन कविक रचल बहुतो गीतमे **भनहि विद्यापति** लगा देल गेल अछि । एहि प्रसंग आगाँ सविस्तर विवेचन कयल जायत । एहना स्थितिमे ई भ्रान्त धारणा मिथिलहिमे नहि, अन्यत्रो पसरल जा रहल अछि, जे मिथिलामे आ खास कऽ मैथिलीमे एकमात्र विद्यापतिकेँ छाड़ि आओर किछु अछिये नहि । हमरालोकनि विद्यापतिकेँ उचित वा अतिरंजित बहुत श्रेय देल आ हुनक पताका सेहो खूब फहराओल । आब एहि तथ्यकेँ प्रकाशमे आनब आवश्यक प्रतीत होइत अछि जे मिथिलाक संगीतमे आओर मैथिलीक प्राचीन साहित्यमे एकमात्र विद्यापतिये नहि, हुनक समकक्ष वा हुनकासँ कनेक हीन आओरो बहुत लोक छथि । प्रस्तुत लेख एहि दिशामे एक लघु प्रयास थिक ।

अन्तमे हम फेर उपर उद्धृत वैदिक वचनक चर्चा करब जाहिसँ हमरा गुरुजनहुक मतक खण्डन करबाक प्रेरणा भेटैत रहल अछि । हम जे किछु शास्त्र पढ़ल ताहिमे डेग-डेगपर गुरुक मतक खण्डन भेटल । गुरुक पदक प्रक्षालन करब हम गुरुक सेवा बुझैत छी । गुरुतुल्य विद्वान लोकनिसँ हम एतबे प्रार्थना करब- शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् : शिष्य थिकहुँ, जे सजाय देब से शिरोधार्य ।

Scanned by CamScanner

कतेक गीत विद्यापतिक ?

बड़ विकट प्रश्न अछि। एकर विवेचन दू खण्डमे करब सुविधाजनक होयत- प्राचीन स्रोतक गीत आ अर्वाचीन स्रोतक गीत। एहि प्रसंग अधिक विकट अछि द्वितीय खण्ड, तेँ एकर विवेचन पछाति करब। पहिने सोझ काज कऽ लेल जाय।

प्राचीन स्रोतक गीत (आगाँ प्रागी) हम तकरा मानल अछि जे तीन सय वर्षसँ अधिक पुरान पोथी (हस्तलेख) सभमे भेटल अछि। एहन पोथी एखन धरि छओ गोट पाओल गेल अछि। विवरण परिशिष्ट **'क'**मे देखल जाय।

ज्ञातव्य जे एहि सभ पोथीमे किछु गीतमे विद्यापतिक नाम अछि। किछु गीतमे कविक नामक संग-संग आश्रयदाताक सेहो उल्लेख अछि। किछु गीतमे भनिता अछि, किछुमे नहि। प्रायः सभ स्रोतमे विद्यापतिक गीतक संग-संग आनो-आन अनेक कविक गीत अछि। एकर लेखा-जोखा निम्नलिखित तालिकामे देखल जाय-

स्रोत	**कुल गीत**	**भनितायुक्त**	**भनिताहीन**	**अपूर्ण भनिता**
राम.	95	63	32	0
नेपा.	262	64	16	182
तरौ.	260	226	34	0
राग.	103	44	6	6 आनक 47
भाषा.	146	39	22	22 आनक 43

बहुत गीतमे पूरा भनिता नहि दऽ संकेत मात्र दऽ देल गेल अछि जे विद्यापतिक रचना थिक, जेना भनइ विद्यापतित्यादि, इति विद्यापतेः। एहन गीतक संख्या अपूर्ण भनिताक स्तम्भमे देल अछि।

एहना स्थितिमे सहजहि प्रश्न उठैत अछि जे भनिताहीन तथा अपूर्ण भनितावला गीतक रचयिता के? नगेन्द्रनाथगुप्तसँ लऽ गोविन्दझा धरि जे-जे विद्यापतिक गीतक सम्पादन कयलनि अछि से सभ प्रायः ई मानि लेलनि अछि जे सभटा अनामक प्राचीन गीत विद्यापति रचित थिक। ई मानबाक आधार की, एहि प्रसंग सभ मौन छथि।

गीतक कर्त्तृत्व आ प्रामाणिकताक विवेचन गम्भीरताक संग विमानविहारी मजुमदार कयलनि। ओ महानुभाव एहन गीतकेँ प्रामाणिक मानल जाहिमे कवि आ आश्रयदाता दूनूक नाम हो। हुनक ई सूत्र अवश्य मूल्यवान अछि परन्तु निरपवाद नहि, कारण जे बहुत अप्रामाणिको गीतमे 'राजा शिवसिंह रूपनारायण' ई अति प्रसिद्ध भनिता जोड़ि देल गेल अछि आ बहुत रास प्रामाणिको गीतमे, विशेषतः नचारीमे केवल कविक नाम अछि। मजुमदार महाशय प्रामाणिकताक परीक्षणमे जतेक महत्त्व भनिताकेँ देलनि ततेक भाव ओ भाषाकेँ नहि। हमरा जनैत भनितामे जतेक उनट-पुनट भऽ सकैत अछि आ भेलो अछि, ततेक भाव ओ भाषामे सम्भव नहि अछि। तेँ प्रामाणिकताक विवेचनमे प्रथमतः स्रोतक प्राचीनता, द्वितीयतः भाषा, तृतीयतः भाव आ चतुर्थतः भनिता देखल जयबाक चाही।

भनितामे उनट-पुनट तँ बहुत गोटे कयने होयताह किन्तु भनिताकेँ पूरा-पूरा खा जयबाक घोर अपराध कयलनि नेपाल तालपत्रक लिपिकार आ कि प्रतिलिपिकार जे अधिकतर गीतमे भनिताक बदला भनइ विद्यापतीत्यादि लिखैत गेलाह। एहिमे 262 गीत अछि जाहिमे 178 गीतमे भनिताक जगह 'भनइ विद्यापतीत्यादि' अथवा 'इति विद्यापतेः' पाओल जाइत अछि। जाहि गीतक छन्दमे भनइ विद्यापति ई नहि बैसैत अछि ताहूमे ई लिपिकार भनइ विद्यापतीत्यादि लिखैत गेलाह अछि। सहजहि शंका उठैत अछि जे भनिताक सम्बन्धमे हिनक लेखपर कतेक विश्वास कयल जाय। तैओ

Scanned by CamScanner

मजुमदार महाशय एहन गीतकेँ प्रामाणिक मानि लेलनि अछि। ततबे नहि, जे प्रागी भनिताहीन अछि तकरहु, प्राचीन पोथीमे विद्यापतिक गीतक बीच होयबाक आधारपर विद्यापतिक रचना मानि लेल गेल अछि।

मिथिलामे चौदहम शतकसँ सतरहम शतक धरि चारि सय सालमे 45 गोट कवि एहन भेलाह जनिक रचल दुइ-चारि गीत यत्र-तत्र भेटैत अछि। नाम परिशिष्ट **क** मे देखल जाय। हम प्रौढ़तापूर्वक कहि सकैत छी जे हिनकालोकनिक गीतसभ ओही कोटिक अछि जाहि कोटिक विद्यापतिक। खेदक बात जे मैथिली साहित्यक आलोचकलोकनि हिनकासभकेँ विद्यापतिक पछुलगुआ नकलची कहि हिनका सभक प्रति घोर अन्याय कयलनि अछि। जँ विद्यापति जन्म नहि लितथि तँ की ई कविलोकनि लेखनी नहि उठबितथि? एहन सिद्धहस्त कविलोकनि अवश्ये दुइये-चारि गीत लिखि कलम राखि नहि देने होयताह। तखन प्रश्न उठैत अछि जे कतऽ गेल हिनकालोकनिक रचनासभ? हमरा तँ लगैत अछि जे उपर्युक्त स्रोत सभमे जे कैक सय गीत भनितारहित अछि ताहिमे बहुतो गीत हिनके लोकनिक होयत। ततबे नहि, जाहि गीत सभमे आइ विद्यापतिक नाम देखि रहल छी ताहूमे बहुत गीत वस्तुत: हिनकेलोकनिक रचल हो आ अति प्रसिद्धिवश भनितामे विद्यापतिक नाम जोड़ा गेल हो। भनितामे ई हेराफेरी खूब सम्भवो अछि आ तकर प्रामाणिक उदाहरणो खूब भेटैत अछि।

प्रागीमे किछु एहनो गीत अछि जाहिमे ने कोनो चमत्कारी भाव अछि, ने संरचना आ भाषासौष्ठव। एहन गीतकेँ विद्यापतिक रचना मानब कठिन लगैत अछि। उदाहरणार्थ केवल एक गीत देखल जाय-

मोर बउरा देखल केहु कतहु जात।
बसह चढ़ल बिस भाङ्ग खात॥
आँखि निड़र मुह चुअइ लार।
पथ के चलल बउरा बिसम्भार॥
बाट जाइते केहु हलब ठेलि।
अब ओहि जोगिआ बिनु मञे अकेलि॥
हाथ डँवरु कर लौआ साँख।
जोग जुगुति गिम भरल लाख॥
अरगज चढ़ाय आठहु आङ्ग।
सिर सुरसरि जटा बोर गाङ्ग॥
भनइ विद्यापति सम्भु देव।
अवसर अवस सुधि हमर लेब॥

एहि गीतमे दू वस्तु ध्यान देबाक अछि। पहिल **जात** आ **खात** तथा दोसर ई बात जे विद्यापति सुधि लेबाक प्रार्थना करैत छथि। ज्ञातव्य जे विद्यापति ने कतहु अपन दीनता प्रकट करैत छथि, ने अपना हेतु कतहु कोनो याचना करैत छथि। हमरा जनैत जाहि कोनो गीतमे एहि तरहक भाव हो तकरा विद्यापतिक रचना मानब कठिन लगैत अछि।

ऊपर जे किछु कहल ताहिसँ मूल प्रश्न सोझरयबाक कोन कथा आओर ओझराइत गेल अछि। विश्वास अछि जे केओ हमर समानधर्मा जन्म लेताह आ ठीक-ठीक कहि सकताह जे प्रागीमे कोन-कोन आ कतेक गीत विद्यापतिक।

आब नवीन स्रोतक गीतक विवेचन कयल जाय। विद्यापतिक गीत यत्रतत्र आलोचनामे पढ़ैत आ लोकक मुँहे सुनैत अयलहुँ अछि। एहन बहुचर्चित गीत सभक एक सूची बनाओल आ तकर स्रोतक अन्वेषण कयल तँ ई जानि विस्मित भऽ गेलहुँ जे सूचीक चालीस गोट गीतमे एको गोट प्राचीन स्रोतमे कतहु नहि पाओल जाइत अछि। एहना

Scanned by CamScanner

स्थितिमे स्वभावत: शंका उठैत अछि जे की ई गीतसभ विद्यापतिक रचल नहि थिकनि ? जँ सभ हुनक रचल थिकनि तँ एहि सभसँ एकोटा गीत प्राचीन स्रोतमे किएक नहि भेटैत अछि ? एहि गीत सभक प्रामाणिकताक परीक्षण करबासँ पहिने एकर सूची परिशिष्ट **ख** पर देखि लेल जाय ।

एहना स्थितिमे प्रथमदृष्ट्या तँ यैह प्रतीत होइत अछि जे ई गीतसभ विद्यापतिक रचना नहि भऽ सकैत अछि। परन्तु हमरा से कहबाक साहस नहि होइत अछि किएक तँ सम्भवत: हमरा छाड़ि प्राय: सभकेँ प्रगाढ़ विश्वास छनि जे ई सभ गीत विद्यापतिक रचल थिक । विश्वासे नहि, सभकेँ एहि गीतसभपर प्रगाढ़ आस्था सेहो छनि । हम कथमपि नहि चाहब जे किनको आस्थापर चोट पड़य । तेँ हम जे कहब तकरा हमर निर्णय नहि, केवल विवेचनार्थ प्रस्तुत सामग्री बूझल जाय ।

1. **भाषा**– एहि बहुचर्चित गीतसभक प्रामाणिकतापर सन्देह करबाक सभसँ प्रबल आ प्रमुख आधार अछि एकरा सभक भाषा । विद्यापतिक कालमे मैथिलीक जे स्वरूप छल ताहिमे आइ भारी परिवर्त्तन भऽ गेल अछि । साधारण लोक आइ विद्यापतिक भाषा ठीकसँ बूझि नहि पबैत अछि । ताही कारणेँ हुनक प्राचीन स्रोतक गीत प्रचार नहि पओलक आ नव भाषावला आधुनिक गीतसभ जाहिमे विद्यापतिक नाम खोँसल छल तकरहि विद्यापतिक रचना बूझऽ लागल । प्राचीन आ नवीन मैथिलीक बीच की-की अन्तर भेल अछि तकर विवेचन एतऽ अप्रासंगिक होयत । उदाहरणार्थ प्राचीन स्रोतक कोनहु गीतसँ मिलाय आजुक केवल चारि गीत **आजु नाथ एक बरत, के पतिआ लए जाएत, जौं हम जनितहुँ, हम नहि आजु रहब** देखि लेल जाय, ततबहिसँ अन्तर स्पष्ट भऽ जायत ।

2. **शब्द**– जाहि शब्दक प्रयोग प्राचीन स्रोतमे नहि भेटैत अछि तकर प्रयोग गीतक प्रामाणिकताकेँ सन्दिग्ध बनबैत अछि । सभसँ स्पष्ट उदाहरण अछि **श्याम** शब्द । एकर प्रयोग प्रागीमे कतहु नहि भेटैत अछि जखन कि सूरदास आदिक रचनामे बारंबार भेटैत अछि । एहन शब्द अछि **बाजत दृगि दृगिमे** श्याम, **आजु नाथ एक बरत** मे चिन्ता अर्थमे सोच, **अपद बिपद तरु**मे पपिहरा, **कखन हरब दुख मोर**मे भोलानाथ, **कुंज भवन सओं**मे सारी, उद्धव आ निकसब; **जोगिआ एक हम देखल**मे तात-महतारी, **तातल सैकत बारि**मे तातल तथा अतए; **बाजत दृगि दृगि**मे प्रबन्ध, बीन आ स्वरमण्डल; **सखि हे हमर दुखक**मे भर आ भादर ।

3. **शैली**– शैलीमे सेहो किछु अन्तर लक्षित होइत अछि । प्रागी संस्कृत भण्डारक कोमलकान्त पदावलीसँ भरल अछि तँ आलोच्य गीत सभक मुख्य स्रोत अछि लोकमुख । प्रागीमे अर्थालंकारपर अर्थात् उपमा, उत्प्रेक्षा आ रूपकपर जोर अछि तँ आलोच्य गीतमे शब्दालंकारपर । प्रागी शब्दालंकारकेँ मानू हेय बुझैत अछि । अत: जाहि गीत सभमे शब्दालंकार प्रमुख हो तकरा विद्यापतिक रचना मानब कठिन । एहन गीत अछि **जओँ हम जनितहुँ, मधु रितु मधुकर पाँति, सरसिज बिनु सर** इत्यादि ।

4. **अन्त्यानुप्रास**– अन्त्यानुप्रास सेहो एक शब्दालंकार थिक आ से गीतमे अनिवार्य अछि । मैथिलीमे ई प्रत्येक दुइ चरणपर बदलैत जाइत अछि । जेना–

पाहुन आएल भवानी । बाघछाल बैसक दिअ आनी ॥
बसह चढ़ल बुढ़ आवे । धुथुर गजाए भोजन हुनि भावे ॥

एकर विपरीत सूरदास आदिक परम्परामे एके अन्त्यानुप्रास सम्पूर्ण गीतमे चलैत अछि । जेना **मैया मै नाहि माखन खायो** मे आदिसँ अन्त धरि आयो आयो तुक अछि । एहना स्थितिमे जाहि-जाहि गीतमे आदिसँ अन्त धरि एके तुक अछि तकरा प्रामाणिक मानब कठिन । उदाहरण अछि– **कुंज भवन सञो, पीसल भांग, चानन भेल, जाइते देखलि, मानिनि आब** इत्यादि ।

5. **भनितामे पुनरूक्ति**– मैथिलीक बहुत गीतमे भनिता भेटत **भनहि विद्यापति गाओल गाबि**

Scanned by CamScanner

सुनाओल रे । एहिमे एके बात तीन शब्देँ तेहराओल गेल अछि-- भनब, गायब आ सुनायब । एहन पुनरूक्ति विद्यापति कथमपि नहि कऽ सकैत छथि । अतः **आजु नाथ एक बरत** तथा **तोहें प्रभु त्रिभुवननाथ हे** एहि दूनू गीतक प्रामाणिकता सन्दिग्ध ।

6. **भाव**- किछु गीत भावक आधारपर अप्रामाणिक मानल जा सकैत अछि । विद्यापति कोनहु रचनामे अपना विषयमे कोनो बात नहि कहैत छथि । ने कतहु अपन दीनता देखबैत छथि, ने देवतासँ वा आश्रयदातासँ अपना लेल किछु याचना करैत छथि । जतऽ-जतऽ कोनो याचना वा कामना आयल अछि से कि तँ नायक-नायिकाक हेतु आ कि आश्रयदाताक हेतु । एहिसँ प्रतीत होइत अछि जे एहन भाववला गीतक प्रामाणिकता सन्दिग्ध । उदाहरण देखल जाय- **बेरि-बेरि आहे सिब**- एहिमे परजन्ममे अपन उद्धारक याचना करैत छथि । **कखन हरब दुख मोर**- एहिमे नैराश्य भाव अछि । **जय जय भैरबि**- एहिमे कवि अपना प्रति अनुग्रहक प्रार्थना करैत छथि । **तातल सैकत**- एहिमे नैराश्य आ वैराग्य भाव अछि । **बड़ सुखसार** तथा **सिब हो उतरब पार**- एहि दूनूमे अपना हेतु मोक्षक कामना अछि ।

7. **महाभाव**- राधा, कृष्णक ध्यान करैत-करैत अपनाकेँ कृष्ण बूझि लैत छथि आ राधाक विरहमे व्याकुल भऽ जाइत छथि । भ्रान्तिक एहन दशा चैतन्य महाप्रभुक सम्प्रदायमे महाभाव कहल जाइत अछि । एकर प्रवर्त्तक महाप्रभु स्वयं मानल जाइत छथि । **अनुखन माधब माधब सोंवरिते** एहि गीतमे वैह महाभाव वर्णित अछि जे विद्यापतिक उत्तर कालमे विकसित भेल, तेँ ई गीत विद्यापतिक रचना नहि मानल जा सकैत अछि ।

की पण्डितलोकनि विद्यापतिक निन्दक छलाह ?

बहुत ठाम सुनैत आ पढ़ैत रहलहुँ अछि जे विद्यापति मैथिलीमे रचना कयलनि ताहि कारणेँ पण्डितलोकनि हुनक उपहास करैत छलाह । हमरा जनैत ई बात निराधार थिक । ओहि कालमे आ तकरा बादो अधिकतर पण्डितलोकनि मैथिलीमे गीत रचैत छलाह । एहन पचाससँ अधिक पण्डितक रचल मैथिली गीत उपलब्ध अछि । जे स्वयं एहन गीत रचैत छलाह से एहन गीत रचनिहारक निन्दा कोना करताह । म.म. केशवमिश्र विद्यापतिकेँ **अतिलुब्ध नगरयाचक** कहने छथि । एकरहु किछु विद्वान एहि बातक सूचक मानैत छथि जे मैथिलीमे गीत रचबाक कारणहि ई निन्दन । हमरा जनैत एकर कारण स्पष्टतः एहिसँ भिन्न अछि । विद्यापति शिवसिंहसँ नगरयाचना कयलनि ताहि कारणेँ निन्दनीय । भीतर पैसिकेँ देखी तँ निन्दाक कारण उक्त दूनूसँ भिन्ने रहल होयत । केशवमिश्रकेँ विद्यापतिसँ कोनो खटपट भेल होयतनि तकरे ई प्रतिफलन थिक । पण्डितलोकनिक बीच एहि प्रकारक आक्षेप, उपहास आ परिहास स्पर्धावश चलितहि रहैत छलनि । एकरा विद्यापति मैथिलीमे रचना कयल ताहिसँ जोड़ब समीचीन नहि बुझाइत अछि ।

ताहि दिन काव्यक प्रतिष्ठा शास्त्रक प्रतिष्ठासँ भनहि कम हो किन्तु एहिमे सन्देह नहि जे प्रत्येक व्यक्तिकेँ मस्तिष्क आ हृदय दूनू होइत छैक । तेँ शास्त्रकारोलोकनि किछु-ने-किछु काव्य रचितहि छलाह आ मैथिल पण्डितसभ मैथिली गीत सेहो रचैत छलाह ।

अन्तमे, एक बात आओर । ताहि दिन आधुनिक भाषाकेँ केवल काव्यमे वा ई कहू जे केवल पद्यकाव्यमे स्थान छलैक । शास्त्रमे प्रवेश हालमे कनेक-मनेक भेल अछि । मैथिली साहित्यक महाविभूति विद्यापतिओ मैथिलीकेँ गीते धरि सीमित रखलनि ।

परिशिष्ट 'क' : मैथिलीक प्राचीन कवि-

अमिञकर, कंसनरायन, कविरतन वा रतनाञी, कविराज पूरनमल, नव कविराज, कविशेखर, काशीनाथ, कुमुदी, गंगाधर, गजसिंह, गोपीनाथ, गोविन्द, चतुर्भुज, चतुरानन, चन्द्रकला, जयकृष्ण, जीवनाथ, दस अवधान, धरणीधर, नव कविशेखर, नृपसिंह वा सिंहभूपति, पूरनमल्ल, प्रीतिनाथ, भगीरथ, भगत, भवानीनाथ, भवेश, भिखारीमिश्र, भीषम, मधुसूदन, मल्लदेव, यशोधर, रतनाञि, रामनाथ, लखनचन्द, लछमिनरायन, लछमिनाथ, लोचन, विष्णुपुरी, वीरनारायण, शंकर, श्यामसुन्दर, श्रीनिवासमल्ल, सदानन्द, सिद्धि नरसिंह तथा हरिदास ।

Scanned by CamScanner

परिशिष्ट 'ख' : प्राचीन स्रोत

1. रामभद्रपुर तालपत्र
2. भाषागीतसंग्रह
3. तरौनी तालपत्र
4. भाषागीत संग्रह
5. रागतरंगिणी
6. हरगौरीविवाह

परिशिष्ट 'ग' : बहुचर्चित गीत

1. अनुखन माधव ; 2. अपद बिपद; 3. अहे सखि अहे सखि; 4. आजु नाथ एक; 5. उगना रे मोर; 6. ए हरि ए हरि; 7. कखन हरब दुख; 8. कुंज भवन सञो; 9. कुसुमित कानन; 10. के पतिआ लए; 11. चानन भेल बिखम; 12. जञो हमे जनितहुँ, 13. जय जय भैरवि; 14. जाइते देखलि; 15. जोगिआ एक हम; 16. जोगिआ हमर जगत; 17. तातल सैकत; 18. तोहें प्रभु त्रिभुवन; 19. नव वृन्दावन नव नव; 20. पिअ विरहिनि; 21. पीसल भांग 22. प्रथम एकादस; 23. फुटल कुसुम नव; 24. बड़ सुखसार; 25. बाजत दृगि दृगि; 26. विगलित चिकुर; 27. विवाह चलल सिव; 28. बेरि बेरि आहे सिव; 29. मधु रितु मधुकर पाँति; 30. माधव ई नहि उचित विचार; 31. माधव कत तोर करब; 32. माधव कि कहब सुन्दरि; 33. माधव हमर रटल दुर देस; 34. मानिनि आब उचित नहि; 35. रे नरनाह सतत; 36. सखि कि पुछसि अनुभव मोहि; 37. सखि हे हमर दुखक नहि ओर; 38. सजनी के कह आओब मधाई; 39. सपन देखल हम; 40. सरस वसन्त; 41. सरसिज बिनु सर; 42. साजनि निहुरि फुकु; 43. सिवसंकर हे; 44. सिव हो उतरब पार; 45. सुतलि छलहुँ हम; 46. सैसव जौवन दुहु; 47. हम नहि आजु; 48. रे नरनाह सतत भजु ।

●

Scanned by CamScanner

पाञ्जिकराज मोदानन्द

डा. श्रीवेदनाथझा

सदाचार-निपुण कट्टर सनातन धर्मावलम्बी, लोकाचार-व्यवहारविद्, व्युत्पन्न प्रतिभासम्पन्न, प्रत्युत्पन्नमति, मर्यादाक स्तम्भ, वैदिक-कर्मकाण्डक अनुयायी, कर्त्तव्यनिष्ठ, तपोनिष्ठ, चतुरश्रय, हरसिंहदेवीक प्रवल पक्षधर, सत्यव्रती, पञ्जीशास्त्र पारंगत, दरभंगा राजकीय लब्ध धौत प्रतिष्ठ पुण्यश्लोक, स्वनामधन्य महामना पं. मोदानन्दझाक जन्म यजुर्वेदक माध्यन्दिन शाखीय त्रिप्रवर वाजसनेयि, काश्यप गोत्रीय पडुए महेन्द्रो (महेन्द्रपुर) मूलक सत्कुलीन सनातनी सुप्रतिष्ठ मैथिल ब्राह्मण वंशमे पूर्णिया मण्डलान्तर्वर्त्ति सुप्रसिद्ध राजवंश बनैलीक समीपहि शिवनगर नामक गाममे परम सुप्रतिष्ठ सारस्वत सेवा ओ स्वाध्याय निरत, अनवरत अध्ययन-अनुशीलन निरत पञ्जीकार परिवारमे आश्विन कृष्ण अष्टमी सोम सन् 1323 साल तदनुसार विक्रमाब्द 1973, ल.सं. 807, शकाब्द 1847, अँगरेजी 1914 इ.मे पाँ. पं. भिखिआझाक ज्येष्ठ पुत्र-'ज्येष्ठ: सर्वगुणै:' रूपमे भेल । हिनकासँ अव्यवहित दुइगोट सोदर भाय अम्बिकानन्द आ श्यामानन्द आ दुइ गोट बहिनि छलथिन रामेश्वरी आ परमेश्वरी, किन्तु पाण्डित्यमे, विद्या-वैभवमे, कौलिक व्यवसायमे, क्रिया-मर्यादामे जे सुयश आ प्रतिष्ठा पाओल मोदानन्दझा से हुनक परिवारहिक लेल नहि समस्त पञ्जीकार समाजक लेल स्पृहणीय रहल - 'एकश्चन्द्रमोहनित न च तारा सहस्रश:' - जेहने कुशाग्र बुद्धि तेहने गवेषणाक सूक्ष्मदृष्टि, जेहने विद्याक उत्कर्ष तेहने पाण्डित्यक प्रकर्ष, जेहने स्फीत आचरण तेहने स्वच्छ परिधान आ आवरण'-स्वयंमे अनन्योपमाक उदाहरण बनल रहलाह; मिथिलाक संस्कृतिक गौरव ध्वज देशक कोन-कोनमे फहरबैत रहलाह । पूर्वजन्मक संस्कार, पारिवारिक आचार, क्रिया-मर्यादा आ व्यवहार-विद्या-विनयक गंगा-यमुनी संयोग हिनक यशकेँ परिष्कृत कऽ विस्तारित करैत रहल । हिनक पिता पाँ भिखिआझा, पितामह पाँ हरखीझा, प्रपितामह होरिलझा बुद्धि-विद्या आ कौलिक व्यवसायमे समाजमे पूर्ण प्रतिपत्ति प्रतिष्ठा आ प्रसिद्धि अर्जित कयने छलाह । मातामह छलथिन दिघवे सन्द (न्न)हपुर मूलक शशिपुर निवासी शिवनन्दनठाकुरक पौत्र, सर्वनारायणठाकुरक बालक भैआलालठाकुर आ माय सौभाग्यवती चण्डिका; नरहाक सतलखे ज्योतिर्विद द्वारिकानाथक दौहित्री छलीह । एही द्वारिकानाथक वृद्ध प्रपितामह छलाह प्राणनाथ जनिका नामपर नरहा पाँजिक प्रचलन भेल ।

यद्यपि, बाल्यकालमे अस्वस्थ रहने हिनक शिक्षा किछु विलम्बसँ भेल, किन्तु अध्ययनक प्रति रुचि, असाधारण मेधा, अलौकिक प्रतिभा, अद्भुत धारणाशक्ति आ अभ्यासवाक निरन्तरता हिनका चौबीस वर्षक आयु पुरैत-पुरैत पञ्जी सन गूढ़ आ दुरुह शास्त्रमे सिद्ध-हस्त आ पारंगत बनाय देलक । सतकुलक प्राय: विरल एहन वंश रहल छल होयत जकर उतेढ़ हिनक जिह्वापर नहि छल हो, जाहिलेल हिनका पोथी देखऽ पड़ल हो । गुरु छलथिन हिनक अपनहि मौसा, नरओने मलिछाम वंशक सौराठक चंचलक पौत्र पाँ. जयमणिक बालक विशिष्ट पाँजिक लूटनझा, लब्धप्रतिष्ठ पंजीकार निरसूझाक पिता - 'गुरु शुश्रुषया विद्या' - से चौदह वर्ष पर्यन्त अन्तेवासी रहि हुनक आशीर्वादसँ एहि शास्त्रमे नैपुण्य लाभ कऽ लेल । एतऽ प्रतिभा, परम्परा आ साहचर्यक संयोगसँ अपन शास्त्रमे ई दुर्धर्ष शास्त्रार्थी भऽ गेलाह किन्तु तेँ दुराग्रही नहि - 'पुराणमित्येव न साधुसर्वम्'- तकरहु आग्रही नहिँ तेँ जीवन पर्यन्त समन्वयी बनल रहलाह - प्राचीन वस्तुकेँ नव ढंगसँ देखि ताहिमे तकर तर्क सम्मत विश्लेषण कऽ सामञ्जस्य स्थापित करबामे हिनक दक्षता सर्वत्र प्रशंसनीय रहल । मैथिली भाषामे एक गोट लोकोक्ति प्रचलित अछि- 'धारेझा होयब' - ई धारेझा पाँजि हिनकहि गुरु लूटनझाक परिवारक थिक- लूटनझासँ चारिम पीढ़ी ऊपर छलाह गोनौड़ जनिक विवाह सकराढ़ी मूलक धारेझाक कन्यामे छलनि ।

Scanned by CamScanner

गुरुक आश्रमक शिक्षा समाप्त कऽ ई 1938क जूनमे गार्हस्थ जीवनमे प्रवेश कयल । एही जूनमे हिनक विवाह राँटीक सरिसवे खाङुर-विशिष्ट मूलक विसुनीझाक प्रपौत्री, मूननझाक पौत्री, मुकुन्दझाक कन्या, पिलखवाड़क खौआड़य सुखेत महाकुलक म.म. चुम्बेझाक दौहित्री रामेश्वरीसँ भेल । आब ई लोकनि राँटीसँ उपटि पिलखवाड़हिमे निवास करैत छथि ।

पं. मोदानन्दझाक ई महावंश पडुए महेन्द्रो वा महेन्द्रपुर कहबैछ; जकर बीजी पुरुष छलाह गोविन्दपाठक । पं. भोलानाथझा अपन रचना 'मिथिला पञ्जी व्यवस्था'मे हिनका लोकनिक मूल निवास असमक पंडुआ कहल अछि । ई कथा निर्विवाद ओ बहुश्रुत अछि जे जीविका किंवा धन उपार्जनक लेल मैथिल पंडित दूर-दूर धरिक यात्रा करैत छलाह आ सुविधा भेलेँ आ अवसर भेटलेँ ओतऽ बसिओ जाइत छलाह, एही तरहेँ विभिन्न प्रान्तीय लोकक आगमन एतहु यदा-कदा होइतहि रहैत छल ।

तेँ एहि प्रकारेँ निश्चित किछु नहिँ कहल जा सकैछ, किन्तु पञ्जी प्रबन्धक समयमे महेन्द्रो अयलाह मनोधर, हिनकहि पौत्र हेमधरक बालक भेलाह नैयायिक महो गुणाकर, जनिका कर्णाट क्षत्रिय राजवंशक अन्तिम महाराज हरसिंहदेव 1310 इ.मे मैथिल ब्राह्मणक पञ्जी-प्रबन्धक दायित्व न्यस्त कयल-

श्रीमन्तं गुणवन्तमुत्तम कुलः स्नायाविशुद्धाशयां ।
संयातानुगरेषुणोऽत्सुकतया सर्वानुवृत्तिक्षमम् ।।
चातुर्यः चतुराननः प्रतिनिधिं कृत्त्वा-चतुर्धामिमां- ।
पञ्चादित्य कुलान्विता विविजयादित्ये द हौ पञ्जिकाम् ॥
दृष्ट्वा सभां श्री हरसिंहदेव विचार्य चित्ते गुणिने सहिष्णो
गुणाकरे मैथिल वंश जाते पञ्जी ददौ धर्म विवेचनार्थं

किन्तु एतेक पैघ दायित्वक निर्वहन ओ एकसरे कयने होयताह से ने सम्भवहि अछि आ ने विश्वसनीयहि । सम्भव बुझना जाइछ जे ई काज छल होयत सहयोगात्मक जाहि निमित्त कर्णाट चूड़ामणि हरसिंहदेव एकगोट समिति गठित कयने होयताह आ तकर नेतृत्त्वक दायित्व न्यस्त कयने होयताह गुणाकरकेँ । गुणाकरहि महेन्द्रपुरसँ ककरौड़ आबि बसल होयताह, आ तहियासँ अर्थात् सात साढ़े सात सय सालसँ एहन कहिओ नहि भेल जे पडुएक ई शाखा पञ्जीकार विहीन भऽ गेल हो वा केओ ने केओ एहि शास्त्रक एहि वंशमे विशिष्ट पुरुष नहिँ भेल होथि; ओना नरओनेक मलिछाम शाखा, सरिसवेक खाङुर, पलिवार मङरौनी, हरिअम्बे शिवा आदि कतोक एहन वंश अछि जाहिमे केओ ने केओ यदाकदा पञ्जीकार होइत रहलाह किन्तु जे क्रमबद्धता, जे शृंखला, जे विशिष्टता पडुएक महेन्द्रो शाखामे भेटैछ से प्रायः अन्यत्र भेटब दुर्लभ । 'गुणाकर'सँ मोदानन्दझा प्रायः उनैसम पीढ़ीमे पड़ैत छथि, से समयक एहि छओ-सात सय सालक अन्तरालमे कहिओ एहि वंशमे पञ्जीकार शून्य नहि देखल गेल ।

ई अवश्य जे पञ्जी प्रबन्ध भेल महाराज हरसिंहदेवहिक आज्ञासँ, किन्तु एहिसँ पूर्व अधिकार जँचबाक कोनहुँ साधने नहि छल, किंवा वैवाहिक सम्बन्ध अनधिकारहिमे होइत छल से कथा कोना कहल जाय सकैछ ? आचार्य कुमारिल भट्ट तन्त्रवर्तिकमे लिखने छथि-

विशिष्टे नैव हि प्रयत्नेन महाकुलीनाः परिरच्छन्ति आत्मानम् ।
अनेनैपहि हेतुना राजाभिर्ब्राह्मणैश्च स्व पितृ पितामहादि पारम्पर्या-
विस्मरणार्थं समूह लेख्यानि प्रवर्त्तितानि तथा च प्रतिकुलं ।
गुण-दोष स्मरणात्तदनुरूपाः प्रवृत्ति निवृत्तयो दृश्यतेक ॥

मीमांसा-न्यायक प्रख्यात पण्डित कुमारिलक काल सातम शताब्दिअहुमे किंवा ताहिसँ पूर्वहु रक्तक शुद्धताक

Scanned by CamScanner

लेल आस्वाजन्यक विवेचना समूहलेख्यक आधारपर सम्भाव्य अछि । किन्तु ई तँ विशिष्ट वंशहिटामे संरक्षित छल - सर्वथा कौलिक आ वैयक्तिकहि छल । कर्णाट चूड़ामणि महाराज हरसिंहदेव एकरा व्यापक बनाय समस्त मैथिल ब्राह्मणकेँ समेटि लेल । पञ्जी व्यवस्थाकेँ ओ जीविकाक रूप देल, एकरा व्यवसाय बनाओल । एहिमे संलग्न, एकर नियमनकेँ कठोरतासँ क्रियान्वित कयनिहार भेलाह पंजीकार । ओना तँ जाति मात्रमे यत्र-तत्र वैवाहिक सम्बन्धक प्रतिषेध अछि । केओ जन्मना तँ ब्राह्मण नहिँ होइत अछि- 'जन्मना जाएते शूद्रः' आ 'ब्रह्मज्ञानी भेलहिँ केओ ब्राह्मण कहबैछ - 'ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः ।' कोन केहन कुल अछि तकर परिज्ञान होइछ आचारसँ - 'आचारः कुलमाख्याति' -तँ आचारकेँ परमधर्म कहल गेल अछि - 'आचारो परमोधर्मः' । जातीय उच्चताक मान्य आधार छल -'विद्या योनिश्च कर्म च' - विद्या, कुल आ कर्त्तव्य अथवा- 'आचारो विनयो विद्या', किन्तु जखन कुलक प्राधान्य भऽ गेल आ विद्याक उपेक्षा होअऽ लागल तँ हरसिंहदेव स्वतः विनाशक दिशि अग्रसर होअऽ लगलाह । विवाहक नियामक थिक पञ्जी व्यवस्था आ कुविवाहहिसँ क्रियाक लोप सेहो होइछ, मनु तकरा परिपुष्ट करैत कहल अछि जे 'कुविवाहैः क्रियालोपः' तेँ जातीय उपचय-अपचयमे सनातनी क्रिया-मर्यादाक अहम भूमिका रहल, किन्तु उत्तम क्रिया कयने कालान्तरेँ दोषहुक मार्जन भऽ जाइछ - 'ऋण, व्रण, कलङ्कानां कालो लोपो भविष्यति-स्वजनगामी तँ चाण्डाल होइतहिँ अछि जे ओहिसँ उत्पन्न सन्तान सेहो चाण्डालहि होइछ - तेँ मातृतः पञ्चमींत्यक्त्वा, पितृतः सप्तमीम् भजेत ।' यद्यपि डा. सुभद्रझा 'भजेत'क स्थानपर 'त्यजेत' होयबाकेँ व्याकरणसँ विशुद्ध आ व्यावहारिक रूपेँ उपयुक्त कहल अछि- ई एहि परिवर्त्तनकेँ म.म.महेशठाकुरक निदेशनमे निहित स्वार्थवश अनावश्यक रूपमे प्रक्षिप्त कयल अछि । पाँचम, छठम वा सातम ठाम अबैत जाति स्थिर भऽ जाइछ- जात्युत्कर्षो युगेज्ञेयः सप्तमे पंचमेपिवाः ।'

पाँजि मात्रक हेतु कोनो ने कोनो दोषहि थिक, अथच दोषहिक गर्भसँ पाँजि (लौकित)क सृष्टि होइछ । एहि प्रकारक दोष थिक जातिक आ जन्मक विशुद्धिक । जतऽ दोष अछि, ततऽसँ जनिका नामपर पाँजि चलल से सर्वत्र पैघहि लोकक नामपर ओ से केओ छओ ठामसँ अधिक समीप नहिँ भेटताह । कतेक सोतिवंश योग्यक सम्बन्धसँ वंचित अछि ? प्रचलित जे पाँजि अछि ताहिमेसँ अधिकांश तँ योग्यहिक पाँजि थिक, योग्येतर पञ्जीवद्धहुक परिग्रहण सोति समाज द्वारा कइए लेल गेल अछि । कोनहुँ सोतिक उतेढ़मे थोड़ किंवा अधिक दूर जाय जयवारहुक सम्पर्क स्पष्ट भऽ जायत । मनु तँ ई कथा स्पष्टहि लिखल अछि जे 'उत्तमानुत्तमान गच्छन् हीनान्हीनांश्च वर्जनम्', अर्थात् उत्तम-उत्तम सम्बन्ध करैत, हीन-हीन सम्बन्धकेँ छोड़ैत ब्राह्मण श्रेष्ठताकेँ पबैत अछि । ते जाति-पाँजिक घमंडसँ अपनाकेँ उच्च बूझब, ओकर अहंकारमे आनकेँ अपमानित करब, अज्ञानता नहिँ तँ आओर की कहल जाय सकैछ ? मूल थिक शिक्षा आ क्रिया, जाहिसँ जातीय उपचय-अपचय, उत्कर्ष आ अपकर्ष निर्णित होयबाक थिक । आब तँ दू अढ़ाइ सय वर्षसँ अवदात केओ होइतहिँ नहिँ अछि - कस्य दोषः कुले नास्ति ?'

पं. मोदानन्दझा पञ्जी प्रबन्ध आ धर्मशास्त्रीय वैवाहिक नियमकेँ नीक जकाँ जनैत छलाह ओकर मर्म आ रहस्यक सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्त्वकेँ विश्लेषणपूर्वक मनन आ चिन्तन कयलनि तेँ संकल्पित भावसँ तकर अनुपालन करबा ओ करयबामे शिथिल नहिँ भेलाह । कतोक श्री सम्पन्न व्यक्ति द्वारा, राज-रजवाड़ाक द्वारा अनधिकारहुमे सिद्धान्त लिखबाक लेल, आर्थिक प्रलोभन देल गेल, सर-सम्बन्धिक, कर-कुटुम्बसँ वैमनस्य बेसाहल किन्तु कर्त्तव्यसँ तेँ कहियो विचलित नहिँ भेलाह, डगमगयलाह नहिँ अपितु पर्वतक सदृशहि अचल-अविचल बनल रहलाह ।

पञ्जीकार लोकनि प्रतिवर्ष चतुर्मास्यामे देश-देशान्तर जाय उतेढ़केँ अद्यतन करबाकलेल परिचयक संकलन करैत छलाह; आ ताहि क्रमेँ ग्रन्थ तँ पूर्ण होइतहिँ छलनि जे सम्मानकी रूपमे ततेक अर्थ संग्रह कऽ लैत छलाह जे वर्षान्नकलेल कहिओ व्यग्रता नहि होइत छलनि । एहि परम्पराकेँ स्वाधीनतासँ पूर्व धरि ई अक्षुण्ण रखैत रहलाह, अनुपालन करैत रहलाह । डा. सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन (गिलेसन साहेब) पञ्जी प्रबन्धक प्रसंग टिप्पणी करैत इण्डिऑन ऐँटिकोरी(1885क जुलाइ पृ. 187) मे प्रकाशित अपन निबन्धमे लिखल अछि -

The Panji is one of the most extra-ordinary series of the records in existence. It is composed

Scanned by CamScanner

of an entry for the birth and marriage of every pure Brahmin of Mithila. They go back for many hundred years. The Panjiars say for more than a thousand. These Panjiars are heridetory geneologists go on regular annual tours entering the names of all Brahmins in each village during the past years as they go along. The names are all entered as no Brahmin can marry any woman who has not been entered in the Panji and the vice-versa.

प्रथम पञ्जीकार पडुए गुणाकरसँ सातम भेल छलाह, होरेश्वर जनिकर विवाह विसैवार विसफी (पी) राजपंडित मैथिल महाकवि विद्यापतिक दौहित्र महिपतिक कन्यामे भेल छलनि । हिनक समय धरि पाँजिक व्यवसाय, सकराढ़ी, सरिसवे आ पलिवारक कोनहुँ-कोनहुँ डेरामे प्रवेश कऽ गेल छल, पश्चात् तँ ई कतोक ब्राह्मण वंशमे व्याप्त भऽ अर्जनक एकगोट प्रमुख साधन बनि गेल ।

तहिआ श्रोत्रिय लोकनि पूर्णिया, सहरसा प्रान्तमे जे कोशीसँ पूब छल, ततहि बसैत छलाह तेँ ओ लोकनि पुबारि पारक कहबैत छलाह - यथा खोवामे नरऔने, रसाढ़मे एकहरे, चनकामे पलिवार महिसी आ खौआड़य, अमौनमे खण्डवा, फड़कियामे कर्महे, गुणवन्तीमे सोदरपुरिए ओ खौआड़य, बसैतीमे दरिहरे रतौली, खौआड़य सेमरवार, पहसरामे सुरगणे, जगैलीमे हरिअम्बे, महिसीमे पलिवार, गंगौरामे बुधवारए, रजौड़ामे मड़रय, सुल्हनीमे नरऔने, खाड़ुरमे सरिसवे आ 'खौआड़य सेमरवार-नसिरा देशमे निवास करैत छलाह । अतः पञ्जीक प्रसंग कोनो विचार-विमर्श किंवा जिज्ञासाक समाधानक लेल लोककेँ कोशी टपि पछबारिपार आबऽ पड़ैत छलैक जतऽ पँजिआर लोकनिक बास छलनि तेँ ककरौड़सँ पडुए पंजी पंचानन छोटी प्रसिद्ध देवानन्दकेँ पूर्णियाक रसाढ़ गाममे आनि बसाओल गेलनि ।[1] जनिकर रचना पञ्जीग्रन्थ 'देवानन्द पञ्जी' प्रसिद्ध अछि । श्रीगिरिजानन्दसिंह 'बनैली रूट्स टु राज', (इण्डिका इनफोमिडिया, नई दिल्ली 2005, पृ. 217)मे एहि प्रसंग चर्चा करैत लिखल अछि-

The cultural growth of the Brahmins of the region under went a marked change during the next few decades due to the sincere efforts of Raj Banaili. One of the most noteworthy accomplishments was made by making available to the higher society, the office of the compilers of the Brahmin geneology, the Panjikars. During the period of Chaudhary Parmanand Simha, the un-availability of a capable Panjikara was felt as a serious obstacle in deciding high casts marriages and thus maintaining the purity of Brahmins lineage. Paramanand singh made up his mind to find a learned Panjikar and establish him as a permanent resident of Nashira. For this, he sought help from a relative who happened to the closely associated with the clan of the Panjikars. Jai Krishna Jha of Sarisave Baghawas who was the husband of Parmanand's daughter (Lukha Dai) has another wife who was the daughter of the famous Panjikar Jhonti Jha (झाँटी झा प्र. मित्रानन्छ). It was through this connection that Panjikar Mitranand alias Jhonti Jha was brought to Rasardha in Nashira. He was gifted with larger landed property and established as a respectable citizen of the region. Later , when Rasarh because inhabitable due to incessant floods, the family was shifted to Shivanagar. Two other families were also gifted with 14 acres each to enable them to settledown at Shivanagar and provide accompany to the PanjiKar lest the Panjikara may get weary of the loneliness and return to Tirhut.

बाढ़िक भीषण प्रचण्डतासँ संतप्त-परितप्त रसाढ़क डीह-डाबर त्यागि शिवनगर अयलाह होरिल सुत भिखिया-मोदानन्द झाक पितामह, जतऽ अद्यावधि हुनक सन्तान धनधान्यसँ सम्पन्न अनुवर्त्तमान छथि ।

हिनक असाधारण पाण्डित्य आ प्रखर प्रतिभाक परिचय लोककेँ भेटलैक 1940 इ.मे जखन राजाबहादुर विश्वेश्वरसिंहक बालक कुमार जीवेश्वरसिंहक यज्ञोपवीत संस्कारक अवसरपर आहूत राजकीय धौत परीक्षामे पञ्जीशास्त्रमे प्रथम आबि महाराज कामेश्वरसिंहक हाथसँ ताहि दिनक सर्वश्रेष्ठ परीक्षा, पंडित परीक्षामे दोशाला प्राप्त कयल । पश्चात् तँ 1984 मे चेतना समिति आ 85मे मैथिली अकादमी हिनका ताम्रपत्र आ प्रशस्ति पत्रसँ अलंकृत कऽ स्वयं सम्मानित

1. पं. रमानाथ झा सँ सूनल थिक

Scanned by CamScanner

भेल । बीसम शताब्दीक तेसर दशकमे अपन माम म.म.डा सर गंगानाथझाक परामर्शपर रमानाथबाबू मैथिलीक सेवामे लागि गेलाह । मिथिलाक कवि लोकनि, भाषा ओ संस्कृत रचनामे प्राय: अपन परिचय नहि दैत छथि, तेँ उपलब्ध कवि आ गीतकार लोकनिक परिचय फड़िछायब हिनकालेल असम्भव छल । अत: ओ महाराज कामेश्वरसिंहसँ निवेदन कऽ पञ्जीशास्त्र पढ़बाक अनुमति प्राप्त कऽ लेल । आब बड़ गोट समस्या छल जे अँगरेजी आ संस्कृतक योग्य पंडितकेँ पंजीशास्त्र के पढ़ाओत ? तहिआ पञ्जीशास्त्र, तन्त्रशास्त्रहि जकाँ गोपनीय विद्या होइत छल आ जखन केओ पँजिआड़ी पढ़ि लैत छल तखन ओकरा शपथ खोआओल जाइत छलैक जे अपन वंशकेँ छाड़ि अन्यत्र कतहु ओ एहि शास्त्रक रहस्य प्रकाश नहि करत । एहि अनुसन्धानात्मक कार्यकलेल विशुद्ध अधिकार जँचनिहार पँजिआड़हिक आवश्यकता नहि छल; एतदर्थ प्रयोजन छल गवेषणात्मक दृष्टि आ ऊहिगर, आँखिगर आ श्रमशील युवकक । एतदर्थ हिनक समक्ष एकमात्र चित्र छल, पं. मोदानन्दझाक । अत: ओ 14.10.43केँ दरभंगा अयबाक लेल हुनका पत्र लिखल–

लाइब्रेरियन आर. डी

नं. 16 ता.– 14.10.43

परम सुप्रतिष्ठ पञ्जीकार श्रीमोदानन्दझा महाशय

आगाँ एक गोट राजकीय काजक हेतु हमरा एक गोट नीक पञ्जीकारक प्रयोजन अछि । अपने उत्साही नवयुवक छी । यदि अपनेकेँ समय हो आ कमसँ कम एकहु मास एतए रहि सकी तँ कृपया ई चिट्ठी देखैत अतिशीघ्र हमर भेट कए जाइ । सभ विषय तखन साक्षाते कहि सकब ।

भवदीय

श्रीरमानाथझा

किन्तु मोदानन्दझा दरभंगा अयलाह 1948 मे आ तहिआसँ 1951 पर्यन्त रमानाथबाबूकेँ पँजिआड़ीक पोथी चारि वर्ष धरि पढ़बैत रहलाह किन्तु ई थिक महार्णव जकर स्पर्शता कऽ सकैत छी, लाँघव तँ सर्वथा दुरुह अछि । 1941 सँ यावज्जीवन रमानाथबाबूक ई सहाय्य करैत रहलाह जे हुनक किछु पत्र सभसँ प्रतिभासित होयत –

आर.डी., दरभंगा दरभंगा

मंगल/28.1.43

श्रीमोदानन्दजी ! नमस्कार !

पुनि अहाँ गुम्म भए गेलहुँ । कतए छी । गाम अएलहुँ कि नहि ? हम तँ कतए लिखू तँहि पत्र नहि लिखैत छी । ओतए अहाँ कोन वृत्तिमे लागल छी । सविस्तार समाचार किऐक नहिँ लिखैत छी ? हमर प्रश्न सवहिक समाधान कहिआ धरि लिखब – चिठिओ अछि कि हेराए गेल । गंगानन्दक विवाह हमरा भेटि गेल ।

बूढ़ब सुत गंगानन्द सुतनरओन सं. कामदेव सुत श्याम दौ

पवौली श्री रामसुत ढोढ़ाइ दुहितृ दौ हरिअम्व: वसुदेव दौहित्री दौ

भुवनानाम्नी वाली सं गोविन्द सुत उमानन्द पत्नी –

ई भेटल अछि; अहाँक नरओन मूलक पोथीमे । अत: एकटा प्रश्नपक उत्तर हमरा अपनहिँ भेटि गेल परञ्च दोसर प्रश्न उपस्थित भए गेल जे ई पाली सं. गोविन्द सुत उमानन्द के थिकाह । होएताह ई कोनो पैघ लोक सोति वा तत्समे योग । हमरा पलिवार मङ्गरौनीक सन्देह भेल ओ तकरो कएल अछि, परञ्च नहिँ भेटल । अहाँकेँ अनुसन्धान हो तँ अवश्य लिखब । एहि संग एकटा प्रश्न ओ तकर उत्तर हम जे लिखल अछि से पठबैत छी । ई प्रश्न हमरा कर्महा

Scanned by CamScanner

बेहट श्रीनित्यनाथझा (बाबू श्रीनेत्रेश्वरसिंह दौ) पुछने छलाह । एहिमे दू-तीन ठाम अहाँ लौकित बनाए हमरा दए गेल छी ताहिमे भेद पड़ैत अछि । शिवानन्दमिश्रकेँ अहाँ तिसौत लिखने छी । उग्रसिंह सबहु भाइकेँ अहाँ सेहो तिसौत - तँहि पठाओल अछि । तकरा देखब आ तकरा जाँचिकेँ यदि कतहु असंगत प्रतीत हो तँ लिखब ।

श्रीसुशील ओ श्रीसुनील दुहू भाइक विवाहक स्थिरता कएल । श्रीसुशीलक सरिसवे खौआड़य पुण्यनाथ सुत लक्ष्मीनाथझाक कन्या खण्डवला श्रीभवनाथठाकुरक दौहित्रीमे । श्रीसुनीलक गंगौली दरिहरा चेथरु सुत श्रीगौरीनन्दनझाक कन्या नरओन श्रीमणिनाथझाक दौहित्रीमे । वैशाखमे दुहू काज करब । एहि दिशि अहाँकेँ कहिआ धरि अएबाक सम्भव से अवश्य लिखव । पत्रोत्तर शीघ्र देव । ई लेख जे हम पठाओल अछि से आपस कए अवश्य पठाए देव । अहाँ जखन एकरा ठीक कहब तखन एकरा हम नित्यनाथबाबूकेँ पठाए देवैन्हि । इति । –श्री रमानाथस्य

आर डी, दरभंगा 25.5.43

॥ श्री ॥

श्री मोदानन्दजी ! नमस्कार !

अहाँकेँ स्मरण होएत जे हमरा संग अहाँ तीन चारि दिन हरान भेल छी ; परिचय तकबामे । शुचिकर सुत सुधाकरक 'कुजौली' मूलमे नहिँ भेटल । माण्डर मूलमे, पतलुका माण्डर शाखामे पक्षधर सुत महिपति – ए सुत अमरपति – हिनक विवाह देखू- सोदरः शुभदत्त सुतदेव दत्तक कन्यामे । ओही म.म.रुचिपतिक बहिनिमे जनिक परिचय हमरा चाही । एही अमरपतिक एक कन्याक विवाह कुजौली म.म.शुचिकरसँ जनिक बालक महो सुधाकर हमरा पोथीमे अछि। अहूँ अपन पोथी ताकब ओ लिखब जे ई सत्य ? आब अहाँ पता कहि सकैत छी जे ई शुचिकर बेटा ककर ? पौत्र ककर ? कुजौलीक कोन शाखामे भेटताह ? एहि शुचिकरक पौत्र सुधाकरक बेटा शंकरक हमरा परिचय चाही । सुधाकरक विवाह ओ शंकरक विवाह ई सभ कोना भेटत ?

सोदरपुर मूल, जीवेम्वरापत्य, जीवेश्वर सुतो हरदत्तः, ए सुतो माधवः, ए सुतो शुभदत्तः, शुभदत्त सुताः सीरु, खेदू, देवदत्त, सोमदत्ताः मतओना दरिः रत्नाकर दौ, पालीः दुर्गादित्य देवदत्त प्रसिद्ध देवे सुताः महो सकतू, महो जगतू रुचि दत्तापर नामक भगत् महो......

एतहि हमर पोथी समाप्त होइत अछि । कृपया अपन पोथीसँ एहि देवेक सन्तानक नाम आ ताहिमे रुचिदत्तक नामक म.म. भगतूक बेटा-बेटीक नाम, मातृक ओ विवाह कृपा कए लिखि पठाए देव । रुचिदत्तक हमरा परिचय चाही।

श्रीरमानाथझा

दरिभंगा
नवमी शनि, 1950

नमस्कार

अहाँ कतए छी ? एमहर आएव की नहि ? कहिआ आएव ? पत्रक उत्तर अहाँ नहिँ दैत छी, परन्तु एहि पत्रक उत्तर अहाँ तुरन्त दिअ । हम अलैवार वंशक परिचय लिखल अछि जे शीघ्र छपत । ओहिमे हम अहाँकेँ अपन गुरु कहि बड़ स्तुति कएल अछि - ताहि प्रसंग तीन-चारिटा जिज्ञासा अछि - तकर उत्तर सविस्तर तुरन्त लिखू -

1. परमानन्दचौधरीक विवाह पकैली टेङरीझाक कन्या-तनिका कोनो पाँजि छल कि नहिँ ? ई टेङरी के छलाह ? तीन-चारि पुरुष ऊपरसँ परिचय दिअ जे हमरा अपना पोथीमे भेटथि ।

Scanned by CamScanner

2. राजा लीलानन्दसिंहक पहिल विवाह खौआड़य हेमनाथझाक कन्यामे जनिक पाँति यदू-मचल – ई कोन पाँजि थिकैक – एकर सत्ता कोन छलैक- आ ई यदू मचल के छलाह ?

3. कुमार रुद्रानन्दसिंहक विवाह श्यामूठाकुरक कन्यामे –बालकृष्ण, दुखभञ्जन, बालह, श्यामू – एहिमे वेतिआ ककर विवाह ओ महादेवझा पाँजि हिनका कोना ?

4. रानी चन्द्रावती ककर कन्या आ ककर दौहित्री ?

5. राजा कलानन्दसिंहक विवाह सुल्तानगंज भेल अछि ताहिमे तँ टेङनीझासँ छठि छैक आओरो कोनो लागि छैक कि नहिँ से लिखब ।

6. कालिकानन्दसिंहक पाँचो बालकक विवाह कतए, कोन मूलमे, कोन पाँजिमे सेहो लिखब –

7. हमरा श्वसुरकेँ भञ्जनझा पाँजि कतएसँ अबैत छैन्हि से लिखब- श्रीरमानाथ

गिरीन्द्रमोहन रोड, दरभंगा – 27.6.69

नमस्कार

एकटा जिज्ञासा ! महाराज शुभंकरठाकुरक मातामह पलिबाड़ हाटी रत्नपतिझाकेँ कोन दोष ? शुभङ्कर ठाकुर पाँजि किऐक । रत्नपतिझाक दायादक क्रिया तँ उत्तम भेटैत अछि– विवाह हुनक पवौली कृष्णदत्तझाक ओतए । से तँ वड़का लोक । दोषमे चानठाकुरक पाँजिक बीज भेटैत अछि- शुभङ्करठाकुरक नहिँ । कृपया विचारि लिखवाक कष्ट करी । कुशलाकांक्षी –श्रीरमानाथ

पं. मोदानन्दझाकेँ सम्बोधित रमानाथबाबूक एहि पत्र सभकेँ संलग्न करबाक हमर एक मात्र उद्देश्य जे रमानाथबाबूक समस्त परिचयात्मक निबन्धमे मोदानन्दझाक प्रशंसनीय योगदान अछि । रमानाथबाबू तँ दिनांक नवमी शनि 1950 इ.क लिखल पत्रमे (जे संलग्न अछि) मोदानन्दझाकेँ सम्बोधित निःसंकोच हुनका अपन गुरु स्वीकारल अछि– हम अलैवारवंशक परिचय लिखल अछि जे शीघ्र छपत ओहिमे हम अहाँकेँ 'गुरु कहि बड़ स्तुति कएल अछि'–

'अलयीकुल प्रकाश' 'इंडिऑन नेशन प्रेस, पटना, 1951क प्राक्कथनमे रमानाथबाबू लिखैत छथि–

'गुरु सेहो हमरा भाग्यसँ भेटलाह बड़ सुयोग्य पञ्जीकार वंशक एगारह पुरुषक पंजिकार शिवनगर (रसाढ़)क नवयुवक पं. श्रीमोदानन्दझा । स्वर्गीय म.म. डा. सर गङ्गानाथझाक तत्त्वावधानमे जे अन्तिम धौत परीक्षा दरभंगामे भेल छल ताहिमे पञ्जीशास्त्रमे ई पञ्जीकार अपूर्व सफलतासँ समुत्तीर्ण भए श्रीमन्मिथिलेशक हाथसँ धोतीक संग-संग दोसाला सेहो पाओल । एहन विद्वान गुरुक कृपासँ एहि साहित्यक संकेत हमरा लेल सुलभ भए गेल..." ।

किन्तु पँजिआरी भाषाक अवगति, ओकर बोध बिनु सुयोग्य पँजियारक नहिँ भऽ सकैछ । यादृश नैयायिको भाषा सर्वजन सुलभ नहिँ भऽ सकैछ – तादृशे पाँजिक पोथीक भाषा ओ शैली पँजियारहिटा बुझि सकैछ । पटनामे अखिल भारतीय दर्शन महासभा 1949 मे आहूत छल जकर अध्यक्षता करैत छलाह प्रोफेसर हरिमोहनझा । ओहि अधिवेशनमे पंडित सभाक आयोजन सेहो भेल छल । अध्यक्ष सभागत विद्वान लोकनिकेँ आग्रह कयलथिन जे ओ लोकनि सरल हिन्दीमे 'अवच्छेदकता' पर प्रकाश देथि । ओहिमे जे लेख सभ पढ़ल गेल तकर किछु अंश उदाहरणक लेल एतऽ उदाहृत अछि–

"घटाभावा भावका प्रतियोगी घटाभाव है, प्रतियोगितावच्छेदक है घटाभाव निष्ठ प्रतियोगिता,

Scanned by CamScanner

घटाभावा भाव, प्रतियोगितावच्छेदक हुआ घटाभावनिष्ठ प्रतियोगित्वनिष्ठ अवच्छेदकता, तदवच्छेदकता है घटत्वनिष्ठ अवच्छेदकतानिष्ठ अवच्छेदकता, इसलिए घटाभावाभावका मतलब हुआ घटत्वनिष्ठावच्छेकतानिष्ठावच्छेदकता निरुपित प्रतियोगित्व निष्ठावच्छेदकता निष्ठावच्छेदकतानिरुपित प्रतियोगिता का अभाव ।

एकर परिहासमे उद्धरण दैत अध्यक्ष बाजल छलाह –

यह कुछ मजाक नहीँ, चिकारी नहीँ, साँप विच्छू का मंत्र नहीं, खड़ी का लच्छा नहीं, यह नव्यन्याय की टकसाली भाषा है । आवेँ छायावादी, रहस्यवादी, प्रगतिवादी और लगावेँ इसका अर्थ ? दो चार शब्दों में ही आँटे-दालका भाव मालूम हो जायगा । शब्दों के इस घटाटोप से अर्थ का दोहन करने के लिए कोई वैसा ही धुरन्धर दोग्धा गोपाल नन्दन: भी होना चाहिए ।

तहिना पंजी ग्रन्थमे–

सोदरपुर सं म.म.रतिनाथ सुता म.म. जीवनाथ, भवनाथ पर पर्यायक दूवे देवनाथ माण्डर सं म.म. वटेश्वर दौ पद्मपुर पनिचोभ सं जीवेश्वर दौहितृ दौ मिश्र दूवे सुता महो शंकर महादेव भासे दास कौ, खौआल सं रघुपति दौ आन्ध्रपति सुतौ शुभे दूवेकौ पनिचोभ सं वाटू दौ नान्यपुर खौआल सं राम दुहित्र दौ, महो शंकर सुता गदाधर, गोविन्द हरखू का कुजौली सं सूपन दौ.......'

करथु तँ एकर अर्थ केओ नैयायिक किंवा वैयाकरण, तीन डिबिया तेल जरि जयतनि आ समस्या यथावत् रहि जयतनि ।

हिनक हाथक लिखल पोथी अछि पंजीशास्त्रहिक नगराम शाखा पंजी जे मिथिलाक्षरमे तीन सय पृष्ठक अछि आ दोसर अछि पत्रपंजी जे यथावत् सुरक्षित अछि । ई प्रत्येक वर्ष सौराठ सभामे अपन मसिऔत सुप्रसिद्ध पञ्जीकार निरसूबाबूक सहयोग करैत छलाह आ पश्चात् ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा, संस्कृत विभागाध्यक्ष डा. श्रीकालिकादत्तझाक सेहो सहयोग कयल । किन्तु काल ककरहु कहाँ स्थिर रहऽ दैछ ? 14 नवम्बर 1998क सामान्य अस्वस्थतासँ दस बाजि पाँच मिनटपर अपन जराजीर्ण शरीरकेँ पञ्चतत्वमे मिलाय स्वयं शिव सान्निध्यकेँ प्राप्त कयल । मिथिलाक एक अनुकरणीय आदर्श पुरुष सर्वदाक लेल तिरोहित भऽ गेल । पञ्जी शास्त्रक एतादृश महान पंडित जनिका पं. रमानाथझा गुरु कहि अपन आदर आ सम्मानक भावसँ अर्घ्य दैत रहलाह ओ कराल कालक एक झटकामे वीतराग भऽ असार संसारक परित्याग कऽ परब्रह्ममे लीन भऽ गेलाह ।

●

Scanned by CamScanner

मिथिलाक सांस्कृतिक विशिष्टता

डा. श्रीरामकिशोरझा 'विभाकर'

मिथिला, एक अतीव पुराकालिक देश थिक । ई कहियो 'विदेह देश'क नामसँ सेहो अभिहित होइत छल । स्वायम्भुव-मनुक पुत्र उत्तानपाद, एहि भूखण्डक आदि 'विदेहराज' छलाह, जनिका अत्रि ऋषि दत्तक पुत्र बनौलथिन तेँ 'दत्तात्रेय' सेहो नाम पड़लनि । ई प्रमाण ब्रह्माण्डपुराण (1-2, 84-85) दैत अछि-

प्रजानां पतयश्चान्ये दक्षः प्राचेतसस्तथा ।
उत्तानपादं जग्राह पुत्रमभिः प्रजापतिः ।। 84 ।।
दत्तकः सतु पुत्रोऽस्य राजा ह्यासीत्प्रजापतिः
स्वायंभुवेन मनुना दत्तोऽत्रेः कारणंप्रति ।। 85 ।।

एहि तथ्यक समर्थन आर्यजातिक पुरातन इतिहास ग्रन्थ महाभारत सेहो करैत अछि (अनु- 91/4)-

स्वायंभुवोऽनिः कौख्य परमर्षिः प्रतापवान् ।
तस्यवंशे महाराज ! दत्तात्रेय इतिस्मृतः ।। 4 ।।
दत्तात्रेयस्य पुत्रोऽभूनेमिनाम तपोधनः ।
नेमेश्चाप्यभवत्पुत्रः श्रीमान् नाम श्रियावृतः ।।5।।

एही महाभारतक उनैसम खिलपर्व, हरिवंशपुराणक नामसँ ख्यात अछि । हरिवंशपुराण (1-2-6) क कथन अछि जे, स्वायम्भुव-मनुक पुत्रकेँ, जखन महर्षि अत्रि, दत्तकपुत्र बनौलथिन तँ ताहि उत्तानपाद (दत्तात्रेय)केँ, सुनृता (सुनीति) नामक सहधर्मिणीसँ, चारिगोट पुत्र भेलथिन-

उत्तानपादं जग्राह पुत्रमभिः प्रजापतिः ।
उत्तानपादाच्चतुरः सुनृताऽजनयत्सुतान् ।। 6 ।।

विदेहराज उत्तनपादक उत्तराधिकारी हुनक पुत्र ध्रुव भेलथिन । महाराज ध्रुवक कुल-परम्पराक लगभग पन्द्रह गोट राजागण, वैवस्वत मनुसँ पूर्वधरि, एहि विदेह-वसुन्धरापर राज कऽ गेल छथि । परन्तु, एहि ठाम हमर कथितव्य ई अछि जे स्वायम्भुवमनु नामक आदिमनु-विरचित्त जे 'मनुस्मृति' ग्रन्थ अछि से वैदेह जनताक 'आचार-संहिता' नहि बनल । एहि ठामक आद्य विदेहराज उत्तानपाद, महर्षि अत्रिक दत्तक पुत्र भऽ गेला उत्तर, नितान्त अवधूतक जीवन बितबैत छलाह । ई विष्णुक अवतारी, चौबिस गुरु-पुंगव-गण-विमण्डित, महत्तम तन्त्राचारी, वरिष्ठतम महापुरुष भऽ गेल छथि । हिनक उक्ति अछि-

अनन्तमिव मे वित्तं यस्य मे नास्ति किञ्चन ।
मिथिलायां प्रदीप्तायां न मे दह्यति किञ्चनाण ।। (शा.पर्व. 178.2)।

हिनक सम्बन्धमे कहल जाइछ जे ई, अपन तन्त्र-बलसँ वाराणसी जाय, नित्य गंगा-स्नान कयल करथि, दक्षिणभारतक कोल्हापुर नगरीमे जा कऽ जप करथि, माहुरीपुरमे पहुँचि भिक्षाटन करथि एवं दिगम्बर वेशमे सह्य-पर्वतपर

Scanned by CamScanner

विश्राम कयल करथि–

वाराणसीपुर स्नायी कोल्हापुर जपादरः ।
माहुरीपुर भिक्षाशी सह्यशायी दिगम्बरः ।।

अस्तु, एहिसँ ई परिज्ञात होइत अछि जे विदेह किंवा मिथिला देशीय, सामान्य जन प्राचीनयुगहिसँ तन्त्र-प्रधान संस्कृतिक अनुयायी-अनुगामी रहैत आयल अछि । तेँ, मिथिलादेशीय आद्य संस्कृतिक गरिमाक ख्यापन कयल जाय तँ एकर सर्वप्रमुख विशिष्टता तान्त्रिकतेकेँ देल जायत । तान्त्रिकी संस्कृतिक अनुयायीकेँ, सामान्याभाषामे 'कौल' कहल गेल अछि । 'कौल' क अर्थ होइछ – कुल (अर्थात् शक्ति)मे, अकुल (नकुल-शिव)क सम्बन्ध स्थापित करौनिहार–

कुलं शक्तिरिति प्रोक्तं अकुलं शिवउच्यते ।
कुलेऽकुलस्य सम्बधः कौलमित्यभिर्धायते ।। (भावचूड़ामणि)

तेँ, जे कौलाचारी छथि; हुनका कादो (कर्दम) एवं चन्दनमे पुत्र एवं विरोधीमे, मरघट एवं महलमे तथा सोना एवं घासमे कोनोटा फर्क नहि बुझाइत छनि–

कर्दमे चन्दनेऽभिन्ने पुत्रे शत्रौ तथा प्रिये !
श्मसाने भवने देवि ! तथैव काञ्चने तृणे ।।

एकरा जँ सनातन धर्मावलम्बी लोकनिक शब्दावलीमे कहल जाय तँ गीता (5/18)क निम्न श्लोककेँ उपस्थापित कयल जा सकैछ–

विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शनिचैव श्वपाकेच पण्डिताः समुदर्शिनः ।।

एहि उपाध्याय (वा ओझा) लोकनिकेँ अध्यात्मपथक कोनोटा मार्गावलम्बीक संग, कथमपि विरोध नहि रहलनि अछि । किएक तँ ई सभ, स्वयं विविध स्वरूपमे, अनुक्षण सर्वत्र विचरण करैत रहलाह अछि–

अन्तः शाक्ताः बहिः शैवाः सभामध्येतु वैष्णवाः ।
नाना रूपधराः कौला विचरन्ति महीतले ।।

विदेहराज दत्तात्रेय जनकक पश्चात् जे सर्वाधिक व्यापक सांस्कृतिक परिवर्त्तन मिथिलामे भेल से छल स्वायम्भुव मनुकालिक 'अगस्त्य' महर्षिक वैवस्वत मनुक समयमे साक्षत् नेमि (दंभोलि) जनक बनि कऽ अवतरित होयब । जेना-विष्णुपुराण (1-10) कहैत अछि–

प्रीत्यां पुलस्त्यभार्यायां दम्भोलिस्तत्सुतोऽभवत् ।
पूर्व जन्मनि योऽगस्त्यः स्मृतः स्वायंभुवेऽन्तरे ।।

'दम्भोलि' ओ 'नेमि' – पर्यायवाची शब्द थिक । एकरा पद्मपुराण (उत्तरखण्ड 222/62) निम्नांकित रूपें व्यक्त करैछ–

पुलहोऽपि सुतं लेभे दम्भोलिं गुणवत्तरम् ।
योऽगस्त्योऽभूत्पुरा राजंस्तीर्थेऽत्रैव निमज्जनात् ।।

एहि ठाम, इहो ध्यातव्य अछि जे उक्त 'नेमि' (दम्भोलि) जनककेँ, कतोक पुराण, वैवस्वतमनु-युगीन अगस्त्य ऋषिक साक्षात् अवतरित रूप कहैत अछि तँ कतिपय पुराण नेमि जनककेँ, इक्ष्वाकुत्तनयज्ञापित कहि, हुनके विदेह-संभूत

Scanned by CamScanner

मेधस, मेधिन, (मैथिन्), मिथिः जनक कहि देलक अछि । कतहु-कतहु उक्त अगस्त्येकेँ नेमि जनकक जामातृ-रूपमे, प्रस्तुत कऽ देल गेल अछि । कहबाक अभिप्राय जे नेमि, पूर्णतः 'अगस्त्य' ऋषिक रूपान्तरित विग्रह छलाह । हिनक समकालमे, एहि विदेह वसुन्धराक, मिथिलामही-रूपमे नामान्तरण भेल संगहि, तीन-चारिगोट घटना इतिहासमे अपन अमिट छाप छोड़ि गेल ।

1. नेमिक कालमे वशिष्ठक स्थानपर नैयायिक ओ स्मृति-प्रणेता महर्षिगौतमकेँ कुलपुरोहितक रूपमे वरण कयल गेल ।

2. हिनके शरीरकेँ मंथन कयला उत्तर, एहि देश ओ देशवासीक तीन गोट अभिधान मैथिल, जनक ओ विदेह पड़ल–

मथनान्मिथिरित्या हुर्जननाज्जनकोऽभवत् ।
यस्माद विदेहात्सभूतो वैदेहस्तु ततः स्मृतः ।। वा (उत्तर) 57/19

भागवत (9-13/12-13) मे सेहो एहि तथ्यक समर्थन भेल अछि–

जन्मना जनकः सोऽभूद् वैदेहस्तु विदेहजः ।
मिथिलो मथनाज्जातो मिथिलायेन निर्मिता ।।

3. नेमि अपन समस्त राष्ट्र, पशु, पुत्र एवं मित्र सहित निज वैदर्भी (लोपामुद्रा) पुत्रीकेँ, अगस्त्य नामक ब्राह्मण केँ दान कऽ देने छलाह । महाभारत (अनु. 137/11 तथा शा.पूर्व. 234/26) मे ई विवरण भेटैत अछि–

निमी राष्ट्रं च वैदर्भिः कन्यांदत्त्वा महात्मने ।
अगस्त्याय गतः स्वर्ग सपुत्र पशुबान्धवः ।। वा

निमी राष्ट्रंचवैदेहः (जामदग्न्योवसुन्धराम्) । तेँ देवी भागवतमे (6/15/24-25) उक्त उत्पन्न मिथिकेँ, साक्षात् अपरनेमि कहल गेलनि अछि–

अख्यांमध्यमानायां पुत्रः प्रादुरभूत्तदा ।
सर्वलक्षणसम्पन्नः साक्षान्निमिरिवापरः ।।

4. यैह अपरनिमिः (मेथिः -अगस्त्यः) विदेह स्थित क्षीरोद (क्षीरोदकी=खिरोइ) समुद्रक मंथन किंवा चूलुकमे लऽ एकर जलक शोषण कयने छलाह । तेँ, समुद्र चूलुक अभिधासँ अभिहित भेल । ई वशिष्ठक अनुजन्मा-रूपमे, एके यज्ञकुण्डसँ मित्रावरुणक वीर्य-द्वारा आविर्भूत भेल रहथि, तेँ, मैत्रावरुण ओ कुण्डिन् नामसँ सेहो ख्यापित भेल रहथि। हिनके आसन-तरक माटि लऽ कऽ समुद्रमे 'जोड़न' देल गेल छल जाहिसँ पृथिवीक जन्म भेल छल । अपिच ओहि मेधस (मिथिः) राजाक 'गोसाउनि' प्रभृति एकसय एक कन्या लोकनिक विवाह मिथिलाक नागराजा नाहरक पुत्र विस्सी (वीरसेन), चनाइ(चण्डाहि) प्रभृति एकसय एक भाइक संग सम्पन्न भेल छल । जे कथासभ मिथिलाक नवविवाहिता कन्या इतिहास-रूपमे, मधुस्रावणी-पर्वक अवसरपर श्रवण करैत छथि ।

5. एही नेमि (मिथि) जनकक कालखण्डमे, नेत्रचिकित्सा (मोतियाविन्द'क शल्यक्रिया) प्रारम्भ भेल छल । चरक संहिताक, 'निमितन्त्र'सँ एहि प्रसंगक सम्यक जानकारी भेटैत अछि ।

6. यैह मेधस्(अगस्त्य, कुण्डिम्) राजा, यज्ञीय कुण्ड-विधाक निष्णात मर्मज्ञ मानल गेल छथि । अध्यात्मरामायण (4/31) मे कहल गेल अछि -

अगस्त्येनोक्तमार्गेण कुण्डेनागम वित्तमः ।
जुहुयान्मूलमन्त्रेण पुंसूक्तेनाथवाबुधः ।।

Scanned by CamScanner

अस्तु, उक्त समयमे, नानाविध संस्कार मैथिल जनताक मानस-पटलपर अंकित भेल छल जकर अद्यावधि कोनो-ने-कोनो रूपमे, निर्वहण कयल जाइत अछि । यैह अगस्त्य (मेथि:) श्राद्धक्रियामे, सम्भवत: माछक विधान सेहो चलौने छलाह ।

7. मिथिला-निवासीक सांस्कृतिक संसारमे तेसर जे महत्तम परिवर्त्तन-प्रक्रिया प्रारम्भ भेल ओ छल त्रेतान्तमे सीरध्वज जनक द्वारा हल-कर्षण अद्विजोचित अनुचित कार्य । वस्तुत: ओ सीरध्वज जनके, पहिल क्षत्रियनरेश भेल रहथि जे बारह वर्षीय दुर्भिक्ष-जन्य आपातकालमे समस्त प्रजाकेँ प्रेरणा देलनि जे, जीवन निर्वाह लेल भू-कर्षण करब, कोनोटा मानव समुदाय लेल, कथमपि अशास्त्रीय विधान नहि भऽ सकैछ । सीरध्वज जनकक एहि कृत्यकेँ, व्यासक पिता विरचित पराशर स्मृतिमे, अवान्तर कालमे, पूर्ण समर्थन देल गेल । एहिठाम कहल गेल अछि–

अन्तेऽन्नार्थभावेन कर्त्तव्यं कर्षणं दिजै: ।
यथोक्तेन विधानेन लाङ्गलादि प्रयोजनम् ।। 5/118

सीते सौम्ये कुमारित्वं देवि ! देवार्चितश्रिये ।
शक्तिसूनोर्यथा सिद्धा तथा मे सिद्धिदा भव ।। 5/119 (बृहत्पराशर-स्मृति)

ओहिमे तँ एते धरि लीखल गेल अछि जे अन्नेक उत्पादनार्थ, परमेश्वर अनुक्षाण (अर्थात् बरद)क सृष्टि कयने छलाह तेँ, अन्ने द्वारा समस्त चराचर त्रिलोकीकेँ आप्यायित कऽ देबाक प्रयत्न होयबाक चाही–

अन्नार्थमेवानुक्षाण: ससर्ज परमेश्वर: ।
अन्नेनाप्यायते सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।। 5/109

8. उक्त सीरध्वज ओ कुशध्वज-जनक बन्धुद्वय, मिलि कऽ जखन, निज पुत्री लोकनिक विवाह, अवधनरेश दशरथक चारू पराक्रमी पुत्रक संग करबा देलनि तँ तकरो अप्रत्यक्ष प्रभाव, तत्कालीन मैथिल जनताक ऊपर, बहुत गम्भीर रूपेँ पड़ल छलैक । ताही समयसँ मिथिलामे गतातिमे सम्बन्ध केँ, अत्यधिक उपयोगी बूझल जाय लागल छल । सीताक प्रतिष्ठापित पातिव्रत्य ताही समयसँ, समस्त भारतवर्षीय कुल-कन्यालोकनिक हेतु आदर्शभूत भऽ गेल अछि–

यद्यपिगृह सेवक सेवकिनी । विपुल सदा सेवाविधि गुणी ।
निजकर सिय परिचर्या करहीं । रामचन्द्र आयसु अनुसरहीं ।।

मिथिलाक संस्कृतिमे चारिम खेप जे महत्तम आन्दोलन भेल; ओ कालखण्ड छल वैवस्वतमनुक द्वापरयुग । एहि युगमे, जखन 'उग्रसेन' नामक जनक, मिथिलाक जनक-पीठपर आसीन छलाह तँ वेदक प्रचलित कर्मकाण्डक विरोध मे, एकगोट क्रान्तिकारी विचारधाराक प्रादुर्भाव भेल जकर महानायक बनलाह योगिराज याज्ञवल्क्य । याज्ञवल्क्य, यजुर्वेदक स्वरूपमे, आत्म योग्यता बलेँ परिवर्त्तन करब अनिवार्य बुझलनि । विशेष कऽ हुनक गुरुवर वैशम्पायन जखन कहलथिन-हमर अध्यापित वेदज्ञानक अहाँ 'वमन' कऽ दियऽ ।' तखन हिनका, माध्यन्दिन भगवान सूर्यसँ, पुन: साङ्गवेदक अध्ययन करऽ पड़ल छलनि । ई, जखन भगवान् दिवाकरसँ, वेद-विद्या पढ़ि व्युत्पन्न भऽ गेलाह; तखन यजुर्वेदक कृष्णांश पाठकेँ, परिष्कृत करब प्रारम्भ कऽ देलनि । जे पाछाँ चलि कऽ 'शुक्ल यजुर्वेदक माध्यन्दिन शाखा' कहौलक । ई, 40 अध्यायात्मक उक्त परिष्कृत वेदक प्रणयन कयलनि । एकर ब्राह्मण ग्रन्थ जे 'शतपथ ब्राह्मण' 14काण्ड तथा 100 अध्यायात्मक अछि । एकर 1-4 तथा 10-14 काण्डमे, यज्ञ प्रक्रिया एवं देवता-विज्ञानक सिद्धान्त अछि तथा 5 सँ 9 काण्डमे, तुरकावषेय एवं शाण्डिल्यमुनिवर लोकनिक सिद्धान्त प्रतिपादित अछि । उक्त ब्राह्मण ग्रन्थेक अन्तिम भाग रूपमे ई बृहदारण्यक ग्रन्थक रचना सेहो कयलनि । उक्त 'आरण्यक' ग्रन्थमे, याज्ञवल्क्य मुनिक ब्रह्मज्ञान ओ आत्मज्ञानक चूड़ान्त निदर्शना उपस्थापित भेल अछि । यैह, महामुनि 'ईशावास्योपनिषद'क सेहो प्रणयन कऽ गेल छथि जे शुक्ल यजुर्वेदक अन्तिम 18, मन्त्रात्मक अध्यात्म-दर्शन रूपमे, समुपलब्ध होइछ । मिथिलामे ताही समयसँ केवल यजुर्वेदीय विविध

Scanned by CamScanner

गोत्रीय वा सामवेदीय शाण्डिल्य गोत्रीय ब्राह्मणे-समुदायटा उपलब्ध होइत छथि । एहि ठाम, ऋग्वेदीय किंवा अथर्ववेदीय ब्राह्मण लोकनिक नितान्त अभाव अछि । एहि ठामक कोनोटा वैदिक बाह्मण केवल 40 अध्यायात्मक यजुर्वेदटाक अभ्यासी उपलब्ध होइत छथि । जँ ततबो अभ्यास करब सभसँ सम्भव नहि भऽ पबैछ तँ ओही शुक्ल यजुर्वेदक रुद्राष्टाध्यायी (शतरुद्री)क कमसँ कम अभ्यास राखब अत्यन्त अनिवार्य बुझैत छथि ।

याज्ञवल्क्य एकगोट 'याज्ञवल्क्यस्मृति' सेहो हमरा लोकनिकेँ दऽ गेल छथि जाहि बलेँ हमरा लोकनि अपन समस्त संस्कार-प्रक्रियाक निर्वाह करैत छी । वस्तुतः उक्त 'स्मृति'क वास्तविक मार्मिकता, ताहि दिनसँ आओरो बढ़ि गेल अछि जहियासँ, विख्यात व्याख्याकार, पंडित प्रवर 'विज्ञानेश्वर', लगभग 1160 इ. मे, एकर सर्वाङ्गीण व्याख्या प्रस्तुत कऽ देलनि अछि । वर्त्तमान समय धरि ताही कारणे समस्त मैथिल समाज, स्मार्त्तधर्मी भऽ गेल छथि । मिथिलामे, पूर्णतया वैदिक वा श्रोत्रिय ब्राह्मण-परिवारक खोज आब, तेहने काज भऽ गेल अछि जेना हब्शी परिवारमे कोनो गायत्री जपकर्त्ता पुरुषक गवेषणा कार्य हो । यद्यपि, बहुतो व्यक्ति कहताह जे-

कृतेतु मानवो धर्मः त्रेतायां गौतमः स्मृतः ।
द्वापरे शंखलिखितः कलौ पराशरः स्मृतः ।।

मुदा, मिथिला-निवासी जहिना वेदमे, 'शुक्ल यजुर्वेदकेँ सर्वदा प्रतिष्ठा देलनि अछि तहिना अद्यावधि प्रत्येक संस्कार-प्रक्रियामे 'याज्ञवल्क्यस्मृति'क प्राथमिक प्रतिष्ठा रखैत अयलाह अछि ।

मिथिलाक धरापर आरम्भ कालमे, बौद्ध ओ जैन विचाराचारक प्रचलन सेहो रहल । फलतः जैन-बौद्ध सिद्धाचार्य लोकनिक प्रति नमस्कार ज्ञापित कऽ कऽ एहू ठामक अबोध शिशु लोकनिकेँ, अक्षरारम्भ करायव प्रारम्भ कऽ देल गेल । जकरे विकृत स्वरूप, अद्यपर्यन्त 'ओनामासीधम्' अर्थात् 'ऊँ नमः सिद्धम्'क परिपाटी प्रचलित भेल । एहि ठाम, नागवंशी राजा लोकनिक दीर्घकाल शासन चलैत रहल; तेँ, एहि ठाम घर-घरमे, नागदेवताक पूजा सेहो सुरू कऽ देल गेल । जखन, कलियुगक लगभग दू सहस्राब्द बीति गेल तँ, भगवान शंकराचार्यक दक्षिणी भारतमे आविर्भाव भेल । ओ सनातन धर्मक पुनः संस्थापनाक निमित्त जखन, अपन दिग्विजय-यात्रा प्रारम्भ कयलनि, तँ मिथिलाक भूमिपर सेहो पहुँचलाह । एहि ठाम, मण्डनमिश्र ओ हुनक सहधर्मिणी परम विदुषी भारतीक संग विविध विषयपर, शास्त्र-परिचर्चा कयलनि । हुनक ताहि पुनर्धर्म संस्थापनाक महाभियानमे, दुनू पति-पत्नी पूर्ण मनोयोगपूर्वक संग देलथिन । आओर, भारतवर्षक चारू दिशामे, चारिगोट दिग्विजय-मठक स्थापना भेल । सनातन धर्मक पुनः डंका पीटल जाय लागल । पुनः लगभग हजार वर्षक उपरान्त, भारतवर्षक पश्चिम भागसँ, म्लेच्छ लोकनिक तारम्तार आक्रमण प्रारम्भ भऽ गेल । एहि ठामक क्षत्रिय समाज, आपसी कलहसँ ग्रस्त भऽ, अत्यधिक दुर्बल भऽ गेल छल । ओ विदेशी आक्रान्ता सभ, एहि देशक विभिन्न भूखण्डकेँ निजाधीन कऽ लेलक । तहियासँ एहू मिथिलाक धरापर, विधर्मी समाजक क्षेत्राधिकार, क्रमशः स्थापित होअऽ लागल ।

मुसलमानी शासनक पश्चात् परदेशी गोरा लोकनिक शासन सेहो कायम भेल । ओकरो लोकनिक क्रिश्चियन धर्म, सभ्यता ओ भाषाक गम्भीर प्रभाव हमरा लोकनिक दैनन्दिन जीवनकेँ खूब-प्रभावित कयलक । मुदा, मिथिलाक मूल निवासी मैथिल-समुदायकेँ, आत्मरक्षा लेल भने कहियो कौलिक शुद्धि हेतु पंजी-निर्माण, वर्णाश्रमक परिशुद्धि लेल प्रत्यवाय-प्रायश्चित्तक विधान करऽ पड़ल होइनि, परंच कोनोटा विधर्मी समाजक संग, कोनो धार्मिक संग्राम कहियो नहि करऽ पड़लनि । किएक तँ, नितान्त अदौयुगेसँ ई लोकनि, परधर्म सहिष्णु, ओ सर्वधर्म सम्न्वयवादी विचारधाराक छलाह । तेँ निष्कर्षमे एतबा मुक्तकंठेँ कहल जा सकैछ जे मिथिलाक सांस्कृतिक विशिष्टता यैह थीक जे ई परिवर्त्तनशील संसारमे, आत्मसंस्कृतिक समयोचित सुधारकर्त्ता तथा मानव-कल्याणकारी युगानुरूप नव-नव गुण-प्रपुंजक अकुंठित ओ दुराग्रह रहित संग्रही रहल अछि ।

●

Scanned by CamScanner

नान्यदेव कृत भरतभाष्य की श्रुति स्वर-व्यवस्था

डा. सुश्रीलावण्यकीर्त्तिसिंह 'काव्या'

मिथिलामे कर्णाट वंशीय क्षत्रिय राजाओं के 1097 से 1325इ. तक के शासन-काल में विद्या-वैभव एवं कला-संस्कृति का अत्यन्त विकास हुआ । कर्णाटवंशीय पम्मार क्षत्रिय नान्यदेव इस वंशके प्रथम राजा हुए । वे प्रखर योद्धा एवं नीतिज्ञ के साथ-साथ संगीत शास्त्र के भी विद्वान थे । नान्यदेव रचित 'सरस्वती हृदयालंकार' जिसे 'भरत भाष्य' की भी संज्ञा प्राप्त है, संगीत का एक अद्वितीय ग्रन्थ है । 'भरतभाष्य' मे लगभग सात हजार श्लोक हैं और इसकी पाण्डुलिपि 'भण्डारकर ओरिएन्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट, पूना में सुरक्षित है । इस ग्रन्थमे कुल सत्रह अध्याय हैं । परन्तु यह ग्रन्थ आज खण्डितावस्था में है । इसके कुछ अध्याय अनुपलब्ध हैं ।

श्री चैतन्य देसाई ने इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ के शोध विभाग द्वारा इसके कुल पाँच अध्यायों को प्रकाशित कराया है । इस ग्रन्थमें वर्णित श्रुति स्वर-व्यवस्था ही वर्त्तमान संगीत में सर्वाधिक प्रचलित है ।

'श्रवण' अर्थ वाली 'श्रु' धातुमे 'क्तिन्' प्रत्यय लगाने से 'श्रुति' शब्द उत्पन्न होता है । मतंग के अनुसार, ''श्रूयते इति श्रुतिः'' अर्थात् जो सुनी जाती है, वह श्रुति है । उनके अनुसार श्रुति एक भी है और अनेक भी । कुछ विद्वानों (विश्वावसु) के अनुसार स्वर श्रुति और अन्तर श्रुति के कारण दो भेद हुए । कुछ नाभि, हृदय और कण्ठ भेद से तो कुछ सहज, दोषज और अभिघातज के कारण तीन भेद मानते हैं । वात, पित्त, कफ और सन्निपात के आधार पर क्रमशः वातज, पित्तज, कफज और सन्निपातज-इन चार प्रकार के श्रुतियोँ का प्रतिपादन तुम्बरू ने किया है । आचार्य भरत द्वारा नौ श्रुतियाँ वंश (वंशी) पर अवस्थित स्वरोँ को द्विक (द्वि-श्रुति), त्रिक (त्रि-श्रुति) तथा चतुष्क (चतुःश्रुति) कहा गया है । कोहल के अनुसार, कुछ विद्वान बाईस तो कुछ छियासठ, तो कुछ असंख्य श्रुति मानते हैं-

द्वाविंशति केचिदुदाहरन्ति श्रुतिः श्रुतिज्ञानविचारदक्षाः ।
षट्षट्भिन्नाः खलु केचिदास मानन्त्यमन्ये प्रतिपादयन्ति ॥

बाईस श्रुतियाँ सर्वाधिक ग्रन्थकारों ने स्वीकार किया है परन्तु कुछ ग्रन्थकारों ने उन्हीं बाईस श्रुतियों का मन्द, मध्य और तार स्थान (सप्तक)में अलग-अलग 22 X 3=66 माना है ।

दो ग्रामों (षड्ज और मध्यम) के बीच अवस्थित होने के कारण 'पंचम' स्वर को ही श्रुति का मान (माप) माना गया है ।

मतंग के पूर्व भरत ने 'श्रुति' को परिभाषित नहीं किया है । उन्होंने वादी-संवादी निर्णय के अंतर्गत स्वरों के मध्य नौ और तेरह श्रुतियों के अन्तर को संवादी, स्वर के अंश को वादी, दो श्रुतियों के अन्तर से विवादी तथा शेष को अनुवादी कहा है । उन्होंने बाईस श्रुतियों को स्वीकार किया है-

चतुः श्रुतिर्भवेत षड्ज ऋषभस्त्रिश्रुतिः स्मृतः ।
द्विश्रुतिश्चैव गान्धारो मध्यमश्च चतुःश्रुति ॥
पंचमस्तद्वदेव स्यात् त्रिश्रुतिर्धैवतो मतः ।
द्विश्रुतिश्च निषादः स्यात् षड्जग्रामे विधिर्भवेत् ॥

Scanned by CamScanner

अर्थात् षड्ज ग्राम में षड्ज की चार, ऋषभ की तीन, गान्धार की दो, मध्यम की चार, पंचम की चार, धैवत की तीन और निषाद की दो श्रुतियाँ होती हैं ।

भरत ने दो ग्रामों को श्रुतियों (बाईस) का कारण बताया है-"अथ द्वौ ग्रामौषड्जग्रामोमध्यमग्रामश्चेति । अत्राश्रिता द्वाविंशतश्रुतयः स्वरमण्डलसाधिताः ।" उन्होंने 'चतुःसारणा' में श्रुतियों का उल्लेख किया है । नाट्यशास्त्र में श्रुति स्वर के बाद आया है ।

'नारदीय शिक्षा' में नारद ने 'श्रुति' की परिभाषा नहीं दी है । उन्होंने प्रथम प्रपाठक की सप्तमी कण्डिका में श्रुतियों का उल्लेख किया है तथा इन श्रुतियों को सामगान से संबद्ध बताया गया है । दीप्ता, आयता, करुणा, मृदु तथा मध्यम को उन्होंने श्रुति-भेद कहा है जबकि परवर्त्ती आचार्यों द्वारा इन्हें श्रुतियों की जातियाँ कही गयी हैं । गान्धर्व में नारद ने इसे श्रुति-सम्पदा कहा है-

दीप्तानुदात्ते जानीयादीप्तां च स्वरिते विदुः ।
अनुदात्ते मृदुर्ज्ञेया गन्धर्वा श्रुति सम्पदः ॥

अर्थात् उदात्त में दीप्ता, स्वरित में दीप्ता तथा अनुदात्त में मृदु जानना चाहिए । परन्तु स्वरों के-उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, प्रचित (प्रचय) और निधात (निधात)-पाँच प्रकार के भेद बताये गये हैं । पुनः, इन पाँच श्रुतियों को साम गान में प्रयुक्त सप्त स्वरों- प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्द, क्रुष्ट और अतिस्वार में इस प्रकार स्थापित किया है-

मन्द्र, द्वितीय, प्रथम, चतुर्थ-दीप्ता

अतिस्वार, तृतीय, क्रुष्ट-करुणा

द्वितीय की अन्य श्रुतियाँ-मृदु, मध्या, आयता

इन श्रुतियों के विशेषज्ञों, को 'आचार्य' कहा गया है । यहाँ बाईस श्रुतियों का उल्लेख नहीं है । 'संगीत मकरन्द' में नारद ने बाईस श्रुतियों का वर्णन किया है-

"चतुश्चतुश्चैव षड्जमध्यमपंचमाः । द्वे द्वे निषादगान्धारौ त्रिस्यित्रषभधैवतौ ॥

यहाँ भी भरतोक्त विभाजन ही है । इस ग्रन्थ में नारदोक्त बाईस श्रुतियों के सबसे प्राचीन नाम हैं-सिद्धा, प्रभावती, कान्ता, सुप्रभा, शिखा, दीप्तिमती, उग्र, हलादी, निर्विरी, दिरा, सर्पसहा, क्षान्ति, विभूति, मालिनी, चपला, वामा, सर्वरत्ला, शान्ता, विकलिनी, हृदयोन्मलिनी, विसारिणी तथा प्रसूना ।

दत्तिल ने भी बाईस श्रुतियों की संख्या मात्र को स्वीकार किया है परन्तु उनके नाम नहीं दिये हैं-

नृणामुरसि मन्द्रस्तु द्वाविंशतिविधो ध्वनिः ।
स एव कण्ठे मध्यः स्यात् तारः शिरसि गीयते ॥"

दतिल ने तीन सप्तकों (स्थानों) में छियासठ श्रुतियों को भी माना है । तदनुसार 'संगीत मकरन्द' के बाद नान्यदेव कृत 'भरतभाष्य' में ही बाईस श्रुतियों की संख्या, नाम और उनके प्रकारों (दीप्ता, आयता, मृदु, मध्या और करुणा) का विस्तृत वर्णन है ।

नान्यदेव ने इन पाँच प्रकार के श्रुतियों को सप्त स्वरों में इस प्रकार वर्गीकृत किया है-

षड्ज की चार श्रुतियाँ -दीप्ता, आयता, मृदु तथा मध्या

ऋषभ की तीन श्रुतियाँ-करुणा, मध्या, और मृदु

Scanned by CamScanner

गान्धार की दो श्रुतियाँ-दीप्ता और आयता

मध्यम की चार श्रुतियाँ-(षड्ज के समान) दीप्ता, आयता, मृदु तथा मध्या

पंचम की चार श्रुतियाँ-(षड्ज से एक भिन्न)मृदु, मध्या, आयता तथा करुणा

धैवत की तीन श्रुतियाँ-करुणा, आयता, और मध्या

निषाद की दो श्रुतियाँ - दीप्ता और मध्या

नान्यदेव कृत बाईस श्रुतियों के नाम इस प्रकार हैं- ''तीव्रा, कुमुद्वती, मन्दा, छन्दोवती, दयावती, रंजनी, रसिका, रौद्री, क्रोधा, वज्रिका, प्रसारिणी, प्रीति, मार्जनी, क्षिति, रक्ता, संदीपनी, अलापिनी, मदश्री, रोहिणी, रम्या, उग्रा और क्षोभिणी।''

बाईस श्रुतियों की उपर्युक्त संज्ञाएँ सर्वाधिक लोकप्रिय एवं मान्य हैं। इसे परवर्त्ती सभी आचार्यों-ग्रन्थकारों ने स्वीकार किया है। श्रुतिजाति संबंधी निरूपण में शारंगदेव का आधार 'भरतभाष्य' ही है।

सभी बाईस श्रुतियों को पाँच श्रुति प्रकारों में विभाजित किया गया है। (यद्यपि इस विभाजन का आधार व्याख्यात नहीं है।) यथा-

तीव्रा, रौद्री, वज्रिका और उग्रा-दीप्ता

कुमुद्वती, क्रोधा, प्रसारिणी, संदीपनी, और रोहिणी- आयता

दयावती, आलापिनी और मदन्ती-करुणा

मन्दा, रसिका, प्रीति और क्षिति-मृदु

छन्दोवती, रंजनी, रक्तिका, मार्जनी, रम्या, और क्षोभिणी-मध्या

नान्यदेव ने श्रुत्याध्याय में श्रुतियों के ऋषि, रंग, उत्पत्ति (मूल) आदि का भी वर्णन किया है। श्रुति की परिभाषा इस प्रकार है-''श्रुति श्रूयतइत्येवध्वंनिरेषोडभिधीयते।''

आगे इन श्रुतियों की स्वरों में स्थिति कही गई है-

तीव्रा, कुमुद्वती, मन्दा, छन्दोवती-षड्ज

दयावती, रंजनी, रक्तिका-ऋषभ

क्रोधा, रौद्री-गान्धार

बज्रिका, प्रसारिणी, प्रीति, मार्जनी-मध्यम

क्षिति, रक्ता, संदीपनी, आलपिनी-पंचम

मदन्ती, रोहिणी, रम्या-धैवत

उग्रा, क्षोभिणी-निषाद

स्पष्ट है कि उपर्युक्त श्रुति-स्वर-व्यवस्था पूर्वोक्त आचार्यों के अनुसार ही है अर्थात् षड्ज-मध्यम-पंचम की चार-चार, गान्धार-निषाद की दो-दो और ऋषभ-धैवत की तीन-तीन श्रुतियाँ।

नान्यदेव ने श्रुतियों को 'भरतभाष्यम्' में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। उन्होंने नारद कृत 'नारदीय शिक्षा' एवं 'संगीत मकरन्द' दोनों में वर्णित श्रुति-निदर्शन का सविस्तार प्रतिपादन किया है। यद्यपि 'संगीत मकरन्द' में श्रुतियों के नाम से 'भरतभाष्य' की श्रुतियों के नाम में भेद हैं। फिर भी नान्यदेव द्वारा वर्णित श्रुतियाँ ही आज सर्वाधिक प्रचलित एवं मान्य हैं। भारतीय संगीत शास्त्र के क्षेत्र में इसे मिथिला का महत्त्वपूर्ण अवदान कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा।

●

Scanned by CamScanner

उत्तर भारतीय भाषाओं पर विद्यापति के काव्य-शिल्प का प्रभाव

डा. श्रीमतीमिथिलेशकुमारीमिश्र

विद्यापति एक युग प्रवर्त्तनकारी महाकवि थे । वे मैथिली के अतिरिक्त, हिन्दी, बंगला, असमी, उड़िया आदि अनेक भाषाओं के साहित्य में अपना स्थान रखते हैं । उन्होंने संस्कृत, अपभ्रंश और लोकभाषा में सशक्त रचनाएँ की । वे सच्चे रूप में एक विद्वान एवं कवि थे । जहाँ उन्होंने शास्त्रीय विवेचन में एवं संस्कृत काव्य रचना में अपने पांडित्य का परिचय दिया वहीं लोकभाषा में 'अमर गीतों' की रचना करके तथा तत्सम प्रधान भाषा में प्रबन्ध काव्यों की रचना करके लोकमानस पर छा गये । उन्होंने शैलियों के बाहुल्य का प्रदर्शन किया और इस प्रकार एक सार्वभौम कवि के रूप में प्रकट हुए । इसमें कोई सन्देह नहीं कि उन्हें तुलसीदास का पथ प्रदर्शक माना जा सकता है । उन्होंने अपने नाम विद्यापति को सार्थक किया और सदुपाध्याय, कवि कंठहार, कवि सार्वभौम, कवि चक्रवर्ती, अभिनव जयदेव आदि अनेक विरुद अर्जित किए ।

भाषा की दृष्टि से भी उन्हें युगद्रष्टा कहा जा सकता है । उनके समय में संस्कृत और प्राकृत की तो बात ही क्या अपभ्रंश का काल भी समाप्त हो चला था । लोकभाषाओं का उदय हो रहा था । किन्तु उस समय मिथिला में संस्कृत का पुनरुत्थान भी हो चुका था । उनके एक शताब्दी पूर्व ज्योतिरीश्वर की रचनाओं को देखने से स्पष्ट सिद्ध होता है कि संस्कृत का यह पुनरागमन विद्यापति के पहले ही आरम्भ हो चुका था । उन्होंने केवल संस्कृत में रचनाएँ ही नहीं की अपितु उसे राजभाषा के रूप में प्रतिस्थापित होने में सहायता दी और सम्भवतः इसी दृष्टि से उन्होंने 'लिखनावली' नामक ग्रन्थ लिखा । यद्यपि यह काव्य का ग्रन्थ नहीं फिर भी इसमें उनका भाषा विषयक शिल्प, प्रगतिशील विचारधारा, पैनी सूझबूझ, विस्तृत दृष्टिकोण, परम्परा एवं उद्‌भावना का समन्वय आदि गुण विशेष रूप से दीख पड़ते हैं । उन्होंने अनेक देशी और विदेशी शब्दों को संस्कृत के परिवेश में समेटा । कहीं-कहीं उन्होंने फारसी शब्दों को ज्यों का त्यों ले लिया है और कहीं कहीं उनका संस्कृतीकरण कर लिया है ।

लोकभाषा के विकास में भी विद्यापति का योगदान कम नहीं । यद्यपि गँवारु भाषा के प्रयोग के कारण पंडितों ने उनका तिरस्कार भी किया था किन्तु विद्यापति ने साहस करके लोकभाषा का परिष्कार करते हुए इसमें काव्य रचना की और इस प्रकार उस परम्परा का सूत्रपात किया जिसने आगे हिन्दी के स्वनामधन्य गोस्वामी तुलसीदासजी को जन्म दिया । **स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा भाषा निबद्धमतिमञ्जुलमातनोति** का मूल निश्चय ही **देसिल वयना सब जन मिट्‌ठा** ही है । उनकी पदावली की भाषा लोकभाषा है । उन्होंने नैसर्गिक प्रतिभा से उसमें निखार उत्पन्न किया है जिसमें उसकी अभिव्यक्ति शक्ति पर्याप्त विस्तृत हो गई है और वह केवल वैयक्तिक भाववाहिका न रहकर सामाजिक चेतना, अनुभूति एवं अभिव्यक्ति की सशक्त माध्यम बन गई है । डा. मुनीश्वरझा ने ठीक ही कहा है कि विद्यापति भाषा नीति की दृष्टि के अन्तदर्शी थे (विद्यापति वाङमय, भूमिका पृष्ठ 58) । वर्ण्यवस्तु एवं चित्रण शिल्प में विद्यापति अपने पूर्ववर्त्ती भारतीय साहित्य से प्रभावित हुए किन्तु बदले में उन्होंने पूरे उत्तर भारतीय साहित्य को अत्यधिक प्रभावित किया । यह कोई नई बात नहीं । सम्पूर्ण मानव कृतित्व ही एक प्रकार की विकास की श्रृंखला है । आदि काल से ही मानव को सुख-दुःख की अनुभूति होती रही है और उस अनुभूति को वह अभिव्यक्ति भी देता रहा है । उसके चतुर्दिक प्रकृति के परिवेश ने उसे सदैव प्रभावित किया है । ऋग्वेद काल से उषा के रूप ने उसे मोहा है, सूर्य के तेज ने उसे प्रभावित किया है, ब्रह्मांड के विराट स्वरूप ने उसे भाव विह्वल किया है; नदी, पर्वत, समुद्र, बिजली की कड़क आदि ने उसमें आवेग उत्पन्न किए हैं और ऋषियों के निश्छल हृदय ने उन्हें अभिव्यक्त भी किया है । यह परम्परा वेद-उपनिषद काल

Scanned by CamScanner

से होती हुई आगे बढ़ती रही । नये-नये कवि इसमें आते जाते रहे । यद्यपि लौकिक संस्कृत साहित्य में रागबद्ध रचनाएँ गीतगोविन्द के पूर्व की नहीं प्राप्त होती हैं किन्तु सामवेद की रागबद्धता को देखकर ऐसा नहीं कहा जा सकता कि संस्कृत में रागबद्ध रचनाएँ नहीं हुई थीं । राग रहित साहित्य का तो संस्कृत में अक्षय भंडार है । ऐसा प्रतीत होता है कि रागबद्ध रचनाएँ काव्य क्षेत्र से हटकर संगीत क्षेत्र में चली गई थीं । जयदेव के पश्चात् ज्योतिरीश्वर ने भी विद्यापति के पूर्व ही गीतियों की रचना की थी । गीति रहित कवियों में कालिदास, माघ, भारवि, भवभूति, शूद्रक, श्रीहर्ष आदि संस्कृत कवि एवं सिद्धसरहपा, चन्दवरदायी आदि वीर कवि विद्यापति के पूर्व हो चुके थे । इन सब कवियों का ऋण विद्यापति पर है किन्तु यह ऋण भावपक्ष में अधिक है शिल्प पक्ष में कम । सबसे अधिक प्रभाव विद्यापति पर जयदेव का समझा जाता है और सम्भवतः इसीलिए उनको **अभिनव जयदेव** कहा भी गया किन्तु एक तो जयदेव मात्र गीतिकार ही थे जबकि विद्यापति एक प्रबन्धकार, शास्त्रकार, स्मृतिकार आदि भी । गीतिकार के रूप में भी विद्यापति शिल्पपक्ष में जयदेव के बहुत अधिक ऋणी नहीं है । गीतिबद्ध रचनाएँ कवि के हाथ से निकलकर गायकों के क्षेत्र में जा चुकी थीं और इस परम्परा के उद्भावक जयदेव से पूर्व विद्यमान थे । सरहपा, वीणापा, कन्हपा आदि अनेक सिद्ध सन्त गायक एवं गीत रचयिता जयदेव के पूर्व हो चुके थे । इनके अनेक पद राग-रागिनी में बद्ध आज भी उपलब्ध होते हैं । रागतरंगिणी में ऐसे अनेक पद संकलित हैं । अनेक राजाओं के यहाँ नर्त्तक और गायक रहा करते थे जिसका संकेत विद्यापति के **गोरक्ष विजय** में मिलता है, जहाँ उन्होंने तैलंग नर्त्तकों का उल्लेख किया है । जयदेव के गीत गोविन्द एवं विद्यापति की **पदावली** को देखकर यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि राधा-माधव एवं उनके शृंगार को छोड़कर जयदेव का विद्यापति पर कोई विशेष प्रभाव नहीं । जयदेव ने लोकभाषा में प्रसिद्ध गीति परम्परा को संस्कृत भाषा के आवरण में प्रकट किया, जबकि विद्यापति ने उस परम्परा को देश भाषा में ही आगे बढ़ाया । जहाँ जयदेव का गीत गोविन्द एक लघु गीति नाट्य का रूप धारण करता हुआ प्रतीत होता है, वहीं विद्यापति की पदावली मुक्त गीति का रूप धारण करती है । जयदेव ने जिस प्रकार गीतों में परस्पर कथासूत्र बनाये रखने के लिए बीच-बीच में श्लोकों की व्यवस्था की है, विद्यापति की पदावली में वैसा कुछ नहीं दीख पड़ता । **गोरक्ष विजय** में नाट्य प्रभाव है किन्तु वहाँ कथाबद्ध नाटकीय अभिनय के पूरे तत्त्व उपलब्ध होते हैं जो कि गीतगोविन्द में देखने को नहीं मिलते । इस प्रकार न तो भाषा, न विधा और न संयोजन में ही विद्यापति जयदेव के ऋणी हैं । दोनों में इतना ही साम्य है कि संगीत और काव्य की जो परम्पराएँ जयदेव के पूर्व तक सर्वथा पृथक् हो चुकीं थीं उनको उन दोनों ने ही समवेत किया और दोनों ने ही संगीतमय काव्य की रचना की ।

गीतिमुक्त रचनाओं में जैसा कि हम पहले देख चुके हैं कि विद्यापति ने अपने से पूर्व विद्यमान सभी श्रेष्ठ कवियों के द्वारा अनुसृत विधाओं से भिन्न विधाओं का ही आश्रय लिया । यद्यपि उनके पूर्व बहुत बड़े महाकाव्य विद्यमान थे फिर भी उन्होंने कोई महाकाव्य नहीं लिखा । यह शिल्प विषयक उनकी मौलिकता का परिचायक है । **मेघदूत** जैसे खंडकाव्य भी उन्होंने नहीं लिखे, **अभिज्ञान शाकुन्तल** जैसे नाटक लिखने की भी आवश्यकता उन्होंने नहीं समझी । वीरगाथा काल की रचनाओं का भी उन्होंने अनुकरण नहीं किया । एक केवल **मणिमंजरी** ही उनकी ऐसी रचना है जिसकी विधा में परम्परा का अनुपालन है ।

अनेक लेखकों ने विद्यापति के पूर्वकालीन कवियों से विद्यापति के चित्रों की तुलना की है । उन बिम्बों में यथेष्ट सादृश्य भी है । इस सम्बन्ध में हम यही कह सकते हैं कि कवि एक समाज का अंग होता है जो कालिक आयाम में शृंखला की एक कड़ी के सदृश होता है । पूर्वकालीन कवियों से भावसाम्य होने पर भी कवि की मौलिकता नष्ट नहीं होती है । संस्कृत शास्त्रकारों ने इस भाव को सादृश्य कहा है और आनन्दवर्धन ने यह स्पष्ट घोषणा की कि वाणी का स्वामी कवि भी लक्षण और शब्द नये नहीं गढ़ सकता है, उसी प्रकार अर्थ भी नये गढ़े नहीं जा सकते । विद्वान कवियों में भाव साम्य तो हुआ ही करता है (ध्वन्यालोक - 4/11) । विद्वानों ने संस्कृत के कवियों की उक्तियों का साम्य ऐसे विदेशी कवियों से दिखलाया है जिनका एक दूसरे से परिचित होना सम्भव सा नहीं है । विदेशी चिन्तक अलगजेंडर लिंडे एवं आर.एल. इस्टीवेशन ने यह स्वीकार किया है कि बहुधा ऐसा साम्य काव्य, रचना की स्वाभाविक

Scanned by CamScanner

प्रक्रिया में हो जाते हैं (डा. वीरभद्र मिश्र, कप्फिणाभ्युदय, ए स्टडी, पृ. 212 पर उद्धृत) । दो महाकवियों के चित्रों की तुलना करके केवल यही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि दोनों ही महाकवियों ने सूक्ष्म दृष्टि से देखा है और उन दोनों के पर्यवेक्षण समान हैं । कभी-कभी ऐसा भी होता है कि पूर्वकालीन अधीत काव्य का अस्फुट बिम्ब अन्तश्चेतना में बना रहता है और वह जाने-अनजाने कवि की रचना में उद्धृत हो आता है । इसी प्रकार कई बिम्बों का रूप परिवर्त्तन भी हो जाता है । प्राचीन बिम्ब के परिष्कार करने में अपनी प्रतिभा से कवि नयापन भी निखारता है ।

विद्यापति बहुभाषाविद् और अनेक शास्त्रों के पंडित थे, अतएव उनके काव्य में पूर्ववर्त्ती साहित्य का प्रभाव कोई आश्चर्य नहीं । विद्यापति अपने पूर्ववर्त्ती कवियों के आभारी अवश्य हैं, उसी सीमा तक जिस सीमा तक कोई श्रेष्ठ कवि होता है । विद्यापति की मौलिकता अक्षुण्ण है ।

विद्यापति ने पूर्व काव्य की छाया को अपनी प्रतिभा एवं शिला चातुरी से अधिक प्रभावकारी रूप में ही प्रस्तुत किया है । प्रायः सर्वत्र विद्यापति की उक्ति में पूर्व कविता की अपेक्षा चमत्काराधिक्य प्राप्त होता है । इसका कारण उनकी अनुमति की गहराई तो है ही, अभिव्यक्ति की कुशलता भी है । उन्होंने सदा शब्दार्थ को भाव या रस के अनुकूल ही रखा है, इसीलिए उनकी अभिव्यक्ति में मार्मिकता बढ़ गयी है ।

वस्तुतः कवियों में गीति परम्परा का पुनःस्थापन विद्यापति ने प्रारम्भ किया है । कबीरदास ने जो अपनी शिक्षाओं को पदों के माध्यम से व्यक्त किया वह भी विद्यापति का प्रभाव ही कहा जा सकता है, क्योंकि यद्यपि सन्तों ने गीति का प्रयोग विद्यापति के पूर्व ही किया था किन्तु उसमें शृंगार और दर्शन का वह संगीतमय मेल नहीं था जिसको विद्यापति ने प्रारम्भ किया और जो कबीर की रहस्यात्मकता का आधार है । कबीर की सखी जिस तीव्र बेचैनी से प्रियतम से मिलने को आकुल होती है, जिस प्रकार वह आत्मनिवेदन करती है और जिस प्रकार आत्मशृंगार करती है, उस पर विद्यापति की नायिका का प्रभाव अस्वीकार करना कठिन है । अष्टछाप के ऊपर विद्यापति की पदावली का पूरा प्रभाव है । बल्कि कहा तो यह भी जा सकता है कि राधा-कृष्ण को सामान्य नायक-नायिका रूप में प्रतिष्ठित करते हुए जनमानस के साथ एकीभूत करने की जो परिपाटी रीतिकाल से भक्ति-शृंगार का आधार बनी, उसका श्रेय विद्यापति की पदावली को ही मिलना चाहिए ।

अभिसार, मान, निवेदन, सखी प्रेषणा, क्रीड़ा इत्यादि शृंगारिक प्रसंगों को भक्ति से समवेत करने में अष्टछाप के कवियों ने जो कौशल दिखलाया, उसमें और विद्यापति के पदों में इतना सादृश्य है कि वे विद्यापति के काव्यशिल्प की परछाहीं मात्र प्रतीत होते हैं । यह कहना कोई अत्युक्ति नहीं है कि हिन्दी कृष्णभक्त कवियों में जो लीला माधुर्य है वह विद्यापति की देन है । विद्यापति की यह शृंगारी भक्ति ही आगे चलकर मीरा और घनानन्द आदि में चरम सीमा को प्राप्त हुई, भावात्मक देन में ही नहीं, गीति शैली के शिल्प में भी विद्यापति ने रीतिकालीन संगीतमय काव्याभिव्यक्ति के बीज बोये थे । इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि भक्तिकालीन कविता को संगीत की शैली प्रदान करना अर्थात् पद्यबद्ध मुक्तगीति काव्य के शिल्प को जन्म देने का गौरव निस्सन्देह विद्यापति को है ।

हिन्दी के महाकवि तुलसीदास ने **रामचरित मानस** के साथ साथ **गीतावली, कवितावली, विनयपत्रिका** आदि विविध शैलियों में जो रचना की, उसके पीछे विद्यापति का शैली वैविध्य ही है । चौपाई का प्रयोग भी विद्यापति ने बहुत अधिक किया है । पदावली और गोरक्षविजय से भी सम्भव है तुलसीदास **रामचरित मानस** के छन्द-चयन में प्रभावित हुए हों । कृष्णदास, नन्ददास आदि कवियों की कीर्त्तनिआँ शैली भी विद्यापति की देन है ।

केवल भक्तिकाल और रीतिकाल ही नहीं आधुनिक कालमें भी विद्यापति ने कवियों को प्रभावित किया है । डा. आनन्द प्रकाश दीक्षित ने भारतेन्दु पर विद्यापति का प्रभाव दिखलाते हुए कहा है- भारतेन्दु के गीत और उनके राधा कृष्ण विद्यापति के हैं (आनन्द प्रकाश दीक्षित, विद्यापति, पृष्ठ - 44)। उनके बाद रहस्यवादी कवियों से लेकर आज

Scanned by CamScanner

तक विद्यापति गीतिशैली का ही प्रभावोन्माद चढ़ा है। सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो पता चलता है कि आधुनिकतम गीतिकारों की और विद्यापति की गीतिशैली का लक्ष्य एक ही है।

डा. दीक्षित के उपर्युक्त कथन से पूर्णतया सहमत होने में बहुतों को कुछ आपत्ति हो सकती है। भारतेन्दुजी के गीत रीतिकालीन श्रृंगारी भक्ति परम्परा में ही हैं और वह परम्परा विद्यापति से प्रभावित है, फिर भी उनके ऊपर विद्यापति का सीधा प्रभाव दृष्टिगत नहीं होता है। गीति का पुनरुद्भव भारत में पाश्चात्य कलाबोध के पदार्पण के कारण हुआ। भारतेन्दु भी इसीसे प्रभावित हैं। यद्यपि उनके आलम्बन राधा-कृष्ण हैं किन्तु उनमें श्रृंगारिकता का भाव उतना सशक्त नहीं है जो विद्यापति के गीतों के प्राण हैं।

आधुनिक काल के कवियों की दृष्टि में भी विद्यापति कम महत्त्वपूर्ण नहीं रहे हैं। दिनकर ने **मेरी पसन्द की कविताएँ** और निराला ने **चंडीदास और विद्यापति** में कविशेखर के प्रति अपना विशेष आकर्षण प्रकट किया है। पं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इसे ध्यान में रखकर सच ही कहा है कि **विद्यापति ने आगे आनेवाले हिन्दी साहित्य को यहाँ से वहाँ तक प्रभावित कर दिया**। आधुनिक कविता पर विद्यापति का यह प्रभाव अनेक प्रकार का है। कहीं यह वन्दना-प्रार्थना रूप में है तो कहीं विरह, मिलन और कामना रूप में है। रस की दृष्टि से मुख्यतः श्रृंगार, भक्ति और वीर रस का प्रभाव है, किन्तु अधिकांश प्रभाव श्रृंगारिक ही हैं। उदाहरणार्थ विद्यापति के एक वसन्त पद में 'नव' का प्रयोग-

नव वृन्दावन नव नव तरुगन नव नव विकसित फूल
नवल वसन्त नवल मलयानिल मातल नव अलिकूल।

इसी प्रकार निराला की एक कविता में 'नव' की कई बार आवृत्ति हुई है-

नव गति, नव लय, ताल छन्द नव, नवल कंठ, नव जलद मन्द्र रव
नव नभ के नव विहग वृन्द को नव स्वर, नव पर दे

निराला ने शब्द में विशेष को एक ही पद में फैलाने की कला विद्यापति से सीखी है।

निराला ने विद्यापति को कालिदास, श्रीहर्ष, शेली और शेक्सपियर से घटकर नहीं माना है। निराला के संगीत और पाठ सुख की प्रशंसा सभी करते हैं और निराला विद्यापति की कविताओं में पाठ सुख का चरमोत्कर्ष देखते हैं। इस शब्दावृत्ति शिल्प का विद्यापति ने अपने पदों में दो कारणों से प्रयोग किया है। एक तो सभी को एक रंग देखने के कारण और दूसरे अलंकारधर्मी होने के कारण। नख-शिख वर्णन के निम्न पद में सारंग शब्द की आवृत्ति का दूसरा कारण है-

सारंग नयन, वयन पुनि सारंग, सारंग तसु समधाने
सारंग उपर उगल दस सारंग, केलि करथि मधुपाने

सूरदास ने सारंग की अनुकृति की है-

सारंग सारंग घरहि मिलावहु
सारंग विनय करत सारंग सों, सारंग दुख बिसरावहु
सारंग समय दहत अति सारंग, सारंग तिनहिं दिखावहु
सारंग पति सारंग घर जैहैं, सारंग जाइ मनावहु
सारंग चरन सुभग कर सारंग, सारंग नाम बुलावहु

Scanned by CamScanner

निराला आदि ने तो इस टेकनीक को लेकर अन्य शब्द की आवृति की है किन्तु सूर के तो शब्द भी वही हैं। ध्वनि और संगीतशास्त्र के शब्द-प्रयोगों की दृष्टि से विद्यापति का प्रभाव हिन्दी कविता पर है। निराला की सांध्यकाकली की कुछ कविताओं पर विद्यापति की निम्न पंक्तियों का प्रभाव है-

बाजत द्रिगि द्रिगि धोद्रिम दिमिआ ।
नटति कलावति माति स्याम संग कर करताल प्रबन्धक धनिया ॥
डम डम डंफ डिमिक डिमि मादल रुनझुनु मंजिर बोल ।
किंकिनि रनरनि बलया कनकनि निधुबने रास तरल उतरोल ॥
बीन रबाब मुरज स्वरमंडल सारिगमपधनिसा बहुविध भाव ।
घटिता घेटिता घन मृदंग धुनि चंचल स्वरमंडल करु राब ॥

विद्यापति के वय:सन्धि वर्णन से हिन्दी के बहुत से कवि प्रभावित हुए हैं। वय:सन्धि की अवस्था में उनकी नायिका के यहाँ **सैसव जौवन दुहु मिलि गेल**, बिहारी की नायिका का भी यही हाल है **छुटी न सिसुता की झलक झलक्यो जीवन अंग** । नख-शिख वर्णन की परम्परा विद्यापति से प्रारम्भ होती है। जायसी से लेकर रीति कवियों तक ने नख-शिख का वर्णन किया है। विद्यापति के नायिका के नेत्र देखिए-

लोचन जुगल भृंग अकारे । मधुक मातल उड़ए न पारे ॥

और यहाँ सूर के नायक नेत्र- **मनहुं कञ्ज ऊपर बैठे अलि, उड़ि न सकत मकरन्द लुभाने ।**

विद्यापति की मानवती नायिका के समक्ष कृष्ण के लाल नेत्र रहस्य प्रकट करते हैं-

लोचन अरुण बुझल बड़ भेद । रयनि उजागर गरुअ निबेद ॥

तो बिहारी के यहाँ भी- **आज कछू और भए, ठये नये ठिक ठेन ।**

विद्यापति एवं जायसी के नख-शिख वर्णन प्राय: एक से हैं। सद्य:स्नाता के वर्णन में विद्यापति ने नायिका के वस्त्रों के शरीर से अलग होने से उनके रुदन की कल्पना की है-

ऐसन रस नहि पाओब आरा । इथे लागि रोए गरए जलधारा ॥

ऐसी ही दशा में नन्दलाल की नायिका के कपड़े भी रोने लगते हैं-

नवला निकसत तीर जब नीर चुअत वर चीर
जनु अंसुवन रोवत बसन तन बिहरन की पीर

नीति और वीर रस की धारा विद्यापति की बहाई हुई है। **पुरुष परीक्षा** में शृंगार रस के परदे में राजनीति और धर्म की शिक्षा है। पं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार भक्ति युग के कवियों ने विद्यापति से अलंकार पाया, शैली ग्रहण की और वर्णन विधि प्राप्त की तथा रीति युग के कवियों ने वर्ण्य विषय प्राप्त किया। नन्ददास की विरहमंजरी, रूपमंजरी तथा मानमंजरी ग्रन्थों के कुछ वर्णन विद्यापति के नख-शिख वर्णन, वय: सन्धि वर्णन तथा सद्य: स्नाता वर्णन से पूर्णत: प्रभावित हैं। विद्यापति के कृष्ण यदि नायिका का शृंगार स्वयं करते हैं-

कंचुक देह हृदय पर मोर । परसि पयोधर भए गेल भोर ॥
कंठ पहिराओल मनिमय हार । अंग बिलेपन कुंकुम भार ॥

तो सेनापति का नायक भी पीछे नहीं है-

फूलन सौं बाल की बनाइ गुही बैनी लाल, माल दीनी बंदी मृगमद की असित है ।
अंग अंग भूषण बनाइ बृज भूषण जू, बीरी निज करके खबाई अति हित है ।

Scanned by CamScanner

मतिराम के कृष्ण भला कब चूक सकते थे-

आपन हाथ सों देत महावर, आपहि बाल संवारत नीके
आपुनहि पहिरावत आनि के हार संवारि के मौलासिरी के

एक स्थल पर मिलन में विद्यापति की नायिका नहीं-नहीं करती है-

एक पए कह धनि नहि नहि बोल । नहि नहि कहथि नयन झर नोर ॥

प्रियतमा की उस नांही को दुलह कवि इस रूप में वर्णन करते हैं-

धरी जब बाहीं तब करि तुम नाहीं, पांय दियो पलिकाहि नाहीं-नाहीं, के सुहाई हो
बोलत में नाहीं पट खोलत में नाहीं कवि दुलह उछाही लाख भांतिन लहाई हो

काव्य में परकीया प्रेम को उच्चासन पर बिठाने का कार्य विद्यापति ने किया है । विद्यापति की नायिका **कुलकामिनी छलौं, कुलटा भए गेलौं, तिन कर वचन लोभाइ,** कहती है । भारतेन्दुजी ने **यह पाखे पतिव्रत ताखे धरौ** की सीख दी है । दृष्टिकूट की सर्वप्रथम रचना विद्यापति ने की है । उन्होंने ही गीत पद्धति चलायी है तथा राधा और कृष्ण जैसे आश्रयालम्बन प्रस्तुत किए हैं ।

तुलसी की समन्वयकारी दृष्टि विद्यापति में पहले से विद्यमान थी । विद्यापति ने **हर** और **हरि** की एकता के द्वारा **हरिशंकरी** रूप की मनोहारी स्थापना की है-

भर हर भल हरि भल तुअ कला, खन पित बसन खनहि बघछला ॥
खन पंचानन खन भुज चारि, खन संकर खन देव मुरारि ॥
खन गोकुल भए चराइअ गाय, खन भिखि मांगए डमरु बजाय ॥

तुलसीदास ने भी विनयपत्रिका में हरिशंकरी स्तुति की है-

रुचिर हरि शंकरी नाम मंत्रावली द्वन्द्व दुख हरनि, आनन्द खानी ।
बिष्णु शिव लोक सोपान सम सर्वदा वदति तुलसी दास विशद बानी ॥

विद्यापति का कृष्ण-शंकर का यह रूप हिन्दी काव्य में प्रतिष्ठित हुआ । रसखान के यहाँ का दृश्य देखिए-

इक ओर किरीट लसै दुसरी दिसि, नागन के गन राजत री ।
मुरली मधुरी ध्वनि ओठनि पे, उत डामर नाव से बाजत री ॥

भक्ति क्षेत्र का यह समन्वयवाद विद्यापति की देन है । उनके लिए गंगा, पार्वती, सरस्वती, काली, लक्ष्मी सब एक हैं । विद्यापति ने शंकर के अर्द्धनारीश्वर रूप का वर्णन किया है । सेनापति ने भी इसी रूप की स्तुति की है । पद्माकर का **गंगा वर्णन** विद्यापति के गंगा वर्णन से साम्य रखता है ।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने विद्यापति से बहुत प्रेरणा ग्रहण की और उन्होंने अनेकत्र इस बात का उल्लेख किया है कि बचपन से ही वे विद्यापति की कविता पढ़कर आनन्दित होते रहे । यद्यपि चंडीदास एवं अनेक वैष्णव बंगाली गीतकारों पर विद्यापति के प्रभाव का अध्ययन किया जा चुका है किन्तु टैगोर की **गीताञ्जलि** पर भी इनका यथेष्ट प्रभाव दृष्टिगत होता है । वस्तुत: सम्पूर्ण उत्तर भारत के साहित्य को प्रभावित करनेवाले यदि किसी एक काव्यशिल्पी का नाम लेना है तो वह नि:संदेह विद्यापति का ही होगा ।

●

Scanned by CamScanner

लछुमनदास कृत हरि-सुरसरि संवाद अथवा गंगा सम्मर

डा. श्रीमतीयोगमायाझा

मैथिली साहित्यक मध्यकालमे अनेक एहन कवि देखल जाइत छथि जनिकर परिचय सर्वथा अज्ञात छनि। एहनो कवि सब सेहो प्रकाशमे आबि रहल छथि जनिक परिचय तँ नहिये, अपितु रचनो पूर्वमे लोककेँ जानल नहि रहलैक अछि। एहने कविमे एकटा कवि छथि लछुमन दास। हिनकर रचना-शैली, छन्द, भाषा ओ भावधारासँ प्रतीत होइत अछि जे ई रामाश्रयी शाखाक भक्त सन्त कवि छलाह तथा हिनक स्थिति काल अठारहम शताब्दीक उत्तरार्धमे रहल होयतनि। 'मैथिली साहित्यमे गंगा' विषयपर अपन शोधक क्रममे हमरा अपन पारिवारिक पुस्तकालयक हस्तलेख-संग्रहसँ हिनक एकटा विलक्षण कथा काव्य 'गंगा सम्मर' अथवा 'हरि-सुरसरि संवाद' प्राप्त भेल जे पूर्वमे अनभिज्ञात छल। ई मैथिली काव्य-परम्परामे एवं गंगास्तुति परम्परामे सर्वथा अभिनव भाव ओ रीतिक काव्य थिक।

एहिमे कवि अत्यन्त कुशलतापूर्वक राम ओ गंगाक महिमाक प्रतिपादन कयलनि अछि। संगहि अहल्याक उद्धार ओ राम द्वारा शिवधनु-भंगकेँ गंगाक आशीर्वादक परिणाम मानलनि अछि। प्रसंग अछि जे ताड़का वध कऽ विश्वामित्रक संग राम-लक्ष्मण गंगातटपर आबि गंगाकेँ प्रणाम कऽ पार उतरवाक हेतु नावपर चढ़ैत छथि। किन्तु गुरु विश्वामित्र गंगाक महिमाक वर्णन कऽ राम-लक्ष्मणकेँ पहिने गंगाजल माथपर छिटबाक हेतु कहैत छथिन। राम गंगाजलमे हाथ दैत छथि। तखनहि गंगा हुनक हाथ पकड़ि प्रकट होइत कहैत छथिन जे– हे हरि! अहाँ एतेक पीड़ा किएक दैत छी ? अहाँ सभक आशा पुराओल। अहीँसँ हम उत्पन्न छी, अहीँक अनुचरी छी। अपना चरणमे स्थान दिअऽ।' राम एहिपर उत्तर दैत छथिन जे– रघुवंश नित्य अहाँक चरण पूजैत रहल तेँ ई अपराध कोना करु ? जँ अहाँक जलमे पैर देब तँ नरकोमे स्थान नहि भेटत। अहाँक विनती पूर्ण करब हमर साध्य नहि अछि।'

एहिपर गंगा कहैत छथिन जे– ताड़काक अहाँ वध कयल। ओ बिनु जप, तप आ यज्ञ कयनहि सुरपुर चल गेलि। ई हमर केहन दुर्भाग्य अछि जे अहाँक दासी हम विकल भेल छी। सकल ब्रह्माण्ड अहाँक पदतलमे स्थित अछि, तथापि अहाँकेँ वसुधाक पुण्य दान कयल गेल (तखन विष्णुपदसँ निःसृत गंगामे विष्णुरूप रामक चरण गंगामे किएक ने पड़य ?)

राम कहैत छथिन- हम तँ दुइ आखरक (राम) छी, गाम अवध अछि। हमरा क्यो नहि जनैत अछि (अगोचर छी)।'

तखन कलपि कऽ गंगा कहैत छथिन जे– अहीँक चरणसँ निःसृत होयबाक कारणेँ हमर नाम विष्णुपदी भेल। हम सुरपुरक त्याग कयल। अहाँ हमरा बिसरि देल, मुदा हे राम हम अहाँकेँ नहि बिसरब।'

एहिपर पुलकित होइत त्रिभुवनपति राम कहैत छथिन- वेद-पुराण अहाँक महिमा कहैत छथि। अहाँ हमर पितर लोकनिक उद्धार कयल। हम कोन प्रकारेँ अहाँकेँ पैरसँ छुइब जनिक एतेक उपकार रघुवंशपर कयल अछि। हम तँ लघु मानव जाति छी। अहाँ जगन्माता छी। हम अहाँक बालक छी। हम हरिक समतुल्य कोना होयब !'

तखन गंगा कहैत छथिन जे- अहाँ अपन वचनसँ पाछाँ नहि हटब। हमर वचनक मर्म राखि लेब। अहाँ अपनाकेँ हमर पुत्र कहल अछि तँ हमर एतबा कथन मानि ली आ अपन चरणसँ हमर जलक स्पर्श कऽ ली।' गंगाक वचन सुनि राम निरुत्तर भऽ गेलाह। ओ हँसि बजलाह जे - हे देवी! अहाँ अत्यन्त चतुर ओ बुद्धिमती छी। स्नेहक डोरीमे तेहन कसि कऽ बान्हि देलहुँ जे हम अहाँक वचन मानि लेलहुँ।

Scanned by CamScanner

प्रेमाश्रुसँ रामक आँखि डबडबा जाइछ । ओ माथ झुका लैत छथि । स्मित हास्यक संग राम गंगाजलमे चरण पखारि गंगाकेँ सनाथ करैत छथि । गंगा कहैत छथिन जे पैरसँ अहाँ हमर स्पर्श कयलहुँ तँ हमहूँ आशीष देलहुँ जे अहाँक चरण-रज पाबि पाथर भेलि अहल्या नारी बनतीह । कतेको पैघ वीरसँ नहि डोलनिहार शिवधनु अहाँक छुबितहि टूटि जायत ।

तखन प्रभु रामचन्द्र हाथ जोड़ि माथ झुकाय गंगाक स्तुति गान करैत छथि । राम ओ गंगाक ई संवाद देखि ऋषि आनन्दमग्न भऽ जाइत छथि ।

जेँ ई सम्मर अद्यपि अप्रकाशित अछि तेँ एकरा समग्र रूपमे उद्धृत करब उपयोगी सिद्ध होयत–

प्रथमहि प्रणमब माता सुरसरि, तखनहि बाल गणेश । यौ
ईशक पद-रज शीशहि धारब, सुमिरब पिता महेश ।। यौ
सुर नर मुनि हरि-सुरसरि जापय, महिम दुहुक बड़ गोट । यौ
अपरुब मिलन संवाद दुहुक भेल, बरनब दृश बड़ छोट ।। यौ
असुर सँहारि चलल रघुनन्दन, सुरसरि नदि केर तीर । यौ
विश्वामित्र गुरू चलु आगू, पाछु लखन सन वीर ।। यौ
हरखित सबजन प्रणमल गंगा, झट भेल नाह सबार । यौ
जाय जनकपुर देखब स्वयंवर, केवट खेबु पतवार ।। यौ
तिनिहु भुवन मध परम पुनित नदि, छिटु सिर जल दुहु भाय । यौ
कलमख नशय सकल एक बुन्दहि, महरिखि कहल बुझाय ।। यौ

गुरुक वचन सुनि दशरथ नन्दन, कर देल नदि केर नीर । यौ
पकड़ल हाथ प्रगटि देवि सुरसरि, किए देल प्रभु अहाँ पीड़ ।। यौ
जगकेर आस पुराओल प्रभुजी, विनति सुनिअ मोर कान । यौ
अँहँ सओँ जनमलि अँहि केर अनुचरि, चरणहि दिअ असथान ।। यौ

नित रघुवंशहि पद तोर पुजु, हम कोना करू अपराध । यौ
जओँ पद पड़ु जल नरको न पाएब, तोहर विनति नहि साध ।। यौ

तड़िका बधल बसलि जा सुरपुर, कयल न जप तप जाग । यौ
हम तोर दासि विकल भेलि रघुवर, केहन हमर दुरभाग ।। यौ
सकल ब्रह्माण्ड तुअ पद तल बसु, वसुधा करु पुन दान । यौ

आखर दुइ हम गाम अवध मोर, केओ नहि जग मोहि जान ।। यौ

कलपि कहलि गंग निकसि तोहर, पग विसुनपदी भेल नाम । यौ
सुरपुर तेजल हरि मोहि विसरल, हम नहि बिसरब राम ।। यौ

वेद पुराण लिखल तोर महिमा, कयल पितर उद्धार । यौ
पएर लगायब केहि विधि तोरा, जकर एतेक उपकार ।। यौ
पुलकि कहल प्रभु हरि त्रिभुवनपति, हम लघु मानुख जाति । यौ
तोँहें जगमातु हमहुँ तोर बालक, हरिहि तुलब केहि भाँति ।। यौ

Scanned by CamScanner

पाछु घुमब नहि अपन वचन सओँ, वचन-मरम लेब मानि । यौ
जओँ मोर पूत कथन एत मानिअ, पग सओँ छुबु मोर पानि ।। यौ

निरुतर भेल हरि हँसि हँसि बाजल, तोहेँ देवि चतुर सेयानि । यौ
स्नेहक डोर तेहन कसि बान्हल, बचन लेलहुँ हम मानि ।। यौ
प्रेमक नोर नयन करु डबडब, राम झुकाओल माथ । यौ
विहँसि प्रभू पग निरहिँ पखारल, गंगा कयल सनाथ ।। यौ

माय कहल पगसओँ मोहि छूबल, हमहुँ देल आशीष । यौ
पद रज तुअ लए पाथर अहिल्या, नारि बनत जगदीश ।। यौ
कत बड़ वीरहि डोल न शिवधनु, तोहेँ छुबितहि टुटि जाय । यौ
असतुति गान कयल प्रभु सुरसरि, कर जोड़ि शीश झुकाय ।। यौ

हरि, सुरसरि संवाद निरखि ऋषि, चित भेल मगन विभोर । यौ
लछुमनदास हरिक महिमा देखि, नयनहि बहबथि नोर ।। यौ

उपरिउद्धृत हरि-सुरसरि संवाद किंवा गंगा सम्मरक अवलोकन कयला उत्तर ई प्रतीत होइछ जे ई काव्य मैथिली कथा-काव्यक परम्परामे महत्त्वपूर्ण स्थान पयबाक अधिकारी अछि । चन्दाझासँ पूर्व मैथिलीमे रामकाव्यक विरलता देखल जाइत अछि । अवश्ये अठारहम शताब्दीमे भेल सन्तकवि साहेबरामदास मैथिलीमे राम विषयक पदक रचना कऽ कऽ एकर श्रीगणेश कयलनि आ शिवदत्त सर्वप्रथम सीता सम्मर सन प्रबन्ध काव्यक रचना कऽ कऽ एहि परम्पराकेँ एकटा आधार प्रदान कयलनि । प्रायः साहेबराम आ शिवदत्तक अभ्यन्तरहिमे रहल होयताह लछुमनदास जनिक परिचय एखनहुँ अज्ञात अछि । हिनक रचित ई हरि-सुरसरि संवाद अभिनव रीतिक काव्य थिक जे कविक मौलिक उद्भावना थिकनि । प्रायः कोनहुँ रामायणमे एहि तरहक प्रसंग नहि आयल अछि । ई स्वतन्त्र कथा-काव्य थिक किंवा राम विषयक कोनो प्रबन्ध काव्यक अंश विशेष से विश्वासपूर्वक नहि कहल जा सकैत अछि, मुदा ई जाहि आकारमे उपलब्ध भेल अछि से स्वयंमे पूर्ण ओ रोचक अछि । कोनो प्रबन्ध काव्य सदृश एकर आरम्भ ईश्वरक स्मरण किंवा वन्दनासँ प्रारम्भ भेल अछि । कवि गंगा, गणेश, विष्णु ओ महादेवक वन्दना करैत एहि काव्यक सीमा-रेखा स्पष्ट करैत कहैत छथि– बरनब दृश बड़ छोट यौ । एहि कथा काव्यमे मात्र चालीस गोट चरण अछि । ई देखला उत्तर प्रतीत होइत जे– कवि रामायणक विभिन्न प्रसंगक फराक-फराक चालीस चरणमे निबद्ध कथा-काव्य सभक रचना कयने छल होयताह । जेना कि आलोच्य काव्यमे अहल्योद्धार ओ सीता स्वयंवरक संकेत कयने छथि । मुदा जेँ कि एहि कविक कोनो दोसर रचना एखन धरि नहि प्राप्त भेल अछि तेँ विश्वासपूर्वक किछु कहल नहि जा सकैत अछि । तथापि जतबे प्राप्त भेल अछि से स्वयंमे एकटा पूर्ण काव्य थिक जाहि आधारपर ई तँ निर्भीकतापूर्वक कहले जा सकैत अछि जे– कविक अभीष्ट 'चालीसा' कोटिक स्तुति-काव्यक रचना छल होइनि । एहि स्तुतिमे एकटा अभिनवत्व अछि जे कवि स्वयं अपना दिससँ नहि किछु कहि राम ओ गंगाक बीच संवादक द्वारा दुनू वैष्णवी शक्तिक महिमा प्रतिपादित कयलनि अछि । कविक भाषापर मनबोधक कृष्णजन्मक छाप स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि । तत्समहु शब्दकेँ कवि यथानुकूल तद्भव बना देलनि अछि, जेना असथान, दुरभाग, महरिखि, निरूतर, असतुति आदि । मैथिलीक राम विषयक किंवा गंगा विषयक दुहू कोटिक काव्यमे ई महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत अछि । एकर गायन बरहमासा ओ सम्मर, दुहू भास परम्परामे कयल जा सकैत अछि । दुनूमे भासपूरक शब्द 'यो' किंवा 'यौ'क प्रयोग होइत अछि जे लोककण्ठमे अयलाक कारणे मिथिलाक भासपरक गायकी परम्पराक अनुरूपेँ जोड़ल गेल होयत । मूलतः दू-दू पदमे क्रमशः अन्त्यानुप्रासक संग दोबय छन्दमे एकर रचना भेल अछि ।

●

Scanned by CamScanner

Few points of Translation individual Vs Group

Shree Anjan Sen

Translating consists in reproducing in the receptor language the closest natural equivalent of the source language message first in terms of meaning and secondly in terms of style (Nida/ Taber 69). A translation may be called a semantically and stylistically qualitative equilibrium between source language and target language.

Inter-lingual translation consists of two alternative encoding and decoding events.

(i) Source language Authors encoding of massage in the source language code-Text analysis/ Text identification.

(ii) Translators decoding of message in source language.

(iii) Translators encoding of messaged in target language.

(iv) Target language speaker's decoding of target language message.

When an individual translates a text it is his own version, his own perception, a work comes into hands of reader and translator in the shape of a text and during the process of perception it functions as objective material that is transformed through the individuality of the perceiver-reader. This moment may be defined as the readers actualization. An individual translator expresses his conception through language.

An individual translator is translating the ideational aesthetic content with the text serving as the vchicle of the content. A text is preconditioned by the source language and this implies that many significant values of the original must be expressed by different linguistic means than those employed in the source language.

An instance can be given from Sukumar Roy's English translation by Sukanta Choudhary-

In the Lord Shiva's native land
The laws are hard to understand.

'hard to understand' is not lexically equivalent to Bengali 'सर्वनेसे' but is conveys the meaning otherwise 'dangerous' could have close to 'सर्वनेसे'.

Every language has its own form, own cutural background. A text is having two functions - aesthetic and socio-cultural. It will be very difficult for a western reader to understand Tarashankar Bandopadhyay's अग्रदानी (Agradani) in absence of the Agradanis, पिण्ड (pinda) in their socio-cultural concepts.

The individuals perception process culminates with the actualisation of the text, that is,

Scanned by CamScanner

with the formation of an image of it in the mind of the reader. The translator expresses his conception through language and that is the difference between the ordinary reader and the translator. The translator goes one step further to a linguistic materialization of the semantic values.

We can say a few words about artistic language itself. Following Yuri Lotman it can be stated 'Art is magnificantly organised generator of languages of special type, which render an indispensible servic to mankind, attending to one of the most complex aspects of human knowledge, one whose mechanism is even now not completely understood.

Therefore, the task of a translator of an artistic text is not easy as the information available in the text is not ordinary informat they originated from the complicated aspects of human knowledge. Man is inevitably drawn into the process of reception and deciphering information, he is caught up in the flow of information, life transmit its signals to him. If man fails to cope with the growing need to decipher this flow of signals and convert them into signs that have the power to communicate, these signals will remain unheard, the information will not be understood.

Types of individual translators of artistic texts : Unlike western countries, in India we don't have the community of specialised translators of literary texts. Poets of Indian Languages are translating poetry from various languages. Indian and non-Indian. Very few translations have been made directly from original European languages, otherwise source of translation is always based on English translations. We can generalise that translations made by the poets are artistically competent translation, but if we consider from the point of view of informatin as a whole, such translations are not quite close to the source language. It is the poet's own interpretation of a particular poetic text expressed in poetic language. Perhaps, readers will prefer a poet's translation of a poetic text for the poeticalness, literary quality of the translation. Translations of short story and novel are generally done by typical translators, of course we have the unique example of translation by poets like 'Candide' by Arun Mitra, 10 German stories by Alokeranjan Dasgupta some stories of Leu Tolstoy by Samar Sen. Zadig on La Destince Histoire Orientall of voltaire by Puskar Dasgupta. Jyotirindra Nath Tagore was also a great translator of French Literature.

Translation by a Group

Another method : When a text is translated by two or three persons: one person is a specialist in the source language another person is a specialist in the target language. This is a possible way to close original translation the two specialists in two languages can check each others work. If the two persons are creative writers then the transation must have some aesthetic value in target language along with faithfulness to the original. The problem of transfer, that is decoding of source language and encoding of target language could be solved to a certain extent as a second person is always available to make up the defficiencies of the first person. Some elements of transfer process :

(a) Degree of the pertinent text and the translators competence level.

(b) Degree of syntactic, Lexical and socio-cultural contrastivity between source language and target language code.

Scanned by CamScanner

(c) The distance between the source Language/Target Language, lexical and syntagmatic/syntactic repertories etc.

Jiri Levy the czech theoretician pointed out that the greater syntactic complexity of certain languages permits a greater semantic flexibility in the assoication between thoughts; for example, gerunds in Russian allow an author to embarace several concurrent or successive actions within a single verb complex or a German author can use compound substantives to express both an object and its attributive quality. Abstract nouns that are more frequent and stylistically more neutral in French.

A third person may be inducted in a group of two, when there is no creative writer in the group of two. This method can be applied when a poem is translated. A linguist will use his knowledge command over the language.

Nida stated, the socio-lingguistic approach to translating distinguishes carefully between theoritical norms and practical norms, that is, between what the receptors should understand and what they in fact do understand. This means, for example, that "to love with the heart" becomes "to love with the liver" in many languages of west Africa and "to love with the abdomen" in most Mayan Languages. (Dr. Sisir Kumar Das told us about his experience in regard to Bengali translation of Antigone.)

Whenever two or more persons are involved in a translation work a different result may be expected, specially for artistic texts. Two persons perception will be different also. Edward sapir said, 'the correspondence between language and thought is uniformly the same for all authors.

Alokeranjan Dasgupta and Lother Lutze translated together some Bengali poetry in 1972 into German, published later as 'Ganga Delta' from Germany, where Alokeranjan Dasgupta checked the German part-whether they are close to original german and Lother Lutze checked whether they have literariness in German. They are other instances also, but maximum speciman available is done by a single translator for a literary text.

Edward Santa said in a preface to his poems, "Even if my temperament had been naturally warmer, the fact that the English language (and I can write no other with assurance) was not my mother-tongue would of itself preclude any inspired use of it on my part, its roots do not quite reach to my centre. I never drank in childhood the homely cadences and dittics which in pure spontaneous poetry set the essential Rey."

In soci-linguistic theory of translation (NIDA & TABER 1969) the term, 'target language is rejected, instead of 'target language' the term 'receptor language is used. Here importance is given to the point that if a rendering is not understood correctly for whom it has been prepared, it is obviously not a correct rendering, no matter how much formal equivalance may exist between the corresponding expressions in the source and the receptor language. The socio-linguistic approach to translation distinguishes carefully between theoritical norms and poetical norms, that is between what the receptors should understand. All receptors in any particular language are not alike. Varying educational levels, occupations and interests greatly affect the ability of people to understand a

Scanned by CamScanner

message. A speialist reader's primary concern is to receive correct information but a general reader will be happy with the translated text with pleasing literary style even if with incorrect interpretations of the message.

For successful communication an author should be able to identify with his readers/audience. The author anticipates reader's reaction which is called 'Anticipatory Feedback'. It is said just literary skill is not sufficient, a combination with sensitive anticipation of feedback should be there. It should not be assumed by the translator that his reader will be same as the source text, and the original writer's identification with the primary audience/reader will suffice for the secondary audience.

Here we again feel the importance of a group of translators. Instead of sending the translated texts to the experts for opinion if it is translated by a group a better result is expected. The group can consider various points of translation, literary style, information, message - correct interpretation.

We have seen the results, of group translation while translating terminologies used in linguistics and poetics. The word "structure" is very common in contemporary poetics and semantics. In Hindi there is only one agreed term संरचना for structure, but in Bengali different authors are using different terms like संस्थान, संगठन, अकरुण, ग्रन्थन' etc. It is confusing for the readers also. Therefore, it is necessary that a group of specialists should translate Hindi equivalent of 'myth' is मिथक in Bengali we have at least four terms, पुराण, लोकपुराण, लोकवृत्त, अतिवाहन ।

Traduction an recour - a theory of translation recently developed in France and USSR. When a text is continuously translated from the source language (SL) into target language (TL) and again from TL to SL, SL to TL. This multiple translation process is followed to active some universals of language, to bring it in a shape through universally common elements. A group has to work for such translation. However, we are not sure about the result of traduction an retour.

We can not come to a positive conclusion but we can generalise by saying that, if we looking for a creative text it is better to have an individual translator provided the translator be a creative writer. But if we are working for the translated text the performance of a group is perhaps more valid.

References :

1. Nida, E.A. and Taber, C. 1969 The theory and practice of Translation.
2. Nida, E.A. and Taber. C. 1969 Translation as communication.
3. Levy, J. 1963, 1976, The Translation of Verbal Art
4. Lotman J. 1977. The Structure of the Artistic Text (trs)
5. Wilss W. 1982. Methodological Aspects of the Translation Process.

●

Scanned by CamScanner

Perspectives of Translation

Dr. Shree Jagannath Chakravorty

Translation deals with Language, and language is essentially a 'message in codes'. Translation is a bilingual process, and culturally it frees us from our basic monolingual insularity. Translation is a journey from one language to another. It is not, however, any transference. Translation does not transfer anything from one language to another as it is, that would be borrowing or export-import transaction. We may borrow or transfer a few words or expressions but we cannot transfer a whole body of language to another. So in translation what we seek is not transference but substitution.

Language is essentially a code or a system of symbols or signs or signals that signify the message. There is as yet no universal language like Esperanto accepted by all peoples. Every language has its distinct code or system of signals or symbols valid or meaningful with in the frame of its particular code. Only the people belonging to the language are familiar with the key so that they alone can understand the signal and dicipper the code. So when it is loosely said that translation is decoding, the statement is not strictly speaking correct. He should rather say that translation is not a 'decoding' but 'recoding' process. Of course, the message which has already been encoded in one system of signals or symbols, wherein comes the process of destructuring and restructuring. This second encoding is not straight from message to code as in the first case or origina composition, but only from the message inferred from that code to the new code. This process of inference has to be gone through by every reader, and the translator as reader has a very crucial role to play in the business of decoding and recoding.

The inference of the message, which we call understanding of the meaning, is done with the help of the key provided, conventionallly, by the dictionary and the grammar of the source Language. The essence of any languager is not surely its dictionary and grammar or code, the essence is the message which, particularly in literature, is a complex entity. The leader of the Geneva school of Linguistics Saussure very rightly made a distinction between the 'langue' and the 'parole', the 'langue' being the code part of a language and the 'parole' that part which is not the code but which makes a language active, living, kinetic and free. It is a commonplace experience that often a good orator or writer is ignorant of the code, that is grammar, and yet is excellent in his out put. This is the ever-creative, ever-changing aspect of a language, which the socio-linguists and the psycho-linguists try to understand. The grammarian's taxonomy looks at a language synchronically even though the user of the language, the speaker or the writer, lives in an evolving and relative situation of history which is diachronic.

Comparative literature is a rather recent concept, although literary translation is one of the most ancient practices in the world. We could not compare two literatures unless we had access to the messages contained in more than one literature, in short, unless we had translations. Besides

Scanned by CamScanner

translation itself is a comparative exercise. Every translation of literature is a comparative function. It is time when in a multi-lingual polyglot like India translation study should be accepted as Translation science or Translation Art or both, and accepted in its own right, not just as a minor branch or side-business of comparative literature studies, but as a major literary discipline. If we fail in this respect, the very enrichment of our literatures will be put off. To regard translation as a subsidiary or derivative craft, a mechanical, non-creative activity has to be given up.

I have described translation as a process of decoding and recoding. Now let me put it in a simpler from. Translation is a journey from the source language (SL) to the target anguage (TL), or a process through which a given input is transformed into a new output. The SL, as coded, has two things, a surface-meaning of the message, and a structure. The end-product of TL has also two things, a surface-meaning and a structure. Let us be clear that the surface-meaning is sought to be transferred through equivalence or near-equivalence, but the structure as it is, cannot be transformed easily, if at all. The surface-meaning has to be put into the new structure of the TL. No two languages have equal or identical structures; only in intra-lingual translation therre is partial identity of structure. Each language is unique for its unique structure. The very important marker of a translated work is the epithet 'translated'. This at once put limits to our expectations and even delimits the parameter of our evaluation. Translation never gives us the very thing, but something like its substitution. But from the point of view of inter-cultural communication the value of this substitution business is not small, in fact, its importance is enormous. For every man, ideally, has the right to express himself through his own tongue to his own people and also to understand other peoples and express himself to them in some form or other. That is to say, every man, needs to perform a journey from mono linguality to bilinguality or multilinguality.

I have said that Translation is a recoding process. I emphasize the word. 'process'. As long as we do not accept Translation as a science or a major art, we are wholly concerned with the product and not the process. Mukarovsky Jakobson, the prague school, the structuralists, the semioticians, the socio-linguists, the psycho-linguists, the anthropolinguists, the mathematical linguists, all have drawn our attention to the process, the mechanism, the possibility or impossibility of the task, what I would call the physics or chemistry of Translation. The roles of the Author, the Translator and the Reader are being separately and jointly studied for a fuller understanding of the process as a whole. The roles of the reader has to be studied sociolingustically as well as philosophically. We have also to probe the reality of a subtoxt or a metatext, and the possiblity of more than one Translation of the same text existing simultaneously.

In any journey there is some risk. A translator will surely like to arrive safe from SL to TL with his baggage intact. We all like to reach our destination 'hale and hearty' - 'hale' really means 'whole', that is, unimpaired, without losing weight, and 'hearty' means without losing the cheer of the mind. In short, we want to have both body and mind of literature intact in the Translation. We pray that nothing is 'lost in transit' in our journey of translation. At least in translation, the lesser the loss, the greater the joy of successful reaching, we should here compare and contrast the losses involved between intralingual translations and may note that the losses within a group of languages, related culturally, geographically and socially, are minimum. The chances of loss, for example, are

Scanned by CamScanner

less between Maithili and Oriya than between Maithili and Tamil. It may also be evident through the experience of the Translation workshop what the hither to followed practice of using English as either the SL or the major intermediary is not only unnecessary but actually misleading. Direct translation from SL to TL is not only easler but essential. Heare comes the question of viewing translation as a solo or duo business. In the latter case, two persons from the two languages, SL and TL, jointly perform the task and a kind of verification or checking is ensured in the process itself.

When I spoke of the possible, 'losses' in translation I had in my mind the possible 'gains' too. Literary translation shuttles between these two possibilities and this is why and element of indeterminacy is always there in all literary translation. This again assure us that translation is not a mechanical process and not any all-closed business but to a great extent a creative process of transformation. Even the poet while creating his original poem is not all free but is self-restricted by his own mood or feeling or theme or whatever that be. Translation also is not free, being restricted to a particular parameter which is set by the given text of SL, his starting point. Even poet before he arrives at his final version makes experiment with various alternative forms of expression, and none of them is too far away from the theme he is harping on. This means that a creator is full within a self-chosen boundary. In this sense a translator is also a creator, only his boundary is not self-chosen but given.

Thus literary translation being a work of creation has to be evaluated as a piece of literary creation, neither more nor less. We are yet to evolve a theory of evaluation of literary translation. If encoding is a creative process, successful recoding - in another system of codes - is certainly a creative process. In either case the Reader judges the result while decoding the message for his comprehension. Not to recognise this theoretically is to perpetuate the fallacy and old inferiority complex pertaining to all translation transactions and to leave the prestige of a translator to a low rung.

Like the original creation, translation is also an approximation and passes through an organizing process of trial and error. The very idea of an idal poem is as fanciful as that of an ideal translation. Even the same original Poem is not exactly the same thing to every reader. Perhaps every Reader has the poem he deserves or has the competence for. He gets from a poem what desires to get out of it. Therefore when we discuss a poem we really discuss an agreed surface-maning of it and not its whole or intended message, if any. The same applies to what a critic does when he speaks of its deviation or excellence. It may be that when we are considering translation we must bring our expectation a little down, even in the case of poetry, if we insist on everything of the original poem-its rhythm, alliteration even pun - we may be disappointed. Yet a Translator has to begin with a belief that between any two languages - human speeches - there is a sufficient area of equivalence, although it may not be always apparent, and it is our task to discover it by hard labour and make use of it.

●

Scanned by CamScanner

Indigenous Narrative forms in Assamese

Dr. Shree Birendranath Datta

Our endeavour is to highlight different type of narrative materials available in the Assamese language as also the various performance forms in which narratives feature in a significant manner. We would like to repeat in our particular content here two points. First, some narrative materials are indigenous to Assam in that they are culture-area-specific rather than language-specific; they are shared by Assamese and one or the other of the local tribal languages. Secondly, a particualr narrative content is not always bound to a particular performance form; the same content may be found incorporated in more than one forms, and conversely, the same form may serve as the medium for different kinds of narrative materrial.

Let us start with the three most well-recognised narrative froms-folktale, legend and myth.

In the standard Assamese language a folktale is called **sadhukatha** or simply **sadhu**. The literal meaning of sadhukatha is a tale told by a wandering merchant (**sadhu/saud**). This probably points to the fact that tales were once carried and recounted by wandering merchants. In the Kamrup region the term **sajor katha** is also found among some - a pointer to the fact that tales are normally told in the evening. In the Goalpara region are current terms like **up Katha/ukkatha, Kachcha** and **kahni** the latter two more popular among the Muslims. However, the manner presentation of foktales is almost everywhere the same.. They are told mostly by old men and women to young children gathered around them, usually in the evening. There are few professiona story-tellers. However, one often comes across an expert whose attractive style may make a story-telling event a rewarding experience even for grown-ups.

Folktales are mostly told in prose, often with characteristics opening and closing devices. There are some tales in which particular portions are either recited in verse or sung. In folkloristic terminology such tales are known as **cante fable**. Some well-known specimens of cante fable in Assamese are **Tejimalar Sadhu** (a cinderella type tale), **Kamala Kuwarir Sadhu** (a tale featuring the sacrifice of a queen by the king for the sake of water during severe drought), Champavatir Sadhu (a tale of a stepmother's jealousy and the nemesis) and so on.

There are also ritualistic story-telling sessions that from integral parts of certain **Vrata**-type ceremonies mostly performed by women, such as subachani puja, Ukuni Buri Puja, Sare Barat etc. In these, an expert female story teller (called **kathati** in some parts) recounts a tale or tales extelling the virtues of a deity or a ritual, and it is customary for other women gathered around her to listen to her with devout attention and to give her support with constant gestures and sounds of assent. Some stories are recounted not in prose but in song.

There is no specific traditional Assamese term to designate a legend, such terms as **Katha**

Scanned by CamScanner

and **sadhu** often covers legends also. (Now-a-days **Kimbadanti, janashruti** and **prabad** - all of sankritic affiliation - are used by the literate section). Many legends are connected with places, rivers, hills, tanks and so on; some are woven round uncommon personalities - kings, nobles, heroes - as well as shrines and holy men. Legends are usally told in prose; but while their contents are more or less fixed, they normally do not have a well-defined performance body except when they take the forms of **cante fables** or ballads.

We now come to myths .

Hindu mythology in general is as much a part of the religio-cultural heritage of Hindus of Assam as of Hindus elsewhere. But, at the same time, as the Hinduism prevalent here has its own peculiarities, so also has the local stock of Hindu mythology its own character. Vaishnavism having a pervasive influence among the Hindus, Vaishnava myths, particularly those associated with the neo-Vaishnava order, are extremely popular. While much of this popularity is accountable to the existence of a massive and colourful body of written literature of neo-Vaishnava affiliation, the oral tradition is also very much alive and thriving. Mythological narratives are in currency through such performance modes as **puthi parha** (musical recitation from the holy books), **bhagavat path** (recitation from the Bhagavata with explanatory expositions), **nam goa** (community hymn-singing by female groups) etc. Stories from the two great epics are particularly popular. While basic all-India models of the two epics remain intact, there are also popular and folk versions and many of the episodes are current with local twists and turns. The **Ramayana** story especially has been a perennial favourite and it has percolated down even to the tribal communities through various modes of performance.

In the past Assam happened to be a centre of saivism and saktism. Even today elements of saivism and saktism are very much prevalent at the folk level, and myths connected with siva and the mother Goddess are widely current. Siva in particular is extremely popular at different levels. While several tribal groups associate themselves with siva through various stories, a large number of very interesting stories about this "lovable" god are current among the non-tribal Assamese population in the form of myths, legends, folktales, ballads, songs and other performance forms.

A body of local mythological stories has also developed through the process of Aryanization of erstwhile non-Aryan groups. Some such stories link particular tribes with Hindu gods and goddeses or with important characters of the two great epics with the obvious purpose of ensuring "respectable" status to the groups concerned. Thus the kacharis trace their origin to Ghotokach who was born out of the union of Hidimba, the local demon princess, and Bhima, the second pandava; the Rajbansis ascribe their present status and habitat to the persecution of Parashurama; and the Tiwas tell a story about the birth of their ancestor from the saliva of Siva. Some other stories, obviously fabricated by the Brahmin priesthood, represent attempts to give exalted lineages to ruling dynasties of non-Aryan stock. In one such Story, the progenitor of the koch dynasty is described as the offspring of siva himself. Again, after the adoption of Hinduism by the Ahoms, an original Ahom myth was suitably modified to establish the claim that the Ahom rulers were of the

Scanned by CamScanner

Indra dynasty (**Indra-vamshiya**). However, it is to be noted that most of these new mythological stories are yet to find a proper performance context : they are freely afloat but are not formally performed in any particular performance mode.

While on the subject of stories connected with deities and rituals, we may here deal with a few ritualistic ceremonies in which singing of long narrative songs forms an essential part of the proceedings. Most of these are prevalent in the Goalpara region. **Kati Puja**, which centre round god kati, the local folk counterpart of God **Kartikeya** is a all-woman affair. The main part of the ceremony consists of singing, dancing and mimetic acting. A considerable portion of the songs is made up of narratives in which the story of the birth of God Kati through the union of Siva and chandi is told in elaborate details. It is as it were, a folk version of **Kumarasambhava**. The songs and dances are performed to the accompaniment of the **dhak** (a kind of drum).

Bas puja, also called **Madan-kam Puja**, is the local ceremony dedicated to God Madana or Kamadeva, where decorated bamoos occupy a central place. Among the large variety of Bas puja songs there are many with narrative contents - telling stories about the coming of different types of bamboos, of hemp and other items of flora, and so on and so forth. The performance of the songs take place along with lusty rhythmic support of drum (**dhol** and **karka**) as well as vigorous dancing movements.

Then there are the sonaray songs chanted by cowherd boys on the occasion of sonaray puja offered to the tiger-god of that name. Although the boys sing only short pieces while collecting alms from door to door, the central body of the song is made up of a longish story featuring the birth and growing up (along with Ruparay) of Sonaray and his wonderful exploits. The mode of performance itself is simple and depends on repititive tunes.

Among the **zikirs** and **jaris**, devotional songs of the Assamese Muslims cast in the typical Assamese literary and musical mould, there are some songs with narrative contents. There are also some independent ballads current among the Assamese Muslims like the **Haidor Gajir Geet**.

As for the Assamese ballad, the following comments of professor P.Goswami are pertinent :

"On the whole, Assamese ballads are not a large body. They do not represent the national literary soul though poetry is unmistaken and they do speak for the unlettered masses". (Goswami 1970 : 12).

Of the old traditional ballads so far collected and published, either in full or in part. some are historical, e.g. **Barphukanar Geet, Maniram Dewanar Geet; Haradatta-Biradattar Geet**; some relate tales of wonder, e.g. **Janagabharur Geet, Manikowar phulkowarar Geet**; and still others have romantic themes, e.g. **Dubala Santir Geet.**

Wandering minstrels once used to sing ballads to the accompaniment of the **been** (one-stringed instrument) in a particular musical mode. However, the age of the traditional Assamese ballads seems to be over and they are seen in printed books rather than heard on the lips of the minstrel. Even the ballads describing the laying of the railway line in lower Assam towards the end of the last century, the one about the earthquake of 1897, as also the short pieces inspired by the

Scanned by CamScanner

magnetic personality of Mahatma Gandhi and the non-cooperation movement have practically fallen into disuse. The only traditonal ballad that is sung sometimes even now-a-days is Maniram **Dewanar Geet** associated with the trial and hanging of a patriot of the 1857 period. The song, which has a sad and rather langurous tune, begins like this :

"You smoked on a golden hookah, O Maniram.

you smoked on a silver hookah.

what treason did you commit to royalty.

That you got a rope round your neck...."

Two interesting ballads of comparative recent times cover two local uprisings against the British rule in at Patharughat and Phulaguri.

Some ballad-like songs speak of the birth or creation (**janma//shristi**) of deities, and various items of flora and fauna. We have already described certain types of narrative songs associated with certain ceremonies. Of special interest is the creation ballad (with mythological content) known as **haidang** which is sung by the Sonowal kacharis of upper Assam and which is supposed to cause rain essential in the planting season. Composed in an Assamese patois (the sonowal Kachari tribal group has accepted Assamese as the mother tongue), the song progresses in a curious manner and its meaning is not fully understood even by singers :

What have been created ?

The earth has been sneezing (just born)

Salt has been put down,

The heavens have been created,

Expression has been created.

Water has been created................

One particular class of songs of birth or creation is known as **malita**. There are malitas about the creation of particular culture objects like musical instruments (e.g. **dhol-khol mridangar malita**) as well as malitas about the ganesis of **ragas** or musical modes (**rag-malita**) of the two Assamese raga systems associated with the **Bargits** (neo-Vaishnava devotional songs) and **Oja-Pali** (the performing art form about which we shall have more to say).

In lower Assam, particularly in the Kamrup region, there was till the other day a very popular class of professional entertainers called **bhaoriyas**, who had in their repertory apart from mimes and skits, a larges number of humorous songs highlighting the lighter side of life or describing funny situations. Not a few of them, embellished by appropriate gestures, were loaded with banter, sarcasm and social sattire. There were songs concerining the betel-nut thief (**Tamol-chorar Geet**), the evil effects of tea-drinking (**chah-puranar Geet**), the good-for-nothing wife who just sits and eats while the busband does all the household works over and above farming, and so on.

There are also songs which are humorous simply for the funny manner of putting things-

Scanned by CamScanner

songs about birds with vivid and interesting detacts about their plumage, colouring, call or habit; songs about fishes, some with the description of an imaginary marriage between two fishes, with other fishes joining in the festivity, songs about natural phenomena like floods or earthquakes put in a quanit manner.

In Upper Assam some songs in the lighter vein are designated by the term **Juna**. Such Junas are sung independently or by professional troupes to provide comic inter ludes. Some well known junas are **pachalar Juna** (which describes the poor culinary skills of the daughter-in-law). **Kapahar Juna** (describing the outrageous deeds of a house-wife whose skills at spinning and weaving are atrocious), **Nonjalar Juna** (the funny song of the plough, and so on. Some Juna songs of the Mare-Puja institution of south Goalpara abound in sibaldry. However, there are some narrative songs, although called juna which are sober in content.

We are concluding our presentation with the focus turned on a most interesting form that has narratives as its basic ingredient and is very much peculiar to Assam, and that way, indigenous' in relation to the Assamese language. It is the **Oja-pali** form of performing art which is a delightful combination of narrative singing, dancing and occasional play-acting. Oja-pali is a combination of the two terms Oja, meaning an expert or master, and pali, meaning an assistant. An Oja-pali ensemble is made up of the Oja, who is the principal singer-dancer and also the leader, and a number of palis who assist the Oja by singing the choral parts, keeping time, and keeping up a constant dance movement. One of the palis is known as the **daina-pali** who is the principal assistant and also the Oja's partner in the dramatic dialogues inserted every now and then. These dialogues not only help in explaining events described in the narrative singing but also provides an opportunity for the daina-pali to regale the audience with wit and humour.

There are two principal varieties of oja-pali, one is the sakta variety connected with the worship of the serpent-goddess Manasa, locally known as **Marai/ Mare** Puja As their performance is associated with Mare and the singing of narratives connected with it, such oja-pali troupes go by the name of **mare-goa-ojapali**. Again, since in the kamrup and Darrang regions such troupes sing the narratives from the **Manasa Kavya** ascribed to sukavi narayana, they are also called **suknanni oja-pali** the term being a corruption from **sukavi-Narayani**. In the western parts of the Goalpara region the form is called **padda puran**, derived from Padma, another name of goddess Manasa. A peculiar variety of this from in that region, in which the playing of a speciall type of thute is a distinguishing feature, is known as **bashi-puran**.

The other principal variety of oja-pali is the vaishnava variety popularly called **biyah-goa oja-pali,** and some times also referred to as **sabha-goa oja-pali**. Biyah is a derivation from vyasa the sage to whom the great Vaishnava religious compositions are ascribed The biyah-goa oja-palis sing narratives from the **Bhagavata** and the **Mahabharata**, etc. One sub-variety that specialises in singing narratives from the **Ramayana** is known as **raiman goa oja- pali**. As many of these Ramayana - singing oja-palis been heavily on dramatic gestures and postures (bhao), they are also popularly known as **bhaoriya oja-palis**. Over and above, there is a special genre, called **satriya oja-pali,** which is confined to the **satras** or Vaishnava monasteries.

Scanned by CamScanner

As pointed, out earlier, oja-pali is a combination of narrative singing and dancing inter spersed with dramatic embellishments.

Now, oja-pali has its own system of music based on ragas. The narrative is made up of short episodical pieces and each piece is set to a particular raga. And the singing proceeds through a nmber of well-defined steps. Also dancing is integral to the from and the oja uses elaborate hand gestures (**mudra** or **hat**), gaits (**bulan**). and looks (**cawan**), etc. In the biyah goa variety these features approach classical norms more closely than in the mare-goa, variety. Interestingly, the only musical instrument used by the oja-pali troupes is a pair of cymbals (**tal**). In the biyah goa variety the cymbals are played with two hands wheres in the mare-goa variety with a single hand. Apart from the episodical songs making up the main narrative core of the oja-pali performance there are also some other narrative pieces which the oja-palis sing. These are compositions concerned with, for example the "birth" of such paraphernolia as the pandal, the cymbals, the jute fibre with wich the cymbals are held, and so on. There is one particular class, known as **rag-malitas**, that tell the stories of the birth or creation of different ragas.

●

Scanned by CamScanner

शिष्ट-विशिष्ट

Scanned by CamScanner

शिष्ट-विशिष्ट

डा. रामदेवझा सर्जनात्मक साहित्यकारक संगहि मैथिली जगतक चिरपरिचित गम्भीर गवेषक, सुधी सम्पादक ओ मुखर समालोचक छथि। हिनक अनुसन्धान ओ सम्पादन-दक्षताक परिचय मैथिली जगतकेँ हिनक अनेकशः विद्वत्तापूर्ण भूमिकायुक्त सम्पादित कृतिसँ भेटि चुकल छैक, मुदा ओ प्रकाशित कृति सब हिनक अनुसन्धान कार्यक एक अंश मात्र छनि। हिनका द्वारा अनुसन्धित मैथिलीक अनेकशः प्राचीन एवं आधुनिक कालक अलभ्य वा दुर्लभ कृति सब भूमिकाक संग सुसम्पादित भऽ कऽ पाण्डुलिपि रूपमे हिनक संग्रहमे सुरक्षित राखल छनि।

डा. रामदेवझाक अनुसन्धान-कार्यक किछु बानगी प्रस्तुत करबाक लोभसँ अभिनन्दन-ग्रन्थ-समिति द्वारा हिनकासँ किछु अंश देबाक आग्रह कयल गेलनि। एहि आग्रहक सम्मान करैत ओ स्वसम्पादित दुइ गोट कृति देबाक सदाशयता देखौलनि। ओहिमे पहिल अछि 'कवीश्वरक दुर्लभ हस्तलेख' तथा दोसर अछि विस्तृत भूमिकाक संग सम्पूर्ण 'सीमन्तिनी आख्यायिका' जे एहि ग्रन्थमे एतऽ समाविष्ट कयल जा रहल अछि। हिनक एहि दू गोट दुर्लभ अनुसन्धान सामग्रीसँ ग्रन्थक गरिमामे औरो बेसी अभिवृद्धि भेल अछि।

—सम्पादक

Scanned by CamScanner

कवीश्वरक दुर्लभ हस्तलेख

डा. श्रीरामदेवझा

कवीश्वर चन्दाझाक कागत-पत्र सभक मोटरी विभिन्न व्यक्तिक लगमे रहबाक चर्चा होइत रहल अछि । किछु ठाम हमरो देखबाक अवसर भेटल छल । ओहिमेसँ किछु अंश हमरो हस्तगत भेल छल । ओहिमे अनेक प्रकारक वस्तु सब देखबामे आयल जाहिमे तीन गोट पन्ना नत्थी कयल तीन तह मोड़ल भेटल । अन्तिम पन्ना आधा फूल्सकैप साइजक छैक जाहिमे (प्राय: चन्दाझाक) कलकता प्रवासकालक खर्चौटा सब लिखल अछि । शेष पहिल दू पन्ना भड़छल पिरछौन रंगक अछि । अत्यन्त जर्जर, कनेको बल पड़लापर टूटि जायवला, प्रत्युत तीन तहक दुनू मोड़पर पन्ना खण्डित भऽ गेल छैक जकरा सुरक्षित रखबाक लेल सेलो टेपसँ साटऽ पड़ल अछि । किनारोसँ किछु अंश मोड़ा कऽ टुटि गेल छैक ।

पहिल पन्नाक आकार 32.5X19.5 से.मी. अछि । ऊपरसँ दहिन भागक कोन फाटल छैक । अत: ओहि कोन परक उभय पीठक लेख खण्डित छैक । पन्नाक दुनू पीठपर 'साहेबरामदास'क हिन्दीमे परिचय लिखल गेल अछि ।

दोसर पन्नाक बाम भागक किछु अंश ऊपरसँ नीचाँ धरि टूटि कऽ विच्छिन्न भऽ गेल छैक, परन्तु लेख अक्षुण्ण छैक । एकर आकार छैक 32X17 से. मी. । पन्नाक पहिल पीठपर देवनागरी अक्षर एवं मैथिली भाषामे साहेबरामदासक संक्षिप्त पश्चिय लिखल गेल अछि । एकर दोसर पीठपर तिर्यक रूपमे मिथिलाक्षरमे कवीश्वर चन्दाझा द्वारा लिखल गेल एक गोट पत्र अछि । पत्र 19 फरवरी, 1902केँ कलकतासँ लिखल गेल छल । पत्र कोनो वैदिकजीकेँ तथा पुन: जटेश्वरकेँ सम्बोधित अछि ।

पत्रक विषयसँ स्पष्ट होइत अछि जे देवनागरी अक्षरमे हिन्दी ओ मैथिलीमे लिखित साहेबरामदासक जीवन-परिचय कवीश्वरे द्वारा लिखित अछि । कवीश्वरक हस्तलेख एवं हुनका द्वारा सम्पादित-प्रकाशित साहेबरामदास-गीतावलीक प्रसंग रहबाक कारणे ई दुनू पन्ना एकटा महत्त्वपूर्ण दस्तावेज थिक ।

पत्रक विषय-वस्तु देखलासँ पत्र लिखबाक ओ ओहि संग संलग्न सामग्रीक पृष्ठभूमिक सम्बधमे किछु अनुमान कयल जा सकैत अछि । अठारहम शताब्दीमे आविर्भूत मिथिलाक प्रसिद्ध सन्त साहेबरामदासक गीतावलीक संकलन कवीश्वर कयने छलाह जे हुनकहि सम्पादन-प्रबन्धनमे पचाढ़ी महन्थजी (वशीदास)क द्रव्यव्ययसँ दरभंगामे छपैत छल । ओहि गीतावलीक भूमिकारूपमे देबाक लेल कवीश्वर मिथिलाभाषामे साहेबरामदासक परिचय लिखने छलाह । परन्तु महन्थजीक अत्याग्रह भेलनि जे वैरागी सन्तक परिचय मिथिलासँ बाहरोक भक्त समुदायकेँ सुबोध होइनि तेँ परिचय हिन्दीमे देल जाय । कवीश्वर साहेबरामदासक परिचय हिन्दीमे देबाक सम्बन्धमे वैदिकजीसँ किछु निवेदन कयने छलथिन । कवीश्वर साहेबरामदासक परिचयक हिन्दी रूपान्तर करितथि, ओही बीच हुनका कलकता प्रवासमे जाय पड़लनि । एमहर प्राय: महन्थजी भूमिकामे पचाढ़ी-महन्थ-परम्पराक वंशावली सेहो सम्मिलित करबाक निर्देश कवीश्वरक आप्त अनुगत जटेश्वरकेँ देलथिन । जटेश्वर कवीश्वरकेँ विस्तृत पत्र लिखलथिन जाहिमे ओ महन्थजीक प्रति रुक्षताक भाव व्यक्त कयने होयथिन, तेँ कवीश्वरकेँ सान्त्वनामे लिखऽ पड़लनि-की करब, इहलोके योगिनामप्यगम्य: सेवा धर्म्म: परम ।'

कवीश्वर कलकता प्रवासमे रहैत साहेबरामदासक परिचय ओ पचाढ़ी महन्थक वंशावली हिन्दीमे पुन: लिखि कऽ जटेश्वरकेँ एहि पत्रक संग पठौलथिन । पत्रक संग संलग्न सामग्रीकेँ कवीश्वर 'आदर्श' कहैत छथि जकर अर्थ

Scanned by CamScanner

'नमूना' नहि लेल जयबाक चाही, आदर्शसँ कवीश्वरक तात्पर्य प्रेसक भाषामे ओरिजिनल, ओरिजिनल मैन्युस्क्रिप्ट अथवा स्क्रिप्ट छनि ।

अनुलग्न सामग्रीक संग पत्र यद्यपि जटेश्वरकेँ पठाओल गेल छलनि, परन्तु पत्रमे पहिने वैदिकजीकेँ सम्बोधित कयल गेलनि अछि जाहिमे पूर्वकृत प्रार्थनाक स्मरण करबैत प्रेषित आदर्शक हिन्वी(हिन्दी)केँ परिशुद्ध कऽ जटेश्वरकेँ दऽ देबाक आग्रह कयल गेलनि जाहिसँ साहेबरामदासक गीतावलीमे संकलित होअय ।

पुन: जटेश्वरकेँ पत्र सम्बोधित अछि जाहिमे कुशल इत्यादि औपचारिकताक बाद निर्देश देल गेल छनि जे- परिचयादि शुद्ध शुद्ध छापल जाय, प्रेषित आदर्शकेँ वैदिकजीसँ हिन्वी (हिन्दी) बनबाय (अर्थात् शुद्ध करबाय) छपबा देथि, किछु अधिक श्रम कऽ कऽ पत्रक संग प्रेषित वंश-परिचयक प्रूफ महन्थजीकेँ देखऽ देथि ।

जटेश्वरकेँ सम्बोधित पत्रक बाम भागक पाँजरमे पण्डित परमेश्वरझासँ अनुमति लऽ कऽ आद्यन्त लिखि देबाक निर्देश अंकित अछि । एकर तात्पर्य खूब स्पष्ट नहि भऽ पबैत अछि । सम्भव अछि जे कवीश्वर चाहैत होथि जे वैदिकजी द्वारा परिशुद्ध आदर्शकेँ परमेश्वरझा पुन: देखि लेथि । तखन जटेश्वर ओहि आदर्श लेखकेँ प्रेसकापी बनाय मुद्रणार्थ प्रेसकेँ देथि ।

कवीश्वरक पत्रमे मुख्य विषय अछि साहेबरामदास-गीतावलीक भूमिकाक हिन्दी रूपान्तर । कवीश्वर चन्दाझाक एहि पत्रमे चारि व्यक्तिक नामक उल्लेख अछि । ताहिमे वैदिकजी ओ बाबू जटेश्वर तँ प्रत्यक्ष सम्बोधित छथि किन्तु महन्थजी आ परमेश्वरझाक प्रसंगत: उल्लेख भेल छनि । ई तँ निश्चिते जे एहि चारू व्यक्तिसँ कवीश्वरक घनिष्ठ सम्बन्ध छलनि । कवीश्वरक निकटवर्त्ती ओ समकालीन होयबाक कारणे मैथिली साहित्यक इतिहासक दृष्टिएँ ओ महत्त्वपूर्ण छथि ।

वैदिकजी के छलाह ? हिनका सम्बन्धमे किछु निश्चयतापूर्वक नहि कहल जा सकैछ । महाराज लक्ष्मीश्वरसिंह गद्दीनशीन भेलापर बहुश: मैथिल ओ मैथिलेतर विद्वान् सबकेँ सम्मानपूर्वक बजाय अपना आश्रयमे रखने छलाह । मिथिला-तत्त्व-विमर्शक अनुसार काशीसँ वैदिक युगलकिशोरपाठक बजाओल गेल छलाह । ओ कवीश्वरक हिन्दी लेखक परिशुद्धि-कर्त्ता भऽ सकैत छथि ।

बाबू जटेश्वर के छलाह ? जाहि रूपमे हुनका सम्बोधित कयल गेलनि अछि ताहिसँ प्रतीत होइत अछि जे ओ कवीश्वरक विश्वस्त प्रियपात्र ओ कार्यक्षम व्यक्ति छल होयताह । डा. ललितेश्वरझा अपन पुस्तक 'कवीश्वर चन्दाझा'मे कवीश्वर चन्दाझाक जीवनी-सम्बन्धी सकल सूचना हुनकहिसँ प्राप्त कयने छलाह । ओ अपन पुस्तक (पृ. 36, ओ पाद टिप्पणी)मे प. जटेश्वरझाक परिचय दैत लिखने छथि– 'जटेश्वरझा दरभंगा जिलान्तर्गत बड़गाँवक निवासी रहथि । किछु वर्ष पूर्व हिनक देहान्त भय गेलनि । जटेश्वरझा कवीश्वरक लग रहि कऽ ओ हुनक भोजन बनाय, हुनकासँ विद्योपार्जन करैत छलाह । ई कवीश्वरक बड़ कृपापात्र शिष्य रहथिन । अतएव कवीश्वरक सम्बन्धमे जटेश्वर बाबूक उक्ति सर्वाधिक प्रामाणिक बुझल जाय । प्रस्तुत लेखक नवगाँव २६.४.५१ कऽ गेल छथि ।'

डा. ललितेश्वरझा ई सूचित नहि कयने छथि जे जखन हुनका जटेश्वरझासँ भेट भेल छलनि तखन अथवा मृत्युक समयमे हुनक की अवस्था छलनि । परन्तु जाहि तरहक सम्बोधन कवीश्वर हुनका हेतु प्रयुक्त कयने छथिन आ जे कार्यभार देने छथिन ताहिसँ अनुमान होइछ जे ओहि समयमे जटेश्वरक वयस पचीस-छबिस वर्षक औन-पौनमे रहल होयतनि ।

तेसर व्यक्ति महन्थजी छलाह पचाढ़ी स्थानक ओहि समयक महन्थ वंशीदास । वैह गीतावलीक मुद्रण व्यय वहन कयने छलथिन । एहि तथ्यक उल्लेख साहेबरामदास-गीतावलीमे कवीश्वर द्वारा कयल गेल अछि ।

चारिम व्यक्ति पण्डित परमेश्वरझा वैह थिकाह जे संस्कृतमे बहुश: ग्रन्थक रचना कयने छलाह । मैथिलीमे

Scanned by CamScanner

मिथिला-तत्त्व विमर्श, दुर्गाविजय नाटक, सीमन्तिनी-आख्यायिकाक रचना कयने छलाह । कर्मकाण्डोद्धारक, वैयाकरण केसरी एवं महामहोपाध्याय उपाधिसँ विभूषित भेल छलाह । ओ 1 जुलाई 1899 ई. मे महाराज रमेश्वरसिंहक राजपण्डित नियुक्त भेल छलाह आ पश्चात् पुस्तकालयाध्यक्ष सेहो भेलाह । अत: ओ अवश्ये कवीश्वरक निकटवर्त्ती ओ विश्वासभाजन भऽ गेल होयताह । परमेश्वरझा काशीक क्वीन्सकालेजमे अध्ययन कयने छलाह । राजपूतानाक झालरापाटनमे कतोक वर्ष धरि अध्यापन कयलनि । अत: ओहि समयक हिन्दी भाषाक नीक ज्ञान छले होयतनि । तेँ कवीश्वर जटेश्वरकेँ हुनक अनुमति लेबाक हेतु लिखने छलथिन ।

एहि पत्रक संग साहेबरामदास विषयक औरो अभिलेख सब छल होयत जे प्रेसकेँ दऽ देल गेल होयत । केवल यैह दुइटा पन्ना संयोगात् बचल रहि गेल । यद्यपि इहो बड़ महत्त्वक अछि । साहेब रामदासक परिचय विषयक कवीश्वरक मैथिली लेख, हिन्दी लेख तथा पत्रमे व्यक्त विचारसँ सिद्ध होइत अछि जे कवीश्वर चन्दाझा अपनाकेँ परिशुद्ध हिन्दीभाषाक ज्ञाता नहि मानैत छलाह । अनुमान कयल जा सकैत अछि जे, जेना साहेबरामदास-गीतावलीक भूमिका पचाढ़ी-महन्थक आग्रहेँ हिन्दीमे देबऽ पड़लनि, तहिना पुरुष-परीक्षाक मैथिली अनुवादक भूमिका हिन्दीमे देबाक हेतु सेहो प्रकाशन-कर्त्ताक निर्देश रहल होयतनि ।

कवीश्वर चन्दाझाक हस्तलेखमे मैथिली ओ हिन्दी दुहू भाषामे साहेबरामदासक परिचय ओ साहेबरामदास-गीतावलीक हिन्दी भूमिकाक तथ्यात्मक वर्णन ओ वाक्य-विन्यास खूब मेल खाइत अछि । अत: दुहुक तुलनात्मक समालोचना एकटा स्वतन्त्रे विषय बनि जाइत अछि । परन्तु 'हिन्दी' शब्दकेँ कवीश्वर अपन पत्रमे स्पष्ट रूपमे **'हिन्वी'** लिखने छथि, से दू-दू ठाम । पत्रक फोटोमे मिथिलाक्षरमे लिखित संयुक्त वर्ण **'न्व'** एवं **'न्द'**क तुलनासँ **'हिन्वी'** एवं **'चन्दा'** ओ **'आनन्दित'**सँ कयने अन्तर स्पष्ट होइछ । एना किएक ? ओहि समयमे आ कतोक दशक बादो सामान्य जन द्वारा **'हिन्दू'** शब्दकेँ **'हिन्नू'** रूपमे बाजल जाइत छल । हिन्द वा हिन्दूसँ बनल **'हिन्दवी'** जकाँ **'हिन्नू'**सँ संज्ञाभूत विशेषण **'हिन्वी'**केँ मैथिलीभाषीजन हिन्दी भाषाक अर्थमे प्रयोग करैत छल होयताह, जकर अनुसरण चन्दाझा अपन पत्रमे कयलनि ।

कवीश्वर चन्दाझाक स्वाभाविक मैथिली गद्यक आदर्श रूपक दृष्टिएँ साहेबरामदासक जीवन-परिचयक अंश तथा ऊपर विवृत पत्र विशिष्ट श्रेणीक अभिलेखक रूपमे परिगणनीय भऽ सकैत अछि । चलित मैथिली भाषाक सहज प्रयोग, ओकर लेखन-पद्धति, उच्चारणक निकटता इत्यादिक सूचक अनेक बिन्दु सब एहिमे देखबामे अबैत अछि ।

साहेबरामदासक जीवनी-परिचयमे छोट-छोट वाक्यक प्रयोग महत्त्वपूर्ण अछि । विराम चिह्नक रूपमे एक ठाम मात्र एक पासीक प्रयोग अछि । अधिक ठाम बिन्दुक प्रयोग भेल अछि । कतहु वाक्य समाप्ति-सूचक चिह्न नहियो अछि। प्रसंगान्तमे बेस नमहर रेखा (डैश) देल गेल अछि । पत्रमे प्रसंग-समाप्ति-सूचक दीर्घ रेखा मात्रक प्रयोग अछि ।

कवीश्वरक एहि गद्यमे भाषिक रूप ओ लेख-शैली गम्भीरतापूर्वक लक्ष्य करबाक ओ बिचारबाक योग्य अछि । क्रियापदमे एक ठाम पुरान प्रयोग **होइत भेला** अछि । परन्तु दोसर दिस आदरार्थक क्रियाक प्रत्ययान्त '**ह**'क लोप जे अत्याधुनिक प्रवृत्तिक रूपमे जानल जाइछ, तकर प्रचुर प्रयोग चन्दाझाक एहि गद्यमे देखि आलोचककेँ आश्चर्य भऽ सकैत छनि । आश्चर्य हुनको भऽ सकैत छनि जे लेखशैलीमे 'आए-अए' 'आओ-अओ'केँ प्रतिष्ठाक प्रश्न बनौने रहैत छथि, कारण चन्दाझा 'आए-अए'क प्रयोगक स्थानमे सर्वत्र 'अय' अथवा ऐकार (दोलैँ)क प्रयोग कयने छथि । विभक्तिमे बहुरूपता देखल जाइत अछि । किछु अन्यहु प्रयोग सब ध्यान देबा योग्य अछि । कवीश्वरक गद्यक जाहि जाहि भाषिक विशेषताक चर्चा ऊपर कयल गेल अछि तकर सभक वर्गीकृत उदाहरण अधोलिखित देखल जा सकैत अछि, जेना-

छला, भेला, पहुंचला, छलैनि, देलजाइनि, देलथिनि, छपबाय देबनि, शुद्ध भै छपैनि, देखै दिऐनि; लय/लै, लय/कै/केँ; भै, देखै । काँ/केँ/कैँ; सों/सौं, मे/मेँ/में/मैं; जोँ-तोँ; ततय, राषथि (राखथि) ।

Scanned by CamScanner

स्वरक सानुनासिकताक बिन्दु रहित अर्द्धचन्द्रक प्रयोग भेल अछि । क्वचित् अनुस्वार सेहो प्रयुक्त भेल अछि ।

कवीश्वर चन्दाझा मिथिलाभाषाक जे चलित रूप ओ कतोक ठाम वैकल्पिक रूप सभक प्रयोग कयलनि अछि, से देखि कऽ ई निष्कर्ष बहराइत अछि जे तखनुक परिस्थितिमे साहित्य-भाषाकेँ कोनो विशेष रूपमे बान्हि देबाक पक्षमे ओ नहि छलाह । अपितु ओकरा बहुजन-प्रयोग-स्वीकृति हेतु मुक्त छोड़ि देबाक पक्षमे छलाह । मुख्य लक्ष्य तँ छल साहित्य-सर्जन ।

एही बातकेँ ओ एहि चर्चित गद्य-लेखनक एक वर्ष पश्चात् अयोध्याप्रसादखत्रीकेँ हुनक मैथिलीक भाषिक एकरूपता विषयक जिज्ञासाक उत्तरमे लिखने छलथिन-

परिवर्तन नित जगत स्वभाव । भाषा विषयहु सयह प्रभाव ।।
लभ्य काव्य बहुतहु प्राचीन । कत जन रचि रहलाह नवीन ।।
चिन्ता नहि किछु गदित स्वरूप । जेहन बनायब तेहने रूप ।।
मुण्डे मुण्डे मति हो भिन्न । तैं जनु करिअ अपन मन खिन्न ।।
तदपि विमर्श उचित व्यवहार । देथि प्रबुध जन अपन विचार ।।
दश जन सम्मत पथ हो सोझ । दशकाँ लाठी एकक बोझ ।।

अग्रिम पृष्ठमे कवीश्वरक मूल हस्तलेखक पन्नाक उभय पृष्ठक क्रमशः प्रतिकृति एवं यथावत् पंक्तिशः प्रतिलिपि देल जा रहल अछि ।

Scanned by CamScanner

दास . . . जी
साहेबराम महन्थी मैथिल ब्राह्मण मगन्नाजरैल
मौजे कुसुमौलिक निवासी छला। हुनका कनिष्ठ भा
ाक नाम कुनाराम। पुत्रक नाम प्रीतम छलैनि ए
कहा प्रीतमक देहान्त भेलासँ साहेबराम दासजी
संसारसँ विरक्त भै फकीर भेला। बलिरामदाससँ
योग[illegible] क उपदेश लैसँ अचिरकालमे योगतत्व नि
[illegible] भेला। दाड़मग्राम देल जगन्नाथपुरी पर्यन्त
[illegible] भेला। [illegible] श्रीभगवानक अनुकम्पा सँ चित्त [illegible] भक्ति
तत्पर श्रीभगवानक अनुकम्पासँ [illegible] भक्तिक उद्रेकसँ
शक्तिमान फकीर होइत भेला। ओ भक्तिक उद्रेकसँ
[illegible] ठाकुरक आगाँ नाचैथि ओ भजन गाबैथि। ओ [illegible]
सँ ओ समाधिस्थ होथि गाय बराबथि। कखरहुसँ
[illegible] हुनहि रावथि

साहेबराम दासजी [illegible] भाव [illegible]
योगमठी [illegible] किछुदिन गुप्त छला। तखन श्री वास्तव
कायस्थ . . . हुनका सेवासँ तत्पर भेला। काय
[illegible] धनी ओ विद्वान छला। केवल अपुत्रता दोषक सँ [illegible]
साधुक सेवासँ पुत्रवान भेला। ओ कायस्थ जनकँ
[illegible] गन्ना वभ्मार राजमे बबरागाम [illegible]
[illegible] तु देल थिनि ओ गाम अपना [illegible]
[illegible] अछि। जहाँ जहाँ जाथि किछु दिन रहथि [illegible]
[illegible] पाकड़िक गाछ रोपि देथि
[illegible] कुसुमौलिमे दुर्गा मन्दिर लगा [illegible] बिद्यमान अछि
[illegible] साहेबराम
महाराज नरेन्द्र [illegible] मिथिलेशक [illegible]
[illegible] घोड़ा जमीन अनेक गाममे [illegible]
[illegible] छला [illegible]

[illegible]
[illegible] मौजे [illegible] मे
[illegible] मे
[illegible] पुर [illegible] गाम मे
[illegible] आलापुरमे
[illegible] मौजे मे
जमैला मौजे [illegible] —
[illegible] मौजे पद्मावती महारानी क देल

(पन्नाक पहिल पीठक प्रतिलिपि)

श्रीः

साहेबरामदास महन्थजी मैथिल ब्राह्मण प्रगन्ना जरैल.....
मौजे कुसुमौलिक निवासी छला • हुनका कनिष्ठ भ्रा-
ताक नाम कुनाराम •पुत्रक नाम प्रीतम छलनि ए-
कदा प्रीतमक देहान्त भेला सों साहेबरामदासजी
संसार सौं विरक्त भै फकीर भेला । बलिरामदास सों-
योगक उपदेस सौं अचिर कालमे योगतत्व नि-
स्नात भेला • दण्डप्रणाम दैत जगन्नाथपुरी पहुचला
ततय श्रीभगवानक अनुकम्पा सौं विलक्षण भक्ति
शक्तिमान फकीर होइत भेला • ओ भक्तिक उद्रेक सौं
ठाकुरक आगाँ नाचथि ओ भजन गाबथि • ओ अनुराग
सौं ओ समाधिस्थ होथि गाय चरावथि • ककरहु सौं
प्रीति द्वेष नहि राषथि...

साहेबरामदासजी एकमा वसन्तपुरमे
योगमठी कय किछु दिन गुप्त छला • ततय श्रीवास्तव
कायस्थ... हुनक सेवामे तत्पर भेला काय-
स्थ धनी ओ विद्वान छला केवल अपुत्रता दोष छलैनि
साधुक सेवा सौं पुत्रवान भेला • ओ कायस्थ • जमला
तप्पा प्रगन्ना चम्पारण्य में ववरा गाम अतिथि सत्का-
र हेतु देलथिनि ओ गाम अद्यावधि पचाढ़ी स्थान
मे अछि • जहाँ जहाँ जाथि किछु दिन रहथि तहाँ २
एक पाकड़िक गाछ रोपि देथि-
कुसुमौलिमें दुर्गामन्दिर लग पाकड़ि विद्यमान अछि
महाराज नरेन्द्रसिंह मिथिलेशक समय साहेबराम
महन्थजी छला तनिक देल जमीन अनेक गाममे अ-
छि

मौजे दिगौनमें
भषरौली पचही प्रगन्नामें
कृष्णपुर वडसाममैं
वैरिया प्रगन्ना आलापुरमें
सडड़ा मौजेमें
जमैला मौजे संपूर्ण—
पचाढ़ी मौजे • पद्मावती महारानीक देल—

Scanned by CamScanner

कवीश्वरक हस्तलेखक प्रतीच्छवि- दू

Scanned by CamScanner

(पन्नाक दोसर पीठपर)

श्रीवैदिकजी कैं नमस्कार
अपनैँक[1] हम प्रार्थना पूर्व्व कय
लहि छलहुँ ई आदर्श जाइ अछि
अपनैँ हिन्वी परिशुद्ध केँ श्रीबाबू
जटेश्वरकेँ देल जाइनि जे सत्वर
श्रीमहन्थजीक पुस्तक साहेबरामदासजीक
गीतावलीमेँ सङ्कलित हो इति–

श्रीबाबू जटेश्वरकेँ श्रीचन्दाक शतं कुशल
ञ्च आगाँ अहाँक पत्र पहुँचला सोँ मन
आनन्दित भेल की करब [2]/सेवा धर्म्मः परम
इह लो[के] योगिनाम
प्यगम्यः
शुद्ध भै छपैनि आदर्श पठाओल अछि श्रीवैदिक
जी सोँ हिन्वी बनबाय छपबाय देबैनि . जोँ
श्रमकरी तोँ एकदा अन्तिम पत्रक वंश परि
चयक प्रुफ लै कै श्रीमहन्थजी केँ दे
खै दिऐनि–
ताः १९/२/१९०२
कलकता

(जटेश्वरकेँ सम्बोधित पत्रांशक बाम भागमे ऊपरसँ नीचाँ दिस तिरछिया कऽ निम्न सन्देश अंकित छैकः)

श्रीपण्डितजी पर
मेश्वरझा सोँ
अनुमति
लय
आद्यन्तमेँ लिखि
देबैक

1. मूलमे 'काँ' लिखि ओकर आकार (ा) ओ चन्द्र(बिन्दु) काटि देल गेल छैक ।
2. एहि ठाम नमहर कोणाकार 'छूट' चिह्न दऽ कऽ ओहि पाँतीक नीचाँ दहिना दिस पुनः लिखल गेल छैक 'इह लो योगिनाम प्यगम्य'; तथापि एतहु 'लो' अक्षरक बाद 'के' छुटल रहि गेल अछि ।

Scanned by CamScanner

म.म.परमेश्वरझा कृत

सीमन्तिनी-आख्यायिका

सम्पादक : डा. श्रीरामदेवझा

आधुनिक मैथिलीक आदि उपन्यास :

कृतिकार

उनैसम शताब्दीक अन्तिम चरण तथा बीसम शताब्दीक आरम्भिक चरणक संक्रान्तिकालमे मिथिलामे बहुश: संस्कृत विद्वानक आविर्भाव भेल छलनि जनिकर ख्याति मिथिला सहित देशक अन्यहु क्षेत्रमे पसरल छलनि । ओहि अग्रगण्य मिथिला-विभूतिमे प्रमुख स्थान रखनिहार छलाह पण्डित परमेश्वरझा जे वैयाकरणकेसरी, कर्मकाण्डोद्धारक, महामहोपाध्याय इत्यादि विभिन्न सम्मानोपाधिसँ विभूषित छलाह ।

म.म. परमेश्वरझाक जन्म दरभंगा जिलाक तरौनी ग्राममे पौष शुक्ल प्रतिपद, शाके 1878, सन 1264 साल; 27 दिसम्बर 1856 इ.मे भेल छलनि तथा मृत्यु साढ़े सड़सठि वर्षक वयसमे आषाढ़ कृष्ण चतुर्दशी सोम, 1331 साल; 30 जून 1924केँ भेलनि । वाराणसीमे शिक्षाग्रहण कऽ देशक पश्चिमीय प्रदेश तथा मिथिलहुमे कतोक ठाम अध्यापक एवं राजपण्डितक पद सुशोभित कऽ अन्तत: 1 जुलाइ 1899 इ.केँ नवसिंहासनारूढ़ महाराज रमेश्वरसिंहक राजपण्डितक रूपमे नियुक्त भेलाह । एहि पदपर ओ मृत्यु पर्यन्त आसीन रहलाह ।

कविचन्द्रक उत्तराधिकार

राजदरभंगाक आश्रयमे अयलापर प. परमेश्वरझाकेँ कवीश्वर चन्दाझाक निकट सम्पर्क-सान्निध्य प्राप्त करबाक अवसर भेटलनि । मिथिलाक पुरावृत्तक सम्बन्धमे अनुसन्धान करबाक ओ मिथिला भाषाकेँ समृद्ध करबाक प्रवृत्ति ओ प्रेरणा हुनका कवीश्वरसँ प्राप्त भेलनि । कवीश्वर चन्दाझाकेँ सेहो एकटा उपयुक्त उत्तराधिकारी भेटि गेलथिन । प. परमेश्वरझा कवीश्वरसँ पचीस-छब्बिस वर्ष छोट छलाह तथापि कवीश्वरकेँ हुनका मिथिला-पुरावृत्त विषयक कार्यकेँ आगाँ बढ़यबाक क्षमतापर विश्वास भऽ गेल छलनि । एकर परिचय कवीश्वर चन्दाझा द्वारा लिखित एकटा दुर्लभ पत्रसँ भेटैत अछि जे अद्यापि अनभिज्ञाते रहल अछि किन्तु सम्प्रति हमरा लगमे रक्षित अछि ।

कवीश्वर चन्दाझा साहेबरामदासक गीतावलीक संकलन कऽ पचाढ़ीक तत्कालीन महन्थ वंशीदासक अर्थसाहाय्यसँ ओकर मुद्रण करा रहल छलाह । वंशीदासक पूर्वहिसँ आग्रह छलनि जे गीतावलीक भूमिका हिन्दीमे हो । बादमे पुन: हुनक आग्रह जे ओहिमे पचाढ़ी मठक वंश-परिचय सेहो जोड़ल जाय । वंशीदासक एहि दोसर आग्रहक पता कवीश्वरकेँ तखन भेल छलनि जखन ओ कलकता प्रवासमे छलाह । कवीश्वर साहेबरामदासक जीवनी मैथिलीमे लिखलनि तथा ओकर हिन्दी रूपान्तर सेहो कयलनि । ओतहि महन्थ-परम्पराक परिचय सेहो लिखलनि ।

विकल्पक दृष्टिएँ दुनू भूमिका-लेख दरभंगा स्थित अपन एकटा विश्वस्त अनुगत जटेश्वरकेँ पठौलथिन । लेखक पीठपर जटेश्वरक नामे एकटा पत्र कवीश्वरक लिखल छनि जाहिमे उपर्युक्त भूमिकाक सम्बन्धमे निर्देश अछि । पत्र कलकतासँ 19 फरवरी 1902इ.केँ लिखल गेल छल । भूमिकाक हिन्दी रूपकेँ वैदिकजीकेँ देखयबा लेल कहल गेल अछि तथा आदि एवं अन्तमे महन्थ वंशीदासक कथनानुसार किछु तथ्य जोड़बाक छलैक । ओहि सम्बन्धमे पत्रक नीचाँ दिस बाम भागमे लिखल गेल अछि- 'श्रीपण्डितजी परमेश्वरझा सोँ अनुमति लय आद्यन्तमैँ लिखि देबैक' ।

Scanned by CamScanner

ई कथन पण्डित परमेश्वरझाक प्रति कवीश्वरक विश्वास आ आश्वस्तिक प्रमाण थिक । ई सर्वथा सम्भव अछि जे परमेश्वरझाकेँ मैथिली भाषाक प्रति उन्मुख होयबाक प्रेरणा कवीश्वरसँ भेटल होइनि ।

बीसम शताब्दीक आरम्भमे जखन मैथिली भाषा-साहित्यक नवोन्मेषक संग नवयुगक आगम भऽ रहल छल, तखन महत्त्रयीक रूपमे सुप्रतिष्ठित छलाह-काव्यमे कवीश्वर चन्दाझा, नाटकमे कविवर जीवनझा ओ गद्यमे म.म.परमेश्वरझा ।

आधुनिक मैथिली गद्यक निर्माता

चन्दाझा जाहि गद्यक श्रीगणेश कयने छलाह तकरा परमेश्वरझा नव सामर्थ्य ओ विस्तार प्रदान कयलनि । हुनक गद्यक तीन दिशा छलनि-साहित्येतर विषयक मैथिली गद्य, नाटकक गद्य ओ रचनात्मक साहित्यक गद्य । प्रथम कोटिमे कर्मकाण्ड विषयक **कायस्थादिसदाचार पद्धति** आ **सदाचार दर्पण** ग्रन्थ कहल जाइत छनि, परन्तु ओहि सबसँ बेसी महत्त्वपूर्ण अछि मिथिलाक पुरावृत्त विषयक ग्रन्थ **मिथिलातत्त्व विमर्श** । दोसर कोटिक गद्य-रचना थिकनि **दुर्गाविजय नाटक** जे हमरहि द्वारा अन्विष्ट ओ 1996 मे सम्पादित-प्रकाशित भऽ चुकल अछि । तेसर कोटिक रचनात्मक गद्यमे अबैत छनि **सीमन्तिनी-आख्यायिका** ।

सीमन्तिनीक प्रकाशन अवधि

म. म. परमेश्वरझा रचित सीमन्तिनी-आख्यायिकाक स्थान आधुनिक मैथिली साहित्यमे महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि । ई क्रमिक रूपमे **मिथिलामोद**मे पैघ-पैघ अन्तरालपर प्रकाशित होइत रहल छल । एकर आरम्भक अल्पांश (मिथिला मोदमे प्रकाशित आरम्भिक तीन किस्त) मात्र **मैथिली गद्य-संग्रह** (तृतीय भाग, प्रथम संस्करण)मे प्रकाशित भऽ सकल छल । अतः बहुचर्चित कृति होइतो एकर सम्यक् आ समीचीन साहित्यिक समालोचन-मूल्यांकन नहि भऽ सकल ।

सुदीर्घकाल धरिक गहन अन्वेषणक पश्चात् विखण्डित, विच्छिन्न, हेरायल-भुतियायल **मिथिलामोद**क फाइल सबसँ ओहिमे प्रकाशित **सीमन्तिनी**क अविच्छिन्न सकल अंश उपलब्ध भऽ सकल । **सीमन्तिनी-आख्यायिका**क सम्पूर्ण पाठक उपलब्धिसँ ओहने आनन्दक अनुभूति भेल छल जेहन गँहीर इनार खुननिहारकेँ पानिक सोआ फुटैत देखि कऽ होइत छल होयतैक ।

सीमन्तिनी-आख्यायिकामे वर्णित सीमन्तिनीक जन्मसँ आरम्भ कऽ परिणय-कोबरघर धरिक कथा मिथिलामोदमे क्रमशः नओ किस्तमे प्रकाशित भेल छल । एकर पहिल किस्त मिथिलामोदक वर्ष-2 उद्गार 17-18, मार्ग-माघपूर्णिमा, सन 1314 साल, शाके 1828 (नवम्बर-दिसम्बर-जनवरी, 1906-07 इ.) मे प्रकाशित भेल तथा अन्तिम नवम किस्त, वर्ष-16, उद्गार-180-83, अगहन-फागुन, सन 1330 साल, शाके 1844 (नवम्बर-दिसम्बर-जनवरी-फरवरी, 1922-23 ई.)मे भेल छल । दोसर किस्तक आठ पृष्ठ (9 सँ 16 धरि) मोदक जाहि उद्गारमे छपल से उपलब्ध नहि भऽ सकल परन्तु ई छपल होयत 1907 इ.क फागुनसँ आषाढ़ अर्थात् फरवरीसँ जून धरिक 20म सँ 24मक कोनो उद्गारमे, जतऽसँ उपरिचर्चित गद्य-संग्रहमे संकलित कयल गेल । तेसर किस्तक एक वर्ष दस मासक बाद, चारिम किस्त एवं अव्यवहित पश्चात् पाँचम किस्त सेहो प्रकाशित भेल । एकर एक वर्ष नओ मासक बाद छठम किस्त प्रकशित भेल । तदुतर सात वर्ष पाँच मासक दीर्घ अन्तरालपर सातम ओ अव्यवहित पश्चात् आठम किस्त बहरायल । अन्तिम, नवम किस्त तीन वर्ष छओ मासक बाद प्रकाशित भऽ कऽ पूर्ण भऽ सकल ।

अव्याहत लेखन

सीमन्तिनी-आख्यायिकाक विभिन्न किस्त सब दीर्घ-दीर्घ अन्तरालपर छपैत रहल, से देखि भ्रम भऽ सकैत छैक जे लेखक किस्त-किस्तमे एकर लेखन कऽ पठबैत छलथिन आ मोद अग्रिम किस्त भेटलापर ओकरा छपैत छल ।

Scanned by CamScanner

से यदि रहितय तँ आलोचनामे स्वभावतः मुखर-प्रखर मिथिलामोद सीमन्तिनी-आख्यायिकाक लेखकक लेट-लतीफीकेँ सहजे माफ कयनिहार नहि छल ।

दीर्घ अन्तरालोपर प्रकाशित किस्त सभक पूर्वापर कथा-क्रमक मिलान कयलापर ओहिमे कोनो व्यतिक्रम नहि बूझि पड़ैत अछि । यदि तत्काल पूर्व प्रकाशित कथांशक दीर्घ अवधि बितलापर अग्रिम भाग लिखल जाइत तँ अवश्ये कथानकक विकास क्रममे, वर्णन-विन्यासमे व्यतिक्रम कोनो ने कोने रूपमे झलकि जैतय । ओहि रूपक स्खलन सीमन्तिनी-आख्यायिकाक समग्र प्रकाशित रूपमे कतहु परिलक्षित नहि होइत अछि ।

व्याहत प्रकाशन

सीमन्तिनी-आख्यायिका खण्डशः प्रकाशित होइतो मूल रूपमे अव्याहत आ सम्पूर्ण रूपमे लिखित रहल होयत । एकर सम्पुष्टि क्रमशः पूर्वमे प्रकाशित अंशक अन्त तथा पश्चात्क कोनो अंकमे प्रकाशित अग्रिम अंशक आरम्भक मिलान कयलापर होइत अछि–

किस्त	अन्त	आरम्भ
I-	(ii)......राजकन्याकेँ अल्प—	
II-	(i)	—अवस्थामेँ विवाह होयब उचित नहि......
	(ii)......घरहिमेँ योगायकेँ राखी—	
III-	(i)	—तेँ सगुण वरक अन्वेषण कय......
	(ii)......नाच भय रहल छल ।—	
IV-	(i)	तदुत्तर महाराजक आज्ञानुसार.....
	(ii)......सभ लशकर ठहरि गेल ।	
V-	(i)	तदनन्तर सभ लोक यथायोग्य.......
	(ii)......गेलापर दुनू दलकेँ सामना—	
VI-	(i)	—भेल, दूनू तरफक सवार सभ.......
	(ii)......सिन्दूरसँ भूषित कय स्वानीत का—	
VII-	(i)	—'कामदार' बनारसी साड़ी.......
	(ii)......अङ्क भय जायत, यथा 1001 ।—	
VIII-	(i)	—ई सूनि ज्यौतिषी जी कथी लय......
	(ii)......समवायो महानभूत ।।"-	
IX-	(i)	—एवं प्रकार निरन्तर उत्सव होइत.......

उपर्युक्त सारिणीमे देखल जाइत अछि जे कतहु वर्णन-प्रसंगक मध्यमे, कतहु वाक्यक मध्यमे, तँ कतहु विशेषण-विशेष्य पदक मध्यमे आ कतहु तँ शब्दहिक मध्यमे किस्तक समाप्ति भऽ गेल अछि । सबसँ रोचक अछि छठम किस्तक अन्त जे **'का'** अक्षर पर समाप्त होइत अछि । एहि एक अक्षरसँ अनुमान करब कठिन जे लेखक आगाँ की कहऽ चाहैत छथि । ई स्पष्ट होइत अछि सातम किस्तक आरम्भिक भागक-'कामदार' बनारसी साड़ी....., उक्तिसँ । छठम किस्त, उद्गार 59, अगस्त 1911मे छपल आ सातम किस्त सात वर्ष पाँच मासक दीर्घ अन्तराल (!)क बाद उद्गार-149, फरवरी 1919 मे छपल छल ।

Scanned by CamScanner

एहि सबसँ सिद्ध होइत अछि जे **सीमन्तिनी-आख्यायिका** भनहि खण्डशः प्रकाशित होइत रहल हो, एकर सम्पूर्ण रूपक प्रकाशनमे सोलह वर्ष चारि मासक अवधि बीति गेल हो, किन्तु एकर लेखन मोदमे प्रकाशनसँ पूर्वहि भऽ चुकल छल ।

लेखनक उत्स

1903 इ.सँ पूर्वहि परमेश्वरझा संस्कृतमे **कुसुमकलिका आख्यायिका** नामक गद्य कृतिक रचना कऽ चुकल छलाह । हमर अनुमान अछि जे ओकरा पश्चाते हुनका मस्तिष्कमे 'कुसुमकलिका आख्यायिका' सदृश मैथिलीयोमे कथात्मक गद्य-काव्यक रचना कयल जाय से आयल होयतनि । अतः 1904-05 इ.क अवधिमे स्थिरचित्त ओ मनोयोगसँ रचि-रचि कऽ **सीमन्तिनी**क सर्जन कयने होयताह । जाहि रूपमे विस्तारसँ समकालिक समाजक वर्णन भेल अछि, आनुषंगिक सामग्री विभिन्न शास्त्रक प्रमाणसँ सम्पुष्ट भेल अछि, से धड़फड़ीमे अवसर अयलापर कऽ लेब सम्भव नहि । अतः निष्कर्ष ई जे **मिथिलामोद**क प्रकाशनारम्भसँ पूर्वे ओ सम्पूर्ण **सीमन्तिनी**क रचना कऽ चुकल छलाह । **मिथिलामोद** दिससँ रचनाक आग्रह भेलापर **सीमन्तिनी**क समग्र पाण्डुलिपिए पठा देलथिन जकरा मिथिलामोद अपन सुविधानुसार क्रमिक रूपमे छपैत रहल ।

मिथिलामोदक आग्रह ओ सीमन्तिनी

1922 इ.क उदगार 174-179 (ज्येष्ठ-कार्त्तिक)क संयुक्तांकमे मिथिलामोदक ओहि समयक एकटा सक्रिय सहयोगी (उपसम्पादक) अनूपमिश्रक **मैथिली व्याकरण** शीर्षकसँ एकटा निबन्ध छपल छल जाहिमे मैथिली-लेख शैलीक बहुरूपताक समस्या-निदानक प्रयोजनीयता देखबैत म.म. परमेश्वरझासँ शीघ्र पूर्व प्रतिश्रुत मैथिली-व्याकरण-रचनाक अपेक्षा कयल गेल छल । ओहि क्रममे हुनका द्वारा रचित सीमन्तिनी-आख्यायिकाक मोदमे क्रमशः प्रकाशन एवं ओकर पुस्तकाकार प्रकाशित करबाक योजनाक चर्चा करैत कहल गेल छल जे– **'हमरा लोकनि तँ 'सीमन्तिनी-आख्यायिका' (जे कैक वर्षसँ पुस्तकाकार प्रकाशित करबा ले पृथक कैल अपूर्ण सड़ैत अछि) कैँ पूर्त्ति करबा हेतु मिथिलामोद द्वारा एवं पत्रो लिखि सूचना देलन्हि परन्तु अद्यावधि अपन मनोगत भाव कोनहुँ रूपैँ नहिएँ प्रकट कै सकलाह ।'**

लेख-समापनक क्रममे पुनः कहल गेल छल जे– **'श्रीयुत केसरीजीसँ सादर निवेदन जे आबहु मैथिली व्याकरणपर ध्यान दै प्रस्तुत करथि ओ सीमन्तिनी-आख्यायिकाक हेतु जे अनेको बेर सूचना देल गेलन्हि अछि कृपया तद्विषयक अपन कर्त्तव्य प्रकाशित करथि ।'**

सीमन्तिनी-आख्यायिका विषयक उपर्युक्त उपराग उचित नहि कहल जा सकैत अछि । कारण, तखनहु मोदक लगमे सीमन्तिनीक अन्तिम किस्त अप्रकाशिते फाइलमे पड़ल छल, जकरा लगले अग्रिम उद्‌गार 180-83 (अगहन-पूस-माघ-फागुन, 1922-23)क संयुक्तांकमे प्रकाशित कयल जा सकल ।

अनूपमिश्रक उपर्युक्त वक्तव्यसँ पूर्वोक्त दुइ गोट अनुमित तथ्यक सम्पुष्टि होइत अछि ।

प्रथम ई जे प. परमेश्वरझा मिथिलामोदमे दीर्घ कालमे क्रमशः प्रकाशित सीमन्तिनी-आख्यायिकाक सकल अंशकेँ एकहि अव्याहत क्रममे रचना कऽ लेने छलाह, जकरा मोदमे प्रकाशनार्थ प्रदान कयलनि ।

दोसर ई जे ओ वास्तवमे सीमन्तिनी-आख्यायिकाक कथानककेँ सीमन्तिनीक परिणय-कोबर वर्णन कऽ समाप्त कऽ देने छलाह । सीमन्तिनीक कथानकमे पौराणिक परिवेशक स्थानमे समकालिक परिवेशक अत्यन्त गाढ़ वर्णन कयल गेल अछि । ओहन अतिशय समकालिक परिवेशमे पौराणिकताक निर्वाह कऽ चन्द्राङ्गदक मृत्यु ओ कतोक वर्षक अनन्तर पुनर्जीवनक चमत्कारिक घटना कथमपि बुद्धिग्राह्य नहि होइत । हुनका जे सन्देश देबाक छलनि से परिणयेपर जा कऽ सिद्ध भऽ जाइछ । तेँ ने बेर-बेर आग्रह कयलोपर सीमन्तिनीक परिणयसँ आगाँक कथा लिखबाक प्रयोजन नहि बुझलनि, तेँ नहि लिखलनि ।

Scanned by CamScanner

सीमन्तिनीक सम्पादित रूप

सीमन्तिनी आख्यायिकाक सम्पूर्ण रूपक प्रकाशन आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहासक दृष्टिसँ तथा साहित्य-मर्मज्ञ सहृदय पाठकक निमित्त एकटा महत्त्वपूर्ण उपलब्धि सिद्ध होयत । अतः **मिथिलामोद**मे खण्डशः प्रकाशित विकीर्ण रूपकेँ आब व्यवस्थित रूप दऽ कऽ पाठ-सुलभ बनयबाक प्रयास कयल गेल अछि ।

सीमन्तिनीक उपलब्ध पाठमे व्यवच्छेदक रूपमे आश्वास, उल्लास, परिच्छेद, अध्याय वा विश्रामादिक प्रयोग नहि अछि । यद्यपि ओकर कथानक-संरचनामे एहन स्थल सब अछि जाहि ठाम विराम सूचित कयल जा सकैछ । किन्तु सम्पादनमे कथानककेँ अध्याय वा परिच्छेदमे विभक्त करबाक चेष्टा नहि कयल गेल अछि ।

सीमन्तिनी मिथिलामोदमे नओ किस्तमे छपैत रहल छल । ओकर अभिज्ञान पाठकोकोँ होइनि, ताहि दृष्टिएँ प्रस्तुत सम्पादित रूपमे प्रत्येक किस्तकेँ रोमन अंकमे क्रमांक देल गेल अछि । पूर्वक किस्तक अन्तिम पाँती वा प्रसंग अपूर्ण अछि तँ अग्रिम किस्तक आरम्भ ठीक ओकरा नीचाँसँ कयल गेल अछि ।

प्रत्येक किस्तमे अर्थ स्पष्ट करबाक लेल, विषयकेँ पल्लवित करबाक लेल, कोनो विषयक आलोचनाक लेल, कोनो कथनक सम्पुष्टि लेल शास्त्रीय प्रमाण इत्यादि हेतु लेखक द्वारा पृष्ठक अधोभागमे टिप्पणी देल गेल अछि । क्वचित् मिथिलामोदहुक दिससँ सम्पादकीय टिप्पणी (**सं.टी.**) देल गेल अछि । प्रत्येक पृष्ठमे टिप्पणी देबाक मोदक पद्धतिक बदलामे, एतऽ टिप्पणी-सूचक क्रमांक लगातार क्रममे 1 सँ 43 धरि देल गेल अछि ।

मूल पाठक समाप्तिक पश्चात् परिशिष्ट देल गेल अछि । ओहिमे पहिने रोमन अंकमे किस्तक क्रमांक एवं ओ किस्त **मिथिलामोद**क जाहि अंकमे प्रकाशित भेल छल तकर समस्त विवरण दऽ देल गेल अछि । ओही ठाम ओहि किस्त वा अंकमे मूलमे देल गेल टिप्पणीकेँ क्रमांकानुसार एकत्रैव दऽ देल गेल अछि । 43 संख्यक मूल टिप्पणीक स्पष्टीकरण एवं सन्दर्भ सूचना एहि पंक्तिक लेखक द्वारा उपटिप्पणीमे देल गेल अछि ।

मूल पाठमे कतहु कोनो अनावश्यक हस्तक्षेप नहि कयल गेल अछि । तथापि सीमन्तिनी-आख्यायिकाक मूल पाठमे अनेक स्थलपर पाठ अशुद्ध, अपूर्ण, भ्रमाह वा क्रमभग्न देखल गेल अछि । एहन स्थल पर सम्पादकीय कर्त्तव्यक निर्वाह करैत स्पष्ट रूपक प्रेसक अशुद्धिकेँ शुद्ध कयल गेल अछि । किन्तु अपूर्ण, भ्रमाह वा क्रमभग्न पाठक संशोधित, संवर्धित, सम्भावित वा प्रस्तावित अंशकेँ आयतार्ध-बन्ध [ ]क अन्तर्गत देल गेल अछि ।

अनेक ठाम वृत्तार्ध-बन्ध ( )मे सेहो पर्यायवाची वा अंगरेजी शब्द, अर्थक स्पष्टीकरण वा व्याख्या देल गेल अछि । ओ सब मूल पाठहिक अंश थिक जे लेखक द्वारा स्वयं देल गेल छल ।

मिथिलामोदमे **सीमन्तिनी** जाहि लेख-शैलीमे मुद्रित अछि तकरा ओही रूपमे राखल गेल अछि । एतबा अवश्य जे एहि ठाम विभक्तिकेँ शब्दक संग संहित कऽ देल गेल अछि ।

लेख-शैली

सीमन्तिनीमे प्रयुक्त लेख-शैलीमे तथा म. म. परमेश्वरझाक स्वहस्तलिखित नाटक **दुर्गाविजय**मे प्रयुक्त लेख-शैलीमे हमरा कोनो अन्तर देखबामे नहि आयल अछि । अवश्ये **दुर्गाविजय**मे **कें, कैं, तैं, तरहैं, प्रसादैं,** इत्यादिमे अनुस्वारक प्रयोग कयल गेल अछि । **सीमन्तिनी**मे अनुस्वारक स्थानमे चन्द्रविन्दुक प्रयोग भेल अछि । मिथिलामोदक द्वारा ई परिवर्त्तन कयल गेल हो से सम्भव अछि । एकरा लेख-शैलीमे अनर्गल हस्तक्षेप नहि मानल जा सकैत अछि । अतः अपन **म. म. परमेश्वरझा** नामक विनिबनध (पृ. 98)मे डा. दुर्गानाथझाश्रीशक द्वारा लगाओल गेल ई आरोप जे- 'मोदमे प्रकाशित **सीमन्तिनी आख्यायिका** म. म. परमेश्वरझाक लेखन-शैलीमे नहि म. म. मुरलीधरझाक लेखन-शैलीमे छल' से पूर्वाग्रह मात्र कहल जा सकैत अछि । **दुर्गाविजय**क लेख-शैली प्रमाणरूपमे आबि गेलापर उपर्युक्त धारणा स्वतः अमान्य-अप्रासंगिक भऽ जाइत अछि ।

Scanned by CamScanner

सीमन्तिनीक कथास्रोत

सीमान्तिनी आख्यायिकाक कथावस्तुक आधार स्रोत स्कन्दपुराणक **ब्रह्मोत्तर खण्ड** अछि । एकर संकेत लेखक स्वयं आर्यावर्तमे आयल बरियाती लोकनिक रात्रिविश्रामक प्रकरणमे सूचना दैत कहैत छथि जे- **'एही विषयक सूचनामे ब्रह्मोत्तरखण्डक श्लोक अछि :**

सोऽभून्महोत्सवस्तत्र तस्या उद्‌वाह कर्मणि ।
यत्र सर्व महीपानां समवायो महानभूत ॥'

ई ब्रह्मोत्तरखण्ड स्कन्दपुराणक भागक रूपमे प्रसिद्ध अछि ।

आर्यावर्तक अत्यन्त प्रतापी, प्रजापालक, धार्मिक प्रवृत्तिक राजा छलाह चित्रवर्मा । हुनका एकटा कन्या जन्म लेलकनि जकर नाम सीमन्तिनी राखल गेलनि । नामकरणक संगहि ज्यौतिषी लोकनि कन्याक जन्मकुण्डलीक आधारपर उत्तम भविष्य होयबाक फल कहलथिन । राजा ओ सकल राजपरिवार प्रसन्न छल । तखन एकटा दोसर पण्डित कहलथिन जे एहि कन्याकेँ चौदहम वर्षक अवस्थामे वैधव्य योग अवश्यम्भावी छनि । आनो पण्डित सब प्रतिवाद नहि कऽ मौने रहलाह । राजा ओ समग्र राज परिवारक प्रसन्नता शोकमे बदलि गेल । यद्यपि ओ ज्यौतिषी जाइत-जाइत इहो कहने गेलथिन जे शिवकृपासँ कन्याक सौभाग्य-रक्षा सम्भव अछि ।

कन्या वर्द्धिष्णु छलीह, शुक्लपक्षक चन्द्र जकाँ बढ़ैत जा रहलि छलीह । क्रमश: राजा, रानी एवं अन्यो लोक ज्यौतिषीक भविष्य-कथन विसरि गेल । अत: सीमन्तिनीक वैधव्य-मुक्तिक कोनो उपचार नहि कयल गेल ।

सीमन्तिनीक एकटा वृद्धा परिचारिका छलनि जे बच्चेसँ हुनका कोर-काँख लऽ कऽ खेलबैत रहलनि । ओकरा ज्यौतिषीक कथा स्मरण छलैक । किन्तु राजपरिवार दिससँ ओकर उपचार नहि देखि दुख होइत छलैक । जखन सीमन्तिनी आठम वर्षक भेलीह तखन सीमन्तिनीकेँ हुनक जन्मक अवसरपर पण्डित लोकनि द्वारा कहल गेल कथा ओ वृद्धा पश्चिारिका सुना देलकनि । सीमन्तिनी उदास भऽ गेलीह । परिचारिका कहलकनि जे— आइ-काल्हि एकटा ऋषि अपन दुइ पत्नीक संग आयल छथि । ओ कोनो उपाय देखा सकैत छथि, तेँ हुनक दर्शन करी ।'

सीमन्तिनी मायसँ अनुमति लेबऽ गेलीह जे केओ ऋषि पत्नीक संग आयल छथि, तनिक दर्शन करऽ जायब । माय ई कहैत अनुमति दऽ देलथिन जे ओ ऋषि याज्ञवल्क्य छथि जे अपन पत्नी मैत्रेयीक संग राज-अतिथि छथि ।

सीमन्तिनी मैत्रेयीक दर्शन कऽ अपन वैधव्ययोगक कथा कहलथिन । मैत्रेयीकेँ सूनि बड़ क्लेश भेलनि । ओ शिव-पार्वतीक नित्य आराधना ओ सोमव्रत करबाक उपदेश देलथिन । मैत्रेयीक द्वारा देल उपदेश ओ देखाओल विधि-विधानसँ सीमन्तिनी दुष्कर आराधना करऽ लगलीह ।

चौदहम वर्षक वयसमे निषध देशक राजा नल-दमयन्तीक पौत्र एवं इन्द्रसेन-लावण्यवतीक पुत्र चन्द्राङ्गदक संग विवाह सम्पन्न भेलनि ।

विवाहक पश्चाते एक दिन चन्द्राङ्गद सासुरक समवयस्क सम्बन्धी वर्गक संग यमुनामे जलविहारक हेतु गेलाह । जलविहारे कालमे बड़का बिहाड़ि उठल । नाव सब डूबि गेल । हाहाकार मचि गेल । यमुनामे जाल खिरौलाक बाद और कतेको लोक तँ बाँचि गेल । किन्तु चन्द्राङ्गद नहि भेटलथिन । चारू कात शोकक लहरि पसरि गेल ।

सीमन्तिनी शोकित भऽ विधवावेश धारण कऽ लेलनि । यमुनामे जाहि स्थलपर चन्द्राङ्गद जलसमाधि लेलनि, ओहि ठाम तटपर तप:स्थली बनाय सीमन्तिनी यथावत् शिव-पार्वतीक पूजा-आराधना एवं कठोर सोमव्रत करैत रहलीह । निषध देशमे पुत्रशोकमे विकल इन्द्रसेनकेँ सर-सम्बन्धी लोकनि राजच्युत कऽ कारागारमे धऽ देलकनि ।

Scanned by CamScanner

ओमहर चन्द्राङ्गद जलप्रवाहमे भासैत नागलोक पहुँचि गेलाह । जलमे स्नान करैत नागकन्या रक्षा कऽ नागराज तक्षकक ओतऽ लऽ गेलनि । नागराज तक्षक हुनका सेवामे राखि लेलथिन । चन्द्राङ्गद मौन रहि कर्त्तव्यमे लागल रहलाह । तीन वर्ष बितलापर नागराजक जिज्ञासापर चन्द्राङ्गद अपन परिचय एवं दुर्घटनाक विवरण सुना देलथिन । नागराज नागसेनाक संग हुनका स्वदेश पठौलथिन । चन्द्राङ्गद यमुनामे ओही स्थलपर बहरयलाह जतऽ डूबल छलाह आ जतऽ सीमन्तिनी आराधना करैत छलीह । चन्द्राङ्गद सीमन्तिनीकेँ अपन परिचय बिनु देनहि सूचित कयलथिन जे अहाँक पति जीवित छथि ओ शीघ्रहि औताह । सीमन्तिनीकेँ आभास भेलनि जे ओ चन्द्राङ्गदे छलथिन ।

चन्द्राङ्गद नागसेनाक सहयोगसँ पिताकेँ मुक्त करा राजसिंहासनपर आसीन करौलनि । पश्चात् सविधि आर्यावर्त अयलाह । सीमन्तिनीसँ मिलन भेलनि । शिव-पार्वतीक आराधनासँ सीमन्तिनीक वैधव्ययोग शमित भेलनि । ओ अपन शिव-पार्वतीक आराधना तथा सोमव्रत आजीवन करैत सती सीमान्तिनीक रूपमे प्रख्यात भेलीह ।

एही पौराणिक उपाख्यानकेँ आधार बनाय प. परमेश्वरझा सीमन्तिनी-आख्यायिकाक रचना कयने छलाह । परन्तु मूल उपाख्यानक समग्र कथानककेँ ग्रहण नहि कऽ ओकर पूर्वांशेकेँ कथावस्तु बनाओल गेल । कथारम्भमे प्रसंगत: सीमन्तिनीक वैधव्य-योग ओ तकर निवारण रूप जे बीज-कथन, से पूर्ण रूपमे पल्लवित नहि कऽ ओकरा सीमन्तिनी-परिणये धरि सीमित राखल गेल ।

पौराणिक कथापर नव्यताक आवरण

पौराणिक परिवेशक दृष्टिएँ घटना-स्थल अछि आर्यावर्त ओ निषधदेश । पौराणिक नामधेय पात्र छथि-चित्रवर्मा, सीमन्तिनी, नल-दमयन्ती (नामोल्लेख मात्र), इन्द्रसेन, चन्द्राङ्गद तथा ऋषिपत्नी मैत्रेयी । सीमन्तिनीक जन्म एवं चौदहम वर्षमे हुनक वैधव्य योगक भविष्यवाणी, मैत्रेयी द्वारा सीमन्तिनीकेँ वैधव्य-निवारणार्थ शिव-पार्वती-आराधनाक उपदेश, चन्द्राङ्गदक संग सीमन्तिनीक परिणय- एहि पौराणिकी कथा-सूत्रक ठठरी मात्र सीमन्तिनी-आख्यायिकामे ग्रहण कयल गेल अछि । एहि कथा-कंकालकेँ मांसल ओ पृथुल बनयबाक लेल, सौन्दर्य-सम्पन्न रूप देबाक लेल मूल कथानकसँ इतर अनेक पुराणानुकृत वा पुराणेतर अभिनव पात्र-पात्री, नाम-गाम, प्रदेश-परिवेश, राज-समाज, शिक्षा-दीक्षा, आचार-विचार, विधि-व्यवहार, आमोद-प्रमोद, गीत-नाद, पाबनि-तिहार इत्यादि जतेक उपादानक संयोजन आख्यायिकामे कयल गेल अछि से सभ आख्यायिकाकार अपन समकालिके देश-समाजसँ नि:संकोच भावसँ ग्रहण कयने छथि जे स्वयं पढ़ल-गुनल, देखल-सुनल, बुझल-गमल, स्वानुभूत-सुचिन्तित तथ्य छलनि । राजधानी, राजभवन, राजकीय शिष्टाचार, राजकन्याक वरान्वेषण, राजकुमारक बरियातीक साज-बाज, महफिल इत्यादिक वर्णन-क्रममे लेखकक अर्द्धचेतन मनमे राजस्थान-मध्यप्रदेशक तत्कालीन देशी रजबाड़ा सब रहैत छनि, तँ अन्त:पुरक व्यवहार आ बोली-बानीमे राजदरभंगा एवं मिथिलाक अन्यान्य राज-परिवारक अन्दर हवेलीक चित्र साकार भऽ उठैत छनि । वर-कन्याक वैवाहिक अधिकार-निर्धारण, बरियाती-सरियातीक मध्यक प्रश्नोत्तर, विवाह-सम्बन्धी सकल विधि-व्यवहारक निर्वाह जँ मैथिल परिपाटीसँ भेल अछि, तँ सामान्य जनक मनोरंजनक साधन वैह सब प्रयुक्त भेल अछि जे मिथिलाक सामान्य जनसमाजमे परम्परासँ प्रचलनमे रहल अछि । सीमन्तिनी-आख्यायिकामे समकालिक उपादानक समावेशक क्रममे आगराक शोभा, धवलपुर, ग्वालियरक प्राचीन दुर्ग, डाक द्वारा समाचार-सूचिका-पत्रिका-प्रेषण, बम्बगोला छोड़ब, तोपखानासँ ओ पलटनक छावनीसँ तोपक फायर, महफिलमे गजल-गान सदृश तेहनो वस्तु ओ प्रसंग सभक समावेश निरधोख भऽ कऽ कयल गेल अछि जे पौराणिक वातावरणमे सर्वथा अपच लागि सकैत अछि । तथापि मिथिलामोद गजल-वर्णनपर आलोचनात्मक टिप्पणी करैत एहन-एहन प्रयोगकेँ रोचकताकेँ ध्यानमे राखि कठोरताक स्थानमे क्षमाभाव प्रदर्शित कयने छल जे- **'प्रिय पाठकगण ! सीमन्तिनीक समयमेँ गजलक प्रचार छल वा नहि, किन्तु कथाक रोचकतासँ आनो कैकटा भेटत, से क्षन्तव्य ।'**

वास्तवमे पौराणिक सन्दर्भकेँ अवडेरि देलापर, अपन नव्य, रुचिरंजक, हृदयावर्ज्जक, विच्छित्तिपूर्ण अभिनव

Scanned by CamScanner

वर्णनक वैविध्य-वैशद्य, ललित भाषा, चटुल संवाद एवं उक्तिवैचित्र्यसँ संबलित भऽ अति पातर सन पौराणिकी कथातन्तु पूर्ण मांसल ओ पृथुल बनि गेल सीमन्तिनी-आख्यायिका अपन वर्त्तमान रूपमे अखण्ड ओ सम्पूर्ण मानल जा सकैत अछि ।

अनुमान इहो कयल जा सकैत अछि जे जेना राजा चित्रवर्माक 'बालमैत्री-प्रयुक्त परम प्रगल्भ वाक्पटु अति स्थिर विचारक एक विद्वान् ब्राह्मण' द्वारा सीमन्तिनीक वैधव्यक भविष्यवाणीक सन्दिग्धता, निस्सारता, निरर्थकता प्रमाणित करैत सीमन्तिनीक विवाहक पक्षमे देल गेल तर्कके मानि चित्रवर्मा कन्याक विवाहक आदेश दऽ देलथिन, तहिना आख्यायिकाकार ब्राह्मण द्वारा देल गेल वैधव्यक भविष्यवाणीक सन्दिग्धता-निरर्थकताक तर्कके स्वीकार करैत सीमन्तिनीक परिणयेपर आख्यायिकाक इति कऽ देलनि । एहि प्रकारक अनुमान असंगतो नहि कहल जा सकैत अछि। बौद्धिकताक नवीन युगमे पातालक नागलोक-गमन, मृत्युक कतोक वर्षक बाद पुनर्जीवन सन घटना कोना विश्वसनीय मानल जाइत ।

गतिशील विचारधाराक उन्मेष

म. म. परमेश्वरझा गतिशील आधुनिक विचार धाराक पण्डित छलाह । अपन लेखनमे ओ अनेक ठाम सामाजिक दुर्गुण ओ कुप्रथा सभक आलोचन करैत देखल जाइत छथि । ओ सामाजिक विकृतिसँ निरपेक्ष रहि अपन पारम्परिके शास्त्रचिन्तनमे निमग्न रहनिहार पण्डित नहि छलाह । आइसँ एक शताब्दी पूर्वक व्यक्तिमे कोनो प्रकारक अभिनव विचार अपना समयक दृष्टिएँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ओ ऐतिहासिक महत्त्वक मानल जा सकैत अछि । सीमन्तिनी-आख्यायिकामे अनेक स्थलपर अथवा ओकर टिप्पणीमे एहन-एहन अभिनव विचार सभ व्यक्त भेल अछि ।

अभिनव विचारक दृष्टिएँ मिथिला सहित भारतक अन्योभागमे प्रचलित सबसँ पैघ कुप्रथा बालविवाह तथा स्त्री-शिक्षाक प्रति समाजक नकारात्मक दृष्टकोणक विपरीत अवधारणाक प्रतिपादन सीमन्तिनी-आख्यायिकामे खूब विस्तारसँ कयल गेल अछि ।

वैवाहिक कुरीतिक विरोधमे स्वर

मिथिलामे विवाहसँ सम्बद्ध कुत्सित प्रथामेसँ एकटा परम विनाशकारी कुप्रथा छल बाल-विवाहक । 'अष्टवर्षाद् भवेद् गौरी'के विवाहक परमायु मानि कन्या आ बालकक विवाह करा देल जाइत छल । अठारहम शताब्दीक मध्यमे **हरिवंशक** कथाक आधारपर रमापतिउपाध्याय एकटा नाटक **रुक्मिणी परिणय नाटकक** रचना कयने छलाह । **हरिवंशमे** विवाहक समयमे रुक्मिणीके **श्यामा** कहल गेल छनि । श्यामाके **'यौवन मध्यस्था' 'षोडशी श्यामा'** कहल जाइछ । तेँ रुक्मिणी विवाहक समय सोलह वर्षसँ कम वयसक तँ नहिएँ रहल होयतीह । परन्तु रमापति पौराणिक स्रोतक मान्यताके त्यागि दसमे वर्षमे रुक्मिणीक माता-पिताके कन्याक मिथिलाक बाल-विवाहक कुप्रथाक कारणे विवाहक हेतु व्यग्र देखओलनि अछि । –कूमरि हमर जलधि दुहिता सनि, वएस वरण दस ताहि ।

बालविवाहक विकृतिक चरम रूपमे एहनो कन्या-बालकक विवाह करा देल जाय लागल जकरा मायक दूध पीयब छुटलो ने रहैत छलैक । एहन बच्चा वर-कनियाँ तँ विवाहकालमे कोरमे सुतले रहैत छल होयत, तेँ ने कहबी बनि गेल जे **सुतल छी आ वियाह होइए** । पाँच-छओ दशक पूर्व धरि गाम-देहातमे युवको वर जँ विवाह हेतु चुमाओन करा कऽ विदा होइत छल तँ दाइ-माइ सब हँसी-चौल करैत वरक मायके एकटा विधि करबाक निर्देश दैत छलथिन-'माय बेटाके दूध पिया कऽ विदा करथुन' आ माय विधि-पूरणार्थ युवा पुत्रहुक मुँह अपन छातीसँ सटा कऽ झटसँ विधि कऽ दैत छलथिन । ई वस्तुत: दुधपीबा पुत्रहुक विवाह करा देबाक कुप्रथाक स्मृतिशेष विधि कहल जा सकैत अछि ।

बीसम शताब्दीक आरम्भमे जे समाज-सुधारक बसात बहऽ लागल छल आ बालविवाहक विरोधमे स्वर उठऽ

Scanned by CamScanner

लागल छल तकर सभक प्रभावेँ 1910 इ. मे मैथिल महासभा मैथिल कट्टरतासँ कनेक अधिक उदार भेल तँ कन्याक विवाहक वयस आठसँ बारह वर्ष पर्यन्त निर्धारित कयल गेल । 1930 इ.मे बालविवाह-निरोधक कानून सारदा-एक्ट लागू भेल तँ ओहिमे कन्याक विवाहक वयस न्यूनतम चौदह वर्ष स्थिर कयल गेल । इहो सुनल जाइछ जे जाहि वर्ष ई एक्ट लागू भेल तकर पूर्वक शुद्धक अन्तिम एक मासमे श्रोत्रिय समाजमे तीन वर्षसँ ऊपरक वयसक तीन सय कन्याक विवाह कराओल गेल छल ।

बालविवाह ओ कन्याक विवाह कालक अल्पवयस्कताक सम्बन्धमे एतेक विस्तारसँ चर्चा एहि हेतु कयल गेल अछि जे, एक शताब्दी पूर्व संस्कृतक प्रकाण्ड पण्डित, अपना समयमे मैथिल मनीषाक ध्वजवाहक पण्डित परमेश्वरझाक सुधारवादी दृष्टिकोणक महत्त्वकेँ आँकल जा सकय ।

सीमन्तिनी कथाक पौराणिक स्वरूपमे सीमन्तिनीक विवाह चौदहम वर्षमे होयब वर्णित अछि । परमेश्वरझा अपना समयक सामाजिक रूढ़िक अनुसरण करितथि तँ सीमन्तिनीक विवाह आठमे वर्षमे कराय चौदहम वर्षमे वैधव्य घटित होइत देखा सकैत छलाह । दोसर विकल्प ई छलनि जे सीमन्तिनीक वयसक उल्लेख कयनहि विना विवाह करा दऽ सकैत छलथिन । किन्तु सामाजिक रूढ़िक विपरीत सारदा एक्ट आ मैथिल महासभाक कन्या-विवाहक वयस-सीमा निर्धारणसँ बहुत पूर्वहि (1904-05) परमेश्वरझा अपन नायिकाक न केवल चौदहम· वर्षमे विवाह करबौलनि, अपितु प्रसंग बनाय सीमन्तिनीक एकटा 'परम धीरा ओ बुद्धिमती' सखी द्वारा चौदहमो वर्षमे कन्याक विवाहक विरोध करौलनि, सुश्रुतक निषेधमूलक प्रमाण सहित । स्वयं आख्यायिकाकार एकर टिप्पणीमे सुश्रुतक सम्बद्ध वचन उद्धृत कऽ देने छथि ।

स्त्री-शिक्षाक प्रति समर्थन भाव

स्त्री-शिक्षाक सम्बन्धमे सेहो म. म. परमेश्वरझा उदार दृष्टिकोण रखैत छलाह, तेँ व्यावहारिक ज्ञान सहित सीमन्तिनीकेँ विधिवत् अक्षरारम्भसँ लऽ कऽ चौँसठियो कला एवं अन्यान्य विद्याक शिक्षा देल जाइत छनि । लेखक विस्तारसँ सीमन्तिनीकेँ देल गेल विभिन्न विषयक शिक्षाक विवरण तथा सीमन्तिनीक परिष्कृत रुचिक वर्णन कयलनि अछि । ई सब ओहि समयमे देखाओल गेल जखन स्त्री-शिक्षाक प्रति समाजक विचार सर्वथा निषेधात्मक वा नकारात्मक छल । लेखक चाहितथि तँ सीमन्तिनीक वर्द्धिष्णु शरीर एवं अप्रतिम सौन्दर्य, स्वभावादिक विस्तृत-चमत्कारक वर्णनकेँ महत्त्व दऽ शिक्षाकेँ सर्वथा गौण राखि सकैत छलाह । ओहिमे कोनो अस्वाभाविकता नहि होइत, तथापि जेँ लेखककेँ अपन समय ओ समाजकेँ नारी-शिक्षामे उदार दृष्टि रखबाक सन्देश देबाक छलनि तेँ ओतेक विस्तारसँ सीमन्तिनीकेँ विविध विषयक शिक्षा देल जयबाक वर्णन कयने छलाह ।

म. म. परमेश्वरझा वास्तवमे अपन गतिशील विचारमे अपन समयसँ बहुत आगाँ चलि रहल छलाह, से साहित्यिको परिप्रेक्ष्यमे घटित भेल देखल जाइत अछि । सीमन्तिनी वाक्य-समस्या-पूरण, दोहा-कवित्त, नाटकाभिनय-अवलोकन, ध्रुवपद-मलारक आलाप, वीणा-वादनक संगहि आख्यायिका-उपन्यास पढ़बामे अभिरुचि रखैत छलीह ।

आधुनिक मैथिली साहित्यक आरम्भिक कालमे परमेश्वरझा पहिल व्यक्ति भेलाह जे कथामूलक गद्यसाहित्यमे आख्यायिकाक संग उपन्यासहुक अवधारणासँ परिचित छलाह । तेँ सीमन्तिनीकेँ आख्यायिकाक संग उपन्यासहु पढ़बाक प्रवृत्तिक उल्लेख कयलनि अछि ।

सीमन्तिनीकारसँ समाजक अपेक्षा

एहि ठाम ध्यातव्य जे बीसम शताब्दीक प्रथमे दशकमे एहन बौद्धिक वर्गक उदय होबऽ लागल छल जे देश-दोष, सामाजिक कुरीति-कुप्रथा सभक प्रति आलोचनात्मक विचार राखऽ लागल छल । ओकर सुधारक आकांक्षी

Scanned by CamScanner

छल । ओ वर्ग सहित्यहुक माध्यमे समाज-सुधारक भावनाक प्रचारक आकांक्षी छल । एहि प्रकारक अपेक्षा परमेश्वरझाक **सीमन्तिनी**सँ सेहो छलैके । मिथिलामोद, उद्गार 45-46, आषाढ़-श्रावण, शाके 1832, साल 1317-18 (1910 इ.)मे देवकृष्णराय(रामपुर)क एकटा **मधुश्रावणी** शीर्षक लेख प्रकाशित भेल छलनि जाहिमे मधुश्रावणी पावनिमे भार-दोर पठायब, विभिन्न 'आँखिमुन्नी कुचालि', विध-बाध ओ व्यवहारक दोष-निरूपण सहित ओकर सभक निरर्थकता, अपकारकता, प्रतिगामिता, अन्धविश्वास इत्यादिक घोर विरोध कयल गेल छल । मधुश्रावणी पाबनिमे नवविवाहिताकेँ टेमीसँ दगबाक विधि तथा सामान्य रूपमे नारीवर्ग द्वारा खोदहा पड़बयबाक व्यवहारकेँ नारी-उत्पीड़नक दृष्टिएँ विरोध करैत पण्डित वर्गकेँ चुनौती देल गेल छल जे ओ लोकनि एकरा पक्षमे शास्त्रीय प्रमाण अथवा तार्किकता प्रस्तुत करथि अन्यथा एकर विलोपन कयल जाय । एहि सम्बन्धमे परमेश्वरझा ओ 'सीमन्तिनी'सँ विशेषरूपे सुधारात्मक अपेक्षा कयल गेल छल, यथा-

"उत्तम पाटक दूइ घीउमेँ भिजावल टेमी !!! (जाहि द्वारा सौभाग्य-समयक निश्चय बुझल जाइत अछि)क प्रमाण देशस्थ मान्य पण्डितजी लोकनि देथु अथवा एहि घृणित दुर्व्यवहारकैँ उठाय देथु । हम आशा करैत छी जे अवश्य स्वदेशव्यवहारपटु पण्डितजी एकर प्रमाण वा अस्वीकार 'मि. मोद'- सम्पादक ओतै जनाय तद्द्वारा सबहिकाँ कृतार्थ करताह । वा आब तँ मिथिलामेँ पाश्चात्यविद्यो लोकनि कतेक गोटै छथि, लगाबथु गोटेक 'साइन्स'क युक्ति, जाहिसँ व्यवहार पुष्ट हो, प्रसङ्गवश एकटा औरो जे एतेक 'खोदहा' पड़ैबाक क्रम कतैसँ आएल वा एहिसँ कोन लाभ, इहो विचारैक थिक । हमरा लोकनिकैँ बड़ आशा लागल छल जे ई सब विषय 'सीमन्तिनी-आख्यायिका' द्वारा प्राप्त होइत किन्तु से 'मिथिला-तत्त्व विमर्श' चलल जे 'सीमन्तिनी'कैँ के पुछै, जेँ 'सुदर्शन' उपाख्यान दुर्दर्शन तैँ इहो सुखाइलि दीर्घोच्छ्वास लै रहलि छथि, यदि पण्डितजी कृपा करथिन्हि तँ एखनहु धरि हिन(सीमन्तिनी)क जीवनाशा अछि ।"

आख्यायिका कहबाक तात्पर्य

'सीमन्तिनी' मैथिली गद्यमे रचित कथात्मक कृति थिक । एकरा मिथिलामोदमे 'सीमन्तिनी-आख्यायिका' नामसँ प्रकाशित कयल जाय लागल । 'सीमन्तिनी' गद्यात्मक कृतिकेँ रचयिता अपने आख्यायिका कहने छलथिन अथवा ओ मोद-सम्पादक दिससँ जोड़ल गेल छल से कहब कठिन अछि ।

संस्कृत काव्यशास्त्रमे गद्यमय कथात्मक काव्य-विधाक दुद गोट भेद कहल गेल अछि- आख्यायिका ओ कथा । दण्डी यद्यपि दुनूकेँ एके वस्तु मानैत छथि । परन्तु दुनूकेँ दुइ गद्यात्मक काव्यरूप माननिहार द्वारा आख्यायिकाक उदाहरण **हर्षचरित** तथा कथाक उदाहरण रूपमे **कादम्बरी**केँ राखल जाइछ । आख्यायिकामे सत्य घटनाक वर्णन रहैछ आ कथामे कल्पित घटनाक । हर्षचरितक पात्र ओ घटना जेना इतिहासक सत्य वस्तु मानल जाइछ, तहिना पौराणिक पात्र ओ घटनाकेँ सत्य वा ऐतिहासिक मानि पौराणिक पात्र ओ घटना-सूत्रक आधारपर रचित **सीमन्तिनी**केँ आख्यायिका कहल गेल प्रतीत होइत अछि ।

सीमन्तिनी ओ सुदर्शनोपाख्यान

एहि ठाम उल्लेखनीय जे मिथिलामोदक जाहि उद्गारसँ **सीमन्तिनी-आख्यायि**का छपब आरम्भ भेल छल, ओही उद्गारसँ हरिनारायणझा, व्याकरणतीर्थ द्वारा लिखित कथात्मक गद्यकृति **सुदर्शनोपाख्यान**क प्रकाशन प्रारम्भ भेल जकर प्रथम परिच्छेद तथा अग्रिम परिच्छेदक एक अंश मात्र छपि सकल । सम्भव अछि जे उद्गार 20 सँ 24, 49सँ 51 वा पश्चात् कोनो उद्गारमे परवर्त्ती अंश पूर्ण वा अपूर्ण छपल हो जे सब उपलब्धे ने भेल अछि । सुदर्शनोपाख्यानक आधार-स्रोत थिक भविष्यपुराण ।

अयोध्याक राजा ध्रुवसन्धिक अकाल मृत्युक बाद हुनक ज्येष्ठपुत्र (मनोरमासँ उत्पन्न) सुदर्शनक स्थानमे कनिष्ठ पुत्र (लीलावतीसँ उत्पन्न) शत्रुजितकेँ ओकर मातामह द्वारा राजा बना देल जाइछ । मनोरमा अपन अल्प वयसक

Scanned by CamScanner

पुत्र सुदर्शनक प्राणरक्षार्थ पड़ाय भारद्वाज मुनिक आश्रममे शरण लैत छथि, कारण शत्रुजितक मातामह उज्जयिनी-नरेश युधाजित अपन दौहित्रक राजत्वक सुरक्षार्थ सुदर्शनक हत्याक प्रयत्न आरम्भ कऽ दैत अछि ।' कथा एतबहि धरि आबि सकल । प्रायः आगाँ विभिन्न प्रकारक घटनाक पश्चात् सुदर्शन द्वारा पुनः अयोध्याक राजसिहासन प्राप्त करबाक वर्णन होयबाक छल होयतैक ।

विचारणीय ई जे **सीमन्तिनी** ओ **सुदर्शन** दुहूक कथानक पौराणिके अछि, तखन एकटाकेँ आख्यायिका आ दोसरकेँ उपाख्यान कहबाक की आधार । जँ ई कही जे नायिका प्रधान कथाकेँ आख्यायिका आ नायक-प्रधान कथाकेँ उपाख्यान संज्ञा देल गेल तँ इहो सिद्धान्त मान्य नहि भऽ सकैछ, कारण पश्चात् काल नायिका प्रधान गंगाधरमिश्र रचित **सुकन्योपाख्यान** (पद्यकथा), त्रिलोचनझा रचित **शकुन्तलोपाख्यान** (कथात्मक गद्यरचना) मिथिलामोदेमे प्रकाशित होइत रहल छल । दोसर दिस मोदहिमे प्रकाशित म. म. मुरलीधरझाक **अर्जुन तपस्या** तथा मुकुन्दझा (फुलशरा)क **कुमारी तपोव्रत** वा **गिरिजोद्वाह** सन पौराणिकी कथात्मक गद्य-रचनाकेँ कोनो काव्यशास्त्रीय अभिधान देले ने गेल ।

मिथिला मोदक 17-19म उद्‌गारमे 392म पृष्ठक बाद पहिने **सुदर्शनोपाख्यान** एकसँ आठ पृष्ठ धरि छपल अछि । तकरा अव्यवहित पश्चात् पुनः एकसँ आठ पृष्ठ धरि **सीमन्तिनी-आख्यायिका** छपल अछि । दुनू थिक पौराणिकी कथानकपर आधारित गद्यरचना । मूल आधार स्रोत समान प्रकृतिक होइतो दुनूमे प्रचुर भिन्नता अछि । पात्र-सृष्टि, घटनाक संसाधन, वर्णन, वैचारिक दृष्टिकोण इत्यादिमे **सुदर्शनोपाख्यान**क यद्यपि अल्पांशे छपल अछि तथापि ओकर आरम्भिको अंश देखलासँ सम्भावित पूर्णांशक सम्बन्धमे अनुमान कयल जा सकैछ । **सुदर्शनोपाख्यान**मे पुराणेतर अभिनव पात्रक अभाव अछि । घटना सबमे पौराणिके सूत्रक अनुसरण अछि । वर्णनक अवसर राजाक ससैन्य शिकार-यात्रा, वनक स्वरूप, बनैया जन्तु, राजा ओ सिंहक युद्ध, पुनः राजाक दुइ गोट श्वसुरक परस्पर युद्धक प्रकरणमे वर्णनक अवसर आयल अछि । एहि वर्णन सबमे पुराणक अथवा संस्कृत काव्य-नाटकक वर्णनीय वस्तु ओ शैलीक अनुसरण कयल गेल अछि । अनेक एहन स्थल सभ प्रसंगतः अवश्य आयल अछि जतऽ लेखक अपन कल्पना ओ अभिनव रूपक वर्णनक चमत्कार देखा सकैत छलाह, किन्तु एहन स्थलपर लेखक पाठककेँ स्वयं अनुमान कऽ लेबाक निर्देश दऽ दैत छथि । तेँ वर्णनमे कोनो नवीनता नहि । समसामयिकताक नामपर अनवधानमे लसकर, जहलखाना, शिकारमे गोली चलायब, बन्दूकसँ गोली चला देब, गोलीक वर्षाक उल्लेख पारम्परिक स्वरूपक वर्णनमे अनसोहाँत पेओन सन प्रतीत होइछ । अतः एकर कथा-संरचनाकेँ उपाख्यान कहब उचिते । परन्तु **सीमन्तिनी-आख्यायिका**मे से बात नहि अछि ।

विद्वत्ताक आ रोचकताक समागम

सीमन्तिनी-आख्यायिकामे कथासूत्र ओ मुख्य पात्र पौराणिक अछि, शेष सकल रमणीयार्थक उपादान रचयिताक अपन सृष्टि थिकनि । पौराणिक पात्रक अतिरिक्त अनेक प्रसंगोपयुक्त स्त्री ओ पुरुष पात्र सभ अभिनवे अछि जे कथानककेँ अतिशय स्वाभाविक ओ मनोरंजक बनबैत बहुतो ठाम कथानककेँ नव दिशा दैत अछि । अनेक अभिनव छोट-छोट घटनाक सृष्टि भेल अछि । सामाजिक परिवेश ओ व्यवहारादिमे पौराणिकतासँ सर्वथा भिन्न अपन समसामयिक परिवेश, परिस्थिति इत्यादि सार्थक ओ रोचक रूपमे सन्निविष्ट भेल अछि । ओहिमे समसामयिक सामाजिक चिन्तन, सुधारवादी विचारधारा इत्यादि सेहो सहजे देखल जा सकैत अछि । जाहि विषयक वर्णनक प्रसंग अबैत अछि तकरा पाठकक अनुमानपर नहि छोड़ि लेखक स्वयं विस्तारसँ कहि जाइत छथि । प्रत्युत अनेक ठाम टिप्पणीमे सप्रमाण विस्तारसँ औरो स्पष्ट कऽ दैत छथि ।

पहिल मार्गदर्शक प्रयोग

एहि रूपेँ **सुदर्शनोपाख्यान** ओ **सीमन्तिनी-आख्यायिका**मे बहुशः तात्त्विक भिन्नता देखल जाइत अछि । दुनू गद्यरचनाक प्रकृति-प्रवृत्ति भिन्न छैक । तेँ ओकर काव्यशास्त्रीय अभिधान समान नहि देल जा सकैत अछि । समीचीनो

Scanned by CamScanner

नहि होयत । पौराणिक पात्र, पौराणिक कथा-सूत्र तथा पौराणिक शैलीक वर्णनसँ युक्त कथात्मक गद्य-रचनाक पारम्परिक अभिधान **उपाख्यान**, तेँ **सुदर्शनोपाख्यान** अथवा अन्य **उपाख्यानान्त** शीर्षक सार्थक अछि । परन्तु म. म. परमेश्वरझा रचित **सीमन्तिनी** विषयक कथाकृतिकेँ **आख्यायिका** कहब सेहो खूब उपयुक्त नहि प्रतीत होइछ । कारण, ओहिमे आख्यायिकाक समग्र लक्षण घटित नहि होइछ । पौराणिक मुख्य पात्र ओ क्षीण कथासूत्र पौराणिक अथवा ऐतिहासिक रहने औपचारिक रूपसँ सत्य कहल जा सकैत छैक, किन्तु शेष अनुपूरक पात्र-पात्री ओ सकल कथात्मक पुष्कल उपादान समकालिक सामाजिक परिवेशक आधारपर रचयिताक स्वकल्पिते छनि ।

बीसम शताब्दीक आरम्भ धरि भारतीय साहित्यमे पाश्चात्य साहित्यक प्रभावेँ उपन्यास नामक कथात्मक गद्य विधाक खूब प्रचार भऽ गेल छल । विशेषत: मैथिलीक निकटवर्त्ती भाषा बंगलामे । म. म. परमेश्वरझा उपन्यास विधासँ परिचित छलाह । संस्कृतक प्राचीन गद्यात्मक काव्यरूप कथा-आख्यायिका एवं उपन्यासक अन्तरकेँ नीक जकाँ जनैत छलाह । ई हुनक नायिका सीमन्तिनी **आख्यायिका** ओ **उपन्यास** दुनू प्रकारक कृति पढ़बामे अभिरुचिसँ सिद्ध होइत अछि ।

उपन्यासक सकल अवयव समकालिक परिस्थितिसँ गृहीत, लेखकक स्वकल्पित रहैत छल । एतेक धरि जे ऐतिहासिको पृष्ठभूमिक उपन्यासमे समकालिकताक प्रभाव नीक जकाँ रहितहि छल । अत: **सीमन्तिनी**क स्रष्टा म.म. परमेश्वरझा अपन गद्यात्मक दीर्घ कथाकृतिकेँ सहज रीतिसँ उपन्यास कहि सकैत छलाह । से नहि कहि आख्यायिका कहबाक पाछाँ प्राय: हुनक संस्कृत पृष्ठभूमि ओ रचनाक पौराणिक आधार मात्र रहल होयतनि । सीमन्तिनीक कथात्मकताकेँ कथा-स्रोतक पौराणिक होयबाक कारणे भनहि आख्यायिका कहल गेल हो परन्तु कथाक पल्लवन, वर्णन-विन्यास एवं वैचारिकतामे समकालिकता एवं आधुनिकताक कारणे ई पूर्णरूपमे उपन्यासे थिक । पौराणिको सन्दर्भक गद्यात्मक कथाकृति अर्थात् उपन्यासमे समकालिकताक समावेशक दृष्टिए सीमन्तिनीकेँ पहिल मार्गदर्शक प्रयोग कहल जा सकैछ ।

मैथिलीक आद्य उपन्यास

एहि अर्थमे, मैथिली साहित्यविषयक साम्प्रतिक ज्ञान-सीमामे म.म.परमेश्वरझा द्वारा रचित **सीमन्तिनीकेँ** समसामयिकता, स्फीत दृष्टि एवं युगबोधसँ सम्पन्न मैथिलीक प्रथम कलात्मक औपन्यासिक कृति होयबाक श्रेय निर्विवाद रूपसँ देल जा सकैत अछि । यद्यपि हम स्वयं पूर्वक अपन विभिन्न लेख सबमे **मोहिनी-मोहनकेँ** मैथिलीक प्रथम उपन्यास कहने छलिऐक, किन्तु तावत **सीमन्तिनी**क अपूर्ण ओ विखण्डिते रूप भेटि सकल छल । ओहि आधारपर कोनो निष्कर्षपर पहुँचब सम्भव नहि छल । अनुसन्धानक क्षेत्रमे कोनो निष्कर्ष तावते धरि अन्तिम कहल जाइत अछि जावत धरि ओकरा खण्डित करऽवला कोनो नव प्रमाण नहि भेटि जाइत अछि । से भेलापर अपनहु मतक खण्डन आवश्यक भऽ जाइछ । आब जखन **सीमन्तिनी-आख्यायिका**क सम्पूर्ण रूप उपलब्ध भऽ गेल अछि तँ ओकर सम्यक् मूल्यांकन एवं महत्त्वक प्रतिपादन सम्भव अछि ।

पूर्वहि सिद्ध कयल गेल अछि जे **सीमन्तिनी** भनहि खण्डश: प्रकाशित भऽ सोलह वर्षमे सम्पन्न भऽ सकल परन्तु एकर सम्पूर्ण रूपक रचना 1904 सँ 1905 इ.क मध्य सम्पन्न भेल छल । 1906 इ.क उत्तरार्द्धसँ एकर प्रकाशन आरम्भ भेल । **मोहिनी-मोहन उपन्यास**क प्रकाशन 1908मे भेल छल । अत: **सीमन्तिनी, मोहनी**सँ ज्येष्ठा सिद्ध होइत छथि ।

सीमन्तिनी ओ मोहिनी-मोहन

आब जखन **सीमन्तिनीक** संग **मोहिनी-मोहन**क तुलना करैत छी तँ दुनूक प्रवृत्तिमे पैघ अन्तर बुझना जाइत अछि । **मोहिनी-मोहन** आधुनिक कालक सामाजिक जीवनक घटनाकेँ अपन औपन्यासिक आधार तँ बनबैत अछि,

Scanned by CamScanner

सामाजिक कुरीतिक दिस उन्मुखता तँ देखबैत अछि, ओहि कुरीतिक बोझ तरमे दाबल युवा मनक प्रेम-बीजाङ्करकेँ फुटैत देखयबाक साहस तँ करैत अछि; परन्तु अविश्वसनीय जादू आ तिलस्मी चमत्कारकेँ लक्ष्यसिद्धिक साधन रूपमे प्रयोग उपन्यासकेँ श्लथ ओ दुर्बल बना दैत छैक । ओना अपना समयक एकटा साहसिक ओ रुचि-रंजकतापूर्ण औपन्यासिक प्रयोग अवश्य कहल जा सकैत अछि । दोसर दिस सीमन्तिनी-आख्यायिकामे पौराणिकी कथानकक दैवी चमत्कारक प्रसंगकेँ ग्रहणे ने कयल गेल ।

लोकवृत्त ओ औपन्यासिक सौन्दर्य

सीमन्तिनीक रचनाकार पौराणिक पात्र ओ घटनाकेँ अपन उपन्यासक कथा-वस्तुक आधार बनबितो अपन समकालिक परिवेशसँ सकल उपादान ग्रहण कयलनि अछि । **सीमन्तिनी**मे समकालिक समाजसँ गृहीत राजवृत्त ओ लोकवृत्त-दुहूक समावेश भेल अछि । एहिमे एकटा राजकुमारीक कथा कहल गेल अछि, तेँ राजवृत्तक होयब तँ स्वाभाविके जकरा लेखक अपन समकालीन स्वानुभूत राजकीय परिवेशसँ ग्रहण कयलनि अछि । परन्तु राजवृत्तक तुलनामे लोकवृत्तक पलड़ा बहुत गुरुतर ओ मूल्यवान अछि । लेखक उपन्यासक कथावस्तुक अंगरूपमे समसामयिक परिवेश, लोकजीवन, लोकव्यवहार, लोकरुचि, लोकमतकेँ ताहि तरहेँ आबद्ध कऽ देने छथि जे **सीमन्तिनी** अपना युगक सर्वाधिक विश्वसनीय ओ उद्देश्य पूर्ण, युगबोध-वाहक, ज्ञानवर्द्धक, सौन्दर्य-सौरभसँ सम्पन्न, आनन्ददायक मैथिलीक प्रथम उपन्यासे नहि, अपितु एकटा अनुपम कृति बनि गेल अछि । इहो कहल जा सकैत अछि जे ई मिथिलाक लोकवृत्त(Folklore)क एकटा आकर्षक सूत्रात्मक कोषे बनि गेल अछि ।

मैथिलीक आद्य औपन्यासिक कृति होयबाक करणे सीमन्तिनीक अपन ऐतिहासिक महत्त्व तँ छैके, ताही संग एकर महत्त्वपूर्ण वैशिष्ट्य अछि एकर सूचना-पक्ष । ओहिमे निहित सामाजिक दर्शन । सीमन्तिनीक लेखनक प्रयोजन मैथिली-भाषा-साहित्यक श्री-संवर्धन एवं पाठकक मनोरंजन तँ छले, किन्तु ओहि संग अन्यहु आनुषंगिक उद्देश्य सब सन्निहित छल । पाठककेँ केवल मनोरंजने नहि, अपितु शास्त्र ओ समाज विषयक ज्ञान सेहो अनायासे प्राप्त भऽ जाइक, तेँ रचनाकार अपन कृतिमे अपन गम्भीर शास्त्रीय ज्ञान ओ विस्तृत सामाजिक अनुभवकेँ समवेत रूपमे सन्निविष्ट कऽ देलनि अछि । परमेश्वरझा सुस्पष्ट सामाजिक चिन्तनक साँचामे सीमन्तिनी सन पौराणिक पात्रीकेँ गढ़ि मैथिली गद्य-साहित्यमे कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर कृत वर्णरत्नाकरक परवर्त्ती मैथिली गद्यक साढ़े पाँच सय वर्षक दीर्घ सुषुप्तिक पश्चात् एकटा नवीन अभिव्यक्ति-सामर्थ्यक उन्मेष सहित दिशा-संकेत देलनि जे साहित्य मनोरंजन मात्रक साधन-सामग्री नहि, अपितु समाजक पथ-प्रदर्शन सेहो एकर धर्म थिक ।

मैथिलीए नहि, अपितु अपना समयक भारतीय साहित्यमे अपन प्रयोगधर्मिताक कारणे श्रेण्य कृतिक कोटिमे स्थान पयबाक योग्यता-सम्पन्न **सीमन्तिनी**क स्रष्टा म.म.परमेश्वरझाक गम्भीर सामाजिक चिन्तन जाहि रूपमे ओहिमे वा अन्य कृतिमे व्यक्त भेलनि अछि से बंगालक राजा राममोहनराय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर किंवा बंकिमचन्द्र चटर्जीसँ- मिथिलाक दृष्टिएँ कनेको न्यून नहि आँकल जा सकैछ । जँ परमेश्वरझा बंगालमे भेल रहितथि तँ अवश्ये बंगाली बुद्धिजीवी लोकनि हुनका उपर्युक्त महापुरुष लोकनिक श्रेणीमे स्थापित कऽ देने रहितथिन । मुदा दुर्भाग्य जे ओ मिथिलामे भेलाह जतऽ ककरो कीर्त्ति पर्यन्तकेँ अपकीर्त्ति बनयबामे हमरा लोकनि नहि धखाइत छी । संस्कृत विद्या ओ संस्कृत पण्डितवर्ग मात्रकेँ खिधांस आ कुचेष्टा सहित निन्दित-लांछित करबेमे, अवहेला देखयबेमे अपन उतकिरना बुझैत छी । यैह अछि अन्तर बंगालक प्रगतिशील बुद्धिजीवी ओ मिथिलाक तथाकथित प्रगतिशील बुद्धिजीवीमे ।

Scanned by CamScanner

सीमन्तिनी आख्यायिक

I. **जय लम्बोदर करिवदन सिद्धि सदन शुभनाम ।**
सुख सन्तति सम्पति सुमति पुरिय सकल मनकाम ॥

भारतवर्षक अन्तर्गत आर्यावर्त्त स्थानमेँ सनातन धर्मधारक दुर्जनशासक अनेक यज्ञकारक शरणागतपालक सर्वसुखदायक अवदातकर्मा चित्रवर्मा नाम राजा छलाह । ओहि राजाकेँ विविध गुणोपेता उत्तम कुलोद्भूता रमणीयाकृति रतिमूर्त्ति बहुत पत्नी छलथीन्हि । यद्यपि प्रति पत्नीमेँ शौर्य औदार्य तेज आदि गुणसंपन्न अनेकानेक पुत्र छलथीन्ह तथाऽपि एक कन्याक अत्यन्त अभिलाषा छलैन्ह । यथार्थमेँ कन्यारत्न परम प्रीति ओ अनुकम्पापात्र होइत अछि । मनुओं अपन धर्म संहितामेँ पौत्र दौहित्रकेँ तुल्य मानलेँ छथि । अनन्तर कतेक देवता पितरक आराधनासँ बहुत दिनेँ एक कन्या जन्म लेलथीन्हि । राजा हुनक जातकर्मादि संस्कार संपन्न कय एगारहमा दिन ग्रहशान्तिपूर्वक "सीमन्तिनी" नाम रखलथीन्ह ।

एक दिन एही आनन्दक प्रस्तावमेँ महाराज बहुत भारी सभा लगायकेँ बैसल छलाह । जाहिमेँ दक्षिण बाम भागमेँ अपन अपन यथोचित स्थानपर राजपरिवारक प्रधान प्रधान लोक बैसि सभाक शोभा बढ़ाय रहल छलाह, एक दिश नगरक महाजनवर्ग दोसर दिश राजकर्मचारी गण समयोचित वस्त्र ओ आभूषण धारण कयलेँ उपस्थित छलाह, संमुखमेँ आज्ञाक प्रतीक्षा करैत सेनापति लोकनि ठाढ़ छलाह । एहि अवसरमेँ वृद्ध ओ यथार्थवादी उत्तमोत्तम विद्वद्वर्गकेँ बजाय श्रीयुत महाराज अपन सिंहासन लग बैसैक आज्ञा दय ज्यौतिषी लोकनिकेँ पुछैत भेलथीन्ह जे दैवज्ञवर्ग ! यद्यपि अपने लोकनि परम वृद्ध तथा हमर दादाजीक सभापण्डित थिकहुँ तखन अपने लोकनिक अध्यक्ष सभामेँ कोनो प्रगल्भताक कथा करी से हमरा अनुचित थीक तथापि कौतुकी चित्त नहि मानैछ तेँ एतबा प्रश्नक भार ओ परिश्रम दै छी जे जनिक जन्म भेल छैन्ह तनिक कर्म केहन छैन्ह ।

एतबा कथा बाजि महाराजकेँ चुप भेला उत्तर एक परम वृद्ध सामुद्रिक तथा जातकफल कहबामेँ अतिविलक्षण कथाविचक्षण शुभलक्षण गणकशिरोभूषण तत्क्षणमेँ बाजि उठलाह– करुणानिधान ! आइ काल्हि एहि तरहक सौजन्य ओ विनीत भाव दुर्लभ अछि, साधारणो लोककेँ अपनासौं वृद्धक किञ्चितो धाख ओ संकोच नहि होइ छैन्ह परन्तु श्रीमानकेँ एतेकटा साम्राज्य भेलहुं राज्यमदक लेशमात्रो नहि अछि ।

पृथ्वीनाथ ! एहना विषयमेँ वृद्धलोकसौँ परामर्श करबे उचित थीक, शास्त्रीय विचारमेँ संकोच की । प्रभुवर हम जहाँ तक जातक कन्याक कुण्डली देखिकेँ विचार कयल अछि सर्वथा उत्तम बूझि पड़ैत अछि अति दीर्घायु ओ भाग्यवती होइतीहि । तथा गौरीक सनि सौभाग्यवती, दमयन्तीक सनि सुस्वरूपा, सरस्वतीक सनि कलाभिज्ञा, लक्ष्मीक सनि सर्वाभिलाषापूरिका, अदितिक सनि सुप्रजा, सीताक सनि पतिव्रता, चन्द्रिकाक सनि लोचन सुखदायिनी होइतीहि, तथा अत्युत्तम राजकुलमेँ विवाहसम्बन्ध भेलापर बहुत दिन पर्यन्त पतिक सङ्ग भोग विलास कय आठटा पुत्र और एक कन्या उत्पन्न करतीहि ।

एतबा कहि ओहि बूढ़ ज्यौतिषीकेँ चुप भेलापर सभासदसहित महाराज हुनक वाक्यामृतसँ परितृप्त भय आशाधिक पारितोषिक प्रदान कय हुनका प्रसन्न कयलन्हि ।

अनन्तर ओहि प्रतिष्ठित विद्वान सभक संगेँ एक नवीनो ज्यौतिषी घुसियायकेँ गेल रहथि, यद्यपि विद्यामेँ ओहो नीके छलाह परन्तु स्वभावक किच्छु तीव्र, से बाजि उठलाह जे महाराज ! आओर सभ तँ नीके छैन्ह परन्तु एकटा योग एहन लागल छैन्ह जे चौदहम वर्ष मध्य वैधव्य अवश्य होअ ।

Scanned by CamScanner

कुलिश सम कठोर ई कथा कानमे पड़ितहि सभाक सकल लोक व्याकुल चित्त भय केवल देखादेखी करय लगलाह परन्तु कोनो तरहक वार्तालाप केओ परस्पर करताह से सामर्थ्य नहि होइन्ह । राजा तँ ई सुनितहि कतेको कालपर्यन्त शून्यहृदय भय भित्तिलिखित चित्र जकाँ मौनी निश्चल बैसल रहलाह ।

पश्चात् अपनहि किच्छु चैतन्य कय ईश्वरेच्छाधीन निखिल प्रपञ्चस्थिति विचार कय यद्भविष्य पक्षावलम्बी भय चुप्पहिँ सभ[ा]सँ उठि एक एकान्त कोठलीमे शोकशय्योचित पलङ्गपर चुप-चाप पड़ि रहलाह । यद्यपि लोकक स्थिति ओ सभाक रुखि गमि ज्यौतिषीजीके अपनहुँ बहुत पश्चात्ताप भेलैन्ह, विशेषत: एहि विषयक क्षोभ भेलैन्ह जे अपना एको छदाम भुरसी वा सगुन नहि भेटलैन्ह तेँ लज्जासँ घाड़ नीचाँ खसौले पतड़ा पागमे खोसैत चुप-चाप उठिके विदा भेलाह । तदुत्तर आओरो सभासद लोकनि निरुत्साह भेल अपन अपन घर फीरि गेलाह ।

यद्यपि ओहो ज्यौतिषी कोनो मिथ्या कथा नहि बाजल छलाह परन्तु अनवसरमे सत्यो कथा बजले लोक अपमानित होइत छथि, यदि उऐह कथा कालान्तरमे वा शब्दान्तरमे कोनो आन युक्तिसँ प्रकाशित करितथि तँ एहन दशा नहि होइतैन्ह परन्तु आब पच्छतौले हो की । बीतल अवसर फेरि हाथ नहि आबि सकैत अछि।

पहिले तँ ई विषय सभ बहुत गोप्य राखल गेल जे अन्त:पुरमे ककरहु वार्त्ता नहि होय परन्तु प्रसिद्ध अछि जे 'षट्कर्णो भिद्यते मन्त्र:' अर्थात् जे बात छौ कानमे पड़य से कहियो झापल नहि रहि सकय । अन्ततोगत्वा ई सभ गप्प कानाकानी होइत रनिवास तक पहुँचल । कथा सुनितहिमात्र हाहाकारपूर्वक महान् आक्रन्द होबय लागल ।

वास्तवमे एहन विषय सुनले कठोर चित्त पुरुषहुकाँ धैर्य नहि रहि सकैत अछि आओर स्त्रीगणक हृदय तँ अत्यन्त सदय ओ स्वभावत: मृदु होइत छैक तकर कथै की । ओ आक्रन्द सुनितहि जेना कोनो उत्पातक समयमे आकाशसँ भूमण्डलमे तारागण टूटि खसैत अछि तेहिना दशो दिशसँ रनिवासमे स्त्रीक झुण्ड खसय लागल । क्यौ तँ दुइ चारि जनी एकट्ठा भय कानाफुसकी करय लगलीहि; क्यौ सभ केवल कानय लगलीहि, क्यौ सभ बाजथि जे महारानी लोकनि बेटी जमाइके विवाह ओ द्विरागमनमे देबाक हेतु एहि खनसँ नाना प्रकारक वस्तुजात ओरिआयके रखैत छलीहि अछि से आब ककरा लय रखतीहि ।

एक गोटे राजसम्बन्धिकहिमेसौं क्यौ परम बूढ़ि छलीहि से (महफा) सवारीसँ उतरितहि बाजय लगलीहि जे एहन शुभ अवसरमे कोन अलच्छा एहि तरहे असगुन कथा बाजल अछि, बाटमे अबैत छलहुँ तखन प्राय: क्यौ बजैत छल जे उएह नवका ज्योतिषी बाजल अछि जे ओ कहिया शास्त्र पढ़लक ओ कहिया ऐलैक, ओकर तँ बापे हमरा लोकनिक ओहि ठामसँ तिलासकराँति ओ जूड़शीतलमे तिल-जौक मोटा बान्हि के लय जाइत छल । ओकर घरायन सदाक पुरहितिया थीक । ओकरा घरमे पण्डित ज्योतिषी कहिया भेलैक जे राजाक ओहि ठाम आबि फल मिलाओत ।

ई सभ कोलाहल मचितहि रहय कि तावत्मे एक बूढ़ा देवान (जे कैएक पुस्तिसँ राज्यक सेवा कयले छलाह) ड्यौढ़ीपर आबि सभसँ प्रधान खवासिनीके बजायके कहलथीन्ह जे हमर स्वामिनी महारानी लोकनिसौं साष्टाङ्गपात प्रणाम कहि निवेदन कय दिहै जे हुनका लोकनि व्यर्थ शोक कथीलय करैत छथि । राजद्वारमे अनेक तरहक लोक अबैत अछि, अनेक तरहक कथा बजैत अछि तकर विश्वासे कोन । कदाचित् एहने संशय थिक तँ जाहि शास्त्रमे अरिष्ट योग लिखित अछि ताही शास्त्रमे शान्ति ओ स्वस्त्ययनक विधियो लिखल अछि तेँ आइये दिनसँ नाना प्रकारक शान्ति-स्वस्त्ययन आरम्भ करा दै छी, कोनो चिन्ता नहि ।

खवासिनीक मुहे बूढ़ा देवानक संवाद सुनि सभ महारानी लोकनि धैर्य धारण कय शोकके बिसरैत भेलीहि । वास्तवमे काम क्रोध लोभ मोह हर्ष विषाद अमर्ष ईर्ष्या द्वेष इत्यादि यावत्पदार्थक वेग सभ कालमे एक तरहे नहि रहैत अछि किन्तु कालक्रमे ह्रस्ते होइत अछि तेँ महारानियों सभ स्वस्था भेलीहि । ओम्हर

Scanned by CamScanner

सीमन्तिनी शुक्लपक्षक चन्द्रिका जकाँ प्रतिदिन तेना बाढ़य लगलीहि जेना थोड़हि दिनमेँ सोड़ह कलाक कोन कथा तकर चौगुन चौंसट्ठि कलाक परिशीलन कय लेलन्हि ।

तात्पर्य ई जे जखन सीमन्तिनीकेँ पाँचम वर्ष छलैन्ह तखन महाराज हुनका अक्षरारम्भ करायकेँ एक कायथक नेनाकेँ नियुक्त कय देलथिन्ह जे वर्णमालाक्रमसँ सभ अक्षर ओ मात्रा लिखायकेँ गणितविद्यासम्बन्धी गुण भाग योग वियोग त्रैराशिक इत्यादि विषयमेँ बहुत उत्तम बोध कराय देलकैन्ह ।

तदुत्तर सातम वर्षसँ एक परम वृद्ध विद्वान्क द्वारा नीतिक ओ स्त्रीधर्मक शिक्षा देयाओल गेलैन्हि । दशम वर्षसँ परम प्रवीणा अपन धाइक बेटी[1] जे छलैन्हि से अन्तःपुरहिमेँ कामशास्त्राङ्गभूत ६४ कला सिखाबै लगलैन्हि । यथा–

गीत, वाद्य, आलेख्य, विशेषकच्छेद्य अर्थात् पुरुषकेँ चन्दनादिक ओ स्त्रीकेँ सिन्दूरादिक विन्यास, तण्डुल कुसुम बलिविकार, पुष्पास्तरण, दशनवसनाङ्गराग, मणिभूमिका कर्म, शयनरचन, उदकवाद्य, उदकाघात, चित्रयोग, माल्यग्रथन विकल्प, शेखरकापीडयोजन, नेपथ्यप्रयोग, कर्णपत्रभङ्ग, गन्धयुक्ति, भूषणयोजन, ऐन्द्रजाल, कौचुमारयोग अर्थात् सुभगङ्करण जाहिसँ शरीरमेँ सौन्दर्य विशेष होअय, हस्तलाघव, विचित्र शाकयूषभक्ष्यविकारक्रिया, पानक रसरागासव योजन, सूचीवान कर्म, सूत्रक्रीड़ा, वीणा डमरूक वाद्य, प्रहेलिका, प्रतिमाला (अन्त्याक्षरी), दुर्वाचक योग, पुस्तकवाचन, नाटकाख्यायिका दर्शन, काव्यसमस्यापूरण, पट्टिका वेत्रवानविकल्प, तक्षकर्म, तक्षण, वास्तुविद्या, रूप्यरत्न परीक्षा, धातुवाद, मणिरागाकरज्ञान, वृक्षायुर्वेद योग, मेषकुक्कुटलावकयुद्धविधि, शुकसारिकाप्रलापन, उत्सादन संवाहन केशमर्दनादि कौशल, अक्षरमुष्टिका कथन, म्लेच्छितविकल्प, देशभाषा विज्ञान, पुष्पशकटिका, निमित्तज्ञान, यन्त्रमातृका, धारणमातृका, संपाठ्य, मानसी, काव्यक्रिया, अभिधान कोश, छन्दोज्ञान, क्रियाकल्प, छलितक योग, वस्त्रगोपन, द्यूतविशेष, आकर्ष–क्रीडा, बालक्रीडनक, वैनयिकविद्याज्ञान अर्थात् आचार शास्त्रक ओ हस्त्यादिशिक्षाज्ञान, वैजयिकी विद्याज्ञान अर्थात् अपराजितादि दैवीविजयविद्याक तथा शस्त्रविद्यादि मानुषीविजयविद्याक बोध, व्यायाम विज्ञान अर्थात् मृगयाविषयक नैपुण्य ६४ ।[2]

एवं प्रकारे बारहम वर्षमेँ सभ कला सीखिकेँ तैयारि भेलीहि । तेरहम वर्षक प्रवेश होइतहि हुनका शरीरसँ दुर्बल ओ सुकुमार शैशव बेचाराकेँ जबर्दस्तीसँ हरायकेँ परम प्रबल मत्त गजराज समान यौवन महाराज अपन अधिकार जमाय लेलन्हि ।

ई स्वभावसिद्ध विषय थीक जे जखन क्यौ राजा महाराज कोनो स्थानपर नवीन अधिकार (दख़ल कबजा)करै छथि तखन नवे नव अपन सलीका चलबैत छथि, ककरहु उच्चसँ नीच बनबैत छथि ओ ककरहु नीचसँ उच्च, से विषय एतहु होबय लागल अर्थात् जे सीमन्तिनीमुख नेना सभक सङ्ग खेलायबाक कारणे मलिनप्राय रहैत छल सैह आब विशेष प्रसाधित भय तेना उज्ज्वल रहैत अछि जेना ओ छबि–छटा देखि शरत्समयहुक चन्द्रमा सतत त्रस्त जकाँ स्रस्त भय कहुखन ग्रस्त, कहुखन अस्त होइत छथि ।

आँखि दुनू यौवन महाराजक बुद्धिमन्त्री ओ युद्धमन्त्रीक परम प्रधान पदवी पाबि अधीन पुरुषक प्रतिवक्रता धारण कय अपन प्रताप ओ पराक्रम जमबय लगलाह ।

नाकक दुनू पूड़ा तिलक फूल समान फुलायकेँ फलकि गेलाह । अति संकुचित कुच बेचारा जे पहिले दबल ओ नुकायल रहैत छल सैह आब प्रगल्भतासँ प्रव्यक्त भय क्रमशः उच्चहुसँ उच्च पदवी पाबय लागल । कात करोटक व्यक्तिक एहन उन्नति ओ गौरव देखि अमर्षी मध्य (कटि) दिन दिन खिन्न अन्ततः शून्यप्राय भय गेलाह ।

जङ्घामेँ यद्यपि देखबालय विशालता भेबो कयलैन्ह तथापि कार्यमेँ बहुत शिथिलता ओ मन्दता भय गेलैन्ह इत्यादि कहाँ तक कहानी कहू ।

Scanned by CamScanner

एहि वय:सन्धिक शुभ अवसरमेँ एक दिन अपनि सखी सभक सङ्ग बैसिकेँ सीमन्तिनी गप-सप कय रहलि छलीहि कि ताहिमे प्रसङ्गवशेँ बाजि उठलीहि जे है लोकनि ! हमरा अपना शरीरमे थोड़ेक दिनसँ किछु विकार बूझि पड़ैत अछि अर्थात् अधिक काल अन्यमनस्का रहैत छी । चलबा फिरबामे आलस्य होइत अछि। कहुखन शरीरमे गुदगुदी जकाँ लागि उठैत अछि । एक ठाम अधिक काल मन नहि लगैत अछि । इच्छा होइत अछि जे कहुखनकेँ फुलबाड़ी आदिमे टहली ।

ई कथा सुनि और सभ गोटे चुप्पे छलीहि परन्तु एक जनी सखी जे सभसौँ बयसेँ जेठि छलीहि (जनिक विवाह द्विरागमन भेल छलैन्ह प्राय: एक आध यात्रा आओरो सासुरसँ बसि आएल छलीहि) बाजि उठलीहि-

दाइ जी ! जे अहाँ कहि अयलहुँ अछि से सत्य, हमरहु किछु भेद अवश्य बूझि पड़ैत अछि परन्तु एकर कोनो अन्देशा नहि, प्राय: एहि अवस्थामे अनेक कन्याकेँ एहि तरहक विकार भय जाइ छैन्ह । चरक सुश्रुत आदि आर्ष वैद्यकग्रन्थमे अनेक प्रकारक उन्माद रोग लिखै छथि ताहिमे एक प्रभेद (कामोन्मद)क पूर्व रूप बूझि पड़ैत अछि, यद्यपि निदानज्ञ चिकित्सकसँ एकर प्रतिकार असंभव । परन्तु एकर एकटा इयेह टोना छैक जे विवाह भेलेँ ई दु:ख सहजहिं छूटि जाइत छैक तेँ हम आइये जायकेँ श्रीमहारानी साहेबाकेँ कहै छिऐन्ह जे श्रीमहाराज साहेबकेँ कहि शीघ्र अहाँक विवाह कराय देथु चित्त स्वस्थ होएत ।

एतवा प्रस्ताव सुनितहि एक सखी (जनिक अवस्था तेरह वा चौदह वर्षक छलैन्ह, ओही वर्ष विवाह भेल छलैन्ह, प्राय: मधुश्रावणी धरि भेल छलैन्ह, परम अलगाहि छलीहि) दोसर सखीक कान लागि नहू-नहू कहय लगलीहि जे हा ! बड़की बहिनि केहनि अबूझि छथि जे ओहि जोतखीक कहल चौदहम वर्षक विषय सुनलो छैन्ह तैयो विवाहक चर्चा एखनहि करैत छथि । ई दिन बितायकेँ जे होइत से होइत ।

यद्यपि ओ दोसरि सखी परम धीरा ओ बुद्धिमती छलीहि तेँ सीमन्तिनीक सन्निधिमे किच्छु उत्तर तँ नहि देलथीन्ह परन्तु सीमन्तिनीक कान ओतबा कथा सुनितहि अपनहि ठाढ़ भय गेलैन्ह ।

वास्तवमे आत्माक ई स्वभाव छैन्ह जे अपन दु:खक विषयमे सतत सावधान ओ सशङ्क रहैत छथि।

तदुत्तर सीमन्तिनी ओहि सखीकेँ पूछय लगलीहि जे है सखी ! ई छौड़ी तोहरा कान लागि की कहैत छलहु ।

सीमन्तिनीक एतबा कथा सुनितहि ओ बेचारी अत्यन्त डराय गेलीहि तथा मनहि मन बिचारय लगलीहि जे "ई छौड़ी केहनि अलगी अछि जे राजकन्याक सोझहि एहन कथाक प्रस्ताव उठौलक" प्रकाश रूपमे बाजय लगलीहि जे दाइजी ! ई कहैत छलि अछि जे एखन विवाहक कोन चर्चा, कियेक तँ चौदहम वर्षमे विवाह भेलेँ पन्द्रहम सोडहम वर्षमे गर्भाधानक सम्भव । वैद्यकमे महर्षि सुश्रुत[3] तकर अत्यन्त निषेध कयलेँ छथि । विशेषत: राजकन्याकेँ अल्प-

II. -अवस्थामे विवाह होयब उचित नहि, कियेक तँ ओहि अवस्थाक उत्पन्न पुत्रकेँ दृढ़ शौर्य ओ पराक्रम नहि भय सकैत छैन्ह जे राजा ओ राजपुत्रकेँ एक परमावश्यक [गुण] थीक, अतएव राजस्थानमे रीतियो इयेह अछि जे प्राय: सोड़हसौँ अधिक वर्ष भेलापर कन्यादान कयल जाइत अछि।

एतबा कथा सुनि सीमन्तिनी फेरि पुछय लगलथीन्हि जे जोतखीक नाम की लैत छलि अछि । तखन ओ सखी फेर कहय लगलथीन्हि जे जोतखीक नाम ई कहैत छलि अछि जे चौदहम वर्षक विवाहमे जोतखीयो लोकनि विमत छथि कारण जे पञ्चदशाब्द, षोडशाब्द गर्भ ओ प्रसवमे ओ लोकनि परम अनिष्ट मानैत छथि, ओ बहुत भारी शान्ति स्वस्त्ययन करबैत छथि ।

यद्यपि ओ सखी एवं प्रकारेँ अनेक कथाक अपह्नुति (छल) कयलैन्ह, तथापि सीमन्तिनीक चित्तमे विश्वास नहि भेलैन्ह, ओ कहलथीन्हि-"सखी सभ ! तोहरा लोकनि अत्यन्त चतुरा छह तेँ अनेक छल-प्रपञ्च

Scanned by CamScanner

कय कथाक तत्त्व हमरा बुझय नहि दैत छह, परन्तु हमरा चित्तमेँ तोहरा लोकनिक कथाक एको रत्ती विश्वास नहि होइत अछि, बेस, आब एकरे पुछैत छियैक, ई स्वच्छ स्वभाव अछि, सत्य कथा कहति ।"

एतबा कथा बाजि ओहि छोटकी परिचारिका सहचारिकसौँ पूछय लगलीहि जे, गै ! ओहन शपथ तँ हमरा मुहसौँ नहि बहराइत अछि (अर्थात् स्वामीक), अपने देह थरथर कँपैत अछि, परन्तु तोहरा माइ-बापक शपथ थिकौक, सत्ये सत्ये कह, कोनो डर नहि, सत्यवक्ता लोक इहलोक-परलोक सर्वत्र निर्भय रहैत अछि आओर असत्यवादीक सर्वत्र निरादर होइत छैन्ह ।

एवं प्रकारेँ यथार्थ कथा बुझबा लय राजकन्या[केँ]दृढ़ निर्बन्ध देखि ओ छोटकी सखी डराइत-डराइत आन-आन सखीक मुँह तकैत पूर्वोक्त ज्यौतिषीक कहल चतुर्दश वर्षमेँ सम्भावि-वैधव्य-समाचार वाक्स्खलनपूर्वक कहि सुनौलकैन्ह ।

एतबा कथा सुनतहि जहिना आकस्मिक बज्राघातसौँ फड़लि-फुलाइलि तरु-शाखा तत्कालहि दग्धा ओ भग्ना भय खसैत अछि अथवा चैत्र मासक प्रचण्ड पछबा ब-(तास)सातक झोँकसौँ झुकि-झुकि कोमल नूतन लता मुरझाय-मुरझायकेँ छहोछित भय छिड़ियाय जाइत अछि तहिना सीमन्तिनी ठाढ़ि छलीहि कि मूर्छित भय धड़ाक दय नीचा खसि पड़लीहि ।

एतबा दृश्य देखितहि चारू दिशसौँ सभ सखी हाहाकार करैत दौड़लीहि ।

जहिना रौद ओ बसातक तीव्रता ओ झोँकसौँ मुरझाइलि ओ खसलि लतामेँ मालिनि सभ शीतल जलसौँ पटाय कोनो खम्ही वा कड़चीक अवलम्ब दय स्थिर करैत अछि, तहिना सखी सभ अपन-अपन जाँघ अवलम्ब दय उत्तमोत्तम गुलाब ओ केओलाक जलसौँ सर्वाङ्ग सिक्त कय तथा कातरक [कतराक ?] सीर ओ कर्पूरसौँ मिश्रित श्रीखण्ड चन्दनक अनुलेप छातीपर लगाय सीमन्तिनीकेँ कथंकथमपि बहुत यत्नसौँ बैसोलन्हि ।

यथार्थ स्त्रीकेँ एहिसौँ दारुण दुःख कोनो नहि होइत छैक तखन सीमन्तिनीकेँ एतबा क्षोभ भेलैन्ह से कोन आश्चर्य ?

ई समाचार क्षणहि भरिमेँ सम्पूर्ण रनिवासमेँ फैलि गेल । महारानी लोकनि सुनितहि मात्र अपना-अपना महलसौँ दौड़िकेँ राजकुमारीक समीप पहुँचि गेलीहि ओ जेना समुद्रक लहरि बड़वानलसौँ अन्तःसन्तप्ता ओ वायुगुणेँ बहिःशीतला रहैत अछि तेना ओहो लोकनि शोकाग्निसौँ अन्तःकरणमेँ दग्धा होइतहु सीमन्तिनीक प्रत्ययार्थ बाह्यमेँ सौम्यमूर्त्ति धारण कय बोल-भरोस देबय लगलथीन्हि ओ कहलथीन्हि-"बच्चा ! अहाँ ककरो फुसि-फासि कथा सुनि कय एहनि अधीर कियेक होइत छी ? एहि छौंड़ीक तँ ओहि दिन जन्मो नहि भेल होयतैक, कदाचित् जन्म भेलो होइक तँ पाँच-छओ माससौँ अधिक होयबाक सम्भव नहि, तखन ई की जानय गेलि ? ई तँ जन्मी अगिलगाउनि थीकि, एकरा हमरा लोकनि आइये अन्दरसौँ निकाल-बाहर करैत छी, एहि घरक सदाक बूढ़ा ज्यौतिषी अहाँक सौभाग्यक बहुत वर्णन कयने छथि, तथा अहाँक कल्याणार्थ रात्रि-दिन अनेक प्रकारक शान्ति-स्वस्त्ययन होइतहि रहैत अछि, से सभ की व्यर्थ भय जायत ? एहन कथामेँ कदाचितहु विश्वास नहि कर्त्तव्य थीक, विशेषतः राजकन्याकेँ (जनिक वीरपत्नी होयबाक सम्भव छैन्ह) उत्साह, धीरता, प्रौढ़ता आदि गुण अवश्य होयबाक चाही, हमरा लोकनि निश्चय कहैत छी कोनो अन्देशा नहि ।"

एतबा कथा कहि माय हाथ धयकेँ अपना खण्डमेँ लय गेलथीन्हि ओ स्वस्था कय अशन-शयनादि दिनकृत्य सभ करबैत भेलथीन्हि । सीमन्तिनी माइ-बापक अनुरोधेँ ओ संकोचेँ ततेक ततेक शोकादि प्रकाश नहियो करथि, परन्तु अन्तःकरणमेँ अत्यन्त उदासीन ओ विरक्ता होइत भेलीहि, कतहु मन स्थिर नहि होइन्हि । ओहि दिनसौँ कहियो कोनो तरहक स्त्री-सभामेँ वा चतुरगोष्ठीमेँ नहि जाथि, राज-परिवारमेँ ककरहु ओहि ठाम उपनयन, विवाह, वटसावित्री ओ मधुश्रावणी इत्यादि निमित्तमेँ हकार पुरबाक व्यवहार नहि करथि,

Scanned by CamScanner

वाक्य-समस्या-पूरणादि एकदम छाड़ि देलैन्ह । दोहा-कवित्तसौँ चित्त हटि गलैन्ह । आख्यायिका-उपन्यास पढ़बाक लालसामेँ सालसा भय गेलीहि, कोनो नाट्यालयमेँ जाय नाटकाभिनय नहि देखथि, संगीतशालामेँ बैसि तानपूरासौँ मिलायकेँ ध्रुवपद वा मलार आदि कठिन गीतक आलाप करब छाड़ि देलैन्ह । कोठाक दोसर वा तेसर मञ्जिलपर अपन एकान्त विनोद-भवनमेँ बैसि वीणा (वीन-सितार)मेँ द्रुत, मध्यम, विलम्बित इत्यादि क्रमेँ तीव्र अथवा कोमल स्वरमेँ कोनो राग-रागिनिक गति बजयबाक अभ्यास (रेयाज) छूटि गेलैन्ह । होरीक दिनमेँ काफी रागिनी सुनबाक अत्यन्त प्रीति छलैन्ह से विपरीत (फीका) बूझि पड़य लगलैन्ह । गनगौरिक ओ कजरीक मेलामेँ अपन समान वयसक सहेलीक संग बाग-बगीचामेँ जाय उत्सव मनायब त्यागि देलैन्ह । ज्यैष्ठी अरण्य गोष्ठीमेँ वियनि हाथमेँ लेने वनक विनोद बिसरि जकाँ गेलैन्ह, मेष संक्रान्तिक दिन आक-बङलाहीक फूल चढ़ाय, तेकर प्रात जूड़शीतल दिन बासि भात ओ बड़ी नैवेद्य दय सखी-बहिनपाक संग चैतावरि गीत गबैत कोनो सरोवरक किनारमेँ घाँटो भसयबाक भावना भंग भय गेलैन्ह तथा कर्तिकी पूर्णिमाक रात्रिमेँ नव धानक चूड़ा, दही ओ मिष्ठान्न आदि नैवेद्य दय भाइ-बहिनिक स्वाभाविक प्रीति-सूचक गीत गबैत गाम-गोयड़ा कोनो जोतल खेतमेँ सामाचकबाक प्रक्षेप तथा चुगिलाक दाढ़ीमेँ आगि लगैबाक हास्य-विलास व्यर्थ मानय लगलीहि । आओर कहाँ तक कहू, ने तँ सुगा-मैना पढ़यबामेँ, ने बटेर-बुलबुलक लड़ाइ देखबामेँ, ने अपना हाथसौँ चित्र लिखबामेँ, ने सखी सभक संग तास-पचीसी खेलयबामेँ-कथूमेँ मनो-विनोद नहि होइन्ह, केवल अनवस्थित-चित्ता उन्मत्ता जकाँ इतस्ततः समय बितओने जाथि ।

एहि अवान्तरमेँ एक दिन मिथिला-निवासिनी ब्रह्मज्ञानिनी याज्ञवल्क्यमुनि-पत्नी मैत्रेयी नाम्नी स्वेच्छाचारेँ घुमैत-फिरैत सीमन्तिनीक भेँट करैक हेतु राजधानी पहुँचि गेलीहि । यथार्थतः ई कथा सत्य थीक जे गतस्पृहो महानुभावगण कहुखन केवल लोकोपकारार्थे परिभ्रमण करैत छथि । अन्यथा मैत्रेयीक सनि निस्पृहाक आगमन राजधानीमेँ कोनो काल सम्भव नहि ।

सीमन्तिनी तँ देखितहि हुनका पायरपर साष्टाङ्गपात प्रणाम कय पड़ि रहलीहि । तदुत्तर महाशया मैत्रेयी शुभाशीर्वचन-पुरस्सर कृपापूर्वक सीमन्तिनीकेँ उठाय बैसौलैन्ह ओ परस्पर कुशलमंगल-प्रश्न कय प्रेमालाप करैत क्षणप्रायः कतिपय प्रहर व्यतीत कयलन्हि ।

यद्यपि तपस्विनी माता मैत्रेयी अपनहुँ सभ जनितहि छलीहि तथापि कथा प्रसंगेँ पूछि देलथीन्हि जे राजकुमारि ! अहाँक अवस्था बहुत खिन्न देखैत छी, ई समय खेलयबा-धुपयबाक ओ आनन्दमेँ मग्न रहबाक थीक, एहि अवसरमेँ मनोहानि करब उचित नहि ।

सीमन्तिनी तँ संकोचवशेँ एहि कथाक उत्तर किच्छु नहि देलथीन्हि, परन्तु हुनक सखी सभ आद्योपांत कथा कहि सुनौलथीन्ह । तदुत्तर सीमन्तिनी कहलथीन्हि-"हे मातः ! हमरिसनि अभागलि तँ एहि संसारमेँ प्रायः दोसर कोनो कन्या नहि होइतीहि, परन्तु आइ श्रीमतीक चरणारविन्दक दर्शनसौँ अपन भाग्य परिवर्तित भेल मानैत छी । तेँ माय ! तेहन कोनो भाग्य-वर्धन विधिक उपदेश करू जाहिसौँ हमर अप्रतिकार्य ओ अनिवार्य आधि निवृत्त होअ ।"

एतबा कथा बजलाक बाद आओर किच्छु बाजतीहि से सामर्थ्य नहि रहलैन्ह । गद्‌गद्‌स्वरेँ कण्ठ बन्द भय गेलैन्ह । आँखिसौँ अश्रुपात होमय लगलैन्ह, केवल हुनक पादपद्म पकड़लहि भूमिपर पड़ि गेलीहि ।

महोदया मैत्रेयी तँ स्वभावतः करुणार्द्रहृदया छलीहिये परन्तु सीमन्तिनीक ओहि क्षण दीन ओ हीन अवस्था देखि अनवस्थितचित्ता ओ करुणासागर निमग्ना होइत भेलीहि ।

तदनन्तर क्षणिक ध्यान कय, हुनका अपनहि उठाय, माथपर हाथ धय अनेक आशीर्वाद देलथीन्हि जे-"ओना तँ सभ दिन शिव-पार्वतीक पूजा करू, परन्तु सोमवारक प्रदोषमेँ विशेष रूपेँ षोडशोपचारादिसौँ पूजा करू । केहनो किच्छु भय पड़य, तथापि एकर त्याग जनु करी । बेटी ! निश्चय जानू कि एहि व्रतक प्रभावेँ सभ सङ्कट पार उतरि परम प्रमोदमेँ प्राप्ता होयब ।"

Scanned by CamScanner

एवं प्रकारेँ अनेक उपदेश ओ आश्वासनक कथा कहि मुनिपत्नी मैत्रेयीकेँ अपन आश्रमक प्रति प्रस्थान कयला उत्तर राजपुत्री उपदेशानुसार स्नानोत्तर शुद्ध वस्त्र धारण कय हर-गौरी-पूजन ओ ब्राह्मण-भोजनादि कर्म आरम्भ कयलन्हि, ओ पूजाक समय करुणारसपूर्ण महेशवानी गीत सभ तेना गाबथि जे ओ सुनि साधारणोँ पाषाण पसिझि सकैत अछि आओर आशुतोष शिवमूर्त्तिक प्रसन्नतामेँ की असम्भव ?

सीमन्तिनी एहि तरहेँ शुभकार्य्य सभमेँ लागलि, कलामात्रात्मको कालकेँ काल समान मानैत कथंकथमपि शरीर मात्रक निर्वाह करैत जाथि ।

राजा-रानी तँ सीमन्तिनीक दुःख देखि द्विगुणित शोक ओ चिन्तासौँ व्याकुल भय किङ्कर्त्तव्यमेँ विमूढ़ सतत अन्तःसन्तप्त होइत रहथि, प्रतिकार किच्छु नहि फुरैन्ह । परन्तु समय तँ ककरो अनुरोधेँ बैसल नहि रहि सकैत अछि, एतबामेँ सीमन्तिनीकेँ तेरह गताब्द भय चौदहम वर्षक प्रवेश भेलैन्ह । वर्ष-प्रवेश दिन सभ ग्रहक शान्ति कराओल गेलैन्ह । विशेषतः सप्तम भाव स्वामी ग्रहक विधिदान ओ जपादिक भेलैन्ह ।

यद्यपि संकल्प-वाक्यमेँ ओहि काल ज्यौतिषी लोकनि अनेक वादानुवाद अपनामेँ आरम्भ कयलन्हि, परन्तु महाराज कहलथीन्ह जे ई सभ हमरा एखन किच्छु नहि नीक लगैत अछि, सभ गोटे एकवाक्यता कय बूढ़ा ज्यौतिषीक विचारानुसार सङ्कल्प कराउ । पश्चात् तेहिना सङ्कल्प कराओल गेल ओ आनो तरहक पूजा-पाठक भार पुरश्चरणीया लोकनिकेँ देल गेलैन्ह ।

सीमन्तिनीक शरीर तँ अत्यन्त वर्द्धिष्णु छलैन्ह । चौदहम वर्ष आरम्भहिमेँ सोड़हम-सतरहम वर्षक धोषा लोककेँ होइक । विवाहक अवस्थाक अव्यवस्था भेल जाइत छल । परन्तु राजा-रानीकेँ एहि विषयमेँ निचर्च देखि ककरहु सामर्थ्य नहि होइक जे हुनका विवाहक प्रसंग कोनो कथा बाजत । कतेको समय एहि तरहेँ गुपचुपमेँ बितल ।

तदुत्तर महाराजक बाल-मैत्री-प्रयुक्त, परम प्रगल्भ, वाक्पटु, अति स्थिर विचारक एक विद्वान् ब्राह्मण एक दिन गपसपमेँ अनेक देशक ओ लोकक कथा उत्थान कय, ओही प्रसंगमेँ नहु नहु बाजि उठलाह जे चिरजीविनी श्रीमती दाइजीकेँ आब शुभ विवाहक अवसर प्राप्त बूझि पड़ैत अछि तेँ कुलाचारानुसार राजधानी सभमेँ वरान्वेषणार्थ नौआ-ब्राह्मण पठाओल जाइत, से उचित ।

महाराज ई कथा सुनि ओहि विद्वान् ब्राह्मणक दिश असूया-सहित कुटिल दृष्टियेँ निरीक्षण कय पुछलथीन्ह जे-"की बजलहुँ ?"

से सुनि ओ विद्वान् पूर्वोक्त कथाक स्पष्टाक्षरमेँ फेरि अनुवाद कय गेलाह । महाराज किञ्चित् कालपर्यन्त गुम भय फेरि कहय लगलथीन्ह-"चौदहम वर्षमेँ विवाहोत्तर सम्भावित विषमय विषम विषय, एक ज्यौतिषी कहल, प्रायः अहूँकेँ ज्ञात अछि । तखन एखन ओहि वर्षक आरम्भहिमेँ एहन दुःखमय प्रस्ताव कोना कयलाँ गेल । एक तँ हुनक विषयक चिन्तासौँ हमर चित्त सहजहि सतत विचलित रहैत अछि, ताहि परसौँ ई दोसर कथा तीव्र विस्फोटककेँ फोड़ि ओहिपर लोनक बुकनी छीटिकेँ पट्टी बान्हबाक सन अहाँक क्रम बुझि पड़ैत अछि । ओहि अवस्थाक कन्याक मुख देखबाक अपेक्षासँ यावज्जीव कुमारिये देखिऐन्ह वरुक नीक । मनुओँ तँ लिखैत छथि जे-

काममामरणात् तिष्ठेद्गृहे कन्यर्त्तुमत्यपि ।
न चैवैनां प्रयच्छेतु गुणहीनाय कर्हिचित् ।।

एतबा कथा बाजि महाराजकेँ चुप भेला उत्तर ओ विद्वान् ब्राह्मण फेरि सान्त्वनापूर्वक कहय लगलथीन्ह-"करुणानिधान ! श्रीमानूक कथा अत्यन्त युक्त ओ सारगर्भित अछि, एहि विषयमेँ उत्तर-प्रत्युत्तर करब हमरा सन लोकक सामर्थ्यसौँ बहिर्भूत अछि । तथापि विवक्षित कथा विना बजलेँ रहलहुँ नहि जाइत

Scanned by CamScanner

छैक, तेँ फेरि किच्छु विज्ञप्ति करबाक इच्छा होइत अछि । पृथ्वीनाथ ! एक तँ राजधानीमे अनेक प्रकारक वञ्चक लोक सभ अबैत अछि, तकरा कथामे विश्वासे कोन ? जे केयो अवञ्चको छथि तनिको कथा स्वप्न, शाकुन, जातक इत्यादि विषयमे बहुत व्यभिचरित भय जाइत छैन्ह, एकर शतशः दृष्टान्त हम अपन आँखिक देखल दय सकै छी । कारण जे टीपनिमे लग्न ओ ग्रह शुद्ध होयब बहुत कष्टसाध्य छैक । ताहूपर केयो ज्यौतिषी सूक्ष्म रीतिसौँ ग्रहादिक स्पष्टो नहि करय लगै छथि, पतड़ामे तीनि-चारि दिन पूर्व वा परक जे ग्रह बनल रहै छैन्ह ताहीमे ऋण वा धन चालन दय अपन इच्छानुसार ग्रह लिखि दैत छथि ताहिसँ की फल मिलबाक आशा भय सकैत अछि ? कथमपि नहि ।"

"दोसर विषय ई जे कन्याक विवाह करओलापर यदि कोनो दुर्घटना भइयो जायत वा तत्प्रयुक्त कोनो खेद हुनका होयबो करतैन्ह तँ ओ ईश्वराधीन कहाओत । अपनेक कोनो दोष नहि । परन्तु अवस्था प्राप्त भेलापर विवाह नहि करओलें जे हुनका मनोहानि तकर कारण अपनहिटा होइत छी ।"

"धर्मशास्त्र सभमे रजस्वला कन्याकेँ घर राखब अत्यन्त दोषाधायक लिखैत छथि-

माता चैव पिता चैव ज्येष्ठो भ्राता तथैव च ।
सर्वे ते नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलाम् ।। इत्यादि ।

'काममामरणात् तिष्ठेत' इत्यादि पूर्वोक्त मनु-वचनक ई तात्पर्य थिकैन्ह जे निर्गुण वरकेँ कन्या देब अत्यन्त अप्रशस्त थीक, तेँ ई नहि बुझैक चाही जे रजस्वला कन्याकेँ यावज्जीव अपना घरहिमे योगायकेँ राखी-

III. तेँ सगुण वरक अन्वेषण कय शीघ्र कन्यादान करी, से उचित ।" एतबा कथा बाजि ओ विद्वान् चुप भय गेलाह ।

महाकवि भारविक सत्य कहल अछि जे-

'लङ्घ्यते न खलु काल नियोगः'

अर्थात् दैवाज्ञा नहि टरि सकैत अछि । अतएव महाराजहुकेँ इच्छा भय गेलैन्ह जे कन्यादान शीघ्र करी । ओहि ठाम चीकक ओहि कातसँ महारानिओ लोकनि सभ कथा सुनितहि छलीहि । खवासिनी सभक द्वारा हुनकहु लोकनिसँ अनुमति लय स्थिर भेल जे शुभ दिनमे नौआ तथा पुरोहित जाथि, नीक वर अन्वेषण कय फलदान कयलहि आबथि । तदुत्तर दोसर नीक दिन ताकि तिलक दय औथिन्हि ।

एही कथाक प्रसङ्गे ओ पूर्वोक्त विद्वान् बाजि उठलाह जे वरक अन्वेषण दुइ-तीनि ठाम धरि तँ अवश्य होबयक चाही, परन्तु हमरा जहाँ तक श्रुत वा अनुभूत अछि ताहि सभमे विदर्भ[4]-देशाधिपति महाराज भीमक कन्या दमयन्तीमे निषध[5] -देशाधिप सुप्रसिद्ध नामधेय महाराज नलकेँ महाराजा इन्द्रसेन नामक पुत्र छथिन्ह । तनिक बालक युवराज चन्द्राङ्गद कुल, शील, स्वरूप, वयस, विद्या, वित्त इत्यादि सभ पदार्थमे यथार्थतः सीमन्तिनीक अनुरूप वर छथि । तेँ ओहि ठाम कार्य जाहि तरहेँ हो से कर्त्तव्य । एहिसँ इहो लोकोक्ति चरितार्थ होयत जे- 'रत्नं समागच्छतु काञ्चनेन'

एतबा कथा बाजि ओहि सज्जन विद्वान ब्राह्मणकेँ चुप भेला उत्तर सभ सभासद् हुनक वाक्यक एकवाक्यतया अनुमोदन कयलन्हि ।

तदुत्तर श्रीमान् महाराज एक बूढ़ नौआ (जकरा कुलक्रमागत येह कार्य समर्पित छलैक जे राजकन्या

Scanned by CamScanner

लोकनिक विवाहमेँ वरान्वेषण करय) तथा एक अत्यन्त गम्भीराशय सत्यप्रतिज्ञ परम विज्ञ प्रधान पुरोहितकेँ बजाय एहि कार्यमेँ नियुक्त कयलन्हि ओ कहलथीन्हि जे-"अहाँ लोकनि निषध देश जाय अति सुकुमार राजकुमार चन्द्राङ्गदक कथा चिरजीविनी सीमन्तिनीक प्रसङ्गेँ स्थिर कय फलदान कयलहि आओब । यद्यपि हुनक गुणवर्णन बहुत लोकक मुहेँ सुनैत छी, तथापि अपनहु नीकेँ बूझि विचारि लेब । कन्यादानक प्रसङ्गमेँ अगुतायकेँ कार्य कर्त्तव्य उचित नहि । अपन एक क्षणक अगुताइमेँ कन्याकेँ आजन्मक खेद रहि जाइत छैक ।"

"यद्यपि अहाँ लौकिक ओ शास्त्रीय दुनू विषयमेँ अपनहि परम प्रवीण छी तथापि कन्याक वात्सल्यसँ फेरि किच्छु कहलहि जाइत अछि । पूर्वक विद्वान लोक वरगुण विषयमेँ स्थिर कयलेँ छथि जे-

'कुलं च शीलं च वयश्च वित्तं विद्या च रूपं च सनाथता च ।

एतान् गुणान् सप्त परीक्ष्य देया कन्या बुधैः शेषमचिन्तनीयम् ।।'

अर्थात् एहि श्लोकमेँ उक्त सातटा वरगुण आवश्यक थिक । एहिसँ बेशी गुण, यदि कन्याक भाग्याधीन होइक तँ उत्तम, नहि होइक तँ से विचारणीयो नहि थिक ।"

"वरक विषयमेँ अनेक लोकक अनेक तरहक विचार रहैत छैन्ह, यथा-

'कन्या वरयते रूपं माता वित्तं पिता श्रुतम् ।

बान्धवाः कुलमिच्छन्ति मिष्टान्नमितरे जनाः ।।'

अर्थात् कन्याकेँ सुन्दर पतिक अभिलाषा रहै छैक, कन्याक मायकेँ धनवान्, बापकेँ गुणवान् जमाइक इच्छा होइत छैन्ह ओ भाइ-बन्धुकेँ पाँजि-पाट नीकक अपेक्षा रहैत छैन्ह । और आसपासक लोककेँ केवल मिष्टान्नक, अर्थात् चतुर्थी, वटसावित्री, मधुश्रावणी इत्यादिमेँ नीक भार-दोर अबैक जे दही-माछ, केरा-कटहर, खाजा-मुङवा इत्यादि वस्तुक बैन (बायन)-बखरा भरि पोख होय एतबै धरि अभीप्सित रहै छैन्ह। कन्या-वरक दोषगुणसँ कोनो प्रयोजन नहि । परन्तु आहाँ सभ दिश दृष्टि राखि कथानिबन्धन करब । हम आब बहुत की कहू- 'अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः' ।"

एतबा कथा बाजि राजाकेँ चुप भेला उत्तर रानियोँ लोकनि अपन अपन अभिप्रायानुसार कथा कहलथीन्ह से सभ सुनि महाराजसँ विदा भय पुरोहितजी अपन घर गेलाह ।

प्रातःकाल शुभ सम्मुख लग्नमेँ राजकीय वस्तु-रक्षार्थ पूरा एक गारद (Guard)सिपाही, एक हवालदार, एक चोपदार, नौआ, भनसिया, खिदमतगार, एहि सभकेँ सङ्ग लय एक उत्तम घोड़ापर सवार भय शुभ प्रस्थान करैत भेलाह ।

कतेको कालमेँ यमुना उतरि, आगराक शोभा देखैत धवलपुर लग चामिल (चर्मण्वती नदी) पार उतरैत, ग्वालियरक प्राचीन दुर्ग (किला) देखैक हेतु ओहि दिन ओतहि अटकि गेलाह ।

यद्यपि सड़कसँ उतरिकेँ वाम भागमेँ किच्छु दूर जायक पड़लैन्ह तथापि चित्तमेँ उत्कण्ठा भेलैन्ह जे फेर कहिया एहन संयोग होयत जे एहि दिश आयब तेँ फेरो होयत तैयो जयबे करी, इत्यादि ।

तदुत्तर सभ अद्भुत स्थानक शोभा देखैत-सुनैत दुइ-तीन दिनमेँ निषध देशक राजधानीमेँ पुरोहितजी पहुँचि गेलाह ।

ओतय राजकैँ अर्जबेगीक द्वारा महाराज इन्द्रसेनक ओहि ठाम इत्तलाय करओलन्हि जे-"आर्यावर्त्तक महाराज चित्रवर्माक पुरोहित कोनो शुद्धाक कथा लय आयल छथि ।"

तदुत्तर नैषध महाराज निवेदककेँ आज्ञा देलथीन्ह जे कतहु नीक स्थानमेँ डेरा दहुन्हि । हम स्थिर भय पश्चात् भेट करबैन्ह ।

Scanned by CamScanner

महाराजक आज्ञानुसार ओ अर्जबेगी राजकीय उत्तम रथपर चढ़ाय अपना दिशक राजपुरोहितक सङ्ग अतिसत्कारपूर्वक एक बगीचाक मध्य स्थित एक रम्यतम कोठीमेँ डेरा देलथीन्ह ।

यद्यपि ओहो पुरोहितजी एक राजधानिहैक आश्रित छलाह । तथापि हुनका एहि स्थानक शोभा देखि किञ्चित्कालपर्यन्त मुग्ध ओ चकित होबय पड़लैन्ह । कोनो कोठलीमेँ तुरभरा छीटक गदेलापर जाजिम अच्छाओल, ताहि परसँ सोना-चानीक अड़ानीसँ कटल कारचोबीक गद्दी, मसनद लागल, कतहु बानाती, कतहु कारशानी मखमली फर्श कयल । उपर मञ्जिलपर चढ़बाक सिढ़ी सभपर जरदोजी मखमल अच्छाओल, कतहु हाथी दाँतक पलङ्ग, मेज, मोढ़ा, कुर्सी आदि, कतहु चानीहैक सभ सामान, कतहु सोनाक, कतहु रत्नजटित असवाब सभ जे देखलासँ आँखिकेँ चकचौंधी लागि जाय । एक भागमेँ स्नानशाला, जाहिमेँ सङ्गमर्मर (श्वेतोपल)सँ चारू घाट बान्हल, मध्यमेँ स्नानकुण्ड, ओहि समीपमेँ एक जलयन्त्र (फुहारा), ताहि समीपहिमेँ पूजास्थान ओ अग्निहोत्रागार, ओहिसँ सटले पाठशाला ओ भोजनालय इत्यादि । सभ आवश्यक स्थान उचित रूपसँ सन्निवेशित । यथार्थमेँ ओ देखैक योग्य रमणीय स्थान छल जे देखैक हेतु देश-देशान्तरक लोक समय-समयपर आबथि ।

ओहिसँ बाहर अद्‌भुतालय (Museam), चिड़ियाखाना, अस्तबल (Stable), रथशाला (गाड़ीखाना) इत्यादि अति मनोहर स्थान सभ ।

ओहि कोठीक हाता पक्का लोहक जङ्गलासँ घेड़ल, ताहि मध्यमेँ नानादेशीय पुष्पसँ शोभित वाटिका (फुलबाड़ी), जाहि ठाम कतहु ओहि वसन्त ऋतुक प्रादुर्भाव समयमेँ मालि सभ मुरझायल फूल सभक मूलकेँ दिनान्तमैँ पटाय रहल अछि । कोनो भागमेँ मालिनि सभ महारानी लोकनि लय माला बनयबाक हेतु बेली, चमेली, जूही, नेबारि प्रभृति सुगन्धित पुष्प सभ लोढ़ि रहलि अछि । कतहु गान्धिक (गन्धी अत्तार) सभ अतर बनयबाक हेतु गुलाब, केतकी, चम्पा, भालसरी आदि फूलक सङ्ग्रह कय रहल छथि । कतहु नव-पल्लव-तलमेँ दबलि आम्रमञ्जरीमधुपानमत्ता कोकिला सभ कुहू-कुहू शब्द कय कामी पथिक लोकके कूहि रहल अछि । कतहु चञ्चल चञ्चरीक (भमर) सभ पुष्पोद्‌गमानन्तर रसवती नूतनलता रूपिणी प्रेयसीक सङ्ग उपभोग-सुखानुभव करैत गुञ्जित रूप भणितसँ कामी लोकनिकेँ मुग्धमानस कय रहल छथि । कतहु कृत्रिम सरोवरमेँ नाना रङ्गक कमल, कुमुद, कह्लार आदिक फुलायल फूलपर हंस, कारण्डव प्रभृति जलचर पक्षिगण कल्लोल कय रहल छथि, इत्यादि । कहाँ तक वर्णन करू ! ओ शोभा देखलहि बनय । लेखनीक सामर्थ्य नहि जे विशेषतः प्रकाशित करय । कतेको काल मनोविनोद कय पुरोहितजी स्नान-पूजन-भोजनादि आह्निक कृत्य कय पलङ्गपर किच्छु काल विश्राम कयलन्हि ।

सायं समयमेँ सन्ध्योपासनान्तर इन्द्रसेन महाराजसँ भेट करैक हेतु चोबदार सवारी लयकेँ पुरोहितजीक समीप उपस्थित भय गेलाह । ओ प्रणाम कय विज्ञप्ति कयलन्हि जे-"महाराज इन्द्रसेन अपनेक स्मरण करैत छलाह अछि, यदि विदेशागमन प्रयुक्त श्रम (थाकनि) नहि सम्प्रति बूझि पड़ैत हो वा रात्रिकेँ दरबार जयबामेँ कोनो क्लेश नहि होय तँ अपनेक अभूतपूर्व दर्शनसँ ओ परम प्रसन्न होयताह ।"

पुरोहितजी एतबा कथा सुनितहि पाग, दोपट्टा ओ चपकन पहिरि सवारीपर चढ़ि दरबार गेलाह ओ श्रीमहाराजकेँ जनौ ओ नारिकेर दय आशीर्वाद कयलन्हि ।

तदनन्तर आर्यावर्त्तक पुरोहितजी महाराजसँ निर्दिष्ट आसनपर बैसि महाराजक सङ्ग कुशल-प्रश्नादि वार्त्तालाप परस्पर कय उभय राजधानी-सम्बन्धी आनो प्रासङ्गिक कथा सभक शेषमेँ ओ पुरोहितजी अभिमत वैवाहिक कथाक प्रस्ताव कयलन्हि-

"करुणानिधान ! आर्यावर्त्तक महाराज चित्रवर्माक पुरोहित हम हुनक प्रेषित एतन्निमित्तक श्री५मान्क सन्निधि आयल छी जे उक्त महाराजक एक कन्या कुमारि छथीन्हि । ताहिमेँ यद्यपि अनेक राजकुमारक

Scanned by CamScanner

अधिकार छैन्ह, तथापि अपनेक तथा अपनेक पुत्र कुमार चन्द्राङ्गदक गुण-वर्णन नाना दिग्देशागत चारणगणक मुखसँ सूनि आन सभक अनुपस्थिति कय [महाराज पठौलैन्ह अछि जे कुमार चन्द्राङ्गदहिक प्रति अपनैँक ओतै कथोपस्थिति कय कृताकार्य होइ, तेँ] करुणानिधान श्रीमान् ताहि तरहक कृपा-प्रकाश कयल जाय जाहिसँ इतर दरबारक जयबाक व्यापार नहि करय पड़य । उभय पक्षक कुल अत्यन्त विशुद्ध ओ समृद्ध, तेँ एहनहि ठाममेँ विवाह-सम्बन्ध[7] होयब उचित ।

'ययोरेव समं वित्तं ययोरोव समं कुलम् ।
तयोर्विवाहो मैत्री च नोत्तमाधमयोः क्वचित् ।।'

आओर हमरा लोकनि अधिकारहुक निर्णय नीक जकाँ कय लेल अछि । अपनेक बालककेँ ओ कन्या पितृपक्षक छठ्मी नहि, कठमामक सन्तति नहि, मातामह-पितामहक सन्तति नहि, मातृसनाम्नी[8] नहि, समगोत्र नहि, समप्रवर[9] नहि । यदि क्षत्रियकेँ पुरोहितक गोत्रप्रवरसँ व्यवहार करी, तैओ अनधिकार नहि । तेँ जे श्रीमान्क आज्ञा हो से हमरा लोकनि सम्पादन करी । तिलक हेतु द्रव्य, वस्त्र ओ अलङ्करणादि सङ्गहि लायल छी । हमर सर्वथा ई प्रार्थना जे- 'रत्नं समागच्छतु काञ्चनेन' / ई महाकविक वाक्यकेँ चरितार्थ कयल जाय ओ सोनमेँ सुगन्धिक सम्पर्क देखाओल जाय ।"

एतबा कथा बाजि पुरोहितजीकेँ चुप भेला उत्तर कुमार चन्द्राङ्गद चुप-चाप बापक गद्दी लगसँ लाजेँ उठि कै दोसर ठाम जाय बैसलाह ओ महाराज इन्द्रसेन ईषद्धसित होइत गम्भीर वाक्येँ उत्तर देबय लगलथिन्ह- "विज्ञ पुरोहितजी महाराज ! यद्यपि अनेक राजधानीसँ अनेक व्यक्ति एहि तरहक कथा लबैत छलाह अछि ओ अपनहु एही तारतम्यमेँ छलहुँ अछि जे कतय कार्य करी । परन्तु आइ अपनेक शुभागमनसँ परम प्रसन्न भेलहुँ ।

एक तँ महाराज चित्रवर्मा ओ राजकुमारी सीमन्तिनीक गुण-श्रवणसँ चित्त ओही दिश प्रवण छले । दोसर अपनेक आगमन-गौरव ओ आज्ञावचन सर्वथा अनुल्लङ्घनीय, तेँ अनुमान होइछ जे परम कारुणिक जगदीश्वरकेँ आब ई सम्बन्ध अभिमत छैन्ह"-

(आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखी भूतः), -स्वगत ई श्लोकार्ध पढ़ैत, प्रकाशरूपसँ फेरि कहय लगलथिन्ह-"पुरोहितजी ! आन ठामसँ जे पुरोहित अबैत छलाह तनिक ओहि ठाम जखन केओ कायथ (मोतसद्दी) डेरा-खर्चक फिरिस्ति लेबाक हेतु जाइत छल तखन एक पसेरी उज्जैनी पीरा भाङ, दुइ सेर मरीच, सौँफ, जायपत्री, अणाची प्रभृति मसाला, एक अढ़ैया मिसरी आओर चारि घैल दुधक फरमाइश सभसँ पहिलहि होइ छल । से जखन अल्पधन पण्डित-पुरोहितकेँ छओ-सात घैल भाङेँ निर्वाह, तखन समृद्ध यजमान महाराजक ओहि ठाम तँ छओ-सात माट भाङ प्रतिदिन अवश्य खपैत होयत, तखन एहन निशाखोर सभक सम्बन्धसँ दूरहि रही सैह बरुक नीक, ई विचारि चुप छलहुँ । परन्तु अपनेक वाक्पटुता, गाम्भीर्य, सौजन्य प्रभृति गुणसँ मोहित भय सर्वथा अपनेक वाक्य स्वीकार कयल । आब विचारान्तर की ?"

एतबा कथा बाजि महाराज चुप भेलाह ।

तदुत्तर सभासद लोकनि जय-जयकार कयलन्हि, ओ भाट सभ विरुदावली पढ़य लगलाह ।

किछु कालक उत्तर महाराज सभा विसर्जन कयलन्हि, ओ सभ लोक अपन-अपन स्थानपर गेलाह ।

आर्यावर्त्तक पुरोहितजी प्रातःकाल उठिकेँ सकल समाचार-सूचिका एक पत्रिका डाक द्वारा महाराज चित्रवर्माकेँ पठाय, तिलक देबाक स्वीकार-पत्र मङायकेँ चन्द्र-तारानुकूल दिन शुभ लग्नमेँ महाराजकुमार चन्द्राङ्गदकेँ देशाचारानुसार तिलक चढ़ौलन्हि । ओहि समय एक सुविशाल शामियाना तर दूनू तरफक महफिल लागल रहय ओ उत्तमोत्तम वेश्या-कत्थकक नाच भय रहल छल ।

Scanned by CamScanner

IV. तदुत्तर महाराजक आज्ञानुसार दुनू दिशक ज्यौतिषी लोकनि थोड़ेक काल मामूली 'त्वं चाहं च'[10] कय एकटा विवाहक दिन स्थिर कय लेलन्हि। तिलकक बाद आतशवाज सभ जैह एक-दुइटा बम्बगोला छोड़लक कि लगले किला परक तोपखानासँ ओ पलटनक छावनीसँ तोपक फायर होबय लागल। एक दिनक बाद राजधानीक रीत्यानुसार महाराज इन्द्रसेन तिलक देनिहार सभकेँ यथोचित बिदाइ देलन्हि। विशेषत: पुरोहितजीकेँ सर्वश्रेष्ठ बिदाइ दय बहुतो तरहक उछती-विनतीक कथा ओ महाराज चित्रवर्माक संवाद कहि स्वदेशक प्रति प्रस्थापित कयलन्हि। पुरोहितजी प्रात:कालहि डेरा परसँ विदा भय फिरती सार्थ जेहन अगुतायल रहैछ तेहिना अति शीघ्र आर्यावर्त्तक राजधानी पहुँचि गेलाह।

तदनन्तर पहिलै सोझे महाराजक दरबारमेँ उपस्थित भय आशीर्वाद कयलन्हि। महाराज चित्रवर्मा पुरोहितजीकेँ देखि अत्यन्त हृष्ट भय सभ समाचार पूछय लगलाह। पुरोहितजी राजधानीसँ विदा होयबा कालसँ लयकेँ फेरि पहुँचबाक काल पर्यन्तक यावतो समाचार श्रीमान्क श्रुतिगोचर करौलन्हि। ओम्हर पुरेहितजीक अयबाक समाचार रनिवाससँ लय संपूर्ण नगरमेँ गर्द पड़ि गेल। एही अवसरमेँ महलातसँ कतेको नौड़ी सभ छूटलि। पुरोहितजी महाराजक दरबारसँ जेह उठलाह कि लगले नौड़ी सभ गोड़ लागिकेँ कहलकैन्ह जे ड्यौढ़ी परक तलबी अछि। पुरोहितजी ओहि सभक संग ड्यौढ़ीपर पहुँचि गेलाह।

तावत् महारानी सभ गोटेँ अपना-अपना महलसँ आबि-आबि एक ठाम भय एक कोठामेँ चीक लागि बैसैत गेलीहि। पुरोहितजी ड्यौढ़ी परक प्रधान ब्राह्मणीकेँ बजाय कहलथीन्ह जे सभ महारानीकेँ हमर आशीर्वाद कहिऔन्ह ओ कुशल पुछिऔन्ह। ब्राह्मणी द्वारा आशीर्वाद पहुँचलापर सभ महारानी ओही ब्राह्मणीकेँ कहलथीन्ह जे हमरहु लोकनिक प्रणाम कहथुन्ह ओ कुशल पुछथुन्ह और जतय गेल छलाह ततयसँ की कय आयल छथि से आद्योपान्त कहथु। हमरा लोकनिक शपथ थिकैन्ह, एकोटा कथा छोड़थि जनु ओ कोनो विषयक छल जनु करथि।

ओहि समय पुरोहितजीक उत्तर सुनैक हेतु अन्त:पुरक सभ लोक उत्कण्ठित भय रहल छल।

प्रायेणैवंविधे कार्ये पुरन्ध्रीणां प्रगल्भता।'

ओहि समय ओहि ठामसँ अनठायकेँ उठि सीमन्तिनी एक दुइ सखीकेँ सङ्ग लय दोसर कोठलीमेँ झट जाय बैसलीहि। यद्यपि सखी सभ कहय लगलथीन्हि जे-'दाइजी! दोसर बाटेँ चलू। इरोतमेँ ठाढ़ि भय सुनब जे कोन-कोन कथा होइ छैक। परन्तु उत्कण्ठा, लज्जा, भयसँ सघर्मा ओ सकम्पा सीमन्तिनी डाँटि लेलथीन्हि ओ अपने हरगौरीक ध्यानमेँ निमग्ना भेलीहि।

तदुत्तर पुरोहितजी जयबाक समयसँ फिरि अयबाक समय पर्यन्तक सभ कहानी सविस्तर सुनाय गेलाह। यद्यपि सभ गोटे एक बेरि सभ कथा सुनियो गेलि छलीहि तथापि उत्कण्ठासँ फेरि-फेरि पुच्छबाबै लगलथीन्ह जे एतयसँ ओ जगह कतेक दूरक बाट, राजधानीक केहन सिलसिला, चालि-व्यवहार कोन तरहक ओ ओहि देशक लोक केहन, इत्यादि।

एहि अवसरमेँ राजपरिवारक एक प्रतिष्ठिता स्त्री बाजि उठलीहि जे-"हमरा लोकनिकेँ एहि सभसँ प्रयोजन कोन। साफकेँ पुच्छबैत जैऔन्हि जे वरक स्वरूप, स्वभाव, वयस, बुद्धि ओ विद्या केहन?"

से सुनि पुरोहितजी बाजि उठलाह जे-" ताहि सभक वर्णन की करू। एहि सृष्टिमेँ सम्प्रति विधाता हुनका अनुपम बनौने छथि। सीमन्तिनीहीक सनि भाग्यवती कन्याकेँ ओहन वर भेटि सकैत छथि, अनका नहि। निश्चय जानू जे गौरीक अतिशय भक्तिक ई फल थिकैन्ह।"

तदुत्तर महारानी लोकनिक आज्ञानुसार बिदाइक सभ वस्तु देखाबय लगलाह। ओहि समय एक प्रगल्भा खवासिनी बाजि उठलि जे-"और सभ वस्तु उत्तम परन्तु एक किमखापक थानटा पुरान छैन्ह।"

Scanned by CamScanner

प्रायः सभ आङनमे (चाहै पैघ घर हो वा छोट) भार ओ बिदाइके दुसनिहारि एकटाके राड़िनि रहितहि अछि । परन्तु प्रधान महारानी डाँटि लेलथीन्हि जे-"ई सभ केओ बाजै । अधिक वस्तुमे नीक अधलाह सभ तरहक रहितहि छैक ।"

एहि सभक बाद पुरोहितजी अपन आँगन जाय विदेशागमनोत्तर पुत्रकलत्रादि-सम्मिलन-जन्य-सुखानुभव करैत भेलाह ।

यद्यपि विवाहक दिनक निश्चय पुरोहित कयलहि आयल छलाह, तथापि डाक द्वारा पत्राचार कय निर्णय कय दुनू राजधानी अर्थात् आर्यावर्त्त ओ निषधमे विवाहोत्सवक खूब तैयारी होबय लागल । दुनू महाराजक दिशसँ अपन-अपन इष्ट मित्र राजा-महाराज लोकनिके नौतक चिठ्ठी-पाता जारी भय गेल । ओहो राजा-महाराजा लोकनि अपन-अपन[11] योग्यतानुसार खूब तैयारी कय जनिका जाहि दिशक नौत-हकार छलैन्ह से ताहि दिशके विदा भेलाह ओ नियत समयपर पहुँचि गेलाह ।

एहि अवान्तरमे नैषध महाराजक स्थपति (Engineer)[12] अपना सङ्ग राज, बरही, अरकसिया प्रभृति कारीगर सभके लेने आर्यावर्त्तक राजधानी पहुँचि गेलाह ओ महाराजक डेराक हेतु निर्द्दिष्ट स्थानमे सपरिवार ओ समित्र महाराजक डेरा ओ नाचघर आदिक सलतनत कय अयलाह ।

तदुत्तर विवाहक शुभ दिनसँ पाँच दिन पूर्वहि नैषध इन्द्रसेन महाराज वरियातीक[13] तैयारी कयलन्हि । प्रातःकालहि सभ लोक स्नान पूजादि आह्निक कृत्य कय शीघ्र भोजनादिसँ सलतनत भय पहरक भीतरहिमे ड्योढ़ीपर हाजिर भय गेलाह ।

तदुत्तर शुभ मुहुर्त्तमे कुमार चन्द्राङ्गद वरोचित वस्त्र आभूषण आदि धारण कय गोसाउनिक घरसँ चुमाओन करओलें यात्रा कय विदा भेलाह । जनानी ड्योढ़ीक प्रधान दरबाजापर 'गणेश गणेश' कहनिहार ज्यौतिषी-पण्डित लोकनिके सगुनक अशर्फी बटैत, दशौन्हीसँ विरुदावली सुनैत, नृत्यवाद्यपुरस्सर पिताक सुख-सदन 'इन्द्र भवन' नामक प्रासादमे पहुँचि गेलाह ।

तदनन्तर, लगले इन्द्रसेन महाराज आज्ञा देल जे डङ्कापर चोट पड़य ।

तत्क्षणहि डङ्काबाला जोड़ा बड़ा डङ्कापर खटाखट लकड़ीक चोट देबय लागल । डङ्काक 'कुडुकधुम कुडुकधुम' आवाज सुनितहि तुरहीबाला पहिल बिगुल (Bugle)बजौलक ।

तदुत्तर सभ लोक वरियातीक योग्य अपन-अपन पोशाक (जे एही उत्सवमे राजसँ भेटल छलैन्ह) पहिरि-पहिरि वृत्त भय रहलाह । दोसर डङ्का ओ बिगुल भेलापर महाराजक आज्ञासँ लिखित नामावलीक अनुसार सभ लोक यथाक्रम सवारी सभपर चढ़ि गेलाह । तेसर बेरि डङ्का ओ बिगुल होइतहि वरात[14] विदा भेल ।

सभसँ आगाँ विशाल हाथीपर डङ्का ओ निशान छल । ताहिसँ पाछाँ एक मन्दगामी दन्तार हाथीपर हाथी-दाँतक हौदामे बैसि काशीक रोशनचौकीबाला मधुर धुनिक धारा बहाय रहल छल । ताहिसँ पाछाँ सिंगा (करनाल), तुरही, ढाक-तासा, डफरा, वाँसुरी, सहनाइ, ढोल आदि स्वदेशी बाजा सभ; तत्पश्चात् बैंड (Band) आदि विदेशी बाजा सभ, तकर पश्चात् तख्तपर नर्तकी (वेश्या) सभ, ताहि पाछाँ नवीन वर्दी पहिरने खासवरदार अर्थात् आसा, सोटा, वल्लम, बर्छाबाला सभ, ताहिसँ पश्चात् संगीनदार बन्दूक काँधपर ओ कमरमे किरीच रखने जंगी पलटनक कम्पनी ओ ताहिसँ पाछाँ भालेदार घोड़सवारक रिसाला ओ कोत[वा?]लक घोड़ा सभ, ताहि पाछाँ घोड़ापर डङ्का ओ दोसर-दोसर घोड़ापर नकीब चोबदार सभ 'जय' घोषणा करैत ओ वन्दीगण विरुदावली पढ़ैत, दुनू बगलमे कनेक दबल झंडीबाला ओ सूर्यमुखी-पंखाबाला सभ, मध्यमे बनारसी कारचोबी छतरीदार रत्नजटित स्वर्णमय लालकीपर सवार महाराज कुमार चन्द्राङ्गद, ओ दुनू पार्श्वमे मोरछल चौर ढारैत

Scanned by CamScanner

केसरिया पोशाक पहिरलें परिचारक सभ, ताहि पाछाँ महोच्च हाथीक अम्बारी[15]पर महाराज इन्द्रसेन ओ मित्र-महाराज सभ तथा सोना-चानीक हौदापर पुरोहितगण पण्डितमण्डली तथा कर्मचारिवर्ग, बूढ़ प्रतिष्ठित सरदार लोकनि झंपान ओ खड़खड़िया (पालकी) आदि सवारीपर, सेठि-साहूकार लोकनि रथपर, ताहिसँ पाछाँ शुतुर(ऊट) सवार सभ ओ मामूली लोक सभ, सभसँ पाछाँ शुतुरी डङ्का ओ बड़दक गाड़ी सभपर तोपखाना आदि ।[16]

वरियात विदा होइतहि किलापरसँ सलामीक तोप खलास होबय लागल ।

किलासँ बहरैतहि शहरमें तमाशगीरक तेहन भीड़ भेल जे केओ कोठापर, केओ घरपर, केओ गमैया लोक सभ गाछपर चढ़ि-चढ़ि तमाशा देखलक । शहरमें सड़कक दुनू बगलमें सेठानी सभ अपन-अपन कोठाक बैठकमें बैसि माङ्गलिक गीत सभ गाबय लगलीहि ओ लावा तथा पुष्पमाला उपरसँ फेकय लगलीहि ।

एहि तरहें आध घंटामे शहर-पनाह (किला)सँ बाहर भय सभ लशकर परट (Parade)क मैदानमें किञ्चित् कालक हेतु स्थिर भेल ।

एकर दुइ कारण । एक तँ ई जे वरियातमें जे केओ आगाँ-पाछाँ छुटल-फूटल होयत से सभ एकट्ठा भय जायत । दोसर ई जे दूर-दूरसँ लोक सभ तमाशा देखय आयल छलाह, तनिका लोकनिकें शहरक भीतरक शिकस्त सड़कपर तमाशा देखैक उत्तम अवकाश नहि भेल छलैन्ह आओर एहि मैदानमें खुशफैलसँ तमाशा देखि सकथि ।

थोड़ेक कालक बाद फेरि बिगुल भेलापर वरियात विदा भेल ।

बाटमें ठाम-ठाम नीक जलाशय, विशिष्ट देवालय वा रमणीय बाग-बगीचा लग विश्राम करैत आध पहरक लगभग दिन अछैतहि नियत डेराक स्थानमें, जहाँ तम्बू, कनात, शामियाना, फर्शक बन्दोवस्त पहिलहिँसँ भेल छल, सभ लशकर ठहरि गेल ।

V. तदनन्तर सभ लोक यथायोग्य निर्दिष्ट स्थानमें डेरा करैत गेलाह । कहार, बेगार, महाउथ प्रभृति पोखरिक कातक गाछी सभमें डेरा करय लागल । जकर सङ्गी सभ मुखान्धकारक समय भुतिआय गेलैक से सभ गर्द करय लागल जे-" रौ फल्लाँ गामक फल्लमा ! हमरा सबहिक डेरा एहि दिश अछि । अबैत जो" इत्यादि ।

एवं प्रकारें एक-आध घण्टामें सभ सलतनत भेल ।

एही अवान्तरमें बनिया ओ हलुआइ सभ दोबगली अपन-अपन राउटी खाड़ा कय सभ तरहक भक्ष्य-भोज्य वस्तुक दोकान तैयार कय लेलक । दोसर भागमें वेश्या सभ छोट-छोट तम्बूक कतारमें डेरा कय नाना प्रकारक शृङ्गारोद्दीपक वेष धारण कय तत्कालहि गाना-बजाना आदि आरम्भ कय देलक । एहि नवीन कृत्रिम बाजारमें सन्ध्याकालक प्रकाश (रोशनी) भेलासँ सुखरात्रिक दीपमालिकाक छटा प्रतिभासित होबय लागल ।

किञ्चित् कालोत्तर भोजनादि कृत्यसँ निवृत्त भेलापर पलङ्गपर लेटल महाराज इन्द्रसेनक समीप जाय गवैया सभ तानपुरा लयकें ओ पखौजिया सभ पखौज (मृदङ्ग) लयकें अपन-अपन गुणक परिचय देबय लगलाह । सितारिया सभ गति, जोड़, विलम्ब पदक प्रभेद सुनयबामें अपन-अपन हाथक सफाइ देखाय सभासद लोकके प्रमुदित करय लगलाह । कतेको विलासी लोक अपन-अपन डेरासँ चुपचाप उठि वेश्यावीथीमें प्रवेश कय ओहि सभक मोजरा देखि-सुनि बाटक थाकनिकें दूर कयलन्हि ।

गाछी-पोखरि दिश कहार-बेगार प्रभृति नीचवर्ग दोसरे तरहें विनोद करय लागल अर्थात् सीतास्वयंवर, प्रभावतीहरण, रम्भाऽभिसार, एहि विषय सभक गमैया भासक गीतसँ आरम्भ कय विरहा-चाँचरि पर्यन्त गाबय लाल ।[17] चमार नटुआ सभ मयूरक पाँखिबाला ढोल लय घूमि-घूमि नाचय लागल ओ सभ लोक अपन-अपन सुर ओ धुनिमें मस्त देखि पड़ैत छल ।

Scanned by CamScanner

बारह बजे राति तक एहि तरहेँ उत्सव मनाय सभ वरियाती आराम कयलन्हि ।

सबेरि ६ बजे प्रातः स्नान ओ आह्निक कृत्य कय भोजनादिसँ निवृत्त भय वरियात-खानाक डङ्का ओ बिगुल भेल । तदनन्तर पूर्ववत् तैयारीक साथ वरियात रवाना भय मध्य-मध्यमेँ विश्राम करैत किच्छु दिन अछैतहि दोसर पड़ावपर अटकि गेल ।

एवं प्रकार बाटमेँ अड्डा-अड्डापर मोकाम करैत विवाहक दिन आर्यावर्त्तक राजधानी समीपमेँ पहुँचि गेलाह । एक कोश बाकी रहलापर लशकर विश्राम कयलक ओ उचित रूपसँ फेरि वरियातीक विन्यास होबय लागल । महाराज इन्द्रसेन एक सवार (अश्ववार)क द्वारा आर्यावर्त्ताधिपति महाराज चित्रवर्माकेँ अपना लोकनिक पहुँचबाक खबरि पठाय देलथीन्ह ।

तदनन्तर आर्यावर्त्तहुमेँ वरियात पड़िछैक हेतु सरियातक तैयारी होबय लागल । किञ्चित् कालमेँ डङ्का बिगुल भेलापर सभ पड़िछनिहार दस्तूर मोताबिक रवाना भेलाह । थोड़ेक दूर गेलापर दुनू दलकेँ सामना-

VI. भेल । दूनू तरफक सवार सभ मामूली घोड़दौड़ि कराय स्थिर होइत भेलाह । एहिमेँ सालोतरी[18] सभक पसिन्द कयल शुभलक्षण-लक्षित नाना देशक उत्तम जातीय घोड़ा सभ छल, यथा-अरबी, कन्धारी, काबुली, सिन्धी आदि ।

आओर हाथियो सभ अनेक जातिक छल । कतेको सप्तस्रावी[19] (जकरा सात ठामसँ मद चुऐक) छल जे दोसर हाथीकेँ देखि हमला करयपर मोस्तैद भय जाय । ताहि सभकेँ महाउथ (महामात्र) सभ बहुत यत्नेँ भीड़सँ बहार कय कातहि कात लय चलल । कतेको हाथीक दूनू बगल चरकट्टा सभ बरछा लेने ठाढ़ भेल रहय जे ककरहु दिश हाथी सभ आघात नहि करय ।

कतेको गम्भीरवेदी[20] हाथी सभ महाउथक आँकुश ओ पायरक इशाराक कोनो परवाहि नहि कय कतेक-कतेक काल ठाढ़े रहि जाय ।

एहि संमिलनक तमाशा देखैक हेतु दूर दूरक लोक सभ एकट्ठा भेल छल । कतेको उत्पाती लोक सभ जीव उपेछि-उपेछि हाथी सभक तर दय बहकिकेँ एहि कातसँ ओहि कात चल जाय ।

संमिलन-कालमेँ आर्यावर्त्तक किला तथा तोपखाना सभसँ सलामीक तोप खलाश होबय लागल । एहि अवसरमेँ तोपक गड़गड़ाहटि शब्द सुनि कतेको हाथी चिक्कार मारि भड़किकेँ पड़ाय लागल, परन्तु महाउथ सभ बहुत प्रयत्नेँ अङ्कुश द्वारा स्थिर कयलक । कतेको घोड़ा सभ भड़कल । ताहि परसँ कतेको अल्हड़-नवशिक्षित सवार[21] लोकनि ओंघरायकेँ खसलाह ओ जेहिना अखाढ़ापर कुश्तीमेँ हारल पहलवान सभ चुपचाप उठि अपना गच्छक लोकमेँ घुसिआइत अछि, तेहिना आर्यावर्त्तक उकठाह छौँड़ा सभक हँसीसँ लज्जित भय वरियाती दिशक खसल सवार सब सहीसक हाथमेँ लगाम थम्हायकेँ अपने पायजामा-चपकनक धूरा झाड़ैत वरियातीक दलमेँ घुसिऐलाह । जोड़ल ऊँटक कतार तँ गद्मद्द भय पड़ायल । ताहि परसँ सवार सभ लद्दफद्द भय खसय लगलाह ओ असवाब सभ हड़हड़ायकेँ खसि पड़ल । कतेको गाड़ीक भड़काह बड़द डराय केँ पड़ाय लागल परन्तु बहलमान सभ बहुत प्रयत्नेँ नाथ थाम्हि स्थिर कयलक । कतेको अड़िया (बछौरिया) बड़द सभ नाथहुकेँ तोड़ि-फाड़ि जुआसँ काँध झाड़ि आँखि मूनि लोकहिक भीड़ दिश दौड़ल जाहिसँ लोकमेँ हल्ला[22] मचि गेल ।

ई कौतुक देखि आर्यावर्त्तक कतेको उकठाह छौँड़ा सभ लग जायकेँ फटाका छोड़य लागल ओ वरियाती सभक दिश हँसि-हँसि थपड़ी पाड़य लागल । कतेको कालमेँ सभ सलतनत भेलापर उभय पक्षक

Scanned by CamScanner

लोक मिश्रित भय राजभवन दिशि विदा भेलाह ओ थोड़ेक कालमेँ वरियाती सभ दरवाजा लागि जनवासा[23] जाय यथोचित स्थानमेँ डेरा करैत गेलाह ।

थोड़ेक कालक बाद आर्यावर्त्तक महाराजक कारबारी लोकनि छोटसँ पैघ धरि सभ डेरा घूमि-घूमि वरियातीकेँ यथायोग्य भोजनादि सामग्री (रसद)[24] ओ उत्तमोत्तम ठण्ढा जल प्रबन्ध कय देलथीन्ह ।

सभ वरियातीकेँ स्वस्थ भेलापर नाचघरमेँ महफिल आरम्भ भेल । क्रमशः बजवैया, गवैया, कत्थक, वेश्या, भाँड़क मोजरा ओ नाँच होबय लागल । जे महाराज लोकनि आलस्यवश ओहि महफिलमेँ नहि जाय सकलाह से सभ अपनहि-अपन डेरामेँ महफिल कय चित्त-विनोद करय लगलाह ।

किञ्चित् कालोत्तर वैवाहिक शुभ मुहूर्त्त प्राप्त भेलापर सारमेँसँ एक गोटेँ बहुत तैयारी साथ जनवासा आबि कुमार चन्द्राङ्गदकेँ लालकीपर चढ़बाय अन्तःपुर लय चललाह ।

द्वारपूजाक बेरि दूनू दिशक पुरोहितक प्रतिनिधि(गुमास्ता)केँ शास्त्रार्थ आरम्भ भेल जे 'द्वारपूजा' शब्दमेँ षष्ठी समास की सप्तमी समास । एहिपर थोड़ेक काल घोँघाउजि कय पश्चात् गुरु-परमगुरु-पर्यन्तक कुचेष्टवाहियेँ सत्कार कय वादी सभ निवृत्त भेलाह ।

तदुत्तर कुमार चन्द्राङ्गद मण्डपपर पहुँचलाह ।

तदनन्तर स्त्रीवर्गक रीत्यानुसार सभ विधि-व्यवहार भेलापर आर्यावर्त्तेश्वर महाराज चित्रवर्मा सविधि वरक अर्हणा कय कन्यादान कयलन्हि तथा सुवर्ण ओ भूमि दक्षिणासहित बहुमूल्य रत्न, अलङ्करण, वस्त्र, हाथी, घोड़ा, रथ, पालकी, दासी, दास, इत्यादि यौतुक(दहेज)मेँ तत्कालहि देलनि ।

तदनन्तर कुमार चन्द्राङ्गद वेदी लग जाय योजक[25] नामक अग्निक उपसमाधान कय यथाविधि राजकुमारी सीमन्तिनीक पाणिग्रहण कय आज्य-होम ओ लाजा-होम सम्पादित भेलापर सीमन्तिनीकेँ सीमन्तमेँ सिन्दूरसँ भूषित कय स्वानीत का-

VII. 'कामदार' बनारसी साड़ी (वाराणसी शाटी)सँ शिरोऽवगुण्ठन (घोघट) देलथिन्ह । तदुत्तर दूर्वाक्षत ग्रहण कय कुलदेवता (गोसाउनि)क प्रणाम करैत कोबर जाइत भेलाह ।

कोबरघरक शोभा तँ एक सीमन्तिनीहिंक रहने विलक्षणैँ छल, परन्तु कुमार चन्द्राङ्गदक सङ्ग भेने द्विगुणित वा त्रिगुणित भय गेल । एहि नवदम्पतीक चतुर्थी पर्यन्त अधःशय्याक विलक्षण विन्यास कयल गेल छल । समीपहिमेँ गुरुदासपुरक[26] कारीगर कुम्हारक बनाओल ओतहिक माटिक हाथीपीठिपर स्वर्ण-पात्रमेँ सौवर्णी गौरीमूर्ति, ताहि समीपमेँ पूर्णघट(पुड़हर) तथा अखण्ड दीपयुक्त सौभाग्य-पातिली (अहिबातक पातिल) स्थापित छल । ताहि ठाम चारू दिशिमेँ पूजोपकरण वस्तु, फूल, बेलपात, अक्षत, चानन, सिन्दूर, धूप, दीप, नैवेद्य, पान, सुपारी इत्यादि ओरिऔल राखल छल ।

कोठाक देबालमेँ वंशवृद्धिसूचक वंशस्तम्भ (बाँसक बीट) तथा नलिनीदल (पुड़ैनि)क विचित्र चित्र लिखल छल ! एहि स्थलक शोभा देखैक निमित्त आगत सूर्य ओ चन्द्रमा, राजपत्नी सबहिक भूषण-मणि-गणक तेजसँ सन्तप्त भय प्रतिमूर्तिक छलैँ भीतिमेँ सटल जाइत छलाह । आओरो देवता सब तमाशा देखैक हेतु तसवीरक व्याजसँ आबि लौहकील (काँटी)मेँ लटकि-लटकि नेत्र-युगल सफल करैत छलाह ।

ऊपरमेँ लटकल झाड़-फानुस सब आकाशमेँ उदित ग्रह-नक्षत्रक 'धोखा' दय रहल छल । तथा तत्रस्थित मदनवर्तिका सदृश मदनवर्तिका (मोमबत्ती)मेँ 'बत्ती' छुअबितहि युवजनक मानसमेँ कामानल प्रज्वलित भय उठल ।

Scanned by CamScanner

ठाम-ठाम पर्दा सब लागल छल। तत्पश्चात् सहशायिनी (शयनसखी) सबहिक 'फर्श'पर ओछाओन भेल रहय। दोसर दिशमे सीमन्तिनीक दासीवर्गक ओछाओन छल। पर्दाक मध्यमे नव वर-वधू-युगलक अध:शय्याक विन्यास अनिर्वचनीय छल।

हमरा सबहि कहाँ धरि वर्णन करब। हँ, एतबा धरि अवश्य कहि सकब जे–

'स्थानस्यास्य विशेषवर्णन विधावेक: स शक्तो ध्रुवं,
यस्याषु भवेद् भुजङ्गपतिवद्विज्ञा रसज्ञावली।'

ओहि कौतुकागार मध्य प्रतिदिन प्रथम प्रहरमे नाना उपचारसँ गौरीपूजा राजपुत्री सीमन्तिनी पतिसम्मिलिता भय करथि और मनहि मन ई वर माङथि जे-"हे गणेशजननि गौरि ! जहिना सदा-शिवक सन्निधिमे निवास-सुखानुभव अहाँ स्वयं कय रहलि छी तहिना एहू भक्ता दासीके हिनक सन्निधिमे निवाससुखक अनुभव कराउ। अहाँ अन्तर्यामिनी जगज्जननी थिकहुँ। सबहिक हृदयगत भाव जनितहिँ छी। तखन पुनः पुनः प्रार्थना प्रलापमात्र होयत।"

पुजान्तमे उपाँशु शब्दे स्तुति कयलन्हि-

"कर्पूरधवल धवसह निवाससुखमनुभवन्ति ! शर्वाणि !।
करवाणि चरणवन्दनमभिमत लाभाय भक्ता ते ।।"

ओहि समयमे हुनक माय, सतमाय, पितिआइनि ओ जेठि बहिनि प्रभृति स्त्री-समुदाय सीमन्तिनीक सार्वदिक सौभाग्यार्थ गौरीक सन्निधिमे माङ्गलिक गान करय लगलीहि-

''चित्रस्थिता राजित देवतास्ता: प्रीत्याऽमोदन्त मुहुस्तमर्थम् ।।"

अर्थात् चित्रमे स्थित देवता सब वायुजनित (कम्प) व्याजे ताहि गीतार्थक अनुमोदन वारंवार करय लगलाह।[27]

गीत।

देइ ! पूजहु गौरी सहित कन्त।
मिलिहहि सब अभिमत फल तुरन्त ।।
भोगहु युग दम्पति सुख अनन्त।
जीवहु शत शारद ऋतु वसन्त ।।
मनबहिँ शुभ आशिष सकल सन्त।
शुभ सिन्दुर तुअ शिर चिर लसन्त ।।
कहिओ बिछुरन नहि विधि लिखन्त।
माङहु वर सब मिलि कवि भनन्त ।।

इत्यादि नाना प्रकारक गीत-गानक सङ्ग स्त्रीवर्गक परस्पर वार्त्तालाप तथा हास्य-विनोद भय रहल छल कि एहि मध्यहिमे एक अधवयसू नौड़ी (सैरिन्ध्री) बाजि उठलि जे-" मालिकिनि सब ! जमायक माय, पितिआइनि केहनि छथिन्हि जे एखन पर्यन्त सगुनहुक गौरी-पूजाक भार नहि आयल अछि।"

से सुनि बड़ी महारानी अत्यन्त क्रोध कय खिसिआय लगलथिन्हि जे-"तोहरा सबहिके यत्र-कुत्र

Scanned by CamScanner

स्थानमेँ जेना बाजैक अभ्यास छौक, तहिना हमरहु सबहिक घरमेँ आरम्भ कयले‍ँहे‍ँ । राजधानीक ई व्यवस्था नहि छैक जे कोनो प्रकारक ओछ कथा बाजल जाय । भार अबितहिँ होयतन्हि । दूर देशक विषय छैक तेँ भरिआ सब एखन धरि नहि पहुचलाह अछि ।" इत्यादि कोबराघरक नाना प्रकारक वार्तालापक अनन्तर यथासमय चोरपनिआँ तथा महुअक(मधुपर्क)क व्यवहार सम्पन्न भेलापर नवविवाहित कुमार चन्द्राङ्गद अपन मित्र वर्गक ओ श्याल(सार) वर्गक सङ्ग विश्राम-स्थानमे‍ँ (जतय 'गद्दी मसनद' (मंसलन्द) पहिनहिसँ लागल रहन्हि) विश्राम (आराम) करय गेलाह ।

तदुत्तर सन्ध्या समय भेलापर राजधानीक रीत्यानुसार एक बहुत भारी मोफिल (महफिल) लागल, जाहिमे‍ँ आर्यावर्त्तेश्वर महाराज चित्रवर्मा तथा निषधेश्वर महाराज इन्द्रसेन एहि दूनू समधिके‍ँ परस्पर सम्मिलन भेल । तथा उभय पक्षसँ निमन्त्रित राजा-महाराज सब सभामे‍ँ उपस्थित भय राजकीय रीत्यानुसार परस्पर सम्मिलित भय अपन-अपन आसन(गद्दी)पर बैसैत गेलाह । ओहि समय वन्दीगण महाराज लोकनिक स्तुतिरूप विरुदावली पढ़य लागल ।

महाराज सबहिक उपवेशनोत्तर सब सरियाती-वरियाती यथा समुचित (Trase) [Trace ?] स्थानपर बैसैत गेलाह । किछु कालमे‍ँ, सभा स्थिर भेलापर सब लोकके‍ँ विचार भेलन्हि जे पहिने पण्डितक शास्त्रार्थ हो, तखन नाच-तमाशा इत्यादि ।

ई कथा सुनितहि सरियाती दिशसँ एक नवीन ज्यौतिषी (जे काशीसँ पढ़ि कय आयले मात्र छलाह तथा गामक कातमे‍ँ चौपाढ़िक घर बान्हि विद्यार्थी पढ़ाय रहल छलाह, जाहिमे‍ँ पचीस वा तीस तँ सिद्धान्तिए छलाह, फलग्रन्थीक कथा कोन) बाजि उठलाह जे-"तावत् एक सामान्ये प्रश्न हम पुछैत छी तकर उत्तर करैत जाउ, तखन कोनो विशेष विषयक उपपत्ति पूछब ।"

[प्रश्न] "एक सय एकक अङ्क कोन रूपे‍ँ लिखैक चाही ?"

परन्तु वरिआतीमे‍ँ संयोगवश क्यौ तादृश ज्यौतिषी हुनक 'जोड़ा' नहि आयल रहथि तेँ अगुतायके‍ँ एक ओहने नवीन वैयाकरण महाशय कहय लगलथिन्हि जे-"आहि ! ई प्रश्न कोन कठिन अछि जे अहाँ एतेक अस्तव्यस्त होइत छी ? एहि हेतु बूढ़ा ज्यौतिषीजी लोकनि कथी लय बजताह ? हमहि उत्तर कहि दैत छी । एक सय लिखि ताहिपर एकक अङ्क लिखनहि 'एक सय एक'क अङ्क भय जायत, यथा १००१ ।"[28]

VIII. ई सुनि ज्यौतिषीजी कथी लय मानथिन्हि । चलल कुचेष्टवाहि ।

तावत् अन्यूनानतिरिक्त हुनकहि दुनू गोटाक सदृश एक नैयायिक (जे भुर्सी वा बिदाइ लेबाक हेतु आयल छलाह) सभामे‍ँ उपस्थित भय गेलाह । ई देखि दूनू गोटै वादी-प्रतिवादी, उदासीन व्यक्ति जानि हुनकहि मध्यस्थ मानलन्हि । नैयायिकजी (जे अपन हस्ताक्षरमे‍ँ 'नैयाइक' शब्दक व्यवहार करैत छलाह) कहलथिन्हि जे-"बाबू ! अहाँ लोकनि जोतखी, बैआकरण थिकहुँ तेँ युक्तिविरुद्धो बाजीतँ कोनो क्षति नहि । परन्तु हम तार्किक भय असंगत कथा कोना बाजब । तेँ हम अपन सिद्धान्त कहि दैत छी, एक सय लिखि, ताहि पर एक छेबा दय तदुत्तर एकक अङ्क लिखने एक सय एक होयत, यथा-१००/१ ।"

एहि त्रिवेणी (त्रितीर्थ)क सङ्गम भेलापर तँ और घोँघाउजि होबय लागल तथा 'दुर्जी ! दुर्जी !' शब्दक धारावृष्टि तेना होबय लागल जेना चैत्र-वैशाखमे‍ँ दिनेक पाषाण-वृष्टि होइत अछि । यद्यपि वृद्ध विद्वान् सबहि हिनका लोकनिक वृथा वाक्कलहक निवृत्ति करैक बहुत यत्नो करथि तथापि ओ दुर्धर्ष पण्डित लोकनि कथी लय ककरो कथा सुनताह वा मानताह । तखन महाराज स्वयं कहलथिन्हि जे आब अपने लोकनि शास्त्रार्थ समाप्त करू । किछु प्राचीनहु लोकनिक मुखसँ शास्त्रार्थ श्रवणक इच्छा सबहि गोटाके‍ँ छन्हि । तदुत्तर व्याकरण,

Scanned by CamScanner

न्याय, सांख्य, मीमांसा, वेदान्त तथा ज्यौतिषमेँ प्राचीन विद्वान्क मुखसँ उत्तमोत्तम विचार सुनि राजा-महाराज तथा बबुआन सब अति प्रसन्न होइत भेलाह ।

तदुत्तर किच्छु संगीत विद्याक विनोद आरम्भ भेल । अर्थात् सबसँ पहिने वाद्यकार (बजबैया) सबहि वीणा(सितार), सरोद, इसराज, जलतरङ्ग इत्यादि वाद्य बजौलन्हि जाहिसँ तीव्र ओ कोमल स्वरमेँ गीत, जोड़, विलम्बपद आदि बजयबामेँ हस्तलाघव (हाथक सफाइ) देखाय सब सदस्यकेँ प्रसन्न कयलन्हि ओ अपनहु सब प्रशंसाभाजन भेलाह । तदुत्तर मार्दङ्गिक (मृदङ्गी-पखौजिया) ओ गायक (गबैया)क अवसर भेलन्हि । ओहो सबहि परम कठिन राग सबमेँ शिक्षा-नैपुण्य देखाय प्रशंसापात्र भेलाह । विशेषत: ताहि दूनूमेँ अन्यतरकेँ जतय बेताल होयबाक संभव होइन्हि, तकरा बचयबामेँ पर-परस्पर प्रशंसा ओ नम्रताक सूचक अभिवादन (यथा आइ-काल्हि 'आदाब' तस्लीमात्)क वर्षा होबय लागल जकर कारण कतिपय सङ्गीतज्ञ सदस्यकेँ छाड़ि अनका आश्चर्य बूझि पड़न्हि ।

तदुत्तर कत्थक लोकनिक अवसर भेलन्हि । ताहिमेँ अर्धवयस्क गुणी नटावा सब अपनहि सामला जामा पहिरि घुघरू बान्हि ठाढ़ भेलाह । जखन ओ लोकनि सम बान्हय लगलाह, तखन सब लोककेँ बूझि पड़न्हि जे आकाश-पाताल सम भय गेल । तदुत्तर गोटेक 'स. रि. ग. म' गाबि ठुमरी, गजल[29] आदि गायब आरम्भ कयलन्हि जाहिमेँ प्रत्येक पदक पचासो आवृत्तिमेँ अभिनवे-अभिनवे भाव सब बताबय लगलाह, जाहिसँ गुणज्ञ बूढ़ा सरदार सब तँ परम प्रसन्न होथि (स्ववर्गे परमा प्रीतिः) परन्तु नवयुवक लोकनि अकछाय गेलाह । केवल हुनका लोकनिक सङ्ग-सङ्ग गौनिहार जे बेटा वा भातिज रहन्हि से सभ जखन गोटेक तान लगाबय तखनटा नीक लगन्हि । किछु कालक उत्तर 'नाजिर'क हाथसँ पानक बीड़ा पाबि ओ सबहि बैसैत गेलाह ।

तखन वेश्या सबहिक पारी भेल । जाहि खन हुनका सबहिक सामाजिक (सफर्दा) बला[30] पर चोट देलक ओ सारङ्गी[31]मेँ कोमल स्वर 'छेड़लक' ओ गुरुजी (ओस्ताद साहेब) कांस्यताल (मजीरा) खटखटाबय लगलाह, तहिखनसँ पूर्वक अकछायल नबका 'इसखी' बाबू सब सगबगाय लगलाह । अनन्तर गन्धर्विणी नर्तकी सबहिक नृत्यारम्भ भेल । हुनका सबहिक स्वाभाविक हावभावाभिव्यञ्जक अभिनय तथा सस्मित गानसँ समस्त सभा क्षुब्ध ओ मुग्ध भै गेल । केवल महाराज चित्रवर्मा ओ महाराज इन्द्रसेन, ई दूनू समधि गम्भीर भावसँ बैसल रहथि । यद्यपि ओहि समय कतेको नवयुवकक मन उमड़ि उठन्हि जे 'वाह वाह'क वर्षा करी, तथापि ओहन नियमबद्ध राजगोष्ठी (जाप्ताक दरबार)मेँ ढिठाइ (बेअदबी) करैक साहस नहि भेलन्हि । तेँ चुप रहैत गेलाह ।

ओहि अवसरमेँ पार्श्ववर्त्ती वेश्याक गुरु (ओस्ताद) लोकनि तबालची सबकेँ ठेका बजयबामेँ जाहि ठाम स्खलित होबय लगन्हि, ताहि ठाम सावधान कय देथिन्हि तथा वेश्यहु सबहिकेँ जाहि ठाम 'बेताल'वा 'बेसुर' होयबाक संभव होइन्हि ताहि ठाम सम्हारने जाथिन्हि ।

तदुत्तर राजधानीक रीत्यनुसार उभय पक्षक वेश्या द्वारा उभय पक्षक समधिकेँ परस्पर बहुत साङ्केतिक[32] शब्दमेँ डहकनक गीत गाओल गेल । और किछु भाणक[33] नकल भेल ।[34]

तदनन्तर अर्धरात्र समयमेँ गुलाब, अतर, पान ओ मसालाक व्यवहार भेलापर सभा विसर्जित भेल । सब महाराज अपन-अपन शिविरमेँ विश्राम करय गेलाह ।

एही विषयक सूचनामेँ ब्रहमोत्तरखण्डक श्लोक अछि-

"सोऽभून्महोत्सवस्तत्र तस्या उद्वाह कर्मणि ।
यत्र सर्व महीपानां समवायो महानभूत ।।"

Scanned by CamScanner

IX. एवं प्रकार निरन्तर उत्सव होइत चारिम दिन चतुर्थी कर्म सविधि सम्पन्न कयल गेल। ओहि दिन निषध राज्यक दिशसँ बहुत भार-दोर महाराज चित्रवर्माक ओहि ठाम आयल जकर वैन (वायन) सबहि सरदारक महलातमेँ तथा पण्डित-ज्यौतिषी लोकनिक डेरा-डेरामेँ देल गेल। ओहि दिन वरकेँ तथा समधि (सम्बन्धि) लोकनिकेँ सौजन्यक व्यवहार होयबालय छलन्हि तेँ आध पहर दिनहिसँ उथल-पाथल होबय लागल। भानसघरमेँ भक्ष्य, भोज्य, चर्व्य, चूष्य, लेह्य, पेय-ई छबो[35] प्रकारक वस्तु सब बनय लागल ओ सन्ध्या धरि सम्पन्न भय गेल। आङन-आङनसँ गाइनि (गायनी) लोकनि बजावलि गेलिहि। भोजनालयक असोरापर चीकक बाहर स्वच्छ आस्तरण(फर्श)पर महारानी सबहि बैसलिहि। ओहिसँ दोसर दिश सतरञ्जीपर ढोलक, मजीरा लय गाइनि लोकनि। भोजनस्थानमेँ सार सबहिक संग आसनपर कुमार चन्द्राङ्गद भोजनार्थ बैसाओल गेलाह। सचार सब लगले छल, परन्तु वर तावत् हाथ वारनहि छलाह की गाइनि सब गीत उठौलन्हि।

उछती[36]

सुनल बहुत गुनमान रे। (आरे) देखलहु भेल परमान रे ॥
तुअ सम जग नहि आन रे। हमरहु सैह अभिमान रे ॥
एम्हरहु राखथु ध्यान रे। अपनहि बड़ सज्ञान रे ॥
चान बसथि असमान रे। जल बिच कुमुदिनि थान रे ॥
तइयो दुहुक एक प्रान रे। प्रीति-रीति के जान रे ॥
कतेक कहब कवि भान रे। (आरे) सुपुरुष गुनक निधान रे ॥ १ ॥

दोसर।

तोहे प्रभु अति मतिमान रे। (आरे) हम अतिशय अज्ञान रे ॥
होयत बहुत अपमान रे। करिअ न हृदय मलान रे ॥
तुअ गुन कि करु बखान रे। अवगुन धरिअ न कान रे ॥
(आरे) बहुत सुयश कवि भान रे। हमहु चाहिअ सुख दान रे ॥ २ ॥

जो(यो)ग[37]

कामरु देश हम गेलहुँ ।
(माइ) अपुरुब जोग सिखि ऐलहुँ ॥
(माइ) धिया लय जमैया लोभौलहुँ ।
(माइ) सकल मनोरथ पौलहुँ ॥
नाम हमर थीक भोगिनि ।
(माइ) हम छिअ अतिशय योगिनि ॥
हर-गौरी देल मोहि वर ।
(माइ) गुन बल मोहिअ सुरनर ॥

एवं प्रकार गीत समाप्त भेलापर भोजनहुक समाप्ति भेल। दोसर भोजनालयमेँ समधि लोकनि भोजन करैत रहथि। हुनकहु दुइ-चारि उछती तथा सभ्यतापूर्वक साङ्केतिक डहकन गाइनि लोकनि सुनौलन्हि। तदुत्तर ओहो लोकनि भोजन समाप्त कयलन्हि।

Scanned by CamScanner

तत्पश्चात् निषध देशक भरिया सबहि खाए बैसलाह । तनिका लोकनिकेँ आर्यावर्त्तक राड़िनि (खवासिनी) सबहि अपनासँ लय सातो पुरुष-पुरुषाइनिकेँ स्पष्टे बीजाक्षर[38] सब सुनाबय लगलन्हि जकर हँसी सबहिकेँ लगैक । एहि रीतियेँ सबहि लोकक भोजनक विधि समाप्त भेल ।

तदुत्तर सुश्रसोढ़ [सुस्थ सोढ़ ?] नवोढ़ सुकुल महाराज कुमार चन्द्राङ्गद सुखशयनार्थ कोबर घर गेलाह । ओहि दिन भूमिशय्या निवृत्त भेल । एक उत्तमोत्तम चानीक पलङ्गपर नाना प्रकारक बहुमूल्य आस्तरण (अछौना) कयल गेल छल । नीचामेँ सम्पूर्ण 'फर्श' लागल छल । ताहिपर जरदोजी मखमलक गद्दी, मसनद, तकेया, गङ्ग-यमुनी अड़नीसँ सटल लगावल छल ।

[39]ओहि रमणीय कोठलीमेँ कतहु-कतहु सुगा, मैना, कोकिला, सारस आदि प्रियवाक् पक्षी सबहिक पिजरा लटकाओल छल । देवता, राजा, महाराजा तथा अति सुन्दरी रमणी सबहिक विचित्र-विचित्र चित्र (तसवीर) लोहक कीलमेँ रेसमी लाल, पीयर डोरीसँ बान्हल ओ टाङल छल । बीच-बीचमेँ नागदन्त अर्थात् हाथी दाँतक खुटी सबपर भालसरी, बेली, चमेली, जूही, नेवारि प्रभृति सुगन्धिपुष्पक माला राखल छल । ताखपर नाना प्रकारक पुष्पतैल (फुलेल) कुतुप (कुप्पी) सबहिमेँ, अतर शीशी सबमेँ, गुलाब बोतल सबमेँ धयल छल ।

आत्मरक्षार्थ एक कात देवालमेँ ढाल, तरुआरि, बर्छा, भाला, छुरा, कटार प्रभृति हथियार सब विन्यासपूर्वक ओठङाओल छल । पलङ्गक समीपहि एक उत्तमोत्तम 'मेज' पर नाना पानपात्रमेँ सुवासित जल, शर्करोदक (शर्वत) तथा मादक ओ अमादक अर्क विन्याससँ राखल छल । चानीक पानदश्तमेँ सोनाक पनबट्टा भरि पानक खिल्ली सब भरल छल । दोसर थारमेँ सुपारी, लवङ्ग, अणाची, सोँफ, जायफर, जावित्री, दालचीनी, शीतलचीनी, केसरि, कस्तूरी, ताम्बूलक उपकरण (मशाला सब) धयल छल । एक बाटीमेँ सितामिश्रित छानल गोदुग्ध पात्रान्तरसँ झाँपल राखल छल । अपर भागमेँ अतरदान, गुलाबपाश तथा पीत वर्ण अकण्टक एक केवलाक फूल धयल छल । पलङ्गक नीचाँ पिकदान इत्यादि ।

एहि तरहक वर्णनातीत रम्य स्थानमेँ ओहि शुभ अवसरपर कुमार चन्द्राङ्गद पर्यङ्कपर पदार्पण-प्रसाद कय उपविष्ट भेलाह । ओहि ठाम झाड़, फानुस, लैम्प, लालटेन (Lanterns)प्रभृतिक तेहन प्रकाश छल जेहन दिनहुमेँ असम्भव ।

किञ्चित् कालान्तर दुइ-चारि आत्मीय समानवयस्का सखीसँ आनीता अतिलज्जिता परमधन्या राजकन्या सीमन्तिनी देवी (देई-दाई) देहरि लग आबि ठाढ़ि भय गेलिहि । पश्चात् राजस्थानसम्प्रदायानुसार कुमार चन्द्राङ्गद पलङ्गसँ उठि दश-पाँच डेग बढ़ि कय सीमन्तिनीक हाथ धय[40] स्वागतपूर्वक आनि हठ ओ आदरसँ शय्यापर बैसौलन्हि । ओहि समय राजकुमारकेँ रोमाञ्च[41] भय गेलन्हि ओ राजकुमारी सीमन्तिनीकेँ तेना प्रस्वेद (पसेना) भेलन्हि जेना विरहजन्य सन्ताप-निवृत्ति-पूर्वक हृदय शीतल भय गेलैन्हि ।[42] किञ्चित् काल स्तब्ध रहि कुमार चन्द्राङ्गद मन्द स्वरेँ सम्भाषण आरम्भ कय सीमन्तिनीकेँ विश्वास आ हास्य[43] उत्पन्न करबैत कृतकृत्य भेलाह ।

●

Scanned by CamScanner

सीमन्तिनी-आख्यायिका

किस्तक प्रकाशन-विवरण एवं लेखकीय टिप्पणी

*[म.म.परमेश्वरझा द्वारा रचित **सीमन्तिनी-आख्यायिका** मिथिलामोदक विभिन्न उद्गारमे क्रमिक रूपमे छपैत रहल छल। लेखक मूलकथाक संग ठाम-ठाम आनुषंगिक सूचना-सन्दर्भ एवं व्याख्यात्मक टिप्पणी प्रचुर संख्यामे देने छथि। अन्तिम प्रकरणमे मिथिलामोदक सम्पादकीय टिप्पणी सेहो देल गेल अछि। एहि ठाम रोमन अंकमे किस्तक क्रमांक दऽ 'सीमन्तिनी-आख्यायिका'क कतबा अंश मिथिलामोदक कोन उद्गारमे मुद्रित भेल छल तकर पूर्ण सूचना देल जा रहल अछि। एकरा संगहि मूल कृतिमे प्रदत्त समस्त टिप्पणीकँ क्रमसंख्या-संकेत दऽ एकत्रैव एतऽ देल जा रहल अछि : –**सम्पादक**]*

I. मिथिलामोद, वर्ष-२, उद्गार-१७-१९, मार्ग-माघ-पूर्णिमा, सन १३१४ साल, शाके १८२८ (नव-दिस-जन. १९०६-७); मोदक पृष्ठ संख्या ३९२+८क पश्चात् पृष्ठ १-८। शीर्षक 'सीमन्तिनी आख्यायिका'। आरम्भक विषय विवरणमे रचयिताक नाम प. परमेश्वरझा।

1. साधारणाधिकरणमेँ वात्स्यायन।

   आचार्यास्तु कन्यानां प्रवृत्तपुरुष संप्रयोगा सहसंप्रवृद्धा धात्रेयिका'-इत्यादि कामसूत्र।

2. ई ६४ कला वात्स्यायनोक्त थीक। कमशास्त्रान्तरोक्त गौरव भयसँ नहि लिखल। जिज्ञासु जन कामसूत्रभाष्य देखथु।

3. शरीरस्थाने सुश्रुतः

   ऊनषोडश वर्षायामप्राप्तः पञ्चविंशतिम्।
   यद्याधत्ते पुमान् गर्भं कुक्षिस्थः स विपद्यते॥
   जातो वा न चिरं जीवेज्जीवेद्वा दुर्बलेन्द्रियः।
   तस्मादत्यन्त बालायां गर्भाधानं न कारयेत्॥

II. 'सीमन्तिनी-आख्यायिका'क दोसर खेप मिथिलामोदक २०म सँ २४म धरिक कोनो उद्गारमे अग्रिम पृष्ठ ८ सँ १६ धरि प्रकाशित भेल होयत, जे अंक सभ सम्प्रति अनुपलब्ध अछि। दोसर खेपक ई अंश उपलब्ध ओ गृहीत कयल गेल अछि 'मैथिली गद्य-संग्रह, तृतीय भाग, सम्पादक- जयदेवमिश्र ओ सुरेन्द्रझा; मैथिली साहित्य-परिषद् (दरभंगा) द्वारा सङ्कलित, प्रकाशक-पुस्तक-भण्डार, लहेरियासराय और पटना, (पृष्ठ संख्या-२६-३७)सँ। संग्रहक सम्पादक लेखकीय टिप्पणीक परित्याग कऽ देने छथि तेँ दोसर खेपक मुद्रित अंशमे जे लेखकीय टिप्पणी रहल होयत से सर्वथा अनुपलब्ध अछि।

III. मिथिलामोद वर्ष-3, उद्गार-२५-२७, श्रावण-भाद्र-आश्विन, सन १३१५ साल, शाके १८२९ (जुलाइ-अगस्त-सितम्बर, १९०७); मिथिलामोदक पृष्ठ संख्या ५६क पश्चात् पृष्ठसंख्या-१७-२४।

4. विदर्भ देशक राजधानी कृष्णा नदीक तटमेँ दक्षिणमेँ निजाम हैदराबादक राज्यान्तर्गत सम्प्रति "विदर" नामसँ प्रसिद्ध अछि।

Scanned by CamScanner

5. निषध देश विन्ध्य पर्वतक पृष्ठ भाग मध्य भारत (Central India)मेँ ग्वालियर राज्यक दक्षिण भाग मध्य सिन्धु नदीक तीरसँ वरार (वराट) पर्यन्त विस्तृत अछि । एहि प्रदेशमेँ नरवर नामक किला नल महाराजक बनाओल थिक । ई वृद्ध लोकक मुहँसँ सुनल अछि । ओ नलपुर नामक राजधानी छल । ओही प्रान्तमेँ सिप्री ओ गूना छावनी ग्वालियर स्टेटक अन्तर्गत अछि ।

6. असल केतकी वसन्त ऋतुअहिमेँ फुलाइत अछि, स्वर्ण वर्ण ओ सुगन्धिमे अनुपमा होइत अछि । एहि केतकीक वन मिथिलामेँ कमतौल सटेशनक समीप 'राढ़ी' गाम मध्य अछि । हम स्वयं ओहि गाम जाय केँ देखलेँ छी । वर्षा ऋतुमे जे केयोला फुलाइत अछि, से ओहिसँ बहुत न्यून सुगन्धिमेँ तथा वर्णमेँ ।

7. सम्बन्ध पदोपादानसँ संभावित पुनर्विवाह सूचित ।

8. आवश्यक स्थलमेँ ब्राह्मण द्वारा नाम-परिवर्त्तन करायकेँ विवाह कर्त्तव्य ।

9. प्रवर-साम्य संख्या ओ नाम, उभयसँ ग्राह्य थिक । यथा, वत्स सावर्णिमेँ और्वादि मुनि-साम्य छैन्ह ओ काश्यप शाण्डिल्यमेँ संख्या-साम्य अछि, परन्तु प्रवर-प्रवर्त्तक मुनि-नाममेँ साम्य नहि । तेँ समप्रवर प्रयुक्त निषेध नहि ।

IV. मिथिलामोद, वर्ष-3, उद्गार-३५ भाद्रपद, सन १३१७ साल, शाके १८३१ (सितम्बर, १९०९); मिथिलामोदक पृष्ठ संख्या २२४-३० । गत २५-२७ उद्गारसँ आगाँ-

10. 'त्वं च अहंच' अर्थात् तोह एहन हम एहन, एतदर्थक वृथा वाक्कलह मिथिलाभाषामेँ 'त्वंचाहंच' कहबैत अछि । ई शब्द संस्कृतानुकरण थीक ।

11. आइ-कािल्ह राजा-महाराजकेँ तँ होबहि बूझ, परन्तु मामूली जमीन्दार सभकेँ कोनो जात-बरात भय जाउन्हि तँ अपन विभवसँ कतिगुण अधिक खर्च करैत छथि । जे वस्तु अपना नहि रहल, से ऋणो-पैँच कय लेबे करी वा शय-दुइ शय टाका देवान मोतशदीकेँ देलहु मङनी भेटय तँ अवश्य ली । हिनका लोकनि अपन जीवनमेँ इयेह कर्त्तव्य ओ पौरुष मानैत छथि । धर्मार्थ, देशोपकारार्थ ओ शिक्षार्थ एको कैञ्चा खर्च वृथा बुझैत छथि । एक जमीन्दारक गाममेँ एक बेरि नोत पुरय गेल रही । डेरा लग एक कीर्त्तनिया नटुआक विपटा ठाढ़ छल । दैवात्, ओही समयमेँ एक जमीन्दारक ओहि ठामसँ विवाहक वरियाती जाइत छल । ताहिमेँ एक गरिबहा जमीन्दार ककरो हाथी मङनी कय गद्दीपर झूलक स्थानापन्न शतरञ्जी अछओलेँ, ओहिपर सवार भेल चल जाइत छलाह । तखन विपटवा पुछलक जे-"पण्डितजी ! एहि बाबू साहेबकेँ ई अपन हाथी थिकैन्ह, की ककरो पोसिआ लेलन्हि अछि ?"

ओकर कथा आबहु स्मरण भेलासँ हँसी लगैत अछि । नीतिमेँ लिखैत छथि जे-

"अयमेव परो धर्म इयमेव परा मतिः ।
इदमेव परं सत्यं यदायान्नाधिको व्ययः ।।"

12. कारीगर सभैक मेट ।

13. 'वारयात्रिक' एहि संस्कृत शब्दक अपभ्रंश 'वरियाती' शब्द थीक । एकर व्युत्पत्ति-वरस्य यात्रा वरयात्रा, सा प्रयोजनमेषां वारयात्रिकाः, सांयात्रिक शवट्ठञ् ।

14. 'वरायत्त' एहि संस्कृतक प्राकृत 'वरात' शब्द थीक । वरक आयत्त अर्थात् अधीन । एहिना 'श्यालायत्त'क अपभ्रंश 'सरियात' ।

Scanned by CamScanner

15. 'अम्बारि'क संस्कृत 'वरूथ' शब्द थीक । रुद्राध्याय 'नमो विल्मिने च' ३५, एहि मन्त्रक भाष्य देखू ।

16. यद्यपि जलूस (Procession)निकलबाक रीति राजधानी सभमेँ भिन्न-भिन्न अछि परन्तु एहि ठाम अवान्तर भेदक अविवक्षा कय स्वतन्त्र रीतिसँ लिखल अछि । एहि दिनमेँ लाट कर्जन साहेबक सवारीक विन्यास डिल्ली-दरबार (Coronation)मेँ नीक भेल छल । तथा संवत् १९६४क माघमेँ श्री५मान् महाराज हथुआक विवाह मधुवन जिला चम्पारणमेँ भेल छलैन्ह, ताहूमेँ वरियातीक विन्यास नीक छल । लेफ्टिनैंट गवर्नर बंगाल ओ श्री५मान महाराज बहादुर दरभंगा ओहिमेँ शामिल छलाह ।

V. मिथिलामोद, वर्ष-3, उद्गार-३६, आश्विन, सन् १३१७ साल, शाके १८३१ (अक्टूबर, १९०९), मिथिलामोदक पृष्ठ संख्या-२५१-६० । गतोद्गारसँ आगाँ-

17. जेना आइ-काल्हि कहार-वेगार सभ अल्हा, लोरिक, दयालसिंह, सूठीकुमरि, नैका प्रभृतिक गीत गबैत अछि ।

VI. मिथिलामोद, वर्ष-५, उद्गार-५९, भाद्र, सन् १३१९ साल, शाके १८३३ (अगस्त, १९११), मिथिलामोदक पृष्ठ संख्या-१९-२२ । सीमन्तिनी आख्यायिका (प. श्रीपरमेश्वरझा वै. के. कृत) पूर्वप्रकाशित ३६म उद्गारान्तर-

18. शालिहोत्रमुनि प्रणीत अश्वविद्या-ज्ञाता ।

19. सप्तधा स्रावक स्थान पालकाप्य ग्रन्थमेँ-'करात् कटाभ्यां मेढ्राच्च नेत्राभ्यांच मदस्रुतिः'

कर अर्थात् नासिका-रन्ध्र-द्वय, तेँ सात संख्याक पूर्ति भेल । प्रायः छतिमनक फूलक गन्ध लगने हाथीकेँ मदस्रव होइ छैक । आओरो हाथिक विषय जनिका जानबाक होइन्हि से उक्त ग्रन्थ अर्थात् पालकाप्यमुनि प्रणीत हस्त्यायुर्वेद देखथि ।

20. गम्भीरवेदी गजक लक्षण राजपुत्रीयमेँ-

'त्वग् भेदाच्छोणित स्रावान्मांसस्य च्यवनादपि ।
आत्मानं यो न जानाति तस्य गम्भीरवेदिता ।।'

तथा मृगचर्मीयमेँ-

चिरकालेन यो वेत्ति शिक्षां परिचितामपि ।
गम्भीरवेदी विज्ञेयः स गजो गजवेदिभिः ।।'

21. 'अश्ववार' एहि संस्कृत शब्दक अपभ्रंश 'असवार' वा 'सवार' शब्द थीक । हाथी वा ऊँटक चढ़निहारमेँ सवार शब्दक पयोग गौण थीक, यथा 'सजमनिक भटबड़'; एहि ठाम भटबड़ शब्द ।

22. एहि हल्लाक यथार्थ अनुभव ओहि व्यक्तिकेँ छैन्ह जनिका चारि-पाँच वर्षक भीतरमेँ 'सौराठ सभा' जयबाक सौभाग्य भेल होयतैन्ह । अर्थात् थोड़ेक दिनसँ उक्त सभामेँ ई चालि भेल अछि जे गाछीक पच्छिम-उत्तर कोन दिश केओ लंठ एक बेरि थपड़ी पाड़ि देलक वा दौड़िये चलल; बस संपूर्ण गाछीमेँ हुल्लड़ भय पड़ायन लगैत अछि । कतेक लोकक पाग, दोपट्टा, छड़ी, छत्ता, जुत्ता हेड़ाइत अछि तकर ठेकान नहि । मगहिया वर लोकनि ओही दिश कात दबिकेँ बैसै जाइत छथि, तनिक तँ किछु रुपैयो-पैसा गोलमाल होयबाक संभव । वास्तवमेँ एहि फसादक जड़ि एही अन्यदेशी सभक रुपैया गनबकेँ बूझैक चाही । पहिलेँ एना कहियो नहि होइत छल । जाही दिनसँ एहि लोक सभक विशेष प्रवेश, ताही दिनसँ सभ दृश्य देखलाँ जाइछ ।

Scanned by CamScanner

एहि वर्ष तँ आओरो विलक्षण तमाशा, अर्थात् सन् १३१८ साल गत आषाढ़ सभामेँ एक दिन कतहु दुइटा छंठा घोड़ाकेँ लड़ाइ भेलैक । ताहिलय जे पड़ायन लागल, तकर कतेक वर्णन लिखू । ककरो कान-कपार फूटल, कतेक इशखी लोकनि दछिनवारी पोखरिक भीँड़पर पीपरक सीरपर बैसल रहथि से ओढनाय-ओढनाय केँ चितङ भटका खसलाह । कतेको कालमेँ हुल्लड़ निवृत भेल । उत्तर बुझी तँ किछु नहिँ । बुढ़ियाक फूसि । हा ईश्वर ! कहिया धरि हमरा मैथिलकेँ स्थिरता ओ धीरता देब । हमरा लिखबामेँ लज्जा होइत अछि जे कतेको लालबुझक्कड़ लोकनि तँ एहि दुर्व्यवसाय सभकेँ मैथिलक उन्नति ओ कीर्तिपताका मानैत छथि । धन्य विवेक !

[*ई टिप्पणी लेखकक नहि, मिथिलामोदक (सं.टी.) थिक । कारण पूर्ववर्त्ती किस्त (V) भाद्र १३१७ सालमे छपल । ओकर अन्तिम वाक्य अपूर्ण अछि । ओकर क्रिया 'भेल ।' सँ एहि किस्त (VI)क आरम्भ होइछ ।* **–सम्पादक**]

23. संस्कृत 'जन्यवास' शब्दक अपभ्रंश जनवासा थीक, 'जन्यानां वासो जनवासः' । जन्य जे वरियाती, तनिक डेरा । 'जन्याः स्निग्धाः वरस्य ये', ई अमरमेँ लिखैत छथि । गोसाञिजी 'भाषा रामायण' बालकाण्डमेँ एहि शब्दक प्रयोग कयलेँ छथि–

चले जहाँ दशरथ जनवासे ।
मनहु सरोवर तके पियासे ॥

24. पाठक वर्गकेँ सावधान रहैक चाही जे यदि ककरहु आइ-काल्हिक राजा, महाराज वा पैघ जमीन्दारक वरियातीमेँ जयबाक अवसर होइन्हि तँ एक-दुइ साँझक योग्य सीधा-संमर अपन संग लेने जाथि । कारण जे हिनका लोकनिमेँ जे पाँच सय वरियात लय जाइत छथि से पाँच हजारक फिरिस्त दैत छथीन्ह । थोड़ लोकक नाम लिखयबामेँ अप्रतिष्ठा मानैत छथि । परन्तु कन्याप्रदकेँ ओतेक रसद देबाक विचार नहि, तेँ खटपट होइ छैन्ह । ताहिमेँ यदि दैवात् मिलान भय गेल तखन तँ पौ-बारह । संगमेँ गाड़ी छकड़ा रहय तँ लादिकेँ किच्छु घरहु लाबी । और यदि से नहि तखन ककरहु भूखेँ पेटमेँ बगहाओ लगैन्ह वा छटपटायकेँ मरियो जाथि, तँ घूरिकेँ केओ तकैन्ह नहि । अधिक ठाम इयेह संभव ।

25. गृह्यसंग्रहमेँ अग्निक नाम सभ छैन्ह-'विवाहे योजकः स्मृतः' । अर्थात् स्त्री-पुरुषक योग करौनिहार ।

VII. मिथिलामोद, वर्ष-१३, उद्गार-१४९, फाल्गुन, सन् १३२६ साल, शाके १८४०, (फरवरी १९१९) मिथिलामोदक पृष्ठ संख्या-१३-१६ । म.म.श्री परमेश्वरझा वै. के. क प्रेषित सीमन्तिनी आख्यायिका, पूर्वप्रकाशित ५१ उद्गारानन्तर–

26. गुरुदासपुर, पञ्जाबमेँ एक स्थान अछि जतयक माटिक वस्तु बहुत उत्तम होइत छैक ।

27. जे आन व्यक्तिकेँ श्रवणगोचर नहि हो ।

28. हम ई लेख पाठक वर्गक हास्यार्थ वा विनोदार्थ नहि लिखल अछि । किन्तु यथार्थमेँ एखनहु धरि कतेक प्राचीन पण्डितजी लोकनिक हस्तलिखित महाभारत, हरिवंशादि पोथी देखू तँ १०१क स्थानमेँ १००१ अङ्क लिखल भेटत । पाठक वर्गसँ निवेदन जे नेना सबकेँ अक्षरारम्भोत्तर सिधाइ कखहराक सङ्ग-सङ्ग एकाइ-दोनाइयो पढ़ाबथि ओ लिखाबथि । कतेको लोक बुझैत छथि जे हम अपन बालककेँ व्याकरण वा न्याय पढ़यब तखन अङ्क-विद्याक प्रयोजने की ? परन्तु जानैक थिक जे कोनो व्यावहारिक विषय पड़ने एहने कोलाहलक संभव । यदि ककरहुसँ पैँच लेथि और 'इन्दुलतलब' चिट्ठीमेँ १००१ पर हस्ताक्षर करथि तथा महाजनोँ महाशय नीक धर्मात्मा 'जमीन्दार' रहथि तँ एकहि बेरिक पैँच एक-सय एकक स्थानमेँ एक-हजार-एक कयने सर्वस्वान्तहिक संभव ।

Scanned by CamScanner

VIII. मिथिलामोद, वर्ष-१३, उद्गार-१५०-५१, चैत-वैशाख, सन् १३२६ साल, शाके १८४०, (मार्च-अप्रैल, १९१९), मिथिलामोदक पृष्ठसंख्या-५-८ । सीमन्तिनी आख्यायिका गतोद्गारसँ आगाँ-

29. मिथिलामोदक टिप्पणी:-'सं. टि.-प्रिय पाठक गण ! सीमन्तिनीक समयमेँ गजलक प्रचार छल वा नहि, किन्तु कथाक रोचकतासँ आनो कैकटा एहन भेटत से क्षन्तव्य ।'

30. संस्कृतमेँ तबलांक नाम पुष्कर थिक, यथा-रघुवंश, अग्निवर्णशृङ्गार २१ सर्गमेँ श्लोक-

'स स्वयं प्रहत पुष्करः कृती लोलमाल्यवलयोऽहरन्मनः ।
नर्त्तकीरभिनयातिलङ्घिनीः पार्श्ववर्त्तिषु गुरुष्वलज्जयत् ।। १ ।।'

31. सारङ्गी संस्कृत नाम थिक । परन्तु केओ-केओ स्वराङ्गी कहैत छथि ।

32. पाठक वर्गकमेँसँ यदि ककरहु एहि 'चालिक' 'मोफिल'मेँ बैसैक अवसर भेल होयतन्हि तँ जनैत होयताह जे आइ-काल्हि 'बड़ा आदमी' लोकनिक दरबारमेँ कोन 'तरह'क अपभ्रंश ओ 'अश्लील' गारि गाओल जाइत अछि । गारि तँ ओकर नाममात्र थिकैक अर्थ सङ्गिताम, ताहूमेँ बीजाक्षरे । यथा-

'समधी..........ई तुमने

मिठाई खाई हमने' इत्यादि ।

चमत्कार तँ ई जे यदि अन्यतर समधिक दिशि वेश्या नहि रहैन्हि ओ कत्थकक द्वारा गारि गबाबथु तँ तरुवारि चलि जयबाक संभव । कारण जे दोसर समधि कहैत छथिन्हि जे- "हमको मर्द से बे इज्जत करबाया" ओ वेह शब्द सब यदि रण्डीक मुहसँ बहराय तँ 'मुबारक' । ई कुरीति सर्वथा त्याज्य ।

33. भाणक प्रचार पूर्वहु कालमेँ छल । परन्तु साम्प्रतिक लखनौ प्रान्तक रीतिसँ बहुत भिन्न रीति छल जकर प्रमाणभूत दशरूपान्तर्गत भाणक ग्रन्थ संस्कृतमेँ अनेक अछि । ओकर अनुकरण आइ-काल्हिक 'नक्काल'सब करैत छथि ।

34. मिथिलामोदक टिप्पणी:- 'सं. टि.- ई विषय सब जेहन दँतनिपोड़ीमेँ भेटत ओहन वीभत्स अन्य कोनहुमेँ प्राय: नहि ।'

IX. मिथिलामोद, वर्ष-१६ उद्गार-१८०-८३, अगहन-फागुन, सन् १३३० साल, शाके १८४४, (नवम्बर-फरवरी, १९२२-२३); मिथिलामोदक पृष्ठ संख्या-१२-१६ । सीमन्तिनी आख्यायिका (१५०-१५१ उद्गारानन्तर), ले.म.म. पं.श्रीपरमेश्वरझा ।

35. वैद्यक भावप्रकाशमेँ -

आहारं षड्विधं चूष्यं पेयं लेह्यं तथैव च ।
भोज्यं भक्ष्यं तथा चर्व्यं गुरु वि.... अथोत्तरम् ।।

चूष्य-कुसिआर, दाडिम आदि । पेय-शर्वत आदि । लेह्य-चटनी । भोज्य-भात, दालि आदि । भक्ष्य-लडु, मुङ्गबा आदि । चर्व्य-चूड़ा बूट आदि ।

36. ई शब्द 'औचिती' वा 'उचिती 'शब्दक अपभ्रंश थिक अर्थात् विनती करबाक समयमेँ उचित वाक्य । भोजनक समयमेँ विना गीतक 'उछती' पुरुषहु सबहिकेँ परस्पर होइत छन्हि ।

37. 'जोग' जकरा लोक योग-टोन कहैत छथि । मिथिलाक स्त्रीवर्गमेँ जमाइक वशीकरणार्थ ई गीत गाओल जाइत अछि ।

Scanned by CamScanner

38. पाठक वर्गमेँ यदि क्यो विवाहादि अवसरमेँ मारवाड़ देशक स्त्री वर्गक 'सीठन' गान सुनने होयताह तनिका एहि डहकनक अनुभव होयतन्हि ।

39. सुरतगृहवर्णन कलाविलासमे -

रम्यं पक्षिरवानन्दं नवचित्र कुलाकुलम् ।
स्रक्ताम्बूलार्द्धशयनं गृहं सुरत सुन्दरम् ॥

40. राजस्थानमे अद्यापि अछि जे समान राजा-महाराजक कन्यासँ मिलन समयमे राजा-महाराज सबहि किञ्चित् आगाँ बढ़ि कय स्वागत करैत छथि, जाहि स्वागत वा (Reception)कें 'पेशवार' कहैत छथि ।

41. कामसूत्रमे वात्स्यायन-"कन्या तु प्रथम समागमे स्विन्नाङ्गुलिः खिन्नमुखी भवति, पुरुषस्तु रोमाञ्चितो भवतीति" ।

ई सात्त्विक भाव थिक ।

"स्तम्भः स्वेदोऽथ रोमाञ्चः स्वरभङ्गोऽथ वेपथुः ।
वैवर्ण्यमश्रु प्रलय इत्यष्टौ सात्त्विका स्मृताः ॥"

42 मिथिलादेश व्यवहारानुसारि- कौतुकागार (कोबरघर)क समाचार-वर्णन महाकवि कालिदास कुमारसम्भव काव्यक सप्तम सर्गान्तमे कैने छथि-

"अथ विबुधगणांस्तामिन्दु मौलिर्विसृज्य क्षितिधरपतिकन्यामाददानः करेण ।
कनककलशयुक्तं भक्ति शोभासनाथं क्षितिविरचितशय्यं कौतुकागारमागात् ॥ १ ॥
नवपरिणयलज्जाभूषणां तत्र गौरीं वदनमपहरन्तीं तत्कृतोत्क्षेपमीशः ।
अपि शयनसखीभ्यो दत्तवाचं कथंचित् प्रमथमुखविकारैर्हासयामास गूढम् ॥ २ ॥

43. कामशास्त्रमे -

अथ परिणय रात्रौ प्रक्रमेनैव किञ्चित् तिसृषु हि रजनीषु स्तब्धता तां दुनोति ।
त्रिदिनमिह न भिन्द्याद् ब्रह्मचर्यं न चास्या हृदयमननुरुध्य स्वेच्छया नर्म कुर्यात् ॥ १ ॥ (i)

कन्यासम्प्रयुक्तकाधिकरणमे कामसूत्रकर्त्ता वात्स्यायन लिखैत छथि-

सवर्णायामनन्य पूर्वायां शास्त्रतोऽधिगतायां धर्मोऽर्थः

पुत्राः सम्बन्धः पक्षवृद्धिरनुपस्कृता रतिश्च ॥ १ ॥ (ii)

तस्मिन्नेतां निशि विजने मृदुभिरुपक्रमेत ॥ २ ॥ (iii)

कुसुम-सधर्माणो हि योषितः सुकुमारोपक्रमाः तास्त्वनधिगत-विश्वासैः प्रसभमुपक्रम्यमाणाः सम्प्रयोगद्वेषिण्यो भवन्ति । तस्मात्साम्नैवोपचरेत् ॥ ३ ॥ (iv)

कामभाष्यमे लिखैत छथि जे हठात् रहस्य कार्यमे प्रवृत्त भेलासँ प्रथमसङ्गता स्त्रीकें विद्वेषजकाँ उत्पन्न भै जाइत छैक, बहुत दिन पर्यन्त, ककरहु-ककरहु आजन्म ओहि पुरुषसँ रहि जाइत छैक जाहि

Scanned by CamScanner

विद्वेषकें मिथिलामें स्त्रीवर्ग (प्रभाछय (प्रभाक्षय) अथवा झरकबाहि) कहैत छथि । कामशास्त्रमें गोनर्द लिखैत छथि–

हासेन मधुना नर्म वचसा लज्जितां प्रियाम् ।
विलुप्तलज्जां कुर्वीत निपुणैश्च सखीजनैः ।। इत्यादि ।

टिप्पणी संख्या 43मे प्रदत्त उद्धरणक स्रोत ओ अर्थः-

(i) 'रतिरहस्य' ग्रन्थमे कोकाचार्यक मतक रूपमे ई श्लोक उद्धृत–

'नायकके चाही जे विवाहक पहिल रातिमे कन्याकें किछु नहि कहथि । नियमानुसार तीन राति ब्रह्मचर्य तँ रखबे करथि, मुदा हुनक स्तब्धता (चुप रहब) ओहि कन्याकें कष्ट पहुँचबैत छैक आ ओ हुनका गमार वा नपुंसक बुझि सकैछ तें दोसर रातिसँ ओकरासँ हास-परिहास करथि ।'

(ii) कामसूत्रक 'कन्या सम्प्रयुक्तकाधिकरण' नामक तृतीय अधिकरणक पहिल अध्यायक ई पहिल सूत्र थिक–

'एहन सवर्ण स्त्री जे पूर्वमे अनकासँ उपभुक्त नहि हो, तकरा शास्त्रानुसार ग्रहण कयलासँ धर्म, अर्थ, पुत्र, सम्बन्ध कुलक वृद्धि एवं निर्दुष्ट सुख होइत छैक ।

(iii) कामसूत्रक तृतीय अधिकरणक दोसर अध्यायक पहिल सूत्र थिक (पूर्व सूत्र निर्दिष्ट विवाहक बाद संयमक समय बितलापर) मंगल 'स्नानादि सम्पन्न भऽ गेलापर ओहि कन्याकें वर रातिमे एकान्तमे कोमल वाणी एवं वस्तु सबसँ सत्कार करय ।'

(iv) कामसूत्रक तृतीय अधिकरण, द्वितीय अध्यायक छठम सूत्र थिक– 'नारी तँ फूल सन स्वभाववाली होइत छथि, कोमल व्यवहारवाली ओ लोकनि बिनु विश्वास करौनहि हठात् अपनहुँ वर द्वारा समागम कयलापर समागमहिक विद्वेषिणी भऽ जाइत छथि तें सान्त्वनापूर्वके हुनक समागम करबाक चाही ।'

एही सूत्रक भाष्यमे एहि टिप्पणीक श्लोक लिखल गेल अछि । आख्यायिकाकार सेहो 43 संख्यक टिप्पणीक अन्तमे ओकरहि व्याख्या कयलनि अछि ।

●

Scanned by CamScanner

परिशिष्ट

Scanned by CamScanner

परिशिष्ट-एक

डा. श्रीरामदेवझाक साहित्य-संसार

संकलन- डा.श्रीमती कविता कुमारी

(क) प्रकाशित पोथी

कथा संग्रह :

1. एक खीरा : तीन फाँक - 1965
2. मनुक सन्तान - 1966
3. धरती माता - 1985
4. आजी माँ - 2009

उपन्यास :

5. इजोती रानी (बाल उपन्यास) - 1967
6. अंगरेजीफूलक चिट्ठी - 2002 (मिथिला मिहिरमे 1960-61मे धारावाहिक प्रकाशित)
7. बहिनाक विरोग - 2002 (मिथिला मिहिरमे 1961-62मे धारावाहिक प्रकाशित)
8. रामजोड़ी कागतक पाँखिपर - 2002 (मिथिला मिहिरमे 1963मे धारावाहिक प्रकाशित)

नाटक :

9. पसिझैत पाथर (नाट्य संग्रह) - 1989

अनुसन्धान-आलोचना :

10. शकुन्तला नाटक : एक अध्ययन - 1959
11. पार्वती परिणय नाटक : एक अध्ययन - 1960
12. मैथिली शैव साहित्य - 1979
13. उमापति - 1980
14. मैथिली शैव साहित्यक भूमिका - 1982
15. जगत्प्रकाशमल्ल (विनिबन्ध) - 1990
16. जगज्ज्योतिर्मल्ल (विनिबन्ध) - 1995
17. जनार्दनझा जनसीदन (विनिबन्ध) - 1998
18. मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य - 2002
19. सुभद्रझा (विनिबन्ध) - 2010

Scanned by CamScanner

सम्पादन :

20. नन्दीपति गीतिमाला - 1965
21. रामविजय नाट ओ वर गीत - 1967
22. हरगौरी विवाह नाटक - 1970
23. नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत - 1972
24. कुञ्जविहार नाटक - 1976
25. मैथिली प्राचीन गीतावली - 1977
26. कविवर जीवनझा रचनावली - 1980
27. मैथिली भाषा सरिता (भाग चारि) - 1984
28. दशावतारनृत्यम् ओ षोडशगीतम् - 1988
29. मैथिली प्राचीन गीत मञ्जरी - 1991
30. दुर्गाचरित नाटक (म.म.परमेश्वरझा) - 1996
31. कुमार गंगानन्दसिंह रचित मनुष्यक मोल - 1998 (सन्धान-2 मे प्रकाशित)
32. रमेश्वरचरित मिथिला रामायण - 1999
33. विद्यापति गीत संचय - 1999
34. मैथिली कथा : शताब्दी संचय - 2010
35. मुदित कुवलयाश्व नाटक - 2011
36. म.म. परमेश्वरझा कृत सीमन्तिनी-आख्यायिका - 2011

अनुवाद :

37. पृथ्वी परिचय (भाग चारि) - 1988
38. जीव विज्ञान (भाग एक) - 1988
39. वाणभट्ट (अंग्रेजी मोनोग्राफ) - 1989
40. सगाइ - 1992 (उर्दूक 'इक चादर मैली सी'क अनुवाद)

(ख) कथा

1.	मुदा आब की ?	मिथिला मिहिर (दरभंगा)	25 जुलाइ 1953
2.	दू ठोप नोर	मिथिला मिहिर (दरभंगा)	15 अगस्त 1953
3.	नीच-ऊँच	वैदेही	अप्रैल 1954
4.	तरुआरि ओ लेखनी	वैदेही	सितम्बर 1954
5.	विजित हिमालय	मिथिला दर्शन	सितम्बर 1954
6.	माय भूख लागल	निर्माण	4 सितम्बर 1954

Scanned by CamScanner

7.	भैया	वैदेही	मइ 1956
8.	मरहन्ना	विदेह	अप्रैल 1957
9.	पहुना	वैदेही	अगस्त 1957
10.	नकली कंनियाँ : नकली आदमी	वैदेही	सितम्बर 1957
11.	पथ पाँतर	मिथिला दर्शन	अगस्त 1956
12.	दोहरी दीप	इजोत	होली अंक 1960
13.	दीपदान	वैदेही	अप्रैल 1960
14.	बटगाछक छाहरि	अभिव्यञ्जना	मार्च 1960
15.	एक खीरा : तीन फाँक	मिथिला दर्शन	सितम्बर 1960
16.	दुतिया चान : तुलसी पात	मिथिला दर्शन	सितम्बर, स्पेशल नं. 1960
17.	शीतलबाती	मिथिला दर्शन	दिसम्बर-जनवरी 1961
18.	भसिआइत दीअर	मिथिला दर्शन	फरवरी 1961
19.	एकटा रहय उतमी	मिथिला मिहिर	9 सितम्बर 1962
20.	मनुक सन्तान	अभियान	जून 1963
21.	पियासल ठोर	मिथिला मिहिर	6 अप्रैल 1964
22.	नारिकेर	मिथिला मिहिर	29 नवम्बर 1964
23.	परमिलिया	मिथिला मिहिर	4 अप्रैल 1965
24.	परती	मिथिला मिहिर	11 सितम्बर, 1966
25.	धरती माता	मिथिला मिहिर	15 सितम्बर 1968
26.	मनुक्ख	मिथिला मिहिर	24 सितम्बर 1969
27.	चोर	मिथिला मिहिर	2 फरवरी 1970
28.	वातापि राक्षस पेटमे पचि गेल	बटुक	अप्रैल 1963
29.	बसातक दाम	मिथिला मिहिर	5 मइ 1974
30.	उद्घाटन	मिथिला मिहिर	15 सितम्बर 1974
31.	जलक तलपर लिखल नाम	मिथिला मिहिर	27 अप्रैल 1975
32.	हत्थाजोड़ी	मिथिला मिहिर	11 जनवरी 1976
33.	पराजयक मुद्रा	मिथिला मिहिर	11 सितम्बर 1977
34.	बोतल	मिथिला मिहिर	8 अक्टूबर 1978
35.	मंगली मायक बकरी	कथा दिशा	सितम्बर 1980
36.	मुट्ठीमे बन्द	चेतना	अक्टूबर 1992
37.	फड़िच्छ भऽ गेल छलै	मैथिली अकादमी पत्रिका	नवम्बर-दिसम्बर 1992
38.	ठमकल घड़ी	भाखा	मइ-जून 1989
39.	शहीद चौक	कथादिशा	महाविशेषांक 1997

Scanned by CamScanner

40.	परस्पर	अंतिका	जनवरी-मार्च 1999
41.	ओकर सेहन्ता	अंतिका	अक्टूबर-दिसम्बर 2000
42.	जेठांस	प्रवासी (इलाहाबाद)	
43.	उपकारक बदला	प्रवासी (इलाहाबाद)	जून-सितम्बर 1997
44.	पुत्र मोह	रचना	
45.	आजी माँ	रचना	अक्टूबर-दिसम्बर 2001
46.	ढहैत पुरान घर	रचना	जुलाइ-सितम्बर 2002
47.	एक निमूधनक आत्मकथा	रचना	जनवरी-मार्च 2003
48.	कहाँ छेँ रे नुनुआ	भारती मंडन-10	2004
49.	टीस	जखन तखन-1	मार्च 2005
50.	हलुमाना हौरन	जखन तखन	अक्टूबर-दिसम्बर 2006
51.	भितरिया धधरा	गल्पसुधा 1964 एवं मनुक सन्तानमे संकलित	
52.	मकुआ छड़ी	आजी माँ 2009मे संकलित	
53.	गुलंजर	आजी माँ 2009मे संकलित	

(ग). एकांकी एवं नाटक

1.	पिपासा	मिथिला मिहिर	11 सितम्बर 1960
2.	दुलारक भूख	वैदेही	जुलाइ-अगस्त 1961
3.	मनुष्यक देवता	वैदेही	जून 1962
4.	आदर्श कुटुम्ब	वैदेही	अक्टूबर 1962
5.	पसिझैत पाथर	आकाशवाणीसँ प्रसारित एवं पसिझैत पाथर संग्रह (1989)मे संकलित	
6.	लोचन धाय फेदाएल	आकाशवाणीसँ प्रसारित एवं पसिझैत पाथर संग्रह (1989)मे संकलित	
7.	रहऽ दियौ गंगाकेँ निर्मल	आकाशवाणीसँ प्रसारित एवं पसिझैत पाथर संग्रह (1989)मे संकलित	
8.	चाननक बसात	आकाशवाणीसँ प्रसारित एवं पसिझैत पाथर संग्रह (1989)मे संकलित	
9.	सत्य हरिश्चन्द्र	आकाशवाणी दरभंगासँ प्रसारित एवं पक्षधरक अंक-9 (अक्टूबर 2010) तथा अंक- 11 (नवम्बर 2011)मे धारावाही प्रकाशित	

(घ). ललित निबन्ध

1.	कचनारक फूल भकरार भेलै हे	विदेह (सी.एम.कॉलेज पत्रिका)	1959
2.	उतिमा खिरलि पताल	मिथिला मिहिर	13 नवम्बर 1960
3.	अँचरा शीतल बसात	मिथिला मिहिर	27 नवम्बर 1960

Scanned by CamScanner

4.	काँचहि बाँसक एहो नव कोबर	मिथिला मिहिर	18 दिसम्बर 1960
5.	प्रकृतिक दुलरैतिन बेटी नागवल्ली	मिथिला मिहिर	15 जनवरी 1961
6.	धूर्त्तराज गोनूझा	मिथिला मिहिर	29 जनवरी 1961
7.	नील तीसी फूल	मिथिला मिहिर	19 फरवरी 1961
8.	तुइल महु डारि	मिथिला मिहिर	7 मइ 1961
9.	रंग रस मातल फगुआ	मिथिला मिहिर	26 फरवरी 1961
10.	इतिहास, बबूर आ संगमरमरक मूर्त्ति	मिथिला मिहिर	29 सितम्बर 1963
11.	देवतात्मा हिमालय	निकष	1965
12.	भारत राष्ट्र ओ राष्ट्र धर्म	गद्यश्री	1969
13.	अस्तित्वक संघर्ष	स्वाती	मइ-जुलाइ 1985
14.	संकल्प ओ एकाग्रता	स्वाती	नवम्बर 1984
15.	पैंच-उधार	अर्पण (विद्यापति सेवा संस्थान)	1984
16.	घोषन्त विद्या लपटन्त जोर	मैथिली भाषा सरिता (भाग-4)	1984
17.	पढ़ब-गूनब	मैथिली भाषा सरिता (भाग-5)	1985
18.	नीति आचारक बात	अक्षरा (दरभंगा) 2003	
19.	बूढ़ियाक फूसि	विद्यापति टाइम्स	16-31 अक्टूबर 2009
20.	सद्गुरु	विद्यापति टाइम्स	1-15 नवम्बर 2009
21.	सन्तोष	विद्यापति टाइम्स	1-15 जनवरी 2010
22.	छोट-छोट बात	विद्यापति टाइम्स	16-30 अप्रैल 2010
23.	पिशुनवृत्ति	विद्यापति टाइम्स	1-15 मइ 2010
24.	क्रोधः सुदुर्जयः शत्र	विद्यापति टाइम्स	16-30 सितम्बर 2010

(ङ). कविता

1.	भ्रान्त कविसँ	वैदेही	नवम्बर 1956
2.	धुपबत्ती	नवजीवन	(बाबूबरही), अगस्त 1957
3.	विवशता	पल्लव	सितम्बर 1957
4.	गीत	पल्लव	फरवरी 1958
5.	अगिलेस	मिथिला दर्शन	जनवरी 1958
6.	की लऽ चरण पखारत	मिथिला मिहिर	9 अप्रैल 1961
7.	साँझुक कथा	मिथिला मिहिर	22 अक्टूबर 1961
8.	आकुल प्राण पियासल	मिथिला मिहिर	11 फरवरी 1962
9.	गीत	मिथिला मिहिर	13 मार्च 1962

Scanned by CamScanner

10.	प्रथम दिवस ई आइ आषाढ़क	मिथिला मिहिर	1 जुलाइ 1962
11.	परदेशीक शरद	मिथिला मिहिर	4 नवम्बर 1962
12.	नवयुगकेर चुमान	मिथिला मिहिर	17 फरवरी 1963
13.	तोहर अलक अलि	मिथिला मिहिर	29 मार्च 1964
14.	बुनकऽ लागल मेघ	मिथिला मिहिर	26 जुलाइ 1964
15.	भारत जननी	मिथिला मिहिर	16 अगस्त 1963
16.	रौद	मिथिला मिहिर	20 जून 1965
17.	गीत	मिथिला मिहिर	9 जनवरी 1966
18.	जागत काली	मिथिला मिहिर	9 अप्रैल 1967
19.	प्रथम सन्तान	मिथिला मिहिर	11 फरवरी 1968
20.	डूबल पैघ जहाज	मिथिला मिहिर	12 अगस्त 1973
21.	स्वप्नमीन	मिथिला मिहिर	9 जून 1974
22.	पहिल काज	मिथिला मिहिर	4 अगस्त 1974
23.	विज्ञानक पोथीमे	मिथिला मिहिर	30 जनवरी 1977
24.	कोपड़	भाखा	नवम्बर 1988
25.	भविष्यत् पुराणमे	भाखा	
26.	गीत-1	पटना कॉलेज पत्रिका,	1959
27.	गीत-2	पटना कॉलेज पत्रिका,	1959
28.	नचारी	गंगाजल, स. श्यामसुन्दर	1960
29.	गाम हमर	पल्लव (नेपाल)मे	1994
30.	ले बलैया	बाढ़ि : दू हजार चारि,	2004
31.	होइत रहत एहिना	बाढ़ि : दू हजार चारि,	2004
32.	बलिदानी केर धारी	हन्त अयोध्या काण्ड,	1991
33.	एकटा त्रासदी	मैथिली भूकम्प काव्य,	1989
34.	हमर अहाँ	पल्लव (हवाइ पत्रिका) नेपाल	
35.	उडाँत गेल्ह	समय साल,	2005
36.	कालतुला	मैथिलीक नवकविता, स.- रामकृष्णझा किसुन,	1971
37.	फोटोक निगटिव	मैथिलीक नवकविता, स.- रामकृष्णझा किसुन,	1971
38.	निर्जल मेघ	मैथिलीक नवकविता, स.- रामकृष्णझा किसुन,	1971
39.	मोन	मैथिलीक नवकविता, स.- रामकृष्णझा किसुन,	1971
40.	भविष्य	मैथिलीक नवकविता, स.- रामकृष्णझा किसुन,	1971
41.	जाड़ा एलै हऽ	कविता कलाप, स.- शंकरकुमारझा,	1976

Scanned by CamScanner

प्रशस्तिकाव्य-

42.	उपेन्द्रठाकुर मोहन	संकल्प-3, 1985
43.	सुरेन्द्रझा सुमन	संकल्प-3, 1985/सुमन साहित्य सौरभ
44.	तन्त्रनाथझा	संकल्प-3, 1985
45.	लक्ष्मणझा	संकल्प-3, 1985
46.	रामचतुर मल्लिक	संकल्प-3, 1985
47.	काञ्चीनाथझा 'किरण'	संकल्प-3, 1985
48.	जयनारायणझा 'विनीत'	संकल्प-3, 1985
49.	सुभद्रझा	संकल्प-3, 1985

(च). निबन्ध-समालोचना

1.	त्रिवेणीक तीन स्रोत	निर्माण (मधुप विशेषांक)	15 जनवरी 1955
2.	1954 ओ मैथिली	मिथिलादूत	फरवरी 1955
3.	प्रगतिवादी कवि भुवन	पल्लव	दिसम्बर 1957
4.	कहानीक चौबट्टीपर	पल्लव	मार्च 1958
5.	पं. श्रीबल्लभझा : साहित्यिक मूल्यांकन	पल्लव	फरवरी 1958
6.	बौद्धयुग ओ मैथिली लोकगीत	विदेह	अगस्त 1958
7.	मैथिली एकांकीक प्रवृत्ति	वैदेही (एकांकी विशेषांक)	दिसम्बर 1958
8.	नलिनीक पत्र	वैदेही	सितम्बर 1959
9.	विद्यापतिक कृतिमे लोकजीवन	मिथिला मिहिर	30 अक्टूबर 1960
10.	भनहि विद्यापति	मिथिला मिहिर	19 नवम्बर 1961
11.	शंकरदेव	मिथिला मिहिर	7 अप्रैल 1963
12.	मैथिली नाटकक विकास यात्रा	मिथिला मिहिर	16 जून 1963
13.	मध्ययुगीन रंगमंचक स्वरूप निर्धारण	मिथिला मिहिर	23 जून 1963
14.	मैथिली काव्यमे कृष्णजन्मक परम्परा	मिथिला मिहिर	11 अगस्त 1963
15.	उमापति उपाध्याय	मिथिला मिहिर	5 अप्रैल 1964
16.	भारतीय भाषातीर्थ वागीश जार्ज ग्रियर्सन	मिथिला मिहिर	26 अप्रैल 1964
17.	त्रिभाषा फार्मूलामे मिथिला ओ बिहार	मिथिला मिहिर	21 मार्च 1965
18.	सन्तकवि बलिरामदास	मिथिला मिहिर	18 जून 1965
19.	सन्त साहेबरामदासक कृष्णजन्म वर्णन	मिथिला मिहिर	22 अगस्त 1965
20.	शिलालेखमे मैथिली गीत	मिथिला मिहिर	7 नवम्बर 1968

Scanned by CamScanner

21.	हरगौरी विवाह नाटक	मिथिला मिहिर	30 अगस्त 1970
22.	विद्यापतिक गीतक एक नवीन स्रोत	मिथिला मिहिर	13 दिसम्बर 1970
23.	मिथिलाक एकटा अज्ञात राजवंश	मिथिला मिहिर	19 सितम्बर 1971
24.	राजा जयाजितामित्रमल्लक अभिलेख	मिथिला मिहिर	23 जुलाइ 1972
25.	मैथिली लोकसाहित्यमे कृष्णजनम	मिथिला मिहिर	26 अगस्त 1973
26.	विद्यापतिक हरगौरी पदावलीक वर्गीकरण	मिथिला मिहिर	19 नवम्बर 1972
27.	जगज्ज्योतिर्मल्लक मुदित कुवलयाश्व नाटक	मिथिला मिहिर	17 दिसम्बर 1972
28.	उड़ीसामे विद्यापतिक गीत	मिथिला मिहिर	4 नवम्बर 1973
29.	हरिचरितम्क रचयिता मैथिल नहि बंगाली	मिथिला मिहिर	30 दिसम्बर 1973
30.	वर्णरत्नाकरक अर्थानुसन्धान	मिथिला मिहिर	16 मार्च 1975
31.	साहित्यकारक एक पत्र : एकटा दस्तावेज	मिथिला मिहिर	6 अप्रैल 1975
32.	महाकवि मनबोधक कृति	मिथिला मिहिर	1 जून 1975
33.	उमापतिक मैथिलेशक अप्रामाणिकता	मिथिला मिहिर	28 दिसम्बर 1975
34.	कविवर जीवनझाक मैथिली सट्टक	मिथिला मिहिर	15 अगस्त 1976
35.	कवीश्वरक काव्यक मानसी पृष्ठभूमि	मिथिला मिहिर	28 अगस्त 1977
36.	उमापतिक आश्रयदाता एवं स्थितिकाल	मिथिला मिहिर	16 अक्टूबर 1977
37.	मिथिलाक लोकगाथा लोरिक	मिथिला मिहिर	11 जून 1978
38.	मकमानी राजसभामे मैथिली साहित्य	मिथिला मिहिर	4 दिसम्बर 1977
39.	स्वर्गीय राजेश्वरझा : एक श्रद्धांजलि	मिथिला मिहिर	29 अप्रैल 1979
40.	ललितेशबाबू	मिथिला मिहिर	29 मइ 1983
41.	प्राचीन ध्वजचिह्न	मिथिला मिहिर	31 अगस्त 1969
42.	मिथिला रिसर्च सोसाइटी ओ मुर्दाक्लब	मिथिला मिहिर	22 अक्टूबर 1969
43.	आकाशवाणीमे मैथिली	मिथिला मिहिर	29 मार्च 1970
44.	भारतीय शिक्षा ओ शारीरिक दण्ड	मिथिला मिहिर	4 जुलाइ 1971
45.	पुराणमे कथित मनुष्यक आयु	मिथिला मिहिर	16 जुलाइ 1972
46.	लोककवि अब्दुल रहमान	मिथिला मिहिर	1 जनवरी 1961
47.	13-14-15म शताब्दीमे मिथिलाक नगर-बजारक रूप	रचना संग्रह, वैदेही समिति	1963
48.	धीरेश्वराचार्यक बुद्धिप्रदीपम् ग्रन्थमे मैथिली पद	म.म. उमेशमिश्र मेमोरियल वोल्यूम (स्टडीज इन इण्डोलोजी, भाग-1)	1967
49.	सुकवि सदानन्दक पाँच गोट गीत	मिथिला भारती	1969
50.	परमहंस विष्णुपुरी ओ हुनक शिवगीत	मिथिला भारती	1970
51.	जगज्ज्योतिर्मल्ल ओ हुनक हरगौरी विवाह नाटक	विदेह	1969-70

Scanned by CamScanner

52.	विद्यापतिक हरगौरी पदावलीक अभिनव स्रोत ओ प्रामाणिकता	स्मारिका, चेतना समिति	1971
53.	चण्डीदासक पदावलीक अनभिज्ञात स्रोत	मैथिली प्रकाश	1974
54.	जगज्ज्योतिर्मल्लक दशावतार नृत्यम्	मैथिली प्रकाश	1977
55.	कवीश्वर चन्दाझाक वाताह्वान	ललित स्मृति ग्रन्थ	1977
56.	कविवर सीतारामझा	स्मृति सन्ध्या, मैथिली अकादमी	1980
57.	मैथिली गीतक पूर्वाञ्चलीय यात्रापथमे नेपालक स्थान	मैथिली अकादमी पत्रिका	अगस्त-जनवरी 1981-82
58.	मैथिलीमे गजल	रचना	जून 1984
59.	जगज्ज्योतिर्मल्लक कुञ्जविहार नाटक	मनीषा (कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय पत्रिका)	1976
60.	मैथिली नाटकक प्राचीन परम्परा	स्मारिका, विद्यापति स्मारक समिति, राँची,	1987
61.	कवीश्वर चन्दाझा ओ हुनक रामायण	कर्णामृत,	1985
62.	मिथिलामे रंगमंचक विकास	स्मारिका, अ.भा.मिथिला संघ, नई दिल्ली,	1984
63.	स्मृतिशेष हरिमोहन बाबू	रचना,	सितम्बर-अक्टूबर 1984
64.	बाबू भोलालालदास	आरम्भ,	मइ-जुलाइ 1983
65.	विद्यापतिक रचनामे सौन्दर्यबोध	स्मारिका, चेतना समिति	1983
66.	कीर्त्तिलता	स्मारिका, मिथिला सांस्कृतिक परिषद, बोकारो,	1983
67.	विद्यापतिक पदमे अलंकार योजना	स्मारिका मिथिला सांस्कृतिक परिषद, बोकारो,	1982
68.	पुरुष परीक्षा : नीति कथा	स्मारिका विद्यापति स्मारक समिति, राँची,	1982-83
69.	वैदिक युगक क्रान्तिपुरुष याज्ञवल्क्य	प्रवासी-6, हैदराबाद ताराकान्तझा अभिनन्दनग्रन्थ,	1997-98 एवं 2008
70.	मिथिलाक पुरातात्त्विक स्थल : बलिराजगढ़	स्मारिका, चेतना समिति, पटना,	1978
71.	दधीची साहित्यकार यदुनाथझा यदुवर	स्मारिका, मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, बोकारो,	1978
72.	मैथिलीमे लघुकथा	वैदेही,	मार्च 1966
73.	मैथिली साहित्यमे म.म. हरप्रसादशास्त्रीक योगदान	कोशी-कमला	जनवरी 1991
74.	कविशेखर ज्योतिरीश्वर	कोशी-कमला-2,	1993
75.	शरत्चन्द्र एवं मैथिली साहित्य	मिथि-मालिनी-4	2005
76.	आचार्य सुमनक शिव	सुमन साहित्य सौरभ	1994
77.	दत्तवतीक वस्तुकौशल	सुमन साहित्य सौरभ	1994
78.	पयस्विनी : सुरेन्द्रझा सुमन	शिखरिणी, चेतना समिति, पटना	1992
79.	प्रकृति साहित्यमे सुमनजीक काव्ययात्रा	अर्पण, विद्यापति सेवा संस्थान	2002
80.	मैथिली साहित्यमे मधुप	अर्पण, विद्यापति सेवा संस्थान मैथिली गद्य संग्रह, स.-नबोनाथझा	1988 2009

Scanned by CamScanner

81.	मधुपजीक काव्यमे शैव भावना	अमरकीर्त्ति कवि तोर, कलकत्ता, 1988
82.	मैथिली पत्र-पत्रिकाक सय वर्ष	मैथिली पत्र-पत्रिका सं.- मोहन भारद्वाज, सा. अ., 2007
83.	मैथिली दैनिक पत्र परम्परा ओ मिथिला समाद	मिथिला समाद, कोलकाता, 31 अगस्त 2008
84.	शनैः पर्वत लंघनम् (अमरक जीवनवृत्त)	अमर अर्चना, 2001
85.	मैथिलीक अभिभावक : डा. अमरनाथझा	स्मारिका, मिथिला सांस्कृतिक संगम, इलाहाबाद, 1997
86.	व्यंग्य सम्राट हरिमोहनझा	प्रवासी, इलाहाबाद
87.	मैथिलीक गौरवस्तम्भ डा. सुभद्रझा	मैथिलजन, जुलाइ 2000
88.	मातृभाषाक उन्नतिव्रती किरणजी	अर्पण, 1989
89.	मैथिली नाटकक विकास (विषय प्रवर्त्तन)	मैथिली नाटकक विकास, स.- देवकान्तझा स. अ., 2006
90.	मिथिलाक इतिहासक बन्द पन्नाकेँ फोलैत कीर्त्तिपताका	कविपति विद्यापति मतिमान, कोलकाता, 2000
91.	विद्यापति ओ नेपाल	कोशी-कमला, जनवरी-मार्च 1997
92.	विद्यापतिसँ सम्बद्ध स्थान आ गजरथपुरक सन्धान	मंजूषा, विद्यापति सेवा संस्थान, आनन्दपुर, 2009
93.	आधुनिक मैथिली साहित्य ओ विद्यापति	स्मारिका, हजारीबाग
94.	लिखनावली	विद्यापति वाङ्मय, स.- मुनीश्वरझा, 1968
95.	मैथिली लोकसाहित्य (विषय प्रवर्त्तन)	मैथिली लोकसाहित्य, स.- अमर, सा. अ., 2006
96.	एकैसम शताब्दीक सन्दर्भमे मैथिली लोकगाथा एवं मिथिलाक लोकदेवता	मिथिला संस्कृत शोध संस्थान जर्नल, दरभंगा मैथिली अकादमी पत्रिका, पटना
97.	मैथिली गद्यसाहित्यमे लघुकथा	मैथिली गद्य साहित्य, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना 1996
98.	स्वतन्त्रतासँ पूर्व मैथिली कथा साहित्य	आधुनिक मैथिली साहित्य, मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ता, 1963
99.	मैथिली भाषापर फारसीक प्रभाव	झारखण्डक सनेस, जमशेदपुर
100.	मैथिली : लोकभाषाक रूपमे	कोशी-कमला, अगस्त-अक्टूबर 1993
101.	अनुवाद ओ मैथिली	स्मारिका मिथिला सांस्कृतिक परिषद, बोकारो, 1995-96
102.	पसिझैत पाथर : हमर लेखनक सार्थकता	भंगिमा, पटना, 1992
103.	मैथिली नाटकक रंगमंच : अतीत, वर्त्तमान ओ भविष्य-	जमघट-3, अगस्त 2006/मैथिली नाटकक रंगमंच : भूत, वर्त्तमान ओ भविष्य, स.- चन्द्रनाथमिश्र अमर, सा.अ.,2008
104.	मैथिली काव्यमे शैव भावधारा	मैथिली काव्यक विकास, स.-सुरेश्वरझा, सा. अ., 1998
105.	मैथिली गद्य साहित्यक विकास	स्रोत अज्ञात
106.	मैथिली साहित्यमे महादेवी दुर्गा	चतुरंग, सितम्बर 1992
107.	मैथिली साहित्यक इतिहास-लेखन	भूमिजा-1, 2002

Scanned by CamScanner

108.	भारतीय ऋषि परम्पराक अद्यतन कड़ी स्वामी विवेकानन्द	स्मारिका, सरस्वती शिशुमन्दिर, पनिचोभ, दरभंगा, 2006-07
109.	विद्यापतिक समकालीन कवयित्री महारानी धीरमतीदेइ	मैथिली-2 (ल.ना.मि.वि. दरभंगाक मैथिली विभागक शोध पत्रिका) 2007
110.	साहेबरामदास गीतावली ओ हुनक कतिपय अनभिज्ञात-असंकलित गीत	मैथिली-4, 2009
111.	कवीश्वर चन्दाझाक काव्यमे शैवभावना	कवीश्वर स्मरणिका, स.- शंकरदेवझा, पिण्डारूच, दरभंगा, 2008
112.	मध्यकालीन मैथिली गद्य : नाटकेतर	मैथिली गद्यक विकास, स.- भोहन भारद्वाज, सा. अ, 1996 जिज्ञासा, वर्ष-1, अंक-1, जनवरी-जून 1995
113.	मैथिली कवि सम्मेलनक इतिहास	स्मारिका, चेतना समिति, पटना, 1998
114.	मैथिलीक आद्यकथा	मैथिली आलोचना, फरवरी 1992
115.	मैथिलीक आद्यकथा प्रसंग	मंडन निकेत, दिसम्बर 2005
116.	शेखरजी : एकटा अन्तरंग संस्मरण	आरम्भ, नवम्बर 1994
117.	शैलेन्द्राय नमोनमः	देसकोस, मइ 1994
118.	डा. सुभद्रझा : बहुत दूर-बहुत लऽग	मैथिली अकादमी पत्रिका, जुलाइ-दिसम्बर 2000
119.	ओ मोन रहताह : उपेन्द्र दोषी	आरम्भ, दिसम्बर 2002
120.	पं. देवनारायणझा : आन्दोलनी पुरुष	हालचाल अखनधरि, कातिक 2006
121.	हमर स्मृतिक दर्पणमे प्रो. हरिमोहनझा	मिथिला दर्पण, नवम्बर-दिसम्बर 2008
122.	मैथिल हितसाधन : मैथिली पत्रकारिताक प्रथम प्रकाश	मिथिला समाद, 31 अगस्त 2009
123.	सांस्कृतिक उन्नायक अयाची मिश्र	पक्षधर-1, मइ 2010
124.	पूर्वोत्तर भारतक भाषिक समरूपता	झारखण्डक सनेस, जनवरी-मार्च 2010
125.	विद्यापतिक गीत ओ लोकजीवन	विद्यापति टाइम्स, 1-15 नवम्बर 2006
126.	मैथिलीक शिव विषयक कीर्त्तनिया नाटक	पं. सहदेवझा स्मृति ग्रन्थ
127.	समाजक प्रति साहित्यकारक दायित्व	स्मारिका, झारखंड मैथिली मंच, राँची 2006
128.	मिथिलाक लोकगाथा : दीनाभद्री	स्वदेश, 25, 27, 30, एवं 31 अगस्त 1982, चारि अंकमे धारावाही प्रकाशित ।
129.	गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिशि	मिथिला समाद, 31 अगस्त 2010
130.	साहित्य ओ प्रतिबद्धता	पक्षधर-5, अगस्त 2010
131.	युगप्रवर्त्तक आचार्य सुरेन्द्रझा सुमन	विद्यापति टाइम्स, 1-15 नवम्बर 2010
132.	लक्ष्मीनाथ गोसाजिक शिवपदावली	परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी स्मृति ग्रन्थ, जमशेदपुर, 2010
133.	मैथिलीक भक्ति काव्य	मिथिलायतन- 2010, रायपुर (छत्तीसगढ़)
134.	विश्वकवि रवीन्द्रनाथठाकुर एवं मैथिली साहित्य	पक्षधर- 12-13, नवम्बर-दिसम्बर 2010

Scanned by CamScanner

135. मैथिलीमे नवकविता — पक्षधर- 12-13, नवम्बर-दिसम्बर 2010
136. प्रसंग राजकमलक : एकटा कथा रामकुमारी — पक्षधर- 16-17, फरवरी 2011
137. मैथिली वर्त्तनी : समस्या ओ समाधान — स्मारिका, मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, जमशेदपुर, 2010
138. म.म. परमेश्वर झा रचित, दुर्गा चरित नाटक — जिज्ञासा, वर्ष-2, अंक-3, जनवरी-जून 1996
139. मैथिली लोककथाक स्वरूप-विवचेन — जिज्ञासा, वर्ष-4, अंक-6, जनवरी-जून 1999

(छ) भूमिका लेखन

महाकाव्य :

1. भूमिका — मिथिलाभाषा रामायण, चन्दाझा, 1998
2. भूमिका — रमेश्वरचरित मिथिला रामायण, लालदास, 1999
3. पुरस्सर्ग — पाञ्चाली परिणय, 2004

कविता संग्रह :

4. राष्ट्रियताक रसावेश — ध्वंस पर्व, शिवकान्तपाठक, 1992
5. व्यंग्य वक्रोक्ति सन्धान — मोलायम पाथर, विद्याधरमिश्र, 1993
6. शुभाशंसा — काव्य-कलश, विमलेन्दुशेखरपाठक, 1994
7. समीक्षक — के मनुक्ख अछि, शिवशंकर मिश्र, 1999
8. शुभाशंसा — मधुगन्धी बसात, शेफालिकावर्मा, 2005
9. शुभाशंसा — फहरय विजय पताका, सत्यनारायणझा, 2005
10. पुरोवचन — आगत क्षण ले, नीरजारेणु, 2005 वि.स.
11. पुरोवचन — आँखिक सोझाँ, राजानन्दझा, 2003
12. शुभाशंसा — तृषितक फुलवारी, कालीकान्तझा, तृषित
13. पुरोवाक् — फेर हेतइ भोर, विद्याधरमिश्र, 2008
14. नवल विहानक आरोह — नवल विहान भऽ रहलै, बुचरू पासवान, 2009

गीत संग्रह :

15. राग-भास — गंगाजल, स.- श्यामसुन्दरझा 1960
16. गणकाव्य — अनमोल भजनावली, रमाकान्तशरण शास्त्री, 2004

लोकगाथा :

17. अभिमत — कारिख लोकगाथा, स.- महेन्द्रनारायण, 2002

उपन्यास

18. आमुख — अगिनवान, जीवकान्त, 1981
19. क्षितिजा — मानवकल्प, विद्यानाथझा 'विदित', 2008
20. शुभाशंसा — भारती, वीणा ठाकुर, 2009

Scanned by CamScanner

कथासंग्रह :

21. एही ठामसँ	आगि, मोम आ पाथर, मायानन्दमिश्र, 1960
22. पुरोवचन	ममतामयी, नीतीश्वरसिंह, 1991
23. भूमिका	कथा परिधि, राजारामप्रसाद, 1993
24. बढ़िते जाह बटोही	गह्वर, महेन्द्रनारायणराम, 2004
25. शुभाशंसा	कटैत पाँखि : हँसैत आँखि, रमाकान्तराय 'रमा', 2005
26. कथा-प्रसंगे	अग्नि परीक्षा, धीरेन्द्रनाथमिश्र, 2006
27. शुभाशंसा	पाँच बुन्द नोर, अमरनाथचौधरी, 2007
28. बालसबाल : हमरा सबकेँ की देलहुँ ?	पिलपिलहा गाछ, मुरलीधरझा, 2010
29. गामक कथा : कथाक गाम	हमरो संगे लेने चलू, अमरनाथचौधरी, 2010
30. नारी विमर्शक नारी लेखनी	समय-संकेत, कमलाचौधरी, 2011

नाटक :

31. आशीर्वचन	प्रेम विजय, श्रीशंकरझा, 2006
32. भूमिका	आन्दोलन, फूलचन्द्रझा 'प्रवीण', 2006

शोध ग्रन्थ :

33. शुभाशंसा	भारत विभूति विद्यापति, सीतारामझा, 1984
34. भूमिका	सामाजिक असन्तोष ओ मैथिली साहित्य, नीताझा, 1992
35. शुभकामना	योगानन्दझाक रचना-संसार, शचीन्द्रनाथ मिश्र, 2005
36. कवीश्वर-कविवरौ वन्दे	चन्दाझा ओ लालदासक रामायणक तुलनात्मक अध्ययन, मुरलीधरझा, 2006
37. पुरोवचन	आधुनिक मैथिली नाटकक वैशिष्ट्य ओ विकास, श्रीशंकरझा, 2007
38. तस्यै स्वधा	आचार्य सुरेन्द्रझा सुमनक गद्य गरिमा, सावित्रीझा, 2008
39. अथातो शब्द जिज्ञासा	मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली, योगानन्दझा, 2008
40. पुरोवचन	मैथिलीक वेशभूषा ओ प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली, कमलाचौधरी, 2008
41. अलपओ हास सुधारस बरिसओ	चन्द्रनाथमिश्र अमरक साहित्यमे हास्य-व्यंग्य, भाग्यनारायणझा, 2009
42. भूमिका	कवीश्वरक रामायणमे लोकोक्ति, लालपरीदेवी, 2009
43. मैथिली नाटक स्वदेशमे : परदेशमे	नेपालक मैथिली नाट्य-परम्परा, कुलानन्दझा, 2011
44. उपाति : लोकभाषिक शब्दावलीक	मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली, ललिताझा, 2011

निबन्ध :

45. भूमिका	लोकजीवन ओ लोकसाहित्य, योगानन्दझा, 1986
46. भूमिका	वैदेही पुष्पहार, सतीशचन्द्रझा, 1998
47. प्रस्तावकीय	ललिताञ्जलि, देवकान्तझा, 2000
48. प्रस्तावकीय	प्रबन्ध पीयूष, देवकान्तझा, 2000

Scanned by CamScanner

49. पुरोवचन — आलेख संचयन, योगानन्दझा, 2002

50. शुभाशंसा — इतिहास दर्पण, वीणाठाकुर, 2008

51. भूमिका — मैथिली लोकवृत्त : बिन्दु ओ विस्तार, महेन्द्रनारायणराम, 2008

52. गीतकारक गद्यगति — निधि-निबन्ध, चन्द्रमणिझा, 2008

53. समाजकेँ बाट देखबैत गप्प-सप्प — गप्प-सप्प, चतुराननमिश्र, 2009

भाषा विमर्श :

54. अभिमत — मैथिली मुहावरा एवं लोकोक्ति, रमानाथमिश्र मिहिर, 1962

55. उपसर्ग — मैथिली भाषा : सर्वेक्षण ओ विश्लेषण, अशोककुमारझा, 2007

अनुवाद :

50. शुभाशंसा — विद्यासागर चरित, अनु.- हरिश्चन्द्रझा, 2005

52. एकटा मौन साहित्य साधक — गीता माधुरी, अनु.- राधाकान्तदास, 2008

(ज). पत्र-पत्रिकाक सम्पादकीय

वैदेही (मासिक) दरभंगा

1. मैथिलीक गतिविधि	जनवरी 1964
2. प्रवासी ओ मैथिली	फरवरी 1964
3. विश्वविद्यालय तथा लोकसेवा आयोगमे मैथिली	मार्च 1964
4. साहित्यक सम्बन्धमे दायित्व	अप्रैल 1964
5. चन्दाझा जयन्ती	मइ 1964
6. दिवंगत नेहरू	जून 1964
7. (1) साहित्य अकादमी ओ मैथिली	जुलाइ 1964
(2) कालेजक छात्र ओ मैथिली	जुलाइ 1964
8. टेलिप्रिण्टर लाइन	अगस्त 1964
9. विद्यापति स्मृति टिकट	अगस्त 1964
10. मिथिला विश्वविद्यालय	सितम्बर 1964
11. कवीश्वर स्मृति अंक	अक्टूबर-दिसम्बर 1964
12. स्वर्गीय राजपण्डित बलदेवमिश्र	जनवरी 1965
13. (क) साहित्य अकादमीमे मैथिलीक स्वीकृति	फरवरी 1965
(ख) स्व. चन्द्रमोहनझा	फरवरी 1965
(ग) स्व. सरसकवि ईशनाथझा	फरवरी 1965
14. प्राथमिक कक्षामे मैथिलीक अध्यापन	मार्च 1965
15. प्राथमिक शिक्षाक माध्यम ओ मैथिली	मइ 1965

Scanned by CamScanner

16. मैथिली : भारत-नेपाल सम्बन्धक मैत्रीसूत्र	जून 1965
17. अन्न स्वावलम्बन ओ मिथिला	अक्टूबर 1965
18. विद्यापति स्मृति पर्व	नवम्बर 1965
19. श्रीकुमार साहेबक उपकुलपतित्व	दिसम्बर 1965
20. भारत सरकार ओ मैथिली	जनवरी-फरवरी 1966
21. शिक्षित समुदाय ओ मैथिली	मार्च 1966
22. केन्द्रिय छात्रवृत्ति ओ मैथिलीभाषी	अप्रैल-मइ 1966
23. मैथिली आ वर्त्तमान	जून 1966
24. संविधान ओ मैथिली	जुलाइ 1966
25. केन्द्रिय लोकसेवा आयोग ओ मैथिली	अगस्त 1966
26. (क) अनुशासन एक समस्या	सितम्बर 1966
(ख) गुजरात मैथिल महासभा	सितम्बर 1966
27. वर्त्तमान मन्त्रिमण्डल ओ मैथिली	जनवरी-फरवरी 1967
28. संविधानमे मैथिली	मार्च 1967
29. आकाश कुसुम	अप्रैल 1967
30. प्रस्तावे पर्याप्त थिक ?	मइ-जून 1967
31. मैथिली आन्दोलनक रचनात्मक रूप	अगस्त 1967
32. (क) म.म. डा. उमेशमिश्र	सितम्ब्र-अक्टूबर 1967
(ख) डा. राममनोहर लोहिया	सितम्बर-अक्टूबर 1967
33. आयल पानि गेल पानि बाटहिं बिलायल पानि	नवम्बर 1967

संकल्प (वार्षिक शोध-पत्र) दरभंगा :

34. सम्पादकीय	1977
35. सम्पादकीय	1979
36. सम्पादकीय	1985
37. सम्पादकीय	1986
38. सम्पादकीय	1988

(झ). स्फुट रचना

1. की अहाँकेँ बूझल अछि ?	निर्माण	4 सितम्बर 1954
2. की अहाँकेँ बूझल अछि ?	निर्माण	19 फरवरी 1955
3. की अहाँकेँ बूझल अछि ?	निर्माण	25 फरवरी 1955
4. की अहाँकेँ बूझल अछि ?	निर्माण	19 मार्च 1956
5. की अहाँकेँ बूझल अछि ?	निर्माण	23 अप्रैल 1956

Scanned by CamScanner

6. अजगुत- अनटोटल — मिथिला मिहिर, 13 फरवरी 1966
7. अजगुत- अनटोटल — मिथिला मिहिर, 13 मार्च 1966
8. अजगुत- अनटोटल — मिथिला मिहिर, 17 अप्रैल 1966
9. अजगुत- अनटोटल — मिथिला मिहिर, 24 जुलाइ 1966
10. डा. सर झा एवं आचार्य द्विवेदी — वैदेही, जनवरी 1964
11. राष्ट्र सेवा — वैदेही, जनवरी 1964
12. आगराक आगाखाँ — वैदेही, फरवरी 1964
13. जेलक चमत्कार — वैदेही, फरवरी 1964
14. दशभुजा दुर्गा होइतथि — वैदेही, अप्रैल 1964
15. पहिल रेलगाड़ी — वैदेही, अप्रैल 1964
16. पान सोहि कऽ खाउ — वैदेही, जून 1964
17. चन्दा बाबा ओ आमक गाछी — वैदेही, अक्टूबर-दिसम्बर 1964
18. बर्नाड शॉ एवं चेस्टरटन — वैदेही, जनवरी 1965
19. नवीन कवि ओ स्व. राजपण्डितजी — वैदेही, जनवरी 1965
20. दूध-माछ बाँतर — वैदेही, फरवरी 1965
21. चमारक सम्पत्ति आ डा. सर झा — वैदेही, फरवरी 1965
22. बलमुआँ रूसलबा-हाथमे मूसलबा — वैदेही, मइ 1965
23. बुढ़िया बाबी सन दाँत — वैदेही जून 1965
24. अंग्रेजीसँ मुक्ति — वैदेही जून 1965
25. कविगोष्ठीक सीतारामझा — वैदेही जनवरी 1966

(ञ) पुस्तक समीक्षा

1. मैथिली तर्क चन्द्रिका (सन्तगोपालझा) — वैदेही, जनवरी 1964
2. श्रीदुर्गामृत (वेदानन्दझा) — वैदेही, जनवरी 1964
3. भारतीय कविता 1953 (सा.अ.) — वैदेही, फरवरी 1964
4. समाज (बलदेवमिश्र) — वैदेही, फरवरी 1964
5. द नेशनल बिबिलियोग्राफी ऑफ इंडियन लिटरेचर (सा.अ.) — वैदेही, अप्रैल 1964
6. वैष्णव पदावली (स. सुकुमारसेन) — वैदेही, मइ 1964
7. दहो बहो नोर (गोविन्दझा, बम्बइ) — वैदेही, फरवरी 1965
8. जखन-तखन (उदयभानुसिंह) — वैदेही, फरवरी 1965
9. प्राचीन गीत (स.-रमानाथझा) — वैदेही, मइ 1965
10. कथाकाव्य (स.-रमानाथझा) — वैदेही, मइ 1965

Scanned by CamScanner

11. महाकवि विद्यापति (राजेश्वरझा) — वैदेह, दिसम्बर 1965
12. मैथिलीमे व्यवहारक गीत : एक विमर्श (लोकनाथ मिश्र) — विद्यापति टाइम्स, 16-31 दिसम्बर 2006
13. समीक्षा : एक शास्त्रीय ग्रन्थक (धीरेन्द्रनाथमिश्र) — मिथिला मिहिर, अगस्त 1987 (पहिल पक्ष)

(ट) हिन्दी रचना

कथा :

1. जी हाँ	निर्माण, 30 अक्टूबर 1954
2. मेरा पहुना	आर्यावर्त, 13 मइ 1956
3. सुनहला प्रभात	विदेह, अगस्त 1958
4. भीतर की गरम लौ	विदेह, जुलाइ 1959
5. इजोती रानी	चुन्नू-मुन्नू, फरवरी एवं मार्च 1961
6. दीपशिखा	दरभंगा समाचार, 7 नवम्बर 1961

कविता :

7. बादल बोला	आर्यावर्त, 5 जुलाई 1959
8. गीत	आर्यावर्त, 6 सितम्बर 1959
9. गीत	आर्यावर्त, 15 जुलाइ 1959
10. सप्त स्वरमें बाँसुरी	दरभंगा समाचार, 13 अक्टूबर 1961

निबन्ध :

11. मैथिल हिन्दी सेवी	निर्माण, 13 नवम्बर 1954
12. इतिहास की कड़ी और मैथिली लोकगीत	विदेह, दिसम्बर 1957
13. मिथिला के लोकजीवन में सीता सम्बन्धी किंवदन्तियाँ	आर्यावर्त, 13 नवम्बर 1960
14. नाविक नाव चलाये जा	आर्यावर्त, 25 दिसम्बर 1961
15. फागुनमें धरती अंगराई	आर्यावर्त, 26 फरवरी 1961
16. फूल खिले कचनार के	आर्यावर्त, 26 मार्च 1961
17. त्योहारों के ऋतु शरद	आर्यावर्त, 1 अक्टूबर 1961
18. विदेशी विद्वान और मैथिली	आर्यावर्त, 4 मार्च 1962
19. बरसो हे मेघराजा !	आर्यावर्त, 14 अगस्त 1962
20. कवीश्वर चन्दाझा	आर्यावर्त, 6 अप्रैल 1959
21. चन्दाझा	आर्यावर्त, 13 अप्रैल 1960
22. चन्दाझा	आर्यावर्त, 14 जून 1961

Scanned by CamScanner

23. जननायक कर्मयोगी पं. विनोदानंदझा — विश्वमित्र, 17 अप्रैल 1961
24. मैथिली लोकसाहित्यमें कृष्णजन्म — आर्यावर्त, 12 अगस्त 1963
25. विद्यापति की सिद्धिभूमि — धर्मयुग, 27 नवम्बर 1966
26. मैथिली में हरगौरी परिणय — नेपाली, दैनिक, 27 फरवरी 1970 (काठमाण्डू)
27. विद्यापति के गीतों के नये स्रोत भाषा गीत संग्रह — आज, 19 नवम्बर 1972, काशी
28. वैदिक युग के क्रांतिपुरुष : याज्ञवल्क्य — हिन्दू विश्व, नई दिल्ली, मइ 1978
29. मैथिली में भक्ति साहित्य — कला साहित्य साधक संगम, संस्कारभारती, 1998

भूमिका :

30. प्राक्कथन — अक्षरों की लड़ाई, भोलालालदास, 2002

(ठ). Writings in English

1. Sri Aurovindo's Aesthetics and Maithili Literature (Paper presented in Aurovindo Birth Centanary Seminar at Kolkata on 10 June 1972) Ramllakhan Ram 'Raman' felicitacian volume, 2004
2. Indigenous Narrative Forms in Mithila, Dimensions of society and culture of Bihar (Essays in Honour of Dr. Madaneshwar Mishra), 2003
3. Maithili Folk Songs
   Acharya Shobhakant Jayadeva Memorial Volume to be published.
4. (i) Kirtaniya Theatre
   (ii) Modern Maithili Theatre
   'Companion to Indian Theatre', oxford University press, New Delhi, 2000
5. A Critical study of Maithili Folk Balleds Dr.Vijay Kumar Thakur Memorial Volume to be published.
6. Entries in the Encyclopaedia of Indian Literature, Sahitya Akademi, New Delhi.

(i)	Das, Raghunandan	Vol. I, 1987, P. 877-878
(ii)	Jha, Harshanath	Vol II, 1988, P. 1827
(iii)	Jha, Ishanath	Do Do, P. 1827
(iv)	Jha, Jivan	Do Do, P. 1827
(v)	Malar (मलार)	Vol III, 1989, P. 2557
(vi)	Man (मान)	Do, Do, P. 2571
(vii)	Marsia (मर्सिया)	Do, Do, P.2619
(viii)	Mithila Mihir	Do, Do, P.2712
(ix)	Mithila Moda	Do, Do, P.2712-13
(x)	Nirgun (निर्गुन)	Vol. IV, 1991, P.2958
(xi)	Prose	Do Do, P. 3403-4

Scanned by CamScanner

(xii)	Saroj, Harinandan Thakur	Do	P. 3830
(xiii)	Proverbs	Vol. VI, P. 4845	

(ङ). भाषान्तरमे अनुवाद

कथा :

1. एक खीरा : तीन फाँक
   (क) हिन्दी, धर्मयुग, 27 जून 1965
   (ख) बंगला, मैथिली कथाधारा, साहित्य अकादेमीक बंगला अनुवाद

2. बसातक दाम
   (क) हिन्दी, सारिका, मइ 1977
   (ख) तेलुगु, विपुला, हैदराबाद, मइ 1980
   (ग) अंग्रेजी, जर्नल ऑफ लिटरेचर एण्ड एस्थेटिक्स कोल्लम (केरल), जनवरी-दिसम्बर 2006

3. परस्पर — हिन्दी, राजस्थान पत्रिका, 2000

4. बट गाछक छाहरि — अंग्रेजी कनटेम्पररी मैथिली सार्ट स्टोरीज, स.- मुरारि मधुसूदन ठाकुर, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2006

5. मनुक सन्तान
   (क) हिन्दी, मैथिली कथा संचयन, नेशनल बुक ट्रस्टक हिन्दी अनुवादमे
   (ख) पंजाबी, मैथिली कथा संचयन, नेशनल बुक ट्रस्टक पंजाबी अनुवादमे

6. मुट्ठीमे बन्द — बंगला, मुख्यवार्त्ता (शारदीय-2006), दुर्गापुर (प.बं.)

7. उपकारक बदला — हिन्दी, भारतीय बाल कहानियाँ, भाग-3, स.- हरिकृष्ण देवसरे, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2009

कविता :

8. कोपड़ — अंग्रेजी, प्राची, साहित्य अकादेमीमे प्रकाशित

जीवनी :

9. शनैः पर्वत लंघनम् (अमरजीक जीवनी) — राजानन्दझा कृत अंग्रेजी अनुवाद 'ए पैरागोन ऑफ परसेवरेन्स' 2007 मे पुस्तकाकार प्रकाशित ।

शोध-निबन्ध :

10. विद्यापति ओ नेपाल — नेपाली, सिंहावलोकन, जनकपुरमे प्रकाशित

विनिबन्ध :

11. जगज्ज्योतिर्मल्ल — राजानन्दझा कृत अंग्रेजी अनुवाद, सा.अ. सँ 2010मे प्रकाशित

●

Scanned by CamScanner

परिशिष्ट- दू

डा. श्रीरामदेवझा द्वारा निर्देशित पी-एच.डी. शोध-प्रबन्ध

1. मैथिली रंगमंचक स्वरूप विवेचन, जटेश्वरझा जटिल, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, 1980
2. सामाजिक असन्तोष ओ तकर आधुनिक मैथिली साहित्यपर प्रभाव, नीताझा, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, 1981
3. लोकगाथा सलहेसक अध्ययन, मोतीलालयादव, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, 1982
4. मैथिली कीर्त्तनिया नाटकक नाट्यशास्त्रीय अध्ययन, माधुरीझा, ल.ना.मि.वि., दरभंगा 1984
5. अंकियानाट'क आलोचनात्मक अध्ययन, भूपेन्द्रकुमारचौधरी, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, 1985
6. मैथिलीक प्रमुख पारम्परिक जातीय व्यवसायक सम्बन्धी शब्दावलीक व्याख्यात्मक अध्ययन, योगानन्दझा, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, 1986
7. मैथिली साहित्यमे नारी चित्रण, शान्तिपाठक, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, 1986
8. कविवर जीवनझाक नाट्यकृतिक आलोचनात्मक अध्ययन, दयाकान्तमिश्र, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, 1986
9. आधुनिक मैथिली साहित्यक विकासक विशेष सन्दर्भमे श्रीचन्द्रनाथमिश्र अमरक मैथिली कृतिक आलोचनात्मक अध्ययन, देवनाथझा, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, 1988
10. समकालीन सन्दर्भमे मैथिली खण्ड काव्यक नारी पात्रक प्रासंगिकता, दुर्गानन्दझा, ल.ना. मि.वि. दरभंगा, 1988
11. मैथिली साहित्य ओ भाषामे प्रयुक्त भोजन-सम्बन्धी शब्दावलीक विश्लेषणात्मक अध्ययन, ललिताझा, ल.ना.मि. वि., दरभंगा, 1989
12. राजपण्डित बलदेवमिश्रक मैथिली रचनाक आलोचनात्मक अध्ययन, शम्भुनाथझा, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, 1990
13. मैथिलीमे शाक्त साहित्यक उद्‌भव ओ विकास, भोलाझा, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, 1991
14. मैथिली साहित्य ओ भाषामे प्रयुक्त वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक भाषातात्विक अध्ययन, कमला चौधरी, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, 1991
15. श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क कृतिमे निहित हास्य-व्यंग्यक विश्लेषणात्मक अध्ययन, भाग्यनारायणझा, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, 1991
16. आधुनिक मैथिली साहित्यक विकासमे मिथिला मिहिर (1935सँ 1954)क योगदानक समालोचनात्मक अध्ययन, उमेशचन्द्र झा, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, 1993
17. भूपतीन्द्रमल्लक मैथिली नाटकक समालोचनात्मक अध्ययन, मंजूसिंह, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, 1996
18. मैथिली बाल साहित्यक आलोचनात्मक अध्ययन, दमनकुमारझा, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, 2000
19. कवि-नाटककार रमापति उपाध्यायक रुक्मिणी परिणय नाटकक आलोचनात्मक अध्ययन, विनीताझा, ल.ना.मि. वि., दरभंगा, 2001
20. नेपालक मैथिली नाट्यक परम्परा, कुलानन्दझा, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, 2007

●

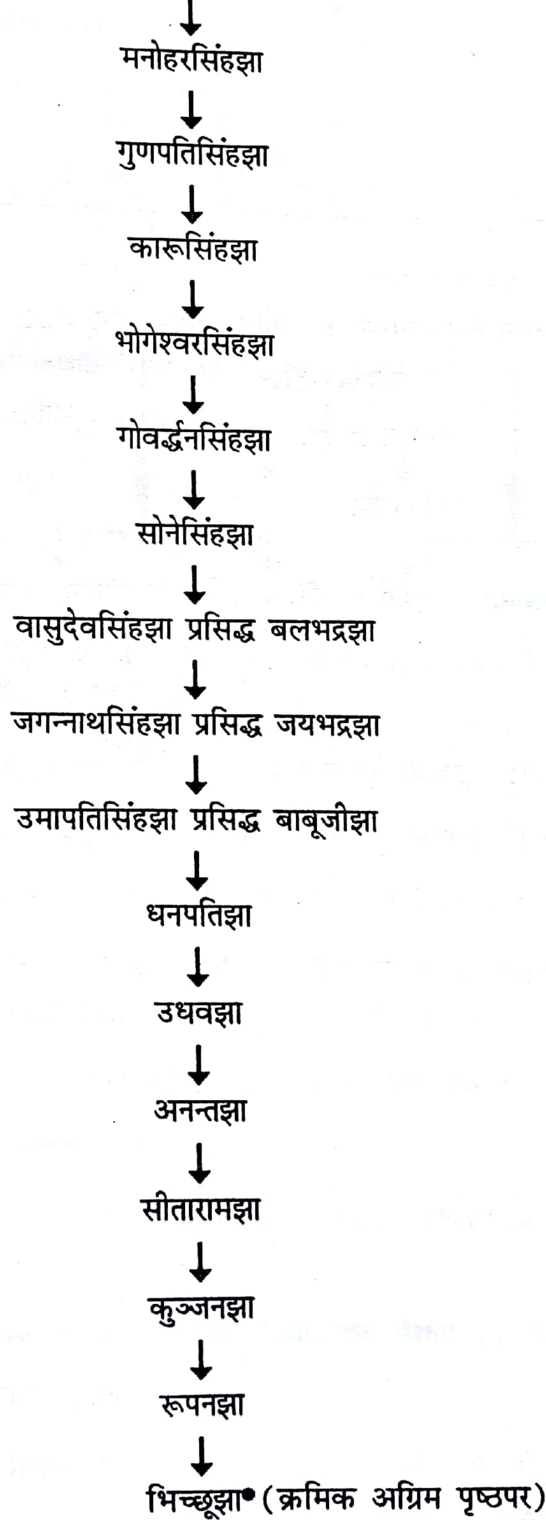
Scanned by CamScanner

परिशिष्ट-तीन

डा. श्रीरामदेवझाक वंशवृक्ष

गोत्र-शाण्डिल्य, पूर्वक मूल-दीघो-छतिवन, वर्त्तमान मूल-छतिवनय-छतिवन, डेरा-कबिलपुर

भीमसिंहझा (बीजी पुरुष)



Scanned by CamScanner

- नन्दीपतिझा
  - रामशरणझा
    - कुशेश्वरझा
    - कपिलेश्वरझा
      - श्रीरामदेवझा
        - श्रीकृष्णदेवझा (ललनजी)
          - प्रशान्त हर्ष (पुत्र)
          - सौम्या (पुत्री)
        - श्रीमती ममता कुमारी पति- श्रीभारतेन्दुकुमारझा
          - उपमाशिल्पी
          - तूलिकास्वाती
          - प्राची
        - श्रीशंकरदेवझा
          - रश्मिप्रिया
          - लिपि
        - श्रीमती कविता कुमारी पति- श्रीसतीशकुमारझा
          - कृत्तिका छवि
          - अभिनव भास्कर
        - श्रीमती कल्पना मिश्रा (विद्या) पति- श्रीप्रभुकान्तमिश्र
          - अनन्या
          - साम्या
        - श्रीविजयदेवझा
          - Shreesh Deo Jha श्रीश देव झा
      - श्रीबलदेवझा
        - श्रीइन्द्रदेवझा सुमन
        - श्रीचन्द्रदेवझा रमण
        - श्रीमतीविभा कुमारी
        - श्रीमतीनिभा कुमारी

Scanned by CamScanner

परिशिष्ट-चारि

किछु महत्त्वपूर्ण वर्ष ओ तिथि

- 1936 जन्म (श्रावणी पूर्णिमा)।
- 1953 जुलाइ, सबसँ पुरान मैथिली साप्ताहिक पत्र मिथिला मिहिरमे प्रथम मैथिली कथा 'मुदा आब की?' प्रकाशित।
- 1955 प्रथम श्रेणीमे मैट्रिक्युलेशन परीक्षोत्तीर्ण।
- 1955-59 महाविद्यालयमे कथा-निबन्ध प्रतियोगितामे अनेक बेर प्रथम पुरस्कार।
- 1956 अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलन (दरभंगा)क अवसरपर मैथिली नाटकमे सर्वोत्तम अभिनय-पुरस्कार।
- 1957-59 अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्, दरभंगाक निर्वाचित संयुक्त मन्त्री। तीन दशक धरि परिषद्क कार्यकारिणी समितिक सदस्य।
- 1959 मैथिली विषयमे बी.ए. ऑनर्स, (स्वर्ण पदक), बिहार विश्वविद्यालय, प्रथम पुस्तक 'शकुन्तला नाटक : एक अध्ययन' प्रकाशित।
- 1960-61 प्रधान सचिव, पटना कॉलेज मैथिली साहित्य परिषद, पटना विश्वविद्यालय।
- 1961 मैथिली विषयमे एम्.ए.(स्वर्णपदक), पटना विश्वविद्यालय।
- 1961 नवम्बर, एस्.पी. कालेज, दुमकामे मैथिली व्याख्याता पदपर नियुक्ति।
- 1963 बिहार लोकसेवा आयोगक अनुशंसाक आधारपर बिहार विश्वविद्यालयक चन्द्रधारी मिथिला कालेज, दरभंगामे मैथिली व्याख्याता पदपर नियुक्ति।
- 1965 प्रथम कथा संग्रह 'एक खीरा : तीन फाँक' प्रकाशित।
- 1970 पटना विश्वविद्यालयसँ पी-एच.डी. उपाधि।
- 1973 मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापनाक पश्चात् विश्वविद्यालय-स्नातकोत्तर मैथिली विभागमे अंगित।
- 1978-80 (ललित नारायण) मिथिला विश्वविद्यालयक सिनेट एवं फैकल्टी आर्ट्सक सदस्य।
- 1980 स्नातकोत्तर मैथिली विभागमे रीडर।
- 1985 स्नातकोत्तर मैथिली विभागमे यूनिवर्सीटी प्रोफेसरक पद पर।
- 1988-97 साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीक मैथिली एडवाइजरी बोर्डक सदस्य।

Scanned by CamScanner

- 1991 — 'पसिझैत पाथर' नाट्य संग्रहपर साहित्य अकादेमी पुरस्कार ।
- 1994 — राजिन्दर सिंह बेदीक उर्दू उपन्यास 'एक चादर मैलीसी'क मैथिली अनुवाद 'सगाइ'पर साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार ।
- 1996 — 31, मइकेँ यूनिवर्सीटी-प्रोफेसरक पदसँ सेवा-निवृत्त ।
- 1998-2002 — साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीक सदस्य एवं मैथिली एडवाइजरी बोर्डक कनवेनर
- 2004 — विद्यापति सेवा-संस्थान, दरभंगा द्वारा 'मिथिला विभूति' सम्मान ।
- 2005 — साहित्य अकादेमी द्वारा 'मीट द ऑथर' कार्यक्रम आयोजित ।
- 2009 — साहित्य अकादेमीक 'स्कॉलर एट रेजीडेंस' ।
- 2010 — चेतना समिति, पटना द्वारा 'मिथिला विभूति' सम्मान ।

●

Scanned by CamScanner

परिशिष्ट-पाँच

किछु महत्त्वपूर्ण अभिलेख

Mahamahopadhyaya
Dr. Umesh Mishra
M.A., D.Lit.



G/9B-5/3892/63
SENATE HOUSE
DARBHANGA 23.12.63

It gives me a great pleasure to certify that Mr. [illegible]deva Jha, M.A. Lecturer in Maithili, Chandradhari Mithila College, Darbhanga is known to me very closely for a pretty long time. He has had a very brilliant carreer from his school days and had secured a first class with Gold Medal in his B.A. Honours and also in M.A. examination. He has an experience of teaching Maithili for the last 8 years to degree and post-graduate classes. He is an author of several research articles and short stories as well as one Act Plays. He is one of the brilliant products of the Bihar and Patna Universities in Maithili.

I have had opportunities to interview him and know him from very close quarters and I have no hesitation in saying that he is one of the best students of Maithili and has a very clear idea about the various problems connected with his subject. He is carrying on researches in Maithili and I hope his research will bear a good fruit. He bears a high moral character and all such qualities which a gentlemen should have. Equipped with these qualities and meritorious achievements in literary field, he can be an asset to any university to teach Maithili. He carries all my good wishes.

(Umesh Mishra)
Vice-Chancellor.

Scanned by CamScanner



DEPARTMENT OF PHILOSOPHY
PATNA UNIVERSITY
PATNA-5

Phil........./-   Patna, the 21.9.1961

I have been knowing Shri Ramdeo Jha, M.A.(Pat) intimately from his student life. He is a well-known writer in Maithili and his stories and poems published in various journels of Maithili have proved quite popular. He occ upies a front position in the rising generetion of Maithili ~~authors~~ writers. He has studied ancient and modern Maithili literature ~~and~~ language critically and has got first Class First Master's degree in Maithili. I hope he will prove a keen scholar in his subject. He is a man of excellent character appreciate with sharp talents and hard working capacity.

I wish him all success in life.

(H.M.Jha.)
Head of the department of Phil.
Patna University, Patna.

Head of the Department of Philosophy
PATNA UNIVERSITY, PATNA-5

Scanned by CamScanner

LAHERIASARAI

J. Kumar

(Recipient of National Award for Teachers, 1959-60)

PRINCIPAL

M.L.Academy (Higher Secondary)

MEMBER

Bihar School Examination Board.

This is to certify that Sri Ramdeo Jha (now Dr. Ramdeo Jha, M.A. Phd, Lecturer, C.M.College), son of Late Kapileshwar Jha of Village Kabilpur, P.S. Sadar Darbhanga, was a student of this school from class VIII to Class XI and passed the annual S.S. Examination of 1955 in the first division. It was unique that during the period of about four years of his studies at this school he did not absent himself from his classes even for a single day. During the said period, he used to take an active part in all co-curricular activities held at this school. For good attendance and extra-ordinary merit, he was awarded prizes by Dr. S.K.Sinha, the then Cheif Minister of Bihar and by Sri Hari Nath Mishra, the then Health Minister of Bihar.

Shri Jha indeared himself to all his teachers by his disciplined manners and irreproachable conduct.

I am glad to add that his literary achievements since then have come in for approbation at the hands of emminent scholars.

J.Kumar

5/2/71

सव्यसाची/559

From,

Dr. Sudhakar Jha Shastri
M.A., Ph.D. (Lond.),
Head of the Department of Maithili,
Patna University, Patna

Patna, the 20th September '61

Shri Ramdeo Jha M.A. has been intimately known to me for the last two years as a post-graduate student in Maithili classes. He secured First Class First position in his B.A.(Hons.) Examination and maintained the same position creditably at the last M.A. Examination. He is a painstaking youngman with active habits. In course of his student life in the Department he always impressed me with his intelligence, devotion to his duty and conscientiousness.

He was the Secretary of the Maithili Sahitya Parishad in which capacity he showed his rare literary talent and acumen with which he could secure grand success in the work of the Parishad . Forhis best essay and grand performance in elocution competition he secured the First prize and trophies.

He possesses a keen sense of responsibility and bears an excellent moral character.

I am confident he will prove an asset to any educational institution where he is given a chance to serve.

I wish him all success in life.

20/9/61

(S. Jha Shastri)
Head of the Department of Maithili
Patna University, Patna.

Head of the Department of Maithili,
PATNA UNIVERSITY
PATNA-5.

Scanned by CamScanner

श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'
मंत्री, अ०भा० मैथिली-साहित्य-परिषद्
दरभङ्गा

मिश्रटोला, दरभंगा
दिनाङ्क ३०.११.५९

श्री रामदेव झा बी. ए. ऑनर्स १९५७ ई० सँ १९५९ ई० धरि हमर मन्त्रित्वकालमे अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक संयुक्त-मन्त्रीक रूपमे जे मातृभाषाक सेवामे उत्साह तथा संलग्नता देखौलन्हि अछि से सर्वथा श्लाघनीय रहलन्हि अछि।

हमरा विश्वास अछि जे एहि प्रकारक कर्मठ दसो पाँच नवयुवक मातृभाषाक सेवामे तत्परता देखौताह तँ ओ दिन दूर नहि रहि जैत जखन मैथिली अपन उचित अधिकार प्राप्त करबामे सफल भै जैतीह।

हम हिनक रहने कर्मठताक शुभाकांक्षी छी। मैथिली हिनका चिरायु करथुन।

श्री चन्द्रनाथ मिश्र
'अमर'

प्रधान मन्त्री
अखिल भारतीय मैथिली
साहित्य परिषद, दरभंगा

Scanned by CamScanner

अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलन

दरभंगा



प्रमाण-पत्र

श्रीयुत राम कृष्ण ——————— कैं अभिनय

——————— क हेतु प्रथम ——— पुरस्कार प्रदान कैल गेलन्हि जाहि निमित्त ई प्रमाण-पत्र सेहो प्रदान कैल जाइत छन्हि।

मंत्री १९/११/५८

श्याम नन्दन सहाय

प्रधान सभापति

Scanned by CamScanner



मैथिली की पुरस्कृत कृति
पसिझैत पाथर
रामदेव झा (जन्म 1935)

Award in Maithili to
Pasijhaita Pathar
by Ramdeo Jha (b. 1935)

श्री रामदेव झा का जन्म दरभंगा के सहोरा नामक स्थान (ज़िला दरभंगा) में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा लहेरिया सराय और दरभंगा में हुई। आपने पटना विश्वविद्यालय से मैथिली में स्नातकोत्तर और पी-एच.डी. उपाधियाँ प्राप्त कीं। इस समय आप ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में मैथिली के प्रोफेसर हैं। आप अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद के संयुक्त सचिव (1957-1959) रहे हैं और इस समय संकल्प लोक, लहेरिया सराय, के उपाध्यक्ष हैं।

आप कवीश्वर चन्दा झा और हरिमोहन झा जैसे लेखकों से प्रभावित रहे हैं। किशोरावस्था में ही आपकी कहानियाँ पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगीं और प्रथम संग्रह *एक खीरा : तीन फाँक* (1965) से आपको मान्यता मिली। अब तक आपकी बीस अन्य कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें चार समालोचनात्मक ग्रन्थ, दो कहानी-संग्रह (*मनुक संतान* और *धरती माता*), एक लम्बी बाल कहानी (*इज़ोती रानी*) और अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित नाटक संग्रह *पसिझैत पाथर* सम्मिलित हैं।

पसिझैत पाथर सात नाटकों का संकलन है जिनमें छह एकांकी हैं। विविध ऐतिहासिक, पौराणिक, या समकालीन सामाजिक विषयों पर आधारित इन नाटकों में लेखक का उद्देश्य प्रायः शिक्षात्मक है। इस विधा का उपयोग लेखक ने सामाजिक बुराइयों से लड़ने के लिए किया है। नाटककार के भाव-प्रयोजन और तकनीक आधुनिक हैं और भाषा सहज, सीधी और सम्प्रेषणीय। व्यापक विषयवस्तु के कुशल निर्वाह, समाज सुधार के प्रति अपनी प्रतिबद्धता, और अभिव्यक्ति की निपुणता के लिए यह कृति मैथिली में लिखित भारतीय साहित्य को विशिष्ट योगदान मानी गयी है।

सम्पर्क : काबिलपुर, लहेरिया सराय, दरभंगा 846 001 बिहार

Sri Ramdeo Jha was born in Sahora (Darbhanga District) and had his early education in Laheria Sarai, and Dharbhanga. He took his M.A. and Ph. D degrees in Maithili from Patna University, and is currently Professor of Maithili in L.N. Mithila University, Dharbhanga. He was Joint Secretary (1957-1959) of the All India Maithili Sahitya Parishad, and is Vice-President of Samkalp-Loka, Laheria Sarai.

Influenced by such writers as Kavishwar Chanda Jha, and Harimohan Jha, he began to publish short stories in magazines when he was still in his teens, and his first collection, *Eka Kheera : Teen Phanka* (1965) brought him instant recognition. He has since published twenty other works which include four critical works, two collections of short stories (*Manuka Santan* and *Dhartee Mata*), a long story for children (*Ijotee Rani*), and the Sahitya Akademi Award winning collection of plays, *Pasijhaita Pathar*.

Pasijhaita Pathar is a collection of seven plays, six of them in one-act. Based variously on history, mythology or contemporary social themes, the author's purpose is often didactic, as he uses his medium to battle with social evils. The playwright's temper and technique are modern, and the language is spontaneous, direct and richly communicative. For its deft handling of a wide range of themes, its commitment to social reform, and its fine facility of expression, this work is regarded as an outstanding contribution to Indian literature in Maithili.

Address : Kabilpur, Laheria Sarai, Darbhanga 846 001 Bihar.

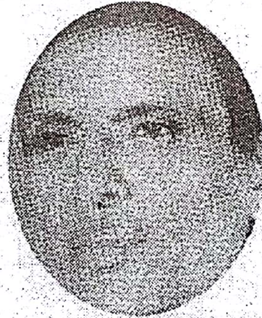
Scanned by CamScanner

विद्वान, कथाकार एवं अनुवादक श्री रामदेव झा का जन्म बिहार के सरोह नामक स्थान पर हुआ। आपने मैथिली में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की और पटना विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। सम्प्रति आप ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय में मैथिली के प्राध्यापक हैं। मिथिला अंचल की प्राचीन पाण्डुलिपियाँ तथा लोकसाहित्य में आपकी गहरी रुचि है। आपके आठ कथा-संकलन, समालोचना सम्बन्धी चार ग्रन्थ और साहित्यिक शोध से जुड़ी दस किताबें प्रकाशित हैं। आपने *वैदेही* तथा *संकल्प* जैसी पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया।

पुरस्कृत कृति *सगाई* राजिन्दर सिंह बेदी के प्रतिष्ठित उर्दू उपन्यास *इक चादर मैली-सी* का मैथिली अनुवाद है। अनुवादक ने मूल कृति की कलात्मक ऊष्मा को उल्लेखनीय सफलता से रूपान्तरित किया है। मानवीय सम्बन्धों के संवेदनशील चित्रण, मुहावरे के पैने और सटीक प्रयोग तथा अपने सशक्त पात्रांकन के लिए यह कृति मैथिली अनुवाद में भारतीय साहित्य को एक उल्लेखनीय देन मानी गई है।

मैथिली
रामदेव झा
(जन्म 1936)
राजिन्दर सिंह बेदी कृत
इक चादर मैली-सी
के मैथिली अनुवाद के लिए
पुरस्कृत

Award in
Maithili to
Ramdeo Jha
(b. 1936)
for his translation of
Ek Chader Maili Si
by Rajinder Singh Bedi



SCHOLAR, short story writer and translator Shri Ram Deo Jha, was born in Saroha, Bihar. He topped in his M.A. examination in Maithili and took his Ph.D. from Patna University.

Presently Professor of Maithili in the L.N. Mithila University, Dr. Jha's other interests include collection of old manuscripts and folk literature of the region. He has 8 books of fiction, 4 works of criticism, and 10 volumes of literary research to his credit and has edited magazines like *Vaidehi* and *Sankalpa*.

Sagai Shri Jha's Maithili translation of Rajinder Singh Bedi's celebrated novel *Ek Chader Maili Si*, is an exemplary effort remarkably successful in capturing the artistic vitality of the original. For its sensitive portrayal of human relationships, the force of its appeal and pragmatic accuracy of idiom, the work is a notable contribution to Indian literature in Maithili translation.

Scanned by CamScanner

परिशिष्ट-छओ

सारस्वत सहयोगीक नाम ओ पता

1. डा. श्रीअमरनाथ, दर्शनशास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा ।
2. डा. श्रीअमरनाथचौधरी, पनिचोभ, दरभंगा ।
3. डा. श्रीअमरेशपाठक, भी/25, विद्यापुरी, कंकड़बाग, पटना ।
4. डा. श्रीअरुणकुमारकर्ण, मैथिली विभाग, वीमेन्स कॉलेज, समस्तीपुर
5. डा. श्रीअरुणकुमारझा, विभागाध्यक्ष अंग्रेजी, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा ।
6. श्रीअश्विनीकुमार आलोक, प्रभा निकेतन, पत्रकार कॉलोनी, महनार, वैशाली-844506 ।
7. डा. श्रीअशोक 'अविचल', विभागाध्यक्ष मैथिली, एल.बी.एस.एम. कॉलेज, जमशेदपुर- 831002 (झारखंड) ।
8. श्रीअशोककुमारठाकुर, 4 इंजीनियर प्रेस लेन, स्टेशन रोड, दरभंगा- 846004 ।
9. डा. श्रीइन्द्रकान्तझा, जे.एफ.-1, ब्लॉक नं.-7/80, रोड नं.-10, राजेन्द्रनगर, पटना- 800016 ।
10. डा. श्रीमतीइन्दिराझा, बिहार स्टोर्स, नारायण मार्केट, लंगरटोली, पटना ।
11. डा. श्रीमतीइन्दिराझा, अंग्रेजी विभाग, सी.एम.कॉलेज, दरभंगा
12. श्रीउदयचन्द्रझाविनोद, रहिका, मधुबनी ।
13. डा. श्रीउदयनारायणसिंह ।
14. श्रीउग्रनारायणमिश्र कनक, ग्रा.-मकरन्दा, पो.-मनीगाछी, दरभंगा ।
15. डा. श्रीमतीउषाचौधरी, मैथिली विभाग, एम.एल.एस.एम. कॉलेज, दरभंगा ।
16. एलिजाबेथ स्मिथ एवं मीरियम वीबर, 'हाउस नं.-89, रोड नं., एल ई, न्यू पाटलिपुत्रा कॉलनी, पटना-13 ।
17. श्रीअंजनसेन, 239, लेक रोड, कोलकाता- 700029 (प.बं.) ।
18. श्रीकृष्णदेवझा एवं श्रीविजयदेवझा, द्वारा डा. रामदेवझा, कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा ।
19. डा. श्रीमतीकमलाचौधरी, अध्यक्ष स्नातकोत्तर मैथिली विभाग, बी.आर.ए. बिहार यूनिवर्सीटी, मुजफ्फरपुर ।
20. डा. श्रीकमलाकान्तझा, हरिपुर डीहटोल, भाया-कलुआही, मधुबनी ।
21. डा. श्रीकमलानन्दझा 'विभूति', हिन्दी विभाग, सी.एम.कॉलेज, दरभंगा ।
22. डा. श्रीमतीकविताकुमारी, द्वारा- डा. भोला झा, ग्रा.+पोस्ट-मछैता, भाया- कुरसों-नदियामी, दरभंगा ।
23. श्रीकालीकान्तमिश्र, पी.टी.सी.सँ उत्तर गलीमे, मो.- बेलाशंकर (बैंक कालोनीसँ पूब) दरभंगा ।
24. डा. श्रीकुलानन्दझा, प्राध्यापक मैथिली विभाग, पी.जी.सेंटर, सहरसा ।
25. डा. श्रीखुशीलालझा, झंझारपुर (आर.एस.), मधुबनी ।
26. श्रीगोविन्दझा, 104, सती चित्रकूट अपार्टमेंट, गंगापथ, पटेलनगर (पश्चिम), पटना- 800023 ।

Scanned by CamScanner

27. श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर', 'आदित्य सदन', मिश्रटोला, दरभंगा-846004 ।
28. डा. श्रीचन्द्रमणिझा, मो.-शिवसागर, बलभद्रपुर, लहेरियासराय, दरभंगा-1 ।
29. श्रीचन्द्रमोहनझा पड़बा, मैथिली विभाग, महाराज महेशठाकुर मिथिला महाविद्यालय, दरभंगा ।
30. श्रीमतीज्योत्स्नाचन्द्रम, द्वारा - डा. विभूति आनन्द, म्यूजियम गुमतीसँ पूब, धर्मपुर, दरभंगा ।
31. श्री जगन्नाथ चक्रवर्ती ।
32. डा. जयकान्तमिश्र, तीरभुक्ति, 1 बी, सर पी.सी. बनर्जी रोड, इलाहाबाद (उ.प्र.) ।
33. डा. श्रीजयप्रकाशचौधरी 'जनक', कोर्थ, बेनीपुर, दरभंगा ।
34. डा. श्रीताराकान्तझा, द्वारा-केडिया टिम्बर, कुमारपाड़ा (एफ.ए.रोड), गुआहाटी-781001 ।
35. श्रीताराकान्तझा, सम्पादक-मिथिला समाद, 32, मेटकॉफस्ट्रीट, कोलकाता-13 (पश्चिम बंगाल) ।
36. डा. श्रीतारानन्दवियोगी, बदरिकाश्रम, ग्रा०+पो.-महिसी, सहरसा ।
37. डा. श्रीदेवकान्तझा, तिरहुत कॉलोनी, मधुबनी ।
38. डा. श्रीदेवकान्तमिश्र, कोर्थ, बेनीपुर, दरभंगा ।
39. डा. श्रीदेवेन्द्रझा, सहजानन्दनगर, रेवा रोड, भगवानपुर, मुजफ्फरपुर ।
40. डा. श्रीधीरेन्द्रनाथमिश्र, अध्यक्ष, मैथिली विभाग, सी.एम.कॉलेज, दरभंगा ।
41. डा. श्री नरनारायण राय, पूर्णिया ।
42. डा. श्रीनरेशकुमार विकल, 'विशाखा', 12 पत्थर, समस्तीपुर-848101 ।
43. डा. श्रीनबोनाथझा, अध्यक्ष मैथिली विभाग, एम.एल.एस.एम.कॉलेज, दरभंगा ।
44. डा. श्रीनवीनचन्द्रमिश्र, चीनी गोदाम, लालबाग, दरभंगा-4 ।
45. डा. श्रीमतीनीताझा, मैथिली विभाग, ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा ।
46. डा. श्रीमतीनीरजा 'रेणु', ग्रा-विट्ठो, पो.-सरिसव-पाही, मधुबनी-847424 ।
47. श्रीमती नीलिमाझा, द्वारा-प्रो. श्रीबालगोविन्दझा, कटहरबाड़ी, दरभंगा ।
48. प्रो. श्रीप्रफुल्लकुमारसिंह 'मौन', प्रोफेसर कॉलनी, महनार, वैशाली-844506 ।
49. श्रीपरमानन्द प्रभाकर, द्वारा-रामपुनीतठाकुर 'तरुण', श्रीकृष्णापुरी, गली नं.-1, आर.एन.ए.आर. कॉलेज रोड, समस्तीपुर- 848101 ।
50. श्रीपंचाननमिश्र, लालबाग, दरभंगा-4 ।
51. श्री फजलुर रहमान हाशमी, फातमी लाइब्रेरी, पो. मुजफ्फरा, वाया-मंझौल, बेगूसराय-851127 ।
52. श्रीफूलचन्द्रझा 'प्रवीण', लक्ष्मीसागर, दरभंगा ।
53. श्रीभाग्यनारायणझा, एल.एफ. 3/18, रोड नं-10, राजेन्द्रनगर, पटना-16
54. डा. श्रीभाग्यनारायणझा, कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा-1 ।
55. डा. श्रीभीमनाथझा, छपकी-परड़ी, दरभंगा ।
56. डा. श्रीभोलाझा, ग्रा.-मछैता, पो.-कुरसों-नदियामी, दरभंगा ।
57. भोलालालदास, तत्कालीन पता- लक्ष्मणरोड, बलभद्रपुर, लहेरियासराय ।

Scanned by CamScanner

58. डा. मदनेश्वरमिश्र, तत्कालीन अध्यक्ष, मैथिली अकादमी, पटना ।
59. डा. श्रीमहेन्द्र, मिशन कम्पाउण्ड, सहरसा ।
60. डा. श्रीमतीमिथिलेशकुमारीमिश्र, उपनिदेशक (शोध), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना-800004 ।
61. डा. श्रीमुरलीधरझा, कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा-846001।
62. श्रीमैथिलीपुत्र 'प्रदीप', स्वयंप्रभा निकुञ्ज, अन्हरियाबाग, लहेरियासराय, दरभंगा ।
63. श्रीमोहन भारद्वाज, शान्ति निकेतन, सी.पी.ठाकुर पथ, शिवपुरी (पूर्व), पटना-800023 ।
64. डा. श्रीमतीयोगमायाझा, द्वारा-डा. रामदेवझा, कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा-1 ।
65. डा. श्रीयोगानन्दझा, कबिलपुर, भगवतीस्थान मार्ग, लहेरियासराय, दरभंगा- 846001 ।
66. डा. श्रीरत्नेश्वरमिश्र, 403, कर्पूरा प्रतिभा पैलेस, गान्धीपथ, नेहरू नगर, पटना-13 ।
67. प्रो. श्रीरमाकान्तमिश्र, राज क्वाटर, श्यामाबाग, दरभंगा ।
68. डा. श्रीमतीरमाझा, बी.-601, सिल्वर टावर, ठाकुर कम्प्लेक्स, कान्दीवली (ईस्ट), मुम्बइ-400101 ।
69. श्रीरमाकान्तराय 'रमा', मानाराय टोल, नरहन, भाया-सिंघिया, समस्तीपुर ।
70. डा. श्रीरवीन्द्रकुमारचौधरी, व्याख्याता मैथिली विभाग, एल.बी.एस.एम. कॉलेज, करनडीह, जमशेदपुर-831002 (झारखंड) ।
71. डा. श्रीरवीन्द्रराकेश, नवेन्दु निवास, बखरी बाजार, बेगूसराय ।
72. डा. श्रीराजानन्दझा, ग्रा.+पो.-पोहद्दी, बेनीपुर, दरभंगा-847103 ।
73. डा. श्रीराजेन्द्रझा, 'सीताधाम', नया गंगासागर, दरभंगा ।
74. डा. श्रीरामकिशोरझा 'विभाकर', बी. विलासी टाऊन, देवघर (झारखंड) ।
75. डा. श्रीरूपनारायणचौधरी, लक्ष्मीपुर, लहेरियासराय, दरभंगा- 846001 ।
76. डा. श्रीमतीललिताझा, द्वारा-शिवकान्तझा (अधिवक्ता), मो.-बलभद्रपुर, बेंता रोड, लहेरियासराय, दरभंगा ।
77. डा. सुश्रीलावण्यकीर्तिसिंह 'काव्या', विश्वविद्यालय संगीत एवं नाट्य विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा ।
78. डा. श्रीलोकनाथमिश्र, सिंहवाड़ा, दरभंगा ।
79. डा. श्रीविद्यानाथझा 'विदित', विद्यापतिनगर, काँके रोड, राँची (झारखंड) ।
80. डा. श्रीविद्याधरमिश्र, दिवानी तकिया, बेलामोड़, दरभंगा ।
81. श्रीविनोदकुमार, नन्दनी निवास, अल्लपट्टी, पो.-डी.एम.सी.एच, दरभंगा-846003 ।
82. डा. श्रीविभूति आनन्द, मैथिली विभाग, ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा ।
83. डा. श्रीविश्वनाथ, समाजशास्त्र विभाग, सी.एम.कॉलेज, दरभंगा ।
84. डा. श्रीमतीवीणाठाकुर, अध्यक्ष, स्नातकोत्तर मैथिली विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।
85. डा. श्रीवीरेन्द्रनाथदत्त, चन्द्रबाला बोरा रोड, सिलपुखरी, गुआहाटी-781003 (असम) ।
86. डा. श्रीवेदनाथझा, नाहर-भगवतीपुर, भाया-रामपट्टी, मधुबनी ।
87. श्रीकान्तठाकुर विद्यालंकार, तत्कालीन अध्यक्ष मैथिली अकादमी, पटना ।

Scanned by CamScanner

88. डा. श्रीश्रीशंकरझा, विभागाध्यक्ष मैथिली, मारवाड़ी कॉलेज, दरभंगा ।

89. श्रीशम्भुनाथमिश्र, आदित्य सदन, मिश्रटोला, दरभंगा -846001 ।

90. डा. श्रीशशिनाथझा, व्याकरण विभाग, कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा ।

91. श्रीशशिबोधमिश्र 'शशि', नन्दकिशोर निवास, रोड नं.-5, अशोकनगर, कंकड़बाग, पटना-800020 ।

92. डा. श्रीशन्तिनाथसिंहठाकुर, मैथिली विभाग, एम.एल.एस.एम कॉलेज, दरभंगा ।

93. डा. श्रीशिवशंकर 'श्रीनिवास', ग्रा.+पो.-लोहना, मधुबनी ।

94. प्रो. श्रीशिवाकान्तपाठक, मुजौना, नीरपुर, समस्तीपुर ।

95. डा. श्रीमतीशेफालिकावर्मा, 103 अभिषेक एपार्टमेन्ट, मौर्यापथ, खाजपुरा, बेलीरोड, पटना-14 ।

96. श्रीशैलेन्द्र आनन्द, ग्रा.+पो.- लोहना, मधुबनी ।

97. डा. शैलेन्द्रमोहनझा, द्वारा- डा. अरुणकुमारझा, बंगालीटोला (वीणापाणी क्लबक सामने), लहेरियासराय, दरभंगा ।

98. डा. श्रीशोभाकान्तझा, कुशालपुर, रायपुर-492001 (छत्तीसगढ़) ।

99. डा. श्रीशंकरदेवझा, कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा-846001 ।

100. श्रीसीतारामझा, सी.-211, 'मिथिला', गुजैनी, कानपुर-22 (उ.प्र.) ।

101. श्रीसुरेन्द्रझा, डखराम, बहेड़ा, दरभंगा ।

102. आचार्य सुरेन्द्रझासुमन, मैथिली मन्दिर, राजकुमारगंज, दरभंगा-846001 ।

103. श्रीसुरेन्द्रनाथ, न्यू नवरतन हाता, खजांची हाट, पूर्णिया ।

104. डा. श्रीसुरेश्वरझा, रम्भा सदन, 2/बी., राजकुमारगंज, दरभंगा-846001 ।

105. डा. हरिवंश 'तरुण', आनन्द भवन, बहादुरपुर, समस्तीपुर-848101 ।

106. श्रीहीरेन्द्रकुमारझा, शुभंकरपुर, दरभंगा ।

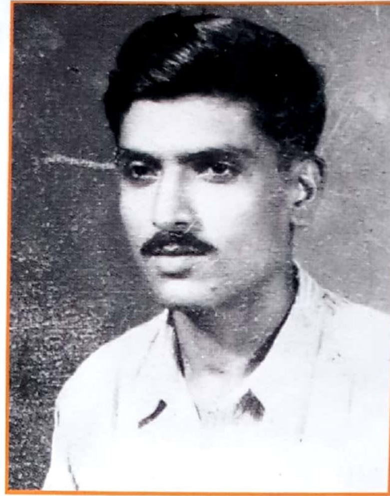
●

Scanned by CamScanner

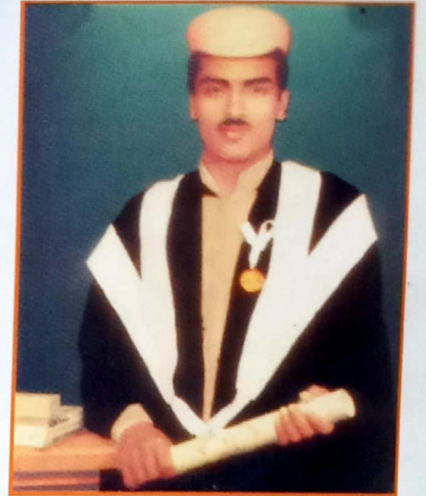
परिशिष्ट-सात (चित्रावली)



माय देवजतीदेवी



छात्र-जीवनक छवि



एम्. ए. दीक्षान्त-परिधानमे



कुलाधिपति डा. जाकिर हुसैन (पूर्व राष्ट्रपति) सँ स्वर्णपदक प्राप्त करैत



विभागीय छात्र एवं सहयोगीक संग



मैथिली विभागमे (बामसँ दोसर)

Scanned by CamScanner



वीरेन्द्रकुमारभट्टाचार्यसँ
साहित्य अकादेमी पुरस्कार ग्रहण करैत



यू.आर. अनन्तमूर्त्तिसँ
अनुवाद पुरस्कार ग्रहण करैत



'मीट दि ऑथर' प्रोग्राममे
प्रश्नक उत्तर दैत



'मिथिला रत्न' सम्मान ग्रहण करैत



न्यायमूर्त्ति मृदुलामिश्रसँ
ताम्रपत्र ग्रहण करैत

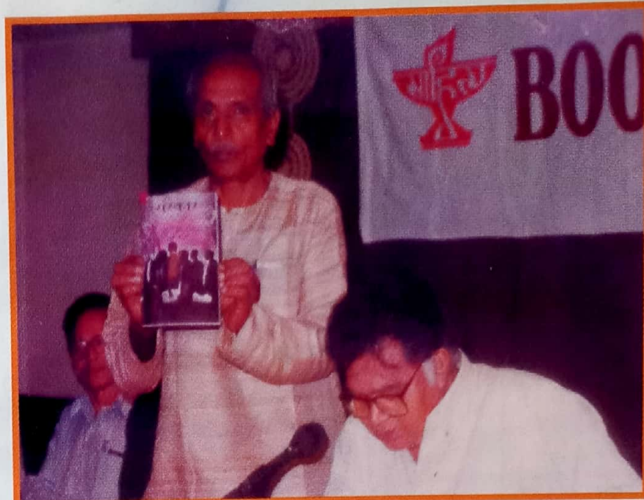


रवीन्द्रभवन, नई दिल्लीमे
साहित्योत्सवक उद्घाटन करैत

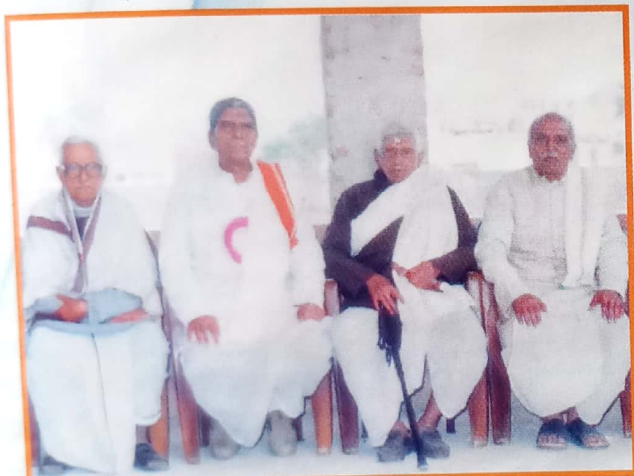
Scanned by CamScanner



पद्मा सचदेव ओ अन्य लेखकक संग



सुनील गंगोपाध्यायक संग कलकत्तामे
पोथीक लोकार्पण करैत



साहित्य अकादेमीक चारि प्रतिनिधि



कुमार गंगानन्दसिंह (मध्य)क
संग (दहिना कात)

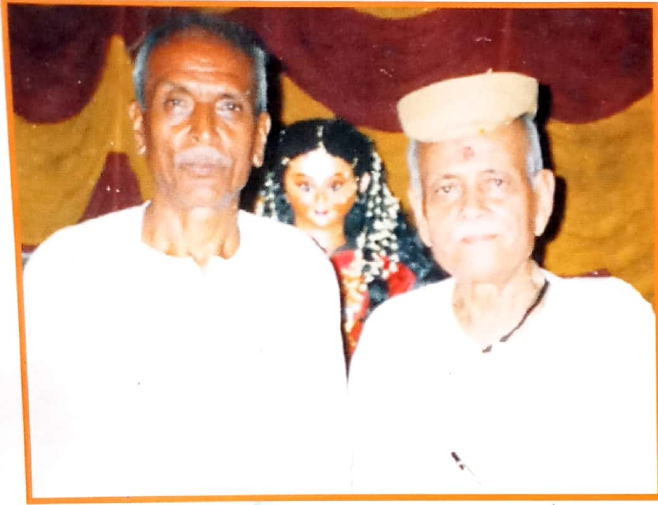


वैद्यनाथमिश्र यात्रीक संग सपत्नीक



आचार्य सुमन ओ
श्रीचन्द्रनाथमिश्र अमरक संग

Scanned by CamScanner



उपेन्द्रनाथझा व्यासक संग



डा. जयकान्तमिश्रसँ विमर्श करैत



धर्मपत्नी डा. श्रीमती योगमायाझाक संग



दौहित्र अभिनव भास्करकेँ कोरामे रखने



अपन परिवारक संग

Scanned by CamScanner



2011

Scanned by CamScanner